वीरविनोद

वीरविनोद
मेवाड़ का इतिहास

महाराणाओं का आदि से लेकर सन् १८८४ तक का विस्तृत वृत्तान्त
आनुषंगिक सामग्री सहित

द्वितीय भाग

[खण्ड २]

(प्रकरण [illegible])

लेखक

महामहोपाध्याय कविराज

श्यामलदास

[महाराणा सज्जनसिंह के आश्रित राजकवि]

प्राक्कथन

प्रो० थियोडोर रिकार्डी (जूनियर)

कोलम्बिया विश्वविद्यालय (न्यूयार्क)

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास

अनुक्रमणिका,

द्वितीय भाग

(महाराणा दूसरे अमरसिंहसे महाराणा दूसरे जगत्सिंहके अखीर तक)

विषय	पृष्ठांक

महाराणा जगत्सिंह दूसरे,
बारहवां प्रकरण – १२१७ – १५३४.

दसवां प्रकरण

महाराणा दूसरे अमरसिंह

जब महाराणा जयसिंहका देहान्त विक्रमी १७५५ आश्विन कृष्ण १४ [हिज्री १११० ता० २८ रबीउलअव्वल = ई० १६९८ ता० ५ ऑक्टोबर] को हुआ और इस हालकी खबर राजनगरमें पहुंची, तब युवराज उदयपुरकी तरफ़ रवानह होगये जिस वक़ देबारीके घाटेमें पहुंचे, वहां प्रधान दामोदरदास पचोली व दूसरे सर्दार, अहलकार वगैरहने पेश्वाई की उस वक्त इन महाराणाकी खवासीमें हाथीपर कायस्थ छीतर सहीहवाला बैठा था, कुल सर्दार, उमराव और अहल्कार अपने दरजेके मुवाफ़िक सवारीमें आगे पीछे होलिये, दो तीन डोरीके क़रीब सवारी चली होगी, कि सब सर्दारोंकी निगाह खवासीकी बैठकपर गई, तो छीतर कायस्थको देखा, और महाराणा जयसिंहका मुसाहिब व प्रधान दामोदरदास कायस्थ हाथीके आगे घोड़ेपर चढ़ा चलता था इस रियासतमें दस्तूर है, कि महाराणा हाथीपर सवार हों, तो खवासीमें मुसाहिब बैठा करता है, इस तब्दीलीके होनेसे सब नौकरोंका दिल बिगड़ गया, सर्दारोंमेंसे एक एक दो दो सवारीसे अलहदह होकर ठहरते गये, दो चार डोरी आगे बढ़कर महाराणाने देखा, कि वही राजनगरसे आये हुए शाहज़ादगीके नौकर सवारीमें बाकी रहे हैं तब छीतर कायस्थसे फ़र्माया, कि यह क्या सबब हुआ? उस खैरख्वाहने अर्ज़ की, कि इसका सबब ख़ास मेरा ख़वासीमें बैठना है महाराणा

अमरसिंहने छीतरको घोड़ेपर सवार करके दामोदरदासको ख़वासीमे बिठा लिया, और कहा, कि मुझको खयाल नहीं रहा, इसलिये गलतीसे तुम्हारा हतक हुआ, दामोदरदासने अदबसे सलाम किया इस बातकी तसल्ली होते ही सब उमराव सर्दार सवारीके साथ हो लिये

महाराणा जयसिंहके नौकरोका सदेह जाता रहा, और इन महाराणा (अमरसिंह)ने उदयपुरमे आकर विक्रमी आश्विन शुक्ल ४ [हिज्री ता० २ रबीउस्सानी = ई० ता० १० ऑक्टोबर] को गद्दीनशीनीका दर्बार किया, सब बड़े छोटे नौकरोने नज़े दिखलाई. पुराने नौकरोसे, जो पहिले नफ़्त थी, वह ख़ातिरी व तसल्ली करके मिटा दी सब रजवाड़ोसे टीकेका दस्तूर आया; लेकिन् डूगरपुरके रावल खुमानसिंह, बासवाडेके रावल अजबसिंह, और देवलियाके रावत् प्रतापसिंहने हाजिर होकर टीकेका दस्तूर पेश नही किया, इससे नाराज होकर महाराणाने तीनो ठिकानोपर फौज कशीका हुक्म दिया, और मांडलगढ वगैरह पर्गनोमेसे बादशाही थानेदारोको (१) निकाल दिया, जिससे अजमेरके सूबहदार मिर्जा सय्यद मुहम्मदका कागज, हिन्दीमे थानह नन्दराय पर्गनह मांडलगढकी बाबत लिखा आया था, उसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है -

कागज़की नक्ल.

सिध श्री सरब वोपमा सुभ सुथाने जोग महाराज धराज महाराजाजी

समस्त जोगी लीखाइतं दारुल षैर हजरत अजमेर थी, मीर जी श्री सेद म्हेमुदजी केन दुआ (२) बाचजो जी, ईहा षेर सलाह है, तुम्हारी षेर सलाह चाहजे जी, अप्रची हाफिजबेग मन्सबदार तईनाथ हमारा महीना ३ तीनसे जमयेत असवार व पीयादान थे प्रगने नदरायमे रहे थो, सो तुम्हारा लोगांने अमल न दियो, और सोखी की. ई वास्ते हाफिजबेग उहा सू ऊठी अजमेर आयो, सो ऊका उठी आवामे

(१) यह तीनों पर्गने विक्रमी १७३६ [हिज्री १०९० = ई० १६७९] से बादशाही ख़ालिसेमें हो गये थे, इन महाराणाने कुंवरपदेमें बादशाही अहल्कारोंसे अपने नामपर ठेकेमें लिखवा लिये थे.

(२) इसमें ऐसे बाज़ बाज़ लफ़्ज़ सूबेदारने अपने बड़प्पनके साथ लिखे हैं, जिससे वह कोई मज़्हबी बुज़ुर्ग मुसल्मानोंका मालूम होता है.

बदनामी पूरी श्री महाराजाजी की हुई, और मै महाराजाजीका ईषलास सेती या बात हजूरी कू न लिषी, और अबे अलीबेगकूं साथी षत मुबारीकबादीके आप पासी षींदायो छे, सो गुमासतानके ताई ताकीद कीजे, जो ऊके ताई प्रगनामे अमल वा दषल दे; और या बदनामी आपकू हुई है, सो सुन्दर वकील कीधांसू हुई छै; अे पर षुदा न करे जे या बात हजुरीमे अरज पहुंचे, तो थाकू पूरो ओलमो आवे, और सुन्दरने आपको जाहीर कियो हैज, बादशाही बदोन कु रजामंद कीया है, सो या बात झूठी कही छे, कोए सो कांम पातसाहजीको ईने कीयो, तीसु हम रजामद हुवा, तीसु रजामंदी हमारी ईम हेज, प्रगने सुं हाथ षेचे और हमारा अमल वाकहे होय, और माहाराजभी ई बातकू जाणो होज, हमारा भी कुली मुजरा हजुरमे ई ही बातसु है प्रगनेमे अमल करां और तुम्हारा लोग दषल छोडे न्ही छे, तीथेजे हमारे ताई हजुरी थी नुकसान पहुचे, और महाराजी कु पुरी बदनामी आवे, तो या बात भली नहीं, और सुंदर वकील थे जु कछु हम कहां हां, सोतो आपकु वा कई कहे नही, और जु कछु महाराजी कहे सो वा हमसूं कहे न्ही सो ई बात माहे मतलब बीचमे ही रहे हे, और आपस माहे षेच होय है, और जे कोई कामका आदमी है, तीनसु तो मीले नहीं, और ऊपर ऊपर लोगानसु मीली करी काम अबतर करे है सो श्री महाराज ई बातके ताई खातरमे लाय करी कयास करोगा जी, और बाजी बात अलीबेग सु जुबानी कही है, सो आपकु कहेगा जी, और घणा क्या लीखे मी० आसोज सुदी १५ सवती १७५५ (१).

पर्गनह पुर मांडल, बदनौर और माडलगढ़, तीनो बादशाह आलमगीरने फ़ौजकशीके वक्त ज़ब्त करलिये थे, और जिज़्यहके एवज़मे यही पर्गने शुमार किये, जिसपर महाराणा जयसिंहने विक्रमी १७४७ [हि० ११०१ = ई० १६९०] में एक लाख रुपया जिज़्येका देना कुबूल करके पर्गने वापस लिये इक़ार मुवाफ़िक़ रुपया जमा न होनेके सबब कुछ अर्से तक तो इन्तिजार अदा करनेका रहा होगा, लेकिन् न पहुंचनेके सबब फिर यह तीनों पर्गने बादशाहने ज़ब्त कर लिये थे इसपर महाराणा जयसिंहके राजकुमार (अमरसिंह) ने अपने नामपर ठेकेमे करवा लिये, उस वक़्के दो काग़ज़ फ़ार्सीके हमको मिले है, जिनका तर्जमह यहां लिखते हैं:-

(१) [हिज्री १११० ता० १४ रबीउस्सानी = ई० १६९८ ता० २१ ऑक्टोबर].

मांडलगढ़के ठेकेकी बाबतके काग़ज़

यह बयान इस बातका है, कि सूबे अजमेर ज़िले चित्तौडका पर्गनह माडलगढ, शुरू फस्ल खरीफ सन् ११०३ फ़स्लीसे सन् ११०५ फस्ली तक तीन वर्षके ठेके का रुपया १०३००० की जमापर कुवर अमरसिहके नौकर महासिह साहको बादशाही मुतसद्दियोने दिया है आसमानी और जमीनी आफ़ते और मुसीबते कह्त वगैरह अगर जाहिर हो, उनका लिहाज रक्खा जावेगा. सन् ११०४ मे रु० ३५००० कूता गया था, लेकिन् मेवाडमे कह्त रहनेके सबब अच्छी पैदा न हुई, कुवरके नौकरने अपनी उम्दह कार्रवाईसे रअय्यतको दिलासा देकर बाज़ जगह खेती कराई, और रुपया १४००० महसूलका मिला; इस सबबसे गुमाश्तह कह्त सालीकी रिआयत चाहता है यह काग़ज़ सूरत हालके तौरपर लिखा, जो वाकिफ हो गवाही लिख दे.

दूसरा काग़ज़.

यह इस बातका बयान है, कि पर्गनह मांडलगढ़ जिले चित्तौड सूबा अजमेर का, शुरू ११०६ फस्लीसे ११०८ फ० तक रु० १०६००० हुज़ूरी सिक्कहपर बडे दरजेके सर्दार राना अमरसिंहके नौकर महासिंहको, जो मुकन्ददासका बेटा है, सर्कारी मुतसद्दियोकी तरफ़से ठेकेमें दिया गया यह शर्त है, कि मौसम कैसा ही क्यौ न रहे, और खुदा न करे, कह्तसाली भी क्यौ न हो, मामूली रुपया अदा करेगा. सन् ११०६ मे फस्ल खरीफ़की बाबत रु० १४५०० तज्वीज़ हुआ था, तमाम मेवाडमे टिड्डी और कह्तकी कस्रतसे तज्वीज़ कीहुई जमाके मुवाफ़िक़ पैदावार न हुई, रानाके आदमीने अपनी नेक कार्रवाई और अच्छे चाल चलनसे पर्गनेकी रअय्यत को दिलासा देकर रु० ४५०० हर गांवसे तफ्सीलवार वुसूल किया इस सबबसे बड़े अमीर रानाके गुमाश्तहने कह्तसाली और टिड्डीके उज्रमे यह बयान सूरत हालके तौरपर लिख दिया, जो लोग इस बातसे खबर रखते हो, अपनी गवाही लिखदें; ताकि आदमियोके साम्हने अच्छे और खुदाके नज़्दीक नेक समझे जाये

इसके नीचे २०१ गांवोंकी तफ़्सीलवार फ़िहरिस्त लिखी हुई है, उसको बसबब तवालतके लिखना मुनासिब न जाना, इन दोनों काग़ज़ोंपर क़ानूगो व चौधरियोंके दस्तख़त हिन्दीमें इस तरहपर आड़े लिखे हुए हैं –

दसषत चौधरी रतनसी व चदर भाण परगने मांडलगढ़रा इजारो स० ११०६ फस्ल खरीफमे टीड्यारे सबब क़हतसाली हुई, सो उणी फ़सलरा रु० ४५०० अषरे पैतालीस सौ पैदा हुवा, परगनारा गाव २०१ मधे, गाम ४३ ऊजड तथा दाखली बाक़ी गाम १५८ मधे पैदा हुवा

दसषत कानोगो अगरचंद श्रीचद मज़्मून ऐज़न

इसी तरहके दस्तख़त दोनों काग़ज़ोंमें हैं, और क़ाज़ी इह्सानुल्लाह व एक बादशाही नौकर महमूद दोनोंकी मुहरें हैं जब इन महाराणाकी गद्दीनशीनी तक ठेकेका इक़ार पूरा होगया, तब बादशाही नौकरोंने फिर यह पर्गने अपने तहतमें लेने चाहे अब उन बाज़े अस्ल काग़ज़ोंका तर्जमह नीचे लिखते हैं, जो इन महाराणाके वक़के मिले, और लिखनेके लायक़ समझे

१– किसी बादशाही सर्दारकी याद्दाश्त,
मेवाड़के मुआमले में

सय्यद अब्दुल्लाहख़ांने लिखा, कि पर्गनह बदनौर और मांडलगढ, जो चित्तौड़के ज़िलेमें है, गुज़रे हुए राणा जयसिंहके बेटे अमरसिंहने बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ सुजानसिंह राठौड़के बेटों करण और जुझारसिंहको ख़ाली करके सौंप दिया, शजाअ़तख़ांने भी जो अ़र्ज़ी बादशाही हुक्मके जवाबमें लिखी, उससे भी मालूम होता है, कि डूंगरपुरके जागीरदारने चित्तौड़ वगैरहकी बाबत, जो कुछ लिखा, उसमें कुछ सचाई नहीं है, और ज़मींदार नामके लिये मन्सबदार है, जिस क़द्र उसको अहमदाबाद आनेके लिये लिखा जाता है, उसका कुछ नतीजा नहीं निकलता.

दूसरे सर्दारकी राय

शजाअ़तख़ां और सय्यद अब्दुल्लाख़ांके लिखनेसे अमरसिंहकी ताबेदारी ज़ाहिर

होती है; इसलिये बादशाही मिहर्बानियोंका उम्मेदवार है, कि मस्नद नशीनीका फ़र्मान और टीका उसके नाम भेज दिया जावे, अगर मन्शा हो, यह हुज़ूरी ख़ैरख़्वाह एथ्वीसिंह और रामरायके हाथ, जो अमरसिंहके नौकर हैं, और जो एक वर्षसे हुज़ूरमें पड़े हुए हैं, भेज दें, कि उनकी मिहनत बेफ़ायदह न जावे; और हुक्म हो, तो जागीरदारकी भेजी हुई नज़्रका सामान सर्कारी कारख़ानहमें पहुंचा दिया जावे.

(हुक्म लिखा गया).

इन बातोंके जवाबमें पेन्सलसे ख़ास दस्तख़त होगये, कि इक़्रारके मुवाफ़िक़ क़ाइम रहनेपर लिहाज़ रक्खा जावेगा वज़ीरकी तरफ़से तस्दीक़ हुई– कि उदयपुरके जागीरदार अमरसिंहने लिखा है, कि बदनौर वग़ैरह तीन जागीरें सर्कारी ख़ालिसेमें शामिल करदी गईं, और एक हज़ार सवार हुज़ूरमें रवानह करदिये गये; करण और जुझारसिंह जागीरदार बदनौर और मांडलगढके ने भी अपने दख़्ल पानेकी बाबत लिख भेजा है (हिज्री १११० = वि० १७५५ = ई० १६९८).

२– नव्वाब जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां वज़ीरका काग़ज़, जो मेवाड़के मुआमलोंकी बाबत मार्गशीर्ष शुक्ल १३ को बख़्शियुल मुल्क नव्वाब बहरहमन्दख़ांके नाम लिखा,

पोशीदह न रहे, कि बुज़ुर्ग ख़ान्दान अमरसिंह, राणा जयसिंहके बेटेकी लिखावटका ख़ुलासह उस बड़े दरजेवाले बख़्शियुल्मुल्कके पास भेजा गया; ज़िक्र किये हुए जागीरदारने लिखा है, कि मैं बादशाही ताबेदारी और ख़ैरख़्वाहीको अपने हर तरहके फ़ाइदोंका सबब जानता हूं, इस इक़्रारमें हमेशह क़ाइम रहनेका इरादह रखता हूं. इन दिनोंमें मस्नद नशीनीकी रस्मे अदा होती हैं, बादशाही मिहर्बानियोंसे उम्मेद है, कि बुज़ुर्ग फ़र्मान मेरी सर्बलन्दीके लिये इनायत किया जावे. ज़िक्र किये हुए जागीरदारने बहुत शर्मिन्दगी उठाकर पूरा ख़ैरख़्वाहीका इरादह किया है. इसवास्ते वह कार्गुज़ार सर्दार बादशाही दर्गाहमें अर्ज़ी लिख भेजे, कि जागीरदारकी नज़्रे क़बूल करली जावे; और बादशाही मिहर्बानीसे इज़्ज़त दीजावे. अगर बद क़िस्मतीसे कोई क़ुसूर ज़ाहिर होगा, तो उसकी सज़ाका बन्दोबस्त किया जावेगा. जो मुचल्का जागीरदारके नौकरों एथ्वीसिंह वग़ैरहने लिखकर दिया है, भेजा जाता है; अगर हुक्म होगा, तो एथ्वीसिंह वग़ैरह हज़ार सवार पहुंचने तक लश्करमें रहेगा; उसके हमराही ३०० सवारोंको तईनात करदिया है, कि लश्करके आगे तीन चार

कोस तक चौकीदारी करते रहें यक़ीन, कि वह सर्दार मुनासिब वक़्मे अ़र्ज़ करके जवाबसे इत्तिला देंगे. (हि० ११११० = वि० १७५५ = ई० १६९८)

३– वज़ीरका ख़त, महाराणा अमरसिंहके नाम

हमेशह बादशाही इनायतोंमें शामिल रहकर खुश रहे, दोस्तीकी बाते ज़ाहिर करनेके बाद मालूम हो, कि उस दोस्तका पसन्दीदह ख़त पहुंचा, उसमे बयान है, कि बांसवाड़ा, देवलिया, डूंगरपुर और सिरोहीके जागीरदार मस्नद नशीनीके वक़् कुछ चीज़े तुहफ़ेके तौरपर क़दीमसे देते हैं, इन दिनोमे खुमानसिंह डूंगरपुरका ज़मींदार इन्कार करता है. खुमानसिंहके लिखे हुएसे ऐसा अ़र्ज़ हुआ, कि उस दोस्तने ज़मींदारको पैगाम भेजा था, कि अगर शरीक बने, तो पर्गनह मालपुरा वगैरहको लूटकर चित्तौड़मे क़ब्ज़ा करे, लेकिन् ज़मींदारने यह बात क़ुबूल न की इसके बाद उस उ़म्दह सर्दारने अपने काका सूरतसिंहको जमींदारकी जागीर लूटनेको रवानह किया, लड़ाई होनेपर दोनो तरफ़के आदमी मारे गये अब उस उम्दह भाईने दुबारा दूसरी फ़ौज भेजी है, यह बात बादशाही दर्गाहमें बहुत ख़राब मालूम हुई इस मौकेपर इस दुन्याके खैरख्वाह (मैं) ने पृथ्वीसिंह और रामराय और बाघमल वगैरह उस दोस्तके नौकरोकी अर्जके मुवाफ़िक हुज़ूरमे जाहिर किया, कि डूंगरपुरके वकीलने जाली ख़त बना लिया है, उस दोस्तका मत्लब अ़र्ज कर दिया गया बादशाही हुक्मसे इस मुक़द्दमेकी तहक़ीक़ातके वास्ते शजाअ़तखांको लिखा गया है, कि अस्ल हाल दर्याफ़्त करके लिख भेजे, मुनासिब यही है, कि बादशाही मर्जीके ख़िलाफ़ कोई काम न किया जावे; जियादह कैफ़ियत जगरूप वकीलके लिखनेसे मालूम होगी. ता० १० सफ़र सन् ४३ जुलूस (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ श्रावण शुक्ल १२ = ई० १६९९ ता० ९ ऑगस्ट)

४– किसी बादशाही नौकर, कायस्थ केशवदासकी
दर्ख्वास्त महाराणा २ अमरसिंहकी
खिद्मतमे

बिहिश्तके मानिन्द महफ़िलके बैठने वाले, और इन्साफ़के फ़र्शको रौनक़ देने वाले, बख़्शिश और इहसान फैलाने वाले, बड़े ताक़तवर, बलन्द दरजेके राजाकी

ख़िद्मतमें अर्ज़ करता है, कि इज़्ज़तदार मिहर्बानीका खत, जिसके हर एक हर्फ़ से नेक बख़्ती नज़र आती थी, होश्यार सर्दारखांके हाथ वुसूल होकर खुशी और बुज़ुर्गी हासिल हुई, और जो बुज़ुर्ग कागज़ मए कपड़े और घोड़ेके नव्वाब साहिब के पास भेजा था, पहुंच गया, उससे नव्वाब साहिबको दिली खुशी हासिल हुई, और दोनों तरफ़की मुहब्बत और दोस्तीने ताज़गी पाई. अगर खुदाने चाहा, तो हर मौकेपर नव्वाब साहिब उन कामोंमें, जिनसे दीवान साहिब (१) का कोई फ़ायदह हो, ज़रूर कोशिश करते रहेंगे खैरख्वाहीके खयालसे मैं अर्ज़ करता हूं, कि इन दिनोंमें प्रतापसिंह देवलियाके जागीरदार और बांसवाड़ा और डूंगरपुरके वकीलोंने हाज़िर होकर बयान किया है, कि उन बड़े खान्दान वाले उम्दह राजाकी फ़ौजें, इनमेंसे हर एकके इलाकेमें जाकर सताती हैं इस सबबसे, कि अभी हुज़ूरमेंसे टीका इनायत नहीं हुआ, फ़ौजोंकी तईनाती मौकूफ़ रक्खे, क्योंकि शुरूमें ही शिकायतकी बात अर्ज़ होना अच्छा नहीं है (हि० ११११ = वि० १७५६ = ई० १६९९)

५– खत कुशलसिंह शक्तावतके नाम, जिसकी औलादमें विजयपुरका जागीरदार ठाकुर जवानसिंह है, यह असदखां वज़ीरका लिखा मालूम होता है

बराबरी वालोंमें उम्दह बहादुर खान्दान कुशलसिंह शक्तावत खुश रहे, इन दिनोंमें बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ बख़्शियुल मुल्क मुख़्लिसखांजीका खत रावल खुमानसिंह डूंगरपुरके जागीरदारकी दर्ख्वास्तपर शैख अब्दुर्रऊफ़ गुर्ज़बर्दारके हाथ मेरे पास पहुंचा है, उसका पूरा मज़्मून बड़े दरजेवाले बुज़ुर्ग खान्दान राणाजीको लिख भेजा है, उससे तमाम हक़ीक़त ज़ाहिर होगी

गुर्ज़बर्दार, जो आपके लिये ताकीद करेगा, इस वास्ते मेरा कागज़ बहुत जल्द राणाजीको दिखलाने बाद उसका जवाब इस तौरपर, कि कोई शुब्ह न रहे, लेकर क़ासिदके हाथ भेज दें उसके मुवाफ़िक़ बादशाही हुक्मकी तामील की जावे, राणाजीने मुझसे दोस्ती पैदा की है, और मैं भी उनकी बिहतरी चाहता हूं, इस वास्ते मेरी तरफ़से उन्हें कह दे, कि डूंगरपुरके जागीरदारको जियादह दिक़ करना मुनासिब नहीं है, क्योंकि ज़मीदार मज़्कूरने बहुतसी बातें राणाजीकी बाबत बादशाही

(१) महाराणाका पद दीवान है

दर्गाहमे अर्ज की है, जिनसे फ़ायदह नजर नही आता जियादह क्या लिखा जावे ता० ४ रबीउलअव्वल सन् ४३ जुलूस (हि० ११११ = विक्रमी १७५६ भाद्रपद शुक्र ६ = ई० १६९९ ता० १ सेप्टेम्बर)

६– वज़ीर असदखाका खत महाराणा अमरसिंहके नाम

बादशाही खैरख्वाहीके इरादे हमेशह उन दोस्तके दिलमे काइम रहें– मालूम हो, कि इससे पहिले उन दोस्तने जिस कद्र नज्रका सामान मए दर्ख्वास्तके बादशाही दर्गाहमे भेजा था, पेश होकर कुबूल किया गया था, और फर्मान लिखे जानेको भी हुक्म दिया था, इन दिनोमे उन उम्दह सर्दारका तीर्थकी नियत से बूंदीकी तरफ़ जाना अर्ज़ हुआ, नज्रकी चीजे उन दोस्तके आदमियोको वापस करदी गई, और फर्मानका लिखा जाना भी मुल्तवी रहा, ऐसा मुनासिब था, कि फर्मान और राणाका खिताब मिलनेपर शुक्र अदा करके तीर्थके वास्ते इजाजत मागते, बगैर हुक्म अपनी जगहसे निकलना पुराने दस्तूरके खिलाफ है, और उन दोस्तकी अक्लमन्दीसे निहायत दूर मालूम होता है

इस लिये जो अर्जी कि इन दिनोमे बुजुर्ग दर्बारमे भेजी थी, बादशाहकी तबीअतको बर्खिलाफ देखकर पेश नही की, और जो कागज कि मुझको भेजा था दोस्तीके सबब उन दोस्तके वकीलसे लेकर मैने पढा, जिसमे इत्तिला थी, कि आप लौट कर वतन पहुच गये है, अगर्चि आपकी खैरख्वाहीके इरादे मुझको पहिले ही से मालूम थे, जिनकी बाबत मैने हुजूरमे अर्ज किया है, लेकिन् मुनासिब देखकर एक दूसरी बात लिखी जाती है, कि बदनौर वगैरह ३ पर्गनोमे, जो कि जिज्यहके एवज बादशाही नौकरोको आपने सौप दिये है, बिल्कुल दख्ल न दे, खालिसेके काम्दारोको इन्तिजाम करनेमे कोई शिकायतका मौका न मिले खैरख्वाही और तावेदारीकी बाबत एक अर्ज़ी भेजदे, जो मौक़ा देखकर हुजूरमे पेश की जावे, और जिससे साफ दिलीका खयाल जम जावे, और उन दोस्तकी भेजी हुई नज्रका सामान कुबूल फर्माया जावे मै दोस्तीका हक़ अदा करता हू, चाहे वह पसन्द हो, या ना पसन्द आइन्दह अपने फ़ाइदोपर निगाह रखकर बादशाही मर्जीके खिलाफ़ कोई कार्रवाई न करे, और एक इक़ारनामह अपनी मुहरसे लिख भेजे ता० २९ रबीउल अव्वल सन् ४३ जु० (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ आश्विन कृष्ण ३० = ई० १६९९ ता० २५ सेप्टेम्बर)

७- एक अर्ज़ीका मुसव्वदह, जो आलमगीर बादशाहको भेजीगई विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० ११११ ता० ३ जमादियुल अव्वल = ई० १६९९ ता० २९ ऑक्टोबर]

खैरख्वाह अर्ज करता है, कि इन दिनोमे नव्वाब जुम्दतुल्मुल्क मदारुल-महामका खत ताबेदारके नाम इस मज़्मूनसे आया, कि बगैर हुज़ूरी हुक्मके तीर्थोको जानेसे शर्मिन्दह होकर कभी बिला इत्तिला ऐसी कार्रवाई न करे, और तीनो पर्गने, जो उतार लिये गये है, उनमे दख़्ल न दे, और इस मुआमलेका मुचल्का हुज़ूरमे लिख भेजे ताबेदारोकी जाय पनाह सलामत, बदनसीबीसे इस ताबेदारने कोई ऐसा काम नही किया, कि हमेशह बगैर फर्मानेके किसी तरफ न जावे, इस मर्तबह तीर्थ जानेको दुश्मनोने इस खैरख्वाहकी नमक हरामीपर खयाल करके बेजा बातोसे हुज़ूरकी पाक, बुज़ुर्ग, नेक तबीअतको नाराज़ करदिया, इन्साफको पालने वाले सलामत, दुन्या और आखिरतकी रूसियाही उस नालायकके नसीब हो, जिसकी तबीअतमे उ़दूल हुक्मीका कोई खयाल पैदा हो- जियादह क्या अर्ज़ किया जावे यह खैरख्वाह सिवाय ताबेदारीके कोई ख़राब इरादह दिलमे नही रखता बुज़ुर्ग मिहर्बानियोसे उम्मेद है, कि कुसूरकी मुआफीसे इज्जत बख़्शकर तसल्ली फर्मावे, कि यह ताबेदार खैरख्वाहीके रास्तेपर साबित क़दम है. वाजिब जानकर अर्ज़ किया

८- शहनशाह आलमगीरके वज़ीरकी याद्दाश्त

खास बादशाही ताबेदारके नाम हुक्म हुआ, कि पृथ्वीसिंह और रामराय वगैरह, जो अगले राणाके बेटेके वकील है, बादशाही लश्करमे हाजिर हुए है, इनके साथ कुछ जमइ़यत भी है, इस लिये इनको तीन तीन थान कपडेके देकर फ़ौजकी चौकीदारी पर मुकर्रर किया जावे ता० ९ जमादियुल अव्वल सन् ४३ जुलूस (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल ११ = ई० १६९९ ता० ४ नोवेम्बर).

९- वज़ीर असदखांका ख़त महाराणा अमरसिंहके नाम

मामूली अल्क़ाबके बाद- उन उम्दह सर्दारके ख़त कई बार पहुचे, मज़्मून अर्ज कर दिया गया; मन्शासे पहिले भी इत्तिला दी गई है. उन उ़म्दह भाईके

काम मेरे जिम्मह है, इसलिये जगरूप वकील, पृथ्वीसिंह, रामराय और बाघमल्लको बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ अपने पास ठहरा लिया है, जिस वक्त कि सय्यद अब्दुल्लाखां हुज़ूरमें जवाब लिखेंगे, उन दोस्तके काम अच्छी तरह तै हो जावेंगे, बे फ़िक्र रहें ता० १४ जमादियुल अव्वल सन् ४३ जुलूस (हिज्री ११११ = विक्रमी १७५६ कार्तिक शुक्ल १५ = ई० १६९९ ता० ९ नोवेम्बर)

१०– अजमेरके वक़ाया निगारकी याददाश्त, ता० ११ रजब सन् ४३ जु० आ० (हि० ११११ = वि० १७५६ पौष शुक्ल १२ = ई० १७०० ता० ४ जैन्युअरी)

उदयपुरका जागीरदार अमरसिंह, इन दिनोंमें बहुतसी फ़ौज एकट्ठी करता है, मालूम नहीं उसका क्या इरादह है

११– किसी बादशाही सर्दारका काग़ज़ पर्गनह बदनौर वग़ैरह की बाबत

बुज़ुर्ग खान्दानवाले सय्यद हुसैनको मालूम हो, कि इन दिनोंमें बहादुर ख़ासियत अमरसिंह, राणा जयसिंहके बेटेने लिखा है, कि पर्गनह बदनौर वग़ैरह तीन इलाके, बापकी तरहपर बादशाही ख़ालिसेमें छोड़ दिये हैं हुसैनअली अब्दुल्लाख़ांका बेटा वहां जाकर राजपूतोंको सताता है, इसलिये उसको समझा दिया जावे, कि ये पर्गने राणाकी तरफ़से ख़ालिसेमें होगये हैं, कोई शख़्स किसी तरहका इसमें दख़्ल न दे ता० २१ रजब सन् ४३ जु० आ० (हि० ११११ = वि० १७५६ माघ कृष्ण ७ = ई० १७०० ता० १४ जैन्युअरी)

१२– महाराणा अमरसिंहकी दर्ख़्वास्त किसी शाहज़ादहके नाम वि० १७५६ [हि० ११११ = ई० १७००]

बुज़ुर्ग हुक्मसे इत्तिला पाई, जिसमें लिखा था, कि राणाकी फ़ौज जमा होकर फ़साद करना चाहती है, जुझारसिंह कई बातें अर्ज़ कर चुका है जवाबमें अर्ज़ किया जाता है, कि जुझारसिंहका बयान हुज़ूरमें बिल्कुल झूठ समझना चाहिये; इस ख़ैरख़्वाहको बादशाही इलाक़े लूटनेका हौसला नहीं है हमेशह ख़ैरख़्वाहीका ख़याल रहता है, जुझारसिंहका भतीजा राजसिंह मेरे मातहत दूल्हासिंहके चार भाइयोंको पकड़कर लेगया, मैं ने अपने मातहत दूल्हासिंहको मना कर दिया, कि

बदआमाल क़ैद होकर बादशाही दर्गाहमें पहुंचे, इस कामको अपनी उम्दह ख़िदमत गुज़ारी समझे, अगर उदयभान कहनेपर अमल न करे, तो उसको भी निकालकर इत्तिला देवे, और हर तरह अच्छा बन्दोबस्त करे जियादह क्या लिखा जावे (हिज्री १११९ विक्रमी १७५७ = ई० १७००)

१७— किसी बादशाही सर्दारका ख़त दूसरे सर्दारके नाम ता० २१ शव्वाल सन् ४४ जुलूस आ० [हिज्री १११९ = वि० १७५७ वैशाख कृष्ण ७ = ई० १७०० ता० १२ एप्रिल],

बड़े दरजेके बहादुर दोस्त खुश रहे— शौकके बाद मालूम हो, रामराय वकील, जो उम्दह सर्दार अमरसिंहका वकील है, नावाकिफ़ीसे सय्यद मुज़फ्फ़रकी मारिफ़त मुझसे ख्वास्तगार हुआ, कि वह दोस्त ख्वाहिश रखते हैं, कि अगर गुज़रे हुए राजा भीमके मुवाफ़िक़ मन्सब इनायत हो, और पर्गनह ईडर मए इलाक़ह जागीरमें मिले, तो उम्दह फ़ौज समेत हुज़ूरमें हाज़िर रहे, और एक लाख रुपया नज़ दे, जिसमेंसे आधा पहिले और आधा मन्सब पानेके बाद अदा करे. इसलिये लिखा जाता है, कि उम्दह जमइय्यत लेकर हाज़िर होनेपर तीन हज़ारी ज़ात, दो हज़ार सवार, और पांच सौ सवार दो अस्पह सि अस्पहका मन्सब बख़्शा जावेगा, और ईडर जागीरमें दिया जावेगा यह कोशिश और इम्तिहानका वक्त है, फ़ौज लेकर आवे, तो ज़रूर फ़ायदह उठावेंगे, इस काग़ज़को इक़ार समझकर ज़रूर रवानह हो, थोड़े लिखेको बहुत जाने

१८— वज़ीरका ख़त, मेवाड़के मुआमलेकी बाबत सूबेदारके नाम

बड़े खान्दानी बहादुर दोस्त, खुदाकी पनाहमें रहे— सलामके बाद मालूम हो, कि इससे पहिले बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ कर्णसिंह और जुझारसिंहको ताकीद लिख दी गई थी, कि गुज़रे हुए राणा जयसिंहके बेटे अमरसिंहके इलाक़हमें दख़्ल न देनेके वास्ते ताकीद की थी; इन दिनोंमें अमरसिंहने दोबारह लिखा, कि कर्ण और जुझारसिंह उसकी जागीरमें हाथ डालते हैं, और इरादह रखते हैं, कि फ़साद करें, जिससे अमरसिंह हुज़ूरमें बदनाम हो इस वास्ते लिखा जाता है, कि वह सर्दार ताकीद करदे, कि गुज़रे हुए दलपतके मुवाफ़िक़ अमल रक्खे; और अमरसिंहके इलाक़हमें दख़्ल न दे, अपनी जागीरोंका ऐसा बन्दोबस्त रक्खे, कि

दोबारह तक्रार न होने पावे ता० ४ ज़ीकाद सन् ४४ जु० आ० [हिज्री ११११ = वि० १७५७ वैशाख शुक्ल ६ = ई० १७०० ता० २६ एप्रिल]

---

१९ - बादशाह ज़ादह शाहआलम बहादुरशाहका निशान, (१) महाराणा २ अमरसिंहके नाम, दस्तखत खासका

बादशाही

हिन्दुस्तानके राजाओके बुज़ुर्ग बडे जागीरदारोके उम्दह राणाजी, मिहर्बानियोसे इज़्ज़तदार होकर जाने- हिम्मतवर नरायणदासकी जबानी बाज़ बाते मालूम हुई, अस्ली जवाब, जिनमे झूठका लगाव नही है, उससे कह दिये गये, वह मुफ़स्सल लिखेगा मोतबर समझे मुआमला पहिलेके मुवाफिक है, जो कोई कम ज़ियादह कहता है, उसमे कुछ सच नही है, जितनी बादशाही खैरख्वाही करेगे, बड़े दरजेपर पहुचेगे जियादह तावेदारीपर काइम रहना चाहिये अगर मेरी इस बातको मानोगे, तो मै तुम्हारा साथी हू, और अगर बच्चोकी बातोपर ध्यान रक्खा, तो

---

(१) نقل نشان دستخط خاص شاهزاده شاه عالم بهادر
بنام رانا امرسنگه - دوم *

(*O*)

باد شاهی

زبدهٔ راجهای هندوستان عمدهٔ
زمینداران عالیشان رانا جیو از نوازش
ممتاز بوده بدانند - از زبانی
تهور دستگاه نراین داس بعض مقدمات
ظاهر شد جوابها نفس الامری که
شائبهٔ دروغ ندارد باو گفته شد - مفصل
خواهد نوشت - معتبر شمارند * وحرف
حرف اول است - وهرکه کم و زیاد
میگوید بهرهٔ از راستی و درستی ندارد -

اگر اینحرف مراسند لك - ایلدهٔ درگاه رفیق شماست و اگر حرف
طفلان گوش کردید - احسان دارید - من پاسبان رفیق نمیم فقط

هرچند ایندگی پادشاه عالم شاه ایستر هوا هید کرده لمرات هوا هند
زمیند بادداه ایمادو ایندگی دراعلیٰ ایمادو بوقته شد *

तुम्हारा इख़्तियार है, मै शरीक नही हू ता० १६ ज़िल्काद सन् ४४ जु० आ० [हिज्री ११११ = विक्रमी १७५७ ज्येष्ठ कृष्ण २ = ई० १७०० ता० ८ मई]

२०- बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़ज़ाइलख़ाने नव्वाब वज़ीरके नाम लिखा

दोस्तीके आदाब बजा लाकर अर्ज़ रखता है, कि बुज़ुर्ग ख़त ता० २४ शव्वालका लिखा हुआ मए ख़त अमरसिंहके वुसूल हुआ, सब हाल मालूम हुए, हुज़ूरमे अर्ज़ करदिया गया अमरसिंहने लिखा, कि खुमानसिंह जागीरदारने क़िले चित्तौड़की मरम्मतके लिये जो अर्ज़ किया है, उसकी ख़िलाफ़ बयानी शजाअ़तख़ाने लिखी होगी बादशाही हुक्म हुआ, कि उस सर्दारने अभी तक उस मुआमलेमे राय नही दी बादशाही मन्शा है, कि अमरसिंह क़िला चित्तौड और बुतख़ाने बनानेसे पर्हेज़ रखे, और बादशाही मर्ज़ीके बख़िलाफ़ कोई काम न करे, और बादशाही हुक्म ऐसा भी है, कि बख़्तयारख़ांके ख़तकी नक़्ल, जो इन दिनोमे पेश हुआ है, उन उम्दह वज़ीरके पास भेजी जावे, वह नज़रसे गुज़रेगी, ख़ुशीके दिन हमेशह रहे माह ज़िल्हिज सन् ४४ जुलूस [हिज्री ११११ = विक्रमी १७५७ ज्येष्ठ शुक्ल = ई० १७०० मई]

२१- नव्वाब असदख़ाका ख़त, मेवाडके मुआमलेमें फ़ज़ाइलख़ा मुन्शीके नाम

बडे दरजेके साफ़ दिल दोस्त बादशाही मिहर्बानियोमे शामिल रहे, बाद सलाम शौकके मालूम हो, कि उस दोस्तका ख़त, जो बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा था, मुझको मिला, उसमे इशारह है, कि अमरसिंह, राणा जयसिंहके बेटेकी लिखावटसे डूगरपुरके जागीरदार खुमानसिंहकी अर्ज़ ग़लत मालूम होती है, जिसने लिख दिया था, कि चित्तौडकी मरम्मत होती है, और बुतख़ाने बनाये जाते है शजाअ़तख़ांसे भी दर्याफ़्त किया जावे; इससे पहिले शजाअ़तख़ांका ख़त भी पहुचा था, जो भेज दिया, अब दो बारह उसकी नक़्ल भेजी जाती है, जिससे मुफ़स्सल हाल मालूम होगा. जागीरदारके वकीलोसे भी, जो मए तीन सौ सवारोके लश्करमे हाज़िर है, दर्याफ़्त किया गया, मुचल्का और जो काग़ज़ कि उन्होने लिख

दिया है, अस्ल भेज दिया जाता है, किसी मौकेपर पेश करदे, और बादशाही हुक्मसे इत्तिला दे ता० २७ ज़िल्हिजको मुसव्वदह किया, और ता० १ मुहर्रम सन् ४४ जु० आ० [हिज्री १११२ = विक्रमी १७५७ आषाढ़ शुक्ल ३ = ई० १७०० ता० २० जून] को तय्यार हुआ

२२- नव्वाब वज़ीरका ख़त, महाराणाके मुआमलेमे सूबेदार अहमदाबादके नाम

खान्दानी इज़्ज़तदार दोस्त खुदाकी हिफ़ाज़तमे रहे, सलामके बाद मालूम हो, कि पहिले उन दोस्तका खत पहुचा था, कि डूगरपुरके जागीरदार खुमानसिहकी लिखावटमे कुछ सचाई नही है, इन दिनोमे खुमानसिहकी तहरीर और अजमेरके वकाया निगारोकी खबरोसे मालूम होता है, कि चित्तौडकी मरम्मत की जाती है, और बुतखाने बनाये जाते है, और फौज इकट्ठी करके अमरसिह, राणा जयसिहका बेटा खराब इरादह रखता है उस शख़्सके लिखने और उसके वकीलोके इज़्हारसे मालूम होता है, कि यह तमाम झूठ है, इस वास्ते अब लिखा जाता है, कि वह इज्जतदार दोस्त गुज़रे हुए राणाके बेटेकी पूरी हकीकत और नाकिस इरादहको दर्याफ़्त करके सहीह तौरपर मुझको लिखे, ता कि बादशाही हुज़ूरमे अर्ज़ किया जावे, ज़ियादह सलाम ता० शुरू मुहर्रम सन् ४४ जु० आ० [हिज्री १११२ = वि० १७५७ आषाढ शुक्ल ३ = ई० १७०० ता० २० जून]

२३- किसी बादशाही नौकरकी दर्ख्वास्त, महाराणा २ अमरसिंहके नाम ता० २९ सफ़र सन् ४४ जु० आ० [हि० १११२ = वि० १७५७ भाद्रपद कृष्ण ऽऽ = ई० १७०० ता० १५ ऑगस्ट]

हजरत बुजुर्ग बादशाहकी मिहर्बानिये, उन बडे दरजेके आलीशान खान्दान वाले राजाके हालपर जारी रहे, मुलाकातकी आर्ज़ूके बाद अर्ज करता है, कि बुजुर्ग खत भैया रामरायकी मारिफत वुसूल हुए, और जो अर्जिये, कि शाहज़ादहके हुज़ूरमे भेजी थीं, पेश करदी गई कामोका तै होना अपने वक्तपर मौकूफ है शाहज़ादह आलीजाहका लश्कर इन दिनोमे सूबे मालवाकी तरफ आने वाला है, निहायत साफ दिलीसे वह उम्दह राजा अपनी खैरख्वाहीसे मुचल्का लिख कर एक हजार सवारकी जमइयत, जो उज्जैन पहुचनेसे पहिले भेज देंगे, यह सब अर्ज़ कर दिया. बुजुर्ग

शाहजादहने बे हद मिहर्बानियोके साथ बादशाही दर्गाहसे टीकेका फर्मान, राणाका खिताब और जडाऊ जम्धर, घोडा और हाथी, मए चांदीके सामानके उस बुजुर्ग सर्दारके लिये हासिल किया, ताबेदारीकी सूरत देखकर शाहज़ादह आलीजाह भेज देंगे, उन उम्दह सर्दारका वकील भी खिदमतमे हाजिर रहेगा

उन बुजुर्ग खान्दानके सर्दारको कदीमी खिताब मुबारक हो, इसका शुक्रियह अदा करे, और अपने बुजुर्गोंकी मानन्द खैरख्वाहीके रास्तेपर काइम रहकर बादशाही मर्जीके खिलाफ कोई काम न करें. बागियोको अपने इलाकहमे जगह न दे, और जमइयत भेजकर फसादियोकी खराबीमे कोशिश करे, जिससे बादशाही मिहर्बानिये बढती रहे जो पैरवी उन उम्दह सर्दारके दीवानसे इस मौकेपर जाहिर हुई, तारीफके काबिल है, यकीन है, कि उम्दह नतीजह बख्शे बादशाही दर्गाहमे होश्यार आदमीका भेजना आपकी खूबी जाहिर करता है मुझको दोस्तीके रास्तेपर साबित कदम समझे जियादह क्या लिखूं खुशीके दिन हमेशह रहे

—***—

२४— जुम्दतुल्मुल्क असदखां वज़ीरका खत, महाराणा २ अमरसिंहके नाम

—*—

हमेशह बादशाही मिहर्बानियोमे शामिल रहकर खुशी और बिहतरीमे रहे- मुहब्बतकी बाते बयान करनेके बाद साफ़ तबीअतपर जाहिर हो, जो खत हुजूरमे जमइयत भेजनेकी बाबत और अपने गावपर करण और जुझारसिंहके जुल्मके बयानमे लिखा था, नजरसे गुजरा बादशाही हुक्म होगया है, कि यह बादशाही खैरख्वाह (मै) उस दोस्तको लिखे, कि बडे नव्वाब बुज़ुर्ग शाहज़ादह आलीजाह आज़मशाह उस तरफ़ तशरीफ़ रखते है, उनके मन्शाओको बादशाही हुक्म समझकर अमल करे बादशाही हुक्मके कागज़ काइदहके साथ इस खैरख्वाहकी मुहरसे पहुंचेगे. उस उम्दह सर्दारके एक हज़ार सवार शाहज़ादह आलीजाहकी खिदमतमे तईनात हुए है, वहां भेजदे. करण और जुझारसिंहको बादशाही दर्गाहसे हुक्म मिला है, कि किसी तरहका नुक्सान उस बुज़ुर्ग दोस्तके इलाकेमे न पहुंचावे. उम्मेद है, कि हुक्मके मुवाफ़िक़ अमल रहेगा ता० ५ रजब सन् ४४ जुलूस आ० [हि० १११२ = वि० १७५७ मार्गशीर्ष शुक्र ७ = ई० १७०० ता० १९ डिसेम्बर].

—*—

२५– आज़मशाहके कारखानहकी तरफसे सय्यद अहमदकी रसीद, महाराणा २ अमरसिंहकी भेजी हुई चीज़ोकी बाबत.

—*—

तारीख २९ रबीउस्सानी सन् ४५ जु० आ० [हिज्री १११३ = विक्रमी

१७५८ आश्विन कृष्ण ३० = ई० १७०१ ता० ३ सेप्टेम्बर].

हाथी गजशोभा नाम,	तलवार नग ७	घोड़ा ४२, सर्ज याने ज़ीन
क़ीमती रु० ४१२१।=॥.	साबरी ९	घोड़ेके २, जम्धर जड़ाऊ
जम्धर ७ क़ीमती रु० १४८३।=॥	पाखर वगैरह,	कामके मए अतलसी गिलाफ़,
जम्धर सोनेके सामानके,	क़ीमती रु० ४००	क़ीमती रु० १०५९।
क़ीमती रु० ४२४॥.	तरक, क़ीमती रु० ४००.	ज़ीन सुनहरी, रुपहरी,
झूल, क़ीमती रु० ९१.	सरचद,	क़ीमती रु० १५९३
पायजामा साबरी,	क़ीमती रु० ५००.	
क़ीमती रु० ४५.		

२६- वज़ीरका ख़त, रावल अजबसिंहके नाम.

बराबरी वालोंमें उम्दह रावल अजबसिंह नेक नियत रहें, इन दिनोंमें बुज़ुर्ग ख़ान्दान राणा अमरसिंहके लिखनेसे अर्ज़ हुआ, कि उस सर्दारने भीलवाडा वग़ैरह २७ गावोंपर, जो डागलके ज़िलेमें राणाके सर्हदी इलाकेपर हैं, और जिनकी बाबत राणा एक मह्ज़र उनके बाप रावल कुशलसिंह और डूंगरपुरके ज़मींदार रावल खुमानसिंहके हाथकी रखता है, बेफ़ायदह दावा करके ज़ुल्म और दख़्ल दे रक्खा है यह बात बादशाही दर्गाहमें बहुत ख़राब मालूम होती है, और हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा जाता है, कि इस कागजके पहुंचतेही राणाके इलाक़ेपर बेजा दख़्ल न करें; इस मुआमलेमें हुज़ूरकी तरफ़से सख़्त ताकीद समझें. ता० २५ ज़िल्काद सन् ४६ जु० आ० [हिज्री १११३ = विक्रमी १७५९ वैशाख कृष्ण ११ = ई० १७०२ ता० २३ एप्रिल].

२७- नव्वाब शायस्तहख़ांकी रिपोर्टका खुलासह ता० ३ शअ्बान सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७५९ पौष शुक्ल ५ = ई० १७०२ ता० २४ डिसेम्बर].

सुब्हके वक़्त राजा इस्लामख़ांने मालवेके सूबेदार नव्वाब शायस्तहख़ांके पास

आकर जाहिर किया, कि राणा अमरसिंहकी फ़ौज इस्लामपुरके इलाकेमे आगई है, जिससे गावकी रअ्य्यत भागती है नव्वाबने कहा, राणाका मोतबर वकील हर वक्त मेरे पास रहता है, मै उसको ताकीद करता हूं, कि बादशाही मर्ज़ीके खिलाफ़ कोई कार्रवाई न होने पावे नव्वाबने राणाके वकीलको ताकीद की, जिसने जवाबमे ज़ाहिर किया, कि हमारे ठिकानेदारको बादशाही मुल्कपर हाथ डालनेकी हिम्मत नही है राजा इस्लामखां और प्रतापसिंह देवलिया वालेके बेटे कीर्तिसिंहने अपने जानेके लिये हीला बनाया है, अगर मेरा मालिक कोई नुक्सान पहुचावे, तो मै मुचल्का लिख देताहू, राणाको राजासे कोई दुश्मनी भी नहीहै वकीलने मुचल्का लिख दिया

मुचल्केकी नक्ल

मेरा नाम बाघमल है, राणा अमरसिंहजीका वकील हू, इक्रार करता हूं, कि राजा इस्लामख़ाने अपनी मुहरसे लिख दिया है, कि राणाजी मुझसे दुश्मनी रखते है, और अनोपपुरा वगैरह रामपुरेके इलाकोको लूटना चाहते है मेरे ठिकानेदारको राजासे कुछ दुश्मनी नही है, बल्कि राजासे बहुत मुवाफ़्कत रखते है, इस्लामपुरेके इलाकेको लूटना उनके खयालमे भी नहीं है अगर राणाजीकी फौज इस्लामपुरका इलाक़ह लूटे, मै उसकी जवाबदिहीके वास्ते हाज़िर हूं

२८– महाराणा २ अमरसिंहका खत, जुल्फ़िकारखा बख़्शीके नाम

[विक्रमी १७५९ = हि० १११४ = ई० १७०२]

बुजुर्ग बादशाही मिहर्बानियें उन बडे दरजेके दोस्त बख़्शियुल् मुल्कके हालपर जारी रहे, बाद शौकके मालूम हो, कि इससे पहिले नव्वाब जुम्दतुलमुल्कके फर्मानेके मुवाफिक एक अर्जी फ़त्हकी मुबारकबादीमे मए किसी कद्र नज्रके बाघमलकी मारिफ़त भेजी थी, यकीन है, कि हुजूरमे पेश की हो आपने हुजूरके रूबरू मेरे मोतबर पचोली बिहारीदास और सलामतराय मुन्शीको जमइयत भेजनेके वास्ते फ़र्माया था, उसके मुवाफ़िक अपने काका कीर्तिसिंहको मए जमइयतके रवानह किया है, अगर खुदाने चाहा, तो खैरियतसे पहुचकर आपकी मन्शाके मुवाफ़िक़ बादशाही काममे मसरूफ होगा. जबसे कि मेरे वकीलोने आपकी साफ तबीअतका हाल लिखा है, मुझको हर तरहकी बे फ़िक्री है, यक़ीन है, कि मेरे कामोमे ख़याल रक्खेंगे, ज़ियादह क्या तक्लीफ़ दी जावे.

२९- अमीरुल्उमरा शायस्तहख़ांकी यादाश्त, ता० ७ ज़िल्काद ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० चैत्र शुक्र ९ = ई० १७०३ ता० २६ मार्च] हि० ता० २७ ज़िल्काद [वि० वैशाख कृष्ण १३ = ई० ता० १५ एप्रिल] को दुबारा पेश हुई-

कि पर्गनह सिरोही वग़ैरह इलाक़ह अजमेरमे से एक किरोड़ दाम जमापर, १००० सवार दक्षिणमे नाज़िमके पास हाज़िर रहनेकी शर्तपर शुरूअ् रबीअ् ईलसे राणा अमरसिंहकी जागीरमे मुकर्रर हुआ, मुनासिब है, कि चौधरी, कानूनगो, पटेल, रअय्यत और करसे, कुल जवाबदिही और दीवानीके मुआमले सफ़ाईके साथ, लिखे हुए सर्दारके आगे पेश करते रहे, और उसकी मर्ज़ीके बखिलाफ़ कार्रवाई न करे. ५ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० वैशाख शुक्ल ७ = ई० १७०३ ता० २३ एप्रिल]

पुश्तकी इबारत

मुकर्रर जागीर राणा अमरसिंहके नामपर याद्दाश्तके मुवाफ़िक़ पर्गनह सिरोही और आबूगढ, ज़िले जोधपुर सूबह अजमेरमे से, १००० सवार दक्षिणमे नाज़िमके साथ रहनेकी शर्तपर इनायत किया गया, दो पर्गने एक किरोड़ बीस लाख दामकी जमामेसे बीस लाख दाम तख़्फ़ीफ़ किये गये

३०- मालवेके सूबहदार अमीरुल्उमरा शायस्तहख़ांका ख़त, अली अहमद फ़ौज्दारके नाम, ता० ९ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = वि० १७६० वैशाख शुक्ल ११ = ई० १७०३ ता० २७ एप्रिल]

सर्कारी ख़ैरख़्वाह सय्यद अलीअहमद ख़ुश रहे, मालूम हो, कि पर्गनह सिरोही और आबूगढ बादशाही दर्गाहसे सनदके मुवाफ़िक़ बहादुर सर्दार राणा अमरसिंहको बख़्शा गया; इस वास्ते हुक्मके मुवाफ़िक़ लिखा जाता है, कि राणाके आदमियोकी मदद करके थानहदारोंपर ताकीद रक्खे, कि बर्तरफ़ जमीदार बादशाही इलाक़हमें रहकर रास्तह चलने वालोंको लूट मार न करे, और दख़्ल न पावे. इस मुआमलेमे बादशाही तरफ़से ताकीद जानकर लिखे मुवाफ़िक़ अमल रक्खे.

३१- मालवेके सूबहदारका खत यूसुफ़अली फ़ौज्दारके नाम

इज्ज़तदार यूसुफ़अली खुश रहे, मालूम हो, कि पर्गनह सिरोही और आबूगढ़ बादशाही दर्गाहसे बड़े दरजेके राणा अमरसिंहकी जागीरमें सनदके साथ बख़्शा गया है, मालूम होता है, कि अजीतसिंह राठौड़ बर्तरफ़ ज़मीदारको मदद देता है बादशाही हुक्मोंकी तामील ज़रूर है, इस लिये अजीतसिंहको सख़्त ताकीद करदे, कि उसकी मददसे माज़ूल ज़मीदार इलाक़हके रहने वालों और रास्तह चलने वालोंकी जान व मालपर लूट मार न करे इस मुआमलेमें बादशाही ताकीद है ता० ११ ज़िल्हिज सन् ४७ जु० आ० [हि० १११४ = विक्रमी १७६० वैशाख शुक्ल १२ = ई० १७०३ ता० २९ एप्रिल]

३२-नक़्ल याददाश्त, महाराणा २ अमरसिंहकी तरफ़से

हक़ीक़त यह है, जब हज़रत बादशाहने राणा राजसिंहपर चढ़ाई फ़र्माई थी, उस ज़मानेमें राणाके वकीलोंने सुल्हके वास्ते हुज़ूरमें जाकर सुल्हका बयान पेश किया, हज़रतने फ़र्माया कि जिज़्यह उसको देना पड़ेगा आख़िर बहुतसी रद व बदलके बाद जिज़्येके एवज़में पर्गने बदनौर, मांडलगढ़ और पुरको लेलिया, और सुल्ह होगई इसके पीछे खुद हज़रत अजमेरको तश्रीफ़ लेगये, कि इसी अर्सेमें राणा मज़्कूरका इन्तिकाल होगया; हुज़ूरसे राजाईका टीका राणा जयसिंहको मिला इन राणाने अर्ज़ कराया, कि पर्गने मज़्कूर इनायत होजावें, उनके एवज एक लाख रुपया सालाना अजमेरके सर्कारी खज़ानेमें अदा करता रहूंगा. यह बात मन्ज़ूर फ़र्मा लीगई, और फ़र्मान पर्गनोंकी बाबत ख़िल्अ़त और हाथी समेत सूबहके दीवान मुहम्मद स्वलाह की मारिफ़त हासिल हुआ, कि मामूली रुपया ख़ज़ानेमें अदा होता रहे इसके बाद राणा जयसिंह गुज़र गया, पर्गने मज़्कूर राठौड़ोंकी जागीरमें तनख़्वाहके तौर मुक़र्रर होगये फिर बादशाही हुक्म राणा अमरसिंहके नाम जारी हुआ, कि एक हज़ार सवारकी जमइयत हुज़ूरमें भेजदे, जब यह फ़ौज हाज़िरी देगी, तो पर्गने इनायत हो जावेंगे इस लिये हुक्मके मुवाफ़िक़ जमइयत मज़्कूर हुज़ूरमें

भेजदी है, जो अब दक्षिणकी लड़ाइयोमे चाकरी दे रही है, लेकिन् पर्गने अभी तक अता नही हुए अब मै जनाब नव्वाब साहिब (वजीर) की बुजुर्गीसे उम्मेद् रखता हू, कि इस बाबत हुजूरमे कोशिश करके पर्गनोके मिलनेसे काम्याब फर्मावे, ताकि बादशाही हुक्मके मुवाफिक एक लाख रुपया सर्कारी खजानेमे दाखिल होता रहे, या एक हजार सवार मौजूदी हुजूरमे चाकरी करते रहे, और मालूम हो कि तीन किरोड दाम इन्आममेसे एक किरोड दामकी तन्ख्वाह वुसूल हुई है, और दो किरोड दाम सर्कारमे मागता हू

३३- मालवेके सूबहदार अमीरुल् उमरा शायस्तहखाका खत, अली अहमद फौज्दारके नाम, ता० १८ शव्वाल सन् ४८ जु० आ० [हि० १११५ = वि० १७६० फाल्गुन् कृष्ण ४ = ई० १७०४ ता० २४ फेब्रुअरी]

बादशाही खैरख्वाह अली अहमद खुश रहे, इन दिनोमे राणा अमरसिंहके वकीलकी अर्जसे मालूम हुआ, कि पर्गने सिरोही और आबूगढ़के चौधरी और कानूनगो उस एक किरोड़ दामकी जागीरको राणा अमरसिहसे ज़ब्त होना मश्हूर करके जवाबदिही नही करते है बादशाही दफ्तरसे यह जागीर उनके नाम बहाल पाई जाती है, इस लिये लिखा जाता है, कि चौधरी, कानूनगो और रअय्यत वगैरहको ताकीद करदे, कि दस्तूरके मुवाफिक दीवानी और मालकी जवाबदिही जिक्र किये हुए सर्दारके पास करते रहे, हिसाबी कार्रवाईमे कुछ फ़र्क़ न हो, ताकीद जाने

३४- जुल्फिक़ारखा बहादुर, नुस्रत जग, बख्शियुल्मुल्कका खत, महाराणा अमरसिंहके नाम, ता० १२ रबीउल् अव्वल सन् ४८ जु० आ० [हि० १११६ = वि० १७६१ आषाढ शुक्ल १३ = ई० १७०४ ता० १५ जुलाई]

उन बडे दरजेके इज्ज़तदार दोस्तकी उम्मेदो और कार्रवाईका बाग् बादशाही मिहर्बानियोसे सर्सब्ज़ हो, बाद शौकके मालूम हो, कि दोस्तीका खत पहुच कर खुशीका सबब हुआ पर्गनह मांडलगढ और बदनौर वगैरहकी जागीरके लिये पहिले भी हुजूरमे अर्ज़ किया गया था, और अब फिर इरादह है. दोस्तीके लिहाज़से एक हजार सवारकी रसीद दी जाती है, वर्नह जमइयत बहुत कम है,

इस बातपर ताकीद समझ कर और आदमी भेजे. उम्मेद है, कि इसी तरीकेपर दोस्तीके खत भेजते रहें जियादह क्या लिखा जावे

ऊपर लिखे तर्जमोंका खुलासह

१ नम्बरके कागजका जो तर्जमह लिखा गया, उसका मत्लब यह मालूम होता है, कि वज़ीर असदख़ाने उदयपुरके वकीलोंकी तसल्लीके लिये बादशाहसे अर्ज़ करनेको यादके तौरपर सब काम लिखे हैं, जिसपर बादशाहने पेन्सिलसे खुद हुक्म लिखा है; और उसकी नक्ल तसल्लीके लिये वज़ीरने, उदयपुरके वकीलोंको दी होगी, और उन्होंने उदयपुर भेजी, कामोंकी तफ्सील बदनौर, पुर माडल, और माडलगढका कुछ ज़िक्र है, जो हम ऊपर हिन्दी कागज़की नक्लके साथ लिख आये हैं, लेकिन् राठौड़ कर्णसिंह और जुझारसिंहको बादशाहने ये पर्गने जागीरमें देदिये, और इन राठौड़ोंसे बार बार फ़साद होता रहा, और बादशाही मुलाज़िमोंके कई कागजोंमें भी इनका ज़िक्र है पाठक लोगोंको यह सदेह न रहे, कि ये लोग कौन थे, इस लिये थोडा ज़िक्र इनका वश वृक्षके साथ नीचे लिखते हैं –

जोधपुरके राव मालदेवके बेटे राजा उदयसिंह थे, जिनका जन्म विक्रमी १५९४ माघ शुक्ल १२ रविवार [हि० ९४४ ता० ११ शअ्बान = ई० १५३८ ता० १३ जैन्युअरी] को हुआ, और विक्रमी १६४० भाद्रपद कृष्ण १२ [हि० ९९१ ता० २६ रजब = ई० १५८३ ता० १५ ऑगस्ट] को जोधपुर आये; बादशाह अक्बरसे जोधपुरका राज्य और राजाका ख़िताब हासिल किया, और विक्रमी १६५१ आषाढ शुक्ल १५ [हि० १००२ ता० १४ शव्वाल = ई० १५९४ ता० ३ जुलाई] को लाहौरमें उनका देहान्त हुआ इनके १७ बेटे थे, जिनमेंसे तेरहवें (१) माधवदासकी औलादके ज़िले अजमेर, जूनिया, महरू, पीसांगण वगैरहमें अभी तक इस्तिमूरादार कहलाते हैं, उनका वश वृक्ष मए गावों वगैरह जागीरके नीचे लिखते हैं माधवदासका बेटा केसरीसिंह, जिसको बादशाही दर्बारसे पीसांगण जागीरमें मिला था, और उसका बेटा सुजानसिंह, जिसने जूनियां तो गौड़ राजपूतोंसे, और महरू सीसोदियोंसे छीन लिया था.

---

(१) जे० डी० लाटूश साहिब अजमेरके मुहतमिम् बन्दोबस्त, पांचवां बेटा होना लिखते हैं, और जोधपुरकी तवारीखसे तेरहवां बेटा होना पाया जाता है
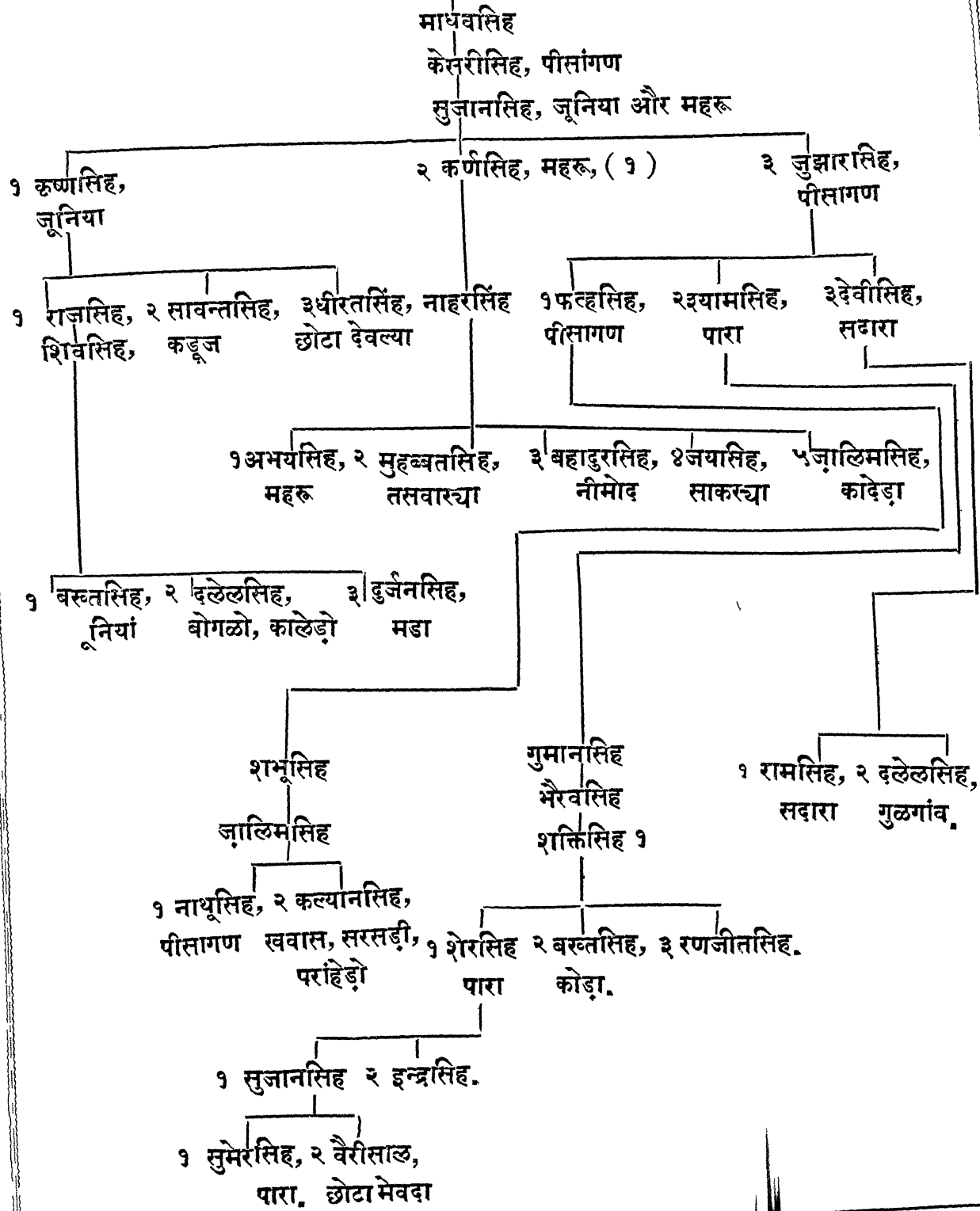
(१) कर्णसिंहको आलमगीरने बदनौर मेवाडसे लेकर जागीरमे [illegible]ा, और पुर माडल उसके बड़े भाई कृष्णसिंहको व मांडलगढ़ जुझारसिंहको दिया था.

इन ऊपर लिखे हुए राठौडोकी औलाद इन्ही गावोमे मौजूद है, जैसा कि ऊपर लिखे नसब नामेसे जाहिर होती है गवर्मेण्ट अंग्रेजीके मातहत नीचे लिखे मुवाफ़िक सालाना मालगुजारी अजमेरके सर्कारी खज़ानेमे जमा कराते है इन लोगोको दीवानी फौज्दारीका कुछ इख्तियार नही है

जूनियांवाले,	कोडा,	सदारा,	गुळगाव,	कादेड़ा,
रु०५७२३॥≡	रु०५३६।≡॥	रु० ८५१	रु० ८०१।–॥	रु० ११९४।≡॥।
मंडो,	बोगळो, कालेडो,	कडूज,	देवल्या छोटा,	मेवदा छोटा,
रु० २४९	रु० १६००≡२	रु०१७१३।–१	रु०७९९॥।–॥।	रु० ७८८।–
महरू,	तसवारिया,	नीमोद,	साकरया,	
रु०५३५९॥,१	रु०१०२३।,॥।१	रु० ६१२॥–॥१	रु० ४०७	
पीसागण,	खवास, सरसडी,	पराहेडा,	पारा,	
रु०४५६३॥।=२	रु०११९३७॥।–॥।	रु०१६९५॥,७	रु०२४९२=।२	

जूनियाके कृष्णसिहका बेटा राजसिह, जो बडा बहादुर आदमी था, अपनी जागीर पुर और माडलपर क़ाबिज रहकर मेवाडके राजपूतोसे लडा भिड़ा करता था जियादह तर सीसोदिया चूडावतोसे उसकी अदावत होगई, उसने कई चूडावतोको मार मारकर पुरके नज्दीक पहाड़ीकी खोहमे, जिसको 'अधरशिला' कहते है, डाल दिया, उस वक्त किसी शाइरने मारवाड़ी जबानमे यह दोहा कहा –

दोहा

खेती थारी राजडा रस आई रावत्त ॥
अधर शिला तळ ओठिया चुण चुण चूडावत्त ॥ १ ॥

यह बादशाह आलमगीरकी हिक्मत अमली थी, कि राजपूत लोग आपसमे लडकर मारे जावे, और कम ताकत हो, लेकिन् राठौडोकी बहादुरीमे शक नही, क्योंकि बड़े ताकतवर मेवाडके महाराजा धिराजसे बख़िलाफ़ रहकर बेदिल न होना बग़ैर दिलेरीके नही होसक्ता

अव्वल नम्बर फार्सी काग़जका तर्जमह, वजीरकी याद्दाश्त है, पहिली क़लमका मत्लब, जो कर्णसिह, जुझारसिंहके बारेमे है, खुलासह लिखा गया. दूसरी बात उस याद्दाश्तमे यह है, कि डूगरपुरके जागीरदारने चित्तौड़ वग़ैरहकी बाबत जो कुछ लिखा, उसमे कुछ सचाई नही है, और ज़मीदार नामके लिये मन्सबदार

है, जिस क़द्र उसको अहमदाबाद आनेके लिये लिखा जाता है, उसका कुछ नतीजा नहीं निकलता इस यादका यह मत्लब था, कि डूंगरपुर, बांसवाडा, और देवलिया प्रतापगढके राजा हमेशहसे मेवाडके मातह्त रहे, लेकिन् चित्तौडपर बादशाह अक्बरका हम्ला होनेके बाद यह तीनो ठिकाने कभी बादशाही नौकर और कभी उदयपुरके मातह्त होते रहे जब महाराणा जयसिंहका इन्तिकाल हुआ, और अमरसिंह गद्दीपर बैठे, तब इन लोगोने गद्दी नशीनीका दस्तूर, जिसको टीका कहते है, नहीं भेजा, महाराणा अमरसिंहने नाराज़ होकर महाराज सूरतसिंह भगवन्तसिंहोतको डूंगरपुरकी तरफ़ भेज दिया, सोम नदीपर डूंगरपुरके जागीरदार चहुवान राजपूत मुक़ाबला करके मारे गये, रावल खुमानसिंह डूंगरपुरसे भाग गये, मेवाड़की फ़ौजने शहरको लूटा आखिरकार देवगढके रावत् चूंडावत द्वारिकादासकी मारिफ़त रावल खुमानसिंहने सुलह चाही, टीकेका दस्तूर उदयपुर भेज दिया, और फ़ौज ख़र्चके एक लाख पचहत्तर हज़ार रुपये की जमानत द्वारिकादासने दी, और रुपया वुसूल करनेके लिये पचास सवार डूंगरपुर छोड़कर फ़ौज वापस आई रावल खुमानसिंहने बादशाही हुज़ूरमे अर्ज़ी लिख भेजी, कि महाराणा अमरसिंह बादशाही मुल्कपर हम्ला करनेके इरादेसे फ़ौज इकट्ठी करके चित्तौडगढकी मरम्मत करवाते है, और मुझको भी अपने शरीक होनेको कहा, लेकिन् मै राज़ी न हुआ, इस लिये फ़ौज भेजकर मुझको तबाह किया इस अर्ज़ीके सुननेसे बादशाह नाराज हुआ होगा, लेकिन् दक्षिणकी लडाइयोके सबब इस बातको दर्याफ़्त करनेका हुक्म दिया, तब वजीरने अहमदाबाद और अजमेरके सूबोसे दर्याफ़्त किया, जिसके जवाबमे सूबोंने रावल खुमानसिंहके लिखनेको ग़लत होना जाहिर किया

तीसरे - उस याद्दाश्तमे यह ज़िक्र है, कि रामराय और पृथ्वीसिंहके हाथ टीका भेज दिया जावे; इसका मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंह, कर्णसिंह, जगत्‌सिंह, और राजसिंहके इन्तिकाल होनेसे वक्त वक्तपर बादशाह जहांगीर, शाहजहां और आलमगीर गद्दी नशीनीका दस्तूर फ़र्मान, खिल्अ़त वग़ैरह किसी बड़े मन्सबदारके हाथ भेजते रहे, उसी तरह महाराणा जयसिंहके इन्तिक़ाल होनेपर अमरसिंह भी चाहते थे, क्योंकि जयपुर, जोधपुर और बीकानेर वग़ैरहके दूसरे राजाओंके लिये टीकेका दस्तूर घरपर बादशाह नही भेजते थे, दर्बारमे हाज़िर होनेपर बतौर ख़िल्अ़तके उनको मिलता था; इस लिये मेवाड़के राजा उस दस्तूरके जियादह ख्वास्तगार रहते थे. हज़ार सवारके बारेमे जो लिखा, यह वही हजार सवारकी जमइयत है, जो बादशाह जहांगीरके वक्त क़रारनामेसे क़रार पाई थी, लेकिन् इसकी तामील होनेमे हमेशह हुज्जत और तक़रार पेश आती रही जब ज़ियादह दबाव देखा,

भेज दिया, वर्नह टाल दिया इस वक्त महाराणा अमरसिंहके कई मत्लब दर्पेश थे सिरोही, ईडर, डूंगरपुर, बांसवाडा, प्रतापगढ, रामपुरा, मांडलगढ, पुर मांडल, और बदनोर वगैरह कब्जेसे निकले हुए पर्गनोंको फिर शामिल करनेकी कोशिशमें थे, इस लिये हजार सवारोंकी जमइयत देना मंजूर किया

कागज नम्बर २, जो वजीरने बख्शियुल्मुल्कके नाम लिखा है, उसमें ऊपर बयान की हुई बातोंका, और वकीलोंके मुचल्केका जिक्र है

कागज नम्बर ३ भी ऊपर जिक्र किये हुए बारेमें वजीरने महाराणाके नाम लिखा है

कागज नम्बर ४ यानी कायस्थ केशवदास वकीलकी अर्जी ऊपर लिखी बातोंके बारेमें इत्तिलाअ्न व मस्लिहतन है

कागज नम्बर ५ किसी बादशाही सर्दारका शक्तावत कुशलसिंहके नाम है, जो महाराणा अमरसिंहका एतिबारी नौकर था, और जिसकी औलादके कब्जेमें इस वक्त विजयपुरका ठिकाना है, और वह रावल खुमानसिंह डूंगरपुर वालेकी बाबत है, जिसका हाल ऊपर लिखा गया

६ नम्बर कागजका मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंह तेज मिज़ाज थे, और अपने पुराने खुदमुरूतार ख़ान्दानका गुरूर रखते थे, जिससे हर वक्त झुंझलाकर बादशाहतके बर्खिलाफ कार्रवाई करना चाहते थे, और पहिले भी जब गद्दी नशीनी का मौका हुआ है, उस वक्त टीका दौड़में मालपुरेका ही लूटना मुकर्रर था, जो बूंदीके नज्दीक बादशाही खालिसेमें था, और अब रियासत जयपुरके कब्जेमें है महाराणा अमरसिंह पन्द्रह बीस हजार फौज लेकर अपने ननिहाल बूंदी पहुंचे, यकीन है कि महाराणाका इरादह मालपुरा लूटनेका हुआ होगा, लेकिन् उनके सलाह कारोंने मौका न देखकर मना किया, इससे वापस चले आये होंगे, और तीर्थका बहाना बनाया; क्योंकि बूंदीकी तरफ कोई ऐसा तीर्थ नहीं है, जहां गद्दीपर बैठतेही महाराणा जाते. कियाससे मालूम होता है, कि उनके सलाहकारोंने कहा होगा, कि डूंगरपुर, बांसवाडा, देवलिया और रामपुरा वगैरहको मातह्त करना और सिरोही व ईडरपर कब्जा करना और जिज्यहके एवज, जो तीन पर्गने निकल गये, उनको वापस लेना चाहिये, बादशाही मुखालफतमें इन सब कामोंसे ना उम्मेद होना पडेगा दूसरे यह भी कहा होगा, कि बादशाह आलमगीर जईफ है, उसके मरनेपर बादशाहतमें भी बखेडा पड़ेगा, यानी उनके बेटे आपसमें लडेंगे, उस वक्त अपने दिलका गुबार निकालना बिहतर होगा, जैसे कि महाराणा राजसिंहने किया इस तरहकी बातें सोचकर महाराणा वापस चले आये, और वजीरने जो कागज़ लिखा है, वह बिल्कुल बादशाही हिदायतके मुवाफिक़ होगा; क्योंकि औरंगजेब आलमगीर दक्षिणकी लड़ाइयोंमें फंसा हुआ अस्सी वर्षसे भी

ज़ियादह ज़ईफ़ था, और राजपूतानामें फिर आग भड़क उठनेकी उसको फ़िक्र थी; इस लिये अपने वज़ीर असदख़ांसे दोस्ती रखने और ख़ानगीमें हिदायतें करनेके इरादेसे लिखाया होगा.

७ वां काग़ज़, महाराणा अमरसिंहकी अ़र्ज़ीका मुसव्वदह है, जो ऊपर लिखे, याने छठे नम्बर वज़ीरके काग़ज़के जवाबमें बादशाहके नाम लिखी गई.

नम्बर ८, वज़ीरकी याद्दाश्त है, जो शायद बादशाहको मालूम करनेके लिये लिखी होगी.

काग़ज़ नम्बर ९, वज़ीर असदख़ांका महाराणा अमरसिंहके नाम है, जिसका यह मत्लब है, कि अजमेरके सूबे सय्यद अ़ब्दुल्लाख़ांकी सिफ़ारिश आनेपर सब काम (१) होजावेंगे.

काग़ज़ नम्बर १०, अजमेरके वाक़िअ़निगारकी ख़बर लिखी हुई है, जिससे महाराणाकी ख़्वाहिश झगड़ा करनेकी तरफ़ साबित होती है.

काग़ज़ नम्बर ११, किसी बादशाही सर्दारका अजमेरके सूबेदारके नाम पर्गने बदनौर वग़ैरहकी बाबत है.

काग़ज़ नम्बर १२, महाराणाने किसी शाहज़ादेके नाम ऊपर लिखे पर्गनोंकी बाबत जुझारसिंह वग़ैरहकी शिकायतके बारेमें लिखा है, और चूंडावतों और राठौड़ोंके आपसमें जो फ़साद हुआ, उसका ज़िक्र हम ऊपर लिख आये हैं. यह आमेठका रावत् दूलहसिंह था, जिसके भाइयोंको कर्णसिंहका भतीजा कृष्णसिंहका बेटा राजसिंह पकड़ ले गया था, उसके एवज़ महाराणाके इशारेसे देवगढ़के रावत् द्वारिकादास और मगरोपके महाराज जशवन्तसिंहने पुर मांडलपर हम्ला करनेकी तय्यारी की, लेकिन् आपसकी शर्तोंमें ग़फ़्लत होनेसे देवगढ़ रावत् तो ल्हेसवे गांवमें ठहर गया, और मंगरोप महाराज मए अपने भाइयों पेमसिंह और बख़्तसिंहके पुरके गढ़में जाघुसा. राठौड़ राजसिंहने मुक़ाबला किया, लेकिन् भागकर मांडलमें जा छिपा, वहां भी जशवन्तसिंह आ पहुंचा, और राजसिंहको मांडलसे भी निकाल दिया. इस लड़ाईमें राठौड़ और सीसोदियोंके बहुतसे आदमी मारे गये, लेकिन् फ़त्ह सीसोदियोंकी रही. महाराणाने अ़लहदह रहकर यह कार्रवाई की, जिसमें बादशाहको जवाब देनेकी जगह रहे.

काग़ज़ नम्बर १३, कोई ख़बरका काग़ज़ मालूम होता है; लाला नन्दराय मुन्शी कोई कायस्थ क़ौमका बादशाही मुलाज़िम होगा, जिसे कुछ रिश्वत न मिली; इससे वह बादशाहको भड़काता था, और नारायणदास कुन्बी

---

(१) काम वही हैं, जो ऊपर लिख चुके हैं, याने डूंगरपुर, बांसवाड़ा, देवलिया वग़ैरहको मातहत करके सिरोही और ईडरपर क़ब्ज़ा करना वग़ैरह, और जिज़्यहके एवज़, जो पर्गने दिये, वह वापस लेना. ऊपर लिखे हुए हमारे क़ियासको इस काग़ज़का मज़्मून ज़ियादह मज़्बूत करता है.

नन्दरायका दोस्त गुजरातका रहने वाला बादशाही मन्सबदार था, और जोधपुर खालिसह होनेपर उसको जागीर भी मारवाडमे मिली थी, और वह कर्णसिह, जुझारसिहकी विकालत भी करता था पाठक लोगोको मालूम हो, कि आलमगीरके मुलाजिमोका ढग बहुत खराब था, अगर नन्दराय मुन्शीके कहनेसे मेवाडपर फौज-कशी कीजाती, तो बादशाहका बहुत खर्च पड़ता, और नन्दराय मुन्शीकी बेईमानीसे रिश्वत लेनेकी तादाद बहुत कम होगी अब सोचना चाहिये, कि जिस बादशाहके मुलाजिम अपने थोडे मत्लबके लिये मालिकका जियादह नुक्सान करने पर कुछ निगाह न करते हो, वह बादशाहत कब तक ठहर सक्ती है ऐसे खुद मत्लबी मुलाजिमोका नतीजा थोडे ही दिनोमे आलमगीरके बाद जुहूरमे आया, और वह बादशाहत तबाह होगई

कागज नम्बर १४, वजीरके नाम वकील मेवाडकी दर्ख्वास्त है, इस दर्ख्वास्तसे यह मत्लब होगा, कि पर्गने खालिसेमे रहनेसे किसी मौकेपर फिर मेवाडमे शामिल हो सक्ते है, और दूसरेकी जागीर होनेसे उस जागीरदारकी कोशिशके सबब मेवाडके मत्लबमे खलल रहेगा

१५ वा कागज, वजीर असदखाका महाराणा अमरसिहके नाम वकीलोकी सिफारिश और जमइयत भेजनेकी बाबत है, जिसमे वकील पृथ्वीसिह और राम-रायका नाम लिखा है, सो पृथ्वीसिह भीडर महाराज अमरसिहका बडा कुवर था, जो बादशाह आलमगीरके पास भेजा गया, और वही लडाइयोमे मारा गया, जिसका छोटा भाई जैतसिह भीडरका मालिक बना रामराय कोई अहल्कार कायस्थ था

कागज नम्बर १६ का मत्लब यह है, कि राव गोपालसिह रामपुरा वालेको पेश्तर महाराणा अमरसिह अपना मातहत करना चाहते थे, लेकिन् महाराणाका इरादह पूरा न हुआ, और मुख्तारखां वगैरह बादशाही मुलाजिमोने गोपालसिहको निकाल कर यह इलाकह उसके बेटे रत्नसिह (इस्लामख़ा) को देदिया जब राव गोपालसिह लूट मार करने लगा, तब महाराणा अमरसिहने खानगी तौरपर उसको मदद दी, और गाव सतूखधाका शक्तावत राजसिह, जिसका बड़ा बेटा कल्याणसिह, तो सतूखधामे रहा, जिसकी औलादमे अब पीपल्याके जागीरदार है, और दूसरा बेटा कीता, उसको गाव बीनोता जागीरमे मिला, इसके चार बेटे थे, जिनमेसे बडा सूरतसिह तो बीनोतेका मालिक रहा, और छोटा उदयभान था, जिसको महाराणा अमरसिहने जुदी जागीर 'मालका' 'बाजणा' वगैरह दी, और महाराणाके हुक्मसे वह राव गोपालसिहको मदद देता था, और इस काग़ज़मे राठौडोका भी राव
गोपालसिहको मदद देना लिखा है, ये राठौड रतलामके भाइयोमेसे होगे

१७ वा कागज, किसी सर्दारका या तो किसी बादशाही मुलाजिमके नाम है, जो उनको हिदायत करे, या खुद राजा भीमसिहके बेटे सूर्यमल्लके नाम होगा, क्योंकि भीमसिहके मरने बाद मन्सब और पट्टा सब जब्त हो गया था, और इसी कोशिशके वास्ते राजा भीमसिहके छोटे बेटे ज़ोरावरसिह बादशाही हुजूरमे विक्रमी १७५६ आश्विन [हिज्री ११११ रबीउस्सानी = ई० १६९९ ऑक्टोबर] मे पहुचे, जिसका हाल उदयपुरके वकील जगरूप और बाघमल्लकी अर्ज़ीमे लिखा है, जो महाराणा अमरसिहके नाम अख्बारके तौर पर भेजी है महाराणा अमरसिहकी कोशिशसे बनेडा फिर भीमसिहके बेटे सूरजमल्लके कब्जेमे होगया, और ईडरका जिक्र इस वास्ते है, कि महाराणा अमरसिह बनेडाकी निस्बत ईडरको अपने तअल्लुक करना जियादह चाहते थे, जिसका जिक्र मौकेपर लिखा जावेगा

१८ वा खत, वजीर असदखाका सूबेदारके नाम महाराणा अमरसिंहके खतके जवाबमे, कर्णसिह और जुझारसिहको समझादेनेके वास्ते है

१९ वा कागज, शाहजादह शाहआलम बहादुरशाहका महाराणाके नाम है, जिसमे इशारे लिखे है, उससे मालूम होता है, कि जिस तरह शाहजादह मुहम्मद आजमने महाराणा जयसिहके साथ अपने मत्लबके इक्रार किये थे, उसी तरह शाहजादह शाह आलमने भी इन महाराणाके साथ किये होगे, और बादशाही खैरख्वाही रखनेसे भी यही मुराद होगी, कि जब तक मौका आवे, तब तक बादशाही मर्जीके बर्खिलाफ न हो

कागज़ नम्बर २०, जो वजीरके नाम बादशाही लश्करसे बादशाही हुक्मके मुवाफिक फजाइलखाने लिखा है, उसमे डूगरपुरके रावलकी गलत बयानीका जिक्र है

२१ वा कागज, नव्वाब असदखाका फजाइलखा मुन्शीके नाम डूगरपुरके मुआमलेमे है, जिसका जिक्र ऊपर होचुका

२२ वे कागजमे वही डूगरपुरके मुआमलेका जिक्र है, वजीरने दोबारह अहमदाबादके सूबहदारसे तहकीकात कराई है

२३ वे कागजका मत्लब यह है, कि महाराणा अमरसिंहके गद्दीनशीनीका दस्तूर, जिस तरह कि हमेशह आता था, इस वक्त भी आया, और शाहज़ादहसे मुराद शायद शाह आलम बहादुरशाहसे होगी

२४ वां कागज, वजीरका महाराणाके नाम है, जिसका यह मत्लब है, कि शाहजादह मुहम्मद आजमको गुजरातकी सूबहदारी मिली थी, उसकी सलाहके बर्खिलाफ काम न करनेकी हिदायत है शाहजादह महाराणासे, और महाराणा शाहजादहसे खुश थे, पहिले महाराणा जयसिहके वक्तमे इसी शाहज़ादहकी मारिफत सुलह हुई थी और शाहज़ादहने अपने मत्लबका इक्रार नामह भी महाराणाके नाम लिखा था, जिसकी

नक्ल हम महाराणा जयसिंहके हालमे लिख चुके हैं इस वास्ते महाराणासे हज़ार सवारकी जमइयतकी नौकरी शाहज़ादहने अपने पास लेनी चाही, कि जिसके मुवाफ़िक वज़ीरने महाराणाके नाम लिख भेजा.

२५ वा कागज़, जो चीज़े कि मेवाडसे शाहजादह या बादशाहके वास्ते भेजी गई, उनकी रसीद शाहजादहके कारखानहकी है

२६ वा कागज, बासवाड़ेके रावल अजबसिंहके नाम वज़ीर असदखांका उन गावोके बारेमे है, जो पर्गनह डागलमेंसे महाराणा राजसिंहने फौज ख़र्चमे ज़ब्त किये थे.

२७ वे कागज़मे रामपुराकी शिकायत है, मुसल्मान होजानेपर राजा इस्लामखां रामपुराके रावका और 'इस्लामपुर' रामपुरेका नाम रक्खा गया था रामपुराके राव गोपालसिंहका बेटा रत्नसिंह, मालवेके सूबहदार मुख्तारखाकी मारिफत मुसल्मान होकर अपने बापको गादीसे खारिज करके खुद मुख्तार बन गया था, लेकिन् राव रत्नसिंहने विक्रमी १७६२ फाल्गुन् शुक्ल ६ [हिज्री १११७ ता० ४ जिल्काद = ई० १७०६ ता० १८ फ़ेब्रुअरी] को एक अर्जी महाराणाके नाम लिखी, जिसकी नक्ल हम नीचे लिखते हैं, इससे मालूम होता है, कि रत्नसिंह दिलसे मुसल्मान नही हुआ, शायद अपने बापके जीते जी खुद मुख्तार होनेकी ग़रजसे दीन इस्लाम इख़्तियार कर लिया हो. इसका मुख्तसर हाल रामपुरेके जिक्रमे लिखा जायगा

राव रत्नसिंहकी अर्ज़ी महाराणा २ अमरसिंहके नाम (१)

सिध श्री उदयपुर सुभ सुथाने श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी एतान, चरण कमलांण लिपत रामपुरा थी सेवग आग्याकारी राव रत्नसिंघ केन, पावां धोक औधारजो जी अप्र— अठाका समाचार श्री— जीकी कृपा श्री दिवाणजीकी सुनजर प्रताप थी सब भला हैजी, श्री दिवाणजीका सुख समाचार सदा सर्वदा आरोग्य आवे तो सेवग है परम सतोक होयजी, अप्र श्री दिवाणजी बडा है, मावीत है, पर्मेश्वर है, मोटा है, इधको कांई लिखाजी, श्री पर्मेश्वरजी श्री दिवाणजी है लाषा साल सलामत राखे श्री जीका तेज प्रताप थी श्रीजीका छोरू सऊपरां है जी, श्री दिवाणजी पान कपूर जतनासू अरोगवाको हुकम करेगाजी, और म्हे श्री जीका सेवक हा, अठे सारो ही ब्योहार श्री दिवाणजीका हुकमको है जी, सेवकसू कृपा सुनजर ठेठ कुवर पणासु है, जणी ही माफ़िक़ हुकम रहे जी, काम चाकरी सेवग लायक व्हे, सु अढायांको हुक्म होबो करेजी, और श्री दिवाणजीको परवाणो हाथ अषरे सेवग

(१) पुराने कागज़ोकी जिस क़द्र नक्ले दर्ज होती है, उनकी इबारतमें कुछ रद्द व बदल नहीं किया गया, और इनमे अक्सर राजपूतानाके रिवाजी संवत् लिखे हैं, जिनको आम तौरपर मुताबिक़ कर दिया गया है.

है इनायत हुवो थो, सो पुहतो माथे चढाय लियो, अषराको द्रसन करे सेवग क्रतारथ हुवोजी, परवानामे हुकम लिख्यो थो, थाको घर सदा स्याम धर्मी है, ज्यूही थे सेवामे चित रापो हो, आ म्हे निश्चय जाणी है सो श्री दिवाणजी पर्मेश्वर है, हिन्दुस्थानका सूरज है, पर्मेश्वरसु अंतेह करणकी बात अर सुरका प्रताप आगे जाहिरी बात छिपी ने रहे है, श्री जी अतर जामी है, भाग है, सेवगको श्रीजी यो हुकम कियो, घणी सेवा जाहिरा महनत करे मिनप षावद है, मावीत है, रिझावे है, जद नीठ या वात पावे है, सो म्हारे अंतह करण बडाकी भगत थी, सो श्री जी जाण यो हुक्म बाच्यो, मै जाणी आज म्हारो जीवतब धन्य है, जीवतवको फल मै आज भर पायो श्रीरामजी श्री दिवाणजी सरषा मावीताकी उमर दराज करे, अर छोरू है याही बुधि जीवे जब ताई देसु स्यामधरमो ही मावितासु रहे, अर मावित सदा सुजाणे रावाको घर सरासर स्याम धरमी है याही बीनती परमेश्वरासु रात दिन करूं हू जी, अर कामके सिर सेवगकी चाकरी पण नजरे आवसी जी, अर हुक्म हुवो दरबारका लोग रामपुरे आया, जणाहे थे जतनां राष्या बाना (यत्न) किया, सो थासु सुख पाया हा, अब रूपजी पचोली हे हजूर बुलाया है, सो थे रूडा माणस साथे दे हजूर मेल्ह जो, रूपजी थी नवाजिस होसी श्री एकलिंगजीकी आण लिष्याको हुक्म हुवो, अर ठाकुर हठीसिंहजी हुक्म थी बोरो लिषसी, सु श्री दिवाणजी सलामत, जो कोई दरबारको लोग आयो रह्यो, सु अणीही वास्ते सेवगने राषे बाना किया श्री दरबारका एही चाकर अर याही जायगा श्री जीकी, अठे रह्यो आदमी श्री जी याद करे, जदे ही सेवामे हाजिर रहे जी, अर रूपजी ही श्री जीका गुलाम चाहिजे, इस्यो सेवग स्याम धरमी लायक आदमी है जी हजूर बापरचा श्री दिवाणजी पण हुकम करेगा, स्याम धरमी गुलाम है जी, अब यो हुक्म पहुच्यो ठाकुरे हुक्मसु दिलासा लिखी, मै रूपजी सूं सब हुक्म थो ज्यू कही, अब फाल्गुण शुदि १० का चाल्या रूपजी हजूर पहुचसी जी, परवानो सदा मया प्रसाद होवु करेजी मि० फाल्गुण सुद ६ सवत् १७६२ का ब्रषे.

---

२८ वां ख़त, महाराणा अमरसिंहका ज़ुल्फ़िक़ारख़ां बादशाही बख़्शीके नाम है, जिसमे जमइयत भेजने वग़ैरहका हाल है.

२९ वां ख़त, अमीरुल् उमराकी याद्दाश्त है, (याद्दाश्तका लफ़्ज़ इस वास्ते लिखा हो, कि बादशाहके नज़ करनेके लिये मुसव्वदह किया होगा, और फिर इसी मुवाफ़िक़ लिखा गया होगा) जिसमे यह मत्लब है, कि जब विक्रमी १६७१ [हिज्री १०२४ = ई०

१६१५] मे बादशाह जहांगीरसे महाराणा अमरसिहका सुलह नामह हुआ, तब एक हजार सवार दक्षिणकी नौकरीमे भेजना ठहरा था, और इन सवारोकी तन्खाहमे जागीर मिलनेका भी इकार था सो जब कभी जमइयत भेजीगई, तब दक्षिणमे और किसी वक्त दूसरे इलाकोमेसे जागीर भी मिली, और जब जमइयत भेजनेमे टालाटूली होती, वह जागीर जब्त होजाती थी इस वक्त जमइयत भेजी, परन्तु महाराणा अमरसिहकी ख्वाहिशके मुवाफिक सिरोहीका इलाकह मिला, जो कदीमसे देवडा चहुवान राजपूतोकी जागीरमे चला आता था यह देवडा राजपूत कभी मेवाडके मातहत और कभी आजाद रहते थे, लेकिन् मेवाडके राजा कदामतसे इस इलाकहको मेवाडके शामिल जानते रहे इस वक्त महाराणाने देवडोको बिल्कुल निकाल देना चाहा था

३० वा खत, मालवेके सूबहदार शायस्तहखां (१) का अली अहमद फौज्दारके नाम सिरोहीकी बावत है, यह खत बे सर्रिश्तह लिखा गया, क्योंकि सिरोही हमेशहसे अजमेरके सूबेमे रही, अजमेरके सूबहदारकी मारिफत कार्रवाई होना चाहिये था ३१ वा कागज़ भी ३० नम्बरके कागज़के बाबमे है

कागज नम्बर ३२ मेवाडके किसी वकीलकी दर्ख्वास्त है, जो सिरोहीका पर्गनह एक किरोड़ दाम आमदनीका मिलजाने और एक हज़ार सवार दक्षिणमे जमइयतके तौर भेज देनेपर दो किरोड दाम आमदनीके एवज पर्गनह बदनौर, माडलगढ़ और पुर मिलनेके लिये वज़ीरके नाम याद्दाश्तके तौर लिखी थी.

३३ वां खत, मालवेके सूबहदारका फौज्दारके नाम पर्गनह सिरोहीकी बाबत है

३४ वां खत, ज़ुल्फिकारखा बख्शीका महाराणाके नाम जमइयतकी रसीद और पर्गनह मांडलगढ़ वगैरहकी कोशिशके बारेमे है

अब हम वह हाल लिखते है, जिसके सबब जोधपुरके महाराजा अजीतसिह और महाराणा अमरसिहमे बर्खिलाफी और दोस्ती हुई सिरोहीके देवड़े कदीमसे राजपूतानहकी बडी रियासतोंके सम्बन्धी रहे, जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिहने भी एक ब्याह सिरोहीमे किया था जब महाराजा जशवन्तसिहका इन्तिकाल पिशावरके पास थाने जम्रोदपर हुआ, उस वक्त उनकी दो राणियां हामिला थी, जिनके लाहौरमे आनेपर दो बेटे पैदा हुए, एक दलथम्बन, दूसरे अजीतसिह दलथम्बन का इन्तिकाल चार महीनेकी उम्रमे होगया, और अजीतसिहको राठौड़ दुर्गदास

(१) शायस्तहखां नूरजहांके भाई आसिफखांका बेटा था

वगैरह जोधपुर लेआये फिर जोधपुर मुसल्मानोने छीन लिया, तो कम उम्र अजीत-सिंहको उनके सर्दार लेकर उदयपुर आये, और उदयपुरसे आलमगीरकी सुलह होने बाद अजीतसिंहको राठौड़ सर्दारोने महाराजा जशवन्तसिंहकी राणी देवड़ीके पास सिरोही भेज दिया, और देवड़ोने इनको पोशीदह रक्खा उस खिद्मतके बाइस अजीतसिंह सिरोहीके देवड़ोकी तरफदारी ज़ियादह रखते थे जब सिरोहीका इला-क़ह बादशाह आलमगीरने देवडोसे छीनकर महाराणाको दे दिया, तब अजीतसिंह देवडोकी मदद करने लगे, जिससे महाराणा अमरसिंह अजीतसिंहसे नाराज़ हुए, लेकिन् महाराजा अजीतसिंहका मुल्क छूटा हुआ था, इस सबबसे उन्होने महाराणा से फिर मेल करना चाहा; क्योंकि बहुत वर्षो तक अजीतसिंह मुल्क लूटकर गुज़र करते रहे जब विक्रमी १७५५ [हिज्री ११०९ = ई० १६९८] मे आलमगीरने डेढ (१) हज़ारी जात और सवारका मन्सब और जालौरकी फ़ौज्दारी इनके नाम लिख भेजी, तबसे अजीत-सिंह जालौरमे रहने लगे, लेकिन् आलमगीरकी चालाकियोसे गाफ़िल नहीं थे.

विक्रमी १७६२ [हिज्री १११७ = ई० १७०६] मे नागौरके राव अमरसिंहके बेटे रायसिंहके बेटे राव इन्द्रसिंहका कुंवर मुहकमसिंह, जो बादशाही तरफ़से मेडतेका फौज्दार था, मौका पाकर दो हजार सवारोके साथ जालौरपर चढ आया, कि महाराजा अजीतसिंहको गिरिफ्तार करके बादशाहके पास भेज देवे. अजीतसिंहके राजपूतोमेसे चापावत लखधीरका बेटा उदयसिंह कुवर मुहकमसिंहसे मिल गया, लेकिन् मुहकमसिंहके आनेकी खबर धाधल उदयकरणने खीवसरसे लिख भेजी थी, जिससे वह होशयार होकर जालौरसे निकल गये चांपा-वत उदयसिंहने अजीतसिंहको ठहरानेकी बहुत कोशिश की, लेकिन् मुहकमसिंहसे उसकी मिलावट होना ज़ाहिर हो गया था, जिससे अजीतसिंह उसके दावमें नहीं आये, और निकल गये, उनके चन्द आदमी, जो पीछे रह गये थे, मुहकमसिंहसे मुक़ाबला करके मारे गये. अजीतसिंहने बड़ी जमइयत इकट्ठी करली, तब कुंवर मुहकमसिंह मए उदयसिंह चांपावतके क़िला जालौर छोड़ भागे, अजीतसिंह उनके पीछे लगे, धूधाड़े गावसे जा पहुचे, और वहां लड़ाई हुई, जिसमे अजीतसिंहकी फ़त्ह हुई, और मुहकमसिंहके तीस आदमी जानसे मारे गये, और

---

(१) मारवाड़की तवारीखमे डेढ़ हज़ारी मन्सब मिलना लिखा है, और मिराते अहमदीमे मन्सब फौज्दारीका लफ़्ज़ लिखा है, जिसकी निस्बत ख़याल होता है, कि गलतीसे दो हज़ारीका लफ़्ज़ फ़ौज्दारी होगया है, और शायद फ़ौज्दारीसे उह्दह और इख्तियार मुराद हो,

पचास घायल हुए अजीतसिंहके सिर्फ़ तीन आदमी मरे, और सात घायल हुए इसपर भी अजीतसिंहने मुहकमसिंहका पीछा नहीं छोडा, तब बादशाही मुलाज़िम जोधपुरका फ़ौज्दार जाफ़रबेग और काज़ी मुहम्मद मुक़ीम वकाया नवीस दोनो बीचमें आये, और बडी फ़हमाइशके साथ अजीतसिंहको वापस जालौर रवानह किया

महाराजा अजीतसिंहको यह शक ज़ियादह हुआ, कि मुहकमसिंह बादशाह आलमगीरके इशारेसे आया था. दुर्गदास राठौड़को पाटनकी फ़ौज्दारी मिली थी, उसपर भी शाहज़ादह मुहम्मद आज़मने धोखेसे एक दम हम्ला किया; इन बातोंसे अजीतसिंहको यक़ीन हो गया, कि बादशाह हमको ज़रूर मारेगा, या पकडेगा, तब महाराणा अमरसिंहसे सुलह करनेकी कोशिश की. उस वक़्के चन्द काग़ज़ातकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं –

१ महाराज अजीतसिंहका खत समीनाखेड़ाके
गुसाई हरनाथगिरके चेले नीलकंठ
गिरके नाम (१)

श्री रामोजयति. श्री हींगोल सत्य.

प्रसादात्.

श्री हींगोल्ल सही

सिधि श्री गुशाई श्री नीलकठगीरजी सूं महाराजा धिराज महाराजा श्री अजीतसिघजीरो नीमो नारायण वॉचजो, अठारा समाचार श्री जीरा प्रताप सूं भला छे, थारा देजो तथा गुसाईं म्हारे पूजनीक छो सही तथा अठै श्री जीरा प्रतापसू फ़ते हुई, गुसाईं सुण बहुत खुस्याली कीधी, सो गुसाई सारी बातां जाणिया छौ स्ही तथा गुसाई अठीरी उठीरी माहोमाह मेल करणरी बिचारी, ने भगवान धरणी धरनू मेलिया था, उठे आदमी बुलाया था, तीणरी अठै ढील एक सबब हुई, सो गुसाई षीम्या कीजो, ढीलरी हकीकत भगवान धरणीधर जाहीर करसी. अठासूं

(१) महाराणा अमरसिंह हरनाथगिरकी करामातके मोतक़िद थे, और रियासती मुआमलातमें नीलकंठगिरकी ज़ियादह दस्तअन्दाज़ी रही, जिससे उन्होंने क़रीब पन्द्रह हज़ारके आमदनीकी जागीर भी हासिल की, जो अभी तक उनकी औलाद याने मुरीदोंके क़ब्ज़ेमें है.

गुसाईरा इसारा माफक सारो कामकर त्रवाडी सुषदेव नू मेलीया छै, सो थानू कहसी, काम ठीक कीजो, सको थारा सेवग छै, गुसाई छो, काम ठीककर बेगी सीख देजो, घणो कासु लिखा, सारी हकीकत बिगतवार रुक्कामे लीखीछै, वाचीयां जाणस्यो, रुक्का जाहीर कठैही मत करो त्रवाडी भगवान धरणीधर सारी जाहीर करसी सही सवत् १७६२ रा चैत्र सुदी ११[विक्रमी १७६३ = हिज्री १११७ ता० ९ जिल्हिज = ई० १७०६ ता० २५ मार्च] बुध मकाम जालधर गढ

लीषत हाथसु

ऊपर लिखे कागजमे दो कागज और हैं, जिनकी नक्ल यह है -

तथा रुक्कारी आ हकीकत छै, इतरा दीन आदमी इण सबब बैठा रह्या, जो म्हारे ने उदयसिघरे चित षत पडी ने तेजसिहनु षीजमत फुरमाई, तिण-कर म्हेनु राठौड मुकन्ददास बारबार लिखतो रह्यो, जो आपकने दीवाणरा आदमी गुसाईरी मारफत आया छै, सो आपरे मेलरी बात करणी होय सबली तो म्हारी मारफ़त बात करे म्हे दिवाण कने गया था, बात वीगत सारी करी, म्हे रुक्को एक दीवाणरे हाथ अषरे लिखायो छै, जद मारवाडनु काम पडे, ने मुकन्ददास कहे, जठीनु रुपीया लाष एक असवार हजार पाच अराबो मदत देस, इण भांत म्हेनु कहावतो रह्यो, इण भांतरो मुदो म्हारे हाथ छे, पचोली दमोदरदासरी मारफत महारी बात छे आप लिखसो गुसाईरी मारफत तो पीण दीवाण म्हानु पुछे, ने पछे आपनु लिषसी, तिणसुं आप म्हारीज हाथ बात करे ज्यु रुक्कारो मुद्दो आपरी तरफ़ रजू ल्यावे, गुसाईरा आदमीयानु सीष देजो, ए आपर अतीत छे, मोटेरो काम मोटे हीज वेत हुवा सषरा पहला तो हुं अबोलो बैठो थो हीमै आप रा० तेजसिघ नु काम फुरमायो छे, तिणसु म्हारी तेजसिघगी बात एक छै. म्हे आपरी चाकरीनु छा, तरे म्हे इणनु लिषीयो, थे हजूर आवो, ने म्हानु रुक्को आषीया दिषावो, सो हजुर तो नायो, इतरामे धुम धाम हुई म्हे फतेकर नागौर ऊपर चलाया, जोधपुररो सूबेदार आय भेलो हुवो, मुकन्ददास ही आय हाजर हुवो, सुबादार रा कयासु म्हे जालौर आया, मुकन्ददास पीण म्हा साथे आया, अठे ही म्हे बात बिगत कीधी, सो रुक्को तो म्हा नु न दीषायो, और कागळ दिवाणरा दोय चार दीषाया इणरी बात म्हारे कुछ तरेदारसी नीजर आई म्हे इहनु पूछीयो हीमै कासु कीयो चाहीजे. तरे इण अरज करी, आदमी मौकुप राषो. हू म्हारो आदमी एक मेलु छू, जैसो आप काम चाहा सो तैसो अठे बैठा कागळसु करीस तरे म्हे बिचारीयो, इणरो कह्यो न करे छे तो कामरो षतरो करे छे, और सारी बात मौकूफ राषने परगट तो इणरे सीर उठेरो काम राषयो छे, गोसासु (पोशीदा) त्रवाडी सुषदेवनु थाकने म्हेलीयोछे, त्रि० सुषदेव भगवान धरणी धर सारी

हकीकत कहसी, उठे त्रि० सुषदेव जाहर होण पावे नही, थांरी रजाबधीरी षातर मेलीयो छे, मुकददासरा जासूस उठे दमोदरदासरी मारफत घणा छे, सो उठे त्रिवाड़ी जाहर हुवो तो अठे काममे षलचो पडसी दीवाण म्हासु बात करे, सु उठे जाहर न करे, ने मुकन्ददासनु पुछे पीण नही, ने लिखे पीण नही, इणनु बात पूछीयां रस न छे थे स्याणा छो, इतरामे घणो समझजो कागळ (कागज़) पीण म्हारे हाथसु लिषने मेलीयो छे थारी रजाबन्दीरे लीये, सो कागळ थारे हाथ राषने दीवाणरो कागळ दीवाण पहिली लीष त्रिवाडीरे हवाले करे, तठा पछे म्हारो कागळ दिवाणरे हवाले करे जो, म्हे पीण भली भांतसु लीषयो छे, ने उणरो तो लीपावणो गुसाईरे हाथ छे, म्हारी षातर नीसा छे, गुसाई बीच आया छो, भली ईज करसो, तिण बात अठीरो रूडो दीसे त्यू करजो, म्हारेने उणरे मेलनु घणा लोक करावणनु जस लेणनु षपता था, इण बातरो इकत्यार थारो रापीयो छे, थारे सीर छे, थारो कयो कबूल कीयो छे, म्हानु दीवाण राजी करसी, तो एक भले काम सीर म्हे घणे साथसु मुढा आगे हुसा, म्हारी ने इणरी बात भेली छे सवत् १७६२ रा चेत सुद ११ बुधे [विक्रमी १७६३ = हिज्री १११७ ता० ९ जिल्हिज ई० १७०६ ता० २५ मार्च] मुकाम जालंधर

इसी कागजके नीचे यह मज़्मून हाथ अक्षरोका लिखा मालूम होता है

तथा गुसाई थां सरीषा समझणा ने दीवाण दषणीयांनु बुलाया, असी अलबद (अफवाह) कुगला (खोटी बाते) मेली, जे थे तो म्हानू कदेही लीषीयो नही, सो जाणीजे, म्हे सुणियो कुछ मसलत कीधी, सो कासु मसलत कीधी, कासु ठेराव कीयो, कुण कुण था, सो लीष जो तथा म्हे सुणा छा, आ बात पातसाह सुण अठी आवणो कीयो छे, सो अठी आयो इण भाषरानु भूडोछे, सो औरगजेब छे, तीणसुं इण बातरो इलाज कीजो, पछेजु सको (सब) री षातर छे, भली जाणो सो कीजो स्ही

तीजी टीप श्री हीगोल

तथा गुसाई चीठी दीवाणनु मेलीछे, गुसाई काम सीध बेगो कीजो, ने म्हासु सेवा होसी तीणरी कोताही नही होवे, सो हकीकत भगवान धरणीधर केसी बे० सु० ११ सुक्रे [विक्रमी १७६३ = हिज्री १११८ ता० ९ मुहर्रम = ई० १७०६ ता० २४ एप्रिल]
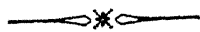
नीचे लिखे कागज़मे किसीका नाम नही है, लेकिन् मालूम होता है, कि यह कागज़ भंडारी विठ्ठलदासने किसिके नाम लिखा है, क्योंकि इस कागज़के हुरूफ उक्त भडारीके ख़तसे मिलते है, जिसके और भी कई कागज़ मौजूद है विठ्ठलदास महाराजा अजीतसिंहका बड़ा मोतबर अहल्कार था

कागज़की नक्ल

'श्रं' हजुर सु राजाजी नु दिलासा आई, जो थे षातर जमासुं साबक दस्तूर जालौर बन्दोबस्त सु षबरदार थका बैठा रहजो, ने कुवर थासु बिना हुक्म कीवी छे, तिणरो नतीजो ओलभारो पावसी, सो हजुर (१) सु दिलासा आवे, तठा सुधा म्हानु मिरजेजी अठे राषीया था, सो दिलासा तो आई, हमे राजाजी कहे छे, थे म्हा कनेहीज रहणो मुकर्रिर करो, सो श्री जी जिकुही हुकम भेजै सो, म्हानु कबूल छेजी, हुक्म भेजावजो जी श्री जी षास दसषता परवानामे लिष्यो थो, जु एक आदमी मातबर हजुर भेजजो, सो इतरा दिन ढील हुई, सो जालोररा आवणारी सबब हुई, हमे चुरा देवदतनु श्री जीरी षीदमतमे भेजियो छे, सो अठारी हकीकत सारी हजुरमे मालूम करसी, और चीठी १ श्री जीरी हजुर राजाजी भेजी छे, सो हजुर पहुचसी जी वाहुडता परवाना महरबानगीरा हमेसा इनायत हुवे बेसाष वद १४ (२) सवत् १७६२ रा [विक्रमी १७६३ = हि० १११७ ता० २८ जिल्हिज = ई० १७०६ ता० १२ एप्रिल]

जब विक्रमी १७६३ फाल्गुन कृष्ण १४ [हिज्री १११८ ता० २८ जिल्काद = ई० १७०७ ता० ३ मार्च] शुक्रवारको बादशाह आलमगीरका देहान्त होगया, तो यह सुनकर महाराणा २ अमरसिंहने अपनी फ़ौज सुधारी, और महाराजा अजीतसिंहको जोधपुरपर क़ब्ज़ह करनेका इशारा किया महाराजाने विक्रमी १७६३ चैत्र कृष्ण १३ [हिज्री १११८ ता० २७ जिल्हिज = ई० १७०७ ता० १ एप्रिल] को जोधपुरपर कब्ज़ा करलिया, और महाराणाने भी जितने पर्गने पुर माडल, बदनौर और माडलगढ वगैरह निकल गये थे, वे सब ले लिये बादशाहतका ढंग बिगड़ने लगा था, जिसका हाल आगे लिखेंगे जब बडे शाहज़ादह मुहम्मद मुअज्ज़म और आज़मसे लडाई हुई, आज़म मारा गया, और मुअज़्ज़मने फत्ह पाकर बादशाही ताज अपने सिरपर रख शाह आलम बहादुर शाहके लक़बसे मश्हूर हुआ आंबेरके महाराजा जयसिंह आजमकी फौजमे और उनके छोटे भाई विजयसिंह बहादुरशाहके साथ थे, इसलिये बादशाहने जयसिंहसे आंबेर छीनकर विजयसिंहको देने और जोधपुरसे महाराजा अजीतसिंहको निकाल बाहर करनेके लिये विक्रमी १७६४ कार्तिक शु० [हि० १११९ शअ्बान = ई० १७०७

(१) हुज़ूरसे मत्लब बादशाह आलमगीरसे है

(२) यह कागज़ गुसाई नीलकंठगिरके नामके कागज़ोमे, जो तीसरी टीप है, उससे पहिलेका लिखा हुआ है, लेकिन् पहिलेके तीनो कागज़ एकके नाम और एक मतलबके होनेसे तीनो एक जगह दर्ज कर दिये गये, और इसको पीछे रक्खा.

नोवेम्बर] मे आगरेसे कूच करके आंबेर और जोधपुरको खालिसे किया, और फिर महाराजा जयसिंह व अजीतसिंह को दिहलीसे साथ लेकर इसी वर्षके विक्रमी चैत्र कृष्ण [हि० ज़िल्हिज = ई० १७०८ मार्च] मे दक्षिणकी तरफ़ शाहज़ादह कामबख़्शसे मुक़ाबला करनेको रवानह हुआ दोनो महाराजा अपनी अपनी रियासतोंके मिलनेकी उम्मेदमे नर्मदा तक साथ रहे, परन्तु बादशाहकी मर्ज़ी बर्खिलाफ़ देखकर दोनो राजा राठौड दुर्गदास समेत बगैर रुख़्सत उदयपुरकी तरफ़ चले आये

उस वक्त एक कागज़ महाराजा जयसिंहने महाराणा अमरसिंहके नाम लिखा था, जिसकी नक्ल नीचे लिखते हैं –

श्री रामो जयति.

श्री सीतारामजी

सिधश्री महाराजा धिराज माहाराणा श्री अमरसिंघजी जोग्य, लिषितं जैसींघ केन जुहार बच्या अप्र– एठाका समाचार की कृपासो भला छै, आपका सदा भला चाहीजे जी, अप्र– आप बडाछो, ठाकुर छो, अठे घोडा रजपूत छै, सो आपका कामने छै, अपरच– आपको काम्दार पचोली बिहारीदास अठे आयो छो, हकीकति सगली कही; सो म्हाके तो आपको ही फ़ुरमायो प्रमाण छै, सो जे ऊपरि महाराजा अजीतसिंघजी अर हु अर दुर्गदासजी १३ की दिन लसकरसो जुदो होय आपकी हजूरि आवांछां जी (इस कागज़मे सवत् तिथि नहीं है).

नर्मदासे आकर बडी सादडीमे दोनो राजाओंका कियाम हुआ, उस वक्त जोधपुरके राठौड़ मुकुन्ददास और जयपुरके चारण देवीदान गाडणने पचोली बिहारीदासके नाम उदयपुरको कागज़ लिखे थे, जिनकी नक्ल नीचे लिखते हैं –

राठौड़ मुकुन्ददास का कागज़ पचोली बिहारीदासके नाम

श्रीरामजी

पं। श्रीबिहारीजी थी राज श्री मुकन्ददासजी रो जुहार बांचजो, तथा जेठ वद २ सोमवाररे दीन श्री महाराजाजी रा ने सवाई जैसींघजी, ठाकुर दुर्गदासजी

सकोईरा डेरा सादड़ी हुवा छै, हमै सारो साथ रोज २ मै उदैपुर श्री दीवाणजी थी मीलने आघा जोधपुर पधारसी (१) संवत १७६४ जेठ विद २ [वि० १७६५ = हि० ११२० ता० १६ सफ़र = ई० १७०८ ता० ८ मई] सोमे

दूसरा कागज़ देईदानका पचोली
बिहारीदासके नाम.

श्रीरामजी.

श्री दीवाणजी सू सलाम करी मुजरो मालीम कीजो जी

सीधि श्री राजी श्री पचोली जी श्री बीहारीदासजी जोगी, लीषतं देईदान केनी जुहार बाची जो, अप्रची सादड़ीरे डेरै बाघमलजी वा बीठलदासजी आया, राजी डेरो वा रावटी बीछावणा मेल्या, सु आणी पहुता, और या अरज पहुंचाई, जु आजी मुकाम कीजे; सु तीज सोमवारको तो मुकाम हुवो, अर बुधवारके दीनी वुटोलाइ डेरा होइला, और पाचे बिसपती वार वुठे पधारेला जी और श्री दीवाणजी को षत आयो, सु श्री महाराजी बौहौत राजी हुवा, सु षतको जुवाव जोडी पाछै ही आवै छै जी मिती जेठ वदी ७, [वि० १७६५ = हि० ११२० ता० २१ सफ़र = ई० १७०८ ता० १३ मई]

अब हम इन दोनो राजाओंके उदयपुर आनेका हाल, पुरोहित पद्मनाथके यहां से, जो एक उसी समयका लिखा हुआ कागज़ मिला, उससे और उदयपुरके पुराने जुज़दानो मे, जो उसी वक्तकी तस्वीरोंपर लिखा हुआ मिला, व कारख़ानहजातकी बहियोंसे नक्ल करके खुलासहके तौरपर नीचे लिखते हैं -

महाराणा अमरसिंह विक्रमी १७६५ ज्येष्ठ कृष्ण ५ बृहस्पति वार [हिज्री ११२० ता० १९ सफ़र = ई० १७०८ ता० ११ मई] को उदयपुरसे सवार होकर उदयसागर तालाबके रूण (भीतरी किनारा) मे रात रहे, दूसरे दिन सवारीके लोगोको तो देबारीके रास्ते भेजा, और महाराणा उदयसागरकी पालपर

(१) मेवाड़ और जोधपुरमें श्रावण कृष्ण प्रतिपदासे संवत् बदलता है, और उसी हिसाबसे कागज़मे संवत् १७६४ लिखा गया, लेकिन चैत्री हिसाबसे वि० १७६५ समझना चाहिये

होकर गाडवा (१) गांवके पास पहुंचे, उधरसे महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह, दुर्गदास और मुकुन्ददास आये महाराणा पेश्तर अजीतसिंहसे फिर जयसिंहसे, और उसके बाद दुर्गदास व मुकुन्ददाससे मिले, दोनो राजाओंने चवर और छांहगी (साय गीर) नहीं रक्खा था, महाराणाने अपनी तरफ़से दिया उदयसागरकी पालपर गोठ (दावत) तय्यार थी सो भोजन करके महाराणा सिफ़ेद घोडे (जिसका नाम मन मान प्यारा था) पर सवार हुए उनके दाहिनी तरफ़ महाराजा अजीतसिंह, बांई ओर महाराजा जयसिंह, और पीछे ठाकुर दुर्गदास थे, इस तरह देबारीके रास्तेसे उदयपुरके महलोंमे दाखिल हुए. दोनो राजा शिवप्रसन्न अमरविलास मे, जिसको अब बाड़ी महल कहते हैं सोये, और महाराणाने सूरज चौपाड़मे आराम किया

दूसरे दिन सुबह ही महाराजा अजीतसिंहका डेरा कृष्णविलास (२) मे और महाराजा जयसिंहका सर्व ऋतु विलास मे हुआ फ़ज्रमे दोनो राजा महाराज गजसिंह (३) की हवेली गये, शामके वक्त महलोंके नीचे नाहरोंके दरीखाने मे दर्बार हुआ महाराणा बड़ी पौल तक पेशवाई करके दोनो राजाओंको ले आये; तीन गादियां तय्यार थीं- दाहिनी तरफ़ (४) महाराजा अजीतसिंह, बाईंपर महाराजा जयसिंह और बीच की गद्दीपर महाराणा बैठे. ठाकुर दुर्गदास महाराजा अजीतसिंहके साम्हने गद्दीके कोनेपर, ठाकुर मुकुन्ददास चांपावत महाराजाकी गद्दीके नीचे तकियाके बराबर बैठे महाराणाके मातहत सर्दार गद्दीके साम्हने दाहिनी बाईं लैनमे, और दोनो राजाओंके अपने अपने मालिकोंके साम्हने दहिने बाएं बैठे इसी तरह पहिले दिनके मुवाफ़िक़ शामको उसी जगह दर्बार

---

(१) तस्वीरपर तो गाडवा गांवके इधर तक जाना कायस्थ लक्ष्मण सही वालेने लिखा है, जो उस वक्त मौजूद था, और पुरोहित पद्मनाथके यहांकी हक़ीक़तमें उदयसागरकी पालके खुरे तक पेशवाईको जाना लिखा है

(२) यहांकी अगली इमारत तो गिर गई, और अब वहांपर जेलख़ाना बनाया गया है.

(३) यह महाराज, महाराणा जयसिंहके छोटे भाई और अमरसिंहके काका थे, जिनकी बेटीसे विक्रमी १७५३ [हिज्री ११०७ = ई० १६९६] में महाराजा अजीतसिंहका व्याह हुआ था

(४) तस्वीरपर तो इसी तरह लिखा है, लेकिन् पुरोहित पद्मनाथके यहांकी हक़ीक़तमें महाराजा जयसिंहका दाहिनी तरफ़ बैठना तहरीर है

हुआ, और दूसरे दिन दोनो राजाओंके लिये फौज समेत गोठ तय्यार कीगई, लेकिन् उसी दिन महाराणाके काका बहादुरसिंहके मरनेकी ख़बर मिली, जिससे वह खाना घोडोंको खिला दिया गया.

महाराणा, महाराजा अजीतसिंहके डेरेपर गये, उन्होंने दस्तूरके मुवाफ़िक़ एक हाथी, दो घोडे, एक जडाऊ कटारी, एक बर्छी और एक मीनाके दस्तेकी तल्वार महाराणाको दी फिर महाराणा महाराजा जयसिंहके डेरेपर गये, उन्होंने भी महाराजा अजीतसिंहके मुवाफ़िक़ चीजें देना चाहा, लेकिन् महाराणाने नहीं लिया, क्योंकि उन्होंने महाराजा जयसिंहके साथ अपनी बेटीकी शादी करना विचारा था; इस लिये महाराणाने एक हाथी, और दो घोडे उक्त महाराजाको टीकेमें दिये विक्रमी आषाढ कृष्ण २ सोमवार [हिज्री ता० १६ रबीउल् अव्वल = ई० ता० ६ जून] को महाराणाकी कन्या चन्द्रकुंवर बाई (१) का ब्याह आंबेरके महाराजा जयसिंहके साथ हो गया दो हाथी चांदीके सामान समेत, ४५ घोडे, एक रथ, दो खर्सल, गहना और सोने चांदीके बर्तनोंके सिवाय बीस हज़ार रुपये नक्द और आठ सौ सिरोपाव मर्दाने और ६१६ ज़नाने दिये, बाईको गहना, कपड़ा, दास, दासी वगैरह बहुत कुछ दहेजमें दिया

इस शादीका नतीजा अच्छा होना चाहिये था, क्योंकि संबंध होनेसे इत्तिफ़ाककी तरक़्क़ी होती है, लेकिन् यह राजपूतानहके लिये बर्बादीका बीज बोया गया; क्योंकि इस वक़्त एक अह्दनामह तीनों राजाओंमें लिखा गया, कि उदयपुरके राजाओंकी बेटी अव्वल नम्बर और पहिली जितनी राणियां हों, वे उससे छोटी समझी जावें दूसरे– उदयपुरके राजाओंकी बेटीका फ़र्ज़न्द युवराज हो; और जो दूसरी राणियोंसे बडे बेटे हों, वे सब छोटे गिने जावें तीसरे– उस राज कुमारी से बेटी पैदा हो, तो उसकी शादी मुसल्मानोंके साथ नहीं कीजावे दूसरी कलम राजपूतानहके रवाजके बर्खिलाफ़ थी, लेकिन् उदयपुरकी राज कुमारीके साथ विवाह करनेमें अपनी इज़्ज़त जानते थे, और बहादुरशाहकी नाराजगीके सबब मदद मिलनेकी उम्मेदपर यह इक़ारनामह साबित किया गया, जिसका अंजाम यह हुआ, कि

---

(१) जयपुरकी तवारीख़ तथा वंशभास्कर नाम ग्रन्थ (बूंदीके इतिहास कवि सूरजमल्लके बनाए हुए) में इस शादीके सिवाय महाराणाकी बहिनका विवाह महाराजा अजीतसिंहसे होना लिखा है, और मश्हूर भी है, कि दोनो राजाओंकी शादियां हुईं, लेकिन् उस वक़्तके काग़ज़ों और जोधपुरकी तवारीख़के देखनेसे यह नहीं पाया जाता महाराजा अजीतसिंहकी शादी पहिले उदय-कुंवर बाईके साथ हुई थी, जिसको लोगोंने एक साथ होना ख़याल कर लिया है

मरहटे राजपूतानामे दखील हो गये, जिनको पहिले इन्ही राजाओके डरसे नर्मदा उतरना कठिन था. उदयपुर और जयपुर दोनो रियासते बिल्कुल तबाह होगई

अब हमेशह सलाह होने लगी, कि मुसल्मानोको हिन्दुस्तानसे निकालकर महाराणाको बादशाह बनाया जावे, लेकिन् यह राय महाराजा अजीतसिंहको ना पसन्द हुई, तब तीनो रियासतोसे तीन चारण बुलाये गये, और उनकी रायपर फैसलह होना करार पाया जोधपुरकी तरफसे द्वारिकादास दधिवाडिया, उदयपुरसे ईश्वरदास भादा और आबेरसे देवीदान गाडण थे; इन लोगोकी राय लीगई, तो द्वारिकादासने एक दोहा मारवाडी भाषामे कहा-

दोहा

ब्रज देशां चन्दण बडा मेरु पहाडां मोड़ ॥
गरुड खगा लका गढा राज कुळा राठौड ॥ १ ॥

इसका यह मत्लब है, कि देशोमे ब्रज, दरख्तोमे चन्दन, पहाडोमे सुमेरु, पक्षियोमे गरुड, किलोमे लका और राजपूतोमे राठौड अव्वल दरजेके है, इस लिये हिन्दुस्तानकी बादशाहतपर महाराजा अजीतसिंहका हक है यह सुनकर ईश्वरदासने दोहा कहा-

दोहा

ब्रज बसावण गिर नख धरण चन्दण दियण सुगंध ॥
गरुड़ चढण लका लियण रघुवशी राजन्द ॥ १ ॥

इसका यह अर्थ है, कि ब्रजको आबाद करने वाले, पर्वतको नखपर उठा लेने वाले, चन्दनको खुशबू देने वाले, गरुडपर सवार होने वाले, लकाको जीतने वाले रघुवशी राजा है इस लिये महाराणा ही हिन्दुस्तानके बादशाह होने चाहिये.

इस आपसके झगडेको देखकर महाराणाने कहा, कि हम हिन्दुस्तानकी बादशाहत नही चाहते, क्यो कि अभी तो सब राजा मुसल्मानोके दर्बारमे खडे रहकर बहुतसी नागवार बाते सहते है, और हमारी ताबेदारी करनेसे भी बुरा मानकर फसाद करेंगे, तब वेही मुसल्मान विलायतसे आकर फिर हिन्दुस्तानके मालिक बन जावेगे, हम अपनी इस तरहकी फ़जीहत करानी नही चाहते इस लिये यह ठीक है, कि दोनो राजा अपनी अपनी रियासतपर कब्जा कर लेवे, हम दिलसे दोनोके मददगार है

इसी अर्सेमे शाह आलम बहादुर शाहके बडे शाहज़ादह मुइज़ुद्दीन जहांदार शाहका एक निशान महाराणा अमरसिंहके नाम आया, जिसका तर्जमह मए नक्ल लिखा जाता है -

निशान (१) शाहज़ादह जहांदार शाह, वल्द बहादुरशाह बादशाहका

बिस्मिल्ला हिर्रह्‌मा निर्रहीम

मुहरकी नक़ल

तुग़ाकी नक़ल

नेक नियत ख़ैरख़्वाहोंका बड़ा, नेकी चाहने वाले दोस्तोंका उम्दह, वफ़ादार ख़ान्दानमेंका बुज़ुर्ग, मर्ज़ी ढूंढने वाले घरानेका यादगार, बादशाही ताबेदारोंका

بادشاهی

زبدۂ نیکخواہان معتقد کیش، خلاصۂ مخلصان صفا اندیش، نتیجۂ دودمان وفا جوئی، بقیۂ خاندان رضا جوئی، سلالۂ دودمان، سزاوار الطاف واحسان، مطیع الاسلام رانا امر سنگھ،

بعنایات بے نہایات مستظهر بوده بداند - در ولا چون باجیت سنگھ وجے سنگھ و درگ داس

बिहतर, बादशाही मिहर्बानियो और इहसानके लाइक़, मुसल्मानी बादशाहतका फ़र्मांबर्दार, राणा अमरसिंह, बहुतसी बादशाही मिहर्बानियोसे मज्बूत दिल होकर जाने- जो कि इन दिनोमे अजीतसिंह, जयसिंह और दुर्गदासको बादशाही अहल्कारोने जागीर और तन्ख्वाह नही दी, इस लिये वह तक्लीफ़के सबब उठ भागे है उस खैरख्वाहको चाहिये, कि उन लोगोको अपने पास नौकर न रक्खे, और बादशाही मिहर्बानियोसे तसल्ली देकर तीनोकी अर्जियां हुजूरमे भेज दे, कि उस उम्दह राजाकी मारिफ़त हम दर्मियानमे आकर इन लोगोके कुसूर मुआफ़ करा देगे, और जागीरोकी सनद हुजूरसे हासिल करके हम उस साफ़ दिल दोस्तके पास भेज देगे, ता कि ये लोग कुछ अर्से अपने वतनमे रहकर तक्लीफ़से आराम पावे, इसके बाद हम हुजूरमे तलब करके अपनी मारिफ़त मुजरा करा देगे इस मुआमलेमे जहा तक हो सके, ज़ियादह ताकीद जाने, तसल्लीके साथ हज़रत बादशाहकी मिहर्बानियोको अपने हालपर हमेशह बढता हुआ समझे ता० १४ सफ़र सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ वैशाख शुक्ल १५ = ई० १७०८ ता० ६ मई]

इस निशानपर कुछ लिहाज़ न हुआ, लेकिन् महाराणाने महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह और दुर्गदासकी अर्जी उनके बे रुख्सत चले आनेके उज्र और कुसूरोकी मुआफ़ी करानेके मत्लबकी लिखाकर शाहजादह मुइज़ुद्दीन की मारिफ़त भेज दी महाराजा अजीतसिंहको, जब तक उदयपुरमे रहे, चार सौ रुपये और महाराजा जयसिंहको ४०० रुपये और दुर्गदासको २०० रुपये रोज़ दिये जाते थे विदाके वक्त दस हज़ार रुपये, एक हाथी, दो घोडे महाराजा अजीतसिंहको, और उनके चारो बेटोके लिये घोड़े, सिरोपाव, और दुर्गदासको घोड़ा, सिरोपाव व दो हज़ार रुपया दिया इसके बाद महाराणाने दोनो राजाओको विदा किया, जिनके साथ कुछ फ़ौज

چون نکند، و مستمال عنایات نموده عرضداشت هر سه به حضور فیض گنجور ارسال دارد، که بوساطت آن عمدهٔ راجها مابدولت درمیان آمده تقصیرات آنها را معاف کنانیده سند جاگیر آنها را از حضور پرنور حاصل نموده پیش آن مخلص با اخلاص میفرستیم، که تا چندے در وطن خود بوده از پریشانی برآیند - بعد از آن بحضور پرنور طلبیده بوساطت خود ملازمت آنها خواهیم کنانید - درین باب تاکید اکید و قدغن بلیغ دانسته مستمال نماید، و عنایات عالی متعالی شاهی نسبت بحال خود روز افزون شناسد * بتاریخ چهاردهم شهر صفر ختم الظفر سنه دوم جلوس مبارک والا همت تحریر پذیرفت *

---***---

देकर कायस्थ श्यामलदास और महासहानी चतुर्भुज वगैरहको भेजा दोनो राजा उदयपुरकी जमइयत समेत जोधपुर पहुचे, और बादशाही थानेको उठा दिया महाराजा जयसिंहके दीवान रामचन्द्र और श्यामसिंह कछवाहा वगैरहने, जब कि ये दोनो राजा उदयपुरमे थे, आंबेरसे बादशाही थानेदारोको पेश्तर ही निकाल दिया था इस बारेमें शाहज़ादह जहांदार शाहका दूसरा निशान महाराणा अमरसिंहके नाम आया, जिसका तर्जमह नीचे लिखा जाता है –

दूसरा निशान (१)

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

मुहरकी नक़्ल

तुग़राकी नक़्ल

निशान आलीशान
शाहज़ादह जहांदारशाह
बहादुर, इब्न शाह आलम
बहादुर बादशाह ग़ाज़ी
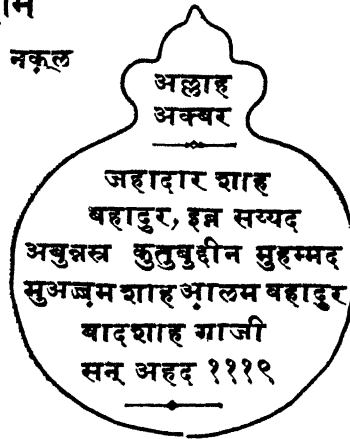
आदाब अल्काबके बाद,

उस ख़ैरख़्वाहने, जो अर्ज़ी कि अजीतसिंह, जयसिंह व दुर्गदासकी अर्ज़ियो

(१) نشان دوم شاهزاده جهاندار شاه بهادر- بنام رانا امرسنگه - ۲ *
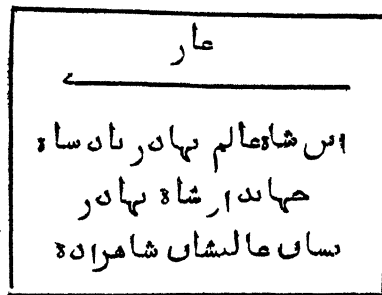
بسم الله الرحمن الرحيم

نقل طغره

والا

عالي متعالی شاهي

نقل مهر

زبدۀ نیکخواهان عقیدت کیش، خلاصۀ مخلصان صفااندیش،

نتیجۀ دودمان وفاخوئی، نعمۀ خاندان رضاجوئی، سلالۀ
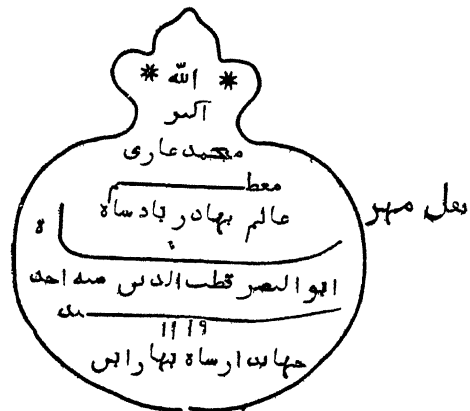
समेत मीर शुक्रुल्लाह मन्सबदारके हाथ भेजी थी, हमने बादशाही मुबारक नज़रमें पेश करदी हम इस फ़िक्रमें थे, कि इन लोगोंके क़ुसूर मुआफ़ होजावें, लेकिन् इन दिनोंमें अजमेरके सूबहदार शजाअतखांकी अर्ज़ीसे हुज़ूरमें मालूम हुआ, कि रामचन्द्र वगैरह जयसिंहके नौकरोंने सय्यद हुसैनखां वगैरह बादशाही नौकरोंसे लड़ाई की अजीतसिंह वगैरहको हर्गिज़ मुनासिब नहीं था, कि हमारा जवाब पहुंचने तक बेहूदह हरकत करते, बहुत नालायक़ कार्रवाई हुई इसलिये कुछ अर्से तक इनके क़ुसूरोंकी मुआफ़ी हमने मौकूफ़ रक्खी है इनको कहदे, कि अब भी हाथ खेंचकर कोनेमें बैठें, रामचन्द्रको निकालदें, और अर्ज़ी भेजें, कि उसने बादशाही आदमियोंके साथ बे अदबी की थी, इसलिये नौकरीसे दूर कियागया इसके बाद उनके क़ुसूरोंकी मुआफ़ीकी फ़िक्र कीजावेगी बादशाही मिहर्बानियोंको हमेशह अपने हालपर ज़ियादह समझें ता० २७ रबीउस्सानी सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ श्रावण कृष्ण १३ = ई० १७०८ ता० १७ जुलाई]

ऊपर लिखे निशानके जवाबमें महाराणा अमरसिंहने शाहज़ादह जहांदार शाहके नाम जो लिखा, उसका अस्ल मुसव्वदह उसी वक़्का हमको मिला है, जिसका तर्जमह यहां लिखा जाता है -

---

قدویت منشان، سزاوار الطاف و احسان، مطیع الاسلام رانا امرسنگه،
بعنایات بی‌نهایات مستظهر بوده بدانند، عرضداشتی که با عرضداشت اجیت سنگه
و جیسنگه و درگداس بمصحوب میر شکرالله منصبدار ارسال داشته بود، از نظر همایون مقدس معلی
گذرانیده‌ایم – در فکر این بودیم، که عفو جرائم ایشان شود، درین اثنا از روی عرضداشت شجاعت خان
ناظم صوبهٔ دارالخیر اجمیر بعرض اشرف اقدس ارفع اعلی رسید، که رامچند وغیره نوکران جی سنگه
با سید حسین خان وغیره ملازمان بادشاهی جنگ کردند – اجیت سنگه وغیره را نمی بایست که تا رسیدن
جواب ما حرکت دور از کار میکردند – بسیار بد واقعه شد – بنابر آن چندی بی عرض برای عفو جرائم
ایشان موقوف فرموده‌ایم – ایشان را بگویند که الحال هم دست خودها را کوتاه نموده بگوشه بنشینند، و رامچند
نوکر خود را دور کنند، و عرضداشت ارسال دارند که از و بابت های بادشاهی بی ادبی شده، از
نوکری برطرف کردیم – در آن وقت فکر عفو جرائم ایشان کرده شود – عنایت عالی شاهی را نسبت
بحال خود روزافزون شناسند * بتاریخ بیست و هفتم ربیع الثانی سنه دوم جلوس مبارک سمت
تحریر پذیرفت *

महाराणा २ अमरसिंहकी तरफ़से दर्ख्वास्त
शाहज़ादह जहांदार शाहके नाम

जहान और जहान वालोंके बुज़ुर्ग सलामत,

हुज़ूरका बुज़ुर्ग निशान निहायत कद्रदानीके साथ इस ताबेदार खैरख्वाहके नाम इस मज्मूनसे जारी हुआ, कि इस फ़र्मांबर्दारकी अर्ज़ीके साथ राजा अजीतसिंह, राजा जयसिंह और दुर्गदास राठौडकी अर्ज़ियां बादशाही हुज़ूरमे पेश कर दी, हुज़ूर इनके कुसूर मुआफ़ करावेंगे; और इस बातका भी हुक्म था, कि जयसिंहको ताकीद कीजावे, कि वह अपने नौकर रामचन्द्रको, जिसने बादशाही आदमियोंके साथ बे अदबी की है, अलहदह करदे; और ये लोग अपने कुसूरोंकी मुआफ़ीके लिये बादशाही हुज़ूरमे अर्ज़ियां भेजे

इन बातोंके लिखनेसे ताबेदारको बहुत इज़्ज़त हासिल हुई, हुज़ूरके निशानको इज़्ज़तके साथ सर आंखोंपर रक्खा, हुज़ूरकी मन्शाके मुवाफ़िक राजा जयसिंहको सख्त ताकीद लिखदी है, कि रामचन्द्रको, जिसने नालाइक़ कार्रवाई की, निकाल दे; और अपने कुसूरोंकी मुआफ़ीके वास्ते बादशाही दर्गाहमे और हुज़ूरके पास अर्ज़ियां भेज दे लेकिन् अस्ल हकीकत यह है, कि वतनमे जागीर पाये बग़ैर इन लोगोंकी तसल्ली नहीं होगी, और ऐसा मालूम होता है, कि हिन्दुस्तानमे बड़ा फ़साद उठेगा. इसलिये हुज़ूरकी खैरख्वाही और इस इलाकहका फसाद दूर होनेके लिहाज़से जागीर और कुसूरोंकी मुआफीके लिये अर्ज़ किया जाता है, ये लोग क़दीमी ख़ानहज़ाद हैं, इसलिये ताबेदार उम्मेद रखता है, कि बादशाही हुज़ूरमे अर्ज़ करके वतनकी जागीर इनको इनायत करा देवे, ता कि झगड़ा दूर हो; मुनासिब जानकर अर्ज़ किया गया

महाराणा २ अमरसिंहका ख़त, जो नव्वाब आसिफ़ुद्दौलह
को जवाबमे लिखा गया.

बाद शौकके यह है, कि आपका बुज़ुर्ग खत पहुंचा, जिसमें यह लिखा है, कि हज़रत शहन्शाहकी तरफसे मन्सब बहाल होकर राजा अजीतसिंहको सोजत और जैतारन, राजा जयसिंहको खदमनी (१) और दुर्गदास राठौड़को पर्गनह

(१) इस गांवका नाम खदमनी पढ़ा जाता है, नहीं मालूम सहीह नाम क्या है.

सिवाना जागीरमे दिये जानेका हुक्म हुआ; इनको ताकीद कर दे, कि फ़साद और बेजा हरकत न करे, आंबेरसे हाथ खैंचकर चुप चाप बैठे; खुदाने चाहा, तो दुबारा हुज़ूरमे अर्ज़ करके जोधपुर और आंबेर इनको दिला दिये जावेंगे; हर एक अपना वकील भेजकर सनद हासिल करे इन बातोंके दर्याफ्त करनेसे बहुत खुशी हासिल हुई, लेकिन् नव्वाब साहिब सलामत, अस्ल हक़ीकत यह है, कि ये लोग जब उदयपुरमे पहुंचे, तो मैंने सिर्फ़ शाहज़ादह साहिबके हुक्म और हज़रत शहन्शाहकी खैरख्वाहीके लिहाज़से हर तरहकी नसीहतें, जो मुनासिब नज़र आई, उन अज़ीज़ोंको कही, और हुज़ूरमे भी इत्तिलाई अर्ज़ी भेजकर एक महीनेसे ज़ियादह उन लोगोंको ठहरा रक्खा, लेकिन् बादशाही अहल्कारोंकी नाराज़ीके सबब कोई मत्लब दुरुस्त न हुआ

आपकी साफ़ तबीअतपर ज़ाहिर है, कि बुज़ुर्ग खुदाने दुन्याके इन्तिज़ामको कुद्रतसे किया, और बहुत चीज़े व जान्दार पैदा किये, और हर इलाक़ेके लिये जुदे आदमी मुकर्रर फ़र्माये हैं इसी तरह अगले बादशाह राजपूतानाकी आमद, खर्च और इन्तिज़ामपर नज़र करके अपनी खुशीसे इस इलाक़ेके मौजूद आदमियोंके बुज़ुर्गोंको वतनकी जागीरोंके सिवाय अपने पाससे पर्गने और इन्आम देते रहे हैं, जिसके सबब उन्होंने उम्दह खिदमतें की हैं.

इस वक्त मुल्कमे हर तरफ़ फ़साद उठ रहा है, और हर तरह कोशिश कीजाती है, लेकिन् बगैर वतनमे जागीर मिलनेके दोनों अज़ीज़ (जयसिंह व अजीतसिंह) और दुर्गदास राठौड फ़सादसे जल्द बाज़ न आवेंगे; यह खैरख्वाह मुद्दतसे आपकी खिदमतमे एतिबार रखता है, इस वास्ते बेतकल्लुफ़, जो कुछ सच नज़र आया, लिख दिया है, इस मौक़ेपर मुनासिब यही है, कि शाहज़ादह साहिबकी सिफ़ारिशसे वतनकी जागीरोंके लिये इन लोगोंको सनद इनायत होजावे, तो बहुत मुनासिब है; आगे जिस तरह हज़रत शहन्शाहकी मर्ज़ी मुबारक और बड़े अहल्कारोंकी खुशी हो, सबसे बिह्तर है. वकीलोंके लिये, जो फ़र्माया, उसका यह हाल है, कि मैं आपके कारखानह और मकानको अपना घर जानता हूं, जल्द वकील भी आपकी खिदमतमे हाज़िर होजाएंगे. ज़ियादह क्या तक्लीफ़ दी जाये.
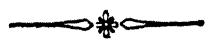
इसके बाद महाराजा अजीतसिंह, जयसिंह और महाराणा २ अमरसिंहकी फ़ौजने जोधपुरसे निकलकर पुष्करमे एक महीने तक मकाम रक्खा, और अजमेरके सूबहदार शजाअतखांसे फ़ौज खर्चके कुछ रुपये लेकर दोनों राजाओंने सांभरपर जा

क़ब्जा किया; वहां सय्यद हुसैनसे मुक़ाबला हुआ, दोनों राजाओंने फ़त्ह पाई, और सय्यद मए फ़ौजके मारा गया; यह हाल जोधपुरकी तवारीख़मे लिखा जायगा.

इसी वर्षमे महाराणाको फ़ौज ख़र्चकी ज़रूरत हुई, तब मेवाडके जागीरदार और ख़ालिसे व सासणीक लोगो से फ़ौज ख़र्चके रुपये वुसूल करना चाहा; क्योंकि बादशाही फ़ौजोसे मुक़ाबला होजानेका ख़तरा था. ख़ालिसेकी रिआया व जागीरदारो और अहल्कारोने तो रुपये देदिये, परन्तु ब्राह्मण, चारण और भाटोने इन्कार किया, जिसपर ज़ियादह दबाव डाला गया, इससे तीनो ज़ातके हज़ारो आदमियोने धरना दिया; महाराणा काले कपड़े पहिनकर बाड़ी महलके झरोकेमे आबैठे, और कहा, कि मै रुपये ज़रूर वुसूल करूगा. तब महाराणाके पुरोहितने ब्राह्मणोके बदले छ लाख रुपये, और खेमपुरके गोरखदास दधिवाडिया (१) ने चारणोके एवज़के तीन लाख रुपये अपने घरसे जमा करा दिये, और इन दोनोने अपनी अपनी ज़ात वालोसे कहला दिया, कि तुमको रुपये छोड़ दिये है; क्योंकि यदि उन्हे यह ख़बर हो जाती, तो वे हर्गिज़ न उठते यह देखकर भाट लोग और भी भड़के.

महाराणासे किसीने कहा, कि इन भाटोके बिस्तरोमे मिठाई और रोटियां मौजूद हैं तब एक मस्त हाथी छुड़वाया, जिसके डरसे भाट लोग बिस्तरे छोड़ भागे, और उनके बिछौनोमे मिठाई और रोटियां मिलीं; इसपर उन्हे शहर बाहर निकलवा दिया इस लज्जासे हज़ारो भाट एक साथ एकलिंग पुरीको चले, महाराणाने चीरवेके घाटेपर बन्दोबस्त करवा दिया; तब उदयपुरसे उत्तर ५ मीलके फ़ासिलेपर आवेरीकी बावड़ीके पास दो हजार भाट ख़ुद कुशी करके मर गये; और उनके क़ब्ज़ेमें, जो ८४ गांव सासणके थे, वे महाराणाने छीन लिये उसी दिनसे हज़ारो भाटोने बंजारोका पेशह इख़्तियार किया, और उनकी औलाद वाले अब तक बैल लादकर गुज़ारा करते हैं. उस समय किसी कविने मारवाड़ी ज़बानमे एक सोरठा कहा था -

सोरठा.

घर पतरे धाड़ेह । भटवाड़े सह भंजिया ॥
गोरख गढ़वाड़ेह । आडो आस करन्न वत ॥ १ ॥

---

(१) दधिवाड़िया, चारणोंमें एक गोत्रका नाम है

मत्लब इसका यह है, कि महाराणाके जुल्मने भाटोको गारत किया; और गोरखदास आसकरणका बेटा उस वक्त चारणोके गढ़वाड़ोका मददगार रहा.

इन महाराणाने अपने नामके खरीते, पर्वाने व खास रुक्के लिखनेका काइदह मुकर्रर किया, जिसमे सहीह वालोके (१) अक्षर पहिले कई ढगके (बापके और और बेटेके और) लिखे जाते थे, उनका तर्ज उस समयसे एक ही तरहका काइम किया गया, जो कि आज तक जारी है

दूसरे, सोलह व बत्तीस उमराव काइम करके उनकी जागीरे मुकर्रर (२) कर दी गई, जिससे रिआया और जागीरदार दोनोको फायदह हुआ

इन महाराणाने राजपूतानामे आग भड़काकर सर गिरोह बननेकी कार्रवाई की, और यह खबरे अजमेरके सूबहदारकी मारिफ़त दक्षिणमे बादशाहके पास पहुंचती थी, लेकिन् बादशाह अपने भाई कामबख्शकी लडाइयोमे फसा हुआ था, उसने अजमेरके सूबहदार शजाअतखाके एवज़ सय्यद हुसैनको सूबहदारीपर भेज दिया. महाराजा अजीतसिहने छेड छाड़ कर रक्खी थी, और महाराणाने बदनौर, पुर माडल और मांडलगढ तीनो पर्गनोसे राठौड सुजानसिहके बेटोको निकालकर कब्जा कर लिया. जब बहादुरशाह अपने भाई कामबख्शपर फ़तह पाकर दक्षिणसे लौटा, तो महाराणाने लडाईकी तय्यारी करके पहाड़ोमे रहनेका इरादह किया. यह हाल सूबहदारोने बादशाहको लिखा, इसपर वजीर असदखाने महाराणाके नाम फ़ार्सीमे एक कागज़ भेजा, जिसका तर्जमह यहा लिखते है –

---

(१) यह भटनागर कायस्थ हैं, और महाराणाकी 'सही' हुक्मी कागज़ोपर करवाते है, इससे वह सहीह (صحيح) वाले मश्हूर है.

(२) पहिले खास खास लोगोंके लिये जागीरका सद्र मकाम (खास ग्राम) काइम रहा है, परन्तु आम रवाज यह था, कि जागीर तीन वर्ष या इससे कम जियादह अर्सेमें बदल दी जाती थी. इसमें महाराणाने रअय्यतकी ख़राबी जानकर पक्का पट्टा और अमरशाही रेख काइम करदी. जागीर बदलनेका रवाज इस रियासतमें मुग़ल बादशाहोंके काइदेके मुवाफ़िक् महाराणा कर्णसिंहने जारी किया था.

असदखां वज़ीरका ख़त, महाराणा
२ अमरसिंहके नाम

अमीरीकी पनाह, बड़ी ताक़तवाले बहादुर, बराबरीवालोंसे उ़म्दह और बिह्तर, बुजुर्ग सर्दार राणा अमरसिंह, हज़रत शहन्शाहकी मिहर्बानियोंमें रहें -

हुज़ूरमें अ़र्ज़ हुआ, कि वह दिलेर सर्दार बादशाही लश्करकी रवानगीकी ख़बर सुनकर बेवकूफ़ लोगोंके बहकानेसे वहमके सबब अपना अस्बाब और सामान पहाड़ोंमें भेजते हैं हुक्म फ़र्माया गया है, कि इससे पहिले तसल्लीका बुज़ुर्ग फ़र्मान् जारी हो चुका है, फिर किस वास्ते ख़ौफ़ किया जाता है जब कि हज़रत बादशाहकी मिहर्बानी उन उ़म्दह राजाके हालपर किसी तरह कम नहीं है, तो साफ़ दिली और बे फ़िक्रीके साथ अपनी जगहपर आरामसे रहें, और अपने आदमियोंकी भी तसल्ली करदें, कि कोई न घबरावे हुक्मके मुवाफ़िक अ़मल करें मैंने ख़त उन दोस्तके नाम भेजा था, उसके जवाबका इन्तिज़ार किया जाता है, जिस क़द्र जल्द भेजें बिह्तर है ता० ७ मुहर्रम सन् २ जुलूस [हिज्री ११२० = विक्रमी १७६५ चैत्र शुक्ल ९ = ई० १७०८ ता० ३१ मार्च]

इसी सबबसे अगर्चि चित्तौड़के पास होकर बादशाही लश्करका रास्तह मुक़र्रर हुआ था, लेकिन् उसे छोड़कर मुकन्दराके घाटेसे हाड़ौती होकर गया महाराणाका वकील बाघमल्ल और मोतमद झाला कान्ह वगैरह इस कोशिशमें बादशाही लश्करके साथ थे, कि मेवाड़के तीनों पर्गने जो कब्ज़ेमें किये, उनकी सनद हासिल करके महाराजा जयसिंह और महाराजा अजीतसिंहका भी मत्लब पूरा किया जावे बादशाही अहल्कार कुछ दबाव और कुछ लालचसे बादशाहके दिलपर राजा लोगोंकी तरफ़से रोब बढ़ाते जाते थे. यह भी याद रखना चाहिये, कि राजाओंके वकील भी अपने मालिकोंको उसी तरह बेफ़िक्र नहीं होने देते थे इसलिये दो काग़ज़ोंकी नक्ल यहां लिखते हैं, जो बादशाही लश्करसे मेवाड़के वकीलोंने महाराणा २ अमरसिंहके नाम भेजे थे.

पहिले काग़ज़की नक़ल

स्वण सुदी १० स्मे (सोमे)
साभरो लीष्यो भाद्वा व्दी ३ भमे (भोमे)
दीयो इरा दी० ७॥ साडा सातम्हे आव्यो.
कागद ८ रो जाब भेलो लीवे चलायो भाद्वा
व्दी ८ बुधे सं० १७६७

अप्रंच । आगे कागद सांवन सुदी ९ रीऊ (रवि) मेवडा मंनोहर नगा साथे मौकल्या से, सु हजुर मालुंम हुवा होगाजी, ईनही दीन सांझे म्हाबतषारे म्हे गया, म्हाबतषां म्हलमां थो, षबर करावी, दीवानषाने आई बैठा, म्हाने कह्यो जो तुंम बडे नवाब (वजीर) पास जावो, जो फरमांवे सु सुनबो करो, परगनो वासते याही कहो, जो रानाजीकु ईनाईत करो, या मेरे ओहद्हे करो, ईस सीवाई तीसरी बात कबुल न्ही नरम गरम जाब करीयो, मैंने भी डराया है, अर म्हे फरदा अरजी परगना वासते तथा चीतोडरी राहदारी वासते नसरतयारषांहे हुवी है, तीन वासते तथा फरद १ म्हारांनाजीरा षीताब वासते फरमांन षीलअत हाथी तीलायर स्मेत साज स्मेत, घोड़ो साज स्मेत, तरवार जड़ाऊ, मौत्यारी माला, कलगी, पालकी साज नै झालर स्मेत, तथा म्हाफो (अमारी عماری) घोडांरो अतनी बसता वासते म्हे अरजी लीषदी थी, सु पातीसाहजी वे दीन षीताब ईनांमरी फरद प्र सुवाद (ص) मनजुर कीयांरो कर आया; ओर अरजांपर दस्पत न हुवा, सु बोवरो आगे अरज लीषोसे, सु षीताब ईनाम हुवांरी फरद म्हावतषा म्हांने दीषावी　म्हाबतषा कही, जो अब ही ईस हुकंमके साहा (हिसाबी काग़ज़ سیاهه) कारषांनो भेजे, तो बडा नवाब तथा पातीसाह पातीसाहजादा जानेंगे, जो रांनाजीके लौग ईतनेमै ही राजी हुवा, परगनोकी मजकुर सरद पडैगी, मैंने सबकुं कहा है, बीगर परगने कांन्हजीकु ओर बात कबुल न्ही, परगनोका काम हुवा सब ईनायात कबुल ह.

म्हाबतषा अे बाता कहे म्हाने षानषांनां तीरे भेजा, दीलीरो (दिह्लीका) वाकानवीस बषसी फषरुदीषाहे म्हाबतषां म्हारी साथे दीधो, जो बडा नवाब पास लेजावो घडी ६ रात गया षानषानारे गया, नवाब म्हलमे था, षबर करावी, नवाब दीवान षाने आई बैठा, षीलवत मे नवाब ने फषरुदीषा ने म्हे दोई जना था, प्हैला तो नवाब आवताही श्रीजीहे षीताब ईनामा हुई, तीरी मुबारकबादी म्हाने दीवी, म्हे तसलीमा कीवी, अरज कीवी, जो नवाबने तवज्हे कर सब काम कीया, ईक थोडासा हमारे परगनोका काम रह्या, सु भी तवज्हे करे, नवाब कही वो भी होता है, पन पातीसाह तुम्हारा कहाही करता जाता है, तुम्हारो राह न गया, तुमने कह्या सु कीया, अर करेगा, तुम भी तो पातीसाह राजी होई सु करो पातीसाह तुम्हारे मुलकरे राह होई दीषण गया, अब फेर तुम्हारे मुलक पास होई अज्मेर आया, चाहीये था जो कुवरजीकु मुलाज्मतकु भेजते, पातीसाह राजी होता, ईन प्रगनो सीवाई ओर परगने देता, अर जो कीनी पातीसाहने आगु न दीया होगा, सु दे पातीसाह ईनाम देता राजी होई तुरत रुषसत करता; सु तुमने या भी काम कीया न्ही, अर पातीसाह अर सब पातीसाहजादे अर हमारे हमचसम (همچشم) सब जानते है, जो राजपुतीया सब मुकदमा षानपानाके हाथ है, सु षुदाईके फजल सु, जो काम हाथ पकडा, सु सब सरजाम पाया. राजोका काम कैसा बरहम (खराब) था, छत्रसाल बुदेलेका काम चालीस बरससु बरहम था, सु हमारे कौलसु सब आये हजुर आयो, हमारी तजवीज सु भी ईधका काम सबका हुवा अब देषो राव बुधसिघकु वतनकी रुषसत होती न थी, सु भी हमने पातीसाह सु बजद (ताकीदसे) होई आज रुषसत बुंदी कु कराया, हाथी, घोडा दीलाया, म्हाबतषाके सीरकी सोगद है, जो हम जानते है, जो राजपुतो सुं अैसा ईषलास मजबुत करे, जो हमारी ओलाद अर ईनकी ओलाद ईषलास सचा चाल्या जाई, अर हमारा तुंम्हारी पोथोमे नाव रहे, हम या बात चाहते है. अब दोई बात सुं हमारी जीयादे सरम रैहती है, जो ईक तो दोनु राजा वादे सु दोई रोज प्हैला काबल कु चले, दुजा तुम्हारे मनमे साच आवे अर कुवरजीकी मुलाज्मत ठैहरावो, तुंम्हारी बात बीच छत्रसाल कु ल्यावेगे. रांनाजीके अर छत्रसालके बोहत ईषलास है, छत्रसाल रानांजीके षत हमकु दीषाता है, सु उंनकु बीच देगे, अब तुम भी दाना हो, अब ही जवाब दो मत, ईस बात कु बीचारकर कहीयो, उतावल का काम न्है-

पानां दुजो

तब म्हे तो वे वकत सलाह देष नवाब साहीब नवाब साहीब क्हैबो करया,

नीधान म्हे कही जो सब सरम नवाब कु है, हीदुसतानमै बडा जस होई रह्या है, रानाजी नै राजौनै तो या करार कीया है, जो पुसत दर पुसत नवाबके षानदानसु असी ही बदगी रहैगी; अर रानाजीकु, जो खीदमत फरमाई, सु लाषो रुपये घरके परच कर नवाबका हर भात बौल बाला कीया अब नवाबकु सब सरम है पाछै दुरगदासजीरी मजकुर पुछी, नवाब कही, जो परगनो लीष ल्यावो हम करदेते है, अमां दुरगाकु लीषो, जो सीताब हजुर आवै, तु काहेकु बैठ रह्या है, ती पाछै नवाब कही, जो तुम रानाजीकु लीषो, ·जो राजोकु ताकीद लीषे, अपनै भले मानस राजो पास भेजे, ताकीद कर चलावै म्हे कही रानाजी तो नवाबके फरमायेसु लीषैगे, अमां नवाब पन राजोकु षत लीप सरकारके आदीमी भेजे नवाब पान दे म्हानै रुषसत कीया, म्हे बारै आई घोडा असवार हुवा, अर फेर नवाब बुलाया कही, जो हम अपनै दसषतो सुही अब षत लीख देते है; सुव्है रानाजी हजुर चलाईदो अर तुम्हारे हीसै का मेवा भी लो; सु आब अर अनननास २ दीया वैही वकत नवाब आपरा हाथसु षत लीष मोहर कर म्हानै सोपो, कही जो सीताब चलावो, म्हानै घना ईषलास प्यारसु आधी रातहे डेरा हे रुषसत कीया. सु षत हजुर मोकलो सै, हजुर मालुम होसी सावन सुदी १० सोमे मनोहरपुर सु कुच हुवो, सु म्हाबतषा सु षानषानारी मजकुर क्हैनी सै, यांरी सलाह सु बडा नवाबहे जाब देनो है, सु म्हाबतषां सोवतो मोडो जागो, उठतो ही पातीसाहरै मुजरै गया, उठासु मनोहरपुररै बागमै जनानो कीयो, सो म्हे पन बागमै बैठा सा, म्हाबतपा सु मील आगली मजल जास्या राव बुधसिंघजीहे देसरी सीष हुवी, आजरा डेरासु चालसी. राजाहे अबार हजुरसु षानषांनारा लीष्यासु कुछ लीषवारो हुकम न्होई अै अर वै आपरी करेलेसी, राजा अजीतसिंघजीहे हजुररा कागद ललो पतोरा ईपलासरा सदा भेजा कराजो, षानपानारा षतरो जाब लीष भेजी जो, घनो ईषलास बदगी लीषाजो, राजा बाबत–

पांनो तीजो.

लीषजो नवाबरा लीष्यासुं राजाहे ताकीद घंनी लीषी है, अर फेर लीषां हां सु असो षतमै लीषाजो, ओर गाजदीषारो षोजो ब्हेरोज (بهروز) नवाबरा घोडा स्मदाव दीली सु लसकर पोहचो, नवाब तीरे जाईसै. म्हाबतषां म्हांनै कही, जो षोजारी लारे जमीयत दे उदैपुर तक पोहचावो, सु म्हां तीरै तो जमीयत मालुंम अर

गाजदीषा (غازی الدین خان) रो पन भलो मनावनो, तीसु षोजा है असवार दे म्हाराजा जैसिघजी हजुर मोकल्यो हे, कागद १ साह नानजी है म्हे लीष दीधो हे, जो थे हजुर है चालो, तरै षोजा है लारे लीया जाजो, ऊटाले डेरा करावे हजुर मालुम कर लोग साथ देगा, जदी पा तीरै पोहचता कीजो पोजो सीरदार सै म्हाराजा जैसिघजी घोडा ४ पातीसाहजी हजुर मोकल्या था, सु प्हला तो पातीसाहजी नजर करे रषाया था, काल्हे फेर नजर गुजरचा, हुकम कीयो, जैसिघके घरके घोडे पुब पैदा होते है, ऐ घोडे फेर दो वे घोडे भेजेगा, सु औ घोडा दुबलासा था, तीसु फेर भेजा, तुरत म्हाबतषा आपरे तवेले बाधासे जी गाजदीषा पोजा ब्हेरोज हे लीषो थो, तु जोधपुररै राह आवे मत, आवे तो उदेपुर होई आवी सु षोजो ईतबारीसे हजुर आवे तो पगेलगाबारो हुकम होई, रुपसतरी बीरया सीरोपाव पावे, अर गाजदीषा तक पोहतो कराजे, अनननास २ हजुर मेवडा भामा छीत्र साथे मोकल्या से, सु हजुर नजर गुदरावजोजी पानषाना कहे थो, जो पातीसाहजी फरमाया करे है, रानाजीका कुवर मुलाज्मतकु न आया, आगे वकीलनै मामुल लीष दीधा था, अर करारदाद था, अर पातीसाहजी या भी फरमावे है, जो हम अज्मेरकु सीताब फीरेंगे, षानषाना बाघमलजी वासते पुछो, तब म्हे कही बाजे कामकु हजुर गया है नवाव कही हमारी बीगर रुषसत कु चलाया, अस कहे था अबे म्हाबतषासु ईन बातरी ठीक मनसुबो करे बडा नवाब सु कहा हां, ठेहरे है, सु अरज लीपी ही जी सवत् १७६७ व्रषे साण्ण सुद १० [हि० ११२२ ता० ८ जमादियुस्सानी = ई० १७१० ता० ६ ऑगस्ट] सोमे पाछला पहररा चाल्या

दूसरे कागजकी नक्ल

१ ॥ श्रीरामजी ॥

पोस सुदी ८ रीज्या लीष्या
कागद माहा वीदी ऽऽ रीछ
लीने २२ आल्या

अप्रच। आगे कागद पौस बदी १४ सुक्रे मेवड़ा रांमां देवा साथे भेजा है,

सु हजुर मालुम हुआ होंगाजी मगरारा राजां है गुरुजी (सिक्ख) रा पकडबा सारु ताकीद गई थी, अर नाहनरा राजा तीरे ईक दोई मनसबदार पन ताकीद वासते भेजा था, तीप्र नाहनरा राजारो प्रधान हजुर आयो अरज कीवी, जो गुरु हमारे मुलकमें आया न्ही, राजा भी हजुर आवता है, गुरुकी षबर कु हमारे जासुस पन गये है; ओर डाबरमै गुरुरी सारी गढी षोदी, सु आगै साढी सात लाष रुपया नीसर्या था, ती पाछै कुछु नीसरो न्ही, अर गुरुरी पन षबर ठीके आवी न्ही, तीसु पेस षानो (पेश खेमह) षीजराबाद मुषलसपुर त्रफ जमनाजी त्रफ चलायो म्हंमद अमीषा सरहदसु कीलारी फत्हेरी अरज दासत भेजी थी, तीप्र म्हमद अमीषारो मुजरो हुवो, फरमान भेजो हजुर बुलायो फरौजषा है आगै सरहदरी फोजदारी ठैहरी है, सु सरहद है बीदा कीयो पोस सुदी ३ भोमे डाबरसु कुच हुवो, दोई कोसरो कुच हुवो, सु ता० ३ जीलकादरी कामबषसरी फत्है कीधी थी, सु जीलकादरो म्हीनो पोसैसु सुदी ५ थे उन फत्हेरो जसन सरु कीधो, दीन तीन ताई जसन होंगो, तीनसुं अठै मुकाम हुवा, पाछै षीजराबाद जासी, मगरारा राजां है दबदबो देसी, सु अब ताई गुरुरी ठीके तो आवी न्ही, कोई ठीके न्ही जी सुदी ५ नाहनरो राजा हजुर आयो, अगाडी उत्रो थो, म्हाबतषां साम्हो लेबा गयो थो, प्हैला षांनषानारै ल्यायो, पाछै पातीसाहजीरी मुलाज्मत करावीजी, ओर कागद आपरो मागसर सुदी ५ रो लीपो पोस सुदी ४ मेवड़ा टोंडा वा नामे ४ साथे आया दीन २९-

पानो दुजो

स्माचार सारा पाया जी, राजां वासतै लीषो थो, जो दो ही राजारा कागद हजुर आया था, चलावारी सल्हा पुछाई थी, जीणीप्र जबाब यो लीषो है, सो ऐक बार दो ही म्हाराजा गुरुजीरो मामलो फैसल हुवा प्हैला भेलो व्हैणो सल्हा सै, पछै काबलरी मोहम जतन करतां मोकुफ व्हे तो भलां सै, न्ही तो आगै जीसी गौ देषजे, जीसी गौ कीजे, सु हजुर सु आछां सल्हा तरीक लीष भेजो, आगै उणारो अषत्यार सै अठै पंन नाहरषांरा जोधपुरसु कुच करायांरा कागद आया था जी भडारी षीवसी म्हाराजा जैसिंघजीसु मीले लसकर है आगै चालो सै भडारी आजे स्वारै लसकर पोहचसी कागद आया था जी, राजा अजीतसिंघजीरा मेडतै पोहचारा समाचार आया था जी म्हाराजा जैसिंघजीरा डेरा नई सराई सै अजीतसिंघजीरा कागद रात दीन आवै है, जो म्हे बेगा आवां हा, थे आगै चालो मत तींनसु म्हाराजा जैसिंघजी नई सराई बैठा सै भडारी अठै आवै सै, सु फेर कोल करार लेसी.९

काबलरी मोकुफी वासतै तलास करसी, पांनषांना म्हाबतषां तो क्हैसी, तुम हजुर आवो, हजुर रहो, अजीमरी पन मरजी सै, जो काबल न जाई, तो भलासै, हजुरमै ही रहै, पछै दीषण पुरबरी तईनाती ठैहराई लेस्या अब देषजे. भडारी आयासु काई ठैहरै जी, ओर राजा अजीतसिंघजी है, दरबार सु टीलो भेजो, सु या बात जोग्य ही थी जी ऊटा वासते लीषो, जो ऊट षरीद तो कीया है, पण तुरत पोहचा न सै, सु ऊट तरै पोहचै तरै सीताब चलाव जो जी हकीम नीत याद करै सै जी; दुरगदासजीरा काम वासतै लीषो, सु अठै कडाबी नराईनदासनै सबलसिंघ रजपुत ईणांरा काम वासतै रफीअलसा (رفیع الشان) रै रीसालै फीरै है जी, सु दुरगदासजी है बोवरो लीषता ही होगाजी

पानो तीजो

अप्रच । ईनामात तो कोचअलीषां उरफ मीरजा म्हंमदरै हुवालै हुवी, मीरजा म्हमद कहैसै, जो प्रगनोका काम परगनोंमे ही करलेगे उहां चुकाई म्हाबतषांकु लीष भेज जाब मगावैगे, सु यो भलो मांनस नजर आवै है, पन सारो अषत्यार म्हाबतषारो नै षानषानारा पेसकारारो है, सु आगै तो म्हाबतषां परगनांरो छुहमाहो मागै थो, सु छुहमाहरा तीनु प्रगनारा स्वा तीन लाष रुपया ज्मा होई, सु म्हे आरे करां न था, अब म्हाबतषा राई गजसिंघ षालसारा पेस दसत है बुलाई गजसिंघ है नै भगवतराई आपरा दीवांन है म्हा तीरै दीवानषानामै भेजाया, रद बदल करावी तीप्र म्हे फेर ओर कीवी न्ही, वा राजा अजीतसिंघजी म्हाराजा जैसिंघजीरो षत मेडता बस्यारो दीषायो, सु छुहमाहो उन कागद माहै लीषो सै म्हे कही राजोके परगनोमै अर हमारे परगनो तफावत (फ़र्क़) घना है; राजोके परगनै रईयती नै सेर हासील है; हमारै परगनै जोर तलब कम हासील, तीन हजार असवारकी फौज बाहरै म्हीनै रहै है, तब टका पैदा होता है, तब गजसिंघ मेवात्यारी जागीर दारीरो उपजतारो कागद काढो, सु कम जीयादै छुहमाहा बराबर ज्मां लीषी सै म्हे कही तकसीममै जागीरदारीरी ज्मा जीयादै है, कानुगो लीषदेसै, कोई षालसारा अमलरो दाषलारो कागद काढो, फेर म्हे कही जो नवाबनै तवज्है करनी सै, तो रीयाईतसु प्रगनां चुकाईदो, मोनै सीष दो, अर नवाबरा दीलमै न आवै, तो मोनै सीष दीजे, मीरजा म्हमद जाई ही सै, तीसो देषैगा, तीसा करैगा, तीप्र मुतसद्यां सारी बात नवाब है कही, म्हाबतषा सुन कही, जो अैसा कांम कीजे, तीसमै सबका सुषन बाला रहै, ईन प्रगनोका हासील मेरी नकदीकी तनषाह कराई लुगा, सु यांरी तौ या मरजी सै, म्हे चाहा हा

जो सीमाहा चो माहा तक चुके, तो आछा से, अर वारी मरजी छ्ह माहारी से जी, कहे से, जो परगनै तो गुजाईस—

पानो चोथो

के है, हम रीयाईतकर छ्हमाहा क्हेते है, सु तब तक अठे चुके है, च्यार टकां घाट बाध तब तक तौ अठै ही चुकावा हा, जे कदाच अठै न चुके है, तो सीष मागे उठैही मीरजा म्हमद तीरा चुकाई लेस्या, ईसे पन करार कर रापोसे, पन तव तक चुके, तब तक अठै चुकास्या जी, ओर म्हाबतषा है, हकीम है, तथा हीदायत केस्पा है, तथा मुतसद्या है आपर दरबार आडीसु देणो व्हेगो, घणा दीनारा सारा उमेदवार से, कही कुछ्ह पायो न सै, सु हजुर मालुम ही सै, यासु सदा काम है, अर म्हाबत्पारो लालच है सु आपो ससार जाणै है जी, पातीसाह नै पातीसाह जादा पन ईनरो लालच नीका जानै है, आप लीषौ जो त्याहे देना होई, त्यारी ठीक करे बोवरौ लीपजो, सु आगै बार दोई अरज लीषी थी, जो ईक लाप रुपया मोकलबारो हुकम होई, सु फेर बोवरारो लीषो आयो, सु अठै कीनै ठीक कीवी सै, सारा मोढो उबाई चोघ रह्या सै, दरबार सु पावनरो घनो भरम राषै सै जी षानषाना रोक तो न लेगौ, या है कुछ्ह जीनस पोहचा जे, तो ईषलास बधै है जी म्हाबतषा वागैरे है परगनारो चुकाव व्है तो देणा, न चुके तो देणा, यासु सरोधो रापजे, तो भला सै, सु हजुर मालुम करे हजुर रो हुकम होई सु बेगा मोकलावजो जी ओर पोस सुदी ७ सीनु मीरजा म्हमद सारी ईनामात ले म्हाबतषासु पन रुपसत हुवो, षानपाना सुं आगै रुपसत हुवो ही थो, सु स्वार तक चालसी, सु प्हैला तो दीली जासी, साज सामान करसी, ओर अतना नामां है देणौ सै— बीगत—

१ षानषाना है, जीनस	१ म्हाबतषां रै, नगदी.	१ हकीम सलेम
१ हीदायत केसषां	१ राई नवनिध	१ राई गजासिंघ
१ राई भगवत	१ मुनसी सारारा	१ तथा हजुर नवीस.
१ हकीमरो पेसकार		

अतना नामा है देनो जरुर से जी, जो म्हे अठै अठारा करीना माफक कही है, देनो करे हजुर बौवरो अरज लीषा हा, तौ हजुर मैं लोक अरज करे, जो अतनो टकौ कीसा काम प्र—

पांनो पाचमो.

षरचे है, अपुठो गेर मुजरो होई; अठै यांरै कही बातकी कंमी न सै, जै थोडो कहां सा, तो अठै मसषरी करे है, जो उसा मोटा दरबाररी त्रफसुं या

बात कहे सै, तब सरम न रहै, तीसु वा नाम लीष हजुर मोकल्या सै, सु हजुर मालुम करेजो, नाम नामप्र हुकम होई, ती माफक लीपे सीताब सरजाम करे भीजा जो जी,

और बराड रो नै षानदेसरो सुबो आगे रुसतमषां दीषणी हे थो, रुसतमषा हे सुबदारी नवाब षांनषांना म्हाबतषारी मारफत हुवी थी, अबै या दीना माहे अमीरल उमराव रफीअलसां सु जोड़ कीधो सै, सु अमीरल उमराव वा दोऊ सुबारी सुबदारी दाऊदषारै नामै ठैहरावे फरमान भीजायो जी तीप्र आपसमै गुफत गो अठै होई रही सै, या बाप बेटा रुसतमषा हे हसबल हुकम आपरी मोहरसु भेजा है, जो सुबदारी तुंमप्र बहाल सै, सु असी सोहबत होई रही सै वाकारी फरद ४ मोकली सै जी, वकाआरी फरद ४ च्यार मौकली छै जी समत १७६७ व्रषे पौस सुद ८ [हि० ११२२ ता० ६ ज़िल्क़ाद् = ई० १७१० ता० २९ डिसेम्बर] रुऊ प्रभाते

कागदरो जाब सताब मौकलजो, ढील नु होवै जी, घणो कई ल्षाजी

ईश्वरकी मर्जी देखना चाहिये, कि महाराणा २ अमरसिंहके पास यह अर्जी पहुचने भी नहीं पाई, कि वे इस जहानसे चल बसे, इसीसे अक्लमन्दोने कहा है, कि मौत बहरी है, वह किसीके मत्लबकी बाते नहीं सुन्ती महाराणाके बडे बडे इरादे थे, जो पूरे न होने पाये

इनका जन्म विक्रमी १७२९ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ बुधवार [हिज्री १०८३ ता० १९ रजब = ई० १६७२ ता० ११ नोवेम्बर] को और देहात विक्रमी १७६७ पौष शुक्ल १ [हिज्री ११२२ ता० आखिर शव्वाल = ई० १७१० ता० २२ डिसेम्बर] को हुआ

इनका मझला कद, गेहुवा रग, बडी आखे, और चौड़ी पेशानी थी यह मिजाजके तेज़ और गुस्सेकी हालतमे जालिम और निर्दई थे सीसोदिया वशमे शराब पीना इन्होंने शुरूअ् किया, शराबके नशेमे बहुतसी बुरी बाते जहांगीर बादशाहके मुवाफिक़ कर बैठते थे, लेकिन् अच्छी आदतोसे भी खाली नहीं थे, इन्होंने देशका इन्तिज़ाम भी बहुत उ़म्दह किया, कोई किसीपर जुल्म नहीं करने पाता था, हर एक आदमीको इनकी तरफ़से यकीन था, कि सिवाय मालिकके दूसरेसे हमारा नुक्सान नहीं होसक्ता पर्गनोका बन्दोबस्त, दर्बारका तरीकह, सर्दारोकी नशस्त और बर्खास्तके दस्तूर काइम किये, सोलह और बत्तीस उमराव मुक़र्रर हुए, जागीरका काइदह और पुख्तगी क़ाइम करदी, नौकरी, छटूंद, जागीरकी रेख व तल्वार बन्दीका तरीकह

बांधा, दफ़्तर और कारख़ानोंकी तर्तीब की. लड़ाई झगड़ोंमें भी यह अव्वल दरजेके बहादुर थे. इनका बांधा हुआ बन्दोबस्त जब तक मेवाड़में काइम रहा, कोई बखेड़ा नहीं हुआ. इन्होंने "शिवप्रसन्न अमरविलास" नामी महल सिफ़ेद पत्थरका बहुत उम्दह और आलीशान विक्रमी १७६० [हिज्री १११५ = ई० १७०३] में बनवाया, जो कि अब "बाड़ी महल" के नामसे मश्हूर है. बड़ी पौलके दोनों बाज़ूके दालान, घड़ियाल और नक्कारख़ानेकी छत्री भी इन्हीं की बनवाई हुई है. इनके एक कुंवर संग्रामसिंह थे, जो इनके बाद गादीपर बैठे.

जोधपुर या मारवाड़की तवारीख़.

महाराणा राजसिंह, जयसिंह और अमरसिंहके वक्तमें जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहके बेटे अजीतसिंहका मेवाड़से बहुत तअ़ल्लुक रहा, इसलिये जोधपुरका इतिहास मुफ़स्सल यहां लिखा जाता है.-

मुल्क मारवाड़ (राज जोधपुर) का जुग्राफ़ियह

लेफ़्टिनेण्ट कर्नेल सी. के. एम. वाल्टर, साबिक़ पोलिटिकल एजेण्ट जोधपुरके गज़ेटियरके २२२ वें सफ़्हेसे खुलासह लिखा जाता है, कि जोधपुरका इलाकह जिसको मारवाड़ भी कहते हैं, फैलावमें सब राजपूतानाकी रियासतोंसे बड़ा है. इसकी उत्तरी सीमा बीकानेर और शैखावाटी, पूर्वी सीमा मेवाड़, जयपुर और कृष्णगढ़; अग्निकोणपर अजमेर और मेरवाड़ा, दक्षिणमें मेवाड़, सिरोही और पालनपुर, पश्चिममें कच्छकी खाड़ी और थर व पारकर नामी सिंध देशके जिले, और वायुकोणपर जयसलमेर है. उत्तर समतल रेखा २४° ३०' और २७° ४०' और ७०° और ७५° २०' पूर्व देशान्तरके मध्यमें है, ईशान और नैर्ऋतमें इसकी लंबाई २९० मील, सबसे ज़ियादह चौड़ाई १३० मील, और रक़बह ३७००० मील मुरब्बा है.

कुद्रती हालत

यह एक बहुत बड़ा मरुस्थल (रेगिस्तान) है, और इसके दक्षिण पूर्व तीसरे हिस्सेमें यानी लूनी नदीके दक्षिणमें अर्बली पर्वतके सिल्सिलेके मुवाफ़िक़

बहुतसी अलग २ पहाडियां है, परन्तु उन पहाडियोमेसे किसीकी चौड़ाई व ऊचाई इतनी नही है, कि जिसको पहाडी सिल्सिला कह सके

मिट्टी और जमीनकी हालत.

मारवाडकी जमीन अव्वल– बेकल, (बालू) जो बहुत है, उसमे बाजरा, मोठ, मूग, तिल, तर्बूज़ और ककडी वगैरह चीज़े बहुत पैदा होती है, उम्दह ज़मीन, जिसको चिकनी मिट्टी कहते है, उसमे अक्सर गेहू पैदा होता है

दूसरी– पीली, जिसमे रेत मिली हुई है, ऐसी जमीनपर तम्बाकू, कादा और तरकारी होती है

तीसरी– सिफेद (एक तरहकी खारी मिट्टी) है; और उसमे अच्छी वर्षा होनेके बाद फ़स्ल हो सक्ती है.

चौथी– खारी जमीन, जिसमे कुछ भी पैदा नही होता

यहा अक्सर पहाड़िये है, जिनमे और रेतके नीचे बिल्लौर, अबरक और काला पत्थर निकलता है, पहाडियो मे सबसे बडी नाडोलाईकी पहाडी है, जिसपर एक बहुत बड़ा पत्थरका हाथी बना हुआ है जीधनके पास पूनागिर, सोजतकी पहाडी, पालीके पासकी पहाडिया, गुडोजके पासकी पहाड़ी, साडेरावकी पहाडी, जालौरकी पहाडी और बहुतसी छोटी छोटी पहाडियां है इनके चारो तरफ़की जमीन सख्त और पथरीली है, लूनी नदी के पार या मारवाडके फैलावके तीसरे हिस्सेमे ये पहाडिया नही है राजधानी जोधपुर तक ये चटान नजर आते है, किला जिसके साम्हने बस्ती है, पहाडी और बालूपर है, जिसकी ऊचाई आठ सौ फुट है, किलेके उत्तरी तरफ आतिशी और रेतीला पत्थर भी है, जिसके रेज़े सितारोके मानिन्द चमकते है, इस देशमे पानी बहुत दूर याने दो सौ तीन सौ फुट नीचे मिलता है

मारवाडमे कोई धातु नही है, सोजतके पास किसी कद्र जस्त मिलता था, उत्तरमे मकरानाके पास सिफेद पत्थर निकलता है, और पूर्व दक्षिणकी सीमापर घाणेराव गावके पास छोटी छोटी टेकरियोमे भी मिलता है

नमककी खान

जोधपुरके राज्यमे नमक, मकाम सांभर, पचभद्रा, डीडवाना, फलौदी, पोहकरण

और कुचामण वगैरहमे निकलता है पचभद्रामे ई० १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७३] मे कूता गया है, कि वर्ष भरमे अग्रेजी तोलसे ग्यारह लाख मन नमक और डीडवानेमे साढे तीन लाख मन, और इसीके मुवाफिक फलोदीमे है, और पोहकरणमे बीस हज़ार मन पैदा होता है

नदी और झील

लूनी नदी, जो पुष्करसे निकली है, निकासके पास साबरमती, और गोविन्दगढमे सारस्वती नामसे मश्हूर है, और गोविन्दगढसे मारवाडके बीच होकर कच्छके रणके पास दलदलमे जज्ब होगई है यह बर्साती नदी है, दूसरे मौसममे खड्डोके सिवाय और कही पानी नही रहता, नोवेम्बरसे जून तक इसकी तलहटीके सत्हसे कई फुट नीचे कूओमे पानी मिलता है, इन कूओका पानी बहुत गहरा खोदे जानेसे खारी हो जाता है मारवाडमे बालोतरा तक इस नदीका पानी बहुत मीठा, और बालागावके पास खारी है, लेकिन् इससे निकली हुई छोटी नदियोका जल कम खारी है, जोधपुरके राजमे इन नदियोके तीरपर नमकके छोटे छोटे कारखाने जारी है, कच्छके रणके किनारेपर, जो मारवाडकी सर्हद है, इस नदीकी तीन शाखे हुई है

जोजरी नदी, मारवाडके मेडता जिलेसे निकलकर जोधपुरसे दक्षिण पश्चिम कोणमे पाच मीलके फासिलेपर लूनीमे गिरती है

गोवा नदी, बाला कापुरा (कापुरा सोजतका एक पर्गना है) के पहाडोसे निकलकर सातलानाके पास लूनीमे मिलती है.

रेडरिया वाली नदी, सोजतके पहाडोसे निकलकर गोवा बालामे मिलने बाद पालीके पास बहती है , इस नदीके पानीसे कपडा रगा जाता है; रगनेका मुसालिहा पानीमे मिलाने और उबालनेसे रग कुछ पक्का हो जाता है.

बाडी नदी, सरयारीके पास अर्बली पहाडसे निकलकर लूनीमे गिरती है; और ‘ जुआई ’ अर्बलीसे निक्लने बाद ऐरनपुरेकी छावनीके पास होकर गुडाके पास लूनीमे मिलती है

साभर झील, मारवाडमे तीस मील लबी है, जिसकी बाबत कर्नेल ब्रुक साहिबने ई० १८६८ या ६९ [विक्रमी १९२५ = हिज्री १२८५] के अकालकी रिपोर्टमे इस तरह लिखा है –

अजमेरके उत्तरका अर्वली पहाड, जो राजपूतानाके अलग अलग दो हिस्से करता है, उसमे एक खाई है, इसमे भी अर्वलीके दोनो तरफ ३० या ४० मील तक इस तौर पर है, कि एक खाई तीस मील लबी है, मुद्दतो पहिले जब राजपूताना समुद्रकी धरातलसे ऊचा उठाया गया, चलती हुई लहरोसे इस बडी खाईमे खारी पानी भर गया होगा, पानी धीरे धीरे धूपसे सूखा, और चिकनी मिट्टीकी बनी हुई तलहटीपर नमक भर गया, हर वर्ष झीलमे पानी बहकर इस खारको गला देता है, इसीसे गर्मीके दिनोमे डली बधती है इसी तरह दो और खाई है, एक मारवाडके उत्तर डीडवानेके पास, दूसरी मारवाड़के दक्षिणी हिस्से पचभद्राके पास, जिनका जिक्र ऊपर हो चुका है

मारवाड़मे कई झीले है, जिनमेसे साचौरकी झील वर्षा ऋतुमे चालीस या पचास मीलतक फैलती है, और उसकी तलहटीपर गेहू, चने अच्छे पैदा होते है

पानी, हवा और बर्सातकी कैफ़ियत

मारवाडकी आब व हवा खुश्क है, वर्षा ऋतुमे भी और जगहोकी ब निस्बत यहा खुश्की जियादह रहती है, क्योंकि जगल नही है मारवाड, दक्षिणमे सिरोही, पालनपुर, और कच्छके रणसे लेकर उत्तरमे बीकानेर तक फैला है, दोनो सीमाओका फासिला, याने लम्बाई २९० मील है, और इस देशकी पूर्वी हद अर्वली पहाड़ है, जो मेवाडको अलग करता है, पश्चिमी हद कच्छका रण, अमरकोट, और थरका रेगिस्तान है, इस मुल्ककी चौडाई १३० मीलके करीब है हिन्दके समुद्रसे भापको लाने वाली नैऋत्य कोणकी हवा और बगालेकी खाडीसे (अग्निकोण) भापको लाने वाली हवा यहा बिल्कुल नही आती, नैऋत्य कोणका बादल मारवाड़ पहुचनेके पहिले उत्तरमे गुजरात, कच्छके रणके रेतीले देश, अमरकोट और पारकरपर होकर आता है, इसीसे यहां पानी बहुत कम बरसता है जोधपुरमे साढे पाच इंचसे जियादह पानी नही बरसता. दूसरे ज़मीनके ऊपरी हिस्सेके रेतेके असरसे हवा खुश्क होती है, रेतेके नीचे पत्थरकी तह है, और उसमे खरिया मिट्टी और ककरकी खान मिलती है लूनी वगैरह नदियोमे पानी न रहनेके सबब हवामे तरी नहीं रहती, और जगल न होनेसे पानी कम बरसता है, जिससे खेती बाडी

बहुत कम होती है ठंडके मौसममे हवाका हेर फेर दिन और रातमे भी रहता है मारवाडमे दिनको तंबूके नीचे गर्मीके सबब थर्मामेटर ९० से ऊपर रहता है, और रातको इतनी ठंड होती है, कि पाला जम सक्ता है, अक्सर ठंडके दिनोमे हवाके बदलनेसे सील होती है, खुजलीकी बीमारी जोर करती है, यह पानीके खराब होने और सफाई न रहनेका सबब है अगर मारवाडमे नमक सस्ता और ज़ियादह न होता, तो बीमारी और जियादह फैलती, चेचक अक्सर निकलती है, बाला और ब्याऊ यहा की खास बीमारिया है, लेकिन् जोधपुरके पश्चिममे ये बीमारिये बहुत कम होती है

मुन्शी हरदयालसिंह, सेक्रेटरी महकमह खासकी
रिपोर्ट विक्रमी १९४० से

इस रियासतमे कुल ४४४० गाव है, जिनमेसे ४९७ खालिसेके है, उनकी जमा बाला बाला दीवानकी मारिफ़त तहसील कीजाती है, बाकी २८२ गाव खालिसेके वे है, जिनकी आमदनी खालिसह कचहरियान जिलामे जमा होती है, कुल ७७९ खालिसह, बाकी जागीर और सासण वगैरहमे है

इन पर्गनोके सिवाय मल्लानीका पर्गनह, जो सबसे बड़ा है, विक्रमी १८९० से अंग्रेज़ी सर्कारने मुल्की मस्लिहतके सबब अपने तअल्लुक कर लिया है उसमे एजेंटीकी हुकूमत है, सिर्फ़ राजकी फौज बन्दोबस्तके वास्ते हाकिमके पास रहती है, हाकिम एजेंटीके हुक्मके मुवाफिक काम करता है यह पर्गने राठौड जागीरदारोके है, और उनसे एजेंटी की मारिफत दस हजार रुपयेके करीब राजका सालाना खिराज 'फौज बल' के नामसे लिया जाता है इस पर्गनेकी आबादी १४८३२६ आदमियोकी है

पर्गनह अमरकोट, जो पहिले इस रियासतमे था, अब सर्कार अंग्रेजीके क़ब्जेमे है, इसके एवज् दस हज़ार रुपये सालाना राजको सर्कार अंग्रेज़ीसे मुकर्रर खिराजमेसे मुजरा मिलते है इस मुल्कमे मामूली दो फ़स्ले होती है, पहिली बारिशसे, जब कि ११ से १३ इंच तक पानी बरसे, दूसरी कुएं और तालाबोकी सिंचाईसे होती है यहां नव या दस वर्षमे पानीकी कमी होनेसे अकाल पडता है; तब लोग अपने खटले समेत मालवाको चले जाते है.

मारवाडमे बाजरा, मोठ, ज्वार, तिल, मूंग, कपास, मक्की, मंड, भुरट, ज़ीरा, अजवायन, धनिया, तिजारा, मिर्च, तर्बूज़, कचरी, मेथीदाना, ककड़ी, मतीरा, गेहूं,

जव और चने होते है, लेकिन् आम लोगोकी खुराक बाजरी, मोठ और भुरट है, जो जियादह पैदा होती है खास जोधपुरके अनार अच्छी किस्मके होते है; मवेशी सब किस्मके उम्दह होते है, लेकिन् ऊट और बकरी मानो परमेश्वरने इसी मुल्कके लिये पैदा किये है, गाय, बैल, घोड़े भी अच्छे होते है घोडोकी नस्लको महाराजा जशवन्तसिहने सुधारकर अव्वल दरजेपर पहुचाया है इस मुल्ककी कुल आबादी सन् १८८१ ई० की मर्दुमशुमारीके मुताबिक १७४६८०२ है, जिसमे मल्लानीके पर्गनेके भी १४८३२६ आदमी शामिल है

राठौडोंकी तवारीख

कन्नौजके राजा जयचन्द्रसे पहिलेकी वशावली और उनका अहवाल मिलना कठिन है कविराजा करणीदान कविया चारणने, जो 'सूर्य्यप्रकाश' नाम ग्रथ मारवाडी और ब्रज भाषामे कविताके तौरपर विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] मे बनाया, उसमे लिखा है, कि राजा १ सुमित्रका पुत्र २ कम्धज, उसका ३ गणपति, उसका ४ तौगनाथ, उसका ५ कीर्तिपाल, उसका ६ भैरव, उसका ७ पुजराज, इन्हीके तेरह बेटोके नामसे राठौडोकी तेरह शाखे हुई पहिली दानेमुरा, दूसरी अभयपुरा, तीसरी कपालिया, चौथी करहा, पाचवी जलखेडिया, छठी बुगलाना, सातवी अरह, आठवी पारकेश, नवी चदेल, दसवी वीर, ग्यारहवी बरियावर, बारहवी खेरबदा, और तेरहवी शाख जैवत है पुजके १३ बेटोमे बडा धर्म बंब था, जिसका बेटा ९ अभय चन्द्र, उसका १० विजय चन्द्र, और उसका ११ जयचन्द्र

सूर्य्य प्रकाशकी तेरह शाखो और वशावलीके नामोसे जोधपुरकी दूसरी तवारीखके नाम नही मिलते, जो जोधपुरसे हमारे पास आई है; और इसी तरह तीसरी तवारीखमे कुछ और ही तरहपर है. ऐसी हालतमे किसी एकपर यकीन नहीं होसक्ता, मालूम होता है, कि यह सब घड़त बड़वा भाटोने अपनी पोथियोको मोतबर बनानेके लिये की है; इसलिये हम इस जमानेकी नई तहकीकातके मुवाफिक, जहा तक वशावली मिली, वह नीचे लिखते है, जो मारवाड़की तवारीखोसे कुछ भी नही मिलती

कन्नौजके राठौड.

एशियाटिक सोसाइटीकी सौ सालकी रिपोर्ट, भाग २ के पृष्ठ ११९ से १२२ तकका तर्जमह -

ईसवी १८०७ [वि० १८६४ = हि० १२२२] के करीब एक ताम्रपत्र एच टी कोलब्रुक साहिबको मिला, जिन्होंने उसका तर्जमह एशियाटिक रिसर्चेजमे छापा वह क़न्नौजके राजा विजयचन्द्रका दानपत्र ईसवी ११६४ [वि० १२२१ = हि० ५५९] का मालूम हुआ विजयचन्द्र राजा जयचन्द्रका पिता था, जिसके बारेमे आईनअक्बरीके हवालेसे मुसल्मानोके मुकाबलेपर ईसवी ११९३ [वि० १२५० = हि० ५८९] मे शिकस्त खाना लिखा था उस पत्रमे राजा विजयचन्द्रकी वशावली छ पीढियो तक पाई गई १ श्रीपाल, २ यशोविग्रह सूर्य वशका उसका बेटा ३ महीचन्द्र, उसका बेटा ४ श्रीचन्द्रदेव, जिसने कान्यकुब्ज जीत लिया, और कन्नौजका पहिला राठौड राजा हुआ ५ मदनपालदेव, ६ गोविन्द चन्द्र, ७ विजय चन्द्रदेव

ईसवी १८२५ [विक्रमी १८८२ = हिज्री १२४०] मे प्रोफ़ेसर एच०एच० विल्सन ने ईसवी ११७७ [विक्रमी १२३४ = हिज्री ५७२] के राजा जयचन्द्रके वक्तके ताम्रपत्रसे, उनकी वशावलीका पहिला नाम यशोविग्रह निकाला, जो कि पहिले भूलसे श्रीपाल पढा गया था यह ख़ान्दान राठौड राजपूतोका था, और उसकी सात पीढियोके नाम, जो गलत नहीं हो सक्ते, कर्नेल टॉडकी लिखी हुई वशावलीसे कुछ भी नही मिलते, जो उन्होने राजस्थानकी दूसरी जिल्दके ७ वे पृष्ठमे लिखी है, वह सातो नाम, उन पुराने सिक्कोसे भी पुख्तह किये गये, जो कन्नौजके आस पास बहुतसे मिले, लेकिन् ईसवी १८३२ [विक्रमी १८८९ = हिज्री १२४८] के पहिले उनको किसीने नही पहिचाना, जिस सन्मे कि विल्सन साहिबने राजा जयचन्द्रके पितामह गोविन्दचन्द्रके दो सिक्कोका बयान एशियाटिक रिसर्चेजकी १७ वी जिल्दके ५८५ पृष्ठमे छापा ईसवी १८३५ [विक्रमी १८९२ = हिज्री १२५१] मे प्रिन्सेप साहिबने श्रीचन्द्रदेवका नाम तहकीक़ करके इन सिक्कोकी सुबूतीको पक्का किया ईसवी १८३५ [विक्रमी १८९२ = हिज्री १२५१] के बाद और बहुतसे ताम्रपत्र राठौडोके पाये गये, जिन सभोसे पहिले पत्रोकी वशावली पक्की हुई

ईसवी १८४१ [विक्रमी १८९८ = हिज्री १२५७] मे जयचन्द्रका दान पत्र ईसवी ११८७ [विक्रमी १२४४ = हिज्री ५८३] का एच. टॅरेन्स साहिबने छापा ईसवी १८५८ [विक्रमी १९१५ = हिज्री १२७४] मे एक पत्र जयचन्द्रके पडदादा मदनपालके वक्तका ईसवी १०९७ [विक्रमी ११५४ = हिज्री ४९०] का, और दूसरा जयचद्रके दादा गोविन्दचद्रका ईसवी ११२५

[विक्रमी ११८२ = हिज्री ५१९] का फ़िड्ज एडवर्ड हॉल साहिबने प्रसिद्ध किया पीछेसे जो तहकीकाते हुई, उनमेसे गोविन्दचन्द्रके दान पत्रसे, जो बाबू राजेन्द्रलाल मित्रने ईसवी १८७३ [विक्रमी १९३० = हिज्री १२९०] मे छापा, कोलब्रुक, विलसन और दूसरे साहिबोकी राय खूब पुख्तह ठहर गई, याने यह कि इस खान्दानके पहिले दो आदमी 'यशोविग्रह' और 'महीचन्द्र' कन्नौजके राजा नही थे, लेकिन् तीसरे राजा श्रीचन्द्रने कन्नौजको फ़त्ह किया, और वह वहाका पहिला राठौड राजा हुआ उसी पत्रसे यह भी मालूम हुआ, कि अगले खान्दानके आख़िरी राजाका नाम भोज था, जिसके मरने बाद कुछ दिनो तक राजा श्री कर्लके समयमे बद इन्तिज़ामी रही, और उसी वक्तमे राठौड राजा श्रीचन्द्रने कन्नौजकी गद्दी पहिली बार हासिल की

इन सब ताम्रपत्रोसे कन्नौजके राठौडोका समय ईसवी १०५० [विक्रमी ११०७ = हिज्री ४४२] से ईसवी ११९३ [विक्रमी १२५० = हिज्री ५८९] तक ठहराया जासक्ता है, इस ताम्रपत्रके दूसरे श्लोकमे "विजयीनृप" श्री चन्द्रदेवके लिये लिखा है, और उसको महिआल याने महिपालका बेटा लिखा है, जो महीचन्द्रका दूसरा नाम था, जर्नल जिल्द ४ पृष्ठ ६७० मे गहरवाल वंशका रिश्तहदार बतलाया गया है, जो कि इलियट साहिबके लिखनेके मुताबिक़ राठौडोका ही ख़ान्दान है

महाराजा जयचन्द्रका हाल राजपूतानेमे पृथ्वीराजरासा (१) के मुताबिक़ जाहिर है, लेकिन् यह पुस्तक हमारी रायमे विक्रमी १६४० [हि० ९९१ = ई० १५८३] से विक्रमी १६७० [हि० १०२२ = ई० १६१३] के बीचमे चहुवानोके किसी भाटने पृथ्वीराजके भाट चदके नामसे बनाकर प्रसिद्ध करदी है इसी पुस्तकके सबब राजपूतानेके इतिहासमे बहुत कुछ फेर फार हो गया, याने अस्ली नाम व साल सम्वत् गुम होकर उनके बदले बनावटी क़ाइम हुए, जैसे कि राजा जयचन्द्रकी गद्दी नशीनीका सवत् विक्रमी ११३२ [हि० ४६८ = ई० १०७६] मारवाडकी तवारीख़ोमे दर्ज हो गया, लेकिन् राजा जयचन्द्र और उनके बुजुर्गोके ताम्र पत्रोने

---

(१) हमने इस ग्रन्थकी नवीनता साबित करनेके लिये एक पुस्तक रूप बनाकर बंगाल एशियाटिक सोसाइटीके ई० १८८६ [विक्रमी १९४३ = हिज्री १३०३] के पहिले जर्नलमे छपवाया है, और उसीके मुताबिक हिन्दी भाषामे भी छपवाकर प्रसिद्ध किया, जिसके देखनेसे पुरानी प्रशस्तियां, ताम्रपत्र और उस ज़मानेकी फार्सी तवारीख़ोके लेख पाठक लोगोको विश्वास दिलावेगे, कि यह पुस्तक नई और इतिहासमे ख़राबी डालने वाली है.

सच्चा हाल खोल दिया, जिनके नाम यह हैं - १ श्री पाल, २ महीचन्द्र, ३ श्रीचन्द्रदेव, ४ मदनपालदेव, ५ गोविन्दचन्द्र, ६ विजयचन्द्रदेव ७ जयचन्द्र पृथ्वीराजरासामे लिखा है, कि विक्रमी ११५१ [हि० ४८७ = ई० १०९४] मे राजा जयचन्द्र राठौड़की बेटी सयोगिताको दिल्लीका राजा पृथ्वीराज चहुवान ले आया, लेकिन् ईसवी १८८६ [विक्रमी १९४३ = हिज्री १३०३] के जर्नल इन्डियन एन्टीक्वेरीमे राजा जयचन्द्रके दो दान पत्र, एक विक्रमी १२२५ माघ शुक्ल १५ [हि० ५६४ ता० १४ रबीउस्सानी = ई० ११६९ ता० १६ जैन्यूएरी] का, दूसरा विक्रमी १२४३ आषाढशुक्ल ७ रविवार [हि० ५८२ ता० ५ रबीउस्सानी = ई० ११८६ ता० २६ जून] का दर्ज है इस तरहके ग़लत सवत् देखकर राजपूतानेकी तवारीखोमे फ़र्क पडा, और अस्ली सवत् नष्ट होगये

हमको जयचन्द्रसे मडोवरके राव चूडा तक मारवाडकी तवारीखके सवत् ठीक मालूम नही होते, राठौडोकी तवारीखमे बहुत पुराने जमानेसे कन्नौजका राज उनकी हुकूमतमे होना लिखा है, लेकिन् ऊपरके लेखसे यह साबित होगया, कि विक्रमी ११०७ [हि० ४४२ = ई० १०५०] मे कन्नौजका राज राठौडो के कब्जेमे आया

आखिरी राजा जयचन्द्रसे उसका मुल्क विक्रमी १२५० [हिज्री ५८९ = ईसवी ११९३] मे शिहाबुद्दीन गौरीने चन्दवार (चन्दावल) मे लडाई करके लेलिया, (तबकात नासिरी पृष्ठ १२०) इस लड़ाईमे तीन सौसे ज़ियादह हाथी शिहाबुद्दीनके हाथ आये, और जयचन्द्र अपनी राजधानी छोड़ भागा. फिर हिन्दुस्तानके पहिले बादशाह कुतुबुद्दीन एबकने इस शहरको अपने मातहत किया पृथ्वीराजरासेका बनाने वाला लिखता है, कि राजा जयचन्द्र शिहाबुद्दीन गौरीके हिन्दुस्तानमे आनेसे पहिले गगामे डूब मरा, शायद यह डूब मरनेकी बात सहीह हो, लेकिन् इस पुस्तकपर पूरा विश्वास नही हो सक्ता

जोधपुरकी तवारीख़मे राजा जयचन्द्रका बेटा ९ बरदाईसेन, उसका १० सेतराम, उसका ११ सीहा, जिसे शिवा भी कहते है, लिखा है, हमको बरदाईसेन और सेतरामके नाममे शक है, कि बहुतसी पुरानी पोथियोमे राजा जयचन्द्रके पीछे शिवाका नाम लिखा है, और बडवा भाट अपनी पोथियोमे इन दोनो नामोके बाद सीहाका नाम बतलाते हैं, परन्तु इस बातको सहीह या ग़लत ठहरानेके लिये कोई पुख्तह सुबूत नही मिलता

सीहाने भीनमालके पास मुसल्मानोसे लटाई की, फिर वह मारवाडमे आया जोधपुरके इतिहासमे लिखा है, कि सीहाने अनहिलवाड़ा पट्टनके राजा मूलराज सोलखीकी बेटीसे शादी की, लेकिन् यह नही होसक्ता; क्योकि मूलराज विक्रमी

९९८ [हि० ३२९ = ई० ९४१] मे अनहिलवाडा पट्टनकी गद्दीपर बैठा, और विक्रमी १०५४ [हि० ३८७ = ई० ९९७] मे मर गया, और सीहा, जयचन्द्र राठौडसे चौथी पीढीपर था, जयचन्द्र विक्रमी १२५० [हि० ५८९ = ई० ११९३] मे मरा, तो जयचन्द्रसे दो सौ बर्ष पहिले मूलराजका समय होता है शायद सीहाने भीमदेव सोलंखीकी बेटीके साथ शादी की हो सीहाने पालीमे सोमनाथका मन्दिर बनवाया, और वहाके पल्लीवाल ब्राह्मणोको लुटेरोंके तकलीफोंसे बचाया राव सीहाका बेटा, १ आस्थान, २ अजमाल, ३ सोनग, ४ भीम था

इनके बाद १२ आस्थान मारवाड़के गाव पालीमे आया, वहांके पल्लीवाल ब्राह्मणोने आस्थानको इस मत्लबसे अपने गावमे रक्खा, कि उनको लुटेरोंसे बचावे. जब वहासे आस्थानने खेड़के शकरसाहसे दोस्ती पैदा की, और खेडके मालिक गोहिल राजपूतोसे सबन्ध हुआ, आस्थान शादी करनेको खेड गया, वहाके मुसाहिब डाबी राजपूत भी राठौडोसे मिल गये, आस्थानने गोहिलोको दगासे मारकर खेडका राज छीन लिया, और गोहिल भागकर गुजरात चले गये, जिनका जिक्र महाराणा उदयसिहके इतिहासमे लिखा गया है (पृष्ठ ८७ से १०० तक) आस्थानने भीलोको मारकर ईडरका राज छीना, और अपने छोटे भाई सोनगको दिया, जिसका हाल ईडरकी तवारीखमे लिखा जायगा सोनगकी औलाद अब ईडरके जिलेमे पालपोलांके जागीरदार हैं, जो पहिले मुल्कके राजा थे

खेड़मे राज करनेसे आस्थानकी औलाद खेडेचा कहलाई, इसका बेटा १ धूहड, जो खेड़की गद्दीपर बैठा, २ जोयसा, जिसके सात बेटे हुए, १ सिधल, जिसके सिधल राठौड़ कहलाये, २ जेलू, जिसके जेलू कहलाये, ३ जोरा, जिससे जोरा मश्हूर हुए, ४ ऊहड, जिसके ऊहड़ राठौड़ कहलाये, ५ राजीग, ६ मूल, जिसके मूलू राठौड़ कहलाये, ७ खीवसी

आस्थानका तीसरा बेटा धांधल था, इससे धाधल कहलाये; इसके तीन बेटे थे, १ पाबू जो चारणोकी गाये छुड़ानेके बखेडेमे खीचियोसे लडकर मारा गया; वह अब तक देवताके नामसे पूजा जाता है, और राजपूतानेमे प्रसिद्ध है. २ बूड़ा, जिसके बेटे झरडाने खीचियोको मारकर पाबूका बैर लिया, ३ ऊहड

आस्थानका ४ हिरडक, ५ पोहड़, ६ खीवसी, ७ आसल, ८ चाचिग, जिसकी औलाद चाचिग राठौड़ कहलाई.

आस्थानके बाद १३ धूहड़ गद्दीपर बैठा, यह राजा करणाटक देशसे अपनी

कुलदेवी (१) चक्रेश्वरीकी मूर्ति लाया था, उसको नागौरमे रक्खा, जिससे उसका "नागणेची" नाम मश्हूर हुआ, उसको अब तक राठौड अपनी कुलदेवी मानकर पूजते है इन्होने पवार राजपूतोको शिकस्त देकर ५६० गावो समेत बाढमेरका इलाकह लेलिया, इसके बाद धूहड, चहुवान राजपूतोसे लडकर मारागया उसके सात बेटे थे- १ रायपाल, २ कीर्तिपाल, ३ बेहड, इसकी औलादके बेहड़ राठौड़ कहलाते है, ४ पीथड, जिसके पीथड राठौड कहलाते है, ५ जोगायत, ६ जालू, ७ बेग धूहडके बाद १५ रायपाल गद्दीपर बैठा, उसने बुद्ध भाटी राजपूतको रोड (कैद) करके चारण बनाया, जिसके वशके रोडिया बारहठ कहलाते है, और जन्म व शादी होनेके वक्त नेग पाते है रायपालने देहान्त होनेपर बारह पुत्र छोडे- १ कान्ह, २ केलण, इसका थाथी, इसका फिटक, जिससे फिटक राठौड कहाते है रायपालका ३ बेटा सूड़ा, ४ लाखणसी, ५ थाथी, ६ डांगी, ७ मोहन, ८ जाभ्कण, ९ राजा, १० जोगा, ११ राधा, जिससे राधा राठौड कहलाये, और रायपालका १२ वा बेटा हतूडिया था इसके बाद बडा बेटा १६ कान्ह गद्दीका मालिक बना, उसके तीन बेटे थे १ भीवकरण, २ जालणसी, ३ विजयपाल भीवकरण तो पहिले ही लड़ाईमे काम आया, और १७ जालणसी अपने बापके मरने

---

(१) कुलदेवी उसे कहते है, जिसे अपने कुलके बुजुर्ग पूजते आये हो, इसलिये हमारा क़ियास है, कि दक्षिणके राठौड़ राजाओमेसे किसीने आकर कन्नौजका राज लिया है, क्योकि मारवाडकी तवारीखमे राव धूहड़का करणाटक देशसे अपनी कुलदेवी चक्रेश्वरीको लाना लिखा है, जब धूहडकी कुलदेवी दक्षिणमे थी, तो उसके मानने वाले बुज़ुर्ग भी उसी मुल्कमे होगे दक्षिणके राठौड़ोंका वश इस तरहपर जाना गया है –

दक्षिणके राष्ट्र कूटोका हाल

(रामकृष्ण गोपाल भंडारकरकी बनाई हुई अंग्रेज़ी ज़बानमे दक्षिणकी पुरानी तवारीख़ पृष्ठ ४७ से ५५ तक)

इस खान्दानमे पहिला राजा गोविन्द (पहिला) हुआ, लेकिन् एलूरामे दशावतारके मन्दिरकी एक प्रशस्तिमे दतिवर्मन और इन्द्रराज दो अगले नाम और भी लिखे है. इन्द्रराज गोविन्दका पिता और दंतिवर्मन उसका पितामह था गोविन्दका बेटा कर्क पहिला, उसके बाद उसका बेटा इन्द्र-राज दूसरा गद्दीपर बैठा इन्द्रराजने चालुक्य घरानेकी लड़कीसे शादी की, लेकिन् वह मांकी तरफ़से चन्द्र वंशी, या शायद राष्ट्रकूटो हीके खान्दानकी थी, उसका बेटा दतिदुर्ग हुआ, जिसने करणाटककी फ़ौजको जीत लिया, और दक्षिणमे बड़ा राजा हुआ, उसका एक दानपत्र शक ६७५ [ईसवी ७५३ = विक्रमी ८१० = हिज्री १३६] का कोलापुरमें मिला दतिदुर्गके बाद उसका चचा कृष्णराज मालिक हुआ, जैसा कि कर्ड़ाके एक ताम्रपत्रसे साबित है उसका दूसरा नाम शुभतुग था, और उसने चालुक्योको शिकस्त दी

बाद गद्दीपर बैठा उसने सोढा राजपूतोंसे लड़ाई की, और फत्ह पाई इसके बाद वह मुसल्मानोंकी लड़ाईमें मारा गया, जिसके तीन बेटे थे–१ छाडा, २ भाखर्सी, ३ डूंगरसी जालणसीके बाद १८ छाडा गद्दीपर बैठा, इसके सात बेटे थे– १ तीडा, २ वानर, जिससे वानर राठौड कहलाये छाडाका तीसरा बेटा रुद्रपाल, ४ खोखर, जिससे खोखर राठौड़ कहलाये, ५ सीमल, ६ खीवसी, ७ कानड छाडाके देहान्त होनेपर १९ तीडा राजका मालिक हुआ, उसने महेवाको अपनी राजधानी

कृष्णराजका समय ई० ७५३ [विक्रमी ८१० = हिज्री १३६] और ई० ७७५[विक्रमी ८३२ = हिज्री १५८] के बीच रहा होगा उसका बेटा गोविंद दूसरा, उसके बाद उसका छोटा भाई ध्रुव गद्दीपर बैठा, जिसके दूसरे नाम निरुपम, कलिवल्लभ और धारावर्ष है, उसने कौशाबीके राजापर चढाई की, कौशबीको अब कोशम कहते है, जो इलाहाबादके नज़्दीक है, उसने वत्सराजको मारवाडमे भगा दिया. इसके बाद गोविन्द तीसरा या जगत्तुग पहिला हुआ, जिसने मयूरखडी स्थानमे शक ७३० [ई० ८०८ = वि० ८६५ = हि० १९२] मे राधनपुर और वणीडिंडोरीके दानपत्र जारी किये, यह बहुत बडा राजा हुआ

मालवासे लेकर काचीपुर तक उसका राज फैला, इसके बाद उसका बेटा शर्व या अमोघवर्ष पहिला राजा हुआ, जिसका हाल उत्तर पुराणके शेष सग्रहमे लिखा है अमोघवर्षका बेटा अकालवर्ष था, वह कृष्ण दूसरा भी कहलाता था, इसीके वक्तमे गुणभद्रने जैनियोका महापुराण शक ८२० [वि० ९५५ = हि० २८५ = ई० ८९८] के करीब पूरा किया इसकेबाद जगत्तुग दूसरा गद्दीपर बैठा, उसका बेटा इन्द्रराज तीसरा हुआ, इन्द्रकेबाद अमोघवर्ष दूसरा, और फिर उसका भाई गोविन्द चौथा हुआ, जिसका नाम सहसांक भी था, उसने अपनी राजधानी मान्यखेटमे शक ८५५ [ई० ९३३ = विक्रमी ९९० = हिज्री ३२१] मे दान किया, उसका पत्र 'शागलीपत्र' कहलाता है उसके बाद बद्दिगा या अमोघवर्ष तीसरा, जिसके बाद कृष्णराज तीसरा और उसके पीछे उसका छोटा भाई खोटिका गद्दीपर बैठा, जैसा कि खारी पाटनके ताम्रपत्रसे मालूम होता है खोटिकाके बाद उसका भतीजा ककल या कर्क दूसरा ककल बड़ा दिलेर सिपाही था, लेकिन् उससे चालुक्य वंशके राजा तैलप ने जीतकर राज छीन लिया

ककलके समयका ताम्रपत्र, जो करडामे पाया गया, शक ८९४ [ईसवी ९७२ विक्रमी १०२९ = हिज्री ३६१] का है, और दूसरे वर्षमे तैलप दक्षिणका राजा हुआ इस तरह ईसवी ७४८ [विक्रमी ८०५ = हिज्री १३०] से ई० ९७३ [विक्रमी १०३० = हिज्री ३६२] तक दक्षिणका राज्य राष्ट्रकूटोके हाथमे रहा, (याने करीब दो सौ पच्चीस वर्ष के) इससे साबित है, कि इन्हीं लोगोंकी औलादने कन्नौजको वि० ११०७ [हि० ४४२ = ई १०५०] मे लिया होगा

बनाया, देवड़ा चहुवानोंपर फत्ह पाई, भाटियोंसे दंड लिया, और बालेसा राजपूतोंको शिकस्त दी इसके बाद मुसल्मानोंके हाथसे वह मारा गया उसके तीन बेटे थे, १ त्रभूणसी, २ कान्हड, ३ सळखा तब २० सळखा गद्दीपर बैठा, इसका १ मल्लीनाथ, उसके वंशके माला कहाये, २ जैतमाल, जिससे जैतमालोत राठौड़ कहलाये, उसकी औलादवाले मेवाड़में केलवा, आगरिया वगैरहके जागीरदार हैं सळखाका ३ बेटा बीरम, ४ सोभीत, जिसकी औलाद सोंड राठौड कहलाई मल्लीनाथने महेवापर कब्ज़ा किया, इनके नौ बेटे थे, १ जगमाल, २ रूपा ३ चडा, ४ उदयसिंह, ५ जगमाल, ६ मेदा, ७ अडराव, ८ अडकमल्ल, और ९ हरम, जैतमालने सीवानामें अपना अमल जमाया, जिसके छ बेटे हुए, १ हापा, २ जीया, ३ बीजड, ४ खींवा, ५ लूंठो और ६ खेतसी, सळखाके तीसरे बेटे २१ बीरमदेव खेडमें रहने लगे दल्ला जोइया, जो दिल्लीके बादशाहका खजानह लेकर भाग आया था, महेवामें आरहा, मल्लीनाथके बडे बेटे जगमालने उसका माल व असबाब छीन लेना चाहा, तब उसने खेडमें जाकर २१ बीरमदेवकी पनाह ली, पीछेसे फौज लेकर जगमाल भी पहुंचा, तरफैनमें लडाईकी तय्यारी हुई; लेकिन् महेवासे मल्लीनाथ गया, और बीच बिचाव कराकर जगमालको लौटा लाया. इसके बाद दल्ला (१) जोइयाने अपने वतनमें जाना चाहा, तो उसे पहुंचानेको बीरमदेव भी साथ चला, लखबेरामें पहुंचकर दल्लाने बीरमदेवकी बहुत खातिर की, और अपने इलाकेपर बीरमदेवका हुक्म जारी करदिया, लेकिन् बीरमदेव और उसके राजपूतोंने जुल्मसे मुसल्मनोंको तंग किया, उन लोगोंने एक अर्सै तक दर गुजर किया, अन्तमें बहुत दिक होनेसे मुसल्मानोंने बीरमदेवपर हम्ला कर दिया, और वह मुक़ाबला करके मारागया

बीरमदेवके पांच बेटे थे, देवराज, जयसिंह, बीजा, चूडा और गोगादेव इनमेंसे छोटा गोगादेव, जिसने लखबेरामें पहुंचकर दल्ला जोइयाको मारा, और अपने बापका एवज़ लिया, वह दल्लाके भतीजे देपालदेव, धीरा वगैरहसे लडकर मारागया, इस लडाईका हाल गोगादेवके रूपक (२) में मुफस्सल लिखा है बीरमदेवके मरने बाद चूडा मंडोवरका मालिक हुआ

---

(१) यह पहिले राजपूत था, लेकिन् फिर मुसल्मान होगया,

(२) यह किताब मारवाडी भाषाकी कवितामें है

२२ राव चूडा

बीरमके मरनेके बाद चूडा बडी तक्लीफ़ोंमें रहा, फिर राव मल्लीनाथने उसको सालोढी गांवके थानेपर रक्खा, वहां कुछ जमइय्यत इसके पास होगई. मंडोवरका किला पहिले राव रायपालने परिहार राजपूतोंसे छीन लिया था, और पीछे मुसल्मानोंके कब्जेमें आया, ईंदा राजपूतोंने मुसल्मानोंसे फिर छीन लिया, लेकिन् कम ताकत होनेके सबब रायधवल ईंदाने अपनी बेटी राव चूडाको ब्याहकर मंडोवरका किला दहेजमें दिया, किसी शाइरने उस वक्त मारवाडी भाषामें एक सोरठा कहा था -

सोरठा

ईंदांरो उपकार, कमधज कदे न वीसरे ॥
चूडो चवरी चाड़, दियो मंडोवर दायजे ॥

यह मंडोवरका राज विक्रमी १४५१ [हि० ७९६ = ई० १३९४] में राव चूंडाको मिला (१) राव चूडाने मुसल्मानोंसे नागौरभी छीन लिया, इन दिनोंमें दिल्लीके बादशाह बेताकत होगये थे, जिनके नौकरोंने गुजरात और मालवे की खुद मुख्तार बादशाहतें बनालीं. ऐसी हालतमें मंडोवर और नागौरसे गुजरातके मातहत मुसल्मानोंको राजपूतोंने निकाल दिया हो, तो तअज्जुब नहीं; दिल्लीकी ताकत तो बहुत अर्से तक ग़ाइब रही, लेकिन् गुजरातियोंने कुछ अर्से बाद नागौर छीन लिया. फिर भाटी राजपूत और सिंधके मुसल्मानोंसे लडकर राव चूडा मारागया. (मुन्शी देवीप्रसादने इनके मारेजानेका संवत् विक्रमी १४६५ [हिज्री ८११ = ईसवी १४०८] लिखा है) इसके १४ बेटे थे

(१) कन्नौजके राजा जयचन्द्रसे पीछे राव चूडा तक गद्दीनशीनीके साल संवत् हमने नहीं लिखे, क्योंकि पृथ्वीराजरासाकी बनावटी तहरीरने अस्ली संवत् मिटाकर जाली बना दिये, इसलिये राजा जयचन्द्रसे पहिलेके संवत् हमने ताम्रपत्र वगैरह के लेखसे सहीह बना दिये, परन्तु पिछले संवतोंको सहीह करनेके लिये कोई सुबूत नहीं मिलता, इससे लाचार गलत संवतोंको छोड दिया, और जो मारवाड़की ख्यातसे मिले हैं, वे इस नोटमें लिखे जाते हैं. आस्थानका जन्म वि० १२१८ कार्तिक कृष्ण १४ गुरुवार [हि० ५५६ ता० २८ शव्वाल = ई० ११६१ ता० २० ऑक्टोबर] को हुआ, और उसने विक्रमी १२३३ [हि० ५७२ = ई० ११७६] को मारवाड़में आकर खेड़का राज

१- रणमल, जिसका जन्म वि० १४४९ वैशाख शुक्ल ४ [हि० ७९४ ता० २ जमादियुस्सानी = ई० १३९२ ता० २८ एप्रिल] को हुआ, २- अरडकमल, जिसके अरडकमालोत, ३- बीजा, ४- सत्ता, जिसके सत्तावत राठौड कहलाये, ५- भीम, जिसके भीमोत, ६- पूना, इसके पूनोत; ७- कान्ह, जिसके कान्होत, ८- शिवराज, ९- अज्जा, १०- लूबा, ११- रावत, १२- रामदीन, १३- सहसमल्ल, जिसके सहसमलोत, १४ रणधीर, जिसके रणधीरोत कहलाते हैं इनके बारेमें यह कहावत मश्हूर है -

"चौदह राव चूडाका जाया। चौदह ही राव कहाया ॥"

चूडाकी बेटीका नाम हासबाई था, जो चित्तौडके महाराणा लाखाको ब्याही गई, जिसका ज़िक्र पहिले भागमें लिखा गया है राव चूडाके बाद उसके छोटे बेटे कान्हके गद्दीपर बैठ जानेसे बडा रणमल, जो हक़दार था, नाराज होकर महाराणा मोकलके पास चित्तौड चला आया; उसे महाराणाने कई गावों समेत धणलाका पट्टा दिया, जो अब मारवाडके इलाकेमें सोजतके पास है

राव कान्ह.

कान्हने जांगलूके सांखला राजपूतोंपर फ़त्ह पाई; फिर मरगया. रणधीर वगैरह भाइयोंने मिलकर सत्ताको मंडोवरका मालिक बनाया, जिसपर महाराणा मोकलसे मदद लेकर रणमल चढ आया. सत्ताके बेटे नर्बदसे रणमलका मुकाबला होनेपर नर्बद ज़ख्मी हुआ, और रणमलने फ़त्ह पाकर मंडोवरपर कब्ज़ा कर लिया, नर्बद महाराणा मोकलके पास आया, जिसको महाराणाने एक लाख रुपयेकी जागीरमें कायलाणाका पट्टा दिया, जो अब जोधपुर के पास है.

लिया इसके बाद राव धूहड गद्दीपर वि० १२६१ ज्येष्ठ कृष्ण १३ [हि० ६०० ता० २७ शअ़्बान = ई० १२०४ ता० ३० एप्रिल] मे बैठा, और चहुवानोकी लडाई मे वि० १२८५ ज्येष्ठ [हि० ६२५ जमादियुस्सानी = ई० १२२८ मई] को मारागया इसके बाद रायपाल गद्दीपर बैठा, इसके बाद वि० १३०१ [हि० ६४१ = ई० १२४४] मे कान्ह गद्दीपर बैठा, जिसका जन्म वि० १२८१ [हि० ६२१ = ई० १२२४] और देहान्त वि० १३८५ [हि० ७२८ = ई० १३२८] मे हुआ इसके बाद जालणसी गद्दीपर बैठा, फिर मल्लीनाथ विक्रमी १४३१ [हि० ७७६ = ई० १३७४] को गद्दीपर बैठा, और बीरमदेवका इन्तिक़ाल वि० १४४० कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ७८५ ता० १९ शअ़्बान = ई० १३८३ ता० १७ ऑक्टोबर] को लिखा है.

२३ राव रणमल (१)
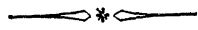
इन्होंने सोनगरा राजपूतोंसे कई लड़ाइयां करके उनको अपने ताबे बनाया मेवाड़में कुल कारोबारका मुरूतार राव रणमल था, क्योंकि रावकी बहिनके बेटे महाराणा मोकल उसपर पूरा भरोसा रखते थे, रणमलने महाराणा लाखाके बेटे चूडा वगैरहको निकलवा दिया था, जिससे वे लोग राठौड़ोंके दुश्मन होगये महाराणा मोकलको महाराणा खेताकी पासबानके बेटे चाचा और मेराने मार डाला, जिनको मारकर रणमलने मोकलका बैर लिया महाराणा कुम्भाके वक्तमें भी राव रणमल मेवाड़का मुसाहिब रहा, माडूके बादशाह महमूदको (२) गिरिफ्तार करके महाराणा कुम्भाके हवाले किया कुम्भाके काका महाराणा लाखाके बेटे राघवदेव (३) को रणमलने दगासे मरवा डाला, इस बातसे फिर अदावत जियादह बढी, रावत् चूडा व महपा पवारके बेटे अक्काने महाराणा कुम्भाके इशारेसे रणमलको विक्रमी १५०० [हिज्री ८४७ = ई० १४४३] में मरवा डाला, और उसका बेटा जोधा मारवाड़की तरफ भागा, रास्तेमें लड़ाइया होकर दोनो तरफके बहुतसे आदमी मारेगये राव जोधाने तक्लीफकी हालतमें रहकर सात वर्ष बाद मंडोवरका किला अपने कब्जेमें किया, और सीसोदिया रावत् चूडाके बेटे इस हम्लेमें मारेगये यह सब हाल मुफस्सल महाराणा मोकल और कुम्भाके बयानमें लिखा गया है

राव रणमलके २४ बेटे थे, १- जोधा, २- अखेराज, इसका महेराज, इसका कूपा, जिससे कूपावत राठौड़ कहाये, अखेराजका दूसरा बेटा पचायण, जिसका जैता हुआ, इसकी औलादवाले जैतावत कहलाते हैं रणमलका ३- बेटा काधल, जिसकी औलाद बीकानेरके इलाकेमें काधलोत मश्हूर हैं, ४- चापा, जिसके चापावत, ५ वा- लक्खा, इसके लखावत, ६ वा- भाखर, इसका बेटा बाला हुआ, जिससे बाला राठौड कहलाये रणमलका ७ वा- बेटा डूगरसी, जिससे डूगरसिहोत हुए, ८ वा- जैतमाल, इसका

---

(१) मुन्शी देवीप्रसादका बयान है, कि इनकी गद्दीनशीनीके सवतमें बहुतसे इख्तिलाफ है, लेकिन् हमारी दानिस्तमें विक्रमी १४७४ [हिज्री ८२० = ई० १४१७] दुरुस्त है

(२) यह बात मारवाड और मेवाड़ वगैरह राजपूतानेकी ख्यातमें लिखी है, लेकिन् फार्सी तवारीखोंमें नही मिलती

(३) इसकी छत्री चित्तौड़में अन्नपूर्णाके मन्दिरके पास दक्षिणी तरफ अबतक मौजूद है, और उसे सीसोदिया अपना बुजुर्ग मानकर पूजते है

भोजराज, जिससे भोजराजोत राठौड कहलाये रणमलका ९ वां- बेटा मडला, जिससे मडलावत मश्हूर हुए, जो बीकानेरके इलाकेमे है रणमलका १० वा- बेटा पाता, जिसके पातावत, ११ वा- रूपा, जिसके रूपावत, १२ वां- कर्ण, जिसके कर्णोत, १३ वा- साडा, जिसके साडावत, १४ वा- मांडण, जिसके माडणोत, १५ वा- नाथा, जिसके नाथोत, १६ वा- ऊदा, जिसके ऊदावत, १७ वा- बैरा, जिसके बैरावत; १८ वां- हापा, १९ वा- अडमाल, २० वा- सावर, २१ वा- जगमाल, इसका बेटा खेतसी, जिससे खेतसिहोत हुए, २२ वा- शक्ता, २३ वा- गोपा, २४ वा- चन्द (१)

२४ राव जोधा

इनका जन्म विक्रमी १४७२ वैशाख कृष्ण १४ [हिज्री ८१८ ता० २७ मुहर्रम = ई० १४१५ ता० ९ एप्रिल] को हुआ था, और राव रणमलके मारेजाने बाद यह चित्तौडसे भागकर बहुत दिनो तक रेगिस्तान (मरुस्थल) मे फिरता रहा, और मडोवरपर रावत् चूडाने कब्जा करलिया, जो कुछ अर्से बाद इसके तहतमे आया राव जोधाने विक्रमी १५१५ ज्येष्ठ शुक्ल ११ शनिवार [हिज्री ८६२ ता० १० रजब = ई० १४५८ ता० २५ मई] को जोधपुर शहर और किलेकी नीव डाली विक्रमी १५४५ वैशाख शुक्ल ५ [हिज्री ८९३ ता० ३ जमादियुल अव्वल = ई० १४८८ ता० १८ एप्रिल] को राव जोधाने इस दुनूयाको छोडा इनके १७ बेटे थे, १-सातल, २-सूजा, ३-बीका (२), ४-नीबा, ५-कर्मसी, ६-रायसाल, ७ वा-बनबीर, ८ वा-बीदा, ९ वा-जोगा, १० वां-भारमल, ११ वा-दूदा, १२ वां-बरसिंह, १३ वां-सामन्तासिंह, १४ वा-शिवराज, १५ वां-जशवन्त, १६ वां-कूपा और १७ वां-चान्दराव था

२५ राव सातल

राव जोधाका बडा बेटा सांतल गद्दीपर बैठा. अजमेरके सूबहदारसे कोशाणा गांवमे राव सातलकी लडाई हुई, सूबहदार अजमेरके साथ घडूला नामी कोई मश्हूर

(१) राव रणमलके बेटोके नाम मुख्तलिफ तौरपर है, लेकिन् हमने ये मौतबर ख्यातकी पोथीसे लिखा है, जो कविराज मुरारिदानने भेजी है

(२) बीकानेरकी तवारीखमे बीकाको दूसरे नम्बरपर लिखा है, और राव सांतलके बाद बीका जोधपुर लेनेको इसी मत्लबसे गया था, कि अब मै हक़दार हू, यह ज़िक्र बीकानेरके हालमे लिखागया है, लेकिन् जोधपुरकी तारीखमे वह सूजासे छोटा तहरीर है

आदमी था, जिसको राव सांतलने मार लिया, और खुद भी मुसल्मानोंसे लड़कर विक्रमी १५४८ चैत्र शुक्ल ३ (१) [हिज्री ८९६ ता० १ जमादियुल अव्वल = ई० १४९१ ता० १३ मार्च] को मारेगये कोशाणाके तालाबपर इनकी छत्री मौजूद है सांतलके कोई लड़का नहीं था, इसलिये उनके छोटे भाई गद्दीपर बिठाये गये, और सांतलके नामपर सातलमेर आबाद हुआ

२६ राव सूजा

इनका जन्म विक्रमी १४९६ भाद्रपद कृष्ण ८ [हिज्री ८४३ ता० २२ सफ़र = ई० १४३९ ता० ३ ऑगस्ट] को हुआ था, राव बीकाने बीकानेरसे फ़ौज लेकर जोधपुरमे राव सूजाको आघेरा, लेकिन् सुल्ह होनेके बाद वापस लौट गया राव सूजा विक्रमी १५७२ कार्तिक कृष्ण ९ [हिज्री ९२१ ता० २३ शअ्बान = ई० १५१५ ता० २ ऑक्टोबर] को मर गये इनके ९ बेटे थे, १- बाघा, विक्रमी १५१४ वैशाख कृष्ण ३० [हिज्री ८६१ ता० २९ जमादियुल अव्वल = ई० १४५७ ता० २५ एप्रिल] को पैदा हुआ, और विक्रमी १५७१ भाद्रपद शुक्ल १४ [हिज्री ९२० ता० १३ रजब = ई० १५१४ ता० ३ सेप्टेम्बर] को बापके साम्हने ही मर गया, इसका बेटा १- बीरम, २- गांगा था, जिनमेंसे पिछला सूजाके बाद जोधपुरका मालिक हुआ, बाघाका ३- बेटा खेतसी, ४- प्रतापसिंह था राव सूजाका २- बेटा नरा, ३- शेखा, ४- देवीदास; ५- ऊदा, इससे ऊदावत (२) कहलाये, ६- प्राग, ७- सांगा, ८- पृथूराव, ९- नापा था

२७ राव गांगा

इनका जन्म विक्रमी १५४० वैशाख शुक्ल ११ [हि० ८८८ ता० ९ रबीउल अव्वल = ई० १४८३ ता० १८ एप्रिल] को हुआ राव सूजाके बाद बीरमको गद्दीपर बिठाना चाहते थे, लेकिन् बीरम और उनकी माकी मग्रूरीसे

(१) हर साल जोधपुरमे अब तक इसी चैत्र शुक्ल ३ के दिन घडूलाका मेला होता है.

(२) इसकी औलादमे रायपुर वगैरहका ठिकाना है

उसको महरूम रखकर सर्दारोंने गांगाको गद्दीपर बिठा दिया यह राव गांगा अपने दादाकी जिन्दगीमें भी चित्तौड़के महाराणा सांगाके पास रहा था जब विक्रमी १५७६ [हि० ९२५ = ई० १५१९] में महाराणा सांगाने ईडरके राव भीमदेवके बेटे राव रायमल्लकी मददपर चढाई की, और गुजरातका बहुतसा हिस्सह लूटा, उस वक्त राव गांगा उनके शरीक थे विक्रमी १५८६ [हि० ९३५ = ई० १५२९] में नागौरके हाकिम दौलतखांपर, जो गांगाके भाई शेखाकी मददको आया था, लडाईमें फत्ह पाई, बहुतसा अस्बाब लूट लिया, और शेखा भागकर चित्तौड चला आया, जो गुजराती बहादुरशाहकी लडाईमें मारा गया

विक्रमी १५८८ (१) ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ९३७ ता० ३ शव्वाल = ई० १५३१ ता० २१ मई] को राव गांगाका इन्तिकाल हुआ, जिसकी हकीकत इस तरहपर है - राव गांगा महलके झरोखेपर अफीमकी पीनकमें गाफ़िल हो रहे थे, कि उस वक्त उनके बडे बेटे मालदेवने नीचे गिरा दिया, और वे मर गये इनके ६ बेटे थे, १- मालदेव, २- मानसिंह, ३-वैरीशाल, ४- कृष्णसिंह, ५-सार्दूलसिंह, और ६- कानसिंह

२८ राव मालदेव

राव मालदेवका जन्म विक्रमी १५६८ पौष कृष्ण १ [हि० ९१७ ता० १४ रमजान = ई० १५११ ता० ४ डिसेम्बर] को हुआ था यह गद्दीपर बैठनेके बाद अपने भाई बीरमदेवसे सोजतमें कई बार लडे, आखिरकार सोजतसे उसे निकाल दिया, और बीरा सींधलको मारकर भाद्राजून लेली विक्रमी १५९२ [हि० ९४२ = ई० १५३५] में मुसल्मानोंसे नागौर (२) छीन लिया महाराणा उदयसिंहकी मददके लिये बनबीरकी लडाईके वक्त मारवाडकी तवारीखमें राठौड कूंपा वगैरहको भेजना लिखा है, लेकिन् मेवाडकी तवारीखोंमें इस बातका कुछ जिक्र

---

(१) यह संवत् चैत्री हो, तो ठीकही है, और अगर मारवाड़के रवाजसे है, तो विक्रमी १५८९ चैत्रीका ज्येष्ठ शुक्ल ५ होगा

(२) नागौरमें गुजराती बादशाहोंकी तरफके मुलाज़िम रहते थे, मारवाड़की तवारीखमें उस हाकिमका नाम नागौरीखां लिखा है, लेकिन् यह नाम नागौरके ख़ान (حاں ناگور) से बिगडकर बना मालूम होता है, नाम शायद उसका कुछ और होगा.

नहीं है विक्रमी १५९५ आषाढ कृष्ण ८ [हि० ९४५ ता० २२ मुहर्रम = ई० १५३८ ता० २० जून] को डूंगरसिंह जैतमालोतसे सिवानाका किला लेकर मांगलिया देवा भादावतको क़िलेदार बनाया

विक्रमी १५९८ [हि० ९४८ = ई० १५४१] मे राव मालदेवने बीकानेरपर फ़ौज भेजी, और राव जैतसीको मारकर मुल्क जांगलूपर क़ब्ज़ा करलिया, जिसके इन्आममे कूंपाको झूंझनूंका पट्टा दिया यह हाल तफ़्सीलवार बीकानेरके इतिहासमे लिख आये है विक्रमी १५९९ आषाढ शुक्ल १५ [हि० ९४९ ता० १४ रबीउल् अव्वल = ई० १५४२ ता० २८ जून] को हुमायूं बादशाह शेरशाहसे तंग होकर सिन्धकी तरफ़से देवरावलमे आया, और श्रावण कृष्ण ६ [हि० ता० २० रबीउल् अव्वल = ई० ता० ४ जुलाई] को वासिलपुर, और भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ता० १७ रबीउस्सानी = ई० ता० ३० जुलाई] को बीकानेरसे १२ कोसपर, और वहांसे फलौदी व जोगी तालाब (१) पर पहुंचा हुमायूं शाहको राव मालदेवने बुलाकर अपनी पनाहमे रखना चाहा था, लेकिन् वह यह बात सुनकर, कि बादशाहके साथियोंने गाय मारी है (२), नाराज हुआ हुमायूंको भी उसकी नाराज़गीका हाल मालूम होगया, तब वह डरकर सांभर, सातलमेर और जयसलमेर होता हुआ उमरकोट चला गया

राव मालदेवने बीकानेर और मेड़ता अपने भाइयोंसे छीन लिया था, जिससे बीकानेरका राव कल्याणमल्ल और मेड़तेका राव बीरमदेव शेरशाहके पास दिल्ली पहुंचे, और मददके लिये उसको ले आये, वह मए फ़ौजके अजमेर पहुंचा यह ख़बर

---

(१) जहां अब कृष्णगढ़ शहर आबाद है

(२) राजपूतानहकी तवारीख़ोंमे मश्हूर है, कि हुमायूंने गाय मारी, इस सबबसे मालदेवने नाराज होकर बादशाहको कह दिया, कि हमारे देशमेंसे चले जाओ, नहीं तो मारे जाओगे अक्बरनामह, तबक़ात अक्बरी, तारीख़ फ़िरिश्तह वग़ैरह तवारीख़ोंमे यह बात नहीं लिखी, लेकिन् हमारी रायमे राजपूतानहकी तवारीख़ोंका क़ौल सहीह मालूम होता है, क्योंकि अक्बर जौहर आफ़्ताबची, जो हुमायूंके साथ था, लिखता है, कि जब बादशाह जयसलमेरके इलाकेमे पहुंचा, तब रावलकी तरफ़से दो क़ासिद आये, जिन्होंने अर्ज़ किया, कि राजा मालदेवने आपको बुलाया था, और उसके मुल्कमे गाय भी नहीं मारी, हमारे इलाक़ेमे आकर गाय मारी गई, यह अच्छा काम न हुआ, इसलिये हम तुम्हारा रास्ता रोकते है

इस कलामसे साबित होता है, कि हुमायूं और उसके साथियोंको गाय मारनेमे कुछ नुक्सान मालूम न था, इसलिये उसने मारवाड़मे भी मारी होगी, जयसलमेरके क़ासिदोंने हुमायूंको ज़ियादह क़ुसूरवार दिखलानेके लिये ऐसा कहा होगा

सुनकर मालदेवने अपने सर्दारोको बुलाया, उन लोगोने कासिदोको बधाई (१) का इन्आम दिया

सब लोगोको साथ लेकर राव मालदेव अजमेरकी तरफ रवाना हुए; अस्सी हजार फ़ौज शेरशाहके पास और पचास हजार राव मालदेवके पास थी बादशाहका डेरा गाव समेलमे और रावका मकाम गीररी गांवमें था. शेरशाहको मालदेवकी बडी फौज देखकर हैरानी हुई, तब बीरमदेव मेडतियाने कहा, कि आपको कुछ फिक्र नही करनी चाहिये, हम इसका इलाज करते हैं बादशाहसे कई फर्मान मालदेवके सर्दारोके नाम इस मज्मूनके लिखवाये, कि तुम लोगोकी अर्जिया राव मालदेवके जियादह तक्लीफ़ देनेसे उसको गिरिफ्तार करा देनेके मत्लबकी आई; सो जमा खातिर रखनी चाहिये; जब मालदेवको गिरिफ्तार करादोगे, तब तुम्हे इक्रारके मुवाफिक जागीरें दी जायगी

इस तरहके फ़र्मान ढालकी गादियोमे सिलवाये, और ढालें अपने आदमीको सौदागर बनाकर मालदेवके सर्दारोके हाथ कम कीमतपर बेच दीं. बीरमदेवने अपना आदमी भेजकर मालदेवको खान्गीमे कहलाया, कि अगर हम आपके बर्खिलाफ है, तो भी अपनी और आपकी एक इज़्ज़त जानकर होश्यार करते है, कि आपके सर्दार कूपा, जैता, वगैरह बादशाहसे मिलगये है, एतिबार न हो, तो इनकी ढालोकी गादियोमे बादशाही फ़र्मान मौजूद है, उनको देख लीजिये यह सुनकर मालदेवने ढालोकी गादियोमेसे कागज़ निकलवाकर देखे, और घबराया, तो कूंपा व जैता वगैरहने बहुतसा समझाया, पर विश्वास न आया, और भाग निकला, तब कूपा, खीवा व जैता वगैरहने विचारकर बादशाहकी फौजपर धावा किया इस लडाईमे दो हज़ार राठौड़ और बहुतसे बादशाही आदमी मारेगये यह लड़ाई विक्रमी १६०० पौष शुक्ल ११ [हि० ९५० ता० १० शव्वाल = ई० १५४४ ता० ५ जैन्युअरी] को हुई इस लडाईमे, जो मारवाड़ी सर्दार काम आये, उनकी तफ़्सील नीचे लिखी जाती है -

---

(१) खुशीकी ख़बरको बधाई बोलते है, राजपूतानहमे राजपूत लोग लडाईकी ख़बरको खुश ख़बरी मानकर इन्आम देते थे, और यह खयाल करते थे, कि हम बीमारीसे नही मरें, लडाईमें मारे जाकर दूसरी दुनयाका आराम हासिल करे इन लोगोंका अब तक अक़ीदह है, कि लड़ाईमे मारे जाने बाद परिया फूलकी माला लेकर आती है और मरने वालेके गलेमें डाल कर उसे अपना ख़ाविन्द बनाती है, फिर दोनो मिलकर दूसरी दुनयामें आरामके साथ रहते है

(१) राठौड जैता पचांयणोत
(२) राठौड उदयसिंह, जैतावत
(३) राठौड जोगा, रावल अखैराजोत
(४) राठौड बीरसी, राणावत.
(५) राठौड बीदा, भारमलोत.
(६) राठौड हामा, सिहावत
(७) रणमल्ल
(८) राठौड भद्दो, पचायणोत
(९) बीदा, पर्वतोत.
(१०) सूरा अखैराजोत
(११) राठौड़ हरपाल.
(१२) सोनगरा अखैराज, रणधीरोत (१)
(१३) राठौड कूपा, महराजोत.
(१४) राठौड खीवां, ऊदावत
(१५) राठौड़ पत्ता, कान्हावत.
(१६) राठौड सुजानसिंह, गांगावत
(१७) राठौड कल्ला, सुरजणोत
(१८) राठौड रायमल्ल, अखैराजोत
(१९) राठौड भोजराज, पचायणोत
(२०) राठौड़ जयमल्ल
(२१) राठौड भवानीदास.
(२२) राठौड नीबा, आनन्दोत
(२३) सोनगरा भोजराज, अखैराजोत.
(२४) भाटी पचायण, जोधावत
(२५) भाटी मेरा, अचलावत.
(२६) भाटी कल्याण, आपलोत
(२७) भाटी सूरा, पातावत
(२८) भाटी नीबा, पातावत
(२९) देवडा अखैराज, बनावत.
(३०) ऊहड सुर्जन, नरहरदासोत.
(३१) साखला धनराज,
(३२) ईदा किशर्ना
(३३) जयमल्ल बीदावत.
(३४) राठौड भारमल्ल, बालावत.
(३५) भाटी गागा, बरजागोत.
(३६) भाटी हमीर, लक्खावत.
(३७) भाटी माधा, राघोत
(३८) भाटी सूरा, पर्वतोत
(३९) सोढा नाथा, देदावत.
(४०) ऊहडबीरा, लक्खावत
(४१) साखला डूगरसिंह, माधावत.
(४२) मागलिया हेमा, नरावत.
(४३) चारण भाना, खेतावत.
(४४) पठान अलीदादख़ा

शेरशाहने इस लडाईके बाद कहा, कि "मैंने एक मुट्ठी बाजरेके एवज़ हिन्दुस्तानकी सल्तनत खोई होती". राव मालदेव पीपलादके पहाडोकी तरफ चले गये, और बादशाहने जोधपुरपर क़ब्ज़ा किया उस वक्त जोधपुरमे भी मालदेवके बहुतसे राजपूत लड़मरे, जिनकी छत्रियां अब तक गढपर मौजूद हैं, तवालतके सबब नाम नही लिखे गये. इस वक्त राव कल्याणमल्लने बीकानेर, और बीरमदेवने मेडतेपर क़ब्ज़ह किया इसके बाद बादशाह चला गया, और राव मालदेवने गांव भांगेसरके

(१) यह अखैराज महाराणा प्रतापसिंहका नाना नही है, दूसरा होगा

थानेपर हम्ला करके बहुतसे बादशाही आदमियोंको मारा, और खजानह लूटलिया. विक्रमी १६०२ [हि० ९५२ = ई० १५४५] में राव मालदेवने जोधपुरका क़िला लेलिया.

विक्रमी १६१३ फाल्गुन [हि० ९६४ रबीउल् अव्वल = ई० १५५७ जैन्युअरी] में जब महाराणा उदयसिंह और हाजीखांसे लड़ाई हुई, तब राव मालदेवने हाजीखांकी मददके लिये डेढ़ हज़ार सवार भेज दिये थे. मारवाड़ी सर्दार हाजीखांको सहीह सलामत जोधपुर ले आये, फिर वह पठान गुजरातको चला गया. यह जिक्र महाराणा उदयसिंहके हालमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ७१) इस लड़ाईमें मेड़तेका राव जयमल्ल बीरमदेवोत महाराणा उदयसिंहकी फ़ौजमें था, वह मेड़ते गया, तो राव मालदेवने अदावतसे मेड़ता छीन लिया.

विक्रमी १६१४ फाल्गुन् शुक्ल पक्ष [हि० ९६५ जमादियुल् अव्वल = ई० १५५८ मार्च] में बादशाह अक्बरके सर्दार मुहम्मद क़ासिम नेशापुरीने अजमेर और नागौरपर क़ब्जह करलिया, और इस सर्दार के मातहत सय्यद मुहम्मद बारह और शाहकुलीखां महरमने जैतारन फ़त्ह करलिया; राव मालदेवके राजपूत भाग गये. राव बीरमदेवका बेटा जयमल्ल बादशाह अक्बरके पास गया, और बादशाह भी राजपूतानहकी तरफ़ चला. उसने सांभरके मकामसे विक्रमी १६१९ ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष [हि० ९६९ रमज़ान = ई० १५६२ मई] में मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनको मए जयमल्ल मेड़तियाके मेड़तेपर भेजा. यह क़िला पहिलेसे राव मालदेवने जगमालको देदिया था, जिसकी मददके लिये रावने देवीदासको पांच सौ राजपूतों समेत भेजा, राजपूत मिर्ज़ाकी फ़ौजसे खूब लड़े, कभी कभी बाहर निकलकर भी हम्ला करते थे. एक दिन बादशाही लोगोंने सुरंग लगाकर क़िलेका एक बुर्ज उड़ा दिया, लेकिन् राजपूतोंने बहादुरीके साथ दुश्मनोंको रोका, और रातके वक्त वह बुर्ज पीछा तय्यार करलिया, परन्तु रसदकी कमीके सबब राजपूतोंने सुलह चाही.

इक़ारके मुवाफ़िक़ जगमाल तो अपने बाल बच्चोंको लेकर निकल गया, लेकिन् देवीदास अपना अस्बाब जलाकर बाहर जाता था, कि मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनके हुक्मसे जयमल्ल, लूणकर्ण, शाह बदाग़खां, अब्दुल मुत्तलिब, मुहम्मदहुसैन और सूजा वगैरहने हम्ला करदिया, देवीदास भी बहादुरीके साथ पेश आया और ज़ख्मी होकर घोड़ेसे गिरगया, जो कई वर्षोंके बाद जोगियोंकी जमाअतमें मश्हूर होकर जोधपुरमें आया; जिसका जिक्र आगे किया जायगा, इसके सिवाय और भी बहुतसे बहादुर इस लड़ाईमें मारे गये; मेड़ता मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनने जयमल्लके

सुपुर्द किया, लेकिन् विक्रमी १६१९ आश्विन शुक्ल पक्ष [हि० ९७० सफ़र = ई० १५६२ ऑक्टोबर] मे मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीनहुसैनके बाग़ी होनेपर बादशाहने जयमल्लसे छीनकर जगमालको मेडता दिला दिया, और जयमल्ल चित्तौड़ आया, जिसको महाराणा उदयसिंहने एक हज़ार गावो समेत बदनौरका पट्टा दिया

राव मालदेवका देहान्त विक्रमी १६१९ कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ९७० ता० ११ रबीउल् अव्वल = ई० १५६२ ता० ९ नोवेम्बर] को हुआ. यह राव तेज मिजाज, बेरहम, खुद मत्लबी और घमंडी थे, लेकिन् बडे बहादुर और बलन्द हिम्मत होनेके सबब पहिले सब ऐब रद्द होगये वह अपने नुक्सानका बदला लेनेको बडे मुस्तइद थे, और दूसरेकी तारीफ पसन्द नही करते मारवाड़का खुद मुख्तार पहिला राजा मालदेवको ही समझना चाहिये, क्योंकि पहिलेके राजा आस्थानसे लेकर राव गागा तक छोटे इलाकेके मालिक रहे, यह राव ब्राह्मण, चारण वगैरह पेश्वा कौमोकी बहुत खातिर करते थे इनके ग्यारह पुत्र थे १- रामराज, २- उदयसिंह, ३- चन्द्रसेन, ४- रायमल्ल, ५- भाणा, ६- रत्नसी, ७- भोजराज, ८- विक्रमादित्य, ९- पृथ्वीराज, १०- आशकरण, ११- गोपाल, जिनमेसे बापके मरने बाद चन्द्रसेन गद्दीपर बैठा

२९ राव चन्द्रसेन.

राव चन्द्रसेनका जन्म विक्रमी १५९८ श्रावण शुक्ल ८ [हि० ९४८ ता० ६ रबीउस्सानी = ई० १५४१ ता० ३१ जुलाई] को हुआ था राव मालदेवका सबसे बडा बेटा रामराज था, परन्तु उसने अपने बापको दादेकी तरह मारनेका इरादह किया, इसलिये मालदेवने उसको निकाल दिया, तब रामराज अपने ससुर महाराणा उदयसिंहके पास उदयपुर आया, महाराणाने उसको कई गांवो समेत कैलवाका पट्टा दिया दूसरा उदयसिंह और तीसरा चन्द्रसेन, दोनो महाराणी झाली स्वरूपदेसे पैदा हुए थे, झाली राणीने किसी नाराज़गीसे उदयसिंहको निकलवाकर (१) चन्द्रसेनको वलीअह्द बनाया; जब राव मालदेवका इन्तिकाल हुआ, तब चन्द्रसेन जोधपुरकी गद्दीपर बैठे, लेकिन् इनका बडा भाई रामराज बादशाह अक्बरके पास पहुचा, और चन्द्रसेनकी तेज़ मिजाजीके सबब उसके राजपूत, रामराज और उदयसिंहसे मेल रखते थे मारवाड़मे आपसकी फूटसे

(१) राव मालदेवने उदयसिंहको निकालने बाद फलौदीकी जागीर उसको दी थी.

ग़द्र होने लगा, गद्दीनशीनीके दूसरे वर्ष ही बादशाही फ़ौजने चन्द्रसेनको जोधपुरसे निकाल कर मारवाड़पर क़ब्ज़ाकर लिया

चन्द्रसेन वहांसे निकलकर घूमते रहे; अबुल्फ़ज़्ल लिखता है, कि हिज्री ९७८ ता० १६ जमादियुस्सानी [वि० १६२७ मार्गशीर्ष कृष्ण २ = ई० १५७० ता० १५ नोवेम्बर] को चन्द्रसेन नागोरमे बादशाह अक्बरके पास हाज़िर हुआ, फिर बादशाहसे बाग़ी होनेके बाद कुछ दिनो तक सिवानेपर क़ाबिज रहा इसके बाद पहाड़ोंमे डूगरपुर, बांसवाडेकी तरफ़ चलागया, बादशाही लोगोंसे कई लड़ाइयां की, आख़िरकार बादशाही थाना काटकर सोजतमे क़ब्ज़ा करलिया और वहीं उसका इन्तिक़ाल हुआ अबुल्फ़ज़्ल यह भी लिखता है, कि जुलूसी सन् २५ [हिज्री ९८८ ता० २४ मुहर्रम = विक्रमी १६३६ चैत्र कृष्ण १० = ई० १५८० ता० १० मार्च] को, जब चन्द्रसेनने फ़साद उठाया, तब पाइन्दा मुहम्मदख़ां मुग़ल मए दूसरे जागीरदारोंके उसकी तंबीहको तइनात हुआ, जिससे राजाने शिकस्त खाई, और फिर कभी उसका पता नहीं लगा, जिससे उसका मरना ख़याल किया गया इसीसे मालूम होता है, कि विक्रमी १६३७ [हि० ९८८ = ई० १५८०] व वि० १६३८ [हि० ९८९ = ई० १५८१] के बीचमे उनका देहान्त हुआ होगा इनके तीन बेटे थे, १– रायसिंह जिसका जन्म विक्रमी १६१४ [हिज्री ९६४ = ई० १५५७] मे; २– उग्रसेन जिसका जन्म विक्रमी १६१६ भाद्रपद कृष्ण १४ [हिज्री ९६६ ता० २८ शव्वाल = ई० १५५९ ता० ३ ऑगस्ट] को हुआ; ३– आशकरण जिसका जन्म विक्रमी १६२७ श्रावण कृष्ण १ [हिज्री ९७८ ता० १५ मुहर्रम = ई० १५७० ता० १९ जून] को हुआ था इन तीनोमेसे सब राजपूतोंने मिलकर छोटे आशकरणको गद्दीपर बिठा दिया, जिससे उग्रसेनने फ़साद किया, तो राजपूतोंने दोनो भाइयोंको आपसमे समझाया, लेकिन् उग्रसेन दिलसे नाराज था, जिससे विक्रमी १६३८ चैत्र शुक्ल २ [हि० ९८९ ता० १ सफ़र = ई० १५८१ ता० ७ मार्च] के दिन उसने आशकरणको मारडाला, और उसके राजपूतोंने उग्रसेनका भी काम तमाम किया. रायसिंह, जो बादशाह अक्बरके पास था, यह ख़बर सुनकर सोजतमे आया और अपने बापकी गद्दीपर बैठा

सिरोहीके राव सुल्तानपर बादशाह अक्बरने महाराणा उदयसिंहके बेटे जगमालको फ़ौज देकर रायसिंहके साथ भेजा विक्रमी १६४० कार्तिक शुक्ल ११ [हि० ९९१ ता० ९ शव्वाल = ई० १५८३ ता० २७ ऑक्टोबर] को ये दोनो मारेगये इन तीनों भाइयोंमेसे उग्रसेनके तीन बेटे थे, १– कर्मसेन, २– कल्याणदास, ३– कान्ह; कर्मसेनकी औलादमे अजमेरके मातहत भिणायके राजा हैं.

३० राजा उदयसिंह (मोटा राजा)

इनका जन्म विक्रमी १५९४ माघ शुक्ल १२ रविवार [हिज्री ९४४ ता० १० शअ्बान = ई० १५३८ ता० १३ जैन्युअरी] को हुआ था, ये विक्रमी १६२७ [हिज्री ९७८ = ई० १५७०] मे अक्बरकी ताबेदारीमे हाज़िर हुए, और विक्रमी १६३५ चैत्र शुक्ल [हिज्री ९८६ मुहर्रम = ई० १५७८ मार्च] मे सादिकखांके साथ राजा मधुकर बुन्देलेकी तबीहके वास्ते मुकर्रर हुए इनको बादशाह अक्बरने "राजा" का खिताब और जोधपुरका क़िला दिया विक्रमी १६३९ चैत्र कृष्ण १ [हिज्री ९९१ ता० १५ सफ़र = ई० १५८३ ता० ९ मार्च] को मिर्ज़ाखां (खानख़ाना अब्दुर्रहीम), बीरमखाके बेटेके साथ गुजरातकी सफ़ाई करने और मुजफ्फर गुजरातीका फसाद मिटानेको गये विक्रमी १६४० भाद्रपद कृष्ण १२ [हिज्री ९९१ ता० २६ रजब = ई० १५८३ ता० १५ ऑगस्ट] को जोधपुरमे आकर गद्दीपर बैठे

विक्रमी १६४४ [हिज्री ९९५ = ई० १५८७] मे इन्होने अपनी बेटी मानबाई (१) की शादी शाहजादह सलीम (जहांगीर) के साथ की, यह बात कल्ला रायमलोतको बुरी मालूम हुई, और उसने फसाद करना चाहा, लेकिन् बादशाही दबावसे भागकर सिवाने चलाआया; राजा उदयसिंह भी पीछेसे बादशाही फ़ौज लेकर चढा; विक्रमी १६४५ [हिज्री ९९६ = ई० १५८८] मे कल्ला इस लड़ाई मे मारागया, जिसकी औलाद लाडणू वग़ैरह गावोमे है फिर इन्होने बादशाही फ़ौज लेकर विक्रमी १६४८ फाल्गुन् शुक्ल ७ [हि० १००० ता० ५ जमादियुल आख़र = ई० १५९२ ता० २० फेब्रुअरी] को बादशाह अक्बरसे विदा होकर सिरोहीके राव सुल्तानपर चढाई की और फ़त्ह पाई.

राजा उदयसिंहका इन्तिक़ाल विक्रमी १६५२ आषाढ़ शुक्ल १५ [हि० १००३ ता० १४ जिल्काद = ई० १५९५ ता० २३ जुलाई] को लाहौरमे हुआ. यह राजा शुरूअ्में बहादुर थे, लेकिन् बदनके भारी होनेसे बे कार होगये, राव मालदेवके पीछे भाइयोके फसादसे मारवाडका कुल मुल्क कब्जेसे निकल गया था, जिसमेसे कुछ पर्गने बादशाह अक्बरकी मिहर्बानियोसे हासिल किये, और एक हज़ारी ज़ात व सवारके मन्सब

---

(१) अक्बर नामहमे मानमती, और बादशाह जहांगीरने तुज़क जहांगीरीमें जगत् गुसांयन लिखा है, शायद यह ख़िताबी नाम होगा, जिसका अर्थ जगतकी मालिक है,

तक पहुंचे थे इनको "मोटा राजा" बदनके मोटा पनसे बादशाहने कहा होगा, जिससे यह नाम मश्हूर हुआ दूसरा सबब यह भी है, कि इन्होंने चारणोंके कुल गावोंपर विक्रमी १६४३ [हि० ९९४ = ई० १५८६] मे इस गरजसे जब्ती भेज दी थी, कि कुछ रुपये वुसूल करे, जिसपर दो हजार चारण तागा (खुद कुशी) करके मरगये, उन चारणोंमेसे नामी और मश्हूर दुर्सा आडा था, उसने भी अपने गलेमे छुरी मारी थी, जब वह बादशाहके पास गया, और दर्याफ्त करनेपर सब हाल अर्ज किया, तो जितने राजा व राजपूत वहा खडे थे, सबने राजा उदयसिंहकी हिकारत की, तब बादशाहने फर्माया, कि ऐसे आदमीका नाम जवानपर लाना ठीक नही, उसी वक्तसे "मोटा राजा" कहने लगे, जिससे दोनो मत्लब निकलते है, याने एक तो मोटा बदन देखकर, दूसरा तानेसे "मोटा (बडा) राजा" मश्हूर हुआ, जैसे कि अक्सर लोग किसी बुरे आदमीको बाज मौकेपर "भला आदमी" या "बडा आदमी" कहते है

इस राजाके १६ बेटे थे, १- नरहरदास, जो विक्रमी १६१३ माघ कृष्ण १ [हि० ९६४ ता० १५ सफर = ई० १५५६ ता० १९ डिसेम्बर] को पैदा हुआ, २- भगवानदास, विक्रमी १६१४ आश्विन कृष्ण १४ [हि० ९६४ ता० २८ जिल्काद = ई० १५५७ ता० २३ सेप्टेम्बर] को, ३- शक्तिसिंह विक्रमी १६२४ [हि० ९७४ = ई० १५६७] मे, ४- दलपत विक्रमी १६२५ श्रावण कृष्ण ९ [हि० ९७६ ता० २३ मुहर्रम = ई० १५६८ ता० २१ जुलाई], ५- भोपतसिंह विक्रमी १६२५ कार्तिक शुक्ल ६ [हि० ९७६ ता० ४ जमादियुल अव्वल = ई० १५६८ ता० २९ ऑक्टोबर], ६- सूरसिंह विक्रमी १६२७ वैशाख कृष्ण ३० [हि० ९७७ ता० २९ शव्वाल = ई० १५७० ता० ४ एप्रिल] को, ७- मोहनदास विक्रमी १६२८ [हि० ९७९ = ई० १५७१], ८- कृष्णसिंह वि० १६३९ ज्येष्ठ कृष्ण २ [हि० ९९० ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १५८२ ता० १० मई] को हुआ, ९- अभयराज, १०- तेजसी, ११- माधवसिंह, १२- कीर्तिसिंह, १३- जशवन्तसिंह, १४- करणमल्ल, १५- केशवदास और १६- रामसिंह था.

---
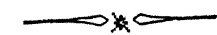
३१ राजा सूरसिंह

इनका जन्म विक्रमी १६२७ वैशाख कृष्ण ३० [हिज्री ९७७ ता० २९ शव्वाल = ई० १५७० ता० ४ एप्रिल] को हुआ था. इनको बादशाहने लाहौरमे उदयसिंहकी जगह

काइम किया, दूसरे बेटे इनसे बडे थे, लेकिन् राजा उदयसिंहने सूरसिंहकी माके लिहाजसे (जिससे कि वह बहुत खुश थे) बादशाहसे कहदिया था, कि मेरी जगहपर सूरसिंहको काइम करना चाहिये, इससे अक्बरशाहने सूरसिंहको जोधपुरका राजा बनाया विक्रमी १६५३ [हि० १००५ = ई० १५९६] मे बादशाह अक्बरका शाहज़ादह सुल्तान मुराद गुजरातकी हुकूमतपर मुकर्रर हुआ, उसके साथ सूरसिंह भी थे जब गुजरातके जागीरदार लोग शाहजादह मुरादके साथ दक्षिणकी मुहिमपर चले गये, और मुज़फ्फर गुजरातीके बडे बेटे बहादुरने गवारोकी जमइयत इकट्ठी करके वहाके गांवोको लूटना शुरूअ् किया, तब यह उसके मुकाबलेके वास्ते अहमदाबादसे निकले; जब दोनो तरफकी फौजे तय्यार होगई, बहादुर कम हिम्मतीसे भाग गया सुल्तान मुरादके मरने बाद विक्रमी १६५४ [हि० १००६ = ई० १५९७] मे दक्षिणकी हुकूमत सुल्तान दानयालके नाम हुई; तब सूरसिंह भी उसके साथ भेजेगये, और शाहजादहने राजू दक्षिणीकी तबीहके वास्ते दौलतखा लोदीके साथ सूरसिंहको भेजा विक्रमी १६५९ ज्येष्ठ कृष्ण ३० [हि० १०१० ता० २९ जिल्काद = ई० १६०२ ता० २१ एप्रिल] को खानखाना अब्दुर्रहीमके साथ खुदावन्दखा हबशीकी तबीहके वास्ते, जिसने कि पालम वगैरहमे फसाद उठा रक्खा था, रुख्सत हुआ; राजाने उस सूबेमे सर्कारकी खातिरख्वाह खिद्मत की थी, इसको शाहजादह दानयाल और ख़ानख़ानाकी अर्ज़के मुवाफिक नक़्क़ारा इनायत हुआ.

विक्रमी १६६५ चैत्र शुक्ल १३ [हि० १०१६ ता० १२ जिल्हिज = ई० १६०८ ता० २९ मार्च] को सूरसिंह बादशाह जहागीरके हुजूरमे हाजिर हुए और उसी सन् मे बादशाहके चौथे जुलूसपर अस्ल और इजाफह मिलाकर चार हजारी जात व दो हजार सवारका मन्सब पाया, और मन्सबदारोके साथ दक्षिणके सूबहदार ख़ानख़ानाकी मददको मुकर्रर होकर वहा भेजे गये बादशाह जहागीरके वक्तमे उदयपुरकी लडाईमे महाबतखांने सोजतका पर्गनह छीन लिया, लेकिन् विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] मे अब्दुल्लाखां फ़ीरोजजगने फिर इन्हीको देदिया. महाराजाका मुसाहिब गोविन्ददास भाटी था, पहिले कुल राठौड़ महाराजाके साथ भाई चारेके हकसे बराबरीका दावा रखते थे गोविन्ददासने नीचे लिखे मुवाफ़िक रियासतका इन्तिजाम किया - दीवान, बख़्शी, खानसामा, हाकिम, कारकुन, दफ्तरी, दारोगा, फोतहदार, वाकिअह नवीस वगैरह बनाये; राव रणमल्ल, राव जोधा, सूजा, गांगा, मालदेव और उदयसिंहकी औलाद वाले, जो सब बराबरीका दावा रखते थे, उनको ताबेदार करके दर्बारमे

दाहिनी, बाई तरफ़ बैठनेका तरीका चलाया, दाहिनी तरफ़ राव रणमल्लकी औलादमेंसे आउवाके चापावतोंको और बाई तरफ़ राव जोधाकी औलादमेंसे रीयांके मेड़तियोंको अव्वल नम्बर काइम किया, शादी गमीमें उमराव, भाई, बेटोंकी औरतोंका रिश्तहदारीके हक़से जनानखानहमें जानेका तरीक़ह बन्द किया, खवास, पासवान दरजे बदरजे बनाये, महाराजाकी ढाल, तलवार रखनेका काम खीचियोंको, और चवर करनेकी खिद्मत धाधलोंको सौंपी, ग़रज़ इस तरह सब रियासती ढंग बनाया यह बात महाराजा सूरसिंहके भाइयोंको नागुवार मालूम हुई जब बादशाह जहांगीर उदयपुरके महाराणा अमरसिंहपर चढ़ाई करके अजमेर आया, तब दक्षिणसे सूरसिंहको भी बुलाकर पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया, और शाहज़ादह खुर्रमके मातहत उदयपुर भेजा, शाहज़ादहने उनको बड़ी सादड़ीके थानेपर तईनात किया मेवाड़की लड़ाई ख़त्म होनेबाद विक्रमी १६७२ ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० १०२४ ता० ६ जमादियुल्अव्वल = ई० १६१५ ता० ६ जून] को राजा सूरसिंहके भाई राजा कृष्णसिंहने गोविन्ददास भाटीको मार डाला, क्योंकि पहिले गोविन्ददासने भगवानदास उदयसिंहोतके बेटे गोपालदासको मारा था, राजा कृष्णसिंह भी इसी झगड़ेमें मारा गया इस मारिकेका ज़िक्र तफ्सीलवार कृष्णगढ़के इतिहासमें लिखा गया है इसके बाद महाराजा सूरसिंह दो महीनेकी रुख़्सत लेकर जोधपुर आये दोबारह अपने कुंवर गजसिंह समेत बादशाही हुज़ूरमें पहुंचे, और दक्षिणकी तरफ़ भेजे गये.

विक्रमी १६७६ भाद्रपद शुक्ल ९ [हिज्री १०२८ ता० ७ शव्वाल = ई० १६१९ ता० १९ सेप्टेम्बर] को दक्षिणमें मेहकरके थानेपर सूरसिंहका इन्तिकाल हुआ यह राजा बड़े बहादुर, फ़य्याज़ और मुल्कदारीमें होश्यार थे इन्होंने अपने मुल्कका इन्तिज़ाम बहुत अच्छा किया, जिनके बांधे हुए तरीके मारवाड़में अब तक जारी हैं राव मालदेवके सिवाय मारवाड़का पूरा राजा इन्हीको कहना चाहिये, लेकिन् इतना फ़र्क़ है, कि मालदेवने आज़ादीकी हालतमें मुल्क बढ़ाया, और इसके सिवाय वह ज़ालिम व मग़रूर भी था; यह दूसरेकी ताबेदारीमें बढ़े, और सख़्त मिज़ाजीमें भी बढ़कर नहीं थे इनके दो बेटे १- गजसिंह, २- सबलसिंह थे; दूसरेका जन्म विक्रमी १६६४ [हि० १०१६ = ई० १६०७] में हुआ था इसने अपने बापसे फलौदी और बादशाहसे गुजरातमें जागीर पाई थी, यह विक्रमी १७०३ फाल्गुन् कृष्ण ३ [हि० १०५७ ता० १७ मुहर्रम = ई० १६४७ ता० २३ फेब्रुअरी] में नौकरके ज़हर दे देनेसे मरगया

३२ राजा गजसिंह

इनका जन्म विक्रमी १६५२ कार्तिक शुक्ल ८ गुरुवार [हि० १००४ ता० ६ रबीउल् अव्वल = ई० १५९५ ता० ११ नोवेम्बर] को हुआ था राजा सूरसिंहके मरने बाद इनको जहांगीरशाहने तीन हजारी जात व दो हजार सवारका मन्सब, नेजा और राजाका खिताब दिया, यह दक्षिणकी फ़ौजमे अपने बापकी जगह महेकरके थानेपर तईनात थे, जब गुजरातकी बागी फ़ौजने इनको आघेरा, तब इन्होने बडी बहादुरीके साथ उन्हे पीछे हटादिया, और दूसरी भी कई लडाइयोमे दक्षिणियोपर फ़त्ह पाई, जिसपर खुश होकर बादशाह जहांगीरने "दल थभन" का खिताब और एक हज़ारी जात व सवारके इजाफ़ेसे चार हजारी जात व तीन हजार सवारका मन्सब दिया

विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] मे शाहजादह खुर्रम दक्षिणमे भेजा गया तो यह रुख्सत होकर जोधपुर आये, फिर बादशाहसे शाहजादह खुर्रम बागी हुआ, उसके मुकाबलेके लिये शाहजादह पर्वेज और महाबतखांके साथ विक्रमी १६८० ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० १०३२ ता० १९ रजब = ई० १६२३ ता० १९ मई] को यह पाच हजारी जात, व चार हजार सवारका मन्सब पाकर मुकर्रर हुए, और इनको पहिली तरक्कीके साथ जालौर और दूसरी तरक्कीके साथ फलौदीका पर्गनह मिला, इसी वर्षमे मेडता भी मिलगया

विक्रमी १६८१ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १०३४ ता० १४ सफ़र = ई० १६२४ ता० २६ नोवेम्बर] को शाहज़ादह पर्वेजकी फ़ौजसे शाहजादह खुर्रमका मुकाबला हुआ, इस लड़ाईमे राजा गजसिंहने पर्वेजकी मातहतीमे बड़ी बहादुरी दिखलाई खुर्रमकी तरफ़ राजा भीम मारागया, और खुर्रम भाग निकला

विक्रमी १६८४ माघ [हि० १०३७ जमादियुस्सानी = ई० १६२८ फ़ेब्रुअरी] मे जहांगीरके बाद शाहजहां बादशाह हुआ, जब शाहजहा आगरेमे आया, तब यह उसी सन् मे बादशाहके पास गये, शाहजहाने खास खिल्अ़त, जडाऊ जम्धर फूल कटारा समेत, जड़ाऊ तलवार और पांच हजारी ज़ात व सवारका मन्सब ज़ो जहांगीरके अह्दमे था, निशान, नक्कारह, घोडा खास सुनहरी जीन समेत और खास ह्लकेका हाथी दिया विक्रमी १६८६ फाल्गुन् कृष्ण ६ [हि० १०३९ ता २० जमादियुस्सानी = ईसवी १६३० ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को खानेजहा लोदी सर्कशीसे निज़ामुल्मुल्क दक्षिणीके पास भागकर चलागया, तब बादशाहने निज़ामुल्मुल्क वगैरहकी बर्बादीके वास्ते

राजधानीसे दक्षिण जानेका इरादह किया, और तीनो फौजे तीन अमीरोकी सर्दारीसे तज्वीज् हुई, एक फौजके सर्दार यह राजा मुकर्रर होकर दक्षिणके सूबहदार आजमखाके साथ रुख्सत हुए विक्रमी १६८७ पौष [हि० १०४० जमादियुस्सानी = ई० १६३१ जैन्युअरी] मे, जब आसिफखा, आदिलखाकी तबीहके वास्ते मुकर्रर हुआ, यह उसकी हरावलमे थे, वहासे लौटकर अपनी राजधानीको चले आये विक्रमी १६८९ पौष [हि० १०४२ जमादियुस्सानी = ई० १६३२ डिसेम्बर] मे बादशाही हुजूरमे गये, दोबारह खास खिल्अत और सुनहरी जीन समेत घोडा इनायत हुआ विक्रमी १६९३ कार्तिक [हि० १०४६ जमादियुस्सानी = ई० १६३६ नोवेम्बर] मे घर जानेकी रुख्सत पाई.

वि० १६९४ कार्तिक [हि० १०४७ जमादियुस्सानी = ई० १६३७ नोवेम्बर] मे यह अपने बेटे जशवन्तसिंह समेत बादशाही दर्बारमे हाजिर हुए, जहा इनको बीमारी हुई, और वि० १६९५ ज्येष्ठ शुक्ल ३ [हि० १०४८ ता० २ मुहर्रम = ई० १६३८ ता० १७ मई] को आगरे मे देहान्त होगया यह राजा फ़य्याजी, सखावत और दिलेरीमे बडे मश्हूर थे; इन्होने चौदह लाख पशाव (१) नीचे लिखे लोगोको दिये –

(१) चारण भादा अजा, कृष्णावत (२) चारण आढा दुर्सा, मेहराजोत
(३) चारण आढा कृष्णा, दुर्सावत. (४) चारण बारहठ राजसी, अखावत
(५) चारण महडू कल्याणदास, जाडावत (६) चारण सडायच हरीदास, बाणावत
(७) चारण कविया पचायण (८) चारण दधिवाडिया जीवराज, जयमलोत
(९) भाट मनोहर. (१०) बारहठ राजसी, प्रतापमलोत
(११) चारण कविया भवानीदास, नाथावत (१२) चारण केसा, मांडण.
(१३) भाट गोकलचन्द, ताराचदोत. (१४) सामोर हेमराज.

---

(१) राजपूतानामे लाख पशाव देनेका यह क़ाइदह है, कि पाच हजार का जेवर अपने पहननेका, पाच हजारका जेवर घोड़े हाथियोका और एक हाथी व घोडे जो दो से कम न हो, और नक्द पच्चीस हजारसे लेकर पचास हजार तक, बाक़ीके एवज़मे गांव एक हज़ार रुपये सालानहकी आमदनीसे पाच हज़ार रुपये सालानह तककी आमदनीका दियाजाता है; और उस कविको हाथीपर राजा खुद हाथ पकड़कर सवार करता है, बाज् वक्त अपने कन्धेपर कविका पैर दिलाकर भी चढाते थे, और जलेब मे मर्ज़ी हो, तो कुछ दूर तक राजा चले, वर्नह अपने बडे सर्दार या प्रधानको मकान तक जलेबमे भेजे, यह बर्ताव राजाकी मर्ज़ीपर कम या ज़ियादह होसक्ता है, लेकिन् दानमे कमी करने का काइदह नही है.

इसके सिवाय और भी कई बार चारणोंको लाख पशाव वगैरह दिया, इन्होंने मुल्की इन्तिज़ाम अच्छा किया, इनके तीन बेटे हुए, जिनमेंसे १- अमरसिंह थे, जिनको जोधपुरकी गद्दी नहीं मिलनेका कारण आगे लिखा जायगा, २- अचलसिंह, जो बचपनमें मरगये, ३- जशवन्तसिंह थे, जिन्होंने राज पाया

३३ महाराजा जशवन्तसिंह अव्वल.

इनका जन्म वि० १६८३ माघ कृष्ण ४ मंगलवार [हि० १०३६ ता० १८ रबीउस्सानी = ई० १६२७ ता० ६ जैन्युअरी] को हुआ अमरसिंह इनसे बड़े थे, लेकिन् महाराजा गजसिंहने मरते वक्त शाहजहांसे अर्ज़ की थी, कि मेरे बाद छोटा कुंवर जशवन्तसिंह जोधपुरका मालिक हो, बादशाहने वैसा ही किया इसके कई सबब मारवाड़की तवारीख़ोंमें लिखे हैं, अव्वल एक अनारा नाम पातर महाराजा गजसिंहकी ख़वास थी, जिसको अमरसिंह कम दरजा जानकर नफ़रत करते थे, और जशवन्तसिंहने एक दिन अनाराकी जूतियां उठाकर उसके साम्हने रखदीं, जिससे उसने खुश होकर महाराजासे सिफ़ारिश की, महाराजा अनारासे निहायत खुश थे, उसके कहनेसे जशवन्तसिंहको अपना वलीअह्द किया दूसरे बीकानेरकी तवारीख़में लिखा है, कि रीवांके बघेले राजकुमारके साथ गजसिंहकी बेटीकी शादी हुई थी, वह जोधपुर आया, और ज़बानी तक्रारमें अमरसिंहके हाथसे मारागया, जिसपर गजसिंहने नाराज़ होकर उसे राजसे ख़ारिज किया तीसरे यह लिखा है, कि अमरसिंह ज़ियादह बदकार था, उसकी दोस्ती किसी शाहज़ादीके साथ होगई, महाराजाने डरकर और रिश्तहदारीमें ऐसा बुरा काम देखकर उसे ख़ारिज किया, बादशाह नामह वगैरह फ़ार्सी तवारीख़ोंमें यह लिखा है, कि गजसिंहने अपने छोटे बेटे जशवन्तसिंहको अपना वारिस बनानेकी बादशाहसे अर्ज़ की, क्योंकि वह जशवन्तसिंहकी मासे खुश था, यह रवाज राठौड़ोंके सिवाय और राजपूतों में नहीं है (१) इन ऊपर लिखे सबबोंसे अमरसिंहका हक़ मारागया,

---

(१) जैसा कि राव मल्लीनाथके छोटे भाई बीरमदेवका बेटा चूंडा मंडोवरका मालिक हुआ, और चूंडाके बड़े बेटे रणमल्ल वगैरहसे छोटा कान्ह मंडोवरका राव हुआ राव मालदेवके बड़े बेटों रामसिंह, उदयसिंह वगैरहसे छोटा चन्द्रसेन गद्दीका मालिक बना चन्द्रसेनके बेटोंमें छोटा आशकरण हक़दार माना गया, और महाराजा उदयसिंहके बेटोंमेंसे छोटा बेटा सूरसिंह जोधपुरका मालिक बना, इसी तरह गजसिंहका छोटा बेटा जशवन्तसिंह वलीअह्द बनाया गया

और बादशाह शाहजहांने गजसिंहकी अर्जके मुवाफ़िक जशवन्तसिंहको खिल्अत, जड़ाऊ जम्धर, चार हज़ारी जात व सवारका मन्सब, राजाका खिताब, निशान, नक्कारह, सुनहरी जीन समेत ख़ासह घोड़ा, और हाथी इनायत किया. जशवन्तसिंहका बड़ा भाई अमरसिंह, जो हुक्मके मुवाफ़िक शाहजादह सुल्तान शुजाअ्के साथ काबुल गया था, तीन हज़ारी जात, तीन हज़ार सवार और रावके खिताबसे सर्फ़राज़ हुआ.

विक्रमी १६९५ [हि० १०४८ = ई० १६३८] में राजसिंह राठौड़, जो बादशाही नौकरीमें एक हज़ारी जात, चार सौ सवारका मन्सब रखता था, ज़रूरतके सबब राजाका प्रधान बनाया गया, कि उसका मुल्की काम करता रहे; इसी वर्षके विक्रमी पौष [हि० रमज़ान = ई० १६३९ जैन्युअरी] में राजा जशवन्तसिंहको बादशाहने एक हज़ारी जात, हज़ार सवारकी तरक्कीसे पांच हज़ारी जात, पांच हज़ार सवारका मन्सब दिया, इसके बाद बादशाहके साथ काबुलकी मुहिम्पर गये, वहांसे वापस आनेपर जोधपुर जानेकी रुख़्सत पाई. विक्रमी १६९९ [हि० १०५२ = ई० १६४२] में शाहज़ादह दाराशिकोहके साथ राजा जशवन्तसिंहको मए दूसरे राव राजाओंके कन्धार भेजा, ता कि ईरानका बादशाह उसे फ़त्ह न करले. जो साथ गये, उनका तफ़्सीलवार हाल मए फ़िहरिस्तके नीचे लिखा जाता है:-

कन्धारका सूबह जो बादशाह जहांगीरके वक्तमें ईरानियोंने ले लिया था, शाहजहांके अ़ह्दमें फिर हिन्दुस्तानके शामिल हुआ, इसी संवत् में शाहजहांने सुना, कि ईरानका बादशाह कन्धारपर चढ़ाई करनेको तय्यार है, तब उसने खुद जानेका इरादह किया, लेकिन् बड़े शाहज़ादह दाराशिकोहने अ़र्ज़ की, कि आप यहीं रहें, और मुझे भेजें, बादशाहने मन्ज़ूर करके पचास हज़ार सवार, बहुतसे हाथी, घोड़े, तोपख़ानह व ख़ज़ानह वग़ैरह साथ दिया; और ख़ासह खिल्अ़त, नादिरी, कीमती जीगह मोती और हीरेका, कीमती सर्पेच, लाल वग़ैरह समेत, पांच हज़ार सवारकी तरक्कीसे बीस हज़ारी जात व सवारका मन्सब, दो ख़ासह घोड़े, एक हाथी व हथनी और बारह लाख रुपया नक़्द इन्आ़म देकर रवानह किया, उनके साथी सर्दारोंमें से, जिन्हें खिल्अ़त और इन्आ़म दिया, उनके नाम ये हैं -

(१) सय्यद ख़ानेजहां बहादुरको ख़ासह खिल्अ़त, जड़ाऊ तलवार, दो ख़ासह घोड़े और एक हाथी.

(२) राजा जशवन्तसिंह और राजा जयसिंहको ख़ासह खिल्अ़त, जड़ाऊ जम्धर, फूलकटारा, ख़ासह घोड़ा और ख़ासह हाथी.

(३) रुस्तमखांको खासह खिल्अ़त, घोड़ा, और पांच हज़ारी मन्सब मए पांच हज़ार सवार दो अस्पा सिह अस्पा
(४) क़िलीचख़ां, बहादुरख़ां, व अल्लाहवर्दीख़ांको ख़ासह खिल्अ़त और घोड़ा
(५) नागोरके राव अमरसिंहको खासह खिल्अ़त और मन्सब चार हज़ारी ज़ात, तीन हज़ार सवार, और एक घोड़ा मए ज़ीनके
(६) मुबारिज़ख़ां, फ़िदाईख़ां, व सर्दारख़ांको खिल्अ़त और घोड़ा
(७) असालतख़ांको खिल्अ़त, घोड़ा और नक्कारह
(८) ख़लीलुल्लाहख़ांको खिल्अ़त, घोड़ा, नेज़ा और नक्कारह
(९) राजा रायसिंहको खिल्अ़त, चार हज़ारी मन्सब और घोड़ा
(१०) राव शत्रुशालको खिल्अ़त और घोड़ा
(११) नज़र बहादुरको खिल्अ़त और तीन हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब, घोड़ा और नक्कारह
(१२) शैख़ फ़रीद, राजा जगत्‌सिंह, जांसुपारख़ां और सरन्दाज़ख़ांको ख़िल्अ़त और घोड़ा
(१३) यक्का ताज़ख़ां, हरीसिंह और महेशदासको ख़िल्अ़त, घोड़ा और नेज़ा.
(१४) रामसिंह राठौड़को खिल्अ़त और घोड़ा.
(१५) चन्द्रमन बुन्देलेको खिल्अ़त, घोड़ा और नेज़ा
(१६) राजा अमरसिंह नरवरी, गोकुलदास सीसोदिया, रायसिंह झाला और सय्यद नूरुलअ़याको ख़िल्अ़त और घोड़ा
(१७) सय्यद मुहम्मद, ख़लीलबेग, व तुर्क ताजख़ां और मीरख़ांको ख़िल्अ़त, मन्सब हज़ारी ज़ात पांच सौ सवार व घोड़ा
(१८) सय्यद मन्सूर सय्यद ख़ानेजहांके बेटेको खिल्अ़त मन्सब हज़ारी ज़ात, दो सौ सवार व घोड़ा

और मुल्तानसे सईदख़ां बहादुरको मए अपने बेटोंके, और काबुलसे सआ़दतख़ां, अक्बरकुली, सुल्तान कक्खड़, शादमा पगलीवाल और दूसरे मन्सबदार वगैरहको भेजा, लेकिन् ईरानका बादशाह आता हुआ काशानमें मरगया, जिससे बादशाही फ़ौज वापस आई

विक्रमी १७०० आश्विन [हि० १०५३ शअ़्बान = ई० १६४३ ऑक्टोबर] मे राजा जशवन्तसिंहको वतन जानेकी रुख़्सत मिली विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] मे जशवन्तसिंह वतनसे हाज़िर हुए, और उनके मन्सब पांच हज़ारी ज़ात व सवार मे एक हज़ार सवारकी तरक्क़ी दीगई

विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] मे पाच हजारी जात, व सात हज़ार सवारका मन्सब पाया विक्रमी १७०६ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १०५९ ता० १४ जिल्काद = ई० १६४९ ता० २० नोवेम्बर] को जयसलमेरका रावल मनोहरदास मरगया, जिसका हकदार सबलसिंह था, परन्तु वहाके सर्दारोने रामचन्द्रको गद्दीपर बिठा दिया, सबलसिंह शाहजहाके पास रहता था, इससे उसकी मददके लिये बादशाहने महाराजा जशवन्तसिंहको फौज देकर भेजा, महाराजाने जोधपुरसे रियाके मेडतिया गोपालदास, पालीके चांपावत विठ्ठलदास गोपालदासोत, व कूपावत नाहरखा राजसिंहोत आसोपको दो हजार सवार और ढाई हजार पैदल देकर सबलसिंहके साथ भेजा, विक्रमी १७०७ कार्तिक कृष्ण ६ शनिवार [हि० १०६० ता० २० शव्वाल = ई० १६५० ता० १६ ऑक्टोबर] को पोहकरणका किला फत्ह करलिया, यह किला महाराजा जशवन्तसिंहको सबलसिंहने देना किया था, जो उसी वक्तसे भाटियोके कब्जेसे निकल गया, और अब तक जोधपुरके इलाकहमे है इसी फौजने जयसलमेरको जा घेरा, रामचन्द्र भागगया, और महाराजाके सर्दारोने सबलसिंहको जयसलमेरका रावल बनाया

जब शाहजहा बादशाहकी बीमारीके सबब उसके शाहज़ादोमे लडाइया हुईं, तब महाराजा जशवन्तसिंहको सात हजारी जात और सात हजार सवारका मन्सब देकर शाहजादह दाराशिकोहकी सलाहसे बादशाहने बीस हज़ार फौजके साथ औरंगजेब और मुरादको रोकनेके लिये मालवेकी तरफ भेजा, वहा उज्जैनके पास विक्रमी १७१५ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १०६८ ता० २२ रजब = ई० १६५८ ता० २५ एप्रिल] को खूब लडाई हुई, और महाराजा जशवन्तसिंहके साथी क़ासिमखा वगैरह आलमगीरसे मिलगये, जिससे आलमगीर और मुरादकी फौजने फ़तह पाई महाराजा अपने आठ हज़ार राजपूतोमेसे बचे हुए छ सौ राजपूतोको लेकर जोधपुर पहुचे, वहां उनकी राणी बूंदीके राव शत्रुशालकी बेटीने किलेके किवाड बन्द करवाकर महाराजाको अन्दर नही आने दिया, और खबर देने वालोको कहा कि, "मेरा पति लडाईसे भागकर नही आवेगा, वह वहा ज़ुरूर मारागया है, और यह, जो आया है, बनावटी होगा, मेरे लिये जलनेकी तय्यारी करो" इन झिडकियोसे महाराजाने शर्मिन्दह होकर महाराणीसे कहलाया कि, "मै बहुत बड़ी लडाई लड़कर आया हू, मेरा ज़िरह बक्तर और घोड़ा देखना चाहिये, कैसे छिन्न भिन्न होरहे है, और मै इसलिये आया हू, कि यहांसे जमइयत बनाकर आलमगीरसे फिर लडू" ऐसी बातोसे महाराणीको बड़ी मुश्किलोके साथ समझाया, तब

महाराजाको भीतर आने दिया, लेकिन् जब महाराजाके साम्हने भोजन रक्खागया, तो महाराणीने लकडी, मिट्टी और पत्थरके बरतनोमे परोसकर आगे धरा, महाराजाने कहा, कि खानेके बरतन इस तरहके क्यौ लायेगये ? महाराणीने जवाब दिया, कि धातुके शस्त्रोकी आवाजसे डरकर आप यहा चले आये है, अगर यहा भी धातुके बरतनोका खडका आपके कानमे पडे, तो न जाने क्या हालत हो, इसपर महाराजाने बहुत शर्मिन्दह होकर महाराणीसे कहा, कि मै अब जो लडाइया करू, वह सुनलेना इस बातका जिक्र बर्नियर भी अपनी किताबकी पहिली जिल्दके ४७ वे पृष्ठमे इस तरह लिखता है -

"जब जशवन्तसिंहकी राणीने, जो राणाकी बेटी (१) थी, यह ख़बर सुनी, कि वह क़रीब ५०० दिलेर राजपूतोके साथ जुरूरतके सबब (लेकिन् बे इज्ज़तीके साथ नही) लडाईका खेत छोडकर आरहा है; तब उस दिलेर सिपाहीके बचकर आनेका धन्यवाद देने और उसकी मुसीबतपर तसल्ली करनेके एवज उसने यह सख्त हुक्म दिया, कि किलेके किवाड उसके बर्खिलाफ बन्द करदेने चाहिये उसने कहा, कि यह आदमी बेइज्ज़तीसे भरा हुआ है, इन दीवारोंके भीतर नही आसक्ता मै उसे अपना खाविन्द नही कुबूल करती, मेरी आंखे जशवन्तसिंहको फिर नही देख सक्ती, राणाका जमाई उसके मुवाफिक होगा, पस्त हिम्मत नही होसक्ता, जो राणाके बडे नामी खानदानसे रिश्तह रखता है, उसकी सिफ़ते उस बडे आदमीके मुवाफिक होनी चाहिये, अगर वह फतह न करसके, तो उसको मर जाना चाहिये थोडी देरके बाद वह चिल्लाई, कि चिता तय्यार करो, मै अग्निमे अपना शरीर जला दूगी; मुझे धोखा हुआ है, मेरा शौहर हक़ीकतमे मरगया है; उसका जिन्दह रहना मुम्किन नही फिर गुस्सेमे आकर बहुत मलामत करने लगी, आठ या नव दिन तक उसकी यही हालत रही, उसने अपने शौहरको देखनेसे बराबर इन्कार किया, लेकिन् राणीकी माके आजानेसे उसकी तबीअत कुछ नर्म हुई, उसने अपनी बेटीको राजाके नामपर वादा करके तसल्ली दी, कि थकावट दूर होनेपर वह दूसरी फौज एकट्ठी करके औरंगजेबपर हम्लह करेगा, और अपनी बेइज्जतीको दूर करेगा "

औरंगज़ेब, दाराशिकोहपर आगरेके पास फतह पाने बाद अपने बाप शाहजहां

---

(१) यह राणी महाराणाकी बेटी नही थी, बूंदीके राव शत्रुशाल हाड़ाकी बेटी और महाराणा राजसिंहकी साली थी

और छोटे भाई मुरादको क़ैद करके दाराशिकोहके पीछे लाहौरकी तरफ़ रवानह हुआ, तब जयपुरके राजा जयसिंहके समझानेसे जशवन्तसिंह भी औरंगजेबके पास आगये, परन्तु उनका दिल साफ़ नहीं था. औरंगजेब पंजाबसे दाराको निकालकर वापस आया, और शाहजादह शुजाअ्से मुकाबला करनेको बंगालेकी तरफ़ चला, इलाहाबादके पास खजुआ गांवसे आगे बढ़कर विक्रमी १७१५ माघ कृष्ण ६ [हि० १०६९ ता० १९ रबीउस्सानी = ई० १६५९ ता० १२ जैन्युअरी] को अपने भाई शुजाअ्से मुकाबला करनेके लिये फ़ौजकी दुरुस्ती की, तब हरावल, चंदावल और बाईं फ़ौजमें दूसरे लोगोंको जमाकर दाहिनी फ़ौजका अफ़्सर मए अपनी फ़ौज व राजपूतोंके महाराजा जशवन्तसिंहको बनाया, और महेशदास राठौड़, मुहम्मदहुसैन सलदोज, मीर अज़ीज़ बदख़्शी, बल्लू चहुवान, रामसिंह और हरदास राठौड़ इन्हींके शामिल किये गये, शुजाअ्की फ़ौजसे मुकाबला शुरूअ् हुआ, रात होजानेके कारण दोनों तरफ़से लड़ाई बन्द हुई, लेकिन् घोड़ोंसे ज़ीन और आदमियोंसे हथियार अलग नहीं किये गये, क्योंकि एक को दूसरेका डर था. इसी रातमें औरंगजेबकी फ़ौजसे शाहजादह शुजाअ्को महाराजा जशवन्तसिंहने कहला भेजा, कि हम आज पिछली रातको औरंगजेबके लश्करमें छापा मारकर लूट खसोट करते निकलेंगे, उस वक्त औरंगजेब फ़ौज समेत हमारा पीछा करेगा, आपको मुनासिब है, कि औरंगजेबकी फ़ौजपर पीछेसे टूट पड़ें.

इस शर्तके मुवाफ़िक़ महाराजा जशवन्तसिंहने, जो दिलसे शाहजहांके ख़ैरख़्वाह और दाराके दोस्त थे, पिछली चार पांच घड़ी रात रहे बग़ावतका झंडा खड़ा किया, उनके शरीक महेशदास राठौड़, रामसिंह राठौड़, हरदास राठौड़ और बल्लू चहुवान वग़ैरह होगये थे. उन्होंने पहिले शाहजादह मुहम्मद सुल्तानके लश्कर को, जो इनके नज़्दीक था, लूटा; उसको लूटनेके बाद बादशाही लश्करपर छापा मारा, जो चीज़ मिली लूट ली, और जो साम्हने पड़ा, उसे मारडाला, इससे औरंगजेबके लश्करमें तहलका मचगया, जिसका जिधर जी चाहा भागा, और जो लोग औरंगजेबके दबावसे आमिले थे, वे भी जशवन्तसिंहके शरीक होकर माल, ख़ज़ानह, हथियार, चौपाये लूट लेगये, और हरावलके लोग मारे ख़ौफ़के भागकर बादशाही डेरोंमें आ छिपे, बहुतसे लोग घबराकर उसी वक्त शाहजादह शुजाअ्से जा मिले, लेकिन् दिलेर औरंगजेब बिल्कुल न घबराया, और दूसरी सवारियोंको छोड़कर तामझाम पर सवार हुआ, और अपनी फ़ौजमें फिरने लगा, उसने हुक्म दिया, कि कोई अपनी जगहसे न हिले, और जो भागता नज़र आवे, उसको गिरिफ़्तार करके हमारे पास लावे, फिर अपने लोगोंसे कहा, कि हम जशवन्तसिंहकी इस बग़ावतको ग़नीमत जानते हैं, कि जो ख़ैरख़्वाह और बदख़्वाह थे, मालूम होगये, वर्नह

मुक़ाबलेके वक्त मुश्किल पेश आती बहुतसे लोग महाराजा जशवन्तसिंहके साथ निकल भागे, कितने एक शुजाअ्से जा मिले, और कुछ तित्तर बित्तर होगये उस वक्त औरंगजेबकी फ़ौज आधीसे भी कम रहगई थी, लेकिन् इस होनहार बादशाहका दिल वैसा ही मज़्बूत बना रहा, जैसा कि पहिले था

महाराजा जशवन्तसिंह अपने साथियों समेत जोधपुर पहुंचे, आलमगीर दिलसे जलता था, लेकिन् इस ज़बर्दस्त राजाको जियादह अपने बर्खिलाफ़ करना मुनासिब न समझकर शुजाअ्की लड़ाईसे निश्चिन्त होनेके बाद आंबेरके महाराजा जयसिंहकी मारिफ़त फिर भी उसकी तसल्ली करवा दी, परन्तु महाराजा जशवन्तसिंहको आलमगीरका डर था, जिससे दाराशिकोहके साथ सलाह करके आलमगीरसे फिर लड़ना चाहा दाराशिकोह महाराजा जशवन्तसिंहको अपना मददगार जानकर आलमगीरसे लड़नेके लिये अहमदाबादसे अजमेर पहुंचा; महाराजा जयसिंहने जशवन्तसिंहको रोका, जिससे वह जोधपुरमें ही रहे दाराकी ख़राबी होने बाद आलमगीरने तसल्लीका फ़र्मान और ख़िल्अ्त भेजकर अहमदाबादका सूबहदार बनाया, दो वर्ष तक वहां रहे, धीरे २ उनका डर दूर होता गया, और वे बादशाही दर्बारमें आने जाने लगे, फिर दक्षिणकी लड़ाइयोंमें शायस्तहख़ांके साथ भेजे गये, वहांसे शिवा मरहटाकी मिलावटके शुब्हेसे बादशाहने बुलालिया, और विक्रमी १७२८ ज्येष्ठ कृष्ण ८ [हि० १०८२ ता० २२ मुहर्रम = ई० १६७१ ता० ३१ मई] को बर्सातों फ़र्गुल और ५०० अश्रफ़ीका घोड़ा देकर पेशावरके पास ख़ैबरके घाटेमें जम्रोदके थानेपर भेजदिया विक्रमी १७३१ [हि० १०८५ = ई० १६७४] में जम्रोदकी थानेदारीसे रावलपिंडीके मकामपर बादशाहके पास हाज़िर होकर वापस गये, जहांसे फिर न लौटे, और विक्रमी १७३५ पौष कृष्ण १० [हि० १०८९ ता० २३ शव्वाल = ई० १६७८ ता० ७ डिसेम्बर] को उसी थानेपर महाराजा जशवन्तसिंहका देहान्त हुआ

यह महाराजा इक्रार पूरा करने वाले, बड़े बहादुर और फ़य्याज़ थे; इनके वक्तमें जोधपुरके राज्यमें सुख चैन रहा; मुसाहिब और अह्लकार भी इनके पास अच्छे थे; बादशाह शाहजहांकी इनपर बड़ी मिहर्बानी रही, और दाराशिकोह भी इनका मददगार था. इनके पुत्र १- पृथ्वीसिंहका जन्म विक्रमी १७१० आषाढ़ शुक्ल ५ [हि० १०६३ ता० ४ शअ्बान = ई० १६५३ ता० ३० जून] को हुआ था, ये दिल्लीमें विक्रमी १७२४ ज्येष्ठ कृष्ण ११ [हि० १०७७ ता० २५ ज़िल्काद = ई० १६६७ ता० १९ मई] को मरगये २- जगतसिंहका जन्म विक्रमी १७२३ माघ

कृष्ण ४ [हि० १०७७ ता० १८ रजब = ई० १६६७ ता० १४ जैन्युअरी] को हुआ, और चैत्र कृष्ण ७ [हि० २१ रमजान = ई० ता० १७ मार्च] की रात्रिको मरगये ३ - अजीतसिंहका जन्म विक्रमी १७३५ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १०९० ता० १८ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० १ मार्च] को हुआ, और ४ - दलथभन भी इसी तारीखको दूसरी राणीसे पैदा हुए इन महाराजाके साथ एक महाराणी चन्द्रावत रामपुरेके राव अमरसिंहकी बेटी, और २० खवास जोधपुरमे खबर आनेपर, और जम्रोदमे ८ खवास परदेवाली, कुल २९ स्त्रिया सती हुई

३४ महाराजा अजीतसिंह

इनका हाल इस तरह पर है, कि महाराजा जशवन्तसिंहके इन्तिकालके वक्त नरूकी महाराणी और महाराणी जादमणको गर्भ था, इसलिये राठौड सर्दारोने उनको सती होनेसे रोका, और एक कागज जोधपुर लिख भेजा, कि बादशाही आदमी आवे तो फसाद न करना

इसके बाद सब राठौड दोनो राणियोको साथ लेकर जम्रोदसे अटक नदीपर आये, दर्याई अफ्सरोने बगैर बादशाही पर्वानेके रोका, लेकिन् राठौड बादशाही लोगोको मारकर उतर आये, और लाहौर पहुचे, जहा दोनो महाराणियोसे विक्रमी १७३५ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १०९० ता० १८ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० १ मार्च] को अजीतसिंह और दलथभन पैदा हुए वहासे बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक सब लोग राणी और राज कुमारो समेत दिल्ली आये

बादशाह आलमगीरने महाराजा जशवन्तसिंहके इन्तिक़ालकी खबर सुनतेही विक्रमी १७३५ फाल्गुन् शुक्ल १३ [हि० १०९० ता० ११ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० २३ फेब्रुअरी] को ताहिरखाको जोधपुरकी फौज्दारी, खिद्मतगुजारखाको किलेदारी, शैख अन्वरको अमानत और अब्दुर्रहीमको कोतवाली देकर मारवाड भेजा, और खानेजहां बहादुरको हसनअलीखा वगैरह सर्दारो समेत मारवाड़ देशकी सभालके लिये रवानह किया सय्यद अब्दुल्लाहको सिवानेके क़िलेपर महाराजा जशवन्तसिंहका अस्बाब संभालनेके लिये भेजा.

महाराजा जशवन्तसिंहके बेटे और राणियोका डेरा कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी हवेलीमे था, बहुतसे राजपूत पहिलेही मारवाड़को चलदिये थे, और आलमगीरने भी उनका जाना ठीक समझा. फिर नागौरके राव रायसिंहके बेटे इन्द्रसिंहको,

जिसने ३६ लाख रुपये नज़मे दिये, फ़र्मान व खिल्अ़त वगैरह देकर जोधपुर भेज दिया विक्रमी १७३६ श्रावण कृष्ण २ [हि० १०९० ता० १६ जमादि-युस्सानी = ई० १६७९ ता० २५ जुलाई] को बादशाहने सख़्त हुक्म दिया, कि फ़ौलादख़ा कोतवाल और सय्यद हामिदख़ा ख़ास चौकीके आदमियो समेत व हमीदख़ा और कमालुद्दीनख़ा, ख़्वाजह मीर वगैरह शाहज़ादह सुल्तान मुहम्मदके रिसालेके सवारो सहित जावे, और राणियो व जशवन्तसिंहके बेटेको, जिनका डेरा कृष्णगढके राजा रूपसिंहकी हवेलीमे है, नूरगढमे ले आवे, और साम्हना करे, तो सजा दीजावे दुर्गदास व सोनग वगैरह राठौड पहिले ही दिन अजीतसिंहको लेकर मारवाडकी तरफ़ रवानह होगये थे, बाकी राजपूतोने तलवारोसे जवाब देकर मुकाबला किया, और बडी बहादुरीके साथ मए राणियोके लडाईमे काम आये, उनके नाम नीचे लिखेजाते है -

(१) राठौड रणछोडदास, गोविन्द दासोत	(२) राठौड विठ्ठलदास, बिहारीदासोत
(३) राठौड चन्द्रभान, द्वारिकादासोत	(४) राठौड कुम्भा, कीर्तिसिंहोत
(५) राठौड दीपा, केशवदासोत	(६) राठौड पृथ्वीराज, वीरमदेवोत
(७) राठौड महासिंह, जगन्नाथोत	(८) राठौड जगत्सिंह, रत्नसिंहोत
(९) राठौड रामसिंह, श्यामसिंहोत	(१०) राठौड महासिंह, खीवावत
(११) राठौड जुझारसिंह, राजसिंहोत	(१२) राठौड महेशदास, नाहरखानोत
(१३) राठौड हिन्दूसिंह, सुजानसिंहोत	(१४) राठौड़ मोहनदास, धनराजोत
(१५) राठौड भारमल्ल, दलपतोत	(१६) राठौड गोविन्ददास, मनोहरदासोत
(१७) राठौड़ आशकरन, बाघावत	(१८) राठौड रघुनाथ, सूरजमलोत
(१९) राठौड गोवर्धन, रामसिंहोत.	(२०) राठौड जस्सू, अजबसिंहोत
(२१) राठौड भीम, केसरखानोत	(२२) राठौड कृष्णसिंह, चान्दसिंहोत
(२३) राठौड भाखरखान, मथुरादासोत	(२४) राठौड सुन्दरदास, हरीदासोत
(२५) राठौड सुन्दरदास, ठाकुरसिंहोत	(२६) राठौड़ लक्ष्मीदास, नाथावत
(२७) राठौड़ भैरवदास, खेतसिंहोत	(२८) राठौड़ डूगरसिंह, लाडखानोत.
(२९) राठौड़ उदयसिंह, जगन्नाथोत	(३०) राठौड पूर्णमल्ल, सूरदासोत
(३१) राठौड अखैराज, कल्याणदासोत	(३२) चहुवान रघुनाथ, सुरतानोत
(३३) भाटी उदयभान, केशरीसिंहोत	(३४) भाटी शक्तिसिंह, हरदासोत
(३५) भाटी जगन्नाथ, विठ्ठलदासोत.	(३६) भाटी शक्तिसिंह कल्याणदासोत.
(३७) भाटी द्वारिकादास, भाणावत	(३८) भाटी गिरधरदास, कान्हावत.

(३९) भाटी धनराज, बीकावत	(४०) जोगीदास सोभावत
(४१) राठौड सूरजमल्ल, नाथावत	(४२) राठौड नारायणदास, पातावत
(४३) पचोली हरराय	(४४) महता विष्णुदास

और अठारह राजपूत दूसरे व बर्कन्दाज गिरधर, साखला आनन्द, रैबारी कुम्भा, और सुल्तान; बाकी घायल और बचे हुए मारवाडमे आये

मआसिरे आलमगीरीमे दो राणियो और ३० राजपूतोका माराजाना लिखा है, शायद इस पुस्तकके बनाने वालेने मशहूर राजपूतोकी गिन्ती लिखदी होगी पहिले दिन दुर्गदास व सोनग वगैरह महाराजा अजीतसिंहको ले निकले थे, कोतवालने एक लड़का घोसीके घरसे निकालकर पेश किया, और कहा, कि यही जशवन्तसिंहका बेटा है बादशाहने उसे अपनी बेटी जेबुन्निसा बेगमको पर्वरिशके लिये सौंपा, और उसका नाम मुहम्मदीराज रक्खा इस जगह खयाल होता है, कि कोतवालने अजीतसिंहके निकल जानेसे अपनी गफ़्लत छिपानेको किसी लौंडी वगैरह का लड़का पेश किया होगा, या बादशाहने ही अजीतसिंहको बनावटी जतलानेके लिये इस लडकेको असली मशहूर किया, अथवा दलथभन, जो अजीतसिंहका छोटा भाई था, इस वक्त बादशाहके हाथ आगया, शायद उसके बडे भाईके निकल जानेपर दलथभनका पेश्तर मरजाना और अजीतसिंहका हाथ आजाना बादशाहने मशहूर किया हो, जैसा कि मआसिरे आलमगीरीमे लिखा है यह मुहम्मदीराज जवान होनेके पहिले आलमगीरके लश्करमे रहकर दक्षिणमे वबासे मरगया.

राठौडोने अजीतसिंहको सिरोहीमें महाराजा जशवन्तसिंहकी राणी देवडीके पास पहुचाया, और वहां कालिन्द्री गांवमे पोहकरणा ब्राह्मण जयदेवकी औरतके सुपुर्द किया, वह उसको अपना बेटा मानकर पालने लगी, लेकिन् सिरोहीके रावने यह बात सुनकर कहा, कि मेरा राज्य बादशाह छीन लेंगे तब राठौड दुर्गदास वगैरह देवडीजीको अजीतसिंह सहित उदयपुर लेआये, और महाराणा राजसिंह (अव्वल) ने तसल्ली करके गांव कैलवा जागीरमे दिया, राठौड़ और सीसोदिये एक होकर फ़साद करने लगे; इसलिये बादशाह आलमगीर बडी भारी फ़ौजके साथ मेवाडपर चढा यह हाल महाराणा राजसिंहके वर्णनमे लिखागया है- (देखो पृष्ठ ४६३-४७२).

फिर मेडते और सिवानेपर राठौडोने कब्जा करलिया, और बादशाही आदमियोको मारकर निकाल दिया, पुष्करमे तहव्वुरखाकी फौजपर ऊदावत

राजसिंह मेडतियाने हमलह किया, जिसमे तरफैनके आदमी मारेजाने बाद मेडता बादशाही खालिसहमे होगया. फिर गाव ओसियाके पास राठौड दुर्गदाससे और इन्द्रसिंहके राजपूतोसे खूब लडाई हुई इसी तरह तहव्वुरखासे देसूरीके घाटेपर राठौड अच्छे लडे राठौड और सीसोदियोने मिलकर आलमगीरके शाहजादह अक्बरको बागी किया, लेकिन् आलमगीरकी चालाकीसे अक्बरको भागकर ईरानमे जाना पडा; उसका एक लडका और लडकी दुर्गदासके पास रहे थे, जिनको उसने बडी खातिरके साथ रक्खा, और तालीम भी दी

राव इन्द्रसिंहसे मारवाडका कुछ बन्दोबस्त नहो सका, तब बादशाहने विक्रमी १७३८ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १०९२ ता० १० रबीउल अव्वल = ई० १६८१ ता० ३१ मार्च] को इनायतखाको अजमेरकी फौज्दारीपर भेजा, और इन्द्रसिंह खटले समेत नागौर गया राठौडोने कई छोटी बडी लडाइया की, और शाहजादह अक्बर जो बागी होकर शम्भा राजाके पास चला गया, इस बातसे आलमगीरको जियादह फिक्र हुई, क्योंकि हजारो राठौड बागी थे, उदयपुरसे लडाई जारी थी, दक्षिणमे फसाद होता, तो कुल हिन्दुस्तान फ़सादका नमूना बनजाता यह विचारकर उदयपुरके महाराणा जयसिंहसे, जब कि महाराणा राजसिंहका इन्तिकाल होगया था, सुलह करली, और दक्षिणकी तरफ कूच किया दूसरे दिन अजमेरसे देवराई मकामपर पहुचकर विक्रमी १७३८ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १०९२ ता० ६ रमजान = ई० १६८१ ता० २१ सेप्टेम्बर] को बड़े शाहजादह मुअज्जमके बेटे मुहम्मद अजीमको जुम्दतुल्मुल्क असदखा वजीरके साथ अजमेर भेजा, कि वहाका बन्दोबस्त रक्खे, और उनके मातहत एतिकादखा, कमालुद्दीनखा, राजा भीमसिंह राजसिंहोत कुवर समेत, और मरहमतखा वगैरहको खिल्अत, जवाहिर, घोडे और हाथी देकर मुकर्रर किया, इनायतखा अजमेरके फौजदार और सय्यद यूसुफ बुखारी बीटलीगढके किलेदारको भी खिल्अत देकर अजमेर भेजा.

राजा भीमसिंह राजसिंहोतकी मारिफत असदखां वजीरने राठौडोसे सुलह करनेकी तद्बीर की, लेकिन् राठौड सोनगके मरजानेसे मुल्तवी रही भीमसिंहने राठौडोको कहलाया, कि सोनगके मरजानेसे मुसल्मानोका खौफ मिटगया है, कुछ बहादुरी दिखाना चाहिये तब राठौडोने डीडवाणा और मकराणेको लूटकर मेडतेपर हाथ चलाया, जिसपर असदखाने अपने बेटे एतिकादखाको फौज समेत भेजा गांव ईदावडमे एतिकादखाकी फौजपर राठौडोने हमलह किया, जिसमे १४ नामी आदमी राठौडोके मारे गये मआसिरे आलमगीरीमे सोनगका इसी लडाईमे

माराजाना लिखा है, परन्तु मारवाडकी स्यातका लेख सहीह मानकर ऊपर लिखा है इसका व्यौरेवार हाल महाराणा जयसिंहके जिक्रमे लिखा गया- (देखो पृष्ठ ६६४) दूसरा हमलह पुर व माडलके पास राठौडोने किया, इसके बाद उन्होने जुदे २ जिलोमे हमलह करना शुरूअ् किया, मुसल्मान पीछा करते, तो लडाइया होती थी, किसीको जागीर देकर राजी करते, तोभी वह फिर दूसरेकी मदद करनेको बागी होजाता इन झगडोसे राठौड और मुसल्मान सर्दार बहुत मारेगये, जिनका जियादह हाल तवालतके सबब छोड दिया है

महाराजा अजीतसिंह, जो बचपनके सबब अब तक पोशीदह रहते थे, विक्रमी १७४४ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १०९८ ता० १९ जमादियुल अव्वल = ई० १६८७ ता० २ एप्रिल] को सिरोहीके गाव पालडीमे सर्दारोके शामिल होकर फौज मुसाहिब बने, उस वक्त यह ८ वर्षके थे फसाद बढता जानकर जोधपुरके जिम्महदार इनायतखाने सिवानेका पर्गनह और राहदारीसे चौथा हिस्सह देनेका इक्रार करलिया, जिससे खर्चमे सहारा मिला इन्ही दिनोमे दुर्गदास भी महाराजासे आमिले, और इसी वर्षमे मुसल्मानोने सिवाना छीन लिया, तब महाराजा अजीतसिंह उदयपुरके दक्षिण छप्पनके पहाडोमे चले आये, और महाराणा जयसिंह भी इन दिनो उसी जिलेमे जयसमुद्र तालाब तय्यार करा रहे थे, महाराजाको खानगी मदद दी होगी दुर्गदास वगैरह राठौड़ोने सिंधसे लेकर अजमेरतक शोर मचाया, इसपर अजमेरके सूबहदारने पोशीदह तौरसे कहा, कि तुम लोग राहदारी वगैरह, जो दस्तूर हो, अपने तौरपर लेलिया करो, जाहिर लेनेसे हम बदनाम, और बादशाह हमसे नाराज होते है

विक्रमी १७४९ [हि० ११०३ = ई० १६९२] मे महाराणा जयसिंह और कुंवर अमरसिंहमे रंज हुआ, महाराजा अजीतसिंहकी तरफसे राठौड़ दुर्गदास तीस हजार सवार लेकर महाराणाके पास घाणेरावमे आया, और बाप बेटोका बाहमी रंज मिटानेमे मस्रूफ़ रहा यह हाल महाराणा जयसिंहके प्रकरणमे लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ६७४) विक्रमी १७५३ [हि० ११०७ = ई० १६९६]मे महाराणा जयसिंह और कुवरके आपसमे फिर बिगाड हुआ, जो महाराजा अजीतसिंहने आकर मिटाया, और महाराणाने अपने भाई गजसिंहकी बेटीका विवाह महाराजाके साथ किया, जिसके दहेजमे ९ हाथी, डेढ़ सौ घोडे वगैरह सामान देकर विदा किया- (देखो पृष्ठ ६८२)

मिरात अहमदीमे लिखा है कि, विक्रमी १७५४ पौष [हि० ११०९ जमादियुस्सानी = ई० १६९७ डिसेम्बर] मे अहमदाबादके सूबहदार शजाअतखांकी

मारिफ़त दुर्गदास आलमगीरके पास हाज़िर हुआ, और शाहज़ादह अक्बरके बेटे, व बेटीको पेश किया, जो दुर्गदासके पास थे उसको बादशाहने एक लाख रुपया इन्ग्राम, मेड़ता वगैरह पर्गनह जागीरमें और तीन हज़ारी ज़ात व दो हज़ार सवारका मन्सब दिया. उसके साथी दूसरे राठौड़ोंको भी मन्सब और जागीरें मिलीं राठौड़ मुकुन्ददासको पालीकी जागीर और छ सौ ज़ात व तीन सौ सवारका मन्सब मिला, और महाराजा अजीतसिंहको भी विक्रमी १७५४ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ११०८ ता० १२ ज़िल्काद = ई० १६९७ ता० १३ जून] को डेढ़ हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका मन्सब और जालोर बादशाहकी तरफ़से जागीरमें मिला, महाराजाने मुकुन्ददास चांपावतको मुसाहिब और विठ्ठलदास भंडारीको दीवान बनाया विक्रमी १७५९ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० १११४ ता० २८ रजब = ई० १७०२ ता० २२ नोवेम्बर] को इनके कुंवर अभयसिंह पैदा हुए, और दुर्गदास राठौड़को अहमदाबादके ज़िलेमें पाटनकी फ़ौज्दारी मिली अहमदाबादके सूबहदारने शाहज़ादह आज़मके इशारेसे दुर्गदासपर फ़ौज भेजी, जिसकी ख़बर विक्रमी १७६२ कार्तिक शुक्ल १२ [हि० १११७ ता० १० रजब = ई० १७०५ ता० २९ ऑक्टोबर] को मिली, इस ख़बरके सुनते ही दुर्गदास तो निकल गया, लेकिन् उसके दो बेटे महकरण व अभयसिंह वगैरह मारेगये दुर्गदासके नाम बादशाहकी तरफ़से तसल्लीका फ़र्मान आया

विक्रमी १७६२ [हि० १११७ = ई० १७०५] में बादशाही इशारेके मुवाफ़िक़ नागोरके राव इन्द्रसिंहका कुंवर मुहकमसिंह जालोरपर चढ़ा, और वहांका क़िला हिक्मत अमलीसे लेलिया महाराजा अजीतसिंह बाहर निकल गये, और बड़ा भारी लश्कर जोड़कर जालोरकी तरफ़ रवानह हुए, कुंवर मुहकमसिंह डरकर जालोर छोड़ भागा, रास्तेमें महाराजासे मुक़ाबला हुआ, १ हथनी, ६ घोड़े व अस्बाब, नक्कारह, निशान महाराजाने छीन लिया, वह मेड़तेमें जा छिपा, और महाराजाने पीछा किया, लेकिन् गांव काकाणीमें जोधपुरके फ़ौज्दार जाफ़रबेगने आकर महाराजाको समझाया, और महाराजाने बादशाही आदमियोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करना ठीक न जानकर पीछा कूचकर जालोरके क़िलेपर दोबारह अपना कब्ज़ा करलिया

विक्रमी १७६३ फाल्गुन् कृष्ण १४ [हि० १११८ ता० २८ ज़िल्काद = ई० १७०७ ता० ३ मार्च] को बादशाह आलमगीर दक्षिणमें मरगया. महाराजा अजीतसिंह यह ख़बर सुनकर जोधपुरकी तरफ़ चले, बादशाही मुलाज़िम फ़ौज्दार वगैरह तो पहिले ही निकल गये थे, महाराजाने जोधपुरपर चैत्र कृष्ण ५ [हि०

ता० १९ ज़िल्हिज = ई० ता० २३ मार्च] को कब्ज़ा कर लिया, सब राठौडोंने एकट्ठे होकर बड़ी खुशियां मनाई, और महाराजाने अपने बर्ख़िलाफ़ आदमियोंको पूरी सज़ाएं दीं, जो इनको चाहने वाले थे, उन्हें इन्ग्राम इक्राम दियेगये शाहज़ादह मुअज़्ज़म और आज़मकी लड़ाई, जो जाजवके पास हुई, उसमें आज़म अपने बेटे बेदारबख़्त समेत मारागया, और मुअज़्ज़म शाहआलम बहादुरशाह बादशाह बना यह दोनों राजाओंसे नाराज़ था, क्योंकि महाराजा जयसिंह आंबेर वाले आज़मकी फ़ौजमें, और उनके छोटे भाई विजयसिंह बहादुरशाहके साथ थे, उसने विजयसिंहको आंबेरकी जागीर और मन्सब देना चाहा, महाराजा अजीतसिंहने जोधपुरका किला बादशाही आदमियोंसे छीन लिया था, इसलिये इन दोनों रियासतोंपर खालिसह भेजकर बादशाह आप अजमेर आया महाराजा जयसिंह और अजीतसिंह एक मत होकर बादशाहके पास आये, और पीपाड़के पास दोनों महाराजाओंने विक्रमी १७६४ फाल्गुन् शुक्ल ६ [हि० १११९ ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १७०८ ता० २७ फ़ेब्रुअरी] को बादशाहसे सलाम किया बादशाहने बखेड़ा मिटानेकी निगाहसे खिल्अ़त वगैरह देकर तसल्ली की, और हाथी घोड़ोंके सिवाय पचास हज़ार रुपये महाराजा अजीतसिंहको दिये

विक्रमी १७६५ चैत्र शुक्ल १० [हि० ११२० ता० ८ मुहर्रम = ई० १७०८ ता० २ एप्रिल] को अजमेरमें बादशाहने राठौड़ दुर्गादासको मन्सब देना चाहा, लेकिन् उसने उज्ज किया, कि पहिले महाराजा अजीतसिंहको मिले, तो मैं लूंगा बादशाहने महाराजाको साढे तीन हज़ारी मन्सब और सोजत वगैरह पर्गने देने चाहे, परन्तु इन्होंने जोधपुरके बगैर क़बूल नहीं किया, और महाराजा अजीतसिंह व जयसिंह जो बादशाहके साथ थे, नर्मदाके उरली तरफ़से (१) नाराज़ होकर लौट आये, प्रतापगढके राव प्रतापसिंहने दोनों राजाओंको मिहमानी दी, फिर ये उदयपुर आये महाराणा अमरसिंह २ ने ख़ातिर करके अपनी बेटी चन्द्रकुंवर बाईका विवाह महाराजा जयसिंहके साथ करने बाद फ़ौजी मदद देकर दोनों राजाओंको विदा किया, जिसका पूरा हाल महाराणा अमरसिंह २ के बयानमें लिखा गया है महाराजाके आनेकी ख़बर सुनकर जोधपुरका फ़ौज्दार मिहराबख़ां भागकर अजमेर चलागया महाराजा अजीतसिंहने बड़ी ख़ुशीके साथ जोधपुरपर दख़्ल किया इन महाराजाने अपनी बेटी सूरजकुंवरका संबन्ध महाराजा सवाई जयसिंहसे किया, और महाराजा जयसिंह जोधपुरसे रवानह हुए, महाराजा अजीतसिंहके निकलनेमें कुछ देर हुई, तब एक काग़ज़ राठौड़

---

(१) कहीं नौलाई और कहीं बड़ौदके मक़ामसे लौट आना लिखा है

दुर्गदासने महाराणा अमरसिंहके नौकर कायस्थ बिहारीदासके नाम समदरडीसे लिख भेजा, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं -

श्री परमेश्वरजी सहाय छै

स्वस्तिश्री उदयपुर सुभस्थाने पचोली श्री बिहारीजी योग्य, राजश्री दुर्गदासजी लिखावतु राम राम बाचजो, अठारा समाचार श्री परमेश्वरजीरा प्रतापसू भला छै, थाहरा सदा भला चाहिजे, थे घणी बात छौ, था उपरात काई बात न छै, अपरच, म्हे समदरडी गया था, तिण ठिसा तो श्री दीवाणजीसू म्हे अर्ज लिखीज छै, जु राजा श्री जयसिंहजीरे कूच हुवारी खबर आवे छै, तिण घडी म्हे जाय भेला व्हा छा, सु थे श्री दीवानजीसू मालुम करजो, राजा जयसिंहजी तो राजा अजीतसिंहजी सू कूचरी बहुत ताकीद कराई, पिण व्हारे दोय दिनरी ढील देखी, तरे राजा जयसिंहजी कूचकर जोधपुर सू कोस १७ पीपाड आंण डेरा किया, ने म्हाने समदरडी खबर आई, जु राजा जयसिंहजी तो जोधपुरसूं कूच कियो, उणहीज सायत म्हे समदरडीसू चढीया, सु परबाहिरा आणने राजा जयसिंहजीसू सामल व्हा छा; ने राजा अजीतसिंहजी बी आवण दिसां कहे तो छै, जु म्हे आवा छा, सु जो आवे छे तो भलाईज छै, ने नही आवसी तो म्हाने तो श्री दीवाणजी खिजमत फ़ुरमाई, सु म्हे तो राजा जयसिंहजी साथे व्हा आबेर जावा छा

तथा नवाब गाजीउद्दीनखा रो खत म्हने आयो छौ, तिण जाब लिखियो छै, तिणरी नकल ने उठासू खत आयो छौ, सु बिजनस भैया सलामत रायजीरा खतमे घाल मेलियो छै, सु हकीकत श्री दीवाणजीसू मालुम करावजो, बाहुड़ता कागल समाचार बेगा बेगा देजो विक्रमी १७६५ आसौज वदि २ [हि० ११२० ता० १६ जमादियुस्सानी = ई० १७०८ ता० ३ सेप्टेम्बर]

इन दोनो राजाओंने जोधपुरसे रवानह होकर महाराणा अमरसिंहको भी अपनी मददके लिये बुलाना चाहा था, परन्तु यह सलाह न जाने किस सबबसे मौक़ूफ़ रही इस बारेमे दुर्गदास राठौडका जो कागज़ बिहारीदास पचोलीके नाम आया था, उसकी नक़्ल यह है -

श्री परमेश्वरजी सहायछै,

स्वस्ति श्री उदयपुर सुथाने पचोली श्री बिहारीजी योग्य, राज श्री दुर्गदासजी

लिखावतु राम राम बांचजो, अठारा समाचार श्री परमेश्वरजीरा प्रताप सू भला छे, थाहरा सदा भला चाहीजे, थे घणी बात छो, था उपरात कांई बात न छे, अपरच॥ महाराजा अजीतसिंहजी ने महाराजा जयसिंहजी म्हाने श्री दीवाणजीरी हजुरनू बिदा किया छे, श्री दीवाणजी नू बुलावणरे वास्ते; सो श्री ठाकुरजीरो दुवो छे, तो आसोज सुद १० सोमवाररा हालिया म्हे श्री दीवाणजीरे पावे आवा छा, बाहुडता कागल समाचार बेगा बेगा देजो स० १७६५ आसोज सुद ८ [हि० ११२० ता० ६ रजब = ई० १७०८ ता० २४ सेप्टेम्बर]

—<>✻<>—

यह महाराणाको बुलाना इस वास्ते था, कि कुल हिन्दुस्तानमें फ़साद फैलाकर मुसल्मानोकी बादशाहत गारत कीजावे इसके बाद अजमेरके सूबहदार शजाअत-खाने इन लोगोको दम देकर कुछ दिनो तक पुष्करमे रक्खा; और बादशाहसे मदद चाही, परन्तु वह कामबख़्शकी लडाईमे रुका हुआ था, कुछ भी मदद न कर सका, यह दोनो राजा दुर्गदास और मेवाडकी मददगार फौजके मुसाहिब साह सावलदास और महासहाणी चतुर्भुज समेत पुष्कर पहुचे, उधरसे अजमेरका सूबहदार (१) सय्यद हुसैनखा, मेड़तेका फौज्दार अहमद सईदखां और नारनौलका फौज्दार गैरतखां वगैरह फौज लेकर आपहुचे, दोनो फौजोका मुकाबलह हुआ, जिसमें बादशाही मुलाजिम सय्यद हुसैनखा वगैरह तीनो सर्दार भाई बेटो समेत मारेगये, और सांभरपर महाराजाने कब्जा करलिया इस लड़ाईका हाल महासहाणी चतुर्भुजने साभरसे कायस्थ बिहारीदासको लिखा था, जिसकी नक़्ल यहा दर्ज की जाती है –

कागज़की नक़्ल

—<>✻<>—

सिद्धश्री उदयपुर सुथाने सर्वोपमा जोग्य पचोली श्री बिहारीदासजी जोग, साभरी पेली आडीरा डेरा कोस अर्ध तलाई देवजानी नखला डेरा थी मसाणी चतरभुज लिखतु जुहार बांचजो जी, अठारा समाचार श्रीजीरी सुनजर थी भलासै जी, राजरा सदा भला चाहीजे जी, अपरच– काती विद १५ सनीचर री राते खबरी आई, मियां सैयद हुसैनखां जमीती असवार हज़ार चार थी चल्यो आवे सै; काती सुद १ खे रे

---

(१) इस वक्त अजमेरकी सूबहदारीपर शजाअतखां था, परन्तु मुन्तख़बुल्लुबाब तवारीख़में हुसैनखां लिखा है, जिससे ऐसा मालूम होता है, कि इसके नामपर अजमेरकी सूबहदारी होगई होगी, लेकिन् तामील होनेमें शजाअतखांके लिहाज़ और दक्षिणके झगड़ेसे मुल्तवी रही

दिने पाछली घडी चार राती थी, जदी राजाजी राजाजी दमामो हुओ, दिन पोहर एक चढ़तां सिलेह करेर डेरा थी चढ्या, तलाई देवजानी थी कोस अर्ध थलो छे, जिठे आवे ऊभा रह्या, परेथी मीया तथा मीयांरा भाई भतीजा हाथ्या ऊपरि चढ़्या आव्या, पाछलो घड़ी चार दिन थो, जदी मुकालबो हुओ, सूधा भेलाई होगया जी, एक महाभारत व्हे जिश्यो भारत हुओ जी, मीया तथा मीयारा भाई बध तथा लोग जमीती सारी थी काम आव्यो जी, श्री दीवाणजी राजाजी राजाजीरे बोलबाला हुओ जी, राजाजी राजाजीरे खेर आवी, और चैन अमन श्रीजी री सुनजरथी छे जी राजाजी राजाजीरे किही बातरो उसवास न ल्यावो जी, विशेष खेम कुशल छे जी, और समाचार विवरा वार पचोली सावलदासरा कागद थी मालूम होसी जी. काती सुद १ स० १७६५ [हि० ११२० ता० ३० रजब = ई० १७०८ ता० १५ ऑक्टोबर].

आबेरपर महाराजा जयसिहके प्रधान रामचन्द्रने इस लडाईसे पहिलेही कब्ज़ह करलिया था, अब साभरको दोनो राजाओने आधा आधा बाटकर आबेरकी तरफ़ कूच किया, और वहा पहुचनेपर खुशीका जश्न (उत्सव) हुआ महाराजा अजीतसिह वापस जोधपुर आये इन्ही दिनोमे महाराजाने पालीके ठाकुर मुकुन्ददास चापावत राठौडको धोखेसे मरवा डाला, मुकुन्ददासको पालीकी जागीर और मन्सब बादशाहकी तरफ़से मिला था, महाराजा ऊपरी दिलसे उससे खुश थे, लेकिन् भीतरसे जलते थे, जो महाराजाके एक कागजसे ज़ाहिर है, कि उन्होने अपने हाथसे उदयपुरके गुसाई नीलकठगिरको लिखा था- (देखो पृष्ठ ७६४). मुकुन्ददासको किलेपर बुलवाया, जहापर उसको छिपियाके ठाकुर प्रतापसिह ऊदावत और कूपावत सबलसिहने मारडाला, तब मुकुन्ददासके राजपूत गहलोत भीमा और धन्नाने प्रतापसिहको मारकर बदला लिया, और आप भी मारेगये उस वक़ किसी कविने सोरठे व दोहे कहे थे, जो नीचे लिखेजाते है -

सोरठा

आजूणी अधरात, महळज रूनी मुकन्दरी ॥
पातलरी परभात, भली रुवाणी भीमडा ॥ १ ॥
पांच पहर लग पोळ, जडी रही जोधाणरी ॥
रै गढ़ ऊपर रौळ, भली मचाई भीमड़ा ॥ २ ॥
चापा ऊपर चूक, ऊदा कदेन आदरे ॥
धन्ना वाळी धूक, जणजण ऊपर जूझवे ॥ ३ ॥

दोहा

भीमा धन्ना सारखा दो भड राख दुबाह ॥
सुण चन्दा सूरज कहे राह न रोके राह ॥ ४ ॥

अर्थ- १ - आज आधी रातको मुकुन्ददासकी औरते रोई, उसी तरह फज्रमे प्रतापसिंहकी औरतोको ऐ ! भीमडा तूने अच्छा रुलाया २- जोधपुरके दर्वाजे पाच पहर तक बन्द रहे, ऐ ! भीमडा किलेमे तूने अच्छा कोलाहल मचाया ३- चापावतोपर ऊदावत कभी चूक नही करेगे, क्योकि हर एकके दिलोपर धन्नाकी दहशत गालिब होरही है ४- सूर्य चन्द्रमाको कहता है, कि भीमा और धन्ना, जैसे दो बहादुर अपने पास रक्खेजावे, तो राहु ग्रह कभी रास्ता नही रोकेगा

महाराजाने नागौरपर चढाई करके वहाके रावसे फ़ौज खर्च लिया, इसके बाद अजमेरको जा घेरा, वहाके सूबहदार शजाअ़तखाने कृष्णगढके राजा राजसिंहकी मारिफत पैतालीस हजार रुपया फौज खर्च देकर पीछा छुडाया, शाहपुरेके राजा भारतसिंहने अजमेरके जिलेके राठौडोको खूब जलील किया था, इस वक्त वे बादशाहके साथ दक्षिण गये थे, पीछेसे अजमेरके राठौडोने महाराजा अजीतसिंहकी हिमायत चाही, तब बादशाही लश्करसे भारतसिंहने और शाहपुरेसे उनके अह्लकारोने उदयपुरमे पचोली बिहारीदासके नाम कागज भेजे, जिनकी नक्ल नीचे लिखी जाती है -

कागजकी नक्ल
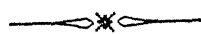
सिद्धश्री उदयपुर सुथाने राज श्री बिहारीदासजी योग्य, लिखाइतु लष्कर थी राज श्री भारथसिहजीकेन जुहार बाचजो जी, अठाका समाचार श्री जीका प्रसाद थी भलासै जी, आपका समाचार सदा आरोग्य चाहिजैजी, तो म्हांने परम सतोष होइजी, राजि उपरात म्हाके सर काई बात न छैजी, राजि म्हांके घणी बात छै जी, म्हासू हमेशा हेत मया राखैछै, तीथी विशेष राखावजो जी, अपरच - काम्बख्श बेटा सूधी काम आव्यो, बादशाह बहादुरकी फतह हुई, अर समाचार होसी, सो कागद पाछा थी लिखांछां जी; अर उठे अमरसिह छै, सो वाकी राजिने घणी सरम छैजी, अर शाहपुरा काम काज को घणे बसमाने रखावजो जी; कागज समाचार मया करी लिखाजोजी. मिती माह सुदी ६ स० १७६५ [हि० ११२० ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १७०९ ता० १७ जैन्युअरी] वर्षे

शाहपुराके अह्लकारोंके
पत्रकी नक्ल

सिद्धश्री उदयपुर सुथाने सर्वोपमा योग्य पचोलीजी श्री बिहारीदासजी चिरणजी चिरण कमलाण, शाहपुरा थी लिखावतच चौधरी सावलदास ब्यास कमलाकर केन सेवा मुजरो आशीर्वाद् अवधारजो जी, अठारा समाचार श्रीजी री कृपा थी भला सै जी, श्री राजिरा सदा आरोग्य चाहिजै जी, राज बडा सौ, साहिब छौ, मोटा छौ, म्हारे आप घणी बात छौ, आप उपरात काई बात न सै जी, म्हांसू आप महरवानगी राखौ छौ, जिशी अवधारता रहजो जी, अठा सरीखी चाकरी होय, सो मया करावजो जी, अपरच– राजाजी श्री अजीतसिंहजी अजमेर आया छै जी, सो राठौड़ कनकसिंह राजाजी तीरे छै, और धरतीरा राठौड ठाकुर सारा छै, सो म्हासू कु मया करै छै, सो आप तो सारी जाणो छौ जी, सो अर्जदाश्त श्रीजीसू लिखी छै, सो आप बसमानो ऊपर करे अर्जदाश्त गुजरावजो जी राज श्री भारथसिंहजीरी शर्म राजने छै जी, अर राजाजी राठौडारो ऊपर करसी, तो भारतसिंहजी पण श्रीजीरा छोरू बन्दा छै, धणी छौ, सो म्हारो ऊपर राज करशो जी, सारी शर्म आपने सै जी, म्हे आप छतां नचीता छाजी, सारो जतन आपने ही करनो सै जी, कागल समाचार बेगा मया करावजो जी मिती चैत्र वदी ३ सम्वत् १७६५ वर्षे [हि० ११२० ता० १७ जिल्हिज = ई० १७०९ ता० २७ फ़ेब्रुअरी]

महाराजा अजीतसिंहने अजमेरमेंसे रुपये वुसूल करके देवलिया प्रतापगढ़में अपनी शादी की, और जोधपुर चलेगये यह खबरें बादशाह बहादुरशाहके पास दक्षिणमें पहुंची, तो नव्वाब असदखाने एक खत अजमेरके सूबहदार शजाअतखां को लिख भेजा, जिसकी नक्ल नीचे लिखते हैं –

नव्वाब असदखांका खत, अजमेरके सूबहदार शजाअतखांके नाम

अमीरी और बड़े दरजेकी पनाह सलामत, आपके खत देरसे पहुंचे, बहुत तअ़ज्जुब हुआ, खैर ! आखिरमें एक तुम्हारा खत पहुंचा, पूरा हाल उससे नहीं मालूम

हुआ, मुनासिब है, कि अच्छी तरहपर लिखते रहे इन दिनोमे दोस्तीके खयालसे उम्दह राजा राणाजी और अजीतसिंह, और जयसिंहको खत भेजे है, जिनका मज्मून अलहदह कागजोसे जाहिर होगा, तुमको मालूम है, कि बहुत आदमी झूठ बका करते है, लेकिन् मै सच कहता हू, और लिखता हू, कि अगर ये लोग ताबेदारी करे, और बादशाही मर्जीके मुवाफिक रहे, तो हर तरह बिह्तर होगा, फायदह उठावेगे, और अगर बदमआशोके कहनेपर अमल किया, बिल्कुल खराब होगे खैर! इस बादशाही खैरख्वाहने राजा अजीतसिंह और राजा जयसिंहको अपना बेटा कहा है, और हर तरहपर मुहब्बत है; इसलिये दिल जलता है, और नसीहत लिखी जाती है, अगर कुबूल करे, तो हर तरह इनका आराम है बादशाहोके साथ ताबेदारीके बगैर इलाज नही है अपने बुजुर्गोंके हालपर गौर करना चाहिये, कि बादशाही रजामन्दीके लिये किस तरहकी खिद्मते की है, अगर शुरूअमे कम जियादह हो, उसपर नजर न रखनी चाहिये, खिद्मत बजा लावे, आखिरमे तरक्की होजायगी, इस बातका जवाब लिखे, जिससे हम काममे दख्ल दे

गरज यह है, कि अव्वल बार, जो हजरतने फर्माया है, कुबूल करना चाहिये, इसके बाद उम्मेद है, कि जल्द उम्मेदको पहुचेगे अगर अब तक बेजा हरकत न करते, तो काम बन जाता, लेकिन् उन् लडकोके मिज़ाजसे क्या किया जावे तुम आप जानते हो, हम इनको बेटा कहनेके सबबसे रंज करते है, वर्नह कोई मत्लब नहीं है, मेरी तरफसे तुम समझाओ इस वक्त फत्हमन्द बादशाही लश्कर मन्जिलवार हिन्दुस्तानको आता है हमारी और तुम्हारी एक इज्जत है, कोई ऐसा काम नकरे, जिससे हम और तुम बादशाही दर्गाहमे लोगोके साम्हने शर्मिन्दह हो, बाप बेटेपनका, जो करार हुआ था, वह बिल्कुल भूल गये इस बातको, जिसमे खल्क़तका आराम है, जल्द तै करके लिखे, जिसपर कुछ कार्रवाई की जावे. ता० ११ सफर सन् ३ जुलूस [हि० ११२१ = वि० १७६६ प्रथम वैशाख शुक्ल १२ = ई० १७०९ ता० २१ एप्रिल]

विक्रमी १७६७ [हि० ११२२ = ई० १७१०] मे महाराजाने बादशाह बहादुरशाहके पास भंडारी खींवसीको भेजकर शाहजादह अ़ज़ीमुश्शानकी मारिफत फर्मान वगैरह पाये, और खुद महाराजा भी बादशाहसे सलाम करके जोधपुर लौटआये विक्रमी १७६८ भाद्रपद [हि० ११२३ रजब = ई० १७११ सेप्टेम्बर] मे महाराजा अजीतसिंह फ़ौज लेकर कृष्णगढ़ गये, और वहांके राजा राजसिंहसे पेशकश लेकर वापस आये

विक्रमी १७७० ज्येष्ठ कृष्ण १ [हि० ११२५ ता० १५ रबीउस्सानी = ई० १७१३ ता० १२ मई] को जूनियाके राठौड़ करणसिंह और जुझारसिंहको महाराजाने बुलाकर जोधपुरके किलेमे दगासे मरवाडाला इसके बाद इसी वर्षके भाद्रपद शुक्ल ५ [हि० ता० ४ शअ़्बान = ई० ता० २७ ऑगस्ट] को अपने आदमियोको भेजकर दिल्लीमे नागौरके राव इन्द्रसिंहके कुवर मुह्कमसिंहको मरवाडाला इसपर बादशाहने राव इन्द्रसिंहको उनके छोटे बेटे मोहनसिंह समेत बुलवाया, महाराजा अजीतसिंहने मोहनसिंहको भी रास्तेहीमे दग़ासे मरवाडाला, जिससे बादशाह फ़र्रुख़सियरने नाराज़ होकर सय्यद हुसैनअ़लीको बडी फौजके साथ मारवाड़पर भेजा विक्रमी १७७१ [हि० ११२६ = ई० १७१४] मे महाराजाने हुसैनअ़लीसे सुलह करली, और बडे कुवर अभयसिंहको दिल्ली भेजदिया इस वक्त अहमदाबादकी सूबहदारी महाराजाके नाम हुई विक्रमी १७७२ आषाढ़ [हि० ११२७ जमादियुस्सानी = ई० १७१५ जून] मे कुवर अभयसिंह जोधपुर आये, और महाराजा अहमदाबाद गये इसी संवत्के आश्विन [हि० शव्वाल = ई० ऑक्टोबर] महीनेमे महाराजाकी कन्या इन्द्रकुवर बाईका डोला दिल्ली भेजागया, और पौष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० ११ डिसेम्बर] को उसकी फ़र्रुखसियरके साथ वहा शादी हुई

विक्रमी १७७३ श्रावण [हिज्री ११२८ शअ़्बान = ई० १७१६ ऑगस्ट] मे महाराजाने इन्द्रसिंहसे नागौर छीन लिया विक्रमी १७७४ [हि० ११२९ = ई० १७१७] मे अहमदाबादकी सूबहदारी मौकूफ हुई, और महाराजा जोधपुर आये विक्रमी १७७५ [हि० ११३० = ई० १७१८] मे दिल्ली गये, और सय्यद अब्दुल्लाहखा वज़ीरसे मिलगये, जिससे बादशाह फर्रुखसियर दिलमे नाराज़ था, बादशाहने अब्दुल्लाहखा और महाराजाको मारनेकी तद्बीरे की, परन्तु वह खबरदार होगये, आख़िरकार अब्दुल्लाहखाने अपने भाई हुसैनअ़लीखाको दक्षिणकी सूबहदारीसे बुलाया, वह तीस हजार फौज लेकर आया, तब अब्दुल्लाहखां, महाराजा अजीतसिंह और कोटेके महाराव भीमसिंह व कृष्णगढके राजा राजसिंह वगैरहने लाल किलेमे बन्दोबस्त करलिया; विक्रमी १७७५ फाल्गुन् शुक्ल ९ [हि० ११३१ ता० ८ रबीउस्सानी = ई० १७१९ ता० २७ फेब्रुअरी] को फर्रुखसियर भागकर जनानेमे जाछिपा; दिल्ली शहरमे गद्र मचगया. हुसैनअ़लीखाके साथके २००० हजार मरहटे सवार बादशाही मुलाजिमो और दिल्लीकी रअ़य्यतके हाथसे मारेगये. विक्रमी फाल्गुन् शुक्ल १० [हि० ता० ९ रबीउस्सानी = ई० ता० २८ फेब्रुअरी] को जनानखानेसे लाकर फ़र्रुखसियरको कैद किया, और उसी समय बहादुरशाहके पोते और रफीउ़श्शानके बेटे शम्सुद्दीन अबुल-

बरकातको जेलखानहसे निकालकर तरूतपर बिठादिया, जिसकी २० बीस वर्षकी उम्र थी, परन्तु वह सिलकी बीमारीसे कमजोर था, तीन दिन तक महाराजा लाल किलेमे रहे, फिर अपनी बेटी इन्द्रकुवरबाईको लेकर जोधपुर चले आये, वह बेगम कुछ अर्सेके बाद जोधपुरमे मरी जोधपुरकी तवारीखमे उसका जहर खाकर मरना लिखा है, परन्तु सबब नही बयान किया

महाराजाको दोबारह अहमदाबादकी सूबहदारी मिली वि० १७७६ आषाढ कृष्ण ९ [हि० ता० २३ रजब = ई० ता० १० जून] को रफीउद्दरजात मरगया, और उसके भाई रफीउद्दौलहको सय्यदोने बादशाह बनाकर उसका "शाहजहा सानी" खिताब रक्खा; लेकिन् वह भी उसी बीमारीसे विक्रमी भाद्रपद [हि० शव्वाल = ई० ऑगस्ट] मे मरगया; तब बहादुरशाहके पोते और जहाशाहके बेटे रोशनअख्तरको दिल्लीके तख्तपर बिठाया, और "मुहम्मदशाह" लकब रक्खा महाराजा जयसिह सय्यदोकी दुश्मनीसे जोधपुर चलेआये, महाराजा अजीतसिहने अपनी बेटी सूरजकुवरका विवाह महाराजासे करदिया सय्यदो और दूसरे मन्सबदार निजामुल्मुल्क वगैरहसे बिगाड हुआ, तब निजामुल्मुल्ककी बर्बादीके लिये सय्यद हुसैनअलीखा बादशाहको बडी फौजके साथ दक्षिणकी तरफ ले निकला, और अब्दुल्लाहखा दिल्लीमे रहा, लेकिन् हुसैनअलीखा फतहपुरसे ३५ कोसपर मारागया, और अब्दुल्लाहखा दिल्लीमे मुहम्मदशाहसे लडकर कैद हुआ यह खबर सुनकर महाराजा जयसिह जोधपुरसे दिल्ली गये, और महाराजा अजीतसिहने अजमेर वगैरह बादशाही जिलोपर कब्जा करलिया, तब मुहम्मदशाहने मारवाड़पर फ़ौज भेजी.

विक्रमी १७७९ [हि० ११३४ = ई० १७२२] मे मेडतेपर बादशाही फौजका मुहासरा होनेसे महाराजाने सुलह करके अपने कुवर अभयसिहको बादशाही खिदमतमे दिल्ली भेजदिया कुवर अभयसिहको महाराजा जयसिह और दूसरे मुगल सर्दारोने समझाया, कि बादशाह फर्रुखसियरके मारेजानेका कुसूर बादशाहके दिलमे महाराजाकी तरफसे खटकता है, तुम मारवाड़का राज अपने घरानेमे रखना चाहते हो, तो उनको मरवा डालो; तब कुवरने अपने छोटे भाई बख्तसिहको लिख भेजा इस इशारेके मुवाफ़िक़ बख्तसिहने अपने बापको विक्रमी १७८१ आषाढ शुक्ल १३ [हि० ११३६ ता० ११ शव्वाल = ई० १७२४ ता० ३ जुलाई] को जनानेमे सोते हुए मारडाला इनके साथ राणियां, खवास, लौंडिया, नाजिर वगैरह जिन सबकी तादाद ६६ थी, चितामे जलमरे. यह महाराजा बहादुर, फ़य्याज, घमडी, लुटेरे, बचनके सच्चे दोस्तको नफ़ा व

दुश्मनको नुक्सान पहुचाने वाले थे इनके नौकर ऐसे वफ़ादार थे, कि तक्लीफ़की हालतोमे भी उनके बदनपर किसी तरहका सद्मह नही आने दिया, वर्नह तमाम उम्र बादशाहतके दुश्मन रहे थे, जीना मुश्किल होता इनके १५ बेटे थे, १- अभयसिंह, २- बख्तसिह, ३- सुल्तानसिह, ४- तेजसिह, ५- दौलतसिह, ६- किशोरसिह, ७- जोधसिह, ८- आनन्दसिह, ९- रायसिह, १०- अखैसिह, ११- रत्नसिह, १२- रूपसिह, १३- मानसिह, १४- प्रतापसिह, और १५- छत्रसिह

३५ महाराजा अभयसिह

इनका जन्म विक्रमी १७५९ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ शनिवार [हि० १११४ ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० १७०२ ता० १८ नोवेम्बर] को हुआ था जब महाराजा अजीतसिहको बख्तसिहने तलवारसे मारा, तो वह एक महलमे जा छिपा, क्योंकि वह जानता था, कि पिताके राजपूत मुझे मारे बगैर न छोडेगे, राजपूतोने महलको घेरलिया, तब बख्तसिहने मुहम्मदशाहका फर्मान और अभयसिहका कागज दिखलाकर कहा, कि मैने उनके हुक्मकी तामील की है, अगर इस वक्त मै महाराजाको नही मारता, तो फर्रुखसियरके एवजमे महाराजाकी जान जानेके सिवा जोधपुरका राज भी राठौड़ोके खानदानसे चलाजाता इसपर राजपूत लोग ठडे हुए, लेकिन् अजीतसिहका माराजाना उनके दिलोपर खटकता रहा, और राजपूतानाकी तमाम रियासतोमे बख्तसिह ऐसा बदनाम हुआ, कि आजतक उसका नाम लेनेसे लोग नफ़रत करते है, और शाइरोने मारवाडी जबानमे उसकी बदनामी बहुतसी की है, जिसमेसे १ दोहा और १ छप्पय यहा लिखते है -

दोहा,

बखता बखत बाहिरा । क्यू मारयो अजमाल ॥
हिंदवाणी को शेवरो । तुरकाणी को शाल ॥ १ ॥

छप्पय

प्रथम तात मारियो । मात जीवती जळाई ॥
असी चार आदमी । हत्या ज्यारी पण आई ॥
कर गाढो इकलास । बेग जयसिह बुलायो ॥

मेटी धर्म मुर्जाद । भरम गांठको गमायो ॥
कवि अणां हूत केवा करे । धरा उदक लेवण धरी ॥
बखतसी जन्म पाया पछे । किशी बात आछी करी ॥

जब महाराजा अजीतसिंहके साथ राणियां सती होनेको निकलीं, तब आनन्दसिंह, रायसिंह, और किशोरसिंहकी माओंने बालकोंको सर्दारोंके सुपुर्द किया किशोरसिंहको तो उनके ननिहाल जयसलमेर भेजदिया, और आनन्दसिंह व रायसिंहको देवीसिंह और मानसिंह चहुवान पहाडोंमें लेगये इसके बाद मारवाड़में जोर पाकर इन दोनों भाइयोंने ईडरका राज्य लेलिया, यह हाल ईडरके जिक्रमें लिखा जायगा, बाकी भाइयोंको बख्तसिंहने मरवाडाला महाराजा अजीतसिंहको मार डालनेके एवज बख्तसिंहको किला नागौर और राजाधिराजका खिताब मिला, कुल सर्दार, जो महाराजा अभयसिंहके पास थे, वे दिल्लीसे नाराज होकर चले आये, बाकी जोधपुरसे निकल गये, और कहा, कि भंडारी खींवसी और रघुनाथको कैद किया जावे, क्योंकि इन लोगोंने महाराजा अजीतसिंहके मारनेकी सलाह दी थी लाचार महाराजा अभयसिंहको ऐसा ही करना पड़ा, इस हुल्लडमें भंडारी वगैरह और भी आदमी मारे काटे गये, और महाराजा अभयसिंहने अपने राजपूतोंको बड़ी मुश्किलसे ताबे किया

महाराजा विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] में मुहम्मद-शाहके हुक्मसे गुजरातकी सूबहदारीकी सनद लेकर मारवाडमें आये, और अहमदाबादके सूबहदार सर्बलन्दखांसे सूबहदारी लेनी चाही; परन्तु उसने हुक्मकी तामील नहीं की; तब महाराजा फ़ौज लेकर चढे (१), और सिरोहीके राव उम्मेदसिंहको जा घेरा, जो महाराजाके बर्खिलाफ़ था, जब उसने जियादह फौज देखी तो अपनी बेटी और फ़ौज खर्च देकर पीछा छुड़ाया वहांसे महाराजा फ़ौज समेत अहमदाबाद पहुंचे, सर्बलन्दखांने चार हजार सवार व चार हज़ार पैदलोंमेंसे पांच सौ सवार और १००० पैदल, छोटी बडी सात सौ तोपें व दो हज़ार मन बारूत अपने बेटे शाहनवाज़खांके साथ शहर में छोड़कर खुद महाराजाके मुक़ाबलेको चढ़ा

---

(१) मिरात अहमदीमें यह हाल इस तरहपर लिखा है - "हिजी ११३६ जिल्काद [वि० १७८१ श्रावण = ई० १७२४ ऑगस्ट] को नव्वाब निज़ामुल्मुल्क बहुत झगड़ोंके सबब वज़ारतका उह्दह छोड़कर हुज़ूरकी इजाज़त बग़ैर दक्षिणको चलदिया, तो इस वजहसे कि मुग़लियह सल्तनतमें वज़ीर नहीं बदला जाता, निज़ामुल्मुल्कको वकील मुत्लक़, याने खास मुसाहिब और 'आसिफ़जाह' का खिताब देकर एतिमादुद्दौलह क़मरुद्दीनखां बहादुर नुस्रतजंगको

विक्रमी १७८७ आश्विन शुक्क ७ [हि० ११४३ ता० ५ रबीउस्सानी = ई० १७३० ता० १७ ऑक्टोबर] को मूंचेड गांवके पास दोनो तरफसे गोलन्दाजी शुरूअ् हुई, लेकिन् रात होजानेके सबब उस दिन लडाई बन्द रही, दूसरे दिन नव्वाब मुकाबलेको तय्यार हुआ, परन्तु कुछ लडाई होनेके बाद महाराजा पीछे हटे (१) मिरातअहमदीमे लिखा है, कि महाराजाने साबरमती नदीके पासके गावोमे मोर्चे जमा लिये, और भद्र किलेकी तरफ गोले चलाये, उधरसे भी चलने लगे, तीसरा दिन भी ऐसेही बीता, चौथे दिन विक्रमी आश्विन शुक्क १० [हि० ता० ८ रबीउस्सानी = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को सर्बलन्दखां मए अपनी जमइयतके शहरसे निकलकर लडा; महाराजाने भी फौजके तीन हिस्से करके लडाई शुरूअ् की; पहिले गोलन्दाजी, फिर तीर, बन्दूक, पीछे तलवारोसे कटकर लडे, सब दिन अच्छी तरह लडाई हुई, पहिले हमलेमे महाराजाकी फौज हटगई, लेकिन् दूसरे वक्त मारवाडी सर्दारोने नव्वाबकी फौजको बर्बाद किया, और तोपखानह व फतहगज नामी हाथी वगैरह लेलिया मिरातअहमदीमे लिखा है, कि सर्बलन्दखाके पास कुल चार सौ सवार बाकी रहगये थे, लेकिन् यह तादाद महाराजाको मालूम नही हुई, जिससे हमलह नही किया, रात होजानेसे नव्वाब शहरमे आगया

काइम मकाम वजीर किया मुबारिजुल्मुल्क सर्बलन्दखाको, जिसका मन्सब सात हज़ारी जात, सात हजार सवार दो अस्पह सिह अस्पह था, गुजरातकी सूबहदारी आसिफजाहसे उतारकर इनायत कीगई हिज्री ११४२ [वि० १७८७ = ई० १७३०] मे जब कि बहुतसा सामान हासिल करके मुबारिजुल्मुल्कने बादशाहकी मर्जीके मुवाफिक सूबहका इन्तिजाम अच्छी तरह न किया, और अमीरुल्-उमरा सम्सामुद्दौलह बादशाही मुसाहिबसे हर तरह बर्खिलाफी रहने लगी, और फौजके सवार मौकूफ कियेजानेका हुक्म दियागया, तो मुबारिजुल्मुल्कने कई बार हुजूरमे इस्तिअ्फा भेजा, जिसपर एतिमादुद्दौलह वजीरने उसकी तरफसे बादशाहका दिल फेरकर जोधपुरके महाराजा अभयसिंहको, जो उस वज़ीरसे मिलावट रखता था, गुजरातकी सूबहदारीके लिये तज्वीज़ किया, और उसको बादशाही हुजूरसे खास खिल्अत, जवाहिर, एक हाथी, अठारह लाख रुपया खज़ानह, पचास तोपोका तोपखानह और दूसरा सामान फौज वगैरह, रवानगीके वक्त दिलवाया "

(१) मिरातअहमदीमे महाराजाका पीछा हटना २ या ३ कोस, और मारवाड़की तवारीखमे ५०० या सात सौ क़दम लिखा है

दूसरे दिन फिर लड़ाई शुरूअ् हुई, तब सुलहका पैगाम होने लगा, नीबाजके ठाकुर ऊदावत अमरसिंहसे बात चीत हुई मिरातअहमदीमे दूसरे दिन सुलह होना लिखा है, और मारवाडकी तवारीखमे ११ के दिन लड़ाई होकर १२ को सुलह होना तहरीर है, लेकिन् यह दूसरा लेख सिल्सिले वार और तारीख वार है, इसलिये यही सहीह मालूम होता है सुलह इस तरहपर ठहरी, कि शहरपर महाराजाका कब्ज़ह कराया जावे, बारबर्दारी देकर नव्वाबको अहमदाबादके इलाकेसे बाहर पहुचा देवे, और महाराजासे बराबरकी मुलाक़ात हो दूसरी बातोमे तो मिरातअहमदी और मारवाडकी तवारीखमे जियादह फर्क नही है, लेकिन् मिरात-अहमदीमे बारबर्दारी और एक लाख रुपया महाराजाकी तरफसे नव्वाबको देना, दूसरे, नव्वाबका मुलाक़ातको आना, महाराजाका पेश्वाई करके अपने डेरेमे लाना, पगडी बदल भाई होकर मिलना, और महाराजाके भाई बख्तसिंहका तीरकी चोटके ज़ख्मके सबब नही आना लिखा है, लेकिन् मारवाडकी तवारीखमे एक लाख रुपया देनेका जिक्र नही, और महाराजाका अपने भाई समेत घोडोपर चढकर खडे खडे मुलाकात करना लिखा है, पगडी बदल भाई होना दोनो जगह तहरीर है महाराजाने नव्वाबके साथ नीबाजके ठाकुर अमरसिंह ऊदावतको भेजा, और बारबर्दारी देकर पहुंचाया इस लड़ाईमे दोनो तरफके सैकडो आदमी मारेगये, और महाराजा वहाके सूबहदार बने

इस वक्त महाराजाने बादशाही तोपखानह, माल, अस्बाब, बहुत कुछ जोधपुर पहुंचा दिया, और सब मारवाडियोने गुजरातियोको तग करके रुपये पैदा किये; हुकूमत क्या लुटेरापन था अगर महाराजा अच्छा इन्तिजाम करते, तो शायद निजामुल्मुल्ककी तरह गुजरातका मुल्क इन्हींके कब्जेमे रहजाता, उन्होने गुजरातके कुछ मुल्की जिले मारवाडमे मिलालिये थे चारण कविया करणीदान (१) ने सर्बलन्दखांकी लडाईका ग्रन्थ बिरदशृगार नाम बनाया, जिसपर महाराजाने खुश होकर उसे लाख पशाव और आलावास गाव और कविराजका खिताब दिया, और आप उसकी जलेबमे चले, उस समयका मारवाड़ी ज़बानमे एक दोहा इस तरह पर है -

---

(१) कविया करणीदान मेवाडमें सूलवाड़ा गावका रहने वाला था, उसका ज़िक्र महाराणा संग्रामसिंहके हालमे लिखा जायगा

दोहा

अस चढियो राजा अभो कवि चाढे गजराज ॥
पोहर हेक जळेवमे मोहर हले महाराज ॥ १ ॥

विक्रमी १७८८ [हि० ११४४ = ई० १७३१] मे बाजीराव पेश्वाने चौथ लेनेके इरादेसे बडौदेपर कब्जा करलिया, महाराजाने फौज भेजी, और दक्षिणसे निजामुल्मुल्क महाराजाकी मददको सूरत तक आया, यह सुनकर बाजीराव घबराया, और महाराजासे सुलहके साथ मुलाकात करके वापस चला गया, महाराजाने इस मददके एवज निजामुल्मुल्कको शुक्रिया भेजा विक्रमी १७९० [हि० ११४६ = ई० १७३३] मे महाराजा अपने नाइब भडारी रत्नसीको अहमदाबादमे छोडकर जोधपुर आये, और वहासे फौज लेकर बीकानेरपर चढे, नागौरका महाराज बख्तसिह भी इनके साथ था, लेकिन् दोनो भाई भागकर पीछे चले आये इस लड़ाईका हाल बीकानेरके जिक्रमे लिखागया है फिर जिले अजमेर हुरडा गावके मकामपर महाराणा जगत्सिह दूसरे, महाराजा जयसिह, महाराज बख्तसिह, महाराव दुर्जनसालने इकट्ठे होकर मुसल्मानोकी बादशाहत और मरहटोके लिये सलाह की, जिसका हाल महाराणा जगत्सिह दूसरेके बयानमे लिखा जायगा इस मुलाक़ातमे महाराणाके लाल डेरे देखकर महाराजा अभयसिहने भी अपने लिये उसी रगके डेरे खडे करवालिये यह बात अभयसिहकी शिकायतमे मुहम्मदशाहके कान तक पहुची, तब बादशाहने जोधपुरके वकील भडारी अमरसीको बुलाकर जवाब पूछा, जिसपर भडारीने कहा, कि महाराजा अभयसिहने मरहटोको रोकनेके लिये सब राजाओको इकट्ठा किया था, और इस बातपर तक़रार हुई, कि किसके डेरेमे बैठकर सब राजा सलाह करे, इस हुज्जतको मिटानेके लिये महाराजाने बादशाही दीवान-खानह लाल रगका तय्यार करवाकर वहा सबको इकट्ठा किया इस बातपर भडारीने अपनी चालाकीसे कुसूरकी सजाके एवज महाराजाको खिल्अत और खातिरीका फ़र्मान भिजवाया

विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] मे अहमदाबादकी सूबहदारी जुल्म करनेके सबब महाराजासे उतार लीगई, और आपसमे महाराजा व बख्तसिहके नाइत्तिफाकी हुई विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = ई० १७४०] मे महाराजाने दोबारह बीकानेरपर चढाई की; इस मौकेपर महाराणा २ जगत्सिहके कुंवर प्रतापसिह दूसरे उदयपुरसे जोधपुर आये, और महाराजा अजीतसिहकी बेटी

सौभाग्यकुवरको विवाहकर उदयपुर चले गये अभयसिह लड़ाई झगडेमे थे, इससे नही आसके इन्होने बीकानेरके राजा जोरावरसिहको घेर रक्खा था, जोरावरसिहने जयपुर व नागौरके महाराजाओसे मदद चाही महाराज बख्तसिहने मेडतेपर कब्जा करलिया, और महाराजा जयसिह भी जयपुरसे चले, तब महाराजा अभयसिह भागकर जोधपुर चलेआये, लेकिन् दूसरी तरफ बडी भारी फौज थी, क्योंकि महाराजा जयसिहके साथ और भी राजा फौज समेत शामिल थे, जोधपुरका किला घेर लिया गया महाराजा अभयसिहने बीस लाख रुपये फौज खर्च देकर पीछा छुडाया, और महाराजा जयसिह लौटे यह हाल बीकानेरकी तवारीखमे लिखागया है इसी वर्षमे महाराजा अभयसिहने अपने भाई बख्तसिहसे मिलावट करके जयपुरकी तरफ चढाई की, महाराजा अभयसिह तो मेडतेमे थे, और बख्तसिहने आगे जाकर गगवाणा गावमे महाराजा जयसिहसे मुकाबला किया महाराजा अभयसिहने लडाईके समय शामिल होनेको कहा था, परन्तु रीयाके ठाकुर शेरसिंह मेडतिया और कविराज करणीदानने महाराजासे कहा, कि आपके बेटे रामसिह कम अक्ल है, जिनसे बख्तसिह राज छीन लेगे, अब जयपुर वालोसे उन्हे लडने दीजिये, अगर फत्ह हुई, तो भी ठीक, और जो बख्तसिह मारेगये, तो खटका मिटा इससे महाराजा अभयसिह रीयामे ठहर गये, और महाराज बख्तसिह जयपुरकी फौजसे खूब लडे, यहा तक कि फ़ौजके पांच हजार आदमियोमेसे बहुत थोडे आदमी बाकी रहगये, और जयपुरकी फौजकी हरावलमे शाहपुरेके राजा उम्मेदसिह भी थे, उनके चार सौ आदमी इस झगडेमे काम आये महाराज बख़्तसिह भागकर पुष्करमे महाराजा अभयसिहसे आमिले, और उनकी पूजाकी हथनी वगैरह सामान शाहपुरेके राजाने लूटकर महाराजा जयसिहको देदिया बख्तसिह नागौर गये, महाराजा अभयसिह और जयसिहमे इत्तिफ़ाक हुआ, और दोनो अपनी अपनी राजधानीको चले गये यह लडाई विक्रमी १७९८ आषाढ कृष्ण ९ [हि० ११५४ ता० २३ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १७४१ ता० ९ जून] को हुई

विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल १४ [हि० ११५६ ता० १३ शअ्बान = ई० १७४३ ता० ३ ऑक्टोबर] को जयपुरके महाराजा सवाई जयसिहका देहान्त होनेपर महाराजा अभयसिहने फौज भेजकर अजमेरपर क़ब्जा करलिया; तब जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिहने अजमेरकी तरफ चढ़ाई की, और अभयसिह भी महाराज बख़्तसिंह समेत मुकाबले के लिये पहुचे; परन्तु बीचके लोगोने मेल करादिया. इस सुल्हसे बख्तसिह नाराज

होकर नागौर चला गया, तो भी अजमेर अभयसिंहके क़ब्जेमे रहा, और दोनो राजा अपनी अपनी राजधानीको चले गये

विक्रमी १८०३ [हि० ११५९ = ई० १७४६] मे बीकानेरपर फौज समेत भंडारी रत्नसीको भेजा, यह भंडारी वहा मारा गया, जिसका हाल बीकानेरके इतिहासमे लिखा गया है महाराजा बख़्तसिंह और अभयसिंहमे नाइत्तिफाकी रही, विक्रमी १८०६ आषाढ शुक्ल १५ सोमवार [हि० ११६२ ता० १४ रजब = ई० १७४९ ता० ३० जून] को महाराजा अभयसिंहका अजमेरमे देहान्त हुआ, इनके साथ २ खवास व ११ पर्दायत पुष्करमे सती हुईं, और जोधपुरमे ६ राणी व १४ खवास पर्दायती वग़ैरह जली

यह महाराजा सुलह पसन्द, कारगुजार नौकरके कद्रदान और बहादुर थे, लोगोंके कहनेपर अमल करलेते थे; परन्तु बुद्धिमान और फय्याज होनेके सबब रियासतमे नुक्सान नही आया, और जो कभी कुछ हुआ, तो मिटाते रहे. इनके एकपुत्र रामसिंह थे, जो गद्दीपर बैठे.

---

३६ महाराजा रामसिंह
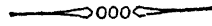
इनका जन्म विक्रमी १७८७ प्रथम भाद्रपद कृष्ण १० [हि० ११४३ ता० २४ मुहर्रम = ई० १७३० ता० ७ ऑगस्ट] को हुआ था, यह अक्लसे खारिज थे, गद्दीपर बैठते ही नालायक़ और कमीन आदमियोको पास रखकर दरजे और जागीरे देने लगे, जिनमेसे एक अमीड़ा डोम भी उनका मर्ज़ीदान था इन्होने महाराज बख़्तसिंहको कहलाया, कि जालौर छोडदो, वर्नह नागौर छीनलिया जायगा इसके बाद महाराजा रामसिंह मेडते गये, वहा रीयाके ठाकुर शेरसिंहसे कहा, कि तुम अपना गुलाम बिजिया हमको देदो, मगर शेरसिंहने नही दिया, और रीयां चला गया महाराजाने नागौरपर चढाई की, तो दूसरे लोगोने समझाया, और कहा, कि शेरसिंहको बुलाना चाहिये, तब महाराजा आप रीया जाकर शेरसिंहको लेआये, और बिजियाको अपना मुसाहिब बनाया इसके बाद आउवाके ठाकुर चापावत कुशलसिंह और आसोपके ठाकुर कूंपावत कन्हीरामको भी नादानीकी बातोसे नाराज करके अपने देशसे निकल जानेका हुक्म दिया रीयाके ठाकुर शेरसिंह मेड़तियासे कुशलसिंहकी जबानी तक्रार हुई, जिससे चापावत, कूंपावत,

व ऊदावत वगैरह बिगडकर नागौर चले गये पोहकरणके ठाकुर देवीसिंह व पालीके ठाकुर पेमसिंह वगैरह भी इसी तरह नाराज होकर नागौर पहुंचे

इस बखेडेसे महाराजा रामसिंह और बख्तसिंहमे कई लडाइयां हुईं जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंह और बीकानेरके राजा गजसिंहके बडे भाई अमरसिंह वगैरह महाराजा रामसिंहके मददगार, और बीकानेरके राजा और मारवाडके उमराव चांपावत व कूंपावत वगैरह महाराज बख्तसिंहके तरफदार होगये, आपसमे जो लडाई हुई, उसमे अमरसिंह वगैरह कई सर्दार मारेगये इसके बाद मेल होगया, महाराजा रामसिंह मेडते, और बख्तसिंह नागौर पहुंचे, बाकी मददगार भी अपने अपने ठिकानोको चले गये, लेकिन् मारवाडी उमराव सब नागौरमे थे, मौका देखकर महाराज बख्तसिंहको चढा लाये इधर महाराजा रामसिंहने भी मेडतिया शेरसिंह वगैरह सर्दारोको लेकर मुकाबलह किया, दोनो तरफके राजपूत दिल खोलकर खूब लडे, विक्रमी १८०७ कार्तिक शुक्ल ९ [हि० ११६३ ता० ७ जिल्हिज = ई० १७५० ता० ८ नोवेम्बर] को यह लडाई हुई, जिसमे महाराजा रामसिंहकी तरफके नीचे लिखे सर्दार मारेगये -

१ रीयाका ठाकुर शेरसिंह मेडतिया, २ आलणियावासका मेडतिया ठाकुर सूरजमल्ल, ३ बलूंदेका चांदावत ठाकुर श्यामसिंह, ४ बीखर्णियाका ठाकुर डूंगरसिंह, ५ सेवरियाका ठाकुर सुरतानसिंह, ६ शेरसिंहका कोठारी सुजाण और कर्मसोतोंके तीन आदमी काम आये, ७ मीठडीका ठाकुर शक्तिसिंह, अपने बेटे नाहरसिंह समेत मारागया ८ कुचामणका ठाकुर जालिमसिंह, ९ देधाणाका ठाकुर अनूपसिंह, १० बख्तसिंह जैतमालोत

महाराज बख्तसिंहकी ओरसे आउवाका ठाकुर कुशलसिंह व विठोराका भाटी बख्तसिंह काम आया यहांसे महाराज बख्तसिंहको बीकानेरके राजा गजसिंह व कृष्णगढके राजा बहादुरसिंह लेनिकले, और सोजतपर कब्जह करलिया पीछेसे महाराजा रामसिंह भी फौज लेकर पहुंचे, महाराज बख्तसिंहने विक्रमी १८०८ वैशाख कृष्ण ९ [हि० ११६४ ता० २३ जमादियुल् अव्वल = ई० १७५१ ता० २१ एप्रिल] को दूसरा हमलह रामसिंहकी फौजपर किया, इस लडाईमे रामसिंहकी तरफसे कुचामणका ठाकुर जालिमसिंह मए दो बेटो और सत्तर आदमियोके मारागया, और दूसरी तरफके भी बहुतसे बहादुर राजपूत लडमरे इसी तरह तीसरी लडाई हुई, आखिरकार महाराजा रामसिंह तो मेडतेमे थे, और महाराज बख्तसिंहने विक्रमी १८०८ श्रावण कृष्ण १२ [हि० ११६४ ता० २६ शअ्बान = ई० १७५१ ता० २१ जुलाई] को जोधपुरपर कब्जह किया

३७ महाराजा बख्तसिंह

इनका जन्म विक्रमी १७६३ भाद्रपद कृष्ण ८ [हि० १११८ ता० २२ जमादियुल् अव्वल = ई० १७०६ ता० १ सेप्टेम्बर] को हुआ था इन्होंने महाराजा गजसिंह और बहादुरसिंहको रुख़्सत दी महाराजा रामसिंहके पास जो आदमी थे, वे आपाजी सेंधियासे दस बारह हजार फौज मददके लिये लाये, और अजमेरपर कब्जा करलिया महाराजा बख्तसिंह जोधपुरसे चढे, और अजमेर पहुंचे, वहा जाली कागज बनाकर मरहटोंकी फौजमे डलवा दिया, जैसे कि शेरशाहने राव मालदेवके साथ किया था मरहटे रामसिंहको लेभागे, और मन्दसौर पहुंचे बख़्तसिंहने मरहटोंसे लडकर मालवा छीननेका इरादह किया, और जयपुरसे महाराजा माधवसिंहको बुलाया, सोनोली गावमे दोनोंका मिलाप हुआ विक्रमी १८०९ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ११६५ ता० १२ जिल्काद = ई० १७५२ ता० २२ सेप्टेम्बर] को महाराजा बख़्तसिंहका वहीं देहान्त होगया मशहूर है, कि जयपुरके राजा माधवसिंहने जहर दिलवाया था बख़्तसिंहने अपने बाप महाराजा अजीतसिंहको मारा, इसलिये चारणोंने मारवाडी शाइरीमे उन्हे खूब बदनाम किया, जिससे बख़्तसिंहने चारणोंके कई गाव जब्त करलिये इस वक्त महाराजा बख़्तसिंहकी बेहोशीमे पोहकरणके ठाकुर देवीसिंहने चारणोंके एवज अपने हाथपर सकल्प लेकर वे गाव बहाल करवा दिये इनके साथ ५ राणी व १० पर्दायत वगैरह जोधपुरमे सती हुई

यह महाराजा अव्वल दरजेके बहादुर, सख़्त मिजाज, जमीनके लोभी, जालिम, फय्याज और दगाबाज थे कौलका क़ियाम अपने मतलबके साथ रखते थे, इनके थोडेसे राज्य करनेसे ही मारवाडी लोगोंका नाकमे दम आगया था, कई आदमियोंके हाथ पैर कटवाये, और अक्सरको मरवाडाला, ईश्वर ऐसे बे रहम राजाके हाथमे लाखो मनुष्योंका इन्तिजाम जियादह नहीं रखता इनके बाद कुवर विजयसिंह राज्यके मालिक हुए

३८ महाराजा विजयसिंह

इनका जन्म विक्रमी १७८६ मार्गशीर्ष कृष्ण ११ बृहस्पति वार [हि० ११४२

ता० २५ रबीउस्सानी = ई० १७२९ ता० १६ नोवेम्बर] को हुआ था कृष्णगढके राजा बहादुरसिंह और बीकानेरके राजा गजसिंह विजयसिंहके मददगार थे, और रूपनगरके महाराजा सामन्तसिंहके बेटे सर्दारसिंह महाराजा रामसिंहके साथ आपाजी सेंधियाको ६० हज़ार फ़ौज समेत मारवाडपर चढा लाये, महाराजा विजयसिंह अपनी चालीस हज़ार फ़ौज लेकर जोधपुरसे चले, और बहादुरसिंह व महाराजा गजसिंह भी आमिले, मेड़तेके पास गाव गांगारडामें विक्रमी १८११ आश्विन कृष्ण १३ [हि० ११६७ ता० २७ ज़िल्काद = ई० १७५४ ता० १५ सेप्टेम्बर] को सख़्त लड़ाई हुई; आख़िर महाराजा विजयसिंह शिकस्त खाकर मेड़तेमें जाठहरे. इस लड़ाईमें नीचे लिखे हुए सर्दार काम आये -

चांपावत राठौड़

(१) पालीका ठाकुर पेमसिंह
(२) राठौड़ लालसिंह
(३) राठौड़ अर्जुनसिंह
(४) सर्वाडका ठाकुर मुह्कमसिंह
(५) माडावासका ठाकुर जैतसिंह
(६) धांदियाका ठाकुर उदयसिंह
(७) खाटूका ठाकुर बहादुरसिंह
(८) रणेलका ठाकुर लखधीर
(९) हैबतसरका ठाकुर कीर्तिसिंह
(१०) भैरूवासका ठाकुर सवाईसिंह
(११) धाम्लीका ठाकुर नवासिंह
(१२) माडियाका ठाकुर ज़ोरावरसिंह
(१३) गढ़ियाका ठाकुर शुभकरण
(१४) जैतपुराका ठाकुर ज़ोरावरसिंह.
(१५) बरलेणका ठाकुर भोमसिंह

राठौड़ मेड़तिया

(१६) लूणवाका ठाकुर रायसिंह.
(१७) लूणवाका सूरसिंह.
(१८) मारोटका ठाकुर मोतीसिंह
(१९) खारियाका जुझारसिंह.

राठौड़ महेचा.

(२०) थोबका ठाकुर सर्दारसिंह.

भाटी

(२१) रामपुरेका ठाकुर शुभकरण
(२२) मेड़ावासका ठाकुर पेमसिंह.
(२३) कंटालियाका ठाकुर बख़्तसिंह
(२४) कीटनोदका ठाकुर महेशदास.
(२५) खारियाका ठाकुर कीर्तिसिंह
(२६) जैतसिंह.
(२७) दौलतसिंह
(२८) चहुवान लालसिंह.
(२९) शैखावत दौलतसिंह, लाडखानी

और तोपखानेका अफ्सर बहादुरसिंह चांदावत भी इस लड़ाईमें बहादुरीके साथ काम आया. इस लड़ाईमें बीकानेरके महाराजा गजसिंहके ३०० आदमी मारेगये, और १०० घायल हुए, कृष्णगढ़के महाराजा बहादुरसिंहके भी सौ आदमी मारेगये.

महाराजा विजयसिंह मेड़तेमें भी न ठहरने पाये, और भागकर नागौर गये; मरहटी फ़ौजने पीछा किया, और नागौर जा घेरा, महाराजा रामसिंह कुछ मरहटी फ़ौज लेकर जोधपुर जा पहुंचे, और किला घेर लिया, महाराजा विजयसिंहने झगड़ा मिटानेको उदयपुरके महाराणा राजसिंह २ व सलूंबरके रावत् जैतसिंहको बुलाया था, वह आपाजी सेंधियाकी फ़ौजमें ठहरा; इसी अर्सेमें चहुवान साईंदासकी जमइयतके खोखर केसरखां और एक गहलोत सर्दार दोनों आदमियोंने महाराजाके हुक्मसे मरहटी फ़ौजमें जाकर बनियेकी दूकान की, एक दिन यह दोनों बनावटी बनिये आपसमें ऐसे लड़े, कि देखने वालोंको हंसी आती थी, वे दोनों लड़ते झगड़ते आपाजीकी ड्योढ़ीपर पहुंचे, उन्होंने भी इनकी लड़ाईका हाल सुनकर इन्साफ़के वास्ते अन्दर बुलाया, ये दोनों लड़ते लड़ते आपाजीपर जा गिरे, और पेशक़ब्ज़ोंसे उनका काम तमाम करके खुद भी मारेगये. मरहटोंने सलूंबरके रावत् जैतसिंहपर हमलह किया, वह अपनी जमइयत समेत बहादुरीके साथ मारागया, मरहटोंने फिर भी लड़ाई न छोड़ी, तब महाराजा विजयसिंह अपने राजपूतोंको किलेमें छोड़कर बीकानेर गये, वहांसे महाराजा गजसिंहको साथ लेकर जयपुर पहुंचे; लेकिन् महाराजा माधवसिंह १ ने विजयसिंहके साथ दग़ा करना चाहा, तब वे वहांसे लौटकर बीकानेर चले आये. मरहटोंसे इस शर्तपर सुलह हुई, कि अजमेर और इक्यावन लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका उनको दिया जाय, जोधपुर महाराजा विजयसिंहके, और मेड़ता महाराजा रामसिंहके क़ब्ज़ेमें रहे, बाक़ी आधा आधा मुल्क बांट लिया जाय. इसके बाद महाराजा बीकानेरसे जोधपुर आये, विक्रमी १८१२ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ११६९ ता० १४ सफ़र = ई० १७५५ ता० १९ नोवेम्बर] को यह झगड़ा ख़त्म हुआ.

विक्रमी १८१३ [हि० ११६९ = ई० १७५६] में महाराजा रामसिंह जयपुर शादी करने गये, पीछेसे मेड़ता, सोजत और जालौर वग़ैरह क़िलोंपर महाराजा विजयसिंहने क़ब्ज़ह करलिया, यह सुनकर मरहटी फ़ौजें फिर मारवाड़पर आईं, महाराजा भी उनके पीछे २ दौड़ते थे, लेकिन् मारवाड़के सर्दार मरहटोंसे मिलगये, जिससे देशकी बर्बादी हुई, महाराजा भी दिक़ होकर जोधपुरमें जा बैठे, सर्दार बिना इजाज़त अपने अपने घर चलेगये, जालौर मरहटोंने लेलिया, और मेड़तेपर महाराजा

रामसिंहका कब्जा होगया खाटू वगैरहके जागीरदारोंने मुल्कमे खराबी फैलाई, तब जग्गू धाय भाईने जोधपुरसे रवानह होकर खाटू व मगरासर वगैरह जागीरदारोंको सजा दी पोहकरणके ठाकुर देवीसिंहको महाराजाने जोधपुर बुलाया, पर वह न आया, और दूसरे सर्दारोंको एकठ्ठा करके फसादपर तय्यार हुआ, महाराजा खुद गये, और उन सर्दारोंको मना लाये, लेकिन् सर्दार लोग मग्रूर होगये, और महाराजाको कहलाया, कि स्वामी आत्मारामको किलेसे निकाल दो यह बात महाराजाको बहुत बुरी मालूम हुई, लेकिन् इसी अर्सेमे उक्त स्वामीका देहान्त होगया. सर्दारोंको जग्गू धाय भाई व गोवर्धनखीचीने कहलाया, कि आत्मारामके मरजानेसे महाराजा बहुत उदास हैं, इसलिये आप लोग आकर तसल्ली दें तब सर्दार लोग किलेपर आये, और उनकी जमइयतोंको बाहर रोक दिया, कि स्वामी आत्मारामकी लाशके दर्शनोंको राणियां आवेंगी जिन सर्दारोंको विक्रमी १८१६ फाल्गुन् कृष्ण १ [हि० ११७३ ता० १५ जमादियुस्सानी = ई० १७६० ता० ३ फ़ेब्रुअरी] को महाराजाने गिरिफ्तारीके बाद कैद किया, उनके नाम ये हैं -

(१) पोहकरणका ठाकुर देवीसिंह (२) आसोपका ठाकुर छत्रसिंह
(३) रासका ठाकुर केसरीसिंह (४) नीबाजका ठाकुर दौलतसिंह

यह केसरीसिंहका बेटा नीबाज गोद गया था कैद होजानेके बाद उसी वक्त किसी कविने मारवाड़ी जबानमे यह दोहा कहा था -

दोहा

केहर देवो छत्रशल । दौलो राज कुवार ॥
मरते मोडे (१) मारिया । चोटीवाला चार ॥

देवीसिंह छ दिनके बाद और छत्रसिंह एक महीने बाद मरगये, दौलतसिंहको बच्चा जानकर छोड दिया, केसरीसिंह कैदमे रहा, जो दो वर्षके बाद मरगया. देवीसिंहके बेटे सबलसिंह वगैरह चांपावतोंने मारवाडमे लूट मार मचाई, महाराजा विजयसिंहकी फौजने मेडतेपर दख्ल किया, और रामसिंहने राठौड सर्दारोंके साथ मेड़तेको घेर लिया, लेकिन् फौज समेत जग्गू धाय भाईके आजानेसे भाग गया, और कितने ही सर्दार महाराजा विजयसिंहसे आमिले; चांपावत फसाद करते रहे, एक लड़ाईमे पोहकरणका ठाकुर सबलसिंह मारा गया, जिससे महाराजा

(१) मोडेसे मुराद स्वामी आत्माराम है

विजयसिंहकी ताकत बढगई, इन्होंने अजमेरके जिलेमें फ़ौज भेजकर रुपये वुसूल किये, और अजमेर जाघेरा, मरहटे किले बीटलीपर चढगये यह सुनकर माधवराव सेंधिया फ़ौज लेकर आपहुंचा, तब मारवाडकी फ़ौज भागकर अपने देशको चली आई महाराजाने विक्रमी १८१८ [हि० ११७४ = ई० १७६१] में नव लाख रुपया माधवराव सेंधियाको देना करके पीछा छुडाया

विक्रमी १८२१ श्रावण [हि० ११७८ सफ़र = ई० १७६४ ऑगस्ट] में जग्गू धाय भाई मरगया, और विक्रमी १८२२ [हि० ११७९ = ई० १७६५] में माधवराव सेंधियाके आनेकी ख़बर लगी, तब बारहठ करणीदानको भेजा, जिसने तीन लाख रुपया देकर उसको मन्दसौरसे आगे न बढने दिया इन्हीं दिनोंसे महाराजा विजयसिंह नाथद्वारेके गुसाईंको मानने लगे, जानवर मारना और शराब निकालना बन्द किया इसी वर्षके कार्तिक शुक्ल १ [हि० ता० २९ रबीउस्सानी = ई० ता० १४ ऑक्टोबर] को नाथद्वारे आये, और मार्गशीर्षमें सर्दारगढके ठाकुर सर्दारसिंहके यहां शादी करके मारवाडको गये विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में उदयपुरके महाराणा अरिसिंहसे गोडवाडका पर्गनह महाराजा विजयसिंहको इस शर्तपर मिला, कि वे तीन हज़ार सवार व पैदलोंकी फ़ौज नाथद्वारेमें महाराणाकी ताबेदारीके लिये रक्खें, और रत्नसिंहको, जो कुम्भलगढमें महाराणा बना है, निकाल देनेकी कोशिश करें, डेढ वर्ष तक यह फ़ौज नाथद्वारेमें रही थी, वह जगह नाथद्वारेमें अब तक फ़ौजके नामसे प्रसिद्ध है उस फ़ौजमें सिंघवी काम्दार मुसाहिब था, जिसकी औलाद अब तक नाथद्वारेमें मौजूद है महाराजा विजयसिंह, बीकानेरके महाराजा गजसिंह और बहादुरसिंह विक्रमी १८२८ माघ [हि० ११८५ ज़िल्काद = ई० १७७२ फ़ेब्रुअरी] में नाथद्वारे आये, और महाराणा अरिसिंहसे मिलकर गोडवाडके पर्गनहकी बाबत बात चीत की; लेकिन् महाराजा विजयसिंहने टाला टूलीका जवाब दिया, तो सब राजा अपनी अपनी राजधानियोंको चलेगये

विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में महाराजा रामसिंह का जयपुरमें इन्तिकाल हुआ (१), तब सांभरके पर्गनहपर जो उनके कब्जेमें था, महाराजा विजयसिंहने कब्ज़ह करलिया विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में महाराजाने आउवाके ठाकुर जैतसिंहको जोधपुरके

(१) मारवाडकी ख्यातमें एक जगह महाराजाका इन्तिकाल मन्दसौरमें होना लिखा है

क़िलेमे बुलाकर मरवा डाला विक्रमी १८३४ [हि० ११९१ = ई० १७७७] मे रायपुरके ठाकुरको फ़ौज भेजकर निकालदिया, और जागीर छीन ली. सिंघवी भीमराज फ़ौज लेकर महाराजाकी तरफ़से चढा, और मरहटोसे खूब लडाइया की कृष्णगढका राजा प्रतापसिंह माधवराव सेंधियासे मिलगया, जिससे महाराजा विजयसिंहने फ़ौज भेजकर तीन लाख रुपया लेलिया, और अजमेर भी मारवाडमे शामिल किया

महाराजा गुलाबराय पासबानके कहनेपर चलते थे, इनको जहांगीर और नूरजहांका नमूना कहना चाहिये माधवराव सेंधिया फ़ौज बनाकर राजपूतानाकी तरफ़ चला, तवरोकी पाटनके पास जयपुर और जोधपुरकी फ़ौजने मुकाबलह किया, जयपुर वालोने माधवरायसे मेल करलिया, जिससे जोधपुरकी फ़ौजका बहुत नुक्सान हुआ, जिसका जिधरको मुह उठा, भागा और जान बचाई, बहुतसे मारेगये मरहटोने अजमेर छीन लिया, और मारवाडमे घुसे, मेडतेके पास सिंघवी भीमराजसे मुकाबलह हुआ, जो महाराजाका फ़ौज मुसाहिब था, बहुतसे सर्दार और आदमी मारेगये यह खबर सुनकर महाराजाने अपने जनाने और छोटे मोटे बाल बच्चोको जालौर भेजदिया, और पासबान गुलाबराय महाराजाके पास रही

विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] मे महाराजाने साठ लाख रुपया और अजमेर देकर मरहटोसे पीछा छुडाया, लेकिन् पासबान गुलाबराय जो चाहती कर बैठती थी, इससे सर्दारोके दिल बिगडे, और जोधपुरसे निकल गये विक्रमी १८४८ फाल्गुन् कृष्ण १२ [हि० १२०६ ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० १७९२ ता० २० फेब्रुअरी] मे महाराजा उन्हे लानेके लिये निकले, विक्रमी १८४९ वैशाख कृष्ण ७ [हि० १२०६ ता० २१ शअ्बान = ई० १७९२ ता० १४ एप्रिल] को महाराजाके पोते भीमसिंहने जोधपुरके क़िलेपर क़ब्ज़ह करलिया, और कुवर जालिमसिंह उदयपुरके भान्जेने फसाद उठाया, जिसे महाराजाने गोढवाड़का पट्टा जागीरमे देकर उदयपुर भेजदिया

इसी वर्षके वैशाख कृष्ण १० सोमवार [हि० ता० २४ शअ्बान = ई० ता० १७ एप्रिल] को पासबान गुलाबराय मारीगई भीमसिंहको सिवानेके क़िलेमे भेजनेका विचार हुआ; तब उसने कई सर्दारोको बचन लेकर अपने साथ लिया, और गाव भंवरमे पहुचे, महाराजा जोधपुर आये महाराजाने अखैसिंहको परदेशी लोगोकी फ़ौज देकर भेजा, कि भीमसिंहको गिरिफ़्तार करलेवे विक्रमी १८५० चैत्र शुक्ल ९ [हि० १२०७ ता० ८ शअ्बान = ई० १७९३ ता० २२ मार्च] को भवर गांवमे लड़ाई हुई, जहां कुचामणका ठाकुर सूरजमल्ल व चदावलका

ठाकुर हरीसिंह वगैरह भीमसिंहकी तरफ़से मारेगये, और ठाकुर सवाईसिंह कुंवर भीमसिंहको पोहकरण लेगये. महाराजा विजयसिंहको गुलाबराय पासबानके मारे जानेका बहुत रंज हुआ, और विक्रमी १८५० आषाढ कृष्ण १४ [हि० १२०७ ता० २८ ज़िल्काद = ई० १७९३ ता० ८ जुलाई] की आधी रातके वक्त उनका देहान्त होगया. इनके साथ नागौरमें एक पासबान सती हुई, लेकिन् जोधपुरमें कोई भी नहीं हुई.

यह महाराजा धर्म व मतपक्षी और दयावान थे, यहां तक कि इन्होंने अपने राज्यमें जीव जन्तु मारनेकी मनादी करदी थी, और शराब गोश्त छोड़ दिया था, इनके हुक्मसे जो सर्दार वगैरह मारेगये, उनके मारनेके लिये इन्होंने दिलसे हुक्म नहीं दिया था, परन्तु जग्गू धाय भाई वगैरह इनके खैरख्वाह बड़े जालिम और सख्त थे, उन्होंने आधे हुक्मकी पूरी तामील कर बताई. यह महाराजा बहादुरी और सख़ावतमें अपने बुजुर्गोंसे कम न थे, इनके वक्तमें महाराजा रामसिंहके झगड़े और सर्दारोंकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे देशकी बर्बादी होती रही, आज एक ओरसे तसल्ली हुई, कल दूसरी तरफ़का हमलह हुआ. इनपर उन लोगोंके कहनेका असर जियादह होजाता था, जिनका कि इन्हें भरोसा होता. इनके सात पुत्र थे, १- कुंवर फ़त्हसिंहका जन्म विक्रमी १८०४ श्रावण कृष्ण ४ [हि० ११६० ता० १८ रजब = ई० १७४७ ता० २७ जून] को हुआ था, जो विक्रमी १८३४ कार्तिक शुक्ल ८ [हि० ११९१ ता० ७ शव्वाल = ई० १७७७ ता० ८ नोवेम्बर] को मरगये. २- कुंवर भोमसिंह विक्रमी १८०६ भाद्रपद शुक्ल १० [हि० ११६२ ता० ९ शव्वाल = ई० १७४९ ता० २३ सेप्टेम्बर] को पैदा हुए, और विक्रमी १८२६ वैशाख कृष्ण १३ [हि० ११८२ ता० २७ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० ५ मई] को शीतला (चेचक) की बीमारीसे मरगये, इनके पुत्र भीमसिंह विक्रमी १८२३ आषाढ शुक्ल १२ [हि० ११८० ता० ११ सफ़र = ई० १७६६ ता० १९ जून] को पैदा हुए. ३- पुत्र ज़ालिमसिंह विक्रमी १८०७ आषाढ शुक्ल ६ [हि० ११६३ ता० ५ शअ्बान = ई० १७५० ता० १० जुलाई] को जन्मे, और विक्रमी १८५५ आषाढ कृष्ण ५ [हि० १२१२ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १७९८ ता० ४ जून] को काछबलीके घाटेपर इनका देहान्त हुआ. ४- सर्दारसिंहका जन्म विक्रमी १८०९ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ११६५ ता० १२ रजब = ई० १७५२ ता० २७ मई] को हुआ, और विक्रमी १८२६ वैशाख कृष्ण ७ [हि० ११८२ ता० २१ ज़िल्हिज = ई० १७६९ ता० २९ एप्रिल] को शीतलाकी बीमारीसे मरगये. ५- गुमानसिंह विक्रमी १८१८ कार्तिक शुक्ल ८ [हि० ११७५ ता० ७ रबीउस्सानी = ई० १७६१ ता० ६ नोवेम्बर] को पैदा हुए, और

विक्रमी १८४८ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १२०६ ता० २७ मुहर्रम = ई० १७९१ ता० २५ सेप्टेम्बर] को इस दुन्यासे कूच किया, इनके कुंवर मानसिंह विक्रमी १८३९ माघ शुक्क ११ [हि० ११९७ ता० १० रबीउल अव्वल = ई० १७८३ ता० १२ फेब्रुअरी] को जन्मे ६-सावन्तसिंहका जन्म विक्रमी १८२५ फाल्गुन् शुक्क ८ [हि० ११८२ ता० ७ ज़िल्काद = ई० १७६९ ता० १६ मार्च] को हुआ था, जिनको भीमसिंहने विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] मे मरवाडाला, इनके पुत्र सूरसिंहका जन्म विक्रमी १८४१ कार्तिक शुक्क ३ [हि० ११९८ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १७८४ ता० १७ ऑक्टोबर] को हुआ, विक्रमी १८५१ [हि० १२०८ = ई० १७९४] मे भीमसिंहने इनको भी मारडाला, ७- पुत्र शेरसिंह थे

३९ महाराजा भीमसिंह

भीमसिंहका जन्म विक्रमी १८२३ आषाढ शुक्क १२ [हि० ११८० ता० ११ सफ़र = ई० १७६६ ता० १९ जून] को हुआ महाराजा विजयसिंहका देहान्त होनेके वक्त यह शादी करनेको जयसलमेर गये थे, वहांपर यह खबर सुनते ही ठाकुर सवाईसिंहको साथ लेकर विक्रमी १८५० आषाढ शुक्क ९ [हि० १२०७ ता० ८ ज़िल्हिज = ई० १७९३ ता० १८ जुलाई] को जोधपुर आये, जालिमसिंह और मानसिंह भी आगये थे, जो इनका आना सुनकर पहिले उदयपुर, और दूसरे जालौर चलेगये विक्रमी आषाढ शुक्क १२ [हि० ता० ११ ज़िल्हिज = ई० ता० २१ जुलाई] को भीमसिंह गद्दीपर बैठे इसके बाद इन्होंने अपने भाई सावन्तसिंह, शेरसिंह, प्रतापसिंह और सावन्तसिंहके बेटे सूरसिंहको मरवाडाला, लखवा मरहटाकी फ़ौज मारवाड़मे आई, जिसे फ़ौज खर्च देकर लौटाया

विक्रमी १८५४ [हि० १२११ = ई० १७९७] मे महाराजा भीमसिंहने बख्शी अखैराजको बडी फ़ौजके साथ जालौर भेजा, उसने महाराज मानसिंहको जा घेरा, लेकिन् उन्हीं दिनोमे लोगोंके बहकानेसे महाराजा भीमसिंहने अखैराजको पकड बुलाया, और कैद करके साठ हजार रुपया लिया, जिससे लाचार जालौरसे फ़ौज भी लौट आई इसी वर्षमे महाराजा विजयसिंहके छोटे बेटे जालिमसिंह, जो महाराणा जगत्सिंह २ के दोहिते थे, उदयपुरसे फ़ौज लेकर आये, और काछबलीके घाटेपर ठहरकर मारवाड़मे शोरिश मचाई महाराजा भीमसिंहकी तरफ़से सिंघवी बनराजने फ़ौज लेकर शरियारी गांवमे डेरा किया, और जालिमसिंह विक्रमी

१८५५ आषाढ कृष्ण ५ [हि० १२१२ ता० १९ ज़िल्हिज = ई० १७९८ ता० ४ जून] को काछबलीमें मरगया. महाराजा विजयसिंहके कुंवर फ़त्हसिंहकी बेटीकी शादी जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहसे और महाराजा भीमसिंहकी शादी महाराजा प्रतापसिंहकी बहिनके साथ विक्रमी १८५८ आषाढ [हि० १२१६ रबीउल् अव्वल = ई० १८०१ जुलाई] में पुष्कर स्थानपर हुई, जिसमें दोनों राजाओंने बड़ा जल्सह किया.

इसी वर्षमें महाराज मानसिंहने पालीको लूट लिया, सिंघवी चैनकर्ण और बलूंदेका बहादुरसिंह जा पहुंचा, लड़ाई हुई, जिसमें दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये, और महाराज मानसिंह भागकर जालौर चलेगये. इसी वर्षमें महाराजाकी तरफ़से सिंघवी इन्द्रराजने जालौरमें मानसिंहको जा घेरा, और इसी अर्सेमें मारवाड़के सर्दारोंने सिर उठाया, लेकिन् गांव कालूमें महाराजाकी फ़ौजसे शिकस्त खाकर सब तित्तर बित्तर होगये. सिंघवी जोधराजको विक्रमी १८५९ भाद्रपद कृष्ण २ [हि० १२१७ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १८०२ ता० १४ ऑगस्ट] की रातमें सर्दारोंने मरवाडाला, जिसपर महाराजा सर्दारोंसे नाराज़ हुए, और कुल बाग़ी सर्दारोंको देशसे निकाल देनेका इरादह किया. इसी संवत्के मार्गशीर्ष शुक्ल १२ [हि० ता० ११ शअ्बान = ई० ता० ७ डिसेम्बर] को सिंघवी बनराजने हमलह करके जालौरपर कब्ज़ह करलिया, इस लड़ाईमें फ़ौज मुसाहिब सिंघवी बनराज मारागया, और मानसिंहके क़ब्ज़ेमें ख़ाली क़िला रहगया.

विक्रमी १८६० भाद्रपद शुक्ल ६ [हि० १२१८ ता० ५ जमादियुल् अव्वल = ई० १८०३ ता० २४ ऑगस्ट] को जयपुरके महाराजा प्रतापसिंहके मरनेकी ख़बर आई, तब उनकी महाराणी राठौड़, जो जोधपुरमें थी, सती हुई.

इसी संवत्के कार्तिक शुक्ल ४ [हि० ता० ३ रजब = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को चार घड़ी दिन चढ़े महाराजा भीमसिंहका देहान्त हुआ; इनकी पीठपर एक फोड़ा हुआ था, जिसको अदीठ कहते हैं. इनके साथ आठ राणियां, उन्नीस खवास, पासबान और बादियां सती हुई, और एक आदमी चितामें कूदकर जलमरा.

यह महाराजा बड़े फ़य्याज़, बहादुर, दयावान और अपने नौकरोंकी पर्वरिश करनेवाले व इन्साफ़ पसन्द थे, इनको दूसरे ख़राब लोगोंने बहकाकर भाई भतीजोंके मारनेका प्रायश्चित्त लगाया. यह शाहजहानी कार्रवाई गोत्र हत्या करनेकी महाराजा अजीतसिंहके इन्तिक़ालसे भीमसिंहके समय तक क़ाइम रही. अगर्चि यह महाराजा पढ़े लिखे कुछ भी न थे, लेकिन् ज़ाती अक्लमन्द होनेके सबब

राज्यका काम दुरुस्तीके साथ करते रहे इनके कोई पुत्र नहीं था, एक धौकलसिंह नामी शख़्स दावेदार हुआ, जिसे महाराजा मानसिंहने बनावटी साबित किया
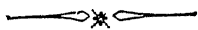
४० महाराजा मानसिंह
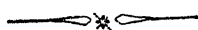
मानसिंहका जन्म विक्रमी १८३९ माघ शुक्ल ११ [हि० ११९७ ता० १० रबीउल् अव्वल = ई० १७८३ ता० १२ फेब्रुअरी] को हुआ था महाराजा भीमसिंहके वक्तसे फ़ौज जालौरको घेरे हुए थी, और सिंघवी बनराजके मारेजानेपर महाराजा भीमसिंहने सिंघवी इन्द्रराजको फ़ौज मुसाहिब बनाकर भेज दिया, जिससे महाराज मानसिंहने इक़ार किया, कि हम विक्रमी १८६० कार्तिक कृष्ण ३० [हि० १२२८ ता० २९ जमादियुस्सानी = ई० १८०३ ता० १६ ऑक्टोबर] दीपमालिकाको निकल जावेंगे, तुम हमें जियादह तंग मत करो इस बातपर सिंघवी इन्द्रराजने लड़ाईकी कार्रवाईको रोका

जालौरके क़िलेमें जलन्धरनाथका एक मन्दिर था, वहांके पुजारी देवनाथने महाराज मानसिंहसे आकर कहा, कि मुझे जलन्धरनाथने हुक्म दिया है, कि छ रोज तक महाराज क़िलेसे न निकलें, तो इनसे यह क़िला नहीं छूटेगा, बल्कि जोधपुरके क़िलेके मालिक भी यही होंगे परमेश्वरकी इच्छासे उसी अर्सेमें महाराजा भीमसिंहके देहान्तकी ख़बर सिंघवी इन्द्रराजके पास इस मत्लबसे आई, कि तुम घेरा बदस्तूर रखना, क्योंकि महाराजा भीमसिंहकी राणीको हमल है, और ठाकुर सवाईसिंहके पोहकरणसे आनेपर पुख़्तह बात चीत कीजायगी, लेकिन् जोधपुरकी फ़ौजी ताकत कुल सिंघवी इन्द्रराजके पास थी, उसने सोचा, कि जो कोई दूसरा गद्दीपर बिठाया जायगा, तो ठाकुर सवाईसिंह और धाय भाई शंभूदान वगैरह खैरख्वाह बनेंगे, इसलिये महाराज मानसिंहको गद्दीपर बिठानेके विचारसे जोधपुर ले आया, और वह विक्रमी १८६० मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हि० १२१८ ता० [illegible]१ शअ्बान = ई० १८०३ ता० ७ नोवेम्बर] को क़िलेपर चढे, जहां सबने नज़्रें दिखलाई

महाराजा भीमसिंहकी राणी देरावल मानसिंहके आनेसे पहिले चापाशनी चलीगई थी, जिनको इस इक़ारपर फिर लेआये, कि इनके गर्भसे बेटा हो, तो वह राज्यका मालिक होगा, और मानसिंह वापस जालौर चले जावेंगे, लेकिन् वह राणी तलहटीके महलोंमें रही ठाकुर सवाईसिंहने कहा, कि बनियोंका बनाया हुआ राजा नहीं बन सक्ता, रडमलों अर्थात् राठौड़ोंका किया होसक्ता है, जिससे वह इस कोशिशमें लगा, कि राज्यमें बखेड़ा होकर हमारी मुख़्तारी बनी रहे; इसलिये मश्हूर

है, कि उसने कुछ आदमियोंको बाहर निकालकर कहा, कि महाराजा भीमसिंहके बेटा हुआ, जिसे खेतड़ी ले गये, और थोड़े ही दिनों बाद सवाईसिंह भी पोहकरण चलागया उस लड़केको धौकलसिंहके नामसे मश्हूर किया इसी वर्षमें जशवन्तराव हुल्कर अजमेरके पास आया, तब महाराजाने उससे दोस्ती पैदा करली, हुल्कर अंग्रेज़ोंसे डराहुआ था, इस बातको गनीमत जानकर मालवेमें चलागया

आयस देवनाथने जोधपुरका राज मिलनेकी, जो करामाती बात जालौरमें कही थी, इससे महाराजाने उसे बुलाकर अपना गुरू बनाया; और रियासती कामोंमें भी उसका पूरा दख़्ल हुआ पहिले महाराजा भीमसिंहने गद्दीपर बैठकर शेरसिंह, सामन्तसिंह, सूरसिंह, और प्रतापसिंहको मरवाडाला था, लेकिन् जिन आदमियोंने मारा, उनको महाराजा मानसिंहने बड़ी बे रहमीसे मरवाया, जैसे कि नग्गा अहीरको सिरमें कील ठुकवाकर मारा जालौरके घेरेमें जो लोग हाज़िर थे, सबको जागीरें मिलीं, चारण जुग्ता बणसूरको लाख पशाव, ताज़ीम और पारलाऊ गांव दस हज़ार रुपयेकी आमदनीका दिया, और दूसरे आदमियोंको भी जागीरमें गांव दिये, जिनके नाम नीचे लिखेजाते हैं –

महाराजा भीमसिंहने आउवा सूरजमलोतोंसे छीनकर चिरपटियाके ठाकुरको दिया था, जो महाराजा मानसिंहने चिरपटिया वालोंसे छीनकर माधवसिंहको दिया; इसी तरह आसोप केसरीसिंहको, नींबाज सुल्तानसिंहको, रायपुर जवानसिंहको और लाबिया, रोयट व चडावलको भी अपने अपने ठिकाने वापस दिये यह लोग महाराजा भीमसिंहसे नाराज़ होकर हाड़ौतीमें चलेगये थे आहोरके ठाकुर औनाडसिंहको जालौरके घेरेकी नौकरीके एवज़ बहुतसी जागीर दी, और आसिया चारण ठाकुर बांकीदासको लाख पशाव, ताज़ीम और जागीर देकर कविराजका ख़िताब दिया, मेड़तिया रत्नसिंहको गांव पीपलाद मिला चहुवान श्यामसिंहको गांव जोजावर और कुछ अर्से बाद गांव राखीका पट्टा दिया, और भाटी जशवन्तसिंहको सांथीणका पट्टा मिला.

इन्होंने गद्दीपर बैठते ही सिरोहीपर महता ज्ञानमल्लको और घाणेरावपर महता साहिबचन्द्रको फ़ौज देकर रवानह किया, कुछ दिनों बाद लड़ाई करके दोनों फ़ौजोंने दोनों जगह क़ब्ज़ह करलिया विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] में धौकलसिंहके नामसे खेतड़ी, झूंझनूं, नालगढ़ और सीकर वगैरहके शेखावतोंने डीडवाणेपर अमल किया, जिसे महाराजा मानसिंहने फ़ौज भेजकर पीछा छुड़ालिया

पहिले महाराजा भीमसिंहसे उदयपुरके महाराणा भीमसिंहकी बेटी कृष्णकुंवरकी

सगाईके लिये कुछ जिक्र हुआ था, परन्तु महाराजा भीमसिंह मरगये, तब उस राजकुमारीकी सगाई जयपुरके महाराजा जगत्‌सिंहके साथ ठहरी इन्हीं दिनोंमें पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंहकी पोतीको जयपुर भेजकर महाराजा जगत्‌सिंहके साथ शादी करदेना करार पाया, जिसपर मानसिंहने सवाईसिंहको कहलाया, कि हमारे भाइयोंको जयपुर डोला भेजना शर्मिन्दगीकी बात है सवाईसिंहने कहला भेजा, कि मेरा भाई जयपुरमें रहता है, और जयपुरकी तरफसे गीजगढ उसकी जागीरमें है, इसलिये हम अपने घरमें लड़कीकी शादी करते हैं, परन्तु बड़े महाराजा श्री भीमसिंहकी सगाई उदयपुर हुई थी, अब वही सगाई जयपुरके महाराजासे होनेकी तय्यारी है, इस बातमें आपको कितनी बड़ी शर्मिन्दगी होगी, इसपर महाराजा मानसिंहने बिना सोचे विचारे विक्रमी १८६२ माघ कृष्ण ३० [हि० १२२० ता० २९ शव्वाल = ई० १८०६ ता० २० जैन्युअरी] को एक दम कूच करदिया, और मेड़ते पहुंचकर फौज एकट्ठी कराना शुरू किया, जिसकी तादाद् मारवाड़की तवारीखमें एक लाख लिखी है उधर जयपुरके महाराजा जगत्‌सिंहने भी फौज एकट्ठी करके शहरके बाहर डेरा किया, लड़ाई होनेमें किसी तरहकी कसूर न रही, लेकिन् जोधपुरके सिंघवी इन्द्रराज और जयपुरके दीवान रायचन्द्रने सलाह करके कहा, कि दोनों राजा उदयपुरमें शादी नहीं करेंगे, और महाराजा जगत्‌सिंहकी बहिनके साथ मानसिंहकी, और महाराजा मानसिंहकी बेटीके साथ जगत्‌सिंहकी शादी होना करार पाया जशवन्तराव हुल्कर भी महाराजा मानसिंहकी मददको आ पहुंचा था, लेकिन् सुलहके होजानेसे वापस लौटा दियागया

विक्रमी १८६३ आश्विन [हि० १२२१ शअ्बान = ई० १८०६ ऑक्टोबर] में महाराजा मानसिंह जोधपुर चलेआये, लेकिन् सिंघवी इन्द्रराज वगैरह अहलकारों को महाराजाने कैद करदिया, और दूसरे विरोधी लोगोंने बुझी हुई आगको फिर भड़काकर दोनों महाराजाओंको लड़नेके लिये मुस्तइद किया महाराजा मानसिंहने मेड़ते आकर फौज एकट्ठी करना शुरू किया, और जशवन्तराव हुल्करको लिखकर बुलाया, वह कृष्णगढ तक आकर खर्च मांगने लगा, महाराजाके पास ख़ज़ानह कम था, इसलिये देर हुई, और जयपुर वालोंने कुछ रुपया देकर उसे लौटा दिया नव्वाब अमीरखां जयपुरकी तरफ होगया; बीकानेरके महाराजा सूरतसिंह भी कछवाहोंके शरीक होगये, पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंह मारवाड़ी सर्दारोंको मिलाने लगे. महाराजा जगत्‌सिंह जयपुरसे रवानह होकर मारोठ पहुंचे, वहांसे नव्वाब अमीरखां और ठाकुर सवाईसिंहको फौज देकर आगे भेजा इधरसे महाराजा

मानसिंह भी चढ़े, गींगोलीके पास दोनो फ़ौजोका मुकाबलह हुआ, कितनेही राठौड़ सर्दार महाराजा मानसिंहसे बदलकर जयपुरकी फ़ौजमे जामिले, और जो बाकी रहे, उन्होने महाराजाको भागजानेकी सलाह दी, महाराजा मानसिंह बहुत झुंझलाये, लेकिन् लाचार भागकर जोधपुर आये.

सवाईसिंहका यह विचार था, कि महाराजा जालौर जायगे, तो धौकलसिंहको जोधपुरमे गद्दीपर बिठाकर अपना इरादह पूरा कर लूगा, लेकिन् महाराजा मानसिंहने जोधपुर आकर किलेको दुरुस्त किया, और जयपुरकी फ़ौजने सामान, तोपखानह, डेरा वगैरह लूटकर आगेको कूच किया मारोठ, मेडता, पर्वतसर, सोजत और नागौरपर कब्ज़ह करनेके बाद महाराजा जगत्सिंहसे दीवान रायचन्द्रने कहा, कि अब उदयपुर चलकर शादी करलेना चाहिये, लेकिन् सवाईसिंह इसके बर्खिलाफ़ महाराजाको जोधपुर लेआया, और विक्रमी १८६३ चैत्र कृष्ण ७ [हि० १२२२ ता० २१ मुहर्रम = ई० १८०७ ता० ३१ मार्च] को जोधपुरका किला घेरलिया सिंघवी इन्द्रराज और भंडारी गंगारामको महाराजाने कैद करदिया था, सो कैदसे निकालकर कहा, कि खैरख्वाहीका यह वक्त है ये दोनो बाहर गये, तब सवाईसिंहने कहा, कि बनियोका बनाया राजा नहीं रहसक्ता, अब हम धौकलसिंहको जोधपुरका राजा बनावेगे इन्द्रराज वहासे निकलकर गाव बाबरामे पहुचा, और दौलतराव सेंधियाके पास एक वकील भेजकर कहलाया, कि हमारी मदद करना चाहिये; और नव्वाब अमीरखाको तीस हजार रुपये खर्चके लिये देकर अपनी तरफ़ किया, वह जयपुरकी फ़ौजसे निकलकर सिंघवी इन्द्रराजके साथ ढूढाड़को लूटने लगा, और चतुर्भुज उपाध्या, तथा बूडसूके ठाकुर प्रतापसिंह वगैरहने पर्वतसर व डीडवाणापर कब्ज़ह करलिया नव्वाब अमीरखाको एक लाख रुपया पेशगी देकर जयपुरकी तरफ़ रवानह किया, उसने फागी गावमे शिवलाल बख्शीके डेरोपर हमलह किया, जो जयपुरसे फ़ौज लेकर जोधपुर जाता था, शिवलाल तो शिकस्त खाकर भागा, फ़ौजको नव्वाब और राठौडोने लूटलिया अमीरखा और कुचामणके ठाकुर शिवनाथसिंहने जयपुरके पास जाकर शहरपर गोला चलाना शुरू किया, लेकिन् एक दिन लडाई करनेके बाद अजमेरकी तरफ़ चलेआये, और गाव हरमाडेके डेरे विक्रमी १८६४ भाद्रपद [हि० १२२२ रजब = ई० १८०७ सेप्टेम्बर] मे पाच हज़ार फ़ौज लेकर सिंघवी इन्द्रराज नव्वाबके शामिल हुआ

महाराजाके खैरख्वाह राठौडोने ढूढाडके मुल्कको लूट खसोटसे बर्बाद करदिया, नव्वाब और इन्द्रराजने बडी भारी फ़ौज बनाकर दो बारह जयपुरकी तरफ़ कूच किया; यह

सुनकर महाराजा जगत्सिंह घबराये, ठाकुर सवाईसिंहने बहुत कुछ समझाया, लेकिन् विक्रमी १८६४ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १२२२ ता० १२ रजब = ई० १८०७ ता० १६ सेप्टेम्बर] को जयपुरकी तरफ़ चलदिये, और महाराजा सूरतसिंह बीकानेर गये, ठाकुर सवाई-सिंह वगैरह भागकर नागोरके किलेमें जा छिपे, डेरोंमें जो अस्बाब रहगया, वह महाराजा मानसिंहने ज़ब्त किया. महाराजा जगत्सिंहकी फ़ौजके पीछे मारवाडी लोगोंने लूट खसोट शुरू की, और जो आदमी काबूमें आया, उसके नाक, कान काट लिये. इस लडाईमें दोनों मुल्कोंकी ग़रीब रिआयापर बडा जुल्म हुआ, पहिले जयपुरके लोगोंने मारवाडी औरतोंको पकडकर दो दो पैसेमें बेचा, फिर उसी तरह सिंघवी इन्द्रराज और नव्वाब अमीरखांकी फ़ौजने ढूंढाडकी औरतोंको पकड पकडकर एक एक पैसेमें बेचा, अमीरखां और इन्द्रराजने भी महाराजा जगत्सिंहका पीछा किया, तो एक लाख रुपया देकर दीवान रायचन्द्रने पीछा छुडाया.

महाराजा मानसिंह और जगत्सिंहकी दोनों हालतें देखकर मनुष्योंको ईश्वरके चरित्रोंपर ध्यान देना चाहिये. आख़िरकार महाराजा मानसिंहने अपने खैरख्वाहोंको खुश होकर इज्जत और जागीरें इनायत कीं. अमीरखां जोधपुर आया, महाराजाने शुक्रिया अदा करके बराबर गद्दीपर बिठाया. अब नागोरसे धोंकलसिंहका दख्ल उठाने और ठाकुर सवाईसिंहके मारनेका घाट गढागया, नव्वाब और महाराजाके बीच फ़ौज ख़र्चकी बाबत ज़ाहिरी तक़ार हुई, नव्वाबने जोधपुरके गावोंको लूटना शुरू किया, जिससे सवाईसिंहने अमीरखांके साथ मेल करलिया, पहिले नव्वाब नागोर गया, फिर सवाईसिंह उससे मिलने आया, तब नव्वाबकी फ़ौजने गाफ़िल बैठे हुए राठौडोंपर डेरा गिराकर तोप और बन्दूकोंकी बाढ मारदी, जिससे विक्रमी १८६५ चैत्र शुक्ल ३ [हि० १२२३ ता० २ सफ़र = ई० १८०८ ता० ३० मार्च] को पोहकरणका ठाकुर सवाईसिंह, पालीका ठाकुर ज्ञानसिंह, बगडीका ठाकुर केसरीसिंह, चंडावलका ठाकुर बख्शीराम और इनके साथके चार पांच सौ आदमी मारेगये, इनके सिर ऊंटोंपर लदवाकर महाराजा मानसिंहके पास भेजदिये, और नागोरमें महाराजाका अमल करवादिया.

इसके बाद कृष्णकुंवर बाईका ज़हरसे मारेजानेका ज़िक्र उदयपुरके महाराणा भीमसिंहके हालमें लिखेंगे. महाराजाने बीकानेरपर बीस हज़ार फ़ौज देकर सिंघवी इन्द्रराजको भेजा, वह फ़ौज ख़र्च लेकर फ़त्हके साथ पीछा आया; कुचामणके ठाकुर शिवनाथसिंह व सिंघवी इन्द्रराज वगैरह महाराजा मानसिंहके खैरख्वाह और एतिबारी नौकर थे; इन्हीं लोगोंने महाराजा मानसिंह और महाराजा जगत्सिंहका विरोध मिटाकर पहिले इक़ारके मुवाफ़िक़ दोनों शादियां करादेनेका वादा किया;

महाराजा मानसिंह जोधपुरसे कूच करके नागोर आये, आयस देवनाथकी मारिफत बीकानेरके महाराजा सूरतसिंहसे मुलाकात हुई, सूरतसिंहको विदा करके बरात समेत महाराजा मानसिंह रूपनगर आये; जयपुरसे महाराजा जगत्सिंह भी उसी तरह बडी सज धजके साथ अपने इलाकेके गाव मरवेमे आ ठहरे, इन दोनो गावोमे तीन कोसका फासिलह था विक्रमी १८७० भाद्रपद शुक्ल ८ [हि० १२२८ ता० ७ रमजान = ई० १८१३ ता० ४ सेप्टेम्बर] को महाराजा मानसिंहकी शादी जगत्सिंहकी बहिनसे जयपुरके डेरोमे हुई, और दूसरे दिन भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० ता० ८ रमजान = ई० ता० ५ सेप्टेम्बर] को महाराजा मानसिंहकी बेटीकी शादी महाराजा जगत्सिंहके साथ जोधपुरके डेरोमे हुई, दोनो तरफसे मुहब्बतका बर्ताव रहा; कृष्णगढके महाराजा कल्याणसिंह भी इस जल्सेमे शरीक थे इसके बाद दोनो महाराजा अपनी अपनी राजधानीको सिधारे जोधपुरमे कुल कारोबारका मुख्तार आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराज था इनकी शिकायत महाराजा नही सुनते थे, इन्द्रराजके डरसे महता अखैचन्द निज मन्दिरमे शरणे जा बैठा

विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = ई० १८१४] मे महाराजाने अमीरखाकी फ़ौजको तीन लाख रुपया देकर रुख्सत किया, लेकिन् विक्रमी १८७२ [हि० १२३० = ई० १८१५] मे खुद अमीरखा फ़ौज लेकर जोधपुर आया, तब महता अखैचन्द और आसोप व आउवा वगैरहके सर्दारोने नव्वाबसे मिलावट करके कहा, कि आयस देवनाथ और सिंघवी इन्द्रराजको मारडालो, तो तुम्हारे फ़ौज खर्चके रुपये हम देगे; इस सट पटसे देवनाथ और इन्द्रराज वाकिफ होगये, जिससे किलेके नीचे नही आते थे, आख़िरकार अमीरखाने २७ आदमी भेज कर किलेके भीतर 'खाबका' (१) के महलमे दोनोको मरवाडाला; महाराजाको बहुत रज हुआ, लेकिन् मिलावट वाले लोगोने अमीरखाका डर दिखलाकर उन २७ सिपाहियोको ज़िन्दह निकाल दिया यह मुआमला विक्रमी १८७३ चैत्र शुक्ल ८ [हि० १२३१ ता० ७ जमादिउल् अव्वल = ई० १८१६ ता ५ एप्रिल] को हुआ. नव्वाबको साढे नव लाख रुपये फ़ौज खर्चके देकर विदाकिया

कामके मुख्तार- दीवान महता अखैचन्द, आसोपका ठाकुर केसरीसिंह, नींबाजका ठाकुर सुल्तानसिंह, कंटालियाका ठाकुर शभूसिंह, आउवाका बख्तावरसिंह और चडावलका ठाकुर विष्णुसिंह बने, महाराजा इन लोगोकी कार्रवाईसे वाकिफ

---

(१) खाबका- अस्लमे ख्वाबगाह है

थे, लेकिन् वक्त देखकर चुप रहे इन्द्रराजका बेटा गुलराज, जो कोटके थानेपर था, महाराजाके इशारेसे दो हजार आदमी लेकर जोधपुर आया, जिससे मुस्तार सर्दार निकल भागे, और महता अखैचन्द स्वामी आत्मारामकी समाधिके शरणमे जा छिपा इसी सवत्के माघ [हि० १२३२ रबीउल् अव्वल = ई० १८१७ फेब्रुअरी] को गुलराज किलेमे आया, और महाराजाने उसे अपना दीवान बनाया

महाराजाको आयस देवनाथ और सिघवी इन्द्रराजके मारेजानेका रज बहुत रहा, यहा तक कि एकान्तमे रहना इख्तियार करलिया, तब महता अखैचन्दने आयस देवनाथके भाई भीमनाथ, महाराजाके कुवर छत्रसिह व उनकी माता महाराणी चावडीको मिलाया, और दूसरे भी जोषी मघदत्त, फत्ता, व्यास विनोदीराम, मुन्शी जीतमल्ल, खीची बिहारीदास, धाधल, मूला, जीवा, दाना, वगैरहको शामिल करके किलेदार देवराजोत बिहारीदास, नथकरण वगैरहको भी मिलालिया, और विक्रमी १८७४ वैशाख कृष्ण ३ [हि० १२३२ ता० १७ जमादियुल् अव्वल = ई० १८१७ ता० ५ एप्रिल] को इन सबने सिघवी गुलराजको कैद करके उसी दिन आधी रातके वक्त मरवाडाला सिघवियोके बाल बच्चे सब भागकर कुचामण चलेगये इसके बाद सब लोगोने मिलकर जबर्दस्ती महाराजा मानसिहके हाथसे छत्रसिहको युवराज बनवाया, विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ जमादियुस्सानी = ई० ता० २० एप्रिल] को छत्रसिहका हुक्म जारी हुआ

छत्रसिहका जन्म विक्रमी १८५९ फाल्गुन् शुक्ल ९ [हि० १२१७ ता० ८ जिल्काद = ई० १८०३ ता० ३ मार्च] को हुआ था महाराजा मानसिह सबको एक राय देखकर पागल बनगये, और महता अखैचन्द कुल कामका मुख्तार बना, पोहकरणके ठाकुर सालिमसिहको प्रधान बनायागया चापाशनीके गुसाइयोसे छत्रसिहको नाम सुनवाया, जिससे भीमनाथ वगैरहकी इज्जतमे भी फर्क आया, तब कविराजा बाकीदासने एक सवैया कहा, जिसका एक पद यह है -

"मानको नन्द गोविन्द रटे तब गड फटे कनफट्टनकी"

सिघवी चैनकरण जो काणोणाकी हवेलीकी पनाहमे था, उसे पकडकर तोपसे उडा दिया इसी वर्षमे गवर्मेण्ट अंग्रेजीके साथ जोधपुरका अह्दनामह हुआ कुवर छत्रसिह गर्मीकी बीमारीसे विक्रमी १८७४ चैत्र कृष्ण ४ [हि० १२३३ ता० १८ जमादियुल् अव्वल = ई० १८१८ ता० २७ मार्च] को इन्तिकाल करगया, जिसपर एक दिन तो मुसाहिबोने इस बातको छिपा रक्खा, और चाहा, कि उसी शक्लका कोई आदमी हो, तो उसे छत्रसिह बनालेवे, लेकिन् यह सलाह नही चली, तब दूसरे दिन कुवरकी लाशको मडोवरमे जलाया, महाराजा और भी पागल बनगये मुसाहिबोने ईडरसे कोई

लड़का लाकर गद्दीपर बिठानेका विचार किया, लेकिन् गवर्मेंएट अंग्रेज़ीसे अह्दनामह होचुका था, इससे गवर्मेंएटने महाराजाका इम्तिहान करनेके लिये मुन्शी बरकतअलीको जोधपुर भेजा वह एक दिन तो सब मुसाहिबोंके साथ महाराजाके पास आया, महाराजा उसी पागलपनेकी हालतसे मिले, दूसरे दिन बरकतअली महाराजाके पास अकेला गया, तब महाराजा मानसिंहने अपनी तक्लीफोंका सारा हाल उससे कहा, और उसने महाराजाकी दिलजमई की, फिर रिपोर्ट होकर गवर्मेंएटका ख़रीतह आया, जिसपर महाराजाने सबको धोखेसे तसल्ली दी, महता अखैचन्द व दूसरे सब मुसाहिबोंसे कहा, कि जैसे काम करते थे, किये जाओ

विक्रमी १८७५ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० १२३४ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८१८ ता० ४ नोवेम्बर] को महाराजा हजामत, स्नान व पोशाक करके दो वर्ष सात महीनेमें बाहर निकले महाराजाने आयस देवनाथ व सिंघवी इन्द्रराजके मारेजानेके दिनसे इस दिन तक एकान्त वास किया अब महाराजाने सिंघवी मेघराजको फ़ौज बख़्शी बनाया, लेकिन् अखैचन्द वगैरह लोगोंपर बड़ी मिहर्बानी और सिंघवियोंसे मामूली बर्ताव दिखलाते रहे विक्रमी १८७७ वैशाख शुक्ल १४ [हि० १२३५ ता० १३ रजब = ई० १८२० ता० २७ एप्रिल] को नीचे लिखे आदमियोंको किलेपर बुलाकर कैद किया -

महता अखैचन्दको पहिले परदेशियोंकी फ़ौजने तन्ख्वाह न चुका देनेके बहानेसे कैद किया, इसका बेटा महता लक्ष्मीचन्द, इसका मुकुन्दचन्द और अखैचन्दके काम्दार रामचन्द, किलेदार नथकरण, व्यास विनोदीरामको उसके बेटे गुमानीराम, धाधल, मूला, दाना, जीवा, जोषी विट्ठलदास, दामोदर, शिवकरण और चेला दर्जी वगैरह चौरासी आदमियो समेत किलेपर गिरिफ़्तार किया, और खीची बिहारीदास भागकर खेजड़ला वालोंके डेरेपर चलागया, जिससे फ़ौज भेजकर खेजडलाके भाटियोंको मरवाया, परन्तु ठाकुर शक्तिदान जरूमी होकर भी जीता रहा

इसी सवत्के ज्येष्ठ शुक्ल १४ [हि० ता० १३ शअ्बान = ई० ता० २७ मई] को नीचे लिखे आदमी जहर देनेसे मारेगये -

किलेदार नथकरण, महता अखैचन्द, व्यास विनोदीराम, पचोली जीतमल्ल, जोषी फतहचन्द, और दाना, जीवा व मूलाको तक्लीफ देदेकर मरवाया इसके बाद द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ता० १२ रमजान = ई० ता० २५ जून] को नीचे लिखेहुए आदमी फिर कैद हुए -

जोषी श्रीकृष्ण, महता सूरजमल्ल भाई बेटे व भतीजो समेत, व्यास

शिवदास, पचोली गोपालदास विक्रमी ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रमजान = ई० ता० २७ जून] को नींबाजके ठाकुर सुल्तानसिंहपर सिंघवी फ़त्हराज, मेघराज और कुशलराजको फ़ौज सहित भेजा; उन्होंने ठाकुरको घेरलिया, उस वक्त ठाकुर सुल्तानसिंह मए अपने भाई सूरसिंहके हवेलीका दर्वाजह खोलकर बहादुरीके साथ मारागया, और पोहकरणका ठाकुर सालिमसिंह पोहकरणको चलागया, जो जीते जी जोधपुर नहीं आया, आसोपका ठाकुर केसरीसिंह आसोप गया था, वहांसे भागकर बीकानेरके ज़िले देष्णोकमें करणी माताके शरणे जा बैठा, और वहीं मरगया, केसरीसिंहके मरने बाद आसोपपर खालिसेका कब्ज़ह होगया चंडावल, रोहट, खेजडला, साथीण, और नींबाज वगैरह ठिकाने भी खालिसे होगये, ठाकुर लोग उदयपुर चलेगये.

इसी सवत्के भाद्रपद शुक्ल ४ [हि० ता० ३ ज़िल्हिज = ई० ता० १२ सेप्टेम्बर] को जोषी श्रीकृष्ण व महता सूरजमल्लको जहर देकर मरवाडाला, और कुंवर छत्रसिंहकी मा महाराणी चावड़ीको एक तंग मकानमें बन्द करदिया, जो अन्न जल बगैर मरगई; नाज़िर वृन्दाबनकी नाक कटवा डाली, जती हरखचन्द, कुंवर छत्रसिंहके वैद्यकी भी नाक कटवाई, और बाकी बहुतसे आदमियोंको जुर्मानह लेकर छोड दिया आयस देवनाथ व सिंघवी इन्द्रराजके मारने वालों और छत्रसिंहको राज्य दिलाने वालोंको सजा दी, खैरख्वाहोंको खैरख्वाहीका बदला मिला विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में सिंघवी मेघराज बख़्शी और धाधल गोवर्धनको इक्रारके मुवाफ़िक सवार देकर दिल्लीकी तरफ़ गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी तईनाती में भेजा, जो दूसरे वर्ष वापस आये

आयस देवनाथके भाई भीमनाथ और देवनाथके बेटे लाडूनाथ दोनोंमें बिगाड़ हुआ, तो महाराजाने महा मन्दिरमें लाडूनाथको मुरूतार करके भीमनाथके लिये उदय मन्दिर तय्यार करवाया, लेकिन् उन दोनों चचा भतीजोंका फ़साद दूर न हुआ इसी तरह अह्लकारोंमें दो गिरोह होगये, एक तो सिंघवी फ़त्हराज व भाटी गजसिंहका, दूसरा धाधल गोवर्धन और नाज़िर अमृतरामका था, पहिले गिरोहकी सलाह लाडूनाथके शामिल और दूसरे गिरोहकी भीमनाथके शरीक थी, आपसकी शिकायतें होने लगीं; महाराजाने दोनों तरफ़से बहुतसा जुर्मानह वुसूल किया.

विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में, जिन सर्दारोंके ठिकाने महाराजाने छीन लिये थे, उनके वकीलोंने गवर्मेएट अंग्रेज़ीमें नालिश की. पोलिटिकल एजेंट एफ़० वाइल्डर साहिबने उनको हिदायत की, कि तुम

महाराजाके पास जाओ, वे तुम्हारी फर्याद सुनेंगे ? उन्होंने कहा, कि महाराजा हमें कैद करके मारडालेंगे, साहिबने कहा, ऐसा कभी नहीं होगा. आखिरकार वे सब, यानें आसोपका वकील कूंपावत हरीसिंह, आउवाका पचोली कान्हकरण, चंडावलका कूंपावत दौलतसिंह और नींबाज वगैरहके वकील महाराजाके पास आये, जिन्हें सलीमकोटमें कैद करदिया; लेकिन् गवर्मेंएटने छुड़ादिया, और लाचार महाराजाने लोगोंके ठिकाने वापस दिये.

विक्रमी १८८१ फाल्गुन कृष्ण ८ [हि० १२४० ता० २२ जमादियुस्सानी = ई० १८२५ ता० १० फेब्रुअरी] को महाराजा मानसिंहकी बेटी स्वरूपकुंवरका विवाह बूंदीके महाराव राजा रामसिंहसे हुआ, इसमें दस लाख रुपया खर्च पड़ा था. इसी वर्षमें भंडारी भवानीरामने बाघा जालोरीसे लिखवाकर सिंघवी फत्हराजके नामकी उसीके अक्षरोंके मुताबिक एक अर्जी धौंकलसिंहके नामसे महाराजा मानसिंहके साम्हने पेश की, जिससे महाराजाने नाराज होकर सिंघवी फत्हराज, मेघराज, कुशलराज, व उम्मेदराजको विक्रमी १८८२ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १२४० ता० १३ शश्रबान = ई० १८२५ ता० ३ एप्रिल] को कैद किया, लेकिन् कुछ अर्सेके बाद यह जाल खुलगया, जिसपर महाराजाने बाघा जालोरीका हाथ कटवाया, और भवानीरामको कैद करके दण्ड लिया. इसी संवत्में जोशी शम्भूदत्त कामका मुरुतार हुआ, जो आयस लाडूनाथसे नाइत्तिफाकी होनेके सबब मौकूफ किया गया, और लाडूनाथके काम्दार मुसाहिब बने, लेकिन् उन मज्हबी लुटेरोंसे काम कब चलसक्ता था, खुद किनारा करगये. विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = ई० १८२६] में फिर शम्भूदत्तको काम मिला, और इसने अंजाम दिया, लेकिन् आयस लाडूनाथने अपने आदमियोंके बहकानेसे बखेड़ा उठाया, और महा मन्दिरके अहलकार उत्तमचन्दको मुसाहिब बनाकर जोशी शम्भूदत्तको खारिज किया, उन ना तज्रिबहकार अहलकारोंने विक्रमी १८८४ श्रावण [हि० १२४३ मुहर्रम = ई० १८२७ ऑगस्ट] में आउवाके ठाकुर बख्तावरसिंहपर फौज भेजी, जिससे नींबाज और रास वगैरहके सर्दारोंने मिलकर डीडवाणेमें धौंकलसिंहका कब्जह करवादिया, परन्तु महाराजा बुद्धिमान थे, जिससे सिंघवी फौजराजको फौज देकर डीडवाणेकी तरफ भेजा, और नींबाज व रासके ठाकुरोंको अपनी तरफ करके आउवासे फौज बुलवा ली.

नागपुरका राजा इसी वर्षमें अंग्रेज़ोंसे डरकर जोधपुरमें आछिपा, उसे महा मन्दिरमें रक्खा, लेकिन् वह कुछ दिनों बाद वहीं मरगया. विक्रमी १८८५ [हि० १२४३

= ई० १८२८] मे सिघवी फत्हराज प्रधान हुआ, और आयस लाडूनाथ गिरनारकी यात्राको गया, वहासे आते वक्त बामणवाडा गावमे मरगया इसका बेटा भैरवनाथ तीन वर्षकी उम्रमे गद्दीपर बैठा, लेकिन् छ महीने बाद वह भी मरगया, तब भीमनाथके बेटे लक्ष्मीनाथको गद्दीपर बिठाया विक्रमी १८८६ [हि० १२४४ = ई० १८२९] मे भीमनाथके उखाड पछाड करनेसे काम बिगडा, कोई दीवान नही बनता था, नाम तो अपने सिर नही लिया, लेकिन् बख्शी और दीवानीका काम फौजराज करने लगा विक्रमी १८८७ [हि० १२४५ = ई० १८३०] मे महा मन्दिरके काम्दारोसे रिश्तहदारी होजानेके सबब फतूहराज दीवान हुआ विक्रमी १८८८ [हि० १२४६ = ई० १८३१] मे सिघवी गभीरमल्लको दीवान बनाया विक्रमी १८८९ [हि० १२४७ = ई० १८३२] मे इससे भी काम छीनकर भडारी लक्ष्मीचन्दके सुपुर्द किया दीवान कोई न रहा, कुल कामका मुख्तार आयस भीमनाथ हुआ

विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] मे पचोली कालूराम दीवान बना, लेकिन् छ महीने बाद इससे भी उहदह छिनकर फतूहराजको मिला, उससे भी काम न चला, क्योंकि भीमनाथ कुल जमा हज्म करजाता, और तन्ख्वाहदारोकी तन्ख्वाह व अंग्रेजोका खिराज चढता जाता था, जिसका जवाब नही देते थे, इससे बडी अब्तरी फैली, अंग्रेजी सर्कारकी तरफसे तकाजह हुआ, बल्कि फौज भेजनेकी धम्की दीगई, तब जोषी शभूदत्त, सिघवी फौजराज, धाधल केसर, सिघवी कुशलराज, कुचामणके ठाकुर रणजीतसिह और भाद्राजूनके ठाकुर बख्तावरसिहको विक्रमी १८९१ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२५० ता० १३ जमादियुल् अव्वल = ई० १८३४ ता० १८ सेप्टेम्बर] को अजमेरकी तरफ रवानह किया इन लोगोने बात चीत करके आगेसे दुरुस्त इन्तिजाम रखनेके इक़ारपर गवर्मेण्टको खुश किया, लेकिन् फिर भी नाथोका हुक्म चलता रहा, और कोई किसीकी नही सुनता था महाराजा भीमनाथके कहनेको ईश्वरका हुक्म समझते थे, यहा तक कि कोई कनफटा योगी जुल्म करता, या किसीकी बहिन बेटियोकी इज़्ज़तको बट्टा लगाता, तो भी उसे कोई न रोकता

इसी सवत्मे मालाणीके भौमियोका, जो लूट खसोट करते थे, बन्दोबस्त अंग्रेजी सर्कारने अपने हाथमे लेलिया विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] मे जोधपुरसे अंग्रेजी गवर्मेण्टकी खिद्मतमे जो फौज भेजनी पडती थी, उसके एवज रुपया देना ठहरगया विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = ई० १८३७] मे आयस भीमनाथ मरगया, और महा मन्दिरके आयस लक्ष्मीनाथका हुक्म तेज़ हुआ, प्रधानेका काम भडारी लक्ष्मीचन्दको मिला, लेकिन् काम न

चलनेसे यह आपही छोड भागा, तब सब रियासती काम और उहदे महा मन्दिरके आदमियोने अपने कब्जहमे करलिये आखिरकार नाथोके जुल्मसे मारवाडके सर्दारोने कर्नेल सदरलैन्ड साहिबके पास अजमेर जाकर नालिश की, नाथ लोग जाहिरा मुल्क लूटते थे, और डकैती व चोरी जोर शोरसे फैल रही थी, महाराजाको नाथ लोग दबाते, और जो चाहते करालेते थे

विक्रमी १८९६ चैत्र शुक्ल ७ [हि० १२५५ ता० ६ मुहर्रम = ई० १८३९ ता० २२ मार्च] को कर्नेल सदरलैन्ड साहिब, एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूतानह जोधपुर आये, और उनके कहनेके मुवाफिक महाराजाने सर्दारोको जागीरे दी, लेकिन् नाथोका बन्दोबस्त कुछ न हुआ, इसलिये सदरलैन्ड साहिबने अजमेर पहुचकर एक इश्तिहार सर्कार अंग्रेजीकी तरफसे फौजकशीके लिये विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० ता० २५ ऑगस्ट] को जारी किया उसकी नक्ल नीचे लिखीजाती है –

इश्तिहारकी नक्ल

लॉर्ड गवर्नर जेनरल साहिब बहादुर, मालिक मुल्क हिन्दुस्तानकी तरफसे मारिफत कर्नेल जॉन सदरलैन्ड साहिब बहादुर, जो कि लॉर्ड साहिब बहादुरकी तरफसे रजवाडोके बन्दोबस्तके वास्ते मुकर्रर है, वास्ते खबर देने सारे रईसान और रअय्यत मारवाडके लिखा हुआ ता० १७ ऑगस्ट सन् १८३९ ई० मकाम नसीराबादका –

कि महाराजा मानसिंहने करीब पांच वर्षके अर्सेसे अपने वे अह्द और इक्रार जो सर्कार अंग्रेजीके साथ रखते थे, अपनी समझसे एक राह मुकर्रर करके, तोडदिये, और जोधपुरके सवाल जवाबका तदारुक और बदला, (जिसके मागनेमे सर्कारने वक्तपर गफ्लत नही की,) उन्होने नही दिया, और सर्कारका कहा न माना

अव्वल अह्दनामहकी लिखावट मूजिब सर्कारके हकके रुपये दो लाख तेईस हजार बर्सौदीके मुकर्रर है, जिसके कुल आज तक दस लाख उन्नीस हजार एक सौ छयालीस रुपये, दो आने हुए, जो आज तक वुसूल नही हुए

दूसरा गैर इलाकोंके रहने वालोका नुक्सान मारवाडके मुल्कमे बद इन्तिजामीके वक्त हुआ, और उसकी तादाद लाखोपर पहुची, उस नुक्सानका एवज वुसूल नही हुआ

तीसरे उस बन्दोबस्तका मुकर्रर करना, कि जो रअय्यतको पसन्द हो, और जिसमे

मुल्क मारवाड़मे सुख चैन हो, और इलाकोंके व व्यापारियोंके मालका, नुक्सान और मुसाफ़िरोंपर जुल्म और ज़ियादती बन्दोबस्त करने वालोंकी नालाइक़ी और मारवाड़मे रहने वालोंकी हरामजादगीसे होती है, उसमे बचाव हो, सो नहीं हुआ

इस सूरतमे लॉर्ड गवर्नर जेनरल साहिब बहादुर हिन्दको यह वाजिब हुआ, कि इस मारवाड़से हक़ और दावा जोरसे ले लेनेका हुक्म देवे

इस वास्ते सर्कार अंग्रेजीकी फ़ौज तीन तरफ़से मारवाड़के मुल्कमे दाखिल होकर जोधपुर जावेगी, और झगड़ा सर्कार अंग्रेजीका महाराजा श्री मानसिंहजी और उनके काम्दारोंसे है, मारवाड़की रअय्यतसे नहीं, इस वास्ते मुल्क मारवाड़की रअय्यत दिलजमई रक्खे, और जब तक रअय्यत मज्कूर सर्कारकी फ़ौजसे दुश्मनी नहीं करेगी, तब तक सर्कार उस रअय्यतके जान मालको अपनी रअय्यतकी तरह रक्खेगी, और हर एक कम्पूमे बन्दोबस्त सर्कारका ऐसी खूबीके साथ होगा, कि रअय्यतके लोग अपने अपने घरोंमे और अपने अपने कामोंमे ऐसी खूबीके साथ रहेंगे, जैसा कि फ़ौज नहीं आनेके वक्तमे खुशीसे रहते हैं- फ़क़त.
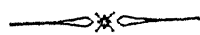
कर्नेल सदरलैन्ड साहिब अंग्रेजी फ़ौज समेत मारवाड़की तरफ़ रवानह हुए; लेकिन् महाराजा मानसिंहने साम्हने जाकर किलेकी कुंजियां साहिबके सुपुर्द करदीं, विक्रमी आश्विन कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रजब = ई० ता० २९ सेप्टेम्बर] को किलेमें अंग्रेजी अफ्सरोंका कब्ज़ह करादिया महाराजाने जनाने वगैरह सबको नीचे उतार लिया, जिसपर फिर एक अह्दनामह करार पाया- (देखो अह्दनामह नम्बर ४३) रियासती इन्तिज़ामके लिये नीचे लिखे आदमियोंकी कौन्सिल मुक़र्रर हुई -पोहकरणका ठाकुर बभूतसिंह, आउवाका ठाकुर खुशहालसिंह, नीबाजका ठाकुर सवाईसिंह, रीयांका ठाकुर शिवनाथसिंह, भाद्राजूणका ठाकुर बख़्तावरसिंह, कुचामणका ठाकुर रणजीतसिंह और (आसोपका ठाकुर शिवनाथसिंह बालक था, इसलिये उसके एवज़) कंटालियाका ठाकुर शंभूसिंह, रासका ठाकुर भीमसिंह, धाय भाई देवकरण, दीवान सिंघवी फ़ौजराज, वकील राव रिड़मल व जोषी प्रभूलाल

इस कौन्सिलको कुल इख्तियार दियागया, कर्नेल सदरलैन्ड कलकत्ते गये, और पोलिटिकल एजेंट लडलो साहिब सूरसागरपर रहने लगे थोड़े ही दिनों बाद फाल्गुन् शुक्ल १२ [हि० १२५६ ता० ११ मुहर्रम = ई० १८४० ता० १६ मार्च] को कर्नेल सदरलैन्ड वापस आये, और किला महाराजाको देदिया अब भी नाथ लोगोंका जुल्म नहीं मिटा, इस बारेमें पोलिटिकल एजेंट उनको रोकनेके लिये, जो खरीते लिखकर भेजता,

उनका जवाब गोलमाल दियाजाता इसके बाद विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] मे भंडारी लक्ष्मीचन्दको दीवान बनाया, और दूसरे वर्ष महता बुद्धमल्लको काम दिया, लेकिन् नाथ लोगोंका कुछ बन्दोबस्त न होनेसे जमा खर्च और इन्तिजामका ढंग नहीं जमा सदरलैन्ड साहिबने जोधपुर आकर नाथोंके इन्तिजामके लिये महाराजाको समझाया, पर कुछ असर न हुआ; तब महामन्दिर, उदयमन्दिर वगैरह नाथोंकी जागीरके गांव जब्त कियेगये, इसपर भी महाराजाके इशारेके मुवाफिक उनके पास जमा पहुंचती रही. अन्तमें एजेन्ट साहिबने तंग होकर नाथोंको समझाया, कि तीन लाख रुपया सालानह आमदनीकी जागीर लेकर किनारा करो, लेकिन् उन्होंने न माना, दिन ब दिन कान फड़वाकर नये नये नाथ बनते थे, जिनकी हिफाजतके लिये डेरे खड़े करवाकर खाने पीनेकी पूरी संभाल कीजाती थी जब यह लोग रुपये मांगते और देनेमें देर होती, तो जमीनमें जिन्दह गड़नेको तय्यार होते, तब महाराजा रुपये देकर उन्हें खुश करते

विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] मे महता लक्ष्मीचन्दको प्रधान बनाया, लडलो साहिबका नाकमें दम होगया, और कहते थे, कि जो जमा आती है, नाथोंमें खर्च होजाती है, रियासतके हाथी घोडे, नौकर लोग फाकह कशी करते है तो भी साहिबके कहनेका असर न हुआ विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] मे दो नाथोंने एक ब्राह्मणकी लडकीको पकड लिया, और कहा, कि हमको रुपये दे, तो छोडे यह खबर लडलो साहिबके कान तक पहुंची, साहिबने उन दोनोंको गिरिफ्तार करके अजमेरकी तरफ रवानह करदिया यह सुनकर महाराजा बहुत उदास हुए, और राईके बागसे सवार होकर साहिबके पास जाने लगे, लोगोंने रोका, और कहा, कि साहिब न मानेंगे महाराजा गुलाबसागर तालाबपर ठहर गये, और दो दिन तक खाना न खाया

इसी संवत्के वैशाख कृष्ण ९ [हि० ता० २३ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २३ एप्रिल]को महाराजाने बदनपर भस्म रमाई, और फ़कीर बनकर मेड़तिया दर्वाजहके बाहर बावडीपर जाबैठे वहांसे विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० २ रबीउस्सानी = ई० ता० २ मई]को गांव पाल गये, कुछ दिनों तक वहां रहे, फिर जलन्धरनाथके दर्शन करके जालौर जानेका इरादह था, कि पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिब वहां पहुंचे, और महाराजासे कहा, कि जब तक आप यहां रहेंगे, तब तक आपके जीते जी दूसरा राजा न होगा; और आप मारवाड़से बाहर जायेंगे, तो धौकलसिंहको गद्दीपर बिठादिया जायगा इस बातसे महाराजाने गिरनारका इरादह छोड़दिया, और विक्रमी आषाढ़ शुक्ल

४ [हि० ता० ३ जमादियुस्सानी = ई० ता० ३० जून] को जोधपुरके पास राईके बाग़मे वापस आये जिस दिनसे महाराजा फकीर हुए, उसी दिनसे एक पेडा, चंदलोईका शाक और दो तीन रुपये भर दही खाते थे विक्रमी श्रावण शुक्ल ३ [हि० ता० २ रजब = ई० ता० २९ जुलाई] को महाराजा मडोवर गये. विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ [हि० ता० ६ शअ्बान = ई० ता० १ सेप्टेम्बर] से एकातरा ज्वर आने लगा; विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ११ [हि० ता० १० शअ्बान = ई० ता० ५ सेप्टेम्बर] को महाराजाने एक सिफ़ेद दुपट्टा ओढ़लिया, और सब आदमियोको वहासे बाहर निकालकर कहा, कि सुब्हके वक्त ब्राह्मण लोग अन्दर आकर हमे सभाले; और इसी तरह हुआ, कि द्वादशीको महाराजाकी दग्ध क्रिया कीगई. इनके साथ महाराणी देवडी और छ खवास पर्दायते सती हुई.

यह महाराजा जैसे बलन्द हिम्मत, बहादुर, अक्लमन्द और कद्रदान थे, वैसे ही घमडी, हठी, निर्दई वगैरह भी पूरे थे इनके वक्तमे दगा, फसाद बाहरी और भीतरी होता रहा, रअय्यत लुटती थी, जब राज्यमे खर्च की तगी हुई, तब रुपये मुल्कसे वुसूल किये, जिस किसीके पास दौलत होती, छीन ली जाती; इसपर भी नाथ लोग जबर्दस्तीसे भले आदमियोंके लडकोको पकड लेते, और चेला बनाते, अच्छे घरानेकी बहू बेटियोको पकडकर घरोमे डाललेते, माल छीनलेते, जिनकी पुकार कोई नही सुनता था इतने ऐबोपर भी महाराजाकी तारीफ़ राजपूतानहमे अब तक होरही हैं, और लोग कहते हैं, कि वैसा राजा पैदा होना कठिन है यह तारीफ सिर्फ महाराजाकी फय्याजीसे होरही है, क्योंकि यह एक ही गुण ऐसा है, जिससे मनुष्यके और अवगुणोकी तरफ कोई नज़र नही देता. इनके ३ पुत्र हुए, जिनके नाम छत्रसिंह, शिवदानसिंह, और पृथ्वीसिह रक्खेगये थे, बाकी बे नाम ही मरगये, और दो बेटिया थीं, १– सिरहकुवर, जिसकी शादी विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = ई० १८१३] मे जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके साथ हुई, और २– स्वरूपकुवर बूदीके रावराजा रामसिंहसे विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] मे ब्याही गई इनके राणिया १३, पर्दायती १२ और गायणिया १२ थीं, महाराजाकी खवासोके बेटे नीचे लिखे मुवाफिक थे –

१– रगरूपरायके बेटे स्वरूपसिह, २– हस्तूरायके बेटे शिवनाथसिंह, ३– तुलसीरायके बेटे लालसिह, ४– रूपजोतके बेटे विभूतसिह, ५– उदयरायके बेटे सोहनसिह, ६– सुन्दररायके बेटे तेजसिह

४१ महाराजा तख्तसिंह

इनका जन्म विक्रमी १८७६ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० १२३४ ता० १३ शअ्बान = ई० १८१९ ता० ५ जून] को हुआ था महाराजा मानसिंहका देहान्त होनेपर धौकलसिंह को गद्दीपर बिठानेकी कार्रवाइयां होने लगी, लेकिन् पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिब ने सबको हुक्म सुनादिया, कि जो कोई धौकलसिंहको बिठानेका इरादह करेगा, उसे सजा दीजायगी, और साहिबने माजी साहिबकी सलाह लेकर ईडरके इलाके अहमद-नगरसे महाराजा तख्तसिंहको लानेका हुक्म दिया; दीवान महता लक्ष्मीचन्दके बेटे मुकुन्दचन्दको दो हजार आदमियोकी भीड भाडके साथ ले आनेके लिये रवानह किया इस वक्त पोलिटिकल एजेन्ट लडलो साहिबने महाराजा तख्तसिंहके नाम एक खरीतह लिखा, जिसकी नक्ल यह है -

एजेन्ट साहिबके खरीतहकी नक्ल

स्वस्तिश्री सर्वोपमा विराजमान सकल गुण निधान राज राजेश्वर महाराजा धिराज महाराजाजी श्री तख्तसिंहजी बहादुर योग्य, कप्तान जॉन लडलो साहिब बहादुर लिखावता सलाम बंचावसी, अठाका समाचार भला है, आपका सदा भला चाहिजे, अपरच- आपको महाराजा साहिब मानसिंहजीके गोद लेनेके वास्ते सब सर्दार, उमराव, मुतसद्दी, खवास पासबान, ज़नानह, काम्दार मिलकर कह्यो, कि महाराजा तख्तसिंह को खोले लेवेगे; सो हमको भी मन्ज़ूर है, सो आप खुशीसे जोधपुर पधारिये. सो तख्तसिंहजी तो राजके पाट बैठेगे, और कुवर जशवन्तसिंहको भी लार लेते आवना दोनो साहिबोकू यहा पधरावना, सो हम भी नव्वाब गवर्नर जेनरल साहिबको लिखेंगे, सो जुरूर मन्जूर करलेगे; और आपके मिज़ाजकी खुशीके समाचार लिखावसी. ता० १४ ऑक्टोबर सन् १८४३ ई० = कार्तिक वदी ६ संवत् १९००

सब माजी साहिबोंकी तरफसे जो महाराजा तख्तसिंहके नाम रुक्का लिखागया, उसकी, नक्ल

लालजी छोरू श्री तख्तसिंहजी, मोती जशवन्तसिंह सू म्हारा वारणा बाचजो, तथा श्री जी साहबारो हीं फुर्मावणो थाने खोले लेणरो हुओ थो, ने हमार म्हारो ही

फ़र्मावणो हुआे है, ने सर्दारा उमरावा ने मुत्सद्दी वगैरह सारारे पिण थाने खोले लेनरी ठहरी है; सो थे सिताव आवसो (इस खास रुक्केके नीचे छओ माजी साहिबाके दस्तख़त थे)

सर्दार और अह्लकारोंने महाराजा तख्तसिंहके नाम जो अर्जी लिखी, उसकी नक्ल
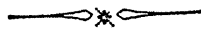
स्वस्ति श्री अनेक सकल शुभ ओपमा विराजमान श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजाजी श्री श्री १०८ श्री तख्तसिंहजी, महाराज कुमार श्री जशवन्तसिंहजी री हजूरमे समस्त सर्दारा मुत्सद्दिया खास पासबाना री अर्ज मालुम होवे, तथा खास रुक्का श्री माजी साहबारी लिखावट मूजब सारा जणारे आपने खोले लेणा ठहराया है, सो बेगा पधारसी- (इस अ़र्जीके नीचे सब सर्दारो, मुतसद्दियो और खास पासबानोके दस्तखत हुए)
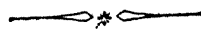
लक्ष्मीचन्दके बेटे मुकुन्दचन्दके जानेपर महाराज कुमार जशवन्तसिंह समेत महाराज तख्तसिंह विक्रमी १९०० कार्तिक शुक्ल ७ [हि० १२५९ ता० ६ शव्वाल = ई० १८४३ ता० २९ ऑक्टोबर] को जोधपुरके किलेमे दाख़िल हुए, और मार्गशीर्ष शुक्ल १० शुक्रवार [हि० ता० ९ जिल्काद = ई० ता० १ डिसेम्बर] को गद्दी बैठनेका जल्सह हुआ अब हम इन महाराजाके समयमे, जो बडे बड़े काम हुए, वह लिखते है

विक्रमी १९१० ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० १२६९ ता० १२ रमजान = ई० १८५३ ता० १९ जून] को महाराजाने अपनी बेटी चादकुंवरका विवाह जयपुरके महाराजा रामसिंहके साथ बडी धूम धामसे किया फिर सर्दीके मौसममे आबू, सिरोही गोढवाड और सोजतकी तरफ़ दौरा किया विक्रमी १९१४ भाद्रपद कृष्ण ५ [हि० १२७३ ता० १९ जिल्हिज = ई० १८५७ ता० ९ ऑगस्ट] को जोधपुरके क़िलेमे बारूतके खज़ानेपर बिजली गिरी, जिससे किलेकी दीवार और चामुडा माताका मन्दिर उडकर शहरमे आपड़ा; उन पत्थरोसे दो सौ आदमी अपने अपने घरोमे दबकर मरगये, दीवार और मन्दिर नये सरसे बनवाये गये विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १२ [हि० ता० २६ जिल्हिज = ई० ता० १६ ऑगस्ट] को खबर मिली, कि ऐरनपुरकी छावनीका रिसालह अंग्रेज़ोसे बाग़ी होकर आउवेको चला आया, जिसपर महाराजाने क़िलेदार पवार औनाड़सिंह, लोढा राव राजमल्ल, सिंघवी कुशलराज और महता विजयसिंह वग़ैरहको फौज देकर आउवापर भेजा विक्रमी

आश्विन कृष्ण ९ [हि० १२७४ ता० १९ मुहर्रम = ई० ता० ८ सेप्टेम्बर] को आउवाके ठाकुर और बागियोंने राज्यकी फ़ौजसे मुक़ाबलह किया, इस लडाईमें राव राजमल्ल और क़िलेदार ओनाडसिंह मारेगये, और सिंघवी कुशलराज व महता विजयसिंह भागकर सोजत पहुंचे, और मुखालिफ़ गालिब रहे, सिर्फ़ आहोरके ठाकुरने महाराजाका तोपखानह बचाया, जिससे उसकी कारगुज़ारी समझी गई

एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके अजमेरसे रवानह होनेकी खबर मिली, कि बागियोंको सज़ा देनेके लिये आउवाकी तरफ़ जाते हैं, यह सुनकर मेंशन साहिब पोलिटिकल एजेएट मारवाड, बडे साहिबके शरीक होनेको अजमेरकी तरफ़ चले, सो अपने लश्करके धोखेसे बागियोंके रिसालहमें आउवे पहुंचे, उन लोगोंने पहिचानकर साहिबको मारडाला. एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह भी कम जमइयतके सबब अजमेर लौट गये; और ऐरनपुरका रिसालह, जो आउवेमें था, मारवाडका मुल्क लूटता हुआ नारनौल पहुंचा, जहां अंग्रेज़ी फ़ौजसे शिकस्त खाई, और बर्बाद होगया सिंघवी कुशलराज और कुचामण ठाकुर वग़ैरह पांच छ हज़ार फ़ौज राज्यकी लेकर बागियोंके पीछे नारनौल तक गये, लेकिन् लडाई करनेकी हिम्मत न हुई, इससे लौटआये, और महाराजाके हुक्मके मुताबिक बडलूकी गढीमें आसोपके ठाकुरको घेरलिया, क्योंकि वह महाराजासे बदला हुआ था आखिरकार विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० ता० २४ रबीउल अव्वल = ई० ता० १३ ऑक्टोबर] को लडाई हुई, और आसोपके ठाकुर शिवनाथसिंहको जोधपुर ले आये, विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ जमादियुल अव्वल = ई० ता० १० डिसेम्बर] को क़िलेमें क़ैद करदिया, जो कुछ अर्सेके बाद क़िलेसे निकल भागा, कहते हैं, कि उसके सर्दार जुझारसिंह कूंपावतने बडी मिहनतके साथ उसको क़िलेसे निकाला था फिर महाराजाने फ़ौज भेजकर आउवा खाली करा लिया, और ठाकुर खुशहालसिंह भाग गया आउवा, आसोप, और गूलर वग़ैरहके ठाकुर भागकर मेवाडके उमराव कोठारिया, व भींडर वग़ैरहके पास रहने लगे

आउवाके ठाकुरने पोलिटिकल एजेएटके मारे जानेका क़ुसूर अपने ज़िम्मह नहीं बतलाया, और सर्कार अंग्रेज़ीसे सफ़ाई करके उदयपुरमें आरहा, महाराणाने उसके गुज़ारेके लिये एक हज़ार रुपया माहवार मुक़र्रर करदिया था; लेकिन् उसका इन्तिकाल उदयपुरमें ही होगया उसका बेटा देवीसिंह, आसोपका ठाकुर शिवनाथसिंह, गूलरके विष्णुसिंह वग़ैरहके वकील अंग्रेज़ी अफ़्सरोंके पास फ़र्याद करते थे; और सर्दार लोग मारवाड़को लूटते थे, फिर बीकानेरमें ये लोग जारहे अंग्रेज़ी अफ़्सरोंने इनकी जागीरें वापस देनेकी सिफ़ारिश महाराजाको की, परन्तु मन्ज़ूर न हुई. महाराजा ऐश

इशरत और शराब नोशीमे डूबे हुए थे, बागी सर्दार मुल्क लूटते, महाराजाके महाराज कुमार, जो चाहते, जुल्म करते, ऐसी छीना झपटीमे बद नियत अह्लकार भी मत्लब बनाने लगे, इन सबसे, जिस तरह काबू पडता, महाराजा भी अपना मत्लब सिद्ध करते, लेकिन् महाराजाका खजानह लौंडियोंके हाथ था, कभी किसी लौंडीने पचास हजार रुपये हज्म किये, कल दूसरीने अपना काम बनाया, महाराणियो और खवास पासबानोकी हिमायतसे लौंडिया बे फिक्र थीं महाराजा चन्द दिनोके बाद कुछ मिनटोके लिये बाहर आते, बल्कि कभी महीनो तक जनानेसे नही निकलते थे, शराब निकलवानेमे बड़ा खर्च होता था जब पोलिटिकल एजेएट अथवा एजेएट गवर्नर जेनरलकी मुलाकात होती, और वे इन्तिजामकी हिदायत करते, तो महाराजा अपने अखलाक् और होश्यारीसे ऐसा जवाब देते, कि उनको यकीन होजाता, कि अब ज़ुरूर मुल्कका इन्तिजाम करेंगे, लेकिन् उनके जानेके बाद फिर ऐश इशरत और शराबनोशीमे मश्गूल होजाते आखिरकार एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने बहुतेरा समझाया, और महाराजाने इक़ार भी किया, लेकिन् कुछ अमल न हुआ

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] मे दूसरे कुवर ज़ोरावरसिंह जीवन माताके दर्शनका बहाना करके नागौरके किलेपर जा जमे, महाराजा एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी मुलाकातको आबू गये थे, जोरावरसिंहके नागौर ले लेनेका हाल साहिबने दर्याफ्त किया, तब महाराजाने कहा, कि मैंने कुछ हुक्म नही दिया, उसने यह अपनी मर्जीसे किया है विक्रमी आषाढ शुक्ल १२ [हि० ता० ११ जमादियुल अव्वल = ई० ता० १६ जुलाई] को महाराजा जोधपुर आये, और पोलिटिकल एजेएट फौज समेत नागौर गये; ज़ोरावरसिंह समझानेसे पोलिटिकल एजेएटके पास आगये; तब वह विक्रमी श्रावण शुक्ल १५ [हि० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० ता० १८ ऑगस्ट] को जोरावरसिंहको साथ लेकर जोधपुर आये, और खाटूका ठाकुर व बारहठ भारथदान वगैरह, जो जोरावरसिंहके शरीक थे, उनकी जागीरे जब्त हुईं, जोरावरसिंह नाराज होकर अजमेर जा रहे, गवर्मेएट अंग्रेजीने कामका इख्तियार बडे महाराज कुमार जशवन्तसिंहको दिलादिया.

विक्रमी १९२९ माघ शुक्ल १५ [हि० ता० १४ जिल्हिज = ई० १८७३ ता० ११ फेब्रुअरी] को महाराजा तख़्तसिंहका देहान्त होगया. इनका छोटा कद, गोरा रंग, बड़ी आंखे, चौडी पेशानी, आदतमे हंस मुख और मिलनसार थे; ज़ब कोई आदमी इनसे मिलता, तो तमाम उम्र यही कहता, कि महाराजा

तख़्तसिंहकी मिह्र्बानी मुझपर बहुत है, और जब यह मुल्की इन्तिज़ाम और अच्छे बुरे आदमियोंकी चाल चलनके बारेमें बात करते, तब दूसरा उनके बराबरीमें कोई न जचता, लेकिन् यह सब बर्ताव शराब नोशी और अय्याशीसे पलट दिये थे महाराजाने २९ वर्ष राज्य किया, जिसमें २२ दीवान बदले गये इनके ३० राणियां थीं, और १० पुत्र हुए

१- कुंवर जशवन्तसिंह, २- जोरावरसिंह, इनका जन्म विक्रमी १९०० माघ शुक्ल ६ [हि० १२६० ता० ५ मुहर्रम = ई० १८४४ ता० २५ जैन्युअरी] को हुआ, और फेब्रुअरी सन् १८८८ ई० में मरगये ३- प्रतापसिंह, विक्रमी १९०२ कार्तिक कृष्ण ६ [हि० १२६१ ता० २० शव्वाल = ई० १८४५ ता० २० ऑक्टोबर] को पैदा हुए, ४- रणजीतसिंह, विक्रमी १९०३ चैत्र कृष्ण ३ [हि० १२६३ ता० १७ रबीउल अव्वल = ई० १८४७ ता० ५ मार्च] को, ५- किशोरसिंह, विक्रमी १९०४ भाद्रपद कृष्ण ९ [हि० १२६३ ता० २३ रमजान = ई० १८४७ ता० ३ सेप्टेम्बर] को, ६- बहादुरसिंह, जो विक्रमी १९१० पौष शुक्ल १२ [हि० १२७० ता० ११ रबीउस्सानी = ई० १८५४ ता० १० जैन्युअरी] को हुए, और विक्रमी १९३६ पौष शुक्ल ९ [हि० १२९७ ता० ८ सफर = ई० १८८० ता० २० जैन्युअरी] को मरगये इनके एक कुंवर जीवनसिंह है, जिनका जन्म विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष शुक्ल ४ [हि० १२९२ ता० ३ ज़िल्क़ाद = ई० १८७५ ता० २ डिसेम्बर] को हुआ; ७- भोपालसिंह, विक्रमी १९११ चैत्र शुक्ल ४ [हि० १२७० ता० ३ रजब = ई० १८५४ ता० २ एप्रिल] को, ८- महाराज माधवसिंहका जन्म विक्रमी १९१३ आषाढ शुक्ल ६ [हि० १२७२ ता० ५ जिल्काद = ई० १८५६ ता० ८ जुलाई] को हुआ था, यह विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में छब्बीस वर्षकी उम्र पाकर मरगये, तब महाराजा साहिबके हुक्मसे भोपालसिंहके कुंवर दौलतसिंह, जिनका जन्म विक्रमी १९३४ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १२९४ ता० १० रबीउ़स्सानी = ई० १८७७ ता० २४ एप्रिल] को हुआ था, गोद आये, ९- मुहब्बतसिंह, विक्रमी १९१४ फाल्गुन् कृष्ण २ [हि० १२७४ ता० १६ जमादियुस्सानी = ई० १८५८ ता० ३ फेब्रुअरी] को, १०- ज़ालिमसिंह, विक्रमी १९२२ आषाढ़ कृष्ण ६ [हि० १२८२ ता० २० मुहर्रम = ई० १८६५ ता० १४ जून] को पैदा हुए.

महाराजा तख़्तसिंहके ३० राणियोंके सिवा १० खवास पासबानोंके जो लडके हुए, उनके नाम ये हैं- १- मोतीसिंह, २- जवाहिरसिंह, ३- सुल्तानसिंह, ४- सर्दारसिंह, ५- जवानसिंह, ६- सावन्तसिंह, ७- तेजसिंह, ८- कल्याणसिंह ९- मूलसिंह, और १०- भारतसिंह.

४२ महाराजा जशवन्तसिंह २

इनका जन्म विक्रमी १८९४ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १२५३ ता० ७ रजब = ई० १८३७ ता० ७ ऑक्टोबर] को हुआ महाराजा मानसिंहने चारण जुगता बणशूरको, तख़्तसिंहने बाघा भाटको, और इन महाराजा धिराजने कविराज मुरारिदानको लाख पसाव और ढीकाई गांव इनायत किया यह महाराजा बहादुरी और फय्याजी में अपना सानी नहीं रखते, इन्होंने पिताकी मौजूदगीमें गोढवाडके मीनोंको तलवारके ज़ोरसे ऐसा सीधा किया, कि अब तक महाराजाके नामसे थर्राते हैं; इसी तरह लोहियाणाके लुटेरे भूमियोंको गारत किया, लेकिन् रियासती इन्तिज़ाम याने माली और मुल्की कामोंकी तरफ़ इनका ध्यान बहुत कम है इनके छोटे भाई महाराज प्रतापसिंह महाराजाके दिली ख़ैरख़्वाह, बे रू रिआयत और बे तमा शख़्स हैं; रियासतके इन्तिज़ामको बहुत अच्छी तरह चलाते हैं सच्चाई, ईमान्दारी, और ख़ैरख़्वाहीमें अपना सानी नहीं रखते, इन्होंने अपनी जागीर रियासतमें मिलाकर अपने ख़र्चके लिये नक्द तन्ख़्वाह कराली है; इनके मातहत मुसाहिब कारगुज़ारीके साथ काम करते हैं

इस रियासतमें सबसे बडी अदालत महक्मह्ख़ास है, जिसके हाकिम श्री महाराजा साहिब हैं, यह महक्मह विक्रमी १९३० वैशाख [हि० १२९० रबीउल अव्वल = ई० १८७३ मई] में काइम हुआ, इससे पहिले दीवान और बख़्शी मुसाहिबसे पूछकर ज़बानी काम चलाते थे इन महाराजाके अह्दमें भी करीब एक वर्ष तक वही ढंग रहा इनके अह्दमें पहिले मुसाहिब ख़ां बहादुर भय्या मुहम्मद फ़ैज़ुल्लाहख़ां विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] तक रहे, इसी संवत्के भाद्रपद [हि० शअ्बान = ई० ऑगस्ट] में महाराज किशोरसिंह मुसाहिब आला बने, और महक्मह्का नाम आलियह कौन्सिल रक्खा विक्रमी १९३५ [हि० १२९५ = ई० १८७८] में किशोरसिंहको तो कमांडर इन् चीफ़ फ़ौज बनाया, और महाराज प्रतापसिंहने इस उह्देपर क़ाइम होने बाद प्राइम-मिनिस्टरीका ख़िताब पाया, और महक्मह्का नाम महक्मह आलियह प्राइममिनिस्टरी रक्खा गया इसमें दो सीग़े बनाये, एक मुआमलात अन्दुरूनी और दूसरा अज़लाए ग़ैर विक्रमी १९३८ भाद्रपद [हि० १२९८ शव्वाल = ई० १८८१ सेप्टेम्बर] में महाराज प्रतापसिंहने इस्तिअ्फ़ा दे दिया; तब महक्मह्ख़ास नाम होकर रियासती मुसाहिबोंके क़ब्ज़हमें आया; लेकिन् विक्रमी आश्विन [हि० ज़िल्क़ाद = ई० ऑक्टोबर]

मे महाराज प्रतापसिंहको पूरा इख्तियार और "मुसाहिब आला" का खिताब मिला, वह अब तक महूकमह खासके मुसाहिब आला और प्राइममिनिस्टर है जब इनको इख्तियार मिला, तो रियासतकी आमदनी करीब तीस लाख सालानहके और जमा व खर्च अब्तर था, इसके सिवाय चालीस या पचास लाख कर्ज़ा था, लेकिन् प्राइम-मिनिस्टर महाराजकी कोशिशसे खर्च कम हुआ, और आमदनी बढकर विक्रमी १९३९ [हि० १२९९ = ई० १८८२] मे उन्तालीस लाख होगई, और सिवाय तीन लाख रुपयेके कुल क़र्ज़ अदा करदिया गया विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] मे महाराज प्रतापसिंहको सर्कार अंग्रेजीसे "सर, के० सी० एस० आई०" का एजाज मिला, और दूसरे वर्ष हुजूर मलिकह मुअज्जमह कैसरह हिन्दके जश्न जूबिलीमे विलायत जानेपर उनको खिताब "लेफ्टिनेन्ट कर्नेल, और एड्डि काङ्, टु दि प्रिन्स ऑव वेल्स" (शाहज़ादह साहिब वेल्सका फौजी मुसाहिब) मिला

मुल्कमे जो डकैती, बटमारी, और खानहजगी वगैरह जियादह थी, वह दूर होगई, मीना, भील, बावरी, थोरी वगैरह फसादी कौमोने सीधे होकर खेती वगैरहका पेशह इख्तियार करलिया

अदालतोका यह हाल था, कि वगैर हिमायतके काम चलना दुश्वार था, अब कोई किसीकी हिमायतका नाम नही लेता, पहिले कोई काइदह रियासतमे नही था, अब वे भी जारी होते जाते है, यह सब महाराज प्रतापसिंहकी ईमानदारी, सच्चाई, खैरख्वाही, और कद्रदानीका नतीजह है इनके मातहत महाराज जालिमसिंह और मुन्शी हरदयालसिंह वगैरह अच्छी तरह काम देते है कविराज मुरारिदान, हाकिम अपील बडे ईमान्दार और साफ मुआमलह शख्स है, उनके जरीएसे हमको भी मारवाड़की तारीखका एक बडा ज़खीरह हासिल हुआ, जिसकी बाबत जितनी शुक्रगुज़ारी कीजाये, कम है, इसी तरह हम मुन्शी देवीप्रसादको भी बगैर शुक्रियह नही छोड सक्ते, जिनसे अक्सर वक्त मारवाडके बाज अहवाल दर्याफ्त करनेमे मदद मिलती रही है

महूकमह खास मुल्क मारवाडका सद्र है, और सब हुक्म व अहकाम यहीसे जारी होते है इस महूकमहका खास काम यह है -

नीचेके महूकमोकी निगरानी, हिदायत व काइदोका जारी करना और अमलमे लाना, रियासती इन्तिजामके लिये सलाह करना, अदालत अपील व कोर्ट सर्दारानकी अपील सुनना, बजट व जमा खर्च तय्यार कराकर कमी बेशी करना, और ठगी, डकैती वगैरह मिटानेकी निगरानी और बड़े सगीन मुकद्दमोका तदारुक तज्वीज़ करना, लेकिन् ऐसे मुकद्दमोमे श्री महाराजाधिराजकी मन्ज़ूरी लेनी पड़ती है.

महाराजाधिराज श्री जशवन्तसिंहके महाराज कुमार सर्दारसिंह विक्रमी १९३६

माघ शुक्ल १ [हि० १२९७ ता० २९ सफ़र = ई० १८८० ता० १० फेब्रुअरी] को पैदा हुए हैं

कुल अहलकारोंका नक्शह विक्रमी १९४० की रिपोर्टके मुवाफ़िक़ नीचे लिखा जाता है –

नम्बर	उह्दह	नाम अहलकार	कैफ़ियत
१	मुसाहिब आला व प्राइम-मिनिस्टर	कर्नेल महाराज सर प्रतापसिंह, के सी एस आई	महाराजाके छोटे भाई
२	कमान्डर-इन्-चीफ़	महाराज किशोरसिंह	ऐज़न
३	असिस्टेएट मुसाहिब आला	महाराज जालिमसिंह	ऐज़न
४	प्रधान	राठौड़ मंगलसिंह	ठाकुर पोहकरण
५	दीवान	राय महता विजयमल्ल	ओसवाल
६	महाराजाके प्राइवेट सेक्रेटरी	प० शिवनारायण	कश्मीरी ब्राह्मण
७	मुसाहिब आलाके होम सेक्रेटरी	मुन्शी हरदयालसिंह	यह पंजाबमें एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर थे
८	बाउन्डरी अफ्सर	कप्तान डब्ल्यू लॉक साहिब,	यूरोपिअन
९	सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए सायरात		महकमह खासके तअल्लुकमें है
१०	मैनेजर जोधपुर रेल्वे	मिस्टर होम साहिब.	यूरोपिअन
११	मुहतमिम् तामीरात रफ़ाह आम	ऐज़न	ऐज़न
१२	अफ्सर शिफ़ाखानहजात	डॉक्टर ऐडम्स साहिब	ऐज़न
१३	खास दवाईखानहका मुहतमिम्	डॉक्टर नवीन चन्द्र	बंगाली
१४	सुपरिन्टेन्डेन्ट महकमए कोर्ट-सर्दारान	मुन्शी हरदयालसिंह.	खत्री

१५	असिस्टेन्ट सुपरिन्टेन्डेन्ट मह्कमए मज़्कूर	पंडित जीवानन्द	
१६	जज अ़दालत अपील	कविराज मुरारिदान	चारण
१७	हाकिम सद्र अ़दालत फ़ौज्दारी	शैख़ मुहम्मद मख़्दूम	
१८	हाकिम सद्र अ़दालत दीवानी.	महता अमृतलाल	ओसवाल
१९	अफ़्सर मह्कमए तामील	ख़ान बहादुर मुहम्मद फ़ैज़ुल्लाहख़ां	पठान
२०	सुपरिन्टेन्डेन्ट मह्कमए ज़ब्ती	सिंघवी बच्छराज	ओसवाल
२१	मुन्सरिम मह्कमए बाकियात.	महता सर्दारमल्ल	ओसवाल.
२२	कोतवाल शह्र जोधपुर.	राव राजा मोतीसिंह	महाराजाके खवास वाल भाई
२३	क़िलेदार जोधपुर	सोभावत केसरी करण	
२४	दारोगा ख़ास दफ्तर.	जोषी आशकरण	ब्राह्मण.
२५	खजानची	सिंघवी हुक्मराज.	ओसवाल.
२६	मुन्शी रियासत	पचोली हीरालाल	कायस्थ
२७	मीर मुन्शी हिंदी	पंचोली मोतीलाल	ऐज़न
२८	सुपरिन्टेन्डेन्ट मह्कमए नमक	सिंघवी सूरजमल्ल	ओसवाल
२९	मुन्सरिम कारख़ानह जात	महता कुन्दनमल्ल.	ऐज़न
३०	सुपरिन्टेन्डेन्ट स्कूल व छाप ख़ानह.	पं० गंगाप्रसाद मिश्र, एफ़० ए०	ब्राह्मण

३१	दारोगह कुतुबखानह	पुरोहित तेजकरण	ब्राह्मण.
३२	बख्शी प्याद	बोहरा आसूलाल.	
३३	दारोगह जवाहिरखानह व जरगरखानह	व्यास देवीलाल	ब्राह्मण
३४	दारोगह देवस्थान	व्यास रघुनाथ	ऐज़न
३५	दारोगह टक्साल	शैख मुम्ताजअली	शैख.
३६	दारोगह स्टाम्प	सिंघवी शिवदानमल्ल	ओसवाल.
३७	तहसील्दार क़स्बे जोधपुर	फ़ौज्दार गुलाबखां.	
३८	दारोगह जेलखानह	बाबू रामसुख.	
३९	मुहतमिम् दूकानात सर्कारी	सिंघवी खुशहालचन्द.	ओसवाल.
४०	मुहतमिम् मह्कमए अफयून	महता सर्दारमल्ल	ओसवाल.
४१	दारोगह मह्कमए नमक खारी.	ऐज़न	ऐज़न
४२	मकरानेका दारोगह	फ़ौज्दार गुलाबखां	
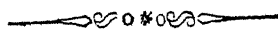
सद्रके बडे उह्दह दारोंके सिवा इलाकहके अह्लकारोंकी फ़िह्रिस्त नहीं दीगई, तेईस पर्गनोंमेंसे हर एकपर एक हाकिम, नाइब हाकिम और दो तीन थानहदार मुकर्रर रहते हैं इस रियासतमें खालिसहके सिवा छोटे बड़े जागीरदार भी बहुतसे हैं, जिनमेंसे अव्वल और दूसरे दरजेके सर्दारोंका नक्शह यहांपर दर्ज किया जाता है

रियासत जोधपुरके अव्वल और दूसरे दरजहके जागीरदारोंका नक्शह, सन् १८८४- ८५ ई० की रिपोर्टके मुवाफ़िक

नम्बर	नाम जागीर	जात	गोत्र	तादाद गाव	रेख
१	पोहकरण	राठौड	चांपावत विठ्ठलदासोत	१००	९४९९१
२	आसोप	ऐजन्	कूंपावत माडणोत.	४॥	३१०००
३	खैरवा	ऐ०	जोधा गोइन्ददासोत	१०	२७७५०
४	रास	ऐ०	ऊदावत	१७	३९२५०
५	नीबाज	ऐ०	ऐ०	१०	३५१००
६	आउवा	ऐ०	चांपावत आईदानोत	१६	१६०००
७	रीयां	ऐ०	मेड़तिया माधवदासोत	८	३६१०३
८	भाद्राजूण	ऐ०	जोधा रत्नसिंहोत	२७	३१९५०
९	रायपुर	ऐ०	ऊदावत	३८॥	४८८००
१०	कुचामण	ऐ०	मेड़तिया गोइन्ददासोत	१६	४२७५०
११	घाणेराव	ऐ०	ऐ० गोपीनाथोत	४२	३७६००
१२	आहोर	ऐ०	चांपावत आईदानोत.	९॥	२२६२५
१३	दासपां	ऐ०	ऐ० विठ्ठलदासोत.	१३	२५५००
१४	रोयठ	ऐ०	ऐ० आईदानोत	११	१६५२५
१५	कंटालिया	ऐ०	कूंपावत महेशदासोत	१२	१३८००
१६	लांबिया	ऐ०	ऊदावत	७	१८५००
१७	गूलर	ऐ०	मेड़तिया सुरताणोत	५	२३२५०
१८	भखरी	ऐ०	ऐ० सुरताणोत	५	१९५००
१९	बूडसू	ऐ०	ऐ० केशवदासोत	२४	३७५५०
२०	मींढा	ऐ०	ऐ० चांदावत	२९	३६३०३
२१	बलूंदा	ऐ०	ऐ० ऐ०	६	२०२५०

२२	खीवसर	ऐ०	करमसोत	३२	११९५०
२३	राखी	चहुवान		२२	२१६००
२४	काणाणो	राठौड़	कर्णोत	३	१२०००
२५	मनाणा	ऐज़न्	मेडतिया केशवदासोत	७	१६७००
२६	पालासणी	ऐ०	ऊदावत	२	१४०००
२७	खीवाडा	ऐ०	चापावत विठ्ठलदासोत	१७	१६०२५
२८	बाकरो	ऐ०	ऐ० ऐ०	७	१७२५०
२९	चडावल	ऐ०	कूंपावत ईसरदासोत	८	२००००
३०	अगेवा	ऐ०	ऊदावत	३	२०७५०
३१	आलणियावास	ऐ०	मेडतिया माधवदासोत	४	१३६००
३२	चाणोद	ऐ०	ऐ० नाथोत	२४	३१०००
३३	जावला	ऐ०	ऐ० सुरताणोत	८॥	३८०००
३४	बडू	ऐ०	ऐ० केशवदासोत	१२	३२७५०
३५	मीठडी	ऐ०	ऐ० गोइन्ददासोत	१५	२६४००
३६	लाडणू	ऐ०	जोधा केशरीसिंहोत	७	२००००
३७	बगडी	ऐ०	जैतावत पृथ्वीराजोत,	७	१५०००
३८	कल्याणपुर	चहुवान		७	९०००
३९	खेजड़ला	भाटी	अर्जुनोत	८	२४८००
४०	झलामंड	राणावत	सूरजमलोत	८	१४१००
४१	डोडियाणा	राठौड	मेडतिया गोइन्ददासोत	९	३२०००

अह्दनामह नम्बर ३६,
राज्य जोधपुर

अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुरके आपसमे दोस्ती और इत्तिफ़ाक़की बाबत,

तज्वीज किया हुआ जेनरल जिरार्डलेक, सिपहसालार फौज अंग्रेजी मौजूदह हिन्दुस्तानका, लॉर्ड रिचर्ड मारक्किस वेलेज़्ली, गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारसे, जो ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके तरफसे हुआ

शर्त पहिली– दोस्ती और इत्तिफ़ाक हमेशहके लिये ऑनरेबल अंग्रेजी कम्पनी और महाराजाधिराज मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके आपसमें मज्बूत क़रार पाया है.

शर्त दूसरी– दोनों सर्कारोंमें, जो दोस्ती क़ाइम हुई है, तो एक सर्कारके दोस्त व दुश्मन दोनों सर्कारोंके दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे, और इस शर्तकी तामीलका दोनों सर्कारोंको हमेशह खयाल रहेगा

शर्त तीसरी– ऑनरेबल कम्पनी इन्तिज़ाम मुल्कमें, जो अब महाराजाधिराजके क़ब्ज़हमें है, दख्ल नहीं देगी, और न उनसे खिराज मांगेगी

शर्त चौथी– जिस सूरतमें कि कोई दुश्मन ऑनरेबल कम्पनीका उस मुल्कपर हमलह करनेका इरादह करे, कि जो थोड़े अर्सहसे हिन्दुस्तानमें ऑनरेबल कम्पनीने लिया है, तो महाराजाधिराज अपनी कुल फौज कम्पनीकी फ़ौजकी मददके लिये भेजेंगे, और दुश्मनके खारिज करनेमें खुद भी बहुत कोशिश करेंगे, और दोस्ती व मुहब्बतकी कमी किसी बातमें किसी मौकहपर नहीं करेंगे

शर्त पांचवीं– जो कि बसबब दोस्तीके, जो इस अह्दनामहकी दूसरी शर्तके मुवाफ़िक करार पाई है, ऑनरेबल कम्पनी महाराजाधिराजकी जिम्महवार होती है, कि वह बर्खिलाफ़ किसी गैर दुश्मनके मुल्ककी हिफ़ाज़त करेगी, और महाराजाधिराज भी वादह करते हैं, कि उनके और किसी दूसरे रईसके आपसमें झगड़ा पैदा होगा, तो महाराजाधिराज पहिले सर्कार अंग्रेजीके हुजूरमें उस बखेड़ेके सबबकी कैफ़ियत भेजेंगे, ता कि सर्कार उसका फ़ैसलह वाजिबी करदे, और जो दूसरे फरीककी हठसे वाजिबी शर्त करार न पावे, तो महाराजा मददके लिये कम्पनीको दर्ख्वास्त करसकेंगे, और ऐसी हालतमें मदद भी दी जायगी, और महाराजाधिराज वादह करते हैं, कि हम उस मददका खर्च उस शरहके मुवाफ़िक़ देंगे, जो हिन्दुस्तानके दूसरे रईसोंसे करार पाई है

शर्त छठी– महाराजाधिराज बज़रीए इस तहरीरके वादह करते हैं, कि अगर्चि वह दर अस्ल अपनी कुल फ़ौजके मालिक हैं, तो भी लड़ाई या लड़ाईके विचारकी हालतमें साहिब कमाण्डर फ़ौज अंग्रेजी (जो उनको मदद देती होगी) की सलाह और कहनेके मुवाफ़िक़ काम करेंगे

शर्त सातवी- महाराजा किसी अंग्रेज़ी या फ़ासीसी रअय्यत या यूरपके और किसी बाशिन्दहको सर्कार कम्पनीकी रज़ामन्दी बग़ैर अपने पास नही आने देंगे, और न नौकर रक्खेंगे

ऊपर लिखा अह्दनामह, जिसमे सात शर्तें दर्ज है, दस्तूरके मुवाफ़िक जेनरल जिरार्ड लेक साहिब और महाराजाधिराज राजराजेश्वर मानसिंह बहादुरके मुहर व दस्तख़तोंसे मकाम सरहिन्दी सूबह अक्बराबादमे तारीख २२ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० [ता० ७ रमजान सन् १२१८ हि० = मिती पौष शुक्ल ९ संवत् १८६०] को तस्दीक़ हुआ

जब एक अह्दनामह, जिसमे सात शर्तें ऊपर लिखी हुई दर्ज होंगी, महाराजाधिराजको गवर्नर जेनरलकी मुहर और दस्तख़तके साथ दिया जायगा, तो यह अह्दनामह, जिसमे जिरार्ड लेक साहिबकी मुहर और दस्तख़त है, वापस लिया जायगा

| मुहर कम्पनी |

दस्तख़त- वेलेज़्ली.

यह अह्दनामह गवर्नर जेनरलने ता० १५ जैन्युअरी सन् १८०४ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त- जी० एच० बार्लो.
दस्तख़त- जी० अडनी

अह्दनामह नम्बर ३७.

अह्दनामह आपसमें ऑनरेबल अंग्रेजी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराजा मानसिंह बहादुर राजा जोधपुरके, पेश किया हुआ राज्य अधिकारी कुंवर युवराज महाराज कुमार छत्रसिंह बहादुरका, मंजूर किया हुआ सर चार्ल्स थियोफिलस मेटकाफ़ साहिबका कम्पनीकी तरफ़से मार्किस ऑव हेस्टिंग्ज़ के० जी० गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख़्तियारके मुवाफ़िक़, और व्यास विष्णुराम और व्यास अभयराम महाराजा मानसिंह बहादुरकी तरफ़से युवराज महाराज कुमार और महाराजाके दिये हुए इख़्तियारसे

शर्त पहिली- दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख़्वाही हमेशह आपसमे ऑनरेबल ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा मानसिंह बहादुर और उनके वारिसों

और जानशीनोंके क़ाइम रहेगी, और एक सर्कारके दोस्त व दुश्मन दूसरी सर्कारके भी दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे

शर्त दूसरी- सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह रियासत और मुल्क जोधपुरकी निगहबानी करेगी

शर्त तीसरी- महाराजा मानसिंह और उनके वारिस और जानशीन ताबेदारी सर्कार अंग्रेज़ीकी करेंगे, उनकी रियासतका इक़्रार है, कि किसी और रईस या सर्दारसे सरोकार नहीं रक्खेंगे

शर्त चौथी- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन किसी रईस या सर्दारसे मेल मिलाप बिदून इत्तिला और मंज़ूरी सर्कार अंग्रेज़ीके नहीं करेंगे, लेकिन् उनके दोस्तानह कागज़ पत्र उनके दोस्तों और रिश्तहदारोंमें जारी रहेंगे.

शर्त पांचवीं- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, जो कभी इत्तिफ़ाकन् किसीसे तक्रार पैदा होगी, तो वह तक्रार होनेकी वजह पंचायत और फ़ैसलहके लिये सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करदेंगे

शर्त छठी- जो खिराज अब तक सेंधियाको जोधपुरसे दियाजाता है, और जिसकी तफ्सील अलहदह लिखीगई है, वही हमेशहके लिये सर्कार अंग्रेज़ीको दिया जायगा, परन्तु खिराजकी बाबत सेंधिया और जोधपुरमें जो शर्तें हैं, वे रद होंगी

शर्त सातवीं- महाराजा बयान करते हैं, कि सिवाय उस खिराजके, जो जोधपुर वाले सेंधियाको देते हैं, और किसीको नहीं दिया जाता है, और इक्रार करते हैं, कि खिराज मज्कूर वह सर्कार अंग्रेज़ीको देवेंगे. इस वास्ते जो सेंधिया या और कोई खिराजका दावा करेगा, तो सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह उसके दावेका जवाब देगी

शर्त आठवीं- ज़ुरूरतके वक़्त जोधपुरकी रियासत सर्कार अंग्रेज़ीको पन्द्रह सौ सवार देगी, और ज़ियादह ज़ुरूरतके वक़्त कुल फ़ौज जोधपुरकी अंग्रेज़ी फ़ौजके शामिल होगी, सिर्फ़ उतनी रहजायगी, जो मुल्कके अन्दरूनी इन्तिज़ामके लिये दर्कार होगी

शर्त नवीं- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन अपने कुल मुल्कके हाकिम रहेंगे, और हुकूमत अंग्रेज़ी इस रियासतमें दाखिल न होगी.

शर्त दसवीं- यह अह्दनामह दस शर्तोंका मकाम दिल्लीमें क़रार पाया, और उसपर मुहर और दस्तख़त मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस् मेट्काफ़ साहिब, और व्यास विष्णुराम और व्यास अभयरामके हुए, और उसकी तस्दीक़ गवर्नर जेनरल और

राजराजेश्वर महाराजा मानसिंह बहादुर और युवराज महाराज कुमार चत्रसिंह बहादुरके दस्तखतसे होकर इस तारीखसे ६ हफ्तहके अन्दर आपसमे एक दूसरेको दिया जायगा.

मक़ाम दिल्ली, ता० ६ जैन्युअरी सन् १८१८ ई०

दस्तख़त सी० टी० मेट्काफ

मुहर.

मुहर
व्यास विष्णुराम,

मुहर
व्यास अभयराम

मुहर.
महाराजा मानसिंह बहादुर

मुहर
युवराज महाराज कुमार चत्रसिंह बहादुर

गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर

दस्तख़त—हेस्टिंग्ज

गवर्नर जेनरलने मक़ाम ऊचरमे, ता० १६ जैन्युअरी, सन् १८१८ ई० को तस्दीक किया.

दस्तख़त—जे० ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

तफ़्सील खिराजकी, जो जोधपुरसे
दिया जावे

सिक्के अजमेर	१८००००
बट्टा रु० २० सैकडेके हिसाबसे	३६०००
बाक़ी सिक्के जोधपुरी	१४४०००
उसमेसे आधे नक़्द	७२०००
आधेका सामान	७२०००
कुल	१४४०००
नुक़्सानी चीज़े आधेके हिसाबसे	३६०००
बाकी सिक्के जोधपुरी	१०८०००

दस्तखत- सी० टी० मेट्काफ　　बड़ी मुहर

बड़ी मुहर　　मुहर- भास्कर राव वकील

बहुक्म गवर्नर जेनरल

दस्तखत- जे० ऐडम,
सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल

अह्दनामह नम्बर ३८.

तर्जमह इक्रारनामहका रियासत जोधपुरकी तरफ़से मारवाडके इलाकह मेरवाडेकी बाबत - इस दर्बारको पूरा भरोसा है, कि वह खूब अच्छी पोलिस मेरवाड़ेमे रखसक्ते है, और वहांकी हर एक बातके जिम्महवार होसक्ते है, परन्तु यह ख्वाहिश हमेशह रही है, कि गवर्मेन्ट अंग्रेजीकी खुशनूदी हासिल हो, और गवर्मेएटकी मर्जी यह है, कि उनकी पोलिस उस इलाक़हके इन्तिज़ामके लिये मुकर्रर रहे, इस वास्ते १५००० पन्द्रह हजार रुपया सालानह आठ वर्ष तक सिपाहके खर्चकी बाबत, जो पोलिसके लिये नौकर रक्खीजायगी, जैसा मिस्टर वाइल्डर साहिबने बयान किया है, दिया जायगा, और चाग चितार और दूसरे गाव खालिसह मारवाडके, जिनमे कि इस दर्बारके ठाकुर एक अंग्रेजी फ़ौजकी मददसे रक्खेगये थे, उन गावोको सजा देनेके लिये भेजी गई थी, वे उन रुपयोके शामिल है, जो ऊपर लिखी मीआदपर दिये जावेगे, परन्तु एक मुख्तारकार इस रियासतकी तरफसे हिसाबकी रसीदे वगैरह लेनेके लिये और वास्ते मुजरा उस आमदनीके जुरूर है, जो वुसूल हो, और मीआद गुज़र जानेपर रुपया देना मौकूफ़ होगा, और इलाक़ह वापस लिये जायेगे ता० ४ रजब सन् १२३९ हि०.

दस्तख़त- व्यास सूरतराम, वकील.

तर्जमह जवाब, साहिब पोलिटिकल एजेण्टकी
तरफसे

जो कुछ रुपया मेरवाड़ेके गांवोसे जो मारवाडकी तरफसे बतौर ज़मानत सर्कार अंग्रेजीके पास है, तहसील होगा, रु० १५००० से आठ वर्ष तक मुज्रा होगा, और आठ वर्ष पीछे वह गांव जोधपुरके अह्लकारोके सुपुर्द होगे, और

शर्तके मुवाफ़िक रुपया देना मौकूफ़ होगा ता० ५ मार्च सन् १८२४ ई० फाल्गुन् शुक्ल ५ सवत् १८८० वि०

दस्तखत- एफ़० वाइल्डर,
पोलिटिकल एजेएट.

अह्दनामह नम्बर ३९

तर्जमह इक्रारनामह, जो रियासत जोधपुरकी तरफ़से मेरवाड़ेमे मारवाडकी ज़मीनकी बाबत हुआ -

गवर्मेएट अंग्रेजीकी रजामन्दीकी तामीलके लिये उनके मुख्तार मिस्टर वाइल्डर साहिबकी नेक सलाहके मुवाफिक इस सर्कारने आठ वर्ष तक पन्द्रह हजार रुपया सालानह सिपाहके (जो नये नौकर मेरवाडा इलाकहके इन्तिज़ामके लिये हो,) खर्चकी बाबत मन्जूर किया था, और गाव चाग चितार और दूसरे गाव मारवाडके, जिनमे थाने इस दर्बारकी तरफ़से बज़रीए मदद फ़ौज अंग्रेज़ी, जो उनको सजा देनेके लिये भेजी गई थी, मुकर्रर हुए थे, बतौर जमानत गवर्मेएट अंग्रेजीके पास ऊपर लिखी मीआदके लिये देदिये गये; इस मुरादसे कि एक मोअतबर अह्लकार इस सर्कारकी तरफसे हाज़िर रहेगा, कि वह तमाम हिसाब किताब ऊपर लिखे गावोकी आमदनी देखकर परताल करलिया करे; और जो आमदनी उन गावोकी आवेगी, उसको शर्तके मुवाफ़िक् पन्द्रह हजार रुपया, जो गांवोकी आमदनी समझा गया है, मुजरा देगा; और शर्त मुवाफिक मीआद गुज़रने पीछे रुपया शर्त मूजिब मौकूफ़ होगा; और गांव वापस किये जायेगे.

शर्त दूसरी- और जो वह शर्त फाल्गुन् शुक्ल ५ सम्वत् १८८८ मुताबिक ३ रजब सन् १२४७ हि० को गुजर गई, और इस दर्बारने फिर गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी नज़रसे और मेजर आलिवस साहिब, एजेएट गवर्नर जेनरलकी सलाहसे वास्ते रियासतो राजपूतानहके, जो उनके असिस्टेएट लेफ्टिनेन्ट हिनरी ट्रेविलियन साहिबकी मारिफत दीगई थी, वादह करते है, कि वह गवर्मेएट अंग्रेजीको पंद्रह हज़ार रुपया सालानह ऊपर लिखा हुआ, नव वर्ष तक बाबत खर्च ऊपर लिखी सिपाहके आगेको देते रहेगे; और गाव चांग चितार और दूसरे गांवके लिये उनही पहिली शर्तोंपर ऊपर लिखी मीआद मुकर्रर रक्खेगे; और यह वादह ता० ६ फाल्गुन् सम्वत् १८८८ मु० ५ रजब सन् १२४७ हि० को शुरू होगा.

शर्त तीसरी- और सिवाय इसके दोस्ती बढानेके लिये, जो अब गवर्मेंएट अंग्रेजी और इस दर्बारके आपसमे है, वह यह भी इस तहरीरके जरीएसे इक्रार करते है, कि वह गवर्मेंएटकी ख्वाहिशके मुवाफिक नीचे लिखे सात गाव, कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १८९२ मुताबिक २९ जमादियुस्सानी सन् १२५१ हि० से लेकर ऊपर जिक्र किये हुए गांवोकी मीआद गुजरने तक उन्ही शर्तोपर, जिनपर गाव चाग चितार वगैरह मुकर्रर किये गये है, सुपुर्द करते है

शर्त चौथी- पहिले जिक्र कीहुई मीआद गुजरनेपर सालानह और गांवोका पट्टा, जो गवर्मेंएट अंग्रेजीके साथ पहिले कियागया था, और अब कियाजाता है, मौकूफ होगा, और कुल गाव दर्बारको वापस होगे कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १८९२ मु० २९ जमादियुस्सानी सन् १२५१ हि०, ता० २३ ऑक्टोबर सन् १८३५ ई० को क़रार पाया.

पहिले जिक्र किये हुए गावोकी
तफ्सील

रतोडिया, धाल, नौदना, भगूरा, राल, करवारा, चतरजीका गुढा

दस्तखत- व्यास सवाईराम, वकील

राजपूतानहके असिस्टेण्ट एजेण्ट गवर्नर जेनरल, लेफ्टिनेण्ट
ट्रेविलिअनके जवाबका तर्जमह

मारवाड मेरवाडाके उन गावोके पट्टेकी मीआद, जो गवर्मेंएट अंग्रेजीके पास आठ वर्षके लिये उस इलाक़हका अच्छा इन्तिजाम करनेके वास्ते सुपुर्दगीमे इस गरज़से रक्खे गये थे, कि जो रुपया उसका वुसूल होगा, वह शर्तके रु० १५००० मे मुज्रा दिया जायगा, अब गुजर गई, और पट्टा नया और नव वर्षका हुआ, और उसमे सात गाव दूसरे नीचे लिखे मुवाफिक़ उन्ही शर्तोपर गवर्मेन्ट अंग्रेजीको कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १८९२ से शामिल किये गये, और इनका पट्टा भी चाग चितार वगैरह मारवाड मेरवाडाके उन गावोके साथ, जो पहिले सुपुर्दगीमे लिये गये थे, गुजरेगा; इन गावोंकी आमदनी भी उसी तरह सुपुर्द किये हुए गावोकी आमदनीके साथ मुज्रा होगी, और ऊपर लिखी तारीखसे नव वर्ष पीछे पहिले मुकर्रर हुए गांव और यह गाव, जो अब दिये गये है, रियासत जोधपुरके अह्लकारोको वापस कियेजावेगे; और लेनेका रुपया मौकूफ होगा. कार्तिक शुक्ल २ सम्वत् १८९२ मुताबिक़ २३ ऑक्टोबर सन् १८३५ ई०

पहिले ज़िक्र किये हुए गावोंके नाम

रतोड़िया, धाल, नौंदना, भगूरा, राल, करवारा, चतरजीका गुढा

दस्तखत– एच० डब्ल्यू० ट्रेविलिअन,
असिस्टेण्ट, एजेण्ट गवर्नर जेनरल

अह्दनामह नम्बर ४०

तर्जमह अह्दनामह महाराजा मानसिंह बहादुर राजा जोधपुर, और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके आपसमें, जो मारिफ़त लेफ़्टिनेण्ट हेनरी ट्रेविलिअन, असिस्टेण्ट एजेण्ट गवर्नर जेनरल बहादुर बाबत रियासतहाय राजपूतानहके करार पाया

जो कि महाराजा मानसिंह बहादुर, राजा जोधपुरने इक़ार किया, कि वह रु० ११५००० कल्दार सालानह मिती पौष शुक्ल १५ सम्वत् १८९२ से, बाबत फ़ौज कन्टिन्जेण्ट पन्द्रह सौ सवारके, जिसका इक़ार जोधपुरके राजाने ज़ुरूरतके वक्त देनेका किया था, जिसका बयान उस अह्दनामहकी आठवीं शर्तमें, कि जो सर्कार अंग्रेज़ीके साथ ब मकाम दिल्ली ता० ६ जैन्युअरी सन् १८१८ ई० को हुआ दर्ज है, दिया करेंगे. यह काग़ज़ इक़ारनामहके तौरपर लिखागया; और उसके रू से नीचे लिखी बातें ऊपर लिखे अह्दनामहकी आठवीं शर्तके लिखे मुवाफ़िक़ सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से मन्सूख हुई, याने "जोधपुरकी रियासत ज़ुरूरतके वक्त पन्द्रह सौ सवार देगी," और नीचे लिखा फ़िक्रह उसके एवज क़ाइम हुआ, याने "रियासत जोधपुर ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ अजमेर मकाममें एक लाख पन्द्रह हजार रुपया कल्दार हर साल दिया करेगी" पहिली बार रु० ११५००० कल्दार मिती पौष कृष्ण १ सम्वत् १८९३ को अदा होगा, और उतना ही उसी तारीख़को हर वर्ष अदा होता रहेगा.

मकाम जोधपुर मिती पौष कृष्ण २ सम्वत् १८९२ मु० ता० ७ डिसेम्बर सन् १८३५ ई०.

दस्तखत– एच० डब्ल्यू० ट्रेविलिअन,
असिस्टेण्ट एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

गवर्नर जेनरलने तस्दीक किया ता० ८ फ़ेब्रुअरी, सन् १८३६ ई०

अह्दनामह नम्बर ४१

तर्जमह ख़त वकील जोधपुरकी तरफ़से, साहिब पोलिटिकल एजेण्ट जोधपुरके नाम तारीख़ १५ मई सन् १८४७ ई०

मैने आपकी चिट्ठी मुवर्रिख़ह ६ मार्च गुज़िश्तह बाबत इत्तिला इस बातके, कि उमरकोटके एवज़ रु० ११५००० सवार खर्चमेसे रु० १००० सालानह हर साल कम किये जायेंगे, महाराजा साहिबके हुज़ूरमे गुज़रानी महाराजा फर्माते हैं, कि उमरकोट हमारा है, और हमारा दावा उमरकोटपर साफ़ और सहीह है, इसको साहिब बहादुर भी खूब जानते है, जब तक उमरकोट गवर्मेण्ट अंग्रेजीके क़ब्ज़हमे रहेगा, उस वक्तमे भी हम उमरकोटको अपना समझेंगे, और जब गवर्मेण्ट अंग्रेजी उसको अलहदह करना चाहेगी, तो हम जानते है, कि वह हमको देगी, और किसी दूसरेको न देगी, इस वास्ते कि उमरकोट हमारा है, और हमको मिलना चाहिये. राजस्थानमें जमीनका हक़ बहुत बडा समझा जाता है, और जिस रोज उमरकोट हमको वापस दियाजायगा, वह दिन बहुत मुबारिक और खुश समझा जायगा, और यह भी फर्माते है, कि अगर रु० १०००० सालानह रु० १०८००० मेसे, जो गवर्मेण्ट अंग्रेजीको ब तौर खिराज दियाजाता है, मुज्रा दियाजायगा, तो यह रुपया ज़मीनके एवज़ है, और खिराज भी जमीनकी बाबत दियाजाता है, इस वास्ते यह रुपया खिराजके रुपयोमेसे मुज्रा होना चाहिये.

तर्जमह सहीह है.
दस्तखत- एच० एच० ग्रेटहेड,
पोलिटिकल एजेण्ट

गवर्नर जेनरलने मन्जूर और तस्दीक़ किया, ता० १७ जून सन् १८४७ ई०.

अह्दनामह नम्बर ४२

तर्जमह इक्रारनामह रियासत जोधपुरकी तरफ़से जिलावतन ठाकुरोकी बाबत.

ठाकुर बूढसू व ठाकुर चदावलकी ख्वाहिश नही है, कि उनपर मिहर्बानीकी नजर कीजाये, मगर सर्दार आउवा, आसोप, नीबाज और रास, रहम करनेके लाइक नहीं है, परन्तु गवर्मेण्ट अंग्रेजीकी खुशीकी नज़रसे जो इलाक़ह महाराजा बख्त-सिंहके वक्तमे उनके पास था, वह उनको छ महीनेमें वापस दिया जायगा. एक ख़रीतह गवर्नर जेनरल बहादुरका महाराजाके नाम रज़ामन्दीके लिये इस मज़्मूनका आया, कि जो यह ठाकुर अपनी कारगुज़ारी या फर्माबर्दारीमे कमी करे, या किसी जुर्मके मुज्रिम हो, या दर्बार जैसी चाहे, वैसी कार्रवाई न करे, तो महाराजाको इख्तियार है, कि जो मुनासिब जाने, सो करे

इसीके पीछे गवर्मेण्ट अंग्रेजीके सबब इस वक्त इक़ार किया गया, लेकिन् अब जो यह सर्दार दर्बारकी फ़र्मांबर्दारी और खिद्मतमें राजी रहे, तो उनको इसके सिवाय कुछ इन्आम भी दिया जायगा, और दूसरे जिलावतन ठाकुरोंकी बाबत यही बात है, कि जो वह महाराजाकी मर्जीके मुवाफ़िक काम करेंगे, तो उनपर भी मिहर्बानीकी नजर रक्खी जायगी, इस शर्तपर कि गवर्मेण्ट अंग्रेजी उनकी निस्बत कुछ एतिराज बीचमें न लावे

फाल्गुन् कृष्ण ११ सम्वत् १८००
दस्तखत- फतहराज, दीवान

तर्जमह जवाब साहिब पोलिटिकल एजेण्ट

महाराजा मानसिंहने जो यह इक़ार किया, कि उन ठाकुरोंको, जो पहिले कुसूरोंकी बाबत निकाले गये हैं, गवर्मेण्ट अंग्रेजीकी मर्जीके मुवाफ़िक जिन्होंने मुझको इस कामके वास्ते यहां मुकर्रर किया है, दुबारह उनके क़दीमी इलाक़ोंपर दख़्ल करादेंगे, इस वास्ते इन ठाकुरोंमेंसे पीछे कोई किसी जुर्मका मुज्रिम होगा, या महाराजाकी मर्ज़ीके बर्खिलाफ़ कोई काम करेगा, तो अह्दनामहमें लिखाजाता है, कि महाराजा हाकिम है, जो चाहे, सो करे, गवर्मेण्ट अंग्रेजी फिर उनकी जानिबसे दख़्ल नहीं देगी, और महाराजाकी खुशनूदीके लिये एक खत भी इस मज़्मूनका गवर्नर जेनरल बहादुरकी तरफ़से लिखा जायगा ता० २५ फेब्रुअरी सन् १८२४ ई०.

दस्तखत- एफ़० वाइल्डर,
पोलिटिकल एजेण्ट.

अह्दनामह नम्बर ४३

इक़ारनामह सर्कार अंग्रेजी और महाराजा मानसिंहके आपसमें

सर्कार अंग्रेजी और सर्कार जोधपुरके आपसमें मुद्दतसे दोस्ती जारी है, और सम्वत् १८७५ वि० मुताबिक सन् १८१८ का अह्दनामह होनेसे यह दोस्ती जियादह मज़्बूतीके साथ काइम हुई, इस तरह अब तक दोनों सर्कारोंके आपसमें दोस्ती काइम है, और आगेकोभी रहेगी

अब अह्दनामहकी नीचे लिखी शर्तें सर्कार अंग्रेज़ी और महाराजा मानसिंह

बहादुर महाराजा जोधपुरके आपसमे मारिफ़त कर्नेल जॉन सदरलैण्ड साहिबके करार पाई है.

शर्त १– अब मुल्की इन्तिजामकी बाबत दोनो तरफ़से आपसमे गौर होकर यह करार पाया, कि महाराजा और कर्नेल सदरलैण्ड साहिब और राज्यके सर्दार व अह्लकार और खवास पासबान एकट्ठे होकर मुल्की इन्तिजामके काइदह बनावे, जिनकी तामील अब और आगेको हुआ करे, और यह सभा तै करके अक्सर सर्दारो और गवर्मेण्टके अफ़्सरो और दूसरे सम्बन्ध रखने वालोके हक़ क़दीमी दस्तूरके मुवाफ़िक़ काइम करेगी

शर्त २– पोलिटिकल एजेण्ट अंग्रेज़ी और राज्य जोधपुरके अह्लकारोने आपसमे सलाह की है, कि वे रियासती कामोका इन्तिज़ाम इन काइदोके मुवाफ़िक़ आपसमे सलाह करके किया करेंगे, और महाराजासे भी सलाह लेलिया करेंगे.

शर्त ३– उक्त पचायत रियासती कामोका बन्दोबस्त कदीमी दस्तूरके मुवाफ़िक़ किया करेगी

शर्त ४– कर्नेल साहिबने कहा, कि कुछ अंग्रेज़ी फौज जोधपुरके किलेमे रहेगी, और महाराजाने उसको मजूर किया राजस्थानकी दूसरी रियासतोमे जहां साहिब पोलिटिकल एजेण्ट रहते है, वहा वह शहरके बाहर रहते है, किलेके आस पास मकान बने है, और जगह भी तग है, इस सबबसे इसमे दिक़्क़त मालूम होती है, परन्तु सर्कारकी खुशीकी नजरसे यह बात (फौजके किलेमे ठहरनेकी) मजूर हुई है, और एक अच्छी जगह तज्वीज होकर मुकर्रर होगी दर्बारको सर्कारकी तरफ़से किसी तरहका डर नही है

शर्त ५– श्रीजीका मन्दिर याने नाथ साहिबका मन्दिर और स्वरूपका याने लक्ष्मीनाथ व प्रयागनाथके दूसरे मन्दिरो और जोगेश्वरो याने नाथ फ़क़ीरोके मन्दिर, जो इस मुल्कके हो, तथा दूसरे मुल्कके हो, उनके चेलो और ब्राह्मणो समेत और उमरावो याने भीतरी ठाकुरो और कीका याने महाराजाकी गैर अस्ली औलाद और मुतसद्दियों याने कुशलराज, फौजराज वगैरह, और खवास पासबान वगैरह के मर्तबह और इज़्ज़त और काम काजमे कमी न होगी, जैसे अब हैं, उसी मुवाफ़िक़ रहेंगे.

शर्त ६– कारबारी अपना अपना काम (मुकर्ररह काइदहके मुवाफिक) करते रहेंगे, परन्तु जब किसीकी तरफ़से किसी तरहकी गफ़लत और सुस्ती काममें मालूम हो, तो महाराजाकी सलाह लेकर उसके एवज लाइक़ आदमी मुकर्रर किया जाये.

शर्त ७–जिनके हक़ छीनेगये हैं, उनको इन्साफ़के साथ उनके हक़ वापस मिलेंगे, और वे लोग दर्बारकी फ़र्मांबर्दारी व ताबेदारी किया करेंगे

शर्त ८– सर्कार अंग्रेज़ीकी नज़र इस बातपर है, कि महाराजाका हाकिमानह हक़, इज़्ज़त और नामवरी, और मारवाड़की ख़ैरख़्वाही जारी रहे, इस वास्ते सर्कारके हाथसे इनमें कमी न होगी, और वह न किसी दूसरेसे इसमें कमी होने देगी, इसकी बाबत सर्कारसे साफ़ वादह होगया है

शर्त ९ – साहिब एजेएट और मारवाड़के अह्लकारोंने आपसमें सलाह की, कि वे महाराजाकी सलाह और जो काइदह मुकर्रर किये जावेंगे, उनके मुवाफ़िक अंग्रेज़ी ख़िराज और सवार ख़र्च, जो बाकी है, उसके देनेके लिये अच्छा बन्दोबस्त करेंगे, उसी तरह आगेको भी ऊपर लिखा रुपया अदा होनेमें फ़र्क न होगा, और नुक्सानका एवज़ वह फ़रीक़ देंगे, जिनकी निस्बत सुबूत हो, और दूसरे रईसोंकी निस्बत मारवाड़का दावा मुकद्दमोंके सुबूतपर अदा होगा

शर्त १०– महाराजाने जागीरें सर्दारोंको दीं, और उनके एवज मुवाफ़क़त हासिल की, और पहिले कुसूर उनके मुआफ़ किये; इसी तरह सर्कार अंग्रेज़ी भी उनके ख़यालके मुवाफ़िक करती है, जिनकी निस्बत उनको पहिले उज़्र था, जैसे स्वरूप याने लक्ष्मीनाथ वगैरह जोगेश्वर और उमराव और अह्लकार

शर्त ११– जो कि एक एजेएट रियासतकी राजधानीमें मुकर्रर हुआ है, इस वास्ते जुल्म और ज़ियादती किसी शख़्सपर न होगी, और किसी तरहका दख़्ल मज़्हबी छ फ़िर्कों (षट दर्शन) की बाबत भी न होगा, और कोई जानवर, जो मारवाड़में धर्मके अनुसार पवित्र और उसका मारना मना है, नहीं मारा जायगा

शर्त १२– जो कुल काम सर्कार जोधपुरके छ महीने या एक वर्ष या डेढ वर्षमें फ़ैसलह पा जायेंगे, तो साहिब एजेएट और फ़ौज अंग्रेज़ी जोधपुरके किलेसे उठ जायेगी, और जो इस मीआदसे पहिले तै पा जायेंगे, तो सर्कार अंग्रेज़ीकी ख़ुशी और रियासत जोधपुरकी लियाकत और ज़ियादह भरोसेका सबब ख़याल होगा

शर्त १३– ऊपर लिखा अह्दनामह पहिले ज़िक्रके मुवाफ़िक मकाम जोधपुरमें तारीख़ २४ सेप्टेम्बर सन् १८३९ ई० को करार पाया, और लेफ़्टिनेएट कर्नेल सदरलैंएड साहिबकी मारिफ़त मन्ज़ूरी और तर्मीमके लिये राइट ऑनरेबल गवर्नर जेनरल हिन्दकी ख़िद्मतमें भेजा जायेगा; और एक ख़रीतह महाराजाके नाम ऊपर लिखे अह्दनामहके मज़मूनके मुवाफ़िक लॉर्ड साहिब बहादुरकी पेशगाहसे जारी होगा

ऊपर लिखा अह्दनामह मारिफ़त कर्नेल सर जॉन सदरलैंएड साहिबके मुवाफ़िक़

इख्तियार दिये हुए राइट ऑनरेबल लॉर्ड जार्ज आक्लैंड, जी० सी० बी०, गवर्नर जेनरल हिन्दके करार पाया.

दस्तखत - रिडमल्ल, वकील. दस्तखत - फौजमल्ल.

मुहर दफ्तर रिडमल्ल		मुहर दफ्तर फौजमल्ल

याद्दाश्त लेफ्टिनेण्ट कर्नेल सदरलैण्ड साहिब

शर्त चौथी- अस्ल मुसव्वदेमे सिर्फ यह लिखा है, कि फौज क़िलेमे रहेगी, और उसपर महाराजाकी यह लिखावट है, कि अच्छा मकाम तज्वीज होगा, इससे मुराद यह है, कि हमारी फौज महलात और जनाने महल और मन्दिरोमे न रहेगी

शर्त पाचवी- जमीदारीके हक़ और दूसरे हक़ लोगोके पहिली शर्तके मुवाफ़िक तै पावेगे

शर्त दूसरी और छठी, इसमे यह जिक्र करना था, कि नाथ लोग रियासती कामोमे दख्ल न रक्खेगे, परन्तु खुद मानसिंहने यह बयान किया, कि वे इन शर्तोसे अच्छी तरह निकाल दिये गये है, क्यों कि वे लोग न तो अह्लकार है, न रियासतके कारबारियोमे है

शर्त नवी- यह भी तज्वीज थी, कि फौज खर्चका जिक्र भी किया जावे, याने जो फौज अब रहेगी, उसका खर्च जोधपुरके ज़िम्मह रहेगा; लेकिन् मानसिंहने बयान किया, कि अल्बत्तह खर्च तो दिया ही जायेगा, परन्तु उसका जिक्र हमेशहके अह्दनामहमे, जो सदैव खिराज और आगेको रियासतके इन्तिजामकी बाबत है, होना कुछ जुरूर नही है

शर्त ग्यारहवी- सीगवाले चौपाये, मोर और कबूतर पवित्र समझे गये हैं, और इनके मारनेकी मनाही करार पाई है

शर्त तेरहवीं- लेफ्टिनेण्ट कर्नेल सदरलैण्ड साहिबकी मारिफत गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारसे इस अह्दनामहके करार पानेका जिक्र अस्ल मुसव्वदहमे पहिले था, परन्तु महाराजाने उसको पीछे रक्खा

अह्दनामह नम्बर ४४

अह्दनामह दर्मियान महाराजा तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, व लेफ्टिनेण्ट कर्नेल आर० एच० कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेण्ट गवर्नर जेनरल, रियासतहाय राजपूतानह, बमूजिब हिदायत चिट्ठी फ़ॉरेन सेक्रेटरी, नम्बरी १३९५, मुवर्रख़ह ३ डिसेम्बर, सन् १८६८ ई०

शर्त १- महाराजा साहिब नीचे लिखे वज़ीरोंको रियासतका काम चलाने के लिये मुकर्रर करते हैं -

जोषी हंसराज, खास दीवान, महता विजयसिंह, अदालत फ़ौज्दारी, महता हरजीवन, दफ़्तर माल, सिंघवी समर्थराज, अदालत दीवानी, पंडित शिवनारायण, और चूंकि आजकल राज्यका खज़ानह ख़ाली है, इसलिये १५ लाख रुपया उनके इख़्तियारमें वास्ते खर्च आमके रखनेका वादह करते हैं. वज़ीरोंको अपने काम बाला बाला महाराजाके हुक्मोंके मुवाफ़िक करने चाहियें, वे कोई नसीहत महलके नौकरों या ज़नानेके आदमियोंकी मारिफ़त न लेवें, और उनको महाराजा और पोलिटिकल एजेण्टकी शामिलात बिदून अपने पैगाम औरोंको भेजनेकी आज़ादी न होगी.

शर्त २- अगर महाराजा या पोलिटिकल एजेण्ट किसी दीवानका चाल चलन ऐसा देखें, कि उसकी मौकूफ़ीकी ज़रूरत हो, या किसी दूसरे सबबसे कोई जगह ख़ाली हो, तो तरफ़ैनकी रज़ामन्दीसे उसकी जगह दूसरा आदमी मुकर्रर होना चाहिये. अगर इस बातपर रज़ामन्दी मुमकिन् न हो, तो इसका फ़ैसलह एजेण्ट गवर्नर जेनरलको करना चाहिये, जो कि महाराजाकी ख्वाहिशोंपर पूरा गौर करेंगे

शर्त ३- ता वक़्ते कि गवर्मेण्ट इन्डियाका हुक्म न हो, कोई तब्दीली उमरावोंके बंधे हुए अमल दरामदमें बमीआद इस अह्दनामहके न होनी चाहिये

शर्त ४- कुल इन्तिज़ाम रियासती ख़ालिसहका और उसके दीवानी व फ़ौज्दारी अमल दरामदका मारिफ़त वज़ीरोंके महाराजाके हुक्मसे होना चाहिये; और उसका एक हिस्सह भी बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेण्टके न तो ख़ारिज कियाजावे, न बदलकर किसी दूसरेको दियाजावे.

शर्त ५- ज़नानहके किसी गांवमें अमल दरामद किसी खूनके मुक़द्दमह और डकैती या सख़्त जुर्ममें न होना चाहिये.

शर्त ६- अगर महाराजाका कोई बेटा या रिश्तहदार या ज़ाती नौकर या ज़नानेका कोई आदमी महलोंकी हद्के बाहर कोई सख़्त जुर्म करे, तो महाराजा-

उस मुआमलेको तै करेंगे, और अगर पोलिटिकल एजेण्ट दर्याफ़्त करे, तो उस मुक़द्दमहकी इत्तिला मए हुक्म मस्तूरहके उनको देदेवे

शर्त ७- वज़ीरोंको महलोंके इहातेमें हुकूमत न करना चाहिये

शर्त ८- महाराजा साहिब, पोलिटिकल एजेण्टके हर एक बन्दोबस्तकी तामील करनेपर, जो कि महाराज कुमार जशवन्तसिंहजी और छोटे बेटोंके वास्ते मुस्तकिल तज्वीज हुआ है, पाबन्द होते हैं पोलिटिकल एजेण्टको इस काममें तीन ठाकुरों और तीन मुतसद्दियोंकी कमेटीसे मदद मिलनी चाहिये, जो कि एजेण्ट गवर्नर जेनरलकी तरफ़से नामज़द की जावे कोई दावा, कि जिसपर इस कमेटीके चार मेम्बरोंकी राय पोलिटिकल एजेण्टसे मिलजाय, उसको मिस्ल फ़ैसलह किये हुएके समझना चाहिये

शर्त ९- महाराजा इस बातका इक़ार करते हैं, कि कोई बन्दोबस्त, जो पोलिटिकल एजेण्ट अकेले या किसी और सलाहकारकी रायसे करेंगे, और एजेण्ट गवर्नर जेनरल नीचे लिखी हुई दो बातोंपर उसको मज्बूत करदेवेंगे, तो वह उसकी तामील करेंगे-

अव्वल- हुक्मनामहके सवालका, या मारवाडके ठाकुर, जो तलवार बधाईका रुपया देते हैं, उसका मुस्तकिल इन्तिजाम

दूसरे- कुल झगडोंका बन्दोबस्त, जो कि दर्बार और आउवा, गूलर, बाजावास, आसोप, और आलणियावासके ठाकुरोंमें हो

दर्बार इन दो बातोंपर एजेण्ट गवर्नर जेनरलके फ़ैसलहके मुक़ाबलहमें बिलादेर अपील करनेका इख़्तियार रखते हैं, लेकिन् वे बिला तअ़ल्लुक़ गवर्मेंट हिन्दके फ़ैसलहपर क़ाइम रहेंगे

शर्त १०- दीवान छ माहीकी किस्तसे बराबर एक लाख अस्सी हज़ारसे दो लाख पचास हज़ार रुपये तक हैसियतके मुवाफ़िक महलोंके खानगी ख़र्चके वास्ते, जिसको महाराजा मुक़र्रर कर देवेंगे दियाकरे, यह रुपया महाराजा और एजेण्ट गवर्नर जेनरलकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक पोशीदह तख़मीनह होनेपर तै हुआ है किसी दीवानको बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेण्टके न तो महलमें कोई उह्दह मन्ज़ूर करना चाहिये, और न कोई नई नौकरी करना चाहिये

शर्त ११- रियासतकी आमदनीका रुपया बिला मर्ज़ी पोलिटिकल एजेण्टके ख़ास खज़ानहसे न बदला जाये, और न किसी जगह भेजाजावे, और हिसाब इस तौरसे रक्खाजावे, कि रियासतकी मालगुज़ारीकी हालत बड़ी ईमानदारीसे दिखलाई जावे, और उससे साफ़ साफ़ समझा जासके, रियासतके कुल हिसाब

उस आदमीके मुलाहजहको खुले रहने चाहिये, जिसको कि एजेण्ट गवर्नर जेनरल मुक़र्रर करे

शर्त १२- इस अह्दनामहपर चार वर्ष तक अमल रहे, ता वक्ते कि उस अर्सेमे मारवाडकी हुकूमतमे कम्जोरी और बद इन्तिजामी शुरू न हो, जो कि गवर्मेण्ट हिन्दको जल्द दख्ल करनेको मजबूर करे

अह्दनामह नम्बर ४५

तर्जमह खरीतह महाराजा जोधपुर, जी० सी० एस० आई०, ब नाम एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, मुवर्रखह २९ जुलाई, सन् १८६६ ई०

आपका खरीतह मुवर्रखह २९ फेब्रुअरी गुजश्तहका, इस मज्मूनसे आया, कि गवर्मेण्ट उन कौल व करारोको, जो कि मेरी पहिली चिट्ठीमे लिखे थे, रेल बननेके बारेमे इस दर्बारकी तरफसे अस्ली इन्कार समझती है मै आपको ज़ाहिर करना चाहता हू, कि मैने रेल्वेको कभी ना मजूर नही करना चाहा, दर हक़ीक़त मै जानता हू, कि उससे मारवाडको कितने फाइदे होगे, जो कुछ कि मैने पहिले दरबारे नुक्सान महसूल सायरके लिखा था, उसकी बुन्याद यह थी, कि बाहरका बहुत कम माल मारवाड़मे खर्च होता है, और यह कि सिवाय नमकके और कोई ऐसी चीज मारवाडमे नहीं पैदा होती, जो बाहर भेजीजावे, इसलिये खास आमदनी उन रवानगीकी चीज़ोके महसूलसे हासिल होती है, जो कि उसकी मारिफत होकर जाती है याने बिकनेके वास्ते इस इलाकहमे खोली नही जाती, और इस रकमके नुक्सानसे बेशक मेरी मालगुजारीमे बहुत कमी होगी ताहम ब लिहाज आपकी चिट्ठीके, जो बनाम मेरे थी, और ब्रिटिश गवर्मेन्टकी मर्जीके और मेरी कुल रअय्यतके फाइदहके, मै रेल्वेका मारवाड़मे होकर निकलना नीचे लिखी हुई शर्तोंपर मजूर करता हू -

शर्त १- क़रीब २०० फीटके रकबहमे जमीन सड़क या स्टेशनोंके लिये मुफ्त दीजावेगी, और जो कुछ नुक्सान इस मुल्कके गांवो, कूओ या बागोमे उसके भीतर चलनेसे होगा, दर्बार सहेगे

शर्त २- मिल्कियतका हक़ इस जमीनपर इस दर्बारका रहेगा, लेकिन् और तमाम हक़ गवर्मेण्टको देदिये जायेगे, और कोई मुज्रिम इस रियासतका इस ज़मीनमे आश्रय न ले सकेगा, और इस जमीनमे कोई आश्रय ले, तो इस रियासतके अह्लकारोके सपुर्दकर दिया जायेगा; कोई मुज्रिम दूसरी रियासतका बाशिन्दह होकर इस जमीनमे आश्रय लेवे, तो वह वास्ते तहकीक़ातके इस रियासतके पोलिटिकल एजेण्टके सुपुर्द किया जावेगा.

शर्त ३– तमाम अस्बाब, बे खोले हुए इस रियासतमे होकर बिना किसी महसूलके चले जायेगे, लेकिन् जो अस्बाब कि बाहरसे आकर मारवाडमे खोला जावे, या जो अस्बाब कि मारवाड़मे लादा जावे, और वहासे आगेको जाता होवे, तो क़ाबिल अदा करने महसूल इस रियासतके होगा

शर्त ४– जो कि लकड़ी मारवाडमे कम है, इसलिये, रेल, जो उसमे होकर गुज़रेगी, उसके वास्ते लकडी नही दी जासक्ती है जब कि किसी रेलकी सडकका मारवाडमे होकर निकलना तै होजावे, तो उसके बनानेमे हर एक मुम्किन मदद दी जायेगी.

अह्दनामह नम्बर ४६

अह्दनामह आपसमे बृटिश गवर्मेण्ट और श्रीमान् तख्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसो और जानशीनोके, एक तरफ़से कप्तान यूजेनी क्लटरबक इम्पी, पोलिटिकल एजेण्ट मारवाड, और पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट मल्लानीने ब इजाज़त लेफ्टिनेण्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख्तियारोके मुवाफिक, जो कि उनको राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आई०, वॉइसराय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानने दिये थे, और दूसरी तरफ़से जोषी शिवराज, मुसाहिब जोधपुरने उक्त महाराजा तख्तसिंहके दिये हुए इख्तियारोसे जारी किया

शर्त १– कोई आदमी अंग्रेजी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाकहमे बडा जुर्म करे, और मारवाडकी राज्य सीमामे आश्रय लेना चाहे, तो मारवाड़की सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेजीको सुपुर्द करदेगी

शर्त २– कोई आदमी मारवाड़के राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामे कोई बडा जुर्म करे, और अंग्रेजी मुल्कमे जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम जोधपुरके राज्यको काइदहके मुवाफ़िक सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त ३– कोई आदमी जो, मारवाड़के राज्यकी रअय्यत न हो, और मारवाड की राज्यसीमामे कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेजी सीमामे आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी उसको गिरिफ्तार करेगी; और उसके मुक़द्दमहकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमे होगी अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुक़-

दमोका फैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमे होता है, जिसके तह्तमे वारदात होनेके वक्तपर मारवाडकी मुल्की निगहबानी रहे

शर्त ४- किसी हालतमे कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बडा मुज्रिम ठहरा हो, दे देनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुताबिक खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाकहमे कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाकहके मुताबिक सहीह समझी जावे, जिसमे कि मुज्रिम पाया जावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा, और वह मुज्रिम करार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है

शर्त ५- नीचे लिखे हुए काम बडे जुर्म समझे जावेगे -

१ खून- २ खून करनेकी कोशिश- ३ वहशियानह कत्ल- ४ ठगी- ५ जहर देना- ६ जिनाबजब्र- (जबर्दस्ती व्यभिचार)- ७ जियादह जख्मी करना- ८ लड्का बाला चुरा लेजाना- ९ औरतोका बेचना-१० डकैती- ११ लूट- १२ सेध (नकब) लगाना- १३ चौपाये चुराना- १४ मकान जलादेना- १५ जालसाजी करना- १६ झूठा सिक्क चलाना- १७ धोखा देकर जुर्म करना- १८ माल अस्वाब चुरालेना- १९ ऊपर लिखे हुए जुर्मोमे मदद देना, या वर्गलान्ना (बहकाना)

शर्त ६- ऊपर लिखी हुई शर्तोके मुताबिक मुज्रिमोको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमे, जो खर्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पडेगा, जिसके कहनेके मुताबिक ये बाते कीजावे

शर्त ७- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्त तक बर्करार रहेगा, जब तक कि अह्दनामह करने वाली दोनो सर्कारोमेसे कोई उसके रद्द होनेका इश्तिहार न देवे

शर्त ८- इस अह्दनामहकी शर्तोका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो दोनो सर्कारोके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोके बर्खिलाफ हो

मकाम आबू, राजपूतानह तारीख ६ ऑगस्ट सन् १८६८ ई०

दस्तखत- ई० सी० इम्पी,
पोलिटिकल एजेण्ट.

दस्तख़त-जोषी शिवराज, मुसाहिब,
महाराजा जोधपुर, जी० सी० एस० आई०.

दस्तखत- जॉन लॉरेन्स,
वॉइसराय, गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अहदनामहकी तस्दीक श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर तारीख २६ ऑगस्ट, सन् १८६८ ई० को की

दस्तखत- डब्ल्यू० एस० सेटन कार, सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द

अहदनामह नम्बर ४७

अहदनामह आपसमे सर्कार अंग्रेजी और श्री मान् महाराजा तख्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसो और जानशीनोके, जो एक तरफ़ कर्नेल जॉन सी० ब्रुक, काइम मकाम पोलिटिकल एजेएट, जोधपुरने व हुक्म लेफ्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई० और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके, जिनको पूरा इख्तियार श्री मान् राइट ऑनरेबल रिचर्ड साउथवेल बर्क, अर्ल मेओ, वाइसरॉय, गवर्नर जेनरल हिन्दने दिया था, और दूसरी तरफ़ जोषी हंसराज, मुसाहिब मारवाडके साथ किया, जिसको उक्त महाराजा तख्तसिंहसे पूरा इख्तियार मिला था

शर्त १- नीचे लिखे हुए अहदनामहकी शर्तोंके मुताबिक जोधपुरकी सर्कार साभर झीलके किनारेकी जमीनकी हद्दके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमे लिखा है) नमक बनाने और बेचने तथा इस हद्दके दर्मियान पैदा होनेवाले नमकपर महसूल लगानेका हक़ सर्कार अंग्रेजीको देदेवेगी

शर्त २- यह पट्टा उस वक्त तक काइम रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेजी इसको छोडनेकी ख्वाहिश न करे, इस शर्तपर कि सर्कार अंग्रेजी जोधपुरकी सर्कारको उस तारीखसे दो वर्ष पहिले इस बन्दोबस्तके खत्म करनेका इरादह जाहिर करे, जिससे कि पट्टा खत्म होनेका इरादह रखती है

शर्त ३- साभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका काम चलानेके वास्ते सर्कार अंग्रेजीको लाइक करनेके लिये सर्कार जोधपुर, सर्कार अंग्रेजीको और उसके मुकर्रर किये हुए अफ्सरोको पूरा इख्तियार देवेगी, कि शुब्हेकी हालतमे नीचे लिखी हुई हद्दके भीतर मकान और दूसरी जगह, जो खुली या बन्द हो, उसके भीतर जावे और तलाशी लेवे, और अगर कोई शख्स उस हद्दके भीतर नमक बनाने, बेचने, हटाने, या बगैर लाइसेन्सके बनाने वा दूसरे देशसे लेआनेकी मनाहीके निस्बत सर्कार अंग्रेजीके मुकर्रर किये हुए काइदहके बर्खिलाफ कार्रवाई करते हुए गिरिफ्तार हो, तो उसको गिरिफ्तार करे, जुर्मानह करे, जेलखानह भेजे, माल अस्बाब ज़ब्त करे, या और किसी तरहसे सज़ा देवे

शर्त ४- झीलके किनारेकी जमीन, जिसमे सांभरका कस्बह और बारह दूसरे खेडे, और वह बिल्कुल इलाकह जिसपर कि अब जोधपुर और जयपुर दोनोका कब्जह है, शामिल है, उसका निशान किया जायगा, और निशानकी लाइनके भीतरकी बिल्कुल जमीन तथा झीलका या उसके सूखे तलेका हिस्सह, जो ऊपर कही हुई दोनो रियासतोके मातह्त है, वही हद समझी जायगी, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी और उसके अफ्सरोको तीसरी शर्तके इख्तियार रहेगे.

शर्त ५- कही हुई हद्दोके भीतर और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक काइदोकी कार्रवाई करानेके लिये और नमकके बनाने, बेचने, हटाने और बगैर इजाज़तके लानेसे रोकनेके लिये जहां तक ज़ुरूरत हो, सर्कार अंग्रेजी या उसकी तरफ़से इख्तियार पाये हुए अफ्सरोको इख्तियार होगा, कि इमारतो या दूसरे मतलबोके लिये ज़मीन लेलेवे और सडक, आड, झाडी या मकान बनावे और इमारते या दूसरा सामान हटा देवे. ऊपर लिखे हुए किसी मतलबके लिये जोधपुर सर्कारकी खिराज देनेवाली ज़मीनपर सर्कार अंग्रेज़ीका दख्ल करलिया जावे, तो वह सर्कार जोधपुरको उस खिराजके बराबर सालानह किरायह दिया करेगी. जब कभी किसी शख्सकी जायदादको सर्कार अंग्रेजी या उसके अफ्सर किसी तरह इस शर्तके मुताबिक़ नुक्सान पहुचावेगे, तो जोधपुरकी सर्कारको एक महीने पेश्तरसे इत्तिला दी जायगी, और सर्कार अंग्रेजी उस नुक्सानका बदला मुनासिब तौरसे चुकादेवेगी. जब किसी हालतमे सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ्सर और मालिक जायदादके दर्मियान नुक्सानकी तादादके बारेमे बह्स होगी, तो तादाद पचायतसे ठहराई जायेगी.

ऊपर लिखी हुई हद्दोंके भीतर इमारतोके बनानेसे सर्कार अंग्रेज़ीका कोई मालिकानह हक़ ज़मीनपर न होगा, जो कि पट्टेकी मीआद ख़त्म होनेपर सर्कार जोधपुरके कब्जहमे वापस चली जायेगी, मए उन इमारतो और सामानके जो कि सर्कार अंग्रेजी वहांपर छोड़ देवे. किसी मन्दिर या मज़्हबी पूजाके मकानमे दख्ल नहीं दिया जायेगा

शर्त ६- जोधपुर सर्कारकी मंजूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक कचहरी क़ाइम करेगी, जिसका इख्तियार एक लाइक़ अफ्सरको रहेगा, जो ऊपर बयान की हुई हद्दोके भीतर अक्सर इज्लास करेगा, इस गरज़से कि उन मुक़द्दमोंकी रूबकारी कीजावे, जो कि शर्त तीसरीमे लिखे हुए काइदोके बर्खिलाफ़ कार्रवाईके सबब दाइर होवे, और तमाम मुजिमोको सज़ा दीजावे; और सर्कार अंग्रेज़ीको इख्तियार है, कि जिन

मुजिमोंको जेलखानह होवे, उनको चाहे उक्त हद्दोंके भीतर या अपनेही इलाकहमे जहा मुनासिब हो कैद करे

शर्त ७- पट्टेके शुरू होनेकी तारीखसे और उसके पीछे गवर्मेंएट अंग्रेजी वक्त वक्तपर कीमतका निर्ख मुकर्रर करेगी, जिसके मुताबिक वह नमक बेचा जावेगा, जो कि उक्त हद्दोके भीतर बनाया जावे, और जो जोधपुर व जयपुरकी हद्दोंके बाहर भेजा जावे.

शर्त ८- वह नमक, जिसपर कि सर्कार जोधपुर और जयपुर दोनोकी मिल्कियत हो, और पट्टा शुरू होनेके वक्त उन हद्दोके भीतर मौजूद रहे, जोधपुर सर्कारका हिस्सह ऊपर लिखी हुई मिक्दारका आधा नीचे लिखी हुई शर्तोंपर जोधपुर सर्कारकी तरफसे सर्कार अंग्रेजीको दे दिया जावेगा -

जोधपुरकी सर्कार अपना हिस्सह पांच लाख दस हज़ार मन अंग्रेजी तोलके नमकमेसे सर्कार अंग्रेज़ीको बिला कीमत देवेगी लिखी हुई मिक्दारके बाकीमेसे जोधपुर सर्कारका जो हिस्सह है, उसकी कीमत साढे छ आने मन अंग्रेजी तोलके हिसाबसे गिनी जायेगी, और उसी निर्खसे सर्कार अंग्रेजी जोधपुरकी सर्कारको कीमत अदा करेगी, इस शर्तपर कि यह साढ़े छ आने मन जोधपुर सर्कारको उसी हालतमे दिया जावेगा, जब किसी सालमे आठ लाख पच्चीस हजार अंग्रेजी मनसे ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेजी बेचे, या बाहरको भेजे, और उस हालतमे भी बढतीके उसी हिस्सहपर जो सर्कार जोधपुरका है, और जब तक इस सालानह बढ़तीकी कुल मिक्दार नमककी पूरी मिक्दारके बराबर न हो, जो पाच लाख दस हजार अंग्रेजी मनसे जियादह और उसके अलावह है, अंग्रेजी सर्कार उस बढतीको बेचावकी कीमतपर बीस रुपये सैकडेका रसूम न अदा करेगी, जो कि बारहवी शर्तमे लिखा है

शर्त ९- कोई महसूल, चुगी, राहदारी या और किसी तरहका जोधपुर सर्कार खुद नहीं जारी करेगी, न किसी दूसरे शख्सको इजाज़त देवेगी, कि वह उस नमकपर जारी करे, जो कही हुई हद्दोके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी बनावे या बेचे, या जिस वक्त कि अंग्रेजी पर्वानहके ज़रीएसे वह जोधपुरके इलाकहमे होकर जोधपुरके बाहर किसी जगह जाता हो.

शर्त १०- इस अहदनामहकी किसी बातसे कही हुई हद्दोके भीतर दीवानी व फ़ौज्दारी वगैरह सब मुआमलातमे सर्कार जोधपुरके अधिकारमे खलल न आवेगा, सिवाय उन मुआमलोके जो नमकके बनाने, बेचने या हटाने या बगैर लाइसेन्सके बनाने या दूसरे देशसे लानेकी रोकसे तअल्लुक रखते हो

शर्त ११- नमकके बनाने, बेचने और हटाने तथा बगैर लाइसेन्सके

बनाने या बग़ैर इजाज़तके कही हुई हद्दोंके भीतर बाहरसे लानेके रोकनेमें जो कुछ ख़र्च पड़ेगा, उस सबसे सर्कार जोधपुर महफ़ूज़ रहेगी, और सर्कार अंग्रेज़ी को, जो पट्टा मिला है, उसके एवज़में जोधपुर सर्कारको एक लाख पच्चीस हज़ार रुपये कल्दार सालानह खिराज दो छ माही किस्तोंमे, कही हुई हद्दके भीतर, जो नमक बेचा जाता है, उसमे सर्कार जोधपुरके हिस्सहके लिये, देनेका वादह करती है; और यह सालानह खिराज जिसकी तादाद एक लाख पच्चीस हजार रुपया अंग्रेज़ी सिक्क है, नमक, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर बेचाजावे, या उससे बाहर चालान किया जावे, उसपर बग़ैर लिहाज़के लिया जायेगा

शर्त १२– अगर किसी सालमे कही हुई हद्दोंके भीतर आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेज़ी मनके ब निस्बत जियादह नमक सर्कार अंग्रेज़ीसे बेचाजावे, या उस हद्दके बाहर चालान कियाजावे, तो सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको उस बढतीपर (आठवी शर्तमे जो मिक्दार लिखी है, उसके ख़र्च होजानेके पीछे) बीस रुपये सैकडेके हिसाबसे एक महसूल फी मनके उस दामपर देगी, जो कि सातवी शर्तके पहिले जुम्लेके मुताबिक बिकनेका निर्ख मुकर्रर किया गया है

जब कभी इस बारेमे सन्देह हो, कि किस सालमे कितने नमकपर महसूल लेना है, तो जो हिसाब सर्कार अंग्रेज़ीके ख़ास अफ़्सरकी तरफ़से पेश किया जावे, जो साम्भरका मुख़्तार है, इस बातकी क़तई गवाही समझी जायेगी, कि दर अस्ल कितना नमक सर्कार अंग्रेज़ीने उस वक्मे बेचा, या बाहर चालान किया है, जिसका जिक्र हिसाबमे है; शर्त यह है, कि जोधपुर सर्कार अपना एक अफ़्सर फ़रोख़्तका हिसाब रखनेको अपनी तसल्लीके वास्ते रखनेसे न रोकीजावे.

शर्त १३– सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि हर साल सात हज़ार मन अंग्रेज़ी तोलका नमक बग़ैर कुछ कीमत वग़ैरहके जोधपुर दर्बारके वास्ते दिया करेगी, यह नमक उस जगहपर दियाजायेगा, जहा कि बनता है, और उस अफ़्सरको दियाजावेगा, जिसको जोधपुर सर्कारकी तरफ़से लेनेका इख़्तियार मिला हो

शर्त १४– सर्कार अंग्रेज़ीका कोई दावा किसी ज़मीनके या दूसरे ख़िराजपर नहीं होगा, जो नमकसे सरोकार नही रखता, और सांभरके क़स्बे या दूसरे गावों या ज़मीनोंसे दियाजाता है, जो कही हुई हद्दोंके भीतर शामिल है.

शर्त १५– अंग्रेज़ी सर्कार जोधपुरके इलाक़हमें उस हद्दके बाहर नमक नही बेचेगी, जो कि इस अ़हद्नामहके या किसी दूसरेके मुताबिक़ मुकर्रर कीगई हो.

शर्त १६– अगर कोई शख़्स, जिसको सर्कार अंग्रेज़ीने कही हुई हद्दोंके भीतर

मुकर्रर किया हो, कोई जुर्म करके भागगया हो, या कोई शख़्स इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके क़ाइदोंके बर्खिलाफ़ कोई काम करके भागगया हो, तो जोधपुरकी सर्कार जुर्मकी पुख़्तह गवाही होनेपर हरएक तरह उसको गिरिफ्तार करने और कही हुई हद्दोंके भीतर अंग्रेजी हाकिमोंको सुपुर्द करनेकी कोशिश करेगी, जिस हालतमें कि वह शख़्स जोधपुरके इलाकहके किसी हिस्सहमें होकर गुज़रा हो, या कहीं आश्रय लिया हो.

शर्त १७- इस अह्दनामहकी कोई शर्त अमल दरामदके लाइक नहीं होगी, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी दर असल कही हुई हद्दोंके भीतर नमकके कारखानहका काम अपने हाथमें न लेवे काम लेनेकी तारीख सर्कार अंग्रेज़ी मुकर्रर करसक्ती है, इस शर्तसे कि अगर पहिली मई सन् १८७१ ई० को या उसके पेश्तर चार्ज न लियाजावे, तो इस अह्दनामहकी शर्तें मन्सूख होजावेंगी

शर्त १८- इस अह्दनामहकी कोई शर्तें बगैर दोनों सर्कारोंकी पेश्तर रज़ामन्दी होनेके न बदली जायेंगी, न मन्सूख् की जायेंगी, और अगर कोई फ़रीक़ इन शर्तोंके मुताबिक चलनेमें कसूर, या बेपर्वाई करे, तो दूसरा फरीक़ इस अह्दनामहकी पाबन्दीसे छूट जावेगा

दस्तख़त कियागया, मुहर हुई, और आपसमें तबादला हुआ, ब मक़ाम जोधपुर, तारीख़ २७ जैन्युअरी सन् १८७० ईसवी, मुताबिक़ माघ कृष्ण ११, सम्वत् १९२६

फ़ार्सीमें मुहर	जोधपुर एजेंसी दफ्तर

दफ्तरकी मुहर
रियासत जोधपुर.

दस्तख़त-जे० सी० ब्रुक, कर्नेल,
काइम मक़ाम पोलिटिकल
एजेंट, मारवाड़.

मुहर	दस्तख़त- मेओ.

दस्तख़त- जोषी हंसराजके,
हिन्दीमें.

गवर्मेंटकी मुहर

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने ब मकाम फ़ोर्ट विलिअम तारीख़ १५ फ़ेब्रुअरी सन् १८७० ईसवीको की

मुहर

दस्तखत- सी० यू० एचिसन्,
काइम मकाम सेक्रेटरी, गवर्मेण्ट हिन्द,
फ़ॉरेन डिपार्टमेण्ट

अह्दनामह नम्बर ४८

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेजी गवर्मेण्ट और श्रीमान् तख़्तसिंह, जी० सी० एस० आई०, महाराजा जोधपुर व उनके वारिसों और जानशीनोंके, जिसको एक तरफ़ कर्नेल जॉन चीप ब्रुक, काइम मकाम पोलिटिकल एजेएट, जोधपुरने लेफ़्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड् हार्ट कीटिंग, सी० एस० आई०, और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानाके हुक्मसे किया, जिनको पूरा इख़्तियार श्रीमान् राइट ऑनरेबल रिचर्ड साउथवेल बर्क, अर्ल ऑव मेओ, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दकी तरफ़से मिला था, और दूसरी तरफ़ जोशी हंसराज, मुसाहिब मारवाड़ने मज्कूर महाराजा तख़्तसिंहसे पूरे इख़्तियारात पाकर किया

शर्त १- नीचे लिखे हुए अह्दनामहकी शर्तोंके मुताबिक सर्कार जोधपुर सर्कार अंग्रेजीको सांभरकी झीलके किनारेके इलाकहकी हद्दोंके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमें बतलाया गया है) नमक बनाने और बेचने और उन हद्दोंके भीतर, जो नमक बनता है, उसपर महसूल लगानेका हक़ पट्टा करके दे देवेगी

शर्त २- यह पट्टा उस वक्त तक जारी रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेजी इसको छोड़नेकी ख्वाहिश न करे, शर्त यह है, कि सर्कार अंग्रेजी इस बन्दोबस्तके ख़त्म करनेके इरादहकी इत्तिला सर्कार जोधपुरको उस तारीख़से दो वर्ष पेश्तर देवे, जिससे कि वह पट्टा ख़त्म करनेकी ख्वाहिश रखती हो

शर्त ३- सर्कार अंग्रेजीको सांभरझीलके पास नमक बनाने और बेचनेके लाइक करनेके लिये, जोधपुर सर्कार, सर्कार अंग्रेजी और उसके अफ़्सरोंको, जो इस कामके वास्ते सर्कार अंग्रेजीसे मुकर्रर कियेगये हों, इख़्तियार देवेगी, कि शुब्हेकी हालतमें लिखी हुई हद्दोंके भीतर मकानों और तमाम दूसरी जगहों (घिरी हों या नहीं) के भीतर जावे, और तलाश करे, और गिरिफ़्तार करके जुर्मानह, जेलख़ानह, माल ज़ब्त करके, या दूसरी तरहसे सजा देवे, उन तमाम शख़्सोंको या अकेले शख़्सको, जो उन हद्दोंके भीतर, नमक बनाने, बेचने, व हटाने या बग़ैर लाइसेन्सके बनाने या बाहरसे ले आनेकी मनाहीके निस्बत, जो क़ाइदे सर्कार अंग्रेजी मुकर्रर करे, उनमेंसे किसीके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करनेके लिये गिरिफ़्तार हों

शर्त ४- जमीनका एक हिस्सह, जो कि बराबर झीलके किनारेपर है, जिसपर अलग इख्तियार जोधपुरका है, जिसमे नावा, गुढा, और दूसरे गाव व खेड़े शामिल है, और औसतसे जो चौडाईमे, झीलके पानीकी सबसे ऊची सत्हसे नापे जानेपर दो मील हो, उसका निशान कियाजावेगा, और इस निशानके भीतरकी तमाम जगह और खुद झील या उसके सूखे तलेके वे हिस्से, जिनपर अब जोधपुरका अकेला और अलहदह अमल है, उस हदमे समझे जावेगे, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेजी व उसके अफ्सरोको तीसरी शर्तमे लिखे हुए इख्तियारात रहेगे

शर्त ५- कही हुई हद्दोके भीतर, और नमकके बनाने, बेचने, व हटानेकी मदद व हिफाजत, या बाहरसे लाना रोकनेके लिये, जहा तक जुरूरत हो, और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक मुकर्रर किये हुए काइदोका अमल दरामद करनेके लिये, सर्कार अंग्रेजी व उसकी तरफसे मुख्तार किये हुए अफ्स-रोको इख्तियार होगा, कि मकान बनाने या दूसरे मत्लबोके लिये जमीन लेवे, सडक, आड़, झाडी या इमारते बनावे, और इमारते या दूसरी जायदाद हटादेवे अगर कोई जमीन, जिससे सर्कार जोधपुरको खिराज मिलता है, ऊपर कहे हुए किसी मत्लबोके लिये सर्कार अंग्रेजीके तह्तमे रखलीजावे, तो सर्कार अंग्रेजी उस खिराजके बराबर सालानह महसूल सर्कार जोधपुरको देवेगी

हर एक हालतमे, जिसमे कि किसी तरह किसी शख्सकी जायदादको नुक्सान पहुचानेवाला कोई काम सर्कार अंग्रेजी या उसके अफ्सर इस शर्तके मुताबिक करेगे, तो जोधपुर सर्कारको एक महीने पेश्तरसे इत्तिला दी जायेगी, और ऐसी तमाम हालतोमे सर्कार अंग्रेजी उस नुक्सानका बदला मुनासिब तौरपर चुका देवेगी अगर सर्कार अंग्रेजी या उसके अफ्सरो और जायदादके मालिकके दर्मियान नुक्सान की रकमके बारेमे बह्स होगी, तो यह रकम पचायतसे ठहराई जावेगी.

कही हुई हद्दोके भीतर कोई इमारत बनानेसे ज़मीनपर सर्कार अंग्रेजीका मालिकानह हक्क किसी तरह न होगा, लेकिन् पट्टेकी मीआद खत्म होनेपर जमीन जोधपुर सर्कारको वापस मिलेगी, मए तमाम इमारतो या सामानके, जो सर्कार अंग्रेजी वहापर छोडदेवे किसी मन्दिर या मज्हबी पूजाकी जगहमे दख्ल न दिया जायेगा

शर्त ६- जोधपुर सर्कारकी मन्जूरीसे सर्कार अंग्रेजी एक लाइक अफ्सरके मातह्त एक अदालत काइम करेगी, इस मत्लबसे कि तीसरी शर्तमे लिखे हुए काइदोके बर्खिलाफ चलनेवाले तमाम शख्सोकी रूबकारी कीजावे, और उनको

सजा दीजावे, जब कि वे मुज्रिम साबित होजावे, और सर्कार अंग्रेज़ीको इरितयार है, कि जिन मुज्रिमोंको जेलखानहका हुक्म हुआ है, उनको कही हुई हद्दोंके भीतर या और कहीं, जहां मुनासिब समझे, क़ैद करे

शर्त ७- पट्टा शुरू होनेकी तारीख़से और उसके बाद सर्कार अंग्रेज़ी वक्त वक्त पर निर्ख़ मुक़र्रर करेगी, जिसके मुताबिक वह नमक बेचा जावेगा, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर बनाया जावे

शर्त ८- पट्टा शुरू होनेके वक्तपर, जितना नमक कही हुई हद्दोंके भीतर मौजूद रहेगा, वह तमाम सर्कार जोधपुरकी तरफ़से सर्कार अंग्रेज़ीको नीचे लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक देदिया जावेगा -

सर्कार जोधपुर छ लाख मन अंग्रेज़ी तोलका नमक अंग्रेज़ी सर्कारको बिला कीमत पूंजीके तौरपर कारखानह शुरू करनेके लिये देवेगी उस पूंजीके बाकी हिस्सहकी कीमत जोधपुर सर्कारको साढे छ आने मन अंग्रेज़ी तोलके हिसाबसे दीजावेगी, और इसी निर्ख़से सर्कार अंग्रेज़ी जोधपुरकी सर्कारको कीमत अदा करेगी, इस शर्तपर कि यह साढे छ आने मनकी निर्ख़ सर्कार जोधपुरको दिया जाना उसी हालतमें शुरू हो, जब किसी सालमें सर्कार अंग्रेज़ी नौ लाख मन नमकसे ज़ियादह बेचे, या बाहर भेजे, और जब तक कि ऊपर कहे हुए छ लाख अंग्रेज़ी मनसे ज़ियादह सालानह बढती दिये हुए नमककी पूंजीके बराबर न होजावे, अंग्रेज़ी सर्कार उस बढ़तीपर चालीस रुपये सैकड़ेका रुसूम, जैसा कि शर्त बारहवींमें लिखा है, नहीं देवेगी.

शर्त ९- जोधपुर सर्कार उस नमकपर, जो कि कही हुई हद्दोंके भीतर सर्कार अंग्रेज़ी बनावे, या बेचे, या जब कि वह जोधपुरके इलाकहमें होकर अंग्रेज़ी पासके ज़रीएसे जोधपुरके बाहर किसी दूसरी जगहको जाता हो, किसी तरहका महसूल चुंगी, राहदारी या और कोई महसूल न तो ख़ुद लगावेगी, या किसी दूसरे शरूसको लगाने देगी; शर्त यह है, कि जोधपुरके इलाकहके भीतर ख़र्चके लिये जितना नमक बेचाजावे, उस तमाम नमकपर उस रियासतकी सर्कार जो महसूल चाहे, लगावे

शर्त १०- इस अह्दनामहकी किसी बातसे कही हुई हद्दोंके भीतर दीवानी व फ़ौज्दारीके तमाम मुआमलातपर, जो नमकके बनाने, बेचने, व हटाने या बगैर लाइसेन्स बनाने, या बाहरसे लानेकी मनाहीसे निस्बत रखते हों, जोधपुर सर्कारका इरितयार किसी तरह ख़ारिज नहीं किया जायेगा

शर्त ११- कही हुई हद्दोंके भीतर नमकके बनाने, बेचने व हटाने, और बगैर लाइसेन्स बनाना और बाहरसे लाना रोकनेके तमाम ख़र्चसे सर्कार जोधपुर महफ़ूज

रहेगी, और इस अह्दनामहके मुताबिक उसकी तरफसे, जो पट्टा और दूसरे हुकूक सर्कार अंग्रेज़ीको मिले हैं, उसके एवज़मे सर्कार अंग्रेज़ी वादह करती है, कि जोधपुर सर्कारको सालानह किराया तीन लाख रुपया सिक्के अंग्रेजी दो (छ माही) किस्तोंमे दिया करेगी, और इस सालानह किराये तीन लाख रुपये सिक्के अंग्रेजीके अदा करनेमे इस बातपर कुछ लिहाज नहीं किया जायेगा, कि दर अस्ल कितना नमक कही हुई हद्दोंके भीतर बेचागया, या उसके बाहर चालान कियागया ऊपर लिखे हुए तीन लाख रुपयोंकी जमामे भूम, राहदारीका महसूल, और हर तरहके हक़ कुचामनके ठाकुर और दूसरोंके शामिल है, जो सर्कार जोधपुर अदा करनेका वादह करती है

शर्त १२- अगर कही हुई हद्दोंके भीतर किसी सालमे नव लाख मन अंग्रेजी तोलसे ज़ियादह नमक सर्कार अंग्रेजी बेचे, या बाहर भेजे, तो वह उस बढती (आठवीं शर्तमे कही हुई पूंजीके खर्च होने बाद) पर जोधपुर सर्कारको चालीस रुपये सैकडेके हिसाबसे एक महसूल फी मनकी कीमतपर देगी, जो सातवीं शर्तके मुताबिक बिक्रीका निर्ख बाधागया हो

अगर कभी इस बारेमे सन्देह होवे, कि किसी सालमे कितने नमकपर रुसूम लेना है, तो जो हिसाब साभरका मुख्तार ख़ास अंग्रेजी अफ़्सर पेश करेगा, इस बातकी पुख्तह गवाही समझी जावेगी, कि दर अस्ल सर्कार अंग्रेजीने कितना नमक उस वक़्मे, जिसके बाबत कि हिसाब है, बेचा या भेजा है, शर्त यह है, कि सर्कार जोधपुर अपनी तसल्लीके लिये फरोख्तका हिसाब रखनेके वास्ते अपना एक अफ्सर भेजनेसे बाज न रक्खी जावे

शर्त १३- जोधपुर दर्बारके खर्चके लिये सात हज़ार मन अंग्रेजी तोलका अच्छा नमक बगैर कुछ लिये हुए हर साल देनेका वादह सर्कार अंग्रेजी करती है, और यह नमक बननेकी जगहपर उस अफ़्सरको सौंप दिया जावेगा, जिसको जोधपुर सर्कारकी तरफसे लेनेका इख्तियार मिला हो

शर्त १४- नावां और गुढाके कस्बो या कही हुई हद्दोंके भीतरके दूसरे गांवो या ज़मीनोसे, जो ज़मीनका या दूसरा खिराज मिलता है, और जो नमकसे निस्बत नही रखता, उसपर सर्कार अंग्रेजीका कुछ दावा नही होगा

शर्त १५- इस अह्दनामह या किसी दूसरे अह्दनामोंके मुताबिक मुक़र्रर कीहुई ऐसे इख्तियारातकी हदके बाहर, जोधपुरके इलाक़हके भीतर कुछ भी नमक सर्कार अंग्रेजी नही बेचेगी.

शर्त १६- अगर कही हुई हद्दोंके भीतर सर्कार अंग्रेज़ीका मुकर्रर किया हुआ

कोई शख्स कोई जुर्म करके भागजावे, या कोई शख्स तीसरी शर्तमे लिखे हुए काइदो के बर्खिलाफ कोई कुसूर करके भागजावे, तो जोधपुरकी सर्कार उसके जुर्मकी काफी गवाही पहुचनेपर, उसको गिरिफ्तार करने और कही हुई हद्दोके भीतर अंग्रेजी हाकिमोके सुपुर्द करनेके लिये हर तरह कोशिश करेगी, जिस हालतमे कि वह जोधपुरके इलाकहके किसी हिस्सहमे होकर गुज़रा हो, या कही आश्रय लिया हो

शर्त १७- इस अह्दनामहकी कोई शर्त कामिल नही समझी जावेगी, जबतक कि सर्कार अंग्रेजी कही हुई हद्दोके भीतर नमकके कारखानहका काम दरहक़ीकत न सभाल लेवे

काम सभालनेकी तारीख सर्कार अंग्रेजी मुकर्रर करसक्ती है; शर्त यह है, कि अगर तारीख १ मई सन् १८७१ ई० को या उसके पेश्तर काम न सभाला जावे, तो इस अह्दनामहकी शर्तें मन्सूख होजावेगी.

शर्त १८- इस अह्दनामहकी कोई शर्त किसी तरहपर न तो अलग की जायेगी, न बदली जायेगी, जबतक कि दोनो सर्कार पेश्तरसे राजी न होजावे, और अगर कोई फरीक इन शर्तोंके पूरा करनेमे कसूर या बेपर्वाई करेगा, तो दूसरा फरीक भी इस अह्दनामहका पाबन्द नही रहेगा

मकाम जोधपुरमे दस्तख़त हुए, ता० १८ एप्रिल, १८७० ई०.

दस्तखत- जे० सी० ब्रुक, कर्नेल,
क़ाइम मकाम पोलिटिकल एजेएट, मारवाड.

[मुहर,]

रियासत जोधपुर　　　　दस्तख़त- जोषी हंसराज [मुहर]

दस्तखत- मेओ. [मुहर]

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय गवर्नर जेनरल हिन्दने मकाम शिमलेपर ता० १६ जुलाई, सन् १८७० ई० को की.

दस्तख़त- सी० यू० एचिसन,
काइम मकाम सेक्रेटरी, गवर्मेएट हिन्द,
फ़ॉरेन डिपार्टमेएट.

इश्तिहार.

फ़ॉरेन डिपार्टमेएट ता० ३० नोवेम्बर, सन् १८७० ई

जो कि तारीख १८ एप्रिल सन् १८७० ई० के अह्दनामहसे, जो सर्कार अंग्रेजी

और श्रीमान् महाराजा जोधपुरके आपसमे साभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका कारखानह चलानेके लिये सर्कार अंग्रेजीको लाइक करनेके लिये किया गया था, (और बातोंके अलावह) यह इक्रार हुआ था, कि सर्कार जोधपुर, सर्कार अंग्रेजीको और इस कामके लिये सर्कार अंग्रेजीकी तरफसे मुकर्रर किये हुए तमाम अफ्सरोको इख्तियार देवेगी, कि नीचे लिखी हुई हद्दोंके भीतर मकानो और तमाम दूसरी जगहो (खुली हो या नही) के अन्दर शुब्हेकी हालतमे जावे, और तलाश करे, और नमकके बनाने, बेचने व हटाने, और बगैर लाइसेन्सके बनाना या बाहरसे लाना रोकनेके लिये सर्कार अंग्रेजीकी तरफसे मुकर्रर किये हुए काइदोमेसे किसीके बर्खिलाफ चलनेवाले तमाम शख्सोको या अकेलेको, जो कि उन हद्दोके भीतर जाहिर हो, गिरिफ्तार करे, और जुर्माने, जेलखानह, माल अस्बाब जब्त करनेसे, या दूसरी तरहसे सजा देवे, और सर्कार जोधपुरकी मन्जूरीसे सर्कार अंग्रेजी एक लाइक अफ्सरके मातहत एक इज्लास इस मुरादसे काइम करेगी, कि कहे हुए काइदोके तोडने वाले या उनसे निस्बत रखने वाले जुर्म करने वाले तमाम शख्सोकी रूबकारी कीजावे, और जुर्म साबित होनेपर सजा दीजावे, और सर्कार अंग्रेजीको यह भी इख्तियार मिला था, कि ऐसे मुज्रिमोको जिन्हे जेलखानहका हुक्म हुआ हो, या तो पेश्तर कही हुई हद्दोके भीतर, या और कही, जहा मुनासिब हो, कैद करे

ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक और कही हुई मन्जूरीके मुवाफिक वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्द जाहिर करते है कि –

अव्वल – साभर झीलकी कचहरी, जो इश्तिहार नम्बर ५०५ पी० मुवर्रखह १८ मार्चके मुताबिक काइम कीगई थी, अबसे कहे हुए मत्लबोके लिये अदालत करार दीगई

दुवुम – साभर झीलकी कचहरीके इख्तियारकी हद इस तौरसे फैलाईजाती है, कि इसमे सांभर झीलके या उसके सूखे तलेके वे हिस्से शामिल होवे, जिनपर जोधपुरका अकेला और अलग इख्तियार है; तथा जमीनका वह टुकडा, जो झीलके किनारोपर फैला हुआ है, जिसपर जोधपुरका अलग अमल है, जिसमे नावा, गुढा, और दूसरे गाव व खेडे शामिल हैं, और जिसकी चौडाई झीलके पानीकी सबसे ऊची सत्हसे मापी जानेपर औसत दो मील है, और जो कि ऊपर लिखे अह्दनामहके मुताबिक् निशान कीजायेगी.

सिवुम – इश्तिहार नम्बर ५०५ पी० मुवर्रखह १८ मार्चकी दफा तीनसे लेकर

सात तकमे, जो बाते लिखी है, जिनका बयान पहिले होचुका है, इस बढाये हुए इस्तियारके चलानेके लिये कचहरी मज्कूरसे तअल्लुक रक्खेगी

अहदनामह नम्बर ४१

तर्जमह खरीतह अज तरफ श्रीमान् महाराजा जोधपुर, बनाम पोलिटिकल एजेएट, जोधपुर, मुवर्रखह ७ मार्च सन् १८६९ ई०

यह आपको मालूम है, कि बहुत दिनोसे श्रीजी हुजूरकी मन्शा है, कि आम फाइदहके लिये शाही रास्तह एक पुरुतह सडकका पालीके रास्ते होकर ऐरनपुरासे बड तक बनाया जावे, जो मारवाडमे है पहिले मेजर निक्सन व कप्तान इम्पी साहिबके वक्तमे दर्बारकी तरफसे हुक्म हुआ था, और जहा तहा सड़क शुरू हुई भी थी, लेकिन् श्रीजी हुजूरने रीया, आगरा, और सीरोलीकी तरफ सफर किया, उसके खर्चके सबब उन कामोको मुल्तवी रखना पडा

आपने मुझको इत्तिला दी है, कि गवर्मेएट हिन्द् बडके घाटेमे होकर एक शाही सडक जिले अजमेरमे नयानगरसे बडतक बनानेका इरादह् रखती है, और बडके घाटेमे काम भी शुरू करदियागया है, और आपने तज्वीज की है, कि बडसे ऐरन-पुरातक मारवाडमे होकर सडक मेरी तरफसे बनाईजावे, और आपने यह भी लिखा है, कि अगर उसके बनानेके लिये दर्बार राज़ी हो, तो सर्कार अंग्रेज़ी खर्चका कुछ हिस्सह देकर मदद करेगी इस बातसे दर्बारको मालूम हुआ, कि उनकी ख्वाहिश पूरी होनेवाली है मैने इस बातपर अच्छी तरह गौर किया, और बड़से ऐरनपुरा तक अपने इलाकहमेसे सडक बनानेका और उसके लिये हुक्म जारी करनेका पुरुतह इरादह करलिया इसके अलावह जोधपुरसे पाली तक एक अल्हदह सडक भी बनाई जायेगी, और उसका खर्च, जो खर्च सर्कार अंग्रेजी देवेगी, उससे अल्हदह रियासत मारवाडसे दियाजायेगा, और सब काम उसीकी मारिफत बनाया जावेगा, और दाम उसीकी मारिफत चुकाया जायेगा जो कि इस बातकी इत्तिला आपको देना जुरूर था, इसलिये इत्तिलाअन यह पेश कियाजाता है. मैने इन दोनो सडकोके बनानेके बारेमे आपकी राय व आपके खयालात हासिल करनेके लिये आपको लिखा है, और जिस बातका फैसलह होजावे, वह आपकी सलाहसे कीजावेगी.

बन्दोबस्त, जो श्रीमान् तख्तसिंह महाराजा जोधपुर और कर्नेल जे० सी० ब्रुक, काइम मकाम पोलिटिकल एजेएट, मारवाड़के दर्मियान, बडसे ऐरनपुरा तक मारवाडकी रियासतके बीचसे एक शाही सडक बनानेके वास्ते क़रार पाया

जिन सड़कोंकी मन्जूरी महाराजाने अब दी है, वे महकमए तामीरात राजपूतानहकी मारिफत बनाई जावेंगी श्री हुजूर वादह करते हैं, कि उनके लिये एक लाख रुपया सिक्कए अंग्रेजी सालानहके हिसाबसे दियाकरेंगे, लेकिन् गवर्मेंएट, जितनी तेजीसे चाहे, इस कामको चलावे; इसे देखकर खुश होंगे; लेकिन् यह साफ़ साफ़ समझलिया गया है, कि सालानह लाख रुपयेमेंसे कामके लिये, जो जमा पेश्गी दीजायेगी, उसपर उनको व्याज देना नहीं पडेगा.

२- बिल्कुल कामका खर्च इस हिसाबसे होगा, कि मारवाडकी सर्कार अस्सी रुपये सैकड़ा और गवर्मेंएट इंडिया बीस रुपये सैकड़ा देवे.

सडक उसी किस्मकी बनाई जावे, जैसी कि रियासत कृष्णगढ और ज़िले अजमेरके वास्ते मन्जूर हुई है, और बगैर रज़ामन्दी दर्बारके कोई ज़ियादह खर्च नहीं मन्जूर होगा.

मौजूदह डाक बंगलोंकी मरम्मत महकमए तामीरातकी मारिफ़त अच्छी तरह कीजावेगी, और एक नया डाक बंगला बरमें बनाया जायेगा.

मौजूदह डाक बंगला, जो बरमें है, उसकी मरम्मत होकर मुआइनहकी चौकीके काममें लाया जायेगा, और तीन बंगले नये इसी मत्लबके लिये इसके और ऐरनपुराके दर्मियान बनाये जायेंगे.

मारवाड सर्कारके तअल्लुक़ सिर्फ़ उतनी ही संभाल रहेगी, जितनी कि इन कामोंके करनेके लिये अलग हल्के मुकर्रर किये जावेंगे, लेकिन् बिल्कुल कारखानहपर निगहबानी रखने वाले मुलाज़िमोंसे कुछ तअल्लुक़ नहीं रहेगा.

३- कोई पुल, जिसका तख्मीनन खर्च बीस हज़ार रुपयेसे ज़ियादह होगा, वह बगैर साफ़ मन्जूरी महाराजाके नहीं बनाया जायेगा.

४- कामके खर्च व तरक्कीकी इत्तिला दर्बारको होती रहे, इस मत्लबसे इन कामोंके वास्ते, जो ठेके होते हैं, उनकी नक्ल दर्बारमें भेजी जायेगी; और मज़्दूरीमें, जो खर्च लगेगा, उसका माहवारी नक्शह पेश किया जायेगा.

दर्बार जिन हिसाबोंकी नक्ल मांगेंगे, वे इस शर्तपर दिये जायेंगे, कि दर्बार नक्ल करानेका बन्दोबस्त करानेको राजी हों.

५- दर्बारकी तरफसे एक एजेएट मुकर्रर होकर उन एग्जिक्यूटिव इंजिनिअरसे मुलाक़ात करेगा, जो साहिब सड़ककी दागबेल लगावेंगे. वह एजेएट उनके साथ रहेगा, और तमाम मुआमलातमें उनकी मदद करेगा, जिनमें कि मुल्कके लोगोंका तअल्लुक़ हो. लाइनके मुक़र्रर करनेमें रबीअ्की खेतीका, जहां तक मुम्किन हो, कम नुक्सान किया

जायेगा, और जमीन सुपुर्द करनेका सब बन्दोबस्त दर्बारका एजेण्ट करेगा

कोई दिक़त दर्पेश आनेकी सूरतमे एग्जिक्यूटिव इजिनिअर, पोलिटिकल एजेण्टको लिखेंगे, जो दर्बारसे राय लेगे सड़कके जितने हिस्से बन चुकेगे, जहांतक मुमकिन् हो, काममे लाये जावेगे

मुहर

दस्तखत- महाराजा तख्तसिंह

दस्तखत- जे० सी० ब्रुक,

मकाम जोधपुर

काइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट, मारवाड

ता० ८ एप्रिल, सन् १८६९ ई० [वि० १९२६ प्रथम वैशाख कृष्ण १२ = हि० १२८५ ता० २६ जिल्हिज]

अबुन्नस्त्र, कुतुबुद्दीन मुहम्मद, मुअज़्ज़म, शाह आलम, बहादुर शाह, बादशाह ग़ाज़ी

ابوالنصر قطب الدین محمد معظم شاه عالم بهادر شاه بادشاه غازی
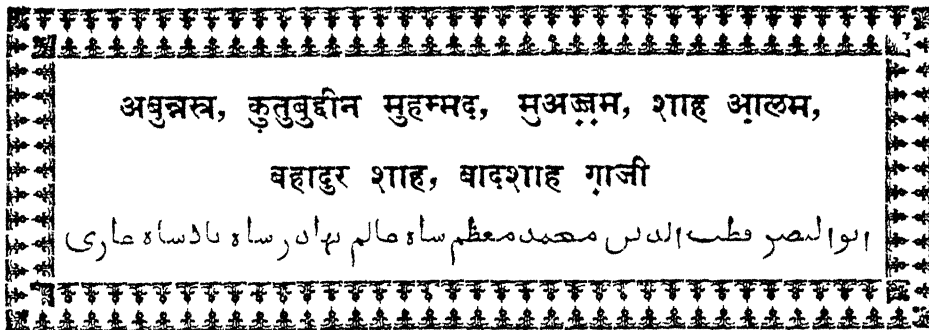
इस बादशाहका हाल बहुत है, पर मुझे मुख्तसर लिखना है, इसलिये लुब्बुत्तवारीख, जगजीवनदास गुजराती मुलाज़िम बहादुरशाही, और मुन्तखबुल्लुबाब खफ़ीखाको मुक़द्दम रखकर मिराति आफ्ताबनुमा शाहनवाज़खाकी, सैरुलमुतअख्खिरीन सय्यद गुलामहुसैनकी, चहार गुल्शन चतुरमनराय कायस्थकी, व मिराति अहमदी शैख़ अहमद गुजराती, व जगनामह निअ्मतखानआली, वगैरह किताबोसे कुछ कुछ मत्लब दर्ज करनेके लाइक चुन लिया है

इस बादशाहका जन्म हिज्री १०५३ ता० आखिर रजब [वि० १७०० कार्तिक शुक्ल १ = ई० १६४३ ता० १३ ऑक्टोबर] को हुआ था, शाहजादगीका तज्किरह बादशाह आलमगीरके हालमे लिखा गया है, परन्तु जब दक्षिणसे काबुलकी तरफ़ उनको बादशाहने रवानह किया था, वहासे शुरू किया जाता है -

सन् ११०५ हि०, जुलूसी ३८ आलमगीरी तारीख ५ शव्वाल [वि० १७५१ ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० १६९४ ता० ३१ मई] को आलमगीरने बहादुरशाहको बीजापुरसे राजधानीकी तरफ़ रवानह किया, क्योंकि शाहज़ादह आज़मसे इनकी अदावत होगई थी; जब इनको बादशाहने कैद किया, तब आज़मको तख़्तके दाहिनी तरफ़ बैठक मिली; फिर यह कैदसे छूटे, तो बादशाहने इनको उसी जगह बिठाया; आज़म शाहने धक्का देकर इनकी जगह बैठना चाहा, लेकिन् आलमगीरने उसे हाथ पकड़कर बाईं तरफ़ बिठादिया; और आगे बखेड़ा न बढ़नेके खयालसे शाहआलम बहादुरशाहको इन्तिज़ाम करनेके लिये भेजदिया हिज्री ११०६, जुलूसी सन् ३९ आलमगीरी ता० ९ शव्वाल [वि० १७५२ ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ई० १६९५ ता० २४ मई] को वह आगरे पहुंचे; और हिज्री ११०७, जुलूसी सन् ४० आलमगीरी ता० १५ ज़िल्हिज [वि० १७५३ श्रावण कृष्ण १ = ई० १६९६ ता० १४ जुलाई] को आगरेसे इसलिये रवानह हुए, कि शाहज़ादह अक्बरके ईरानसे कन्धारकी तरफ़ आनेकी ख़बर मिली, तब ये दिल्ली पहुंचे, और वहांसे हिज्री ११०८, जुलूसी सन् ४० ता० ११ मुहर्रम [वि० श्रावण शुक्ल १३ = ई० ता० १० ऑगस्ट] को रवानह होकर ता० २ रबीउल अव्वल [वि० आश्विन शुक्ल ४ = ई० ता० ३० सेप्टेम्बर] को लाहौर पहुंचे, ता० ९ रबीउस्सानी [वि० कार्तिक शुक्ल ११ = ई० ता० ५ नोवेम्बर] को मुल्तान दाख़िल हुए फिर वहांसे १७ ता० रबीउस्सानी [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण ३ = ई० ता० १३ नोवेम्बर] को रवानह होकर ता० २३ जमादियुल अव्वल [वि० पौष कृष्ण ९ = ई० ता० १७ डिसेम्बर] को ओज पहुंचे, और ता० २७ जमादियुस्सानी [वि० माघ कृष्ण १३ = ई० १६९७ ता० २० जैन्युअरी] को रावी नदीपर छावनी डाली हिज्री ११०९, जुलूसी सन् ४१ ता० ११ रबीउल अव्वल [वि० १७५४ आश्विन शुक्ल १३ = ई० १६९७ ता० २९ सेप्टेम्बर] को फिर मुल्तान गये, वहां ख़बर मिली, कि काबुलका सूबहदार अमीरखां मरगया; तब ता० ५ ज़िल्हिज, ४२ जुलूसी [वि० १७५५ द्वितीय ज्येष्ठ शुक्ल ७ = ई० १६९८ ता० १७ जून] को काबुलकी तरफ़ कूच किया

हिज्री १११० ता० २३ रबीउल अव्वल [वि० १७५५ आश्विन कृष्ण ९ = ई० १६९८ ता० ३० सेप्टेम्बर] को अटक नदीपर पहुंचे, वहांसे ता० १४ रबीउस्सानी [वि० आश्विन शुक्ल १५ = ई० ता० २१ ऑक्टोबर] को पेशावर, और ता० २ जमादियुल अव्वल [वि० कार्तिक शुक्ल ४ = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को ख़ैबरके रास्तेसे ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल ५ = ई० ता० ९ डिसेम्बर] को जलालाबाद पहुंचे, जुलूसी सन् ४३ ता० १७ शव्वाल [वि० १७५६

वैशाख कृष्ण ३ = ई० १६९९ ता० १८ एप्रिल] को वहांसे कूच करके ता० ४ जिल्हिज [वि० ज्येष्ठ शुक्ल ६ = ई० ता० ४ जून] को काबुल दाखिल हुए; और आठ वर्ष तक वहा रहे; हर एक जिलेका दौरह करके इन्तिजाम दुरुस्त किया.

हि० १११८, जुलूसी सन् ५० तारीख १८ शअ्बान [वि० १७६३ मार्गशीर्ष कृष्ण ४ = ई० १७०६ ता० २५ नोवेम्बर] को जम्रोद आये. इसी वर्षकी ता० २७ जिल्हिज सन् ५१ जुलूसी [वि० चैत्र कृष्ण १३ = ई० १७०७ ता० ३१ मार्च] को बादशाह आलमगीरके इन्तिकालकी खबर पाई, कि २८ जिल्काद [वि० फाल्गुन् कृष्ण १४ = ई० ता० २ मार्च] को यह हादिसह हुआ; तब सन् १११९ हि० ता० ४ मुहर्रम [वि० १७६४ चैत्र शुक्ल ६ = ई० १७०७ ता० ८ एप्रिल] को वहासे कूच करके ता० ११ [वि० चैत्र शुक्ल १३ = ई० ता० १५ एप्रिल] को अटक उतरे, और तारीख ३ सफ़र (१) [वि० वैशाख शुक्ल ५ = ई० ता० ७ मई] को लाहौर पहुचे, वहासे रवानह होकर मजिल दर मजिल आगे बढे; रास्तहमेसे ता० २५ सफ़र [वि० ज्येष्ठ कृष्ण ११ = ई० ता० २९ मई] को दिल्लीके बन्दोबस्तके लिये मुनइमखांको रवानह किया, और ता० २७ सफ़र [वि० ज्येष्ठ कृष्ण १३ = ई० ता० ३१ मई] को बादशाह खुद भी पहुंचगये खफ़ीखा लाहौर पहुचनेका बयान तूल तवील लिखता है, कि "अपने साथियोको बहादुरशाहने खिल्अत, खिताब और मन्सब देकर शाहानह जश्नके बाद खुत्बह और सिक्कह अपने नामका जारी किया;" (२) और मुनइमखाने चालीस लाख रुपया, बहुतसे सामान और बार्बर्दारी समेत नज़् किया; सरहिन्दमे वज़ीरखाने २८ लाख रुपये पेश किये; फिर दिल्ली पहुचे शाहजादह अज़ीमुश्शान, जो बगालहकी तरफ़ था, शाहज़ादपुरमे आलमगीरकी मौतका हाल सुनकर बडी फौजसे आगरे आया, और अपने बापको दिल्लीसे बुलाया; बड़ा शाहजादह मुइज़ुद्दीन, जो मुल्तानकी सूबहदारीपर था, लाहौरसे ही बापके साथ होगया था बादशाह बहादुरशाह दिल्लीके खजानहसे तीस लाख रुपया लेकर आगरे पहुचा, और आगरेका किलेदार बाक़ीखां, जो अज़ीमुश्शानसे क़िला देनेमे टालाटूली

---

(१) खफ़ीखा मुन्तखबुल्लुबाबमे आखिर मुहर्रम लिखता है, और यही सैरुल्मुतअख्खिरीनका बयान है, परन्तु जगजीवनदासका लिखना सहीह मालूम होता है, क्योंकि वह बहादुरशाहके साथ था.

(२) जगजीवनदास लाहौरसे १२ कोस पश्चिमकी तरफ़ पुले शाहदौलहमें जुलूसी जश्न होना लिखता है, उसने तारीख नहीं लिखी, परन्तु तीसरी तारीख सफ़रको लाहौर पहुंचना लिखा है, इससे कियास किया जाता है, हिज्री १११९ ता० ३० मुहर्रम [वि० १७६४ वैशाख शुक्ल १ = ई० १७०७ ता० ४ मई] को जश्न हुआ होगा; जैसा कि सैरुल्मुतअख्खिरीन वगैरहका बयान है.

करता था, बादशाहके पास खजानह और क़िलेकी कुंजियां लेकर हाज़िर होगया ख़फ़ीखांका बयान है, कि आगरेके क़िलेमें ९ करोड़ रुपये (१) की अश्रफ़ी और रुपयेके अलावह सोना चांदी बे सिक्केके बहादुरशाहको मिला; ये उनमेंके सिक्के हैं, जो शाहजहां बादशाहने चौबीस करोड़ रुपयेकी जमा आगरेके ख़ज़ानहमें डाली थी, उनमेंसे कुछ बादशाह आलमगीरने दक्षिणकी लड़ाइयोंमें ख़र्च किये, और बाक़ी रहे हुए इस वक्त बहादुरशाहके हाथलगे उनमेंसे चार करोड़ रुपये निकलवाकर बादशाहने अपने शाहज़ादों, सर्दारों, सिपाहियों, बेगमों वगैरह नये और पुराने नौकरोंको इन्आम, और फ़कीर और लावारिसोंको ख़ैरातमें बांटे इसमें दो करोड़ उठगये, दो बाक़ी रहे

मुन्इमखांने वज़ीर आज़मका उह्दह और पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और "साहिबुस्सैफ़ वल क़लम, वज़ीरि बाफ़र्हंग, जुम्दतुल्मुल्क बहादुर, ज़फ़रजंग" का ख़िताब पाया, और हरावल फ़ौजमें अफ्सर बनायागया (२) बहादुर शाही फ़ौजकी तादाद लुब्बुत्तवारीख़में जगजीवनदास गुजरातीने दो लाख, ख़फ़ीखांने अस्सी हज़ार सवार, और मिरातिआफ़्ताबनुमामें शाहनवाज़खांने एक लाख सवार लिखी है, बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें सवा लाख सवार हैं हमें मालूम नहीं कि किसका लिखना सहीह है, क्योंकि उसी ज़मानहके आदमी ख़फ़ीखां और जगजीवन-दासमें ही इख़्तिलाफ़ है, तो अब क्या इन्साफ़ करसके हैं

अब हम शाहज़ादह आज़मका हाल लिखते हैं, बादशाह आलमगीरने

---

(१) ख़फ़ीखांने यह भी लिखा है, कि "ऐसा भी सुननेमें आया, कि अक्बर बादशाहके समयमें सौ तोलेसे पांच सौ तोले तकका रुपया और १२ माशेसे १३ माशे तककी मुहरें, जो एल्ची वगैरहको देनेके लिये एकट्ठी कीगई थीं, वे सब मिलनेसे १३ करोड़ नक्दकी जमा बहादुरशाहको मिली," और वह यह भी लिखता है, कि "बहादुरशाहने अपनी ज़िन्दगीमें यह खज़ानह तमाम उड़ादिया, कुछ भी बाक़ी न रक्खा"

(२) बूंदीकी तवारीख़ वंशभास्करमें बूंदीके राव बुद्धसिंहको कुल फ़ौजका अफ्सर व उन्हींकी तज्वीज़ और बहादुरीसे बहादुरशाहकी फ़त्ह होना तवालतके साथ लिखा है, परन्तु हमको राव बुद्धसिंहका ज़िक्र फ़ार्सी तवारीख़ोंमें कहीं नहीं मिला, फ़क़त् एक तवारीख़में है, जिसका कोई नाम नहीं, सिर्फ़ बहादुरशाहके शुरू अह्दसे दूसरे शाहआलमके वक्त तकका हाल उसमें है उसमें राव बुद्धसिंह और कछवाहा राजा विजयसिंहको बहादुरशाहकी हरावलके शामिल होना लिखा है, और एक ख़रीतह महाराणा अमरसिंहका बुद्धसिंहके नामका हमें मिला, उसकी नक़्ल बूंदीकी तवारीख़ (पृष्ठ ११०) में लिखी गई है, जिससे मालूम होता है, कि बुद्धसिंहने इस लड़ाईमें अच्छी बहादुरी दिखलाई होगी, लेकिन् कुल फ़ौजका दारोमदार मुन्इमखांपर था

अपनी बीमारीकी हालत देखकर विचार किया था, कि उत्तरी हिन्दुस्तानकी सल्तनतपर बड़ा शाहज़ादह मुअज़्ज़म रहे, दक्षिण व गुजरातका देश आज़मकी जागीरमें शुमार हो, और बीजापुर कामबरुशको मिले; इसी विचारके अनुसार कामबरुशको बीजापुर की तरफ़ रवानह करदिया, और मुहम्मद आज़मको मालवेकी तरफ़ भेजा. परमेश्वर की इच्छासे हि० १११८ ता० २८ ज़िल्काद [वि० १७६३ फाल्गुन् कृष्ण १४ = ई० १७०७ ता० २ मार्च] को बादशाहका इन्तिकाल होगया; शाहज़ादह आज़म बीस कोसके करीब जाने पाया था, कि बादशाहके इन्तिकालकी ख़बर ज़ेबुन्निसा बेगमके काग़ज़से पाई, जिससे दूसरे ही दिन वह अहमदनगर लौट आया, और अपने बापकी लाशको दस्तूरके मुवाफ़िक़ कन्धा देकर औरंगाबाद पहुंचाया, जिसको खुल्दाबादमें दफ़्न किया. हि० ता० १० ज़िल्हिज् [वि० फाल्गुन् शुक्ल १२ = ई० ता० १४ मार्च] को आज़मशाह तख़्तपर बैठा, और सिक्कह व ख़ुत्बह जारी किया. इसने सिक्केमें यह शिअ्र खुदवाया था:-

सिक्कः ज़द दर जहां ब दौलतु जाह,
बादशाहे ममालिकाज़म शाह.

سکه زد در جهان بدولت وجاه *
بادشاه ممالك اعظم شاه *

अर्थ- मुल्कोंके बादशाह आज़म शाहने मर्तबे और दब्दबेके साथ दुन्यामें सिक्कह जमाया.

इसके बाद बहुतसे अमीरोंको ख़िल्अत, मन्सब वगैरह दिये गये; और वज़ीरुल्मुल्क असदख़ांको उसके उह्दहपर काइम रक्खा, सिपहसालार ज़ुल्फ़िक़ारख़ां, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदख़ां सफ़वी, तर्बियतख़ां, मीर आतिश, चीनकिलीचख़ां बहादुर, मुहम्मद अमीरख़ां, ख़ानेआ़लम, व मुनव्वरख़ां, वगैरह मुसल्मान सर्दार थे.

आंबेरका राजा सवाई जयसिंह, कोटाका राव रामसिंह हाडा, दतियाका राव दलपतसिंह बुंदेला, रतलामका राठौड शत्रुशाल वगैरह सब लोगों समेत हि० ता० १५ ज़िल्हिज् [वि० चैत्र कृष्ण १ = ई० १९ मार्च] को आज़मशाह अहमदनगरसे रवानह हुआ, लेकिन् आज़मशाहकी कम ख़र्ची और बदमिज़ाजीके सबब बुर्हानपुरसे चीनक़िलीचख़ां (१) और मुहम्मद अमीनख़ां वगैरह कई सर्दार दक्षिणको लौटगये. आज़मशाहके हंडिया नदी उतरने बाद ज़ुल्फ़िक़ारख़ाने राजा शम्भाके बेटे साहूको दक्षिणमें जानेकी छुट्टी दिलवादी, जो क़रीब १८ वर्षसे बादशाही निगरानीमें

(१) यह ग़ाज़ियुद्दीनख़ांका बेटा था, जिसकी औलादमें अब हैदराबादके निज़ाम हैं.

था, साहूने दक्षिणमे पहुचकर बीस हज़ार सवार एकट्ठे करने बाद अपने मौरूसी किलोपर क़ब्ज़ह करलिया

हि० १११९ ता० ११ रबीउल्अव्वल [वि० १७६४ ज्येष्ठ शुक्ल १३ = ई० १७०७ ता० १४ जून] को आजमशाह ग्वालियर पहुंचा, बहुतसे लोग उसको छोड़कर बहादुरशाहसे जामिले, क्योंकि बहादुरशाहकी फ़य्याजी मश्हूर थी. आजमशाहने अपनी बहिन ज़ेबुन्निसा बेगम वगैरह ज़नानखानहको असद्खा वजीर और इनायतुल्लाहखा वगैरह समेत ग्वालियरमे छोड़ा, और कुछ ज़नानह और थोडासा खजानह लेकर आगरेकी तरफ़ रवानह हुआ फिर फ़ौजको मदद खर्च बाटकर शाहज़ादह बेदारबख़्तको हरावलका अफ्सर किया, जिसके साथ जुल्फ़िकारखा, खानेआलम, मुनव्वरखा, राव दलपत बुंदेला, राव रामसिह हाडा, राजा जयसिह कछवाहा वगैरहको दिया, और आप मए शाहजादह वालाजाह, मिर्जा सद्रुद्दीन मुहम्मदखा, तर्बियतखा, अमानुल्लाहखां, मुत्तलिबखा, सलाबतखा, आकिलखा, सफ़-वीखा बख़्शी, सय्यद शजाअतखा, इब्राहीमबेग तब्रेजी व उस्मानखा वगैरह अमीर और राजपूतोके चला. खफ़ीखा दक्षिणसे चलनेके वक्त अस्सी नव्वे हज़ार सवार लिखता है, लेकिन् ग्वालियरसे रवानह होनेके वक्त उसने लिखा है, कि आजमशाहके साथ पचास हजार सवार थे, खर्चकी तगी और सख़्त मजिलोके सबब इस वक्त सिर्फ़ पच्चीस हजार सवार रहगये थे, तो भी आज़मकी दिलेरी बढ़ती जाती थी

आजमशाहके ग्वालियर पहुचनेकी खबर सुनकर बहादुरशाहने नसीहतके तौरपर एक खत लिख भेजा, कि "अपने बुजुर्ग बापने खास दस्तखतोसे वसिय्यत नामह मुल्कके लिये लिखदिया है, जिसमे चार सूबे दक्षिण और अहमदाबाद वगैरह तुम्हे दिये, इसके सिवाय एक दो सूबे और भी मै तुमको देता हू, मुसल्मानोकी खूंरेजी नही चाहता, क्योंकि एक ईमान्दार मुसल्मानके खूनके बदले मुल्क भरका हासिल भी दियाजाये, तो बराबर नही होसक्ता, तुम्हे चाहिये, कि खुदाकी दी हुई दौलत व बापकी वसिय्यतके मुवाफ़िक खुश रहकर फ़सादको रोको, अगर बेइन्साफ़ीसे अलग नही होना चाहते, और खुदाके हुक्म और बापकी फ़र्माइशसे राजी नही होते, और अपनी बहादुरीके भरोसेपर तलवार निकाली है, तो क्या ज़रूर है, कि नाशवान देशके लिये आपसकी अदावतसे हजारो जीव मारेजावे; इससे बिह्तर है, कि हम तुम दोनो अकेले मुकाबलह करलेवे, फिर देखना चाहिये, कि खुदा किसकी मदद करता है" यह पैग़ाम देकर खानेजमाखा अस्फ़हानीको भेजा था, जिसे पढ़कर आजमशाह खफ़ा हुआ, और कहा, कि उस कम अक़्ल (बहादुरशाह) ने गुलिस्ता भी नही पढी है, जिसमे शैख़ सअ़्दीका कौल है -

दो बादशाह दर इक्लीमे न गुन्जन्द, व दह दर्वेश दर गिलीमे बु खुसपन्द

دوبادساه در اقلیمے نه گنجند ۰ وده درویش در گلیمے بخسپند *

अर्थ- दो बादशाह एक विलायतमे नहीं समाते, और दस फ़कीर एक कम्लीमे सो जाते हैं

फिर आस्तीन चढाकर शाहनामहका यह शिञ्र पढा -

शिञ्र.

चु फ़र्दा बरायद बलन्द आफ्ताब,
मनो गुर्जु मैदानु अफ़्रासियाब (१).

چو فردا برآید بلند آفتاب *
من وگرز و میدان وافراسیاب *

अर्थ- कल सूर्य निकले, तो मै हूंगा, और गुर्ज, मैदान और अफ़रासियाब होगा खानेजमाको सख्त कलाम कहकर निकलवा दिया, और कहा, कि इसे जिन्दह न छोडो, तब जुल्फ़िक़ारखाने कहा, कि एल्चीको मारना मना है इस तरह खानेजमा वापस आया बहादुर शाहने भी अपना पेशखेमह जाजबमे खडा किया, और रुस्तमदिलखांको थोडे अमीर और तोपखानह साथ देकर आप शिकारके लिये गया; क्योंकि लडाई करनेका विचार बीस तारीखको था, लेकिन् आजमशाहने दो दिन पहिले यानी हि० ता० १८ रबीउलअव्वल [वि० १७६४ श्रावण कृष्ण ४ = ई० १७०७ ता० १९ जुलाई] को हमलह करदिया पेशखेमहका अफ़्सर शाहज़ादह अज़ीमुश्शानको मुक़र्रर किया, और उसका मददगार मुन्इमखांके बेटे खानेज़मांको बनाया, शाहज़ादह मुइज़ुद्दीन वग़ैरह तीनो शाहज़ादोंके साथ चग़त्ताखां बहादुर फ़तहजंग, हसनअलीखां, हुसैनअलीखां वग़ैरह सय्यद बारहके और बहादुरअलीखां, इलाहवर्दीखां, हिजब्रखां, तहव्वुरखां, रुस्तमदिलखां, सादातखां, सैफ़खां, शहामतखां, इनायतखां सादुल्लाहखां वजीरका पोता, मक्सूदखां, फ़तहमुहम्मदखां, जानिसारखां, आतिशखां, मिर्ज़ा राजा विजयसिंह (२) कछवाहा, राजा अनूपसिंह, बाज़खां वग़ैरहको हुक्म दिया, कि मुक़ाबलहको तय्यार रहें

---

(१) यह रुस्तमके मुक़ाबिल तूरानका एक बादशाह था.

(२) यह आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहका छोटा भाई था, परन्तु जयसिंहके आजमकी तरफ़ होनेसे बहादुरशाहने विजयसिंहको मिर्ज़ा राजाका खिताब देकर आंबेरका मालिक क़रार दिया था

आज़मशाहने भी अपनी फ़ौजकी तर्तीब की, शाहज़ादह मुहम्मद बेदारबख़्तको हरावल बनाया, जिसके साथ जुल्फ़िक़ारखां बहादुर नुस्रतजंग, ख़ानेआलम मुनव्वरखां दक्षिणी, अमानुल्लाहखां, खुदाबन्दहखां, राव दलपत बुंदेला, राव रामसिंह हाडा, रतलामका शत्रुशाल राठौड़ व मुर्शिदकुलीखां वगैरह बहुतसे नामी बहादुर मए तोपख़ानहके मुक़र्रर कियेगये शाहज़ादह वालाजाहको बाईं तरफ़ तईनात करके अमानुल्लाहखां, अब्दुल्लाहखां, हसनबेग वगैरहको साथ दिया, और दूसरी तरफ़ शाहज़ादह वालातबारको अफ़्सर बनाया, जिसके साथ सुलैमानखां पन्नी, उमरखां, उस्मानखां, अब्दुल्लाहखां, सलाबतखां, आक़िलखां, हमीदुद्दीनखां, अमीरखां, मुत्तलिबखां, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदखां सफ़वी, और सफ़वीखां वगैरह बहुतसे बहादुरोंको दिया

आज़मशाह मुक़ाबिल फ़ौजकी ज़ियादतीका कुछ ख़याल न करके शेरके मानन्द बढ़ता था, जिसकी हरावल बहादुरशाहके पेशख़ेमोंपर जागिरी, और तोपख़ानह लूटकर डेरे जलादिये, डेरोंके मुहाफ़िज़ कितने ही भागगये, और मारेगये इससे बहादुरशाही फ़ौजमें तहलका मचगया, जुल्फ़िक़ारखां वगैरहने आज़मशाहसे अर्ज़ किया, कि आज फ़त्हका शादियानह बजाकर लड़ाई मौक़ूफ़ रक्खी जावे, क्योंकि इस फ़त्हयाबीसे दूसरी तरफ़के बहुतसे लोग इधर आमिलेंगे; लेकिन् इस बातको आज़मशाहने क़ुबूल न किया, और फ़ौजको तेज़ीसे बढ़नेका हुक्म दिया उधरसे अज़ीमुश्शान अपनी फ़ौजको बढ़ाकर मुक़ाबलहको आया, और बहादुरशाहके पास शिकारगाहमें लड़ाईकी ख़बर पहुंचाई, कि आप जल्दी तश्रीफ़ लावें

दोनों तरफ़से तोप और बाण चलने लगे; और मस्त हाथी, जिनकी पीठपर पाखरें और सूंडोंमें तीन तीन मनकी ज़ंजीरें थीं, दोनों तरफ़से बढ़ाये गये; ख़ूब लड़ाई होरही थी, और तरफ़ैनसे बहादुर बढ़ते जाते थे, ऐसी भारी लड़ाई हुई कि जिसको बर्बादीका नमूना कहना चाहिये इसमें राव दलपत बुंदेला और राव रामसिंह हाडा, जो आज़मशाहकी फ़ौजमें शामिल थे, लड़ाईमें बहादुरीसे काम आये; और बहादुरशाहकी फ़ौजका हरावली अफ़्सर बाज़खां भी मारा गया. फिर मुनव्वरखां और ख़ानेआलम दक्षिणी, जो बहादुर थे, आज़मशाहकी फ़ौजसे आगे बढ़े; और लड़ते भिड़ते अज़ीमुश्शानके हाथी तक पहुंचगये, उस शाहज़ादहपर मुनव्वरखांने बर्छा चलाया, जिससे अज़ीमुश्शान तो बचगया, पर जलालखां करावल ज़ख़्मी हुआ, जो उसकी ख़वासीमें बैठा था; मुहम्मद अज़ीमने तीरसे मुनव्वरखांको मारलिया. इसी तरह ख़ानेआलमने शाहज़ादहपर बर्छा चलाया, जिससे भी शाहज़ादह बचगया, और

जलालखाने गोलीसे खानेआलमको मारलिया इसी अर्सेमे रफीउल्कद्र और मुइज़ुद्दीन मए फ़ौजके आपहुचे, शाहजादह बेदारबख्त मस्त हाथीके मानन्द अ़जीमुश्शानपर चला, हसनअ़लीखा और हुसैनअ़लीखां सवारियोंको छोडकर बेदारबख्तपर टूट पडे, और रुस्तमअ़लीखा, नूरुद्दीनखां, हफीज़ुल्लाहखा वगैरह पाच सर्दार हुसैनअ़लीखा और हसनअ़लीखाकी मददपर जापहुचे; उधर बेदारबख्तकी तरफसे शजाअ़तखां और मस्तअ़लीखाने भी सवारियोंको छोडकर सय्यदोंसे मुकाबलह किया, और मुनइमखा खानेजमा मए अपने बेटेके ज़ख्मी हुआ मुन्तखबुल्लुबाबमे खफीखाने इतना ही लिखा है, कि उस तरफ शाहजादह बेदारबख्त मारागया, ऐसा ही बयान जगजीवनदासका है, लेकिन् एक किताबसे, जिसमे शाहआलम बहादुरशाहके समयसे दूसरे शाहआलमके ३० जुलूस तकका बयान है, और जिसके मुसन्निफका या किताबका नाम कुछ नहीं है, और हमने उसका नाम 'खानदानिआलमगीरी' रक्खा है, इस तरहपर ज़ाहिर होता है, कि बेदारबख्त अ़जीमुश्शानके हाथी तक पहुच गया, तब अ़जीमुश्शानने कहा, कि ऐ भाई ! क्यों नाहक जिन्दगी खोता है, यह दोबारह न आवेगी, बेदारबख्त बोला, कि हमारी तुम्हारी यही मुलाक़ात है, और एक तीर मारा, जिससे अ़जीमुश्शान तो बचगया, पर उसके खवासीवालेकी बाज़ूपर जा लगा, तब अ़जीमुश्शानने बेदारबख्तकी छातीमे बन्दूक मारी, जिससे उसका काम तमाम हुआ यह खबर आजमशाहने सुनते ही बड़े दर्दके साथ आह खेची, और मस्त हाथीकी तरह बहादुरशाहकी फौजपर टूट पडा, मुहम्मद इब्राहीमबेग तब्रेजी घोडा कुदाकर आज़मशाहके पास आ बोला, कि आप नौकरोंका हमलह देखिये, वह सवारी छोडकर खूब लडा, और मारागया. इसी अर्सेमे एक जबूरेका गोला शाहजादह वालाजाहके लगा, और वह मरगया, दूसरे गोलेने वालाजाहकी बीबीका काम तमाम किया, जो हाथीकी अ़बारीमे सवार थी.

आजमशाह दर्दे फर्जन्दसे बेताब लड़रहा था, इसी अर्सेमे एक तेज़ आधी बहादुरशाहके लश्करकी तरफसे आज़मशाहके साम्हने आई, जिसका यह असर था, कि गर्द और गुबारसे आखे मिचने लगी, और तीर बन्दूक वगैरह हथियार बेकार होगये, दोनो तरफ़के तोपखानोंका धूआ आज़मशाहकी फ़ौजपर गिरनेसे अंधेरा छागया तर्बियतखांने आजमशाहकी तरफ़से बढकर दो बन्दूक़ चलाई, परन्तु खाली गई, और दूसरी तरफकी बन्दूक़से वह मारागया. आज़मशाह बढ बढकर हमलह करता था, जिससे इनायतखा सादुल्लाहखांका पोता, सुल्तानखां, तहव्वुरखां वगैरह १४ पन्द्रह नामी सर्दार बहादुरशाहकी तरफ़के मारेगये; आज़मशाहकी तरफ़से

सफ़वीखां, मुर्शिदकुलीखां, कोकलताशख़ा, सय्यद यूसुफखा, मस्तअलीखा, शजाअतखा, अशरफखा, शरीफख़ा, ज़ियाउल्लाहख़ा, उस्मानखा, वगैरह ५२ के करीब नामी आदमी मारेगये जुल्फिकारखाके होटपर जख़्म लगा, तब उसने आजमशाहके पास पहुचकर कहा, कि आपके बाप दादो व और भी बादशाहोपर ऐसा वक्त आगया था, कि वह लश्करसे अलग होगये, और जाने बचाई, फिर वक्त आनेपर अपनी मुराद पूरी की, अब आपको भी वैसा ही करना चाहिये आजमशाहने गुस्सह होकर कहा, कि "बहादुरजी आप अपनी जानको, जहा चाहे, सलामतीसे लेजावे, (१) हमको तो इस जमीनसे हिलना मुश्किल है, बादशाहोको तख़्त मिले, या तख़्तह (मुर्दोको निल्हानेका तख़्तह)", तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ां मए हमीदुद्दीनखाके ग्वालियर चला गया

आजमशाह जख़्मी शेरके मानन्द चारो तरफ भटकता था, और कहता था, कि बहादुरशाह नही लडता, खुदा मुझ कम्बख़्तसे फिरगया है; उसने अपने शाहजादह आलीतबारको बच्चा होनेके सबब अपने पास हौदेमे बिठाया था, जिसे तीर वगैरहकी चोटसे बचाता रहा; पर वह बच्चा शेर बच्चेकी तरह खुद लडाई करना चाहता था, आजमशाह उसे रोकता था; इस लडाईमे खास आजमशाहके कई हाथी-बान मारेगये थे, और जख़्मी होनेसे हाथी भी चिल्ला रहाथा, लेकिन् वह ज़ख़्मी शेर हौदेसे पैर निकालकर हाथीको भी रोकता था; उसी हालतमे आजमशाहकी पेशानीमे एक गोली लगी, जिससे वह दुन्यासे कूच करगया खानदानिआलमगीरीमे शाहज़ादह मुइज़्ज़ुद्दीनके हाथकी गोली लगनेसे उसका माराजाना लिखा है

सन् १११९ हि॰ ता॰ १८ रबीउल्अव्वल [वि॰ १७६४ आषाढ कृष्ण ४ = ई॰ १७०७ ता॰ १९ जून] को दो घडी दिन रहे आजमशाह मारागया, रुस्तमअलीखा हाथीपर चढकर उसका सिर काट लाया, और बहादुरशाहके साम्हने डाला; बहादुरशाहकी आखोमे आँसू भरआये इसी अर्सेमे अजीमुश्शान वगैरह चारो शाहजादो व कुल सर्दारोने आकर मुबारकबाद दी, और आजमशाहके शाहजा-दह आलीतबार व बेदारबख़्तके बेटे बेदारदिल और सईदबख़्तको हाजिर किया, और लूटनेसे जो सामान बचा, वह बहादुरशाहके कब्ज़हमे आया बहादुरशाहने उन यतीम शाहज़ादोको बगलमे लेकर तसल्ली दी, और पास रक्खा, आजमशाह, बेदारबख़्त और वालाजाहकी लाशोको दफ़्न करनेका हुक्म दिया. आगरे पहुचकर बादशाह दूसरे दिन

---

(१) खानदानिआलमगीरीमे लिखा है, कि आज़मशाहने गुस्सहमे आकर जुल्फिक़ारख़ापर तीर मारा, पर छोटा तीर होनेसे उसके दो दांत गिरगये

मुनइमखांके घरपर गये, उसकी खिद्मतोंके एवज "खानखाना बहादुर, जफरजंग, यार वफ़ादार" का ख़िताब व सात हज़ारी जात व सवार जिनमें पांच हजार सवार दो अस्पह सिंह अस्पह थे, और एक करोड़ रुपया नक्द व सामान इनायत करके विजारतका उह्दह सौंपा, उसके बड़े बेटे नईमखांको "खानेजमां बहादुर" का खिताब, पांच हज़ारी जात व सवारका मन्सब देकर तीसरे दरजहका बख़्शी बनाया, उसके छोटे बेटेको "खानह-जादखां" का खिताब और चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और चारों शाह-जादोंको तीस तीस हजारी जात व बीस बीस हजार सवारका मन्सब और बड़े शाहजादह मुइज़ुद्दीनको "जहांदारशाह बहादुर" का ख़िताब, मुहम्मद अज़ीमको "अज़ीमुश्शान बहादुर", और रफ़ीउल्क़द्रको "रफ़ीउश्शान बहादुर" और खुजिस्तह अख्तरको "जहांशाह बहादुर" का ख़िताब दिया. इन चारों शाहज़ादोंको हुज़ूरमें नौबत बजाने व पालकीमें सवार होनेका हुक्म दिया. असदखांको "चग़ताखां फ़तहजंग" का ख़िताब, सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया, बूंदीके बुधसिंह को "राव राजा" का ख़िताब व पांच हज़ारी जात और सवारका मन्सब, नौबत और कई पर्गने दिये (१).

इनके सिवाय बहुतसे लोगोंको इन्आ़म, ख़िताब और मन्सब मिला. यह बादशाह फय्याज़ी और रह्म दिलीमें अपने खानदान वालोंसे बढ़कर था, लेकिन् बादशाहोंको बे मौक़ा रह्म दिली करनेसे नुक्सान होता है, नेक दिल होना तो अच्छा है, लेकिन् डरानेको बनावटी गुस्सह भी रखना चाहिये. इस बादशाहकी नेक मिज़ाजी और रह्म दिलीसे नौकर गालिब होगये, मसल मशहूर है, कि "ऐसा कड़वा भी न हो, कि थूक देवे, और ऐसा मीठा भी न हो, जो निगल जावे." राजा बादशाहोंके लिये यह कहावत बहुत ठीक है. अन्तमें बहादुरशाहकी रहम दिलीका नतीजह यह हुआ, कि इसके बाद बादशाहतको खलल पहुंचा. बादशाहने ग्वालियरसे असदखां वजीरको और शाहज़ादी जेबुन्निसा वगैरह बेगमातको बुलाया; असदखां अपने बेटे जुल्फ़िक़ारखां समेत हाथ बांधकर हाज़िर हुआ; बादशाहने बहुत ख़ातिर की, और शाहज़ादी जेबुन्निसा बेगमको बादशाह बेगमका ख़िताब और दूनी तन्ख़्वाह करदी.

---

(१) यह ज़िक्र फ़ार्सी मुवर्रिख़ोंने छोड़दिया है, इनका लड़ाईमें शामिल होना भी सिर्फ़ खानदानि-आ़लमगीरीमें ही लिखा है, इसी तरह दूसरे हिन्दू राजाओंका भी हाल कम लिखा गया है, परन्तु रावराजा बुधसिंहको ख़िताब, मन्सब, व नौबत मिलना उस ख़रीतहसे भी साबित है, जो महाराणा अमरसिंह २ ने बुधसिंहके नाम लिखा-(देखो पृष्ठ ११०).

अमीरुल्उमरा असदखांको "निज़ामुल्मुल्क आसिफ़ुद्दौलह" का ख़िताब और वकील मुत्लक़ (मुसाहिब आला) बनाकर ख़िल्अ़त वगैरह बहुतसा सामान दिया कई पास वालोंने बादशाहसे कहा, कि यह आज़मशाहके शरीक था, जिसपर बादशाहने जवाब दिया, कि यह दक्षिणमें था, अगर हमारे बेटे भी वहां मौजूद होते, तो उनको भी लाचार ऐसा ही करना पड़ता जुल्फ़िक़ारखांको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब और "सम्सामुद्दौलह, अमीरुल्उमरा बहादुर, नुस्रत-जंग" का ख़िताब, और मीरबख़्शीका उह्दह दिया, मिर्ज़ा सद्रुद्दीन मुहम्मदखां सफ़वीको पांच हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब, और "हिसामुद्दौलह मिर्ज़ा शाहनवाज़खां" का ख़िताब दिया

निदान बहादुरशाहने सब अपने बेगाने, छोटे बड़े नौकरोंको इन्आ़म जागीरें देकर ख़ुश किया, असदखांको कहा, कि तुम दिल्ली जाकर आराम करो, और वकालतका काम तुम्हारा बेटा जुल्फ़िक़ारखां देता रहेगा कुल कामका मुख़्तार वज़ीरुल्मुल्क मुन्इमखां था, जिसने बड़ी ईमानदारी और नेकनामीसे काम किया बहादुरशाहने सिक्कहमें शिअ्र व तारीफ़ वगैरह कुछ न रक्खी, सिर्फ़ एक तरफ़ शहरका नाम और दूसरी तरफ़ बादशाहका नाम था

इन्हीं दिनोंमें बादशाहको यह ख़बर मिली, कि महाराणा अमरसिंहकी मदद और आंबेरके राजा जयसिंहकी मिलावटसे महाराजा अजीतसिंहने जोधपुर और मारवाड़पर क़ब्ज़ह करके गायका मारना, आज़ान (बांग) का देना बन्द किया; और बाद-शाह आलमगीरने जिन मन्दिरोंको तुड़वाकर मस्जिदें बनवाई थीं, उन्हें गिरवाकर मन्दिर बनवा लिये, इसपर बादशाहने राजपूतानहकी तरफ़ कूचका झंडा खड़ा किया, और हिज्री ता० ७ शअ़्बान [वि० कार्तिक शुक्ल ९ = ई० ता० ४ नोवेम्बर] को रवानह होकर आंबेरके रास्तेसे अजमेरके पास पहुंचा, शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शानको ख़ानख़ाना मुन्इमखां वगैरह कई सर्दारोंके साथ फ़ौज देकर मारवाड़की तरफ़ भेजा, और आप भी जोधपुरसे छ कोसपर जा ठहरा वहां फ़ौजने बर्बादी करना, रअ़य्यतको लूटना शुरू किया, तब मुनासिब समझकर महाराजा अजीतसिंह, महाराजा जयसिंह समेत वज़ीर मुन्इमखांकी मारिफ़त बादशाहके पास हाज़िर होगये जोधपुर व आंबेरपर बादशाही क़ब्ज़ह होगया, ये दोनों राजा राठौड़ दुर्गदास समेत बादशाहके पास रहे, और बहादुरशाह पीछा अजमेर होकर राजधानीको लौटा

इसी अर्सेमें दक्षिणसे ख़बर मिली, कि मुहम्मद कामबख़्शने बादशाह बनकर फ़साद उठाया है, तब बहादुरशाहने अपने भाईके नाम लिखभेजा, कि अपने बापने तुमको बीजापुरकी हुकूमत दी है, परन्तु हम हैदराबादकी हुकूमत सिवाय देकर यह लिखते हैं, कि सिक्कह व ख़ुत्बह हमारे नामका रक्खाजावे; और जो ख़िराज व तुह्फ़ह

वहाके हाकिम बादशाही सर्कारमे पहुंचाते थे, तुमसे न लिया जायेगा यह फर्मान् हाफिज अहमद मोतबरखा मुफ्तीके हाथ खिल्अत, जवाहिर, हाथी, घोडो समेत भेजा, मुहम्मद कामबख्श बिल्कुल कम अक्ल था, तकर्रुबखा व इहतिदाखाके बहकानेसे बडे बडे पुराने सर्दार रुस्तमदिलखा, अहसनखां, सैफखा और अहमदखाको बेरहमीसे मरवाडाला, और उनके बाल बच्चो व नौकरोपर भी सख्तिया हुई बहादुरशाहका भेजाहुआ, एल्ची हाफिज अहमद मोतबरखा मुफ्ती (१) फ़र्मान लेकर हैदराबाद पहुचा, चन्द बदमअशोने कामबख्शसे कहा, कि एल्चीके साथी मौका पाकर आपको गिरिफ्तार करने आये है उस बे अक्लने एल्चीके साथी ७५ आदमियोको दावतके बहानेसे बुलाकर गिरिफ्तार करलिया, जिनमे चन्द आदमी हैदराबादके रहनेवाले भी थे, जो एल्चीकी दोस्तीसे दावत खानेमे शरीक हुए थे, बे पूछे ताछे इन बे गुनाहोके सिर कटवाडाले, और एल्चीको सख्त जवाब लिखकर रवानह किया, कामबख्शके जुल्मसे बहुतसे इज़्ज़तदार लोग हैदराबाद छोड़गये ये सब बाते बहादुरशाहके पास पहुचती थी,

बहादुरशाह आगरेसे ता० आखिर जिलहिज [वि० चैत्र कृष्ण ऽऽ = ई० १७०८ ता० २२ मार्च] को रवानह हुआ, महाराजा जयसिह और अजीतसिह बादशाहके साथ थे, जो नर्मदाके किनारेसे बे इत्तिला लौट आये, क्योंकि इनको आबेर और जोधपुर बख्शनेका जो इक़ार था, वह पूरा न हुआ इनका मुफ़स्सल हाल महाराणा अमरसिह २ और महाराजा अजीतसिहके बयानमे लिख आये है बादशाहने बुर्हानपुर, बिदर होते हुए हैदराबादसे चार कोसपर हिज्री ११२० ता० १ जिल्काद [वि० १७६५ माघ शुक्ल ३ = ई० १७०९ तारीख १५ जैन्युअरी] को पहुचकर डेरा किया, और अपने सब साथियोको होश्यार करके मोर्चा बन्दी करली. दूसरे दिन प्रभातही शाहजादह रफ़ीउश्शान और जुम्दतुलमुल्क मदारुल्-महाम खानखाना मुनइमखां बहादुर ज़फ़रजग, अमीरुल्उमरा जुल्फ़िकारखा बहादुर नुस्रतजग, दाऊदखांपन्नी, हमीदुद्दीनखां बहादुर, इस्लामखा दारोगह तोपखानहको कामबख्शकी तरफ जानेका हुक्म दिया, और कहा, कि उसको समझाओ, अगर मुकाबलहसे पेश आवे, तो लडाईका ऐसा ढग डालो, कि वह ज़िन्दह गिरिफ्तार हो, मारा न जाय; शाहज़ादह जहाशाह अपने लश्करको लिये हुए अगली फ़ौजका मददगार रहे

हिज्री ता० ३ ज़िल्क़ाद [वि० माघ शुक्ल ५ = ई० ता० १७ जैन्युअरी] को काम-

---

(१) खानदानि आलमगीरीमें इस एल्चीका नाम खानेजमाखां इस्फहानी लिखा है

बख्श हाथीपर सवार होकर दूसरे हाथीपर अपने तीन बेटे मुहयुसुन्नह वगैरह और तीसरे हाथीपर अपनी बेगमको सवार करके मए तोपखानहके मुकाबलहको आया, तोप, बन्दूक और तीर तेजीके साथ चलानेका हुक्म दिया इस वक्त इसके साथ सिर्फ़ तीन सौ या चार सौ सवारोका होना खफीखाने लिखा है, क्योंकि इसके जुल्म, बदमिजाजी और कम अक्लीसे कुल फौज बिगडकर चलीगई थी, लुच्चे शुहदे और चुगलखोर भी काफूर हुए. बहादुरशाहके अस्सी हजार सवारोंके साम्हने क्या करसक्ता था, जख्मी होकर दाऊदखा पन्नीकी कैदमे आया, और जब वह बादशाही डेरोमे लायागया, तो बहादुरशाहने हुक्म दिया, कि हिफाजत और इज्जतके साथ लायाजावे; उसके इलाजके लिये जर्राह यूनानी और फरगी तइनात कियेगये, कामबख्श इलाज करानेसे इन्कारी हुआ, और शोरबह भी नही खाया रातको बहादुरशाह उसके पास गये, और अपने कन्धेसे चादर लेकर उसपर डाली, बहुत प्यारके साथ खबर पूछकर आंखोमे आसू भरलाये, कहा कि हम तुमको इस हालमे देखना नही चाहते थे ? कामबख्शने जवाब दिया, कि मै भी नही चाहता था (१), कि तीमूरकी औलाद बेइज़्ज़तीसे गिरिफ्तार हो बादशाह बहुत कुछ कह सुनकर दो तीन चमचे शोरबहके पिलाकर बडे रजके साथ अपने डेरेमे आये, तीन चार पहरके बाद कामबख्श और शाहज़ादह फीरोजमन्द, जो उसीके साथ जख्मी हुआ था, मरगया, और कामबख्शकी लाश मए शाहज़ादह और एक बीबीकी लाशके दिल्लीमे हुमायूके मक़्बरेमे दफ़्न करने को भेजीगई

---

(१) सैरुल मुतअख्खिरीनमे सय्यद गुलामहुसैन लिखता है, कि जब बादशाहने कहा, कि मै तुम्हे इस हालतमे देखना नही चाहता था, तब कामबख्शने भी वैसाही जवाब दिया, इस बातसे लोग यह अर्थ करते है, कि उसने यह कहा, कि मै भी तुमको बादशाही हालतमे नहीं देखना चाहता था, लेकिन् यह बात मुन्तखबुल्लुबाबमे नही है, जिसका मुसन्निफ खफीखा बहादुरशाहके साथ मौजूद था, और इसका लेख हम मूलमे लिख आये है जगजीवनदास लुब्बुत्तवारीखमे जो लिखता है, उसके लेखसे दोनो भाइयोका स्नेह अधिक पाया जाता है वह लिखता है, कि कामबख्श मए अपने जनाने और शाहजादोंके चार घडी दिन रहे बादशाही डेरोमे इज़्ज़तके साथ लाया गया, और दर्बारखा नाजिरकी हिफाजतमे रक्खा गया रातके वक्त खुद बादशाह अपने चारो शाहजादो और अमीरुल्उमरा व हमीदुद्दीनखा वगैरह समेत गये, और कामबख्शका सिर अपने घुटनो पर रक्खा, तब कामबख्शने अजीमुश्शानसे कहा, कि क्या हज़रत हमारे सिरपर साया डालते है, मेरे पास कोई ऐसी चीज नही, जो पेश करू, तुम अर्ज़ करो, कि दो कुरआन शरीफ, जो मेरे कुतुबखानहमे खुश खत है, वह कुबूल फर्मावे तब बादशाहने कहा, मैने कुबूल किया फिर बहादुरशाहने कहा, कि हरचद मैने लिखा, पर कुछ फाइदह न हुआ, नही तो तुमको इस हालमे क्यो देखता, अब भी मेरी मिहर्बानी अपने ऊपर

बहादुरशाहने तीन दिन तक मातम रक्खा, चौथे दिन सब अपने सर्दारोको खिताब इन्आम, इक्राम देकर हैदराबादका नाम "खुजिस्तह बुन्याद" रक्खा इन्आम और खिताबके साथ यहा तक अपने सर्दारोकी इज्जत बढाई, कि अपने साम्हने बडे बडे सर्दारोको नौबत बजानेकी इजाजत दी, तब जुल्फिकारखाने अर्ज किया, कि हुजूरने हमको सब तरहसे इज्जत और इन्आम बख्शा, और कोई आर्जू बाकी न रही, परन्तु अदब आदाबके लिहाज और नौकर व मालिकका फर्क दिखानेको हुजूरके रूबरू मुआफ रहे बादशाह कुछ अर्से तक उसी मुल्कमे रहकर हिज्री ११२१ ता० शुरू रबीउल अव्वल [वि० १७६६ द्वितीय वैशाख शुक्ल २ = ई० १७०९ ता० १३ मई] को दिल्लीकी तरफ रवानह हुआ, और सारे दक्षिणकी सूबहदारी अमीरुल्उमरा जुल्फिकारखाको दी, उसने अपनी तरफसे दाऊदखा पन्नी को दी, और आप बादशाहके साथ चला

इसी बर्षके शव्वाल [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष = ई० डिसेम्बर] मे नर्मदा उतरा, वहा पजाबकी तरफसे सिक्खोके फसादकी खबर मिली, तब राजपूतानहकी तरफ चढाई करनेका इरादह मौकूफ रखकर मुकन्दराकी तरफ हाडौती होता हुआ अजमेर पहुचा, वहा जयपुर और जोधपुरके महाराजाओकी दिलजमईके वास्ते महाराणा अमरसिह २ ने उदयपुरसे वकील भेजे, जिनकी मारिफत राजा अजीतसिह व राजा जयसिंहका फैसलह होकर उनके मुल्क उनको मिलगये, क्योकि बहादुरशाह इस वक्त पजाबके फसादसे बिल्कुल दबा हुआ था, महाराणा अमरसिह और महाराजा अजीतसिहके हालमे, जो उस समयके कागजोकी नक़्ले दर्ज की है, उनसे जाहिर है खफीखा वगैरह फार्सी तवारीख वालोने इस हालको कम लिखा है, सिर्फ बादशाहकी बडाईकी तरफ निगाह रक्खी है चौथे जुलूसका जश्न बादशाहने अजमेरमे किया (१). यह जश्न हिज्री ११२१ ता० १८ ज़िल्हिज [वि० १७६६

जियादहसे जियादह समझो बादशाहने पूछा, कि तुम्हारे पास कितने सवार थे, उसने जवाब दिया, कि सौ बादशाह बोले, कि मै एक हज़ार सवार सुनता था, तब कामबख्शने कहा, कि इतने होते, तो मै अपने इरादेको पहुचता, फिर भी खुदाका शुक्र है, कि मै अपनी मुरादको पहुंचा, मै चाहता था, कि तख्त पाऊ, खुदाने वैसा ही किया, कि मेरा सिर आपके घुटनेपर, जो तख्तसे भी बढकर है, पहुचाया ऐसी बाते कहनेके बाद कामबख्श बेहोश होगया, और बादशाह भी उठकर डेरोमे आये

(१) खफीखां १८ ज़िल्हिजको तख्तनशीनीका जश्न लिखता है, और सैरुल मुतअख्खिरीन ता० ३० ज़िल्हिज और मिराति आफ्ताबनुमामे शाहनिवाजखा ता० १ ज़िल्हिज लिखता है इसी तरह सब किताबोमे जुलूसका इख्तिलाफ़ है, खफीख़ाका लिखना झूठ नही होसक्ता,

फाल्गुन् कृष्ण ४ = ई० १७१० ता० १९ फेब्रुअरी] को हुआ, इसी महीनेमें अजमेरसे कूच करके दिल्लीको १२ कोस दाहिनी तरफ छोड़ा, और पंजाबकी तरफ़ चला, मुहम्मद् अमीनखां, रुस्तमदिलखां और चूड़ामन जाटको हरावलके तौर आगे भेजा.

हि० ११२२ ता० १० शव्वाल [वि० १७६७ मार्गशीर्ष शुक्ल १२ = ई० १७१० ता० ४ डिसेम्बर] को बादशाह पंजाबमें शाह दौलहके पास पहुंचा, और सिक्खोंके बड़े बड़े हमले होने लगे, खानखाना मुनइमखां, हमीदुद्दीनखां बहादुर, रुस्तमदिलखां, राजा छत्रशाल बुंदेला, फ़ीरोज़खां मेवाती और चूड़ामन जाट वगैरह बड़े बड़े सर्दार साथ देकर शाहज़ादह रफ़ीउश्शानको सिक्खोंपर भेजा. यह लोग खूब लड़े, और दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी मारेगये, सिक्खोंने बलवागढ़का सहारा लिया, जो कठिन पहाड़ोंमें था, बादशाही लश्करने वहां भी जा घेरा, खूब लड़ाई होने और हज़ारों आदमी मरनेके बाद सिक्खोंका गुरू निकलकर हिमालयकी तरफ़ चलागया, और उसके एवज़ एक गुलाबू खत्री गिरिफ्तार हुआ. यह धोखा होजानेके रंजसे खानखाना मुनइमखां मरगया. खानदानि आलमगीरीमें खानखानाका मरना बहादुरशाहकी वफ़ातके रंजसे लिखा है, परन्तु ख़फ़ीखांका लिखना सहीह है, क्योंकि वह उस वक़्का आदमी है.

अब विज़ारत देनेमें बड़ा पसोपेश होने लगा, शाहज़ादह अज़ीमुश्शानकी यह राय थी, कि जुल्फ़िकारखांको विज़ारतका उहदह, और खानखाना मुनइमखांके बेटेको दक्षिणकी सूबहदारी व बख़्शीगरी मिले, जो जुल्फ़िकारखांकी सुपुर्दगीमें थी; जुल्फ़ि-

---

क्योंकि वह उसके साथ रहकर हरसालका जश्न लिखता रहा. हमारे विचारसे इस इख्तिलाफ़का यह सबब मालूम होता है, कि बहादुरशाहको हि० १११८ ता० २७ ज़िल्हिज् [वि० १७६३ चैत्र कृष्ण १२ = ई० १७०७ ता० ३० मार्च] को आलमगीरके मरनेकी ख़बर मिली, तब उसने हि० ता० ३० ज़िल्हिज् [वि० चैत्र कृष्ण ऽऽ = ई० ता० २ एप्रिल] को जम्रोदमें जश्न किया, और अटक उतरनेके बाद नाज़िर मुबारक तख्त व छत्र लाया, तब फिर हि० १११९ ता० १५ मुहर्रम [वि० १७६४ वैशाख कृष्ण १ = ई० ता० १८ एप्रिल] को जश्न किया, तीसरी बार लाहौरसे पश्चिम १२ कोस पुले शाहदौलहमें हि० ता० ३ सफ़र [वि० वैशाख शुक्ल ४ = ई० ता० ६ मई] को जश्न करने बाद अपने नामका सिक्कह और ख़ुत्बह जारी किया, चौथा आगरेमें आज़मपर फ़त्ह पाकर हि० ता० १९ रबीउल्अव्वल [वि० आषाढ़ कृष्ण ५ = ई० ता० २१ जून] को किया, तब विचारा होगा, कि किस तारीख़को जश्न मानकर सन् जुलूस जारी किया जावे, इसपर बहादुरशाहने सबको छोड़ा, और अपने बापके मरनेसे बीस दिन मातमके समझकर ता० १८ ज़िल्हिज्को क़ाइम रक्खा होगा, इस सबब कई जश्न होनेसे किताबोंमें इख्तिलाफ़ होगया.

कारखाकी यह राय थी, कि मेरे बाप असदखाको विजारत मिले, और मै अपने दोनो उह्दोपर काइम रहू जुल्फिकारखा कुल बादशाहत अपने हाथमे रखना चाहता था, और शाहजादह अजीमुश्शान उसके पेचको टालता था इस नाइत्तिफ़ाक़ीसे बादशाहने कुछ हुक्म न दिया, और यह कहा, कि जब तक वजीर काइम न हो, शाहजादह अजीमुश्शान काम चलावे, और इनायतुल्लाहखाका बेटा सादुल्लाहखा खालिसहका दीवान उसका नाइब रहे हि० ११२३ ता० आखिर जमादियुल अव्वल [वि० १७६८ श्रावण शुक्ल १ = ई० १७११ ता० १७ जुलाई] को बादशाह लाहौर पहुचे इन्ही दिनोमे गाजियुद्दीनखा बहादुरके मरनेकी खबर पहुची, जो अहमदाबादका सूबहदार और हैदराबादके निजामका मूल पुरुष (मूरिसि आला) था यह आलमगीरके शुरू अह्दमे अक्लमन्दी और बहादुरीके सबब छोटे दरजेसे बडे मन्सब तक पहुचा था

बहादुरशाह बादशाह एक दम बीमार होकर हि० ११२४ ता० २० मुहर्रम [वि० १७६८ फाल्गुन् कृष्ण ६ = ई० १७१२ ता० २८ फेब्रुअरी] को इस दुन्याको छोडगया (१) यह बादशाह बहुत आलिम, नेकदिल, नेक मिजाज, सुलह पसन्द, रहमदिल, फय्याज और अपने मज्हबका पाबन्द था, लेकिन् सख्ती, या तअस्सुब नही रखता था इसने दक्षिणसे लौटते वक्त अजमेर मकामपर हुक्म दिया था, कि शीअह मज्हबके तरीकहसे खुत्बहमे हजरतअली चौथे खलीफहके नामपर "वसी" (नबीका नाइब) का लफ्ज पढाजावे, यह बात सुन्नियोको बहुत बुरी लगी, यहा तक कि शाहजादह और बडे बडे सर्दार भी फसाद बढानेमे शरीक होगये, आखिर-कार बादशाहको लाहौरके मकामपर अपना हुक्म मन्सूख करना पडा

हिन्दुस्तानकी सल्तनत मुगलियह खानदानसे निकल जानेका सामान आलम-गीरने करलिया था, परन्तु बहादुरशाहकी नर्म मिजाजी और बेरोबीसे नौकर बेखौफ़ होकर ऐसे बढगये, कि आपसके झगडोसे बादशाहतका नुक्सान किया, और यह बादशाह सल्तनतको अपने साथ लेगया इसकी लाश लाहौरसे रवानह करके कुतुब साहिबकी लाटके पास दिल्लीमे दफ्न कीगई, जिसपर सिफेद पत्थरका मक्बरह बनाया गया

---

(१) खफीखाका बयान है, कि मिजाजमें खलल आकर सात आठ पहरमे मरा, मिराति आफ्ताबनुमा और खानदानिआलमगीरीमे एक दम पेटके दर्दसे मरना दर्ज है, और सैरुलमुत-अख्खिरीनमे दो चार दिन पहिलेसे होश और मिजाजमे फ़र्क़ आने बाद फिर आरिजहसे मरना लिखा है

कर्नेल टॉड लिखता है, कि वह जहर देनेसे मरा उसके एक दम मरजाने और शाहजादो व नौकरोके आपसकी अदावतसे शायद यह बयान भी सहीह हो

बादशाह बहादुरशाह और उसके भाइयोंकी औलादके नाम, जो उसके पास मौजूद थी, लिखे जाते हैं -

१- मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाह, और उसके तीन बेटे अअ़ज़्ज़ुद्दीन, और अ़ज़ीज़ुद्दीन, तीसरेका नाम मालूम नहीं

२- अ़ज़ीमुश्शान, और उसके तीन बेटे मुहम्मद करीम, फ़र्रुख़सियर व हुमायूंबरूत

३- रफ़ीउश्शान, और उसके दो बेटे रफ़ीउद्दरजात व रफ़ीउद्दौलह

४- खुजिस्तह अख़्तर जहांशाह, और उसके दो बेटे फ़र्ख़ुन्दह अख़्तर व रौशन अख़्तर

आज़मशाहका बेटा बेदारबरूत, और उसके बेटे बेदारदिल और सईदबरूत

आज़मशाहका दूसरा बेटा आलीतबार

कामबख़्शका बेटा मुहयुस्सुन्नह

बहादुरशाहकी दो बेटियां थीं

१- दहर अफ़रोज़ बानु बेगम
२- दौलत अफ़रोज़ बानु बेगम

इस बादशाहके वक़्में ३५०००००००० रुपये सालानह आमदनी थी

नील छन्द
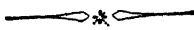
श्री जयसिंह नरेश गए शिवलोक जबै ।
धारिय छत्र विचित्र बली अमरेश तबै ॥
शाहलिये बधनोर पुरादिक प्रान्तपुरा ।
लेन तिन्हैं तरफैन करी तहरीर तुरा ॥ १ ॥
ईश चितोर रु शेवक शाहनके दळजे ।
नीतिरु प्रीतिरु भीतिभरे छलते बळजे ॥
लै चहुवाननतैं बरजोर शिरोहिय भू ।
ख्वाहिशके अनुसार दई अमरेशहि जू ॥ २ ॥

बग्गुर कंठल रामपुरा पति आन नये ।
तीन सुजानक बधज प्रान्तन छोर गये ॥
कृष्ण जुझार रु कर्ण यथान्वय लेख भयौ ।
बीरनके इतिहासहि वीरविनोद छयौ ॥ ३ ॥
शाह बहादुरते जयसिंह अजीत फिरे ।
बोल तिन्हैं उदयापुरमे मेहमानकरे ॥
रानसुता जयसिंह बिवाह भयो जबही ।
राजनकी धरपै मरहट्ट गिरे तबही ॥ ४ ॥
रान लये बल संग दुहू महिपाल चले ।
ख्वाहिशके अनुसार जिन्हैं निज राज मिले ॥
राज प्रबंध अनन्य जबै अमरेश रचे ।
ऊमरके पकवान सबै वहि ठौर पचे ॥ ५ ॥
यें अमरेश नरेश जितेक प्रबंध किये ।
ताहि मगे उदैयापुर आजहु जात किये ॥
मारव जोधपुरेशहिको इतिहास लिख्यो ।
शाह बहादुर वृत्त यथाविधि देख दिख्यो ॥ ६ ॥
सज्जन रान अपेक्षितके हित हौन हितै ।
शासन श्री फतमाल नृपालहि सिद्ध चितै ॥
श्यामलदास कियो अमरेश जुखंड यहै ।
वीरविनोद महा इतिहास अखंड रहै ॥ ७ ॥
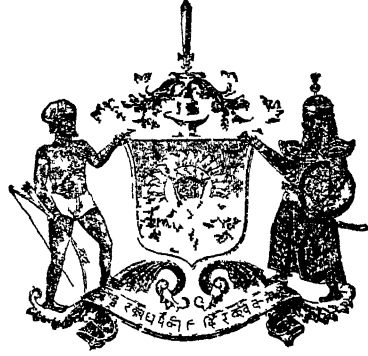
इग्यारहवां प्रकरण

महाराणा संग्रामसिंह दूसरे.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७६७ पौष शुक्ल १ [हि० ११२२ तारीख २९ शव्वाल = ई० १७१० ता० २२ डिसेम्बर] और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी १७६८ ज्येष्ठ कृष्ण ५ [हि० ११२३ ता० १९ रबीउलअव्वल = ई० १७११ ता० ८ मई] को हुआ इस राज्यमें पहिलेसे यह दस्तूर चला आता है, कि जब महाराणाका इन्तिकाल हो, उसी दिन उनका बेटा, चाहे खास हो, अथवा गोद लिया हुआ, गद्दीपर बैठता है; और कुछ अर्से बाद शुभ मुहूर्त निकलवाकर गद्दी नशीनीका जल्सह किया जाता है, उस वक्त तमाम राजाओंको न्योता भेजा जाता है; और सब बहिन, सुवासिनी व कुन्बेवालोंको एकट्ठा करते हैं; शास्त्रके अनुसार सब तीर्थोंका जल और अग्निहोत्रका सामान, वस्त्र, शस्त्र और गहना वगैरह एकट्ठा करके महाराणा पाटवी महाराणीके साथ गद्दीपर बैठते हैं, तब सब सर्दार या राजा लोग, जो उस वक्त हों, नज्र देते हैं. महाराणा सबकी नज्र बैठे हुए लेते हैं, उस वक्त किसीको ताज़ीम नहीं

दीजाती जब महाराणा अमरसिंह २ का देहान्त हुआ, तो महाराजा सवाई जयसिंह जयपुरसे आये, और टीकेके जल्सहमे भी शामिल हुए, महाराणाने उनसे कहलाया, कि इस वक्त आपकी बे अदबी होगी, इसलिये अपने डेरेको पधारे, तब महाराजाने कहा, कि अपने धर्मशास्त्रसे पुराने काइदोके मुताबिक गद्दीनशीनीके वक्त राजामें दशो दिग्पालका अश आजाता है, इसलिये मै आपको रामचन्द्र और महाराणीको जानकीका स्वरूप जानता हू, सो दर्शनोके वक्त मुझे दूर न रखना चाहिये इस तरह प्रीतिके साथ महाराजा जयसिंह भी रहे महाराणाने इस दस्तूरसे फुर्सत पाकर कुछ खैरख्वाह और रिश्तहदारोको इज़्ज़तके साथ विदा किया, और महाराजा सवाई जयसिंह भी जयपुरको गये

महाराणा अमरसिंह २ ने, जो काइदे जारी किये थे, इन्होने उनको अच्छी तरहसे मज्बूत किया, और माडलगढ, पुर माडल व बधनौरके पर्गने महाराणा अमरसिंह २ ने बादशाह आलमगीरके मरते ही मेवाडमे मिलालिये थे, लेकिन् बहादुरशाहकी तरफसे खालिसहमे गिने जाकर बख़्शिशका फर्मान् न आया, जिसके लिये महाराणा अमरसिंह २ भी कोशिश करते रहे, जो उनके अह्दके काग़ज़ोसे जाहिर है. महाराणा अमरसिंह २ का जब अचानक देहान्त होगया, तो यह खबर सुनकर बहादुरशाहने टीकेका दस्तूर भेजा हुआ भी वापस मगानेका हुक्म दिया, और ऊपर लिखे पर्गनोकी कार्रवाई बन्द रही, लेकिन् खानखाना मुन्इमखा वजीर, जो राजाओका तरफदार था, वह इन्ही दिनोमे मरगया; और अमीरुल्उमरा जुल्फिकारखां, जो उसके बर्खिलाफ था, उसने मुन्इमखाके बनाये कामोको बिगाड़नेकी नियतसे पुर माडल वगैरह पर्गने मेवाती रणबाजखाको और माडलगढ़का पर्गनह बादशाहसे कहकर नागोरके राव इन्द्रसिंहको जागीरमे लिखवा दिया.

शाहजादह अजीमुश्शानने बादशाहसे कहा, कि पजाबकी बगावत तेज हो रही है, और राजपूतानहमे फिर इस जागीरके देनेसे और भी फ़साद बढनेका अन्देशह है, लेकिन् शाहजादह मुइज़्ज़ुद्दीन व ज़ुल्फिक़ारखांने बादशाहको उलटा सीधा समझाकर जागीरका फर्मान लिखवा दिया इसपर मेवाडके वकील किशोरदासको शाहज़ादह अ़जीमुश्शानने सब बाते कहकर इशारह करदिया, कि जागीरपर मेवातियोका क़ब्जह मत होनेदो, अगर वे जंगी कार्रवाई करे, तो मारडालो; हम बादशाही गुस्सहको ठंडा करलेगे. इस बातको राव इन्द्रसिंह जानता था, कि यह जागीर मिलनेमें जानका खतरह है, किनारा करगया; लेकिन् बिचारे मेवाती शाहजादह मुइज़्ज़ुद्दीन और अमीरुल्-उमरा ज़ुल्फ़िक़ारखां मीर बख़्शीकी हिमायतके नशेमे पुर मांडलकी जागीरपर कब्जह करनेको रवानह होगये. ज़ुल्फिक़ारखा़ने पाच सात हजार चुने हुए आदमियोकी फ़ौज

उनके साथ देदी थी, और रणबाजखाने अपनी खास जमइयत भी साथ लेली थी बाजे आदमियोंने मेवातियोंको बहकानेके लिये राठौड़ कृष्णसिंह, करणसिंह, और जुझारसिंहके हालकी भी मिसाल दी होगी, जिनको आलमगीरने यह पर्गने जागीरमें दिये थे, और उन्हें महाराणासे कई बार मुकाबलह करना पड़ा, लेकिन् वह आलमगीरका जबर्दस्त जमानह था, जिसके रोबसे महाराणा अमरसिंह २ को किनारे रहकर पेचीदह कार्रवाई करनी पड़ी थी, तो भी ये पर्गने उनके कब्जहमें न रहे, और यह बहादुरशाही ठंडा जमानह, जिसमें दक्षिणी मरहटे और पंजाबी सिक्खोंका जोरशोर होनेके सिवा, शाहजादों और वज़ीरोंकी अदावत तरक्कीपर थी, ऐसे मौकेपर हर एक आदमीको हौसलह होता है महाराणा संग्रामसिंह बड़ी ताकत वाला राजा, रणबाजखां मेवातीसे कब दब सक्ता था

जब कभी मेवाड़के महाराणा दबाये गये, तब कुल बादशाही ताकत काममें लानी पड़ती थी, जिसमें भी अक्बर, जहांगीर, शाहजहां और आलमगीरके वक्त राजपूतानहके दूसरे राजा शाही फौजोंके शरीक होते थे, वह सब इस वक्त इन महाराणाके बर्खिलाफ नहीं थे, लेकिन् रणबाजखांको बड़े शाहजादह और मीरबख्शी जुल्फिकारखां की हिमायतका जोर था, कुछ न सोचा, और राजपूतानहमें बेधड़क चला आया यह खबर महाराणा संग्रामसिंहको मिली, कि पुर माण्डल और बधनौरके पर्गनोंसे हमारे आदमियोंको निकालकर नव्वाब रणबाजखां वहां अपना कब्जह करेगा फौरन् महाराणाने अपने अहल्कार और सर्दारोंको एकट्ठा किया, सबने एक मत होकर लड़नेकी सलाह दी, और दिल्लीसे वकील किशोरदासने शाहजादह अजीमुश्शान व महाबतखांके इशारहसे लिख भेजा था, कि मेवातियोंको गारत करदेना महाराणाने फौजकी तय्यारीका हुक्म दिया इस फौजमें शाहपुराका कुंवर उमेदसिंह, बधनौरका ठाकुर जयसिंह, बाठरड़ाका रावत् महासिंह, देवगढ़का रावत् संग्रामसिंह, सलूंबरके रावत् केसरीसिंहका भाई सामन्तसिंह व बानसीका रावत् गंगदास वगैरह बहुतसे सर्दार थे.

बेगूंका रावत् देवीसिंह किसी सबबसे न आया, और अपने एवज कामदार कोठारीके साथ जमइयत भिजवा दी, जिसे देखकर सब राजपूत सर्दार मुस्कराये, और रावत् गंगदासने कहा, "कोठारीजी यहां आटा नहीं तोलना है," तब कोठारीने जवाब दिया, "मैं दोनों हाथोंसे आटा तोलूंगा, उस वक्त आप देखना," परमेश्वरकी इच्छासे खारी नदीके उत्तर दोनों फौजोंका मुकाबलह हुआ, (१) तो शुरू ही में बेगूंके कोठारीने घोड़ेकी

---

(१) यह लड़ाई बाज लोग हुर्डांके पास और बाज बादनवाड़ाके करीब होना बतलाते हैं, लेकिन जियादह फासिलह नहीं है

बाग कमरसे बांधकर दोनो हाथोमे तलवारे लेली, और कहा, कि "सर्दारो ! मेरा आटा तोलना देखो" उस दिलेर कोठारीने मेवातियोपर एक दम घोडे दौडा दिये, यह देखकर सर्दारोने भी हमलह करदिया, क्योंकि सर्दार लोग भी यह जानते थे, कि कोठारीकी तलवार पहिले चलनेमे हमारी हतक है नव्वाब रणबाजखा और उसके भाई नाहरखा व जोरावरखाके नाइब दीनदारखा वगैरह मेवातियोने भी बडी बहादुरीके साथ मुकाबलह किया, ऐसा मश्हूर है, कि रणबाजखाके साथ पाच हजार आदमी कमान चलानेमे नामी तीरन्दाज हाथी और घोडोपर सवार थे, लेकिन् बीस हजार बहादुर राजपूत चारो तरफसे एक दम टूट पडे, कि तीरन्दाज दूसरी वार कमानपर तीर न चढा सके, बर्छा, कटार, तलवार और खन्जरके वार होने लगे, आखिरकार नव्वाब रणबाजखा अपने भाई नाहरखा व दूसरे भाई बेटो समेत मारागया, और दीनदारखां मए अपने बेटेके जरमी होकर अजमेर पहुचा इस बादशाही फौजमेसे बहुत कम आदमी जीते बचे, और राजपूत भी बहुत मारेगये

रावत् महासिंह खास रणबाज़खासे लडकर मारागया, और बेगूका कोठारी बडी बहादुरीके साथ काम आया; बधनोरका ठाकुर जयसिंह और सलूबरके रावत् केसरीसिंहका भाई सामन्तसिंह जख्मी हुआ, बानूसीका रावत् गगदास, जो कई लडाइयोमे फत्ह पाये हुए था, किसी ओटमे इस मतलबसे खडा रहा, कि लडाईके खातिमहपर घोडे उठाकर फत्हकी नामवरी पावे, क्योंकि उस वक्त दोनों फौजे कमजोर होगी; और हम मए अपने राजपूतोके घोडा उठावेगे, हमारी दानिस्तमे उसका यह विचार बहुत ठीक था, लेकिन् यह मश्हूर है, कि रावत् गगदासने नदीकी डोरियोकी डागड (१) की आड ली, जो लम्बाईमे एक मीलसे जियादह थी; जब गगदासने घोडा उठानेका विचार किया, तो रास्तह न मिला, जिससे एक मील तक इधर उधर दौड़ता फिरा; जब लडाई पूरी हुई, तब वह शामिल हुआ. उस वक्त किसी कविने मारवाड़ी जबानमे एक दोहा कहा था, जिसके दो मिस्रे यहां लिखे जाते है -

॥ माहव तो रणमे मरे, गग मरे घर आय ॥

अर्थ- कवि ताना मारता है, कि महासिंह, जो कम उम्र था, लडाईमे मारागया, और गंगदास बुड्ढा घर आकर मौतसे मरा, जो कि लडाईमे मारेजानेके लाइक था

---

(१) डागड- नदीके या तालाबके किनारेपर पानी निकालनेके लिये जो चरसके ढाने बनाये जाते हैं, उसको डोरीं बोलते हैं, और उस डोरीसे खेतोंमें पानी पहुंचानेके लिये जो दीवार बनाई जाती है, और जिसपर होकर पानी पहुचता है, उसे डांगड कहते है. खारी नदीपर ऐसी डोरिये और डांगडे बहुतसी बनीहुई हैं, जिनके ज़रीएसे दो दो मील तक पानी पहुंचता है, क्योंकि नदी नीची और जमीन ऊंची होनेके सबब यह नहर मिट्टीकी दीवारपर ५ से १० फुट तक ऊंची होती है.

महाराणा संग्रामसिंहने, जब यह सर्दार फ़त्ह करके आये, रावत् महासिंहके बेटे सारंगदेवको कानौडका पट्टा और सामन्तसिंहको रावत्का ख़िताब व बम्भोरा जागीरमें दिया, और सूरतसिंहको महासिंहकी पहिली जागीर बाठर्डा गांव और रावत्का ख़िताब दिया. इसी तरह अपने सब सर्दारोंको इन्आम, इक्राम और इज़्ज़तें देकर खुश किया.

इस लड़ाईमें रणबाजखां नव्वाबको मारनेका बयान मुख़्तलिफ़ है, बधनौर वाले अपनी तवारीख़में लिखते हैं, कि ठाकुर जयसिंहने बाधनवाडेमें पहुंचकर नव्वाबको मारलिया, पीछे उदयपुरकी सब फ़ौजने लड़ाई की, और नव्वाबका नक़ारह, निशान, ढाल तलवार छीन लाये, जो अब तक बधनौरमें मौजूद हैं. नीचे लिखे दोहे भी उसी तवारीख़में लिखे हैं -

दोहा

बाधनवाडा बीचमें जबर करी जैसींग ॥
बडग मार रणबाजखां धजवड राखी धींग ॥ १ ॥
रण मारयो रणबाजखां यूं आखे संसार ॥
तिण माथे जैसींगदे तें बाही तरवार ॥ २ ॥

अर्थ १ - बाधनवाडा गांवके बीचमें जयसिंहने ज़बर्दस्ती की, और घोड़े समेत रणबाजखांको मारकर तीख चोख रक्खी.

अर्थ २ - जहान् कहता है, कि लड़ाईमें रणबाजख़ांको मारा, उसके सिरपर जयसिंहदे तूने तलवार मारी.

इसी तरह कानौडकी तवारीख़में लिखा है, कि रावत् महासिंहकी तलवारसे रणबाजखां, और रणबाजख़ांकी तलवारसे महासिंह मारागया. उन्होंने अपनी तवारीख़में यह सोरठे लिखे हैं -

सोरठा

अमलां भागां आज, कर मन्हवारां जग कहै ॥
बाह खाग रणबाज, यूं कहबो माहब अधिक ॥ १ ॥
तें बाही इकतार, मुगलांरे सिर माहबा ॥
धज वढ हदी धार, सात कोस लग सीसवद ॥ २ ॥
जे पग लागे जाण, रण सामा रणबाजरा ॥
उदक प्रथी अडाण, करदेसूं माहब कहै ॥ ३ ॥

अर्थ १ - दुन्या कहती है, कि आज अमल और भांगकी मनुहार करना चाहिये, लेकिन् महासिंहका यह कहना खूब है, कि ऐ! रणबाजख़ां तलवार चला.

अर्थ २- ऐ महासिंह ! तूने मुग़लोंके सिर पर एक ढंगसे तलवार चलाई, ऐ सीसोदिया ! जिस तलवारकी धार सात कोस तक चलाई.

अर्थ ३- महासिंह कहता है, कि रणबाज़खांके जितने क़दम लड़ाईमें मेवाड़की तरफ़ पड़े, उतनी ज़मीन और कूए ब्राह्मणोंको संकल्प करदूंगा, अर्थात् नव्वाबको एक क़दमभी आगे न बढ़ने दूंगा. देवगढ़ वाले बयान करते हैं, कि रावत् संग्रामसिंहने अपने एक सांगावत राजपूतसे ललकारकर कहा, कि मदारियाके कुछ ख़र्गोश मारखाये हैं, लेकिन् गोली लगाने और नाम पानेका मौक़ा आज है, तब उस सांगावत राजपूतने गोलीकी चोटसे नव्वाबका काम तमाम किया. बम्भोरा वालोंका बयान है, कि रावत् सामन्तसिंहने नव्वाब रणबाज़खां और उसके भाई नाहरख़ांको मार गिराया. शाहपुरा वाले अपनी कार्रवाई बतलाते हैं, हक़ीक़तमें यह लड़ाई इन सर्दारोंने बड़ी बहादुरी और तन्दिहीके साथ की थी, लेकिन् नव्वाब किसके हाथसे मारागया, यह साबित करना मुश्किल है, क्योंकि वह एक आदमीके हाथसे मरा होगा, और फ़त्ह सब सर्दारोंकी बहादुरीसे हुई, वर्नह एक क्या कर सक्ता है, हां अलबत्तह बधनौर वालोंके पास एक नक़ारह दूसरे ढाल और तलवार मौजूद हैं, उस ढालपर कुर्आनकी आयतें ख़ूबसूरतीके साथ लिखी हुई हैं. इन चीज़ोंके देखनेसे क़ियास होता है, कि ये ख़ास नव्वाबके रखनेकी होंगी. यह ख़बर अजमेरके वाक़िअहनवीसोंने लाहौरमें बादशाहके पास पहुंचाई, बादशाह सुनतेही नाराज़ हुआ, और महाराणा संग्रामसिंहके लिये टीका भेजनेका दस्तूर, जो तय्यार होचुका था, मौक़ूफ़ रक्खा. हम इस मौक़ेपर दो कागज़ोंकी नक़्ल दर्ज करते हैं, जो महाराणाके वकीलोंने दिल्लीसे उदयपुर भेजे थे.

पहिले काग़ज़की नक़्ल.

सीधी श्री अत्रच । आगै कागद दु॰ भादवा बदी ८ सीनु मेवड़ा पेमा नामें ४ साथे लाहोरसु मोकल्या है, सो हजुर मालुम हुवा होगा जी, तीण पाछै इण भाते है, जो रुसतमदीलषा आपरी फौज कोस १० प्र छोडे आप जरीदो बीगर हुकम लाहोर सहर माहे ईरी हवेली है, तठै ईरो कबीलो थो, जठै ईणा ही दीन राते आयो, या पवर येही वकत पातीसाहजी थे अरज हुंवी, अर आपो दरबार लागु थो ही, प्हेलां तो सरबराहखा कोटवाल हे नोबतखा हे भेजा, जो रुसतम दीलखारी हवेली घेरे वेहे पकडो, पाछै म्हाबतषां हे, इसलामषा हे, मुपलसषा हे बीदा कीधा, जो लडै तो मारनाषो, न्हीत्र पकड लावो; तींत्र अे सारा गया, म्हाबतषा आपरा हाथी प्र आप तीरे बैसांण

लेआयो, जाली माहे म्हाबतषारै चौकीषानै बैसाणी, अर अरज करावी हुकम हुवो, कीस भात ल्याए है, अरज कीवी हाथी प्र ल्याऐ है, फरमायो, पाव पयादा ल्यावना था ईसलामषा है हुकम हुवो, इसकु लाहौरके कीलेमै जजीरकर कैद कर आवो, इसका कबीला भी कीलौमै रषौ, षानसामा वुतात (बुयूतात) है हुकम हुवो, इसका अमवाल हवेली सब जबत करो, सो ई है कीलामै लेजाती बार लसकररा हजारा छोहरा भेला हुआ था, तीसी नीयत थी, तीसी पाई, अमवाल सारो जबत हुवो, जागीरा जबत हुवी, षीदमता लोका है हुवी, सौ वकायारी फरदा सु मालुम होगो जी, सो ईणे तो कीधो थो, तीसो पायो जी फेरौजषा मेवाती पाछे बैठ रह्यो थो, तीरा लेबाहे गुरजबरदार २ अर म्हाबतखारी मौहर रो हसबल हुकम गयो थो; सो फेरौजखा काल्हे लसकरमै आयो, म्हाबतखारा डेरां तीरे उत्रो है जमुरी अथवा सरहदरी फौजदारी ईरे नामै ठैहरैगी जी, और गुरूजी तो साढौरै (शाह दौलह) डाबर त्रफ गया, सहारनपुर ज्मना पार है, ईक बार उठै जाबारी पबर है म्हमद अमीरषा है पाछो करवागे हुकम है जी, राजा है हुकम है जो साढौरै आवे, सो तुरत तो दोनु राजा (जयसिंह व अजीतसिंह) दीली तीरै बदली बैठा है, उठै बैठा आस पासरो काम करै ही सै जी, दीलीरी गीरद जबत तो आछो कीधो सै, भंडारी षीमसी साह अजीमजी है अरज दासती गुजरानी, जो साढौरै आबारो हुकम हुवो, सु मुफसदरी मुफसदी मालम सै आगे रुसतमदीलखा म्हमदअमीषा सारषा बडा उमराव गया था, ती बतै वे है तव्ही होई न सकी, अर म्हे डाबर आवा, अर मुफसद भाग मगरा माहे जावे, तो या हजुरमै लोक अरज करै, जो याही मील भगाई दीधो अब ताई म्हारो ईतबार हजुरमै न सै, तीसु गुजरात सारषी म्हानु सोपजे, उठै पातीसाही काम करा, म्हारो ईतबार आवै, पछै तठै हुकम होगो, तठै जावागा दुजो यो लीषो, जो नाहनरो राजा रोक माहे है, ती है छोडजे नागौर मोहकमसिघ है हुवो है, सु ईद्रसिघजी है बहाल रहे, अर षीवसी भडारी है ईक बार रुखसत होई, म्हारी नीसाकरे पाछो फेर पाछो हजुर आवै, सो साह अरजदासती पढ फरमायो, तुम्कु रुषसत करेंगे, तु जाई राजोकु साढौरै लेआव, साढौरै आयो पातीसाह राजी होगे; सो अब देषजे काई ठैहरै सै; पण राजा दीली तीरै बैठा बदनामीरो ही काम करैसे जी, अठै तो बदनामी घणी ही आवैसैजी, अठै तुरत तो कोई साभलै नसै जी, और बिलफैल तो पातीसाहजी लाहौर बीराजैसै, तुरत सालामार-बाग भी देषवा पधास्या नसै, कुचरी बात तुरत ठैहरी न सै, गुरुजीरी बात ठीक अरज होई चुकी सै, जो साढोरा डाबर बुणीया तूफ गया, सुण चुपक्या व्है रह्या सै म्हमद अमीषा है ताकीद जावैसै जी, देषजे अब गुरु कठै ठाहरै, काई कारज करै जी

पानो दुजो

अप्रच श्रीजीरा तेज प्रताप करे टीलारा फरमान तथा ईनामात वासतै मेवात्यारा मारया पाछै मोकुफ हुवो थो, सो फेर तलास करे मनसुबा करे हुकम करायो, फरमान वासतै ईनामात वासतै सारी ठामा ताकीद करावी, सौ आगे बोवरो अरज लीपो हीसै जी नवाब अमीरल उमरावसु पुफया फेर सलुक कीधो, सौ फरमान तो अमीरल उमराव तयार कर म्हाबतषा तीरै भेजो, तब म्हे म्हावतषा तीरै बेठा था, म्हाबतखा फरमान म्हानै दीपाडो, म्हे तसलीम कर उरौ ले आप तीरै रापो, फरमान हे डेरै ले आयासा जी ईनामातरी ताकीद कराई सै जी, बले अरजी दे यारम्हमदषा कोल प्र हुकम ल्याया सा, जो सजावली ईनामात चलावे, जी सु ईनामात वासतै सारी ठामा ताकीद सै जी साह अजीमसारो नीसान षीलअत स्मसेर जडाउ पण तयार कराया सै जी, ओर नवाब अमीरल उमरावरो आगला पतरो जवाब अबारु हजुर मोकलो सै, सौ नजर गुजर सी जी, पतरो जाव घणो ईपलास सु आवे जी, ओर साह अजीमसा हमेसा म्हानै याद करे पीलवत मा बुलावे था, पण म्हे गौ देपे ढीलही करा था, अबारु साह टी-लारो फेर हुकम करायो, कामा माहे बजद हुवो, फेर कुदरतुलाहै हुकम कीधो, ले आवो; तरै दु० भादवा बदी १० राते कुदरतुलारी मारफत म्हे ने रामराजारी राणीरो वकील पडत यादुकेसौ साहरी हजुर पीलवत मा गया, प्हेला साह म्हाहै ईक हाथरै आतरै नेडा बुलावे फरमायो, जौ पातीसाहसु वजद होई राणाजीके वासते टीका लीया है; तब म्हे तसलीमा कीवी, फेर फरमायो, जो मैवातोके मुकदमेसु पातीसाह गुसै होई रह्या था, सो हमनै नीसाकर तकसीर माफ करावी, तब म्हे फेर तसलीम कीवी, अर अरज कीवी, जो राणा तो सिदक ओतकादसु ईस जनाबका बंदा है, तीस भात आगु अमर हुवा है, अर होगा, उसही मवाफक राणाजी करते है, राणाजीकु ईस जनाबके तसवर फरमाईऐ, फरमायो, इसमे क्या सक है, पातीसाही भी टीकेका दसतुर तयार होता है, अर हमारे ईहाका नीसान लवाज्मा तयार है, फेर म्हे तसलीमा कीवी; साह फरमायो, यादुकेसो वासतै, जौ ऐभी हमारे है, अब तुम्हारे तांई सौपते है, इसकु राणाजी पास भेजो, इसकु उदैपुरमै ही रषो, ऐ उहाही बेठा अपनै पावदकु लीख जवाब सवाल कर काम करेगा, तुम ईनकी मददमै रहो, म्हे अरज कीवी, जो तीस भात इरसाद मुबारक होता है, उस ही भात काम सरजाम पावैगा, पछै यादुकेसौ वा आपो पडत हरकारो तो सै, पण यादुकेसौ मै थेटसु मिलौ सै, वा कुदरतुला साथ तफावतसुं षड़ा था, अरज करावी, जौ दीषणका सुबा जहांपन्हा अपने तअलक करै, हम मुजरा करदिपावे, फरमायो, अब तो थोडी वात आई रही है; फेर या अरज कीवी, अब

दीपण, मालवै, गुजरात, अज्मेर, धुर दीली आगरै तक सब जगो भला काम करैंगे, फरमायो तुमसु होई आवे, सो करो, फेर कान्हजीरी तूफ देषे साह रूबरू नेडा था फरमायो, राणाजी पास बसत भाव कुन लेचलैगा, कांन्हजी अरज कीवी, मै हुजुर सु रुषसत होई ईनामात लेजाउगा फरमायो, ईहा कीसकु रषोगे, अरज कीवी, ईस वकील कीसोरदासकु, हमेसा रीकाबमै ही रैहता है, सो कान्हजी तीरै कीसोरदास पडोही थो, साह फरमायो, खुब है पछै यादुकेसो वासतै फेर फरमायो, जो तुम साथ लेजावो, म्हे कबुल कीधो, सो भेद लेबा वासतै म्हे फेर अरज कीवी, जो बाजे मतलिब ओर अरज करनै है, फरमायो, हमनै फरमाया है, सो सेप कुदरतुला कहैगे, तुम भी ईसही साथ मतलब अरज कराईयो, सो पडत दोउ हाजर था, ती वासतै दोन्य त्रफा भेदरी बाता न हुवी, पाछै कुदरतुला है म्हा है पडता है रुषसत कीया, आधी रात पाछै डेरा आया, दुजे दीन कुदरतुलारै गया, खीलवत कीधी, म्हे पुछो, साह काई फरमावे है, वा कही, जो साह चाहै है, जो दीपणमै फीसाद होई, दीषणके सुर मारेजाई, दाउदखा ठीकाणै लागे, अमीरल उमरावकी कुवत तुटै, अर मालवा पाक सीयाह होई, जहासाह खजानेसे तुटै, असा ही ओर मतलब है तब म्हे कही, जो ओ मोटी बातो है, हमारे ताई फरमाते हो, तुम दीषणोकी मदद करो, तब हमनै दीषणोकी मदद कीवी, तबतो मुकदमा तुल पैचैगा, सो मेवातोका मुकदमा ईरसादसु ही हुवाथा, मुकदमा हुवा पीछै सब ईगमाज

पानो तीजो

करगये थे, सो वो तो जुजवी (छोटा) मुकदमा था, ऐ मुकदमै भारी है, नीधान साहकी मरजी क्या है, तब असा फीसाद उठै, तब साह नीधान क्या करैगे, इस सीवाई दीषणोमै हमारी फौज तब जावे सामल हुवी, तब हमारी फोजकी बात छीपी न रहेगी, पातीसाह हजुर हम बदनाम होगे, तीसकी क्या सलाह दोलत है तब कुदरतुला कही, तमनै सब बात सच कही है, ईसका जबाव बीगर साहके बुझै कहया न जाई, तुमनै कहया है, सो सब मतलब अरजकर ईरसाद फरमावेगे, सो तुमकु कहैगे म्हे कही हमारा षावद ईक साहकी जनाबकु जानते है, ओर कीसीकु जानते न्ही, साहका ईरसाद होगा, सो ही करैगे, अमा अब ईरसाद होई, सो पकी ही होइ, मरजी होगी, सो ही बात तयार है जी, ओर साह हजुर रुबरु हीदवी नीसान वासतै अरज कीवी थी, फरमायो, षास दसषतोका हीदवी नीसान अलबते देगे, ओर कोचअलीषा दीलीसु न आयो से, पण हातीम बेगषा कहे थो, कोच अलीषा दिलीसु चल्या है, हम तो मनै करते है, जो अब मत आवो, अगली ईनामातका हुकम मुजदद (मुजदद- नया) का तलास करते है, हुकम तमकु पोहचै, तब आवो, तो भला है, सो कोचअलीषा चल्या आवता है, ती प्र म्हे कुदरतुलारी मारफत

आगली इनामात वासते फेरे अर्ज़ी दीवी है, तुरत अरजी पाछी आवी न सै, जाणासा कौचअलीपा आयो, अर मुलाज्मत कीवी, तब ईनामातरी पुछा पुछी होगी, ती सु दोई दीन ढीलसु आवे, तो टीलारो तो काम हाथ आई चुके, अर आसी, तो वो भी फीकर कर राषो से जी, और जोरावरपा मेवाती आगे दीनदारषा नाय थो, सो ईण लडाईमा बाप बेटो धारले अज्मेर भाग आया था, सो बेटो तो मुवो, अर ऊ आछो हुवो, वैरा पत वकील हे लोका हे आया था, जो मेरा ईजाफा होई, अर हुकम आवे, तब परगनोकु बडी फोजसु जाउ, सो तुरत अठे कही जाब दीधो न्ही, वकील भी ललो पत्तो लीप भेजी से जी, फेरोजपा मेवाती काल्हे म्हाबतपारा पीलवत पाना मे म्हासु मीलो थो, हसकर चुपको सो होई रहो जी, वेही वकत म्हाबतपा म्हाने कहे थो, जो ईनामात भी सीताब आवे है, ताकीद बोहत है, अब तुम परगनोका चुकावकर टके भरो, अर सैद अहेमद गैलानीकी भी सनदो होती हे, तुम साह कुदरतुला पास बेठे दोनो बातोका नीसतुक कर द्यो म्हे तो याही कही, नवाब फरमाओ, सो ही होसी, नवाब कही, अब हमारे फरमावे प्र ललो पत्तो करो मती, चुकाव कीयो ही फाईदो हे, बात बधावो मती तब भी म्हे मलमलाता ही बोल्या, सो आगे सारा बोवरो अरज लीपो ही से जी अब दुरअदेसी प्र नजर राप इक बात नीसतुक ठेहेराई, बोवरो लिपबारो हुक्म व्हैजी, अठे कबतांइकी सीदसत आवे, जसु बात आगे चालसी जी, और मेवात्यगी लडाईरा मुकदमो श्रीजीरा तेज प्रतापसु अठे केहणो सुणणो थो, सु व्है सुण चुक्या सा जी, अब अज्मेरमे अथवा और ठामामे हजुररो कहीरी सुफारसरो तलास करवारो हुकम न व्हे जी; अब दरकार न्ही जी, और आज बरस दीनरी जाईगा हुवी, साह उटारी फरमाईसे कीधी थी, अब फेर साह कुदरुतुला हे फरमावे था, जो पुछो ऊट न आऐ, सो वे म्हा हे ओलभो सो दे था, सो ऊटारी काई मालयत हे, जो अतनी ढील कीजे, अब ऊट आछा वेगा आवे जी, ऊट पोहचसी, तब नजर गुजरान मुतसद्धारी मोरसु रसीद ले हजुर मोकलस्या जी, और उसवास (वस्वास- फिक्र) न्ही से जी, और ईपलासषाजीहे मेवात्यारा मुकदमा बाबत पत आयो थो, सो म्हे अर रोसनराईजी भेला व्हे पोहचायो, वा भी घणो ईषलास जणायो जी, यारो पत तयार व्हे से जी, और लाहोररा म्हेला माहे दलबादल पीओ छोटो ज्हागीररा बारारो पड्यो थो, सो पातीसाहजी हजुर मगावे पड़ो करावेसे; वे मे सालगीरे आपरीरो जसन करेगा, अर आलीतबाररो ब्याह पण रफीअलसारी बेटीसु होगो जी, और कागद दरबाररो प्रथम भादवा बदी ११ सोमेरो लीषो मेवडा प्रमानद पीथा नामे २ साथे दु० भादवा बदी ३० सीनु लाहोर पोहच्यो जी, स्माचार सारा पायाजी, कागद भेजबारी ढील हुवी लीषी, सो बीच कागदारी ढील हुवी,

सो प्रथम तो ईक मास ब्यह (बयास) नदी उतरता लागो, दुजो मेवात्यारो मुकदमो आईपडो, तीरो जवाब सवाल कीया बीगर हजुर काई लीषजे, अर झुठ तो स्माचार लीष्या न जाई, सो

पानो चोथो

श्रीजीरा तेज प्रतापसु सारी ठांम मजकुर पकी कर पात्र ज्मा कर कागद हजुर मोकल्या से जी, अब कागदारी ढील न होगी, हजुररा हुकम माफक दीन आठ कागद मोकलवो करस्या जी, और कीसोरदासरा रोजगाररी हुडी रुपया ३७४ री मोकली थी, सो पोहची से जी, माथे चढावे लीवी जी वकायारी फरद ५ पाच हजुर मोकली छे, जो वलतो कागद समाचार मया होवे जी समत १७६८ व्रषे दुती भादवा सुद २ सोमे, मेवडा जण ३ तीन दपोरे चलाया छो जी, अणी कागदरा समाचार कठे ही जाहर नु होवे जी, ऐ समाचार बारे सुणे जसा नु छे, दुजा समाचार कतराक ल्षवामो आवे नु छे, हजुर आवसु जदी मालुम करसु जी ऐबे हजुर हु पण वेगो आवु छु जी.

दूसरे कागजकी नक़्ल

१ श्रीरामजी

सीद्धी श्री अप्रच । आगे कागद दु० भादवा सुदी २ सोमे मेवडा भगवान नामे ३ साथे मोकल्या से, सो हजुर मालुम हुवाहोगा जी कागद १ दरबाररो प्रथम भादवा सुदी ११ सोमेरो लीषो दु० भादवा सुदि ८ सीनु मेवडा नराईण, रामा, अमरा, छीत्र, लोधो नामे ४ साथे लाहोर पोहच्या जी, सारा स्माचार पाया जी षत नवाब म्हाबतषा है, ईषलासषाहे, कागद हीदवी राजा राजसिघहे, परवानो १ सेद नसरतयारषारा परधान ढीपचदरे नामे, परवानो १ रोसनराईरे नामे तथा कागद १ राजीरो दीपचदरे नामे मोकल्या था, सो पोहच्या जी; म्हाबतषाहे, दीपचदहे, रोसनराईहे, षत परवाना पोहचाया जी बीच ही दीन सुदी ९ तथा १० मेह ईधक हुवा, तीणसु राजा राजसिघहे, ईषलासषाहे षत अब पोहचावस्या जी; सारारो जवाब लीषावे, हजुर मोकला सा जी, और राजारी हकीकती लीषी, जो राजा तो पातीसाहीसु मेल करे चाल्याजावे से, तीणसु दरबाररो पण सलुक सारासु लीषणे पढणे राषजे, तीप्र नसरतयारषारा लोक घोडो ले हजुर आया था, त्याहे घोडो ले हजुरसु मया करे, षत घणा ईषलासरा मोकल्या, ईण सीवाई वकील बाघमलहे अज्मेर मोकल्यो
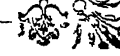
से, षत मोकल्या से, सौ या बातरो हुकम हुवा, सौ आछो हुवो जी, सलुक कीया भली हीज बात से, पण सलुक पातीसाहीमै कीधो चाहीजे, पातीसाही मा सलुक हुवा सारा दबता रहैसे, सो श्रीजीरा तेज प्रतापसु पातीसाही मा तौ सारासु ललो पतौरो सलुक राषो से, ने बले ईधक सलुक राषा सा जी आगै राजाहै हुकम गयो से, जो साढौरै आवे बैठौ, अर गुरजबरदार गयो से, नाहरषा पण साभरसु राजारा ल्याबा वासतै राजा तीरै बादली आई पोहचो मै, सौ राजा तुरत दीली उरै बादली तीरै बैठा से बादली तीरै पातीसाही पासी सीकारगाह से, उठैही सालामार बाग पातीसाही से, तठै राजा सीकार हीरणारी पेल्या, अर बाग गया, तरै दरवाना माल्या, दरवाजो षोलौ न्ही, दुहाई दीन्ही, राजा कीत्राक रजपुता हे बागरी भीता प्र चढावे बाग भीत्र भेजे दरवाजो षुलावे राजा बाग माहे गया, सौ सीकाररी बाग जाबारी मजकुर सवान्हे नीगार दीलीरे लिप हजुर भेजी, पातीसाहजी पढे म्हाबतषा रैनाम दसषत कीधा, जो जफरजग नाहरषा सजावलकु ताकीद लिषै, राजोकु सीताव साढौरै ल्यावै, और कुछह फरमायो न्ही, पण मन माहे घणही अेतराजसे ई सीवाई आगै मेवातरी गीरदसु पेशकसा राजा लीधी, और भी दीलीरा जसोतपुरा माहे कसाई ने जजीया वाला मारया, अर राहदारी लेवे से सो पातीसाहजी सु केई त्रफा सु अरज पोहुची सै, सो तीप्र भी चुप साधी से जी अबारु भडारी षीवसी अरज दासती साह अजीमजीहे गुजरानी, तीरा स्माचार आगै अरज लीप्या ही से जी पीवसी आपरी रुषसत वासतै कुदरतुलारी मारफत साहसु अरज करावी थी, साह पातीसाहसु अरज कीवी, हुकम कीयो, जाई राजोकु ले साढोरै आवै, साह दोनु राजाहे नीसान ने षीलअत भडारी ने भिषारीदासहे सोप्या, साह याही फरमाई, जो बदनाम तो तुम बहुत हुवेहो अर हमारे हमचसम पातीसाह हजुर हमकु बदनाम तुह्मारे वासतै करते है, अपनी ब्हेबुद (बिहबूद-फायदह) चाहो तौ पातीसाही अताअत मानो, साढौरै आवो, पातीसाह जाएँगे, हमारी अताअत मानी हमने काबलकी तईनाती तुम्हारी मोकुफ करावी, अर करावेगे, साढोरै आयो पीछो या हजुर आईयो, या पुरबके तईनात करावेगे, या दीपणके तईनात करावेगे, ऐही न मानोगे, तो वतनकी रुषसत देगे, पण तुम दीली ही बैठे बेअदबी करतेहो, सो खुब न्ही; अैसी ही दीलमै थी, तो वतनसु काहेकु दीली तक आऐ, अब अताअत मानते हो, तो साढोरे आवो, न्ही त्र उठजावो, पातीसाह फीकर करलेगा- सो पातीसाह जादे कुदरुतुला साथे या कहाई से, ती प्र भडारी षीवसी दीन दोई च्यारमै राजा तीरै चालसी जी, भडारी कहे से राजा हे साढौरै बेगो ले आउ हुं, साह फरमाई तीही भात म्हाबतषा भात भात भडारीहै माकुल कीधो से जी. पातीसाह जादो अर म्हाबतषा कहे है, जो भीषारीदास भी जावे, अपने राजाकु

माकुल कर राजा जैसिंघजी कना राजा अजीतसिंघजीकु माकुल कर लेआवै, तीप्र भीषारीदास भी त्यार हुवो सै, पण भडारी चाहे नही,

पानो दुजो

जो भीषारीदास साथ आवे, अठे लसकरमा रहै, ई वास्तै जो भडारी राजा श्री जैसिंघजीरे आपरी मारफत नैनसुष हे परधान कीधो हे, राजाजीरे या दीना माहे नैनसुपरो ही अषत्यारसै, सो अठासु प्हैला तो भडारी लीषी, जो दोनु राजा नारनोल पोहचे, अर गुजरातरो सुबो कराई भेज्यु नारनोल आया, तब लीषी, जो दीली तीरे आवो, तब बीरादरीरो मनसब ने जागीर मनमानती ल्यु, अर गुजरात मालवारा सुबा ल्यु, थे दीली तक आवो, आगे थानु आबा दु न्ही, दीलीमे आई बेठो, अर फौज घणी भेली करो, तब पातीसाहजी आपसु आप क्हैसी, जो दीली रह्या भला न्ही, तब क्हैस्यां, सो करसी तीप्र राजा दीली आया, अब राजाहे साढोरे आबारो हुकम हुवो, तीप्र राजा अजीतसिंघजी भडारीनु लीखो सै, जो ते आठ म्हीना तक लसकरमे बेठे काई कांम कीधो, ते म्हानु दीली तक बुलाया, अब साढोरे बुलावे सै, तीणसु तु ईक बार हजुर आई, तीप्र भडारी चाले सै, जो स्मझावे साढोरे ले आउ, पछे फेर लसकर आउ, काम करु, सो भडारी तो साच झुठ राजा अजीतसिंघजी हे लीषतो, अर नैनमुष हे लीषतो, नैनसुष राजा जैसिंघजी हे स्मझातो, अर भीषारीदास साचो आदमी सै, सो साच बात आपरा राजा हे लीषे, तीप्र भीषारीदास हे राजा श्री जैसिंघजी रो प्रवानो आवे, जो फलाना मुकदमे भडारी ओर भांत लीषो, थे ओर भांत लीषो, सो काई सै, तींप्र भीषारीदास तो स्याम धम पणा सु साच बात दषाई लीषे, उठे नैनसुष पेस जाबा दे न्ही, भडारीरो लीषो साबत रषावे, तीणसुं भीषारीदास जाणे सै, जो हु पण जाउ, अर राजा हे दीषाई दोनु राजा आवे सै, तो भलाही सै, न्ही तू राजा जैसिंघजी हे तो बात स्मझावे ले आंऊ, अर भंडारीरो साच झुठ षोली काढु, ईण सबब भडारी यां हे अठेही राषो चाहे सै, साह अजीमसानजी कुदरतुलारे साथे भीषारीदासहे क्हैवाडो, जो तु तो देरीनां (पुराना) आदीमी है, अपने राजेकु तो माकुल करले आव, ओर उसवास करै मत, हमारा कौल बीच है, ओरोके कहेसै तुम क्यु षराब होतेहो, तुम आवोगे, जो अरज करोगे, सो पातीसाह सब मनजुर करेंगे सो भीषारीदास हे तो भंडारी जुदो कठे जावादेवे न्ही, तीणसुं कुदरतुला म्हारे हाथ ओ स्मांचार कह्या था, सो म्हे भीषारीदास हे कह्या, सो भीषारीदास कहे है, भडारी अर मे साथ ही साहरी हजुरसु रुषसत व्हे स्या; सो प्रभाते रुषसत साहसु व्हैगा, मेड़तारा परगना प्र पातीसाही चेलांरी ने

षांनज्हानी रीसालारी पाछला बरसरा हासीलत्र तनषाह आगे हुवी थी, सो घणा षरा तो भडारी अठे पईसा रोकडा दीधा, बाकीरा देचालसी जी राजा तींरे असवार हजार पचीसेकरो अठे भरम उठो; तींत्र मोजदीन (मुइज़्ज़ुद्दीन) अरज कीवी थी, जो भाई अजीमसानकी ईसारतसु राजो पास तीस हजार सवार ज्मा हुवा है, सो हजरतत्र दगा है, मुझे हुकम होई, तो राजोत्र जाऊ, तीत्र हुकम हुवो, राजा साढोरे आवे, अर साह अजीम है फरमायो, जो राजो पास ऐती फोज तुमने ज्मा करवाई, अब लीषो, जो दोई तीन हजार असवार पास रषे, ओरकु न रषे, सो आगे राजा है ईए बातरा लीष्या म्हाबतषारा गया है, अबारुं साह भी फरमायो, जो जुजवी जमीयतसु आवो, जीयादे जमीयत मत रषो, सो अब भडारीरा गयासु राजा दोनु साढोरे आया, तो भलाही से, पछे फेर ओर कुछ हुकम होगो, अर न आया, तो बात बरहम होगी जी, सो ईक मासमे सारी मालुम ही होगी जी, ओर दीषण्या रो कागद वारा ही आदम्या साथे हजुर आयो लीषो, त्यारो जाब लीष्यारो हुकम हुवां, सो कागदवाई कीधा भला हीज से जी, अर बरसात पाछे मालवा गुजरात त्रफ दीषणी आवसी लीष्या, अर यो लीषो जो दुरगदासजी सारषा वामे मीले, तो फीसाद बडो उठे, सो याहे असाही मोटा काम वास्ते राष्या से, सो या बात मोटी से जी म्हे साह अजीमजी हजुर गया, अर मजकुर हुवी, अर पछे म्हे साहसु कुदरतुलाजी साथे अरज कराई, सो तो वोवरो आगे अरज लीषो ही से जी, तींत्र ईरसाद हुवो, जो तुम्हारी बदगीसु हमकु असीही उमेद है, बीलफैल दीषणी तो मालवा त्रफ आवे, आयो पीछु हम फरमावे, तब अपनी फोज उनके सामल करीयो, अर जो ईरसाद करे, सो करीयो, बीलफैल उनकु आवण द्यो, सो काती सरे दीषणी तो षडनी वास्ते मालवा त्रफ आवेही आवे, आया पाछे साहसुं अरज पोहचावे, जो ईरसाद फरमावेगा, सो ती माफक अरज लीषागा जी, तब तक राजारी भी नीसतुक होगी जी राणीरा वकील हे पण साथ ले हजुर आवाहा जी, ओर हुकम आयो, जो हकीमरी मारफत साहसु काबु पको कीजो, सो श्रीजीरा परतापसु अठे साहसु आगासु बसेष वारी मरजी मुजब मनसुबा करकर षीलवतमां अरज पोहचावे, राजी राषे, यांरी हजुर दरबाररो काबु नीपट आछां कीधो से, ने बले ईधक करां सा जी, साहरा काबुरी त्रफ सु षात्रज्मां फरमाबारो हुकम व्हे जी, और कोचअलीषा दीलीसु चाल्यो साभल्यो, अर हातीमबेग कहे, जो कोचअलीषा हजुर आवेगा,

पानो तीजो.

अर पातीसाहकी मुलाज्मत करेगा पातीसाह तथा मुतसदी ईनामात वासते ६

पुछहैगे, तब तो कोचअलीषा अपने सीर न लेगा, याही कहैगा, मुझसु जोरावरी लीवी, अरजदासती लीप दीवी, तब सब कोई कोचअलीषाका कह्या सच मानैगे, सो म्हेतो या बात आगे ही बीचार राषे तलास मुजदद् हुकमरो कीधो थो; तब तो साहने म्हाबतषा फरमाई थी, जो टीकेका तो इनामात ले चुको, पीछो जानबी, तीप्र म्हे टीकारी ईनामातरो तलास करे हुकम दुजी बार ले ने ईनामात लेवा हे बजद (दर्पे) हा; अबारु फेर कोचअलीषा रो षत म्हानु आयो, सो बजनस हजुर मोकलो से जी हातीमबेगषा हे पण षत आयो, तीप्र म्हे बीचारो, जो कोचअलीषा नीधांन हजुर आसी, नया सीरसु बदनांमी फेर जाहर होई, तो सलाह न्ही, अर ईनामात लेबामे ढील व्हेगी, तीप्र म्हे फेर साह हे अरजी दीधी, अर अरजी षोले लीवी, तीप्र साह म्हाबतषाप्र दसषत कीधा, सो म्हे तलासकर त्या हे देणो थो, त्या हे देणो करे म्हाबतषा सु बजद व्हे कोचअलीषांरे नामे हसबल हुकम मुजददरो आगली ईनामात बाबत परवानगी लीवी से, सो हसबल हुकम तयार करावे, सलाह व्हैगी, तो उ हुकम बजनस हजुर मोकलागा, अर जे कोचअलीषा नेडो पोहचै से, तो वे हे पोहचावे, नकल हजुर मोकलासा जी श्रीजीरा तेज प्रतापसु यो पण मोटो काम हुवो जी, और नसरतयारषांरा प्रधांन दीपचद हे हजुररो प्रवानो आयो, सु दीधो, माथे चढावे लीधो, हजुररा लीष्या माफक वे पासे नसरतयारषा हे आछा भाते लीषावे वारा कासीद साथे षत मोकल्या से; म्हे पण षत नसरतयारषा हे घणी ललोपतो रो लीषो से जी, दीपचद तीरा भी याही लीषावी से, जो श्रीजीरा वकील आया से, सो वारी रजामदी मुजब परगणारो काम चुकाजो, न्ही त्र ओर त्रफ काम रीजु होगो, ईण सीवाई षीदमती दोई दीनरी से, असा मोटा घरसु ईषलास सलुक राष्या ईक दीन थाहरे काम आसी, अर दरबाररी चोकी वासते नसरतयारषा हजुर हे तजवीज लीषे, ती वासते दरबाररा कागदमे लीषो आयो, सो यो बडो मुकदमो से, असारो लीषो अबारु तो अठे कुण सुणे से, तो भी हजुररा हुकमसु दीपचद तीरा लीषायो से जी, दीपचद हे उमेदवार कीधो से, अर दीपचदरा प्रवाना माहे सीरोपाव मया हुवो लीषो, सो सीरोपाव वासते पुछे थो, सो म्हे कहो, अज्मेर थांहरो बेटो नसरतयारषां तीरे से, जठे पोहचसी, सो फत्हचद ईरो बेटो से ती हे सीरोपाव पोहचैजी, और सरीयतषांरा पेसदसत मोहता कान्हदास हे हजुर बुलावे घोडो सीरपाव मया करे, वैरा बेटा कीसोरदास हे अठे लसकर मा हे सरीयतषा तीरे से, तींहे, दरबाररी चोकी गुजरात रहै, परगणां दीवावै; सो लीषावे मोकल्यो, सो या बात आछा हे, बणे तो भलां ही से, म्हासु पैगाम देसी, अथवा मीलसी, अथवा म्हे कठे ही सुराष (सुराग-खोज) पास्या, तो आपसु ही सरीयतषां सु अबदल हमीदषा सु कीसोरदास सु मील सलुककर काम पेस

रफत करस्यां जी, और गाम आगौचा हुरडारी बद मवेसी वासतै आगै अरजी दीधी थी, सौ म्हाबतषा हे हुकम हुवो, सो सैद सुजायतषारै नामै हसबल हुकम तौ करावे मोकलो सै, नकलसु मजमुन मालुम होगी जी; सो यो हसबल हुकम तौ अज्मेर भेजीजो, अर ईण बातरी ताकीद करबा वासतै ईक हसबल हुकम नसरतयारषारै नामै तयार करायो सै, सो पाछा थे मौकला सा जी, तयार व्हे सै जी ई सीवाई अज्मेर मा कौई गुरजदार व्हे, तो वैरो नाम लीषौ आवै, तो वैरे नाम भी सजावलीरो हुकम भेजा जी, और ईनाईतुलाषा पानसामारै टीकारा लवाज्मारो हुकम पोहचो, चेला सजावली हे गया, सौ षीलअत हाथी १, घोडा २ अरबी औराकी, कटारी १ जडाऊ, हाथी घोडारा साजरी दसतका कारषाना प्र करदीवी, सौ तौ कारषाना पौहचावी, ताकीद करावी, अर मोत्यारी माला ने तरवार जडाऊ वासतै ईनाईतुलाषा कही, जो षानसामानी दफतृमै ईन दोई चीजका सरसता दाषल न्ही, टीकेमै कब ही दीया न्ही, तीप्र म्हे कही, म्हे सदामद टीकामै पाई आयाहा, हीदायत केसषारै व्हैकीक करो, तीप्र महाबतषारी मारफत फेर पातीसाहसु अरज करावी सै, सौ मेहरै सबब दीन २ री ढील हुवी, सो या दोन्या बसतारी पण तलास फेर कीधो सै जी फरमानतो म्हातीरै आवे पौहचो सै जी, और षबर आवी, जो गुरुजी जमनाजी पार व्हे हरदुवारजी त्रफ गया, सो देषजे कठी हे जावै जी, चोकस स्माचार आवे हे, सौ पाछा थे अरज लीषाहा जी, और पातीसाहजी सात दीनरो जसन सालगीर्हे रो आपरो कीधो जी, दलबादल षीमौ तुरत पडौ हुवो न सै, पड़ौ व्हे सै जी

पांनो चौथो

मीर म्हमद हासीम वीलाईत सु आयो थो, ती हे अबारु चार हजारी जात दौई हजार असवाररो मनसब हुवो, मीरजा सफवतषारो षीताब हुवो नौबत पाई जी, बडो मरातीब पायो जी, म्हे पण मुबारकबादी हे जावागा जी, और रुसतमदीलषा लाहोररा कोट माहे कैदमै सै, घरबार जागीर सारो जबत हुवो, अबारु मनसब षीताब बर तूफ हुवो, हुकम हुवो, दीनहे बेडी षोले द्यो, राते बेडी घाल्या करो; सो यो तो मामलो फारग हुवो जी फेरौजषा हे जमुरी फौजदारी बहाल रही, अब म्हाबतषांरी मारफत जमुं हे रुषसत व्हेसै जी, और रौसनराईजीरी नवाब म्हाबतषांजी सु मुलाज्मत करावी, बौहत मैहरबांनी फरमाई जी; फरमायो मतलब कहै सो करदेगे; सो रोसंनराईजी कहे सै सो करांसा जी; और प्रगनांरी षीदमती सैद अहैमद हे हुई सै, सो तो आगै बौवरो कागदा माहे लीषौ सै, सौ हजुर मालुम हुवो होगा जी, तीन परगनारा काम

वासतै आषा देसरा काम कीए वासतै बरहम कीजे, अर बदनामी लीजे, जै कही बात कर टकौ न षरचाई, अर परगणा राषजे, तो चोकीही बेगी भेजो, कुछ्ह तौ दसत-आवेज हाथ राषजे, तो नीधान भला सै आगै पण बीगर परगणा दरबाररी चौकी दीषणमै रैहती, पईसा भी षरच पातीसाहीमै होता, अर प्रगणामै पातीसाही फौजदार रैहता, पण आगला बदनामी वासतै चोकी भी राषता, पईसा भी षरचता; अर नीधान बात तो दीलीरा घरसु आदसु हम चसमी व्है आई सै, सो चालीही जाई सै, अै काबुत्र चुकै न्ही, सौ तो श्री ऐकलिगजी सदा स्हाई करीसै, ने बले करै ही सै, सौ म्हे बदा सुभचीतक सा, स्यांमध्रम पणां सु मनमाहे उपजी, सौ अरज लीषी सै जी ईण सीवाई अबार तांई साह अजीमसाहैने कही उमराव है नजर म्हैमानी रोक, जीनस दरबार सु पोहची न्ही, सौ काम काजमै हीकमत सु मनसुबा कर कर दरबाररौ काम करा ही हा, पण वा सारारा मंन माहे सै, जो कदे कहीरी मुदारात न करै सै, काम करावै सै, सो काठा लोक सै, सौ काल्हे म्हावतषाने कुदरतुला हसता ही तांनो मारै था, सौ अठारी या बात सै, देषासा, सो अरज लीषासा जी सदामद दस्तुर माफक काम कीया सलाह दौलतसै राजा अजीतसिघजीरै मेडतो, राजा जैसिघजीरै बसवौ पातीसाही षालसै सै, सौ वै भी फसलरा फसल टका हजुरमै भरै सै, सलुक राषैसै, बणसी तब समझबीजी, और कागद लीष्या पाछै ईही बीरया राजा अजीतसिघजीरा कागद भडारी है आया, जौ म्हे साढोरा है कुच कीधो सै, आगै थानै हजुर बुलाया सै, सौ अब थे उठैही रहीजो, काम काज करजो, सो भंडारी कागद ले दरबार गयो सै जी, सौ राजा साढौरै तो आवैसै जी समत् १७६८ व्रषे दुती भादवा सुद १२ तीजापोहर चाल्या फरद ४ वकायारी हजुर मौकल छे

इन कागजोको हमने इसलिये दर्ज किया है, कि उस वक्तकी राजपूतानहकी हालत पाठक लोग जानकर दिल्लीकी बादशाहतके जवालका सामान नज़रमे अच्छी तरह रक्खे बहादुरशाहका इन्तिकाल होनेपर उनके शाहज़ादोमे फसाद हुआ, तीन शाहजादोके मारेजाने बाद अमीरुल् उमरा ज़ुल्फिकारखांने बडे शाहजादह मुइज़ुद्दीन जहांदारशाहको तख़्तपर बिठाया इस बखेड़ेमे महाराणाके वास्ते टीका भेजना और तीनो पर्गनोकी सनद लिखवाना मुल्तवी रहा जब अजीमुश्शानका शाहजादह फर्रुख़सियर बगालेसे अब्दुल्लाहखा और हुसैनअलीखाकी मददसे दिल्लीका बादशाह बना, तो उसने दिल्ली पहुचने बाद मुइज़ुद्दीन जहांदारशाह और ज़ुल्फिकारखांको तस्मे व खंजरसे मरवाडाला; तब अजीमुश्शानकी दोस्तीके सबब महाराणा संग्रामसिंहके वकीलोकी भी जियादह रसाई हुई उस वक्त सय्यदोने भी अपना

गिरोह बढानेकी ज़ुरूरतसे उदयपुरकी दोस्तीको ग़नीमत जाना महाराणाके वकील कायस्थ बिहारीदासको बादशाहकी ख़िल्वतमे दाखिल किया, फ़र्रुख़-सियर शतरंज खेलनेका बड़ा शौक़ीन था, बिहारीदाससे शतरंज खेलनेका शग़्ल जारी हुआ, दिन दिन बिहारीदासपर बादशाहकी मर्ज़ी बढनेलगी बिहारीदासने अ़ब्दुल्लाहख़ांको दोस्तानह सलाह दी, कि जिज़्यहकी लागतसे कुल हिन्दू नाराज़ है, और शाहआ़लम बहादुरशाह भी उसकी मौक़ूफ़ीका हुक्म देचुके थे, लेकिन् यह बात अ़मलमे न आई, इसलिये इस लागतके छोडनेसे आप लोगोकी बुन्याद मज़्बूत होगी अ़ब्दुल्लाहख़ांने इस सलाहको बहुत ठीक समझकर बादशाहसे जिज़्यह मुआफ़ करवाया, परन्तु यह काम मज़्हबी लोगोको नागुवार हुआ, जिससे फिर जारी करनेका उपाय करने लगे थे इनायतुल्लाहख़ां अपने बेटे हिदायतुल्लाहख़ांके मारेजानेपर, जो मुइज़्ज़ुद्दीनकी फ़ौजमे था, भागकर मक्कह चलागया; फिर कई आदमियोकी सुफ़ारिशसे वापस आकर फ़र्रुख़सियरके पास हाज़िर हुआ; और मक्कहके शरीफ़ (हाकिम) की एक अ़र्ज़ी लाया, जिसमे जिज़्यह जारी करनेको हदीसके रूसे मज़्हबी फ़र्ज़ लिखा था फ़र्रुख़सियरने भी इनायतुल्लाहख़ांके दममें आकर फिर जिज़्यह जारी किया सय्यदोंने बहुतेरा समझाया, और कहा, कि इसमे बडे भारी बखेडेकी सूरते है, लेकिन् लोगोने बादशाहको यह समझा दिया, कि अ़ब्दुल्लाहख़ां हिन्दू राजाओंसे मिलावट रखता है फ़र्रुख़सियरने एक फ़र्मान अपने हाथसे जिज़्यहके बारेमे लिखकर महाराणा संग्रामसिंहके नाम भेजदिया, जिसका तर्जमह और अस्लकी नक़्ल हम नीचे लिखते है :-

---

फ़र्मानका तर्जमह (१),

मामूली अल्क़ाबके बाद,

इन दिनोमे जिज़्यह लियाजाना जारी होनेकी बाबत मक्केके शरीफ़की अ़र्ज़ी ग़ैबकी खुशख़बरीके मुवाफ़िक़ हाजी इनायतुल्लाहख़ांके हाथ, जो हज़्रत ख़ुल्दमकान (आ़लमगीर) के

(نقل فرمان فرخ سیر بادشاه)

هو

بادشاهان

لائق العنایت والاحسان ، سزاوار مراحم بیکران، قابل الطاف

شایان ، زبدهٔ معتقدان ارادت آهنگ ، عمدهٔ راجهان

مهارانا سنگرام سنگه ، امیدوار بفضل شاهی بوده بداند - دریولا

खालिसहका दीवान था, पेश होकर मालूम हुई– हमने जिज्यह रऋय्यतकी बिह्तरीके खयालसे बराहे इह्सान मुआफ फर्माया था, और हमारे दिलमे इस बातका बिल्कुल खयाल नही था; लेकिन् शर्ऋके कानूनके बमूजिब अर्ज शरीफको जो रोजए पाक (मकह) का खादिम है, बडोके अह्दकी मुवाफिक कुबूल करनेका मामूल होगया है, मन्जूर किया गया, और हमने इस बातकी इत्तिला उस हिन्दुस्तानके उम्दह राजाको, जो हमारी बुजुर्ग दर्गाहके दोस्तो और मोतकिदोमेसे है, साफ तौरपर फर्माई शाही मिहर्बानीको वह उम्दह राजा अपने ऊपर दिनो दिन बढ़ती जाने

—◦✻◦—

इस हुक्मसे सारे हिन्दुस्तानमे फसादकी बुनयाद काइम हुई, तो फर्रुखसियरके मारेजानेपर रफीउद्दरजातको बादशाह बनाकर सय्यद अब्दुल्लाहखा व महाराजा अजीतसिहने इस मज्हबी टैक्सको मौकूफ किया; लेकिन् जब फसादकी आग फैलजाती है, तो पानी छिडकनेसे भी नही बुझती

महाराणा संग्रामसिहने बिहारीदासकी बहुत इज्जत बढाई, क्योंकि उसने फर्रुख़-सियरसे रामपुरेका फर्मान मेवाडमे मिलानेकी बाबत हासिल कराया दूसरे चित्तौडपर जो महलोके साम्हने पुराना त्रिपौलिया था, उसी ढगका दिल्लीमे बनने बाद और

بموجب عرضداست سرتق مکه معظمه که بحسب بشارت مصحوب
حاجی عنایت الله خان که دیوان خالصه وبش حضرت خلد مکان بود،
در مقدمهٔ بعز راجد جزیه، که از پیشگاه فضل واحسان برفاه
مخلوقات جهان آفرین معاف فرموده بودیم، وهرگز بعض اسمعی
مرکوز خاطر ملکوت ناظر نبود، معروض مقدس معلی گردید- ازانجا
که در فتوی شریعت غرا ملتمسات شریف معزالیه که خادم روضهٔ مقدس
منوره است، برونق طریقهٔ عهود اسلاف بلاتوقف اجابت فرمودن

معمول اساده، مسطور شد؛ واطلاع اسمعی به آن عمده راجهای
هندوستان که ازجمله مخلصان ومعتقدان بارگاه عظمت وجاه است،

تفصیل فرمودیم، وتفصل شاهی را هم شته درباره خود آن عمده
راجهای روز افزون دانسته فقط

जदी इतरा ठाकुर डोरो फेरता इतरो साथ देवरा माहे- श्री बाईजीराज समस्त राज लोक, श्री महाराणाजी श्री संग्रामसिंहजी, कुंवर श्री जगत्सिंहजी, बाई चिमनी और राज लोक सगलो साथ, पुरोहित सुखरामजी बाई जी राज तुला बिराज्या, गोदमे चिमनी बाई बैठा, श्री महाराणाजी साम्हा ऊभा, पुरोहितजी साम्हा ऊभा, आगे पाछे धाय वडारण ऊभी, गोठ हुई, जदी इतरो साथ, ठाकुरारो जीमणी बाजू रावल रामसिंहजी, महाराणा श्री संग्रामसिंहजी बीचमे बैठ्या, डावी बाजू राव सुरताणसिंहजी, रावत केसरीसिंहजी, महाराज तख्तसिंहजी, श्री कुंवर जगत्सिंहजी, कुंवर नाथजी, राठौड किसनदासजी, सामा बैठा- तुवर किसनसिंहजी, रामसिंहजी, तुलसीदासजी, आरोगने डेरे पधारिया, जदी राव सुरतानसिंहजीरो हाथ उपरे हाथ श्री महाराणा श्री संग्रामसिंहजीरो हाथ नीचे, चमरदार तुलसीदास, चमरदार पचोली मयाचंद, जणा आगे रावल रामसिंहजी, रावत केसरीसिंहजी, कुंवर श्री जगत्सिंहजी, कुंवर नाथजी, काको तख्तसिंहजी, रामसिंहजी, पाछे राठौड किसनदासजी, तुवर किसनसिंहजी, हाथी मदनमूरत ऊभो, आगे हथणी ऊभी संवत १७७२ वर्षे महा सुदी १२ बैजनाथजीरे गोठ अरोगवा पधारा

विक्रमी १७७४ वैशाख शुक्ल १५ [हि० ११२९ ता० १४ जमादियुल् अव्वल = ई० १७१७ ता० २ एप्रिल] को बेदलेके राव सुल्तानसिंहने बावडीकी प्रतिष्ठा की, और महाराणाको निमन्त्रणकर बडा भारी उत्सव किया, जिसमे राव सुल्तानसिंहके तिहत्तर हजार रुपये खर्च पडे - (देखो शेष संग्रह प्रशस्ति नम्बर ३), महाराणा संग्रामसिंह राव सुल्तानसिंहके भान्जे थे फिर पचोली बिहारीदासने फौजी ताकतसे रामपुराके राव गोपालसिंहको महाराणाके पास लाकर कुछ खर्चके लाइक जागीर दिलानेका वादह किया था, और उसीके मुवाफिक उनको जागीर दिलाईगई, क्योंकि महाराणा अमरसिंह २ के वक्तसे रामपुरा फौज भेज भेजकर कई बार लेलिया गया था, और खर्चके लाइक जागीर रावको निकालदी थी, लेकिन् आखिर अह्द ठहराकर इक्रारनामह लिखवाया गया, जिसकी नक्ल नीचे दर्ज कीजाती है -

---

नक्ल इक्रारनामह

सिद्धि श्री महाराजाधिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी आदेसात्, रामपुरो श्री पातसाहजी श्री जी है वतन जमीदारीसूं मया कीधो थो, सो बंदोबस्त खालसे

करे पाच ठाकुर तथा पचोली बिहारीदासजी है फौज लेर मोकल्या, सो पाच ठाकुरांकी अरज थी, राव गोपालसिंघजी, सग्रामसिंघजी तथा सारा भाई बेटा चद्रावत देवडा धरतीका रजपुता अरज कीधी, सो आगेही म्हाका बडाबुडा चाकरी करता हा, सो अबे ही म्हा तीरा थी चाकरी करावजो, पाच ठाकुरा मेवाडका चाकरी करे है, ज्यू मेही चाकरी करागा, ने म्हाका घरकी मेर मुर्जाद सदा रहीहै, ज्यूई श्री जी राषेगा, बिगेर हुकम कोई काम करा, तो पाच ठाकुर दरबार थी ओलभो दे, पातसाहीमे तथा सूबा थी कठेई सादवा पावा नही, तथा रोएला (रुहेला– पठान) राषवा पावा नही, पातशाही मुलकमे बगेर हुकम दषल करा नही, जाइगा पट्टे करे देवाणी हे, जणीमे रहागा, दषणी रोएलारा जतन वासते उजीणके सोबे म्हाका पट्टा माफिक जमीअत लेकर चाकरी करागा, हजुर बुलावे चाकरी करावेगा, तो हजुर चाकरी करागा, कणी बातरो उजर करा नही, पातसाहीमे पहली षर्च हुवो, सोतो सारी धरतीपर हुवो, ने अबे षरच होवेगो, सो पाच ठाकुर मेवाडकाके सिरइते व्हेगो, पातसाहरी नेकी बदी है पाच ठाकुर भेला दौडागा रामपुराको हदो बस्त रु० ८००००० को, जी मधे रु० ४००००१ की धरती श्री जीरे षालसे राषी, जींरी बिगत.–

५८३०० परगने हवेलीका गाव १००
७१६५० परगने आमदका गाव ७८
२०६२५ परगने पठारका गाव ५९.
४९२५० परगने दातोलीका गाव २८
२०१०० परगने आतरीका गाव २०
५११०० परगने सजेतका गाव ५८
६७२५० परगने चन्दवासरा गाव ४७
३८५०० परगने सकोधारका गाव २५.

रु० ३७६७७५ गांव ४१५ या गावाको बिवरो नामा प्रनामी ऊपर दरज है

रु० ४००००१ की जाइगा राव गोपालसिंहजी, सग्रामसिंहजी समस्त देवड़ाने मया कीधी.

२५००० कस्बो रामपुरो
१४५५०० परगने कमलाको परगणो गाव ९४
२०९७०० परगने गेरोटका गांव १३५
१९९०० परगने सांषूधारका गांव १७

अणा गावाको बिवरो ऊपर दरज है, हरेक परगणामे हे षालसाका गावांका

कामदार जागीरदार षालसाकी हद्दम्हे रहेगा, ने चद्रावताका गावाकी हद्दम्हे चद्रावत रहेगा, माहे माहे कोई बोलवा पावे नही, कोई आटो झगडो ऊपजे, तो श्री जी हजुर अरज करे, तथा पाच ठाकुरा थी अरज करे परभारा बोले नही, ईतरा ठाकुरा वाता माहे व्हे ने काम कीधो –

राठौड दुर्गदासजी	बरामी गोरवाड
रावत देवभाणजी	रावत केसरी सिहजी
राठौड प्रतापसिहजी	राव विक्रमादित्यजी
रावत सग्रामसिंहजी	रावत देवीसिहजी
झाला कल्याणजी	रावत प्रथीसिहजी
झाला अजैसिंहजी	रावत सारंगदेवजी
सगतावत जैतसिहजी	रावत हमीरसिहजी
राव रघुनाथसिंहजी	डोडिया मनोरसिंहजी
राणावत सग्रामसिहजी	सगतावत खुशालसिहजी
राणावत कीर्तिसिहजी.	राणावत रत्नसिहजी, बस्तसिहजी

तथा समस्त षूम षूमरा ठाकुरा हो चद्रावतांरा ओलभा सावासरी बात अनो हे पूछाएगी, ने एहीज हुकम राषेगा; दरबार थी बदगी राखे हैं, जना थी चद्रावत सूं शुद्ध राखेगा; राव छत्रसिहजीरे ने चद्रावतांरे अशुद्ध थी, सो शुद्ध कीधी; पाच ठाकुर राव गोपालसिहजी है श्रीजी हजूर पगे लगावा लेचाल्या, ने सग्रामसिहजी है देश आबादान करवा अणाका पट्टामे मेल्या, सो हुक्म प्रमाणे चाकरी करेगा. अतरा ठाकुर चद्रावतारा भेला होए लिख्या करेदीधो.

सही राव गोपालसिहजी.	छाप संग्रामसिहजी.
महाराज कुशलसिहजी.	परशोत्तमसिहजी
देवडा अचलसिहजी.	देवडा देवीसिंहजी
देवडा अनोपसिहजी.	रावत हरनाथसिहजी.
रावत नाहरसिहजी	सुल्तानसिंहजी
रावत सबलसिहजी.	जसकरणजी
चद्रावत कान्हजी.	चद्रावत दौलतसिंहजी
राव सदानन्दजी	धाभाई भगोतसिंहजी

भादवा सुद २ सवत १७७४ मुकाम भाणपुरे

इसी मतलबका एक कागज पचोली बिहारीदासके नाम भाणपुरेसे कुवर सग्रामसिंह चन्द्रावतने लिखभेजा, जिसकी नक़ल नीचे लिखी जाती है –

रामपुरा कुवरके कागजकी नक़ल

॥ श्रीरामजी १

॥ माहारो जोहार बच्या

॥ सिधि श्री उदेपुर सुथाने पचोली जी श्री बीहारीदासजी जोग्य, लीषायत भानपुरका डेरा थी लीषायत महाराज श्री सग्रामस्यघजी केन्य जुहार बच्या, अप्र अठाका समाचार श्रीजीकी क्रिपा थी रावली मया थी भला हे, राजका सुष समाचार स्दा भला चाहिजे, तो म्हा हे प्रम सतोप होय, अप्र राज मोटा हो, म्हासुं क्रिपा सनेह राषो हो तेथी बीसेष राषजो जी, म्हाके राज उप्रात दुजी बात नहे जी, अप्र राजको कागद आयो, समाचार पाया, आपने लीष्यौ श्री जी हजुर थी नील कमलरो बीज बीजारनो मगायो हे, सु जरुर पोहचावजो, सु नील कमलरा बीज तो हजुर मोकल्या हे, सु मालुम कीजो, अर बीजारना ठा० कीरासु ताकीत कीवी, ती उपर कीराने अरज पोहचाई, कमलका चाडा पाके झडे हे, उनी बीजको बीजार नौ व्हे हे, तीसु बीज तो हजुर पोहच्यो हे, अर बीजार नो हगाम सीर पोहचेगो जी; ओर श्रीजीको प्रवानो मया हुवो थो, तीका जवाबमे अरजदास्त कीवी हे, सु आप श्री जी हजुर गुदरोगा जी; ओर श्री जी हजुर पोहच्या हो, सो श्री बाबाजी हे पगा लगाया होसी, म्हाके तो हजुर मे ऐक वसीलो पष राजको हे, म्हे तो रावलो हुकम हर भात करे साध्यो हे, अब राज ईसी मेहरबानगी करोगा, यो ठीकानो साबत दसतुर बहाल होय, अर म्हे राजीथका बदगी करा, तीमे सरकारकी मोटी गरज होसी, पछे तो राज सरब जान हो, भला होसी ज्यु करोगा, अब श्री बाबाजीहे बीदा सीताब करोगा जी, घनो काई लीषा कागद समाचार हमेस लीषावु कीजो जी मीती आसोज सुदि १५ दीने, सवतु १७७४ व्र्षे

इसी मतलबकी एक अर्जी राव सग्रामसिंहकी महाराणाके नाम है–

अर्जीकी नक़ल

॥ श्रीरामजी १

॥ सग्रामसैंघसग्राम सबको मुजरो मालुम होयजी

॥ सिधि श्री उदेपुर सुथाने सकल सुभ उपमा श्री महाराजाधिराज महाराणा

॥ श्री संग्रामस्यघजी ऐतान्य चरण कमलान भांनपुरका डेराथी लीषायत स्दा सेवग छोरु सग्रामस्यघ केन्य सेवा पावाधोक अवधारजो जी, अप्र अठाका समाचार श्री दिवाणजीका तेज प्रताप करे भला हे जी, श्री दिवाणजीका साहन भडारका सुष समाचार दीनप्रत घडी घडी पल पलका स्दा आरोग्य चाहिजे जी, तो सेवग हे प्रम सतोष होयजी, अप्र श्री दिवाणजी बडा हो जी, मावीत हो जी, सेवग छोरु सु क्रिपा मेहरवानगी फरमावो हो जी, तेथी बीसेष राषजो जी, म्हारे श्री दिवाणजी उप्रात दुजी बात न हे जी, श्री दिवाणजी म्हाके प्रमेसुरजी समान हो जी, सुरज हो जी, श्रीरामजी श्री दिवाणजी हे हीदुसथानका अर सेवगाका सीरा उपर हजारा हजार साल सलामत राषेजी, अप्र श्री दिवाणजीको प्रवानो सेवगके नाम मया हुवो, सु माथे चढाय ले बाच्यो, सरफराजी हासल हुई श्रीजीने फरमायो, थारी सुधरी हकीकत पचोलीजीरा लीष्या थी मालुम हुई, थे छोरु हो, सु श्रीजी सलामत, म्हे तो महाराव श्री दुरगभान जीथी ले आजसुधी पाट छोरु हा, ओर श्री बावोजी श्रीजी हजुर आया हे, सु पगा लागा होसी जी श्रीजी अतरजामी मावीत हो जी सीतापति रुघनाथकु नेक नवायो सीस ॥ कहा भभीछन ले मील्यौ लक करी बगसीस ॥ श्रीजी पण ईषवाक बस हे, तीथी ये बात उपर नजर करे सेवगा उपर सरफराजी फरमवोगा जी यो ठिकानों सावक दस्तुर साबत राष्या श्रीजीकी पण मोटी गरज व्हेगी, अर म्हे रजाबद थका बे उजर बदगी करागा, म्हाके तो अषत्यार तोबराकी मुठी तक हे, ओर हुकम आयो, बभोरीका तलावमे नील कमल मालम हुवा हे, सुष्या कमलारो बीज त्था बीजारनो जतना हजुर मेह चावजो, सु श्री हुकम प्रमाने नील कमलरो बीज हजुर मोकल्यौ हे, अर बीजारनो हगामसीर पोहचेगोजी, अठे सारोही ब्योहार श्रीजीका हुकमको हे जी, सेवग लायक काम षीदमत होय, सु फरमावेगाजी; बाहुडतो प्रवाणो मया प्रसाद होयगो जी. मीती काती वीद २ दीने, सबतु १७७४ ब्षै

राठौड दुर्गदासकी बाबत, जिसे महाराजा अजीतसिंहने मारवाड़से निकाल दिया था, मश्हूर है, कि दुर्गदासको यह घमड होगया था, कि महाराजा अजीतसिंहको मारवाड मैंने दिलाया, और मैं बादशाही मन्सबदार हू, जिसपर विरोध बढा, और आख़िरमे महाराजाने मारवाडसे निकालदिया, परन्तु लोग महाराजापर इल्जाम लगाते है, कि दुर्गदासकी खिद्मतोका उन्होने कुछ भी खयाल न किया, इस बारेमे एक

दोहा मश्हूर है -

दोहा

महाराजा अजमालकी, जद पारख जाणी ॥
दुर्गो देशा काढजे, गोला गागाणी ॥

अर्थ- महाराजा अजीतसिंहकी जभी हमने परीक्षा करली, कि दुर्गदास (जैसे ख़ैरख्वाह) को मुल्कसे निकाल दिया, और गुलामोको गांगाणी जैसा गाव जागीरमें दिया

दुर्गदास उदयपुर चलाआया, और महाराणा सग्रामसिहने उसे बडे आदर भावसे रक्खा; विजयपुरका पर्गनह व पन्द्रह हजार रुपया माहवारी करदिया इस समय जमइयत देकर रामपुराकी हिफ़ाजतके लिये उसे भेजा था, क्योंकि चन्द्रावत फ़साद करते थे उस मुआमलेकी बाबत रामपुरासे एक अर्जी, जो महाराणाके नाम दुर्गदासने भेजी थी, उसकी नक्ल नीचे लिखते हैं -

दुर्गदासकी अर्जीकी नक्ल,

॥ श्री परमेस्वर जी सत्यछै जी

॥ सिध श्री ऊदैपुर सुभसुथानै सर्व उपमा विराजमांन माहाराजाधिराज माहाराणाजी श्री सग्रामसिघजी चरणकमलायनु, रा। दुरगदासजी लिषतु सेवा मुजरो अवधारजो जी, आठारा समाचार श्री परमेश्वरजीरा प्रताप कर भला छै, श्री माहाराणाजीरा सदा आरोग्य चाहजै जी, श्री दीवणजी वडा छै, साहब छै, मासु सदा मया फुरमावै छै, तिणसु विसेष फुरमावजो जी, आठा लायक काम चाकरी हुवै, घणी फुरमावजो जी; अठै घोडा रजपुत छै, सो श्री दीवणजीरा कामनै हाजर छै जी;
अप्रंच प्रवनो ईनाईत हुवो, वडी षुस्याली हुई, हुकम हुवो, ज्यो रामपुरे रैहता हजुर नचीताई हुई, उठारो जाबतो रहै; सु श्री दीवणजीरे प्रताप कर भात भांतसु जबतो राषा छा, आठारी तरफसु श्री दीवाणजी षतर जमै फुरमावजो जी, ओर हकीकत पचोली विहारीदासजीरा कागदसु हजुर गुदरसी जी,
बाहुडता परवाना बेगा बेगा ईनाईत करावजो जी मीती काती वदि ५ भौम, स॥ १७७४ रा

राठौड़ दुर्गदासका, जो कागज पचोली बिहारीदासके नाम आया, उसकी नक्ल यह है -

कागज़की नक्ल

॥ श्री परमैसुरजी स्त्यछै

श्री । जगतसिंघरो जुहार अवधारजो,

॥ सिध श्री उदैपुर सुथने पचौली श्री विहारीदासजी जोग्य, राज्य श्री दुरगदासजी लिषावतु जुहार वाचजो, आठारा समाचार श्री परमेसुरजीरा प्रतापकर भला छै, राजरा सदा भला चाहजै, राज घणी वात छौ, म्हारै राज उप्रईत काई वात न छै, सु कागदमै कीसी मनहार लिषां, सदा सुष ईकलास राषौ छौ, तीणसु विसेष राषजौ, आठा सारीषो काम काज होय, सु लिषावजौ, अप्रच कागद राजरौ आसोज सुदि ८ रो लीष्यौ आयौ, वाच्या थी सुष हुवौ, लीषो थौ, ज्यौ देवलीया, वसवाला, डुगरपुर होय सुदी ७ रीषबदेवजी डेरा हुवा छै (१), सुदी १० श्रीजीरै पावै लागणेरौ मोहरत छै, सु पावै लागा पछै ज्यौ हकीकत होय, सु लिषावजो श्री जीरो प्रवनो आयौ, वडी षुस्याली हुई, तीणरा जुवाबमै अरजदासत मेली छै, सु गुजरानैगा; ओर लीष्यौ ज्यौ सग्रामसिंघजी प्रडगनै आवरारा गम मारीया, तीण वासतै राव गोपालसिघजी कनै भी लीषायौ छै, नै अठासु पीण कहावजौ, सु सग्रामसिंघजी तौ हीमारतई भांणपुर हीज छै, कोई विचार राषता होसी, तौ कहावसा, ईसौ काम न करसी, आठारी हकीकत आगे जाट लिषमीया साथे कागद दीयौ छै, तीणसु राजनु मालम हौसी; आठारी तरफरी नचिंताई राषजौ, लिष्यौ थौ, रा। सीरदारसिंघ नु उदैपुर जाय सीष दीरासा, सु वेगी सीष दीरावजौ कीका अणदसिघ प्रतापसिघरो षसमनो राषजौ; प्रडगनै विजैपुर, षडलाषड, दुध भेसौ केलुषुट दीसां राजनै कहो थौ, सु इणं तीनु रकमरी छुटरा उमेदवारछां, प्रडगना उपर चीठी हुवण न पावै, नै कदास रकम न छुटै, तौ कुसलसिघजीरै मुकरडै लागतौ, सु भरदेसां, भरोती कराय मेलजौ, ओर दाणरो ईजारौ प ॥ कानजी नु कहैनै करायदीजौ, आगे ईजारौ छै, तीण माफक

---

(१) ये तीनो ठिकाने इन दिनो महाराणाकी हुक्म उदूली करते थे, इस वास्ते पचोली बिहारीदास फौज लेकर गया, और तीनों रईसोको साथ ले आया

कीसत रा कीसत रुपीया केसी जठै भराय देसा जी
वाहुडता कागद वेगा वेगा दीजो मीती काती वदि ६ भोम, स । १७७४ रा।
मु । दुधैलाई
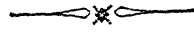
इन ऊपर लिखे हुए हालातसे महाराणा सग्रामसिंहका मुल्की इन्तिजाम, नौकरोंकी कद्र व सर्दारोंका लिहाज, जैसा बर्ताजाता था, वह पाठक लोग जान सक्ते है इसी वर्षके श्रावण मास [हि० रमजान = ई० ऑगस्ट] मे नाहरमगरेके महलोकी बुन्याद डालीगई यह शिकारगाह उदयपुरसे सोलह मील ईशाण कोणपर अब तक मौजूद है, और वहा उनके बनवाये हुए गुम्बजदार महल काइम है इसी तरह उदयसागरके तीरपर कमलोदकी पहाडीमे शिकार खेलनेके मकान बनवाये यह महाराणा मुल्की इन्तिजामसे फुर्सत पाकर दुन्यादारीके आरामकी तरफ भी ध्यान रखते थे, जो उस समयके चित्रपट देखनेसे जाहिर है इनके समयमे रियासतमे कोई खलल नही आया, क्योंकि यह हर एक बातकी तरफ मौकेपर तवज्जुह करते थे, लेकिन् अफ्सोस है, कि ऐसे अक्लमन्द राजाने उन बातोंके अजामपर कुछ भी ध्यान नही दिया, क्योंकि बुद्धिमान लोग ससारी सुखसे नुक्सान नही उठाते, परन्तु वे ऐश व इश्रतकी जड जमा देते है, जिससे पिछले गाफिल लोग धीरे धीरे खराबीमे पडकर बर्बादीकी दशाको पहुच जाते है

महाराणा जयसिंहने मरनेसे कुछ दिन पहिले ऐश व इश्रतके कामोकी तरफ ध्यान दिया, फिर महाराणा अमरसिंह २ ने बहादुरी और बुद्धिमानीके बगीचेमे शराबके पानीसे इस पौदेको पर्वरिश किया, और इन महाराणाने उसकी शाखोंको बढाया, पर यह न सोचा, कि इससे बगीचेके पिछले दरख्तोंको नुक्सान पहुचेगा हम इस जगह मुग्लियह खानदानकी मिसाल देतेहै, कि अकबर बादशाहने ऐश व इश्रतका बीज बोया, और जहांगीरने उसकी रक्षा की, शाहजहाने उसे सर सब्ज किया, जिसकी ठंडी छायामे गाफिल होतेही आलमगीरकी कैदमे आया फिर उसके खानदानमे अय्याशी ऐसी फैल गई, कि हिन्दुस्तानकी बादशाहतका खातिमह होनेतक पीछा न छूटा इसी तरह मेवाडको भी बहुत नुक्सान पहुचा, जो पाठकोंको आगे अच्छी तरह मालूम होजायेगा

विक्रमी १७७५ चैत्र शुक्ल १ [हि० ११३० ता० ३० रबीउस्सानी = ई० १७१८ ता० १ एप्रिल] को बडे कुवर जगत्सिंहको शीतला निकली, जिसका उत्सव कियागया,

और इसी मानताके कारण शीतला माताका मन्दिर बनवाया, जो देलवाडेकी हवेलीके साम्हने बाग़के अन्दर अब तक मौजूद है

यह महाराणा रियासतमे एक हुक्म रखना चाहते थे, अर्थात् रियासतोमे अक्सर काइदह है, कि मज्हबी पेश्वा, जनानखानह अथवा वलीअहद, तथा भाई बेटे वगैरह जुदा जुदा हुक्म चलाने लगते है इन महाराणाने अपने हुक्मके सिवाय दूसरेका हुक्म नही चलने दिया, इस बारेमे एक बार अपनी मासे भी रंजीदह होगये थे उनकी यह आदत थी, कि हमेशह अपनी मा से प्रभातको दंडवत् करनेके बाद खाना खाते, एक बार मामूल मूजिब बाईजीराज (अपनी माता) के पास गये, तो उन्होने किसीको जागीर दिलानेकी सिफारिश की, महाराणा मन्जूर करके बाहर आये, और उस जागीरका पट्टा लिखकर बाईजीराजके पास भेजदिया, परन्तु दूसरे दिनसे भीतर जानेका दस्तूर बन्द किया, बाईजीराजने बहुत कुछ चाहा, पर वे न गये, तब उन्होने तीर्थ यात्राका मनोर्थ किया, महाराणाने सब तय्यारी करवादी, तोभी मिलनेको न गये, बाईजीराज आंबेर पहुचे, महाराजा सवाई जयसिंहने यहा तक उनका आदर किया, कि बाईजीराज की पालकीमे कन्धा लगाकर महलोमे लेगये फिर राज माता मथुरा, वृन्दाबन वगैरह तीर्थ यात्रा करके लौटी, तो महाराजा सवाई जयसिंह उन्हे पहुचानेको उदयपुर तक आये, और यह कहा, कि मै दोनो मा बेटोका रंज मिटवा दूंगा महाराणा अपनी माताकी पेश्वाईके लिये उदयपुरसे एक मंज़िल साम्हने जाकर उन्हे अपने डेरोमे ले आये, और महाराजा जयसिंहसे मिले महाराजाने आपसके रंजका जिक्र छेड़ा, महाराणाने कह दिया, कि घरका विरोध घरमे ही मिटता है, आप मिह्मान है, आपको इन बातोसे कुछ मत्लब नही इसके बाद उदयपुरमे आये, और महाराजा जयसिंहकी बहुत खातिर की यह बात कर्नेल टॉडने महाराणाकी बुद्धिमानीकी प्रशंसामे लिखी है, जो हकीकतमे बडे बुद्धिमान थे विक्रमी १७७९ फाल्गुन् कृष्ण ११ [हि० ११३५ ता० २५ जमादियुल अव्वल = ई० १७२३ ता० ४ मार्च] को चीनीकी चित्रशालीमे रहनेका उत्सव किया, यह चीनीकी ईंटे महाराणाने पोर्चुगीजोकी मारिफत चीनसे मंगवाई थी, और बहुतसी उनमेसे यूरोपकी बनीहुई थी, जो इस महलमे लगाई गई, वह अब तक मौजूद है

वि० १७८० वैशाख कृष्ण ७ [हि० ११३५ ता० २१ रजब = ई० १७२३ ता० २७ एप्रिल] को युवराज कुंवर जगत्सिंहका यज्ञोपवीत संस्कार किया, और वि० ज्येष्ठ [हि० रमजान = ई० जून] मे कुंवर जगत्सिंहकी बरात लूणावाड़े गई वहाके रईस सोलंखी नाहरसिंहकी बेटीके साथ विवाह हुआ इस शादीमे महाराणा संग्रामसिंहने

लाखो रुपये खर्च किये थे चारण कविया करणीदानके गीतो (१) को महाराणाने धूप देकर पूजन किया यह बात इस तरह हुई थी, कि मेवाड़मे सूलवाडा गावका चारण कविया करणीदान अन्न बिना लाचार होकर घरसे निकला, यह अच्छा शाइर था, अव्वल शाहपुराके कुवर उम्मेदसिहके पास गया, जो इन्ही दिनोमे अपने बापको रद्द करके शाहपुराका मुख्तार होगया था करणीदानने अपनी शाइरीसे उन्हे खुश किया, उम्मेदसिहने कुछ राह खर्च देकर रुख्सत दी यह अपने प्रारब्ध को दोष लगाकर रवानह होगया, क्यौकि कुवर उम्मेदसिह उदार थे, और इसकी कवितासे जियादह खुश भी हुए, परन्तु करणीदानको घरपर भेजनेके लाइक जाहिरा कुछ नही दिया, ८०० रुपये उम्मेदसिहने करणीदानके घर भेजदिये, और उसका कुछ भी जिक्र नही किया करणीदान डूगरपुर पहुचा, जहांके रावल शिवसिहने उसकी कवितासे खुश होकर लाख पशाव दिया उस वक्तका एक दोहा हम नीचे लिखते है –

दोहा

बाबरिया छत्रपतबिया कीदाखू क्रामात ॥
सिध जूना रावल शिवा नमो गिरप्पुर नाथ॥ १ ॥

अर्थ– दूसरे छत्र धारी (राजा) नये जोगी अर्थात् छोटी जटावाले मरकर थोडीसी तपस्याके जोरसे राजा बनगये, जिनको मै करामाती नही कहसक्ता; परन्तु पुराने तपस्वी (बहुत दिनो तक तप करके राजा बनने वाला) रावल शिवसिह तुमको मेरा प्रणाम है करणीदान वहासे उदयपुर आया, और महाराणा सग्रामसिह को पाच गीत सुनाये, जिससे महाराणाने खुश होकर कहा, कि तुम कहो, तो इन गीतोका हम अपने हाथसे पूजन करे, और तुम कहो, तो लाख पशाव दियाजावे करणीदानने अपनी इज्जत बढानेके लिये पूजन करना पसन्द किया, महाराणाने वैसा ही किया, और लाख पशाव (२) भी दिया. फिर यही करणीदान जोधपुरके

---

(१) यह एक प्रकारके छन्द होते हैं, जो चारण लोग अक्सर मारवाड़ी शाइरी इन्हीं छन्दोमें बनाते है .

(२) लाख पशावकी तफ्सील इस तरहपर है, एक हाथी मए सामान व जेवरके, १ पालकी (लबे खम्दार बांसके डंडे वाली), २ घोडे मए सुनहरी व रुपहरी जेवर व सामानके, २ ऊट, बीस हज़ार रुपयो से लेकर पचास हज़ार रुपयो तक नक्द, एक हजार रुपया सालानाकी आमदनीसे

महाराजा अभयसिंहके पास पहुचा, और वहाका अजाची बना, जिसका ज़िक्र मारवाडकी तवारीखमे लिख आये है

विक्रमी १७८१ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० ११३६ ता० १७ ज़िल्काद = ई० १७२४ ता० ८ ऑगस्ट] को महाराणाके कुवर जगत्सिंहकी भार्या सोलखिणीसे भवर प्रतापसिंहका जन्म हुआ महाराणाने पौत्र पैदा होनेका बहुत बड़ा उत्सव किया इन महाराणाको अपने बापका मन्शा पूरा करनेकी बहुत ख्वाहिश थी; रामपुरा महाराणा अमरसिंह २ की मर्जीके मुवाफिक अपने कब्जेमे करलिया, सिरोही लेनेकी कोशिश थी, और ईडरके लिये चाहते थे, कि उसको मेवाड़मे मिला लियाजावे; लेकिन् जोधपुरके महाराजा अजीतसिंहको उनके बेटे बख्तसिंहने मारडाला, और महाराजाके छोटे बेटे आणन्दसिंह और रायसिंह भागकर ईडर पहुचे; उन्होने वहाके पहिले राजाओकी खराब हालत देखकर ईडरपर कब्जह करलिया, जिसको महाराणा संग्रामसिंहने उनसे छीन लेना चाहा, और महाराजा सवाई जयसिंहको इस मुआमलेमे मुन्सिफ करार दिया जयसिंहने महाराजा अभयसिंहको समझाया, कि आपके भाई आणन्दसिंह व रायसिंह ईडरके पहाडी मुल्कपर काबिज रहकर मारवाडको बर्बाद करेगे, इसलिये मै उनको गारत करनेके लिये एक तद्बीर बतलाता हू, कि ईडरका फर्मान बादशाहसे आपको मिलचुका है, लेकिन् महाराणाने मुझसे कहा है, कि वह ज़िला मुझे ठेकेपर महाराजा अभयसिंह लिखदेवे; बस आप अपने भाइयोको मारडालनेके इक़ारपर महाराणाको दे दीजिये महाराजाने इस सलाहको मंजूर किया, और एक खरीतह महाराजा जयसिंहके खरीतहके साथ महाराणाको भेजा; उन दोनो खरीतोकी नक़्ले नीचे लिखीजाती है -

महाराजा सवाई जयसिंहका ख़रीतह,

श्रीरांमजी

सीतारांमजी

सिध श्री महाराजा धिराज महारांणा श्री संग्रामस्यघजी जोग्य, लिषत राजा

लेकर पांच हज़ारकी आमदनी तकका गांव, और सिरोपाव व पाच हजार रुपयोका जेवर. पिछले ज़मानेमे महाराणा भीमसिंहके समय रुपयोकी कमी होती, तो उनके एवज़मे ज़ेवर व जायदाद ज़ियादह दीजाती थी, जिसका ज़िक्र उनके हालमें किया जायेगा

(१) श्री दीवाणजी सो मारो मुजरो मालुम व्हे, अप्र हु श्री दीवांणकी हजुरी छो, जदी आप हुकम कीयो छो, जो इडर तो आगण छे, अर छपन घर छे, सो इने लीयो चाहिजे, सो म्हारे इको तलास बहोत छो, सो अब यो काम श्री दीवाणका प्रतापसो हुवो

सवाई जेस्यघकेन मुजरो अवधारिज्यो, अैठाका स्माचार श्री जीकी क्रिपा सौ भला छे, आपका सदा भला चाहजे, अप्रच आप वडा छो, हिंदुसथानमै सरदार छो, अैठा वैठाको व्योहारमै कहो वात जुदायगी न छे, अैठे घोड़ा रजपुत छे सो आपका कामनै छे, ई तर्फ काम काज होय, सो लिषावता रहोला, अर ऊदेपुरमै म्हे आपकी हजुरि छा, तव म्हानै आप या वात फुरमाई छी, जो मेवाड तो घर छे, अर ईडर मेवाडको आगण छे, सो ई का लेवाको तलास रषावोला, सो वै ही दिनसौ म्हे तलासमै छा, अर अव भी ई कामके वासते मयाराम ऊकीलनै आपको लिष्यो आयो, सो दलपत राय म्हानै वजनसि बचायो, तीपरि म्हे महाराजा अभैस्यघजीनै समझाय व्योरो कह्यौ, सो या भी कबुल करी, अर प्रगनौ ईडरको आपकी नजरि कीयौ, सो षत याको ईही मतलवको लिपाय भेज्यौ छे, सो पहुचैलो, अर महाराजा अभैस्यघजी या अरज करी छे, जो आप जतन असो करावोला, अणदस्यघ वैठासौ जीवतो नीकलै नही, मार्यो ही जाय, वैनै मार्‌या विना राजको वदवसत कठणि छे, सो याका राजका वदवसतको तो फिकर आपनै छे ही, तीस्यौ म्हे भी याही अरज करा छा, प्रथम तो ई कांमके वासते श्री दीवाण ही पधारै, अर जो कदाचि आपका पधारिवाकी सलाह न होय, तो धायभाई नगनै हुकम होय, वो आछी फोज सौ जाय, अर पैहली तो नाका बदी करिले, जैठा पाछै वैनै मारै, भाग्य जावा न पावै ई वातको घणो जतन रषावे, कागद समाचार लिषावता रहोला. मिती असाढ बदि ७ सवत १७८४

पानो दुजो

रामजी

प्रगनु ईडर महाराजा अभैस्यघजीकी जागीरमै छे, जेतो तो या आपकी नजरि ही कीयौ छे, अर जो कदाचि और कहीकी जागीरमै होजाय, तो जमाव वैठाको असो करावैला, अमल सरकार ही को रेहेवो करे, और मनसवदार अमल करवा न पावै. मिती असाढ बदि ८ सवत १७८४

---

(१) ये तीनों आडी सतरे खास महाराजा जयसिंहके हाथके लिखे हुएकी नक्ल है.

महाराजा अभयसिंहके कागजकी नक्ल, जो महाराजा जयसिंहके
कागज़के साथ आया था

॥ श्रीपरमेसरजी स्त छै

॥ स्विस्ति श्री महाराजा धिराज महाराणा श्री सग्रामसिंघजी जोग्य, राज राजेश्वर माहाराजा धिराज महाराजा श्री अभैसिंघजी लिषावत मुजरो वाचजो, अठारा समाचार भला छै, राजरा सदा भला चाहीजै, राज ठाकुर छो, वडा छो, सदा हेत मया राषो छो, तिणथी वीसेप रषावजो, अठा सारषो काम काज हुवे, सु हमेसां लिषावजो, अठे राजरो घर छे, जुदागी कीण वात दीसा न जाणे, अठे घोडा रजपुत छै, सु राजरे कामनु छै,

अप्रंच प्रगनो ईडर म्हे राजनु दीयो छै, राज ऊठारो भली भांत जावतो करावजो, ने राज ईजारे मुकाते दीसा लिषीयो थो, सु आ कीसी वात छै, ईडर राजरी नीजर छै, तथा अणदसीघ ने रायसीघ हरांम षोर छे, तीणानु फोज मेलने मराय नापजो, म्हांरी ईण वात सु रजामदी छै, राज ईण वातरो आघो कढावजो मती,

सांवत १७८३ रा असाढ वदी ७ म ॥ फरीदावाद.

(१) म्हारो मुजरो मालुम हुवे, श्री दीवाण अणंदसीघ, रायसीघनु मरायनापसो, या वात जरूर

पहिले कागज़मे विक्रमी १७८४ और दूसरेमे विक्रमी १७८३ लिखा है, इससे यह मालूम होता है, कि महाराजा जयसिंहका कागज़ चैत्रादि सवत्से और महाराजा अभयसिंहका श्रावणादिके हिसाबसे लिखागया है, क्योंकि पहिले कागज़मे चैत्रसे विक्रमी १७८४ लग गया, और दूसरेमे आषाढी पूर्णिमा तक विक्रमी १७८३ माना गया, वर्नह महीना, तिथि और मतलब दोनो कागज़ोका एक है, और ये एक ही साथ महाराजा जयसिंहने भेजे है इन कागजोके आने बाद महाराणाने अणन्दसिंह व रायसिंह पर फौज तय्यार करके ईडरकी तरफ भेजी इस फौजके मुसाहिब भीडरका महाराज जैतसिंह और धायभाई राव नगराज थे एक दम ईडरको जाघेरा, तो अणन्दसिंह और रायसिंहने शहर और जिला महाराणाकी फौजके सुपुर्द किया, और खुद हिरासतमे आगये इन दोनो मुसाहिबोंने भी मुल्की बन्दोबस्त करके अणन्दसिंह व रायसिंहको साथ लेकर उदयपुरकी तरफ कूच किया, उस वक्त मारवाड़ी भाषामे किसी शाइरने यह दोहा कहा था –

(१) ये दोनो आडी सतरे खास महाराजा अभयसिंहके हाथके लिखे हुएकी नक्ल है

दोहा

जैतो आयो जैतकर ईडर अमल जमाह ॥
हिन्दूपत राजी हुवो सगतारो पतसाह ॥ १ ॥

अर्थ - जैतसिंह फतह करके ईडरमें अमल जमा आया, जिससे शक्तावतोंके मालिकपर हिन्दूपति (महाराणा) खुश हुआ

आणन्दसिंह व रायसिंहको महाराणाने अपने पास रक्खा, तो महाराजा अभयसिंहने एक काग़ज महाराणाके पास भेजा, जिसकी नक़ल हम नीचे लिखते हैं -

महाराजा अभयसिंहके कागजकी नक़ल

॥ श्रीपरमेसरजी स्त छे

॥ स्वस्ति श्री माहाराजा धिराज माहाराणा श्री सग्रामसिंघजी जोग्य, राज राजेश्वर माहाराजा धिराज माहाराजा श्री अभैसिंघजी लिषावत मुजरो वाचजो, अठारा समाचार भला छे, राजरा सदा भला चाहीजे, राज वडा छो, ठाकुर छो, सदा हेत मया राषा छो तिण था विसेष रषावजो, अठा सारीपो काम काज हुवे सु हमेसा लिषावजो, अठे राजरो घर छे, जुदायगी कीणी वात दीसा न जाणे, अठे घोडा रजपुत छे सो राजरे कांमनुं छे। अप्रच अणदसिंघ, रायसिंघरी वात राज ठेहराय ने ऊदेपुर बुलाया, सु आछा कीयो, आ वात राजरे हीज करणरी थी, हीमे यानु पटो भावे रोजीनो दीरायने राज कने रषावसी, ईडररो ऐक षेत ही ईणानु न दीरावेला, ईडर राजरे रषावजो, दरबाररे मुतसदीयानु हुकम हुवो छे, सो ईडररे ईजारेरो टको हीमार राजरे मुतसदीया कने कोई मागे नहीं, सु राज हरगीज ईडररो ऐक षेत ही ऊणानु दीरावो मत, और हकीकत प ॥ रायचद अरज करसी सवत १७८५ रा भाद्रवा वदी २ मु ॥ जहानावाद

इस कागजके लिखनेका मतलब जाहिरा तो ईडरमे रायसिंह व आणन्दसिंहको न रखनेका है, परन्तु उनके न मारेजानेसे महाराजा अभयसिंहकी दिली मुराद पूरी न हुई, तब महाराणाको इशारेसे उलहना लिखभेजा, कि "आणन्दसिंह, रायसिंहको फौज भेजकर उदयपुर बुलाया, यह अच्छा किया, यह बात आप हीके करनेकी थी", अर्थात्

इक़ारके बर्खिलाफ़ आपके करनेकी न थी दूसरी बात ईडरमेंसे उनको ज़मीन न देनेके लिये भी इस वास्ते लिखी है, कि जिस तरह उनको मारडालनेका इक़ार पूरा न हुआ, इसी तरह ज़मीन न देनेका भी पूरा न हो, परन्तु इस कागज़के आनेसे पहिले आणन्द-सिंह व रायसिंह दोनो उदयपुरसे रवानह होगये, और मेड़ता वगैरह मारवाड़के कई पर्गने जा लूटे इसपर महाराजा अभयसिंहने जयसिंहको लिखा होगा, क्योंकि वे महाराणा को ईडर दिलानेमें पंच थे महाराजा अभयसिंहने अपने भाई बख़्तसिंहको फ़ौज देकर मेड़तेकी तरफ़ भेजा, और महाराजा जयसिंहको भी अभयसिंहका मददगार बनना पड़ा, तब एक और कागज़ महाराजा जयसिंहने महाराणाके नाम लिख भेजा, जिसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है -

महाराजा सवाई जयसिंहके कागज़की नक्ल

श्रीरामजी.

श्रीसीतारामजी

॥ सिधि श्री महाराजा धिराज महाराणा श्री संग्रामस्यघजी जोग्य, लिषत राजा सवाइ जैस्यघ केन्य मुजरो अवधारिज्यो, अैठाका समाचार श्री जीकी क्रिपा सौं भला छै, आपका सदा भला चाहिज्ये, अप्रंचि, आप वडा छो, हिंदसथानमैं सरदार छौ, अैठा वैठाका व्योहारमैं कही वात जुदायगी न छै, अैठै घोडा रजपुत छै, सो आपका कामनै छै, ई तरफ काम काज होय सो लीषावता रहोला, ओर राजा वषतसींघजी वा फोज म्हांकी अणदसींघ, रायसींघ ऊपरि गई छी, सो हीरदै नारायण तो आय मील्यो, अर अणदसींघ रायसींघकी ई भांति ठाहरी, जो ए तो दोन्यो ऊदैपुर श्री दीवाणकी हजुरि रहबो करै, कहींठे जाय नही, अर ईडरका पडगनाका जो गाव श्री दीवाणकी हदकी त्रफ छै, सो तो श्री दीवाणके रहै, अर कसवो ईडर वा ओर गाव अणदसींघ रायसींघ नै दीज्यै, सो अब अणदसींघ, रायसींघ श्री दीवाणकी हजुर आवे छै, सो याकी तसल्ली फरमावैला, अर नीसा ले हजुर राषैला, अर ईडरकी सीवाय गाम आपकी हदकी त्रफ की सनदि करिदेवाको मुतसद्यानै हुकम फरमावैलाजी, ओर कागद समाचार लीषावता रहोला मीती भादवा वदी १३ संवत १७८५

अणन्दसिंह व रायसिंहके उदयपुर पहुंचनेपर महाराणाने खास कस्बह ईडर व थोड़ा सा ज़िला अणन्दसिंह, रायसिंहको देदिया, और पोला व पाल वगैरह कुछ पहाड़ी ज़िला ईडरके पहिले राजाकी सन्तानको गुज़ारेके लिये दिया, बाक़ी मुल्क मेवाड़में मिलाया; ज़मानेके फेरफ़ारसे मरहटोंके गद्रमें बहुतसा पहाड़ी ज़िला तो उसमेंसे मेवाड़के तह्तमें रहा, बाक़ीपर अणन्दसिंह रायसिंहने अपना कब्ज़ह करलिया; और उदयपुरकी मातह्तीसे भी अलग होगये.

विक्रमी १७८१ [हिज्री ११३६ = ई० १७२४] में शाहपुराके राजा भारथसिंहने जगमालोत राणावतोंसे जहाज़पुरका पर्गनह छीन लिया, और महाराणाको खुश करके एक पर्वानह भी हासिल करलिया था, उसी बारेमें भारथसिंहके कुंवर उम्मेदसिंहने पेशकशी वगैरह भरनेके लिये जहाज़पुर व फूलिया वगैरह मेवाड़में मिलानेकी गरज़से मुचल्का लिख दिया, जिसकी नक्ल नीचे लिखते हैं -

मुचल्का जहाज़पुरकी बाबत.

७००१) सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, लीपतु कुंअर उमेदसीघजी भारथसीघोत अप्रच। जाजपुररो श्री दरबार थी जागीरी मया हुओ, तीरी पेसकसी अजमेररे सोबै पेसकसीरा रुपय्या लागे हैं रु० ७००१) अंके रुपय्या सात हजार अेक लागे हे, सौ दरबार भरणा,

वीगत र

३५००) म्हा सुदी १५ ३५०१) जेठ सुदी १५.

छ १७८५ काती सुदी १२ सनु लीषतु कुंअर उमेदसीघ, उपलो लीष्यो स्ही.

२२००३) लीष्यो १ सीधश्री दीवाणजी आदेसातु, लीषतु कुंअर उमेदसीघजी भारथ सीघोत अप्रच। प्ररगनो फुल्यारो मुकाते अजमेर थी तीरा मुकातारा त्था पेसकसीरा रुपय्या लागे हे, सो श्री दरबार देणा, उजर करा न्ही, अजमेररे सोबै दरबार थी सुध करेलेसी. बदी २ म्ही जेठीरी आधुआध

वीगत र

१७००१) फुल्यारा प्रगनारा मुकातारा पेसकसी सुधी रुपय्या सतरा हजार अेक

२००१) गाम देवल्यो प्रङगणे भीणांयरे हासल पेसकसी सुधी

१००१ गाम कोठ्यारी पेसकसीरा

२००० षरचरा

२२००३ अंषरे बावीस हजार तीन, काती सुदी १२ सनु लीपतु कुंअर उमेदसींघ, उपलो लीष्यो स्ही

——⊃×⊂——

अब हम राजपूतानाकी कुल्ल रियासतोंका मरहटोंके हाथसे बर्बाद होने, और रहे सहे रोब दाबके भी मिट्टी होनेकी शुरू बुन्याद लिखते हैं

महाराणा अमरसिंह २ की बेटी चन्द्रकुंवरका विवाह विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] में जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहके साथ हुआ था, जिसका ज़िक्र ऊपर लिखागया है उस वक्त एक अहदनामह तै पाया था, कि उदयपुरके महाराणाकी बेटीका कुंवर छोटा हो, तो भी अपने बापकी रियासतका मालिक होगा चन्द्रकुंवर बाईके पहिले पहिल कन्या हुई, जिसकी शादी महाराजा जयसिंहने जोधपुरके महाराजा अभयसिंह से करदी, लेकिन् विक्रमी १७८५ पौष कृष्ण १२ [हि० ११४१ ता० २६ जमादियुल् अव्वल = ई० १७२८ ता० ३० डिसेम्बर] को आंबेरके महाराजा जयसिंहकी महाराणी और महाराणा संग्रामसिंहकी बहिन चन्द्रकुंवर बाईके गर्भसे एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम माधवसिंह रक्खा गया इस राजकुमारके जन्म होनेसे महाराजा सवाई जयसिंहको बड़ी फ़िक्र हुई, क्योंकि इनके दो राजकुमार, जो दूसरी राणियोंसे पैदा हुए, मौजूद थे; एक शिवसिंह दूसरे ईश्वरीसिंह, अगर अहदनामहपर अमल किया जाय, तो इन दोनोंका हक़ खारिज हो, और वे दोनों भी फ़सादपर कमर बांधें, और उस इक्रारके बर्खिलाफ़ बर्ता जाये, तो उदयपुरसे मुकाबलह करना पड़े, जिससे जोधपुर, बूंदी, कोटा, बीकानेर वगैरह रियासतें उदयपुरकी मददगार हों. ऐसे विचार करनेसे महाराजाको खाना पीना भी बुरा लगने लगा, और यह सोच लिया, कि इस बखेड़ेसे बर्बादीके दिन आगये अव्वल तो उस राजकुमारके मारडालनेकी कोशिश कीगई, लेकिन् चन्द्रकुंवर बाई इस बातको जानती थीं, जिससे महाराजाकी सारी कोशिशें फ़ुजूल हुईं तब महाराजा जयसिंह दौड़कर उदयपुर आये, जहां विक्रमी १७८५ आश्विन शुक्ल १०

[हि० ११४१ ता० ९ रबीउल्अव्वल = ई० १७२८ ता० १५ ऑक्टोबर] से विक्रमी ९ कार्तिक कृष्ण ५ [हि० ता० १९ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २५ ऑक्टोबर] तक रहे; और मुसाहिबोंको मिलाकर माधवसिंहको जुदी जागीर रामपुरा दिलानेका उपाय किया, लेकिन् यह मन्सूबह भी रोका गया, क्योंकि पचोली बिहारीदासने इस बातको बिल्कुल मंजूर नहीं किया, लाचार महाराजा वापस गये, लेकिन् फिर भी उनको इस फसादके मिटानेकी फ़िक्र बनी रही, इसलिये फिर इसी वर्षके अन्तमें उदयपुर आकर रामपुराके लिये बहुत कुछ कहा, और महाराणाको समझाया, कि रामपुराके राव बादशाही नौकर थे, जिनका मुल्क आपने जबर्दस्ती छीन लिया, अगर आपका भानजा वहांका मालिक बने, तो हमारी रियासतका झगडा दूर हो, इस बातको सोचना चाहिये. राव नगराज धायभाईने भी महाराणाको समझाया, कि रामपुरा माधवसिंह को अपनी तरफ़से देनेमें मेवाड़का हक नहीं जाता, वर्नह महाराजा जयसिंह बादशाहोंसे मिलकर कुछ और फसाद खडा करेंगे; अगर यह भी न हुआ, और उन्होंने अपने बड़े बेटेको पाटवी रक्खा, तो हमको कितनी बडी ताकत आज्माई करनी पडेगी, तिसपर भी हमारा मत्लब पूरा हो, या न हो. महाराणाके दिलपर धायभाईके कहनेका असर हुआ, लेकिन् बिहारीदासने इस बातको न माना, और कहा, कि माधवसिंह तो आपके भानजे हैं, परन्तु हमेशह भानजे न रहेंगे, चन्द्रावतोंसे, जो सीसोदिया हैं, यह रियासत छीनकर कछवाहोंको देना पूरी बदनामीकी बात है; अगर आपको दिल्लीके बादशाहोंका डर हो, तो मैं इसका जिम्महवार हूं, कि मुहम्मदशाह महाराजा जयसिंहका पक्षपात नहीं करेगा, इत्यादि.

महाराणा इन दोनों मुसाहिबोंकी बर्खिलाफ सलाहपर विचारने लगे, क्योंकि दोनों खैरख्वाह और एतिबारी थे, दोनों तरफ़की दलीलें मज्बूत थीं. इस खानगी सलाहकी खबर महाराजा सवाई जयसिंहको मिली, तब वह पहर रात गये खुद बिहारी-दासके घरपर गये, और बहुतसी खुशामदकी बातें करके कहा, कि हमारी रियासतका फसाद घटाना और बढाना तुम्हारे हाथमें है. इस कहनेसे बिहारीदासपर बहुत असर हुआ, लेकिन् इतने पर भी दिलसे सलाह नहीं दी, और चुप होरहा, तब धायभाई नगराजको सवाई जयसिंहने कहा, कि अब कोई कार्रवाई करना चाहिये. नगराजने महाराणाको फिर समझाया, जिससे महाराणाने रामपुरेका पर्वानह माधवसिंहके नाम लिख दिया. उस पर्वानेकी, और माधवसिंह व सवाई जयसिंहके इक्रारनामोंकी नक्लें यहां दर्ज कीजाती हैं -

रामपुराके पर्वानहकी नक़ल

श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री एकलिंग प्रसादातु.

सही

बाबा रांमपुरो थांहे दीधो है, सो
म्हां तीरे रहोगा जीत्रे थां थी
नहीं ऊत्रे नहीं,

॥ महाराजाधिराज महाराणा श्री सग्रामसिघजी आदेशातु, भांणेज कुअर श्री माधोसींघजी कस्य, ग्रास मया कीधो

वीगत

पटो रामपुरारो थांहे मया कीधो हे, सो असवार १००० एक हजार, बदुक १००० एक हजार थी छ महींना सेवा करोगा, ने फोज फाटे असवार हजार ३००० तीन, बदुक हजार ३००० तीन थी सेवा करोगा; सो म्हा हजुर रहोगा, जीत्रे या जायगा थां थी नहीं ऊतरे. प्रवानगी पचोली रायचद, मेहतो मालदास

एव सवत १७८५ वर्षे चेत सुदी ७ भोमे

भांणेज कुअर श्री माधोसीघजी कस्य

कुवर माधवसिंहके इक़ारनामहकी नक़्ल

॥ श्रीरामजी

(१) ई बातका साषद्र महाराजा
श्री सवाई जयसिंघजी, छोटे
कुवर थारे करौ

॥ स्वस्ति श्री लिषत कूवर भाणेज श्री माधोस्यघजी अप्रचि म्हानै रांमपुरो जीमीदारीमे दीयो छै पटामै, सो ईसी तरैह चाकरी करीस्या, जो आगै चद्रावतास्यै ई तरैह था, पछी सो ईही प्रमाण हजुरी रही सेवा करीस्या, जे तै म्हास्यो जाईगा ने उतारै वीगत

माफीक चद्रावता

मास छह एक हजार सुवार, एक हजार बंदुके स्यै सेवा करणी, फोज फाटे असवार
१००० १०००
हजार तीन, बदुक हजार तीन सेवा करणी मिती चैत सुदि ७ सवत १७८६
३००० ३०००

महाराजा सवाई जयसिंहके लिखे
हुए इक़ारनामहकी नक़्ल.

श्रीरामोजयति

सिधि श्री लिषत सवाइ जयसीघ कुवर माधोसीघने परमेश्वर चिरंजी राषे, जे ओर तरह व्हे, तो छोटो कुवर रामपुराकी एवज चाकरी करे, अर एक ही व्हे, तो पटा माफीक चाकर ही चाकरी करे, जदि दुसरो व्हे जदी वो आय चाकरी करे. मीती चैत सुदी ९ गुरो स १७८६

(१) सिरेके अक्षर महाराजा श्री जयसिंहजीके हाथके है

ऊपर लिखे हुए पर्वाने और इक्रारनामहके संवत् में फर्क है, जिससे पर्वानेके एक वर्ष बाद इक्रारनामोंका लिखाजाना मालूम होता है, लेकिन् ये इक्रारनामे उसी समय लिखे गये हों, तो तअज्जुब नहीं, क्योंकि महाराजा सवाई जयसिंह चैत्रादि संवत् लिखते थे, जैसे ऊपर आनन्दसिंह व रायसिंहके मुआमलेमें महाराणाके नाम ख़रीतह लिखा था- (देखो पृष्ठ ९६७)

आख़िरकार चन्द्रकुंवर बाई और कुंवर माधवसिंहको उदयपुर लाये, और वे यहीं रहे, जबतक कि ईश्वरीसिंहके बाद वह जयपुर गये, और गद्दीपर बैठे अब हम महाराणा संग्रामसिंहके समयके दशहरेके दर्बारके चित्रपटके लेखकी एक नक्ल यहां दर्ज करते हैं, जिससे उस वक्तके मौजूदह सर्दारोंके नाम और दर्बारका तरीकृह मालूम होगा -

चित्रपटपरके लेखकी नक्ल

महाराजा धिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी दसरावारे दिन खेजड़ी पूजे जठारो भाव दरीखाने बेठा, जीमणी बाजूरा ठाकुर, श्री जीरी पाखती- राव गोपालसिंहजी, राज कीरतसिंहजी, रावत देवभाणजी, रावत केसरीसिंहजी, रावत संग्रामसिंहजी, रावत प्रथीसिंहजी, झालो अज्जोजी, रावत सारंगदेवजी, सक्तावत जैतसिंहजी, रावत हरीसिंहजी, राव रघुनाथसिंहजी, महाराज प्रतापसिंहजी, महाराज तख़्तसिंहजी, राठौड़ भीमसिंहजी नागोर वाला, महाराज अदोतसिंहजी, झालो अगरसिंहजी झाडोल वालो, रावत सांवतसिंहजी, राठौड़ अखैरामजी गोपीनाथोत, भाटी जुझार-सिंहजी, चौहान कीतोजी, चौहान जोरावरसिंहजी, राठौड़ कुशलोजी, सक्तावत श्यामसिंहजी, चौहान अनोपसिंहजी, सक्तावत सूरतसिंहजी, श्री जीरा पाछे पचोली बिहारीदासजी, पचोली किशनदासजी, ढीकड्यो रामसिंहजी, खवास रुघोजी, मसाणी लखमण, पुरोहित सुखरामजी होम करे, डावी बाजूरा ठाकुरांरो साथ बैठा- रावल बिसनसिंहजी बांसवाला वालो, रावल रामसिंहजी डूंगरपुर वालो, राव बख़्तसिंहजी, राठौड़ प्रतापसिंहजी, रावत देवीसिंहजी, झालो कल्याणजी, महाराज दलसिंहजी, महाराज उमेदसिंहजी, डोडिया मनोहरसिंहजी, कुंवर श्री जगत्सिंहजी, चौहान शोभानाथजी, झालो दौलतसिंहजी, राठौड़ किशनदासजी, महाराज सूरतसिंहजी भगोतसिंहोत, बीजावत कुशलसिंहजी, राठौड़ शिवसिंहजी, राणावत अगरसिंहजी,

राणावत अचलसिंहजी, रावत सूरतसिंहजी, तवर किशनसिंहजी, बख्तसिंह मेहेचा वालो, राणावत रत्नसिंहजी, ठाकुर इन्द्रभाणजी, महाराज नरायणदासजी बैठा, बीचमे कुंवरांरी पांत जणी उपरे राठौड दुर्गदासजीरा पोता दो बैठा, कुंवरा नीचे धायभाई नगजी बैठा, चवरदार तुलसीदासजी, पचोली मयाचंदजी चमर राखे

इस चित्रपटमे संवत् नही लिखा है, परन्तु विक्रमी १७७६ और विक्रमी १७८८ के बीच यह बना मालूम होता है, क्योंकि विक्रमी १७७५ [हि० ११३१ = ई० १७१९] के प्रारम्भमे बेदलेका राव सुल्तानसिंह मौजूद था, और इसमे उसके बेटे राव बख्तसिंहका नाम लिखा है, जिसको इसी वर्षके कार्तिक मास [हि० ११३२ मुहर्रम = ई० नोवेम्बर] मे तलवार बंधी थी, और विक्रमी १७८९ [हि० ११४४ = ई० १७३२] मे बांसवाडेके रावल विष्णुसिंहका देहान्त हुआ, और इस चित्रपटमे उनका भी नाम है

अब हम महाराणा संग्रामसिंहके आख़िरी समय, अर्थात् विक्रमी १७९० [हि० ११४५ = ई० १७३३] के एक कागजकी नक्ल नीचे लिखते है, जिससे उस वक्तके कुल जागीरदारोंकी तादाद, गोत्र, रेख (आमदनी) वगैरह का हाल मालूम होगा, लेकिन् यह भी याद रखना चाहिये, कि इस कागजसे प्रतापगढ, बांसवाडा, डूंगरपुर, ईडर, और सिरोहीकी जागीरें जुदी है, जो उस समय महाराणाके मातह्त थीं

पत्रकी नक्ल

संवत १७९० रा बरसरो इकतो सरदारारो उपत घोडा नामा जोजावल

॥ श्रीरामजी

। श्रीचत्रभुजजी

॥ सीधश्री गुणेसाअजीनमो ठाकुरारा साथरो ईगतो संबत १७९० रा बरसरो

ऊपत रु०	गोत्र	नामा	घोडा	जोजावल
३२२५२५	झालारो साथ	३४	११८५	५९

उपत रु०	गोत्र	नामा	घोडा	जोजावल
२४७६५५	चोहणारो साथ	४०	९२८	४२
८४५२२०	चौडावतारो साथ	१६९	३१२६	१३२
३८७४५०	सगतावतांरो साथ	६१	१५५५	७०
५९६२१५	राणावतारो साथ	१४५	१९६३	८२
४२००५०	राठौडारो साथ	१४०	१५९६	५२
१०२९५०	पुवारारो साथ	२७	४०४	१६
१०६११५	सोलष्यारो साथ	५३	४०९	१४
३१९००	भाट्यारो साथ	११	१३५	४
८९०७००	कछवांवारो साथ	१२	२५२१	५५
१४५०	तुवर तथा गौडारो साथ	५	६	०
७२२५	सोनगरारो साथ	८	२९	०
८९७५	साषलारो साथ	१०	३७	०
५३००	षीच्यारो साथ	७	१७	०
१२००	बलारो साथ	६	७	०
३२५	बालेसारो साथ	३	३	०
२५५०	जादवारो साथ	७	१२	०
१२७५	सादडेचारो साथ	५	६	०

उपत रु०	गोत्र	नामा	घोडा	जोजावल
९६५०	सीघलारो साथ	१५	३४३	०
१०५२५	भाडावतारो साथ	१२	४०	०
३८२००	हाडारो साथ	११	१३१	४
६०१०५	डोड्यारो साथ	३०	२३९	८
२४०७५	देवडारो साथ	२२	९१	०
१०००	पीढ्यारारो साथ	३	४	०
२५८५०	प्रचुनी साथ नामा	१२	८८	४
४१४८४८५		८४८	१४५७५	५४२

ईगतो

४१४८४८५	ऊपत रुपीआ	८४८	आसामी
१४५७५	असवार	५४२	जोजावल

तीरी बीगत		नामा	अस्वार	जोजावल
८५६९९७	रामपुरारा बाद	१	२४००	५०
३२९१८८८	बाकी	८४७	१२१७५	४९२
४१४८८८५		८४८	१४५७५	५४२

महाराणा संग्रामसिंहका देहान्त विक्रमी १७९० माघ कृष्ण ३ [हि० ११४६ ता० १७ शअ्बान = ई० १७३४ ता० २३ जैन्युअरी]को हुआ यह विक्रमी १७४७ वैशाख कृष्ण ६ शुक्रवार [हि० ११०१ ता० २० जमादियुस्सानी = ई० १६९० ता० १ एप्रिल]को जन्मे थे, इनका मझलेसे कुछ छोटा कद, चौडी पेशानी, गेहुआ गोर वर्ण, भराहुआ बदन, हसत मुख, इनका अख्लाक हर एक आदमी को खुश करनेवाला था, राज्य प्रबन्ध चलानेमें

चतुर, वक्तके बडे पाबन्द, वचनके सच्चे थे, इनमे ऐब ढूढनेसे भी बहुत कम पाया जाता है पोलि-टिकल हालतमे पक्के होनेपर भी इन्होने अपनी ईमान्दारीको नही छोड़ा इनका रोब नौकरो पर ऐसा था, कि सलूंबरके रावत् केसरीसिह रुख्सत लेकर घर गये, सलूंबर शहरके दर्वाजे मे घुसते वक्त किसी दुश्मनके अर्ज करनेपर महाराणाने हुक्म भेजदिया, कि जल्दी चलेआओ, यह हुक्म पहुचनेपर वह अपने बाल बच्चोसे बगैर मिले ही लौट आया, महाराणा बहुत खुश हुए इसी तरह अदनासे लेकर आला तक हर एक नौकर महाराणाके हुक्मको माननेवाला था, और मुहब्बतके साथ नौकरी देता था, राज्य प्रबधका यह हाल था, कि किसी उत्सवके रोज कोठारियाके रावत्ने महाराणाके जामेका घेर कम होनेसे जियादह बढानेकी अर्ज की महा-राणाने मजूर करके उक्त उमरावकी जागीरके एक गावपर ख़ालिसा भेजदिया. जब उसने सबब दर्यापत किया, तो कुल राज्यका जमा खर्च दिखलाकर फर्माया, कि हर एक सीगेके लिये जमा ख़र्च मुकर्रर है, अब जामेका घेर न बढायाजावे, तो बेमुरव्वती है, और बढायाजावे, तो यह खर्च किस जगहसे वुसूल हो, इसलिये तुम्हारी जागीरके एक गावकी आमद-नीसे यह घेर बढाया जायेगा इस बातसे उनका राज्यप्रबध अच्छा मालूम होता है महाराणा अमरसिहके प्रबध और मनोरथोको इन्हीने पूरा किया, और महलोमे चीनीकी चित्रशाली, बडे जगमन्दिरोमे नहरके महल, व दोनो दरीखाने वगैरह, महासतीमे अपने पिताके दग्धस्थानपर बडी छतरी, सहेलियोकी बाडी और त्रिपौलिया वगैरह बहुतसी इमारते बनवाई इनके १६ राणिया थी, लेकिन् उनमेसे जिनके नाम मिले, वे नीचे लिखे जाते है –

१ जैसलमेरके रावल अमरसिहकी बेटी अतरकुवर
२ ऐजन सूरजकुवर
३ बबोरीके पवार मुकन्दसिहकी बेटी उम्मेदकुवर
४ समदड़ीके राठौड दुर्गदासकी बेटी रामकुवर
५ राठौड़ सूरजमल्लकी बेटी
६ भाटी प्रतापसिहकी बेटी इन्द्रकुवर
७ ईडरके राठौड हटीसिहकी बेटी महाकुवर
८ गोगूदाके झाला राज अजयसिहकी बेटी महाकुवर
९ वीरपुरा दयालरामकी बेटी
१० झाला कर्णसिहकी बेटी जसकुवर

इनके ४ कुवर थे, बडे महाराजकुमार जगत्सिह महाराणी नम्बर ३ से, दूसरे कुवर नाथसिह महाराणी नम्बर ७से, तीसरे कुवर बाघसिह और चौथे कुवर अर्जुनसिह महाराणी नम्बर १० से थे, अर्जुनसिह महाराणाके इन्तिकालके तीन महीने बाद पैदा हुए थे.

रवानह किया, जहां राव दुर्गभानने बडी तन्दिही और नेक नियती दिखलाई विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] मे राव मज्कूर खाने आजम कोकाके साथ दक्षिणमे भेजागया विक्रमी १६४८ [हि० ९९९ = ई० १५९१] मे वह सुल्तान-मुरादके साथ मालवे गया, और दक्षिणी लडाइयोमे अच्छी बहादुरियें दिखलाई विक्रमी १६५७ [हि० १००८ = ई० १६००] मे रावको बादशाहने मिर्जा मुजफ्फर-हुसैनकी गिरिफ्तारीके लिये भेजा, उधरसे ख्वाजह उवैस मिर्जाको गिरिफ्तार किये लारहा था, जो सुल्तानपुरके पास रावको मिला, वहासे दोनो शख्स मिर्जाको बादशाही हुजूरमे लेआये फिर दुर्गभानको शैख अबुलफज्लके साथ नासिककी तरफ मुकर्रर किया, पर कुछ अर्से बाद वतनकी अब्तरीके सबब रुख्सत लेकर घर आया, और विक्रमी १६५८ [हि० १००९ = ई० १६०१] मे वापस चलागया

विक्रमी १६६४ पौष [हि० १०१६ रमज़ान = ई० १६०८ जैन्युअरी] मे राव दुर्गाका देहान्त होगया, इस समय उसकी उम्र ८२ वर्षकी थी अक्बरके जुलूसी सन् ४० तक डेढ हज़ारी जात और सवारके मन्सबपर था, तुजक जहांगीरीके पृष्ठ ६३ मे बादशाह जहांगीर लिखता है, कि "यह राव मेरे बापके नौकरोंमेसे था, जो ४० वर्षसे जियादह उनके मातह्त सर्दारोंके तौर उनकी नौकरीमे रहा; और धीरे धीरे चार हजारी मन्सब तक पहुचा, वह मेरे बापकी नौकरीमे आनेसे पहिले राणा उदयसिंहके मोतबर नौकरोमेसे था, नवी दहाई (१) (अस्सी और नव्वेके बीच) मे गुजरगया, वह सिपाहगरीके फनमे होश्यार था"

दुर्गभानके बाद राव चादा (चन्द्रसिंह) गद्दीपर बैठा, और जहांगीर बादशाहके साम्हने कई खिदमतोमे हाजिर रहा इसके ४ बेटे थे, बडा नग्गा, दूसरा गिरधर, तीसरा रुक्माङ्गद और चौथा हरिसिंह चादा विक्रमी १६८७ [हि० १०३९ = ई० १६३०] मे इस जहानको छोड़गया, नग्गा तो बापके साम्हने ही मरगया था, इसलिये दूदा, जो चादाका पोता था, गद्दीपर बैठा दूदाने शाहजहां बादशाहसे दो हजारी जात और डेढ़ हजार सवारका मन्सब पाया, और आजमखांके साथ खानेजहां लोदीपर भेजागया, लेकिन् लडाईके वक्त भागगया इसके बाद यमीनुद्दौलह आसिफखांके साथ आदिलखांकी मुहिमपर भेजागया ६ जुलूस शाहजहानी

---

(१) मआसिरुल उमरामे हफ्ताद व दो ७२, और तुज़क जहांगीरीमे अश़्ए नोजदुहुम याने उन्नीसवी दहाई जो लिखा है, इनके लिखने और छपनेमें गलती रहगई, मआसिरुल उमरामें हश्ताद व दो ८२, और तुज़क जहांगीरीमे अश़्ए नुहुम याने नवी दहाई दुरुस्त मालूम होता है, जिससे दोनो किताबोका तह्रीरी फर्क निकल जायेगा

विक्रमी १६९० [हि० १०४२ = ई० १६३३] मे, जब किले दौलताबादपर लडाई हुई, उस वक्त बीजापुरकी मदद आगई थी, चारो तरफसे लडाई होने लगी, उस मौकेका जिक्र मुल्ला अब्दुलहमीद लाहौरी बादशाह नामह जिल्द १ पृष्ठ ५२० मे इस तरह लिखता है -

"ता० २४ जिल्काद [विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ९ = ई० ता० २ जून] को मुरारि पडितने बहुतसी फ़ौजके सबब मग़रूर होकर रन्दूला और साहूको बहुतसी फौजके साथ खानेजमाके मुकाबलेपर भेजा, और आप याकूत हबशीको साथ लेकर फौज समेत रवानह हुआ; खान-खानाने खानेजमाको कहा, कि दुश्मनोसे लडनेकी जल्दी फ़िक्र करे, फिर उसने सोच बिचार कर खानेजमांका जाना मुनासिब न समझा, और लुहरास्पको अपनी फौज समेत मुकर्रर किया जगराज, राव दूदा और पृथ्वीराजको भी कहा, कि अपने मोर्चोंसे निकलकर तय्यार रहे, और दिलेरहिम्मतको चन्द्रभान वगैरह समेत मोर्चोकी निगहबानीके वास्ते अबरकोटके भीतर छोडकर आप थोडेसे सिपाहियोके साथ किलेसे वहा आ पहुचा, जहा कि दूदा मौजूद था, इस मौकेपर राणाके आदमी, जिनको खानेजमाने भोपतकी मातह्तीमे भेजा था, खानख़ानाकी मददको आगये दुश्मनोकी एक फौजने राव दूदासे लडाई शुरू की, और लुहरास्प दूर था, इसलिये सिपहसालार कम फ़ौज होनेपर भी दुश्मनोकी तरफ चला, माल्रू, परसू, राव दूदा, तथा रामाकी जमइयत भी आगई, और थोडीसी कोशिशसे दुश्मनोको हटाकर मैदान खाली कर-दिया फिर मुबारिजखा, राजा पहाडसिह और जगराज भी जा पहुचे, और दुश्मनोका पीछा किया जब दुश्मन भागकर लुहरास्पकी तरफ गये, तो खानखाना, जगराज और राणाके आदमियोको साथ लेकर लुहरास्पकी मददको चला इस वक्त राव चादाके पोते राव दूदा चद्रावतने, जिसके किसी कद्र रिश्तहदार लड़ाईमे मारेगये थे, अपने मुर्दोंको उठानेकी इजाजत मागी. सिपहसालारने मना किया; लेकिन् दूदाने, जिसकी मौत पास आगई थी, कुछ खयाल नही किया, और मालू वगैरह मरेहुओकी लाशोको उठाने लगा, जूही खानखानाकी फौज नज़रसे गाइब हुई, दुश्मन के बहुतसे लोग इधर उधरसे आगिरे, और राव दूदा अपने साथियो समेत लाचारीके सबब घोडेसे उतर पडा, और बडी बहादुरीके साथ लडकर मारागया बाद इसके बादशाह शाहजहाने उसके बेटे हटीसिहको खिल्अत, डेढ हजारी जात व हजार सवारका मन्सब और रावका खिताब दिया, और खानेजमां बहादुरके साथ दक्षिणकी मुहिमपर तईनात किया, लेकिन् वह कुछ अर्से बाद मौतसे मरगया "

हटीसिहके कोई औलाद नहीं थी, तब राव चादाके तीसरे बेटे रुक्मांगदका बेटा रूपसिह गद्दीपर बैठा, और बादशाह शाहजहाके पास विक्रमी १७०० [हि० १०५३

= ई० १६४३] में हाजिर हुआ विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में वह शाहजादह मुरादबरूशके साथ बल्खकी तरफ भेजागया विक्रमी १७०३ [हि० १०५६ = ई० १६४६] मे बल्खके मालिक नजरमुहम्मदखासे अच्छी तरह लडा, जिस समय, कि वह बहादुरखा रुहेला और असालतखाकी फौजमे हरावल था अन्तमे नजरमुहम्मदको शिकस्त मिली, तब रूपसिहको तरकीसे डेढ हजारी जात और हजार सवारका मन्सब मिला जब शाहजादहको वहाकी आबो हवा नापसन्द आई, तो वह दिल्लीको चलाआया, और राजा रूपसिह भी और सर्दारोके साथ पेशावरमे आगया था, परन्तु बादशाही हुक्म पहुचनेसे ये लोग अटक न उतरने पाये मुरादबरूशके एवज शाहजादह औरगजेब भेजा गया, जिसके साथ उज्बकोकी लडाईमे राव रूपसिहने बडी बहादुरी दिखलाई फिर शाहजादहके साथही बादशाही हुजूरमे हाजिर हुआ

विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] मे शाहजादह औरगजेबके साथ कन्धारकी तरफ भेजागया, जहा कजलबाशोसे मुकाबलह हुआ, उस वक्त रुस्तमखा और फत्हखाकी हरावलमे इसने अच्छी बहादुरी दिखलाई इस खिद्मतके एवज उसने अस्ल और इजाफह मिलाकर दो हजारी जात व बारह सौ सवारका मन्सब पाया विक्रमी १७०८ [हि० १०६१ = ई० १६५१] मे राव रूपसिह इस जहानको छोड गया उसके भी कोई लडका न था, इसलिये राव चादाके बेटे हरीसिहका बेटा अमरसिह गद्दीपर बैठा, जिसको बादशाह शाहजहाने एक हजारी जात व नव सौ सवारका मन्सब और रावका खिताब तथा चादीके सामान समेत घोडा देकर रूपसिहकी जगह काइम किया

विक्रमी १७०९ [हि० १०६२ = ई० १६५२] मे औरगजेबके साथ अमरसिहको कन्धारकी तरफ भेजा, और विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] मे इसी मुहिमपर दाराशिकोहके साथ तईनात हुआ विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] मे दाराशिकोहकी सुफारिशसे ढाई हजारी जात व हजार सवारका मन्सब मिला, और विक्रमी १७१२ [हि० १०६५ = ई० १६५५] मे दक्षिणकी मुहिमपर भेजागया विक्रमी १७१५ [हि० १०६८ = ई० १६५८] मे वह राजा जशवन्तसिहके साथ मालवेकी तरफ औरगजेब और मुरादके मुकाबलेको भेजागया फत्हाबादकी लडाईमे अमरसिह महाराजा जशवन्तसिहकी फौजका हरावल था, लेकिन् लडाई होनेके बाद भागगया, और जब आलमगीर बादशाह बना, तब उसके पास हाजिर होगया इसी वर्ष शाहजादह मुहम्मद सुल्तानके

साथ बंगालेकी तरफ़ शुजाऋपर भेजागया फिर मिर्ज़ा राजा जयसिंहके साथ दक्षिण भेजागया, जहां खूब खिद्मते कीं

विक्रमी १७१६ [हि० १०६९ = ई० १६५९] में सालेरके किलेके नीचे लड़ाईमें राव अमरसिंह काम आया, और उसका बेटा मुह्कमसिंह दुश्मनोंकी कैदमें गया वह कुछ रुपये देने बाद छूटा, और दक्षिणके नाज़िम बहादुरखां कोकाके पास पहुंचा फिर अपने बापकी गद्दीपर काइम होकर रामपुरेका राव कहलाया कुछ अर्सेके बाद यह भी दुन्याको छोड़गया राजपूतानहमें राव मुह्कमसिंह बड़ा मश्हूर और उदार राजा गिनागया है, और राजपूतानहके कवि उसकी कीर्ति (नाम्वरी) तारीफ़के साथ कवितामें बयान करते हैं

उसका बेटा राव गोपालसिंह विक्रमी १७४७ [हि० ११०१ = ई० १६९०] में बादशाह आलमगीरके पास गया, और रामपुरेकी रियासतका प्रबंध अपने बेटे रत्नसिंहको सौंपा, यह रत्नसिंह बापसे बाग़ी होगया, जब राव गोपालसिंहने बादशाही हिमायतसे उसे दबाना चाहा, तब वह मालवाके सूबहदार मुख्तारखांकी मारिफ़त मुसल्मान होगया, जिससे आलमगीरने खुश होकर उसका नाम 'इस्लामखां' और रामपुराका नाम 'इस्लामपुर' रक्खा इसकी सुबूतीके अस्ल काग़ज़ोंकी नक्लें महाराणा अमरसिंह २ के वर्णनमें दीगई हैं–(देखो पृष्ठ ७४७) गोपालसिंह शाहज़ादह बेदारबख़्तके पास मुक़र्रर था, जहांसे भागकर महाराणाकी शरणमें आया, और कुछ न करसका विक्रमी १७४९ [हि० ११०३ = ई० १६९२] में बादशाहके पास हाज़िर हुआ, तो कोलासकी क़िलेदारी पाई, लेकिन् विक्रमी १७६० [हि० १११५ = ई० १७०३] में वहांसे मौकूफ़ होनेपर भागकर मरहटोंका साथी बना, और राजा इस्लामखां (रत्नसिंह) रामपुरेका मालिक रहा वह मुसल्मानोंके पास मुसल्मान और राजपूतोंके आगे राजपूत बन जाता था जहांदारशाहके वक्में यही राजा मारागया, जिसका ज़िक्र मुन्तख़बुल्लुबाबकी दूसरी जिल्दके पृष्ठ ६९३ से ६९७ तकमें इस तरहपर लिखा है –

"जहांदारशाहकी शुरूऋ सल्तनतमें कड़ेका फ़ौज्दार सर्बलन्दखां अपने इलाकेसे दस बारह लाख रुपये लेकर आया, और रास्तेमें फ़र्रुख़सियरके पास नहीं गया, जिससे जहांदारशाहने खुश होकर अहमदाबादकी सूबहदारी दी, और अहमदाबादके सूबहदार अमानतखांको मालवेकी सूबहदारीपर भेजा जब यह उज्जैन पहुंचा, तो वहां राजा इस्लामखांने जिसका उर्फ़ रत्नसिंह था, अक्सर इलाकह दबा रक्खा था, और अमानतखांके मुरब्बी और राजाके मुरब्बीमें दिन दिन अदावत बढ़ती थी, जुल्फ़िकारखांके

लिखनेसे, या राजाने सर्कशीसे अमानतखांका दख्ल न होने दिया, और बेफ़ाइदह जवाब सवाल करने लगा आखिरकार दोनो तरफ़से फ़ौजे तय्यार हुई, अमानतखाने थानेदार रहीमबेगको सारगपुर भेजा था, जहा राजा इस्लामखा व दिलेरखा पठानने चार पाच हजार फ़ौज समेत पहुचकर थानेको उठा दिया, बहुतसोको मारा, और बहुतेरो को कैद किया अमानतखाके साथ कुल तीन हजार फ़ौज थी, जिसमेसे चार सौ या पाच सौ आदमी थानेकी लड़ाईमे काम आचुके थे यह राजा राजपूत होनेकी हालतमे मुसल्मानोसे जितनी अदावत रखता था, उससे भी जियादह मुसल्मान होनेपर रखने लगा इसके पास बीस हजारसे जियादह सवार थे, जो तीस चालीस हजारके क़रीब जान पडते थे, इसके लश्करमे अच्छे अच्छे नामी पठान थे, जैसे – चार पाच हजार सवारोका मालिक दोस्त मुहम्मदखां रुहेला, दिलेरखा पाच छ हजार सवार व तोपखानह समेत, और बहुतसे अक्खड राजपूत थे, जब अमानतखा उज्जैनसे चार पाच कोसपर सारगपुरके नालेके पास पहुचा, अचानक उसे राजा इस्लामखाके लश्करने आघेरा, और दिलेरखाने पाच छ हजार सवार साथ लेकर बाई तरफ़से अमानतखांको आ दबाया, और बड़े सख्त हमले किये, इस्लामखाने दस बारह हजार सवार तीन सर्दारोके साथ मुकर्रर करदिये थे, कि अमानतखांको चारो तरफ़से घेरकर जिन्दह पकड लेवे इस वक्त अमानतखा ऐसी तगीमे था, कि उसे अपने लश्करमेसे किसीके ज़िन्दह बचनेकी उम्मेद न थी, तो भी उसने बड़ी बहादुरीसे लडाई की, और अपने साढू दिलावरखासे, जो राजाकी तरफ़से आया था, सख्त मुक़ाबलह किया अनवरुद्दीनखां बहादुर, जो अमानतखाका दोस्त था, थोडीसी जमइयत लेकर दिलेरख़ांसे खूब लडा, और तीन घडी तक बराबर कटा छनी होती रही; अनवरुद्दीनख़ांने भालेसे जख्मी होने बाद भी दिलेरखापर गोली मारी, जिससे उसका काम तमाम हुआ, लेकिन् अनवरुद्दीनखाका भाई काम आया. राजाकी तरफ़से दिलेरखा जमादार (जमाअ दार) जख्मी हुआ, और कई नामी जमादार मारेगये "

"यह लडाई पहर दिन चढ़ेसे तीसरे पहर तक रही, इस वक्त चारो तरफ़ तीरोका जगल खूनकी नदीसे सर्सब्ज़ नजर आता था राजा घोडा झपटाकर लड़नेको आया, लेकिन् उसके साथी उसकी बद ज़बानी और बद आदतोसे पहिले ही नाराज थे, और मौका ढूढते थे, इस वक्त लडनेसे बिल्कुल किनारा करगये, राजा थोडेसे आदमियो समेत लडता रहा, और गोली लगनेसे उसका काम भी तमाम हुआ, परतु राजाके मरनेकी खबर किसीको न हुई, एक घटे तक बराबर उसका लश्कर लड़ता रहा, जब राजाका जमादार दिलावरखा भागा, तो अमानतखाने फ़तहके शादियाने

बजवाये, इतनेमे राजाका सिर भी लोग काटलाये, और राजाकी तरफ वाले पठान अपने अपने डेरोमे आग लगाकर भागगये, बहुतसे घोडे, हाथी और बाकी उम्दह डेरे व बहुतसा सामान अमानतखाके हाथ आया, जिससे उसका सारा लश्कर माला माल होगया जब जहादारशाहको खबर पहुची, तो शाबाशीका फर्मान दो खिल-अत समेत भेजा अमानतखाने रामपुराको, जो इस्लामखाका वतन था, लूटनेका इरादह किया, तब रत्नसिहकी राणियोने नक्द रुपये और दो हाथी नज्र भेजकर अर्ज की, कि राजा तो अपने कियेके नतीजेको पहुच गये, अब हम विधवाओपर फौज-कशी करना बडोकी शानके लाइक नही है इसपर अमानतखा चुप होरहा ''

इसके बाद जब रत्नसिह मारागया, तो राव गोपालसिहने रामपुरेपर कब्जह करलिया, रत्नसिहके दोनो बेटे बदनसिह और सग्रामसिह अपने बापके मुसल्मान होनेपर गोपालसिहके पास चले आये थे राव गोपालसिह बुड्ढे और नर्म दिल थे, रियासतका उम्दह इन्तिजाम न करसके, इसी अर्सेमे महाराणा सग्रामसिहका प्रधान कायस्थ बिहारीदास बादशाह फर्रुखसियरसे रामपुराको महाराणाकी जागीरमे लिखा लाया, जिसके अस्ल कागज यहा अब तक मौजूद है, और उदयपुरसे फौज लेजाकर वहा दख्ल किया, लेकिन् कुछ गाव फौज खर्चके लेने बाद राव गोपालसिहको वही काइम रखकर अपना ताबे बना लिया राव गोपालसिहके पोते बदनसिह और सग्रामसिहने जोश जवानीसे महाराणाके आदमियोको फौज खर्चके गावोपरसे निकाल दिया, तब विक्रमी १७७४ [हि० ११२९ = ई० १७१७] मे महाराणा सग्रामसिहने बेगूके रावत् देवीसिह और कायस्थ बिहारीदासको फौज समेत वहा भेजा, अठानाका रावत् उदयसिह, जो मेवाडसे बाहर निकालागया था, रावत् देवीसिहकी सुफारिशसे इस फ़ौजमे शामिल हुआ, और रामपुरेको जाघेरा, कुछ अर्से तक लडाई होती रही एक दिन अधेरी रातमें अठानेका रावत् उदयसिह अपने साथियो समेत शहर पनाहपर सीढी लगाकर चढ-गया, और दूसरे फौज वालोने भी हमलह करदिया, किला फतह हुआ, और राव गोपालसिहको उदयपुर लेआये फिर आमदका पर्गनह जागीरमे देकर एक इक़ार-नामह लिखवाया, जिसकी और दूसरे कागजोकी नक्के ऊपर लिखीगई है- (देखो पृष्ठ ९५७) महाराणाने राठौड दुर्गदासको रामपुराके बन्दोबस्तपर भेजा, थोड़े दिनो बाद राव गोपालसिह तो मरगया, और उसका बडा पोता बदनसिह आमदका जागीरदार हुआ, यह महाराणाकी ताबेदारीमे रहा इसके कोई औलाद नही थी, इसके मरने बाद उसके छोटे भाई सग्रामसिहको गद्दी मिली फिर रामपुरा महाराणा सग्रामसिहने अपने भानजे और जयपुरके कुवर माधवसिहको जागीरमे देदिया

तारीख मालवामे गोपालसिंहके बाद संग्रामसिंहका गद्दी बैठना लिखा है, लेकिन् बडवा भाटोकी किताबोसे और दूसरे कागजोसे साबित होता है, कि राव गोपालसिंहके बाद उसका बडा पोता बदनसिंह गद्दीपर बैठा, और उसका बेटा फतहसिंह बापके साम्हने ही मरगया, जिसका बेटा लछमनसिंह बदनसिंहके बाद गद्दीपर बैठा, बडे बेटेकी औलादका बैठना दुरुस्त भी है यह अल्बत्तह हुआ हो, तो तअज्जुब नही, कि बदनसिंहके बाद लछमनसिंह बालक हो, और सब कारोबारका मुख्तार संग्रामसिंह रहा हो, जो रावके नामसे मश्हूर हुआ, क्योंकि रामपुरा तो कब्जहसे निकल गया था, ये लोग एक इलाकहके इलाकेदार और महाराणा उदयपुर या कुंअर माधवसिंहके जागीरदार रहगये थे, इस हालतमे संग्रामसिंहको राव खयाल करलिया हो, तो तअज्जुब नही यह संग्रामसिंह अपनी रियासत वापस मिलनेकी कोशिशमे बादशाह मुहम्मदशाहके पास दिल्ली गया था, लेकिन् कुछ तद्बीर न करसका, सल्तनतकी कमज़ोर हालतमे उदयपुर और जयपुरके बर्खिलाफ हुक्म मिलना मुश्किल था तारीख मालवाका बयान है, कि इसी कोशिशमे संग्रामसिंह आगरेके पास सिकन्दरेमे मरगया लछमनसिंह भी रामपुरा लेनेकी उम्मेदमे इस दुन्यासे कूच करगया इसके बेटे भवानीसिंहने बहुत कोशिश की, लेकिन् रामपुरा महाराजा माधवसिंहने मल्हार राव हुल्करको देदिया, तब मरहटोसे यह लडता भिडता रहा इसके बाद मुहकमसिंह गद्दीपर बैठा, रामपुरा हुल्करके कब्जेमे था, रावकी जागीरमे आमदका किला और कुछ पर्गनह बाकी रहा, जिसकी सालाना आमद डेढ लाख रुपयेके करीब होगी

मुहकमसिंहका इन्तिकाल होनेपर गैर हकदार भैरवसिंह गद्दीपर बैठगया, जिसको जयपुरके महाराजा जगत्सिंहने विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] मे टीकेका दस्तूर भेजकर मुहकमसिंहका वारिस बनाया, लेकिन् उदयपुरके महाराणा भीमसिंहके हुक्मसे भाटखेडीके रावत् कर्णसिंह व अठाणाके रावत् तेजसिंहने भैरवसिंहको निकालकर मुहकमसिंहके हकीकी बेटे नाहरसिंहको गद्दीपर बिठाया फिर महाराणाने मुन्शी अमरलाल कायस्थके हाथ तलवार वगैरह दस्तूर भेजकर मुहकमसिंहकी जगह काइम करदिया, और उसने रुपये १०००० दस्तूर तलवार बन्दीके नज्र किये इस मुआमलेके कागजात उदयपुर बख्शीखानेके दफ्तरमे मौजूद है नाहरसिंहने कुछ कोशिश नही की, वर्नह सर्कार अंग्रेजीसे उसका जुदा अह्दनामह होजाता, जिस तरह कि मालवाके छोटे मोटे दूसरे रईसोके साथ मालकम साहिबने किया था इसपर भी नाहरसिंहने अगले जमानेके खयालातको दिलमे रखकर बागियोको पनाह दी, जिससे मेकडोनल्ड साहिब फ़ौज लेकर गये, और आमदका किला गिरवादिया, राव नाहरसिंहको नज्र कैद करके रामपुरामे लेआने बाद एक हवेलीमे रखदिया, और

करीब एक लाख आमदकी जागीर गुज़ारेके लिये हुल्करसे दिलवा दी. उस वक्से चन्द्रावतोंको हुल्करके जागीरदार बनकर रहना पड़ा. राव नाहरसिंह विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] में मरगया, जिसका बेटा तेजसिंह अब मौजूद है. इसने हुल्करसे बहुत कुछ कर्ज़ लेलिया है, इसलिये तकूजीराव हुल्करने उसकी घरू जायदादपर भी मुन्सरिम रखदिया है. इस ख़ानदानका और ज़ियादह हाल नहीं मिला.

महाराणा संग्रामसिंहके अ़हदमें ईडरके राजाओंकी तब्दीली और उदयपुरके ताबे होनेके सबब हम उस रियासतका इतिहास यहां लिखते हैं -

ईडर

फ़ॉर्बस साहिबकी रासमाला, बम्बई गैज़ेटियरकी जिल्द ५ पृष्ठ ३९८ तथा गुजरात राजस्थानके अनुसार लिखते हैं, क्योंकि इस राजधानीसे हमको कोई लेख नहीं मिला.

इस राजके उत्तर सिरोही और मेवाड़, पूर्वमें डूंगरपुर, दक्षिण और पश्चिममें अहमदाबाद और गायकवाड़का मुल्क है, कुल क्षेत्र फल २५०० मील मुरब्बा, (१) सन् १८७२ ई० में २१७३८२ और सन् १८८१ की मर्दुम शुमारीमें २५८००० बाशिन्दे थे, और सालियानह आमदनी ६००००० छः लाख रुपये हैं, जिसमेंसे २५०००० ढाई लाख महाराजाका ख़ालिसह, और ३५०००० साढ़े तीन लाख उनके जागीरदारोंके क़ब्ज़हमें है.

दक्षिण पश्चिममें एक चौरस और रेतीला हिस्सह है, उसके अ़लावह मुल्ककी ज़मीन ज़र्खेज़ (उपजाऊ) और जंगलसे ढके हुए पहाड़ों और नदियोंसे भरी हुई है, सर्दी (२) और बारिशमें यह मुल्क बहुत ख़ूबसूरत होजाता है.

---

(१) डॉक्टर हंटरके गैज़ेटियर सेकण्ड एडिशनकी जिल्द चौथीके पृष्ठ ३३६ में क्षेत्र फल ४९६६ मील मुरब्बा लिखा है, जो बम्बई गैज़ेटियरके लेखसे दूना फ़र्क़ बताता है, और डॉक्टर साहिबने सन् १८८१ ई० की सेन्सस (ख़ानह शुमारी) रिपोर्टके मुवाफ़िक़ लिखा है.

(२) गुजरात राजस्थानमें लिखा है, कि सर्द मौसममें इस देशकी आबो हवा ख़राब होजाती है.

नदिया

इस देशमे पांच नदिया है- साबर, हाथमती, मेश्वो, माझम, और वात्रक

साबरमती मेवाडके पहाडोसे निकलकर उत्तरकी तरफ बहने बाद दक्षिणको जाती है, और बीस मील तक रियासतकी पश्चिमी सीमा बनाती है

हाथमती पूर्वोत्तरी सीमासे आकर देशके बीचमे गुजरती हुई अहमदनगरके पास साबरमे मिलजाती है, और सगमके बाद दोनो नदियोका नाम साबरमती हो जाता है

मेश्वो पूर्वसे आती है, और सावलाजीके कस्बेके पास होकर दक्षिण पश्चिमकी तरफ बहकर कैडाके पास वात्रक मे मिलजाती है

माझम डूगरपुरके पास पहाडोसे निकलती है, और मेश्वोके तौर बहकर आमलियारा ठिकानेके पास वात्रकमे मिलजाती है

वात्रक दक्षिण पूर्वमे मेघराजके पास होकर निकलती है, और दक्षिण पश्चिममे बहकर माझममे मिलकर धौलकामे वोथा मकामपर साबरमतीसे मिलती है

पहाड

ईडरमे कई पहाड है, जिनमेसे कई एक बहुत लबे और ऊचे है, और सब दरख्तो और झाडियोसे ढके हुए है

ईडरका किला उस पहाडपर है, जिसकी श्रेणी अर्वली और विंध्यसे मिली हुई है

उत्तरी पहाडी हिस्सहमे गर्मी और सर्दी बहुत जियादह पडती है, और बाकी हिस्सोकी आबो हवा मध्य गुजरातके दूसरे हिस्सोके समान है, सबसे अधिक गर्मीके महीनोमे थर्मामिटर जियादहसे जियादह १०५ डिगरी तक, और कमसे कम ७५ तक रहता है, जुलाई और ऑगस्टमे ९५ से ७५ तक और डिसेम्बर और जैन्युअरीमे ५३ से ८९ तक रहता है

तिजारत

कुद्रती पैदावार ईडरमे बहुत कम है, पहिले ईडरके सौदागर अफीमका रोजगार जियादह करते थे, लेकिन् अब बिल्कुल कारखानह सर्कारने लेलिया है सावलाजी और खेडब्रह्मके मेलोसे कुछ तिजारत चलती है, तो भी अक्सर बबई, पूना, अहमदाबाद, प्रतापगढ और विशन्नगरसे तिजारत होती है, खास करके घी, कपडा, गल्लह, शहद, चमडा, गुड, तेल, तिल वगैरह चीजे, जिनसे तेल निकलता है, साबन, पत्थर और लकडी बाहरको भेजी जाती है पीतल, ताबेके बर्तन, रूई, विलायती और देशी कपडे, नमक, शक्कर और तम्बाकू वगैरह चीजे बाहरसे आती है,

अहमदनगरमे साबन बहुत बनाया जाता है

ईडर महाराजके खानदानके सर्दार

१- महाराज जगत्सिंह, हमीरसिंहोत, सुवरका
२- महाराज सर्दारसिंह, इन्द्रसिंहोत, दावडाका
३- महाराज भीमसिंह, इन्द्रसिंहोत, नुवाका

पटायत सर्दार

१- चापावत हमीरसिंह, रायसिंहोत, चादरणीका
२- चहुवान इन्द्रभाण, सूरजमलोत, मूडेटीका
३- जोधा मुहब्बतसिंह, हमीरसिंहोत, वेरणाका
४- चापावत दीपसिंह, दौलतसिंहोत, टींटोईका.
५- कूपावत अर्जुनसिंह, नाहरसिंहोत, उडणीका
६- चापावत भारथसिंह, गोपालसिंहोत, मऊका
७- कूपावत अजीतसिंह, दौलतसिंहोत, कूकडियाका
८- जैतावत दलपतसिंह, खुमाणसिंहोत, गाठीयालका

भोमिया

१- पाल, २- खेरोज, ३- घोडवाडा, ४- मोरी (मेघरज), ५- पोसीना, ६- वेराबर, ७- पाल, ८- बूडेली, ९- ताका, १०- टुका, ११- कुशाका, १२- सोमेयरा, १३- जालिया, १४- देघामड़ा, १५- वडीयोल, १६- वसायत, १७- धमबोलिया, १८- नाडीसाणा, १९- सरवणा, २०- गामभोई, २१- मोर डूगर, २२- मोहरी (देवाणी), २३- करचा देरोल

इतिहास

ईडर- यह पुरानी जगह है, जिसके बारेमे कई कहानी किस्से प्रसिद्ध हैं, कहते हैं, कि ईडरके पहाडपर वेणीवच्छराज नाम राजाने एक किला बनवाया था; फिर यह देश जंगली भील लोगोंका निवास स्थान रहा, जब वल्लभीपुरका राज पश्चिम निवासी गुर्जरोंने तबाह किया, उस वक्त वहाके राजा शिलादित्यकी राणी कमलावती अम्बा भवानीके दर्शनोको आई थी, वह अपने गर्भके बालक केशवादित्यको शस्त्रक्षतसे निकालकर वहाके पुजारी हरका रावलकी स्त्री लक्ष्मणावतीके सुपुर्द करने बाद आप आगमे जलगई. केशवादित्यके बड़े होनेपर ईडरके भीलोने उसे अपना राजा

बनाया इसके बाद भाडेर, नागदा, चित्तौड़ व उदयपुरमे उस वशके राजा नम्बरवार राज करते रहे, जिनका हाल पहिले भाग व इस भागमे मुफ़स्सल लिखागया है फिर ईडरपर परिहार राजपूतोका राज रहा

ईडरपर जबसे राठौडोका राज हुआ, उसका बयान इस तरहपर है – कन्नौजके राजा जयचन्द्रकी सन्तानमे सीहा (सिवा) के चार बेटे थे –

१– आस्थान, २– अजमाल, ३– सोनग, ४– भीम, इनके बुजुर्गोका हाल हम जोधपुरकी तवारीखमे लिख आये है सोनग और अजमाल दोनो भाई गुजरात देश अनहिलवाडा पट्टनके सोलखी राजा दूसरे भीमदेवके पास आये, और भीमदेवने सोनगको कडी पर्गनेका सामेत्रा गाव जागीरमे दिया अजमालने ओखामडलमे जाकर वहाके चावडा राजाओको मारने बाद राज छीनलिया, उनके दो पुत्र बाघा और बाढेल थे, उन दोनोके नामसे "बाजी" और "बाढेल" गोत्रके राजपूत अबतक उस ज़िलेमे मौजूद है

ईडरका राज सोनगको इस तरह मिला –

परिहार वशका आखिरी राजा अमरसिह, जो पृथ्वीराज चहुवानके साथ शिहाबुद्दीन गौरीकी लडाईमे लडकर मारागया (१), ईडरका राज एक अपने नौकर कोली हाथीसोडकी सुपुर्दगीमे करगया था, वह अमरसिहके बाद ईडरका राजा बन बैठा उसके बाद उसका बेटा सावलिया सोड ईडरका राजा हुआ, उसने अपने प्रधान नागर ब्राह्मणकी कन्यासे जबर्दस्ती शादी करना चाहा, नागरने उसको दम देकर राठौड राव सोनगसे पुकार की, सोनग छिपकर अपने तीन सौ राजपूतो समेत नागरकी हवेलीमे आ छिपा, नागरने सामलिया सोडको अपनी बेटीकी शादी करनेको बुलाया; वह अपने साथियो समेत बडी धूम धामसे आया, नागरने उन लोगोकी शराबसे ख़ातिरदारी की, जब वे बेहोश होगये, तो राठौडोने तलवारोसे सबका काम तमाम किया सामलिया सोड भागता हुआ ईडरके किलेके दर्वाजेके पास मारागया; उसने मरते वक्त अपने खूनसे सोनगके सिरपर राज तिलक किया

सोनग विक्रमी १३१३ [हि० ६५४ = ई० १२५६] मे रावका ख़िताब पाकर ईडरकी गद्दीपर बैठा, उसके पुत्र अहमल, धवलमल, लूणकरण, रवनहत, और

---

(१) बबई गजेटियर वगैरह किताबोमे लिखा है, कि उन दिनो ईडर चित्तौडके मातहत था, और परिहार अमरसिह चित्तौडके रावल समरसिहके साथ शिहाबुद्दीन गौरीकी लडाईमे मारागया, लेकिन् इस बयानके सहीह होनेमें शक है– (देखो बंगाल एशियाटिक सोसाइटीका जर्नल नं० १ भाग १ सन् १८८६)

रणमल्ल एकके बाद एक गद्दीपर बैठे रणमल्लके वक्तमे गुजरातके बादशाह अव्वल मुजफ्फ़रशाहने विक्रमी १४५० [हि० ७९५ = ई० १३९३] और विक्रमी १४५५ [हि० ८०० = ई० १३९८] मे ईडरपर हमलह किया, और विक्रमी १४५८ [हि० ८०३ = ई० १४०१] मे तीसरा हमलह हुआ, तब राव रणमल्ल ईडर छोडकर विशनगर चलागया

रणमल्लके बाद उसका बेटा पूजा ईडरकी गद्दीपर बैठा, वह गुजराती बादशाह अहमदशाहसे लडा था, और उससे शिकस्त खाने बाद एक खड्डेमे घोडेसे गिरकर मरगया उसके पीछे नारायणदास गद्दीपर बैठा, जिसने अहमदशाहको खिराज देना कुबूल किया, लेकिन् विक्रमी १४८५ [हि० ८३१ = ई० १४२८] मे वह बादशाहसे बर्खिलाफ होगया था उसके बाद भाण गद्दीपर बैठा, जिसके ऊपर विक्रमी १५०२ [हि० ८४९ = ई० १४४५] मे महमूदशाहने चढाई की मिराति सिकन्दरी के पृष्ठ ४९ मे लिखा है, कि राव पहाडोमे भागगया, और अपने वकील भेजकर सुलह चाही, और अपनी बेटीका डोला भी महमूदशाहके लिये भेजदिया राव भाणके दो बेटे थे, बडा सूरजमल्ल और छोटा भीमसिह, जिनमेसे सूरजमल्ल गद्दीपर बैठा, और उसके बाद उसका बेटा रायमल्ल ईडरका राव हुआ भीमसिहने अपने भतीजेसे राज छीन लिया, रायमल्लका विवाह चित्तौडके महाराणा सग्रामसिह अव्वल (सागा) की बेटीके साथ हुआ था, जिससे महाराणाने उसकी मदद की, और गुजरातियोसे महाराणाकी लडाई हुई, जिसका हाल तफ्सीलसे उक्त महाराणाके बयानमे लिखा है

भीमसिह गुजरातके मुल्कको लूटने लगा, तब मुजफ्फरशाह (२) ने उसपर चढाई की, भीमसिह पहाडोमे भागगया, फिर सुलहके साथ वापस आया उसके बाद रायमल्ल फिर गद्दीपर बैठा, लेकिन् इसको भी मुजफ्फरशाहने निकाल दिया, और उसने बहुतसी लडाइया की उसके बाद राव भारमल्ल ईडरका मालिक बना, इसपर भी बहादुरशाह गुजरातीने दो दफा हमलह किया, आखिरमे यह अक्बरके तावे हुआ इसके बाद इसका बेटा पूजा (२) ईडरका राव हुआ, और उसके बाद उसका बेटा नारायणदास गद्दीपर बैठा, इसने विक्रमी १६३१ [हि० ९८१ = ई० १५७४] मे अक्बरकी इताअत कुबूल की थी, लेकिन् यह महाराणा १ प्रतापसिहका ससुर था, जब अक्बर बादशाह मेवाडपर चढ़ आया था, तब विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] मे उसने ईडरकी तरफ फौज भेजी, और राव नारायणदासने मुक़ाबलह किया, जिसका जिक्र महाराणा प्रतापसिहके हालमे लिखागया है- (देखो पृष्ठ १५६), नारायणदाससे ईडर छूटकर बादशाही कब्जेमे आया, लेकिन् कुछ अर्से बाद राव मए अपने कुवर वीरमदेवके बादशाही दर्बारमे पहुचा, तो बादशाहने उसका राज उसे वापस देदिया

नारायणदासके बाद बीरमदेव गद्दीपर बैठा, यह बडा बहादुर और सख्त बे रहम था, उसने अपने सौतेले भाई रायसिंहको मारडाला, और दूसरे भी छोटे बडे राजाओंके साथ लडाइयां करता रहा, वह काशी यात्राको गया, जब पीछा लौटकर आबेर आया, तो वहां उसके सौतेले भाई रायसिंहकी बहिन जो आबेरके राजाको ब्याही थी, उस महाराणीने अपने भाईका एवज लेनेके लिये बीरमदेवको मरवाडाला इसी बीरमदेवके नामसे बनी हुई एक कहानी राजपूतानहमें मश्हूर है, जिसको पन्ना बीरमदेवकी बात कहते हैं, लेकिन् वह कहानी बिल्कुल झूठी दिल्लगीके लिये बेबुन्याद बनाकर मश्हूर करदी गई है उसके बाद उसका भाई कल्याणमल्ल ईडरका मालिक कहलाया लिखा है, कि उदयपुरके महाराणा और सिरोहीके रावसे कल्याणमल्ल खूब लडता रहा, और ओगना, पानडवा वगैरह पहाडी हिस्सह अपने कब्जहमें करलिया जब उसका इन्तिकाल हुआ, तब उसका बेटा राव जगन्नाथ मुख्तार बना, परन्तु विक्रमी १७१३ [हि० १०६६ = ई० १६५६] मे बैताल भाटकी नाइत्तिफ़ाक़ीसे दिल्लीके बादशाह शाहजहांके हुक्मके मुताबिक गुजरातके सूबहदार शाहजादह मुरादबख़्शने चढाई करके इसी वर्ष मे ईडर लेलिया, राव भागकर पोल गांवकी तरफ़ पहाडोंमे चलागया, और एक मुसल्मान अफ्सर सय्यद हातूको शाहज़ादहने ईडरमें छोडा जगन्नाथका देहान्त पोलमें हुआ उसका बेटा पूजा तीसरा गद्दीपर बैठा, वह दिल्ली गया, लेकिन् आबेरके राजाकी नाइत्तिफ़ाक़ीके सबब ईडरका राज मिलनेसे नाउम्मेद होकर उदयपुर चलाआया, और महाराणा (१) की मददसे ईडरपर कब्ज़ह करलिया, परन्तु छ महीनेके बाद पूजाका देहान्त होगया, और उसका भाई अर्जुनदास गद्दीपर बैठा; थोडे अर्सेमें वह भी रहबरोंकी लडाईमें मारागया उस समय जगन्नाथके भाई गोपीनाथने अहमदाबादका इलाक़ह लूटा, और मुसल्मानोंको ईडरसे निकाल दिया, फिर गरीबदास रहबरको डर हुआ, कि गोपीनाथ अर्जुनदासका बदला लेवेगा, तब वह अहमदाबाद गया, और मुसल्मानोंकी फ़ौज चढालाया, जिसके ज़रीएसे ईडर लेलिया. गोपीनाथ पहाडोंमें भागगया, और अफ़ीम न मिलनेके कारण जंगलमें मरगया

फिर उसका बेटा करणसिंह राव कहलाया, जिसने विक्रमी १७३६ [हि० १०९० = ई० १६७९] मे मुसल्मानोंको निकालकर ईडर लेलिया, परन्तु मुहम्मद्अमीनखां और बहलोलखांने उससे ईडर छीन लिया, और करणसिंह भागकर सरवाण गांवकी तरफ़ गया,

(१) इस वक्त उदयपुरके महाराणा अव्वल राजसिंह थे जो शाहजहांके बेटोंकी लडाइयोंके वक्त अपना मतलब निकाल रहे थे.

जहापर उसका देहान्त होगया करणसिहके दो बेटे थे, चन्द्रसिह और माधवसिह; माधवसिहने वेरावर मकाम लिया, जहापर उसकी औलाद काबिज है, ईडरमे बहुत अर्से तक मुसल्मानोका कब्जह रहा, जहाका हाकिम मुहम्मद बहलोलखा रहा वक्रमी १६९६ [हि० १०४९ = ई० १६३९] से चन्द्रसिह ईडरपर हमलह करने लगा, जिसपर उसने विक्रमी १७१८ [हि० १०७१ = ई १६६१] मे बसाई वालोकी मददसे कब्जह करलिया, परन्तु सिपाही राजपूतोकी बहुत तन्स्वाह चढगई थी, वह न देसका, इसलिये ईडर बलासणाके ठाकुर सर्दारसिहको सौपकर पौलमे चलाआया, और वहाके मालिक परिहार राजपूतको मारकर कब्जह करलिया सर्दारसिह चन्द्रसिहके नामसे हुकूमत करता रहा, परन्तु वहाके निवासियोसे फसाद होनेके सबब कुछ अर्से बाद वह भी बलासणाको भाग गया, और बच्छा पडितने ईडरपर कब्जह करलिया

विक्रमी १७८१ आषाढ शुक्ल १२ [हि० ११३६ ता० ११ शव्वाल = ई० १७२४ ता० ४ जुलाई] को महाराजा अजीतसिहको उनके दूसरे बेटे बख्तसिहने मारडाला, जिसका जिक्र इस तरहपर है – कि सय्यद अब्दुल्लाहखा और महाराजा अजीतसिहने शामिल होकर दिल्लीके बादशाह फर्रुखसियरको मारडाला, जब मुहम्मदशाहके वक्तमे अब्दुल्लाहखा मारागया, आबेरके महाराजा सवाई जयसिहने महाराजाके बडे बेटे अभयसिहको समझाकर बख्तसिहके नाम लिखवा भेजा, तो उसने अपने बापको मारकर छोटे भाइयोको भी मारना चाहा, उस वक्त अजीतसिहके छोटे बेटे अणन्दसिह और रायसिहको उनके रिश्तहदार राजपूत वहासे ले निकले, और कुछ अर्से तक मारवाडमे फसाद करते रहे, ईडरका पर्गनह मुहम्मदशाहने महाराजा अभयसिहको जागीरमे लिखदिया था; यह सुनकर अणन्दसिह व रायसिहने विक्रमी १७८३ [हि० ११३८ = ई० १७२६] (१) मे उसपर कब्जह करलिया

अब ईडर सोनगकी औलादसे निकलकर उसके बडे भाई आस्थानकी औलादके तहतमे आया यह हाल सुनकर महाराणा सग्रामसिह (२) ने इस राज्यको मेवाड़मे मिलालेना

---

(१) फॉर्ब्स साहिबकी रासमाला हिस्ट्री और मारवाडकी तवारीखमे अणन्दसिहका ईडर लेना विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = ई० १७२८] मे और ऊदावत लालसिहका ईडरमे आना और विक्रमी १७८७ [हि० ११४३ = ई० १७३०] मे महाराजाका कब्जह होना लिखा है ये दोनो तहरीरें गलत हैं, क्योंकि विक्रमी १७८४ आषाढ [हि० ११३९ = ई० १७२७] मे आबेरके महाराजा जयसिह और जोधपुरके महाराजा अभयसिहने महाराणा संग्रामसिहके नाम इस मज्मूनके खरीते लिखे हैं, कि अणन्दसिहको निकालकर आप ईडर ले लीजिये, जिनकी नक्लें ऊपर दर्ज हो चुकी है– (देखो पृष्ठ ९६७)

चाहा, और महाराजा सवाई जयसिंहकी मारिफत महाराजा अभयसिंहकी भी इजाजत लेली, ताकि आपसकी मुहब्बतमे फर्क न आवे इस विषयके कागज और महाराणाकी फ़ौजकशीका हाल ऊपर लिखा गया है कुछ अर्से तक अणन्दसिंह व रायसिंह महाराणाके मातहत रहे

विक्रमी १७९१ [हि० ११४६ = ई० १७३४] मे मल्हार राव हुल्कर और राणोजी सेंधियाकी मदद लेकर अणन्दसिंहने जवामर्दखा सर्दारको निकाला विक्रमी १७९५ [हि० ११५१ = ई० १७३८] मे गुजरातका सूबहदार मोमिनखा ईडरपर चढा, और रणासण व मोहनपुरके सर्दारोपर कर लगाया, लेकिन् रायसिंहने मोमिनखांसे सुलह की, और सूबहदारने भी उसकी बात कुबूल करली राघवजी मरहटाके बर्खिलाफ रायसिंहने मोमिनखासे दोस्ती रक्खी, जिसके एवज उसने मोड़ासा, कांकरेज, अहमदनगर, प्रातिज, और हरसोलके जिले देदिये विक्रमी १७९९ [हि० ११५५ = ई० १७४२] मे रहबर राजपूतोने हमलह करके महाराजा अणन्दसिंहको मारडाला, और उसके साथ चहुवान् देवीसिंह और कूपावत अमरसिंह मारेगये, तब रायसिंह मोमिनखासे रुख्सत लेकर आया, और रहबरोको ईडरसे निकाल दिया उसने अणन्दसिंहके बेटे शिवसिंहको गद्दीपर बिठाया, जो उस वक्त छ वर्षका था, और रायसिंह मुसाहिबीका काम करने लगा, जो विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] मे मरगया, परन्तु बबई गज़ेटियरमे इसके मरनेके सन्‌को सन्देहके साथ लिखा है.

विक्रमी १८१४ [हि० ११७० = ई० १७५७] मे मरहटोने अहमदाबाद लेलिया, जिसके साथ राजा शिवसिंहसे भी प्रातिज, बीजापुर, मोडासा, बायद और हरसोलका आधा हिस्सह लेलिया, जिससे मालूम होता है, कि शिवसिंह मुसल्मानो की हिमायतमे था फिर गायकवाड़ आपा साहिब विक्रमी १८२३ [हि० ११७९ = ई० १७६६] मे चढ आया, और शिवसिंहसे ईडरका आधा राज मागा, जो रायसिंहके हिस्सेमे था, वह नि सन्तान मरगया था, शिवसिंहको लाचार आधी आमदनी लिखदेनी पडी विक्रमी १८४८ [हि० १२०५ = ई० १७९१] मे शिवसिंह मरगया, उसके पाच बेटे थे, १- भवानीसिंह, २- सग्रामसिंह, ३- जालिमसिंह, ४- अमीरसिंह, और ५- इन्द्रसिंह. भवानीसिंह गद्दीपर बैठा, लेकिन् बारह दिन राज करके मरगया उसका बेटा गभीरसिंह तेरह बर्षका गद्दीपर बैठा उसके काकाओने गभीरसिंहको मारना चाहा, जिसपर वे ईडरसे निकालेगये सग्रामसिंह अहमदनगर और जालिमसिंह व अमीरसिंह बायड़ व मोडासा चले गये विक्रमी १८५२ [हि० १२०९ = ई० १७९५] मे इन तीनो भाइयोने फिर

ईडरपर हमलह किया, जिससे गभीरसिंहने उनको फिर कुछ इलाकह देदिया

विक्रमी १८५८ [हि० १२१६ = ई० १८०१] मे पालनपुरके पठानोने घोडवाडके कोलियोपर हमलह करके कब्जह करलिया, लेकिन् गभीरसिंहने मरहटोकी मदद् लेकर उनको निकाल दिया, और गायकवाड़को २४००० रु० घास दानेके नामसे सालियाना देना ठहराया, कोलियोंसे तीसरा हिस्सह गभीरसिंह लेने लगा, इसी तरह घोडवाडके रहबरोसे भी पांच हिस्सोमेसे दो ईडरमे लिये जाते थे, वे हिस्से गभीरसिंहने अपने चचा इन्द्रसिंहको देदिये विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] मे गम्भीरसिंहने बीराहर (जो पुराने ईडरके राज्य वंशियोके खानदानमे था) और तबा कोलियोका और दाताके पवार सर्दारके नवर गांव और वरनापर हमलह करके खिचडीके नामसे खिराज ठहरा लिया इसी तरह पौलके राव रत्नसिंहको भी खिचडी देना पड़ा दूसरे साल कोलियोके गाव कर्चा, समेरा, देह गामडा, वगर, बादी ओल और राजपूतोके गाव खुश्की और रहबरोके ठिकाने सिरदोई, मोहनपुर, रणासण और रूपालसे भी खिराज ठहरा लिया गभीरसिंह विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] मे मरगया

उनका बेटा जवानसिंह गद्दीपर बैठा, और उसके बचपनमे रियासतका इख्तियार सर्कार अंग्रेजीके हवाले हुआ जब अहमदनगरके महाराज तख्तसिंह जोधपुर दत्तक चलेगये, तो वह इलाकह भी ईडरमे शामिल होगया, जिसको महाराजा तख्तसिंह जुदा रखना चाहते थे, लेकिन् गवर्मेंटने कुबूल नहीं किया

जवानसिंह बड़े आकिल और सर्कारके खैरख्वाह थे, इसलिये सर्कारने उनको बबईकी लेजिस्लेटिव कौन्सिलका मेम्बर बनाया, और के० सी० एस० आई० का खिताब दिया विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] मे ३८ वर्षकी उम्र पाकर उनका इन्तिकाल होनेपर उनके पुत्र केसरीसिंह वर्तमान महाराजा गद्दीपर बैठे उदयपुरके महाराणा भीमसिंहने विक्रमी १८४० - १८५० [हि० ११९७- १२०८= ई० १७८३- १७९३] मे ईडरके महाराजाकी तीन बेटियोके साथ शादी की थी, जिसका हाल उक्त महाराणाके हालमें लिखा जायेगा, और वर्तमान महाराजाकी दो बहिनोमेसे एकके साथ विक्रमी १९३२ आषाढ शुक्ल ८ [हि० १२९२ ता० ७ जमादियुस्सानी = ई० १८७५ ता० १२ जुलाई] को और दूसरीके साथ विक्रमी १९३४ [हि० १२९४ = ई० १८७७] को वैकुंठवासी महाराणा सज्जनसिंहकी शादी हुई, जिसका वर्णन उक्त महाराणाके हालमे किया जायेगा

ईडरके महाराजाकी १५ तोपोकी सलामी होती है, और उनको दत्तक लेनेकी

सनद हासिल है विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] मे एक अहद-नामह सर्कार अंग्रेज़ीके साथ हुआ, जो एचिसन्की किताबमे दर्ज है

डूगरपुर

जुग्राफ़ियह

डूगरपुरकी उत्तरी सीमा मेवाड, पूर्वी मेवाड और माही नदी है, जो इसको बासवाडेसे जुदा करती है, दक्षिण तरफ माही, और पश्चिम तरफ रेवा व माही काठा है यह रियासत, जिसका रकबह ९५२ मील मुरब्बा है, २३ २५ - और २४ ३ उत्तर अक्षाश और ७३ ४० व ७४ १८ पूर्व देशान्तरके बीचमे फैली हुई है, लबाई इसकी पूर्वसे पश्चिमको ४० मील और चौडाई उत्तरसे दक्षिणको ३५ मील है

इस रियासतका अक्सर इलाकह पहाडियोसे ढका हुआ है, जिसमे सालर वगैरह बडे और कई किस्मके छोटे २ दरख़्त कस्रतसे है गर्मीमे जगल सूख जाते है, लेकिन् बारिशके दिनोमे कई किस्मकी हरियाली होजानेसे अक्सर पहाडियोका सब्जा खुशनुमा मालूम होता है मेवाड और प्रतापगढकी तरफकी जमीन वीरान और ऊची नीची है, लेकिन् रेवाकांठाकी तरफ वाली उससे उम्दह है यह देश कई मील तक गुजरातके समान मालूम होता है यहां दो या तीन बडी बडी झाडियां है, जिनमे आबनूस और दूसरी किस्मके बहुतसे काठ पैदा होते है यहापर मवेशीकी चराईके लिये जमीन बहुत कम है

बालरा खेतीके टुकडोके सिवाय पहाडियोके किनारेपर, और उसके बीच, या घाटियोकी नीची २ तर जमीनमें होती है, और कुए व तालाबोसे सीची जासक्ती है. अगर्चि जमीन ऊची नीची बहुत है, लेकिन् कोई बडी पहाडी नही है राजधानीके पास एक पहाडी ७०० फुट ऊची है, जिसके दामनका घेरा पाच मील है, उसके नीचे शहर, और एक उम्दह झील है; और चोटीपर महारावलके महल है सागवाड़ेमे एक दूसरी पहाड़ी है, जो शहरके पासवालीसे कुछ बड़ी है

नदी और झील

यहां माही और सोम दो ही नदिया हैं, जो बनेश्वरके मन्दिरके पास मिलती हे; वहांपर हर साल एक मेला होता है; माही नदी इस राजको बासवाडेसे अलग करती है, और सोम नदी सलूबरसे, जो मेवाड़मे है. ये दोनो नदिया बराबर साल भर बहती रहती है; अगर्चि कई जगहमे सोमका जल धरतीके नीचे बहता है, लेकिन् वह एक-

बारगी छिपजाती, और फिर दिखाई देती है, माही नदीकी तलहटी औसत तीन या चार सौ फुट चौडी और जियादह तर पथरीली है इसके तीरपरके कई हिस्सोमे, जो वेणूके दरख्तसे ढके हुए है, गर्मीके दिनोमे जगली जानवर रहते है कुद्रती भील डूगरपुरमे कोई नही है, लेकिन् ५ या ६ बनाई हुई भीले है

आबोहवा और बारिश

डूगरपुरकी आबोहवा न बहुत सर्द है, न गर्म है, बारिशका औसत करीब २४ इचके है आबोहवा मुअ्तदिल होनेसे यह एक तन्दुरुस्तीका देश समझा जासक्ता है, क्योकि यहापर सिवाय बुखार और बालाके हैजह या दूसरी बीमारी बहुत कम होती है

पैदावार

इस देशमे गेहू, जव, चना, बाजरा, मक्की, चावल, रूई, अफीम, तिल, सरसो, अद्रक, हल्दी और गन्ना वगैरह पैदा होता है, पियाज, रताल्, नीबू, मीठा आलू, बैगन, मूली, तर्बूज, आम और केलाके सिवा कोई फल या तर्कारी नही होती; महुवाके पेड बहुत है, जिनसे शराब बनती है, खेती कुओसे जियादह और नदी तालाबोसे कम सीची जाती है

जमीनकी मालगुजारी और पट्टा

जमीनकी मालगुजारी वुसूल करनेका किसी गाव या शहरमे एक काइदह नहीं है, न तो जमीन मापी जाती है, और न फी बीघे महसूल मुकर्रर है बसन्त और जाडेकी फस्लमे राजसे एक अफ्सर भेजा जाता है, जो फस्ल देखनेके बाद राजका महसूल ठहरालेता है वर्षमे एक बार पटैलको सर्कारी अफ्सर बुलाकर हर एक गावकी आमदनी और राजकी शरह मुकर्रर कर लेते है पूजा रावल, जो १९० वर्ष (१)

---

(१) पूजा रावलका बनाया हुआ गोवर्धननाथका मन्दिर डूगरपुरमे गैबसागर तालाबकी पालपर है, जिसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] मे हुई थी, यह बात वहाकी प्रशस्तिमे लिखी है इसके बाद महाराणा जगत्सिहके वक्मे, जब डूगरपुरपर विक्रमी १६८५ [हि० १०३७ = ई० १६२८] मे फौज गई थी, तब वहा पूजा रावल था, जिसको २६० वर्षका अर्सह हुआ, यह बात राज समुद्रकी प्रशस्तिमे लिखी है राजपूतानह गजेटियरमे यह बात गलतीसे लिखीगई है, क्योकि राज समुद्रकी प्रशस्तिके आठवे सर्गके आठवे श्लोकमे लिखा है, कि गिरधर रावलको महाराणा राजसिंह १ ने अपने ताबे बनाया, तो इससे साफ़ ज़ाहिर है, कि उस समय पूजाका देहान्त होचुका था, जिसको शाहजहांने डेढ हज़ारी मन्सब दिया था

पहिले जीता था, उसके जमानेमे ज़मीन मापी जाती थी, भाव भी ठहरालिया जाता था, और आमदनीके सीगे ठीक करलिये जाते थे

पूंजा रावलने इक्कीस सीगे मालगुज़ारीके मुकर्रर किये थे जमीनकी मालगुजारी याने बराड, सर्कारी कामदारोकी तन्ख्वाह देनेके लिये, सर्दारके खानदानके लिये, परदेशी सिपाहियोके लिये और दूसरी फुटकर बातोके लिये बहुतसे महसूल मुकर्रर जगह लियेजाते थे उस वक्तके दस्तूरोमेसे यह बडी तब्दीली हुई है, कि अब किसानको रुपयेके सिवाय कुछ अन्न भी देना पड़ता है, गावोमेसे कही पैदावारकी चौथाई और कही तिहाई लीजाती है, और कही कही पैदावारके हिसाबसे कम जियादह भी लिया जाता है, जहा पैदावार कम है, वहा अन्नके सिवाय कुछ नही लिया जाता

डूगरपुरकी कुल ज़मीनकी आमदनी एक लाख तिरासी हजार तीन सौ पचास रुपया है, जिसमेसे ७९६८८ रु० राजको, ५१९६७ रु० ठाकुरोको मिलता है, और बाकी धर्मार्थ दिया जाता है

आबादी

हिन्दुओकी तादाद १७५००० है, और कुल रऋय्यतमेसे तीन चौथाई हिस्सह हिन्दू, आठवा हिस्सह जैनी, और इतने ही मुसल्मान है भीलोकी तादाद करीब दस हजारके है; और विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] की मर्दुमशुमारीकी रिपोर्टके मुवाफिक एक लाख तिरेपन हजार तीन सौ इक्यासी आदमी है

इस देशमे खास व्यापारी हिन्दू महाजन और बोहरे है यहा ब्राह्मणोकी संख्या आठ और दस हजारके बीचमे है, राजपूत और महाजन तादादमे पाच हजारके करीब गिनेगये है, और कुछ मुसल्मान भी आबाद है भील इस देशके कदीमी रहने वाले है, बड़े शहरोमे साधारण रोजगारी और कारीगर पाये जाते है हलवाई, सुनार, कुभार, लुहार, कूजडे, बढ़ई, सगतराश, और मोची वगैरह शहरमे है; लेकिन् गावोमे जियादहतर खेती पेशा लोग है कपडा और गल्लह अदल बदलकी मुख्य चीज है काले पत्थरके खिलौने, आबखोरे और मूर्तियां डूगरपुरमे बनती हैं. सागवानकी सादी व रंगीन तिपाई और चारपाई वगैरह चीजे अक्सर बढई लोग बनाते है

डूगरपुरमे कोई पाठशाला नही है, राजधानीमे पुलिसका बन्दोबस्त एक कोतवाल और २५ कांस्टेबल् करते है, और जिलोमे छ जगह पुलिस है; जिनमे एक थानहदार, दो नाइब और कुछ कास्टेबल् रहते है अव्वल दरजेके थानेदारको

एक महीने जेलखानह और २५ रुपया जुर्मानह, दूसरे दरजे वालेको १० रुपया जुर्मानह और आठ दिन जेलखानह भेजनेका इख्तियार है, छोटे छोटे मुक़द्दमोंकी मिस्ल नहीं रक्खीजाती, लेकिन् बड़े मुक़द्दमोंके कागजात तह्क़ीक़ातके बाद कचहरीमें भेजदिये जाते हैं

सड़कें, शहर और मश्हूर जगह

इस राज्यमें कोई बनाई हुई पक्की सड़क नहीं है, बांसवाड़ेसे डूंगरपुरमें होकर गाड़ीकी कच्ची सड़क खेरवाड़ेको गई है दूसरी सागवाड़ेमें होकर बांसवाड़ेसे खेरवाड़ेको पहुंची है ये दोनों सड़कें पश्चिमोत्तरमें हैं तीसरी दक्षिण पश्चिममें सलूंबरसे डूंगरपुरमें होकर बीछीवाड़ेको गई है, और यह उदयपुरसे अहमदाबादको जानेवाली सड़कसे राजकी दक्षिण पश्चिमी सीमापर मिलती है खास मकाम राजधानी डूंगरपुर, गलियाकोट और सागवाड़ा, नोसराम, गीजी, बीछीवाड़ा, आसपुर और बनकोड़ा हैं, जिनमेंसे डूंगरपुर, गलियाकोट और सागवाड़ा तीनों तिजारतके खास मकाम हैं, वर्ष भरमें दो मेले, एक तो बनेश्वर और दूसरा गलिया-कोटमें फेब्रुअरी और मार्च महीनेके अन्दर होते हैं, पिछले मेलेमें मुसल्मान बोहरोंके सिवाय और लोग बहुत कम जाते हैं, और यह बोहरोंका ही जारी किया हुआ है, पहिले मेलेमें सब तरहके लोग जमा होते हैं, जिनका शुमार पन्द्रह हजारसे बीस हजार तक है, यह मेला पन्द्रह दिन तक रहता है, और इसमें आस पासके सौदागर भी आते हैं विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में इस मेलेपर १४३००० का माल आया था, जिसमेंसे ११७५०० का सामान बिक गया

बनेश्वरमें एक देवीका प्रसिद्ध मन्दिर है, जहां सब जातके हिन्दू पूजाके लिये आते हैं यह जगह सोम और माही नदीके सङ्गमपर है, और वहांका जल बहुत पवित्र समझागया है गलियाकोटमें एक मुसल्मानका रौजह है, जो फ़ख़्रुद्दीनके नामसे मश्हूर है बनकोड़ाके लोग एक विष्णूका मन्दिर विष्णू अवतारके लिये रखते हैं, जिसका नाम मानजी कहलाता है, और यह बनेश्वरके पास ही है. यहां गुजराती और हिन्दुस्तानी मिली हुई भाषा बोली जाती है, जो वागड़ी कहलाती है

तवारीख

डूंगरपुरका तवारीखी हाल बहुत कम मिलता है, क्योंकि न तो वहांके आदमी

इस इल्मसे वाकिफ़ है, और न वहांके राजाओंको इस बातका शौक हुआ; मैंने विद्यमान महारावलसे दो दफ़ा मुलाकात की, पहिले धूलेवमें, जब वह ऋषभदेवके दर्शन करनेको आये थे, और मैं भी इसी कामके लिये वहां गया था; दूसरी बार भीलोंके बलवेमें हुई, जब कि वे खेरवाड़ेकी छावनीमें आये थे, और मैं वहां गया था, मैंने तवारीखके फ़ाइदे दिखलाकर बहुत कुछ कहा, और महारावलने भी तहकीकात करवाकर भेजनेका इक्रार किया, उन्होंने एक कुर्सीनामह व अपना हाल मुख्तसर मेरे पास भेजा, जिसमें चन्द प्रशस्तियां अल्बत्तह मुफ़ीद हैं, उन प्रशस्तियोंसे, नैनसी महताकी पुस्तकसे और राजपूतानह गज़ेटियर व बड़वा भाटोंकी पोथियोंसे चुनकर, जो कुछ हाल मिला, वह यहां लिखता हूं –

मेवाड़ और मारवाड़की ख्यातोंमें इस तरह लिखा है, कि रावल करण १ के दो बेटे एक माहप, दूसरा राहप था, जब मंडोवरका राणा मोकल परिहार करणसिंहको तक्लीफ़ देने लगा, तो उन्होंने अपने बड़े बेटे माहपको उसके पीछे भेजा, माहप कुम्भलमेरके पहाड़ोंमें शिकार खेलने लगा, और राणा मोकलका कुछ प्रबंध न करसका; थोड़े अर्से बाद माहप अपने बापके पास चला आया यह बात राहपको नागुवार गुज़री, उसने राणा मोकलको बरातके बहानेसे मंडोवरमें घुसकर गिरिफ्तार करलिया, और अपने बाप करणके पास लेआया. रावल करणने मोकलसे राणाका खिताब छीनकर अपने छोटे बेटे राहपको दिया (१) यह बात माहपको बुरी मालूम हुई, और नाराज़ होकर अहाड़ गांवमें चला आया, जहां अब उदयपुरसे पूर्व दो मीलके फ़ासिलेपर महाराणाओंका दग्धस्थान है इस बातसे महारावल करणने नाराज़ होकर अपने छोटे बेटे राणा राहपको वलीअह्द किया, महारावलका इन्तिकाल होनेपर राहप राणाके खिताबसे मेवाड़का मालिक कहलाया (२)

नैनसी महताको डूंगरपुरके सांइया झूलाके बेटे भाणा, उसके बेटे रुद्रदासने जो हाल लिख भेजा, उसके अनुसार वह इस तरहपर लिखता है – कि रावल माहपने अपने छोटे भाई राहपको उसकी खिदमतोंसे खुश होकर मेवाड़का राज्य दे दिया, और आप अहाड़में आरहा; इसी तरह डूंगरपुरके विद्यमान लोग भी ज़िक्र करते हैं, लेकिन् इनके सिवाय ऐसा और कोई बयान नहीं करता

---

(१) रावल करण और राहप व माहपका हाल हमने अपनी रायके साथ इस किताबके पहिले हिस्सेमें मुफ़स्सल लिखा है

(२) हमारे खयालसे माहप नाउम्मेद होकर बैठ रहा, और राहप चित्तौड़ लेनेके इरादेपर मुस्तइद रहकर लड़ाइयां किये गया.

माहपने डूंगरिया मेरको मारकर डूंगरपुरका शहर आबाद किया मेवाड़की किताबोंमें इस शहरके आबाद करनेमें भी महाराणा राहपकी मदद लेना लिखा है; डूंगरपुरसे जो प्रशस्तियां आई, उनमें सहस्रमल्ल रावल और पूजा रावलके बनाये हुए मन्दिरोंमें वंशावली लिखीगई है, लेकिन् एकसे दूसरी नहीं मिलती, इस वास्ते पुराना हाल सहीह लिखना बहुत मुश्किल है, परन्तु कई तरहसे यह साबित है, कि यह रियासत पुराने ज़मानेसे उदयपुरके मातहत रही है उनकी पीढ़ियोंके नाम बड़वा भाटोंकी पोथियोंके मुवाफ़िक नीचे लिखते हैं –

मेवाड़के रावल करणसिंहका बेटा १ रावल माहप, २– रावल नर्बद (१), ३– रावल भीलो, ४– रावल केसरीसिंह, ५– रावल सावन्तसिंह, ६– रावल सीहड़देव, ७– रावल दूदा, ८– रावल बरसिंह, ९– रावल भाचन्द, १०– रावल डूंगरसिंह, ११– रावल करमसिंह, १२– रावल कान्हड़देव, १३– रावल पत्ता, १४– रावल गोपालदास, १५– रावल समदरसिंह, १६– रावल गंगदास

यहां तककी ज़ियादह तवारीख़ नहीं मिलती बाज़ कहते हैं, कि माहपने पहिले बड़ौदामें राजधानी बनाई, जो डूंगरपुरके इलाकहमें एक गांव है, और रावल बीरसिंहने डूंगर भीलको मारकर डूंगरपुर राजधानी काइम की, जिसके बारेमें एक कहानी मश्हूर है, कि डूंगर भीलने अपने भाई बेटों समेत महाजनोंकी लड़कियां ज़बर्दस्ती ब्याह लेनी चाहीं, तब महाजनोंने रावल बीरसिंहसे मदद मांगी, रावलने शादीमें शरीक होनेके बहानेसे डूंगर और उसके सैकड़ों साथियोंको शराब पिलाकर ग़फ़लतकी हालतमें मारडाला, उसी भीलके नामपर डूंगरपुरका शहर बसाया; लेकिन् इस कहानीमें और रावलके नाममें हर एक जगह और हर एक लिखावटमें इख्तिलाफ़ है

रावल कान्हड़देवने अपने नामका दर्वाज़ह और बाज़ार आबाद किया इनके बाद रावल पत्ताने पातेला तालाब और इसी नामका दर्वाज़ह बनवाया

रावल गैबाने, जो विक्रमी १४९८ [हि० ८४५ = ई० १४४१] में गद्दीपर बैठे थे, गैबसागर तालाब और बादल महल बनवाये, जो अब तक मौजूद हैं, उससे शहर डूंगरपुरकी ख़ूबसूरती मालूम होती है

रावल गंगदासकी गद्दीपर १८ रावल उदयसिंह अव्वल बैठे, यह महाराणा संग्रामसिंह अव्वल याने सांगाके बड़े सर्दारोंमें थे बादशाह बाबरने अपनी किताब

---

(१) नम्बर २, ३, ४, ५, रावलोंके नाम डूंगरपुरसे भेजे हुए कुर्सीनामेमें नहीं हैं, और नम्बर ८ रावल बरसिंहकी जगह बीरसिंह, नम्बर ९ का नाम भरतुंड, १५ नम्बरके एवज़ गैबाजी और १६ नम्बरके बदले सोमदास लिखा है

तुजक बाबरीके पत्र २४३ मे रावल उदयसिहको महाराणा सांगाके सर्दारोमे बारह हजार सवारका मालिक लिखा है यह रावल उदयसिह उक्त महाराणाके साथ विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२८] मे बाबर बादशाहसे लडकर बडी बहादुरीके साथ मारेगये इनके बडे बेटे १९ पृथ्वीराज और छोटे जगमाल थे, पृथ्वीराज गद्दीपर बैठे, तो जगमालने बागडके कई पर्गनोपर अमल करलिया

नैनसी महता लिखता है, कि पृथ्वीराजने चहुवान मेरा बागडिया और रावत् पर्वत लोलाडियाको जमइयतके साथ भेजा, उन दोनो राजपूतोने बडी बहादुरीके साथ जगमालको बागडसे बाहर निकालदिया इन लड़ाइयोमे दोनो तरफके सैकडो राजपूत मारेगये चहुवान मेरा और रावत् पर्वत फतहके साथ इस उम्मेदपर डूंगरपुर आये कि रावल पृथ्वीराज हमको इन्आम देगा, लेकिन् उनको उसका नतीजा उल्टा मिला, उन सर्दारोके साथमेसे एकने रावलसे जाकर कहा, कि जगमाल काबूमे आगया था, पर इन दोनो सर्दारोने जान बूझकर उसे जानेदिया इस बातपर नाराज होकर रावलने दोनो राजपूतोकी डयोढी बन्द की. और कहा, कि तुम हमारे हरामखोर हो, जो हमारा दुश्मन काबूमे आया हुआ, तुम्हारी मिलावटसे जीता चलागया ये दोनो राजपूत नाराज होकर जगमालसे जामिले, और जगमाल भी उनके मिलनेसे ताकतवर होकर बागडका देश लूटने लगा पृथ्वीराजने भी अपनी फौज मुकाबलहको भेजी, दोनो तरफके बहादुर अच्छी तरहसे लडे, लेकिन् पृथ्वीराजकी फौजने शिकस्त खाई, क्यौकि मेरा और पर्वतसिहके साथ अच्छे अच्छे राजपूत जगमालके पास चलेगये थे, आखिरकार पृथ्वीराजने लाचार होकर बागडका आधा देश जगमालको बाटदिया, पृथ्वीराज डूगरपुरमे, और जगमाल बासवाडेमे राजधानी बनाकर रहने लगे

मेवाडकी पोथियोमे लिखा है, कि महाराणा रत्नसिहने जगमालकी हिमायत करके पृथ्वीराजसे आधा राज बटवादिया, जिसकी तस्दीक़ तारीख फिरिश्तह और मिरात सिकन्दरीके पृष्ठ २४३ मे लिखी है, कि " बहादुरशाह गुजराती मुरासेमे अपने लश्करको देखकर बागडमे आया, डूंगरपुरके राजा पृथ्वीराजने सुबुल मकामपर हाजिरी दी, बादशाह लश्करको वही छोडकर आप शिकार खेलनेको बासवाडे गये, और करजीके घाट तक शिकार खेला, उस जगह चित्तौडके राणा रत्नसिहके वकील डूगरसी और झांझरसी आये फिर सुबुल मकामपर पहुचकर बादशाहने बागड़का मुल्क पृथ्वीराज और जगमालको आधा आधा बाटदिया "

इससे पाया जाता है, कि महाराणाके वकील भी इसी मत्लबके लिये बादशाहके पास गये होगे, जिन्होने इसी मत्लबकी बाते भी बहादुरशाहको अपना शरीक बनानेके

लिये कही थीं　रावल पृथ्वीराजका इन्तिक़ाल होनेपर उनके बेटे २० आशकरण गद्दीपर बैठे, क्योंकि विक्रमी १५८८ [हि० ९३७ = ई० १५३१] मे रावल पृथ्वीराज मौजूद थे, और विक्रमी १५९० [हि० ९३९ = ई० १५३३] मे जब बहादुरशाह गुजराती चित्तौडपर चढ आया था, तब आशकरण महाराणाकी फौजमे शामिल थे, इस अर्सेके बीचमे रावल पृथ्वीराजका इन्तिक़ाल और रावल आशकरणका गद्दी नशीन होना पाया जाता है　महाराणा विक्रमादित्यके बेजा बर्तावसे कुल सर्दारोंके दिल बिगडगये, उसी तरह रावल आशकरण भी नाराज़ होकर चित्तौड़से डूंगरपुर चलेगये, इन्होने बनेश्वरमे पुरुषोत्तम भगवानका मन्दिर बनवाया, जिसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६१७ ज्येष्ठ शुक्ल ३ [हि० ९६७ ता० २ रमजान = ई० १५६० ता० २६ मई] को हुई थी　महाराणा उदयसिंहके साथ कई लड़ाइयोमे इनकी बहादुरी मश्हूर है

अबुल्फ़ज़्ल अक्बरनामहकी तीसरी जिल्दके पृष्ठ १६९ मे लिखता है, कि- "जब बादशाह बांसवाड़ेके पास पहुंचे, तो विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] मे रावल प्रतापने, जो वहा सर्कश था, मए डूंगरपुरके जमीदार रावल आशकरण वगैरहके ताबेदारी इख्तियार की"

इस वक्तसे डूंगरपुर और बांसवाड़े वालोंने बादशाही ताबेदार बनना शुरू किया, फिर मालूम नही, कि रावल आशकरण कब इस दुन्याको छोड़गया　फिर उनके बेटे सहस्रमल्ल गद्दीपर बैठे, इन्होने सुरपुरकी नदीके तीरपर माधवरायका मन्दिर बनवाकर उसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १६४७ [हि० ९९८ = ई० १५९०] मे की, वहा एक प्रशस्ति भी है, जिसमे डूंगरपुरकी वंशावली और कुछ हाल लिखा है- (देखो शेषसंग्रह नम्बर ४)

इनके बाद रावल करमसी गद्दीपर बैठे, जिनका जियादह हाल नही मिलता

इनके बाद रावल पूजा मस्नद नशीन हुए, जिन्होने गैबसागर तालाबकी पाल पर गोवर्द्धननाथका एक मन्दिर विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] मे बनवाकर एक प्रशस्ति भी खुदवाई, जिसमे रावल पूजा तक वंशावली लिखी है, और नैनसी महताने इसी वंशावलीको अपनी पोथीमे दर्ज किया है, और एक गाव भी मन्दिरकी भेट विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] मे किया- (देखो शेषसंग्रह नम्बर ५)　जब विक्रमी १६७१ [हि० ११२६ = ई० १७१४] में जहांगीर बादशाह और महाराणा अमरसिंह अव्वलकी सुलह हुई, तब कुंवर करणसिंहकी जागीरके फ़र्मानमें डूंगरपुर भी दर्ज है- (देखो पृष्ठ २४८), उस फ़र्मानमे डूंगरपुरको ग़ैर अमली लिखा है, जिससे यक़ीन होता है, कि रावल आशकरणने अक्बरकी ताबेदारी कुबूल की, वह थोड़े दिनो तक रही होगी, क्योंकि मुसल्मानोकी ताबेदारीसे महाराणाकी

ताबेदारी करना उनको जियादह पसन्द होगा, जो एक अर्सेसे उनके बडे करते आये थे, जिसपर भी राजपूतोंको आपसका ताना बडा नागुवार गुज़रता है, अगर दिल दूसरी तरफ हो, तो भी शर्मिन्दगीसे वह काम नही कर सके, जिससे बिरादरीका ताना सहना पड़े इसलिये आशकरण, सहस्रमल्ल और करमसी महाराणा प्रताप-सिंह अव्वल व अमरसिंह अव्वलकी लडाइयोंमे ज़रूर साथ होंगे

पूजा रावलने शाहज़ादह खुर्रमसे बगावतके वक्त कुछ मिलाप करलिया, जिससे जहांगीरके मरनेपर खुर्रम याने शाहजहां बादशाह बना, तो पूजाने भी महाराणा जगत्सिंह अव्वलकी हुकूमतसे निकलना चाहा, जिससे महाराणाने अपने प्रधान अक्षयराज वगैरहको कई सर्दारोंके साथ भेजकर रावल पूजाको फिर अपना ताबेदार बनाया, जिसका ज़िक्र महाराणा जगत्सिंह अव्वलके हालमे लिख आये है- (देखो पृष्ठ ३१९)

रावल पूजाने अपने नामसे पुंजपुर गांव आबाद करके पुंजसागर तालाब बनवाया

इनके बाद रावल गिरधरदास गद्दीपर बैठे जब महाराणा जगत्सिंह अव्वलने इस दुन्याको छोडा, तब रावल गिरधरदासने भी महाराणाकी ताबेदारीसे सिर फेरा, राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठवे सर्गके आठवे श्लोकमे लिखा है, कि विक्रमी १७१६ [हि० १०६९ = ई० १६५९] मे फौज भेजकर रावल गिरधरदासको महाराणा राजसिंहने फिर अपना ताबेदार बनाया

इनके बाद रावल जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठे, जिनको जसराज भी कहते है विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = ई० १६७५] मे जब महाराणा राजसिंहने राजसमुद्र तालाबकी प्रतिष्ठा की, तो उस वक्त डूंगरपुरके रावल जशवन्तसिंह थे; इससे उक्त समय पहिले गिरधरदासका परलोक वास होना पायाजाता है इनके बाद खुमानसिंह गद्दीपर बैठे, महाराणा राजसिंह १ और आलमगीरकी लडाईके बाद डूंगरपुरके रावलने फिर बादशाही ताबेदार बननेकी कोशिश की, और महाराणा दूसरे अमरसिंहकी गद्दी नशीनीके वक्त टीकेका दस्तूर लेकर हाज़िर भी नही हुए; इस नाराज़गीसे उक्त महाराणाने अपने काका सूरतसिंहको बड़ी फौजके साथ डूंगरपुर भेजा, सोम नदीपर डूंगरपुरके कई चहुवान राजपूत मुकाबलह करके मारेगये, महाराणाकी फौजने डूंगरपुरको घेरलिया. तब रावल खुमाणसिंहने घबराकर अपनी तलवार बन्दी व फौज खर्च के एवज़ एक लाख पछत्तर हज़ारका रुक्का लिखकर देवगढ़के रावत् द्वारिकादासको अपना सुफ़ारिशी और रुपयोंका ज़ामिन बनाया.

रुक्कहकी नक़्ल

श्रीरामोजयति १

स्वस्ति श्री महाराज धिराज महाराणा श्री अमरसिंघजी आदेशातु, रावल श्री षुमाणसीघजीरे कपुर (१) कीधो, जणीरी वीगत रुपीया १७५००० ईषरे रुपीया एक लाप पीचोतर हजार, हाथी २ दोय, माला १ मोतीरी———

वीगत रुपीया———

१००००० रुपीया एक लाप, हाथी २, माला १, पेहेली भरसी———

३५००० षधी १ एक सवत् १७५६ री ऊनाली माहे भरसी, रुपीया पेतीस हजार———

४०००० षधी १ सवत् १७५७ री सीआली माहे भरसी, रुपीया च्यालीस हजार———

१७५००० जेठ सुद ५ भोमे सवत १७५५ वर्षे (२)

यह मुआमलह ठहराकर महाराज सूरतसिंह तो उदयपुर चला आया, और देवगढका रावत् द्वारिकादास रुपया वुसूल करनेको एक आदमीके साथ पचास सवार वहां छोड आया; उन सवारोंने रावल खुमाणसिंहको तंग कर रक्खा था, महारावल सवारोंको टालता रहा, और एक अर्जी बादशाह आलमगीरके नाम इस मत्लबकी लिख भेजी, कि महाराणा दूसरे अमरसिंह बहुत बड़ी फौज एकट्ठी करके बादशाही मुल्क पर हमलह करना चाहते हैं, और मुझे भी अपने शरीक होनेको कहा, मैंने हुजूरकी ख़ैरख्वाहीपर निगाह रखकर इन्कार किया, जिससे नाराज होकर फौजकशीसे मुझको बर्बाद करते हैं यह अर्जी तहकीकातके लिये अजमेरके सूबहदारके पास भेजीगई, और उसने तहकीक़ात की इस बारेके फ़ार्सी कागजोंकी नक़्लें महाराणा दूसरे अमरसिंह के हालमें लिखीगई हैं- (देखो पृष्ठ ७३५)

खुमाणसिंहके बाद उनके बेटे महारावल रामसिंह गद्दीपर बैठे यह भी अपने बापकी नसीहतोंके मुवाफ़िक महाराणासे जुदा होना चाहते थे, और महाराणा उनको

(१) मेवाड़में दस्तूर है, कि किसीसे जुर्मानह अथवा तलवार बन्दीके रुपये लिये जावें, तो उनको कपूरके रुपये कहते हैं, इसका मत्लब यह है, कि देने वाला लाचार होकर कहता है, कि आप पानकी बीड़ी खाते हैं, उसमें जो कपूर डाला जावे, उस कपूरके कारख़ानेमें यह रुपये जमा कीजिये, वह इस बातसे उनका बड़प्पन दिखलाता है

(२) यह संवत् श्रावणी है, और चैत्री सवत् विक्रमी १७५६ होता है

अपने सर्दारोंमें शुमार करते थे, महारावल रामसिंहपर पचोली बिहारीदास फ़ौज लेकर गया, और एक लाख छब्बीस हज़ार रुपयेका रुक़्क़ह लिखवाकर दूसरा रुक़्क़ह न जाने किस मत्लबसे लिखवाया, वह हमको अस्ल मिला, जिसकी नक़्ल नीचे लिखते हैं.-

रुक़्क़ेकी नक़्ल

श्रीरांमजी १

सीधश्री श्री दीवांणजी आदेशातु, प्रतदुवे पंचोली वीहारीदासजी अप्र ॥ डुगरपुर रावल रांमसीघजीरे पेसकसीरो ठेराव कीयो, मुकाम गाम फलोदरे डेरे———

वीगत रु———

पेहली रु १२६००० एक लाष छावीस हजार कीया सो साबत

पंचोली श्री वीहारीदासजीरा डेरा गांम ईमरत्या आसपुरथी गाम फलोद हुवा, सो नीज्र कीया, चुहाण माधोसीघ, चुहांण अवचलसीघ, पुआर साचो, भडारी गणेस, स्मस्त पांचा भेला व्हे कीया———

वीगत———

हाथी १ दंतीलो षरीद रु० २५०००) रो से, ज्यो नीजर करसी———

२०००० रोकडा रुपीया वीस हजार———

लीषतं साह देवा लाधावत गांम फलोदरे डेरे स १७७४ आसोज सुदी ४, स्रो लीषतरा षत २ पाछा देने रुपीया भरसी, त्था रावल रामसीघजी गांम फलोदरे डेरे आवे मीलसी, रावत् जोधसीघ, रावत सांवतसीघजी, कुअर दुरजंणसीघजी, साह देवो लेवा चालसी, या थाप कीधी

मतो राउळजी

अतो रु———

२०००) छोडया रावतजी रे अरज कीधी तीथी

१८०००) बाकी साबत हाथी १

रावल रामसिंह बहादुरीमे बड़े मश्हूर थे, भील लोगोंपर इनका रोब ऐसा ग़ालिब था, कि बिल्कुल चोरी डकैती बन्द होकर इनका नाम लेनेसे थर्राते थे इनके राज्यमे महाजन व्यापारियो और किसानो वग़ैरहको बडा चैन था, डूंगरपुरकी तवारीखमे लिखा है, कि इन्होने गुजरातकी तरफ़ लूणावाडा, कडाणा तक अमल्दारी बटाली, और उस जिलेमे छोटी गढिये बनवाली, जिनको लोग अब तक रामगढीके नामसे पुकारते है यह रावल बारह वर्ष तक लड़ाई झगडोमे निरन्तर शस्त्र बद्ध रहे इनके बाद इनके बेटे शिवसिंह गद्दीपर बैठे, यह बडे अक्लमन्द, बहादुर और फ़य्याज मश्हूर थे, इन्होने बादशाहतका जवाल और अपनी रियासतकी बर्बादीकी चाल ढाल जानकर महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके साथ सुलह करके धाय भाई नगराजकी मारिफ़त इक़रारनामह लिखदिया, जिसकी नक़्ल हम नीचे लिखते है –

——※——

इक़ारनामहकी नक़्ल.

श्रीरामजी १

।लीष्यो १ डुंगरपुर रावल सीवसीघजीरो

।सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, प्रत दुवे धाभाई नगजी अप्रंच ॥ रावल श्री सीवसीघजी लीषतां, राणा श्री जगतसीघजी राणा श्री राजसीघजीरी वार माहे पेली सेवा करता मास ६, जो सेवा करसी, फोज फाटे हुकम प्रमाणे सेवा करसी. स १७८६ वेसाष सुद ६ दीने आछा साथ सामान थी धाभाई नगजीरा कागल प्रमाणे सताब आवे भेला हा सं १७८६ वेसाष सुद ६ दीने——————

——※——

इसी मुचलकेके साथ तलवार बन्दीके रुपयोंका रुक़ा लिखा गया, उसकी भी नक़्ल यहांपर दर्ज कीजाती है –

तलवार बन्दीके रुपयोंके रुक्केकी नक़्ल.

——※——

लीष्यो १ रु० ४००००० डुंगरपुर कीदा तीरी नकल लीषी——————

सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, प्रत दुवे धाभाई नगजी अप्रच ॥ रावल श्री सीवसीघजीरे केदरा रुपीआ ४००००० अके रुपीआ च्यार लाष कीदा, सो भंडार भरसी, रोकडा पेली भरसी. सं १७८६ वेसाष सुद ६.

अत्रमतु सबत

रावल सीवसीघजी मतो.

दसकत भंडारी गणेस

गांधी गोकलजी.

---*---

मालूम होता है, कि ये दोनो कागज पूरे दबावके साथ लिखवाये होंगे, क्यौंकि रावल खुमाणसिंहसे एक लाख पछत्तर हज़ार, रावल रामसिंहसे एक लाख छब्बीस हज़ार लिये थे, और इस वक्त चार लाखका रुक्कह लिखवाया गया, तो ऐसी बड़ी रकम बगैर दबावके मंजूर करना कियासमें नहीं आता, और यह भी मालूम होता है, कि रावल रामसिंहने गुजरातकी लूट खसोटके साथ जो नये पर्गने लिये, उनकी आमदनीसे खजानह भी अच्छा एकट्ठा करलिया था, क्यौंकि गुजरातकी तरफ़ किले बनवाये गये रावल शिवसिंहने डूंगरपुरके गिर्द शहर पनाह तय्यार करवाई, और बागडमें भी कई छोटे छोटे किले बनवाये, महाराणाको इतनी बड़ी रकम देनेके अलावह रावल शिवसिंहने और भी बड़े काम किये, जिनमें बहुत ख़र्च हुआ था इसके सिवाय रावल शिवसिंहकी फय्याज़ी कवि लोग अपनी शाइरीमें अब तक बड़ी मुहब्बतके साथ याद रखते हैं, रअय्यत भी महारावल शिवसिंहको नहीं भूली है उनकी जारी कीहुई पचपन रुपये भर सेरकी शिवशाही तोल और दूसरे कई बर्ताव उस ज़िलेमें जारी हैं; रियासतमें शिवशाही पगड़ी वगैरह बहुतसे दस्तूर उन्होंने काइम किये थे शिवराजेश्वरका मन्दिर तय्यार करवाया, और दूसरे भी मन्दिरोंकी मरम्मत विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में करवाई

उदयपुरके महाराणा दूसरे भीमसिंह विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = ई० १७८३] में ईडरके महाराजा शिवसिंहकी बेटीके साथ शादी करनेको गये, तो डूंगरपुरके रावल शिवसिंह भी बरातके साथ थे, और पीछे लौटते वक्त शिवसिंह महाराणाकी मिहमानीके लिये डूंगरपुर चले आये, चार कोस तक महाराणाकी पेश्वाई की, और पगमंडा व नज़, निछावर सब दस्तूरके मुवाफ़िक़ किया, वापसीके वक्त महाराणाको चार कोस तक पहुंचाया थोड़े ही दिनोंके बाद रावल शिवसिंहका देहान्त होगया, और रावल वैरीशाल गद्दीपर बैठे, कुछ अर्से बाद इनका भी इन्तिकाल होगया, और उनके बेटे फ़त्हसिंह गद्दीपर बैठे इन्होंने उदयपुरका तअल्लुक़ छोड़दिया जब महाराणा दूसरे भीमसिंह दोबारह ईडर शादी करनेको गये, तो उस वक्त फ़त्हसिंह बरातमें नहीं आये, जिससे नाराज़ होकर महाराणाने लौटते वक्त डूंगरपुरको घेरलिया; महारावलने तीन लाख रुपयेका रुक्कह लिखकर पीछा छुड़ाया यह हाल तफ्सीलवार महाराणा दूसरे भीमसिंहके बयानमें लिखा

जायेगा. यह रावल फ़त्हसिंह फ़साद फैलनेसे बिल्कुल ज़वालमें आगये थे

महारावल जशवन्तसिंह

रावल फ़त्हसिंहके बाद महारावल जशवन्तसिंह गद्दीपर बैठे, इनके वक्तमें गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे अह्दनामह हुआ, और जो टाका मरहटोंको देते थे, वह अंग्रेज़ी सर्कारको देना करार पाया इस बारेमें राजपूताना गजेटियरकी पहिली जिल्दके २७५ एष्ठमें इस तरह लिखा है -

" जब मुसल्मानी बादशाहत बिगडी, तो दूसरी छोटी छोटी रियासतोंके मुवाफिक डूंगरपुर भी मरहटोंके ताबे हुआ, और पैंतीस हज़ार रुपया लगानका सेंधिया, हुल्कर और धारके सर्दारोंमें बांट दियेजानेका बन्दोबस्त हुआ, परन्तु अन्तमें धारके सर्दारोंने ही अपना हक़ करलिया मरहटोंके बर्बाद होने बाद यह देश पिंडारों या दूसरे लुटेरों और अरब व अफ्गान लोगोंके गिरोहका, जिन्हें सर्दारोंने अपने बचावके वास्ते नौकर रक्खा था, शिकार हुआ, (याने छीन लिया गया, और कई वर्ष तक सिंधियोंका कब्ज़ह रहा) आखिरकार ये लोग अंग्रेज़ी फ़ौजसे निकलवादिये गये, क्योंकि सर्कार अंग्रेज़ी विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] के सुलहनामहके मुताबिक इस राज्यको अपनी हिफ़ाज़तमें लेचुकी थी, और तभीसे खिराज भी सर्कारका होगया था, तो भी कई वर्ष तक बडी खराबी रही, क्योंकि राजपूत सर्दार अपनी रियासतके भीलोंमें लूटने और भूमि लेनेके लालचसे मिलगये, और कोई भीलोंको दबावमें न रखसका तब अंग्रेज़ी अफ्सरोंके साथ एक फ़ौज भेजीगई, और भील व सर्दार मिलालिये गये, थोडे ही दिनोंमें बिल्कुल बर्बादी दूर हुई, रावल जशवन्तसिंह चाल चलन ठीक न होनेके सबब हुकूमत करनेके लाइक न था, इसलिये विक्रमी १८८२ [हि० १२४० = ई० १८२५] में अलग कियागया, और उसका दत्तक पुत्र दलपतसिंह सावन्तसिंहका पोता, जो प्रतापगढका राजा था, काइम किया गया

विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] में प्रतापगढकी हुकूमत दलपतसिंहको इस शर्तपर मिली, कि उदयसिंहको डूंगरपुरमें अपना जानशीन बनालेवे, लेकिन् जब तक प्रतापगढका सर्दार रहे, और वह लडका बालक रहे, तब तक डूंगरपुरका प्रबन्ध भी वही करे इस मौकेपर जशवन्तसिंहने अपनी हुकूमत लेनेकी बहुत कुछ कोशिश की, पर नाकाम्याब हुई, और वह मथुरा भेजागया, जहां कि बन्दोबस्तमें रहा वह बन्दोबस्त, जिससे दलपतसिंह प्रतापगढमें रहनेके वक्त डूंगरपुरका मालिक बनायागया, ठीक नहीं ठहरा, इसलिये विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में उसने डूंगरपुरका बिल्कुल तअ़ल्लुक छोडदिया, और

वह एक देशी एजेंट (मुन्शी सफ़दरहुसैन) के अधिकारमें विद्यमान रावल उदयसिंहके होश्यार होने तक रक्खागया डूंगरपुर वालोंने दत्तक लेनेका इस्तियार पाया है, और उनकी पन्द्रह तोपोंकी सलामी है "

महारावल उदयसिंह–२

महारावल जशवन्तसिंह और दलपतसिंहके बाद महारावल उदयसिंह विक्रमी १९०३ आश्विन शुक्ल ८ [हि० १२६२ ता० ७ शव्वाल = ई० १८४६ ता० २९ सेप्टेम्बर] को गद्दीपर बैठे, जब तक इन्हें इख्तियार नहीं मिला, तब तक इनको रजवाडोंकी सैर करनेको गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे हिदायत हुई थी, इसपर यह उदयपुरमें महाराणा स्वरूपसिंहके पास आये थे, और क़दीम दस्तूरके बमूजिब इनकी इज़्ज़तका बर्ताव कियागया. यह महारावल नेक तबीअत, नेक आदत, फ़य्याज़, बहादुर, सच्चे, ईमान्दार और जगत् मित्र हैं इस किताबका लिखनेवाला (कविराजा श्यामलदास) भी इनसे दो दफ़ा मिला, तो उनका अख्लाक व मिलनसारी लाइक़ तारीफ़के पाई रअय्यत और सर्दार सब लोग इनके मिजाजसे खुश हैं, और गैर इलाकेका कोई अदना व आला, जो इनसे मिलता है, वह ज़िन्दगी भर इनकी खुश अख्लाक़ीको नहीं भूलता, गवर्मेंट अंग्रेज़ीके अफ्सर भी इनसे खुश हैं अपने इलाक़हका हर साल दौरह करते हैं; किसी पालके भीलोंकी बगावत सुनते हैं, तो उसी वक़ खुद पहुंचकर दबाग़तसे या फ़ह्माइशसे अम्न करदेते हैं. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] के अकालमें इन्होंने रिआयाके साथ बड़ी हमदर्दी की, इनके एक पुत्र खुमाणसिंह जवान हैं, लेकिन् उनकी आदत, व होश्यारी और चाल चलनसे लोग बहुत कम वाक़िफ़ हैं और विक्रमी १९४४ [हि० १३०४ = ई० १८८७] में महारावलके एक पोता भी पैदा हुआ है

पहिले दरजेके ठाकुर ताज़ीम पाते हैं यह सब सर्दार राजपूत, कुछ महारावलके रिश्तहदार और कुछ चारण हैं, जिनकी जागीर व आमदनीका हाल नक़्शेमें दर्ज है.

पहिले दरजेके जागीरदारोका नक्शह मए गांव व आमदनी

गोत्र	नाम.	जागीर	गाव	आमदनी सालिमशाही रुपयेसे.
चहुवान	केसरीसिंह	बनकौडा	२७ ३/४	१४०२५)
चहुवान.	गभीरसिंह	छीतरी	७	५४०५)
चहुवान	दीपसिंह	पीठ	३७	५७१५)
चहुवान	उदयसिंह.	ठाकरड़ा.	१२	६४४४)
चहुवान	डूगरसिंह	माडो.	११॥	५३७५)
चहुवान	भवानसिंह	बमासा	२	१६०५)
चहुवान.	धीरतसिंह.	बीछीवाडा.	६॥	२७१०)
चहुवान.	केसरीसिंह	लोडावल	२॥	१४५०)
अहाडिया	उम्मेदसिंह	नांदली	५॥	१६३२)
अहाडिया	गुलाबसिंह	सावली	३॥	७०४)
राठौड	उदयसिंह	कूआं.	३५॥	६४८४)
चूडावत.	प्रतापसिंह	रामगढ.	२	२४६५)
चूडावत	पहाडसिंह.	सोलज	१४	१७६५)
सोलखी.	लक्ष्मणसिंह.	ओडां.	२	२३४५)
चारण	बाणसिंह.	नौमावां.	१	२०००)
चारण	जगतसिंह.	कड़ावाडा.	३	३०००)
	१६	१६	१७५ ३/४	६३१२४) सालिमशाही.

एचिसनकी अह्दनामोकी किताब जिल्द ३
अह्दनामह नम्बर १०, पृष्ठ ३३,
बाबत डूगरपुर

अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कपनी और राय राया महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूगरपुर व उनके वारिसो और जानशीनोके दर्मियान, करार पाया हुआ कप्तान जे० कॉल्फील्डकी मारिफत, ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वगैरह, पोलिटिकल एजेण्टके हुक्मसे, मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल बहादुरकी काइम मकामीकी हालतमे, और राय राया महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूगरपुरकी अपनी और उनकी औलाद वगैरहकी तरफसे, जब कि जेनरल सर जॉन माल्कमको पूरे इख्तियारात मोस्ट नोबल् फ्रान्सिस मार्क्विस ऑव हेस्टिंग्ज, के० जी० से मिले थे, जो हिज ब्रिटेनिक मैजेस्टीकी ऑनरेबल प्रिवी कौन्सिलके मेम्बर थे, और जिनको ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कपनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमतकी दुरुस्तीके लिये मुकर्रर फर्माया था

शर्त अव्वल - दोस्ती, इत्तिफाक और खैरख्वाही हमेशहको गवर्मेट अंग्रेजी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूगरपुर और उनके वारिसो और जानशीनोके दर्मियान काइम और जारी रहेगी, और दोस्त व दुश्मन दोनो फरीकके आपसमे एकसे समझे जायेगे

शर्त दूसरी - सर्कार अंग्रेजी वादा फर्माती है, कि वह राज और मुल्क डूगरपुर की हिफाजत करेगी.

शर्त तीसरी - महारावल और उसके वारिस और जानशीन हमेशह अंग्रेजी सर्कारके साथ इताअत और इत्तिफाक रक्खेगे, उसकी हुकूमत और बुजुर्गीका इक़ार करेगे, और आगेको किसी गैर रईस या रियासतसे मिलावट न रक्खेगे

शर्त चौथी - महारावल और उसके वारिस व जानशीन अपने राज और मुल्कके पूरे हाकिम रहेगे, और सर्कार अंग्रेज़ीका दीवानी व फौज्दारी इन्तिजाम वहा दाखिल न होगा

शर्त पांचवी - डूगरपुरके मुआमले सर्कार अंग्रेजीकी सलाहसे तै पायेगे, और तमाम कामोमे सर्कार भी महारावलकी मर्जीका लिहाज रक्खेगी

शर्त छठी - महारावल और उसके वारिस और जानशीन किसी गैर रईस या रियासतके साथ सर्कार अंग्रेजीकी मजूरी बगैर इत्तिफ़ाक या दोस्ती न करेगे, लेकिन् उनकी दोस्ताना लिखा पढ़ी अपने दोस्तो और रिश्तहदारोके साथ जारी रहेगी.

शर्त सातवीं – महारावल और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़बर्दस्ती न करेंगे, और अगर इत्तिफ़ाक़से किसीके साथ तकार पैदा होगी, तो उसका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीमें सुपुर्द होगा

शर्त आठवीं – महारावल और उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि जो वाजिबी ख़िराज रियासत धार या किसी औरका, जिसक़द्र अबतक देनेके लाइक होगा, वह अंग्रेज़ी सर्कारको किस्तबन्दी (खन्दी) से अदा किया जायेगा, और किस्तें सर्कार अंग्रेज़ी रियासत डूंगरपुरकी हैसियतके मुवाफ़िक़ मुकर्रर फ़र्मावेगी, याने जितनी रियासतमें गुंजाइश होगी, उस क़द्र तादाद क़ाइम कीजायेगी

शर्त नवीं – महारावल और उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि वह अपनी हिफ़ाज़तके एवज़में सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज अदा करेंगे, जितना ख़िराज रियासतकी हैसियतसे सर्कार मुकर्रर फ़र्मायेगी, वह देंगे, लेकिन् किसी हालतमें यह ख़िराज रियासतकी आमदनीपर छ आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न होगा

शर्त दसवीं – महारावल, उनके वारिस और जानशीन वादह करते हैं, कि उनके पास जितनी फ़ौज होगी, वह ज़रूरतके वक्त मांगनेपर सर्कार अंग्रेज़ीको हवाले करेंगे

शर्त ग्यारहवीं – महारावल, उनके वारिस और जानशीन इक़ार करते हैं, कि वह कुल अरब और मकरानी और सिन्धी सिपाहको बर तरफ़ करके मुल्की आदमियोंके सिवा किसी ग़ैरको फ़ौजमें भरती न करेंगे

शर्त बारहवीं – अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह महारावलके किसी सर्कश या फ़सादी रिश्तहदारको मदद न देगी, बल्कि महारावलको ऐसा सहारा देगी, कि सर्कश उनका फ़र्मांबर्दार होजावे

शर्त तेरहवीं – महारावल इस अह्दनामहकी नवीं शर्तमें वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको ख़िराज दिया करेंगे, बस इसके इत्मीनानके लिये इक़ार करते हैं, कि अंग्रेज़ी सर्कार जिसे ख़िराज लेनेपर मुकर्रर करेगी, उसको देंगे, और वक्तपर अदा न होनेकी हालतमें वादह करते हैं, कि अंग्रेज़ी सर्कार अपनी तरफ़से किसी मोतमदको मुकर्रर करे, जो शहर डूंगरपुरकी आमदनी चुंगी वग़ैरहसे बाक़ियात वुसूल करे.

यह तेरह शर्तोंका अह्दनामह आजकी तारीख़ कप्तान जे० कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वग़ैरहके हुक्मसे, जो ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से मुख़्तार थे, और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरकी मारिफ़त, जो अपनी और अपने वारिस व जानशीनोंकी तरफ़से जी इख़्तियार थे, तै हुआ. कप्तान कॉलफ़ील्ड वादह करते हैं, कि इस

अह्दनामेकी एक नक़ल मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलकी तस्दीक़ कीहुई, महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूगरपुरको दो महीनेके अर्सेमे दीजायेगी, और जब नक़ल मिल जायेगी, तो यह अह्दनामह, जो कप्तान कॉलफील्डने ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० व के० एल्० एस० वगैरहके हुक्मसे तय्यार किया, वापस दिया जायेगा- फकत

रावल साहिबने इस अह्दनामहपर अक़्की दुरुस्ती और होश व हवासकी बिह्तरीकी हालतमे अपनी रजामन्दी और खुशीसे मुहर और दस्तखत किये, उनकी मुहर और दस्तखत गवाहके तौर समझे जायेगे

मकाम डूगरपुर ता० ११ डिसेम्बर सन् १८१८ ई०, मुताबिक़ बारहवी सफ़र सन् १२३४ हिज्री, और मुताबिक अगहन सुदी १४ सवत् १८७५ विक्रमी

दस्तख़त - जे० कॉलफील्ड

[बडी मुहर]

दस्तख़त - जशवन्तसिंह,
देसी हर्फ़ोंमे

[मुहर ऑनरेब्ल कपनीकी]

दस्तखत - हेस्टिंग्ज
दस्तखत - जी० डाउड्जवेल.

[छोटीमुहर गवर्नर जेनरल की]

दस्तख़त - जे० स्टुअर्ट
दस्तखत - जे० ऐडम

हिज एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने इज्लासमे आजकी तारीख तस्दीक किया, १३ फ़ेब्रुअरी सन् १८१९ ई०

दस्तखत - सी० टी० मॅट्कॉफ,
सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द

अह्दनामह नम्बर ११

सर्कार अंग्रेजी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूगरपुरके दर्मियान -

इस सबबसे कि पहिले अह्दनामेकी आठवी शर्तमे, जो सर्कार अंग्रेजी और महारावल श्री जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुरके दर्मियान अगहन सुदी १४ सवत् १८७५

मुताबिक ११ डिसेम्बर सन् १८१८ ई० को करार पाया, रावलने शर्त की है, कि वह अंग्रेजी सर्कारको उसका और धार वगैरह रियासतका बाकी खिराज, जिस कद्र तारीख अ़ह्दनामह तक रहा होगा, सालाना किस्त बन्दी (खदी) से देगे, और किस्ते सर्कार अंग्रेजी मुनासिब तौरपर मुकर्रर फर्मावेगी सर्कार अंग्रेज़ीने रियासतकी तग हालत और रावलकी कम आमदनीके सबब मुबलिग पैतीस हजार रुपया सालिमशाही, जो मुल्कके साल भरके महसूलके बराबर है, आठवी शर्तमे बयान कीहुई तमाम बाकियातके एवज मजूर किया; इस वास्ते महारावल इस तहरीरके जरीएसे वादह करते है, कि वह अंग्रेजी सर्कारको जिक्र किया हुआ रुपया नीचे लिखी हुई किस्तोके मुवाफ़िक अदा करेगे –

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७६ विक्रमी मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२० ई०
रु० १५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७७ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२० ई०
रु० १५००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७७ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२१ ई०
रु० २५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७८ मुताबिक एप्रिल सन् १८२१ ई०
रु० २५००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७८ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२२ ई०
रु० ३०००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७९ मुताबिक एप्रिल सन् १८२२ ई०
रु० ३०००

मिती माघ सुदी १५ संवत् १८७९ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२३ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८८० मुताबिक एप्रिल सन् १८२३ ई०
रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८८० मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२४ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८८१ मुताबिक एप्रिल सन् १८२४ ई०
रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८८१ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२५ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८८२ मुताबिक एप्रिल सन् १८२५ ई०
रु० ३५००

जो कि उक्त अह्दनामेकी नवी शर्तमे महारावल वादह करते है, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको हिफाज़तके एवज़ मुल्ककी हैसियतके मुवाफ़िक़ खिराज देंगे, लेकिन् वह आमदनी मुल्कपर छ आने फी रुपयेसे जियादह न होगा; और जो कि सर्कारकी ऐन दिली ख्वाहिश है, कि रावलकी रियासत जल्द बिह्तर और दुरुस्त हो, इस वास्ते सर्कारने तज्वीज की है, कि रुपया अदा करनेकी तादाद बाबत सन् १८१९ ई० व सन् १८२० व सन् १८२१ ई० के करार पावे महारावल इक़ार करते है, कि वह नीचे लिखी हुई तादाद बयान किये हुए सनोंकी बाबत अदा किया करेगे

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७६ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२० ई०
रु० ८५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७७ मुताबिक़ एप्रिल सन् १८२० ई०
रु० ८५००

कुल बाबत सन् १८१९ ई० रु० १७०००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७७ मुताबिक़ जैन्युअरी सन् १८२१ ई०
रु० १००००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७८ मुताबिक एप्रिल सन् १८२१ ई०
रु० १००००

कुल बाबत सन् १८२० ई० रु० २००००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७८ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२२ ई०
रु० १२५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७९ मुताबिक एप्रिल सन् १८२२ ई०
रु० १२५००

कुल बाबत सन् १८२१ ई० रु० २५०००

यह बन्दोबस्त सिर्फ तीन वर्षके वास्ते है, उसकी मीआद गुजर जानेपर सर्कार अंग्रेज़ी नवी शर्तके मुवाफिक ऐसा बन्दोबस्त खिराजका फर्मावेगी, जैसा उसके नज्दीक ईमान्दारीसे ठीक मालूम होगा, और मुल्ककी हैसियतसे दोनो तरफ़की बिह्तरीका बाइस होगा

यह अह्दनामह सोमवाड़ा मकामपर मारिफत कप्तान ए० मॅक्डोनल्डके, जो जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वगैरहके हुक्मसे सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से कारबन्द थे, और मारिफत तख़्ता गामोडी दीवान डूंगरपुरके,

जो महारावल श्री जशवन्तसिंहकी तरफ़से मुख्तार था, तारीख २९ जैन्युअरी सन् १८२० ई० मुताबिक माघ सुदी १५ संवत् १८७६

रावलकी मुहर और दस्तखत

दस्तखत - ए० मेक्डोनल्ड,

अव्वल असिस्टेंट, सर० जे० माल्कम साहिब

अह्दनामह नम्बर १२

दस्तख़त - रावल जशवन्तसिंह

कौलनामह महारावल जशवन्तसिंह रईस डूंगरपुर और कप्तान अलिग्ज़ेन्डर मेक्डोनल्डके दर्मियान, जो ऑनरेब्ल कंपनीकी तरफ़से मुकर्रर थे

सात सौ रुपये माहवारी, जिसके आठ हजार चार सौ सालानह होते हैं, बाबत तन्ख्वाह सवार व पैदलोंके, जो मेरे हमराह रहेंगे, मैं सर्कारको मुकर्रर किस्तोंसे दिया करूंगा, इसमें कुछ हीला और उज़ न करूंगा यह रुपया पहिली जैन्युअरी सन् १८२४ ई० से अदा होगा, इसमें कुछ फ़र्क न पड़ेगा, इसलिये यह तहरीर अपनी रजामन्दी और खुशीसे लिख दी

ता० १३ जैन्युअरी सन् १८२४ ई०, मुताबिक़ पौष सुदी ११ संवत् १८८० विक्रमी

अह्दनामह नम्बर १३

तर्जमह कौलनामह दर्मियान लींबरवाडोंके भीलों और ऑनरेब्ल कम्पनीके, जो मारिफ़त मेजर हमिल्टनके हुआ था, जो कप्तान मेक्डोनल्डकी तरफ़से ज़ी इख़्तियार थे ता० १२ मई सन् १८२५ ई०

१- हम अपने कमान और तीर वगैरह हथियार देदेंगे.

२- हमने जिस कद्र लूट अगले फसादमें की होगी, उसका सब एवज़ देंगे.

३- आगेको हम शहरों, गावों और रास्तोंपर लूटमार न करेंगे.

४- हम किसी चोर, लुटेरे या गिरासिया ठाकुरों या सर्कार अंग्रेज़ीके दुश्मनको अपने गावमें पनाह न देंगे, चाहे वह हमारे मुल्कके या किसी दूसरी जगहके हों.

५- हम कम्पनीके हुक्मकी तामील किया करेंगे, और जब हुक्म होगा, हाज़िर हुआ करेंगे.

६– हम रावल और ठाकुरोंके गांवोंसे सिवा अपने कदीमी और वाजिबी हक़के कुछ न लेंगे

७– हम रावल डूंगरपुरका सालानह ख़िराज अदा करनेमें इन्कार न करेंगे

८– अगर कोई कम्पनीकी रिआया हमारे गांवमें आकर रहे, तो हम उसकी हिफ़ाज़त करेंगे

अगर हम ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ अमल न करें, तो सर्कार अंग्रेज़ीके कुसूरवार समझे जायें

दस्तखत– बेनम सूरत और दूदा सूरत

इसी किस्मका एक क़ौलनामह नीचे लिखे हुए आदमियोंके दस्तख़तसे तय्यार हुआ –

१– दस्तख़त आमरजी	९– दस्तख़त नाथू कोटेर	१७– दस्तखत भन्ना डामर
२– दस्तखत डामर नाथा.	१०– दस्तखत लालू	१८– दस्तखत लालू
३– दस्तख़त पीथा डामर	११– दस्तख़त राजिया.	१९– दस्तखत ताजा
४– दस्तख़त सलिया डामर.	१२– दस्तखत मोगा	२०– दस्तखत जीतू
५– दस्तख़त मन्ना.	१३– दस्तख़त कन्हैया.	२१– दस्तख़त भीडू
६– दस्तख़त कोरजी	१४– दस्तख़त लालजी.	२२– दस्तख़त थानो कोटेर.
७– दस्तखत शवजी.	१५– दस्तख़त तजना	
८– दस्तखत मनिया.	१६– दस्तखत मनिया	

इसी क़िस्मका क़ौलनामह सिमरवाडो, देवल और नांदूके भीलोंने भी दस्तख़तसे मन्जूर किया

दस्तख़त थाजा	दस्तखत गूदड़ा	दस्तखत हीरा	दस्तख़त सुकजी.
दस्तख़त सामजी	दस्तख़त मग्गा	दस्तख़त कान्हजी.	दस्तखत धर्मा
दस्तख़त रगा.			

अह्दनामह नम्बर १४

क़ौलनामह, जो जशवन्तसिंह रावल डूंगरपुर और ऑनरेबल कम्पनीके दर्मियान, कप्तान मेक्डोनल्डकी मारिफ़त मक़ाम नीमचमें ता० २ मई सन् १८२५ ई० को तै पाया, उसका तर्जमह

१ – सर्कार अंग्रेज़ी जो कोई दीवान मुकर्रर फ़र्मायेगी, मैं उसे मन्जूर करूंगा; सब काम उसके सुपुर्द करूंगा, और किसी तरह उसमें दख़्ल न दूंगा.

२ - जो कुछ सर्कार अंग्रेजी मेरी पर्वरिशके वास्ते मुकर्रर फर्मावेगी, उसमे उज़् न होगा, और जो मकाम राज डूंगरपुरमे मेरे रहनेको तज्वीज करेगी, वहा रहूंगा.

३ - अक्सर फसाद मक्कारोकी सलाहसे मेरे मुल्कमे हुए, इसलिये मैं लिख देता हूं, कि आगेको हर्गिज उनका कहना न मानूंगा, और न खुद फसाद करूंगा, अगर मै ऐसा करूं, तो जो सज़ा सर्कार अंग्रेज़ी तज्वीज फर्मावे, वह मुझे मन्जूर होगी.

अह्दनामह नम्बर १५

सर्कार अंग्रेजी और श्री मान् उदयसिंह महारावल डूंगरपुर व उनके वारिसों और जानशीनोके बीचका अह्दनामह, जो एक तरफ लेफ्टिनेण्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन, क़ाइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट मेवाडने ब हुक्म लेफ्टिनेण्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, राजपूतानहके एजेण्ट गवर्नर जेनरलके किया, जिनको पूरा इख्तियार राइट ऑनरेबल सर जॉन लेअर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट्, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानसे मिला था, और महारावल उदयसिंहने खुद अपनी तरफ़से किया

पहिली शर्त - कोई आदमी अंग्रेज़ी या किसी दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेजी इलाक़ेमे बड़ा जुर्म करे, और डूंगरपुरकी राज्य सीमामे पनाह लेना चाहे, तो डूंगरपुरकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और दस्तूरके मुताबिक़ उसके मांगेजाने पर सर्कार अंग्रेजीको सुपुर्द करदेगी

दूसरी शर्त - कोई आदमी डूंगरपुरके राज्यका बाशिन्दह वहांके राज्यकी सीमामे कोई बडा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी मुल्कमे जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम डूंगरपुरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करदेवेगी

तीसरी शर्त - कोई आदमी, जो डूंगरपुरके राज्यकी रअ़य्यत न हो, और डूंगरपुरके राज्यकी सीमामे कोई बडा जुर्म करके फिर अंग्रेजी सीमामे आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अ़दालतमे होगी; अक्सर क़ाइदह यह है, कि ऐसे मुकद्दमोका फ़ैसला उस पोलिटिकल अफ़्सरके इज्लासमे होता है, जिसके तह्तमे वारिदात होनेके वक़्पर डूंगरपुरकी मुल्की निगहबानी रहे.

चौथी शर्त - किसी हालतमे कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बडा मुज्रिम

ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नही है, जब तक कि दस्तूरके मुताबिक खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मागे, जिसके इलाकेमे कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर जैसा कि उस इलाकेके कानूनके मुताबिक् सहीह समझी जावे, जिसमे कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा, और वह मुज्रिम करार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहीपर हुआ है

पाचवी शर्त - नीचे लिखे हुए काम बडे जुर्म समझे जावेगे -

१ - खून, २ - खून करनेकी कोशिश, ३ - वह्शियाना कत्ल, ४ - ठगी, ५-जहर देना, ६ -सख्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार), ७- जियादह जख्मी करना, ८- लडका बाला चुरा लेजाना, ९ - औरतोंका बेचना, १० - डकैती, ११ - लूट, १२-सेध (नकब) लगाना, १३ - चौपाये चुराना, १४- मकान जलादेना, १५ - जालसाजी करना, १६- झूठा सिक्कह चलाना, १७ - धोखा देकर जुर्म करना, १८- माल अस्बाब चुरालेना, १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमे मदद देना, या वर्गलाना (बहकाना)

छठी शर्त - ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमे, जो खर्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक ये बाते कीजावे

सातवी शर्त- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्त तक बरकरार रहेगा, जब तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनो सर्कारोमेसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख्वाहिश दूसरेको जाहिर न करे

आठवी शर्त - इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनो सर्कारोके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्खिलाफ़ हो

मकाम डूगरपुर, तारीख ७ मार्च सन् १८६९ ई०

(द०) ए० आर० ई० हचिन्सन, लेफ्टिनेन्ट कर्नेल,
काइम मकाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़

(द०) मेओ

(द०) महारावल, डूगरपुर

इस अह्दनामहकी तस्दीक श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने तारीख २१ एप्रिल सन् १८६९ ईसवीको मकाम शिमलेपर की

(द०) डब्ल्यु० एस० सेटन्कार,
सेक्रेटरी, गवर्मेन्ट इन्डिया, फ़ॉरेन डिपार्टमेन्ट

बासवाडाकी तवारीख

जुग्राफ़ियह

यह रियासत राजपूतानहकी छोटी रियासतोमेसे है, और उसकी दक्षिणी सीमा पर वाके है, जिसके उत्तर और पश्चिमोत्तरमे डूगरपुर व मेवाड; पूर्व और पूर्वोत्तरमे प्रतापगढ, दक्षिण तरफ मध्य प्रदेशकी एजेन्सीकी छोटी छोटी रियासते, और पश्चिम तरफ रेवा काठाका इलाकह है इसका फैलाव २३° १०′ से २३° ४८′ उत्तर अक्षांश तक और ७४° २′ से ७४° ४१′ पूर्व देशान्तर तकहै, और लम्बाई उत्तरसे दक्षिणको ४५ मील, और चौडाई पूर्वसे पश्चिमको ३३ मील है रकबह १४०० या १५०० वर्ग मील, सन् १८८१ की मर्दुमशुमारीके मुवाफिक आबादी १५२०४५ और खालिसेकी सालानह आमदनी डॉक्टर हंटरके गजेटियरके अनुसार रु० २८०००० है, जिसमेसे ५०००० रुपया सर्कार अंग्रेजीको खिराज वगैरहका दिया जाता है

बासवाडेका पश्चिमी भाग, याने राजधानी और माही नदीके बीचकी जमीन, साफ व सेराब होनेके सबब उपजाऊ (जरखेज) है, ताड और महुआके दरख़्त कस्रतसे है इस देशके चारो तरफ छोटी छोटी पहाडिया जगलसे ढकी हुई है, उत्तरकी तरफ पहाडिया कुछ कम है, लेकिन् बड़े बड़े दरख़्तोसे जंगल शोभायमान है, और यहीं भीलोकी पाले हैं ये लोग हम्वार ज़मीनके जंगल काटकर खेती करते है, लेकिन् पानीकी कमीसे खेती बन्द और बर्बादी होजाती है. मदारिया और जगमेर दो बडी पहाड़ियां है- पहिली राजधानीसे डेढ कोसके फासिलेपर है, जिसमे एक पवित्र झरना बहता है, और बहुतसे लोग उसकी पूजा करनेको जाते है; दूसरी- जगमेर, राजधानीसे थोडी दूर उत्तर तरफ वाके है, जहापर जगमालने बांसवाडा आबाद होनेके पहिले आश्रय लेकर कोट तथा गढ बनवाया था, और जिसके खंडहर अब तक मौजूद हैं. पहाडियोपर ५० फुट तक ऊंचे दरख़्त होते है. सर्दीके मौसममे दरख़्तोकी सब्जी और पहाडियोसे निकलकर वृक्षोके समूहमे बहते हुए पानी व नालोकी रवानी तथा तरह तरह के फूल व घाससे देशमे बडी रौनक दिखाई देती है. कुओमें ४० फुट नीचे पानी निकलता है यहापर कोई पक्की सडक नहीं है, पर मामूली रास्तोसे कई महीनो तक गाडी आतीजाती है, बर्सातके मौसममे कीचड़के सबब रास्तह बन्द होजाता है, नदी नाले हाथीपर बैठकर पार उतरे जाते है; माही नदीके उतारके मकामोपर बेडे भी रहते है, लेकिन् पानीकी चढ़ाईके वक्त उनसे कुछ काम नहीं निकल सक्ता.

बांसवाडेकी अक्सर ज़मीन उपजाऊ है, परन्तु पहाडियोके बीचकी धरती सख्त है जगलमे सागवान, शीशम, लादर, गोमर, हल्दू वग़ैरह बड़े बडे दरख्त पैदा होते है रियासतके उत्तरमे छोटे छोटे दरख्तोका गुजान जंगल है तलवाडा, अवलपुर और चीचमे ऐसे पत्थरकी छोटी छोटी खाने भी है, जो घर बनानेके काम आता है, लोहा कही कही निकलता है, रियासतके पश्चिमोत्तर खासकर लोहारियामे लोहा निकाला जाता था, लेकिन् अब दो वर्षसे खान बन्द होगई है, यहा पहिले सैकडो मकान थे, अब केवल २० रहगये है, मोतिया अधे बेडामे लोहेकी एक छोटी खान है.

नदी और झील

इस रियासतकी मुख्य नदी माही है, जो रतलामसे आती और उत्तर पूर्व होकर पश्चिमकी तरफ़ बहती हुई दक्षिणको जाकर बासवाडा, मेवाड और डूगरपुरकी सीमा बनती है. इस नदीमें पानी कम, लेकिन् बारहो महीने रहता है, और बर्सातमें जियादह होजाता है, इसके करारे ४० से ५० फुट तक ऊचे है, जिनपर बड़े बडे दरख्त बहुत है बासवाडेमे माहीकी मददगार दो छोटी नदिया भनदन और रायब है, जो पूर्वसे आकर मिली है, इनमे बारहों महीने पानी नही रहता, और इन दोनोके सिवा तीसरी चाप नदी राजधानीके पास माहीमे मिली है

बडी झील बासवाडेमे कोई नही है, मुख्य बाई नामी एक झील बनवाई हुई राजधानीसे पूर्वको एक कोसके फासिलेपर है, जिसकी पालपर महारावलने महल बनवाये है, इसके सिवा कई गावोमे तालाब भी है आबो हवा और बर्सातका कोई प्रमाण नही है, लेकिन् बासवाड़ेके अस्पतालके थर्मामेटरमे गर्मीके दिनोमे ९२ से १००, बर्सातमे ८० से ८३ और सर्दीमे ६५ से ७० डिगरी तक पारा पायागया है

बाला, दाद और फोडे फुन्सीकी बीमारियां बासवाडेमे बहुत होती है, और ज्वर भी बहुत फैलता है, लेकिन् सर्दीके दिनोमे और मौसमोकी बनिस्बत जियादह होता है.

इस देशकी ख़ास पैदावार मक्की, मूग, उड़द, गेहूं, जव, चना, तिल, चावल, कोदरा, और सांठा (गन्ना) है, किसी कद्र अफीम भी बोई जाती है.

डूगरपुरके मुवाफ़िक़ यहां भी तीन तरहके गाव हैं - खालिसह, जागीर और धर्म संबन्धी ख़ालिसेका हासिल कामदारोके जरीएसे जमा कियाजाता है, और जनानह व जेब ख़र्चका हासिल खास कामदारोसे वुसूल होता है; हर एक गांवकी तरफ़से पटेल रहता है, जो कामदारोसे हिसाब और खेतीका बन्दोबस्त करता है, पहिले हर एक

गाव या कई गावो पीछे रियासतकी तरफसे हासिल वुसूल करनेके लिये गामेती रहता था, लेकिन् अब गावोका हासिल थानेदारोकी मारिफत जमा होता है हासिल लेनेके लिये कोई काइदह मुकर्रर नही है, धरती न नापी जाती है, और न मालवेके मुवाफिक फी बीघेके हिसाबसे लगान लियाजाता है हासिलके सिवा ज़ुरूरतके वक्त भी किसान लोगोसे रुपया वुसूल कियाजाता है, एक महारावलके मरने और दूसरेकी मस्नद नशीनीके वक्, और महारावलकी बेटी या खास उनकी शादीके समय, जो कुछ खर्च पडता है, किसानोसे वुसूल होता है, कुवर (१), लकड़ी घोडा चराई वगैरह और भी कई लागते लीजाती है ब्राह्मणोसे दर्या बराड, व्यापारी और दूसरे लोगोसे कर यानी लगान, और चारण तथा भाटोसे घासका गाडी बराड लिया जाता है

इस रियासतमे राजपूत व भील जागीरदार है, जो खिराज देते है; सर्दारोको लडाई झगडेके वक्त जमइयत समेत मददके लिये रईसके साथ रहना पड़ता है, और अगर किसी जगहकी चढाईका काम किसी सर्दारके सुपुर्द हो, तो वे लोग अपनी जमइयत उस जगह भेजदेते है; सब सर्दार अपने अपने ठिकानोके खुदमुख्तार है, अगर रईस उनकी जागीरमे दस्तअन्दाजी करे, तो मुकाबलह करनेको तय्यार होते है देशका बडा हिस्सह भीलोसे पुर है, बासवाडेमे ब्राह्मण और राजपूतोके सिवा दूसरी १५ छोटी जाते है, खास राजधानी (बासवाडा) मे ६१९७ आदमियोकी बस्ती है भीलोके ठिकानोमे बासवाडेका दख्ल बहुत कम रहता है, उनकी पाले भी बहुत है, गमेती (गामेती) लोग वक्त मुकर्ररहपर ख़िराज दे देते है

इन्तिज़ाम

राजपूतानहकी दूसरी रियासतोके मुवाफिक यहां अदालतोका कुछ प्रबन्ध नहीं है; राजधानीमें दीवानी, फौजदारी अदालते मौजूद है; परन्तु हाकिमोके किये हुए फैसले महारावलके पास भेजेजाते है दीवानी मुकद्दमे पचायतसे फ़ैसल होते है, और फौजदारी मुकद्दमोमे मुद्दईकी तसल्ली कीजाती है ठाकुर लोग भी अपने अधिकारसे ठिकानोमे दीवानी, फौजदारी रखते है रियासतमे कई जगह थाने है, जिनमे एक थानेदार चन्द सवार व पैदलो समेत रहता है, थानेदारके इख्तियारात थोडे है शहरमे एक कोतवाल और उसके मातहत कुछ अमला है, उसको इख्तियार है, कि बद मआश लोगोको पकड़कर हाकिमोको इत्तिला देवे. बासवाड़ेमे जेलखानह नही

(१) कुंवर पदेकी लागत,

है, शहरकोटकी कोठडियोमे बडे फाटकोके पास मुजिम लोग कैद कियेजाते हैं, पर कैदकी सज़ा कम होती है, महारावल फासी देनेका भी इख्तियार रखता है.

तालीम यहां बिल्कुल कम है, सिर्फ़ राजधानीमे एक छोटीसी पाठशाला है

रियासत मे सड़के नही है, अस्बाब बैलोपर लादा जाता है पश्चिमी हिस्सेमे एक गावसे दूसरे गावको घास, लकडी वगैरह सब चीजे गाडीपर आती जाती है, बाकी और जगहोमे गाडीका नाम भी कोई नहीं जानता बासवाड़ेमे तिजारती चीजोकी आमद रफ्तका कोई मश्हूर रास्तह नही है, रतलाम और मालवासे कुशलगढके रास्ते होकर माल आता है, और प्रतापगढसे घाटोल होकर डूंगरपुरके उत्तर तरफ़ आता है एक सडक प्रतापगढसे अहमदाबाद होकर गुजरातको जाती है दूसरा रास्तह राजधानीसे डूगरपुरको जालोदसे सीधा गया है राजधानीमे एक डाकखानह कई वर्षसे नियत कियागया है.

जिला, खास कस्बे और मश्हूर मकामात

इस रियासतकी राजधानी बांसवाड़ा, शहरपनाहसे घिरी हुई है, जिसमे ६००० से जियादह आदमी आबाद है; दक्षिणकी तरफ़का शहरकोट गिरा हुआ है, और जिन पहाडियोपर शहरपनाह बनी हुई थी, वे अब जगलसे ढकरही है शहरसे दक्षिणकी तरफ एक पहाड़ीपर महल बना हुआ है, जिसका ऊचा कोट और तीन फाटक है यह मकान पुराने जमानेकी इमारतोके तर्जसे मिलता हुआ है, इसके सिवा हर एक रईसने जुदे जुदे मकानात बनवाये हैं मौजूद महारावलने भी कई इमारते तय्यार कराई है, जिनमेसे राजधानीके दक्षिणी तरफके दो मन्जिले महल 'शाही विलास' नामके उम्दह बने हुए है. पश्चिमकी तरफ जमीन हमवार है, कहीं कहीं खेती होती है, महुंएके दरख्त बहुत है ताडके दरख्तोके पीछे सघन जगल है, उत्तर और पूर्वकी तरफ बाई ताल और पहाडियोके बीचमे नदी शहरकी दीवारोके नीचे बहती है, और मैदानमे दरख्तोके बीच छोटी छोटी कई झीले देखनेमे आती है. शहरके पूर्व आध मीलपर नदीके पास एक बागमे बासवाडेके रईसोकी छत्रिया है

बांसवाड़ेके आठ हिस्से है, जो तप्पा कहलाते है, और राजधानीके हर तरफ़ रियासतकी सीमा तक चलेगये है –

१	घाटी उतार	पश्चिम.	५	महीरवाड़ा	पूर्वमे माही पार
२	लोहारिया	पश्चिमोत्तर	६	पचलवाडा	
३	चिमदा	उत्तर.	७	खांदूवाड़ा	दक्षिण.
४	भूगड़ा	पूर्वोत्तर.	८	पथोग	दक्षिण पश्चिम.

१ घाटी उतार - यह हिस्सह तलवाडाके पास पहाडियोंकी घाटीके नामसे मश्हूर है, और इसकी सीमा उसी घाटीसे रियासतकी माही नदी तक है, इसमें नीचे लिखे ठिकाने हैं -

गढी, अर्थूणा, वाकडा, टकारा, मडवा और तलवाडा, इनमें खेती करने वाले ब्राह्मण और पटैल रहते हैं, चावल, साठा (गन्ना) और अफ़ीम यहां ख़ासकर जियादह पैदा होती हैं. प्रतापपुर इस हिस्सेकी ख़ास जगह है, जिसमें पांच या छ सौ घरोंकी बस्ती है.

गढीमें भी प्रतापपुरके मुवाफ़िक़ मकान हैं, और उसके उत्तरमें चाप नदी है. अर्थूणामें ४०० घर हैं, इसके (१) पूर्वमें तीन चार कोसपर अमरावती नगरीके खंडहर और दक्षिणमें जैन मन्दिरके खंडहर वाके हैं. तलवाडामें ३०० या ४०० मकान हैं; इसके पास कितने ही टूटे फूटे पुराने मन्दिर पडे हैं, जो सिद्धपुर पट्टनके राजा अम्बरीकके बनवाये हुए कहेजाते हैं, तलवाडा घाटी पहाडियोंमें ६ मीलके करीब लम्बी है, जिसमें पुराना तालाब और मन्दिरोंके टूटे फूटे निशानात पायेजाते हैं. घाटीके बीच वाले तालाबकी निस्बत मश्हूर है, कि युधिष्ठिरके भाई भीमने अपने बारह वर्षके बनवासके समयमें उसे बनवाया था.

२ लोहारिया - रमणविलास चाडियावासके पास रावलके बनवाये हुए महलसे बांसवाडेके पश्चिमोत्तर तीन चार मील माही नदी तक चलागया है. यहांकी धरती हलकी है, चावल अच्छे पैदा होते हैं. इस हिस्सेमें ख़ास ३ गांव घनोड़ा, मोलान और मेतवाल हैं, जिनमेंसे हर एकमें तीन सौ घरके करीब आबादी है.

३ चिमदा - बांसवाडेके उत्तरमें मेवाडकी सीमा माही नदी तक चलागया है; मक्की और साठा यहां कसरतसे होता है. घाटोड गांवमें ३०० - ४०० घर हैं, इस जगह एक कामदार हासिल वुसूल करनेको रहता है. इस हिस्सेमें ६ जागीरदारोंके ठिकाने हैं.

४ भूगडा- बांसवाडेसे पूर्वोत्तर प्रतापगढ़की सीमा तक चलागया है, जहांसे मलिया और कुशलपुरके ठाकुर व सूधलपुर और मऊडीखेडाके भील सर्दार आबाद हैं, भूगडामें २०० घरकी बस्ती है.

५ महीरवाड़ा - यह हिस्सह माही नदीसे प्रतापगढ़ तक फैला हुआ है; इसमें भील रहते हैं, जिनमें महीर जातके जियादह हैं, और इसीसे यह हिस्सह महीरवाडा कहलाता है.

६ पचलवाड़ा - माही नदीके पूर्वमें रतलामकी सर्हदसे जामिला है, जिसमें ख़ासकर भील ही आबाद हैं.

---

(१) हमको इस ग्रामके पुराने खंडहरोंके मन्दिरोंमें दो प्रशस्तियां विक्रमी ११३६ और ११६६ की मिली हैं, जिनमें पवार राजाओंकी वंशावली और उनका संक्षेप हाल लिखा है, वे इस ज़िले (बागड़) का राज्य करते थे, जिससे पायाजाता है, कि सीसोदियोंसे पहिले पवार राजा इस ज़िले पर हुकूमत करते थे, लेकिन् यह मालूम नहीं, कि वे ख़ुद मुरूतार थे, या चित्तौड़के मातहत- (देखो शेष संग्रह नम्बर ६-७)

७ खांदूवाडा – बासवाडेके दक्षिणमे रतलाम तक फैला हुआ है, चार गांवोके सिवाय सबमे भील लोग रहते है खादू गांवमे करीबन् ७०० घरकी बस्ती है यहाके जागीरदार बासवाडेके अव्वल दरजहके सर्दारोमेसे है, गावके दक्षिण तरफ नदीके किनारेपर महाराजके महल है

८ पथोग– यह हिस्सह बांसवाड़ेसे दक्षिण पश्चिममे कुशलगढकी सीमा तक फैला हुआ है वरिया, अन्नजा, ट्याजा, भूकिया ठिकानेवाले जागीरदार है ननगांव, चीच, वागीदोरा, कालिञ्जा खास गाव है, पहिले तीनमे पाच पाच सौ घरकी और दूसरोमे तीन तीन सौ घरोकी आबादी है चावल, चना, गेहू और मक्की इस हिस्सेमे जियादह पैदा होते है

मेले

बासवाड़ेमे एक मेला ऑक्टोबर महीनेमे १५ रोज़ तक रहता है, जिसमे आस पासके बनिये व्यापारी लोग आते है, और अमल, नारियल, छुहारे, बम्बईका सामान और अनाज व तम्बाकू वगैरह बेचते है, व्यापारियोसे महसूल नही लियाजाता इस मेलेमे व्यापारी और खरीदार वगैरह लोग २००० के करीब जमा होते है दूसरा मेला गोतियो अबो मकामपर होता है, जहा हर साल भील लोग सौदा करनेको आते है इस मकामके लिये ऐसा भी मश्हूर है, कि यहापर युधिष्ठिरने पनाह ली थी

बासवाडेमे दस्तकारीका काम नही होता, कपडा, नारियल, छुहारा, सुपारी, काली मिर्च, तम्बाकू और नमक वगैरह चीजे गुजरातसे आती है, लेकिन् जियादह हिस्सह रतलामको जाता है

तवारीख

इस रियासतका तवारीखी हाल बहुत ही कम मिलता है, कर्नेल टॉड और कप्तान येटको भी जियादह कुछ नही मिला हमने नैनसी महता और उदयपुरके सर्कारी पुराने कागज़ातसे चुनकर कुछ हाल एकट्ठा किया है नैनसी महता लिखता है, कि चारण रुद्रदास भाणावत साइया झूलाका पोता गाव जैतारणमे विक्रमी १७१९ चैत्र [हि० १०७२ शअ्बान = ई० १६६२ मार्च] मे मिला, उसने मुझे बासवाड़ेकी तवारीख़ इस तरह लिखवाई, कि बागड़के तीन हजार पांच सौ गावोमेसे १७५० गांव बांसवाडेके क़ब्ज़ेमे रहे, जिसका जिक्र इस तरहपर है –

डूंगरपुरका रावल उदयसिंह, जो विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२८] मे चित्तौडके महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) अव्वलके साथ जाकर बयानाके पास बाबर बादशाहकी लड़ाईमें मारागया, उसके दो बेटे थे, बडा पृथ्वीराज और छोटा जगमाल, जब पृथ्वीराज डूंगरपुरकी गद्दीपर बैठा, तब जगमाल उसके बर्खिलाफ़ होकर देश बिगाडने लगा, रावल पृथ्वीराजने बड़ी जमइयत देकर चहुवान मेरा और रावत् पर्वतको भेजा, इन सर्दारोने अच्छी लडाइयां करके जगमालको मुल्कसे निकालदिया. यह वापस डूंगरपुर आये, तो इनके साथियोंमेसे किसीने जाकर रावल पृथ्वीराजसे कहा, कि जगमाल हमारे काबूमे आगया था, सो वह ज़रूर गिरिफ्तार होता, या माराजाता, परन्तु मेरा और पर्वतने जान बूझकर छोडदिया इस बातपर यक़ीन करके रावलने उन दोनो सर्दारोसे कहलाया, कि तुम नमक हराम हो, हमारे देशसे निकल जाओ, जिससे वे नाराज़ होकर जगमालके पास चलेगये, और जगमाल अपनी ताक़तको बढाकर मुल्कपर क़ब्जह करने लगा, आख़िर हिम्मत हारकर पृथ्वीराजने सुलह चाही, तब यह फ़ैसलह हुआ, कि बागड़के तीन हजार पांच सौ गांव आधे पृथ्वीराज और आधे जगमालको बांट दियेजावे, इसी तरह फ़ैसलह होगया, पृथ्वीराज डूंगरपुरके, और जगमाल बांसवाडाके रावल कहलाये

मिराति सिकन्दरीमे विक्रमी १५८८ [हि० ९३७ = ई० १५३१] मे लिखा है, कि "बहादुरशाह गुजरातीने पृथ्वीराज और जगमालको यह मुल्क बांट दिया" मेवाडकी पोथियोंमे महाराणा रत्नसिंहका बागड़के दो हिस्से करवा देना लिखा है, और कियाससे भी मालूम होता है, कि महाराणाकी जबर्दस्त हिमायतके बिना दो हिस्से होना गैर मुम्किन् था, और महाराणाको भी इनकी ताक़तका कम करना मन्ज़ूर होगा राजपूतानह गजेटियरमे बिशना भीलके नामसे बांसवाड़ेका आबाद होना क़िस्सहके तौर लिखा है, लेकिन् इसमे शक है

रावल जगमाल बडा बहादुर था, वह एक अर्से तक जिन्दह रहा, जिसने चारो तरफ़ पैर फैलाकर अपने राजको बढाया उसका बेटा प्रतापसिंह था, जिसका नाम बडवा भाटोने कृष्णसिंह लिखदिया है, लेकिन् नैनसी महता, अक्बरनामह व तुज़क जहांगीरी वगैरहसे उसका नाम प्रतापसिंह साबित होता है नैनसी महता अपनी किताबमे लिखता है, कि रावल प्रतापसिंहके कोई अस्ली बेटा नही था, और एक खवास (पद्मा बनियानी) के पेटका मानसिंह नाम लडका था; चहुवान मानसिंह वगैरह सर्दारोने उसीको बांसवाड़ेका मालिक बना दिया यह रावल मानसिंह कहीं शादी करनेको गया था, और पीछेसे खांदूके भीलोने नुक्सान किया, थोडेसे राजपूतोने बांसवाडेसे निकलकर खांदूपर छापा मारा, लेकिन् भीलोने राजपूतोके घोड़े

छीन लिये जब रावल मानसिह अपनी राजधानीमे आया, तो इस बे इज्जतीका हाल सुनकर खादूपर चढा, सैकडो भीलोको मारकर उनके सरगिरोहको गिरिफ्तार किया, जब वह कैदी भील रावल मानसिहके साम्हने आया, तब उसने किसीकी तलवार छीनकर उससे रावलको मारडाला; चहुवान मानसिहने उस भीलको भी मारा, और ये लोग बासवाडेको वापस आये राजधानीको खाली देखकर चहुवान मानसिह मुख्तार बनगया डूगरपुरके रावल सैसमल्ल (सहस्रमल्ल) ने मानसिहको लिख भेजा, कि तुमको सीसोदियोका राज नही मिल सक्ता, लेकिन् उसने कुछ खयाल नही किया, तब वह बासवाडेपर चढा मानसिहने मुकाबलह किया, और सैसमल्लको शिकस्त खाकर डूगरपुर लौटना पडा महाराणा प्रतापसिह अव्वलने भी मानसिहको निकालनेके लिये चार हजार आदमियोकी जमइयत देकर रावत् रत्नसिह काधलोत चूडावत और रावत् रायसिह खगारोत चूडावतको भेजा, लेकिन् कुछ काम्याबी हासिल न हुई, और मानसिहसे शिकस्त खाकर लौट आये तब कुल बागडके चहुवान सर्दारोने मानसिहसे कहा, कि तुमने बहुत कुछ जियादती करली, चहुवान बासवाडेके मुख्तार नहीं होसके, खैरख्वाह नौकर और मुसाहिब (भड़ किवाड़) जुरूर है, इस लिये जगमालके पोतोमेसे किसीको रावल बनाना चाहिये

तब मानसिहने जगमालके पोते, प्रतापसिहके भाई और कल्याणमल्लके बेटे उग्रसेनको गद्दीपर बिठाया, और आधा राज उसको देकर आधा अपने कब्जहमे रक्खा इसपर भी उग्रसेनको वह अपना किया हुआ रईस समझकर हकीर जानता था कुछ अर्से बाद राठौड सूरजमल्ल वगैरह राजपूतोकी मददसे मानसिहपर उग्रसेनने हमलह किया, मानसिंह भागगया, और बासवाड़ा उग्रसेनके कब्जहमे आया महाराणा प्रतापसिह अव्वल भी उसके मददगार थे, इसलिये लाचार होकर चहुवान मानसिह बादशाह अक्बरके पास पहुचा; अक्बरने मिर्जा शाहरुखको बडी फौज देकर मानसिहके साथ उग्रसेनपर विदा किया इस फौजने बासवाडा छीन लिया, लेकिन् उग्रसेनकी मददपर महाराणा प्रतापसिह अव्वल व रावल सैसमल्ल और दूसरे भी कुल राजपूत होगये, जिससे उसने बादशाही मुल्क लूटना शुरू किया, मिर्जा शाहरुख मालवेकी तरफ गया, और उग्रसेनने लौटकर बांसवाड़ेपर कब्जह करलिया कहते है कि इन लडाइयोमे चार सौ आदमी मारेगये, जिनमे जियादह मानसिंहके थे. मानसिह भी भागकर बादशाही फौजके शामिल होगया, और बासवाडा लेनेकी कोशिशमे लगा रहा बादशाही फौज बुर्हानपुरमे पहुची, तब उग्रसेनके राजपूत गागा गौड़ने चहुवान मानसिहको मारडाला, और उग्रसेन बादशाही इताअत कुबूल करके बे खटके बांसवाड़ेका राज करने लगा.

रावल उग्रसेनके बाद रावल उदयभान गद्दीपर बैठा, और उसके बाद रावल समरसी वहाका मालिक हुआ यह रावल महाराणा जगत्सिंह अव्वलके बर्खिलाफ होकर साइरके काम्दारोको अपने इलाकहसे निकालने बाद बादशाही नौकर बनना चाहता था, और देवलियाके रावत् हरीसिंहकी बहकावट और महाबतखाकी हिमायतका इन पर भी असर पहुंचा; महाराणा जगत्सिंह अव्वलने बडी फौजके साथ अपने प्रधान कायस्थ भागचन्दको भेजा, उसने बासवाडेपर घेरा डाला, और रावल समरसी भागगया छ महीने तक वह प्रधान बासवाडेपर घेरा डाले रहा, फिर देशदाण बदस्तूर जमाकर दस गाव जुर्मानेमे लेने बाद समरसीको पीछा बांसवाडेका मालिक बनाया. यह हाल बेडवासकी बावडीकी प्रशस्ति और राज समुद्रकी प्रशस्तिके पाचवे सर्गके २७ व २८ वे श्लोकसे मज्बूत होता है- (देखो पृष्ठ ३८१ और ५८९)

इनके बाद कुशलसिंह गद्दीपर बैठे, इन्होने भी उदयपुरसे आजाद होनेकी कोशिश की, लेकिन् महाराणा राजसिंह अव्वलने सत्ताईस गाव डागल ज़िलेके जब्त करलिये, और रावल कुशलसिंहसे मुचल्कह लिखवा लिया, कि इन गावोसे बिल्कुल तअ़ल्लुक नही रक्खूगा

इनके बाद रावल अजबसिंह गद्दीपर बैठे; इन्होने बादशाह आलमगीरके पास पहुचकर बादशाही नौकरी इख्तियार करली, और उसी ताकतसे अपने बापके जमानेके २७ गाव, जो महाराणाकी ज़ब्तीमे थे, उनको अपने कब्जेमे करलिया. महाराणा अमरसिंह दूसरेने बादशाहीमे अजबसिंहका कुसूर साबित करनेको कुशलसिंहका इक़ारनामह अपने वकीलोकी मारिफत बादशाहके पास भेजदिया, जिसके जवाबमें वज़ीर असदख़ाने विक्रमी १७५९ [हि० १११३ = ई० १७०२] में एक कागज महारावल अजबसिंहके नाम लिख भेजा, जिसकी नक़्ल महाराणा दूसरे अमरसिंहके हालमे लिखीगई है- (देखो पृष्ठ ७४७)

इनके बाद रावल भीमसिंह गद्दीपर बैठे, इनका हाल कुछ नहीं मिला; मालूम होता है, कि यह थोडेही अर्सेतक बांसवाड़ेकी हुकूमतपर रहे जब यह दुन्याको छोड़गये, तो उनके बेटे बिशनसिंह (विष्णुसिंह) गद्दीपर बैठे, इनका भी इरादह उदयपुरसे किनारह करनेका मालूम हुआ, तब महाराणा सग्रामसिंह दूसरेने पचोली बिहारीदासको लिख भेजा, जो उस वक़ रामपुरापर फ़ौज लेकर गया था, कि तुम वहाका काम करके लौटते हुए देवलिया, बांसवाड़ा और डूगरपुरकी तरफ होते आना. बिहारीदास मए फौजके उसी तरफ़ होकर आया, तब बांसवाड़ेके रावल बिशनसिंहको धमकाकर नज़ानेका रुक़ह लिखवाया, जिसकी नक़्ल यहां लिखीजाती है '-

रुक्केकी नक्ल

श्रीराम १

सीध श्री लीषतं राउल श्री वीसनसीघजी अप्रच, पंचोली श्री बीहारीदासजी पधारया रामपुराथी अणी वाटे पधारा, जदी गोठरा रु० २५०००) देणा, बे ईीषरे पचीस हजार देणा, हाथी १ नीजर करणो, ढील करे नही ———

मतु रावल श्री बीसनसीघजी उपर लीषु ते सही, कोल मास १ नी मास १ ग्ऐ प्र देणा स० १७७४ आसोज बद १०

बीगत रुपीआ ———

१०००० ईीपरे रुपीआ हजार दस तो मास १ मे भरणा

१५००० रुपीआ ईीषरे हजार पदरे श्री जी हजुर पगे लागे जदी अरज करे बगसांवणा

फिर महारावल बिशनसिंह महाराणाकी नौकरीमें आते जाते रहे, जब ईडरके महाराज आणन्दसिंहपर महाराणाने फौज भेजी, तो रावल बिशनसिंह नहीं गये न जाने सर्कशीसे या इस सबबसे कि उस फ़ौजका अफ्सर भीडरका महाराज था, उस फौजके शामिल न होनेपर कुछ अर्सेके बाद रावल बिशनसिंहसे जुर्मानेका रुक्कह लिखाया गया, जिसकी नक्ल नीचे लिखते हैं -

रुक्केकी नक्ल

॥ श्री ॥

लीपतं १ रु० ८५००१ रो वासवालारो तीरी नकल, ———

सबत

सीध श्री दीवाणजी आदेसातु, प्रत दुओ धाअ भाई नगजी, पचोली कान्हजी अप्रच ॥ वासवालारा रावलजी अबकै फौजम्हे न्हीं आया, जणी बाबत बेड षरचरा रु० ८५००१ अषरे रुपीआ पच्यासी हजार कीधा, सो अेबारु पेहली भरणा, षदी ६

न्ही रोकडा भरणा स १७८६ वेस्ष वीद ८ स्ले रावलजी श्री वीसनसीघजी मतो सेह श्राणु, अगरसीघ लषत

इसके बाद रावल बिशनसिहका भी देहान्त होगया, क्योंकि उदयपुरके पुराने दफ्तरकी बहीमे विक्रमी १७८९ पौष शुक्र २ [हि० ११४५ ता० १ रजब = ई० १७३२ ता० २० डिसेम्बर] को बासवाडाके रावल उदयसिहके तलवार बधना लिखा है. इस हिसाबसे उक्त मितीके पहिले रावल बिशनसिहका इन्तिकाल होगया था

इनके बाद रावल उदयसिह गद्दीपर बैठे, और उनके कोई औलाद न हुई, तब उदयसिहके बाद उनके छोटे भाई पृथ्वीराज गद्दीपर बैठे

इनके बाद विजयसिह और उनके बाद उम्मेदसिह, फिर भवानीसिह और बहादुरसिह, जिनके बाद लक्ष्मणसिह, जो अब बासवाडेके रावल है, रईस हुए

इनमेसे रावल विजयसिहके वक्त विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] मे जब महाराणा भीमसिह ईडर शादी करनेको गये, तो पीछे लौटते हुए डूगरपुरसे फ़ौज खर्च लेकर बांसवाडेकी तरफ़ रवानह हुए, उस वक्त रावल विजयसिहने ठाकुर जोधसिहको भेजकर महाराणाको तीन लाख रुपया फौज खर्चका देना कुबूल किया इस बातसे महाराणा माही नदीके किनारेसे उदयपुरकी तरफ़ लौटगये

उसके बाद महारावल उम्मेदसिहने ब्रिटिश गवर्मेंटके साथ अह्दो पैमान किया राजपूताना गजेटियर जिल्द १ के पृष्ठ १०५ मे यहाका तवारीखी हाल इस तरहपर लिखा है -

"जगमालसे छठी पुश्तमे समरसिंह था, जिसने प्रतापगढके रईसपर फ़त्ह पाई, और अपने मुल्ककी तरक्की की इसके बाद उसका पुत्र कुशलसिह हुआ, जो भीलोसे बारह वर्ष तक लड़ता रहा, और अपने इलाक़ेमे कुशलगढ वगैरह मशहूर जगहोकी बुन्याद डाली"

"ईसवी १७४७ [वि० १८०४ = हि० ११६०] मे पृथ्वीसिह गद्दीपर बैठा, जिसने बांसवाडेकी शहर पनाह बनवाई, सोठ मकामको लूटा, और बांसवाडेके दक्षिण पूर्व चिलकारी स्थानको अपने कब्ज़हमे किया आखिर सदीमे यह सब देश या कुछ कमोबेश मरहटोके क़ब्ज़हमे गया, जिन्होने रईसोसे खूब धन लिया, और उनके साथियोने मन माना लूटा; मरहटोसे जो कुछ बचरहा, उसे उन लोगोके गिरोहने लूटलिया, जो किसीके हुक्ममे न थे, और जिन्होने देशको दु ख सागरमे डबोदिया."

"ईसवी १८१२ [वि० १८६९ = हि० १२२७] मे बासवाडेके रईसने जुदी रियासत ठहराली, और सर्कार ब्रिटिशको खिराज देनेकी दर्ख्वास्त की, पर शर्त यह थी, कि मरहटे देशसे निकाल दियेजावे, लेकिन् ईसवी १८१८ [वि० १८७५ = हि० १२३३] तक कोई सबध ठीक नहीं रहा, इसी सालमे यह अह्द ठहरा, कि सर्कार ब्रिटिशकी हिफाजत और मददके सबब रावल, सर्कारकी मातह्ती करे, तो सर्कारकी सलाहके साथ रियासतका काम करेगे, दूसरी रियासतसे सम्बन्ध न रक्खेगे, खिराज सर्कारको देगे, और जुरूरतपर सिपाह भी देगे. यह अह्द वकीलकी मारिफत हुआ था, जिसको रावलने नहीं माना इसके बाद दूसरा अह्दनामह ईसवी १८१८ नोवेम्बर [वि० १८७५ कार्तिक = हि० १२३४ मुहर्रम्] मे कियागया इस अह्दनामहमे यह लिखागया, कि महारावल सर्कार अंग्रेजीको सब खिराज धार या दूसरी रियासतका अदा करे, और माल गुजारीका तीन आठवा हिस्सह हर साल दिया करे सर्कार अंग्रेजी रावलके बिगडे हुए भाई बेटोको उसके आधीन करदेवे पीछेके एक अह्दनामहमे सालानह खिराज पैंतीस हजार रुपया मुकर्रर कियागया उसके बाद फिर जुरूरी खर्चके लिये रुपया बढ़ा दियागया "

महारावल लक्ष्मणसिंह

विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४१] के बाद, जिसका खास वक्त कई बार दर्याफ्त करनेपर भी नही मिला, गोद लिये जाकर मस्नद नशीन हुए इनके गद्दी बैठनेपर खादूके ठाकुरने अपने बेटेके गद्दी बैठनेके वास्ते दावा किया था, लेकिन् उसके मामूली खिराजमेसे तेरह सौ रुपया सालानह कम होजानेपर वह चुप हो बैठा. महारावलकी कम उम्रीमे कई साल तक मुन्शी शहामतअलीखा वगैरहने सर्कारी तरफसे काम किया; फिर उनको होशयार होनेपर इख्तियार मिल गया.

मौजूद महारावलके अह्दमे प्रतापगढ वगैरहसे सर्हदी झगड़े और मातह्त सर्दारोंसे बहुतसी अन्दरूनी तक्रारे पेश आई, जिनमें अक्सर बासवाडेका नुक्सान हुआ. सर्कारी तह्कीकातमें गाव बोरी रीचेडीके फसादमें बासवाड़ेकी ज़ियादती पाई गई, जिससे वहांका काम्दार चमनलाल कोठारी दस हजार रुपया जुर्मानह लिये जाने बाद दस वर्षके लिये मुल्कसे निकाल दियागया. गाव अजन्दा भी तह्कीकात होने बाद बांसवाड़ेके कब्जहसे निकालकर प्रतापगढ़ वालोंको दिलाया गया. इसकी

बाबत बासवाडेसे पेश कियेहुए कागजात जाली साबित होनेपर सर्कारकी नाराज़गी, और रियासतकी बहुत बदनामी हुई

विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] मे थानह कालिन्जरेका बडा मुकदमह फैला, कि इस मकामसे एक सगीन मुज्रिम किसी तरह निकल गया, राज वालोने उसके भगा लेजानेका इल्जाम राव कुशलगढपर लगाया कर्नेल निक्सन पोलिटिकल एजेन्ट मेवाडने भी इस दावेके मुवाफिक राय देदी, जिससे सर्कारी हुक्मके मुवाफिक कुशल-गढपर जब्ती पहुची, लेकिन् रावने अपने बेकुसूर होनेकी बाबत बहुत कोशिश की, और दोबारह तहकीकातमे कर्नेल हचिन्सन पोलिटिकल एजेन्ट मेवाडने रावको सच्चा करार दिया तीसरी बार जियादह खोज और तस्दीकके लिये कर्नेल मेकेन्जी वगैरह कमानियर (कमाडर) खैरवाडाके नाम तहकीकातका हुक्म हुआ वह कई महीने तक मौके पर सुबूत वगैरहको तलाश करते रहे आखिरकार डूगरपुरके काम्दारोकी मारिफत बासवाडेके काम्दार केसरीसिह कोठारीने तमाम अस्ली अह्वाल कर्नेल साहिबसे जाहिर करदिया, और महारावलसे भी किसी तौरपर तह्रीरी इक्रार करादिया, कि मुज्रिमका भागना कुशलगढकी मददसे न था, राजके अह्ल्कारोकी गफ्लतसे जुहूरमे आया, और इस मुआमलहमे काम्दारोने सब कार्रवाई महारावलके हुक्मसे की है इस मुकद्दमहकी मुफस्सल रिपोर्ट कर्नेल साहिबने सद्रको भेजदी, जिसपर बासवाडेकी तरफसे बहुत बे एतिबारी पैदा होकर विक्रमी १९२६ पौष [हि० १२८६ शव्वाल = ई० १८७० शुरू जैन्युअरी] से एक खास सर्कारी अफ्सर असिस्टेंट पोलिटिकल एजेन्ट मेवाडके नामसे बासवाडेमे तईनात कियागया, जो बासवाड़े और प्रतापगढके सर्हदी मुकद्दमो और जागीरदारोके सगीन झगडोका निगरा रहकर फैसलह किया करे इस मह्कमहका खर्च, जिसकी तादाद पन्द्रह हजार रुपया सालानह है, मामूली खिराजके सिवा हमेशहके वास्ते बासवाडेपर जुर्मानहके तौर डालागया.

विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] मे गढीके ठाकुर चहुवान रत्नसिहने, जो अस्सी हजार सालानहका जागीरदार है, सर्कशी की, उसने महाराणा शभूसिहको अपनी बेटी ब्याहकर उनसे रावका खिताब महारावलकी बगैर इजाजत हासिल करलिया था महारावलने बासवाडेमे उसके बाग़का एक हिस्सह सडक बनानेके बहानेसे दबाकर उसके इलाकहमे राहदारीका महसूल, जो उसके बयानके मुवाफ़िक़ मुआफ था, जारी करदिया; लेकिन् दूसरे ठाकुरोने नर्मीके साथ फैसलह करादिया, महारावलने मेवाडका दिया हुआ रावका खिताब ठाकुरके नामपर बहाल रखकर बाग़ और दाग़के एवज कुछ रुपया देदिया, और रत्नसिहको अपना दीवान बनालिया

दूसरे कई जागीरदारोंपर बगैर दर्याफ्त गोद लिये जानेपर महारावलने सज़ा तज्वीज़ की थी, लेकिन् पोलिटिकल अफ्सरने हिदायत करदी, कि राजको मुल्की कार्रवाईके सिवा कौमी बातोंमें दख्ल देनेका इख्तियार नहीं है

महारावल लक्ष्मणसिंह, जिनको चालीस बरससे ज़ियादह अर्सा राज करते गुज़रा, पुरानी चालके रईस हैं, उनको इल्मका शौक़ है, और अपने बेटोंको भी किसी क़द्र हिन्दी व फ़ार्सी तालीम दिलाई है राज बांसवाडेके खालिसहकी आमदनी दो लाख रुपया सालानह और इससे कुछ ज़ियादहकी जागीर सर्दारोंके क़ब्ज़हमें है, तीस हज़ार सालानहके गांव ब्राह्मण, चारण और अह्लकारों वगैरहको बटे हुए है इस रईसको गोद लेनेका इख्तियार और १५ तोपकी सलामी है, लेकिन् सर्कारी नाराज़गीके सबब मौजूद महारावलकी ज़ाती सलामी कुछ अर्सेके लिये १३ तोप करदी गई थी.

एचिसन्की अह्दनामोंकी किताब जिल्द ३,
अह्दनामह नम्बर १६

अह्दनामह ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनी और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाडा और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान, ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी तरफ़से मिस्टर चार्ल्स थियोफिलस मॅटकॉफ़की मारिफ़त, पूरे इख्तियारके साथ, जो उनको श्रीमान मार्क्विस हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरलसे मिले थे, और महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुरकी तरफ़से रत्नजी पंडितकी मारिफ़त, जो उनकी तरफ़से पूरे इख्तियार रखता था, तै पाया.

शर्त अव्वल- दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और नेक निय्यती आपसमें सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाडा और उसके वारिसों व जानशीनोंके हमेशह क़ाइम और जारी रहेगी, और एक फ़रीक़के दोस्त व दुश्मन दूसरेके भी दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे

शर्त दूसरी- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह राज और मुल्क बांसवाड़ेकी हिफ़ाज़त करेगी.

शर्त तीसरी- महारावल, उसके वारिस और जानशीन हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके साथ इताअ़त और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, उसकी हुकूमतको बड़ा क़बूल करेंगे, और आगेको किसी दूसरे रईस या रियासतसे वासितह न रक्खेंगे.

शर्त चौथी- महारावल, उसके वारिस व जानशीन अपने कुल राज्य और

मुल्कके हाकिम रहेंगे, और सर्कार अंग्रेजीकी दीवानी व फ़ौज्दारीका इन्तिज़ाम वहां दाख़िल न होगा

शर्त पांचवीं - राज बांसवाड़ेके मुआमले अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहसे तै पावेंगे, लेकिन् सब बातोंमें अंग्रेज़ी सर्कार महारावलकी मर्ज़ीका लिहाज़ फ़र्मावेगी

शर्त छठी - महारावल, उसके वारिस और जानशीन अंग्रेज़ी सर्कारकी मंज़ूरी बग़ैर किसी ग़ैर रईस या रियासतके साथ दोस्ती या इत्तिफ़ाक़ न रक्खेंगे, मगर उनकी दोस्तानह लिखा पढ़ी अपने दोस्त और रिश्तह्दारोंके साथ जारी रहेगी

शर्त सातवीं- महारावल, उसके वारिस व जानशीन किसी पर ज़ियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफ़ाक़न् किसीके साथ तक़ार पैदा होगी, तो उसका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीके सुपुर्द होगा.

शर्त आठवीं- महारावल, उसके वारिस व जानशीन अंग्रेज़ी सर्कारको अपनी आमदनीमेंसे छ आने फ़ी रुपयेके हिसाबसे ख़िराज अदा करेंगे

शर्त नवीं- ज़रूरतके वक्त मांगनेपर रियासत बांसवाड़ा अपनी फ़ौज सर्कार अंग्रेज़ीकी नौकरीके लिये अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ देगी

शर्त दसवीं- यह दस शर्तोंका अह्दनामह तय्यार होकर उसपर चार्ल्स थियोफ़िलस मॅटकॉफ़ और रत्नजी पंडितके दस्तख़त व मुहर हुए, और उसकी नक़्लें हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और महारावल उम्मेदसिंहकी तस्दीक़ की हुई आजकी तारीख़से दो महीनेके अन्दर आपसमें एक दूसरेको दीजायेंगी.

मक़ाम दिहली, तारीख़ १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई०

रत्नजी पंडितकी मुहर	दस्तख़त- सी० टी० मॅटकॉफ़ दस्तख़त- हेस्टिंग्ज़
कंपनीकी मुहर	दस्तख़त- जे० डाउड्ज़वेल दस्तख़त- जे० स्टुअर्ट. दस्तख़त- सी० एम० रिकेट्स

गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें तारीख़ १० ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें तस्दीक़ किया

दस्तख़त - जे० ऐडम,
चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेंट.

बाकी शर्तें अहूदनामहकी, जो १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई० को ऑनरेबूल अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय राया महारावल श्री उम्मेदसिंह बहादुर रईस बांसवाड़ाके तै हुआ

जो कि महारावल बयान करते है, कि उन्होंने अब तक किसी रईसको मुकर्रर खिराज नहीं दिया, इस वास्ते यह इक्रार किया जाता है, कि अगर कोई रईस इस बाबत अपना दावा पेश करे, और उसका सुबूत दे, तो ऐसे दावोंका फ़ैसलह सर्कार अंग्रेज़ीकी सर्पंचीके सुपुर्द होगा

मकाम दिहली, ता० १६ सेप्टेम्बर सन् १८१८ ई०

दस्तखत - सी० टी० मॅटकॉफ़. [बड़ी मुहर.]

[पंडित रत्नजीकी मुहर]

दस्तखत - हेस्टिंग्ज.

दस्तख़त - जे० डाउड्जवेल.

[कंपनीकी मुहर]

दस्तखत - जे० स्टुअर्ट.

दस्तख़त - सी० एम० रिकेट्स

हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें ता० १० ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को मकाम फ़ोर्ट विलिअममें तस्दीक किया

दस्तखत - जे० ऐडम,

चीफ़ सेक्रेटरी गवर्मेंट.

अहूदनामह नम्बर १७

अहूदनामह ऑनरेबूल ईस्ट इण्डिया कंपनी और राय रायां महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ा और उनके वारिसों व जानशीनोंके दर्मियान, ऑनरेबूल ईस्ट इण्डिया कंपनीकी तरफ़से कप्तान जेम्स कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त, जिसको ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० मोस्ट नोबूल गवर्नर जेनरलके एजेंटकी तरफ़से हुक्म मिला था, और राय राया महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ाकी मारिफ़त, जो अपनी और अपने वारिस व जानशीनोंकी तरफ़से मुख्तार थे, तै पाया ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कमको कुल इख्तियार इस मुआमलेमें मोस्ट नोबूल फ्रांसिस मार्किस हेस्टिंग्ज के० जी० की तरफ़से, जो

हिज ब्रिटैनिक मॅजिस्टीकी प्रिवी कौन्सिलके मेम्बर थे, और जिनको ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमत और उसकी कार्रवाईके लिये मुकर्रर किया था, हासिल हुए थे

शर्त अव्वल – दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और आपसकी खैरख्वाही सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाडा और उसके वारिस व जानशीनोंके हमेशह काइम और जारी रहेगी, और दोस्त व दुश्मन दोनों फ़रीक़के आपसमें एकसे समझे जायेंगे

शर्त दूसरी – अंग्रेज़ी सर्कार वादह फ़र्माती है, कि वह राज्य और मुल्क बांसवाड़ेकी हिफ़ाज़त करेगी

शर्त तीसरी – महारावल, उसके वारिस और जानशीन हमेशह सर्कार अंग्रेज़ीके साथ इताअत और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, उसकी हुकूमत और बुज़ुर्गीका इक्रार करेंगे, और आगेको किसी रईस या रियासतसे तअल्लुक़ न रक्खेंगे

शर्त चौथी – महारावल, उनके वारिस और जानशीन अपने राज्य और मुल्कके पूरे हाकिम रहेंगे, और अंग्रेज़ी दीवानी और फ़ौज्दारीका इन्तिज़ाम वहां दाख़िल न होगा

शर्त पांचवीं – राज बांसवाड़ेके मुआमले अंग्रेज़ी सर्कारकी सलाहसे तै पावेंगे, और सब बातोंमें अंग्रेज़ी सर्कार महारावलकी मर्ज़ीका लिहाज़ फ़र्मावेगी

शर्त छठी – महारावल, उनके वारिस और जानशीन सर्कार अंग्रेज़ीकी मन्ज़ूरी बग़ैर किसी रियासतके साथ इत्तिफ़ाक़ या दोस्ती न रक्खेंगे, लेकिन् उनकी दोस्तानह तह्रीर अपने दोस्त व रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी

शर्त सातवीं – महारावल, उनके वारिस व जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफ़ाक़न् किसीके साथ झगड़ा होजायेगा, तो उसका फ़ैसलह अंग्रेज़ी सर्पंचीके सुपुर्द होगा

शर्त आठवीं – महारावल, उनके वारिस व जानशीन वादह करते हैं, कि जो वाजिबी ख़िराज रियासत धार या किसी और का, जो अबतक देनेके लाइक़ होगा, वह अंग्रेज़ी सर्कारको सालानह क़िस्त बन्दीके साथ मुनासिब वक़्तोंमें अदा किया जायेगा, और ये क़िस्तें अंग्रेज़ी सर्कार रियासतकी हैसियतके मुवाफ़िक़ मुक़र्रर फ़र्मावेगी

शर्त नवीं – महारावल, उनके वारिस और जानशीन वादह करते हैं, कि वह हिफ़ाज़तके एवज़में सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज दिया करेंगे, और यह ख़िराज हर बरस मुल्क बांसवाड़ेका तरक़्क़ीके मुवाफ़िक़ बढ़ता जायेगा, जिस क़द्र कि सर्कार अंग्रेज़ी

हिफ़ाज़तके ख़र्चेकी बाबत काफ़ी ख़याल फ़र्मावे, लेकिन् वह किसी हालतमे आमदनी रियासतपर छ आने फ़ी रुपयेसे ज़ियादह न हो

शर्त दसवीं- महारावल, उनके वारिस व जानशीन वादह करते है, कि राजकी फ़ौज हमेशह अंग्रेज़ी सर्कारके इख़्तियारमे रहेगी

शर्त ग्यारहवीं - महारावल, उनके वारिस व जानशीन इक़ार करते है, कि वह हर्गिज़ किसी अरब, मकरानी, सिंधी या गैर मुल्कके सिपाहीको अपनी फ़ौजमे, देशी लोगोके सिवा, भरती न करेंगे

शर्त बारहवीं- सर्कार अंग्रेज़ी वादह फ़र्माती है, कि वह महारावलके किसी रिश्तहदारको, जो उनसे बागी होगा, मदद न देगी, बल्कि महारावलको ऐसा सहारा देगी, कि सर्कश उनका फ़र्माबर्दार बनजावे

शर्त तेरहवीं- महारावल इस अह्दनामहकी नवीं शर्तमे वादह करते है, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको ख़िराज दिया करेंगे, बस उसके इत्मीनानके वास्ते इक़ार करते है, कि ख़िराज अदा न होनेकी हालतमे एक मोतमद सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से बांसवाडेमे तईनात हो, जो चबूतरे और दूसरे मातहत नाकोकी आमदनीसे बाकि-यातका रुपया वुसूल करे

यह तेरह शर्तोंका अह्दनामह आजकी तारीख़ कप्तान जे० कॉलफ़ील्डकी मारिफ़त, ब्रिगेडिअर जेनरल सर जे० माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० के हुक्मसे, ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी तरफ़से, और राय राया महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाडाकी मारिफ़त ख़ुद उनकी और उनके वारिसो व जानशीनोकी तरफ़से ख़त्म हुआ, कप्तान कॉलफ़ील्डने उसकी एक नक़ल ज़बान अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमे दस्तख़ती और मुहरी अपनी महारावल श्री उम्मेदसिंहको दी, और एक नक़ल उनकी दस्तख़ती और मुहरी आप ली

कप्तान कॉलफ़ील्ड वादह करते है, कि एक नक़ल मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल बहादुरकी तस्दीक कीहुई बिल्कुल इस अह्दनामहकी नक़लके मुवाफ़िक, जो अब तै पाया है, महारावल श्री उम्मेदसिंहको इस अह्दनामहकी तारीख़से दो महीनेके अन्दर दीजावेगी, और जो नक़ल कप्तान कॉलफ़ील्ड साहिबने अपनी दस्तख़ती और मुहरी दी है, वह उस वक्त वापस होगी

यह अह्दनामह महारावल श्री उम्मेदसिंहने अपनी मर्ज़ी और ख़्वाहिशसे तन्दुरुस्ती और अक़्लकी दुरुस्तीकी हालतमे ख़त्म किया है.

मकाम बांसवाड़ा, ता० २५ डिसेम्बर, सन् १८१८ ई० मुताबिक् २४ सफर, सन् १२३४ हिज्री, और मुताबिक १३ पौष, संवत् १८७५ विक्रमी

कम्पनीकी मुहर	दस्तखत - जे० कॉलफील्ड दस्तखत - हेस्टिंग्ज़

दस्तखत - जे० डाउड्ज़वेल दस्तखत - जेम्स स्टुअर्ट दस्तखत - ऐडम	गवर्नर जेनरलकी छोटी मुहर

गवर्नर जेनरलने कौन्सिलमें ता० १३ फेब्रुअरी सन् १८१९ ई० को तस्दीक किया

दस्तखत- सी० टी० मॅटकॉफ़,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट

अहदनामह नम्बर १८

गवर्मेंट अंग्रेज़ी और महारावल श्री भवानीसिंह रईस बांसवाड़ाके दर्मियान

जो कि उस अह्दनामहकी आठवीं शर्तमें, जो सर्कार अंग्रेज़ी और महारावल श्री उम्मेदसिंह रईस बांसवाड़ाके दर्मियान, ता० २५ डिसेम्बर सन् १८१८ ई० मुताबिक पौष कृष्ण १३ संवत् १८७५ को तै हुआ, उक्त रावलने यह शर्त की है, कि वह सर्कार अंग्रेज़ीको रियासत धार और दूसरे ठिकानोंका तमाम बाकी ख़िराज, जो अह्दनामहकी तारीख़ तक वाजिबी होगा, सालानह क़िस्तबन्दीके साथ देंगे, और क़िस्तें मुनासिब समझकर अंग्रेज़ी सर्कार मुकर्रर फ़र्मावेगी, और जो कि सर्कार अंग्रेज़ीने रियासतकी तबाही और रावलकी कम आमदनीके ख़यालसे पैंतीस हज़ार रुपया सालिमशाही, जो मुल्ककी एक सालकी आमदनीके बराबर है, आठवीं शर्तमें बयान कीहुई तमाम बाक़ियातके एवज मन्ज़ूर किया, इस वास्ते महारावल इस तह्रीरके ज़रीएसे वादह करते हैं, कि वह अंग्रेज़ी सर्कारको नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ ज़िक्र किया हुआ रुपया अदा करेंगे

मिती फाल्गुन् संवत् १८७६ मुताबिक् फ़ेब्रुअरी सन् १८२० ई० रु० १५००

मिती वैशाख सुदी १५ संवत् १८७७ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२० ई० रु० १५००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७७ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२१ ई०
रु० २५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७८ मुताबिक एप्रिल सन् १८२१ ई०
रु० २५००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७८ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२२ ई०
रु० ३०००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७९ मुताबिक एप्रिल सन् १८२२ ई०
रु० ३०००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७९ मुताबिक् जैन्युअरी सन् १८२३ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८८० मुताबिक एप्रिल सन् १८२३ ई०
रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८८० मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२४ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८८१ मुताबिक एप्रिल सन् १८२४ ई०
रु० ३५००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८८१ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२५ ई०
रु० ३५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८८२ मुताबिक् एप्रिल सन् १८२५ ई०
रु० ३५००

और जो कि उक्त अह्दनामहकी नवी शर्तमें महारावल वादह करते है, कि वह सर्कार अंग्रेजीको हिफाजतके एवज एक खिराज मुल्ककी हैसियतके मुवाफिक् देंगे, मगर वह किसी हालतमे आमदनी मुल्कपर छ· आने फ़ी रुपयेसे जियादह न होगा, और जो कि गवर्मेंट अंग्रेजीकी बिल्कुल दिली ख्वाहिश यह है, कि रियासत रावलकी दुरुस्ती और बिहतरी बहुत जल्द हो, इस वास्ते उसने तज्वीज़ फर्माई है, कि वाजिब रुपयेकी तादाद बाबत सन् १८१९ ई० व सन् १८२० ई० व सन् १८२१ ई० के करार पावे, और महारावल इक्रार करते है, कि वह बयान किये हुए रुपयोकी बाबत नीचे लिखे मुवाफिक रुपया अदा किया करेंगे –

मिती फाल्गुन् संवत् १८७६ मुताबिक् फेब्रुअरी सन् १८२० ई०
रु० ८५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७७ मुताबिक एप्रिल सन् १८२० ई० रु० ८५००

कुल बाबत सन् १८१९ ई० रु० १७०००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७७ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२१ ई० रु० १००००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७८ मुताबिक एप्रिल सन् १८२१ ई० रु० १००००

कुल बाबत सन् १८२० ई० रु० २००००

मिती माघ सुदी १५ सवत् १८७८ मुताबिक जैन्युअरी सन् १८२२ ई० रु० १२५००

मिती वैशाख सुदी १५ सवत् १८७९ मुताबिक एप्रिल सन् १८२२ ई० रु० १२५००

कुल बाबत सन् १८२१ ई० रु० २५०००

यह बन्दोबस्त सिर्फ तीन वर्षके वास्ते है, बाद इस मुद्दत गुजरनेके सर्कार अंग्रेजी नवीं शर्त अह्दनामहकी तह्रीरके मुवाफिक ऐसा बन्दोबस्त फर्मावेगी, जैसा उसके नज्दीक ईमान्दारीकी रूसे रावलके मुल्ककी हैसियतके मुवाफिक और दोनो तरफ़की बिह्तरीके लिये मुनासिब समझा जायेगा

यह अह्दनामह बासवाडा मकामपर कप्तान ए० मॅक्डोनल्डकी मारिफत जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस० वगैरहके हुक्मसे, जो अंग्रेजी सर्कारकी तरफसे कारबन्द थे, और महारावल श्री भवानीसिंहकी मारिफत, जो अपनी रियासतकी तरफसे मुख्तार थे, ता० १५ फेब्रुअरी सन् १८२० ई० मुताबिक फाल्गुन् सुदी २ सवत् १८७६ विक्रमी और मुताबिक २६ वीं रबीउ़स्सानी सन् १२३६ हिज्रीको तय्यार हुआ.

रावलकी मुहर

दस्तख़त - ए० मॅक्डोनल्ड,
असिस्टेंट, सर जॉन माल्कम.

अह्दनामह नम्बर १९

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेज़ी गवर्मेन्ट और श्री मान लक्ष्मणसिंह, महारावल

बासवाडा व उनकी औलाद् वारिसो व जानशीनोके. जो एक तरफ़ लेफ्टिनेन्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन, काइम मकाम पोलिटिकल एजेन्ट मेवाडने बहुक्म लेफ्टिनेन्ट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी० के किया, जो राजपूतानाकी रियासतोके लिये गवर्नर जेनरलके एजेन्ट थे, और जिनको पूरे इस्तियारात हिज एक्सिलेन्सी राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बार्ट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दसे मिले थे, और दूसरी तरफ़ महारावल लक्ष्मणसिंहने खुद अपनी तरफ़से किया

शर्त पहली – कोई शख्स अंग्रेजी या गैर इलाकेका रिआया अंग्रेजी इलाकेमे कोई बडा जुर्म करके बासवाडा इलाकेकी हद्दमे कही आश्रय लेवे, तो उसको बासवाडेकी सर्कार गिरिफ्तार करेगी, और सर्कार अंग्रेजीको सपुर्द करेगी, जब कि सरिश्तेके मुवाफ़िक वह तलब किया जायेगा

शर्त दूसरी – कोई शख्स बासवाडेकी रिआया बांसवाडाके इलाकेकी हद्दमे बडा जुर्म करके अंग्रेजी इलाकेमे आश्रय लेवे, तो सरिश्तेके मुताबिक दर्ख्वास्त करनेपर सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और बासवाडेकी सर्कारके सुपुर्द करेगी

शर्त तीसरी – कोई शख्स जो बासवाडेका बाशिन्दा न हो, और बासवाडा इलाकेकी हद्दमे कोई भारी जुर्म करे, और अंग्रेजी इलाकेमे आश्रय लेवे, तो वह गिरिफ्तार कियाजायेगा, और मुकद्दमेकी रूबकारी ऐसी अदालतमे होगी, जिसे कि सर्कार अंग्रेजी मुकर्रर करे अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुकद्दमोकी तहकीकात उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमे होगी, जिसकी सुपुर्दगीमे बासवाडेकी पोलिटिकल निगहबानी रहे

शर्त चौथी – किसी हालतमे कोई सर्कार किसी शख्सको, जिसपर किसी बड़े जुर्मका इल्जाम लगाया गया हो, सुपुर्द करनेके लिये मज्बूर न होगी, जब तक कि सरिश्तेके मुवाफिक वह सर्कार, जिसके इलाकहमे जुर्म किया गया हो, दर्ख्वास्त न करे, या इस्तियार न दे, और जुर्मकी ऐसी गवाही होनेपर, जैसे कि उस मुल्कके कानूनोके मुताबिक, जिसमे कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरे, और जुर्मकी पुख्तगी हो, गोया कि जुर्म वहीपर किया गया हो

शर्त पाचवी – नीचे लिखे हुए जुर्म भारी जुर्म करार दियेगये है –

१– खून, २– खून करनेकी कोशिश, ३– वह्शियाना कत्ल, ४– ठगी, ५– ज़हर देना, ६– सख्तगीरी, याने जबर्दस्ती व्यभिचार, ७– शदीद ज़रर पहुचाना,

८- लड़का चुराना, ९- औरतोंका बेचना, १०- डकैती, ११- लूट मार, १२- मकानमें सेंध लगाना, १३- चौपाये जानवर चुरा लेजाना, १४- मकान जलाना, १५- जाली दस्तखत बनाना, १६- झूठा सिक्कह बनाना, १७- धोखा देकर जुर्म करना, १८- माल अस्बाब चुरा लेजाना, १९- ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना

शर्त छठी- मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने या इन शर्तोंके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करनेमें, जो खर्च लगेगा, वह उस सर्कारको देना पड़ेगा, जिसकी दर्ख्वास्तसे यह काम किया जावे

शर्त सातवीं- यह अह्दनामह उस वक्त तक जारी रहेगा, जब तक कोई एक फ़रीक़ इसके खत्म करनेकी ख्वाहिश दूसरेसे न ज़ाहिर करे

शर्त आठवीं- इस अह्दनामहकी किसी बातका असर पहिलेके अह्दनामोंपर कुछ नहीं होगा, जो कि दोनों फ़रीक़में काइम हैं, सिवाय उसके, जो कि इसकी शर्तोंके बर्खिलाफ़ हो

मक़ाम बांसवाड़ा, ता० २४ डिसेम्बर सन् १८६८ ई०

[मुहर] दस्तखत- ए० आर० ई० हचिन्सन्, लेफ्टिनेन्ट कर्नेल,

[मुहर] काइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़

[मुहर] और दस्तख़त- महारावल, बांसवाड़ा

दस्तखत- मेओ

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान वाइसरॉय गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानने, मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें, ता० ५ मार्च सन् १८६९ ई० को की

[मुहर] दस्तखत डब्ल्यु० एस० सेटन् कार,

सेक्रेटरी गवर्मेंट ऑव इन्डिया,

फ़ॉरेन् डिपार्टमेन्ट

देवलिया याने प्रतापगढकी तवारीख

इस रियासतका हाल यहांपर इसलिये दर्ज कियागया है, कि महाराणा दूसरे अमरसिंह व संग्रामसिंहके अहद हुकूमतमे देवलियाके महारावत् बादशाही हिमायतसे दोबारह मेवाडकी मातहतीमे लाये गये थे; लेकिन् अब यह रियासत राजपूतानहकी छोटी अलहदह रियासतोमेसे एक गिनी जाती है

जुग्राफियह (१)

प्रतापगढका राज्य २४° १८′ से लेकर २३° १७′ उत्तर अक्षांश तक और २४° ३१′ से ७५° ३′ पूर्व देशान्तर तक फैला हुआ है, इसकी जियादह लबाई उत्तरसे दक्षिणको ६७ माइल और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिम तक ३३ माइल; और कुल रकबह १४५० वर्ग माइलके करीब है यह रियासत पश्चिमोत्तरमे मेवाड, पूर्वोत्तरमे सेंधियाके जिले नीमच व मन्दसौर, पूर्व दक्षिणमे जावरा व पीपलोदा, दक्षिण पश्चिम और पश्चिममे रियासत बासवाडासे घिरी हुई है

प्रतापगढका ज़ियादह हिस्सह जिसमे राजधानीके पूर्व और दक्षिण पूर्वके बीचकी ज़मीन चौडी खुली हुई अच्छी काली मिट्टीकी है, जो भूरे रगकी सुर्खी माइल रगसे मिली हुई है, जैसी कि मालवाके ऊचे मैदानके बाज हिस्सोकी, और कहीं कही बहुत पथरीली है; घाटोकी एक कतार करीब क़रीब ठीक उत्तर और दक्षिण, बासवाडाके जंगलोमेके झुकावको जाहिर करती है इस राज्यका पश्चिमोत्तरी भाग पुरानी राजधानी कस्बे देवलियासे मेवाड़की सीमा तक जगल व पहाडियोसे ढका हुआ और करीब करीब बिल्कुल भीलोसे आबाद है. इसीतरह अक्सर पहाडियो व जगलोके सिवा कुल इलाकहमे कुछ नहीं नजर आता; जहापर जगलोके दरख्त कटगये है, वहांपर थोडीसी भीलोकी झोपड़िया है.

---

(१) यह बयान कप्तान सी० ई० येट साहिब बहादुरके बनाये हुए राजपूतानह गज़ेटियरके पृष्ठ ७७ से तर्जमह करके लिखागया है.

पहाडियोका बडा सिल्सिला इस राज्यमे एक ही है, जो रियासतके पश्चिमोत्तर कोणमे होकर इलाके मेवाडमे बडी सादडी तक चलागया है, और जाकुम नदीके तीरपर राणीगढके पाससे शुरू होता है, जहापर इसकी बलन्दी समुद्रकी सत्हसे १५४८ फीट है, और पश्चिमकी तरफ करीब तीन माइलके फासिलेपर १७२१ फीट होगई है, इसी तरह पश्चिमोत्तरकी तरफ कुछ कुछ बढतीहुई मेवाडकी सर्हद्के किनारे पर १९०० फीट होगई है जाकुमसे दक्षिण तरफ थोडे ही फासिलेपर नीची ज़मीन है, लेकिन् पहाडिया रफ्तह रफ्तह ऊची होतीगई है, और देवलियाके नज्दीक जाकर फिर १८०० फीट ऊचाई होगई है देवलियासे दक्षिण पुरानी पहाडीपर "जूना गढ" नामका एक गढ है, जिसके ऊपर एक छोटा तालाव व कुआ है, और उसके आस पास भीलोके खेत है

प्रतापगढकी जमीनका पूरा पूरा हाल मालूम नही है विन्ध्याचल पहाड़, जो मेवाडकी सीमापर ख़त्म होता है, अर्वलीकी समानान्तर श्रेणियोमे मिलगया है, परन्तु भू गर्भ विद्याके अनुसार जमीनकी कैफियत कभी मालूम नही कीगई है यहापर किसी किस्मका धातु नही पाया जाता, लेकिन् यहाके लोग पहिले देवलियाके पास डाकोर मकाममे पत्थरकी अच्छी खाने होना बयान करते है

आब हवा और बारिश.

यहाकी आब हवा उम्दह और मालवाके दूसरे हिस्सोके मुवाफिक गर्मी व सर्दी भी साधारण है सन् १८७९ ई० मे जो बर्सातका अन्दाजा ३२ इच हुआ था, उसके हिसाबसे बारिशका औसत भी अच्छा समझा जा सक्ता है

जगल

इस इलाकहमे कोई खास जगली हिस्सह नही है, लेकिन् पश्चिम और पश्चिमोत्तरके पहाडी हिस्से छोटे छोटे दरख्तो और बासके जगलोसे ढके हुए है, मगर बहुतसी लकडी, जो काममे लाई जाती है, भील लोग बांसवाडाके जिलओसे लाकर सप्ताहिक बाजारोमे बेचते है, इस सौदागरीके बाजार सीमाके किनारेपर कई गावोमे लगते है

नदी और झील

प्रतापगढमे कोई मश्हूर नदी नही है, क्योंकि यह हिस्सह बगालेकी खाडीमे

गिरनेवाली नदियोंके बहावको खभातकी खाड़ीमे गिरनेवालियोंके प्रवाहसे अलग करनेवाली ऊंची जमीनपर वाके है जाकुम नदी, जो मेवाडमे सादड़ीके पास निकलती है, राज्यके पश्चिमोत्तरी भागमे धरियावदकी तरफ जाकर माही नदीमे गिरती है वह छोटा गढ जो प्रतापगढका दक्षिणी हिस्सह है, उन दो नालोंके कोनेपर बना है जो पीछेसे आपसमे मिलकर बासवाडेके राज्यमे माही नदीसे मिलने वाली एक नदीको बनाते है राज्यके दक्षिण पूर्वी हिस्सेका बहाव सोनमे गिरता है, जो कि चम्बलकी एक मददगार है, और मन्दसोरमे होकर उत्तरकी तरफ बहती है

राज्यमे चन्द बडे बडे तालाब है जिनमेसे रायपुरका सर्पटा तालाब सबसे बड़ा है पानी अक्सर जमीनकी सतहसे ४० या ५० फीटकी गहराईपर मिलता है

राज्यका प्रबन्ध

राज्यका प्रबन्ध करीब करीब बिल्कुल रईसकी सभाल और सलाहपर अह्लकार या प्रधानके जरीएसे होता है, पहिले रियासतका कुल इन्तिजाम काम्दार ही करता था, लेकिन् कुछ अर्सेसे दीवानी, फौज्दारी, महक्मह माल व पुलिसपर जुदे जुदे अफ्सर मुकर्रर करदिये गये है

जेलखानह, अस्पताल, पाठशाला और टकशाल

राजधानीमे एक जेलखानह, अस्पताल और एक पाठशाला है, और मन्दसोरके सर्कारी डाकखानहसे राजका भी एक डाकखानह मिला हुआ है टकशाल भी यहांपर है, लेकिन् उसमे किसी तरहका यन्त्र (कल) नही है, सिर्फ एक भद्दे ठप्पेपर सालिमशाही (१) रुपया गढाजाता है, जिसकी कीमत करीब ॥।) कल्दारके है

आबादी

कुल राज्यके आदमियोंकी तादादका बडा हिसाब रियासतकी तरफसे १२२२९८ हुआ है शहर प्रतापगढ व खालिसेके जिलोमे ८५९१९ आदमियोंकी आबादी लिखी है ऐसा अन्दाज़ा कियाजाता है, कि जागीरदारोंके गावोमे कुल २७६२९ आदमी है, और इन्हे छोडकर बडे छोटे २५० गांव भीलोंके है, जिनमे फी गाव औसत १० घरके हिसाबसे २५०० घर या करीब ८७५० भीलोंकी बस्ती है

---

(१) ये रुपया नर्मदा किनारे तक कुल मालवेमे चलता है

ऊपर लिखे तख्मीनेसे फ़ी मील मुरब्बा करीब ८४ $\frac{1}{3}$ बाशिन्दोंका औसत हुआ, जिसको ठीक समझना चाहिये, मुल्कके साफ़ हिस्सेकी आबादी, पश्चिमी व उत्तरी जंगली व पहाडी ज़िलोंके भीलोंकी तादादके बराबर ही मानी जाती है.

बाजरा व मौठके सिवा अक्सर सब क़िस्मका अनाज यहां उपजता है, परन्तु गेहूं ख़ास पैदावार है, अफ़ीम, ईख और ज्वार भी कस्रतसे बोई जाती है. यहांपर भील लोग ज़िलोंमें खेती उसी तरह करते हैं, जैसी बांसवाड़ेमें, और वह सिर्फ़ मक्की ही बोते हैं.

ज़मीनका पट्टा और आमदनी

अक्सर ज़मीन राजकी ख़ालिसाई है, और किसानोंको कच्चे पट्टेपर जोतने बोनेको दीजाती है, जो उसके बेचने या गिर्वी रखनेका इख़्तियार नहीं रखते, लेकिन् इसके बर्ख़िलाफ़ यह भी नहीं होसक्ता, कि बिना किसी ख़ास सबबके ज़मीनसे अलग कियेजावें, जो पीढ़ियोंसे उनके क़ब्ज़ेमें चली आती है. राजपूतानहकी दूसरी रियासतोंके मुवाफ़िक़ यहां भी ठाकुर और अहलकार लोग चाकरी और ख़िराजकी शर्तपर जागीर पाते हैं.

ज़ियादह तर ख़ालिसेके गांव मुक़र्रर वक़्तके लिये ठेकेपर दियेजाते हैं, और जब ठेका नहीं होता है, तो गांवोंकी मालगुज़ारी पटैलके ज़रीएसे राजका कामदार तहसील करता है. पीवल (सींचीजाने वाली) ज़मीनका कर फ़ी बीघे ५) रुपयेसे ३०) तक नक्द लियाजाता है, जो ज़मीन नहीं सींची जाती उसका महसूल नक्द पैदावारमें से लियाजाता है. नक्दकी हालतमें फ़ी बीघा।) से लेकर ३) रुपये तक, और पैदावारमें बीघे पीछे ५ सेरसे लेकर दो मन तक वुसूल होता है, भील लोग घर प्रति १) रुपया सालानह देते हैं, बीघेका महसूल मुक़र्रर नहीं है, ख़ालिसाई ज़िलोंकी कुल सालानह आमदनी १२५०००) रुपया सालिमशाही है, लेकिन् साइर व ख़िराज वग़ैरह मिलाकर कुल आमदनी तीन लाखके लग भग समझी जाती है.

सौदागरी

धान, अमल और देशी कपड़े व्यापारकी ख़ास चीज़ोंमेंसे है. धान ज़ियादह तर बांसवाड़ेसे आता है, और जो देशी कपड़ा मन्दसौर व दूसरे मकामोंसे आता है, वह वहां भेजाजाता है. प्रतापगढ़के कारीगर ज़ुमुर्रुदके रंगके कांचपर सोनेका काम

करनेके लिये प्रसिद्ध है, लेकिन् अब यह काम सिर्फ दो खानदानोमे होता है, क्योंकि इसकी तर्कीब पोशीदह रक्खी जाती है

सडके

राज्यमे कही बनाई हुई सडके नही है, परन्तु जो सडक नीमचको जाती है, ३२ मील उत्तरको है, और मन्दसौरको जानेवाली १९ मील पूर्वको और जावराको जाने वाली ३५ मील दक्षिण पूर्वमे है साफ मैदानमे होकर गुजरने वाली सडके अच्छी है, मेवाड और बासवाडेकी सौदागरी अभी तक केवल बजारोके जरीएसे बैलोपर होती थी, परन्तु हालमे एक गाडीकी सडक बासवाडे तक जारी करनेकी कोशिश हुई है, जो ५५ मील दक्षिए पश्चिमको कान्हगढके घाटेमे होकर गई है

जिले और शहर

राज्यमे तीन पर्गने है – छोटा या कुडल पर्गनह, जिसमे राजधानीसे उत्तर और पूर्व मन्दसौरकी तरफ वाली जमीन है, बडा पर्गनह, जिसमे दक्षिणी जिले है, और माली पर्गनह (पश्चिमोत्तरी) जिसमे भील लोग आबाद है

शहर प्रतापगढ उत्तर अक्षाश २४° २′ और पूर्व देशान्तर ७४° ५९′ मे समुद्रकी सतहसे १६६० फीटकी ऊचाईपर वाके है, जिसकी बुन्याद महारावत् प्रतापसिहने अठारहवी सदीके शुरूमे एक मकामपर डाली, जो पहिले घोघरिया खेडा कहलाता था यह शहर एक नालके सिरेपर दो नालोके बीच शहर पनाहसे मह्फूज बसा हुआ है, जिसमे आठ दर्वाजे है, शह्रपनाहको महारावत् सालिमसिहने मस्नद नशीन होनेपर विक्रमी १७५८ मे बनवाया; इसके दक्षिण पश्चिमी कोणमे एक छोटा गढ है, जहा हालमे महारावत्के परिवारके रहनेको मकान बनायागया है शहरके बीच वाला महल बहुत बडा नही है, और अक्सर खाली रहता है (१), क्योंकि वर्तमान महारावत्ने अपने रहनेको एक नया महल शहरसे पूर्व एक मीलकी दूरीपर बनवालिया है शहरमे २९०६ घर और १०६६९ आदमी बसते है, जिनमे जियादह तर रोजगार पेशह लोग है.

देवलियाकी पुरानी राजधानी, जो अब बिल्कुल ऊजडसी होगई है, प्रतापगढसे ठीक पश्चिम ७१/२ मीलपर २४° ३०′ उत्तर अक्षांश और ७४° ४२′ पूर्व देशान्तरमे समुद्रकी

---

(१) इस गजेटियरके बनने बाद महारावत् अब प्रतापगढ़के अन्दर रहने लगे है, और इमारतो की तरक्की भी की है

सतहसे १८०९ और प्रतापगढसे १४९ फीटकी ऊंचाईपर बसा है, पुराने महल अब बिल्कुल बे मरम्मत पडे हैं, जिनको सत्रहवीं सदीमें महारावत् हरीसिंहने बनवाया था पहिले यह शहर खूब आबाद था, यहांपर कई मन्दिर विष्णु, शिव और दुर्गाके, और दो मन्दिर जैनके अभी तक मौजूद हैं बहुतसे तालाब भी हैं, जिनमें सबसे बडा 'तेज' तालाब तेजसिंहके नामसे बना है, जो सन् १५७९ ई० में अपने पिताके क्रमानुयायी थे, जिन्होंने पहिले देवलिया बसाया था किला कोई नहीं है, और ऐसा मालूम होता है, कि शहरकी हिफाजत व बचावका भरोसा इसके कुद्रती मकामकी मज्बूतीपर ही है, जो टीलेके किनारेसे अलग पहाडीके एक ढालपर चारों तरफकी जमीनसे ऊंचा है, उत्तर और पश्चिमकी ओरका हिस्सह नाहमवार ज़मीन और बिल्कुल उजाड है

मेले

प्रतापगढमें मुख्य देवस्थान महादेवका है, और अर्णोदके पास पश्चिमी घाटोंकी चोटीपर 'गौतम नाथ' मकामपर हर साल बहुतसे यात्री वैशाख शुक्ल १५ को जाते हैं, जहां दो दिन तक मेला रहता है दूसरा एक बडा पवित्र स्थान राज्यके पश्चिमोत्तर कोणमें पहाडियोंके दर्मियान मेवाडकी सीमाके पास सीता माताका है 'अम्बा माता' जो प्रतापगढ़से ४ मील उत्तर, और 'सन्तनाथ' जो धमोतरके पास ही जैनका एक मन्दिर है, इन दोनों मकामोंपर हर साल कार्तिक शुक्ल १५ को मेला होता है प्रतापगढसे दक्षिण तरफ तालाबपर दीपनाथ महादेवका मन्दिर है, जहां वैशाख शुक्ल १५ को एक प्रसिद्ध मेला लगता है

तवारीख

महाराणा मोकलके बड़े बेटे कुम्भकर्ण मेवाडकी गद्दीपर बैठे, और दूसरे खेमकरण को कोई जागीर नहीं मिली, महाराणा मोकल विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] में चाचा मेराके हाथसे मारेगये खेमकरण बचपनमें तो चित्तौडपर बने रहे, लेकिन् बडे होने बाद जागीरका दावा करने लगे महाराणा कुम्भाने वैमात्र होनेके सबब खेमकरणको जागीर देनेमें हुज्जत की, तब खेमकरणने बड़ी सादडीपर जबर्दस्ती कब्जह करलिया महाराणा कुम्भाने फ़ौज भेजकर उनको वहांसे निकाला,

तो वह मांडूके बादशाहको चढा लाया, बहुतसी लड़ाइयां हुई, जिनका हाल महाराणा कुम्भाके वर्णनमे लिखा गया है

आखिरकार महाराणा कुम्भा और खेमकरण, दोनो इस दुन्याको छोडगये और मेवाडकी गद्दीपर महाराणा रायमल्ल बैठे, तो खेमकरणके बेटे सूर्यमल्लने रावत् अज्जा लाखावतके बेटे सारंगदेवको अपना शरीक किया, क्योंकि अज्जाको महाराणा मोकलने और सारंगदेवको महाराणा कुम्भा व रायमल्लने जागीर देनेमे इन्कार किया था सारंगदेवने बाठर्डापर और सूर्यमल्लने नाहरमगरा व गिर्वा वगैरह पहाडी जिलोपर अपना कब्जह किया महाराणा रायमल्लने किसी सबबसे दर्गुजर किया, तो सूर्यमल्लने पूर्वी मेवाड़मे भैंसरोड गढपर जा कब्जह किया महाराणा रायमल्ल अपने बेटोके खानगी फसादसे तंग होरहे थे, उनके बडे बेटे पृथ्वीराजने सूर्यमल्ल और सारंगदेवको भैंसरोडसे शिकस्त देकर निकाल दिया, और सादडीपर भी हमले करने लगे महाराणा रायमल्लने भी चढाई की, जिसमे हजारो राजपूत मारेगये, और महाराणा व सूर्यमल्ल दोनो जख्मी होकर अपने अपने डेरोको लौट गये कुंवर पृथ्वीराज सूर्यमल्लका आराम पूछनेके लिये गये, कुंवरने कहा, कि "काकाजी खुश हो" तब सूर्यमल्ल बोला, कि "हां भतीजे मेरे जख्मोको आराम होनेपर खुशी होगी" पृथ्वीराजने बयान किया, कि मैं भी श्री दर्बार (महाराणा रायमल्ल) के घावपर पट्टी बांधकर आया हूं इस तरह बातें करके पृथ्वीराज चित्तौड आया, फिर इसने गिर्वा व नाहरमगरा वगैरह पर्गने सूर्यमल्लसे छीन लिये, रावत् सारंगदेवको बाठर्डेमे जा मारा, और सूर्यमल्लसे लडने लगा कुंवर पृथ्वीराज और कुंवर सांगाके दर्मियान नाहरमगरेके पास भीमल ग्राममे लडाई हुई, तो सूर्यमल्ल सांगाका मददगार बनकर पृथ्वीराजसे लडा, और जख्मी हुआ सूर्यमल्ल और पृथ्वीराजके आपसमे कई लडाइयां हुईं, परन्तु दिनको लड़ते, और रातको आपसमे आराम पूछने जाते यह सब हाल मुफस्सल तौरपर महाराणा रायमल्लके बयानमे लिखा गया है

रायमल्लके बाद पृथ्वीराजके मरजानेसे महाराणा सांगा (संग्रामसिंह १) चित्तौडकी गद्दीपर बैठे, तो यह रंजिश दूर हुई, क्योंकि महाराणा सांगाकी सूर्यमल्लसे दोस्ती थी इन दोनोका इन्तिकाल होनेपर सूर्यमल्लका बेटा बाघसिंह गद्दीनशीन हुआ विक्रमी १५९२ [हि० ९४१ = ई० १५३५] मे बहादुरशाह गुजरातीने चित्तौड़पर हमलह किया, तब सर्दारोने महाराणाको तो बूंदी भेजदिया, और उनके एवज मरनेके लिये बाघसिंहको किले और फौजका मुख्तार बनाया; छत्र व चवर

वगैरह महाराणाका लवाज़िमह अपने साथ रखकर बाघसिंह चित्तौडके आखिरी दर्वाजे पर बडी बहादुरीके साथ मारागया, इसलिये देवलियाके महारावत् भी अबतक 'दीवान' के नामसे पुकारेजाते हैं, क्योंकि एकलिङ्गजी मेवाडके राजा, और महाराणा उनके दीवान कहलाते हैं, जब कि उनकी जगहपर काइम होकर बाघसिंह भी मारा गया, इससे छत्र, चवर और दीवानका खिताब उनकी औलादको मिला

बाघसिंहके भाई सहसमल्लकी औलाद सीहावत कहलाई, जिनके ठिकाने धमोतर और मारवाडमें झालामंड वगैरह हैं इनकी चौथी पीढीमें धमोतरका ठाकुर जोधसिंहका छोटा भाई पूरा था, जिसकी सन्तान पूरावत कहलाती हैं बाघसिंहका तीसरा भाई रणमल्ल था, जिसकी औलाद रणमलोत कहलाई, और महाराणा उदयसिंहके समयमें बडी बहादुरीके साथ खैराडकी तरफ लडाईमें मारा-गया रावत् बाघसिंहके चित्तौडपर मारेजानेका हाल महाराणा विक्रमादित्यके प्रकरणमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ ३१) इनके दो बेटे थे- बडा रायसिंह और दूसरा खानसिंह, जिनमेंसे रायसिंह गद्दीपर बैठा, और खानसिंहकी शाख़ ख़ानावत कहलाई

रायसिंहके बाद उसका बेटा बीका गद्दीपर बैठा महाराणा उदयसिंह बनबीरको निकालकर जब चित्तौडके मालिक बने, तो उनको रावत् रायसिंहकी वह बात याद आई, कि जब वह बनबीरके डरसे भागकर धायके साथ सादडीमें गये थे, और रावत् रायसिंहने कुछ मदद नहीं की इसलिये रावत् बीकाको महाराणाने फ़ौज भेजकर सादडीसे निकालदिया, वह गयासपुर और बसारमें जारहा इस काठलके पर्गनेमें सर्कश मीने (१) लोग रहते थे, बीका बडा बहादुर राजपूत था, उनकी सर्कशी तोड़दी, और देऊ मीणीके खाविन्दको, जो सबसे जियादह सर्कश था, मारडाला, तब देऊ अपने पतिके साथ सती हुई, और उस वक्त रावत् बीकासे यही कहा, कि मेरा नाम रहना चाहिये, जिसको बीकाने मन्जूर करके विक्रमी १६१७ [हि० ९६७ = ई० १५६०] में उसी जगह राजधानीकी नीव डाली, और उसी मीनीके नामसे 'देवलिया' नाम रक्खा नैनसी महता अपनी किताबमें लिखता है, कि बीकाने ७०० गावोंपर अपना अमल करलिया, जिनमें ४०० चौंडेके थे (जिनको देवलिया वाले देश कहते हैं), और ३००

---

(१) नैनसी महताने अपनी किताबमें उस जमानेमें इन लोगोंको मेर लिखा है, परन्तु हमारी तहकीकातसे इस देशके मीने और मेरवाडाके मेर और खैराडके मीने व मेवातके मेवाती, सब एक ही खानदानसे हैं, जिनका तफ्सीलवार हाल हमने बंगालकी एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८८६ ई० के पहिले हिस्सेमें छपवाया है

पहाडी थे, जिनमे मेरोके १०० गाव है सोनगरा राजपूत भी बडे फसादी थे, जिन्हे मारकर बीकाने सुहागपुरके २४ गाव अपने कब्ज़ेमे किये, और जलखेडिया राठौड़ोको दबाकर ताबेदार बनाया इसी तरह डोडिया राजपूतोसे भी कोठडी वगैरहका इलाकह छीन लिया, फिर अपने भाई काधल सहावतको धमोतर वगैरह पर्गनह जागीरमे दिया

जब विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] मे बादशाह अक्बरकी फौजसे महाराणा प्रतापसिंहकी हल्दी घाटीपर लडाई हुई, तो महारावत् बीकाकी तरफसे उनका भाई काधल महाराणाकी फौजमे था, सो उसीमे बडी बहादुरीके साथ मारागया इसके तीन पुत्र, तेजसिंह, कृष्णदास और सुर्जण थे, परन्तु बडवा भाटोने कृष्णदासकी जगह शार्दूल लिखा है बीकाके बाद विक्रमी १६३५ [हि० ९८६ = ई० १५७८] मे तेजसिंह गद्दीपर बैठा, जिसने 'तेज सागर' तालाब बनवाया, और विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] मे मारागया उसके दो बेटे थे, बडा भाना (भवानीसिंह) और छोटा सिंहा, रावत् तेजसिंहके बाद भाना जानशीन हुआ, गादी बैठने बाद भानसिंह और जोधसिंह शक्तावतके आपसमे दुश्मनी बढी जोधसिंहको महाराणा अमरसिंह अव्वलने जीरण और नीमच जागीरमे दी थी, वह बडा बहादुर और लड़ाकू शख़्स था, मन्दसौरके सूबहदार मक्खन मिया और देवलियाके रावत् भानासे दुश्मनी रखता था नैनसी महता लिखता है, कि एक दिन महाराणा अमरसिंहके साम्हने भाना और जोधसिंहके दर्मियान किसी बातपर जिद हो पडी, उस वक्त महाराणाने तो दोनोको समझादिया; लेकिन् भानाने अपनी राजधानी (देवलिया) मे आकर मक्खन मियासे मिलावट की, और डेढ हजार सवार साथ लेकर दोनो शख़्स जोधसिंहसे लडनेको चढे, जोधसिंहने भी १०० सवार और २०० पैदल साथ लेकर मुक़ाबलह किया, चीताखेडासे आगे एक बडके पेड (१) के पास लडाई हुई, जिसमे मक्खन मिया, रावत् भाना और जोधसिंह, तीनो बडी बहादुरीसे काम आये देवलिया वाले जीरणके तालाबपर रावत् भानसिंहकी छत्री बतलाते है

विक्रमी १६६० [हि० १०१२ = ई० १६०३] में जब भाना लड़कर

---

(१) यह स्थान चीताखेडा, नैनसी महताकी किताबसे लिखा है, जो इस लडाईके ५० वा ६० वर्ष बाद तक मौजूद था येट साहिबके बनाये हुए प्रतापगढके गजेटियर और प्रतापगढ की तवारीखमे यह लडाई जीरणमें होना लिखा है, लेकिन हमको नैनसीका लेख दुरुस्त मालूम होता है, और भानाकी लाशको जीरणमें लाकर जलाई होगी, जहा उसकी छत्री बनी है

मारागया, तो उसके कोई औलाद न थी, इसलिये उसका छोटा भाई सिहा तेजावत गद्दीपर बैठा, और जीरणमे जोधसिहके बेटे नाहरखान व भाखरसिह रहे आपसकी नाइत्तिफाकीसे ना ताकत देखकर रावत्ने, जो कि इन दिनो बादशाह अक्बरकी बहुत हिमायत रखता था, लोगोके इलाके छीन लेने चाहे यह हाल देखकर महाराणा अमरसिह अव्वलने रावत् सिंहा और नाहरखानका विरोध मिटा दिया, और कहा कि भाना व जोधसिह दोनो हमारे भाई थे, उनका रज हमको है, तुम्हे नही रखना चाहिये

विक्रमी १६७९ [हि० १०३१ = ई० १६२२] मे महारावत् सिहा भी परलोकवासी हुआ, इसके दो बेटे जशवन्तसिह और जगन्नाथ थे, जिनमेसे जशवन्तसिह गद्दीपर बैठा जशवन्तसिह नरहरदासोत शक्तावतको महाराणा कर्णसिहने मोडीके थानेपर रक्खा था, जो बसारके पर्गनेमे है, और वह पर्गनह महाराणाके खालिसेमे था देवलियाके रावत् जशवन्तसिह सिहावत और जशवन्तसिह शक्तावत मे तकार होनेलगी, महाराणा कर्णसिह और बादशाह जहागीरका देहान्त होगया, और महाराणा जगत्सिह अव्वल उदयपुरमे, और बादशाह शाहजहा आगरेमे मस्नद नशीन हुए महाबतखा शाहजहाके शुरू अह्दमे, जो खानखाना सिपहसालार और सात हजारी मन्सबदार होगया था, जहागीरके खौफसे भागकर उदयपुरके पहाडोमे आया, और वहासे देवलियाकी तरफ गया, तो रावत् जशवन्तसिह सिहावतने उसे बडी खातिरके साथ रक्खा उसको अजमेरका सूबहदार व बादशाहका बडा मुसाहिब जानकर जशवन्तसिहको महाराणासे अलहदह होनेकी हिम्मत हुई महाराणा कर्णसिहके इन्तिकाल और जगत्सिहकी गद्दी नशीनीका मौका देखकर मन्दसौरके हाकिम जानिसारखाको वर्गलाया, कि बसारका पर्गनह बहुत अच्छा और आमदनी का है, बादशाहसे अपनी जागीरमे लिखवा लीजिये, उसने वैसा ही किया, परन्तु शक्तावत जशवन्तसिहने दख्ल न होने दिया, तब जानिसारखा अपनी जमइयत लेकर चढा, और देवलियाके रावत्ने अपनी फौज उसके शामिल करदी, तो दोनों तरफसे अच्छा मुकाबलह हुआ इस लडाईमे रावत् जशवन्त नरहरोत, सीसोदिया जगमाल बाघावत, सीसोदिया पीथा बाघावत, सीसोदिया कान्ह, शार्दूलसिह नरहरोत और सबलसिह चत्रभुजोत पूर्विया वगैरह काम आये; जानिसारखाके भी बहुतसे आदमी मारेगये

यह ख़बर बादशाह शाहजहाने सुनी, तो एक फर्मान नसीहतके तौर महाराणा जगत्सिह अव्वलके नाम लिखा, जिसका तर्जमह और नक़्ल यहा दर्ज की जाती है:-

अबुल्मुजफ्फर शिहाबुद्दीन मुहम्मद शाहजहां बादशाहके फ़र्मानका तर्जमह, जो महाराणा जगत्सिंह अव्वलके नाम आया

खुदा बड़ा है

खैरख्वाह और इज्जतदार खानदानका
बिह्तर, मिह्र्बानी, बख्शिश और इज्जतके लाइक,
नेक आदत खैरख्वाहोका बुजुर्ग, राणा जगत्सिंह,
बादशाही इनायतोसे खुश खबर होकर जाने, इस सबबसे कि बुजुर्ग सल्तनतके अह्लकारोको मालूम न था, कि पर्गनह बसार उस मिहर्बानियोके लाइक़ की अगली जागीरमे शामिल था, और ना वाकिफीसे मिहर्बानीके काबिल जानिसारखाकी जागीरमे दाखिल करदिया गया, अब यह बात सुलैमानी तख्तके पास खडे रहने वालोके साम्हने अर्ज हुई, तो उस पर्गनहको अगले दस्तूरके मुवाफिक उस खैरख्वाहको इनायत फर्माया, और दफ्तरके लोग जानिसारखाको एवज दूसरे मकामसे देगे, इस मुआमलेमे फर्मान आलीशान जानिसारखाके नाम जारी हुआ है, कि पर्गनह बसार उस खैरख्वाहसे तअल्लुक़ रखता है, उसके क़ब्जेमे छोडकर इस बाबत झगडा और लडाई न करे, लेकिन् उस लडाई और तक्रारसे, जो उस खैरख्वाहके आदमियो और जानिसारखाके दर्मियान हुई, दौलत ख्वाहोको तअज्जुब नजर आया, जब कि उस उम्दह वफादारका चचा और वकील वग़ैरह पाक दर्बारमे हाज़िर थे, लाजिम था, कि अव्वल इस मुआमलेको बुज़ुर्ग दर्गाहमे अर्ज़ करते; और फिर जैसा कुछ हुक्म होता, अमलमे लाते

نقل فرمان ابوالمظفر شهاب الدین محمد شاهجهان بادشاه،
موسومهٔ مهارانا جگت سنگه اوّل والی میوار *

(نقل طغرا)

فرمان ابوالمظفر شهاب الدین
محمد شاهجهان بادشاه غازی
صاحب قران ثانی *

الله اکبر

(نشان مهر)

ابوالمظفر
شهاب الدین
محمد شاهجهان
بادشاه غازی ۱ ۳۷
صاحب قران
ثانی * سنه احد

خلاصهٔ خاندان عزّت واخلاص، شایستهٔ عاطفت ومرحمت
واختصاص، قدوهٔ متخصصان سعادت کش، رانا جگت سنگه،
بعنایت بادشاهانه مخصوص ومباهی گشته بداند، که چون معلوم دیوانیان عظام ممالک نظام
نبود، که پرگنه بسار در دول سابق، آن لایق الاحسان داخل بوده، وبه ناوابستگی در دول

यकीन है, कि उस खैरख्वाहको इस कार्रवाईपर इत्तिला न होगी, लाज़िम है, कि अपने आदमियोंको मना करे, जब तक ऐसे मुआमले बलन्द बुज़ुर्ग दर्गाहके हाज़िर बाशोंके आगे अर्ज़ न होले, बादशाही नौकरोंसे लड़ाई और दुश्मनी न कीजावे, कि उसकी खैरख्वाहीके लाइक नहीं है, और आहिस्तह आहिस्तह ख़ुदा न करे, उस दरजह तक पहुंचे, कि खल्कतकी ख़राबी और तक्लीफ़का सबब होजावे जिस रोज़ कि फ़र्मान आलीशानके मज़्मूनपर इत्तिला हासिल करे, पर्गनेपर काबिज़ होकर पहिलेसे ज़ियादह बुज़ुर्ग मिहर्बानियोंको अपनी बाबत समझे, और हुक्मसे बर्ख़िला-फ़ी न इख़्तियार करे तारीख़ १७ आज़र महीना इलाही, अव्वल जुलूस- फ़क़त [मुताबिक सन् १०३७ हिज्री = वि० १६८५ = ई० १६२८]

(पीठकी इबारत)

अदना दरजहके खैरख्वाह आसिफ़ख़ांकी मारिफ़त

قابل العنایه جان‌نثار خان داخل شده، الحال که این معنی بعرض ایستادهای پایهٔ سریر سلیمانی رسید، آن پرگنه را بدستور سابق بآن اخلاص کیش عنایت فرمودیم، و عوض به جان‌نثار خان دیوانیان از محل دیگر خواهند داد — و درین باب فرمان عالیشان بنام جان‌نثار خان صادر شده، که پرگنهٔ مذکور به آن خیرخواه متعلق است، تصرف او واگذاشته بر سر این نزاع و جدال ننماید، اما از جنگ و نزاعی که درمیانهٔ مردم آن خیراندیش و جان‌نثار خان شده، دولتخواهان را بعجب روی داده، چون عمده وکلای آن زبدهٔ اصحاب عقیدت در دربار معلّی بودند، می‌بایست که اوّل این مقدمه را بدرگاه جهان‌پناه عرضداشت میکردند، تا هرچه حکم میشد بعمل می‌آوردند — یقین است که آن خیرخواه را ازین معنی اطلاعی نخواهد بود، می‌باید که مردم خود را منع نماید، که مادام که این چنین مقدمات بعرض ایستادهای درگاه فلک اشتباه نرسد، با بندهای بادشاهی نزاع و خصومت نکنند، که لایق اخلاص او نیست، و رفته رفته مبادا عیاذاً بالله تعالی بجایی انجامد، که موجب خرابی و آزار خلق الله گردد — در روزیکه بر مضمون فرمان عالیشان اطلاع حاصل نماید، آن پرگنه را متصرّف شده بیشتر از پیشتر عنایات اشرف را دربارهٔ خود شناسد، و از فرموده تخلف نورزد — تحریراً فی تاریخ ۱۷ - آذرماه الهی، سنه احد فقط (مطابق سنه ۱۰۳۷ هجری)

(عبارت پشت)

برسالهٔ کمترین اخلاص کیشان

آصف خان *

बादशाहने जानिसारखांको लिख भेजा, कि पर्गने बसारपर दख्ल न करे; शाहजहां जानता था, कि कैसी कैसी ताकत काममें लानेपर महाराणा उदयपुरका फसाद दूर हुआ है, अब छोटी बातके लिये उसी आगको भडकाना अक्लमन्दीका काम नहीं. इसके सिवाय बादशाहका भी शुरू तख्त नशीनीका अह्द था, इसलिये जानिसारखांको धमकाया, और महाराणाको नसीहतोंका फर्मान लिख भेजा, परन्तु देवलियाके रावत् जशवन्तसिंहसे महाराणा बहुत नाराज रहे, और उससे जशवन्तसिंह शक्तावतका बदला लेना चाहा. महाबतखांकी हिमायतके सबब महाराणाको देवलियापर फौजकशी करनेका मौका न मिला, तब धीरे धीरे रावत् जशवन्तसिंहको धोखा दिया, और विक्रमी १६९० [हि० १०४३ = ई० १६३३] में उसे मए उसके बेटे महासिंहके उदयपुर बुलाया, उसे पूरा विश्वास नहीं था, इससे वह एक हजार चुने हुए राजपूत साथ लाया, और चम्पा बागमें डेरा किया. राठौड रामसिंह कर्मसेनोतको महाराणाने रातके वक्त फौज देकर भेजा, जो महाराणाकी बहिनका बेटा था, उसने फौज समेत चम्पा बागपर घेरा डाला, और तोपें व सोकडोंकी गाडियां (१) मोर्चोंपर जमा दीं. रावत् जशवन्तसिंह केसरिया पोशाकके साथ सिरपर सेहरा और तुलसीकी मंजरी लगाकर चम्पा बागसे बाहर निकला; और अपने साथियों समेत महाराणाकी फौजपर टूट पडा; परन्तु तोप और सोकडेकी गाडियोंके फैरसे सबके सब भुनगये, तो भी किसी किसीने रामसिंहको ललकारा, और तलवारें चलाईं. आखिरकार महारावत् जशवन्तसिंह अपने बेटे महासिंह और १००० राजपूतों समेत बहादुरीके साथ मारागया, और महाराणा जगत्सिंहकी इस दगादिहीसे बडी बदनामी हुई.

यह खबर जब देवलियामें पहुंची, तो धमोतरके ठाकुर जोधसिंहने जशवन्तसिंहके दूसरे बेटे हरीसिंहको गद्दीपर बिठादिया. महाराणाने राठौड रामसिंहको फौज देकर देवलियापर भेजा, यह सुनकर जोधसिंह (२) हरीसिंहको बादशाह शाहजहांके पास आगरे लेगया, और महाबतखाने उनको उदयपुरसे अल्हदह करके बादशाही नौकर बनाने बाद मन्सब और इज्जतसे बडे अमीरोंमें शामिल किया, और बादशाही

---

(१) एक एक गाडीमें सौ सौ या दो दो सौ तय्यार बन्दूकें उसके काइदेके मुवाफिक् जमी हुई रहती थीं, उनमें एक जगह बत्ती लगानेसे एक दम सब बन्दूकें चलती थीं. यह पुराने रिवाजकी गाडियां मेवाडके बाजे बाजे ठिकानोंमें अबतक टूटी फूटी मौजूद हैं.

(२) देवलिया प्रतापगढकी तवारीखमें इनका नाम जशकरण लिखा है, और जोधसिंह नैनसी महताकी तवारीखसे लिखागया है, लेकिन् बडवा भाटोंकी पोथियोंमें दोनों नाम नहीं मिलते, जो कि यह हाल नैनसी महताके ज़मानेका है, इसलिये उसको मोतबर माना है.

फौज उनके साथ देकर अपने वतनको भेजा, जिससे महाराणा जगत्सिंह अव्वलने अपनी फौजको वापस बुलालिया, क्योंकि बादशाही फौजसे मुकाबलह करनेमें इस वक्त जियादह बखेडा बढनेका खयाल था इस नाराजगीसे महाराणाने धरियावद्का पर्गनह हरीसिंहसे छीनलिया हरीसिंह कई बार इस पर्गनेके लिये बादशाह शाहजहांके पास अर्जीऊ हुआ, लेकिन् बादशाहने भी दर्गुजर किया देवलियाके महारावत् बाघसिंहसे लेकर सिंहा तक महाराणाके फर्मांबर्दार और खैरख्वाह रहे, और बडी बडी लडाइयोंमें बहादुरी दिखलाई अगर महाराणा जगत्सिंह जशवन्तसिंहको धोखेसे न मारडालते, तो हरीसिंह महाबतखांका वसीला ढूंढकर बादशाही नौकर बननेकी कोशिश नहीं करता, क्योंकि डूंगरपुर, बांसवाडा और रामपुराके रईस चित्तौड छूटनेके बाद अक्बर बादशाहसे जा मिले थे, लेकिन् देवलिया वाले इस बातके इख्तियार करनेको बहुत बुरा समझते थे अगर देवलियापर फौज भेजकर जशवन्तसिंहको उनके बेटे समेत मारडालते, और हरीसिंहको उसी इलाकेका मालिक बनादेते, तो कभी वह इताअतसे मुंह न फेरता, क्योंकि मेवाडके राजाओंका पुराने वक्तसे यह काइदह चला आता है, कि बापको सजा देकर बेटेकी पर्वरिश करते थे, लेकिन् विश्वासघात और बर्बादीपर कमर कभी नहीं बांधी इस फसादका यह अंजाम हुआ, कि देवलियाके रईसने भी आजादी हासिल करनेका रास्तह पकडा महाराणा जगत्सिंहके वक्तमें, बल्कि शाहजहांके बादशाह रहने तक हरीसिंह आजाद रहा; जब आलमगीर शाहजहांकी बीमारीसे आप अपने भाइयोंकी लडाइयोंमें लगा, उस वक्तका हाल राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके आठवें श्लोकसे २४ वें श्लोक तक इस तरह लिखा है -

विक्रमी १७१६ वैशाख कृष्ण ९ मंगल [हि० १०६९ ता० २३ रजब = ई० १६५९ ता० १५ एप्रिल] के दिन कायस्थ फत्हचन्द प्रधानको देवलियापर फौज समेत भेजा, तब रावत् हरीसिंह भाग गये, और उनकी मांने अपने पोते कुंवर प्रतापसिंहको भेजकर ताबेदारी इख्तियार करली उसी संवत् (१) में महाराणा राजसिंह अव्वल बांसवाडेकी तरफ फौज लेकर चढ़े, उसी चढ़ाईके खौफ़से देवलियाका रावत् हरीसिंह महाराणाके पास सादडीके राज झाला सुल्तानसिंह, बेदलाके राव चहुवान सबलसिंह, सलूंबरके रावत् चूंडावत रघुनाथसिंह, और

---

(१) प्रशस्तिमें पिछला हाल पहिले और पहिला पीछे दर्ज हुआ है, और फत्हचन्द प्रधानका जाना विक्रमी १७१५ श्रावणी हिसाबसे लिखा है, जिसको हमने चैत्री संवत्के हिसाबसे ऊपर दर्ज किया है

भीडरके महाराज शक्तावत मुहकमसिहका वचन लेकर आये, क्योंकि रावत् हरीसिहको अपने बाप और दादाके धोखेमे मारे जानेसे दह्शत होगई थी उसने पाच हजार रुपया, मनरावत हाथी और एक हथनी महाराणाको नज़्रमे दी महारावत् हरीसिहका देहान्त विक्रमी १७३० [हि० १०८४ = ई० १६७३] मे हुआ उनके चार बेटे थे, प्रतापसिह, अमरसिह, मुहकमसिह और माधवसिंह

——⁂——

महारावत् प्रतापसिह

हरीसिहके बाद महारावत् प्रतापसिह गद्दीपर बैठे, यह बडे अक्लमन्द और बहादुर थे, इन्होने प्रतापगढका शहर विक्रमी १७५४ [हि० ११०८ = ई० १६९७] मे शहर पनाहके अन्दर आबाद किया, जयपुर, जोधपुर, और बीकानेर वगैरहसे अपना सम्बन्ध बढाया, और महाराणा उदयपुरसे भी जियादह बर्खिलाफी न बढने दी ऐसा बर्ताव बगैर अक्लमन्दीके नही होसक्ता यह महारावत् जब बीकानेर शादी करने गये, तो चारण, भाटोको बहुतसा त्याग और इन्आम इक्राम दिया, जोधपुर महाराजा अजीतसिहको इन्होंने अपनी बेटी ब्याही थी इनका देहान्त विक्रमी १७६४ [हि० १११९ = ई० १७०७] मे होगया, इनके दो बेटे पृथ्वीसिह और कीर्तिसिह थे.

——⁂——

महारावत् पृथ्वीसिह

प्रतापसिहके बाद पृथ्वीसिह गद्दीका मालिक हुआ जोधपुरके इतिहासमे विक्रमी १७६५ वैशाख [हि० ११२० = ई० १७०८] मे महारावत् प्रतापसिहका मौजूद होना लिखा है, जब कि सवाई जयसिह और अजीतसिह दोनो बहादुरशाहसे नाराज होकर देवलिया होते हुए उदयपुर आये थे तअज्जुब नहीं कि प्रतापसिहके इन्तिकालका सवत् श्रावणी हो, तो वैशाखके बाद श्रावणी सवत् के हिसाबसे इस सवत्के दो महीने बढे, जिनमे महारावत्का देहान्त हुआ होगा हमने जो सवत् ऊपर लिखा, वह देवलियाकी तवारीखसे दर्ज किया है एक दूसरा फर्क् मारवाडकी तवारीखसे यह मालूम हुआ, कि जोधपुरके महाराजा अजीतसिहकी दो शादिया देवलियामे होना लिखा है, एक तो महाराजा अजीतसिहने जालौरसे महारावत् प्रतापसिंहकी मौजूदगीमे उनके बेटे पृथ्वीसिहकी बेटीके साथ की, दूसरी विक्रमी १७६६ चैत्र शुक्ल १२ [हि० ११२१ ता० ११ मुहर्रम = ई० १७०९ ता० २३ मार्च]

को की, सो रावत् पृथ्वीसिंहके समयमे हुई मालूम होती है, लेकिन् प्रतापसिंहकी बेटी का जिक्र उसमे नही है, जैसा कि देवलियाकी तवारीखसे ऊपर लिखागया है

रावत् पृथ्वीसिंह भी अपने पिताके मुवाफिक अच्छे सर्दार थे, जब यह बादशाह फ़रुंख-सियरके पास गये, तब उसने खुश होकर इनको 'रावत् राव' का खिताब दिया, वहासे वापस आकर इन्होने उदयपुरके महाराणा दूसरे सग्रामसिंहकी खिद्मतमे अपने बडे बेटे पहाड-सिंहको भेज दिया, महाराणाने भी खुश होकर धरियावदका पर्गनह देनेका हुक्म दिया, लेकिन् ईश्वरकी इच्छासे उदयपुरमे ही पहाडसिंहका देहान्त होगया, और रावत् पृथ्वीसिंह भी विक्रमी १७७३ [हि० ११२८ = ई० १७१६] मे इस ससारको छोड़गये इनके बेटे पहाडसिंह, उम्मेदसिंह, पद्मसिंह, कल्याणसिंह, और गोपालसिंह थे

महारावत् रामसिंह

पृथ्वीसिंहके पोते, पहाडसिंहके बेटे रामसिंह (१) गद्दीपर बैठकर छ महीने बाद मरगये, तब विक्रमी १७७४ [हिज्री ११२९ = ई० १७१७] मे पृथ्वीसिंहके दूसरे बेटे उम्मेदसिंह को गद्दी मिली, यह भी विक्रमी १७७९ [हि० ११३४ = ई० १७२२] मे मरगये, तब उनके छोटे भाईको गद्दी मिली

महारावत् गोपालसिंह

यह अक्कमन्द और समझदार थे, इन्होने अपने युवराज कुवर सालिमसिंहको महाराणा दूसरे सग्रामसिंहकी खिद्मतमे भेजदिया, और बाजीराव पेश्वासे भी दोस्ती करली देवलियाकी तवारीख मे लिखा है, कि विक्रमी १७८८ [हि० ११४४ = ई० १७३१] मे बाजी राव पेश्वा और महाराणाकी फौजने डूगरपुरको घेरलिया, तब रावत् गोपालसिंहने समझाकर घेरा उठवाया इन्होने अपने नामसे 'गोपालगज' आबाद किया विक्रमी १८१४ [हि० ११७० = ई० १७५७] मे इनका इन्तिकाल होगया, और इनके बेटे सालिमसिंह गद्दीपर बैठे

महारावत् सालिमसिंह

यह बडे होश्यार थे, लेकिन् इनके वक्तमे मरहटोका गद्र शुरू होगया, और हरएक राजा उनके साथ दोस्तीका बर्ताव रखने लगा, रावत् सालिमसिंहने भी वैसा

(१) बडवा भाटोकी पोथियोमे पृथ्वीसिंहके बाद पद्मसिंहका गद्दीपर बैठना लिखा है, लेकिन् हमने देवलियाकी तवारीखके मुवाफिक् दर्ज किया है

ही किया, तो भी मुसल्मान बादशाहोंकी बादशाहत फिर चमकनेकी उम्मेद बाक़ी थी, जिससे सालिमसिंह दिल्ली गये, और बादशाह आलमगीर सानीसे रुपयेकी टकशालकी इजाजत लाकर अपने यहा सालिम शाही रुपया जारी किया सिवाय उदयपुरके राजपूतानहकी कुल रियासतोमे रुपयेकी टकशाले जारी होनेका यही वक्त है सालिम शाही रुपया कुल मालवे और कुछ मेवाडके हिस्सेमे भी चलता है देवलियाकी तवारीखमे यह भी लिखा है, कि बादशाह फर्रुखसियरसे महारावत् पृथ्वीसिंहने भी टकशाल जारी करनेका हुक्म लेलिया था, परन्तु जारी नहीं हुई थी, इन्होंने प्रतापगढमे 'सालिमगज' बसाया, और शहर पनाहको मज्बूत किया

जब माधवराव सेधियाने उदयपुरको विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] मे आघेरा, तब रावत् सालिमसिंह भी अपनी जमइयत लेकर महाराणा अरिसिंहके पास आगये, और घेरा उठनेके बाद तक मददगार रहे इस खैरख्वाहीके एवज इनको महाराणा अरिसिंहने धरियावदका पर्गनह जागीरमे देदिया, और 'रावत् राव' का खिताब भी, जो बादशाहने दिया था, इनके नामपर बहाल रक्खा. इस बारेमे एक पर्वानह भी सालिमसिंहके नाम लिख दिया था, जिसकी नक़्ल नीचे लिखी जाती है –

पर्वानेकी नक्ल

श्री रामोजयति.

श्री गणेस प्रसादातु. श्री एकलिंग प्रसादातु.

सही

स्वस्ति श्री वीजै कटकातु महाराजा धिराज महाराणा श्री अरसिंहजी आदेशातु, देवल्या सुथाने रावत राव सालमसीघ कस्य सुप्रसाद लीषते यथा अठारा समाचार भला हे, आपणा समाचार कहावजो,

१ अग्र, आगे पातसाहजी श्री फ़ुरकसेरजी, थाहरे रावत प्रथीसींघ हे रावत रावरी पदवी मया कीदी थी, सो थाहे साबत करे मया कीदी हे संवत १८२८ वर्षे फागण वदी ९ गुरे

सालिमसिंहका इन्तिकाल विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में होगया, इनके दो बेटे सावन्तसिंह और लालसिंह थे, इनमेंसे सावन्तसिंह गद्दीके मालिक हुए, और छोटे भाई लालसिंहको अर्णोद जागीरमें दिया, जिसकी औलादमें अब रघुनाथसिंह मौजूद हैं

महारावत् सावन्तसिंह

सावन्तसिंहके वक्तमें मरहटोंका बड़ा ज़ोर शोर था, हर एक रियासतको दबाते थे, देवलियाको भी दबाकर पन्द्रह हज़ार रुपया, जो मुसल्मान बादशाहोंको मातहृत होनेके वक्त देते थे, उसके एवज़ ७२०००) रुपया सालिमशाही मल्हार राव हुल्करकी मारिफ़त पेश्वाको देने लगे महारावत् सावन्तसिंह फ़य्याज़ीमें नामवर शरूस थे; अब तक कवि लोग उनको बड़ी नामवरीके साथ कवितामें याद करते हैं, मज़्हबी ख़यालात भी इनके बड़े मज़्बूत थे, लेकिन् रियासतकी क़र्ज़दारी और मरहटोंका दबाव होनेके सबब तंग रहे, और टांकाके रुपये भी भरना देकर बड़ी मुश्किलसे चुकाते थे. मातहत लोग इनका पूरा भरोसा रखते और मुहब्बतसे बरतते थे धमोतरका पर्गनह, जो रावत् सालिमसिंहको महाराणा अरिसिंहने लिख दिया था, इनके कब्ज़ेमें न रहा इनके पुत्र दीपसिंह तेरह वर्षकी उम्रमें मल्हारराव हुल्करकी ओल (रुपयोंके एवज़में किसी अज़ीज़को देनेका रिवाज था) में गये थे, लेकिन् दो तीन वर्षके बाद हुल्करने रुख़्सत देदी फिर सेंधियाकी तरफ़से जग्गू बापू फ़ौज लेकर आया, और देवलिया प्रतापगढ़पर बीस दिन तक लड़ाई रही, उस वक्त कुंवर दीपसिंहने बड़ी बहादुरीके साथ मुक़ाबलह किया, और सेंधियाकी फ़ौजका एक कुमेदान मारागया, जग्गू बापूको नाउम्मेदीसे फ़ौज समेत लौटना पड़ा. ऐसी तक्लीफ़ोंके सबब सर्कार अंग्रेज़ीसे तअल्लुक़ करना चाहा, जिसका हाल कप्तान सी० ई० येट साहिबने अपने गज़ेटियरमें इस तरह लिखा है -

"सर्कार अंग्रेज़ीने पीछेसे मन्दसौरके अह्दनामहके मुवाफ़िक़ हुल्करसे इस ख़िराजका अधिकार लेलिया, लेकिन् यह तै कियागया, कि इस रुपयेका हिसाब हुल्कर ही को दिया जावे, जिसको सर्कार अंग्रेज़ी वुसूल करके हुल्करको अपने ख़ज़ाने

से देती है सर्कार अंग्रेजीका सबन्ध प्रतापगढसे विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] मे हुआ, लेकिन् यह तअल्लुक़ लॉर्ड कॉर्नवालिसके जारी किये हुए बर्तावसे टूट गया विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] के अह्दनामहसे यह रियासत फिर सर्कारी हिफाजतमे लीगई"

इनके कुवर दीपसिहका तो इन्तिकाल होगया, जिनके दो बेटे थे, बडे केसरीसिह, दूसरे दलपतसिह, जिनको विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] मे डूगरपुरके रावल जशवन्तसिहने गोद लिया, और बडे केसरीसिहका विक्रमी १८९० [हि० १२४८ = ई० १८३३] मे देहान्त होगया, तब महारावत् सावन्तसिहने अपने पोते दलपतसिहको देवलियामे बुलाया, विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] मे सावन्तसिहका इन्तिकाल हुआ, तब दलपतसिह मालिक बने, इन्होने डूगरपुरको अपने मातह्त करना चाहा, लेकिन् वहाके सर्दारो को यह बात ना गुवार गुजरी, तो उन लोगोने गवर्मेंट अंग्रेजीकी मारिफत दूसरा राजा बनाना चाहा. गवर्मेंटने समझाइशके साथ डूगरपुरके हकदार साबलीसे महारावल उदयसिहको दलपतसिंहके हाथसे डूगरपुरका मालिक बनादिया, इनका जिक्र डूगरपुरके हालमे लिखा गया है

महारावत् दलपतसिह

रावत् दलपतसिह भी अपने बाप दादोंके मुवाफिक अक्लमन्द और फय्याज थे, इनके वक्तमे सब तरहसे अम्न व आमान रहा गवर्मेंट अंग्रेजीने उनको देवलिया की गद्दी नशीनीके वक्त खिल्अत भेजा, जिसकी तफ्सील यह है – हथनी १ चादीके हौदे समेत, घोडा १ बादशाह बख़्श मए जेवर नुक्रई, मोतियोकी माला १, सर्पेच १, मदील १, शाल जोडा १, चुगा १, शाली रूमाल १, गोश्वारा १, तलवार १ मए पर्तलेके, बन्दूक दुनाली १, और एक तमंचेकी जोडी वगैरह विक्रमी १९२० [हि० १२७९ = ई० १८६३] मे इनका देहान्त हुआ, और इनके बेटे महारावत् उदयसिह, जो अब देवलियाकी गद्दीपर है, वारिस रहे

महारावत् उदयसिह

यह फय्याजी और बहादुरीमे नामवर है, और अख्लाक भी इस तारीफके लाइक़ है, कि जहा एक बार जो आदमी मिला, उसे अपना बनाया. देवलिया और बांसवाडेके पहाड़ी इलाक़ोंके बाशिन्दे भील कदीमसे सर्कश थे; मैदानके

गावोको लूटकर मवेशी वगैरह लेजाया करते थे, लेकिन् उन्हे विद्यमान महारावत्ने एकदम सीधा करदिया, जब कभी भीलोके फसादकी खबर मिली, वह खुद घोडेपर सवार होकर अपने राजपूतोसे पहिले पहुचते है, सैकडो बदमआशोको सजा देकर दुरुस्त किया, यहा तक कि अब इनका नाम सुननेसे डकैत और बदमआश लोग घबराते है भाई बेटे वगैरह सब रियासती लोग इनके बर्तावसे खुश है गवर्मेट अंग्रेज़ीकी तरफसे इस रियासतकी पन्द्रह तोपोकी सलामी है

विक्रमी १९४३ [हि० १३०५ = ई० १८८७] मे महारावत्के एक कुवर पैदा हुआ, जिसकी बाबत बहुत खुशी मनाई गई

उमराव सर्दार

राजपूतानहकी दूसरी रियासतोके मुवाफिक प्रतापगढकी रियासतमे भी राजपूत कौमके जागीरदार है, जिनकी तादाद छोटे बडे जागीरदारोको मिलाकर कुल पचास है, और उनकी जागीरो मे ११६ गाव है, जिनके बाशिन्दोका शुमार २७६२९ और सालानह आमदनी २४६६०० रुपया है इस आमदनीमेसे ३२२९६ रुपया खिराजका महारावत्को दियाजाता है

ऊपर लिखे हुए जागीरदारोमेसे सिर्फ़ ९ अव्वल दरजेके है, जिनके नाम मए ठिकाना, तादाद गाव व आमदनी वगैरहके इस नक़्शेमे दर्ज किये जाते है -

नाम सर्दार मए ठिकाना	गांव	आबादी	आमदनी	खिराज
केसरीसिंह— धमोतरके	११	३२३३	६००००	६१००
तख्तसिंह सीसोदिया— झातलाके	५	८४७	११०००	१४१६
लालसिंह चूडावत— बर्लियाके	२	७८२	८०००	१३२२
तख्तसिंह रणमलोत— कल्याणपुरके	२	५७६	७०००	२१९५
रत्नसिंह खानावत— रायपुरके	८	१४७७	३५०००	४३६२
कुशलसिंह खानावत— आम्बेरामाके	४	३८९	९०००	१९२९
माधवसिंह सीसोदिया— अचलोदाके	७	९७६	७०००	१८३३
रघुनाथसिंह सीसोदिया— अर्णोदके	६	२८९६	३००००	२०२५
कुशलसिंह सीसोदिया— सालिमपुरके	४	१०४३	११०००	१७६९

धमोतरका ठाकुर सहसमल्लकी औलादमे है, जो बाघसिहका छोटा भाई था, जो अपने पिता सूर्यमल्लकी गद्दीपर विक्रमी १५३७ [हि० ८८५ = ई० १४८०] मे बैठा

कल्याणपुरका ठाकुर इसी खानदानके छोटे भाईकी औलाद् है, जो धमोतरके पहिले ठाकुर गोपालदासके चौथे बेटे रणमल्लसे पैदा हुआ था

आम्बेरामाका ठाकुर बाघसिहके दूसरे पुत्र खानसिहकी सन्तान है

झातला ठाकुर केसरीसिहकी औलादमे है, जो हरीसिहका छोटा भाई था, और जिसने देवलियाको विक्रमी १६९१ [हि० १०४४ = ई० १६३४]के लग भग मेवाडसे लेलिया, और विक्रमी १७३१ [हि० १०८५ = ई० १६७४] मे मरगया

सालिमगढका ठाकुर अमरसिहके वशमे है, जो महारावत् हरीसिहका दूसरा बेटा था

अचलोदा ठाकुर माधवसिहकी नस्लमे है, जो कि चौथा पुत्र महारावत् हरीसिहका था

महाराज रघुनाथसिह अर्णोद् वाला लालसिहकी नस्लमे है, जो महारावत् सावन्तसिहका छोटा भाई था, जिसकी गद्दी नशीनी विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] मे और देहान्त विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] मे हुआ
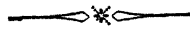
एचिसन्की अह्दनामोकी किताब तीसरी जिल्द् पृष्ठ ५०

अह्दनामह नम्बर २०

अह्दनामह जो दर्मियान सामन्तसिंह राजा प्रतापगढ और कर्नेल मरे साहिब अफ्सर फौज अंग्रेजी, गुजरात, अट्ठावीसी और मालवा वगैरहके, विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] मे हुआ, उसकी नक्ल्

शर्त अव्वल – राजा हर तरह जशवन्तराव हुल्करकी तावेदारी और बुजुर्गीसे इन्कार करते है.

शर्त दूसरी– राजा वादह करते है, कि वह उस कद्र खिराज अंग्रेजी सर्कारको दिया करेंगे, जितना कि जशवन्तराव हुल्करको देते थे, और यह खिराज उस वक्त दिया जायेगा, जब कि मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल उसका लेना मुनासिब ख़याल करेंगे

शर्त तीसरी– सर्कार अंग्रेजीके दुश्मनोको राजा अपना दुश्मन समझेगे, और वादह करते है, कि हर्गिज़ ऐसे लोगोको अपने इलाकहमे नही रहने देगे

शर्त चौथी- अंग्रेजी सर्कारकी फौज और उसके लिये सामान हर किस्मका राजाके इलाकेमें होकर बगैर किसी रोक और टैक्सके गुजरेगा, बल्कि राजा वादह करते हैं, कि वह हर तरहकी मदद और उसकी हिफाजत करेंगे

शर्त पांचवीं- राजाके इलाकेमें मकाम मल्हारगढमें पांच हजार मन चावल, दो हजार मन चना और तीन हजार मन ज्वार दी जावेगी, और उसकी वाजिबी कीमत चीजें सौंपनेके वक्त सर्कारसे मिलेगी, और यह सब चीजें चौदह रोजमें आधी, और अट्ठाईस दिनमें कुल देदी जावेंगी

शर्त छठी - इस सबबसे कि ऊपर लिखी हुई शर्तोंपर राजाका अमल होगा, कर्नेल मरे अफ्सर अंग्रेजी फौज इक्रार करते हैं, कि वह और किसी किस्मकी मदद रुपये, मवेशी या गल्लेकी न लेंगे, और न किसी हिस्से अंग्रेज़ी फौजको, जो उनके मातहत होगा, इस तरहकी मदद लेने देंगे

शर्त सातवीं - राजा वादह करते हैं, कि जिस कद्र सिक्का वगैरहकी ज़ुरूरत अफ्सर अंग्रेजी फौजको होगी, और जिस कद्र चांदी वह भेजेंगे, उस कद्र सिक्का प्रतापगढकी टक्शालसे तय्यार करके भेजदेंगे, और जो वाजिबी खर्च उसमें लगेगा, वह अंग्रेजी सर्कार अदा करेगी

शर्त आठवीं - यह अह्दनामह बगैर तअम्मुल दस्तखत होनेके लिये हिज एक्सिलेन्सी मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरलकी खिद्मतमें भेजा जायेगा, मगर ऊपर लिखी हुई शर्तोंकी तामील तस्दीक् किये हुए कागजके आने तक अफ्सर अंग्रेज़ी फौज और राजापर वाजिब और ज़ुरूर होगी

यह अह्दनामह मेरी मुहर और दस्तखतसे तारीख २५ नोवेम्बर सन् १८०४ ई० को लश्करमें चम्बल दर्याके किनारेपर दिया गया

दस्तखत- जे० मरे,
कलेक्टर.

अह्दनामह नम्बर २१,

अह्दनामह जो ५ ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० को राजा देवलिया प्रतापगढ़के साथ हुआ

अह्दनामह, जो ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कंपनी और सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढ और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान, मारिफत कप्तान

कोलफील्डके, व हुक्म ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम, के० सी० बी० और के० एल्० एस०, पोलिटिकल एजेण्ट, मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलके ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कपनीकी तरफसे, और रामचन्द भाऊ, सामन्तसिह राजा देवलिया प्रतापगढकी तरफसे हुआ ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कमको कुल इख्तियार मोस्ट नोबल फ्रासिस मार्किस ऑव हेस्टिग्ज, के० जी०, मोस्ट ऑनरेबल प्रिवी कौन्सिल ब्रिटेनिक मैजेस्टीके मेम्बरने, जिनको ऑनरेबल ईस्ट इण्डिया कपनीने हिन्दुस्तानकी हुकूमत और उसके काम अजाम देनेके लिये मुकर्रर फर्माया है, अता किये, और रामचन्द भाऊको कुल इख्तियार सामन्तसिह राजा देवलिया प्रतापगढसे मिले थे

शर्त पहिली – राजा इक्रार करते है, कि वह हर तरहके सरोकार दूसरी रियासतोसे छोडदेगे, और जहा तक होसकेगा अग्रेजी सर्कारकी इताअत किया करेगे, सर्कार अग्रेजी इसके एवजमे वादह करती है, कि वह तमाम जिलोमे दोबारह अमल जमादेगी, और राजाकी हिफाजत और हिमायत दूसरी रियासतकी जियादती और दावोके मुकाबिल करेगी

शर्त दूसरी – राजा वादह करते है, कि वह अग्रेजी सर्कारको कुल बाकी खिराज, जो महाराजा मल्हार राव हुल्करको मिलता था, और जिसकी तादाद एक लाख चौबीस हजार छ सौ सत्तावन रुपये छ आना है, नीचे लिखे मुवाफिक अदा करेगे –

अव्वल साल सन् १८१८ और १९ ईसवी मुताबिक सन् १२२६ फस्ली व सवत् १८७५ विक्रमी– दस हजार रुपये

दूसरे साल– पन्द्रह हजार रुपये

तीसरे साल– बीस हजार रुपये

चौथे साल– पच्चीस हजार रुपये

पाचवे साल– पच्चीस हजार रुपये

छठे साल– उन्तीस हजार छ सौ सत्तावन रुपये छ आना

राजा यह भी इक्रार करते है, कि यह रुपया अदा न होनेकी सूरतमे एक मोतमद अग्रेजी सर्कारसे मुकर्रर होकर आमदनी शहर प्रतापगढसे वुसूल करे

शर्त तीसरी – राजा देवलिया प्रतापगढ खुद अपनी और अपने वारिसो व जानशीनोकी तरफ़से वादह करते है, कि वह अग्रेजी सर्कारको अपनी हिफ़ाजतके एवज़ उस कद्र ख़िराज और नज़ानह दिया करेगे, जो मल्हार राव हुल्करको

दिया जाता था, और यह खिराज नीचे लिखे मुवाफिक अदा होगा -

अव्वल सालसन् १८१८ और १९ ई० मुताबिक सन् १२२६ फस्ली और सवत् १८७५ विक्रमी- पैतीस हजार रुपये

दूसरे साल- पैतालीस हजार रुपये

तीसरे साल- पचपन हजार रुपये

चौथे साल- पैसठ हज़ार रुपये

और पाचवे वर्षमे पूरी रक्म याने बहत्तर हजार सात सौ रुपया सालिम शाही

यह रुपया दो क़िस्तोंमें अदा करेगे, आधा माघमे, और आधा जेठ मुताबिक मार्च और जुलाई मे

शर्त चौथी- राजा वादह करते है, कि वह अरब या मकरानीको नौकर न रक्खेगे, लेकिन् वह पचास सवार और दो सौ पियादे प्रतापगढकी रिआयामेसे नौकर रक्खेगे, और ये सवार व पैदल सर्कार अग्रेजीके इख्तियारमे रहेगे, और जब उनकी ज़रूरत किसी करीबके इलाकेमे होगी, तो उस वक् वह अग्रेजी सर्कारकी नौकरीमे हाजिर रहा करेगे

शर्त पाचवी- राजा प्रतापगढ अपने कुल मुल्कके मालिक रहेगे, और उनके इन्तिजाममे अग्रेजी सर्कार कुछ दख़्ल न देगी, लेकिन् इतना कि लुटेरी कौमोका बन्दोबस्त और दोबारह इन्तिजाम काइम करके मुल्की अम्न फैलाना उसके इख्तियारमें रहेगा राजा वादह करते है, कि वह अग्रेज़ी सर्कारकी सलाहपर अमल करेगे, और यह भी वादह करते है, वह नाजाइज महसूल टकशाल या दूसरी चीजोके सौदागरोपर अपने मुल्कमे न लेगे

शर्त छठी- अग्रेजी सर्कार वादह फर्माती है, कि वह किसी रिश्तहदार या वासितहदार राजाको, जो उनकी ना फर्मानी करेगा, पनाह या मदद न देगी, बल्कि राजाकी मदद करके उसको ताबेदारीके रास्तेपर लावेगी

शर्त सातवी- अग्रेज़ी सर्कार वादह फर्माती है, कि वह मीना और भील लोगोके ज़ेर करनेमे राजाकी मदद फर्मावेगी

शर्त आठवीं- सर्कार अग्रेजी वादह फर्माती है, कि वह राजाके किसी वाजिबी और पुराने दावेमे, जो मुवाफिक कदीम रिवाजके उसकी रिआयाकी निस्बत होगा, मुदाख़लत नही फर्मावेगी

शर्त नवीं- सर्कार अंग्रेजी वादह फर्माती है, कि वह राजाकी मदद उसके

तमाम वाजिबी दावोंमे, जो रिआयाकी निस्बत होंगे, करेगी, अगर राजा आप उनके हासिल करनेमे मज्बूर होगा

शर्त दसवीं– अगर राजा प्रतापगढका कोई सच्चा दावा किसी हमसायह रियासत या और किसी आस पासके ठाकुरपर होगा, तो अंग्रेजी सर्कार वादह करती है, कि वह उसकी मदद ऐसे दावोंके हासिल, या फैसल करनेमे करेगी; अगर कुछ तक्रार राजा या आस पासके रईसोंके दर्मियान पैदा होगी, तो भी अंग्रेजी सर्कार ऐसी तक्रारके फैसल या मौकूफ करनेमे मुदाखलत करेगी

शर्त ग्यारहवीं– अंग्रेजी सर्कार वादह फर्माती है, कि वह पुण्यार्थकी जमीनमे मुदाखलत न करेगी, और मज्हबी रस्मे और राजा या रिआयाके दस्तूरोंका कामिल तौरपर लिहाज रक्खेगी

शर्त बारहवीं– राजाने इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तमे वादह किया है, कि वह अंग्रेजी सर्कारको खिराज दिया करेंगे, और इत्मीनानकी नजरसे इक्रार करते है, कि खिराज जिसको अंग्रेजी सर्कार वुसूल करनेके लिये मुकर्रर फर्मावेगी, उसको देंगे, अगर यह रुपया वादहके मुवाफिक अदा न होगा, तो राजा इक्रार करते है, कि एक मोतमद अंग्रेजी सर्कारकी तरफसे मुकर्रर होकर खिराजका रुपया शहर प्रतापगढकी आमदनीसे वुसूल करे

यह अह्दनामह, जिसमे बारह शर्तें दर्ज है, आजकी तारीख कप्तान जेम्स कोलफील्डकी मारिफत ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम के० सी० बी० और के० एल० एस० के हुक्मसे, जो ऑनरेबल कपनीकी तरफसे मुकर्रर थे, और रामचन्द भाऊकी मारिफत, जो सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढकी तरफसे मुरूतार था, तै हुआ, कप्तान कोलफील्डने इसकी एक नक्ल अंग्रेजी, फार्सी और हिन्दीमें अपने दस्तखतोंसे रामचन्द भाऊको इस गरजसे दी, कि वह राजा देवलिया प्रतापगढके पास भेज दे, और रामचन्द भाऊ मज्कूरसे एक दूसरी नक्ल उसकी मुहरी और दस्तखती ली.

कप्तान कोलफील्ड वादह करते है, कि इस अह्दनामहकी एक नक्ल दस्तखती मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरलकी, जो मुताबिक इस अह्दनामेके होगी, जो उन्होने आप दी है, दो महीनेके अर्सेमे रामचन्द भाऊको इस गरजसे दीजावेगी, कि वह तस्दीक कीहुई नक्ल सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढको दे, और जब तस्दीक कीहुई नक्ल राजाको दीजायेगी, तो फिर वह नक्ल, जो कप्तान कोलफील्डने ब्रिगेडिअर जेनरल सर जॉन माल्कम के० सी० बी० और के० एल्० एस० के हुक्मसे दी है, वापस

होगी, और रामचन्द भाऊ इसी मुताबिक वादह करता है, कि उसकी तरफ़से भी एक नक्ल दस्तखती सामन्तसिंह राजा देवलिया प्रतापगढकी बिल्कुल इस अह्दनामहके मुताबिक, जो उसने दिया है, कप्तान कोलफ़ील्डको दीजावेगी, ता कि वह इस तारीखसे आठ रोजके अर्सेमे मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल बहादुरके पास भेजी जावे, और जब यह नक्ल दस्तखती राजाकी मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल बहादुरको दीजायेगी, तो जो नक्ल रामचन्द भाऊने अपनी दस्तखती और मुहरी, जो उसने अपने हासिल किये हुए इख्तियारातसे दी है, वह उसको वापस मिलेगी

मकाम नीमच, ता० ५ ऑक्टोबर सन् १८१८ ई० मुताबिक ४ जिल्हिज सन् १२३३ हिज्री, और मुताबिक आसोज सुदी ६ सवत् १८७५ विक्रमी

दस्तखत – हेस्टिंग्ज [गवर्नर जेनरल की छोटी मुहर]

दस्तखत – जी० डाउड्जवेल

[कंपनीकी मुहर] दस्तखत – जे० स्टुअर्ट

दस्तखत – सी० एम० रिकेट्स

मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरलने कॉन्सिलमे मकाम फोर्ट विलिअम पर ता० ७ नोवेम्बर सन् १८१८ ई० को तस्दीक किया

दस्तखत – जे० ऐडम,
चीफ सेक्रेटरी, गवर्मेन्ट

अह्दनामह नम्बर २२

दस्तखत – रावल सामन्तसिंह.

इक़ारनामह, जो रावल सामन्तसिंह रईस प्रतापगढने कप्तान ए० मेक्डोनल्डकी मारिफत ऑनरेब्ल कंपनीके साथ किया

दो सौ पियादे और पचास सवार और एक हज़ार रुपया माहवारी या बारह हज़ार रुपया सालानह उसके लिये सर्कारको मुनासिब किस्तोंमे देनेका जिक्र अह्दनामहमे है, अब सवत् १८८३ से दो हज़ार रुपया माहवारी या चौबीस हज़ार रुपया सालानह सर्कार कंपनीको दियाजावेगा, और इससे हर्गिज इन्कार न होगा, यह रुपया सिक्कए सालिमशाही होगा

मिती अगहन सुदी ७ सवत् १८८०, मुताबिक तारीख़ ९ डिसेम्बर सन् १८२३ ई०.

अह्दनामह नम्बर २३

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेजी गवर्मेन्ट और श्री मान उदयसिंह, राजा देवलिया प्रतापगढ व उनकी औलाद, वारिसो और जानशीनोके, जो एक तरफ़ लेफ्टिनेन्ट कर्नेल अलिग्ज़ेन्डर रॉस इलियट हचिन्सन्, काइम मकाम पोलिटिकल एजेन्ट, मेवाड़ने बमूजिब हुक्म लेफ्टिनेन्ट कर्नेल रिचर्ड हार्टकीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी०, एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके किया, जिनको पूरे इख्तियारात राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल, हिन्दसे मिले थे, और दूसरी तरफ़ खुद राजा उदयसिंहने किया

शर्त पहिली– कोई आदमी अंग्रेजी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह, अगर अंग्रेजी इलाकेमे बडा जुर्म करे और प्रतापगढकी राज्य सीमामे पनाह लेना चाहे, तो प्रतापगढकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और सरिश्तहके मुताबिक उसके मागे जानेपर सर्कार अंग्रेजीको सुपुर्द करदेगी

शर्त दूसरी– कोई आदमी प्रतापगढके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामे कोई बडा जुर्म करे, और अंग्रेजी सीमामे जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी उसे गिरिफ्तार करके सरिश्तेके मुताबिक मागे जानेपर प्रतापगढकी सर्कारको सुपुर्द करेगी

शर्त तीसरी– कोई आदमी, जो प्रतापगढकी रअय्यत न हो, और उस राज्यकी सीमामे कोई बडा जुर्म करे, और अंग्रेजी इलाकेमे आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुकद्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेजीकी बतलाई हुई अदालतमे होगी, अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुकद्दमोका फैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमे होगा, जिसके तह्तमे वारिदात होनेके वक्तपर प्रतापगढके इलाकेकी निगहबानी रहे.

शर्त चौथी– किसी हालतमे कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नही है, जबतक कि सरिश्तेके मुताबिक खुद वह सर्कार, या उसके हुक्मसे कोई उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाकेमे कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर जैसा कि उस इलाकेके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमे कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा, और वह मुज्रिम करार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है

शर्त पांचवीं – नीचे लिखेहुए काम बडे जुर्म समझे जायेंगे –

१– खून, २– खून करनेकी कोशिश, ३– वहशियाना कत्ल, ४– ठगी, ५– जहर

देना, ६- सख़्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार), ७- जियादह जख़्मी करना, ८- लडका बाला चुरा लेजाना, ९- औरतोका बेचना, १०- डकैती, ११- लूट, १२ सेंध (नक़्ब) लगाना, १३- चौपाये चुराना, १४- मकान जलादेना, १५- जालसाजी करना, १६- झूठा सिक्का चलाना, १७- धोखा देकर जुर्म करना, १८- माल अस्बाब चुरा लेना, १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमे मदद देना, या वर्गलान्ना (बहकाना)

शर्त छठी - ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुवाफिक मुजिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमे जो खर्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पडेगा, जिसके कहनेके मुताबिक ये बाते कीजावे

शर्त सातवीं - ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्त तक बर्करार रहेगा, जब तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनो सर्कारोमेसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख्वाहिश दूसरेको जाहिर न करे

शर्त आठवीं - अह्दनामहकी शर्तोका असर किसी दूसरे अह्दनामेपर, जो कि दोनो सर्कारोके बीच पहिलेसे है, कुछ नहोगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्खिलाफ हो

मकाम प्रतापगढ़, ता० २२ डिसेम्बर, सन् १८६८ ई०

मुहर दस्तखत- ए० आर० ई० हचिन्सन्, लेफ्टिनेन्ट कर्नेल, क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल एजेन्ट मेवाड़

मुहर. मुहर व दस्तखत- राजा प्रतापगढ देवलिया.

मुहर दस्तखत- मेओ, वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्द

इस अह्दनामहकी तस्दीक हिज एक्सिलेन्सी वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दने मकाम फोर्ट विलिअम ता० १९ फेब्रुअरी सन् १८६९ ई० को की

मुहर दस्तखत- डबल्यु० एस० सेटन्कार,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट ऑव इन्डिया,
फ़ारिन डिपार्टमेन्ट

सिरोहीकी तवारीख.

जुग्राफ़ियह

सिरोहीकी उत्तरी सीमा मारवाड; दक्षिणी पालनपुर, ईडर, दाता, व मही काठा, पूर्वी सीमा मेवाड, और पश्चिमी सीमा मारवाड है यह रियासत २४° २२´ और २५° १६´ उत्तर अक्षांश और ७२° २२´ व ७३° १८´ पूर्व रेखांशके बीचमे वाके है, इसका रकबह ३०२० मील मुरब्बा, और आबादी सन् १८८१ की मर्दुम-शुमरीके मुताबिक १४२९०३ है

पहाडियो व चटानोके सिल्सिलेसे देश टूटा और कटा है, खासकर आबू पहाड, जो दक्षिणी सीमाके पास अर्वलीसे दूर है, आधारके पास करीब २० मील लम्बा है (१), और मिली हुई पहाडियोकी सकडी नालसे अलग है, जो पूर्वोत्तर कोणमे ऐरनपुराकी छावनी तक चलीगई है, और राज्यको करीब करीब दो हिस्सोमे तक्सीम करती है पश्चिमी हिस्सह खुला और जमीन हम्वार होनेके सबब जियादह आबाद है, और खेती भी अच्छी होती है बर्सातके मौसममे पहाडियोकी छोटी छोटी नालोमे बडी तेजीसे पानी बहता है यह देश नीची चटानी पहाडियो और धाव, खैर, बबूल व बेर वगैरहके घने जगलसे ढका हुआ है, आबूके उत्तरी सिरेके पश्चिमी ऊचे मैदान और नीची पहाडियोका सिल्सिला, जो सिरोहीकी सीधमे है, नदियोके बहावको रोकने वाला है, जिससे नदिया पश्चिमोत्तर और दक्षिण पश्चिमको बहकर लूनी और पश्चिमी बनासमे जा मिलती है अर्वली पहाड पूर्वकी तरफ साफ दीवारके मुवाफिक है

कुओकी कमीसे खेती कम होती है, और इसी सबबसे अभी तक जमीनका $\frac{9}{10}$ हिस्सह बगैर जोते बोये जगल पडा है, जो लुटेरोके पनाह लेनेका मकाम है इस देशमे कुओकी गहराई ६० फुटसे लेकर १०० फुट तक है, मारवाडके पासके हिस्सेमे ९० से १०० फुट तक गहराईपर खारा पानी मिलता है, पश्चिमोत्तरी

(१) खास राजधानी शहर सिरोही, इस सिल्सिलेके नीचे पश्चिमको आबू पहाडके उत्तरी सिरेसे १६ मीलकी दूरीपर है.

भागमे ७० से ९० फुट तक, पूर्वी जिलोमे बनासके किनारे तथा दूसरे पर्गनोमे ६० फुटके लग भग गहराईपर पानी रहता है, और यह पानी अच्छा होता है दक्षिणी हिस्सेमे इससे भी कम गहराईपर पानी मिलता है, लेकिन् पश्चिमी भागमे और खास सिरोहीमे भी पानी बहुत नीचा और खराब पायाजाता है

सिरोहीमे सिर्फ एक बडी नदी पश्चिमी बनास है, जो अर्वलीमे सैमरके पाससे निकली और पूर्वी बनासके निकासके साम्हने पहाडी सिल्सिलेके पश्चिमी खालोमे बहकर पिंडवाडाके पास और आबूके पूर्वी धरातलके किनारे किनारे दक्षिण पश्चिममे बहती है, और चन्द्रावती शहर व मावल गांवके पास होती हुई पालनपुरके राज्यमे दाखिल होती है, यहासे डीसा छावनीके पास होकर कच्छके रणके सिरेपर रेतमे गाइब होजाती है इसकी सहायक नदी बत्रशा है, जो अम्बा भवानीके मशहूर मकामसे निकल कर पश्चिममे मानपुर तक बहती है बनासके सिवा और भी कई नदिया है, जिनमे कई महीनो तक पानी बहता रहता है जवाई नदी अर्वली पहाडमे बेलकार मकामसे, जो समुद्रकी सतहसे ३५९९ फुट ऊचा है, निकलकर लूनीमे जा मिलती है दो शूकली नदिया है, जो सिल्सिले सिरोहीके पश्चिमी बहावमे लूनीसे मिल-जाती है, और दो छोटी नदिया शूकली, जिसे कालेडी भी कहते है, सिरोहीकी दक्षिणी पश्चिमी सीमापर पहाडियोके सिल्सिले नन्दवानासे निकलकर बनासमे जागिरती है ये दोनो नदिया अहमदाबादकी खास सड़कको पार करती है

सिरोहीके कई हिस्सोमे बनाई हुई झीले है, लेकिन् आबू पहाडपरकी झीलके सिवा और कोई मशहूर झील नहीं है

ऊपर बयान हो चुका है, कि अर्वली पर्वत पूर्वकी तरफ एक सीधी दीवारकी तरह है, उसके सिल्सिलेके सिर्फ नीचेके किनारे और बाहरी शाखे सिरोहीकी सी-मामे है पूर्वी घाटेके सिरेपर पिंडवाडासे उत्तर पहाडियोकी नीची आरपार जाने वाली शाखे है, जो अर्वलीको सिल्सिले सिरोहीसे मिलाती है घाटीके दक्षिणी सिरेपर भाखर, याने पहाडी हिस्सह और आबूके दक्षिणकी पहाड़ियां एक मैदानके हिस्सेको दक्षिणी पूर्वी और दक्षिणी शाखोसे, जो आबूसे निकलती है, जुदा करती है

आबू पहाड ग्रेनिटकी चटानोका एक ढेर है, जिसपर पहाडियोका समूह है; और पहाडियोके बीच बीचमे घाटिया है; इस सिल्सिलेकी सबसे ऊची चोटी, जो पहाडीके उत्तरी सिरेके पास गुरू शिखर कहलाती है, २४° ३९′ उत्तर अक्षाश और ७२° ४९′ देशान्तरमे फैली हुई है, और सतह समुद्रसे ५६५३ फुट ऊची है यह चोटी हिमालय और नीलगिरीके बीचमे सबसे ऊची है, सारा पहाड बास, जगल

और पेडोसे ढका हुआ है पहाडियोंके सबब सिरोहीसे भाखर पर्गनेमे जानेका रास्तह देलदर गावके पास एक तग नालमे होकर है चन्द पहाडियो व घाटियोंके जगलोंमे टीमरू (आबनूस), धामण, सिरस, हल्दू वगैरह बहुत है आबूके दक्षिणमे भी पहाडियोका सिल्सिला पालनपुर तक चलागया है, जिसमे चोटीला और जयराज दो मश्हूर चोटिया है, जयराजकी ऊचाई ३५७५ फुट समुद्रकी सतहसे है आबूके पश्चिममे नन्दवानाका (१) सिल्सिला सिरोहीके दक्षिण पश्चिममे मारवाडकी सीमाके पास एक बडा और लम्बा पहाड है सिरोहीकी श्रेणीमे, जो आबूके उत्तरसे ऐरनपुरकी छावनी तक गई है, बोनिक नामकी एक पहाडी मश्हूर है, जिसकी ऊचाई समुद्रसे २०९८ फुट है, यही सिल्सिला मेवाड तक चलागया है, जो मल नामी पहाडीसे जा मिला है, और यहा लुटेरे लोग अक्सर रहते है

अर्वली पहाडमे स्लेटके पत्थर और भाखरकी पहाडीमे सग मर्मरकी खाने है, आबू जियादहतर सिफेद और रवेदार ग्रेनिट पत्थरका बना हुआ है, अब्रकके टुकडे और बिल्लौरके मुवाफिक चूनेका पत्थर पहाडके कई हिस्सोमे पायाजाता है, ठोस नीला स्लेट कभी कभी निकलता है, आबूका ग्रेनिट सिवाय मकान बनानेके नक्काशी वगैरहके काममें नही आसक्ता सिरोहीमे पहिले तांबेकी खानका होना भी लोगोंकी जबानी सुना गया है

सिरोहीकी रियासतका करीब करीब $\frac{3}{4}$ हिस्सह जगलसे ढका हुआ है, जिसमे जियादह झडबेरी, आवला, खैर, खेजडा, बबूल, धाव, पीलू और करेल तथा एक किस्मका आम भी है, सनाम, ढाक और थूहर भी कस्रतसे है आबूके ढालोंपर और आधारके चौगिर्दके जगलोमे बास, आम, सिरस, धाव, जामुन, कचनार, हल्दू, बेल, टीमरू, सेमल, गूलर, पीपल, बड, सैजणा, फलोदरा, धामण, आवला, रोहेडा गावके पास नीम, पीपल, बेर, गूलर, बड व इमली वगैरहके दरख्त बहुत है. सिरोहीके राज्यमे शेर बहुत है, जो गावकी मवेशीको अक्सर मारडालते है, हरिन, खर्गोश, सिफेद व काले तीतर, कई तरहके बटेर और बहुतसी किस्मके जानवर जगलोमे पाये जाते है, मछलिया सिवाय बनास नदीके और जगह बहुत कम मिलती है

---

(१) यह नीमज पहाड़ीके नामसे मश्हूर है, जो नीमजके गढ़ व गांवसे प्रसिद्ध हुआ है, और श्रेणीसे पश्चिमकी तरफ़, जहां सिरोहीका रईस रहता है, पश्चिमोत्तर और मारवाड़ी सीमाके भीतर सुडा नामकी एक पहाड़ी सतह समुद्रसे ३२५२ फुट ऊची है

सिरोहीकी आबो हवा तन्दुरुस्तीके लिये अच्छी है, आबादी फासिले फासिले पर होनेके सबब हैजा कम होता है गर्मी जियादह नही होती, और सर्दी भी कम अर्से तक रहती है दक्षिण और पूर्वी पर्गनोमे बारिश अच्छी होती है, लेकिन् बाकी हिस्सेमे कम, क्योंकि आबू और अर्वली पहाड बादलोके जियादह हिस्सेको अपनी तरफ खेच लेते है, आबूपर औसत ६४ इचके लग भग और ऐरनपुरामे, जो ५० मीलके करीब उत्तरको है, सिर्फ १२ या १३ इच पानी बरसता है, और दक्षिणी पश्चिमी हवा चला करती है जडय्या ज्वर तथा आमातीसार बर्सातके आखिर व जाडेके शुरूमे होता है, गुजराती, शीतला, बात, और बालाकी बीमारी भी अक्सर रहती है

सिरोहीमे ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, गुसाई, वैरागी वगैरह कई कौमके मनुष्य बसते है, कुणबी, रैबारी और ढेड भी बहुत है, लेकिन् सबसे बडा गिरोह आबादीका ग्रासिया, मीना और भीलोको ही समझना चाहिये

सिरोहीके राज्यमे उत्तरकी तरफ मीने और पश्चिममे भील जियादह आबाद है, जो लूट मार व बौलाईसे अपना गुजर करते है, खेती सिर्फ बर्सातकी फस्लमे बोते है ग्रासिया कौमके लोग भीलोकी तरह हर एक जानवरको नही खाते, वे गाय और सिफेद जानवरको पाक समझते है, और गायको पूजते है, लेकिन् काली भेड या बकरीको खालेते है कोली, जिनको इस राज्यमे गुजरातसे आकर बसेहुए १३० वर्षसे जियादह अर्सह हुआ, खेतीका पेशह करते है इस इलाकेकी बोली मारवाडी और गुजराती भाषासे मिली हुई है

सिरोहीमे अदालती इन्तिजाम बहुत ही कम है, फौज्दारीके मुकद्दमोका फैसला राजधानीमे प्रधान और पर्गनोमे तहसील्दार करलेता है, दीवानीके मुकद्दमे पचायतसे फैसल होते है मुज्रिमोके लिये राजधानीमे एक जेलखानह भी है, अगर्चि कैदी उसमे तन्दुरुस्त रहते है, लेकिन् मकान बहुत तग है यहापर इल्मका प्रचार बहुत कम है, देशी भाषाके लिये सिरोही, रोहेडा और मदारमे एक एक पाठशाला, और राजधानीमे एक शिफ़ाखानह भी है

ऐरनपुरा, सिरोही, अनाद्रा, रोहेडा और मदारमे डाक खाने है, और आबूमे एक तार घर है, जहा दो तोपे, ७४ सवार और २६० पैदल रहते है सिरोहीमे टकशाल नहीं है, भीलाड़ी (शाही) रुपया, जोधपुरी (विजयशाही) रुपया और भीलाडी व ढब्बूशाही पैसा चलता है. राजधानीका सेर अंग्रेजी तोलसे आधा, और पर्गनोमे अलग अलग माप है

जव, गेहू, चना, मकी, बाजरा, मूग, मौठ, उड़द, कुलथ, करांग, चीना, गुवार,

तिल, कूरी, बस्थी, कुदरा, मल, और सावलाई इस इलाकेमे पैदा होते है, लेकिन् चना और ज्वार कम बोयेजाते है, घोडोको चनेके एवज अक्सर कुलथ खिलाया जाता है रूई और तम्बाकू और अम्बाडी भी कम बोई जाती है मूली, गाजर, बैंगन, मेथी, चौलाई, मिर्च, चील (बथुवा) और पियाज वगैरह तर्कारी पैदा होती है पडत जमीन जियादह होनेके सबब घास और बरू बहुत ऊगता है, जो मकान छाने व पर्दा वगैरह बनानेके काममे आता है

सिरोहीमे नीचे लिखे मुवाफिक दाण लिये जाते है – (१) सिरोहीमे मुख्य दाण, (२) देश दाण (गैर इलाकेमे जाने वाली चीजोका दाण), (३) चेला दाण (बाहरसे आने वाली चीजोका), (४) शहर दाण और तुलाई (मापा), जो एक किस्मकी चुगी है इन महसूलोमेसे पहिला तो सिर्फ राज्य ही मे जमा होता है, बाकीमेसे कुछ हिस्सह जागीरदारोको भी मिलता है स्थानीय टैक्स घर गिनतीपर है, जो छ माही पर लगती है बसन्त ऋतुमे अजय तीज और शर्द ऋतुमे दीवालीपर २) से ६) रुपये सालाना तक हैसियतके मुताबिक लियाजाता है दापा विवाहमे १) से ५०) रुपये तक, जिसमेसे $\frac{१}{३}$ दुलहिनके बापसे और $\frac{२}{३}$ दूल्हाके बापसे वुसूल कियाजाता है यह टैक्स महाजन और कारीगरोसे लियाजाता है मवेशीपर भी एक किस्मका महसूल लगता है, जो ऊट व भैंसपर १), गायपर ।) और बकरीपर =) के हिसाबसे जमा होता है दूसरा यह कि हर दूसरे साल बैलोके टोलेमेसे एक बैल, सिरोहीकी तोलका आध सेर फी गाय और फी भैंस सेर भर घी सालाना, और बकरियोके फी झुड पीछे एक बकरी, एक कम्बल और २) रुपये नक्द लियाजाता है राव या उनके कुवरकी शादीमे और रावके मरनेपर भी सब लोगोसे हैसियतके मुवाफिक रुपया वुसूल कियाजाता है

जमीनका पट्टा राजपूतानहकी दूसरी रियासतोके मुवाफिक ही यहापर भी है इस रियासतमे कुल गांव ५३१ है, जिनमेसे २६२ जागीरदारोके, २४ मन्दिरोके भेट, ४२ ब्राह्मण व चारण भाटोके, १२ जनानेके और २११ खालिसेके है, जिनमेसे कई गाव ऊजड भी पडे है खास राजपूत जागीरदार रावको फी रुपया ।=) और दूसरे लोग फी रुपया ॥) के हिसाबसे खिराज देते है किसान लोगोको पैदावारका $\frac{२}{३}$ से लेकर $\frac{३}{४}$ तक हिस्सह मिलता है गावोकी मालगुज़ारी तहसीलदार और उनके नायब तहसील करते हैं गावोके मुख्य अफ्सर थानेदार, भलावन्या, और भावी है; भलावन्या, लोग बनिये होते है, जो बजाय पटवारीके काम देते है;

और भाबी चमार या ढेड होते हैं ये लोग थानेदारके मददगार हैं, मुसाफ़िरोंको रास्ता बताने, व सामान एकट्ठा करनेमें मदद और हर्कारेका काम देते हैं

सौदागरीकी चीजें

घी इस रियासतसे दूसरी जगहोंको बहुत भेजाजाता है, सींगदार जानवर बालोत्राके मेलेमें बिक्रीके लिये पहुंचाये जाते हैं, तिल व शहद गुजरातको बहुत जाता है; देशी सुपारी, अरीठा, आंवला, बहेडा, आककी जड, निसोत, गिलोय, शिलाजीत, नकछिकनी, और खैर वगैरह बहुत होता है सिरोहीकी बनी हुई तलवार, बर्छी, कटार, और छुरी मश्हूर हैं अनाज, चावल, शक्कर, गुड, दाल, मसाला, नारियल, तम्बाकू, छुहारा, अंग्रेजी कपडे, देशी कपडे, रेशमी कपडे, लोहा, तांबा, हाथी दांत वगैरह खासकर बम्बई व गुजरातसे, नमक पचभद्रासे और अफ़ीम मालवासे आती हैं बम्बई व गुजरातकी खास सडक इस राज्यमें होकर गुजरनेके सबब बहुतसा सामान सौदागरीका आया करता है

इस राज्यमें होकर जानेवाली खास सडक अजमेरसे मारवाड, सिरोही, पालनपुर, और गायकवाडकी अमल्दारीमें होकर अहमदाबादको गई है यह सडक ऐरनपुराकी सडकसे मिलकर शहर सिरोहीमें गुजरती हुई आबूके पश्चिमी भागके किनारे किनारे डीसाकी छावनीको चली गई है

मेले.

रवाई पर्गनेमें झाडोलीके पास बाणवारजीके मन्दिरपर मार्च महीनेमें एक जैन मत वालोंका मेला होता है, जहांपर २४ महात्माओंकी पूजा होती है इस मेलेमें कपडा, हाथी दांत, अफ़ीम, रूई, नारियल, शक्कर, वगैरह चीजें बिकती हैं, यह मेला पांच रोज तक रहता है, और करीब सात हजार आदमीके जमा होते हैं मगरेके पर्गने फलोदमें वैजनाथकी पूजापर ऑगस्ट महीनेमें मेला होता है सिरोहीसे दो मीलके फ़ासिलेपर सिरोहीके सर्दारोंके कुलदेव सारणेश्वरका एक बडा मेला सेप्टेम्बर महीनेमें होता है, और इसके दूसरे दिन बाणवारजीका मेला होता है मेष संक्रान्तिको खूणी पर्गनेमें गंगोपिया महादेवके स्थानपर क़रीब दो हजार आदमियोंके भीड़ रहती है, यह मेला दो रोज़ तक रहता है. इन मेलोंके सिवा अनाद्राके पास आबूपर करोडीध्वजके दो मेले होते हैं, पहिला मार्चमें होलीपर और दूसरा ऑगस्टमें.

जिले, शहर और मशहूर मकामात

रियासतका दर्मियानी (मध्य) पर्गनह चौरा व बारठ और राजधानी शहर सिरोही है, दक्षिणी पर्गनह साठ, और पूर्वी पर्गने रवाई व भीतरोटके नामसे प्रसिद्ध है

शहर सिरोही– रियासतकी राजधानी जिसमे ५००० के करीब आदमी बसते है यहापर कई निशानात ऐसे पाये जाते है, जिनसे इस शहरकी दशाका अगले जमानेमे अच्छा होना साबित होता है शहरमे पाच मन्दिर जैनके और चार हिन्दू धर्मके पाच सौ वर्ष तकके पुराने कहे जाते है रावका महल छोटा, पर मज्बूत जियादह है शहरसे दो मीलके फासिलेपर सारणेश्वर महादेवके मन्दिरके पास एक कुण्ड है, जिसका पानी जिल्दपरकी बीमारियोको दूर करता है

शिवगज– पर्गने खूणीमे ऐरनपुराकी छावनीके पास एक उम्दह गाव है, जिसको विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] मे राव शिवसिहने आबाद किया इसके सिवा पिंडवाड़ा, रोहेडा पर्गनह भीतरोटमे, जावाल, कालिन्द्री, पर्गनह मगरामे, मदार और साठ मशहूर मकामात है, पिछले छ कस्बोमे दो दो तीन तीन हजार मनुष्योकी आबादी है

अजारी गावमे महाबीर स्वामीका एक पुराना जैन मन्दिर (१) है, जो विक्रमी ११८५ [हि० ५२२ = ई० ११२८] मे चावडा कौमके राजा कुमारपाल (२) का बनवाया हुआ प्रसिद्ध है अजारीके पास मारकुण्डेश्वरका मन्दिर भी बहुत पुराना है, जिसको १२०० वर्ष पहिलेका बनाहुआ बताते है

बसन्तगढ (३)– यह गढी उदयपुरके महाराणा कुम्भाकी बनवाई हुई है

नादिया– यह गाव प्राचीन नगरी नन्दीवर्धनकी जगहपर बसा है, जिसमे महाबीर स्वामीका एक जैन मन्दिर विक्रमादित्यके समयसे ३०० वर्ष पीछेका बना हुआ कहा जाता है

भीतरोट पर्गनेका लोटाना } यह गाव प्राचीन नगर लोटाना पाटनकी जगहपर उसी समय बसा था, जब कि परमारोकी प्राचीन राजधानी चन्द्रावती थी

---

(१) राणपुरके मन्दिरके लेखसे मालूम होता है, कि राणपुरका मन्दिर और यह मन्दिर एकही शख्सने बनवाये है, इस वास्ते यह ११८५ का नहीं हो सक्ता, लेकिन् १५ वे शतक का है

(२) यह पाटनका राजा जयसिंहकी सन्तानमे से था

(३) यह परमारोंका बनाया हुआ है, और सवत् १०९९ की परमारोंकी प्रशस्ति भी हमको मिली है, जो शेषसग्रहमें दर्ज कीजायेगी.

चन्द्रावतीके बारेमे बम्बई गजेटियरकी पाचवीं जिल्दके पृष्ठ ३३९ से ३४० तक इस तरह लिखा है -

"चद्रावती या चद्रावली, आबू पहाडसे प्राय १२ मील दक्षिण एक जगली हिस्सह अम्बा भवानी और तारिगाके मन्दिरोसे १२ मीलके फासिलेपर एक पुराने शहरका खडहर है, जिसका घेरा किसी जमानेमे अठारह मील था

समुद्रके किनारे और उत्तरी हिन्दुस्तानके दर्मियान एक खास रास्तेके नज्दीक, और एक तरफ अम्बा भवानी और तारिगाके मन्दिरो और दूसरी तरफ अम्बा भवानी और आबूके बीचो बीच होनेके सबब चद्रावती मकाम मज्हब और तिजारतके लिये मश्हूर था पुराने शहरके खडहर और आबूके मन्दिरोके देखनेसे मालूम होता है, कि वहाके महाजनोके पास बडी दौलत थी; वे इमारतका बडा शौक रखते थे, और वहाके कारीगर और राजगीर बडे होश्यार थे, चन्द्रावतीके जुलाहो और रग्रेजोकी कारीगरीके सबब पिछले जमानेमे अहमदाबादके रेशमी कपडे और छीटे मशहूर हुईं सातवीं सदीसे लेकर पन्द्रहवी सदीके शुरू तक इसकी तरक्कीका जमाना काइम रहा जबानी हालसे यह शहर धारकी बनिस्बत जियादह कदीम और पश्चिमी हिन्दुस्तानकी राजधानी मालूम होता है, जिस वक्त कि परमार लोग राज्य करते थे, और रेगिस्तानके नव (१) गढ उनके मातहत बडे सर्दारोके थे सातवीं सदीमे धारके मातहत होनेके सबब वहा राजा भोजने आश्रय लिया, जब कि किसी उत्तरी हमलह करने वालोने उसको भगा दिया परमारोसे सिरोहीके चहुवान सर्दारोने उसको छीनलिया, और अनहिलवाडेका सोलखी खानदान काइम होनेपर चन्द्रावतीके राजा उनके मातहत होगये- (ई० ९४२) चन्द्रावती और आबूके खडहरोसे मालूम होता है, कि ग्यारहवी और बारहवी सदीमे वहापर दौलत वगैरहकी बडी तरक्की थी ११९७ ई० मे यहाके राजा प्रहलाद और धारावर्षने, जो अनहिलवाडाके दूसरे भीमदेवके मातहत थे, आबूके नज्दीक कैम्प जमाकर कुतुबुद्दीन एबकके बर्खिलाफ गुजरातमे जानेकी कोशिश की, लेकिन् उनको शिकस्त खाकर भागना पडा बादशाहके हाथ बडी दौलत आई, वह आगे बढकर अनहिलवाडे तक पहुचा, और कब्जह करलिया इससे मालूम होता है कि उसने रास्तेमे चन्द्रावतीको भी लूटा- (देखो मिरात अहमदी) कुतुबुद्दीनकी चढाई सिर्फ चन्द्रोजा और लूटनेकी गरजसे कीगई थी, और धारावर्षका बेटा उसके बाद मालिक होगया, वह या उसका जानशीन १२७० ई० के करीब नाडोलके चहुवानोसे शिकस्त

(१) कर्नेल टॉडने नानकोट, अर्बुध, धात, मन्दोदरी, खेरालू, पारकर लोदरवा, और पूगल, आठ गढोके नाम लिखे है

खाकर खारिज हुआ, और १३०० ई० के करीब देवडा चहुवानोने उसे निकाल दिया तब १३०४ ई० (१) मे अलाउद्दीनने आखिर मर्तबह गुजरातको फत्ह किया, और चन्द्रावती व अनहिलवाडाकी बिल्कुल स्वाधीनता जाती रही फिर सौ वर्षमे उसकी बर्बादी पूरी हुई पन्द्रहवी सदी ई० के शुरूमे सिरोहीकी बुन्याद पड़नेसे चन्द्रावतीमे हिन्दुओकी राजधानी नही रही ”

चन्द्रावतीके खडहर जियादहतर ग्यारहवीं और बारहवीं सदीके है

अमरावती– एक पुराने शहरका खडहर ऋषिकृष्णके धामके पास आबूके नीचे पूर्व तरफ है यहा एक मूर्ति वदर कुल देवीकी है, जिसके पीछे एक मन्दिर है, जिसे राठोड अमरसिहका बनवाया हुआ बताते है

भाखर पर्गनेका उपलागढ़ }– उदयपुरके महाराणा कुम्भाकी बनवाई हुई गढीके खडहर हैं.

साठ पर्गनेका विरमन }– यहापर कई बड़ी बडी इमारतो व जैन मन्दिरोंके खडहर पाये जाते है इस शहरको चन्द्रावतीके समयका प्राचीन और बडा शहर बताते है.

बारठ पर्गनेकी लाखावती नगरी }– कोह आबूके दामनमे अनाद्राके पास यह एक पुरानी गढी थी, जिसके चिन्ह अब तक मौजूद है; कुछ दूर पहाडियोकी नालमे देवागनजीका स्थान है, जहा कई प्राचीन मन्दिरोके चिन्ह है, इसके पास ही पहाडियोपर करोडीध्वजका पुराना मन्दिर है

चौरा पर्गनेका कोलर }– एक पुरानी गढीका बचा हुआ हिस्सह सारणेश्वरके मन्दिरके पास है, जिसे लोग मेवाड़के महाराणा कुम्भाका बनवाया हुआ बताते है.

आबू पहाडका भूगोल सम्बन्धी बयान

आबू पहाड तमाम राजपूतानहमे एक तन्दुरुस्तीका मकाम कहा जासक्ता है यह एक जुदा पहाड राजपूतानहके सब पहाडोसे बलन्द करीब करीब रियासत सिरोहीके बीचमे वाके है, और इसको एक घाटी, करीब १५ मील चौडी, जिसमें होकर पश्चिमी बनास बहती है, अर्वली पहाडसे जुदा करती है इस पहाडका

(१) आबूकी एक प्रशस्तिमे सन् १३३८ ई० तक चन्द्रावतीके एक चहुवान राजाका मौजूद होना लिखा है

आकार लम्बा और तग है, चोटीपर लम्बाई १४ मीलके लगभग और चौडाई २ से ४ मील तक है, आधारकी लम्बाई २० मीलके अनुमान है यह पहाड उत्तर और उत्तरपूर्व तथा दक्षिण व दक्षिणपश्चिम दशामे उत्तर अक्षाश २४° ३३′ और पूर्व देशान्तर ७२° ४४′ मे फैला हुआ है, जिसकी खास चोटी 'गुरू शिखर' इसके उत्तरी सिरेके पास समुद्रकी सत्हसे ५६५३ फीटकी ऊचाईपर, और आरोग्यता स्थान दक्षिण पश्चिमी सिरेके पास समुद्रकी सत्हसे करीब करीब ४००० फीट और नीचेके मैदानोसे ३००० फीट ऊचा है

पहाडकी शक्ल– पहाडकी शक्ल एक अजीब तरहकी है, चोटीका जियादह हिस्सह चटानी ऊचे टीलोसे घिरा हुआ है, जो बहुतसी जगह पहाडियो, घाटियो और ढालू हिस्सोमे टूटा हुआ दिखाई देता है, और एक तरहका पहाडी जिला बन जाता है, अक्सर हिस्सोमे दरारे भी है, जिनमेसे नीचेके मैदान दिखाई देते है इस पहाडकी कुद्रती सूरत ऊची है, ढाल बहुत खडे है, जिनमे खास पश्चिमी और उत्तरी तरफ, पूर्व और दक्षिणमे बाहरकी तरफका सिल्सिलह कई शाखोमे तक्सीम होगया है, जिनके दर्मियान कई गहरी घाटिया (१) है पहाडीकी चोटीके किनारे किनारे साइनाइट पत्थरके बडे बडे गोल ढोके गुम्बजकी तरह बडे खूबसूरत दिखाई देते है, कहीं कहीं ये पत्थर ऐसे बेलाग रक्खे हुए मालूम होते है, गोया अभी गिर जाएगे बाज जगहोमे चोटियोके मुहरे गोल खोहो व सूराखोके मुवाफिक बनगये है, जो एक बहुत ही बडे बनावटी स्पजकी तरह मालूम होते है पहाडकी चोटीके पासका अग्र भाग प्राय कन्दराके समान है, जो ३०० या ४०० फीटकी ऊचाई तक सीधा खडा हुआ है उत्तरकी तरफ आबू व सिरोहीका पहाडी सिल्सिलह एक तग नालसे जुदा होता है, पश्चिमकी तरफ लहरकी सूरत वाला जमीनका एक टुकडा है, जो मारवाडके मैदानो और कच्छकी खाडीमे मिलगया है, मेवाडकी सीमाके किनारेकी पहाडियोके बडे ऊचे सिल्सिलेसे टूटा हुआ है, पूर्वकी तरफ बनासकी घाटी आबू पहाडको अर्वलीसे जुदा करती है, दक्षिणमे कई शाखे कुछ दूर मैदानोमे चली गई है, जो यहां जुदा जुदा पहाडियोमे तक्सीम किया गया है आबूके अन्दरूनी हिस्सेकी कैफ़ियत देखनेके लाइक है, पहाडियो व घाटियोका सिल्सिलह वार एक दूसरेके बाद चला जाना, कई बड़ी भारी भारी सिफेद व सियाह कुद्रती

---

(१) पूर्वकी तरफ़वाली एक घाटीमे गाड़ीकी सडक बनी है, जो 'ऋषिकृष्ण' मकामसे आबूके ऊपर तक चलीगई है

चटानोंका एक अजीब अन्दाजसे वाके होना, दरख्तों व छोटे छोटे पौदोंकी सब्ज़ी वगैरह चीजें देखने वालेके दिलको तरोताजा करदेती हैं बाज बाज मकामोंपर जंगल व दरख्तोंके कट जाने व उजाड़ होजानेके सबब यह कैफ़ियत जाती भी रही है, जो पहिले देखनेके योग्य थी किसी किसी घाटीमें पानीके झरनों और बहावसे भी पहाड़ शोभायमान हैं, लेकिन् आबूपर यह शोभा जियादह नहीं है, क्योंकि जंगलोंके कट जानेसे कई नदियां सूख गई हैं, परन्तु बर्सातके मौसममें और उसके कुछ अर्से बाद तक झरनोंका बहाव शुरू होने व अनेक प्रकारकी वनस्पति जमनेपर अच्छी कैफ़ियत रहती है कई एक सोते भी हैं, जिनमेंसे 'ऋषिकृष्ण' घाटीके सिरेपर हेतमजीके नीचे बहनेवाला बर्सातके दिनोंमें बहुत ही दिलचस्प दिखाई देता है आबू पहाड़के पानीका बहाव जियादहतर पूर्वकी तरफ़ बनासकी घाटीमें है, जिसका सबब पश्चिमकी तरफ़ पहाड़का जियादह ऊंचा होना पायाजाता है

झील व तालाव–आबूपर कई झीलें व तालाब हैं, उड़ियाके पास वाला तालाब बर्सातमें भरजाता और गर्मीमें खुश्क होजाता है, और करीब करीब यही हाल तमाम झीलोंका है एक नखी तालाब ही मश्हूर है, जो पानीकी एक खूबसूरत चादर आध मीलके करीब लम्बी और चौथाईके लग भग चौड़ी आबूके दक्षिण पश्चिमी कोणपर शहरके पास सत्ह समुद्रसे ३७७० फ़ीटकी ऊंचाईपर वाके है, जिसकी औसत गहराई २० से ३० फ़ीट तक और बीचमें तथा बंधके पास १०० फ़ीट है यह झील एक उम्दह जगहपर पहाड़ियोंसे घिरी हुई है, जहांसे दूर दूरके मैदान एक नालेके द्वारा दिखाई देते हैं दक्षिणकी तरफ़ रामकुंडकी पहाड़ीपर अच्छा जंगल है, वह बहुत ऊंची है, इसके ऊपर व नीचेके रास्तेपरसे झीलकी शोभा और आबूके ऊपर व नीचेकी सुन्दरता नजर आती है यहांके लोगोंके जबानी बयानके मुवाफ़िक इस तालाबका नाम 'नखी' इस सबबसे पड़ा है, कि महिशासुर राक्षससे पनाह लेनेके लिये देवताओंने एक गुफा जमीनमें अपने नाखूनोंसे खोदी थी, क्योंकि महिशासुरने ब्रह्माकी खूब सेवा करके उनको प्रसन्न किया, और सर्व शक्तिमान होकर देवताओंको मारने लगा था, लेकिन् ऊपर लिखे सबबसे इस झीलका नाम 'नखी' रक्खाजाना हमारे कियासमें गलत मालूम होता है, अल्बत्तह यह बात सहीह मालूम होती है, कि इसका बन्द चन्द्रावती नगरीमें राज्य करने वाले प्राचीन परमार वंशके राजाओंमेंसे किसीने बनवाया था

इस पहाड़का पत्थर मकान बनानेके लिये अच्छा नहीं समझाजाता, क्योंकि जियादह सख़्त होनेके सबब इसपर घड़ाई नहीं होसक्ती, और खानसे निकालते वक्त बेमौक़ा टूट जाता है चूनेका पत्थर यहां नहीं होता, लेकिन् ईंटें बनानेके लिये एक

उम्दह किस्मकी मिट्टी निकलती है, संग मर्मर भी एक दो जगह खानसे निकलता है, लेकिन् बहुत ही सख्त होता है

जंगल- आबूके ढाल और आधार कई तरहके दरख्तोंके गुंजान जंगलोंमे ढकेहुए है, कही कही बांसके जंगल भी है, शहरके नज़्दीक वाली पहाड़ियोंका जंगल पानीके जोरसे बहगया है, जहां सिवाय पथरीली जमीनके दरख्त नजर नही आता, पहिले अक्सर जंगल काटे जाते थे, जिससे पहाड़के कई हिस्सोंकी रौनक जाती रही, लेकिन् सन् १८६८ ई० से आबूकी चोटी और ऊपरवाले ढालोंपरके दरख्तो व पौदोंका काटना बन्द करदिया गया है पहाड़के आधारपर आम, जामुन, सिरस, धाव, बड, पीपल, गूलर, एक किस्मका चम्पा, करोंदा, कचनार, सेमल, खाखरा, (ढाक), सिफ़ेद चमेली, दो तरहके जंगली गुलाब और दो किस्मकी फूलदार बेलें, जिनमेसे एक तो गाय बैल वगैरहको और दूसरी घोड़ोंको खिलाई जाती है इनके सिवा कई तरहके फूलदार पौदे और बेले पैदा होती है, और बहुतसी अंग्रेजी तर्कारी, फूल व फल भी उगाये जासक्ते है, आड़ू, नारंगी, नीबू, अमरूद, इन्जीर, शहतूत वगैरह खूब फलते है

इस पहाड़पर कई तरहके शिकारी जानवर शेर, चीता, काला रीछ वगैरह होते है, लकड़बघा, और मुश्कबिलाव भी कही कही दिखाई देते है; गीदड़ और लोमड़ी बिल्कुल नही होती सांभर, हिरण, चीतल, साही, खर्गोश और कई किस्मके सांप, जिनमे सख्त जहर होता है, पायेजाते है, कई तरहके तीतर, बटेर, भुजंगा, कोयल, लाल रंगकी चिड़िया, और गिद्धके सिवा कई जातिके पक्षी है

आबो हवा- आबूकी आबो हवा तन्दुरुस्तीके लिये मुफ़ीद है, गर्मी सर्दी साधारण रहती है, लेकिन् कभी कभी गर्मीके मौसममे पारा ९० दरजे तक पहुंच जाता है, ताहम हवा खुश्क और हल्की होनेके सबब ऐसी गर्मी नहीं पड़ती, कि जिसको अंग्रेज लोग न सह सकें; दक्षिण पश्चिमको बहने वाली हवा गर्मीको घटाती है रातको और सुबहके वक्त हमेशह सर्दी पड़ती है, जो बदनको तरोताजा रखती है बारिश अच्छी होती है, लेकिन् किसी साल जियादह और किसी साल कम, जिसका सालानह औसत ६८ इंच मानागया है मौन्सून याने मौसमी हवाके पीछे थोड़े दिन तक किसी क़द्र गर्मी होजाती है, बर्सात खत्म होनेके बाद बुखार और जड़य्या बुख़ार अक्सर देशी लोगोंको आने लगता है जाड़ेकी फ़स्लमे डिसेम्बर महीनेसे मार्च तक आबोहवा बहुत साफ़ और तन्दुरुस्तीको बढाने वाली रहती है, रातको ओस जमीनपर गिरती और किसी किसी झील या तालाबमे पतला बर्फ़ भी

जमजाता है अगर्चि आबूकी चोटीपर भरने और तालाब जिनमे सतह तक पानी पायाजावे, बहुत ही कम हैं, क्यौंकि चटानोकी रोकसे पानी सतह तक नहीं पहुंच सक्ता, लेकिन् पहाडकी नीची घाटियोंमे कुए खोदनेपर उम्दह पानी २० या ३० फीटकी गहराईपर निकल आता है; जो कुए घाटियोंके बहुत नीचे हिस्सोंमे गहरे खोदेजाते हैं, उनमे पानी जियादह दिनो तक रहता है, बाकी कुओंका पानी गर्मीके खत्म होते होते खुश्क होजाता है

आबूपर अक्सर गैर मुकर्रर वक्तोंपर जल्जला (भूकम्प) आता रहता है, जिसकी आवाज बडे जोरसे होती है, लेकिन् धक्का हल्का होता है यहांके देशी लोगोंकी जबानी सुनागया है, कि संवत् १८८१ व ८२ (सन् १८२४ व २५ ई०) मे बडा जल्जला आया था, जिससे मकानो व देलवाडेके मन्दिरोंको नुक्सान पहुंचा, और इसी किस्मका जल्जला सन् १८४९ व ५० और १८७५ ई० मे भी आया, पिछलेका धक्का १५० मीलके फासिलेपर जोधपुर तक पहुंचा

मुल्की हाकिमों और फौजी अफ्सरोंके रहनेकी जगह– लेफ्टिनेएट कर्नेल जेम्स टॉड, साबिक पोलिटिकल एजेन्ट पश्चिमी राजपूतानह, जो 'टॉडनामह राजस्थान' नामी किताबके बनानेवालेके नामसे जियादह मश्हूर हैं, वही पहिले अंग्रेज थे, जिन्होंने आबूपर कियाम किया, और उसको जियादह प्रसिद्ध किया

टॉड साहिबके आनेके वक्त विक्रमी १८७९ [हि० १२३७ = ई० १८२२] से लेकर विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] तक आबूमे सिरोहीके पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट और जोधपुर लीजनके अफ्सर गर्मीमे कुछ अर्से तक रहा करते थे सन् १८४० ई० मे अंग्रेजी बीमार सिपाही गर्मीके दिनोंमे रहनेके लिये आबूपर भेजेगये, विक्रमी १९०० [हि० १२५९ = ई० १८४३] मे बारक और अस्पताल बनवाये गये, और उसी वक्तके लग भग एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानह मए अपने अमले व राजपूतानहकी रियासतोंके वकीलोंके वहां रहने लगे इसी तरह दिन दिन यह मकाम जियादह आबाद हुआ; अब यहांपर एक मकान रेजिडेन्सीका, ४० बंगले दफ्तरके अमले व दूसरे अंग्रेजो तथा रियासती वकीलोंके रहनेके लिये बनगये हैं, फौजी अफ्सरो और सिपाहियोंके रहनेका मकान २०० से जियादह आदमियोंकी गुंजाइशका है जाडेके दिनोंमे एजेन्ट गवर्नर जेनरल मए अपने अमलेके दौरा करनेको चले जाते हैं, तब बंगले वगैरह मकानात खाली होजाते हैं इस मौसममे गोरोंकी पल्टनका जियादह हिस्सह डीसाको चलाजाता है

पाठशाला और गिर्जाघर – यहांकी पाठशालाओंमेसे सर हेन्री लॉरेन्सका

बनवाया हुआ 'लॉरेन्स स्कूल' सबसे जियादह मश्हूर है, जो राजपूतानह व पश्चिमी हिन्दुस्तानके गोरे सिपाहियोकी औलादको तालीम देनेकी गरजसे विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] मे जारी कियागया था इस पाठशालामे पढनेवाले लडके लडकियोका औसत ७० से ८० तक है, जिनको उम्दह तालीम दीजाती है, और स्कूलका इन्तिजाम बहुत अच्छा है. एक गिर्जाघर, एक तारघर और डाकखानह व अस्पताल भी वहां है

आबादी - आबूपर कभी मर्दुम शुमारी नहीं हुई, और पहिलेकी आबादीकी निस्बत पूरा पूरा सहीह बयान नहीं होसक्ता, लेकिन् इस बातपर भरोसा किया जासक्ता है, कि चन्द सालसे 'लोक' कौमके लोगोका शुमार बढगया है, जो यहाके खास किसान है आबूपर जियादह आबादी नही है, सिर्फ छोटे छोटे १५ गाव है, जिनमे ४७३ घरकी बस्ती है, और छावनी वाले बाजार और खेड़ोमे १७४ घर है इन सबको मिलाकर ६११ घर होते है इस हिसाबसे अगर फी घर पाच आदमी समझेजावे, तो ३०५५ हुए, और इस तादादमे पण्डे व पुजारी (१००), राज्यके सिपाही व अह्लकार (५०), अंग्रेजी सिपाही मए उनके नौकरोके (१००) और लॉरेन्स स्कूलके तालिबूइल्म करीब (१००) के जोड देनेपर ३४०५ आदमी हुए गर्मी व वर्सातके दिनोमे एजेण्ट गवर्नर जेनरल व पोलिटिकल एजेण्ट मारवाडका डेरा और दूसरे दफ्तर तथा डीसासे कुछ सिपाही आजानेसे आबू पर करीब ४५०० आदमियोकी बस्ती होजाती है आबूके गावोके बाशिन्दे अक्सर एक मिश्रित जातिके लोग है, जो अपनेको 'लोक' कहते और राजपूत बतलाते है, लेकिन् उनकी पैदाइशका हाल सहीह तौरपर मालूम नहीं, कि वे लोग कहाके कदीम बाशिन्दे और किस कौमसे है लोगोके जबानी बयानसे ऐसा पायागया है, कि जब अनहिलवाड़ेके मश्हूर सौदागर बिमलशाहने (१) आबूपर ऋषभदेवका प्रसिद्ध मन्दिर बनवाया, तो बहुतसे राजपूत नीचेसे आये, और वहाके कदीम बाशिन्दोकी लड़कियोसे विवाह करलिया, इसका कुछ हाल मालूम नहीं, कि कदीम बाशिन्दोकी जाति क्या थी, लेकिन् हमारे क़ियाससे उन लोगोका भील क़ौम होना पायाजाता है किसी कद्र भील, महाजन (बनिया), राजपूत, ब्राह्मण, माली, दर्जी व फकीर गांवोमें रहते हैं; लेकिन् मुल्की और फौजी मकामोंके बाजारोमे और भी कई जातिके लोग है

खेती - आबूपर बोयेजाने वाले अनाज बहुत कम है, बर्सातमे मक्की, उड़द,

---

(१) टॉड साहिबने अपने सफर नामेमें लिखा है, कि यह मन्दिर बिमलशाहने परमार राजा धारावर्षके समयमें बनवाया, जो विक्रमी १२६५ [हि० ६०५ = ई० १२०९] के लग भग होगा.

और सामा बोयाजाता है, और बालरा खेतीमे (जो पहाडके ढालमे जंगलके हिस्सोंको काटनेपर बर्सातके बाद सूख जानेसे राखमे बोई जाती है) तीन किस्मका छोटा अनाज पैदा होता है, जिसको माल, संवलाई और कराग कहते हैं इस खेतीको आबूके लोक और भील जियादह पसन्द करते हैं बर्सातके मौसममे आलू बहुत बोये जाते हैं, और डीसाको भेजे जाते हैं जाडेकी फ़स्लमे जव और गेहूंकी खेती होती है

जमीनका पट्टा - खास जमीनका अधिकार सिरोहीके हाकिमको है, लेकिन् पीवल (सींची जानेवाली) जमीनपर लोक लोग अपनी बापोतीका हक रखते हैं, और अपनी मर्जीके मुवाफिक जमीन मोल ले सक्के, बेच सक्के और गिर्वी रख सक्के हैं राखड (न सींची जानेवाली) जमीनपर उनका ऐसा हक नहीं रहता, बीडो (घासका जंगल) का सबसे जियादह हिस्सा राजका और किसी कद्र लोकोंका है, बापके मरने बाद, जितने उसके लडके हो, उनमे उसकी जमीन तक्सीम करदी जाती है

आबूके लोकोंको हासिल बहुत कम देना पडता है, बालरा खेतीके सिवा सब बर्सातके अनाज मुआफ़ है सियाली फस्ल (जव, गेहू) के हासिलमे पैदावारकी किस्मसे (जव व गेहू दोनोंके एवज़) सिर्फ जव लिया जाता है, जो बोये जानेवाले बीजका आधा हिस्सह होता है तमाम आबूकी तह्सीलके लिये, एक काम्दार और एक नाइब है, और दो थानेदार एक उत्तरी हिस्सेके वास्ते और दूसरा दक्षिणी विभागके लिये रहता है लोग हरएक गावकी तह्सील गावके ग्रामी (गामेती) के जरीएसे करते है लोक लोगोंसे हासिलके सिवा नीचे लिखे कर और लिये जाते है - चराईका कर, जो बर्सातके बाद हर साल फ़ी घर ऽ२ सेर घी लियाजाता है, घर गिनती, घर पीछे ॥) से लेकर रु० १) तक महाजन लोगोंसे हर छ महीने बाद घर गिनतीका रु० १) से रु० २) तक कर वुसूल होता है राजपूत, भील, और सरगरा लोगोंका कर मुआफ़ है

सडके - शहरके पास और उसके अन्दर वाली सडके अच्छी है, और बहुतसी हलकी गाडियोंके आने जानेके लाइक है, खास सडक दुमानी घाट तक गई है, जिसको यहाके लोग "सूर्य्यास्त विन्दु" कहते है, जो अनाद्राके ऊपर और आबूके पश्चिमी तरफके मैदानोके ऊपर है बहुतसी सडके सवारोंकी आमदो रफ्त की है, जिनमेसे खास खास यहापर लिखी जाती है - १- उड़िया तक देलवाडेमे होकर पाच माइल, जिसकी एक शाख अचलगढको जाती है. २- आबूकी चोटीतक, गौमुखके ऊपर. ३- देल्वाड़ा तक, ईंटके मैदानोमे होकर, जिसको "लम्बी दौड़" (घेरा) कहते हैं. ४- झीलके ऊपरकी सडक, "सूर्य्यास्त विन्दु" तक ५- नीचली

सडक, जो झीलके किनारे किनारे बाध और अनाद्राकी सडक तक जाती है मैदानसे पहाडपर जानेका खास रास्तह अनाद्राकी पुरानी सडक है, लेकिन् वहाके बाशिन्दोंके आने जानेके बहुतसे रास्ते है एक गाडीकी सडक शहरसे 'ऋषिकृष्ण' तक ११ मीलके अनुमान आबूके पूर्वी आधारपर तय्यार होरही है

मेले तमाशे - आबूपर कोई मश्हूर मेला नहीं होता, लेकिन् वहापर जैन मतके मन्दिर प्राचीन और जियादह होनेके सबब अक्सर यात्री लोग आया करते है, जियादहतर गुजराती यात्रियोके गिरोह मए सिपाहियो वगैरहके पूरे जाब्तेसे आते है, जिनमे बहुधा जैन मतके धनवान महाजन होते है एक महात्म जो 'सगत' कहलाता है, हर बारहवे वर्ष होता है, उस वक्त हजारो पुजारी और यात्री लोग पहाडपर जमा होते है इस मेलेपर सिरोहीके राव महाजनोसे टैक्स लिया करते है, जो दूसरे जिलोके सुनारो व कलालो वगैरहसे भी वुसूल होता है

मन्दिर व देवस्थान - अरबुद्ध (१) याने बुद्धिका पर्वत, जो हिन्दुओ और जैनियोके मतके अनुसार बडा पवित्र समझा जाता है, और जो प्राचीन समयसे देवताओ और ऋषियो (२) व मुनियोके रहनेकी जगह माना गया है, आबूपर बहुतसे मन्दिर व देवस्थान है, लेकिन् पुराने मन्दिर अक्सर खडहर होगये है टॉड साहिबने आबूको हिन्दुस्तानका ओलिम्पस (Olympus) (३) लिखा है, और कई उम्दह उम्दह मन्दिरो वगैरहका हाल अपने ईसवी १८२२ [वि० १८७९ = हि० १२३८] के सफरनामहमे (४) दर्ज किया है

आबूपर निम्न लिखित मकाम जियादह मश्हूर है - गुरुशिखर, अचलेश्वर, गौमुख, और देलवाडा

गुरुशिखर आबूकी सबसे बलन्द चोटी है, जो पहाडके उत्तरी सिरेके पास मुल्की हाकिमोके रहनेकी जगहसे करीब १० मीलके फासिलेपर वाके है यहा एक गुफामे चटानपर दत्तात्रेयका चरण और उसी गुफाके एक दूसरे कोनेमे 'रामानन्द' के चरण बने हुए है, जिनको लोग पूजते है

अचलेश्वरका मन्दिर, जो महादेवके निमित्त बना है, दर्शन करनेका मकान है, इसके आसपास कई छोटे मन्दिर है अचलेश्वर महादेव आबूकी रक्षा करने

---

(१) यह शब्द संस्कृत अर = पर्वत और बुद्ध = बुद्धिसे निकला है

(२) ऋषि लोग बडे महात्मा थे, खासकर पुराणोंमें सातका ज़िक्र है, जिनमेंसे विश्वामित्र और वशिष्ठका नाम यहापर कई वृत्तान्तोंमें सुनाजाता है,

(३) यह पहाड ग्रीस (यूनान) देशमे देवताओंके रहनेका मकाम माना जाता था

(४) वेस्टर्न इन्डियाके ७४ और आगेके पृष्ठोमे देखो.

वाले देवता कहे जाते हैं इन मन्दिरोकी तामीरका कोई साल सवत् नहीं मिला, सिर्फ एक लेख आदिपालकी मूर्तिकी चरण चौकीके नीचे यह लिखा है, कि "परमार 'श्री धारावर्ष' ने अचलेश्वरके मन्दिरकी मरम्मत कराई", लेकिन् सवत् मितीके अक्षर मिटगये हैं अल्बत्तह उडियामे ककूलेश्वरके एक लेखसे धारावर्षका विक्रमी १२६५ [हि० ६०५ = ई० १२०९] (१) मे राज्य करना पाया जाता है, जिससे मालूम होता है, कि वह सवत् १२६५ से बहुत अर्से पेश्तरका बना हुआ है कहते है, कि अहमदाबादके हाकिम मुहम्मद बेगडाने खजाने व मालके लालचसे मन्दिरके पीतलके नन्दिकेश्वरको तोडा, लेकिन् इसका बदला उसको जल्द ही मिलगया, कि जब उसकी फौज पहाडसे उतरने लगी, तो उस वक्त इतने भ्रमर उडे, कि वे लोग हथ्यार छोडकर भागगये पश्चिमकी तरफ मन्दिरोके साम्हने चम्पा व आमके पेडोका एक उम्दह कुज, और उसके आगे एक पुराना कुड चूने व पत्थरका बना हुआ है, जिसमे बर्सातके बाद थोडे ही दिनो तक पानी रहता है, और जिसको टॉड साहिबने प्राचीन प्रसिद्ध अग्निकुण्ड खयाल किया था, लेकिन् यहाके लोग उसको दक्षिणकी तरफ कुछ नीचेको एक छोटी झीलकी जगहपर होना बयान करते है इस कुडके दूसरी तरफ परमार राजा आदिपालकी एक हसती हुई मूर्ति बनी है कुण्डके उत्तरी घाटपर सिरोहीके राव मानसिहकी छत्री बनी है, कहते है कि यह जहरसे मारेगये, तबसे सिरोहीके देवडा राजाओको आबूपर रहना तलाक होगया

अचलगढ– अचलेश्वरके मन्दिरके पीछे एक पहाडीपर परमारोका प्राचीन गढ 'अचलगढ' है, जो विक्रमी १५०७ [हि० ८५४ = ई० १४५०] के करीब महाराणा कुम्भाका बनवाया हुआ कहा जाता है, शायद महाराणाने गढका जीर्णोद्धार कराया होगा, और किसी कद्र बढाया भी होगा, लेकिन् गढ बहुत बरसो पहिलेका बना मालूम होता है, अब सिर्फ उसके खडहर रहगये है, यहापर एक कुड भी है, गढ़के भीतर दो मन्दिर जैनके है– १ ऋषभदेवका और दूसरा पार्श्वनाथका

गौमुख– यह देवस्थान आबूकी चोटीके नीचे पहाडीके दक्षिणी सिरेपर है, यहां एक गायका मुह पत्थरका बना हुआ है, जिसमेसे बराबर साफ़ पानी निकलकर एक छोटे कुडमे गिरता है, और कहते है, कि इसको विक्रमी १८४५ [हि० १२०३ = ई० १७८९] मे सिरोहीके राव गुमानसिहने बनवाया था थोड़ी दूर आगे बढकर वशिष्ठ मुनिका स्थान गुजान दरख्तोमे छिपा हुआ है, जिसके पास और भी कई देवस्थान है वशिष्ठ मुनिकी मूर्ति काले पत्थरकी एक मन्दिरके भीतर है; मन्दिरके पास एक छत्रीमे चन्द्रा-

(१) टॉड साहिबकी बनाई हुई 'वेस्टर्न इन्डिया' किताबका ९० पृष्ठ देखो

वतीके परमार राजा धारावर्षकी एक पीतलकी मूर्ति है यह स्थान जगलके सब्जे और दूर दूरके तालाब व घाटियोकी कैफ़ियत दिखाई देनेके सबब बहुत ही उत्तम और रमणीय है

अधर देवीका मन्दिर– बहुतसे मन्दिरोके बीचमे अधर देवीका मन्दिर है, यह देलवाडेकी घाटीके ऊपर एक ऊचे मकामपर वाके है, जिसकी दीवारे शहरसे दिखाई देती है

देलवाडेके जैन मन्दिर– मश्हूर देलवाडेके मन्दिर, जो जैनियोके पाच बडे तीर्थोमेसे है, देलवाडा नामके एक छोटे ग्राममे है यहाके लोगोके ज़बानी हालसे यह मालूम होता है, कि यह स्थान जैन मन्दिरोके बननेके पेश्तर शिव और विष्णुके मन्दिरोसे सुशोभित था पहिले यहा पडे लोग जैनियोको नही आने देते थे, लेकिन् अनहिलवाडाके साहूकारोंने राजा धारावर्ष परमारको बहुतसा रुपया देकर जमीन मोल लेली इसपर पडोंने राजाको शाप (बद दुआ) दिया, और उसी समयसे चन्द्रावतीका राज्य नष्ट होगया

इन मन्दिरोके समूहमे चार मन्दिर है, जिनमेसे दो तो पिछले जमानेके बने हुए सादी बनावटके है, जिनको बने हुए करीब ४०० वर्षका अर्सा हुआ, बाकी दो, जो आबूपर बहुत मश्हूर जैन मन्दिर है, उनमेसे एक तो विक्रमी १२६६ [हि० ६०६ = ई० १२०९] के लग भग विमलशाह (अनहिलवाड़ा पाटनके एक सेठ) ने ऋषभदेवका मन्दिर बनवाया, और दूसरा विक्रमी १२९३ [हि० ६३३ = ई० १२३६] के करीब जैन महाजन तेजपाल व वसन्तपाल, दोनो भाइयोंने पार्श्वनाथका मन्दिर बनवाया यह दोनो मन्दिर बहुत बड़े और ऊचे नहीं है, लेकिन् भीतर जानेपर उनके हर एक हिस्सेकी बनावट और खूबसूरतीको देखकर तअ़ज्जुब होता है इन मन्दिरोकी ख़ास चीज़ सामान्य अठपहलू गुम्बज है, जो पोशीदह कोठरीके एक मडपके बराबर है, जिसमे मूर्ते रक्खी हुई है, और उसके चारो तरफ़ गुम्बजदार थभे लगे हुए है, जिनपर बहुत उ़म्दह बारीक नक़ाशी कीहुई छत्ते हैं तेजपाल व वसन्तपालके मन्दिरकी हाथीशालामे १० बडे बडे हाथी सग मर्मरके बने हुए है, और इनके पीछे बहुतसे स्वरूप हाथमे थैलिया लिये हुए बने है, जो जाहिरी धर्म सम्बन्धी काम कराने वालोकी तस्वीरे है; लेकिन् यह स्वरूप सार्थक है, जो उस वक्तका पहिराव और केश रखनेकी चाल दिखलाते हैं यह मन्दिर शिल्प शास्त्रके अनुसार बनाये गये है, अगर कोई शख़्स इस विद्याका जानने वाला इन मन्दिरोको देखे, तो शायद उसको मालूम होगा, कि ऐसे मन्दिर बहुत ही कम पाये जाते है.

तवारीख

यह राज्य चहुवान राजपूत जातिके देवडा राजाओके कब्जहमे है, यह पता मुश्किलसे लग सक्ता है, कि इस जिलेपर चहुवानोंके पहिले किस किस घरानेके राजाओने राज्य किया, परन्तु परमार खानदानके राज्य करनेका सुबूत मिलता है, इन राजाओका जियादह पता अबतक हमको नही मिला, सिर्फ़ पृथ्वीराजरासा मे पृथ्वीराजके सावन्तोमे जैत परमार और उसके बेटे सलख परमारकी पृथ्वीराजके साथ लडाइयोमे बहादुरी दिखलाई है, और विक्रमी ११३६ [हि० ४७१ = ई० १०७९] मे पृथ्वीराज चहुवानने, जो सारूडा गावमे शिहाबुद्दीन गोरीको शिकस्त दी, वह फत्ह जैत परमारके ज़रीएसे हुई, और उसके बाद जैत परमारकी बेटी ईछिनीके साथ पृथ्वीराजका विवाह होना वगैरह कथा बढावेके साथ लिखी है, परन्तु यह ग्रथ बहुत समय पीछे बनाया गया, इससे जैसी सवत्की गलती पडी है, वैसी इतिहासमे भी होनेका सन्देह है, क्योंकि जिन जिन प्रशस्तियोसे हमको परमार राजाओका कुछ हाल मिला है, उससे पृथ्वीराज रासाका लेख गलत ठहरता है, इसलिये, कि एक प्रशस्ति जो विक्रमी १०९९ [हि० ४३३ = ई० १०४२] की बसन्तगढ़ की लान बावड़ीपर है, उसका लेख एशियाटिक सोसाइटी बगालके जर्नल १० भाग २ मे छपा है, जिसमे १ उत्पलराज उसका बेटा २ अरण्यराज, उसका बेटा ३ अद्भुतकृष्णराज, उसका पुत्र ४ श्रीनाथ घोशी, उसका पुत्र ५ महीपाल, उसका पुत्र ६ धधुक, उसका पुत्र ७ पूर्णपाल, जिसकी बहिन लाहिनीने यह बावडी बनवाई थी–(देखो शेष सग्रह नम्बर ८). विक्रमी १०९९ [हि० ४३३ = ई० १०४२] तक परमार राजाओके वशमे सात राजा चन्द्रावती, आबू और बसन्तगढपर राज्य करचुके थे आबूके परमारोका मूल पुरुष धूमराज था फिर विक्रमी १२८७ [हि० ६२७ = ई० १२३०] की बसन्तपाल तेजपालके जैन मन्दिरकी प्रशस्तिसे, और उसके पहिलेकी अचलेश्वरके मन्दिरकी प्रशस्तिसे (जिसका सवत् मालूम नहीं होता,) परमार राजाओकी पिछली वशावली साबित होती है– (देखो शेष सग्रह नम्बर ९–१०) इनमे धधुकके बाद ध्रुवभट्ट लिखा है, जिससे पायाजाता है, कि धधुकका पुत्र पूर्णपाल कुवरपदेमे ही मरगया, क्योंकि उसका नाम इन दोनो प्रशस्तियोमे छोडदिया है ध्रुवभट्टके बाद रामदेव हुआ, और उसके बाद धारावर्ष हुआ, उसका छोटा भाई और उसका सेनापति प्रह्लाददेव बड़ा बहादुर व विद्वान था वह प्रशस्तिकार लिखता है, कि उसने सामन्तसिहसे कभी शिकस्त नहीं खाई. सामन्तसिह चित्तौडके बापा रावलसे २३ नम्बर पर और समरसिहसे छ पीढ़ी पहिले हुआ था; और धारावर्षका एक ताम्रपत्र विक्रमी १२३७ [हि० ५७५ = ई० ११८०] का मिला है– (देखो शेष सग्रह नम्बर ११),

और एक लेख आबूपरके ओरीया ग्राममे मिला है, जिसमे धारावर्षको दूसरे भीमदेव सोलखीके ताबे लिखा है, उसका सवत् विक्रमी १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] है- (देखो शेष सग्रह नम्बर १२) इससे प्रतीत हुआ, कि धारावर्ष विक्रमी १२३७से १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] तक चन्द्रावतीका राजा था, तो यह साबित होगया, कि पृथ्वीराज चहुवानके समयमे सलख परमार और जैत परमारको आबूका राजा लिखना गलत है, राजा पृथ्वीराजके समयमे चित्तौडपर भी रावल समरसिह नही था, उस वक्त वहा सामन्तसिह था, जिसके साथ धारावर्षके भाई प्रह्लाददेवने लडाइया की थी, और इन लेखोसे यह भी साबित होगया, कि आबूके राजाओकी वशावलीसे विक्रमी १२६५ [हि० ६०४ = ई० १२०८] तक सलख और जैत नामका कोई राजा नहीं हुआ धारावर्षका पुत्र सोमसिहदेव और उसका पुत्र कृष्णराजदेव लिखा है और उसी मन्दिरके एक दूसरे लेखमे सोमसिहका दूसरा पुत्र कान्हडदेव लिखा है, जिस लेखका संवत् विक्रमी १२९३ [हि० ६३३ = ई० १२३६] है- (देखो शेष सग्रह नम्बर १३) इन्डियन ऐन्टिकेरीके दूसरे भागके पृष्ठ २१६ मे वॉटसन् साहिब लिखते है, कि कान्हडदेवके बाद चन्द्रावतीका आखिरी परमार राजा हुण (१) था इससे मालूम होता है, कि वह सोमसिंह या कान्हडदेवका पुत्र होगा, परन्तु यह निश्चय होगया, कि विक्रमके तेरहवे शतकमे आबूके राजा परमार वशके थे, अल्बत्तह यह बात प्रसिद्ध है, कि परमारोसे यह मुल्क चहुवानोने लिया

चहुवान उन चार क्षत्रियोके वशोमेसे है, जिनको वशिष्ठ ऋषिने अग्निकुडसे निकाला था, यह कथा बूदीकी तवारीखमे लिखी गई है- (देखो पृष्ठ १०१)

उसके बाद देवरावके नामसे देवड़ा कहलाये, इसके समय और पीढ़ियोमे बहुत इख्तिलाफ है, नैनसी महता लिखता है, कि १ मालबाहन, २ जैवराव, ३ अबराव नगोगो भाई, ४ दलराव, ५ सिद्धराव, ६ राव लाखण, ७ बल, ८ सोही, ९ महिराव, १० अनहल, ११ जीदराव, १२ आसराव, इसके घरमे देवीराणी होकर रही, जिसके गर्भसे तीन बेटे पैदा हुए देवीकी औलाद होनेसे देवडा कहलाये आसरावका बेटा १३ आल्हण, १४ कीतू, १५ महणसी, १६ बीजड, इसके पाच बेटे थे और यह लोग गूढा बाधकर गुजर करते थे. चहुवानोने आबूके परमारोको बेटियोकी शादी करना कुबूल करके बुलाया, जब वे लोग विवाह करनेको आये, तब उनको दगासे मारकर चहुवानोने विक्रमी १२१६ माघ कृष्ण १ [हि० ५५४ ता० १६ जिल्हिज = ई० ११५९ ता० २८ डिसेम्बर] को आबूका किला लेलिया, लेकिन् यह

(१) इस बातमें शुब्ह मालूम होता है

बात गलत है, क्योंकि विक्रमका तेरहवा शतक पूरा होने तक परमार राजाओका राज्य प्रशस्तियोसे ऊपर साबित होचुका है, और इसके बाद भी विक्रमी १३७७ [हि० ७२० = ई० १३२०] की एक प्रशस्ति अचलेश्वरके मन्दिरमे मिली है- (देखो शेष सग्रह नम्बर १४), जिसमे चहुवान लुभराजने चन्द्रावती और आबू लेलिया, ऐसा लिखा है उसके पूर्वजोके नाम इस तरह लिखे है- माणिक्यराज, लक्ष्मणराज, अधिराज, सोहीराज, सिन्धुराज, आसराज, आनन्दराज, कीर्तिपाल, समरसिह, उदयसिह, मानसिह, प्रतापसिह, दशस्यदन (बीजड), लावण्यकर्ण, लुभा; इन्होने आबू और चन्द्रावतीका राज्य परमार राजाओसे लेलिया इसका पुत्र तेजसिह था, जिसका कान्हडदेव और उसका सामन्तसिह- (देखो शेषसग्रह नम्बर १५)

नैनसी महताका लेख इन प्रशस्तियोसे नहीं मिलता वह लिखता है, कि बीजड़के बाद १७ तेजसिह आबूका राव हुआ १८ लुभा, १९ सलखा, २० रिणमल्ल, २१ सोभा, २२ राव सहसमल्ल इन्होने सरणवा (१) नामी पहाडके पास विक्रमी १४५२ वैशाख कृष्ण २ [हि० ७९७ ता० १६ जमादियुस्सानी = ई० १३९५ ता० ७ एप्रिल] (२) को शहर आबाद करके उसी पर्वतके नामसे सरणवाही नाम दिया, जिसको समयके बीतनेपर लोग 'सिरोही' कहने लगे

इसके बाद २३ राव लाखा हुआ, जिसने लाखेलाव तालाब बनवाया २४ राव जगमाल, २५ राव अखेराजके २६ बडा बेटा रायसिंह और छोटा दूदा एकके बाद दूसरा गद्दीपर बैठा

राव लाखाके बेटा १ जगमाल, २ हमीर, ३ शकर, ४ उदयसिंह था, जब राव लाखाके बाद जगमाल गद्दी पर बैठा, तो उसके भाई हमीरने राज्यका विभाग करना चाहा, जिसपर आपसमे बहुत लडाइया हुई, आखिरकार जगमालके हाथसे हमीर मारा गया

जगमालके बाद राव अखेराज सिरोहीका मालिक कहलाया, जिसके वक्तकी प्रशस्ति विक्रमी १५८९ [हि० ९३९ = ई० १५३२] की मिली है- (देखो शेष सग्रह नम्बर १६), और उसने जालौरके पठानोको गिरिफ्तार किया, बाद उसके रायसिह सिरोहीका राव हुआ, उसने मेवाड़ और मारवाडके राजाओकी फौजोमे बडी बहादुरिया दिखलाई, चारण माला आसियाको करोड पशावमे खेण गांव दिया, जिसमे

---

(१) सरणवाका अर्थ सरणा अर्थात् पनाहका पहाड़ है, जिसमें दुश्मनोंके भयसे पनाह लीजावे

(२) सवत् १४५२ की जगह बडवा भाटोंकी पोथियोंमें सवत् १४६२ और १४८२ भी लिखा है, परन्तु हमने नैनसी महताकी पोथीसे मूलका संवत् लिखा है

३०० रहट चलते है, और अब तक वह उसकी औलादके कब्ज़ेमे है दूसरा करोड़ पशाव चारण पत्ता कलहटको दिया, जिसमे गाव माडासण गुजरातकी सीमापर उदक करदिया यह राव दातारीमे बडा मश्हूर गिनाजाता है भिन्नमालमे विहारी पठानोका एक थाना था, जिनपर रायसिंहने हमलह किया, उस वक्त एक तीर लगनेसे वह मरगया; उसके साथके राजपूत लाशको कालधरीमे लेआये, और वही दाग दिया रायसिंहने मरते समय कहा, कि मेरा बेटा उदयसिंह बच्चा है, इसलिये भाई दूदाको सिरोहीकी गद्दीपर बिठादेना चाहिये, यह उदयसिंहकी पर्वरिश करेगा सब सर्दारोने इस बातको कुबूल किया, परन्तु दूदाने कहा, कि उदयसिंह गद्दीका मालिक है, जबतक वह बडा हो, मै रियासतके कामको संभालूगा, और इसी तरह नेक निय्यतीसे उसने काम चलाया

जब दूदा मरने लगा, तो उसने उदयसिंह और दूसरे सर्दारोसे कहा, कि मेरे बेटे मानसिंहको लोहियाना गाव जागीरमे देकर उदयसिंह सिरोहीकी गद्दीपर बैठे, यही बात अमलमे आई, एक वर्षके बाद उदयसिंहने बचपनकी अदावतके कारण मानसिंहको लोहियानेसे निकाल दिया, उसके राजपूतोने दूदाकी खैरख्वाही बतलाकर बहुत मना किया, लेकिन् रावने एक भी न सुनी, मानसिंह महाराणा उदयसिंहके पास चलागया, जिसको वहा बरकाण बीझेलावका पट्टा मिला उदयसिंह शीतलाकी बीमारीसे मरगया, और मानसिंह सिरोहीका मालिक हुआ, इसके समयकी एक प्रशस्ति विक्रमी १६३२ [हि० ९८३ = ई० १५७५] की मिली है- (देखो शेष संग्रह नम्बर १७) यह हाल तफ्सीलवार महाराणा उदयसिंहके बयानमे लिखागया है- (देखो पृष्ठ ६५)

मानसिंहके गद्दी बैठनेपर जोधपुरके राव गागाकी बेटी चंपाबाईने, जो राव रायसिंहको ब्याहीगई थी, और जिसके गर्भसे उदयसिंह पैदा हुआ था, मानसिंहको ललकारकर कहा, कि मेरे बेटे उदयसिंहकी स्त्री गर्भवती है, इसलिये तुझको गद्दीपर नही बैठना चाहिये, तब मानसिंहने उदयसिंहकी गर्भवती स्त्रीको मारडाला (विचार का स्थान है, कि मनुष्य थोडी जिन्दगीमे लोभसे कैसे कैसे अनर्थ करते है, अब वह मानसिंह कहा है?) राव मानसिंह बडा बहादुर और मुन्तज़िम था, उसने कई सर्कश कोलियोको ताबे किया, जो बडे फसादी और पहाडी जागीरदार थे

पचायण परमारको उदयसिंहने ज़हर दिलाकर मारडाला था, जिसका भतीजा कल्ला परमार रावकी सेवामे रहनेलगा, और उसने मानसिंहको कटारसे मारडाला. मानसिंहके औलाद न होनेके कारण सुल्तान भाणावतको गद्दी मिली

राव लाखाका बेटा उदयसिंह, जिसका रणधीर, उसका भाण, उसका बेटा

सुल्तान था सुल्तान गद्दीपर बैठा, परन्तु कुल कारोबारका मुख्तार बिजा देवडा था, जिसने रावके काका सूजा रणधीरोत को इसलिये मरवाडाला, कि वह जबर्दस्त आदमी रियासती कामोमे दस्तअन्दाजी करने लगा अब नामके लिये सुल्तान मालिक रहगया, बिजाके भाइयोने उसको बहुत रोका, परन्तु मुसाहिबी ऐसी चीज है, कि अगलोकी दुर्दशा देखनेपर भी पिछले उसी बलामे फसजाते है राव मानसिंहकी स्त्री बाहडमेरी को गर्भ था, जिसने अपने पीहर बाहडमेरमे एक लडका जना, जब देवडा बिजा और राव सुल्तानमे अदावत बढने लगी, तो बिजाने मानसिंहके बेटेको गद्दीपर बिठानेको बाहडमेरसे बुलाया, और आप उसकी पेशवाईके लिये गया, परन्तु वह लडका अकस्मात् मरगया, और पीछेसे राव सुल्तान भागकर रामसेन चलागया सिरोहीकी गद्दीपर देवडा बिजाने बैठना चाहा, परन्तु उसका यह मनोर्थ देवड़ा समरा सूराने रोका, बिजा जब्रन मुख्तार बना तब समरा और सूरा दोनो, राव सुल्तानके पास चलेगये, महाराणा प्रतापसिंह अव्वलने बिजाको निकालकर अपने भान्जे कल्ला मिहाजलोतको वहाका मालिक बनादिया, राव सुल्तान भी कल्लाके पास चला आया, लेकिन् राजपूतोने आपसकी तकारसे कल्लाको शिकस्त देकर सुल्तानको दो बारह सिरोहीका राव बनाया फिर बीकानेरके राव रायसिंहकी मारिफत सिरोहीका आधा राज बादशाही खालिसेमे होकर महाराणा उदयसिंहके बेटे जग्मालको मिला यह ज़िक्र तफ्सीलवार महाराणा प्रतापसिंह अव्वलके हालमे लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १६१)

दुबारह राव सुल्तान सिरोहीपर राज करने लगा, परन्तु महाराणा उदयसिंहके बेटे सगरने अपने भाई जग्मालका बदला लेकर सिरोहीको बर्बाद किया यह जिक्र महाराणा अमरसिंह अव्वलके हालमे लिखा गया है- (देखो पृष्ठ २२०) विक्रमी १६६७ आश्विन कृष्ण ९ [हि० १०१९ ता० २३ जमादियुस्सानी = ई० १६१० ता० १२ सेप्टेम्बर] को राव सुल्तानका देहान्त होगया

उसका बेटा राजसिंह गद्दीपर बैठा, वह एक भोला आदमी था, उसका दूसरा भाई सूरसिंह रियासतका हिस्सह करनेके लिये फसाद करनेलगा, और देवड़ा भैरव-दास समरावत डूगरोत वगैरह उसके मददगार होगये, राव राजसिंहकी तरफ़ देवड़ा पृथ्वीराज सूजावत रहा, दोनो तरफ़ राजपूतोकी फौजे तय्यार होकर लडाई हुई, जिसमे सूरसिंहने शिकस्त खाई पृथ्वीराज रावकी मुसाहिबी करने लगा कुछ दिनोके बाद राव राजसिंह और पृथ्वीराजमे भी नाइत्तिफ़ाकी फैली पृथ्वीराजके पास भाई और बेटोका बड़ा गिरोह था, रियासतकी बर्बादीके खयालसे राव और पृथ्वीराजको महाराणा अमरसिंह अव्वलके कुवर कर्णसिंहने उदयपुरमें बुलाकर फह्माइश की, परन्तु कुछ कारगर नहीं हुई, तब वे पीछे सिरोही गये. रावने देवडा भैरवदासको

पृथ्वीराजपर घात करनेको रक्खा; राव महादेवके दर्शनको गये, और पीछेसे भैरवदासको पृथ्वीराजके कुटुंबियोने मारडाला यह सुनकर रावने सब्र किया, और भैरवदासकी जागीर उसके बेटे रामसिहको दी एक दिन पृथ्वीराज अपने भाई बेटोको लेकर गया, और राव राजसिहको गफ्लतकी हालतमे मारडाला, महल वगैरह घेर लिये, और राजसिहके दो वर्षकी उम्र वाले बेटे अखेराजको मारना चाहा, परन्तु उसको राणियोने छिपादिया, थोडी देरके बाद सीसोदिया पर्वतसिह व रामा भैरवदासोत वगैरह रावके राजपूतोने लडाई शुरू की, और एक तरफ़से दीवार तोडकर राव अखेराजको निकाल लिया, उसके बाद हमलह करने लगे, तब पृथ्वीराज भाग निकला, और उसके कई राजपूत भाई बेटे मारे गये

आखिरकार विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] मे पर्वतसिह, रामा भैरवदासोत, चीबा, दूदा, करमसी, साह तेजपाल वगैरहने दो वर्षकी उम्रके राव अखेराजको गद्दीपर बिठाया, और सब राजपूतोने मिलकर पृथ्वीराजको मुल्कसे निकाल दिया वह देवलियामे जारहा, और सिरोहीके इलाकेमे फसाद करने लगा; तब देवराजोत देवडा राजसिह व जीवाको फरेबकी लडाई करके सिरोहीसे निकाल दिया वे पृथ्वीराजके पास जारहे, और गफ्लतकी हालतमे उसको मारकर पीछे चले आये

पृथ्वीराजके बेटे चादाने अम्बावके पहाडोमे रहकर सिरोहीका मुल्क खूब लूटा; आखिरकार वह विक्रमी १७०१ [हि० १०५४ = ई० १६४४] मे १२० गावोपर कब्जह करके नींबजमे रहने लगा तब विक्रमी १७१३ [हि० १०६६ = ई० १६५६] मे राव अखेराजने अपने राजपूत सीसोदिया पर्वतसिह, देवडा रामा, चीबा, करमसी, खवास केसर वगैरह कुल फौजको लेकर नींबजको जाघेरा, चांदाने मुकाबलह किया, और राव अखेराजको शिकस्त दी, जिसमे रावके ५० आदमी मारेगये, १०० जख्मी हुए, और देवडा राघवदास जोगावत बडा नामी सर्दार काम आया

इन्हीं दिनोमे बादशाह शाहजहाके बेटोमे तख्तके लिये अदावत फैलने लगी, तब बडे शाहजादह दाराशिकोह और छोटे मुरादबख़्शने अखेराजके नाम निशान लिखे, उनकी नक्लें सिरोहीके दीवान 'ख़ान बहादुर' निअ्मतअलीख़ाने हमारे पास भेजी, जिनको तर्जमह समेत यहा दर्ज किया जाता है –

१– शाहजादह दाराशिकोहका निशान, सिरोहीके राव अखेराजके नाम

—**—

(मुहरकी नक्ल)

***
* * अल्लाह * *
* शाह बलन्द इक्बाल, *
* मुहम्मद दाराशिकोह, *
* इब्न शाहजहा, बादशाह *
* * गाजी * *
**

बराबर वाले सर्दारो और कारगुजारोमे उम्दह, राव अखेराज, शाही मिहर्बानियोसे खातिर जमा और इज्जतदार होकर जाने–

जो अर्जी कि इन दिनोमे खैरख्वाहीकी बाबत भेजी थी, पाक नजरसे गुजरी आला हजरतने वह सूबह शाहजादह (शायद मुरादबख्श) से उतारा, और कोई दूसरा अनूकरीब बादशाही दर्गाहसे मुकर्रर होकर वहा पहुचेगा, और शाहजादहको सूबेसे अलहदह करेगा उस सर्दारको चाहिये, कि हर तरह तसल्ली रखकर खैरख्वाही और

۱- نشان شاہزادہ دارا شکوہ بنام راو اکھے راج
رئیس سروہی *

—*—

(نقل مہر)

اللہ
شاہ بلند اقبال
محمد دارا شکوہ
ابن شاہجہان
بادشاہ غازی

زبدۃ الامثال والاقران عمدۃ الاشباہ والاعیان
راو اکھے راج بعنایت شاہانہ مفتخر و مستمال
بودہ بداند - کہ عرضداشتے کہ درینولا مشتمل بر (خیرخواہی) بجناب (عالیہ ماب)
ارسال داشتہ بود بشرف ازمطالعہ قدسی یافت - چون بندگان اعلیحضرت آن صوبہ را از شاہزادہ

वफ़ादारीमे मज्बूत रहे, और शाही मिह्बार्नियोको अपने हालके शामिल जाने ता० ११रबीउ़ल अव्वल, सन् १०६०हिज्री [वि० १७०६ = ई० १६५०]

२-शाहज़ादह मुरादबख़्शका निशान, राव अखेराजके नाम

(मुहरकी नक्ल)

बराबरी वालोसे उम्दह और बिह्तर अखेराज, सिरोहीका जमींदार, शाही मिह्बार्नियोसे सर्बलन्द होकर जाने, जो अर्ज़ी, कि इन दिनोमे फ़र्मांबर्दारी और ख़ैरख़्वाही साबित करनेके लिये

تقصیر نموده‌اند و مغفرت از حضرت خلافت و جهانداری (شخصی دیگر) منقش شده در آنجا
خواهد رسید و ایشان را از صوبهٔ مذکور خواهد بر آورد — می باید که آن زبدة الاشباه خاطر بهمه
جهت مطمئن داشته باخلاص و بندگی ثابت باشد و عنایات شاهانه را شامل حال خود شناسد —
تحریراً فی تاریخ یازدهم ربیع الاول سنه ۱۰۶۰ هجری فقط

۲ — نشان نواب شاهزادهٔ مرادبخش - بنام راو اکهیراج *

(نقل مهر)
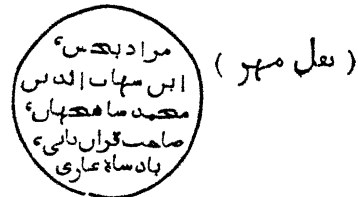
زبدة الاقران قدوة الاعیان اکهیراج زمیندار
سروهی بعنایت سلطانی سرفراز و سربلند بوده
بداند که عرضداشتی که در ینولا مشتمل بر رسوخ اطاعت و انقیاد و ثبوت عقیدت و اخلاص
بدرگاه ارسال داشته بود بوسیلهٔ قرب پایگان مجلس فردوس منزلت از نظر فیض اثر
گذشت و مضمون آن معروض جناب بارگاه و باعث مزید توجه و عنایت مادر بارهٔ او
بوقوع آمد — باید خاطر خود بهمه باب جمع داشته و مستمال مراحم سلطانی بوده بزودی
روانهٔ حضور موفور السرور شود که بتعالی ادراک سعادت ملازمت فیض منقبت هرگونه عرض

हमारी दर्गाहमे भेजी थी, बडे दरजेके हाज़िर लोगोके ज़रीएसे बलन्द नज़रसे गुज़री, उसके मज़्मूनसे उसके हालपर हमारी मिहर्बानीकी तरक्की हुई मुनासिब है, कि अपनी तबीअतको हर बातसे बे फ़िक्र रखकर शाही मिहर्बानियोके भरोसेपर जल्द हमारे यहां हाज़िर हो बुज़ुर्ग ख़िद्मतकी नेक बख़्ती हासिल करने बाद हर तरहकी अर्ज़ और ख़्वाहिश, जो उसके दिलमे होगी, कुबूल फ़र्माई जायेगी हमारी बे हद मिहर्बानियोको अपने शामिल हाल जानकर देर न करे, इस मुआमलेमे ताकीद समझे ता० २९ रबीउल अव्वल, २९ जुलूस, मुताबिक सन् १०६६ हिज्री [वि० १७१२ = ई० १६५६]

——✳——

३– शाहज़ादह मुरादबख़्शका निशान, राव अखेराजके नाम.

(मुहरकी नक्ल)

बराबर वालोमे उम्दह अखेराज, सिरोहीका ज़मींदार शाही मिहर्बानियोसे ख़ुशहाल होकर जाने,

कि इन दिनो हमारे हुज़ूरमे अर्ज़ हुआ, कि सय्यद रफ़ी बलन्द दर्गाहसे रवानह होकर हमारी ख़िद्मतमे आता था, जब दातीवाडेकी हदमे पहुचा, तो केसरी नाम

والماسے که دراسه باسد بعزاجابت معروں حواهد شد — عنایت بے عایت مارا سامل حال دانسته اهمال نه نماید درس باب قدغن شناسد — تحریر فی التاریخ بست ونهم شهر ربیع الاول سنه ۲۹ جلوس مطابق سنه ۱۰۶۶ هجری قدسی صلعم *

——✳✳——

۳— نشان بادشاهزاده مرادبخش بنام راو اکهیراج *

زبدة الاشباه اکهیراج زمیندار سروهی به عنایت سلطانی مستمال گشته بداند که چون درینولا بعرض باریافتگان مجلس رسید که سادات پناه سید رفیع ازدرگاه آسمان جاه روانه

राजपूत हाथीवाडेके रहनेवालेने, जो अगवेके तौर हम्राह था, बद नसीबीसे नाकिस खयाल अपने दिलमे जमाया, सय्यदके दो तीन आदमियोको कत्ल और तीन चारको जख्मी करके, सात आठ हजार रुपया नक़्द और सामान लूटलिया इस वास्ते बलन्द दरजेका जबर्दस्त हुक्म जारी किया जाता है, कि मुबारक निशानके हासिल होते ही जिक्र किये हुए नालाइकको पूरी सजा देकर तलाशके साथ तमाम माल अस्बाब हमारे हुजूरमे भेज देवे, कि उसका फ़ाइदह और बिहतरी इस बातमे है, अगर "खुदा न करे" इस मुआमलेमे टाल कीगई, तो ज़ुरूर यह हक़ीक़त बडे हजरतकी दर्गाहमे अर्ज कीजायेगी, इस सूरतमे नेक नतीजा न होगा, शर्मिन्दगी और पशेमानी भी फ़ाइदह न देगी इस बाबत हुक्मके मुवाफ़िक़ बहुत जल्द ताकीद समझकर बर्ख़िलाफ़ी न करे माह मुहर्रम, सन् ३० जुलूस मु० सन् १०६७ हिज्री [वि० १७१३ = ई० १६५६]

४– शाहजहां बादशाहका फ़र्मान, राव अखेराजके नाम

बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम, व बिही नस्तईन.

(मुहरकी नक्ल)

बराबर वाले सर्दारोमे उम्दह, मुसल्मानी बादशाहतका ताबेदार, अखेराज, सिरोहीका जमींदार, बादशाही मिहर्बानियोका उम्मेदवार होकर जाने,

---

ملازمت فیض منقبت شده، در حدود داتی وارهٔ کسری نام راجپوت متوطن هاتهی واره که بطریق بدرقه همراه بود، از روی بدبختی خیال تباه بخود راه داده، دو سه کس از همراهیان مشار الیه را کشته، وسه چهار کس را زخمی ساخته، هفت و هشت هزار روپیه نقد وجنس تاراج برده، لهذا امر رفیع القدر منیع الشان واجب الاطاعت لازم الاذعان صادر می شود، که بمجرد ورود نشان مرحمت عنوان، مذکور را تنبیه واقعی رسانیده، اموال مذکور به تجسس بدست آورده، بحضور پرنور بفرستد، که خیریت وبهبود درین ست؛ واگر عیاذاً بالله درینباب دفع الوقت نماید، مذکور میشود که این حقیقت بدرگاه ملک اشتباه عرضداشت نموده آید، درینصورت نتیجهٔ نیک نخواهد یافت، ندامت و پشیمانی سود نخواهد داشت — دریناب قدغن بلیغ لازم دانسته تخلف وانحراف نه ورزد — تحریر فی التاریخ هفتم شهر محرم الحرام سنه ۳۰ جلوس میمنت مانوس، موافق سنه ۱۰۶۷ هجری *

इन दिनोमे बादशाही दर्गाहके हाजिर लोगोकी मारिफत अर्ज हुआ, कि उसकी जागीरके इलाकेमे बाजे लोगोका माल अस्बाब चोरी गया, इसलिये बुजुर्ग व जबर्दस्त हुक्म जारी होता है, कि अपने इलाकेमे ऐसा बन्दोबस्त करे, और जाबितह रक्खे, कि ऐसी बाते हर्गिज वाके न हो, और जो माल उसके इलाकेमे चोरी गया, उसको पैदा करके माल वालोको दे उस जगहकी जमीदारी हुजूरसे इसलिये इनायत फर्माई गई है, कि ऐसी वारिदाते वहा न हो, और आदमी और मुसाफिर बे फिक्रीसे अपना आना जाना जारी रक्खे मुनासिब है, कि आगेको अपने इलाकेसे अच्छी तरह खबरदार रहे, और खातिर जमा रक्खे, कि वह इस दर्गाहका ताबेदार है, कोई उसकी जमीदारीमे खलल न डालेगा, इस बाबत ताकीद जाने, और अमल करे ता० २३ सन् ३० जुलूस, मुताबिक सन् १०६७ हिज्री [वि० १७१४ = ई० १६५७]

۴— فرمان شاهجهان بادشاه بنام راو اکهیراج *

بسم الله الرحمن الرحیم ربه نستعین *

زبدة الامثال والاقران مطیع الاسلام اکهیراج
زمیندار سروهی به عنایت بادشاهانه مستمال
و امیدوار بوده بداند، که درین ولا بعرض ایستادهاے پایهٔ سریر خلافت مصیر رسید، که
در محال زمینداری او مال و اسباب جمعی به دزدی رفته— بنابر آن حکم جهان مطاع لازم الاتباع
واجب الاتباع صادر مے شود، که درین محال این نوع امور اصلا واقع نه شود، و بعد وجه هرچه
از مردم در محال زمینداری او به دزدی رفته باشد، آنرا پیدا ساخته، به صاحبان مال رساند—
مابدولت زمینداری آنجارا باو براے این عنایت فرموده ایم، که این قسم امور درآنجا
واقع نه شود، و خلق الله و مترددین به فراغ بال و رفاه حال تردد و آمد و شد نمایند— مے باید که
من بعد از سرزمین و حدود متعلقهٔ خود به واقعی خبردار باشد، و خاطر جمع دارد، که خود
او بندهٔ این درگاه خلایق پناه است هیچکس متعرض زمینداری او نه خواهد شد— در باب
قدغن داند، و در عهده شناسد— تاریخ ۲۳- سنه ۳۰ از جلوس مبارک، مطابق سنه ۱۰۶۷
هجری تحریر یافت *

५– बादशाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, राव अखेराजके नाम

बराबरी वाले सर्दारोंमें उम्दह मिहर्बानियोंके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिहर्बानियों से इज़्ज़तदार और शामिल होकर जाने,

जो अर्ज़ी कि बुज़ुर्ग मिज़ाजकी दुरुस्ती पूछनेकी बाबत भेजी थी, पाक नज़रसे गुज़री, और ख़ैरख़्वाहीका मज़्मून मालूम हुआ ज़बर्दस्त हुक्मके मुवाफ़िक़ फ़र्मान जारी कियाजाता है, कि वह ख़ैरख़्वाह अपने इलाकेमें जमइयत समेत अच्छी तरह इन्तिज़ाम रखकर होश्यार रहे, जिस हालतमें कि लाचार होकर वहांका रहना मुनासिब न समझे, तो हुज़ूरमें चला आवे, फिर और तद्बीर कीजावेगी ता० १४ मुहर्रम सन् १०६७ हिज्री [वि० १७१३ = ई० १६५६]

۵— نشان بادشاهزاده داراشکوه بنام راو اکهی راج *

زبدة الاماثل والاعیان عمدة الاشباه والاقران
راو اکهی راج بعنایات شاهی معزز و مستمال بوده
بداند که عرضداشتی که مشتمل بر خیریت حال عالمیان مآب ارسال داشته بود شرف
از مطالعهٔ قدسی یافت و مضمون اخلاص مشحون آن واضح گشت و فرمان موجب حکم
والا قدر نافذ میشود که آن زبدة الاشباه بخاطر جمع با جمعیت شایسته در محال خود انتظام
داده و خبردار باشد و در صورتیکه کار بر او تنگ شود و بودن آنجا مناسب بحال خود نداند روانه
بحضور پرنور شود که بعد از ملازمت کما ینبغی تدبیری دیگر کرده خواهد شد فقط تحریر
فی تاریخ چهاردهم شهر محرم سنه ۱۰۶۷ هجری *

६- शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, सिरोहीके राव अखेराजके नाम

बिस्मिल्लाहि रेह्मानि रेहीम.

(मुहरकी नक़्ल)

बराबरी वाले सर्दारोंमें बिह्तर उम्दह खानदान वाला, मिह्र्बानियों और इह्सानके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिह्र्बानियोंसे खातिरजमा होकर जाने,

जो अर्ज़ी खैरख़्वाहीके साथ उस तरफ़की खबरोंकी बाबत हमारे हुज़ूरमें भेजी
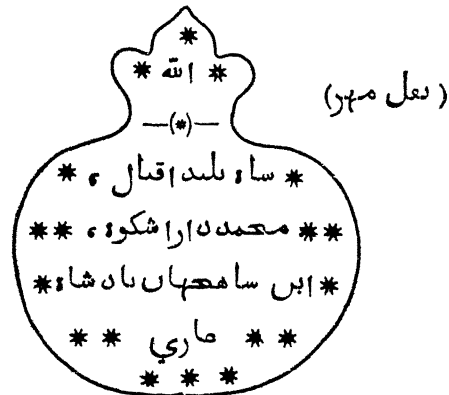
٦ — نشان بادشاهزاده داراشکوه بنام راو اکهیراج *

بسم الله الرحمن الرحیم *

(نقل مهر)

زبدة الاماثل والاعیان، عمدة العمائل والاقران،
لائق العنایت والاحسان، راو اکهیراج،
بعنایت شاهی مستمال بوده بداند که عرضداشتی که مشتمل بر اخبارات آن صوب ومراتب
اعتقاد خیر اندیشی بعتبهٔ عالیهٔ ما ارسال داشته بود، از نظر کیمیا اثر گذشت، ومضمون

थी, बुजुर्ग नजरसे गुजरी, खैरख्वाहीका मज्मून अच्छी तरहपर जाहिर हुआ हम उसको अपनी दर्गाहका वफादार खैरख्वाह जानकर उसकी बिह्तरीमें मस्रूफ रहते हैं, इसलिये और जबर्दस्त हुक्म जारी कियाजाता है, कि अच्छी मज्बूती और बे फिक्रीसे अपने इलाकेमें रहकर ऐसा बन्दोबस्त रक्खे, कि कोई मुखालिफ उस तरफसे न गुज़र सके उम्दह सर्दार, इज्जतदार, बहुतसी मिहर्बानियोंके लाइक, महाराज जशवन्तसिंह, जो निहायत दरजे दिलसे हमारी खैरख्वाही और वफादारी करता है, उसने उम्दह फौज जालौरमें ठहरा रक्खी है, उस महाराजाने इरादह करलिया है, कि मौकेपर, जब कि वह सर्दार मददका मुह्ताज हो, जमइयत उसके पास पहुंच जावे, मुनासिब है, कि वक्त पर उस जमइयतको इशारह करदे, कि वह उसका साथ देगी अपनी तबीअत हर तरह बे फिक्र रखकर शाही मिहर्बानियोंको अपने हालपर जारी समझे, और उस तरफकी हकीकत रोज बरोज अर्जियोंके जरीएसे जाहिर करता रहे अगर शाहजादह (मुरादबख्श वगैरह) उसको तलब करे, हर्गिज जानेका इरादह न करे हिज्री १०६८, ता० १७ मुहर्रम [वि० १७१४ कार्तिक कृष्ण ३ = ई० १६५७ ता० २४ ऑक्टोबर]
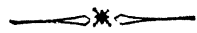
اخلاص مشحون به تفصیل مفهوم رای مهر انجلای گردید — چون آن زبدة الاشباه را از عقیدت مندان درست اخلاص این آستان فیض نشان دانسته طبع مآثر واهب حال آن بهور شعار مصروف است، حکم والاقدر صادر می شود، که باستقلال تمام و جمعیت خاطر در آن سرزمین بوده بندوبست باید نمود، و نه گذارد، که مخالفی از اطراف تواند عبور کرد — چون جمعیت خوبی از عمدة الاشباه والاقران، قدوة الاماثل والاعیان، قابل اللطف والاحسان، لائق العنایت والامتنان مورد مراحم بیکران شایستهٔ الطاف نمایان، مهاراجه جسونت سنگه، که نهایت اخلاص واختصاص به ما دارد، در برگنه جالور مانده، ومهاراجه مشار الیه مقرر نموده است، که جمعیت مذکور بوقت کار، و صورتی که آن زبدة الاقران محتاج به کمک باشد، خود را باو برساند، میباید که در آن وقت بجماعهٔ مذکور اشاره نماید، که طریقهٔ همراهی به آن شهامت اطوار بجا خواهد آورد، و خاطر خود را بهمه جهت مطمئن داشته عنایت شاهانه را شامل حال خود شناسد، و از حقیقت آن صوب روز بروز عرضداشت می نموده باشد، وگر شاهزاده (مراد بخش وغیره) اورا طلب نماید، زنهار ارادهٔ رفتن نه کند — فقط تحریر فی التاریخ هفدهم محرم الحرام سنه ١٠٦٨ هجری *

७- शाहज़ादह दाराशिकोहका निशान, राव अखैराजके नाम

(मुहरकी नक्ल)

शाहे बलन्द इक्बाल, मुहम्मद दाराशिकोह, इब्ने शाहजहा बादशाह गाजी

बराबरी वालोंमे उम्दह, नेक खानदान, मिह्बानियोंके लाइक, राव अखैराज, शाही मिह्बानियोंसे ख़ातिरजमा होकर जाने,

जो अर्ज़ी इन दिनोंमे खैरख्वाहीके साथ हमारे हुज़ूरमे भेजी थी, बुज़ुर्ग नजरसे गुजरी, मुनासिब है, कि वह अपनी जमइयत समेत अपने इलाक़हमे रहकर पूरा बन्दोबस्त रक्खे, हम उसको हुजूरमे बुलालेंगे, जो तद्बीर उसके फ़ाइदोंके लिये दर्कार होगी, कीजावेगी, हर तरह खातिर जमा रख कर शाही मिह्बानियोंको अपने हालपर जारी समझे, किसी तरह न घबरावे ता० ६ सफर सन् ३१ जुलूस, मुताबिक हिज्री १०६० [वि० १७०६ माघ शुक्ल ७ = ई० १६५० ता० ७ फ़ेब्रुअरी]

٧— نشان بادشاهزادهٔ داراشکوه، بنام راو اکھے راج *

(نقل مهر)

شاه بلند اقبال، محمد داراشکوه ابن شاهجهان بادشاه غازی

عمدة الاماثل والاعیان، زبدة العائل والاقران،
لائق العنایت والاحسان، راو اکھے راج بعنایت،
شاهی مستمال بوده بداند، که عرضداشتے که درینولا مشتمل بر مراتب عقیدت واخلاص بجناب عالمیان مآب ارسال داشته بود، از نظر کیمیا اثر گذشت، ومضمون آن واضح رای جهان آرا گردید — می باید که آن زبدة الاسنا با جمعیت خود در آنجا بوده از ان سر زمین بواقعی (خبردار باشد)، آن قدوة الاماثل را بحضور پرنور طلب خواهیم فرمود، فکرے که در باب سرانجام او باید کرد، نموده خواهد شد، خاطر بهمه جهت جمع نموده عنایات وتفضلات شاهانه را شامل حال خود شناسد، وبه هیچ وجه مضطرب نباشد — تاریخ ششم شهر صفر ختم المرسلین، سنه ۳۱ جلوس میمنت مانوس، مطابق سنه یک هزار و شصت هجری قدسی صلعم *

८- शाहजादह दाराशिकोहका निशान, राव अखेराजके नाम

(मुहरकी नक़्ल)
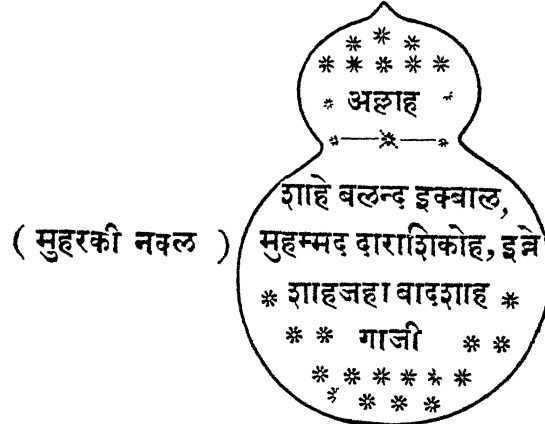
बराबरी वाले सर्दारोंसे उम्दह, नेक खानदान, मिह्र्बानी और इह्सानके लाइक़, राव अखेराज, शाही मिह्र्बानीसे इज़्ज़तदार और उम्मेदवार होकर जाने,

इन दिनोंमें जो अर्ज़ी उस इलाक़हकी ख़बरोंकी बाबत हमारे हुज़ूरमें भेजी थी, बुज़ुर्ग नज़रसे गुज़री, उसका मज़्मून मालूम हुआ उस मिह्र्बानियोंके लाइक़को मालूम हो, कि नामी राजाओंका बुज़ुर्ग, बड़े दरजेका अमीर, बहुत एतिबारी बादशाही सर्दार, मिह्र्बानी और इह्सानोंके लाइक़, महाराजा जशवन्तसिंह, और बहादुरीकी निशानी, दिलेर सर्दार, बादशाही हुज़ूरका पसन्दीदह, निहायत कार्गुज़ार, बादशाही अमीर, नेक ज़ात, उम्दतुल् मुल्क, क़ासिमखां, उज्जैनसे आगेको रवानह हुए हैं, कि अहमदाबाद

---

۸ — نشان بادشاہزادہ داراشکوہ بنام راو اکھے راج *

(نقل مہر)

عمدۃ الاماثل والاعیان زبدۃ القبائل والاقران
لائق العنایت والاحسان راو اکھے راج
بعنایت شاہی مغرور و مستمال بودہ بداند کہ عرضداشتے کہ دریں ولا مشتمل بر اخبار
آنصوب بجناب عالمیان مآب ارسال داشتہ بود از نظر کیمیا اثر گذشت و مضمون آن مفہوم

पहुंच जावे इन दिनोंमें आला हज़रत खुदाके साये, हज़रत बादशाहने नेक खानदान मिहर्बानियोंके लाइक, नेक बादशाही सर्दार, उम्दतुल्मुल्क खलीलुल्लाहखां, और बहादुरीकी निशानी, बराबरी वालोंमें उम्दह, मिहर्बानियोंके लाइक, दिलेर सर्दार, राव शत्रुशालको बीस हज़ार मज्बूत सवारों समेत, बीस लाख रुपया फ़ौज ख़र्च देकर उस तरफ़ जानेको मुक़र्रर किया है यह लोग बहुत जल्द महाराजाके पास पहुंचेंगे, और हिम्मतसे उस बेअदब (मुरादबख़्श वगैरह) हक़ न पहिचानने वालेको सख़्त सज़ा देंगे

मुनासिब है, कि वह ख़ैरख़्वाह भी इस वक्त अपनी जमइयत समेत फ़त्हमन्द लश्करमें पहुंचे, और उस तरफ़के ज़मींदारोंमेंसे, जो कोई नज़्दीक हो, उसको शाही मिहर्बानियोंका उम्मेदवार करके साथ लेजावे हर तरफ़ ज़मींदारोंको लिख दे, कि अगर वह गुनाहगार नालाइक उस तरफ़से भागना चाहे, तो उसको गिरिफ़्तार और क़त्ल करनेमें पूरी कोशिश करे, जैसा कि राजा गोकुल उज्जैनियाने शिकस्त और भागनेके पीछे नाशुजाअ्के आदमियोंको लूट मारसे सताया, जो कुछ नाशुजाअ् और उसके हम्राहियोंके माल व अस्बाबमेंसे उस राजाके हाथ आया, सब हमने उसको बख़्श दिया, और हज़रत बादशाहने और हमने बहुत मिहर्बानियां ज़ाहिर कीं इसी तरह बद नसीब नामुराद बागी और उसके साथियोंका अस्बाब वगैरह, जहांतक हो सके,

---

راے جہاں آرا گرداند — معلوم آن لائق العنایه باد که زبده راجگان نامدار، عمدهٔ امرای عالی مقدار، رکن السلطنت العلیه، مؤتمن الدوله، شایستهٔ الطاف بیکران، سزاوار اعطاف بے پایان، مورد عواطف نمایان، مہاراجه جسونت سنگه، و شجاعت و سہامت پناه، امارت و ایالت دستگاه، منظور انظار عنایات بادشاهی، مطرح اعطاف و تلطفات نامتناهی، رکن السلطنت العظمی، عضد الخلافته الکبری، نجیب سعادت نشان عمدة الملک قاسم خان، از آنجین روانهٔ پیشتر شده اند، که به احمدآباد بروند — در سولا بندگان اعلیحضرت خاقانی قبلهٔ دو جہانی، خلیفه الرحمانی ظل سبحانی — سیادت و نجابت پناه، شایسته الطاف بیکران، سزاوار مراحم بے پایان، مورد عنایات گوناگون ظل الٰهی، مہبط توجہات روز افزون بادشاهی، عمدة الملک خلیل الله خان، و شجاعت و سہامت پناه، تہور و جلادت دستگاه، قدوة الاشباه والاعیان، شایسته الطاف و مکارم بیکران، راو شترسال را بابیست هزار سوار باهمت تعین فرموده، بیست لک روپیه بجہت اخراجات لشکر مظفر منصور همراه آنها فرستاده اند، و عنقریب به مہاراجه ملحق خواهند شد، و بتوفیق آن بے ادب ناحق شناس (مراد بخش وغیره) را به سزاے گران خواهند رسانید *

مے باید که آن زبدة الاشباه نیز درینوقت با جمعیت خود خود را به لشکر ظفر پیکر برساند، و از زمینداران نواحی، هرکس که به آن زبدة الاقران نزدیک باشد، او را امیدوار عنایات

उधरके जमींदार छीनले, हम साफ़ तौरपर मुआफ़ फ़र्माते हैं; और आलीशान निशान, जो कान्हजीके नाम भेजाजाता है, उसके पास पहुंचादें, और अपनी तरफ़से भी कुछ लिखकर रग़बत दिलावें, कि इस वक्त जो कुछ कोशिश की जावेगी, उसके फ़ाइदहका सबब होगी ता० ७ रजब हिज्री १०६८ [वि० १७१५ = ई० १६५८]

९– शाहज़ादह मुअज़्ज़मका निशान, राव वैरीशालके नाम

(मुहरकी नक्ल)

बहादुरीकी खासियत, दिलेरीकी निशानी, वैरीशाल, बड़ी शाही मिहर्बानियोंसे सर्बलन्द होकर जाने, कि इन दिनोंमें अक्बर बाग़ी दुर्गा और सोनग वगैरह बद नसीब राठौड़ों

شاهانه نموده سرد — به زمینداران اطراف و جوانب نویسند، که اگر آن عاصی حق ناشناس
خواهد که برود، مساعی موفور بکار برند، چنانچه راجه گوکل آحسنه بعد از شکست و هزیمت
باشجاع آورد، و مردم اورا تاراج نموده آنچه از مال و متاع او و همراهانش بدست آورده
به راجهٔ مزبور معاف و مسلم داشتیم، و مورد عنایات بادشاهی و مراحم شاهی گردیده —
همچنین آنچه از اسباب و اسپابِ نامرادِ سعادت ناعی و همراهان او، که زمینداران مذکور
بدست توانند آورد، متصرف شوند، که دیده و دانسته به آنها معاف فرموده‌ایم، و نشان عالی
شان که بنام کانهه‌جی صادر شده، به او برسانند، و به او از خود نیز چیزے نویسند، و ترغیب
نمایند، که درین وقت هرگونه سعی و تلاش، که درین باب خواهند نمود، موجب بهبود خواهد شد —
تحریراً فی التاریخ هفتم رجب سنه ۱۰۶۸ هجری فقط *

समेत उस दिलेर खासियतके इलाकहसे निकलता हुआ भागा है, और उसने फ़ौज जमा न होने और बाग़ियोंकी ख़बर न पानेके सबब उनके क़त्ल और क़ैद करनेमें कोशिश न की, लेकिन् अब सुननेमें आया, कि वह इस मुआमलेमें कोशिश करना चाहता है; इसलिये ज़बर्दस्त हुक्म जारी किया जाता है, कि अगर बद नसीब बाग़ी लोग फिर उसके इलाक़हमें आवें, तो बुज़ुर्ग मिह्रबानीसे ख़ातिर जमा रखकर वफ़ादारी और मिह्नतके साथ उनकी गिरिफ़्तारी और क़त्लमें कमी न करे, सबको क़ैद या क़त्ल करडाले, कि यह बात बुज़ुर्ग बादशाही दर्गाह और हमारे हुज़ूरमें बड़ी कार्गुज़ारी समझी जावेगी, इसका नेक नतीजह मिलेगा; इसमें सख़्त ताकीद जाने ता० ९ रबीउल् अव्वल हिज्री

---

۹ — نشان پادشاهزادهٔ محمد معظم بنام راو بیری سال *

شهور شعار جلادت دثار بیری سال به عنایت

عالی متعالی شاهی سرفراز بوده بداند که چون

درینولا اکثر یاغی با درگا و سونگ و دیگر راتهوران ادبار نصیب از حدود متعلقهٔ زمینداری آن شهور شعار آوارهٔ دشت فرار شدند، و او بسبب فراهم نیامدن جمعیت و خبرداری یاغیان مذکور چندان سعی در قتل و اسر آنها نکرده، والحال باستماع آمده، که آن شهور شعار کوشش و سعی در گرفتن و کشتن طاغیان کرده، لهذا حکم محکم عز اصدار و شرف ورود می یابد، که اگر باز یاغی مذکور با سائر گروه شقاوت پژوه بحد زمینداری آن جلادت دستگاه برسد، باید که خاطر خود مستمال بعطوفات والا دانسته مراتب جدوجهد و جانفشانی را در قتل و اسر آنها کماینبغی بجا آورده همه را اسیر و دستگیر نماید، یا به قتل رساند، که باعث افتخارات کلی او در پیشگاه جناب خلافت و جهانداری و هم در حضور فیض گنجور عالی متعالی شاهی خواهد بود، و نتیجهٔ نیک خواهد یافت، درین باب تاکید بلیغ داند — نهم شهر ربیع الاول سنه جلوس *

विक्रमी १७२० [हि० १०७३ = ई० १६६३] में राव अखेराजको उनके कुंवर उदयसिंहने कैद करदिया, और आप सिरोहीका मालिक बन गया इस बग़ावतमें डूंगरोत देवडा कुंवर उदयसिंहके शामिल थे, तब देवडा रामा भैरवदासोत व साहिबखान वगैरह राजपूतोंने महाराणा राजसिंह अव्वलसे मदद लेकर रावको कैदसे निकाला राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठ सर्ग ३५-३६ श्लोकमें महाराणाका राणावत रामसिंहको फौज देकर राव अखेराजकी मददके लिये भेजना लिखा है (देखो पृष्ठ ५९७)

यहां तक सिरोहीकी तवारीखका जियादह हाल हमने बीकानेरके महता नैनसीकी तहकीकातसे लिया है, जिसने विक्रमी १७२१ माघ [हि० १०७५ रजब = ई० १६६५ जैन्यूअरी] में सिरोहीके चारण आडा महेषदासकी तहरीरसे, और विक्रमी १७१७ आश्विन [हि० १०७१ सफर = ई० १६६० ऑक्टोबर] में देवडा अमरसिंहके प्रधान बाघेला रामसिंहकी ज़बानी और महता सुन्दरदासकी तहरीरसे लिखा है

अब अगला हाल सिरोहीके वर्तमान दीवान खान बहादुर निअ्मतअलीखांकी तह्रीरसे लिखते हैं, जिसने हमारी मददके लिये बडवा भाट जोरजी वगैरह लोगोंसे तहकीकात करके हमारे पास भेजा है, और राजपूतानह गज़ेटियरसे भी लिया जायेगा, क्योंकि उक्त समयसे पहिला हाल बडवा भाटोंके पास कहानी किस्सोंके तौर लिखाहुआ मालूम होता है

राव अखेराजके दो बेटे थे, बडा उदयसिंह, दूसरा उदयभान, उदयसिंहने अपने बापको कैद किया, इस कुसूरसे अखेराजने उसको मरवाडाला अखेराजके बाद उदयभान और उसके बाद विक्रमी १७३३ [हि० १०८७ = ई० १६७६] में उसका बेटा वैरीसाल गद्दीपर बैठा

विक्रमी १७४९ [हि० ११०३ = ई० १६९२] में राव सुर्तानसिंह गद्दीपर बैठा, इसके बाद उदयसिंहका दूसरा बेटा छत्रसाल गद्दीपर बैठा दीवान निअ्मतअलीखां लिखता है, कि छत्रसाल उदयपुरके महाराणा संग्रामसिंहकी मदद लेकर आया, और सुर्तानसिंह भागकर जोधपुरके राजा अजीतसिंहके पास गया, उस वक्तसे सिरोहीके गांव पालडी और कोटरा उदयपुरके कब्जहमें गये.

छत्रसालके बाद मानसिंह गद्दीपर बैठे, जिनको उम्मेदसिंह भी कहते हैं इनके वक्तमें जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने चढाई की, तब इन्होंने कुछ फौज खर्च और अपनी बेटी महाराजाको देकर पीछा छुडाया इनके चार बेटे १- पृथ्वीराज, २- जगतसिंह, ३-जोरावरसिंह, ४- उम्मेदसिंह थे विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई०

१७४९] मे राव पृथ्वीराज गद्दीपर बैठे, जिनके बाद विक्रमी १८३८ ज्येष्ठ कृष्ण ६ [हि० ११९५ ता० २० जमादियुल्अव्वल = ई० १७८१ ता० १४ मई] को उनके भाई जगत्सिह गद्दीपर बैठे, जिनको भारजा गाव जागीरमे मिला था इनके बाद राव वैरीसाल गद्दीपर बैठे इनके तीन बेटे थे, उदयभान, अखेराज, और शिवसिह जोधपुरके महाराजा भीमसिहने, जब अपने भाई मानसिहको जालोरसे निकालनेके लिये फौज भेजी, तब महाराजा मानसिहने अपना जनानह सिरोहीमे भेजना चाहा, लेकिन् महाराजा भीमसिहके भयसे रावने इन्कार किया

वैरीसालके बाद उदयभानको सिरोहीकी गद्दी मिली इनकी आदत खराब थी, जब वह गगास्नानको गये, तब पीछे लौटते वक्त जोधपुरके महाराजा मानसिहने अगली रजिशसे उनको गिरिफ्तार करलिया, और पचास हजार रुपया दडका लेकर छोडा, इस रकमके वुसूल करनेको उदयभानने सिरोहीके राजपूत व रअय्यतको तग किया, जिसका नतीजह यह हुआ, कि सर्दारोने मिलकर उदयभानको कैद करलिया, और उसके भाई शिवसिहको विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] मे गद्दीपर बिठाया, उदयभान विक्रमी १९०३ [हि० १२६२ = ई० १८४६] मे कैदकी हालतमे मरा शिवसिहके विरुद्ध जोधपुरके महाराजा मानसिहने फौज भेजकर उदयभानको छुडाना चाहा था, लेकिन् महाराजाका मनोर्थ पूरा न हुआ

राव शिवसिहकी हुकूमत बहुत जईफ होगई थी, उत्तरकी तरफसे मारवाडकी चढाइयो और मीना लोगोकी लूट खसोटके सबब बडी दुर्दशा होने लगी, राव अपनी रिआयाको मदद देनेके लाइक न रहे, इसी जोफ हुकूमतसे कई सर्दारोने दीवान पालनपुरको अपना मालिक बनालिया, यहा तक कि राज्य बर्बाद होनेका वक्त आपहुचा, तब राव शिवसिहने विक्रमी १८७५ [हि० १२३३ = ई० १८१८] मे गवर्मेट अग्रेजीका आश्रय लिया, और विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] मे एक अह्दनामह लिखागया हकीकतमे यह राज्य गवर्मेट अग्रेजीकी मददसे बच गया कर्नेल टॉडने इस रियासतके हुकूक और इलाकहकी हिफाजतमे बहुत कोशिश की, उक्त कर्नेलको वहाके लोग मुहब्बतके साथ याद करते हैं राज्यकी खराबी देखकर गवर्मेट अग्रेजीने कप्तान स्पीयर्सको वहाका पोलिटिकल एजेट मुकर्रर किया, जिससे बहुत फाइदह हुआ, और बबईकी फौजसे एक गिरोह मीना व डकैतोको दबानेके लिये वहा रक्खा गया गवर्मेट अग्रेजीके अफ्सरोसे राज्यकी जिस कद्र बिह्तरी हुई, उसका हाल हम राजपूतानह गजेटियरसे नीचे दर्ज करते हैं -

" बहुतसे ठाकुर इताअतमे लाये गये, और बन्दोबस्त हुआ, नीबजके ठाकुरके

साथ भी एक सुलहनामह किया गया, जो सिरोहीके सब सर्दारोमे जियादह टेढा था कप्तान स्पीयर्स साहिबके भेजे जानेके थोडे ही दिन बाद शिवसिहको पोलिटिकल एजेटने इन्तिजामकी तब्दीलातके लिये जो कुछ राय दी, उससे वह अपनेको लाचार जानकर आबूको भागगया, और बहुतसे ठाकुर उसके मददगार होगये, सिर्फ नीबजका ठाकुर प्रेमसिह अलग रहा; लेकिन् यह बखेडा बहुत दिनो तक नही रहा, और सब ठाकुर अपने अपने ठिकाने आगये, रावने भी मुआफी मागी, और सिरोहीको लौट आया ईसवी १८३२ [वि० १८८९ = हि० १२४७] मे सिरोहीका प्रबन्ध नीमचकी एजेन्सीके, और ईसवी १८३६ [वि० १८९३ = हि० १२५२] मे मेवाडकी एजेन्सीके सुपुर्द किया गया, लेकिन् मेवाडके एजेट नीमचमे रहते थे, और वहासे राज्यकी सभाल अच्छी तरह नही होसक्ती थी, इससे यह रियासत मेजर डाउनिगके सुपुर्द करदी गई, जो जोधपुर लीजेन याने पल्टनके अफ्सर थे, और जिनकी छावनी एरनपुरामे थी, जो सिरोही और मारवाडकी सीमापर है, वहा एक अग्रेजी फौजी अफ्सरके रहनेसे बन्दोबस्तमे अच्छी मदद मिली, और इसी वक्तसे सिरोहीकी दुरुस्ती समझना चाहिये इस वक्त लूटके लिये मारवाडकी रअय्यतके हमले, मेवाडकी तरफसे भीलोकी चढाई और खुद मुख्तारी चाहनेवाले ठाकुरोकी रद्दो बदल कई वार हुई, जिससे सिरोहीमे बहुत पीछे तक बुराइया रही, क्योकि देश पहाडी और बिकट जगलोसे भरा होनेके सबब वह उन भीलो और मीनोको लालच देने वाला आश्रय बना रहा, जो कि किसी बागी ठाकुरकी मदद करनेको हमेशह तय्यार रहते है"

"ईसवी १८४३ [वि० १९०० = हि० १२५९] मे रावकी मर्जी और सर्कार अग्रेजीकी सलाहसे कुछ शर्तोपर एक शिफाखानह जारी हुआ, इस वक्त भटानाका ठाकुर नाथूसिह बागी हो गया, इससे सिरोहीमे कई वर्ष तक बडी खराबी रही इसका सबब यह मालूम होता है, कि सिरोही और पालनपुरके बीच सीमा काइम करनेमे इस ठाकुरके दो गाव पालनपुरको देदिये गये थे, और दूसरी जमीन जो उसे दी जाती थी, उसने लेनेसे इन्कार किया अकेला सिरोहीका राज्य इस ठाकुरसे लडनेके लाइक न था, लेकिन् ईसवी १८५३ [वि० १९१० = हि० १२६९] मे जोधपुर लीजेनकी मददसे नाथूसिह और उसके साथी ऐसे दबाये गये, कि उन्होने तावेदारी मजूर करली नाथूसिहको छ वर्षका जेलखानह हुआ, और उसके साथियोको भी कैदकी सजा मिली, लेकिन् ईसवी १८५८ [वि० १९१५ = हि० १२७४] मे नाथूसिह जेलखानहसे भागगया, उसके पकड़नेकी कोशिश की गई, जो फुजूल गई, और फिर वह राज्यके लिये तक्लीफ और अन्देशेका एक जरीअह हुआ"

"ई० १८५४ [वि० १९११ = हि० १२७०] मे रावने यह देखकर कि कर्जह बहुत बढगया, और राज्यका प्रबन्ध नही होसक्ता, सर्कार अंग्रेज़ीसे एक अंग्रेज़ी अफ्सर इन्तिजामके लिये मागा यह इन्तिजाम पहिले तो आठ वर्षके लिये किया था, पीछे ग्यारह वर्षके लिये होगया, क्योंकि राज्यका कर्जह चुकानेमे ईसवी १८५७ [वि० १९१४ = हि० १२७३] का गद्र एक रोक होगया पहिले कर्नेल एन-डरसन सुपरिन्टेन्डेएट हुए, इनकी लियाकत और समझदारीके सबब बहुत कुछ इन्तिजाम और तरक्की हुई, जिससे उन्होने सर्कार अंग्रेजीसे शुक्रगुजारी और नेकनामी पाई, उसका नाम सिरोहीके लोग अबतक शुक्रके साथ याद करते है इस वक्तमे राज्य खर्चको छोडकर, जो मुकर्रर होगया था, सुपरिन्टेन्डेएटका काम सिर्फ इतना ही था, कि उन बातोका इन्तिजाम करे, जिससे देशकी हालतमे नुक्सान न हो; बाकी सब बातोमे रईसकी मर्जी रही, और खानगी कामोमे कुछ दख्ल नही दिया, इतनी ही निगरानीसे व्यापार और खेतीने तरक्की पाई, जिससे सिरोहीकी बिह्तरी हुई इसी तरह ईसवी १८६१ [वि० १९१८ = हि० १२७७] तक यह प्रबन्ध चला, जब शिवसिंहके जईफ होनेके सबब उसके दूसरे बेटे उम्मेदसिंहको वहांका इन्तिजाम दिया गया, उससे पहिले उसका बडा बेटा गुमानसिंह मरगया था वृद्ध रावकी इज्जत उसके मरनेके दिन यानी ईसवी १८६२ ता० ८ डिसेम्बर [वि० १९१९ पौष कृष्ण २ = हि० १२७९ ता० १५ जमादियुस्सानी] तक बनी रही"

"शिवसिंहने ४४ वर्ष तक राज्य किया, वह मुश्किलसे अच्छा राजा समझा जासक्ता है, उसकी आदत समयके अनुसार नहीं थी. ई० १८५७ के गद्रमे उसने बडी ईमान्दारीका काम किया, जिससे उसका आधा खिराज मुआफ करदिया गया, जो पहिले पन्द्रह हज़ार भीलाड़ी रुपयोपर मुक़र्रर हुआ था जब शिवसिंहसे इख्तियार लेलिया गया, तो उसके बेटोके गुजारेके लिये कुछ बन्दोबस्त करना ज़रूर हुआ, उस वक्तके पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट मेजर हालने सुफारिश की, कि चन्द गाव चार बडे बेटोके लिये अलग करदिये जाये. हमीरसिंह, जैतसिंह, जवानसिंह और जामतसिंहके सिवाय सबसे छोटा लडका तेजसिंह राव उम्मेदसिंहका सगा भाई सिर्फ तेरह वर्षका था, इस कारण उसके निर्बाहके लिये इस वक्त कुछ बन्दोबस्त करना ज़रूर नही समझा सब बेटोने इस बातसे इन्कार किया, लेकिन् हमीरसिंहको छोड़कर बाकी सबने सिरोहीमे पांच सौ रुपये माहवारपर, जब तक कि शादी न हो, रहना कुबूल किया, हमीरसिंह ऐसा मालूम होता है, कि बुरी सलाह देने वालोकी

बहकावटसे ईसवी १८६१ नोवेम्बर [वि० १९१८ कार्तिक = हि० १२७८ जमादियुल् अव्वल] मे बागी होगया, तब मेजर हॉल एक फौज लेकर उसपर गये, हमीरसिह अर्बलीके पहाडोमे भागकर भीलो और गिरासियोकी पनाहमे रहा, मेजर हॉलने उसका पीछा करना ठीक न समझा, परन्तु रास्तोपर सिर्फ गार्ड रखदिये उसी वक्त दूसरे दो भाई रजीदह होकर महीकाठामे दाताको चलेगये, और थोडे ही दिन पीछे ईसवी १८६२ [वि० १९१९ = हि० १२७९] मे यह दोनो सिरोहीसे आये हुए तीसरे भाईके साथ पहाडोमे जाकर हमीरसिहसे मिले, लेकिन् ईसवी १८६२ ता० ८ डिसेम्बर [वि० १९१९ पौष कृष्ण२ = हि० १२७९ ता० १५ जमादियुस्सानी] को वृद्ध राव शिवसिहके मरजानेपर चन्द सर्दारोने तीनो छोटे लडको को बुलाया हमीरसिह उस वक्त भी अलग रहा, लेकिन् कुछ दिनो बाद आगया, और उनके गुजारेके लिये गाव मुकर्रर करदिये गये ''

राव उम्मेदसिह

''इनको ईसवी १८६५ ता० १ सेप्टेम्बर [वि० १९२२ भाद्रपद शुक्ल १० = हि० १२८२ ता० ९ रबीउस्सानी] को सर्कार अंग्रेजीकी तरफसे राज्यका पूरा इख्तियार मिला रावने अच्छे वक्तपर हुकूमत पाई, खजानह अच्छी हालतमे था, राज्यकी हालत, भी पहिलेके बनिस्बत उम्दह थी अगर वह जियादह ताकत वाले होते, और खर्चका बन्दोबस्त करते, तो उसकी तरक्कीके लिये बहुत कुछ सामान करसक्ते, लेकिन् वह ऐसे हिम्मतवर न थे, जैसा कि सिरोहीके रईसको होना चाहिये, पुजारियोकी बात मानने, नर्म दिल होने और नई बाते न चाहनेके सबब उनका राज्य खराबीमे पडगया राव दयालु, बुरे कामोसे दूर और जियादहतर रिश्तहदारोसे राजी थे, उनके वक्तमे नीचे लिखी हुई बाते हुई -

' ईसवी १८६८ या ६९ [वि० १९२५ या २६ = हि० १२८५ या ८६] का बडा काल, नाथूसिहका दुबारा बागी होना, और मारवाडकी तरफसे भीलोका हमलह, नाथूसिहके बागी होनेसे राज्यको बहुत नुक्सान पहुचा, उसको जेर करनेके लिये जितनी तद्बीरे कीगई सब बेकार गई, जो अंग्रेजी सिपाही भेजेगये थे, वे भी बुलालिये गये, और सिरोहीका राज्य उसके और उसके साथियोके साथ लडनेको छोड दिया गया, अंजाम यह हुआ, कि लुटेरोका जोर बढगया, मारवाडके भीलोने, जो सिरोहीकी पश्चिमी हदके किनारेपर है, हमले किये, और नाथूसिहके नामसे लूट मचा दी यह बाते ऐसी बढी, कि

सिरोहीसे अहमदाबादकी सड़कपरके मुसाफ़िरो और व्यापारियोके लिये तक्लीफ़ होगई ऐसी हालतमे फ़सादियोको दबानेके लिये ऐरनपुराकी पल्टन भेजनेके सबब रियासतका इन्तिज़ाम फिर फ़ौजी हाकिम मेजर कर्नेलीके सुपुर्द करदिया गया उन्होने इख्तियार पाते ही भीलोको ज़ेर करके लूट बन्द कराई, लेकिन् बाग़ी सर्दारोको ताबे नही किया, नाथूसिह सिरोहीकी हदके नज़्दीक मारवाड़के गावमे ईसवी १८७० [वि० १९२७ = हि० १२८७] के लग भग मरगया, और उसका बेटा भारथसिह अपने साथियो समेत ईसवी १८७१ [वि० १९२८ = हि० १२८८] के अन्दर, जब कि वह बे कैद था, बुलाया गया नाथूसिहके बाग़ी होनेका बयान सिरोहीके समान कठिन स्थानमे बाग़ियोके दबानेके लिये अंग्रेज़ी सिपाहियोके भेजनेसे, जो नुक्सान होता है, उसके जतानेके लिये मुफ़ीद है"

"राव उम्मेदसिह ईसवी १८७५ ता० १६ सेप्टेम्बर [वि० १९३२ भाद्रपद शुक्ल १५ = हि० १२९२ ता० १४ शअ्बान्] को सिरोहीमे मरगये उनके एक ही राणी ईडरके वंशकी थी, उससे एक कुवरके सिवा एक बेटी भी हुई, जो ईसवी १८७० [वि० १९२७ = हि० १२८७] मे महाराजा कृष्णगढके बड़े कुवरको ब्याही गई"
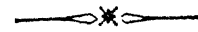
राव केसरीसिह

"यह अपने पिताके बाद गद्दीपर बैठे, जो अब सिरोहीके राव है इन्होने राजपूतानहके दूसरे रईसोके मुवाफ़िक गोद लेनेकी सनद पाई है, और इनको राज्यके पूरे इख्तियार ईसवी १८७५ ता० २४ नोवेम्बर [वि० १९३२ मार्गशीर्ष कृष्ण १० = हि० १२९२ ता० २४ शव्वाल] को मिले है" इन्होने विक्रमी १९३३ [हि० १२९२ = ई० १८७६] मे बंगाला और बम्बई वगैरहकी तरफ़ फ़र्ज़ी नाम रखकर सफ़र किया, जिससे थोड़े खर्चमे खूब सैर और जियादह तज्रिबह हासिल हुआ इनके विक्रमी १९४५ आश्विन् [हि० १३०५ मुहर्रम = ई० १८८८ सेप्टेम्बर] मे एक कुवर पैदा हुआ है सिरोही रावकी पन्द्रह तोपोकी सलामी होती है, और अंग्रेज़ी सर्कारको सालानह खिराज सात हज़ार पाच सौ भिलाड़ी रुपया यहांसे दिया जाता है, लेकिन् भिलाड़ी रुपयेका भाव एकसा न रहनेके सबब ६८८१ $\frac{1}{4}$ कल्दार सालानह मुकर्रर होगया है

एचिसन् साहिबकी अहदनामोंकी किताब जिल्द ३

अहदनामह नम्बर ८६

अहदनामह ऑनरेबल अंग्रेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी और राव शिवसिंह मुरूतार रियासत सिरोहीके दर्मियान, जो ऑनरेबल कम्पनीके एजेंट कप्तान अलिग्जेन्डर स्पीयर्सकी मारिफ़त, बहुक्म मेजर जेनरल सर डेविड् ऑक्टरलोनी, बैरोनेट्, जी० सी० बी०, रेजिडेन्ट मालवा व राजपूतानहके, जिनको पूरे इस्तियार राइट ऑनरेबल विलिअम पिट लॉर्ड ऐमहर्स्ट, गवर्नर जेनरल मए कौन्सिलसे मिले थे, और राव शिवसिंह, मुरूतार राज सिरोहीकी मारिफ़त उनकी अपनी तरफ़से हुआ

जो कि अब राव शिवसिंह मुरूतार रियासत सिरोही और रियासतके खान्दानके प्रतिनिधिने दर्रूवास्त की, कि सर्कार अंग्रेजीकी हिफ़ाज़त इस मुल्कपर रहे, और गवर्मेंट अंग्रेजीको साबित हुआ, कि रियासत सिरोही राजपूतानहके किसी और रईस या राजाके मातहत नहीं है, इस वास्ते राव साहिबकी दर्रूवास्त मन्ज़ूर हुई, और नीचे लिखी हुई शर्तें दोनों तरफ़से मन्ज़ूर हुई, जो हमेशह जारी रहेंगी, और शर्तोंका बयान किया जावे, जिसके मुताबिक दोनों फ़रीक़ चन्द्र और सूर्य्यकी मौजूदगी तक अमल रक्खेंगे

शर्त अव्वल - सर्कार अंग्रेजी मन्ज़ूर फ़र्माती है, कि वह रियासत और इलाक़ह सिरोहीको अपनी मातहती और पनाहमें ली हुई रियासतोंके मुवाफ़िक़ शुमार करेगी, और अपनी हिफ़ाज़तमें रक्खेगी

शर्त दूसरी - राव शिवसिंह, मुन्सरिम, अपनी, राव साहिबकी, उनके और वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से इस तहरीरके ज़रीएसे सर्कार अंग्रेजीकी बुज़ुर्गीको क़बूल करते हैं, और इक़ार करते हैं, कि दोस्तीका बर्ताव ताबेदारीके साथ रक्खेंगे, और इस अहदनामेकी दूसरी शर्तोंका पूरा लिहाज़ रक्खेंगे

शर्त तीसरी - राव साहिब सिरोही किसी दूसरे रईस या रियासतसे दोस्ती न करेंगे, और दूसरेपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और अगर इत्तिफ़ाक़से किसी हमसायहके साथ झगड़ा पैदा होगा, तो वह सर्कार अंग्रेजीकी सरपञ्चीके सुपुर्द किया जावेगा, और सर्कार अंग्रेजी मन्ज़ूर फ़र्माती है, कि वह अपने ज़रीएसे हरएक दावेका फ़ैसलह करादेगी, जो सिरोही और दूसरी रियासतोंके दर्मियान ज़ाहिर होगा चाहे वह दूसरी रियासतोंकी तरफ़से या सिरोहीकी तरफ़से ज़मीन, नौकरी, रुपया या मददकी बाबत, या किसी और मुआमलेकी निस्बत हो

शर्त चौथी- अंग्रेजी हुकूमत रियासत सिरोहीमे दाखिल न होगी, मगर यहांके हाकिम हमेशह अंग्रेजी सर्कारके अफ्सरोकी सलाहके मुताबिक रियासती इन्तिजाम चलावेगे, और उनकी रायके मुवाफ़िक़ अमल किया करेगे

शर्त पाचवी- जो कि अब सिरोहीका राज्य इलाकोंके बटने और बदख्वाहोकी बद चलनी, और गारतगरोकी लूट मारसे बिल्कुल वीरान होगया है, इसलिये मुन्सरिम रियासत वादह करते है, कि वह सर्कारी हाकिमोकी सलाहके मुवाफिक, जिस बातमे कि मुल्की बिह्तरी और खुश इन्तिजामी समझी जावेगी, अमल किया करेगे, और यह भी इक्रार करते है, कि वह अब और आगेको मुल्की फ़ाइदे, चोरी और गारत गरीके रोकने, और रिआयाके इन्साफमे पूरी कोशिश किया करेगे

शर्त छठी- अगर सिरोहीके सर्दार या ठाकुरोमेसे कोई शख्स किसी जुर्म या ना फर्मानीका मुल्ज़म होगा, उसको जुर्मानह, इलाकेकी जब्ती, या और कोई सजा, जो कुसूरके मुनासिब होगी, अंग्रेजी अफ्सरोकी सलाह और उनके इत्तिफ़ाक़ रायसे दीजावेगी

शर्त सातवी- सिरोहीके रहने वाले, क्या अमीर और क्या गरीब, सबने इत्तिफाकके साथ बयान किया है, कि राव उदयभान अगला हाकिम वाजिबी तौरपर बर्तरफ होकर कैद किया गया, और इसमे तमाम सर्दारो और ठाकुरोकी रायका इत्तिफाक होगया है, कि वह इस सजाको अपने जुल्म और जियादतीके सबब पहुचा, और राव शिवसिंह सबकी मजूरीसे उसकी जानशीनीके लाइक़ करार दिया गया, इस वास्ते अंग्रेजी सर्कार राव शिवसिंहको उसकी जिन्दगी तक रियासतका मुन्सरिम मजूर फर्माती है, और उसके मरने बाद राव उदयभानकी औलादमेसे कोई वारिस होगा, तो वह गद्दीपर बिठाया जायेगा

शर्त आठवीं- रियासत सिरोही उस कद्र खिराज अंग्रेजी सर्कारको अपनी हिफाजतके खर्चोकी बाबत आजकी तारीखसे तीन बरस गुजरने बाद दिया करेगी, जितना कि तज्वीज व मुकर्रर होगा, इस शर्तसे कि उसकी तादाद छ आने फी रुपये आमदनी मुल्कसे जियादह न हो

शर्त नवीं- सौदागरीकी तरक्की और आम रिआयाके फाइदोकी जियादतीके लिये सर्कारी अफ्सरोको यह मुनासिब होगा, कि वह राहदारी व पर्मट वगैरहके महसूलकी शरह रियासत सिरोहीके इलाकहमे इस तौर मुकर्रर करे, जो तज्रिबेसे मुनासिब और ज़रूरी मालूम हो, और वक्त वक्तपर उसके जारी करने और कमी बेशीमे मुदाखलत करें.

शर्त दसवीं- जब कोई अंग्रेजी फ़ौजका टुकड़ा राज्य सिरोहीमे या उसके आस

पास किसी कामपर तईनात हो, तो रावको मुनासिब होगा, कि वह सर्कारी खिद्मतोके लिये फौजके जुरूरी सामानकी तय्यारी बगैर किसी महसूलके करे, और फौजके कमानियर अफ्सरको वाजिब होगा, कि वह इलाकहकी फस्ल और जमीन पैदावारको फौजकी लूट मारसे बचावे, अगर अंग्रेजी सर्कारकी यह राय होगी, कि कुछ फौज सिरोहीमे कियाम रक्खे, तो उनको इस बातका इख्तियार हासिल होगा, और राव साहिबकी तरफसे नाराजगीकी कोई निशानी इस काममे जाहिर न होगी, इसी तरह अगर यह जुरूर हो, कि कुछ फौज रियासत सिरोहीकी जुरूरतोके वास्ते भरती हो, और उसमे अंग्रेज अफ्सर रहे, तो राव साहिब इस बातका वादह करते है, कि वह इस मुआमलेमे, जहा तक हो सकेगा, सर्कारी तहरीर और हिदायतके मुवाफिक कोशिश करेगे, मगर इस हालतमे, जो खिराज राव साहिब अदा करते है, उसमे कमी कीजावेगी, और जो फौज अस्लमे राव साहिबकी है, वह हर वक्त अंग्रेजी अफ्सरोकी मातहतीमे खिद्मत गुजारीको तय्यार रहेगी

मकाम सिरोही तारीख ११ सेप्टेम्बर सन् १८२३ ई०

मुहर राव शिवसिंह	कम्पनीकी मुहर	दस्तखत- ऐमहर्स्ट

राइट ऑनरेबल गवर्नर जेनरल बहादुर मए कौन्सिलने मकाम फोर्ट विलिअममे तारीख् ३१ ऑक्टोबर सन् १८२३ ई० को तस्दीक किया

दस्तखत- जॉर्ज स्विन्टन्,
सेक्रेटरी, गवर्मेंट.

अह्दनामह नम्बर ८७

राइट ऑनरेबल गवर्नर जेनरल बहादुर मए कौन्सिल मिहर्बानीके साथ इजाज़त देते है, कि पचास हजार रुपया सिक्के सोठ कर्जके तौर तीन बरसके लिये बगैर सूद महाराव शिवसिंह मुन्सरिम रियासत सिरोहीको किसी कद्र बे कवाइद फौजकी भरतीके खर्चके लिये, जो पोलीसका इन्तिजाम और रियासतकी तह्सील साहिब एजेंट बहादुर अंग्रेजीकी सलाह और निगहबानीसे करेगी, दियाजावे महाराव शिवसिंह वादह करते है, कि तीन साल गुजरने बाद फौज खर्च अदा करनेकी अव्वल तारीखसे वह कर्जेका रुपया पर्मटके तीन चौथाई हिस्सेकी ज़ब्तीसे अदा करना शुरू करेगे

जो कुछ कमी ज़ियादती सिक्केकी तब्दीली या रुपयेकी तह्सीलमे होगी, वह

राव साहिबके जिम्मह समझी जावेगी, क्योंकि यह बात साफ बयान होचुकी है, कि जिस सिक्कहमे रुपया दिया गया है, उसीके मुताबिक अदा होगा

नक्ल मुताबिक अस्ल
दस्तखत- आर० रॉस,
अव्वल असिस्टेंट, रेजिडेण्ट

अह्दनामह नम्बर ८८

इक़्रारनामह, जो रायसिंह ठाकुर नीबजने सिरोही मकामपर वैशाख सुदी ६ संवत् १८८१ मुताबिक् ४ मई सन् १८२४ ईसवीको किया उसका तर्जमह

मिती वैशाख सुदी १ संवत् १८८१ मुताबिक २९ एप्रिल सन् १८२४ ई० को रायसिंह ठाकुर व प्रेमसिंह ठाकुर नीबज राज़ी होकर इस तह्रीरके ज़रीएसे महाराव शिवसिंह रईस सिरोहीकी इताअ़त और बुज़ुर्गीका इक़ार करते है, और नीचे लिखी हुई सात शर्तें मंज़ूर करते है, ये शर्तें हर पुश्तमे जारी रहेंगी, और इनमे कभी कुछ उज़्र पेश न किया जायेगा

शर्त अव्वल- गांव नीबजकी हर किस्मकी पैदावार याने ज़मीनकी आमदनी, राहदारी और पर्मट वगैरहके मह्सूलसे छ आना फी रुपया श्री दर्बार साहिब सिरोहीको दिया जावेगा, और जुर्मानह वगैरह हर किस्मकी ज़ियादती रिआयापरसे मौकूफ़ होगी

शर्त दूसरी- ठाकुर नीबजका बेटा कुंवर उदयसिंह चाहता है, कि गिरवर, परनेरा और मूंगथला गांवोंका मह्सूल, जो अगले ठाकुर लखजीकी जागीरमे थे, और अब पालनपुरके मातह्त करार दिये गये है, उनको मिले, अगर ये गांव सिरोहीको वापस मिले, तो महाराव खुद इस बातका फैसलह इन्साफसे करेंगे

शर्त तीसरी- नीबज और उसके मातह्त गांवोंके अन्दर तह्सील और फैसलहके मुआमले सिरोहीके कामदारोंकी सलाहसे तै पावेंगे, और कोई बात गैर इन्साफी और ज़ियादतीकी रवा न रक्खी जायेगी

शर्त चौथी- जब कभी सिरोहीके सर्दार और वहांकी फौज किसी मुआमलेके वास्ते जमा हो, तो ठाकुर नीबज और उसकी फौज भी बगैर उज़्र हम्राह हुआ करेगी

शर्त पांचवीं- ठाकुर नीबज किसी गैर रियासतसे न इत्तिफाक रक्खेगा, न नया

पैदा करेगा, वह हर्गिज उन फसादोमे शरीक न होगा, जो रियासत जोधपुर और पालनपुरमे उसके भाइयो व रिश्तह्दारो, और कोलियोके दर्मियान पैदा हो, अगर किसी गैरसे तक्रार हो, तो ठाकुर उसकी इत्तिला दर्बार सिरोहीको करेगा, और जो हुक्म उसको वहासे मिलेगा, उसकी तामील करेगा

शर्त छठी – ठाकुर नीबज अपनी रिआयाके अम्न और इत्मीनानके लिये हर एक तद्बीर अमलमे लावेगा, जिससे उसकी रिआया भील, कोली और मीनामे इन्तिजाम रहे, जो कुछ अस्बाब उसके इलाकहमे चोरी जायेगा, वह उसका एवज़ जुरूर देगा

शर्त सातवीं – दर्बार सिरोहीने नीबजके ठाकुरके कुवरो, ठकुरानियो, और दूसरी औरत रिश्तह्दारोकी पर्वरिश और गुजरके लिये नीचे लिखे हुए अठारह कूए बगैर खिराज दिये है, इसमे किसी तरहका फर्क न होगा

कूओकी तफ्सील

मौजा धोली – दो कूए, गाव जेजतीवाडा – दो कूएं, गाव अनाद्रा – सात कूएं, गांव सोलन्दा – सात कूए, कुल १८ कूए

नम्बर ८९

राव साहिब सिरोहीके खरीतेका तर्जमह, जो लेफ्टिनेन्ट कर्नेल सर एच० एम० लॉरेन्स, के० सी० बी० एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके नाम ता० २६ जैन्युअरी सन् १८५४ ई० को लिखा गया

मामूली अल्काबके बाद, रियासत सिरोही कर्जदार होगई है, इस वास्ते मेरी खास ख्वाहिश यह है, कि अंग्रेजी सर्कार सात या आठ बरसके वास्ते उसका इन्तिजाम करे, ताकि सालानह खर्च आमदनीकी तादादके अन्दर आजावे, कर्जेका रुपया अदा हो, और मुल्क आबाद हो, अगर इस सात आठ बरसके अर्सेमे यह मत्लब हासिल न हो, तो मीआद जियादह कीजावेगी यह रियासत सिर्फ सर्कार अंग्रेजीके सबबसे बची रही है, इसी वास्ते उनकी मिहर्बानीसे पूरी उम्मेद है, कि सर्कार उसकी बिह्तरीकी और तद्बीरे भी फर्मावेगी सय्यद निअमतअली वकीलको हुक्म हुआ है, कि वह आपके हमराह नीमच तक जाये, यह शख्स सिरोहीके अगले और मौजूद हालसे खूब वाकिफ है, जो सवाल इस मुआमलेमे उससे किया जावेगा, उसका जवाब पूरे तौरपर देसक्ता है – फ़क़त

राव साहिब सिरोहीके खरीतेका तर्जमह, जो लेफ्टिनेन्ट कर्नेल सर एच० एम० लॉरेन्स, के० सी० बी०, एजेट गवर्नर जेनरल, राजपूतानहके नाम ११ फेब्रुअरी सन् १८५४ ई० को लिखा गया

मामूली अल्काबके बाद, मेरे पास आपकी चिट्ठी ३ फेब्रुअरीकी लिखी हुई मेरे खरीतेके जवाबमे इस मज्मूनसे पहुची, कि मेरी दर्ख्वास्त मजूर करनेसे पहिले यह जुरूर हुआ, कि मै आपको इस बातकी इत्तिला दू, कि जो कुछ साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट मुनासिब तसव्वुर फर्माकर जो तद्बीर और तज्वीज खर्चकी कमीमे करेंगे, वह मुझको मजूर करनी होगी, और मेरी इज्जत व दरजह बहाल रहेगा, और यह वादह करू, कि जो तद्बीरे साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट रियासती इन्तिजामके लिये करेंगे, उसकी कोई रोक न होगी, और इन बातोका जवाब मुझसे जल्द तलब हुआ था

इसके जवाबमे लिखता हू, कि मैने खतके मज्मूनको खूब समझ लिया, जो कि मेरी इज्जतमे कुछ फर्क नही आया, इस वास्ते मै खुशीसे तह्रीर करता हू, कि जो तद्बीरे और तज्वीजे करार दीजावे, वह जल्दी जुहूरमे आवे, और वादह करता हू, कि कोई रोक साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्टके इन्तिजाममे मीआदी मुद्दत तक न होगी

सय्यद निअ्मतअली, जो आपके हम्राह है, वह पूरे तौरपर मुख्तार किया गया है, कि आप जो कुछ इस मुआमलेमे दर्याफ्त फर्माए, उसका काफी जवाब देगा, मै उसको अपना खैरख्वाह जानता हू- फकत

अह्दनामह नम्बर ९०

पहाड़ आबूके हवाखोरीके मकामकी बाबत शर्तें.

अव्वल- जो मकाम हवाखोरीके लिये तज्वीज हो, वह हत्तल् इम्कान नखी तालाबके मुतअल्लिक जमीनके अन्दर हो

दूसरे- सिपाहियोको मनाही हो, कि वह गावमे न जाये, और किसी तरहकी तक्लीफ वहाके रहने वालोको न दे, खुसूसन औरतोकी खराबी और बे इज्जती न करने पावे

तीसरे- गाय या बैल न मारेजावे, मोर और कबूतरोंका शिकार न हुआ करे, गाय या बैलका गोश्त पहाडपर लानेकी सख्त मनाही हो.

चौथे- मन्दिरो और इबादतके स्थानो और उनके तअल्लुककी जगहोमे, आमदो रफ्त न हो

पाचवे- पुजारियो और फकीरोसे कोई छेड छाड न हो

छठे- आबूपर कोई दरख्त साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्टके जरीएसे राव साहिब या उनके काम्दारकी इजाजत हासिल किये बगैर न काटा जावे, और न उखाड़ा जावे

सातवे- सिपाहियोको मनाही हो, कि मछलीका शिकार फ़कीरो और पुजारियोके मकानोके करीब याने तालाबके दक्षिणी और पूर्वी कोनेपर न किया करे

आठवे- पूरी इह्तियात अमलमे लाई जावे, कि कोई चोर फौजको न लूटे, क्यौकि राव साहिब खुदको उसका ज़िम्मह्दार नही करार देसके

नवे- ऐसा इन्तिजाम किया जावे, कि खेती वगैरह और दूसरे अस्बाबका नुक्सान न हो, और सिपाहियोको मनाही हो, कि वह आम, जामुन और शहद वग़ैरह, जो रिआयाकी जायदाद है, ज़बर्दस्ती न ले, मगर करोदा, जो कस्रतसे होता है, ले सक्के है

दसवे- कोई रास्तह और पगडडी वगैरह बन्द न कीजावे

ग्यारहवे- राव साहिबसे कोई ख्वाहिश बाजारकी बाबत न कीजावे, बल्कि तमाम तद्बीरे ज़रूरी सामानके हासिल करनेको अपने तौरपर अमलमे लाई जावे

बारहवे- कोई शख्स अंग्रेज हो, या हिन्दुस्तानी बगैर एक अगुवेके सिरोहीके इलाकेमे सफर न करे, क्यौकि यही एक तद्बीर लूटसे बचनेकी है, अगुवे, कुली और मज़्दूरोको सिरोहीके काइदेके मुवाफ़िक़ और कर्नेल सदर्लैण्ड साहिबकी तज्वीजके तौर अपना अपना हक मिला करे

तेरहवे- तमाम कुली और मज़्दूरोको आबू पहाडपर उसी हिसाबसे मज़्दूरी मिलेगी, जो वहांपर राइज है, और जिसको कर्नेल सदर्लैण्ड साहिबने तज्वीज़ किया था

चौदहवे- सिपाही, सिर्फ घाटा अनाद्रा और घाटा दमानीसे आमदो रफ्त रक्खे

पन्द्रहवे- अगर ऐसे मुआमले पेश आए, कि जिनसे और शर्ते या तद्बीरे ज़रूरी समझी जाए, तो वह शर्ते और तद्बीरे भी राव साहिबकी तह्रीरपर साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्टकी मारिफत तै पासकेगी

गलत खयाल दूर करनेके लिये मैने ऊपर वाली शर्ते मुफस्सल लिख दी, अगर्चि ज़ाहिर है, कि खुद फ़ौजके कूचके वक्त ऐसी बातोका लिहाज़ रक्खा जाता है

नम्बर ९१

तर्जमह ख़रीतह, अज़ तरफ़ राव सिरोही, ब नाम क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट, मुवर्रख़े श्रावण सुद १२ सम्वत् १९२३ मु० २३ ऑगस्ट सन् १८६६ ई०

मैंने आपका ख़रीतह ता० ६ जुलाई सन् १८६६ ई० का लिखाहुआ ठीक वक्तपर पाया, जिसमे कि आप बयान करते हैं, कि पहिलेकी ब निस्बत आबूपर अब बहुत ज़ियादह यूरोपिअन शरीफ़ लोग और आदमी रहते हैं, कि हिन्दुस्तानी परदेशी लोगोका शुमार भी बहुत बढगया है, और इन कारणोसे साबिक़ राव साहिबके किये हुए बन्दोबस्त काफ़ी नहीं है, और इसलिये ज़ुरूर है, कि पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट साहिबके इख़्तियारात दस्तूरके मुताबिक़ पुख़्तह कियेजावे, वग़ैरह, वग़ैरह

मेरी इस बातमे पूरी सम्मति है, और इसलिये मै अपनी भी राय ज़ाहिर करता हू, कि सन् १८६० के ऐक्ट नम्बर ४५, सन् १८६१ के ऐक्ट नम्बर २५ और सन् १८५९ के ऐक्ट नम्बर ८ व सफ़ाई और सडक बनानेके क़ानून म्युनिसिपैलिटीके, आबूपर जारी कर दिये जावे, और गज़टमे छापे जावे

तर्जमह ख़रीतह, अज़ तरफ़ राव सिरोही, बनाम क़ाइम मक़ाम पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट, मुवर्रख़े २२ सेप्टेम्बर सन् १८६६ ई०

आपका ख़रीतह ता० २७ ऑगस्टका लिखा हुआ ठीक वक्तपर मैने पाया मैने पेश्तर ता० २३ के ख़रीतेमे आपको लिखा है, कि आबू और अनाद्रापर सन् १८६० का ऐक्ट नम्बर ४५, सन् १८६१ का ऐक्ट नम्बर २५, सन् १८५९ का ऐक्ट नम्बर ८ और म्युनिसिपल ऐक्ट जारी होना मुझे मंज़ूर है, और अब मै लिखता हू, कि आबू और अनाद्रापर इन ऐक्टोके जारी करनेमे जो कोई तब्दीलात या सुधार कियेजावे, वह भी मुझे मंज़ूर है

और यह भी मै मंज़ूर करता हू, कि सन् १८६४ का ऐक्ट नम्बर ६, सन् १८६२ का ऐक्ट नम्बर १० और १८५९ का ऐक्ट नम्बर १४ उन दोनो मकामातपर जारी कियेजावे स्टाम्पसे जो आमदनी हो, वह आबूकी सड़को व बाज़ारोमे ख़र्च कीजावे

सुप्रीम (बडी) गवर्मेन्ट पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएटके इख़्तियारात दीवानी व फ़ौज्दारीके मुआमलोमे भी क़ाइम करसक्ती है इन इख़्तियारातके बाहर मुक़द्दमोकी सुनाई

एजेण्ट गवर्नर जेनरल साहिबके इज्लासमे होगी, जिनके इज्लासमे पोलिटिकल सुप-रिन्टेन्डेण्ट साहिबके फैसलोंकी अपील भी सुनी जायेगी, लेकिन् मै यह शर्तें दर्ज करता हू- अव्वल कि, आबू या अनाद्रापर कोई दीवानी या फौज्दारीके मुकद्दमे सिरो-हीकी रिआयाके दर्मियान होवे, तो उनका फैसला पहिलेकी तरह हमारे दस्तूरोके मुताबिक सिरोहीकी अदालतोमे होवे, दूसरा कि, हमारे मज्हब और रीति रस्ममे किसी तरह फर्क न पडे; तीसरा कि, ऊपर लिखेहुए इख्तियारात, जो कि मैने सुप्रीम गवर्मेन्टके सुपुर्द करदिये है, जब मै चाहू, वापस लेलिये जावे.

नम्बर ९२

तर्जमह खरीतह, अज तरफ श्रीमान राव सिरोही, बनाम साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट, रियासत हाजा, मुवर्रखे ९ मार्च सन् १८६७ ई०

मैने आपका खरीतह ता० ७ मार्चका पाया, जिसमे आबू और अनाद्रापर सन् १८६५ का ऐक्ट नम्बर ११ जारी करनेकी इजाजत मागी गई मै उस ऐक्टका जारी कियाजाना उन शर्तोंपर मजूर करता हू, जिनकी तफ्सील २२ सेप्टेम्बर गुजश्तहके खरीतेमे लिखी है

अह्दनामह नम्बर ९३

अह्दनामह दर्मियान अंग्रेजी गवर्मेन्ट और श्री मान उम्मेदसिह राव सिरोही व उनकी औलाद, वारिसो और जानशीनोके, जो एक तरफ लेफ्टिनेण्ट विलिअम जेम्स वेमिस् म्यूर, पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट सिरोहीने बमूजिब हुक्म कर्नेल विलिअम फ़ेड्रिक ईडन्, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके किया, जिनको पूरे इख्तियारात राइट ऑनरेबल् सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दसे मिले थे, और दूसरी तरफ खुद राव उम्मेदसिहने किया

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेजी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह, अगर अंग्रेजी इलाकेमे बडा जुर्म करे, और सिरोहीकी राज्य सीमामे पनाह लेना चाहे, तो सिरोहीकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और सरिश्तहके मुताबिक उसके मागेजानेपर सर्कार अंग्रेजीको सुपुर्द करदेगी

शर्त दूसरी- कोई आदमी सिरोहीके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई बडा जुर्म करे, और अंग्रेजी इलाक़हमे जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उस

को गिरिफ्तार करके सरिश्तेके मुताबिक़ मागेजानेपर सिरोहीकी सर्कारके सुपुर्द करेगी

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो सिरोहीकी रअय्यत न हो, और उस राज्यकी सीमामे कोई बडा जुर्म करे, और अंग्रेजी इलाक़हमे आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी उसको गिरिफ्तार करेगी, और मुक़द्दमहकी तहकीक़ात उस अदालतमे होगी, जिसके लिये सर्कार अंग्रेजी हुक्म देवे, अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुकद्दमोकी रूबकारी उस पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्टके इज्लासमे होगी, जिसके तह्तमे सिरोहीकी पोलिटिकल निगहबानी रहे

शर्त चौथी- किसी हालतमे कोई सर्कार किसी आदमीको, जिसपर कोई बडा जुर्म काइम हो, देदेनेके लिये पाबन्द नही है, जब तक कि सरिश्तेके मुताबिक़ खुद वह सर्कार, जिसके इलाकहमे जुर्म हुआ हो, या उसके हुक्मसे कोई शख्स उस आदमीको नही मागे, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाकहके कानूनके मुताबिक सहीह समझी जावे, जिसमे कि मुजिम पाया जावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा; और वह मुज्रिम क़रार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहीपर हुआ है

शर्त पाचवी- नीचे लिखे जुर्म बडे जुर्म समझे जायेगे- १ खून, २ खून करनेकी कोशिश, ३ वह्शियानह क़त्ल, ४ ठगी, ५ ज़हर देना, ६ सख्तगीरी (जबर्दस्ती व्यभिचार), ७ जियादह जख्मी करना, ८ लड़का बाला चुराना, ९ औरतोका बेचना, १० डकैती, ११ लूट, १२ सेध (नक़्ब लगाना), १३ चौपाये चुराना, १४ मकान जला देना, १५ जालसाजी करना, १६ जाली सिक्का बनाना या खोटा सिक्का चलाना, -१७ धोखा देकर जुर्म करना,- १८ माल अस्बाब चुराना, १९ ऊपर लिखेहुए जुर्मोमे मदद देना या वर्गलाना (बहकाना)

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमे जो खर्च लगेगा, वह उसी सर्कारको देना पडेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बाते कीजावे.

शर्त सातवी- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्त तक बर्क़रार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करने वाली दोनो सर्कारोमेसे कोई एक उसके तब्दील करनेकी ख्वाहिश दूसरेपर जाहिर न करे

शर्त आठवी- इस अह्दनामेकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनो सर्कारोके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामोके, जो कि इस अह्दनामेकी शर्तोंके बखिलाफ़ हो.

मकाम सिरोही ता० ९ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० मुताबिक़ आसोज सुद ११ सम्वत् १९२४.

दस्तख़त– डब्ल्यू० म्यूर,
पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट, सिरोही

मुहर राव सिरोहीकी

दस्तख़त– जॉन लॉरेन्स,
वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अ़हदनामेकी तस्दीक़ हिज़ एक्सिलेन्सी वाइसरॉय व गवर्नर जेनरल हिन्दने ता० ३१ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को मकाम शिमलेपर की

दस्तख़त– डब्ल्यू० म्यूर,
फ़ॉरेन सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द.

जब बहादुरशाह मरा, उस वक्त शाहज़ादह अ़ज़ीमुश्शान उसके पास मौजूद था, लेकिन् वह डरसे भागकर अपने लश्करमे चला आया, और उसने अमीनुद्दौलहको बादशाहकी आखिरी हालत देखनेके लिये भेजा, उसने वापस आकर बादशाहके मरनेकी खबर सुनाई यह बात सुनते ही अ़ज़ीमुश्शान बहुत रोया, बाद उसके अमीनुद्दौलहके कहनेसे बादशाह बनकर खुशीका नक्कारा बजवाया, और हाजिरीन दर्बारने नज़्रे दिखलाई

हमीदुद्दीनखां, हकीमुल्मुल्क, हकीम सादिकखां, महाबतखा, शाहनवाजखां वगैरह लोग भी उससे आमिले; रुस्तमदिलखां और किसी कद्र दूसरे लोग जहांशाहसे मिले, ज़ुल्फ़िकारखा जहांदारशाहके पास गया, जिसकी सलाहसे उसने जहांशाह याने खुजस्तह अख्तर व रफ़ीउ़ल्क़द्रको भी मिला लिया तीनो शाहज़ादे बडा भारी लश्कर लेकर अ़ज़ीमुश्शानसे मुक़ाबलह करने लगे, सात रोज़ तक बराबर गोलन्दाजी रहनेके बाद निअ़्मतुल्लाहखा, अ़ज़ीजखा, दया बहादुर नागर, राजा मुह्कमसिह खत्री, कृष्णगढके राजा राजसिह बहादुर और शाहनवाजखाने हमलह करना चाहा, लेकिन् अ़ज़ीमुश्शानने रोक दिया, क्योंकि वह जानता था, कि तीनो शाहजादोंके पास खजानह नहीं है, इसलिये वे आपही बिखर जायेंगे

आठवे दिन ज़ुल्फ़िकारखाने एक ऊंची जगहसे अ़ज़ीमुश्शानके लश्करपर गोलन्दाजी शुरू की, जिससे उसका लश्कर भाग निकला तब नागर दया बहादुर, और राजा मुह्कमसिह बहादुर अ़ज़ीमुश्शानके मना करनेपर भी ज़ुल्फ़िकारखांके तोपखानेपर चढगये, और उसे छीन लिया, लेकिन् पिछली मददके न पहुचनेसे ज़ुल्फ़िकारखां, रुस्तमखा और जानीखाने हमला करके शिकस्त दी, और वे दोनो ज़ख्मी होकर मारेगये फिर सुलैमानखा पन्नीने एक हजार सवारो समेत अ़ज़ीमुश्शानके लश्करसे निकलकर लडाई की, और मारागया अ़ज़ीमुश्शानकी बे इन्तिजामीसे

साठ सत्तर हज़ार सवारोंमेंसे दस बारह हज़ार बाक़ी रहगये, और उनमेंसे भी रातके वक्त निकलकर बहुतसे शहरमें चलेगये, सिर्फ़ दो या तीन हज़ार सवार पास रहे, जब सुब्हको अज़ीमुश्शान लड़ाईके लिये चला, तो कुल दो हज़ार सवार साथ थे इसपर भी तेज़ हवा रावी नदीके रेतको लेकर अज़ीमुश्शानके साम्हने इस तरहपर आई, कि मानो परमेश्वरने उसे ग़ारत करनेका शस्त्र बना भेजा था अमीनुद्दौलहने इस वक्त अज़ीमुश्शानको निकलनेकी सलाह दी, लेकिन् उसने इन्कार किया फिर हाथी सूंडपर गोला लगनेसे अज़ीमुश्शानको लेभागा, और वह रावी नदीमें हाथी समेत गिरकर डूब मरा

इस लड़ाईका ख़ातिमह होनेपर ख़ुजस्तहअरूतर, याने जहांशाहने बादशाहसे कहा, कि सल्तनत तक्सीम करनेका वादह पूरा होना चाहिये उसी वक्त अस्सी छकड़े अश्रफ़ी और सौ छकड़े रुपयोंके जो मिले थे, उसके तीन बराबर हिस्से करने चाहे तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने कहा, कि पांच हिस्से होने चाहियें, जिनमेंसे तीन मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाहके, और दो दोनों शाहज़ादोंके. इसपर बखेड़ा हुआ, तीन दिनतक दोनों तरफ़की फ़ौजें तय्यार रहीं, चौथे दिन शामको जहांशाहने अचानक मुइज़्ज़ुद्दीनके लश्करपर हमलह किया, और फ़त्ह पाई मुइज़्ज़ुद्दीन पोशीदह तौरपर ज़ुल्फ़िक़ारख़ांके पास पहुंचा, ज़ुल्फ़िक़ारख़ांने हैरान होकर अपने ख़ास तीन चार सौ बर्क़न्दाज़ोंको नज्रके बहानेसे जहांशाहके पास भेजा, जिन्होंने बाढ़ मारकर जहांशाहका काम तमाम किया; और मुइज़्ज़ुद्दीन बजाय शिकस्त पानेके फ़त्हयाब होगया दूसरे रोज़ सुब्हको रफ़ीउश्शान याने रफ़ीउल्क़द्रने लड़ाईकी तय्यारी की, तब ज़ुल्फ़िक़ारख़ां मुइज़्ज़ुद्दीनको हाथीपर सवार कराकर मुक़ाबलेके लिये लेआया लड़ाई होनेके बाद रफ़ीउल्क़द्र भी साथियों समेत मारागया

मुइज़्ज़ुद्दीनने बे खटके सल्तनत पाकर चारों तरफ़ फ़र्मान भेजे, और लाहौरसे रवाना होकर हिज्री ११२४ ता० १८ जमादियुल्अव्वल [वि० १७६९ आषाढ कृष्ण ४ = ई० १७१२ ता० २३ जून] वृहस्पतिवारको तीन घंटे दिन बाक़ी रहे दिल्ली पहुंचा, जहां तरूतपर बैठकर आसिफ़ुद्दौलह असदख़ांको वकीले मुत्लक़ रक्खा, जैसा कि वह बहादुर-शाहके वक्तमें था, ज़ुल्फ़िक़ारख़ांको वज़ीरे आज़म बनाया, और अज़ीमुश्शानके बड़े बेटे सुल्तान करीमुद्दीनको मरवाडाला, जिसे हिदायतकेशख़ां लाहौरसे गिरिफ़्तार कर लाया था आलमगीर बादशाहके बेटे मुहम्मद आज़मका शाहज़ादह आलीतबार, काम-बख़्शका बेटा मुह्युस्सुन्नह और फ़ीरोज़मन्द क़ैद किये गये फिर अपने धायभाईको ख़ानेजहांका ख़िताब दिया, जो ज़ुल्फ़िक़ारख़ांका विरोधी था लालकुंवर बेगमका

बादशाहने बड़ा रुत्बा बढाकर उसके भाइयोंको सात हजारी और पांच हजारी मन्सबदार बनाया, ये लोग गवय्ये थे जुल्फिकारखां, बेगमके भाई खुशहालखांसे हंसी ठट्ठा किया करता था, उसने अपनी बहिनकी मारिफत बादशाहका दिल वजीरसे फेरा, जुल्फिकारखांने खुशहालखांको नालाइक हरकतोंके सबब गिरिफ्तार करके सलीमगढमें कैद कर दिया इसी तरह लालकुंवरकी दोस्त जुहरा कोंजड़ीको गाजियुद्दीनखांके बेटे चीन किलीचखांने पिटवाया, जो रास्तेमें उसके साथ बे अदबीसे पेश आई थी बादशाह कमीन लोगोंके फन्देमें गिरिफ्तार होकर ऐश इश्रत व शराबको अपनी बादशाहत जानते थे, और बड़े बड़े खानदानी आदमियोंकी दिलशिकनी होने लगी

अजीमुश्शानके बेटे फर्रुखसियरका हाल यह है, कि बादशाह आलमगीरके समय अजीमुश्शानको बंगालेकी सूबहदारी मिली थी, और बहादुरशाहके राज्यमें उड़ीसा, इलाहाबाद (प्रयाग) और अजीमाबाद (पटना) भी उसको मिलगया, तब अजीमुश्शान तो बादशाहके पास रहने लगा, और सय्यद अब्दुल्लाहखांको इलाहाबाद और सय्यद हुसैनअलीखांको अजीमाबाद और जाफरखांको सूबह बंगाल व उड़ीसाकी सूबहदारी दी जब बहादुरशाह और आजमकी लड़ाई हुई, तबसे अजीमुश्शान बंगालेकी तरफ नहीं गया, परन्तु अपने बेटे फर्रुखसियरको मए अपनी हरमसराय व मुलाजिमोंके अक्बर नगर उर्फ राजमहलमें छोड आया था, वह शाहजादह उसी जगह तईनात रहकर इस समय तक वहां बर्करार था अब जहांदारशाहने बादशाह होकर एक फर्मान जाफरखांको लिखभेजा, कि फर्रुखसियरको गिरिफ्तार करके भेजदो; उस नेक आदमीने अजीमुश्शानकी पर्वरिशको याद करके फर्रुखसियरको खानगी तौरपर खबर दी, कि मेरे पास यह हुक्म आया है, आप अपने बचावकी सूरत कीजिये शाहजादहने पटनेकी राह ली, और हुसैन अलीखांके पास पहुंचकर बहुत लाचारी की, पहिले तो हुसैनअलीखांने टाला टूली की, पर आखिरमें फर्रुखसियरका मददगार बनगया, और अपने भाई अब्दुल्लाहखांको भी शामिल किया; चारों तरफ फर्रुखसियरके नामसे फर्मान जारी होगये हुसैनअलीखांने अपने भान्जे गैरतखांको अजीमाबादमें छोडकर मए फर्रुखसियरके कूच किया इधर मुइज़्जुद्दीन जहांदारशाहने इस बातको सुनकर सय्यद अब्दुल्गफ्फारखां कुर्देजीको दस बारह हजार सवारों समेत इलाहाबादकी हुकूमतपर भेजदिया, जिसे अब्दुल्लाहखांने अपने भाइयोंको भेजकर मुकाबलेमें शिकस्त देने बाद मारडाला यह पहिला मुकाबलह था, जो मुइज़्ज़ुद्दीनके मुलाजिमोंसे फर्रुखसियरके मुलाज़िमोंने किया

इसके बाद फ़र्रुख़सियर भी मए हुसैनअलीख़ा व सफ़्शिकनख़ा नाइब सूबहदार उड़ीसा व अहमदबेग, मुइज़्ज़ुद्दीन कोके, व ख़्वाजह आसिम ख़ानिदौरा वग़ैरह सर्दारोंके आन पहुचे, और अब्दुल्लाहख़ाको लेकर इलाहाबादसे आगे बढ़े यह ख़बर सुनकर जहांदारशाहने भी अपने बड़े शाहज़ादे अअ़्ज़ुद्दीनको मए पचास हज़ार सवार व तोपख़ानह व बडे बडे सर्दारोंके रवानह किया शाहज़ादेकी मदद व फ़ौजकी दुरुस्तीके लिये ख़्वाजह अह्सनख़ाको सात हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब व ख़ानिदौराका ख़िताब देकर भेजा इन सबके पीछे ग़ाज़ियुद्दीनख़ाके बेटे चीन क़िलीचख़ाको तसल्ली देकर रवानह किया ये सब खजवा गावमे पहुचकर ठहरे थे, कि फ़र्रुख़सियर भी आपहुचा, और गोलन्दाज़ी होने लगी, पिछले पहर रातमे शाहज़ादह अअ़्ज़ुद्दीन भाग गया, और माल अस्बाब, ख़ज़ानह व तोपख़ानह वग़ैरह फ़र्रुख़सियरकी फ़ौजके क़ाबूमे आया भागते हुए अअ़्ज़ुद्दीनको चीन क़िलीचख़ाने आगरेके पास रोका, और बादशाह जहांदारशाहको ख़बर दी

यह सुनकर मुइज़्ज़ुद्दीन जहांदारशाह हिज्री ११२४ ता० १२ ज़िल्क़ाद [वि० १७६९ मार्गशीर्ष शुक्ल १३ = ई० १७१२ ता० ११ डिसेम्बर] सोमवारके दिन फ़र्रुख़सियरके मुक़ाबलेको दिल्लीसे रवानह हुआ हरावल ज़ुल्फ़िक़ारख़ा, और मददगार कोकलताशख़ां, आज़मख़ा, जानीख़ा, मुहम्मद अमीरख़ां वग़ैरह तूरान, व ईरानके सर्दार कुल सत्तर अस्सी हज़ार सवार तोपख़ानह और पैदल फ़ौजके साथ आगरेकी तरफ़ चले जब आगरेको पीछे छोडकर समूनगरके पास पहुचे, उधरसे फ़र्रुख़सियर भी लश्कर सहित आया, और जहांदारशाहको धोखा देनेके लिये हुसैनअलीख़ाको डेरोंमे छोडकर आप मए अब्दुल्लाहख़ाके जमना नदी पार आगरेसे ४ कोस दिल्लीकी तरफ़ रोजबिहानी सरायमे आठहरा जहांदारशाह भी पीछा फिरकर उसके मुक़ाबलेमे आया इधर ज़ुल्फ़िक़ारख़ा और उधर अब्दुल्लाहख़ां हरावलके अफ़्सर थे हिज्री ११२४ ता० १४ ज़िल्हिज [वि० १७६९ पौष शुक्ल १५ = ई० १७१३ ता० १२ जैन्युअरी] को दोनो फ़ौजोंकी लडाई शुरू हुई; अब्दुल्लाहख़ाने जहांदारशाहके तोपख़ानहको हटाकर बडी बहादुरीके साथ हमलह किया, और मुइज़्ज़ुद्दीनके हाथी तक पहुचगया. वह कम नसीब अपने बेटे और बेगम लालकुवरको लेकर भागा, और आगरेके क़िलेमे जा ठहरा ज़ुल्फ़िक़ारख़ाने बहुतेरा ढूढा, परन्तु कुछ पता न लगा फ़र्रुख़सियरकी फ़ौजमे फ़त्हके शादियाने बजे. मुइज़्ज़ुद्दीन मए अपने बेटेके भागकर दिल्ली पहुचा, जिसको आसिफ़ुद्दौलह असदख़ाने नज़र बन्द करदिया पीछेसे ज़ुल्फ़िक़ारख़ां भी पहुच गया, जो दुबारा फ़र्रुख़सियरसे लड़ना चाहता था; लेकिन् उसने असदख़ाके समझानेसे यह इरादह छोड़ दिया उसको फ़र्रुख़सियरकी तरफ़से खौफ़ था, क्यौंकि उसके बाप अज़ीमुश्शानको उसने मारकर मुइज़्ज़ुद्दीनको तख़्तपर बिठाया था; असदख़ांसे कहा,

कि मै दक्षिणको चला जाऊं; उस बुड्ढेने समभाया, कि हम आलमगीरके जमानेके पुराने नौकर है, फ़र्रुख़सियर हर्गिज हमको बर्बाद न करेगा. हुसैनअलीखां जख्मी होकर बेहोश पडा था, जिसको अब्दुल्लाहखाने तलाश करके उठाया. हिज्री ११२४ ता० १५ ज़िल्हिज [वि० १७६९ माघ कृष्ण १ = ई० १७१३ ता० १२ जैन्युअरी] को फ़र्रुख़सियरने शाहाना दर्बार किया, जिसमे चीन किलीचखा, अब्दुस्समदखा, मुहम्मद अमीनखा वगैरह तूरानी सर्दारोने अब्दुल्लाहखांकी मारिफत हाज़िर होकर नज्रे दिखलाई.

(फ़र्रुख़सियर बादशाह)

फ़र्रुख़सियरने अब्दुल्लाहखाको मए लुत्फ़ुल्लाहखा, सादिक़खा वगैरह उमरावोके दिल्लीका बन्दोबस्त करनेको रवानह किया; और आप एक हफ्ते ठहरकर दिल्लीकी तरफ़ चला, जो हिज्री ११२५ ता० १४ मुहर्रम [वि० १७६९ माघ शुक्ल १५ = ई० १७१३ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को दिल्लीके पास बारह पुलेमे पहुंचा, और वहां अब्दुल्लाहखाको कुतुबुल्मुल्कका खिताब व सात हजारी जात व सवारका मन्सब देकर अपना वजीर आजम बनाया, हुसैनअलीखाको इमामुल्मुल्कका खिताब व सात हज़ारी जात व सवारका मन्सब देकर अमीरुल् उमरा बख्शियुल् मुल्क अव्वल बनाया, मुहम्मद अमीनखाको एक हजारी जात व सवार पहिले मन्सब पर बढाकर एतिमादुद्दौलहका खिताब देने बाद दूसरे दरजेका बख्शी किया, चीन किलीचखाको, जो पहिले पांच हजारी था, सात हजारी जात व सवारका मन्सब देकर 'निजामुल्मुल्क' का खिताब इनायत किया; और दक्षिणकी सूबहदारी दी, ख्वाजह आसिमको समसामुद्दौलह खानेदौराका खिताब व सात हजारी जात व ६ हजार सवारका मन्सब दिया; अहमदबेग मुइज्जुद्दीनके कोकाको, जो फ़र्रुख़सियरसे पहिले आमिला था, गाज़ियुद्दीनखां बहादुर गालिब जगका खिताब व ६ हज़ारी ज़ात व पांच हजार सवारका मन्सब और तीसरे दरजेकी बख्शीगरी दी, काजी अब्दुल्लाह तूरानीको सात हजारी ज़ात व सवारका मन्सब और खानखाना मीर जुम्लाका खिताब दिया; यही बादशाहकी तरफ़से तह्रीरपर दस्तखत करता था. इनके सिवा बहुतसे आदमियोको इन्आम, इक्राम, मन्सब और खिताब दिये.

वजीर असदखां मए अपने बेटे ज़ुल्फ़िक़ारखांके बारहपुलेपर हाजिर हुआ, पहिले हुसैनअलीखाने चाहा था, कि वह हमारी मारिफत पेश हो; परन्तु अब्दुल्लाहखां मीरजुम्लाने उन दोनों जबर्दस्तोका एक होना ना पसन्द करके अपनी मारिफ़त पेश किया. इस इख्तिलाफ़से इन बेचारोपर आफत आई; असदखांको रुख्सत देकर ज़ुल्फ़िक़ारखांको बाहर डेरेमे ठहराया, जो बादशाहके हुक्मसे थोड़ी देरमे मारा-

गया उसी दिन ता० १६ मुहर्रम [वि० फाल्गुन् कृष्ण २ = ई० ता० १३ फेब्रुअरी] को जहांदारशाहको भी फांसी देकर मारडाला, और ता० १७ मुहर्रम [वि० फाल्गुन् कृष्ण ३ = ई० ता० १४ फेब्रुअरी] को फर्रुखसियर किलेमें दाखिल हुआ जिसके पीछे मुइज़्ज़ुद्दीनका सिर बांसपर, लाश हाथीपर और जुल्फ़िकारखांकी लाश उसी हाथीकी पोंछसे उलटी लटकती हुई बंधी आती थी उन लाशोंके पीछे पालकीमें बेचारे बुड्ढे असदखांको चलाया गया था फिर असदखांको खानेजहां बहादुरकी हवेलीमें कैद किया, लाशोंको किलेके दर्वाजेपर डाला, और जुल्फ़िकारखांके दीवान राजा सभाचन्दकी जबान कटवा डाली, इन सबका माल अस्बाब ज़ब्त हुआ इनके सिवा दूसरे भी कई सर्दारोंको शुब्हेमें फांसियां देकर मरवाडाला, मुइज़्ज़ुद्दीनके बेटे अअ़ाज़ुद्दीन, आज़मशाहके बेटे आलीतबार और खुद फर्रुखसियरके भाई हुमायूं बख़्तकी आंखोंमें सलाइयां फिरवा दीं इस ज़ुल्मसे हर एक सर्दारके दिलमें बड़ा ख़ौफ़ होगया

फर्रुखसियरने शुरू सल्तनतसे सय्यद अब्दुल्लाहखांके बर्खिलाफ़ उह्दे देना तज्वीज़ किया, जिससे बादशाह और वज़ीरके दिलोंमें फ़र्क़ आने लगा, लुच्चे और बद मआ़श लोग बादशाही हुज़ूरमें पहुंचने लगे, लेकिन् कुल इख़्तियार अब्दुल्लाहखांके हाथमें होनेसे, जो नुक़्सान दिखाई देते, वे रफ़ा हो जाते, अब्दुल्लाहखां भी बड़ा अय्याश था, वह अपने दीवान राजा रत्नचन्द महाजनको कुल इख़्तियार देकर ऐशमें पड़ा, रत्नचन्द बादशाहतका काम संभालनेकी लियाक़त नहीं रखता था, अल्बत्तह अब्दुल्लाहखांका भाई हुसैनअ़लीखां बड़ा बहादुर सिपाही था, जिसके दबावसे कोई कुछ नहीं कर सक्ता था मीर जुम्ला जुदा बादशाहको बहकाकर काममें खलल डालता था इस तरहकी बे तर्तीबीसे बादशाहतका अजब ख़राब ढंग होगया था

मीर जुम्लाने बादशाहसे कहा, कि अब्दुल्लाहखांसे हुसैनअ़लीखांको जुदा करना चाहिये, इस बातके लिये अभी यह मौक़ा है, कि राजा अजीतसिंहने बादशाह आलमगीरके मरने बाद मारवाड़ और जोधपुरपर क़ब्ज़ह करलिया, बाग देना मौक़ूफ़ करदिया, और मस्जिदोंको गिरवाकर उस जगह मन्दिर बनाये, इसलिये हुसैनअ़लीखांको उस तरफ़ भेज दीजिये बादशाहने ऐसा ही किया, और हुसैनअ़लीखां मए फ़ौजके जोधपुरकी तरफ़ रवानह हुआ बादशाहने महाराजाको एक फ़र्मान पोशीदह लिख भेजा, कि तुम हुसैनअ़लीखांको मारडालना पीछेसे अब्दुल्लाहखांको गिरिफ़्तार करना चाहा; अब्दुल्लाहखां इस भेदसे वाक़िफ़ होगया, और उसने अपने भाईको पीछा आनेके लिये लिखा उधर राजा अजीतसिंहने भी बादशाहका फ़र्मान हुसैनअ़लीखांको दिखलाया. इसपर भी बहादुर हुसैनअ़लीखां, महाराजाकी बेटी इन्द्रकुंवरको

बादशाहके लिये, और कुछ पेश्कश व महाराजाके कुंवरको साथ लेकर दिल्ली पहुंचा. आपसके रज व फरेबसे सल्तनतके कामोंमे दिन दिन बिगाड होता जाता था, वज़ीर और अमीरुल्उमरा अपनी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम करना चाहते थे, और बादशाहका सलाहकार मीर जुम्ला उनके बर्खिलाफ़ चाल चलता था, वज़ीर व उसका दीवान रत्नचन्द रिश्वत वगैरह खूब लेने लगे, और बादशाह अब्दुल्लाहखांको गिरिफ्तार करना चाहता था. फ़र्रुख़सियरकी मा, जिसने सय्यदोंसे कुर्ज़ानकी सौगन्द खाकर कौल करार किया था, हरएक बातकी उनको ख़बर देती थी, यहां तक कि दोनो भाई दर्बारमे जाना छोड़कर होश्यार रहने लगे.

फ़र्रुख़सियरकी मा अब्दुल्लाहखांके मकानपर जाकर दोनो भाइयोंको ले आई, और बादशाह व दोनो सय्यदोंमे सुल्ह करवादी, उन दोनोंने बादशाहके साम्हने तलवार रखकर कहा, कि हम कुसूरवार हों, तो यह तलवार और सिर हाजिर है, सजा दीजिये; और मौकूफ़ करना हो, तो हमको वह भी मजूर है, ता कि मक्केको चले जावें, हमसे काम लेना हो, तो नालाइक आदमियोंकी बातोंपर ध्यान न देना चाहिये. बादशाहने इस बातपर सुलह करली, कि मीर जुम्लह तो अज़ीमाबादकी सूबहदारीपर, और हुसैन-अलीखां दक्षिणकी सूबहदारीपर चलाजावे, निजामुल्मुल्क दक्षिणका सूबहदार दिल्लीमे चलाआवे; और दाऊदखां गुजरातके सूबहदारको लिखाजावे, कि वह अहमदाबादसे बुर्हानपुर चला जावे, वहां हुसैनअलीखांके हुक्मकी तामील करना चाहिये, लेकिन् पोशीदह दाऊदखांको फ़र्मान लिख भेजा, कि हुसैनअलीखांको मारडालोगे, तो कुल दक्षिणकी सूबहदारी तुमको मिलेगी.

मीर जुम्लाको तो अज़ीमाबादको रवानह करदिया, और हुसैनअलीखांको हुक्म दिया, कि तुम महाराजा अजीतसिंहकी बेटीका विवाह करजाओ. तब अमीरुल्उमराने उस राजकुमारीका पिता बनकर बड़ी धूमधामसे तय्यारी की, और हिन्दुओंके रवाजके मुवाफ़िक़ हिज्री ११२७ ता० २२ ज़िल्हिज [वि० १७७२ पौष कृष्ण ७ = ई० १७१५ ता० २६ डिसेम्बर] बृहस्पतिवारकी रातको उसका विवाह बादशाहके साथ कर दिया.

इन्हीं दिनोंमे सिक्खोंके गुरू बिन्दाने पंजाबमे बडी भारी बगावत की, और हज़ारहा मर्द, औरत बच्चे वगैरह मुसल्मानोंको बडी बे रहमीके साथ कत्ल किया, जिसको अब्दुस्समदखां सूबहदार कश्मीरने गिरिफ्तार करके दिल्ली भेजा, वह भी बडी सख्तीके साथ मए अपने बेटे और साथियोंके बादशाहके हुक्मसे हिज्री ११२८ [वि० १७७३ = ई० १७१६] मे मारागया.

हुसैनअलीखांको बादशाहने दक्षिणकी तरफ़ रवानह किया, तो उसने अर्ज़ की, कि मेरे भाईके साथ किसी तरहकी दग़ा न कीजिये, वर्नह मैं २० दिनमे यहां आसक्ता

हू. हुसैनअ़लीख़ां हिज्री ११२८ शुरू रम्ज़ान [वि० १७७३ भाद्रपद शुक्क २ = ई० १७१६ ता० २० ऑगस्ट] को बुर्हानपुर पहुचा, गुजरातका सूबहदार दाऊदख़ा पहिलेसे वहा मौजूद होगया था, जो बादशाही इशारेके मुवाफ़िक़ हुसैनअ़लीख़ासे लडनेको मुस्तइद हुआ, हुसैनअ़लीख़ांने बहुत समझाया, लेकिन् वह न माना, आख़िरकार दाऊदख़ा मारा गया, और अमीरुल्उमराने फ़त्ह पाई यह ख़बर बादशाहके कान तक पहुची, तो उसने रंजके साथ कहा, कि ऐसे बहादुर सिपाहीको मारना न चाहिये था, तब अ़ब्दुल्लाहख़ा वज़ीरने अ़र्ज़ की, कि मेरा भाई उस पठानके हाथसे माराजाता, तो शायद मर्ज़ी मुबारकके मुवाफ़िक़ होता इस तरह फिर ज़ियादह रंजकी सूरत पैदा होनेलगी, मीरजुम्लासे अ़ज़ीमाबादका बन्दोबस्त न होसका, वह फ़ौजकी तनख़्वाह भी न देसका, और भागकर दिल्ली पहुचा इस बातसे शक हुआ, कि बादशाहने उसको बुलाया है, लेकिन् बादशाहने उसका मन्सब घटाकर पंजाबकी तरफ़ भेजदिया; तो भी बादशाह और वज़ीरका रंज दिन दिन बढता गया

हिज्री ११२९ [वि० १७७४ = ई० १७१७] मे आ़लमगीरके वज़ीर असदख़ाका ९४ वर्षकी उम्रमे इन्तिक़ाल होगया यह अपने बेटे जुल्फ़िक़ारख़ाके क़त्ल होनेसे गोशह नशीन था, जब अ़ब्दुल्लाहख़ासे बादशाहकी नाइत्तिफ़ाक़ी बहुत बढगई, और फ़र्रुख़सियरने उस बुड्ढे वज़ीर असदख़ासे सलाह पूछनेको अपना एतिबारी आदमी भेजा, उसने यह जवाब दिया, कि हमारे पुराने ख़ानदानको आपने बर्बाद किया, जिसका यह नतीजा है, अब मुनासिब यही है, कि सय्यदोंको ख़ुश रखा जावे, क्योंकि सल्तनतको ज़वाल आचुका, और उसकी लगाम सय्यदोंके हाथमे है, बर्ख़िलाफ़ीसे आपके हक़मे ख़राब नतीजा होगा

बादशाही मुलाज़िम बडी हैरतमे थे, कि अब बादशाहके हुक्मकी तामील करें, या वज़ीरको ख़ुश रक्खे इनायतुल्लाहख़ा, आ़लमगीरी मुलाज़िम मक्कहसे वापस आया, जिसके बेटे हिदायतुल्लाहख़ाको फ़र्रुख़सियरने अपने पहिले जुलूसमे मरवाडाला था; बादशाहने उस पुराने अह्लकारका इस समय आना ग़नीमत जानकर ख़ालिसहकी दीवानी और कश्मीरकी सूबहदारी उसके लिये तज्वीज की, उसने जलती हुई आगमे और ईधन डाला, याने ग़ैर मज़्हबी लोगोंपर जिज्यहका लगान, जो इस बादशाहके पहिले जुलूसमे मौक़ूफ़ किया गया था, इसने मक्कहके शरीफ़की अ़र्ज़ीके ज़रीएसे फिर जारी करवादिया इस बारेमे फ़र्रुख़सियरने एक फ़र्मान अपने हाथसे महाराणा दूसरे संग्रामसिंहके नाम लिखा था, जिसका तर्जमह ऊपर दर्ज होचुका है- (देखो पृष्ठ ९५४-९५)

दूसरी बात उसने यह बताई, कि हिन्दू वग़ैरह लोगोंके मन्सब व जागीरोंमे

कमी कीजावे इन बातोंसे रत्नचन्द वगैरह मुलाज़िम व आम लोग वज़ीरके पास फ़र्यादी हुए, वज़ीरने उस हुक्मको रोक दिया इससे सब लोग इनायतुल्लाहख़ांसे नाराज़ और वज़ीरसे ख़ुश थे फिर बादशाहने इनायतुल्लाहख़ांके कहनेसे रत्नचन्दको बर्तरफ़ करनेका हुक्म दिया, लेकिन् वज़ीरने इस हुक्मकी तामील न की

हिज्री ११२९ के शुरू शव्वाल [वि० १७७४ भाद्रपद शुक्ल २ = ई० १७१७ ता० १० सेप्टेम्बर] में आंबेरके महाराजा सवाई जयसिंहको राजा धिराजका ख़िताब, मन्सबकी तरक्की, जवाहिर, हाथी और कई लाख रुपया देकर चूडामण जाटको सज़ा देनेके लिये रवानह किया, जो सर्कश होरहा था, और पीछेसे सय्यद ख़ानेजहां वज़ीरके मौसेको भी बड़ी फ़ौज देकर मददके लिये भेजा एक साल तक लड़ाई होनेके बाद चूडा-मणने तंग होकर बाला बाला वज़ीरकी मारिफ़त सुलह करली, जिससे महाराजा जयसिंह भी रंजीदह हुआ, और बादशाह भी दिलमें नाराज़ था

इसी तरह राजा साहू वगैरह दक्षिणियोंके नाम बादशाहने पोशीदह फ़र्मान भेजदिये थे, कि हुसैनअलीख़ांको मारडालना इससे दक्षिणके इन्तिज़ाममें भी ख़लल आगया हुसैनअलीख़ांने मरहटोंसे मेल मिलाप करके उनके हुकूक बढ़ा दिये, देशमुखी व चौथ उन लोगोंको लिखदी, जिससे लोगोंने बादशाहको जियादह भड़काया एक शख़्स मुहम्मद मुराद नामी कश्मीरीको रुक्नुद्दौलह एतिकादख़ांका ख़िताब देकर बादशाहने बढ़ाया, जो सय्यदोंको गारत करनेका ज़िम्महवार होगया था उसीकी सलाहसे महाराजा अजीतसिंहको अहमदाबादसे, सर्बलन्दख़ांको पटना अज़ीमाबादसे, और निज़ामुल्मुल्कको मुरादाबादसे बुलाया; राजा अजीतसिंहको महाराजाका ख़िताब और बहुतसी इज़्ज़त देकर इस काममें शरीक करना चाहा, परन्तु अब्दुल्लाहख़ांके बर्ख़िलाफ़ होनेसे उसने इन्कार किया, और वज़ीरके शरीक होगया निज़ामुल्मुल्क व सर्बलन्दख़ांने बादशाहकी सलाहमें शामिल होकर अर्ज़ की, कि हम दोनोंमेंसे एकको विज़ारतका ख़िल्अत दे दीजिये, जिससे अब्दुल्लाहख़ांकी ताकत कम हो, फिर वह सर्कशी करेगा, तो सज़ा दीजावेगी, लेकिन् उस कम अक्ल बादशाहसे यह भी न होसका इसी सालमें ईदके मौकेपर फ़र्रुख़सियरके पास सत्तर अस्सी हज़ार फ़ौज राजाओं वगैरहकी एकट्ठी होगई थी, और अब्दु-ल्लाहख़ांके पास कुल चार पांच हज़ारसे जियादह न थी, अफ़्वाह थी, कि इस मौकेपर अब्दुल्लाहख़ांके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई होगी; लेकिन् उस कम हिम्मत बादशाहसे यह भी न बन पड़ा इस अफ़्वाहसे वज़ीरने बीस हज़ार सवार बन्दोबस्तके लिये भरती करलिये थे, और हुसैनअलीख़ांकी भी अर्ज़ी हाज़िर होनेकी बाबत बादशाहके पास

आगई थी इन बातोंसे दबकर महाराजा अजीतसिंहकी मारिफत बादशाहने वजीर से सुलह चाही, और उसके घरपर जाकर ईमान और सौगन्दके साथ सफ़ाई की, हुसैनअलीखांके न आनेके लिये इख्लासखांको भेजकर तसल्ली करवादी, जिसने फिर आनेमें चन्द रोज तअम्मुल किया, परन्तु बादशाहका फिर वही ढंग होगया, और निज़ामुल्मुल्क व सर्बलन्दखां भी बेचारे बे कद्री और बे खर्चीसे तंग होरहे थे वजीरने उनकी तसल्ली करके सर्बलन्दखांको क़र्ज़ह वगैरह चुकाने बाद काबुलकी सूबहदारीपर भेजदिया, और निज़ामुल्मुल्क व मुहम्मद अमीनखां वगैरहको अपनी तरफ़ करलिया, अपने भाई हुसैनअलीखांको लिखभेजा, कि जिस तरह होसके, जल्दी चले आओ

बादशाहने इसी अर्सेमें यह इरादह किया, कि शिकारको सवार होकर लौटते हुए वजीरके घर आवे, और महाराजा अजीतसिंहका मकान उसीके पास है, इसलिये वह नज़ और सलामके लिये हाजिर होगा, तो उस वक्त महाराजाको गिरिफ्तार करलेवेंगे, जिससे वजीरकी ताकत टूट जायेगी यह बात महाराजाके कान तक पहुंच गई, जिससे वह इरादह भी पूरा न हुआ इन खबरोंके सुननेसे हुसैनअलीखां भी हिज्री ११३० आखिर जिल्हिज [वि० १७७५ मार्गशीर्ष शुक्ल १ = ई० १७१८ ता० २३ नोवेम्बर] को औरंगाबादसे दिल्लीको रवानह हुआ, जिसके साथ बाईस सर्दार बादशाही मन्सबदार और तीस हजार दूसरे सवार थे, जिनमें दस या बारह हजार मरहटे और बाकी बादशाही मुलाज़िम थे उसने बुर्हानपुरमें दो चार मकाम किये, और हिज्री ११३१ ता० २२ मुहर्रम [वि० १७७५ पौष कृष्ण ८ = ई० १७१८ ता० १५ डिसेम्बर] को वहांसे दिल्लीकी तरफ़ रवानह हुआ इस अफ्वाहको सुनकर डरपोक बादशाह अब्दुल्लाहखांके घरपर गया, कुर्आन बीचमें देने बाद पगड़ी अपने सिरसे उतारकर वजीरके सिरपर रखदी, और दूसरे दिन वजीरको मए महाराजा अजीतसिंहके किलेमें बुलाकर बहुत खातिर तसल्ली की. हुसैनअलीखांने आखिर रबीउल्अव्वल [वि० १७७५ फाल्गुन शुक्ल १ = ई० १७१९ ता० २१ फेब्रुअरी] को दिल्ली पहुंचकर फ़ीरोज़शाहकी लाटके पास डेरा किया उस वक्त महाराजा जयसिंहने बादशाहसे कहा, कि वज़ीर और हुसैनअलीखांने रंग बदला है, अगर आप हिम्मत फ़र्माकर सवार हों, तो उनसे जियादह फ़ौज और सिपाह आपके साथ होकर दोनोंको सजा दे सक्ते हैं, बल्कि उनके पास जो बहुतसे बादशाही मुलाज़िम हैं, वे भी आपके पास चले आवेंगे; लेकिन् उस कम अक्ल और कम हिम्मत बादशाहसे कुछ भी न बन पड़ा

कुतुबुल्मुल्क याने वज़ीरने अपने भाईकी तरफ़से बादशाहको कहलाया, कि

राजा सवाई जयसिंह, जो हमारा दुश्मन है, वतनको रुख़्सत करदिया जावे, और सर्कारी तोपख़ानह व क़िला वग़ैरह कुल हमारे इख़्तियारमे कर देवे, तो हम बेधड़क आपके पास हाज़िर होजावे, जिसपर बादशाहने महाराजा सवाई जयसिंहको ता० ३ रबीउस्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ४ = ई० ता० २५ फेब्रुअरी] को घरकी रुख़्सत देदी वज़ीर व महाराजा अजीतसिंहने क़िलेमे ता० ५ रबीउस्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ६ = ई० ता० २७ फेब्रुअरी] को बन्दोबस्त कर लिया, उसी दिन हुसैनअलीख़ा शामको क़िलेमे आया, मरहटी फ़ौजके सवार क़िलेके गिर्द तईनात करदिये जब वह बादशाहके पास गया, तो अदब आदाबका ख़याल भी पूरा नही रक्खा, बादशाहने ख़िल्अ़त, घोड़ा, हाथी, वग़ैरह देकर ख़ुश रखना चाहा, परन्तु वह जैसा चाहिये, ख़ुश न हुआ, और अपने लश्करमे लौट आया ता० ८ रबीउ़स्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल ९ = ई० ता० २ मार्च] को वज़ीर अब्दुल्लाहख़ां और महाराजा अजीतसिंह दोनो क़िलेमे आये और पाचवी तारीख़के मुताबिक़ फिर बन्दोबस्त किया; बादशाहसे दीवान ख़ास, ख़्वाबगाह व अ़दालत ख़ासकी कुंजिये लेलीं. यह ख़बर अमीरुल्उमराको मिली, तो वह उसी शानो शौकतसे फ़ौज लेकर आया, और क़िलेके पास शाइस्तहख़ांकी बारहदरीमे ठहरा अब्दुल्लाहख़ा व महाराजा अजीतसिंह बादशाहके पास गये, और आपसमे बहुत कुछ सख़्त सुस्त बहस हुई, जब बादशाहने बिल्कुल अपनेसे बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई देखी, तो जनाने महलोमे चला गया, सारी रात क़िलेके गिर्द फ़ौज बन्दी व गली कूचो और दर्वाज़ोपर बन्दोबस्त रहा

अब्दुल्लाहख़ां व महाराजा अजीतसिंह शाही महलोमें, और बादशाही आदमी बाहर पडे रहे ता० ९ रबीउस्सानी [वि० फाल्गुन् शुक्ल १० = ई० ता० ३ मार्च] को शहरमे कई अफ़्वाह उड रही थी बादशाहका श्वशुर सादातख़ां, दूसरा ग़ाज़ियुद्दीनख़ां ग़ालिबजंग और आग़रख़ां बहादुर तुर्कजंग, तीनो बादशाहकी मददको चले; निज़ामुल्मुल्क व समसामुद्दौलह अपने घरोमे बैठ रहे, एतिमादुद्दौलह हुसैनअलीख़ाकी मददको पहुचा दूसरी तरफ़से एतिक़ादख़ां, सय्यद सलाबतख़ां व मनोहर हज़ारी दो तीन हज़ार आदमीकी फ़ौज समेत बादशाहकी मददको आये चादनी चौकमे शाही मददगारोसे हुसैनअलीख़ाके मुलाज़िमोका मुक़ाबलह हुआ, लेकिन् पहिले ही मुक़ाबलेमे कई ज़ख़्मी हुए, और कुछ कुछ लड भिडकर बिखर गये. इस हुल्लड़से सादुल्लाहख़ाका चौक बाज़ार लुट गया. क़िलेके भीतर वज़ीर और महाराजाने चाहा, कि किसी तरह फ़र्रुख़सियर बाहर निकल आवे, पर वह न निकला; तब हुसैनअलीख़ाके इशारेसे उन दोनो सर्दारोंने नज्मुद्दीनअलीख़ां वज़ीरके

भाईको जनानेमे घुसनेका हुक्म दिया, वह कई पठान और चेलोके साथ बादशाही जनानखानहमे घुस गया, बेचारी बहुतसी लौंडियोने रोकना चाहा, लेकिन् ये लोग न रुके, और बादशाहको गिरिफ्तार करलिया, उसकी माता, और बेगमात व बेटीने बहुत कोशिश की, पर कुछ पेश न गई, बादशाहको किलेमे त्रिपोलियाके ऊपर एक तग मकानमे क़ैद कर दिया

(रफ़ीउश्शान)

इस कामसे निबटकर वज़ीर और महाराजाने हिज्री ११३१ ता० ९ रबीउस्सानी [वि० १७७५ फाल्गुन् शुक्ल १० = ई० १७१९ ता० ३ मार्च] पहर दिन चढे रफ़ीउश्शानके छोटे बेटे रफ़ीउद्दरजातको तख्तपर बिठाकर "शम्सुद्दीन अबुल्बरकात रफ़ीउद्दरजात" के ख़िताबसे प्रसिद्ध किया यह आलमगीरके बेटे अक्बरकी बेटीके पेटसे पैदा हुआ, और इस वक्त २० वर्षकी उम्रमे था इसके तख्त नशीन होतेही शहरका हुल्लड़ घटा, और वजीरने बन्दोबस्तके साथ किलेमे रहना इख्तियार किया महाराजा अजीतसिहकी बेटीके सिवाय फर्रुखसियरके कुटुम्ब और तरफदारोका माल अस्बाब सब ज़ब्तीमे आया अब्दुल्लाहखाने सब कारखानोपर अपने भरोसेके आदमी रख दिये फर्रुखसियरको कैदमे रखकर किसी तरहकी तक्लीफ न देना सैरुल्मुतअख्खिरीनमे लिखा है, लेकिन् तारीख मुजफ्फरशाहीका बनाने वाला मुहम्मदअलीखा अन्सारी अपनी किताबमे उसकी आखोमे सलाई फेरना, और तग मकानमे तस्मा खेचकर बडी तक्लीफके साथ मारना लिखता है, रॉबर्ट आर्म अपनी किताबकी पहिली जिल्दके २० पृष्ठमे, जो ई० १८६१ सन् मे चौथी बार मद्रासमे छपी है, लिखते है- कि "फर्रुखसियर पहिला मुग़ल बादशाह था, जिसका वालिद् बादशाह नहीं हुआ जिन लोगोने उसे बडे दरजेको पहुचाया था, उन्हीने अपनी हिफाजत ज़रूरी समझकर उसे तख्तसे उतारा, उसको कैद करने बाद बे फिक्र होकर उन्होने उसकी आखे निकलवा दीं; लेकिन् इस बातसे भी उनका खौफ या गुस्सह कम न हुआ, इसलिये उन्होने उसको बडी बे इजती और हिकारतके साथ १६ फेब्रुअरी सन् १७१९ ई० [वि० १७७५ फाल्गुन् कृष्ण ११ = हि० ११३१ ता० २५ रबीउल्अव्वल] को क़त्ल किया"

मुन्तखबुल्लुबाब, खानदानि आलमगीरी, मिरातिआफ्ताबनुमा वगैरह फ़ार्सी तवारीखोमे भी तक्लीफके साथ तस्मेसे फासी देकर मारना लिखा है, परन्तु सैरुल्मुतअख्खिरीन वाला खुद शीअह और सय्यद होनेके सबब कुछ कुछ सय्यदोकी बरिय्यत दिखलाकर दूसरी किताबोके हवालेसे अस्ली हाल भी दर्ज करता है

इस बादशाहके मरनेकी तारीख नहीं मिलती, सिर्फ टामस विलिअम बील साहिबने जो फार्सी ज़बानमें मिफ्ताहुत्तवारीख़ लिखी है, उसमें हिज्री ११३१ ता० १२ जमादियुस्सानी [वि० १७७६ वैशाख शुक्ल १३ = ई० १७१९ ता० २ मई] को इस बादशाहका मरना लिखा है इसकी एक लड़की, जिसका नाम बादशाह बेगम था, मुहम्मदशाहसे ब्याही गई, जिसको मलिकह ज़मानीका ख़िताब मिला था

महाराजा अजीतसिंह तो फ़र्रुख़सियरके क़ैद होने बाद अपनी बेटी इन्द्र-कुंवर बाईको लेकर जोधपुर चलेगये, और उस बेगमके ख़र्चके लिये अहमदाबादकी सूबहदारीसे बारह हज़ार रुपया सालानह मुक़र्रर होगया था, जहांके सूबहदार यही महाराजा थे रफ़ीउद्दरजातको सिलकी बीमारी पहिलेसे थी, जिससे वह इसी वर्ष याने हिज्री ११३१ ता० १२ रजब [वि० १७७६ ज्येष्ठशुक्ल १३ = ई० १७१९ ता० १ जून] शनिवारको तीन महीने और कुछ दिन बादशाहत करके मरगया.

—⊸✳⊷—

(रफ़ीउद्दौलह)

रफ़ीउश्शानके मन्शासे उसके बड़े भाई रफ़ीउद्दौलहको तख़्तपर बिठाया, जिसका पूरा नाम मिफ्ताहुत्तवारीख़में "शम्सुद्दीन रफ़ीउद्दौलह मुहम्मद शाहजहां सानी" लिखा है इसकी थोड़ीसी बादशाहतके समयमें लोगोंने आलमगीरके शाहज़ादे मुहम्मद अक्बरके बेटे नीकोसियरको आगरेमें तख़्तपर बिठा दिया, जो वहां क़ैद था; लेकिन् सय्यदोंने रफ़ीउद्दौलहको साथ लेकर नीकोसियरको क़ैद किया, और साथियोंको सज़ा दी परमेश्वरकी इच्छासे यह बादशाह भी इसी साल यानी हिज्री ११३१ ता० ७ ज़िल्क़ाद [वि० १७७६ अधिक आश्विन शुक्ल ८ = ई० १७१९ ता० २२ सेप्टेम्बर] को तीन महीने और कुछ दिन बादशाहत करके मरगया.

—⊸✳⊷—

(मुहम्मदशाह बादशाह)

आलमगीर बादशाहके पोते ख़ुजस्तह अख़्तर जहांशाहके बेटे रौशन अख़्तरको अब्दुल्लाहखांने तख़्तपर बिठाया. कहते हैं, कि रफ़ीउद्दौलहकी मौतको छुपाया था इससे तवारीख़ोंमें तारीख़का इख़्तिलाफ़ है ख़फ़ीख़ां लिखता है, कि रफ़ीउद्दौलहके मरनेसे एक हफ्ते बाद ता० ११ ज़िल्क़ाद [वि० अधिक आश्विन शुक्ल १२

= ई० ता० २८ सेप्टेम्बर] को मुहम्मदशाह फत्हपुरमे लायागया, और उसी महीनेकी ता० १५ [वि० अधिक आश्विन कृष्ण१ = ई० ता० ३० सेप्टेम्बर] को तख्तपर बिठाया गया, जिसका पूरा नाम "अबुल्मुजफ्फर नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह बादशाह गाजी" होकर सिक्कह व खुत्बह जारी किया गया इस बादशाहने अपने जुलूसका दिन वही रक्खा, जिस दिन कि फर्रुखसियर तख्तसे उतारा गया था कुल उह्दोपर जो सय्यदोके आदमी तईनात थे, वे बर्करार रहे

अब हम वह बात लिखते है, जो दोनो भाई सय्यदो और चीन किलीचखां निजामुल्मुल्कके बीच ना इत्तिफाकीका सबब हुई वज़ीर और अमीरुल्उमराने निजामुल्मुल्कका बादशाहके पास रहना ना मुनासिब जानकर सूबह मालवापर भेजदिया, और माडूके किलेदार मरहमतखासे किलेदारी तागीर करके ख्वाजह किलीचखा तूरानीको वहा भेजदिया, लेकिन् मरहमतखाने कब्जह नही होने दिया तब वजीरने निजामुल्मुल्क सूबहदार मालवाको लिखभेजा, कि अगले किलेदारको निकालकर ख्वाजह किलीचखाका कब्जह करादेवे, तब निजामुल्मुल्कने मरहमतखाको समझाकर अपने पास बुला लिया, और नये किलेदारने माडूपर कब्जह करलिया आमझराके राजा जयरूपसिंह (१) और उसके भाई जगरूपसिंहमे अदावत थी, जगरूपकी हिमायत करके जयरूपसिंहको विश्वासके साथ अपने पास बुलाया, और उसे मारडाला तब उसका बेटा लालसिंह छोटी उम्रका निजामुल्मुल्कके पास फर्यादी आया, उसने जगरूपको गिरिफ्तार करके लालसिंहको आमझरेपर बिठा दिया इसी तरह राणागढका किला शत्रुसाल बुंदेलेके बेटे जानचन्दने लेलिया, जो सिरोजके पास खालिसेका था, हुसैनअलीखाकी लिखावट और बादशाही हुक्मके पहुचनेसे निजामुल्मुल्कने मरहमतखाको फौज समेत भेजकर किला खाली करवा लिया इसी प्रकार निजामुल्मुल्कके पास खानगी रुक्के भी पहुचगये थे, जिनमे यह लिखा था, कि बादशाहको सय्यदोके पजेसे निकाले निजामुल्मुल्क और सय्यदोके आपसमे अदावत बढगई, तो हुसैनअलीखाने कोटाके महाराव भीमसिंहको बहुत कुछ लालच देकर अपनी तरफ मिला लिया महारावको सात हजारी जात व सवारका मन्सब खिल्अत और माही मरातिब दिलाया, नर्वरके राजा गजसिंह व दिलावरअलीखा वगैरह सर्दारोको १५००० सवारो समेत भीमसिंहके साथ देकर यह हुक्म दिया, कि बूदीमे सालिमसिंहको सजा देकर हमारे हुक्मकी राह देखना, क्योंकि दर पर्दा निजामुल्मुल्कपर तय्यारी थी इन लोगोने सालिमसिंहपर फत्ह पाकर हुसैनअलीखाको इत्तिला दी. निजामुल्मुल्कने

(१) तारीख मालवामे इसका नाम जसरूप लिखा है

दोस्तोकी लिखावट और बादशाहके इशारेसे दक्षिणकी तरफ कूच किया, और आसे-रके किले व बुर्हानपुरको अपने कब्जेमे करलिया

इसके बाद हुसैनअलीखाके इशारेसे महाराव भीमसिह और दिलावरअलीखा भी मालवाको चले, बुर्हानपुरसे सोलह सत्रह कोस रत्नपुरके करीब दोनो फौजोका मुकाबलह हुआ हिजी ११३२ ता० १३ शअबान [विक्रमी १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १४ = ई० १७२० ता० २१ जून] को इस लडाईमे दिलावरअलीखां, महाराव भीमसिह, राजा गजसिह कछवाहा वगैरह बडी बहादुरीके साथ चार पाच हजार आदमियो समेत मारे गये, जिसका मुफस्सल हाल कोटेकी तवारीखमे लिखा जायगा. निजामुल्मुल्कने फत्ह पाकर तोपखानह व कुल सामान लूट लिया यह खबर हुसैनअलीखां और अब्दुल्लाहखाके पास पहुची, तो उन्हे बहुत रज हुआ, लेकिन् अब तक सय्यदोके दिलपर जियादह खत्रह नहीं था, और आलम अलीखा औरगाबादसे तीस हजार सवार लेकर बुर्हानपुर आपहुचा था, दिलावरअलीखा, महाराव भीमसिंह, व राजा गजसिह वगैरहका हाल सुनकर उसके साथियोने वापस लौटनेकी सलाह दी; लेकिन् उस जवामर्दने यह बात मजूर नही की, और मुनासिब भी यही था, क्योंकि निजामुल्मुल्क एक फौजसे लडकर कम ताकत हो चुका था

निज़ामुल्मुल्क अपनी फ़ौज लेकर बुर्हानपुरसे पन्द्रह सोलह कोस पश्चिमको पूर्णा नदीपर मुकाबलहके इरादेसे जा ठहरा, और उसके पास ही हरताले तालाबपर आलमअलीखाने डेरा आ जमाया बर्सातके सबब दोनो लश्करोने चन्द रोज कियाम किया, लेकिन् निजामुल्मुल्क अपनी हिम्मतसे पन्द्रह सोलह कोस उस नदीको पायाब उतर गया, और बारिशकी जियादतीसे तक्लीफ पाता हुआ बालापुरके पास पहुचा आलमअलीखा भी साम्हने आया, परन्तु उसके साथ कई सर्दार निजामुल्मुल्कके तरफ्दार थे, और आधेके करीब मरहटोकी फ़ौज थी, जो राजा साहूने आलमअलीखाकी मददको भेजी थी हिज्री ११३२ ता० ६ शव्वाल [वि० १७७७ श्रावण शुक्ल ७ = ई० १७२० ता० १२ ऑगस्ट] को दोनो तरफसे मुकाबलह हुआ यह लडाई बडी तेजी और जोशके साथ हुई, जिसकी मुन्तखबुल्लुबाबमे खफीखाने बहुत कुछ कैफ़ियत लिखी है बाईस वर्षकी उम्रमे आलमअलीखा १७ या १८ दूसरे सर्दारो समेत नामवरीके साथ मारागया, और अमीनखां उमरखां, फिदाईखा, तुर्क ताजखां वगैरह निजामुल्मुल्कसे मिलगये, जो पेश्तरसे उन्हे चाहते थे, बाकी आदमी आलमअलीखाकी फौजवाले भाग गये निजामुल्मुल्कने फत्हयाबीके बाद सय्यदोकी फ़ौजका अस्बाब लूटकर फत्हका शादियानह बजवाया. यह खबर सुनकर दिल्लीमे शोर मचगया

हिज्री ११३२ ता० ९ जिल्काद [वि० १७७७ भाद्रपद शुक्ल १० = ई०

१७२० ता० १४ सेप्टेम्बर] को हुसैनअलीखाने बादशाह समेत आगरेसे दक्षिणकी तरफ़ कूच किया इस वक्त पचास हजार सवारकी भीड भाड साथ थी आगरेसे चार कोसपर पहुचने बाद अब्दुल्लाहखाको राजधानीकी तरफ भेज दिया, और बादशाही फौज फतहपुरसे पैंतीस कोस दक्षिणको मकाम तोरामे पहुची इसी सालकी ता० ६ जिल्हिज [वि० १७७७ आश्विन शुक्ल० ७ = ई० १७२० ता० १० ऑक्टोबर] को हुसैनअलीखा, मीर हैदरखा काशग़रीके हाथसे मारा गया, जिसका हाल खफीखाने इस तरहपर लिखा है –

एतिमादुद्दौलह मुहम्मद अमीनखा, सआदतखां, और मीर हैदरखां काशगरी, तीनोने बादशाहकी माके मन्शा और सलाहसे हुसैनअलीखाको मारडालनेका इरादह किया इस नातको यहा तक छिपा रक्खा, कि बादशाह भी बे खबर थे जब बादशाह अपने डेरोमे पहुचे, तो मुहम्मद अमीनखा जी घबरानेका बहाना करके हैदरकुलीखाके डेरेमे चला आया, और हुसैनअलीखां बादशाहको पहुचाकर अपने डेरेको जाता हुआ गुलाल बाडेके दर्वाजेपर पहुचा था, कि इसी अर्सेमे मीर हैदरखा काशगरी एक अर्जी लेकर गया, जिसमे मुहम्मद अमीनखांकी शिकायत लिखी थी, हुसैनअलीखा उसे पढने लगा, इतनेमे काशगरीने खन्जर निकालकर बडी फुर्ती और चालाकीसे हुसैनअलीखाके पहलूमे ऐसा मारा, कि उसका काम तमाम होगया मीर हैदर भी नूरुल्लाहखाके हाथसे उसी जगह मारागया नूरुल्लाहखां, जो हुसैनअलीखाका चचा जाद भाई था, उसे भी दूसरे मुगलोने मार डाला, और हुसैनअलीखाका सिर काटकर बादशाहके पास पहुचाया ख्वाजह मक्बूल, सक्के और भगियो तकने हुसैनअलीखाकी तरफसे बडी बहादुरीके साथ तलवार चलाकर जान दी इनके सिवाय दूसरे सिपाही भी बन्दूक और रामचगियां चलाने लगे, और हुसैनअलीखाका भान्जा इज्जतखा अपने डेरोमे यह खबर सुनने बाद चार पाच सौ सवारो समेत, जो उस वक्त मौजूद थे, हाथीपर सवार होकर बादशाहके डेरोकी तरफ चला इस तरह चारो तरफ़ गद्रकी सूरत देखकर हैदरकुलीखा एतिमादुद्दौलहके कहनेसे सआदतखा शाही डेरोमे गया और एतिमादुद्दौलह बादशाहको हाथीपर सवार कराके आप खवासीमे बैठने बाद थोडी ही जमइयत लेकर आगे बढा सय्यदोकी फौजके लोग इज़्ज़तखाके साथ बढते आते थे, लेकिन् मुहम्मदशाहको हाथीपर सवार देखकर हजारो बादशाही मुलाजिम इकठ्ठे होगये आखिरकार इज्जतखां लडकर मारा गया, हुसैनअलीखांके डेरे जलाकर उसका लश्कर व बाजार लूटलिया, जिस कद्र उसकी फ़ौजके लोग बाकी थे, भाग गये

खफ़ीखां लिखता है, कि "हुसैनअलीखांका नक्द और जिन्स, जो एक करोड़से जियादहका था, लुट गया, और जवाहिर व खजानह जो पीछे रहगया था, बादशाही जब्तीमें आया. नागौरके मुहकमसिंहको, जो हुसैनअलीखांका दोस्त था, हैदरकुलीखाने तसल्ली देकर बादशाहके पास बुला लिया, अस्ल और तरक्क़ीसे छ हज़ारी जात व सवारका मन्सब दिलाया. अब्दुल्लाहखांके दीवान रत्नचन्दको कैद किया, और उसका वकील राय शिरोमणिदास फकीर बनकर निकल भागा, जो अब्दुल्लाहखांके पास पहुंच गया. हुसैनअलीखां, इज्जतखां और नूरुल्लाहखांकी लाशें अजमेर भेजी गईं, जो शहरसे पूर्व ऊसरी दर्वाजेके बाहर हुसैनअलीखांके बापकी कब्रके पास दफ्न हुईं. इस वक्त उस जगह कब्रें नहीं हैं, बल्कि मक्बरेके दर बन्द करके पहिले गवर्मेंट कालिज बना था, अब उसमें साहिब लोग किरायेपर रहते हैं. यह हाल मुन्शी मुहम्मद अक्बरजहांकी किताब अह्सनुस्सियरमें दर्ज है.

एतिमादुद्दौलह मुहम्मद अमीनखांको आठ हज़ारी जात व सवार दो अस्पह सिह अस्पहका मन्सब, वज़ीर आज़मका उहदह 'वज़ीरुलममालिक ज़फ़रजंग' का खिताब और डेढ़ करोड़ दाम इन्आम मिले, समसामुद्दौलहको मीरबख्शीका उहदह, आठ हज़ारी मन्सब और अमीरुल् उमराका खिताब दियागया; एतिमादुद्दौलहका बेटा कमरुद्दीनखां दूसरे दरजेका बख्शी व गुस्लखानहका दारोगा हुआ; हैदरकुलीखांको छ हज़ारी ज़ात व सवार दो अस्पह सिह अस्पहका मन्सब, नासिरजंगका खिताब अता हुआ, सआदतखांको पांच हज़ारी जात व सवारका मन्सब, 'सआदतखां बहादुर' का खिताब और नक्कारह दियागया. इसी तरह सब लोगोंको इन्आम इक्राम देकर बादशाहने खुश किया.

अब्दुल्लाहखां यह खबर सुनकर फ़िक्रमन्द हुआ, लेकिन सब्रके साथ दिल्ली पहुंचगया, और हिजी ११३२ ता० ११ ज़िल्हिज [वि० १७७७ आश्विन शुक्ल १२ = ई० १७२० ता० १५ ऑक्टोबर] को रफ़ीउश्शानके बेटे सुल्तान इब्राहीमको तख्तपर बिठाकर "अबुल फतह ज़हीरुद्दीन, मुहम्मद इब्राहीम बादशाह" के लक़बसे मशहूर किया; उससे कई अमीरोंको खिताब, मन्सब और उहदे दिलाये. रिसालह फी सवार ८० रुपया माहवारकी तन्ख्वाहपर भरती करना शुरू किया, एक करोड़ रुपया राजा रत्नचन्दके खजाने समेत फ़ौज बन्दीकी तय्यारीमें खर्च हुआ, लेकिन बहुतसे लोग अब्दुल्लाहखांसे दिली नफरत रखते थे, और अक्सर लोग एक महीनेकी

पेशगी तन्स्वाह लेकर चलदेते थे. इसी सालमे ता० १७ जिल्हिज [वि० कार्तिक कृष्ण ३ = ई० ता० २१ ऑक्टोबर] को अब्दुल्लाहखाने इब्राहीमशाहके साथ शहरसे बाहर ईदगाहके पास डेरा किया; और दिल्लीकी सभालके लिये अपने भतीजे नजाबतअलीखाको गुलामअलीखा समेत छोडा इब्राहीमशाहके साथ हर मन्जिलमे बारहके सय्यद और बडे बडे पठान सर्दार अपने अपने गिरोह समेत शामिल होते जाते थे हिज्री ११३३ ता० १० मुहर्रम [वि० १७७७ कार्तिक शुक्ल ११ = ई० १७२० ता० १२ नोवेम्बर] को सुल्तान इब्राहीमके साथ नव्वे हजारसे जियादह सवार इकठे होगये थे यह बात खफीखाने सय्यद अब्दुल्लाहखाकी जबानी व दफ्तरसे तहकीक करके लिखी है चूडामणि जाट व मुहकमसिह (१) और आस पासके जमींदारोकी जमइयत इसके सिवा थी सब मिलाकर एक लाख सवारसे जियादहका तख्मीनह किया गया

मुहम्मदशाहकी फौजमे भी दुरुस्ती हो रही थी, और आंबेरके राजा धिराज सवाई जयसिह व लाहौरके सूबहदार सैफुद्दौलह दिलेरजगकी भी राह देखीजाती थी, लेकिन् ये लोग दूर होनेके सबब शामिल न होसके, राजा धिराजकी तरफसे तीन चार हजार सवारोकी जमइयत बादशाही लश्करमे आ मिली, और बाज बाज दूसरे सर्दार भी आगये, लेकिन् सुल्तान इब्राहीमकी फौजके आगे मुहम्मदशाहकी फौज आधी भी न थी, जिसमे भी मुहकमसिह वगैरह सर्दार सय्यदोसे मिलावट रखते थे. मुहम्मदशाहने हैदरकुलीखाको हरावल व तोपखानहका अफ्सर बनाया; सआदतखां बहादुर व मुहम्मदखा बंगशको दाहिनी तरफका इख्तियार दिया, समसामुद्दौलह व नुस्रतयारखा व साबितखा वगैरहको बाई तरफ रक्खा. आजमखा वगैरहको मददगार फौजका अफ्सर बनाया, वजीर आजम वगैरहको अपने साथ रक्खा, मीर जुम्लह, मीर इनायतुल्लाहखां, जफरखां, इस्लामखां, राजा गोपालसिह भदौरिया और राजा बहादुर वगैरहको बहीर (डेरो) की हिफाजतके लिये मुकर्रर किया, असदअलीखा, सैफुल्लाहखा, महामिदखा, अमीनुद्दीनखा, व राजा धिराज सवाई जयसिहकी फौज वगैरहको जुरुन्गार बुरुन्गारकी मदद और जनानखानेकी हिफाजतके लिये तईनात किया

फौजकी तर्तीब होने बाद इसी सालकी ता० १३ मुहर्रम [वि० कार्तिक

---

(१) चूडामणि जाट खुद आया, और मुहकमसिह मुहम्मदशाहके साथ था, उसकी जमइयत यहा आ मिली

शुक्ल १४ = ई० ता० १५ नोवेम्बर] की रातको नागोरवाला मुह्कमसिंह, खुदादादखां और खाने मिर्जा सात आठ सौ सवारो समेत बादशाही लश्करमेंसे अब्दुल्लाहखांके पास चले गये दूसरे दिन सुब्ह होतेही बादशाह लडाईके लिये हाथीपर सवार हुए, और उसी वक्त अब्दुल्लाहखाके दीवान रत्नचन्दका सिर काटा गया, जो मुहम्मदशाहकी फौजमे कैद था हसनपुरके पास दो पहरके वक्त दोनो फौजोका मुकाबलह हुआ, तोप, बन्दूक और बानोसे ऐसी बहादुराना लडाई हुई, कि दोनो तरफके सूर बीरोने अपनी मुराद पूरी करनेका मौका पाया; लडते लडते ता० १४ की रात होगई, लेकिन् चन्द्रकी चादनीमे दिनके मानिन्द तरफैनके बहादुर लडते रहे मुहम्मदशाहकी तरफसे हैदरकुलीखाने तोपखानहसे ऐसे गोले बर्साये कि अब्दुल्लाहखाकी फौजमे खलल आगया, और बहुतसे आदमी जान लेकर भागे पिछली रात तक एक लाख सवारमेसे कुल सत्तरह अठारह हजार सवार अब्दुल्लाहखाके साथ बाकी रहगये, और सूर्य निकलने तक नागौर वाला मुहकमसिंह भी भाग गया हिज्री ता० १४ मुहर्रम (१) [वि० कार्तिक शुक्ल १५ = ई० ता० १६ नोवेम्बर] की प्रभातको मुहम्मदशाहने हमलह करनेका हुक्म दिया, और अब्दुल्लाहखाका भाई नज्मुद्दीनअलीखा अपने साथियो समेत आगे बढ़ा, इस वक्त बाकी बचेहुए बहादुर खूब दिल खोलकर लडे, और अब्दुल्लाहखाकी फौजके सर्दार शहामतखा, फत्हयारखा, तहव्वुरअलीखा, अब्दुलकदीरखा, अब्दुलगनीखा, मुहयुद्दीनखा, सिब्गतुल्लाहखा वगैरह बहादुरीके साथ मारे गये बादशाही लश्करमेसे दर्वेशअलीखा, अब्दुन्नबीखा, मयाराम मुन्शी और मुहम्मद जाफर वगैरह काम आये आखिरकार नज्मुद्दीनअलीखा बहुत जख्मी हुआ, जिसकी मददको हाथीपर सवार होकर सय्यद अब्दुल्लाहखा पहुचा, चूडामणि जाटने डेरोकी तरफ कई हमले किये, फिर वह भी अब्दुल्लाहखाकी मददको आगया, और खास बादशाहसे मुकाबलह हुआ इस हमलहसे बादशाही फौजके पैर उखडा चाहते थे, लेकिन् हैदरकुलीखा, सआदतखा और मुहम्मदखां वगैरह मददको पहुच गये, सख्त लडाई होनेपर सय्यद अब्दुल्लाहखा हाथीसे उतरा, उस वक्त उसके साथ सिर्फ दो तीन हजार सवार बाकी रहे थे, वह भी उसे हाथीपर न देख कर भाग निकले अब्दुल्लाहखाको हैदरकुलीखाने गिरिफ्तार करलिया, और रिसालेका बख्शी सय्यदअलीखा भी पकडा गया, बाकी बहुतसे अफ्सर बादशाही फौजमे आमिले, सुल्तान इब्राहीम भी पकडे आये

हिज्री ११३३ ता० १४ मुहर्रम [वि० १७७७ कार्तिक शुक्ल १५ = ई० १७२०

---

(१) हिज्री सन्के हिसाबमे तारीख शामसे शुरू होती है

ता० १६ नोवेम्बर] की शामको मुहम्मदशाहकी फ़ौजमे फ़त्हके शादियाने बजगये, और तोपखानह व अस्बाब वगैरह सब बादशाही जब्तीमे आया, इनायतुल्लाहखाको दिल्ली भेजकर सय्यदोके खजाने व अस्बाब वगैरहका बन्दोबस्त करादिया हिज्री ता० १६ मुहर्रम [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण २ = ई० ता० १८ नोवेम्बर] को कूच दर कूच बादशाह भी दिल्लीके क़रीब पहुचे, और सबको कारगुजारीके मुवाफिक मन्सब, इन्ऋाम व इक्राम दिया हिज्री ता० २२ मुहर्रम [वि० मार्गशीर्ष कृष्ण ८ = ई० ता० २४ नोवेम्बर] को बादशाह किलेमे दाखिल हुए हिज्री शुरू सफ़र [वि० मार्गशीर्ष शुक्ल २ = ई० ता० १ डिसेम्बर] मे राजाधिराज जयसिह आबेरसे, और दयाबहादुरका बेटा राजा गिरधर नागर ब्राह्मण अवधसे बादशाही दर्बारमे हाजिर हुए, राजा धिराजकी अर्जसे कह्त वगैरहकी तक्लीफके सबब जिज्यह मुआफ़ होगया सम्सामुद्दौलह कमरुद्दीनखा और हैदरकुलीखाको जोधपुरके महाराजा अजीतसिहपर चढाईके लिये तय्यार किया, लेकिन् खजानेकी कमीके सबब सम्सामुद्दौलहने इस चढाईको बन्द रक्खा दक्षिणसे निजामुल्मुल्कके आनेकी खबर सुनकर महाराजा अजीतसिहने अहमदाबादकी सूबहदारीका इस्तिऋफा भेजकर ताबेदारीका इक्रार करलिया, सिर्फ अजमेर अपने क़ब्ज़ेमे रखना चाहा, अहमदाबादकी सूबहदारी हैदरकुलीखाको मिली

हिज्री ११३४ ता० २२ रबीउस्सानी [वि० १७७८ फाल्गुन् कृष्ण ८ = ई० १७२२ ता० ९ फ़ेब्रुअरी] को निजामुल्मुल्क बादशाही हुजूरमे दिल्ली आया; और ता० ५ जमादियुल्अव्वल [वि० फाल्गुन् शुक्ल ६ = ई० ता० २२ फेब्रुअरी] को विजारतका उहदह, जडाऊ कलम्दान, हीरेकी अगूठी, खिल्ऋत व खजर बादशाहकी तरफसे पाया इस वजीरने बादशाहतका अच्छा इन्तिजाम करना चाहा, लेकिन् बदमऋाश लोग बादशाहके मुँह लग रहे थे, जिससे उसका कुछ बस न चला इस खराब हालतको देखकर हैदरकुलीखा अहमदाबादकी सूबहदारीपर चला गया हिज्री ११३४ ता० ३० जिल्हिज [वि० १७७९ आश्विन शुक्ल १ = ई० १७२२ ता० १२ ऑक्टोबर] को सय्यद अब्दुल्लाहखा मरगया, जिसे जहर दिया जाना भी लिखा है अब वजीर निज़ामुल्मुल्कसे भी चुगलखोर लोगोने बादशाहको बहकाया; जो कोई नेक बात वजीर कहता, उसको उलटी बताते ऐसी हालत देखकर निजामुल्मुल्क शिकारके बहानेसे निकला, और गगाके किनारे सोरम तक पहुचा, कि दक्षिणसे खबर मिली, कि मरहटे मालवा और गुजरात तक लूटमार करने लगे तब वज़ीर अर्ज़ीके जरीएसे बादशाहसे रुख़्सत

लेकर दक्षिणको चला, जिसकी रवानगी सुनकर मरहटे नर्बदासे वापस दक्षिणको चलेगये, लेकिन् इसी अर्सेमे बादशाहने मुहम्मद अमीनखांके बेटे कमरुद्दीनखाको विजारतका उहदह देदिया ऐसी खराब खबरे सुनकर निजामुल्मुल्क, जो बादशाहके पास आनेका इरादह रखता था, बेदिल होकर दक्षिणको चलागया; और हिज्री ११३६ ता० आखिर रमज़ान [वि० १७८१ आषाढ शुक्ल १ = ई० १७२४ ता० २३ जून] को औरगाबाद पहुचा

बादशाहने मुबारिजखा इमादुल्मुल्कको लिख भेजा, कि तुम निजामुल्मुल्कको मार डालोगे, तो सारे दक्षिणकी सूबहदारी तुमको मिलेगी, जिससे वह निजामुल्मुल्कका दुश्मन होगया निजामुल्मुल्कने बहुतेरा समझाया, लेकिन् उसने न माना; हैदराबादसे मुबारिजखा औरगाबादकी तरफ रवानह हुआ, और निजामुल्मुल्क भी मुकाबलह को चला, बरारके इलाकहमे सक्करखेडेके पास, जो औरगाबादसे चालीस कोस है, हिज्री ११३७ ता० २३ मुहर्रम [वि० १७८१ कार्तिक कृष्ण ८ = ई० १७२४ ता० १२ ऑक्टोबर] को दोनोका मुकाबलह हुआ, लडाई होनेके बाद मुबारिजखा कई सर्दारो व अपने दो बेटो समेत मारागया, और दो बेटे व कई सर्दार जख्मी होकर गिरिफ्तार हुए निजामुल्मुल्क औरगाबाद आया, और मुबारिजखाका बेटा ख्वाजह अहमद, जो हैदराबादमे अपने बापका नाइब था, उसने मुहम्मदनगरके किलेपर कब्जह किया निजामुल्मुल्क औरगाबादसे चलकर हिज्री ११३७ ता० ३० रबीउस्सानी [वि० १७८१ माघ शुक्ल १ = ई० १७२५ ता० १६ जैन्युअरी] को हैदराबाद पहुचा यह सुनकर ख्वाजह अहमदखांने बहुतसी भीड इकट्ठी करली, लेकिन् निजामुल्मुल्कने रसाईसे किलेपर कब्जह करलिया, और अन्वरुद्दीनखांको हैदराबादका सूबहदार बनाया गरज़ कि दक्षिणका बहुत उम्दह बन्दोबस्त करलिया, जिससे मुहम्मदशाहने भी निजामुल्मुल्कके लिये 'आसिफजाह' का खिताब मए हाथी व जवाहिरके भेजा, लेकिन् कुछ दिनोके बाद मुहम्मदशाहने गुजरातका सूबह निजामुल्मुल्कसे उतारना चाहा, क्योंकि उसका चचा हामिदखा अहमदाबादका नाइब सूबहदार मरहटोसे मिलकर अक्सर फसाद उठाया करता था इस कामपर मुबारिजुल्मुल्क सर्बलन्दखाको मुकर्रर किया, जो पहिले काबुलका सूबहदार और सय्यदोका तरफदार था एक करोड रुपया खर्चके लिये देकर हिज्री जिल्हिज [वि० १७८२ भाद्रपद = ई० सेप्टेम्बर] मे सर्बलन्दखाको रवानह किया, जिसे हिज्री ११४३ ता० ८ रबीउस्सानी [वि० १७८७ आश्विन शुक्ल १० = ई० १७३० ता० २२ ऑक्टोबर] को जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने लडाई करके अहमदाबादसे निकाला, क्योंकि जब जोधपुरके महाराजा अजीतसिंह अपने छोटे बेटे बख़्तसिंहके हाथसे मारेगये, तो

अहमदाबादकी सूबहदारी हैदरकुलीखा, निजामुल्मुल्क और उसके बाद सर्बलन्दखाको मिली थी; इस वक्त उक्त महाराजाके बडे बेटे महाराजा अभयसिहको फिर वही सूबहदारी मिली; लेकिन् सर्बलन्दखाने कब्जह नही होने दिया, जिससे लडाई हुई इसका जिक्र महाराणा दूसरे अमरसिहके प्रकरण जोधपुरकी तवारीखमे लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ८४४ व ४५)

जब सर्बलन्दखां आगरे पहुचा, तो बादशाहकी तरफसे गुर्ज बर्दारोने जाकर उसे रोका, यह कार्रवाई वजीर आसिफजाहकी तरफसे हुई थी, लेकिन् बादशाह सर्बलन्दखांको चाहते थे इसी सबबसे आसिफजाहने मरहटोके सर्दार बाजीराव पेश्वाको उभारा, जिसने राजा गिरधर बहादुर, सूबहदार मालवा, व राजा अभयसिह सूबहदार गुजरातपर हमले किये इन मुलाज़िमोकी अदावतसे मुगलोकी सल्तनत बर्बाद होने लगी हिज्री ११४८ [वि० १७९२ = ई० १७३६] में मालवेकी सूबहदारी बादशाहकी तरफसे बाजीराव पेश्वाके नामपर होगई, जिससे लुटेरे मुल्कके मालिक होगये, और गुजरात भी मरहटोने महाराजा अभयसिंहसे छीन लिया, फिर यहा तक बढे, कि इलाहाबाद व आगरेके ज़िलेकी फौजदारीमे भी दख्ल देनेलगे, और गवालियर व अजमेर कब्जहमे करलिया बुन्देलोने मरहटोकी हिमायतके लिये उनको अपने मुल्कमे बुला लिया, और बडे बडे मुसाहिब 'दौलह' व 'जग' का खिताब रखने वाले मरहटोसे सुलह चाहते थे, अल्बत्तह सआदतखा बुर्हानुल्मुल्क सूबहदार अवधने मुकाबलह करके मलहार रावको हिज्री ११४९ ता० २२ ज़िल्काद [वि० १७९३ चैत्र कृष्ण ७ = ई० १७३६ ता० २२ मार्च] मे शिकस्त दी. ये मलहार राव भदावरके राजाको बर्बाद कर रहा था, जो सआदतखाके हिमायतियोमेसे था सैरुल्मुतअख्खिरीनका बयान है, कि इस लडाईमे मलहार राव भी सख्त जख्मी हुआ था

बाजीराव दिल्लीके पास पहुचा, और लूट खसोट की, जब फौजे दौड धूप करके दिल्ली आई, उसने लौटकर रेवाडी और पाटौदीकी तरफ लूट मचाई, फिर दक्षिणकी तरफ चला गया तब बादशाहने अमीरुल् उमराकी सलाहसे मरहटोको चौथ देना कुबूल करलिया, और इन बातोसे लाचार होकर बादशाहने बहुत बडे बडे खिताब देकर निजामुल्मुल्कको दक्षिणसे बुलाया, वह हिज्री ११५० ता० १६ रबीउल्अव्वल [वि० १७९४ श्रावण कृष्ण २ = ई० १७३७ ता० १५ जुलाई] को बादशाही हुजूरमे दिल्ली पहुचा, बादशाहने आगरेकी सूबहदारी राजा धिराज जयसिहसे व मालवाकी बाजी रावसे उतारकर आसिफजाह निजामुल्मुल्कके बेटे गाजियुद्दीनखांके नामपर लिख दी, और इसी कारण निजामुल्मुल्क पेश्वासे लडाई करनेके इरादेपर

भूपालके पास पहुचा, लेकिन् नादिरशाहकी हिन्दुस्तानपर चढाई सुनकर उसने पेशवासे सुलह करली, और दिल्ली चला आया अब हम नादिरशाहके हिन्दुस्तानमे आनेका हाल शुरू करते है -

नादिरशाहका हमलह

नादिरशाह हिज्री ११०० ता० २८ मुहर्रम [वि० १७४५ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ = ई० १६८८ ता० २३ नोवेम्बर] शनिवारको मुल्क ईरानमे तूस शहरसे बीस कोसके फासिलेपर दस्तजर्द किलेमे इमामकुलीबेगसे पैदा हुआ था, जिसका जन्म नाम नादिरकुलीबेग पडा, और वह कौम तुर्कमान व खानदान अफ्शारमे था वह जवानीमे ईरानके सफवी बादशाहोका इज्जतदार मुलाजिम और सिपहसालार होगया. ईरानकी यह हालत थी, कि कन्धारसे इस्फहान तक पठान गलजई, हिरातमे अब्दाली, शिर्वानातमे लकजई और खास फारिसमे सफवी मिर्जा, किर्मानमे सय्यद अहमद, बिलोचिस्तान व बन्दरोमे सुल्तान मुहम्मद, जानकीमे अब्बास, गीलानमे इस्माईल, खुरासानमे मलिक महमूद सीस्तानी, आजर बायजान वगैरहमे रूमी, दरबन्दसे माजिन्दरान तक रूसी और अस्तराबादमे तुर्कमान मुख्तार बनगये थे, लेकिन् नादिरशाहने इन सबको शिकस्त देकर मुल्कपर कब्जह करलिया वह हिज्री ११४८ ता० २४ शव्वाल [वि० १७९२ चैत्र कृष्ण १० = ई० १७३६ ता० ७ मार्च] वृहस्पतिवार को सफवी बादशाह तहमास्प सानीको कैद करके आप ईरानके तख्तपर बैठगया, और नादिरशाहके खिताबसे मश्हूर हुआ उसने रूम व तूरान वगैरह मुल्कोपर भी दबाव डाला

हिन्दुस्तानपर नादिरशाहकी चढाईकी बुन्याद इस तरह पडी, कि जब इस्फहानपर पठान काबिज होगये, तो उन्हे नादिरने मार पीटकर निकाल दिया, और अलीमर्दानखां शामलूको ईरानसे हिन्दुस्तानमे भेजकर बादशाह मुहम्मदशाहको लिख भेजा, कि हमारे इलाकोसे बागी लोग भागकर जावे, तो काबुल वगैरह आपके सूबोमे उन्हे पनाह न मिलनी चाहिये इसका जवाब मुहम्मदशाहने मिठासके साथ लिख दिया, लेकिन् उस वक्त खास दिल्लीके गिर्दनवाहका बन्दोबस्त ही ठीक नहीं था, काबुलकी खबरदारी कब मुम्किन थी. तब ईरानसे नादिरशाहने मुहम्मदअलीखां नामी दूसरा एल्ची भेजा, और यह लिखा, कि कन्धार, जो हमारे कब्ज़ेमे है, वहाके बाग़ी पठानोको अपने इलाकहमे न आने देवे. इसका भी यहासे सर्सरी जवाब गया, कि हमने बन्दोबस्त करवा दिया है दोनो कागज नादिरशाहने अपनी सिपाहसालारीके वक्त भजे थे. तीसरी बार उसने ईरानका बादशाह बनने बाद हिज्री ११५० ता०

११ मुहर्रम [वि० १७९४ वैशाख शुक्ल १२ = ई० १७३७ ता० १२ मई] मे मुहम्मदखा तुर्कमानको एल्ची बनाकर मुहम्मदशाहके पास भेजा, और दो काग़ज, एक मुहम्मदशाहके, दूसरा बुर्हानुल्मुल्क सआदतखाके नाम पहिले लिखेहुए मज़्मूनके मुवाफिक रवानह किये हिन्दुस्तानका यह हाल था, कि एल्चीको लुटेरोने रास्तेमे ही लूट लिया, वह बेचारा बड़ी मुश्किलसे कागज लेकर मुहम्मदशाहके पास पहुचा, लेकिन् उसे बेपर्वाईसे जवाब ही नही मिला तब नादिरशाहने कन्धारमे आकर अपने एल्चीके नाम फर्मान लिखा, कि तुम जिस कामके लिये गये थे, उसका क्या बन्दोबस्त हुआ, और अब तुम जल्दी यहा चले आओ

कन्धारमे नादिरशाह बहुत दिनो तक खतका इन्तिज़ार करता रहा, जब दिल्लीसे कुछ जवाब न मिला, और एल्ची खाली लौट कर गया, तो हिज्री ११५१ ता० १ सफर [वि० १७९५ ज्येष्ठ शुक्ल २ = ई० १७३८ ता० २१ मई] को वह कन्धारसे रवानह होकर गजनी और काबुलकी तरफ गया, हिज्री ता० २२ सफ़र [वि० आषाढ कृष्ण ८ = ई० ता० ११ जून] को गजनी, और हिज्री ता० १२ रबीउल्अव्वल [वि० आषाढ शुक्ल १३ = ई० ता० १ जुलाई] को काबुल उसने अपने क़ब्जेमे करलिया उसी जगह मुहम्मदखां एल्चीकी अर्ज़ी पहुची, कि बादशाहकी तरफ़से न हमको जवाब मिलता है, न रुख्सत ! यह पढकर एक अहदी चापारीके हाथ ता० २६ रबीउल्अव्वल [वि० श्रावण कृष्ण १२ = ई० ता० १५ जुलाई] को मुहम्मदशाहके नाम फिर एक कागज़ लिख भेजा, जिसमे बहुत दोस्तीके लफ्ज़ और सिर्फ पठानोको सजा देनेका मत्लब था, लेकिन् वह बेचारा कासिद अफ्गानिस्तानकी हदसे भी बाहर न निकला था, कि मारा गया. तब हिज्री ता० रबीउस्सानी [वि० श्रावण = ई० ता० जुलाई] को बादशाह काबुलसे आगे चला, हिज्री ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० अधिक आश्विन शुक्ल ४ = ई० ता० १८ सेप्टेम्बर] को जलालाबादपर काबिज हुआ. वहां पहुचने बाद उसने अपने शाहज़ादह रजाकुलीको बल्खसे बुलाकर हिज्री ता० ३ शअ्बान [वि० कार्तिक शुक्ल ४ = ई० ता० १७ नोवेम्बर] को ईरान भेजदिया, ताकि वहाका मुल्क खाली न रहे दूसरे छोटे बेटे नस्रुल्लाहको अपने साथ रक्खा. काबुलके सूबहदार नासिरखांने, जो पिशावरमे रहता था, बीस हज़ार पठानोंको जमा करके खैबरका घाटा रोक लिया, लेकिन् नादिरशाह हिज्री ता० १३ शअ्बान [वि० कार्तिक शुक्ल १४ = ई० ता० २७ नोवेम्बर] को दूसरे रास्ते होकर नासिरखाके पास आपहुचा, और मुकाबलहमे उसे गिरिफ्तार करने बाद हिज्री ता० १५ रमजान [वि० पौष कृष्ण १ = ई० ता० २८ डिसेम्बर] को पिशावरसे दिल्लीकी तरफ़ रवानह

हुआ, वह अटकपर किश्तियोंका पुल बांधकर उतर आया जब वह लाहौरके शालामार बागमें पहुंचा, तो दूसरे दिन वहांका सूबहदार ज़करियाखां बीस लाख रुपये व कई हाथी लेकर हाज़िर हुआ (१), नादिरशाहने पेश्कश लेने बाद खिल्अत वगैरह देकर उसे सूबहदारीपर बहाल रक्खा यह सूबहदार मुहम्मदशाहके वज़ीर कमरुद्दीनखांका बहिनोई और अब्दुस्समदखां दिलेरजंगका बेटा था फ़ख़रुद्दौलहखां कश्मीरका नाज़िम, जिसे कश्मीरियोंने निकालदिया था, और लाहौरमें रहता था, वह नादिरशाहके पास गया; उसे भी कश्मीरका सूबह मिलगया, और नासिरखां काबुलका सूबहदार, जो नादिरशाहके साथ कैदमें था, लाहौरसे काबुल व पिशावरकी सूबहदारीपर भेज दिया गया. इस दरजह तक नौबत पहुंचने पर भी मुहम्मदशाहको कुछ खबर नहीं थी सैरुलमुतअख्खिरीन वाला लिखता है, कि किसीने नादिरशाहके काबुल वगैरहमें आजानेका ज़िक्र हुज़ूरमें किया, तो हाज़िर रहने वाले लोगोंने उसे ठठ्ठेमें उड़ादिया, और कह दिया, कि तूरानी निज़ामुल्मुल्क वगैरह अपना बड़प्पन दिखलानेको शैखिया मारते हैं

जब नादिरशाहकी ज़ियादह अफ्वाह सुनीगई, तो मुहम्मदशाह फ़ौज समेत दिल्ली से रवानह होकर दो महीनेमें कर्नाल पहुंचा, जो दिल्लीसे सिर्फ़ चार मन्ज़िल था सम्सा-मुद्दौलह खानिदौरांने राजाधिराज जयसिंह वगैरहको बहुत कुछ लिखा, पर कोई न आया मुहम्मदशाह यहां तक गाफ़िल थे, कि नादिरशाह करीब आ गया, और हिन्दुस्तानी घसकटे ज़ख्मी होकर फ़र्यादी आये, तब यकीन हुआ, कि वह आपहुंचा है अब हम नादिरशाहका ज़िक्र 'जहां कुशाय नादिरी' से लिखते हैं -

नादिरशाहने फिर मुहम्मदशाहके नाम दोस्ती और नर्मीसे लिखभेजा, कि ये पठान लोग हमारे मुल्क ईरानको ही तक्लीफ़ नहीं देते, बल्कि इन्होंने हिन्दुस्तानमें भी पूरी अब्तरी डाल रक्खी है, और हम इन्हें सज़ा देनेके सिवाय कोई दूसरी बात नहीं चाहते इसीलिये पहिले जो एल्ची भेजे, उनपर भी आपने हमारे आखिरी एल्ची मुहम्मदखांको रुख्सत न दी, और न जवाब दिया, तो जिन लोगोंको हमने सज़ा देना चाहा है, उन्हें सज़ा देने बाद हम आपकी सुफ़ारिशको मन्ज़ूर करेंगे यह खत रवानह करके उसने हिज्री ११५१ ता० २६ शव्वाल [वि० १७९५ माघ कृष्ण ११ = ई० १७३९ ता० ५ फेब्रुअरी] को लाहौरसे कूच किया; और हिज्री ११५१ ता० ७ ज़िल्काद [वि० १७९५ माघ शुक्ल ८ = ई० १७३९ ता० १७ फेब्रुअरी] को सहिन्दमें पहुंचा वह हिज्री ता०

---

(१) सैरुलमुतअख्खिरीनमें लिखा है, कि ज़करियाखांने पहिले कुछ मुक़ाबलह किया, फिर पेश्कश देकर ताबेदारी कुबूल की.

९ को अम्बालेमे अपना सब खटला छोडकर फतुहअलीखा अफ्शारको हिफाजतके लिये मुकर्रर करने बाद हिज्री ता० १० को फौज समेत पन्द्रह कोस शाहाबादमे दाखिल हुआ उसकी फौजका अगला हिस्सह, जिसे करावुल बोलते है, उसी रातको मुहम्मदशाहकी फ़ौजके इर्द गिर्द आपहुचा, और उसने ता० ११ मे कई आदमियोको नादिरशाहके पास पकडकर भेजदिया करावुल अजीमाबादमे ठहरा, जो कर्नालसे छः कोसपर है हिज्री ता० १३ को नादिरशाह अजीमाबादमे आगया, और १४ तारीखको उसने मुहम्मदशाहकी फौजके मुकाबिल तीन कोसके फासिले पर अपना लश्कर ला जमाया. वह आप घोडेपर सवार होकर मुहम्मदशाहके लश्करको अपनी आखसे देख आया.

जब नादिरशाहको खबर मिली, कि अवधका सूबहदार बुर्हानुल्मुल्क सआदतखां तीस हजार फौज लेकर मुहम्मदशाहकी मददको आया है, तो उसने उसके मुकाबलेके लिये एक गिरोह मुकर्रर करदिया, लेकिन् सआदतखां दूसरे रास्तेसे मुहम्मदशाहके पास जापहुचा, और नादिरशाह उस जगहसे कूच करके मुहम्मदशाहकी फौजसे पूर्व तरफ़ डेढ कोसके फासिलेपर आजमा अब हम दिल्लीवालोका हाल सैरुल मुतअख्खिरीन वगैरह किताबोसे यहा दर्ज करते है, क्यो कि जहा कुशाय नादिरीका मुसन्निफ मुन्शी मिर्जा मुहम्मद महदी अपने बादशाहके बडप्पनकी बातोको लिखकर मुहम्मदशाहके सर्दारोकी ना इत्तिफाकीका हाल जानकारी या अजानकारीसे छोड गया है, लेकिन् महीना व तारीख हम उसी किताबसे दर्ज करेंगे

मुहम्मदशाह, सआदतखा बुर्हानुल्मुल्कके आनेका इन्तिज़ार देख रहा था, कि हिज्री ११५१ ता० १५ ज़िल्काद [वि० १७९५ फाल्गुन् कृष्ण १ = ई० १७३९ ता० २५ फेब्रुअरी] को उसके आनेकी खबर मिली, और खानदौरा अमीरुल्उमरा आध कोस पेशवाई करके लेआया बादशाहने उसीके पास अपने डेरे जमानेका हुक्म दिया; इसी वक्त बुर्हानुल्मुल्कने सुना, कि जो डेरे आते थे, उनको नादिरशाहकी फ़ौज लूट रही है वह इस गैरतसे उसी दम मददको चढ दौडा, निज़ामुल्मुल्क वगैरह सर्दारो और बादशाहके मना करनेपर भी वह चलदिया, और पीछेसे खानदौरा भी उसकी मददको पहुचा नादिरशाह भी तय्यार हुआ, करीब दो घटेके लडाई रही, अन्तमे कुल फौज बुर्हानुल्मुल्क व खानदौराकी बर्बाद होकर खुद अमीरुल्उमरा खानदौरा सख्त जख्मी हुआ, और डेरेपर आकर मरगया, मुजफ्फरखा उसका भाई व उसका बडा बेटा अलीअहमदखा, शाहजादखा, यादगारखा, मिर्जा आकिलबेग वगैरह अक्सर सर्दार मारे गये अमीरुल्उमरा खानदौरा जाकन्दनीकी हालतमे डेरोपर लायागया था, उस वक्त उसने आख खोलकर मुहम्मदशाहको कहलाया, कि

नादिरशाहको दिल्ली न लेजाना, और बादशाहसे मुलाक़ात भी न कराना, जैसे होसके, इस बलाको वापस लौटा देना यह कहकर वह मरगया बुर्हानुल्मुल्क कैद होकर नादिरशाहके पास लाया गया, और शाम होजानेसे लडाई बन्द होगई नादिरशाह डेरोंमे पहुचा, तो बुर्हानुल्मुल्कने दो करोड रुपया देना कुबूल करके उसे ईरानको लौट जानेपर राजी करलिया इस खुश खबरीका रुक़ा बादशाह और निज़ामुल्मुल्कके नाम लिखा, जिसे देखते ही ये बहुत खुश हुए, और मुहम्मदशाहने आसिफजाह निज़ामुल्मुल्कको नादिरशाहके पास भेजकर दो करोड रुपयेका पक्का इक्रार करलिया, आसिफजाह वापस आया, तो मुहम्मदशाहने खुश होकर उसे अमीरुल्उमराका खिताब देदिया, जिसका उम्मेदवार बुर्हानुल्मुल्क था यह सुनकर बुर्हानुल्मुल्क नाराज हुआ, कि खिद्मत मैंने की, और खिताब आसिफ़जाहको मिला, इसलिये उसने फिर नादिरशाहको बहकाया

हिज्री ता० २० ज़िल्काद [वि० फाल्गुन् कृष्ण ६ = ई० ता० २ मार्च] को मुहम्मदशाह, आसिफजाहकी सलाहसे नादिरशाहकी मुलाकातको गया, तब बुर्हानुल्मुल्कने नादिरशाहसे कहा, कि सिवाय आसिफजाहके और कोई लाइक आदमी नहीं है, और दो करोड़की क्या हकीकत है, मैं इतने रुपये अपने ही घरसे नज़्र करूंगा; आप दिल्ली तक चलिये, वहां बहुतसा खज़ानह आपको मिलेगा तब नादिरशाहने आसिफजाहको अपने लश्करमे बुलाकर कहा, कि बादशाह मुहम्मदशाहको बुलाओ, लाचार उसने अर्ज़ी लिखी, और बादशाहको जाना पडा नादिरशाहने उसे एक दूसरे डेरेमे ठहराकर नजर कैदीके मुवाफिक रक्खा इसी तरह वजीर कमरुद्दीनखांको भी अपने डेरेमे बुलालिया, और बुर्हानुल्मुल्कको तह्मास्प जलायरके साथ मुहम्मदशाहके फर्मान समेत दिल्ली भेजा, कि किला, खज़ानह व कारखानोंकी कुजियां लुत्फुल्लाहखां सादिक इनको सौंपदे, जो वहांका नाइब था पीछेसे दोनों बादशाह भी चले, ता० ८ ज़िल्हिज [वि० फाल्गुन् शुक्ल ९ = ई० ता० २० मार्च] को मुहम्मदशाह, और ता० ९ को नादिरशाह दिल्लीके किलेमे दाखिल हुए दूसरे दिन ज़िल्हिजकी ईद, नौरोज़का जश्न और शुक्र वारका दिन था, जामिअ् मस्जिद वगैरहमे नादिरशाहके नामका खुत्बा पढागया (१)

ता० ११ को तीसरे पहर शहरमे यह अफ्वाह मश्हूर हुई, कि नादिरशाह मारागया इससे शहरके बदमआशोंने ईरानियोको मारना शुरू किया, तमाम रात यही हाल रहा. नादिरशाहने यह खबर सुनकर अपनी फौजमे कहला भेजा, कि जो जहां मौजूद है, वहीं तईनात रहे; और हिन्दुस्तानी उनपर आवे, तो रोके,

(१) जहांकुशाय नादिरीमें शुक्रवारको ता० ९ लिखी है

इस हंगामहमें सात सौ ईरानी मारेगये. दूसरे दिन प्रभात ता० १२ को नादिरशाह घोड़ेपर सवार होकर रौशनुद्दौलहकी सुनहरी मस्जिदमें आया, और कत्ल आमका हुक्म दिया, कि जिस महल्लेमें एक ईरानी मरा पाओ, वहांके सब आदमियोंको कृत्ल करो, और ऐसा ही हुआ. सैरुल् मुतअरिवरीनमें दो पहर तक, और जहांकुशाय नादिरीमें शाम तक कत्ल होना व तीस हजार आदमी माराजाना लिखा है, आसिफजाह व कमरुद्दीनखांको भेजकर मुहम्मदशाहके मुआफी मांगनेपर अम्न व आमानका हुक्म हुआ. बुर्हानुल्मुल्कने अपने घरसे दो करोड़ रुपया देनेका वादह किया था, लेकिन् वह कत्ल आम होनेके एक दिन पहिले अदीठ वगैरहकी बीमारीसे मरगया, इसलिये शेरजंगखां सर्दार एक हजार जमइयत समेत अवधको भेजागया, जो वहां जाकर उसके दामादसे रुपये लेआया. नादिरशाहने 'तरूत ताऊस', जेवर, खजानह वगैरह, जो कुछ हाथलगा, लिया, और अपने छोटे बेटे नस्रुल्लाह मिर्जाकी शादी शाहजादह यज्दाबख़्शकी बेटीके साथ की, जो दावरबख़्शका बेटा और शाहजादह मुरादबख़्शका पोता था.

खानदान आलमगीरीमें बादशाही खजानह वगैरहसे अस्सी करोड़ रुपयेका माल नादिरशाहको मिलना लिखा है, और बाबू शिवप्रसादने भूगोल हस्तामलकमें सत्तर करोड़ दर्ज किया है. नादिरशाहने तमाम सूबह सिन्ध व किसी कद्र पंजाब और काबुलको ईरानमें मिला लिया, और एक बड़े भारी दर्बारमें अपने हाथसे मुहम्मदशाहके सिरपर बादशाही ताज रखकर सब सर्दारोंको खिल्अत देनेबाद बहुतसी नसीहतें कीं, और हिज्री ११५२ ता० ७ सफर [वि० १७९६ वैशाख शुक्ल ८ = ई० १७३९ ता० १६ मई] को दिल्लीमें ५७ दिन रहकर कूच करगया, ईरानमें पहुंचने पर उसने अपने मुल्ककी कुल रिआयाको तीन वर्षका हासिल छोड़ दिया, सारी ईरानी सिपाह लूटमार व इन्आम इक्रामसे मालामाल होगई. नादिरशाह हिज्री ११६० ता० ११ जमादियुस्सानी [वि० १८०४ ज्येष्ठ शुक्ल १२ = ई० १७४७ ता० २२ मई] को मुल्क ईरानके जिले फत्हाबादमें मारा गया. नादिरशाह, जो इस मुल्कसे हजारों आदमियोंकी जान और करोड़ोंका माल लेगया, यह सिर्फ मुहम्मदशाहके सर्दारोंकी अदावतका नतीजह था. सआदतखां बुर्हानुल्मुल्क भी बड़ी भारी बदनामीका दाग अपने नामपर लगा गया. अवधमें उसका दामाद अबुल्मन्सूरखां सफ्दरजंग काइम मकाम हुआ, जिसकी औलादमें अवधकी रियासत वाजिदअलीशाह तक काइम रही, जो हिज्री १३०५ [वि० १९४४ = ई० १८८७] में तीस वर्ष सर्कार अंग्रेजीसे पेन्शन पाने बाद कलकत्ता मकामपर गुजर गया. यह धक्का दिल्लीकी डूबती हुई बादशाहतको ऐसा लगा, कि फिर दम लेनेका मौका न मिला, और बादशाही अमीरोंकी

ना इत्तिफ़ाकी इस बड़े नसीहत आमेज सबबसे भी न मिटी, बल्कि दिन दिन बढ़ती गई मुहम्मदशाहकी अख़ीर बादशाहतमें अहमदशाह अब्दाली दुर्रानीका हमलह जामिउत्तवारीख़में मौलवी फ़क़ीर मुहम्मद इस तरह लिखता है -

"यह अहमदशाह हिरातका रहनेवाला मुहम्मद जमांखांका बेटा और नादिर-शाहका मुलाजिम था, वह नादिरशाहके मारेजानेपर लश्करसे भागकर मश्हद पहुंचा, और उसने अपनी कौमका एक गिरोह इकट्ठा करके काबुल व कन्धारको अपने कब्जहमें करलिया फिर वहांसे सात हजार सवार लेकर पेशावर होता हुआ लाहोर पहुंचा, जहांका सूबहदार शाह नवाज़खां उससे शिकस्त खाकर दिल्लीकी तरफ़ भागा, अहमदशाह भी दिल्लीकी तरफ़ चला मुहम्मदशाहने यह ख़बर सुनकर अपने वली अह्द शाहजादह सुल्तान अहमदको फ़ौज व तोपख़ानह समेत मुकाबलहको रवानह किया, सर्हिन्दके पास हिज्री ११६१ ता० १५ रबीउल्अव्वल [वि० १८०४ चैत्र कृष्ण २ = ई० १७४८ ता० १६ मार्च] से हि० ता० २८ [वि० चैत्र कृष्ण १४ = ई० ता० २९ मार्च] तक मुकाबलह रहा, जिसमें मुहम्मदशाहका वज़ीर कमरुद्दीनखां तोपका गोला लगनेसे मारा गया, और अहमदशाह अब्दाली शिकस्त खाकर काबुल कन्धारकी तरफ़ चलागया, शाहजादहकी फ़त्ह हुई. बादशाह इसको वज़ीरकी जांफ़िशानी और सफ़्दरजंग व मुईनुल्मुल्ककी तनदिहीका नतीजह समझकर खुश हुआ, और कमरुद्दीनखांके बेटे मुईनुल्मुल्कको लाहोर व मुल्तानकी सूबहदारी दी इसके बाद इसी सन्में हिज्री ता० २७ रबीउस्सानी [वि० १८०५ वैशाख कृष्ण १३ = ई० १७४८ ता० २६ एप्रिल] को मुहम्मदशाहका इन्तिकाल होगया, जो निज़ामुद्दीन औलियाकी दर्गाहमें अपनी माकी क़ब्रके पास दफ्न किया गया

तीमूरके खानदानमें हिन्दुस्तानकी बादशाहत बाबरसे आलमगीर तक तरक्की पाती रही, और शाहआलम बहादुरशाहसे मुहम्मदशाहकी अख़ीर हुकूमत तक दिन दिन तनज़्ज़ुलीकी हालतमें आती गई, यहां तक कि मुहम्मदशाहके मरने बाद नामको बादशाहत थी, न बादशाहको कोई मानता था, न सूबहदारियां शाही हुक्मसे मिलती थीं; सिर्फ़ दिल्लीमें 'खान-' 'जंग-' 'दौला-' 'मुल्क' वगैरह लंबे चौड़े ख़िताब देकर बेचारे बादशाह अपनी जान बचाते थे, लेकिन् इसपर भी बड़े बड़े ख़िताब पानेवाले नालाइक लोग एकका गला काटते, और दूसरेको तख़्तपर बिठाते थे इस वास्ते हम तीमूरिया खानदानकी तवारीखका इस जगह खातिमह करना मुनासिब जानकर पिछले बादशाहोंका मुख़्तसर हाल दर्ज करते हैं, जिनमें दो तो मरहटोंके खिलौने और तीन अंग्रेज़ोंके पेन्शनदार थे इन पांचों बादशाहोंका हाल इस तरहपर है -

मुजाहिदुद्दीन, अहमदशाह बहादुर, बादशाह गाज़ी

यह हिज्री ११३८ ता० २७ रबीउस्सानी [वि० १७८२ पौष कृष्ण १३ = ई० १७२६ ता० ३ जैन्युअरी] को अद्हम बाईसे दिल्लीमे पैदा हुआ, और हिज्री ११६१ ता० २ जमादियुल् अव्वल [वि० १८०५ वैशाख शुक्ल ३ = ई० १७४८ ता० २ मई] को पानीपतमे अपने बाप मुहम्मदशाहके मरनेकी खबर मिलनेपर तख्तनशीन हुआ सफ़्दरजंगने नज़ दी, और बादशाह उसे वज़ीर बनाकर दिल्ली आया कुछ अर्से बाद अह्मदशाह अब्दालीने हिन्दुस्तानपर दो बारह चढाई की, लेकिन् लाहोरके सूबहदार मुईनुल्मुल्कने उसे सियालकोट, औरंगाबाद, और गुजरात वग़ैरह चार पर्गने देकर पीछा लौटा दिया. तीसरी बार अह्मदशाह अब्दाली फिर आया, और लाहोरमे मुईनुल्मुल्कने चार महीने तक लडनेके बाद उसकी ताबेदारी कुबूल की, अब्दाली लाहोर और मुल्तानको अपने मुल्कमे मिलाने बाद उसे नाइब बनाकर लौट गया अह्मदशाहकी बादशाहत कम्ज़ोर होगई थी, निज़ामुल्मुल्क आसिफ़-जाह गाज़ियुद्दीनखांके बेटे इमादुल्मुल्कने, जो अपने बापके मरने बाद मीर बख़्शी होगया था, मल्हारराव हुल्कर और समसामुद्दौलहको मिलाकर विज़ारतका उह्दह लिया, और अह्मदशाहको लाचार देना पडा इसी वज़ीरने हिज्री ११६७ ता० १० शअ्बान [वि० १८११ ज्येष्ठ शुक्ल ११ = ई० १७५४ ता० २ जून] मे बेचारे अह्मदशाह बादशाहको उसकी मा समेत क़ैद करके आखोमे सलाई फेर दी, जो बीस वर्ष क़ैद रहकर हिज्री ११८८ ता० २७ शव्वाल [वि० १८३१ पौष कृष्ण १३ = ई० १७७५ ता० १ जैन्युअरी] को मर गया इसकी लाश मर्यम मकानीके मक्बरेमे गाडी गई

इसके बाद मुइज़ुद्दीन जहांदारशाहके छोटे बेटे अ़ज़ीज़ुद्दीनको तख़्तपर बिठाया, जो फ़र्रुख़सियरके वक़्तसे क़ैद था

अबुलअद्ल अ़ज़ीज़ुद्दीन मुहम्मद, आलमगीर सानी, बादशाह.

इसका जन्म हिज्री १०९९ [वि० १७४५ = ई० १६८८] को अनोप बाईके पेटसे मुल्तानमे हुआ था इमादुल्मुल्क इसे तख़्तपर बिठाकर आप खुद मुख़्तार मुसाहिब होगया वह बादशाहके वलीअ़ह्द आ़लीगुहर वगैरहको साथ लेकर लुधियाना पहुचा, इस इरादेसे कि अह्मदशाह अब्दालीके मुलाज़िमोको निकालकर लाहोर व मुल्तान कब्ज़हमे करलेवे; लाहोरका सूबहदार मुईनुल्मुल्क इन दिनोमे मरगया

था, लेकिन् उसकी बीबी लाहोरपर काबिज थी, इमादुल्मुल्कने उसे फौज भेजकर बुलालिया, और अपनी तरफसे आदीनाबेगको लाहोरका सूबह बना आया यह खबर पाते ही अहमदशाह अब्दाली लाहोर पहुचा, आदीनाबेगखा भागा, और अहमदशाह वहा कब्जह करके दिल्ली आया, बादशाहसे मुलाकात करके एक महीने तक दिल्लीको खूब लूटा, और अपने बेटे तीमूरशाहकी शादी बादशाहकी भतीजीके साथ की फिर आगे बढकर मथुरा व बल्लमगढको लूटने बाद सूरजमल जाटको सजा देनेका इरादह था, क्योंकि वह आलमगीर सानीके बर्खिलाफ फसाद करता था, परन्तु अब्दालीशाह अपनी फौजमे वबा फैलनेके सबब दिल्लीमे लौट आया, और मुहम्मदशाहकी बेटी मलिकह जमानीसे अपनी शादी की. इसके बाद अपने बेटे तीमूरशाहको लाहोर, मुल्तान व ठडेका मालिक बनाकर आप कन्धार चलागया उसके जाने बाद इमादुल्मुल्कने मरहटोकी मददसे दिल्लीको आ घेरा, पैतालीस दिन तक घेरा रहने बाद सुलह होगई, नजीबुद्दौलह, जिसे अब्दालीशाह वजीर बना गया था, निकलकर सहारनपुर चला गया

इमादुल्मुल्क व बादशाहके दिलोमे सफाई न थी, तो भी इमादुल्मुल्क कारोबारका मुख्तार बन गया बादशाहने इमादुल्मुल्कके डरसे अपने शाहजादह आलीगुहर को हासी वगैरह जागीरमे देकर कुछ फौज समेत वहां भेजदिया इमादुल्मुल्कने बादशाहकेनामके रुक्के लिखकर शाहजादहको बुलालिया, और जब वह आगया, तो किलेमे जानेसे रोककर अलीमर्दानखाकी हवेलीमे ठहराया, शाहजादहको गिरिफ्तार करनेके इरादहसे दस बारह हजार सवार भेजकर घेर लिया, और दीवार तोडकर शाहजादहके बहुतसे साथियोको मारडाला, लेकिन् शाहजादह बचे हुए साथियो समेत भाग निकला, और नजीबुद्दौलहके पास सहारनपुरमे आठ महीने तक रहा, वहासे शुजाउद्दौलह जलालुद्दीन हैदरके पास लखनऊ चला गया उसने खातिर्दारीके साथ एक सौ एक अश्रफी, एक लाख रुपया और दो हाथी नज्र देकर विदा किया वहांसे शाहजादह इलाहाबाद गया इमादुल्मुल्कने इस अदावतसे नजीबुद्दौलह व शुजाउद्दौलहको बर्बाद करनेके लिये मरहटोको दक्षिणसे अन्तरबेदकी तरफ भेजा, उन्होने नजीबुद्दौलहको जा घेरा, चार महीने तक लडाई रही, तब शुजाउद्दौलह लखनऊसे उम्दह फौज लेकर आ पहुचा, और मरहटोको कत्ल व कैद करके दूर भगा दिया इस फत्हके बाद सादुल्लाहखा, अलीमुहम्मदखाका बेटा, जिसकी औलादमे अब रामपुरके नव्वाब है, हाफिज रहमतखा, जिसकी औलादमे बरेलीके नव्वाब थे, दूदेखा, जिसकी औलादमे मुरादाबादके रईस थे, पठान नजीबुद्दौलह समेत शुजाउद्दौलहसे

मिलगये, लेकिन् शुजाउद्दौलह अपने हिमायती अह्मदशाह अब्दालीके जानेकी खबर सुनकर मरहटोसे सुलहके साथ लखनऊ चला गया

दिल्लीमे इमादुल्मुल्क कुल काम करता था, परन्तु बादशाही तरफसे उसको भरोसा न था, इसके सिवा इन्तिजामुद्दौलह कमरुद्दीनखा वजीरके बेटेसे भी बखिलाफी थी, जो इमादुल्मुल्कका मामू था पहिले तो इन्तिजामुद्दौलहको मार डाला, और उसके तीन दिन बाद किसी फकीरके दर्शनके बहानेसे बादशाहको शहरके बाहर नदीके किनारेपर एक मकानमे लेजाकर, दूसरे साथी लोगोको बाहर ठहराया, भीतर इमादुल्मुल्कके आदमियोने बादशाहको छुरियोसे मारकर उसकी लाश नदीमे डलवा दी. यह वारिदात हिज्री ११७३ ता० ८ रबीउस्सानी [वि० १८१६ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ = ई० १७५९ ता० २९ नोवेम्बर] को हुई इमादुल्मुल्कने दिल्लीमे आकर कामबख्शके बेटे मह्युसुन्नहको तख्तपर बिठाकर उसका लकब शाहजहां सानी रक्खा

अबुल्मुज़फ्फर, जलालुद्दीन मुहम्मद,
आली गुहर, शाहआलम सानी
बादशाह

इसका जन्म हिज्री ११४० ता० १७ जिल्काद [वि० १७८५ आषाढ कृष्ण ३ = ई० १७२८ ता० २७ जून] को जीनत महल उर्फ लालकुवरके पेटसे हुआ था इसने अपने बापके मरनेकी खबर अजीमाबादके जिले कथौली गांवमे पाई, और उसी जगह तख्तपर बैठनेका दस्तूर अदा किया, लेकिन् राजधानी दूसरोके कब्जहमे होनेसे मुनीरुद्दौलहको एलची बनाकर अह्मदशाह अब्दालीके पास भेजा, कि वह मदद करे, और शुजाउद्दौलह व नजीबुद्दौलहको कलमदान व खिल्अत वगैरह भेजा फिर कामगारखा वगैरह पठान एक फौज समेत बादशाहके पास आये जब अह्मद-शाह अब्दाली कन्धारको लौट गया, तब शिख और मरहटोने आदीनाबेगखाके बहकानेसे अब्दालीके शाहजादह तीमूरको लाहोरसे निकाल दिया. अह्मदशाह अब्दाली नादिरशाहके साथ आनेके सिवाय पाचवीं बार बडी फौजके साथ अटक उतरकर हिन्दुस्तानमे आया रास्तेमे दत्ताराव वगैरह और हुल्करकी फौजको शिकस्त दी; तीन सौ आदमियोसे हुल्कर भाग गया इसी अर्सेमे नजीबुद्दौलह व शुजाउद्दौलह दस हजार फौज समेत अब्दालीकी फौजमे जामिले यह खबर सुनकर सदाशिवराव भाऊ दक्षिणकी बडी जर्रार फौज लेकर चला, आगरेके पास उससे राजा

सूरजमल जाट, मल्हार राव हुल्कर व इमादुल्मुल्क भी आमिले भाऊने दिल्ली पहुच कर मुह्युस्सुन्नहको तख़्तसे उतार दिया, और पोलिटिकल कार्रवाई करनेके लिये शाहआ़लमके शाहजादह मिर्ज़ा जवाबख़्तको तख़्तपर बिठादिया, अगले किलेदारके एवज नारूशंकर ब्राह्मणको मुक़र्रर किया फिर कुजपुरेके किलेमे अ़ब्दुस्समदख़ां व कुतुबख़ांको मार कर किला फ़त्ह करलिया भाऊने पानीपत पहुचने बाद ख़न्दक़ वग़ैरह खोदकर फ़ौज समेत लड़ाईका बन्दोबस्त किया

वहा अह्मदशाह भी आ पहुचा; वह लड़ाईके ढंगसे ख़ूब वाक़िफ़कार था (१) उसने मरहटोंकी फ़ौजमे रसद आनेका रास्तह बन्द कर दिया, और छोटी छोटी लड़ाइयोंपर अपने सर्दारोंको तईनात किया इन्हीं लड़ाइयोंमे सदाशिवराव भाऊका साला बलवन्तराव मारागया इसी अ़र्सेमे ख़बर लगी, कि गोविन्द पण्डितने दस हजार सवार समेत नजीबुद्दौलहके इलाक़ह मेरठ वग़ैरहको लूट लिया, शाहअ़ब्दालीने अ़ताख़ा दुर्रानीको पाच हजार सवारो के साथ भेजा; वह नारूशंकर व गोविन्दराव वग़ैरहको मारकर बहुतसा अस्बाब लूट लाया हिज्री ११७४ ता० ६ जमादियुस्सानी [वि० १८१७ पौष शुक्ल ७ = ई० १७६१ ता० १४ जैन्युअरी] को अब्दाली शाहके मुक़ाबलहको मरहटी फ़ौज निकली, और शाह अब्दाली भी शुजाउद्दौलह व नजीबुद्दौलह समेत तय्यार हुआ, इस लड़ाईमे बहुतसे मरहटे काम आये, और बाक़ी बचेहुए भाऊकी फ़ौजमे जामिले, भाऊ तीस हजार फ़ौज लेकर अब्दाली शाहपर टूट पड़ा, अब्दालीशाहके बहादुर सिपाहियो व शुजाउद्दौलह, नजीबुद्दौलह वग़ैरह बहादुरोंने अच्छा मुक़ाबलह किया, मरहटे भी बड़ी वीरताके साथ लड़े, भाऊ हजारो मरहटे सर्दारो समेत मारागया, माधवराव सेंधिया एक पैरपर ज़ख़्म खाकर भागा, और मल्हार राव हुल्कर भी फ़रार हुआ, अब्दालीशाहने फ़त्ह पाई यह हाल तफ़्सीलवार मौक़ेपर लिखा जावेगा

इस लड़ाईमे बाईस हजार औरत, मर्द और बच्चे अब्दालीशाहने लौंडी और गुलाम बनाकर अपने सर्दार व सिपाहियोंको बाट दिये, और नक़्द, जिन्स, जवाहिर, तोपख़ानह, पचास हजार घोड़े, एक लाख गाय, बैल, पाच सौ हाथी और कई हजार ऊंट वग़ैरह अब्दालीशाहके हाथ आये इसके बाद अह्मदशाह दिल्ली आया, और शाहआ़लमको बादशाह, शुजाउद्दौलहको वज़ीर, नजीबुद्दौलहको अमीरुल्उमरा और शाहजादह जवांबख़्त मिर्ज़ाको वलीअ़ह्द बनाकर लाहोरमे अपने नाइब छोड़ने

(१) यह हमेशह कहा करता था कि नादिरशाह तो अस्सी हजार फ़ौजसे दस हज़ारको, और मै बीस हज़ारको लड़ा सक्ता हूं

बाद कन्धारको चलागया शाहआलम व शुजाउद्दौलह वज़ीरने अन्तरबेद व काल्पीके ज़िलेसे मरहटोंके गुमाश्तोंको निकालकर अपने मुलाज़िमोंको मुक़र्रर किया राजा सूरजमल जाटने अहमदशाहका कन्धार जाना सुनकर आगरेके क़िलेपर कब्ज़ह करलिया और पंजाबसे सिक्खोंने शाह अब्दालीके आदमियोंको निकाल दिया यह सुनकर छठी बार फ़ौज समेत अहमदशाह अब्दाली फिर हिन्दुस्तानमें आया, और जब वह लाहौर पहुंचा, तब सिक्ख लोग भागकर सर्हिन्दकी तरफ़ चले गये, जहां इन लोगोंने दो लाख सवार व पैदल इकट्ठे करलिये थे हिज्री ११७५ ता० ११ रजब [वि० १८१८ माघ शुक्ल १२ = ई० १७६२ ता० ७ फ़ेब्रुअरी] को लड़ाई हुई, जिसमें बीस हज़ार सिक्ख मारेगये, और अब्दाली शाहने फ़त्ह पाई वह लाहौर व कश्मीर वग़ैरहपर अपने आदमी मुक़र्रर करके लौटगया इसके बाद लाहौर व मुल्तान वग़ैरह इलाके सिक्खोंने अफ़्ग़ानोंसे ले लिये, क्योंकि खुरासानकी तरफ़ अहमदशाह किसी ज़रूरतसे चलागया इस वक्तसे सिक्खोंका ज़ोर बढ़ता ही गया, अन्तमें कुल पंजाबका मालिक रणजीतसिंह बन बैठा

शाहआलम सानी, आख़िरी बादशाहके अह्द हिज्री १२०२ [वि० १८४५ = ई० १७८८] को ज़ाबितहख़ांका बेटा और नजीबुद्दौलहका पोता गुलामक़ादिर, दिल्ली आया, और उसने क़िलेमें जाकर बादशाह शाहआलमको बे रहमीके साथ अन्धा करदिया इस वक्त भी बचा हुआ माल और जो कुछ बादशाही लवाज़िमह था, बर्बाद हुआ, लेकिन् मरहटा सर्दार माधवराव सेंधियाने शाहआलमको दो बारह तख़्तपर बिठाया, और गुलामक़ादिरख़ांको, जो भाग गया था, पकड़कर मार डाला इसपर शाह आलमने उसको 'फ़र्ज़न्द आलीजाह' का ख़िताब दिया, जो अबतक ग्वालियर वालोंके नामपर बोला जाता है

हिज्री १२१८ [वि० १८६० = ई० १८०३] में लॉर्ड लेक, दिल्ली पहुंच गया, और उसने शाहआलमको मरहटोंके पंजेसे निकालकर एक लाख रुपया माहवार पेन्शनके तौर उसके गुज़ारेके लिये मुक़र्रर कर दिया यह बादशाह हिज्री १२२१ ता० ९ रमज़ान [वि० १८६३ कार्तिक शुक्ल ६ = ई० १८०६ ता० १८ नोवेम्बर] को मर गया

अबुन्नस्र, मुइज़ुद्दीन मुहम्मद, अक्बर शाह सानी, बादशाह

इसका जन्म हिज्री ११७३ ता० ७ रमज़ान [वि० १८१७ वैशाख शुक्ल ८ = ई०

१७६० ता० २४ एप्रिल] वृहस्पतिवारको मुबारक महलसे हुआ था यह हिज्री १२५३ ता० २८ जमादियुस्सानी [वि० १८९४ आश्विन् कृष्ण १४ = ई० १८३७ ता० २९ सेप्टेम्बर] शुक्रवारको दिल्लीमे मरगया

अबुज़फ़र, सिराजुद्दीन मुहम्मद, बहादुरशाह सानी, बादशाह

इसका जन्म हिज्री ११८९ ता० २८ शअ्बान [वि० १८३२ कार्तिक कृष्ण १४ = ई० १७७५ ता० २४ ऑक्टोबर] मगलवारको लालबाईके पेटसे हुआ था यह भी अपने बापकी तरह बराय नाम बादशाह हुआ, और सन् १८५७ ई० के गद्रमे अंग्रेज़ोने इसे कैद करके रंगून भेजदिया, वह वहीं हिज्री १२७९ ता० १९ जमादिउल् अव्वल [वि० १९१९ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ = ई० १८६२ ता० ११ नोवेम्बर] मे मरगया बलवे वगैरहका जिक्र व्यौरेवार अंग्रेज़ोकी तवारीखमे लिखा जायेगा.

इस बादशाहके बारह बेटे थे, १- मिर्ज़ा दाराबख्त, २- मिर्ज़ा शाहरुख, ३- गुलाम फख़ुद्दीन मिर्ज़ा फत्हुलमुल्क, ४- मिर्ज़ा अब्दुल्लाह, ५- मिर्ज़ा सद्दू, ६- मिर्ज़ा फर्खुन्दहशाह, ७- मिर्ज़ा कूमाश, ८- मिर्ज़ा बख्तावरशाह, ९- मिर्ज़ा अबुन्नस्र बुलाकि, १०- मिर्ज़ा मुहम्मदी, ११- मिर्ज़ा खिज़्रसुल्तान, १२- मिर्ज़ा जवाबख्त, ये रंगूनमे हिज्री १३०१ जीकाद [वि० १९४१ भाद्रपद = ई० १८८४ ता० सेप्टेम्बर] शुक्रवारको मर गया अब शाहआलम सानीकी औलादमेसे कुछ लोग बनारस वगैरहमे बाकी रहगये है, जो किसी कद्र जागीरपर गुज़र करते है

शेष संग्रह नम्बर १

बडी पालके पीछे नीलकंठ महादेवके पास छोटे कुंडपर श्री दक्षिणा मूर्तिमे महादेवजीके मन्दिरके दर्वाजेके साम्हने, जो प्रशस्ति है, उसकी नक्ल

—*·*—

स्वस्ति श्री मन्महागणपतयेनम ॥ श्री गुरुभ्योनम बालन्यग्रोधवशाब्धि भासमान-सुधाशवे॥ मंत्रदैवतरूपायगुरवेकुसुमांजलिं ॥१॥ ब्राह्मतेजोदधान श्रुतिविषयलसन्मंत्र भावैरनेके शंभोरास्योल्लसद्भिस्त्वगणितमनुभीरौद्रमाधत्तएव ॥ श्रौतस्मार्तक्रियाभिर्वि-गलितकलुष पोषयन्विप्रवृन्दं कारुण्यौदार्ययुक्त सजयतिनितरां दक्षिणामूर्तिरेक ॥२॥ कलास्वपि कलाधर प्रथितकीर्तिरंभोनिधे रुदारगुणसंयुत सकलशास्त्रसारान्वित ॥ तपोमयतनु स्वयं निगमतंत्रबोधोल्लसत्परामृतपरिप्लुत सजयतीह विप्राग्रणी ॥३॥ ज्ञाने देवगुरु प्रतापतुलित कालाग्निरुद्रोपरस्तेजस्वी जमदग्निवर्जितहृषीक कार्तिकेयोपर ॥ इष्टापूर्तक्रियासु प्रतिनिधिरनिशं याज्ञवल्क्यस्ससाक्षादाचार्य-त्वेवशिष्ठ सजयति नितरां दक्षिणामूर्तिरेक ॥ ४ ॥ सनाथीकुर्वन् वै सदुदयपुरा-धीशमनिशंनृपोत्तंस शश्वत् प्रतिवसति संग्रामनरप ॥ तत श्रेयोधिक्य सकल-दुरितध्वसनविधिर्विधत्ते निर्विघ्न सचजनपद सोपि नृपति ॥५॥ श्रीमद्भानुरिव प्रताप महसा प्रोन्मीलिताश स्वयं शत्रुध्वातविदारणेतिनिपुण संसारसौख्य-प्रद ॥ स्वर्णाभ परिपूर्ण सद्गुणहृद सन्मित्रपद्माटवीहर्षोत्पादनहेतवे समुदित संग्रामसिंह प्रभु ॥६॥ यत्सैन्ये चलति क्षितावरिजयप्रस्तारकर्मण्यथो गर्जत्कुंभि-मदार्द्रगंडमिलितैर्भृंगैरनेकै कट ॥ पीत्वामोदितविग्रहैरनुदिशं झंकारशब्दान्वितै श्रीसंग्राममहीपते प्रतिदिनं मन्ये यशोगीयते ॥ ७ ॥ दोर्लीलादलितारि-दंतिनिवह कीर्त्याशिरश्चंद्रिका स्पर्द्धिन्याधवलीकृतक्षितितल प्रोद्दामशौर्यान्वित ॥ षाड्गुण्यामलधीस्त्रिवर्गकुशल शक्तित्रयालंकृतो मेवारप्रभुरीप्सितार्थफलदो वर्वर्ति सर्वोपरि ॥८॥ अथ श्रीदक्षिणामूर्ति शिवालयमकारयत् ॥ वापींच माधुर्य-जलां शास्त्रोक्तविधिना तत ॥ ९ ॥ स्वस्ति श्रीविक्रमादित्यराज्योद्गमनकालत ॥ गगनाद्यश्वभूसंख्ये (१७७०) वत्सरे शोभनाव्हये ॥ १० ॥ तथा च शकबंधस्य शालिवाहनभूपते पंचाग्न्यष्टिप्रमितिके (१६३५) रसनिवहइष्टदे ॥ ११ ॥ सौम्यायने सवितरि गुरुशुक्रोदये शुभे ॥ चैत्रस्य पूर्णिमाया च शंभो स्थापनमाचरन् ॥ १२ ॥ विप्राश्च शतसंख्याकान् वेदविद्याविशारदान् ॥ यज्ञातकर्मकुशलान् मासात्प्रागेव सद्वृतान् ॥ १३ ॥ कुंडमंडपनिर्माण निगमागममार्गत ॥ विधाय

कोटिहोम तत्कल्पद्रव्यसमन्वित ॥ १४ ॥ प्रतिष्ठादिवसे प्राप्ते ज्योतिविर्द्भिर्निवेदिते ॥ नित्य नैमित्तिक कर्म विधायोक्तेन वर्त्मना ॥ १५ ॥ स्वछात शुचिरासीनो विप्रवृद पुर सर ॥ ननद्भि पचवाद्यैश्च वेदध्वनिपुर सर ॥ १६ ॥ अथ तत्रागमद्राजा भक्त्या सयुतमानस ॥ ब्राह्मणान् शतसख्याकान् गधपुष्पाद्यलकृतान् ॥ १७ ॥ नियुक्तान् शुद्धभावेन स्वस्तिवाचनकर्मणि ॥ प्राणे प्रतिष्ठामकरोद्राजराजेश्वरस्यच ॥ १८ ॥

——✻○✻——

शेषसग्रह नबर २

सीसारमा गावके वैद्यनाथ महादेवजीके मन्दिरकी प्रशस्ति

श्रीगणेशाय नम ॥ श्रीमदेकलिगो विजयतु ॥ अथ प्रशस्तिप्रारभ ॥ हरि ॐम् ॥ शिव साबमह वदे विद्याविभवसिद्धये ॥ जगज्जनिकर शभु सुरासुरसमर्चित ॥ १ ॥ गुजद्भ्रमद्भमरराजिविराजितास्य स्तबेरमाननमह नितरा नमामि ॥ यत्पादपकजपरागपवित्रताया प्रत्यूह राशय इह प्रशम प्रयाति ॥ २ ॥ शारदा वसतु शारदाडज स्वानना मम मुखाबुजे सदा ॥ यत्कृपायुतकटाक्षभाग्यतो भाग्यतोपमयमेति मानव ॥ ३ ॥ स भूयादेकलिगेशो जगता भूतये विभु ॥ यस्य प्रसादात्कुर्वति राज्य राणा भुव स्थित ॥ ४ ॥ यदेकलिग समभूत्पृथिव्यां तेनैकलिगेत्यभिधाभ्यधायि ॥ चतुर्दशी माघभवाहि कृष्णा तस्यां समुद्भूतिरभूच्छिवस्य ॥ ५ ॥ तदा मुनीना प्रवरस्तपस्वी हारीतनामा शिवभक्त आसीत् ॥ सएकलिग विधिवत्सपर्या विधेरतोषीष्ट शिवेष्ट निष्ट ॥ ६ ॥ बापाभिधो रावल उन्नतेच्छो हारीतमेन गुरुमन्वमस्त ॥ विद्याप्रसादोदयबुद्धिवृद्ध्यै यथा मरुत्वानिव वागधीश ॥ ७ ॥ तस्योपदेशेन समग्रसिद्धेर्बापानृपस्याथ बभूव सिद्धि ॥ आराधनात्तुष्टिमतोस्य शभो स्तदैकलिगस्य विभो प्रसादात् ॥ ८ ॥ सूर्यान्वयोसाविवतिग्मरश्मि प्रतापसशोषितकर्दमारि ॥ समुल्लसत्स्वीयमुखाबुजश्री दूरीभवद्दुष्टखलाधकार ॥ ९ ॥ अथाभवद्राणपद वितन्वन् राहप्पराण प्रथित पृथिव्या ॥ तदादितद्वशभवानरेद्रा राणेति शब्द प्रहित भजति ॥ १० ॥ रणस्थिरत्वानुतदा नृपाणा दिनाधिनाथान्वयसभवाना ॥ चतुर्दिगतप्रथित हि राणपद हि तत्सार्थकता मवाप्त ॥ ११ ॥ राहप्पराणान्नरपाल आसीद्धनुर्भृता मुख्यतर पृथिव्या ॥ जितारिवर्ग परमप्रधान सुश्राव कीर्तिन्नरवन्नरेद्र ॥ १२ ॥ दिनकरस्तु ततोप्यभवत्सुतो दिनकरद्युतिभाङ् नरपालत ॥ अवनिमडलभूपतिमडलीमुकुटरत्नविराजितयत्कज ॥ १३ ॥ यशकर्ण इहाभवत्ततो यशसैवाति समुज्वलां भुव ॥ बुभुजे युगदीर्घ बाहुभून्निज

धीरत्वमवन् दिशत्स्वपि ॥१४॥ ततस्तु नागपालोभून्नागायुतबलोत्कट ॥ शशास वसु-
धामेता प्रजा धर्मेण पालयन् ॥ १५॥ ततोभवत्पूर्णमनोरथोय कृपाणपाणि किल पूर्ण-
पाल· ॥ पूर्ण सुखै पालयतीतिविश्व तत्पूर्णपालत्वमवापितेन ॥ १६ ॥
तस्मादभूदुग्रतरश्च पृथ्वीमल्लोरिहस्तिष्विव हस्तिमल्ल ॥ ये युद्धमल्ला बलदर्पनद्धा-
स्तस्मादवापु खलुभगमेव ॥१७॥ तस्माद्भुवनसिंहोभूद्धराधीशो महेद्रभ ॥ युधिभूपाल-
मातगा पलायते यदीक्षिता ॥ १८ ॥ तत्सूनुरुग्र किल भीमसिंहो भयकरो भीम-
इवाहितानां ॥ एकातपत्रा भुवमेत्यवीरो निष्कटकीं दीर्घभुजो बुभोज ॥ १९ ॥ तदग-
ज़न्मा जयसिंहराणो भुव समग्रां प्रथित शशास ॥ जयोहि यस्मिंस्थिरतामुपेत्य पुनर्न
कस्मि स्थिरताबभाज ॥ २० ॥ तदात्मज सागरधीरवेत्ता नाम्ना ततो लक्ष्मणसिंह-
आसीत् ॥ यो मेघनाद च विजित्य गोभि स्थितो हि रामानुजवन्नरेंद्र ॥ २१ ॥
तस्मान्महीयानरिसिंहभूपो भूमडलाखडलता जगाम ॥ लसद्विषत्कुजरमस्तकाद्यन्
मुक्ताभिराकीर्णपदाग्रभूमि ॥ २२ ॥ ततोरिसिंहादभवद्धमीर समिद्धतेजा-
इवशभुरीड्य ॥ शिरस्खलत्स्वर्धुनिसुप्रवाहपवित्रिताशेषजगज्जनौघ ॥ २३ ॥
यश्चैकलिंगस्य शिवस्य लिग पुनर्वशिलादद्भुतमद्दधार ॥ शिवाज्ञयैव प्रमथाधिनाथ-
सेवाविधि सस्वयमन्वकार्षीत् ॥ २४ ॥ हम्मीरदेवादलभत्सुरश्रीर्य क्षेत्र सिंह
पितुरेव राज्य ॥ यस्मिन्मही शासति वीरवर्ये स्थिता श्रुतौ तस्करता प्रजासु ॥ २५ ॥
लक्षावधीन्योधगणान्विधत्ते लक्षावधि द्राग्धनमत्रदत्त ॥ योलक्षवार विबभजशत्रून्
लक्षाभिधोस्मादुदभून्नरेंद्र ॥ २६ ॥ मकारवाच्य खलु विष्णुशब्द उकार-
वाची किल शभुशब्द ॥ तौचेतसि स्वेकलयत्यभीक्ष्ण तस्मान्नृपो मोकलइत्यभाणि
॥ २७ ॥ समोकल सर्वगुणोपपन्न सत्प्राप पुत्रं किल कुभकर्ण ॥ य कुभजन्मेव
विपक्षसैन्यमहार्णवस्यान्यइहावतीर्ण ॥ २८ ॥ य·कुभकर्णादपि युद्धशाली
य· कुभकर्णारिमना सदैव ॥ य कुमिदानोद्धृतचित्तवृत्ति सकुभकर्णोथ भुव बभार
॥ २९ ॥ सरायमल्लो गुरुकुभकर्णाद्भुव समग्रा विधिवच्छशास ॥ योराजमल्लप्रतिमल्ल-
योद्धा धरातलेस्मिन्नबभूव कश्चित् ॥ ३० ॥ तदग्रजन्मा भुवनप्रकाश सग्रामसिंहो
भुवमन्वशासीत् ॥ म्लेच्छाधिपंयोधगृहीतमुक्त चकार कारुण्यरसाभराढ्य ॥३१॥
तेनासमुद्रातजिगीषुणायं भूपालल्लोको वशमप्यनायि ॥ सग्रामसिंहेन गुणैकधाम्ना
रामाभिरामेण नृपोत्तमेन ॥ ३२ ॥ पार्थिवात् समभवत्तत पर दीप्तिमानुदयसिंह-
भूपति ॥ येन विश्ववलयैकभूषण भूभृतोदयपुर विनिर्मितं ॥ ३३ ॥ प्रतापसिंहो-
थबभूव तस्माद्धनुर्धरो धैर्यधरो धरिण्यां ॥ म्लेच्छाधिपात् क्षत्रिकुलेन मुक्तो धर्मोप्य-
थैनं शरण जगाम ॥ ३४ ॥ प्रतापसिंहेन सुरक्षितोसौ पुष्ट पर तुंदिलतामगच्छत् ॥
अकब्बरम्लेच्छगणाधिपस्य परं मन·शल्पमिवाभवद्य· ॥ ३५ ॥ अशेषभूमडल-

मंडितश्री समग्रभूमावमरेंद्रभूप ॥ आसीत्तुतेनैवकृता सुमार्गा भूपे स्ववश्ये- रपितेषुचेले ॥ ३६ ॥ तस्मादभूत्कर्णसमानदानप्रवाहभृद्भूभृदिहैव कर्ण ॥ ततो जगत्सिंहधराधिपोभूद्भाग्याधिपोसावमरेंद्रकल्प ॥ ३७ ॥ ततोर्जिता षो- डशदानमाला माधातृतीर्थादिवरेषुतेने ॥ राजागणादग्रणिरेवविष्णो · प्रासा- दमभ्रलिहमाततान ॥ ३८ ॥ ततो भवद्भूमिपति · पृथिव्या धराधिराज : किल राजसिंह ॥ येनेह पृथ्वीवलयैकरूप सर समुद्रोपममाबबंधे ॥ ३९ ॥ दिल्लीपतेर्मालपुरापुरयद् बाढ बलाद्भूरिवलश्चकुथ ॥ धराधिपत्य विधिवद्वि- धाय शक्रासनस्यार्धमथाधितस्थौ ॥ ४० ॥ तदगजन्मा जयसिंहराणो धुर धरित्र्या विभरांबभूव ॥ योदानदाक्षिण्यगुणैकसिंधुर्भाग्याधिको बुद्धिमता वरिष्ठ · ॥ ४१ ॥ नृणामह भूमिपतिर्यदुक्त कृष्णेन सत्य जयसिंहराणे ॥ वचोस्तियद्वेगवती नदीय सर कृतासेतुविबंधनेन ॥ ४२ ॥ अमरनरपतिस्तत्सूनुरेवाभवद्य सकलनरपतीना- मेष मूर्द्धन्य आसीत् ॥ विधिविरचितरेखा योदरिद्रो भवेति स्वविहितबहुदानैरर्थिनामे- व मार्ष्टि॥४३॥ शिवप्रसादामरसद्विलासपदाभिधासौधमथो तनिष्ट ॥ सराजराजा- द्रिसमानधाम महेंद्रतेजा अमरेशराए ॥ ४४ ॥ अतस्तडाग जगमंदिरयन् मध्ये समुद्र रजताद्रय किं ॥ अकारितेनामरसिंहनाम्ना विभाति वैकुंठमिव द्वितीय ॥ ४५ ॥ अथामरेंद्रश्च सुरेंद्रकल्पो हठादसौ शाहपुर बभंज ॥ ज्वलद्भुताशावलिदग्ध- दीर्घ स्तब बभौ किंशुकयुग्वन वा ॥ ४६ ॥ अखंडिताग भवनप्रकाश विस्तारिताशाकिरणैकरम्य ॥ य कीर्तिचंद्र प्रविधाय भूमौ बलारिलोक बहुवित्तवेगात् ॥ ४७ ॥ वंशो विस्तरतां यातु राणभूमिभुजामय ॥ यावन्मेरु- धराधारि यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ ४८ ॥ इति श्रीदेवकुमारिकानाम राज- मातृकारितवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ वंशवर्णनम् ॥ मुन्यगसप्तेंदु (१७६७) युतेब्द शुक्रमासे सिते नाग (८) तिथौ गुरौच ॥ पट्टाभिषेकोत्सव- सन्मुहूर्त संग्रामसिंहस्य शुभतदासीत् ॥ ५० ॥ पुरोहित श्रीसुखराम- नाम वृद्ध सुराणामिव यो बृहस्पति ॥ सर्व तनोतिस्म विधि विधानवित् पट्टाभिषेकोत्सवयोग्यमत्रत ॥ ५१ ॥ तीर्थोदकै · कांचन कुंभसंस्थै- र्मूर्द्धाभिषेकोथनृप समंत्रै ॥ ततस्तुनेपथ्यविधिं दधानो धर्माभिमुक्तार्क इवव्यराजत् ॥ ५२ ॥ अशोभतासौ भ्रमुकामुकेन मतगजेनेहमदोत्कटेन॥ क्रामन्पुरीं देवपुरीमिवेंद्रो लोकाभिरामां नरदेवनद्धां ॥ ५३ ॥ यस्याभि- षेकाबुसमार्द्रदेवी यावन्नचास्यायततावदेव ॥ सुदु सह · शत्रुगणै प्रतापो दिगतराण्येवसमभ्यगच्छत् ॥ ५४ ॥ ततोनिजस्योद्धतवंशनामधरम्महोग्रं शवलेशपुत्रं ॥ मेवातिनामेवपराजयाय संग्रामनामानमुपादिशत्स · ॥ ५५ ॥

कायस्थउग्र किलकान्हजिद्यस्तमादिशद्दुष्टवधाय वीर ॥ गतौतु युद्धाय महोजसौतौ यत्रास्ति मेवातिगण सदृप्त ॥ ५६ ॥ म्लेच्छाधिपैस्तैरपि युद्धदक्षैः सग्रामसिंहस्यच योधमुख्य· ॥ घोर महाचित्रकर नियुद्धं देवासुराणामिवतत्र आसीत् ॥ ५७ ॥ तज्जन्यभूमेरिदमतराल पतज्ज्वलद्योतिरिवव्यरोचत् ॥ निस्त्रिंशबाणावलिकुतशक्तिप्रासादिभिस्तत्र दिवापिनूनं ॥ ५८ ॥ दलेलखानो रणरगधीरस्तमानसिहो युधि सजघान ॥ सचावधीत्त समरेपिदेवासुरेद्रलोकं प्रति जन्मतुस्तौ ॥ ५९ ॥ सचित्रकूटाधिपतेर्बलौघस्तद्यावन सैन्यमपिव्यजैषीत् ॥ निशीथिनीसभवमंधकार सूर्यांशुसदोह इवोदिताभ ॥ ६० ॥ बदीमिवोद्‌गृह्य जयश्रिय ते म्लेच्छाधिपेभ्योथ नृपस्ययोधा ॥ न्यवर्तयताशुरणप्रदेशादुद्धृत्य सर्वं शिबिरादिकयत् ॥ ६१ ॥ जयश्रियासवृतसुदरागा अनीनमत् भूमिपहेत्यवीरा ॥ नृपोपिसुप्रीतमनास्तदानीं यथार्हसभावनयाग्रहीत्तान् ॥ ६२ ॥ ततो निष्कटकां पृथ्वीमशासीत् पृथिवीश्वर ॥ सग्रामसिहो विरहत् स्वेच्छया मुदितोयुवा ॥ ६३ ॥ याक्षत्रियाणा किल शस्त्रविद्या अशिक्षतासौ सकलापिनून ॥ मुक्त शरस्तेन विकृष्यवेगात् स्थितिंलभेदेव न कुजरेपि ॥ ६४ ॥ विश्वभरोपि स्वयमेवतावत् सग्रामसिहे वनिपालमुख्ये ॥ तस्मिस्तु विश्वभरक्षमत्व निधाय लक्ष्मी सुखमेव भुक्ते ॥ ६५ ॥ नृपस्य मत्री च विदां वरिष्ठो विहारिदासोतितरांसुधर्मा ॥ कायेन वाचा मनसापि गोपीनाथ समन्वास्त इहावतीर्ण ॥ ६६ ॥ विहारिदासे वरमत्रिमुख्ये सर्वाधिकारेषु नियुज्यमाने ॥ विशोपका विशतिरेवलेख्या धर्मस्य सत्यस्य च शास्त्रविद्धि ॥ ६७ ॥ तस्यैवानुमतेदत्त नृपोदानानिकानिच ॥ पर्जन्य इव सत्येभ्यो द्विजेभ्यरतुनोदित · ॥ ६८ ॥ सदानुकूलेतिकिरातपद्यमस्मिन्द्वये सार्थक तामवाप्त ॥ संग्रामसिहे नृपतौ वरिष्ठे विहारिदासे वरमंत्रि मुख्ये ॥ ६९ ॥ सग्रामसिंहप्रभुणा कथकल्पद्रुम सम ॥ वाछितार्थप्रदोह्येष इष्टार्थाधिकदोनृप ॥ ७० ॥ वरनरपतिसेविताध्रिपद्म· सकलसुखैक निधि· प्रतापशाली ॥ अमरतनुज एष राजराजो हरिरिव शास्तु बुधार्चित पृथिव्यां ॥ ७१ ॥ इति देवकुमारिकानाम राजमातृकृतवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ महाराणा श्रीसग्रामसिंहपट्टाभिषेकादि वर्णन नाम द्वितीयप्रकरण ॥

दाक्षिणात्य इह मत्रशास्त्रविद्दक्षिणादिपदमूर्तिनामभृत् ॥ यो द्विजातिवरमंडलीवृत्तो भाति भर्गइव पार्षदावृत ॥ १ ॥ ग्रामवस्त्रवरभूषणादिभिस्त सदा वरमसावपूपुजत् ॥ चित्रकूटपतिरेवसद्विजं देववद्यमिव पाकशासन ॥ २ ॥ वैद्योवाग्भटसूश्रुतात्रिरचितग्रथाब्धिपारगतो योलोकेष्विहमगलं वितनुते नाम्नाप्यसौ मंगल· ॥ तस्मै क्षीरसमुद्रलब्धजनुषा तुल्या-

लसद्बुद्धये भूपोग्रामवरेणुकार्पणविधि सग्रामसिंहो करोत् ॥ ३ ॥ सवत् खाद्रिमुनींदुभि (१७७०) परियुते ऽब्देशभुसूनोस्तिथौ शुक्रे मासि सितेतिपडितवर शास्त्रार्थ पारगम ॥ काशिस्थोतितरां सुधीर्दिनकर (१) स्तस्मै हिरण्याश्वयुग्ग्राम विप्रवराय यो नृपवर संग्रामसिंहो ऽददात् ॥ २ ॥ वाजपेयमुखयज्ञशालिने पुंडरीकयतिनामबिभृते ॥ ग्राममेबसितवाजिसयुत चंद्रपर्वणि समर्पयत्प्रभु · ॥ ३ ॥ राजतीना च मुद्राणामयुत चद्रपर्वणि ॥ पुंडरीकाय यज्ञार्थमदात्सग्रामभूपति ॥ ४ ॥ अथागमत्कैश्चिदहोभिरासीत्पुनीतमर्द्धोदयनामपर्वणि ॥ दानोदकोत्सर्गमनानरेंद्रो घर्मात्यये मेघइवापिकश्री ॥ ५ ॥ अथो महादेवपरैकचित्तो देवाभिरामो भुवि देवराम ॥ द्विजाग्रणी पुण्यबलस्तदानीं तुलातिरुद्रो विधिनाकृषीष्ट ॥ ६ ॥ द्विजाय सत्पात्रवरायदेवरामायतस्मै नरवाह्ययान ॥ ग्राम हनुमातियनामभाज संग्रामसिंहश्च समर्पयत्स · ॥ ७ ॥ ब्रह्मज्योतिविवक्तस्य गुणा सर्वेप्यशेषत ॥ देवरामस्य विप्रर्षेर्वक्तुकेनेहशक्यते ॥ ८ ॥ ज्योति शास्त्रविदावर सुमतिमान् तलार्थविल्कोविद · शिष्याणां प्रतिपाठनेतिचतुरो भूभृत्सभाभूषण ॥ तस्मै पात्रवराय भट्टकमलाकांताय चार्द्धोदये ग्रामयस्तिलपर्वतादि सहितं सग्रामसिंहो ददात् ॥ ९ ॥ मोरडीसंज्ञया ग्राम विश्रुत विश्वमडले ॥ कमलाकातभट्टाय सग्रामेशो ददात्प्रभु ॥ १० ॥ हेमहस्तिरथदानमाददतो दीप्तिमानवनिपाकशासन · ॥ वधुरोद्धुरसमिद्धसिधुरानेकलिगशिवतुष्टये ददात् ॥ ११ ॥ श्री मत्सग्रामनृपतिर्जीयात्सशरदांशत ॥ पात्राय प्रत्यह दत्ते हेममुद्रायुतां च गां ॥ १२ ॥ इतिश्री वैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ प्रकरण ॥

सग्रामसिहजननी चाहुवाणान्वयोद्भवा ॥ पितुर्वंशोद्भवं तस्या ऋत : परमिहोच्यते ॥ १ ॥ पुरामहांस्तक्षकनागराज उत्तंगनाम्न किल कर्णभूषां ॥ हृत्वागमद्भूतलमेवसद्यो मुनिस्ततश्चातितरांचुकोप ॥ २ ॥ काष्ठांग्रहीत्वाथखनतमुच्चैर्मुनिं विलोक्याथ सुराधिराज ॥ द्विजकृपामार्द्रमनादयालुर्वज्रं मुमोचाथ धराविदारि ॥ ३ ॥ तेनैव मार्गेण च लब्धभूपो द्विज · परतुष्टमनाबभूव ॥ तद्गर्त्तपूर्त्यै तु वशिष्ठनामा यत्नंचलोककृपयावतिष्ठत् ॥ ४ ॥ हिमालय याचितवान्मुनींद्रस्तद्गर्तपूर्त्यै सुतमेकमेव ॥ दत्तेन तेनाद्रिवरेण

---

(१) दिनकरभट्टको कोधाखेड़ी ग्राम हिरण्याश्वदानमें दिया था, वह ग्राम उसके पौत्रने कविराजा श्यामलदासजीको बेचा है. इस प्रशस्तिके अन्तमें उसके ताम्रपत्र वगैरह दिये गये हैं

गर्तपूर्तिचकाराहितकृत्य आसीत् ॥ ५ ॥ भुवोथरक्षार्थमनल्पबुद्धि मखंदधौ वीरवरस्यलिप्सु ॥ हवींषितस्मिन्नजुहोत्स मन्त्रैरमोघसिद्ध्यर्थकरैर्वसिष्ठ ॥ ६ ॥ तस्मादकस्मादथ वन्हिकुडात् कृतांततुडादिव चडरूप ॥ दोष्णश्च-विभूच्चतुरे ऽ वतीर्णे क्षात्रोत्रतस्माद्भुवि चाहुवाण ॥ ७ ॥ सचाहुवाण प्रथितो-त्रनामा धरामरक्षच्चतुरगसङ्ग ॥ श्रीशभरे पत्रवरेथ राजश्रिय दधे वीरवरैर्वृत सन् ॥ ८ ॥ तदन्वया क्षीरमहार्णवादिव क्षपाधिनाथोभ्युदयाय भूमौ ॥ सग्रामराव खलु भूरितेजा सचित्रकूटाधिपमन्वगाच्च ॥ ९ ॥ तच्चित्रकूटाधिप-ति समीक्ष्य योधारमुन्नद्धबलप्रभावम् ॥ अस्थापि राज्ञा बहुमानपूर्व सचाहु-वाणान्वयवशदीप ॥ १० ॥ तत्सूनुरुग्र परमप्रतापी प्रतापरावो रवरुग्ण-शत्रु · ॥ चातुर्यवित्तैकनिकेतनय सुनीतिनैपुण्यविधिर्विधिज्ञ ॥ ११ ॥ सएवराव प्रसमिद्धतेजा लेभेथपुत्र बलभद्रसङ्ग ॥ कृष्णाग्रजात्पूर्वबललहेतो सेनाप्यवाप्ता बलभद्रसज्ञा ॥ १२ ॥ तदात्मजन्मा किल रामचद्र श्रीरामपादा-बुजचित्तवृत्ति ॥ धूर्यो महावीरवृतलभाजा पण्याधिचित्तैकरुचिर्बभूव ॥ १३ ॥ तस्यात्मज सबलसिह इतीरिताव्हो धाम श्रिया च यशसां च महागुणानां ॥ य सामदामविधिभेदविनिग्रहाणां सम्यग्नियोगविधिवत्प्रबलोबभूव ॥ १४ ॥ तदात्मज श्रीसुलतानसिह स्थान तदीय विधिवत्प्रशास्ति ॥ अर्द्धोदयेरूप्य-तुलादिदानावलिर्वितेने विधिनाथतेन ॥ १५ ॥ तस्माद्गुणाब्धे सबलाभिधाना-द्रमेवसाक्षादुदिता भवद्या ॥ पितुर्गृहे वर्धत सद्गुणौघैर्नाम्ना युता देवकुमारिकेति ॥ १६ ॥ पित्राथ दत्ता सबलेन राज्ञा वराययोग्यामरसिहनाम्ने ॥ भीमेन कृष्णाय महोग्रधाम्ने धामाभिरामा किल रुक्मिणीव ॥ १७ ॥ ततोग्रराज्ञी जयसिंहसूनो-र्जाता महापुण्यपवित्रमूर्ति ॥ रमेवसाक्षान्मकरध्वजसा सग्रामसिह सुतमा-पदीड्य ॥ १८ ॥ वैकुठलोकश्रयतीड्यजेशभूपाधिनाथे ऽ मरसिहराज्ञि ॥ तदा-त्मज शक्रइवाथ पृथ्वीं दिवं दिनेशप्रतिम प्रशास्ति ॥ १९ ॥ माता तदीयाथ विचार्य चित्ते धर्मार्थबुद्धिं विदधीतनित्य ॥ उत्कर्षमापादयतिक्षणेन धर्मो जनैराचरितो हि सम्यक् ॥ २० ॥ तुलात्रय राजतमुद्विधाय दानान्यनेकानि च सुव्रतानि ॥ शिवालयस्योद्धरणाय बुद्धिर्दध्रे तया तीर्थवरस्यसीमा ॥ २१ ॥ पूर्वे तुलासा ऽ मरसिहभर्तुर्निदर्शितो धत्तमुदैव राज्ञी ॥ तया द्विजालि · पृथिवी-वत्पृथ्वा पुष्टा ऽ भवत्तुष्टमना नितांतं ॥ २२ ॥ तुला द्वितीयापि तयाव्यधायि श्रीएकलिगेश्वरसन्निधाने ॥ ग्रहे विधोश्चद्रकुमारिकाख्या सुतांच पौत्रं विधिवद्विधाय ॥ २३ ॥ तुलां तृतीयां विधिनाव्यकार्षीत्सग्रामसिंहस्य नृपस्य माता ॥ अर्द्धोदये पर्वणि चान्यदानै : सहैवसा देवकुमारिकेय ॥ २४ ॥

ईशोहि कात्या रमतीतिहेतो श्रीशारमग्रामवरोयदास्ते ॥ शिवस्थिति तत्र विलोक्यदेव्या प्रासादसिद्ध्यर्थमकारि बुद्धि ॥ २५ ॥ सदश्मसघट्टितरूपराशि शिवस्थितिप्रोज्झितकल्मषौघ ॥ सुवर्णशृगप्रतनाद्धुतश्री प्रासादईशाद्रिरिवाबभास ॥ २६ ॥ राहप्पनामा किल भूसुरेशो य · श्रीनिवास शुभधर्मधामा ॥ तत्पुण्यकर्माणि कवि कथचित् सख्या विधातु निपुणोपिनेष्टे ॥ २७ ॥ तज्ज्ञातिवर्गार्पितसद्दुकूल पात्रादिक रायमिहोग्रबुद्धि ॥ शिवालयस्योद्भवकर्मसिधौ स श्रीनिवास कुशलन्ययुक्त ॥ २८ ॥ तत्र स्वादूदक कुड व्यधत्तरावलात्मजा ॥ धर्मकर्मार्थसिध्यर्थ जनाना च सुखाप्तये ॥ २९ ॥ इति श्रीदेवकुमारिकानाम्नि राजमातृकृतवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ चाहुवाणोद्भवप्रकरण चतुर्थं ॥

अथ प्रतिष्ठां विधिवद्व्यकार्षीच्छुभे मुहूर्ते सति राजमाता ॥ आहूय सर्वाश्च पुरोहितादीस्तान् भूमिगीर्वाणवरान्सुवद्यान् ॥ १ ॥ तस्यास्ति मंत्री हरजीतिनामा गुणाधिक पुण्यभृतांवरिष्ठ ॥ य सर्वकार्याणि निदेशमात्रात् सदाकरोत्येव सुबुद्धिराशि ॥ २ ॥ प्रेमाभिधाकापि च राजमातुर्विश्वासपात्र परिचारिकाभूत् ॥ तस्यासुतो बुद्धिबलैकसिधुर्लोकैर्य ऊदाभिधयाभ्यधायि ॥ ३ ॥ ऊदाभिध बुद्धिमतांवरिष्ट तदर्हवक्तु प्रतिपादनेषु ॥ समादिशत्सर्वगुणोपपन्नमुदारचित्ताजननी नृपस्य ॥ ४ ॥ ऊदाभिधानो तितराचदक्षस्तत्कर्मसिधौ कुशलस्तरस्वी ॥ पुजीकृतान्वस्तुचयान्समग्रान् बुद्ध्याचिनोत्सर्व हितार्थबुद्धि ॥ ५ ॥ यज्ञागसामग्रविधि व्यधत्त पुरोहितश्रीसुखरामसज्ञ ॥ सग्रामसिहस्य यथेवजिष्णोर्महीमहेद्रस्य गुरुर्गुरुर्य ॥ ६ ॥ विचार्यतेनाथ पुरोहितेन वृत्ताद्विजास्तत्र वसिष्ठकल्पा ॥ द्विजातिसघ खलुसर्ववेदपारायण चात्र समध्यगीष्ट ॥ ७ ॥ वेदध्वनि सोप्यथतुर्यनादै· सवर्द्धितो शोभत दिग्विदिक्षु ॥ केकारव सुस्वरमडितागो घनाघनस्यस्तनितैरिवेह ॥ ८ ॥ हव्यैर्हुतैश्चातितरास मत्रै· सौहित्यभाजस्तुसुरा अभूवन् ॥ भोज्यैरनेकैरचितैश्चतुर्धा वर्णाश्रमा भूमिगता इवात्र ॥ ९ ॥ अथोभ्यगछत् किलराजमाता वेदि च तत्कर्मविधि विधित्सु ॥ पुरोहितस्यानुमतेनदानैर्धरासुराणामपि तर्पणाय ॥ १० ॥ तुलांचतुर्थीमिव तत्र देवी चरीकरीति स्म विधिप्रयुक्ता ॥ एकीकृत पुण्ययश समूह सरूप्यराशिस्तुलितो विभाति ॥ ११ ॥ वाराणसीस्थोप्यथचेदुभट्ट सुपडित पत्रवरस्तपस्वी ॥ तस्मै गजोग्रामवरश्चदत्त सदक्षिणासयुतमानपूर्व ॥ १२ ॥ रथाश्वनरयानादि भूहिरण्यादिकबहु ॥ अदाद् द्विजेभ्य पात्रेभ्यो राज्ञी शकरतुष्टये ॥ १३ ॥ शब्द सश्रूयते तत्र दीयतांभुज्यतामिति ॥ दीनानाथादयोप्यत्र मोदेरन्स्तुष्टमानसा·

॥ १४ ॥ प्रासादवैवाह्यविधिदिदृक्षु कोटाधिपो भीमनृपोभ्यगछत् ॥ रथाश्वपति-द्विपनद्धसैन्यो दिल्लीपसमानितबाहुवीर्य ॥ १५ ॥ योडुगरास्यस्य पुरस्यनाथो दिदृक्षया रावलरामसिह ॥ सोप्यागमत्तत्र समग्रसैन्यो देशातरस्था अपिचान्य-भूपा ॥ १६ ॥ देवालयाद्योजनभूमिरेषा नृपैर्जनै सघवती तथासीत् यथा समुच्छालित मुष्टयोंपि तिलस्तलनेयुरहो धरिण्या ॥ १७ ॥ सव-द्रुजाब्धिमुनिचद्रयुताब्द माघे शुक्ले विशाखतिथियुग्गुरुवासरेच ॥ श्री-वैद्यनाथशिवसद्मभवा प्रतिष्ठा देवी चकार किल देवकुमारिकाख्या ॥ १८ ॥ शेषनागमणिसुप्रभावलीभूषितोद्धतजटाकलापक ॥ कोटिसूर्यसमभासमन्वितो वैद्यनाथ इह भूतयेस्तुन ॥ १९ ॥ हेतुरेवच गुणत्रयस्यय सिद्धिद स्वभज-नार्द्रचेतसां ॥ शैलजारुचिविभूषिताद्धर्क वैद्यनाथमिहत नमाम्यह ॥ २० ॥ विष्टपत्रितयवदितेनवा वाग्मनोनिगमहात्म्यशोभिना ॥ सौख्यदेनचयुनकु मन्मनो वैद्यनाथचरणाबुजेनतु ॥ २१ ॥ ससृतेर्भयहराय सेवनात् त्र्यबकाय मदनांतकाय च ॥ शीतदीधितिलसत्किरीटिने वैद्यनाथगिरिशायतेनम ॥ २२ ॥ वेदगीतिमहिमोद्धताद्विभोर्भूतिभूषिततनोर्महेशितु· ॥ ब्रह्मण परमतत्वमस्तिनो वैद्यनाथगिरिशादत पर ॥ २३ ॥ वेदमत्रविधिवत्सपर्यया पूजितस्य विबुधैरहर्निश ॥ भक्तिरस्तुसकलाघहारिणी वैद्यनाथपरमेश्वरस्यमे ॥ २४ ॥ अष्टसिद्धि परिचारिकाते नाममात्रजपतातुसिद्धिदे ॥ बुद्धिरस्तु विमलाद्यमेसदा वैद्यनाथउमया विराजते ॥ २५ ॥ आर्तिभजनकृपैकवारिधे राजराजविधि-सेवित प्रभो ॥ मन्मनोस्तु तव पादपकजे प्रार्थनेति ममवैद्यनाथ भो ॥ २६॥ हरिश्चद्रनाम द्विजन्माभ्यभाणीदिदवैद्यनाथाष्टक भक्तियुक्त ॥ प्रभाते पठेत् स्तोत्रमेतन्नरोयो मनोवाछितार्थांचसिद्धि लभेत ॥ २७ ॥ इतिश्री-देवकुमारिकानाम राजमातृकारितवैद्यनाथप्रासादप्रशस्तौ प्रतिष्ठाप्रकरणं पचमम् समाप्तिमगात् ॥ श्रीरस्तु

पचद्वीपमुनींदुसंमितशरच्छुक्लासिता ऽ द्रीद्रजा दास्रे सूर्यसूतान्विते द्विज-वरो गोवर्द्धनस्यात्मज प्रत्यर्थिक्षितिभृत्पराजयकर· श्रीमडित — — — — — पामतरेश्वरस्य वचनात् श्रीरूपभट्टो लिखत् ॥ १ ॥ सवत १७७५ वर्षे ज्येष्ठवदि तृतीया ३ शनौ लिपिकृतं भट्ट गोवर्द्धनसुतेन रूपजिता श्रीरामकृष्णाभ्यां नम ॥

प्रशस्ति नम्बर २ के प्रकरण ३ श्लोक ४ मे दिनकरभट्टको हिरण्याश्व दानमे गांव कोयालेडी, जो महाराणा सग्रामसिंह दूसरेने दिया था, उसको दिनकर भट्टके

प्रपौत्र रामभट्टने कविराजा श्यामलदासजीको उन्हीं अपने हुकूक समेत बेचदिया, उसके बाबत काग़ज़ातकी नक्ल यह है -

ताम्रपत्रकी नक्ल
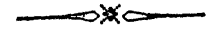
श्री रामोजयति

श्री गणेस प्रसादातु　　　　श्री एकलिंग प्रसादातु.

॥ महाराजाधिराज महाराणा श्रीसग्रामसिंहजी, आदेशातु, भट्टदिनकर महादेवरा न्यात महाराष्ट्र कस्य, ग्राम कोद्यापेडी पडगने भरषरे पेहली थारे पटेथो, सो हिरण्याश्व महादान जेठसुदि १५ भोमेरे दिन दीधो, जदी दक्षिणारो लागत षडलाकड गामटका केलुपुट तथा सर्वसूधी ऊदक आघाट करे श्रीरामार्पण कीधो, दुवे श्रीमुष स्वदत्तां परदत्तां वा ये हरति वसुधरा षष्ठि वर्ष सहस्त्राणि विष्टाया जायते क्रमि प्रतदुवे पंचोली बिहारीदास, लिषत पंचोली लषमण छीतरोत. स० १७७० वर्षे दुती असाढ सुदी १२ भोमे

रामभट्टकी अर्ज़ी और महाराणा
साहिबके हुक्मकी नक्ल

॥ श्री रामजी

श्री एकलिंगजी

॥ नकल अरजी रामभट चरण कासीनाथ, बषिदमत श्री जी हजूर दाम इकबालहू मारुजा असाड सुद ७ स० १९४० का.

चुकी साओेलको करजदारीकी
तकलीफ पूरी हे, ओर इसने रुपैयेभी
लेलिये हे, ओर करज दारीसे तग व
लाचार होकर रजस्टरी होजानेकी
अरजी पेसकी, अलावे इसके इस
तरह होनेमेभी यह गाम उसी हालत
सासणमे रहेगा, जेसे साएलके था,
इसलिये हुक्म हुवा,
नम्बर १, महकमे रजस्टरीमे
लिषाजावे, कि साएलकी तकलीफातका
षयाल फरमा रजिस्टरी होजानेकी
दरषास्त षास हालतमे ईसीके वास्ते
मजूर फरमाई गई हे, सो रजस्टरी
करदेवे. स० १९४१ सावण वीद १३,
ता० २१ जोलाई सन् १८८४ ई०
छाप-
दस्तखत-

फ़ारसी दस्तखत मुन्शीके

॥ अपरंच ॥ मारो गाम १ कोयाषेडी, कपासण प्रगणे हे, सो अबार मे कविराजाजी सावलदासजीने विकाव रु० १२००१) अषरे बारा हजार एकमे करदीदो, जीरो

खत माड दीदो, सो खतपर रजस्टरीको हुक्म हुओ चावे, मारे क़रजदारीकी बहुत तक्लीफ़ है, और मारे पिता गोविंद भटजीका काशीजीमे देहांत होगया, और श्री खाविंदा का शुभचिंतकहा, वीसु पाच रुपया जियादा खर्च पड्या, और आगे पण मारी कन्यारो विवाह कस्यो जीमे पण पाच रुपया खर्च पड्या, सो देणा है, और आगे मारे पिता गोविंद भटजीरा हात सु करजदारीमे यो गाम रु० ८००० मे गेणे है, फेर मारे अतरो सबब हुवो जीमे पांच रुपया खर्च पड्या, जीसु गाम म्हे विकाव करदीदो है, सो षत ऊपर रजस्टरीको हुकम हुवो चावे मारे या करजदारा आगे बहुत अरचन है, सो श्री जी हुज़ूर खाविंदी कर हुक्म रजस्टरीको बख़्शे, या मारी अर्ज़ है, फ़क़त

किर्श्रत समाश्रत

द नाथूलाल प० द · अबालाल प०

महद्राज्य सभाका रुक्का

श्री एकलिंगजी श्रीरामजी

नम्बर ९८

॥ कविराजाजी श्रीश्यामलदासजी योग्य, राजे श्री महद्राज सभा लि० अपरच– गांव कोद्याखेडीका रामभट काशीनाथने गांव मजकूर रु० १२००१ मे राजके हात बेच रजस्टरी होजावाकी दर्ख्वास्त श्री जी हुज़ूरमे पेश की, अर सायलकी लाचारी और क़रज़दारी देखके वींकी तक्लीफ रफ़े करनेकी गरजसे रजस्टरी करादेवाको हुक्म श्री जी हुज़ूर दाम इकबालहूसे हुवा, जो तामीलन रजस्टरीमे लिखा गया है, और नक़्ल उस हुक्मकी इत्तिलाअन राज पास भेजी जाती है फ़क़त स० १९४१ का सावण विद ११ ता० २२–७–१८८४ ई०

छाप–

हस्ताक्षर– मोहनलाल पड्याका

शेषसंग्रह नम्बर ३

(यह प्रशस्ति बेदले गांवकी सुर्तानबावमे अन्दर जाते हुए बाई तरफके आलेमें है.)

श्री गणेशगोत्रदेव्या· प्रसादात् ॥ श्री रामजी सत्य है जी ॥

स्वस्ति श्रीमंगलाभ्युदयाय अद्यश्रीब्रह्मणोद्वितीयप्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे श्रीवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतिमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जंबूद्वीपे

आर्य्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्त्तैकदेशे कुमारिकानाम्नि क्षेत्रे स्वस्ति श्रीनृप विक्रमातीतशालिवाहनकृतराज्ये सवत् १७७४ वर्षे शाके १६३८ प्रवर्त्तमाने उत्तरायणगते श्रीसूर्ये मासोत्तममासे वैशाखमासे शुक्लपक्षे पूर्णमासीतिथौ घटी ३६ स्वातिनक्षत्रे घटी ५६ सिद्धिनामयोगे घटी ४२ मेदपाटदेशे नगरउदयपुरमध्ये महाराणाजी श्रीसग्रामसिहजी त्रातराज्ये महाराजाधिराजगोब्राह्मणप्रतिपालकशरणागतवत्सलगगाजलनिर्मलस्य उभयकुलप्रकाशनमार्तंडचहुवाणकुलउत्पन्नस्य वत्सगोत्रस्य आशापुरावरलबधस्य महारावजी श्री बलभद्रजी सुत महारावजी श्री रामचद्रजी सुत महारावजी श्री सबलसिघजी सुत महाराजाधिराजमहारावजी श्रीसुर्ताणसिहजी सप्तगोत्र एकोत्तरशतकुल स्वयमात्मा उद्धारणार्थ वापी हरिमन्दिर वाग कृता नानानामगोत्र महाराजाधिराज महारावतजी श्रीनेतसिंहजी, सुत रावतजी श्रीजगनाथजी, सुत रावतजी श्रीमानसिहजी, तस्य पुत्री राजश्री बाई श्रीअनदकुवरजी तस्या कुक्षे पुत्ररत्न महारावजी श्रीसुर्तानसिहजी, वापी हरिमदिर बाग् निमितार्थे · ज्यागतत्र · १३००१ बावडी तथा हरिमदिर कमठाणा लेखे ६०७७९ श्रीदीवाणजी बाई राजकी देवकुवर बाई गोते पधारया, सो खरचाणा जणीरी वीगत २२६६६, घोडा ५६, खरच्या ८६००, सीधो खरचाणो १५१३, गेणो खरचाणो ७०००, कपडा खरचाणा ७५००, रोकड़ खरचाणा जीरा रुपया ६०७७९ हुवा, कमठाणा बागरा हजार तेरा वीगेरा साव सर्व जमा रुपया ७३७८०; सरब सुधी खरचाणा सवत् १७७४ असाढ सु० १ रवे साह सुजारा परधाना माही कमठाणो हुवो लिखित मावट किरपारां गजधर, उदा सोमपुरा

शेषसग्रह नम्बर ४

श्रीगणेशायनम ॥ श्रीअबिकायैनम ॥ अस्ति श्रीमानमानुर्वीमडले-खडमडले॥ जबूद्वीपगते खडो भारतोतिसुभारत ॥ १ ॥ तत्रदेशा नृपावेशा कामसति सहस्रश ॥ तथापि सप्तशसति गुणा वागडनामभि ॥ २ ॥ पचत्र्यंश-शतान् ग्रामान् विविधाभूतिभूतय ॥ बहुदवोलया यत्र यत्रपुण्यजनाश्रित ॥ ३ ॥ यत्र तीर्थान्यनेकानि यत्र धर्म सतातन ॥ तत्रदेशे महानद्यो विश्रुता पुण्यवारिणा ॥ ४॥ एव सर्वगुणे देशेनिवेशे पुण्यकर्मणां॥ आस्ते गिरिपुरं नाम

नगर नगरजित ॥ ५ ॥ यत्तदावितत्तोद्यानवापीकूपसरोवरै ॥ शुशुभे शुभपर्यंते- बृहत्प्राकारगोपुरे ॥ ६ ॥ यत्राट्टश्रेणयो नानाविधाविर्भूत भूतय ॥ यत्रागण्यानि पण्यानि पणिन सन्ति वैपुरे ॥ ७ ॥ यत्रासन्रम्यहर्म्याणि यत्राक्षेत्रकुलाश्रिय (?) ॥ विप्रा विप्राकृतायत्र सत्य सत्यव्रतास्त्रिय ॥ ८ ॥ मदुरा सुदरा वाजिराजराजि- विराजिता ॥ शालागृह गजा यत्र रेजिरे राजसद्मसु ॥ ९ ॥ शुश्राव यत्र सतत वेदशास्त्रध्वनिं जन ॥ समेधितसमाधीना पठतामग्रजन्मना ॥ १० ॥ वीराणां रणधीराणा धनुर्विद्याविवादिना ॥ प्रासादानु प्रतिध्वानै र्यद्धनुर्गुण- गर्जिते ॥ ११ ॥ रणच्चरणमजीरै सचार राजवर्त्मसु ॥ शशसुरिव लोकानां नक्त यत्राभिसारिका ॥ १२ ॥ यत्र वेदविदोविप्रा प्रत्यह विहितेष्टय ॥ स्वधर्म- मन्ववर्त्तत स्मृतिससक्तदृष्टय ॥ १३ ॥ राजसवर्हिता पौरा यत्र यत्र महोत्सवान् ॥ परस्परस्पृहावत सत कुर्वतु सतत ॥ १४ ॥ सर्वदा सविधानेन मानेन मह तार्थिने ॥ यत्र दान ददात्येव देहदानावधीकृत ॥ १५ ॥ यत्पुर पुरहूतस्य पुरस्यार्द्धिसमृधिजित् ॥ पुरदरपुरीस्पर्धी यत्रमल्लनृपोभवत् ॥ १६ ॥ राज्ञ सहस्त्रमल्लस्य भोजराजसमप्रभ ॥ सपूर्णकवितामाद्यो धत्तेर्द्धकवितापर ॥ १७ ॥ द्विषत्तापकर्ता दृढश्चापधर्त्ता महासत्वपूर प्रसन्न प्रशूर ॥ कलौय कृपालु कवीद्रैकपाल क्षिति याति धीर क्षमी मल्लदेव ॥ १८ ॥ करधृतशरचाप शत्रुदु सह्यताप प्रबलखलनिहता सुप्रमत्तेभयता ॥ सकलविधिषुदक्ष कल्पनाकल्पवृक्ष समरसमयधीरो राजते मल्लदेव ॥ १९ ॥ महादानकर्त्ता सलीलं विहर्त्ता गुणापारसिधुर्द्विजन्मैकबधु ॥ समुद्यच्चरित्र सदाय पवित्र· सुराजच्छरीर क्षितौ मल्लदेव ॥ २० ॥ तत प्रभुत्व जगृहेथ शक्रात्प्रतापमग्ने- श्चयमाच्चकोप ॥ धनंधनेशाच्छिव विष्णुतश्च शक्ति — — — — स्वरमनुमन्ये ॥ २१ ॥ तत्सर्वमेकीकृतमेवमूहे पचस्फुरद्भूतमहासमूहे ॥ निधाय कर्त्तु भुवि धर्मरक्षां त्रिषुक्षुणात नृपमल्लदेह ॥ २२ ॥ श्रीआशकर्णतनयो हरिचरणपूजने रसिक ॥ राउलसहस्त्रमल्लो ज्ञानकलाकोविद सोऽत्र ॥ २३ ॥ तस्यवशे महाराज सूर्यवशसमुद्भर ॥ सराजा पृथिवीपालो भोगयोगरत सदा ॥ २४ ॥ तत्र राउलसहस्त्रमल्लस्य वशनाम लिख्यते आदिनारायण तस्य सुत कमल कमल सुत ब्रह्मा ब्रह्मानु मरिचि मरीचिनु कश्यप . क सूर्य सूर्यनु मनु मनुनु ईक्ष्वाकु ई कुक्ष कुक्षनु विकुक्ष वि जांणु जां पुष्पधन्वा पु अनुरण्य अ काकुस्थ का विश्वावसु वि महापति म. चवन च प्रद्युम्न प्र धनुर्धर. ध. महीदास म यौवनाश्व यौ समेधा स. मांधाता मा. कुरुस्थ. कु प्रबुध. प्र. कुरूस्थ. कु वेण वे प्रथु प्र. हरिहर.

ह त्रिशकु त्रि हरिश्चद्र ह रोहिताश्व रो हरिताश्व ह अबरीष अ ताडजग ता धनुर्धर ध नाडिजग ना धधुमार ध सगर स असमजा अ अशुमत अ भगीरथ भ अरिमदन अ थिरथूर थि थिरुज थि दिलीप दि रघू र अज अ दशरथ दशरथनु श्रीरामचद्र रामनु कुश कु अतिथ अ निषध नि नल न पुडरीक पु क्षेमधन्वा क्षे देवानीक दे अहिबु अ नगु न अहिनगु. अ जितमत्र जि पारिजात पा शीला शी अनाभि अ विजय वि वज्रनाभ व वज्रधर व नाभि ना विजनध वि ध्युपिताश्व ध्यु विश्वतित वि हनु ह नाभिमुख ना हिरण्य हि कौशल्य कौ ब्रह्मिणु ब्र पुष्कर पु पत्रनेत्र प हव्यनेत्र ह पुष्पधन्वा पु धावशद्धि धा सुदर्शन. सु सैहवर्णनू सै अग्निवर्णनू अ विजिरथ वि माहारथ मा हैहय है. माहानद मा आनदराजा आ अचल अ अभगसेन अ प्रजापाल प्र कनकसेन क जितसत्र जि सूजिति सू शिलाजित शि सौवीर सौ श्रुकेत श्रु श्रुमति श्रु चद्रसिंह च वीरसिंह वी श्रुजय श्रु श्रुजित श्रु बीलरा पान शरषी गोत्र गोस्वामी हसनिवास ह विजयादित्य वि येन विजयादित्येन नागराजोपासन कृला तेन पुत्रद क्रतस्यनाम भासादित्य भा ना भोगादित्य भो जोगादित्य जो केशवादित्य के गृहादित्य गृहादित्य दक्षर्णदेशे सर्पापुरपटने निवास गृ भोजादित्य भो बापा राउल बा षुमाण राउल षु गोविद रा गो महिद रा म आलु रा आ भादू रा भा शीह रा शी शक्तीकुमार रा श शालिबाहन रा शा नरबाहन रा न यशोभ्रम रा य नरब्रह्म रा न अबाप्रसाद रा अ कीर्तिब्रह्म रा की नरवीर रा न उत्तम रा उ भालु रा भा सूरपुज रा सू करण रा क गात्रुड रा गा हस रा ह जोगराज रा जो विरड रा वि वीरसिंह रा वी राहप रा रा देदू रा दे नरू रा न हरीअड रा ह वीरसिंह रा वी अरिसिंह रा अ रयणसिंह रा र सामतसिंह रा सा कुवरसिंहरा कु मयण-सिंहरा म रेणसिंहरा रे सामन्तसिंहरा सा अरसींह रा अ रतनसिंह रा र श्रीपुज रा श्रीपु कुरमेर रा कु पदमसि रा प जीतशीह रा जी तेजसिंह रा ते समरसी राउल भूपति भर्तु शाखा द्वितय विभाति भूर्लोके एकानाम्नी राणा-नाम्नी चपरमहती॥ धर्मे यस्य मतिर्नतिर्गुरुजने प्रीति सदा सद्गुरौ दात्रीपात्र गुणाच (?) निर्भयरणे सद्भि सम सगति ॥ गीतिर्लौकिककर्मनर्मसुविधो निर्धूतलोभो-व्रती तेज सिंहनराधिपो विजयतां सप्राप्य राज्य श्रियं ॥ अहह समरसिंहस्तस्य-सूनु सवाह त्रिभुवनपरिसपत् कीर्तिगगाप्रवाह ॥ धरति धरणिभारं कूर्मपृष्ठा-वतार ॥ निजकरकमलेनाप्यापनायप्रयास अजनिसमरसिंह · कौस्तुभ

क्षीरसिंधो ॥ वि – निधिरधिधामामन्वयायेत्र भूप अधिगतपरिभाग पुंडरी-
काक्षवक्षस्थलपरिसरधृत्या प्राप्तसाम्राज्यलक्ष्मी ॥ दुर्गे श्रीचित्रकूटे विलसति
नृपतौ सर्वसामंतचूडारत्नप्रद्योतताब्जावतवदतिमति दिक्पथ सप्रयाति ॥
सत्य कृष्णातिकृष्णो भवदुचितमिदं कृत्तिवासा शैवोभूत् शीतांशुप्रतिहाय-
यच्छविमतिकलुषां युक्तमेतद्बभार ॥ असुनृसुरजैत्र चित्रकूट पुरास्मिन्
भवति समरसिंहे शासतिक्षोणिपाले ॥ कनककलशहेलिप्रस्फुरद्रम्यजाले
दिनमणिकिरणालीं सप्रकाशेत प्रेक्ष्य ॥ जगति कति न संति प्रार्थितार्थप्रदान
प्रकटितनिजशक्तेर्व्यक्तकीर्तिप्रपंच ॥ परमिह परलोक · श्रीवशीकारसार
श्रयति समरसिंहे दान्तमस्ताभिमांन ॥ क्वचित् कदाचिद्दानांबुहस्तो वर्षति
वा नवा ॥ श्रीमत्समरसिंहस्य एतत् सर्वत्र सर्वदा ॥ तुरगलाला गजदान नीर
प्रवाहयो संगममुद्वहति ॥ अस्य प्रमाणे निखिलापि भूमि प्रयागलक्ष्मी विभरा
बभूव ॥ आकर्ण्य पन्नगीगीत यस्यबाहुपराक्रमं ॥ शिरश्चालनयाशेषश्चक्रेकंप
परंभुव ॥ त्यागेनापि मनोहरेण कृतिनो य कर्णमाचक्षते य पार्थ प्रथयति वैरि
सुभटा शौर्येण सत्वाधिक ॥ यरत्नाकरमामनंति गुणिनो धैर्येण मर्यादया य मेरु-
हि समाश्रयेण विबुधा शसंति सर्वोन्नत ॥ तस्यकालीकन्ह समरसिंह पुत्र रतनसिंह
रा नरब्रह्म रा भालु रा भा केशरी रा के शामतसीह रा शा सिहडदे रा सि.
देदु रा वरसग रा व भचुड रा भ डूंगरसीह रा डू करमसीह रा क कान-
डदे रा का प्रतापसी रा. प्र गेपु रा यस्यगेपालेन गोपिनाथबिरद धृत्वा
तस्यपुत्र शोमदास रा शो गांगु रा गां उदिसिंघ रा उ प्रथीराज रा
राउल प्रथीराज पुत्र आसकर्ण राउल ॥ कर्णं कर्णावतार च सर्वधर्मैक-
साधन ॥ हेमधारप्रवर्षेण गृह पूर्य धरा मरा ॥ भृगुपतिरिव दृप्ता-
रातिसहारवारी सुरगुरुरिवशश्वन् नीतिमार्गानुसारी ॥ स्मरद्रवसुरतेषु प्रेयसी-
चित्तहारी शिवरिव सबभूव त्रीषुसत्वोपकारी ॥ सोपिमित्र कमलानिबो-
धयन् लोकशोकशमलान्यशोधयन् ॥ तेजसाखिलजगत्प्रकाशयन् विद्विषति
निरमा – – – – – – – – – – – राउल आशकर्णयेनराउल आस-
कर्णेन पातसाह अकब्बेरणसार्द्धं युद्धंकृत्वा तस्य राउल आशकर्ण सुत महाराया
राउल श्रीसहस्त्रमल्लगृहे भार्यापट्टराज्ञी चाउडावशे चापोत्कटराज अणहलपुर-
पत्तने निबास राउल श्री बनराजतस्य पुत्रपुजु पुजापुत्र सामतसीतस्य
पुत्रजयसीघदत्त तस्यपुत्र षीमराज तस्यपुत्र चुडराज तस्यपुत्र सवदास
तस्यपुत्र सामंतसी तस्यसुत जेसीगदे तस्यसुत सुरुराउल तस्यपुत्री
सुरजदे नाम्नी राउल श्री सहस्त्रमल्लपट्टराज्ञीतेन सूरिजपुर ग्रामनिर्वास्य

प्रासादोद्धारित अनेकपुण्यदानध्वजाप्ररोहण कृत्वा सवत् १६४७ प्रवर्त्तमाने उत्तरायण गते श्रीसूर्ये ग्रीष्मऋतौ माहा मागल्यप्रदे श्रीमज् ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे ५ पचम्या तिथौ घटि ३४ सोमवासरे पुष्यनक्षत्रघटि २७ ध्रुवनाम्नियोगे बालवकर्णे एवयोगे प्रतिष्ठा कृता राउल श्री सहस्त्रमल्लसुत कुएर श्रीकरमसीगजी कुएरश्रीजसोदाबाईजी तस्यप्रधान नागरीज्ञातीमह भाभलव्यासफाउ गाधीसघासाह कल्यांणमह सोमनाथ प्रशस्तिकृता गोहिलशार्दूलसुत गोहिलदेवा सुतमहेसदास प्रसाद उपरिमहषोषा कोठारीकचरा श्री शुभ भवतु राउल श्री सहस्त्रमल्लजी राणी श्री सूरजदेजीने लेखक दीक्षत वेणीदासे मार्कंड ऋषीश्वरनोउं आयह्यो एहवो आशीर्वाद साभल्योछिजी शुभ दशाअवतार लषिऐछि प्रथम मत्स्यरूपेण प्रविष्ठो जलसागरे ॥ वेदमादायदेवाना सदेव शरणमम ॥ १ ॥ द्वितीय कूर्मरूपेण मदरधारित गिरि ॥ समुद्र मथितं येन सदेव शरणमम॥२॥ तृतीय शुक्ररूप च वाराह गुरुवाहन ॥ पृथिवीचोद्धृतास्येन सदेव शरणमम ॥ ३॥ चतुर्थ नारसिंहच — — — — — — — — ॥ हिरण्यकश्यपो हेता सदेव शरणमम ॥ ४ ॥ पचम वामनरूप ब्राह्मणोवेदपारग ॥ पाताले च बलिर्बद्ध सदेव शरणमम ॥ ५ ॥ जमदग्निसुतश्रेष्ठो पर्शुरामो महाबल ॥ सहस्त्रार्जुन हताच सदेव शरण मम ॥ ६ ॥ सप्तमो दशरथपुत्रो रामोनाम धनुर्धर ॥ रावणश्च हतोयेन सदेव शरण मम ॥ ७ ॥ अष्टमो देवकीपुत्रो वासुदेव इतिस्मृत ॥ कसासुर हतोयेन सदेव शरण मम ॥ ८ ॥ नवमो बुद्धरूपेण योगध्यान व्यवस्थित ॥ गुरुरूपयतिर्जोगी सदेव· शरण मम॥ ९ ॥ दशमो कलियुगस्याते कल्कीनाम भविष्यति ॥ म्लेच्छानां छेदनार्थाय सदेव शरणं मम ॥ १० ॥ एतानि दशनामानि प्रातरुत्थाय य पठेत ॥ तस्यरोगा क्षय याति गृहेलक्ष्मी प्रवर्त्तते ॥ ११ ॥ एदशावतारनु फलभणीहो एते एहनु कल्याणकारी उजे फलहोए ते श्री राउल श्री सहस्त्रमल्लजीनी तथा राणी श्री सुरजदेजीनी फल प्राप्तह ज्यो लेषक दीक्षत वेणीदासे लषूछि सही कदोई काहाना महं आउ आश्रु

यावत् चद्र तपेत्सूर्य तावत्तिष्ठति मेदिनी ॥ यावत् रामकथा लोके अश्वत्थामा स्थिर भवेत्॥ १ ॥ सूत्रधार गोदा तस्यपुत्र हरदास हीरा प्रशस्ति लषी छे.

(यह प्रशस्ति बहुत अशुद्ध है, जैसी मिली वैसी ही दर्ज की है)

शेषसंग्रह नम्बर ५

प्रशस्ति १

श्रीगणेशायनम ॥ श्रीमहागणपतये नम ॥ स्वस्ति श्री जयश्चमांगल्यमभ्यु-

दयश्च ॥ श्रीमन्नृपविक्रमार्कसमयातीतसवत् १६७९ वर्षे शाके १५४५ प्रवर्त्तमाने वैशाखमासे शुक्लपक्षे षष्ठी ६ तिथौ भृगुवासरे अद्येह श्रीगिरिपुरे महाराज श्रीमहाराउल श्री ५ पुजाजी नाम्रा श्रीगोवर्द्धननाथप्रीतये प्रतिष्ठा सहितप्रासादवर उद्धरन् अस्ति स्वस्ति श्रीमन्महाराज · पुंजनामा प्रतापवान् ॥ प्रासाद मुद्धरम् भाति गोवर्द्धनधरस्यवै ॥ १ ॥ नवमुनि रसचद्रै समिते ब्देधरेशो कृतविकृत विहीनश्चद्रम शुभ्रकीर्ति ॥ अमर गिरिवराभ कृष्णदेवस्यरत्यै सकलसुरनिशेष पुजराज · प्रसाद ॥ २ ॥ तत्र सूर्यवशतिलकमहाराउल श्रीपुजाजीकस्यप्रासादोद्धारकारिण · तावत् वशावली लिख्यते ॥ अथ श्लोका ॥ निरजन पूर्वमिदबभूव तदेव नारायणरूपमादात् ॥ नारायणस्योदरनाभिनालाद् विनिर्गत सृष्टिकरो विधाता ॥ १ ॥ मरीचिनामाथ विधातृपत्य य मानस पूर्वमुदाहरति ॥ मरीचि-पुत्र किलकश्यपो भूत् सभूतिनाम्नीयमसोष्ट माता ॥ २ ॥ य कश्यपो गोत्र-कृतावरिष्ठ स्ततोदितो सूर्यभजीजनत्स ॥ वैवस्वतो नाम मनुस्ततोभून् महीभृता-मादिम एष यज्ञा ॥ वेदाक्षराणा प्रणवो यथावत् यमाप सज्ञा तनय नयज्ञ ॥ ३ ॥ इक्ष्वाकुनामा तनय स्ततोभूद् भक्त्याययौ विष्णुमनतवीर्य ॥ तपांसितप्त्वापि-नलब्धपूर्व ब्रह्मोपदेशात् परमापभक्ति ॥ ४ ॥ विकुक्षिमिक्ष्वाकुरवाप पुत्र य शेषशय्या शयन विमाने ॥ आराध्य भक्त्यापरयादिदेव सुखानि भेजे हरितोषणानि ॥ ५ ॥ शशादनामा तनयस्ततो भूद्दनर्पितयत् शसमापिपित्र्य ॥ श्राद्धे शशादेति ततोस्यनाम कर्मानुरूप कृतवान् वसिष्ठ ॥ ६ ॥ ततः परतस्त्र भव प्रपेदे ककुत्स्थनामा पृथिवी समग्रां ॥ ककुत्स्थितोयो वृषभाकृतेर्हि व्यजेष्ठ शक्रस्य पुरारिवर्ग ॥ ७ ॥ नाम्ना अनेनास्तनयस्तदीयं पैत्र्य पद प्राप्यतती-नरेंद्र ॥ नाम्ना ययुस्तत्तनयोधिजात तस्यावसाने पृथिवी शशास ॥ ८ ॥ तस्यापिनाम्ना किलविष्टराश्व सुतोधिजज्ञे विधुशुभ्रकीर्ति ॥ आयार्द्र इत्युद्गतना-मधेयो मही समग्रा क्षितिप शशास ॥ ९ ॥ पुत्रप्रपेदे युवनाश्वमेष श्रावतनामा तनयस्तदीय ॥ नाम्नापरीयेन विनिर्मिताभूत् श्रावतनाद्यो पवनाप्तशोभा ॥ १० ॥ हिलोपभोगांस्तपसोत्तमेन त्रिविष्टपप्राप्तवतिक्षितीशे ॥ तदात्मजोसौ बृहदश्वनामा बभूवनामा किलचक्रवर्ती ॥ ११ ॥ तस्याभवत्सूनुरुदारवीर्य कुशब्दपूर्वे वलयाश्वनामा ॥ यस्याभवत्पूर्वमथापिहत्वा बभूवधुधु किलधुधुमार ॥ १२ ॥ दृढाश्वनामा तनयस्तदीयो महारथोसौ महनीयकीर्ति ॥ तस्यापि हर्यश्वइतिप्रसिद्धो निकुंभनामास्य सुतोबभूव ॥ १३ ॥ ससहताश्व तनय प्रपेदे कृशाश्वनामा तनयस्तदीय· ॥ प्रसेनजिव्हास्य सुतो बभूव जातो यतो वै युवनाश्वनामा ॥ १४ ॥

मांधातृनाम्ना तनयोस्य जात स सार्वभौम पुरुकुत्समाप॥ स आप पुत्र त्रसदस्युसञ्ज सभूतनामास्य सुतो धिजज्ञे ॥ १५ ॥ तदात्मजश्चापि सुधन्वनामा विधन्वनामापि तत परोभूत् ॥ अथारुणस्तत्परमापधर्त्री महानुभावो महनीयकीर्ति ॥ १६ ॥ सत्यव्रतस्तत्तनयो धिजातो यो यौवराज्ये किल सप्तपद्या ॥ जहार कस्यापि विवाहकाले कन्या निरास्थद् गुरुरस्यकोपात् ॥ १७॥ पित्रा निरस्तावनमाजगाम दुर्भिक्षकाले थ गुरोर्हरन् गा ॥ आप्रोक्षिता ता स्वभुजे बभार स कौशिकस्यापि कलत्रमत्र ॥ दोषत्रयापादनतो वसिष्ठस्त्रिशकुनामानमथाभ्यषिचत् ॥ १८ ॥ तदात्मज सागरधीरचेता नाम्ना हरिश्चद्र इति प्रसिद्ध ॥ तदात्मजो रोहितनामधेय-स्तस्यापि पुत्रो हरितो बभूव ॥ १९ ॥ तस्यात्मजश्चचुरिति प्रसिद्धस्तस्यापि पुत्रो विजयो बभूव ॥ तदात्मजो ऽभूद् रुरुको महात्मा वृकोभवत्तस्य ततोपि बाहु ॥ २० ॥ कृते युगे बाहुरधर्मबुद्धि शकैर्निरस्तो वनमाजगाम ॥ तत्रापपुत्रं सगर गराढ्य स भार्गवादस्त्रमवाप चोग्र ॥ २१ ॥ अवाप्य चास्त्र जितवान् शकान् स इयाज राजा क्रतुभि कृतात्मा॥ कृतेयुगे तस्यसुतो समजा स अशुमत तनय प्रपेदे॥ २२ ॥पुत्रो दिलीप प्रथित पृथिव्या खट्वांगनामा खलु तस्य जज्ञे॥ यो मृत्युमात्मीयमसौ विदित्वा मुहूर्तमात्रेण बभूव मुक्त ॥ २३ ॥ भगीरथस्तस्यसुतो बभूव भागीरथी यो भुवमानिनाय ॥ तस्यापि पुत्र सुतनामधेयो नाभागनामान-मवाप पुत्रं ॥ २४ ॥ ततोबरीष किल विष्णुभक्तो द्वीपातसिन्धूपदपूर्वनामा ॥ ततो युताजिद्दतुपर्णमाप कृते युगे यस्य नल सखाभूत् ॥ २५ ॥ सुदासनामाथ भुवप्रपेदे कल्माषपादश्चतत परोभूत्॥ स सर्वकर्माणमवाप पुत्र॥ ततो नरण्यस्त-त एवनिघ्न ॥ २६ ॥ पितुरनतरमुत्तरकोशलान् दुलिदुह प्रशशास नराधिप ॥ अथ दिलीप इति प्रथितो भुवि रघुरतोपि ततो प्यजसञ्ज्ञक ॥२७॥ दशरथ प्रशशा-स ततो महीमनघकीर्तिरुदारविचेष्टित ॥ तदनुराग इतिप्रथितो भुवि हरिरभूद्र-जनीचरदर्पहा ॥ २८॥ तत पर तत्प्रभव प्रपेदे कुशाग्रबुद्धि कुशनामधेय ॥ कुमुद्वती नाम य आप कन्या नागस्य पुत्रीं कुमुदस्य साध्वी ॥ २९ ॥ तस्या-तिथिर्नाम सुतोपपन्न कुशोपिजयात् (?) विधिना विपन्न ॥ तस्यापिनाम्ना निषधोभिजज्ञे नलस्ततो भून्नभआसपश्चात्॥ स पुडरीकं तनय प्रपेदे स क्षेमधन्वा-नमवाप पुत्र ॥ ३० ॥ अनीकशब्दातमभूव यस्य देवादिनामा स च तस्यपुत्र ॥ अहीनगुर्नाम सुतोस्य जज्ञे सुधन्वनामा तनयश्च तस्य ॥ ३१ ॥ शील सुतोभूदथ उत्थनामा तस्यापि पुत्र किल वज्रनाभ ॥ नलस्ततो भूद्ध्यूषिताश्वनाम तस्यापि पुत्र तत आसपुष्य ॥ ३२॥ तस्यार्थसिद्धिस्ततएव जज्ञे सुदर्शनस्तस्य हि चाग्निवर्ण ॥ तस्यैव पत्नीं सहपुत्रगर्भामथाभ्यषिचत् विधिना वसिष्ठ ॥ स शीघ्रनामाजनितो

जनन्या प्रसुश्रुतस्तस्य तत सुसधि ॥ ३३ ॥ नाम्ना सहस्वानथ तस्य जज्ञे यो विश्रुतो विश्रुतवास्ततो भूत् ॥ ततो मरुत्तस्य बृहद्बलो भूत् कालेयमस्मात्परमाप क्षत्र ॥ ३४ ॥ विजयरथसनामा तस्य पुत्रो बभूव जगति विजयशाली चद्रम - शुभ्रकीर्ति ॥ विदित परमतत्वो भोगशीलो महात्मा भुवनभवनिदान सर्वलोकैक कात ॥ ३५ ॥ महारथस्तत्तनयो बभूव तदात्मजो हैहयनामधेय ॥ ततोमहानद इति प्रसिद्ध आनदराजोस्य सुतो धिजज्ञे ॥ ३६ ॥ तज्जो चलोभून्महनीयकीर्ति रभगसेनस्तनयोस्य जात ॥ तस्य प्रजापाल इति प्रसिद्धो य क्षात्रधर्म प्रथितप्रताप ॥ ३७ ॥ कनकसेन इति प्रथितो भुवि तदनु पार्थिवमडलमन्वशात ॥ यदनु सैन्यमगात् पृथिवीक्षितां सकललोकजयाय यियासत ॥ ३८ ॥ जितक्षत्र सुतस्तस्य सुजित स्तस्य चात्मज ॥ शिलाजित्तनयस्तस्य सावीरस्तस्य चात्मज ॥ ३९ ॥ सुकेतस्तनयस्तस्य सुमतिस्तस्य वै सुत ॥ चद्रसिह सुतस्तस्य वीरसिहोपि तत्सुत ॥ ४० ॥ सुजयस्तस्य पुत्रोभूत् सुजितस्तस्य चात्मज ॥ वैजबापायगोत्रो यो हसवाहनसज्ञक ॥ ४१ ॥ पुरे सर्पान्वयेशोभूद् राजा राजीवलोचन ॥ सूर्योपासनमापेदे गोत्रसज्ञासमन्वित ॥ तत · प्रभृति वश्या ये वैजबापाय गोत्रिण ॥ ४२ ॥ तस्यपुत्रो महात्माभूत् विजयादित्यसज्ञक ॥ सूर्यमाराध्य यल्लब्धो तेनादित्योपनामक ॥ ४३ ॥ नीते सर्पपुरे नागैस्ततोनागहृदे गत ॥ केशवादित्यनामा तु पुत्रस्तस्य महीभुज ॥ नागादीत्यो पि तत्रासीत् गृहादित्यस्तदात्मज ॥ ४४ ॥ भोजादित्यस्ततो लेभे पुत्रवाप्प नराधिप ॥ ४४ ॥ हारीतनामा मुनिरस्य मित्रं गद्यावली येन विनिर्मितास्ति ॥ स एकलिगास्पदमीशमारादाराध्य लेभे किल चित्रकूट ॥ ४५ ॥ हर प्रसन्नो निजभक्तयोरदादेकस्यपार्श्वे किल चडरूपता ॥ वाप्पं स राजानममाद्यवाग्भव स चित्रकूटाधिपमादधे वरात् ॥ ४६ ॥ हारीतराशे कृतसाहचर्यास्तएवलास्यामदधुर्महेंद्रा (?)॥ खुम्माणनामा परमाप पृथ्वी महींद्रनामापि ततो महीश ॥ ४७ ॥ ततो तुलस्तस्य च सिहनामा बभूव राजन्यपति सुधर्मा ॥ शक्तिकुमारसज्ञोथ शालिवाहन सज्ञक ॥ ४८ ॥ शालिवाहन सज्ञेति यदाख्या शाकसुस्थिति ॥ तत कुलेस्मिन्नरवाहनोभूद्बाप्रासादात्स च पुत्रमाप ॥ अबाप्रसादेति ततोस्यनाम भूमडले भूत् प्रथित महत्वात् ॥ ४९ ॥ कीर्तिब्रह्म सुतस्तस्य नरब्रह्मापि तत्सुत ॥ नरवीरोस्य तनय उत्तमोभूत्तदात्मज ॥ ५० ॥ श्रीपुजस्तस्य पुत्रोभूत् कनकोथ महीपति ॥ भादुनामा भवत्तस्य गात्रडस्तस्य चात्मज · ॥ ५१ ॥ स हंसपालाभिधमाप पुत्रं

स वीरडनाम सुत च लेभे ॥ स वीरसिंहं स च देवलास्य निरूपमस्तस्य सुतो बभूव ॥ ५२ ॥ महीशसिंहोस्य सुतोधिजज्ञे सपद्मसिंह सुतमाप पश्चात् ॥ तस्यारिसिंहस्तनयो बभूव सामतसिंहोस्य विभुर्विजज्ञे ॥ ५३ ॥ स जीतसिंह तनय प्रपेदे सएवलोक सकल विजिग्ये ॥ तस्य सिंहलदेवो भूत् देदुनामास्य पार्थिव ॥ वीरसिंहोस्य तनयो वीरसिंहपराक्रम ॥ भूचडस्तस्य पुत्रोभुत् तज्जो डुगरसिंहक ॥ ५४ ॥ तत्पुत्र कर्मसिंहो भवद्वनिपति व्रातसजातकीर्ति ॥ कानडदे थास्य सूनु परपुरपरिखापूरको वैरिवर्गे ॥ ५५ ॥ पातास्यस्तस्य पुत्र समभवदखिला नदकारी जितारि ॥ स्तज्जो गोपालनामा समजनि जनतातापहारी नरेद्र ॥ ५६ ॥ तस्यात्मजो धीरगभीरचेता श्रीसोमदास प्रवरप्रणेता ॥ बभूव तस्यापि सुतो बलीयान् श्रीगगदासो हि रणे विजेता ॥ ५७ ॥ अथास्य पुत्र पद्माप पूर्व यो वैरिवर्गे प्रथितप्रताप ॥ नामास्य यस्योदयशब्दपूर्वं सिंहेति लोकप्रथित नृपस्य ॥ ५८ ॥ तस्यात्मजो महातेजा कामकातिकृपाश्रय ॥ औदार्यधैर्यशौर्याणा पृथ्वीराजो भवन्निधि ॥ ५९ ॥ जगति विततकीर्ति श्र्याश कर्णोरिबाण सुमनासिशयचारु (?) वीरवीर्यापहता ॥ सुसुरतरुलताभोद्बाहु युग्मोधरित्र्यामभवदमलकीर्ति राजविद्याप्रवीण ॥ ६० ॥ आशकर्णो महाराजो महादानानि षोडश ॥ चकार विधिना यत्र दातृतामगमन् द्विजा ॥ ६१ ॥ मनोरथयथातीत याचकेभ्यो ददौ धन ॥ आशकर्णेति तेनास्य चित्यनामामनन्वयात् (?)॥ ६२ ॥ राजाराजीवचक्षु कनकगिरिनिभस्तुल्यकातोधरित्र्या· विद्वान्विद्याप्रवीणो विनयनयवतामग्रणी शौर्यभाजा ॥ मल्लोनाम्नामहात्मा भुवनभवनिधि सर्वलोकैककातो दातात्राताविहर्त्ता पवनजवहरो मध्यवर्ती विविक्त ॥ ६३ ॥ तदात्मज सागरधीरचेता सुकर्मसिंहेत्यभिधानयुक्त · ॥ जघान यो वैरिगण महांत महीतटे शक्रसमानवीर्य ॥ ६४ ॥ अथ प्रासादउद्धारकारी महाराजश्रीपुजराजमहिमा ॥ तदात्मजो वैरिगणैरसह्य सपुजराजो जनतासुखाय ॥ यशो यदीय दिवमतरिक्ष भुवच वर्वर्तिसदैव व्याप्य ॥ ६५ ॥ गगाजल यस्यमुखेघहारि यस्यातरावर्ति हरिस्वरूप ॥ पुरो यदीये भगवान् सलोक सपुजराजो जयताच्चिराय ॥ ६६ ॥ प्रासादवर्गोप्यमुना विधायि गोवर्द्धनोद्धारकृतो निवासे ॥ हेम्नस्तुलादानमकारि येन सुवर्णपृथ्वीमददाद् द्विजेभ्य ॥ ६७ ॥ य कर्मसिंह सुषुवेद मास्या सा राजमातापि समग्रबुद्धिं ॥ सपुजराजो नृपति प्रसाद व्यधत्त गोवर्द्धननाथरत्यै ॥ ६८ ॥ सप्तकोशार्द्धमानेन ग्रामे गाटडीनामनि ॥ निर्मीतवान् तडाग य सागरोपममक्षय ॥ ६९ ॥ रोपितवान् उद्यानं नवलक्षतरुश्रिया ॥ रम्यपुष्पफलोपेतमिद्रस्य नदनं यथा ॥ ७० ॥ अर्थानर्थौ

विचार्यौ यमनियमवतौ यस्य धर्मेस्ति बुद्धि योनाधारे जनानां जगति सदयथा माधवो वासईज्ये ॥ प्रीत कात सुवर्चा मदनसम बभौ भास्कराभ सधन्वी दाता त्राता विनेता धननिचयधव पुजराजा चिराय ॥ ७१ ॥ कोटि पद्म लक्षमित्येवशब्दा सलेबंद्दे बद्धभावा धने ये ॥ तेते सर्वेनेन दत्ते धनौघे लोके लोके छिन्नबधाश्चरति ॥ ७२ ॥ यस्मिन् महीं शासति पार्थिवेंद्रे खलश्च साधुश्च विविक्तवृत्ति ॥ म्लेच्छार्णवो यत्रगत क्षयाय स पुजराजो जयताच्चिराय ॥ ७३ ॥ गृहभूवृत्तिदानेन गृहस्था ब्राह्मणा कृता ॥ श्रीपुंजराजउद्धर्ता प्रासाद वै रमापते ॥ ७४ ॥ यस्मिन्मही शासति पार्थिवेंद्रे मनोपि लोकस्य न पापवर्ति ॥ यो राजवर्य प्रचुरप्रताप स पुजराजो जयताच्चिराय ॥ ७५ ॥ सख्ये यत्कर-वालकालभुजग प्रत्यर्थिकठाटवीरक्त हत निपीय भूरि विशद निर्माति चित्र यश ॥ श्यामो यस्य च वैरिभूतिरमणस्फुर्जत्कृपाणोरगो यत्सूते सितभिन्नमुत्तमयशस्ततपुजराजोचित ॥ ७६ ॥ तत्प्रत्यर्थिमहीभृता ब-त हठात् कठान्विछिद्य स्फुट तत्स्त्रीणा परिपीय हत वपुषा पीता मनोज्ञा छवि ॥ संख्ये यस्य च खड्गकालभुजगी श्रीपुजराजप्रभोर्यत्पीत प्रचुर प्रतापमतुल सूते तदेवोचित ॥ ७७ ॥ प्रासादस्त्रिदशापतेर्मधुपतेर्वैकुंठलोकोपम दृष्ट्वा य सुरभिन्नकार निलय त्यक्त्वापि लोक स्वक ॥ राज्ञो भक्तिवशाद् गत परमुद पुजस्य भक्तप्रिय शश्वच्छातिमुपैतु मा गिरिपुरे लोकोमदात्ते कृते ॥ ७८ ॥ प्रासाद कमलापतेस्त्रिवसन ब्रह्मादयो यत्र वै नित्य दर्शनका-क्षया मधुपतेरायाति विघ्नच्छलात् ॥ इन्द्रो यत्रनुमानभंगभयत पुण्य सुवृष्टो परो भक्त्या पूजयते धरतमचल गोवर्धन भूगत ॥ ७९ ॥ कमलहस-समानकमच्युत सकललोकसमुद्धृतिहेतवे ॥ गिरिपुरे नृपपुजशुभाय वै स्व-यमुपेत्य सदा रमते त्र हि ॥ ८० ॥ प्रदक्षिणप्रक्रमणात् पदे पदे धर्मार्थतुल्य कनकाचलार्पणे ॥ प्रासादवर्य कमलापते शुभ · स्तंभे शुभे पुजनृप-प्रकाशित ॥ ८१ ॥ कृत्वाश्रांतिमुपागतो मरहित दैत्यक्षयं किं ननु तच्छ्राति समुपोहितु (?) हि भगवान् रम्य प्रदेश गत ॥ दृष्ट्वा भक्तनृपास्पद गिरिपुरं तत्रापि भूपान्वये मत्वा पुजगति सुभक्तमधिक तत्रैव वास व्यधात् ॥ ८२ ॥ अव्यक्तरूपो भगवान् गुहासु ग्रावाविलीन किल पुर्वमास्थात् ॥ स सांप्रत पुजनृपेंद्र-भक्त्या व्यक्तस्वरूपेण समुद्गतो स्ति ॥ ८३ ॥ म्लेच्छैर्व्याप्तमिद विलोक्य सकल भूमेस्तल सकर वर्णानां च विलोक्य रम्यविषयं प्राप्तो धुनास्ते हरि ॥ मत्वा भक्त-मिद य विघ्नमधिक पुजप्रभु सर्वदा वास तत्र विरोचयत् ध्वनिमसौ श्रोतुं प्रियं छदसां ॥ ८४ ॥ वेदार्थप्रतिपत्तिशास्त्रमधुना सप्राप्यते वागड़े मत्वैतिप्रवर पुराणपुरुषो

ध्यास्ते तमेवादरात् ॥ ज्ञात्वा पुजपति स्वकीयभजने दाढर्य दधानो हरि वासं तत्र विरोचयत् गिरिपुरे तद्राजधान्या स्वय ॥ ८५ ॥ कला इव कलावत वाचो वाच-स्पतिं यथा ॥ कल्पवृक्ष लता यद्वत् राजपत्न्यो द्रुम श्रिता ॥ ८६ ॥ अथ पत्नीनाम ॥ पूर्वप्रतापा देवी या शेषवशसमुद्भवा ॥ अथ या प्रथमा देवी शोलकी-वशजा हि सा ॥ ८७ ॥ योधपुरे समुत्पन्ना पद्मा देवीति सा मता ॥ ज्येष्ठा झाला-न्वये जाता गुरादेवीति विश्रुता ॥ ८८ ॥ नाम्ना गभीरदेवीति मोहनाख्य-पुरोद्भवा ॥ हाडान्वये समुत्पन्ना चतुरग देवी हि सा मता ॥ राणा-ग्रद्यवशसभूता पाटमदेवीति या मता ॥ ८९ ॥ मेडताख्यपुरे जाता कनका-देवीति सा मता ॥ वीरपूरसमुत्पन्ना अगदेवीति सा मता ॥ ९० ॥ बुन्नपुरे समु-त्पन्ना गगादेवीति सा मता ॥ परमारकुले जाता बहुरगदेवीति सा मता ॥ ९१ ॥ झालान्वये समुत्पन्ना सौभाग्यदेवीति सा मता ॥ पद्मावतीति विख्याता चाहुवाण-कुलोद्भवा ॥ ९२ ॥ नाम्ना शोभाधरा पश्चात्राजपत्न्या प्रकीर्तिता ॥ अथ भ्रातृनाम ॥ भ्राता वीरमजीन्नाम शोभनो ललितान्वय ॥ भ्राता ऽजितसिहश्च जयसिंहस्तत पर ॥ रुद्रसिहस्ततोप्पन्य कुमारो जलजेक्षण ॥ ९४ ॥ अथ कुमारनाम ॥ भाति प्राप्तपरानद शुद्धोभयकुलान्वित ॥ — — — — — — — —

— — — — — — — — क्षण ॥ ९५ ॥ कदर्प इव लावण्य कीर्तिमान् गुणवान् शुचि ॥ श्रीमान् प्रतापसिहाख्य कुमारो भासुरोग्रणी ॥ तत श्रीभाउनामापि कुमारोललिता न्वय ॥ ९६ ॥ श्रीमान् सज्जनसिहेति ततो नाम्नागुणान्वित ॥ एतेकुमारा विख्याता — — — — — — — — — ॥ ९७ ॥ — — — — — — — व्योमाधवपुजश्च-क्षत्रिय ॥ वच्छाख्य महितो विप्र मालजीनाम सद्विज ॥ ९८ ॥ प्रधानो रामजीनामा मुख्योन्ये थाधिकारिण ॥ अथापि भीमजीनामा रघुनामापि तत्पर ॥ ९९ ॥ शिल्प सुत्रामनामापि वाणिग् नारायण पुन ॥ — — — — — — — — — — — — —

— — — — न ॥ १०० ॥ लालजिन् मेघजिन्नाम मेघजीन्मांमजित् पुन ॥ सस्तुतजानीतिकुसुतपूजा लिखित ॥ १०१ ॥ अथप्राकृतवशावलि आदिनारायण कमल ब्रह्मा म — कु-स्थ विश्वावसु महामति च्यवन प्रद्युम्न धनुर्धर महीदास युवनाश्व सुमेधा मान्-धाता. कुरुछ वेन पृथु हरिहर त्रिशकु. रोहिताश्व. अबरीष, ताडजग, नाडीजग. धुधुमार सगर. अ — — — — — — — — — — — — — — — — — —

दशरथ राम कुश. अतिथि निषध नल पुंडरीक. क्षेमधन्वा देवानीक. अहीनगु-जितमत्र. पारिजात. शल्य. वृक्षनाभ. वृक्षधर. नाभि. विजिनध. ध्युषिताश्व. विश्वजित् हनुनाभि — — — — — — — — — — — — — — — — — —

– –द्धि सुदर्शन सिंहवर्णन अग्निवर्ण विजरथ महारथ हैहय महानद अनंदराज. अचल असगसेन प्रजापाल कनकसेन जितछत सुजित शिला-जित सावीर सुकत. सुमति च – – – – – – – – – – – – – – – –
– – – – – –विजयादित्य आसादित्य भोगादित्य योगादित्य केशवादित्य ग्रहादित्य. भोजादित्य अथ राजवशावलि बापो राऊल षुमाण रा गोविंद रा महित रा आलू रा भादू रा सिंह रा शक्तिकुमार रावल शा – – – –
– – – – – – – – – – – – – – – – – – – नरवीर रा उत्तम रा भा-लो रा. शूरपुज रा. कर्ण रा गोत्रड रा हसराव जोनराज रा विरड रा वीरसिंह रा राहप रा देदो रा नरू रा हरीअड रा वीरसिंह रा अरसिंह रा रायणसिंह रा. जितसिंह रा कुअरसिंह रा मयणसिंह रा रयणसिंह रा नारसीह रा आरसींह रा रतनसीह रा. श्रीपुज रा. कुरुमेर रा. पद्मसीह रा जीतसीह रा तेजसीह रा समरसीह रा रतनसींह रा नरब्रह्म रा. भालो रा केशरीसिंह रा. सामतसींह रा सीहडदे राव देदो रा वरसेग रा भचुड रा डुगरसींग रा कर्म-सींह रा कानडदे रा प्रतापसीह रा गेपो रा सोमदास रा गोरा आदसींग रा पृथीराज रा आसकर्ण रा सेहेसमल्लराव कर्मसींहराव ॐ श्री ५ पुजराजो जयति. अथ भ्रातनाम भ्राता जेसींगजी भ्राता रुद्रसींगजी भ्राता वीरमजी भ्राता रांमसींहजी अथ राजपत्नीनाम उं वौ प्रतापदे वौ सोलकणी वौ योधप्री वौ. भाली जेष्टा वौ मालपरी वौ हाडी वौ पाटमदे वौ राणी वौ मारुणी वौ. वीरपरी वौ बभ्राउेरी वौ प्रमार वौ. भाली लाडी वौ चहुआण बडारेण जोधरां. अथ कुमार नाम. कु. गिरधरदासजी कु लालाजी कु प्रतापसींगजी कु भाऊजी कु – –जी अथ –र्श्व नाम दु० न्याइदास वाघेला माधव-दास षडाएता रांमजी महवछा सुत लालजी मेघजी दा सधारण सुत नरीणदा-सजी नितिकु सुत पुजा सुत मुकुद सुत द्वसरदा लिखित मेदपाटि ज्ञात जोसीपुजा सुत हरजी भ्राता हरीनाथ श्रीजीनो भडारी

श्री गणेशायनम स्वस्ति श्री जयोमांगल्यमभ्युदयेषु श्रीगिरपुरनगराधिष्ठाता श्रीसूर्यवशोद्भव महाराउल श्रीआशकरणजी तत्पुत्र महाराऊल श्री सहस्रम-ल्लजी तत्पुत्र महाराऊल करमसींहजी तत्सुत महाराजा धिराज महाराऊल श्रीपुंजराजजी सवत् १६७९ वैशाषशुदि ५ दिने श्री विष्णो गोवर्द्धन नाथजी कस्य गिरपुरीरा प्रसागर सन्निधाने प्रासादा कृत तथाच प्रतिष्ठा कृता तत्तुला सुवर्णस्तुला पुरुष कृत स महाराजा चिरजीवी श्रीपुजराजजी कुवर श्रीगिरध-रदासजी वा माधवकीसोरजी

स्वस्ति श्री डुंगरपुर सुभसुथाने राआंराश्रे महाराऊल श्री पुजाजी आदेशात् वसइग्रामि पटेल जगमाल साहा महीश्रा तथा समस्त गामलोक तथा समस्त डोलीया ब्राह्मण जोग्य समाहुष्टकारजाचजत ओग्राम श्रीगोवर्द्धननाथजीद्वार धरमषाते आचद्रादिक ताबापत्र मुकीछे ते अमारे वशमांहे हुअेतेपाले नांपाले तथानांपालावि तेने श्रीनाथजीनी आंण दुए श्री स्वांप्रतदुवे साहारामजी संवत् १७०० वरषे कारतक शुदी ३ गुरु राजलोक तथा कुअर श्री गिरधरदासजी राणीसेषाउताणी राणीहाडी राणीमिडतणी राणीरणी वडारणशोधर अत्रसाष चहुआंण सुदरदासजी चहुआण भीमजी बाघेला माधवदासजी चहुआण कचरा दोसीसवजी मितागेला मिताअमरजी सुतमिता वाघेजी दवेनईदास सलाट भाणजी लषीत

(यह प्रशस्ति डूगरपुरमे गोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमे है)

दूसरी प्रशस्ति

डूगरपुरमे वनेश्वरमे विष्णुके मदिरकी प्रशस्ति

॥ स्वस्ति श्रीमत् सवत् १६१७ वर्षे शाके १४८३ प्रवर्त्तमाने उत्तरायणगते श्रीसूर्ये जेष्ठमासे शुक्लपक्षे ३ तृतीयाया तिथौ सुमुहूर्त्तयोगे तद्दिने महारायां रायराउल श्री आशकर्णजी विजयराज्ये एव विधे समये श्रीगिरिपुर राजवश-विवर्द्धनसत्कीर्तिसुधाधवलितदिड्मडल श्रीमहारायां रायराउल श्रीपृथ्वीराज-स्य पट्टराज्ञी उभयकुलशुद्धदायिनी तथा श्रीलाछबाई श्रीआशकर्णजी श्री अषिलराजजी रुपसत्सतान सवित्रीबाई श्रीसजनाबाई नाम्नी तयाइय पुरुषोत्तमस्य प्रासादेषु श्रेष्ठ कारित सुप्रतिष्ठित कृत छ श्रीमद्वागडदेश भूमिपतिभिश्रितामणेस्तुल्यतां प्राप्तैर्व्याप्तमिद विलोक्य विशदं रत्नाकराभं कुल ॥ वक्रं किंचिदुदेति वामन इवोच्चाप्ये फले कामना वक्ष्येत कमला करोऽतिरुचि-रांस्तस्मिन्भवाल्लेशत ॥ १ ॥ वर्षे १६१७ सप्तमहीरसेदु मितिके शाके १४८३ त्रिनागाब्धिभू सख्ये ज्येष्ट सुशुक्लवह्निदिवसे श्रीसज्जनाऽत्राख्यया ॥ राज्ञा-कारि मुरारिभक्तिमनसा प्रासादएष ध्रुव क्रीडा चात्र करोतु भक्तिरसिकोलक्ष्म्या नरेषूनम ॥ २ ॥ आसीद्वशस्य कर्त्ता रुचिरतरतनु प्रौढमूलप्रतापस्तापाक्रातारिवर्गो गिरिपुरनिलयो राजभूच्चंडनामा ॥ पातास्य सूर्यवशे समभवदखिलानद कारीजितारि स्तज्जोगोपालनामा समजनि जनतातापहारी नरेद्र · ॥ ३ ॥ राजद्राजगजौघताडनहरेर्यस्यासिचचच्छटात्रस्तव्यस्तपरिग्रहारिपुमृगा प्राप्ता · परंकाननं ॥ तावत्तत्र च तत्प्रतापदहनज्वालादहद्विग्रहा · सौख्यद्वेषविनिघ्नमान

सगणा मग्ना हि मोहाबुधौ ॥ ४॥ तस्यात्माजो धीरगभीरचेता श्रीसोमदास प्रवरप्रणेता ॥ बभूव तस्यापि सुतोबलीयान् श्रीगगदासो हि रणे विजेता ॥ ५ ॥ येनाष्टादशसाहस्त्र बल भग्न महात्मना ॥ इलदुर्गाधिपोभानु भालेगर्जन ताडित ॥ ६ ॥ तुलापुरुषकर्त्ता य स्वर्णभारभवस्यच ॥ द्विजातीना च यो दाता त्राता चौरभयाद्दि स ॥ ७ ॥ आसीद्गगेवसूनुर्नयविनयवतामग्रणी शौर्यभाजा राज्ञामाज्ञा प्रणेता पवनजवहर कल्पवृक्षप्रदाता ॥ याचद्वैरण्यगर्भे परउदयपदात्सिहनामा नृपेंद्रो दान दानेश तुष्टै व्यरचयदमल कालतापापहारि ॥ ८ ॥ केचिद्व्यसनिनो द्यूते परयाशासु केचन ॥ भूपालोदयसिहस्तु व्यसनी जगदीश्वरे ॥ ९ ॥ तस्यात्मजो महातेजा कामकाति कृपाश्रय ॥ औदार्यशौर्यधैर्याणां पृथ्वीराजोभवन्निधि ॥ १० ॥ ब्रह्माडे रगभूमौ कनकगिरिशिर पादपीठोधिरूढा ज्योति पुष्पांजलि साजलधिजवनिकोल्लघने प्रक्षिपति ॥ अग्रेशभो शुभेशे शशितपननिभ तालयुग्म दधाना पृथ्वीराजस्य कीर्ति जगति विजयते नृत्यमाना सदैव ॥ ११ ॥ पृथ्वीशनृपते राज्ञी सज्जनाख्या मितप्रभा ॥ कारितो यं तया दिव्य प्रासादेषु वरोवल ॥ १२ ॥ तुला पुरुष दानस्य हेम सपादि तस्यच ॥ गोसहस्त्रादि दानाना दात्री पात्रजनस्य या ॥ १३ ॥ विश्वभर तया व्याप्त्या ख्यातो दानैर्यशोभरै · ॥ अतुलोपि तुलां नीतो यया विष्णुर्मही तले ॥ १४ ॥ यत्कीर्त्यैवजित शशी परिचलन्क्षीणत्व मापद्यते यद्दात्तलपराजितो दितिसुत पाताल आसीधुना ॥ अल्पोयद्गुण वर्णने फणिपति शेषत्वमागादिव वक्तु ते सजनांबसाधुगुणितां शक्त कथ स्यामहं ॥ १५ ॥ आशामायात काशविदधतविपुल सेवमिंद्राद्य धीशा दिङ्नागायात यत्र गगनकुरुघनी भावलाभापयत्र ॥ शैला बध्नीतबधे विपुलतरतयो व्याप्तित सज्जनाया ब्रह्माडं भेदमेती कथयति चलतश्चद्रइत्येव मान्य ॥ १६ ॥ तस्यास्तनूजौ शुभनामधेयौ श्रीआशकर्णोक्षयराजनामा ॥ पूर्णार्थकामौ निहतारिवर्गौ भूमौ भवेता सतत सुखाय ॥ १७॥ श्रीलाछबाई परमा पवित्रा श्री सज्जनाबा जनितानुरूपा ॥ भूयापदा भक्तिमती व राम दात्त्व निर्यातितकर्णकीर्ति ॥ १८ ॥ पृथ्वी राजात्मजोयोसावाशाकर्ण श्रीयान्वित · ॥ यस्यकिंकरवर्गेण मेदपाटपतिर्जित ॥ १९ ॥ द्विषत्कामहर्त्तात्यसद्दामधर्त्ता स्फुरत्काम रूप · क्षितिशानुरूप ॥ अमानेनमानेनमानी सुवर्ण सदाभातु भूमंडले ह्याशकर्ण ॥ २० ॥ जगतिविततकीर्ति · श्याशकर्णोरिबाण सुमनसिशयचारुवीर्यवीर्यापहता ॥ सुसुरतरुलताभोद्दाहुयुग्मो धरित्र्यां भवतुहिसुखशाली राजविद्याप्रवीण ॥ २१ ॥ अपिच ॥ श्रीमद्दाल

णदेवसूनुरभवक्षात्रैर्गुणै सयुत सोलंकी हरराजइत्यभिधया ख्यातो थ तस्यात्मज ॥ कृष्ण कृष्ण इवापर क्षितितले श्रीसज्जनाबा ततो जाता कारि तया प्रसन्नमनसो प्रासाद एष स्थिर ॥ २२ ॥ अपिच ॥ श्री शेषो मरुमडले समभवद्वैरीभुजोच्छेदकृत् तत्पुत्री शुभकर्मवत्ववचना श्रीता गुणै श्रीश्रिते ॥ आशाकर्णनृपस्य चाग्र्यमहिषी सूता रमाबा यया भूयात् स्वर्गनिवासिनीभिरुपमा सा ऽपूर्वदे ऽवासदा ॥ २३ ॥ आशाकर्णात्मज श्रीमान् सहस्रमल्लसज्ञित ॥ अक्षया राजपुत्रास्तु व्यात्रज्येष्ठास्तथामता ॥ २४ ॥ सुरसाक्षरता पदे पदे घटयती परमोहनाशिनी ॥ विमला कमलाकरस्य सा विदुशो दिव्युतिहंसगामिनी ॥ २५ ॥ अथ वागडदेशना राजानी वशावली लिख्यते प्रथम विजयादित्य १ केशवादित्य २ नागादित्य ३ ग्रहादित्य ४ भोज ५ बापोरावल ६ षुमाणरावल ७ महेद्ररावल ८ अलुरावल ९ शीह रा १० शक्तिकुमार रा ११ शालिवाहन रा १२ नरवाहन रा १३ सबपसान रा १४ कीर्तिब्रह्म रा १५ नृब्रह्म रा १६ नरवीर रा १७ उत्तम रा १८ त्रिपज रा १९ कनक रा २० भादु रा २१ गात्रड रा २२ हसपाल रा २३ विरड रा २४ वीरसी रा २५ दहल रावल २६ निरूपम रा २७ महिसासी रा २८ पदमसी रा २९ अरसी रा ३० सामतसी रा ३१ जीतसी रा ३२ सीहडदे रा ३३ देदू रा ३४ वशसगदे रा ३५ भचूड रा ३६ कमसी रा ३७ कानडदे रा ३८ पातु रा ३९ गिपु रा ४० सोमदास रा ४१ गगो रा ४२ उदयसिंह रा ४३ पृथ्वीराज रा ४४ आशकर्ण रा ४५ चिरजीवतु बाई श्रीसज्जनाबाई प्रासाद कराव्यू छे.

शेषसंग्रह नम्बर ६
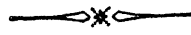
ॐ नम शिवाय ॥ पाणौबद्धभुजगफूत्कृतिभयात्संकोचयंत्या कर व्याकृष्टं जरतीजनेन रभसाच्छंभोर्दृढ गृह्णत ॥ भ्राता संभ्रमत सुखान्मुकुलिता विस्फारिता कौतुकात् व्रीडासवरिता विवाहसमये देव्यादृश पातुव ॥ १ ॥ इंदुमूर्ध्नि दधत्क्षीण पातुव शशिशेखर ॥ खेदादिव् सदासन्नगौरीमुखपराजयात् ॥ २ ॥ अस्त्युच्चैर्गगनावलबशिखर क्षोणीभृदस्याभुविख्यातो मेरुमुखोच्छ्रितादिषु परां कोटिं गतोप्यर्बुद ॥ यत्र स्फाटिकपुष्परागकिरणालीढार्कचद्रौ क्षण दृष्ट्वा सिद्धजनैरमन्यत दिवा रात्रिस्तु नक्त दिनं ॥ ३ ॥ तस्मिंस्त्यक्तभवश्चरित्रविभवस्तुष्यंतपोतप्यत ब्रह्मज्ञाननिधिर्गुणैर्निरवधि श्रेष्ठो वसिष्ठो मुनि ॥ यस्य प्रज्वलिताग्निहोत्रजनितै र्धूमैरिवव्योमगै र्जाता समलिना श्चिरेण हरितास्ते

हारिदश्वाह्वया ॥ ४ ॥ मुनेस्तस्यान्तिके रेजे निर्मलादेव्यरुधती ॥ स्थिरवश्येंद्रियग्रामा तप श्रीरिव जगमा ॥ ५ ॥ अनन्यसुलभाधेनु कामपूर्वास्य सन्निधौ ॥ ददती वाछितान्कामा स्तप सिद्धिरिव स्थिता ॥ ६ ॥ तत क्षत्रमदोद्वृत्तो गाधिराजसुतश्छलात् ॥ धेनु जह्रे स्य दुष्प्राप्या विप्रसिद्धिमिवोद्यता ॥ ७ ॥ अथ पराभवसभवमन्युना ज्वलनचडरुचा मुनिनामुना ॥ रिपुवध प्रति वीरविधित्सया हुतभुजि स्फुटमत्रयुतह्रुत ॥ ८ ॥ पृष्ठे तूणीरयुग्म दधदथ च करे चडकोदण्डदण्ड बध्वन्जूट जटानामतिनिबिडतर पाणिना दक्षिणेन ॥ क्रुद्धोयज्ञोपवीती निजविषमदृशा भाययन् जीवलोक तस्मादुद्धामधामा प्रतिबलदलनो निर्गत कोपि वीर ॥ ९ ॥ आदिष्टस्तेन यातो रणममरगणै र्म्मंगले गीयमाने बाढव्यातराले दिनकरकिरणच्छादके बाणवर्षे ॥ कृत्वा भगं रिपूणां प्रबलभुजबल कामधेनु गृहीत्वा शक्त्या तस्याघ्रिपद्मद्वयलुलितशिरा सोथ तस्थौ पुरस्तात् ॥ १० ॥ आनतस्य जयिन परितुष्टो वाच्छिताशिवमसावभिधाय ॥ तस्य नाम परमार इतीत्थ तत्थ्यमेव मुनिराशु चकार ॥ ११ ॥ तस्यान्वये क्रमवशादुदपादि वीर श्रीवैरिसिह इति सभृतसिहनाद ॥ दुर्व्वारवैरिवरवारणकुभकूटभेदोद्यतासिन खरो डमरक्षितीद्र ॥ १२ ॥ कीर्ति तावदवेक्ष्य भावचपला सभोगवद्धाश्रिय नित्य मगलसद्मना शुभचतुर्दिक्कुभिकुभप्रभे ॥ दोर्द्दण्ड द्वयशालिना क्षितिभुजा माशाचतुष्कातरे येनाकारि करग्रहो वसुधया गाढ गुणारक्तया ॥ १३ ॥ गतश्री · श्रीनिधानेन सबध· संयतारिणा ॥ नयेन समतां धत्ते जडधि पटुबुद्धिना ॥ १४ ॥ तस्यानुजो डमरसिह इति प्रचडदोर्दण्डचण्डिमवशीकृतवैरिवृद ॥ शृङ्गारसारतरुणीजनलोचनालिपुजोपरुद्धवदनाम्बुरुहो बभूव ॥ १५ ॥ चद्रिकापिकथ कार यस्यकीर्त्या समसमा ॥ एका दोषकरोद्भूता गुणोत्करभवा परा ॥ १६ ॥ तस्यान्वये करिकरोद्धुरबाहुदण्ड श्रीककदेव इति लब्धजयो बभूव ॥ दर्प्पांधवैरिवनिताकुचपत्रवल्लीसदोहदाहदहनज्वलितप्रताप ॥ १७ ॥ युद्धकडूलदोर्दडद्वयेय: समर प्रति ॥ मेने रिपुशराघातनखकडूयने सुख ॥ १८ ॥ आरुढागजपृष्टमद्भुतशरासारैरणे सर्वत कर्णाटाधिपतेर्ब्बलबिदलय स्तन्नर्म्मदायास्तटे ॥ श्रीश्रीहर्षनृपस्य मालवपते कृत्वा तथारिक्षय य स्वर्ग सुभटो ययौ सुरवधूनेत्रोत्पलैरर्चितै ॥ १९ ॥ तस्यात्मजश्चंडपनामधेयो ब्रह्माण्डविभ्रातयशा बभूव ॥ सामतकान्ताजनहासहसश्रेणीप्रवासैकपयोदकाल · ॥ २० ॥ ब्रह्मस्तम्बस्ययत्कीर्तिर्म्मंजरीवोपरि स्थिता ॥ शश्वत्किन्नरभृगौघैरुपगीताधिक बभौ ॥ २१ ॥ सत्यास्पद दहनदु सहधामधामा श्रीसत्यराज इति तस्य सुतो बभूव ॥ सामंतदूरनतिसगिललाटपट्टलग्नोल्ल-

सतिलकपादनखांशुजाल ॥ २२ ॥ वनमालाधरा नित्य भिया यस्याच्युता अपि ॥ रिपवो न च विक्राता नलक्ष्मीपतय कथ ॥ २३ ॥ निर्व्याज करुणार्द्रितो पि शतशो निस्त्रिंशकर्म्मोद्यत सजातप्रसरोपि विक्रमशतैरत सदा सयत ॥ आमूल गुणवर्द्धितोपि बहुधा दोषार्जित श्रीभरो योप्येव नियत विरुद्धचरितो लोके विरुद्धो भवत् ॥ २४ ॥ तस्मादभूदिह नयादिव वृद्धियोग पुण्यस्त्रिलोक तिलको विपुलोन्नतांस · ॥ गीर्वाणचारुचरितार्पितकर्णपूर श्रीमन्दिरं जगति मण्डनदेव-नामा ॥ २५ ॥ विशालोरस्थल कात मन्ये श्रीरुदितोदित नबबध यमासाद्य पुराणपुरुषे रतिम् ॥ २६ ॥ अनवच्छिन्नदानौघो य प्रलबकरोद्धुर ॥ कुलैक धवलो भद्र सुरद्विप इवाबभौ ॥ २७ ॥ विस्फूर्जन्नखचद्रदीधितिलसल्लावण्य-नीरोच्चय सुस्निग्धस्फुटदीर्घराजिरुचिभृत्सन्शखमीनांकित ॥ वाह्निन्यासपतित्व-योग्यमतुल स्यात श्रिय कारण यस्या वक्रकराग्रिप्रद्वयुगल सामुद्रिक लक्षण ॥ २८ ॥ यद्वा कौतुक मन्वयोच्छरुचिरा स्वच्छागपूर्णाधिक येनात्र स्मररूपिणा दृढभुजा दण्डोल्लसन्मण्डपे ॥ वैरिश्री र्नृवरेण भव्यदिवसावाप्तौ परैरीहिता दत्तेय निजविक्रमेण महतेवोच्चैरनूढा स्वय ॥ २९ ॥ धृतविश्वभराभार खडितारातिविग्रह ॥ असिर्म्मंत्रीव सतत यस्यावर्द्धयत श्रिय ॥ ३० ॥ यस्यारातिवधूजनस्य सरलै श्वासानिलै शोकजै रुष्णोष्णै परितो युगांतपवनप्रस्कारिभि कानने ॥ दग्धे नीलतृणांकरोन्करभरे नीरे धिक शोषिते कृच्छ्रेणाशनपानवृत्तिरहितै खिन्नैर्मृगै स्थीयते ॥ ३१ ॥ दीप्यमान सदा सर्व्ववाहिनीश क्षयोल्बण ॥ प्रतापो यस्य जज्वाल वाडवोग्निरिवापर ॥ ३२ ॥ कीर्त्तिनि ‑ मनाथवे शृंखलेव रिपुश्रियां यस्यासि समरे भाति वेणिकेव जयश्रिय ॥ ३३ ॥ बलभिद्बलयुक्तेन गोत्रहा गोत्रनदिना ॥ नयेन कृतिना धत्ते सोपिसाम्य पुरदर ॥ ३४ ॥ तस्यास्ति हृदये लक्ष्मी · स चश्रीहृदय गम ॥ स्पर्द्धापि न कथकार करोति गरुडध्वज ॥ ३५ ॥ य प्रतापवन-पल्लवकांत कीर्तिनिर्म्मलधृताक्षतदेह ॥ श्री सदा नहि मुमोच दयाभ पूरित विजय मगलकुभ ॥ ३६ ॥ निर्व्याज शरमदिरेति विमलैर्वृद्धैर्गुणै स्थापिता मुक्तानां रुचि-धारिणी सुमहिता लोकत्रयव्यापिनी ॥ प्रत्याश प्रति कानन प्रतिपुर गेह प्रतिप्र-स्तुता यस्यैषाद्भुतदेवतेव सततं कीर्त्तिर्जनै स्तूयते ॥ ३७ ॥ लक्ष्म्या यस्मि-न्नुपात्त जननमथ यश पाडुपीयूषपूरैर्यत्रोद्भूत समतादखिलभूतलसद्भूतलाशा-न्तराल · ॥ क्षीरांभोधिर्गुणौघो निरवधिरभवद्यस्य चारित्रसीम्न · शीतांशु-श्रीर्यदुत्था च्छुरपतिगगन कीर्त्तिकल्लोलमाला ॥ ३८ ॥ खर्व्वांकापि तु कुत्रचिन्न-हि तथा लोके गताशेषता न प्राप्ताविरतिं स्फुट नहि वृषध्वंसोदयाविष्कृता ॥

नोपूर्णैकपदाल्पकात्रिभुवना क्रोडीकृता न क्वचिद्यत्कीर्त्ति र्विशिनष्टि कुदधवला कृष्णां तनु श्रीपते ॥ ३९ ॥ यस्योद्दामरबाहुदण्डयुगलस्योद्यद्बलेनाधिक सच्छन्नेन रजोभरै प्रचलत प्रत्यर्थिवृद प्रति ॥ तेजस्त्यक्तमहो स्वक भगवता चडांशुनापि स्फुट प्रत्याश भयसद्मशात्रवजनस्यान्यस्य तत्का कथा ॥ ४० ॥ यस्याशाविजयोद्यतस्य निखिलक्ष्मापालचूडामणे वैरिश्रीभृतिलपटस्य चलतस्तीरेषु वारानिधे ॥ क्रुद्धाधोरण तर्जितैरपिमुहुर्म्मानोन्नतै पीयते मज्जद्दिग्गजदानराशिसलिल दु खेन सेनागजै ॥ ४१ ॥ उच्चैर्धृतवृषो नित्य समदर्शी गताहित ॥ जितासस्यपुर पूज्यो यो पर परमेश्वर ॥ ४२ ॥ विख्याता चपलेति ‾ प्रियतमासौशकितेव श्रिया गता दिव्यभुव सुरैरपिनुता नित्य विशुद्धा सति ॥ मानेनेव तथापि कीर्तिरमलेनांगीकृतापि स्वय येने य यशसा सहैव सहजेनेत्थ जगद्भ्राम्यति ॥ ४३ ॥ धनुर्विद्याविदा येन सत्वसत्यैकसद्मना ॥ रणे सधानमानीय कथं नु रिपवोहता ॥ ४४ ॥ आलानो विजयद्विपस्य रुचिरा वेणीनु कीर्तिस्त्रियो दोर्दण्डप्रियनिर्भरैकवसतेश्छायास्फुरन्तीश्रिय ॥ बाढ वैरिवधोद्यत प्रतिरण कालोग्रदण्डो गुरुर्यस्यासि सुशुभे पराक्रमभृतो दृप्तारिदर्पच्छिद ॥ ४५ ॥ शूरप्रौढबल कुलैकतिलको दुर्वारवीरांतको वेरिश्रीहरणैकलपटलसच्चण्डासिदण्डोल्बण ॥ कातालोलकटाक्षपुजनिलय शृंगारमीनध्वजो ज्ञातोयस्य रविद्युतेर्गुणनिधिश्चामुण्डराज सुत ॥ ४६ ॥ मुहुर्दु खोष्णनिश्वासैरश्रुपूरैश्च सतत ॥ कृत यस्यारिकाताभिर्दग्धपल्लवितं वनं ॥ ४७ ॥ अहितदोषगुणैरुदितोदितैर्जगति लब्धजयैरिव विभृता ॥ सकललोकनिकायनिराकृता यमिह सर्वगुणा शरण ययु ॥ ४८ ॥ दुर्व्वारारिविदारिणा हरिखुरक्षुण्णान्तराले भृश तीक्ष्णास्त्रक्षतवांतशोणितपय पूरप्लुते सर्वत ॥ निस्त्रिंशाहतकुंभिकुंभविगलन्मुक्ताफलाना गणा क्षिप्ता वीरवरेण येन समरक्षेत्रे यशो बीजवत् ॥ ४९ ॥ वार वारं प्रकृतिसुभगं धौतनिस्त्रिंशपाणि युद्धे युद्धे सततविजयश्रीप्रिय खेचरीणां ॥ तत्कालोत्थ स्मरभयवशाद्यं प्रतिस्पर्द्धयैता मद मदचकित चकितं दृष्टय सपतति ॥ ५० ॥ क्रोधाद्यस्यातिभीता दिशि दिशि निहतानंतसामतकांता कांतारेषु प्रविष्टा श्रमवशविवशा सश्रिता दु खनिद्रा ॥ स्वप्नेदैवाद्रुपातान्निजनिजरमणान्प्राप्य संभोगमेता जाग्रत्यो प्याशु नेत्थं रतिरसरसिकाश्चक्षुरुन्मीलयन्ति ॥ ५१ ॥ शत्रवश्चण्डकोपेन येन स्वस्थानचालिता · ॥ निजकान्तामनोमुक्त्वा स्थिनिमन्यत्र नोगता · ॥ ५२ ॥ शश्वत्सन्नंदको वाढ बलिबधो दितोदित त्रिविक्रमइवोदारा यो लक्ष्मी सततं दधौ ॥ ५३ ॥ दृढतरमभिसक्ता भव्यसभोगरम्या विधृतविमलपक्षद्वद्वमानदहेतु ॥ क्षणमपि न मुमोच प्राप्य य राजहंसं कुवलयरतिपात्रं राजहसीवलक्ष्मी · ॥ ५४ ॥ सिंधुराजमतिमत्य्य हेलया खड्गमदर

भृता युधि येन ॥ उत्तमेन पुरुषेपु विलेभे श्रीर्यशो भुवनपावनशख ॥ ५५ ॥ विश्व वैरिप्रताप झटिति कवलयन् लीलया जागलाभ चडाशोस्तीव्रशोचिर्म्मिलनकपिलितार्चिश्छटोकसरश्री ॥ धारादष्ट्राकरालो विलसति समरे जातघातोच्चनादो यस्या-रातीभकुभस्थलदलनपटु प्रौढनिस्त्रिशसिह ॥ ५६ ॥ यस्य सर्व्वागसौदर्य्यप्रतिविब-मपश्यता ॥ प्रशसितास्मरेणापि निजा चिरमनगता ॥ ५७ ॥ स्त्रीभिर्यत्र गृह प्रति प्रविशति स्वस्थे स्व हृन्मण्डले हर्षोत्तालतयैव हारकिरणान् सभाव्य सत्स्वस्तिक ॥ उत्तुगस्तनकुभसगरुचिरश्रीकठकबुस्फुरद्दक्राभोजविभूषित निजवपुश्चक्रे स्वय मगल ॥ ५८ ॥ दूर्ती दृष्ट्वोत्सुकाना वदनमभिरुधत्सौरभात्कामिनीनां नाया-त्यायाति वेति स्ववचनउदिते यत्कृते दु खसौख्ये ॥ जातोष्णश्वासदाहान्मधु-करपटलान्यश्रुसपातसेकाद् वैकल्यास्वास्थ्यभाजि त्वरिततरमध सपतत्युत्पतति ॥ ५९ ॥ गेहे गेहे नुरागात्पथि पथि सुचिर प्रागणे प्रागणे यद् वार वार नितांत युत-युवतिजनो जाततृष्णाभरार्त ॥ उत्कल्लोल समतादहमहमिकया यस्य कदर्पकांते र्लाव-ण्याभस्तनुस्थ स्वनयनचुलकै रुच्चलुपाचकार ॥ ६० ॥ अनग सस्मरो युक्त विरह-ज्वलिते हृदि ॥ तस्थौ यदिह काताना चित्र यो वसतीति मे ॥ ६१ ॥ येन धर्म्मो मही पृष्ठे कोप्यपूर्व प्रकाशित ॥ तस्योन्नयनतो प्येष गुणकोटि परागत ॥ ६२ ॥ दत्वा काचनरत्नदानमतुल धर्म्मैकरागात्तथा येनैश्वर्य्यमतिप्रपचितमहो पुण्य-द्विजप्रापिता ॥ जात मदिरमालिकासु तिमिर दीपैर्विनेते यथा जित्वोद्योतमहर्न्निश विदधते रत्नप्रदीपाकुरा ॥ ६३ ॥ येनस्वर्णगिरि – – र्व्विरचिता स्वर्णेन सप्ताब्धय स्वर्ण्य कल्पतरु समस्तवसुधा स्वर्ण्यो सहस्त्र गवा ॥ इत्यादि द्विज-सचयाय ददता स्फूर्ज्जद्यशो हासत सोल्लास हसिता बलिप्रभृतय सर्व्वेप्यमी पार्थि-वा ॥ ३४ ॥ कामधेनुरकामाभूच्चिता चितामणेरपि ॥ विकल्प कल्पवृक्ष-स्य श्रुत्वा यद्दानमद्भुत ॥ ६५ ॥ नतरिपुधृतचूडालग्ननीलेंदुशोचिर्म्मधुकरनिकुर-बच्छन्नपादाम्बुजेन ॥ रुचिरमिदमुदार कारित धर्म्मधाम्ना त्रिदशगृहमिह श्री-मण्डनेशस्यतेन ॥ ६६ ॥ यावल्लोचनधूमदडमिलित छत्रच्छवीदु दधौ भोगीद्र नवयोगपट्टसदृश यावच्च मौलौहर ॥ यावत्कौस्तुभ एष भाति हृदये विष्णो श्रिये रागवत् श्रीमन्मण्डन कीर्तनं क्षितितले तावत् स्थिर तिष्ठतु ॥ ६७ ॥ अथ चैत्र-चतुर्दश्यां यशोदेवादिकिंकरै ॥ कीर्तिराजमुखैरन्यैर्देवस्यैषा कृता प्रति ॥ ६८ ॥ वणिजा खण्डगुडयो र्भरक प्रतिवर्णिका ॥ मजिष्ठसूत्रकार्पासभरकेषु च रूपक ॥ ६९ ॥ तथा श्रीमण्डनेनेय शासनेन महात्मना ॥ हट्टे विक्रीयमेवन्तु तस्यापि रचिता प्रति ॥ ७० ॥ नालिकेरभरके फलमेकमानक लवणमूटकमध्यात् ॥ पूगमेकमपिपूगसहस्त्रादाज्यतैलघटके पलिकैका ॥ ७१ ॥ दापितो रूपक सार्द्ध

प्रतिकर्पटकोटिका ॥ पूलकद्वितय जालादन्नछद्दे च पाइली ॥ ७२ ॥ तच्छोच्छपनके तेन वणिजा प्रतिमादिर ॥ चैत्र्या द्रम्म पवित्र्या च द्रम्मएक प्रदापित ॥ ७३ ॥ शालसु कास्यकाराणा मासे द्रम्म कृतस्तथा ॥ घुधके कल्यपालाना रूपकाणा चतुष्टय ॥ ७४ ॥ प्रकृतीना च सर्व्वासा तया स्थित्यानुमदिर ॥ दापितो द्रम्मएकैको द्युतेस्मिन्रूपकद्वय ॥ ७५ ॥ लगडापत्रशते द्वे तैलकर्षोनुघाणक ॥ दापिता पत्रशाकेच्छा वृषविशोपकस्तथा ॥ ७६ ॥ द्रम्मस्तेन तथादत्तो वणिग्मण्डलिकां प्रति ॥ सर्व्वावर्तयुतामास प्रतिशुक्ला चतुर्द्दशी ॥ ७७ ॥ अर्द्धाष्टमशते देशे व्याप्यदोरकसभवे ॥ तथेक्षुतवणिद्रम्मो रघट्टे यवभारक ॥ ७८ ॥ दाने च भाण्डधान्याना भरकच्छद्वविशतौ तेन दत्तस्वधर्म्मेण भरकच्छद्वएवच ॥ ७९ ॥ सवाटिक तथा तेन पुर धवलमदिर ॥ कारितं भू प्रदत्ता च देवायाघाटसमिता ॥ ८० ॥ वीजपूरकमेकतु लगडायाश्वदापितां॥ यवानामूटकस्यैषवापश्चाटविकेतथा ॥ ८१ ॥ श्रूयता भाविभूपाला प्रदत्त शासन मया ॥ पाल्यतामन्यथा नात्र मौलौ बध्दोयमजलि · ॥ ८२ ॥ पृथुप्रभृतिभिर्भूपैर्भुक्ताकैं कैर्न मेदिनी ॥ तैरप्येषा पुन · सार्द्ध यतो नैकपद गता॥ ८३ ॥ कवि सुमतिसाधारो वशे साधारसभवे॥ बभूव क्रमशो विद्वान् भारतीकर्णकुडल ॥ ८४ ॥ तस्यसुतगुणचदनसुदरसंजातदिग्वधूतिलक · ॥ कविजनमुखकुमु लक्ष्मी जयताच्छ्रीविजयसाधार ॥ ८५॥ तस्यानुजेनाभिहिता प्रशस्ति श्चद्रेण चन्द्रोज्वलकीर्तिभाजा ॥ समासहस्रैकशतेप्रयाते षडुत्तरत्रिशति याति काले ॥ ८६ ॥ बालभाजातिकायस्थ श्रीधरस्येह सूनुना ॥ लिखिता अस्तराजेन प्रशस्ति स्वस्थचेतसा ॥ ८७ ॥ उत्कीर्णाविजानामकेन सूत्रधारोत्रतत्रासुत गदाकसूत्रधार सवत् ११३६ फाल्गुन् शुदि ७ शुक्रे मगल महाश्री

शेषसंग्रह नम्बर ७

ॐनमो वीतरागाय॥ सजयतिजिनभानुर्भव्यराजीवराजी जनितवरविकाशो दत्तलोकप्रकाश ॥ परसमयतमोभिर्नस्थित यत्पुरस्ताल्क्षणमपि चपलासद्वादिखद्योतकैश्च ॥ १ ॥ आसीच्छ्रीपरमारवशजनित · श्रीमण्डलीकाभिध कन्हस्य ध्वजिनीपतेर्न्निधनकृच्छ्रीसिंधुराजस्य च ॥ जज्ञे कीर्तिलतालवालक इति श्चामुंडराजो नृपो योवन्तिप्रभुसाधनानि बहुशो हंति स्म देशे स्थलौ॥ २ ॥ श्रीविजयराजनामा तस्य सुतो जयति जगति विततयशा ॥ सुभगोजितारिवर्गो गुणरत्नपयोनिधि शूर : ॥ ३ ॥ देशोऽस्य पत्तनवरं तलपाटकाख्य पण्यागनाजनजितामरसुदरीकम् ॥ अस्तिप्रशस्तसुरमन्दिरवैजयन्तीविस्ताररुद्धदिननाथकरप्रचार ॥ ४ ॥ तस्मिन्नागर-

वशशेखरमणिर्नि शेषशास्त्राम्बुधिर्जैनेद्रागमवासनारससुधाविद्धास्थिमज्जाभवत् (?) ॥ श्रीमानवटसङ्गक कलिवहिर्भूतो भिषग्रामणी गार्हस्थोपिनिकुठिताक्षपसरो देशव्रतालकृत ॥ ५ ॥ यस्यावश्यककर्म्मनिष्ठितमतेर्भीष्टा वनान्ते भवन्नन्तेवासिवदाहिताजलिपुटा सौरा कृतोपासना ॥ यस्यानन्य समानदर्शनगुणैरतश्चमत्कारिता शुश्रुषा विदधे सुतेव सतत देवीव चक्रेश्वरा ॥ ६ ॥ पापाकस्तस्यसूनु समजनि जनितानेकभव्यप्रमोद प्रादुर्भूतप्रभूतप्रविमलधिषण पारदृश्वा श्रुतीना ॥ सर्वायुर्व्वेदवेदी विहितसकलरुक्कातलोकानुकपो निर्न्नीताशेषदोषप्रकृतिरपगदस्तत्प्रतीकारभार ॥ ७ ॥ तस्यपुत्रास्त्रयो भूवन् भूरिशास्त्रविशारदा ॥ श्रीलाक साहसाख्यश्च लल्लुकाख्य परोनुज ॥ ८ ॥ यस्तत्राद्य सहजविशदप्रज्ञया भासमान स्वातादर्शस्फुरित सकलै तिह्यतत्वार्थसार ॥ सवेगादि स्फुटतरगुणस्वाक्तसम्यक्त्वभाव तैस्तैर्दानप्रभृतिभिरपि स्योपयोगीकृतश्री ॥ ९ ॥ आधारोय स्वकुलसमिते साधुवर्गस्यचाभूदग्रे शीलं सकलजनताल्हादिरूपच काये॥ पात्रीभूत कृतधृतिधृतीना श्रुतानाप्रियाचरानदाना (?) धुरमुदवहद्योगिनायोगिना च ॥ १० ॥ याम – रा – यनलस्तलतिग्मभानोर्व्याख्यानरजितसमस्तसभाजनम्य ॥ श्रीच्छत्रसेनसुगुरो श्चरणारविद सेवापरो भवदनन्यमना सदैव ॥ ११ ॥ यस्यप्रशस्तामल शीलवत्या होलाभिधाया वरधर्म्मपत्न्यां ॥ त्रयो बभूवुस्तनया नयाढ्या विवेकवन्तो भुवि रत्नभूता ॥ १२ ॥ अभवदमल बोध पाइकस्तत्प्रपूर्व्व कृतगुरुजनभक्ति॰ सत्कुशाग्रीयबुद्धि ॥ जिनवचसियदीय प्रष्णजाले विशाले गुणभृदपि विमुह्येत्कैव वार्ता परस्य (?) ॥१३॥ करणचरण रूपानेक शास्त्रप्रवीण परिह्रुत विषयार्थो दानतीर्थप्र – – ॥ समनियमितचित्तो जातवैराग्यभाव कलि कलि लवि मुक्तो पासकीयप्रभाढ्य (?) ॥ १४ ॥ कनिष्ठस्तस्याभूद्भुवनविदितोभूषणइति श्रिय पात्रं काते॰ कुलगृहमुमायाश्चवसति ॥ सरस्वत्या क्रीडागिरिरमलबुद्धेरतितमा क्षमावत्या कद प्रवितत कृपायाश्च निलय ॥ १५ ॥ स्मर सौरूप्येण प्रवलसुभगत्वेन शशभृत् कुबेर सपत्या समधिक विवेकेनधिषण ॥ महोन्नत्यामेरु र्जलनिधिरगाधेन मनसा विदग्धलेनोच्चैर्य इह वरविद्याधर इव ॥ १६ ॥ जैनेद्रशासनपरो वरराजहसो मौनींद्रपादकमलद्वयचचरीक ॥ निशेषशास्त्र निवहोदकनाथनक्र सीमतिनीनयनकैरवचारुचद्र ॥ १७ ॥ विदग्धजनवल्लभ सरससारश्रृगारवानुदारचरितश्चय सुभगसौम्य मूर्त्ति सुधी ॥ प्रसाधनपरां नमद्वरविलासिनीकुतल पस्तपदपकज द्वितयरेणु रत्युन्नत (?) ॥ १८ ॥ प्रथमधवलप्राये मेघे गते पि दिवं पुन कुलरथभरो येनैकेनाप्यसम्भ्रम मुद्धृत ॥ गुरुतरविपन्न – च – – – ग्रहादुदतारिचस्थिरमति महास्थान्नानीतो (?) विभूतिगिरे

शिर ॥१९॥ द्वे भार्ये भूपणस्यस्त लक्ष्मी शीलीतिविश्रुते॥ पतिव्रतत्वसयुक्ते चारित्रगुण भूषिते ॥ २० ॥ सशीलिकायामुदपादिपुत्रा न्सन्नामयोग्यान् गुरुदेवभक्त ॥ आलोकसाधारणसाविमुस्या – – चित्ताब्जविकाशभानून् ॥ २१ ॥ आयुस्तप्तमहीध्रसार निहितस्तोकाम्बुवन्नश्वर सचित्यद्विपकर्णचचलतरा लक्ष्म्याश्चदृष्ट्वा स्थिति ॥ ज्ञात्वाशास्त्रसुनिश्चयात्स्थिरतरे नून – – – – – – तेनाकारि मनोहर जिनगृह भूमेरिद भूषणम् ॥ २२ ॥ भूषणस्य कनिष्ठो सौ लल्लाक इतिविश्रुत ॥ देवपूजापरोनित्य भ्रातुरादेशकृत्सदा ॥ २३ ॥ ज्येष्ठोपाद्रवनामाय सीलुकायामजीजनत् ॥ शुभलक्षणसयुक्त पुत्रमम्मटसज्ञकम् ॥ २४ ॥ वर्षसहस्त्रयातेषट्षष्ठ्युत्तरशतेन सयुक्ते ॥ विक्रमभानो काले स्थलिविषयमवनिमतिविजयगराजे ॥ २५ ॥ विक्रमसवत् ११६६ वैशाखशुदि ३ सोमे वृषभनाथस्य प्रतिष्ठा ॥ श्रीवृषभनाथ नाम्न प्रतिष्ठित भूषणेन बिबमिद उच्छूणकनगरे स्मिद्रजगतौ वृषभनाथस्य ॥ २६ ॥ युगल॥ तुर्यवृत्तान्समारभ्य वृत्तान्येतातिषोडश ॥ आद्यवृत्ते प्रयुक्तानि कृतवान् कटुको बुध ॥ २७ ॥ भाइल्लोवस्यवशे भून्नज श्री माधवोद्विज ॥ तन्सूनोर्भाडकस्येय नि शेपेणपराकृत्ति ॥ २८ ॥ वालभान्वयकायस्थ राजपालस्यसूनुना ॥ सधिविग्रहसज्ञेन लिखितानागरीलिपि ॥ २९ ॥ यावद्रावणरामयो सुचरित भूमौ जनैर्गीयते यावद्विष्णुपदी जल प्रवहति व्योम्न्यस्ति यावच्छशी॥ अर्हच्चक्रविनिर्गत श्रवणकै र्यावच्छ्रुतपठ्यते तावत्कीर्ति रिय चिराय जयतात्सस्तूयमाना जनै ॥ ३० ॥ उत्कीर्णाविज्ञानिकस्तूमकेन मगलमहाश्री छ

॥ लक्ष्मीनिवासनिलय विलोमविल्लयनिधाय हृदिवीर ॥ आत्मानुशासनमह वक्षेविज्ञायभव्याना(?) ॥१॥ दु खाद्बिभेषिनितरामभिधासिमुखमतोहमथात्मना (?)॥ दु खापहारीसुखकरमनुशास्मितवानु ममतव (?) ॥ २ ॥ यद्यपि कदाचिदस्मिन्वि पाकमधुर तदात्वकटु॥ किंचित् त्व तस्मान्मापो चीर्यथातु रोभेषजादुग्रात् ॥ ३ ॥ जनाघनाथवाबाला सुलभा स्युर्नये स्थिता ॥ वाह्यतरार्द्रास्तेजगदा – सजिहीर्षव ॥ ४ ॥ परापन्नात्सुखा दु ख स्वायन्त केवल वर ॥ अन्यथा सुखिनामान कथत्मभतपस्विन ॥ ५ ॥ उपायकोटिदूरक्षे स्वनसूतइतोग्यत सर्वपतनप्राये कायेकोयनवाग्रह ॥ ६ ॥ अवश्यनस्वैरेरेभि रायुकायादिभिर्यदि ॥ शाश्वतपदमायाति मुधाप्वातवैहिने ॥ ६९ ॥ गतु सुखासनि श्वासैर भ्यस्यत्येषसतत ॥ लोक प्रवेषितोवाछत्यात्मानमजरामर ॥ ७० ॥ गलन्वायु प्राय प्रकटित घटीयत्र सलिल खल कायोप्यायु पतिमतिपतत्येष सततं किम – – – दूंयमयमिद जीवितमिहस्थितोग्राध्यानादिस्तुतिरवतुभे – – –

(यह प्रशस्ति बहुत अशुद्ध है, लेकिन् जैसी मिली है, वैसी ही दर्ज की गई)

शेषसंग्रह नम्बर ८

वसन्तगढकी लाणबावडीकी प्रशस्ति

प्रणम्य हरिपुत्रेण कविना मातृशर्मणा ॥ सुहद्धिततरां वाणी प्रशस्ति सुकृता मया ॥ ज्योतिर्ज्योतिर्विदा भव शिवधिया दृष्ट पर चक्षुषा तत्वाराधनत स्मृत कलुषहा सर्व्वप्रकाशोमहान् ॥ तत्वज्ञानमसत्ततम्मतिमता ज्ञाता च सत्कर्म्मणाम् पायाद्वो वसुसिद्धकिन्नरयुतस्त्रैलोक्यदीपो हरि ॥ वसिष्ठकोपाज्जनित कुमार . – भुम्या महा बला यत्र नृपा बभूवुः॥ अस्यान्वये त्युत्पलराजनामा आरण्यराजो पि ततो बभूव ॥ तस्मादभूदद्भुतकृष्णराजो विख्यातकीर्ति किल वासुदेव ॥ तस्यात्मजो भूवलय प्रतिष्ठ श्रीनाथघोषी वृतवान् वरेण्य ॥ पुत्रो पि तस्मान्महिपालनामा तस्मादभूद्धन्धुक एव भूप ॥ अस्यापि कीर्ति सुरराजलोके प्रगीयते वै सुरकिन्नरीभि ॥ वीणानिविष्ट करजागुलीभिर्विमुक्तकठोक्तिरलकृताभि ॥ येनाहृता शौर्य्यबलेन लक्ष्मीर्व्विख्याप्य भार परसैन्यमध्ये ॥ अस्यापि भार्य्या घृतदेविनाम्नी रूपेण शीलेन कुलेन युक्ता ॥ तस्मादमुष्या भुवि पूर्णपाल पूर्णो नृणा पालयशोभिपूर्ण ॥ महारणेनापि विजित्यराष्ट्र नामापि भूत बलदर्पदेति ॥ कनककर्णिकभूषिततारया करपदे मणिभूषितवीणया ॥ विबुधराजकुले सुरकन्यया सदसि यस्य यश खलु गीयते ॥ हत्वा येन रिपून् युधा च बहुश प्रख्याप्य भार स्वक विक्रान्ता मदशालिनो वरगजा नद्वा स्वके मदिरे॥ पूर्णप्पालकुलप्रदीप इव योप्यार्य्यावते धार्मिके अत्र श्रीपरमारवशतिलके राज्ञी स्थिरा शासति ॥ अस्यानुजा लाहिनि नामराज्ञी लक्ष्मीर्यथा तामरसैर्व्विहीना ॥ ऊढापि या विग्रहभूभुजेन सत्यायथापूर्व्वमधोक्षजेन ॥ अस्यान्वयेपि ॥ आसीद्दिजातिर्व्विदितो धरण्या ख्यातप्रतापो रिपुचक्रमर्दी ॥ यो दु खशौर्य्यार्ज्जितभूयशस्य • काशीश्वर सर्व्वनृपप्रधान ॥ तदन्वयेख्यातमतिर्नृपोभूत् कुलप्रदीपो भवगुप्तनामा ॥ उद्धृत्य वेश वनवासिभानोर्वदेषु राज्य कृतवान् सवीर ॥ अस्यान्वये सगनराजनामा वन्धोनरैर्यो बदरी समाप्त •॥ तस्मादभूद्वल्लभराजभूपश्चरोपि तस्माद्दरराजभूप ॥ बभूव तस्माद्गुणिताप्रधानो नृपोत्तमो विग्रहराजनामा ॥ प्रदानशौर्य्यादिगुणैरुदारैर्यशो ययौ यस्य विजित्य लोकान् ॥ द्विजिह्वरिपुवाहनो ललनकान्तरापूजित • कुलद्वयकृतोन्नतिर्व्विधृतचारुलक्ष्मीवपु ॥ स्वपौरुषधृतावनिर्ब्बलनिविष्टवक्षा महान् बभूव नृवरोत्तम सनररूपधृङ् माधव ॥ भार्या स चावाप्य गुणै • समेतां वितोषितां वै बुभुजे च भोग ॥ सापि प्रिय प्राप्य पतिम्वरेण्य यद्वन्महींद्रेण-

सम च रेमे॥ अस्मिन्मृते भर्तरि दैवयोगाद् भ्रातुर्गृह सा प्रियविप्रयुक्ता ॥ आवेशिता वै नगरे वदेऽस्मिन् दैवात् प्रहीनैव सुखक्रमेण॥ वसिष्ठराजोपि अत्रासीदतोय वसिष्ठराजान्वेयो ऽपि (जातमत्रपावारुणिनापि) अत्रन्यग्रोधस्याश्रम ॥ स्थाने कॅमर्गौ स्वमतौ वसिष्ठो मुक्तिप्रदौस्थापितवान् वरिष्ठ ॥ तद्वद्दास्ये नगरे वनेऽस्मिन् बहुप्रसादान् कृतवान् वसिष्ठ ॥ प्राकारवप्रोपवनैस्तडागै प्रासादवेश्मै सुघनै सदुर्गै ॥ अतिमन्त्रोदमक्षोभ्य पारगावक्रमाकुल॥ वेदार्णव द्विजासम्यग् यत्रतीर्णाप्यगर्व्विता ॥ लोकैर्धर्म्मपरै स्वकर्म्मनिरतै सद्भि सदावासित आवृत्याजनसम्मतै प्रतिदिननित्य वणिग्भिर्वृत ॥ पौराणैर्गणिकाजनैर्व्यसनिकै शूरैर्जनै सकुल स्वर्गस्थानमिवापर वद्पुर क्षोणीतले सस्थित ॥ मरुद्गता यत्र सरित् सरस्वती सोपानपक्त्या च नृपेण निर्वृता ॥ सुपुण्यपुष्पोदकफेनवाहिनी द्विजायमाना जननीव वेष्ठिता ॥ ये सर्वे पालयन्ते नगरहितरता नीतिमन्त प्रशान्ता देवान्विप्रान् यजन्ते वनभवनमही वस्त्ररत्ना दिदानै ॥ स्याता येचैवनित्यत्रिभुवनबलये सद्गुणैरेव नीता तेस्मिन्पौरा समस्ता सकलजनहिता भानवे भक्तिमन्त ॥ सात्रागता लाहिनिनामराज्ञी भर्त्तुर्व्वियोगेन निपीडितांगी ॥ अस्मिन् पुरे विप्रजनै समेत्य दृष्ट्वा तुतोषान्तरनात्मबुध्या ॥ भानो र्गृह दैववशाद्विभक्त वसिष्ठपौरे सुकृत यदासीत्॥ विनाशि सर्व्वं सहजीवितेन ज्ञात्वा गृह कारितमाशु भानो ॥ लोकप्रयोगा सुकृता दुरापासुश्लिष्ठसन्धीघटितोत्पलेव ॥ ॥ सोपानपक्ति शुशुभे सुबद्धा निश्रेणिभूतेव दिवौकसाना॥ देवै समस्तैर्मुनिभिश्च जुष्ठा पापापहा व्याप्य वियत् स्थिता या ॥ जीवैर्वृता लाहिनिपुण्यहेतो सारस्वती शेषजनस्य वापी ॥ निष्पाद्य सुकृतौ कृत्वा अर्थ दत्वा पुन पुन ॥ वैनाशिकमिद चान्यज्ज्ञात्वा लोकस्य चर्च्चित॥ यावद्गोलोकवृत्ती प्रवहति सुरभिर्यावदर्कोन्तरिक्षे यावद्वीच्य समुद्रे पवनविधुनिता सतता प्रोच्छलन्ति ॥ यावद्योम्नि प्रदीप्त प्रवहति मिहिरस्यदनस्यैकचक्र वाप्येषा तावदक्ष्णा मुडुकरसदृशी कारकस्यातिकाला॥ कृतेय हरिपुत्रेण मातृशर्म्मद्विजन्मना ॥ सर्वलोकहितार्थाय लाहिन्याश्च हितैषिणा॥ आसीन्नामा श्वपते सुदुर्गे दुर्गाकृतीदोडकसूत्रकार ॥ अस्यापि सूनु शिव पालनामा येनोत्कृतेय सुशुभा प्रशस्ति ॥ नवनवतिविहासीद्विक्रमादित्यकालेजग तिदशशतानामग्रतोयत्रपूर्णा प्रभवतिनभमासे स्थानके चित्रभानो (?) स १०९९

———✻———

शेषसंग्रह नम्बर ९

आबूपर वसतपाल तेजपालके मदिरकी प्रशस्ति १

वदे सरस्वती देवीं याति या कविमानस ॥ नीय माना निज व ध (वेश्म) यान (मा)

नसवासिना ॥ १ ॥ य कांतिमानप्यपवृत्तकाम शान्तोपि दीप्त स्मरनिग्रहाय ॥ निमी-
लिताक्षो पि समग्रदर्शी स व शिवायास्तु शिवातनूज ॥ २ ॥ अणहिलपुरमस्ति
स्वस्ति पात्र प्रजानाम्जरजिरघुतुल्यै पाल्यमान चुलुक्यै ॥ चिर मति रमणीना यत्र
वक्रेन्दुमन्दी कृतइवसितपक्षप्रक्षये प्यन्धकार ॥ ३ ॥ तत्र ॥ प्राग्वाटान्वयमुकुट
कुटज प्रसूनविशदयशा ॥ दानविनिर्जितकल्पद्रुमषण्डश्चण्डप समभूत् ॥ ४ ॥ चण्ड-
प्रसाद सञ्ज्ञ स्वकुलप्रसादहेमदण्डोस्य॥ प्रसरत्कीर्तिपताक पुण्यविपाकेन सूनुरभूत्
॥५॥ आत्मगुणै किरणैरिवसोमो रोमोद्गम सता कुर्वन् ॥ उदगादगाधमध्यादुग्धोदधि-
बान्धवात्तस्मात् ॥ ६ ॥ एतस्मादजनिजिनाधिनाथभक्तिबिभ्राण स्वमनसि शश्वदश्व-
राज ॥ तस्यासीद्दयिततमा कुमारदेवी देवीव त्रिपुरगुरो कुमारमाता ॥ ७ ॥
तयो प्रथमपुत्रोभून्मन्त्रीलूणिगसञ्ज्ञया ॥ दैवादवापबालोपि सालोक्य वासवेन स ॥८॥
पूर्वमेवसचिव स कोविदैर्गण्यते स्म गुणवत्सुलूणिग ॥ यस्य निस्तुषमतेर्मनीषया
धिक्कृतेव धिषणस्य धीरपि ॥ ९ ॥ श्रीमल्लदेव श्रितमल्लिदेव स्तस्यानुजोमन्त्रि
मतल्लिकाभूत् ॥ बभूव यस्यान्यधनाङ्गनासु लुब्धानबुद्धि शमलब्धबुद्धे ॥ १० ॥
धर्मविधाने भुवनच्छिद्रपिधाने विभिन्नसधाने ॥ सृष्टिकृतानाहिसृष्ट प्रतिमल्लो म-
ल्लदेवस्य ॥ ११ ॥ नीलनीरदकदम्बकमुक्त श्वेतकेतुकिरणोद्धरणेन ॥ मल्लदेवयशसा
गलहस्तो हस्तिमल्ल दशनांशुषुदत्त ॥ १२ ॥ तस्यानुजो विजयते विजितेन्द्रियस्य
सारस्वतामृतकृताद्भुतहर्षवर्ष ॥ श्रीवस्तुपाल इति भालतलस्थितानि दौ स्थ्याक्षराणि
सुकृती कृतिनां विलुम्पन् ॥ १३ ॥ विरचयति वस्तुपाल श्चुलुक्यसचिवेषु
कविषु च प्रवर ॥ न कदाचिदर्थहरण श्रीकरणे काव्यकरणे वा ॥ १४ ॥
तेज पाल पालितस्वाशितेज पुञ्ज. सोय राजते मन्त्रिराज ॥ दुर्वृतानां शङ्कनी-
य कनीयानस्य भ्राता विश्वविश्रान्तकीर्ति ॥ १५ ॥ तेज पाल स्य
विष्णोश्च क स्वरूप निरूपयेत् ॥ स्थित जगत्रयीसूत्र यदीयोदरकन्दरे ॥ १६ ॥
जाल्हूमाऊसाऊधनदेवीसोहगावयजुकाख्या ॥ पदमलदेवी चैषा क्रमादिमा .
सप्तसोदर्या ॥ १७ ॥ एतेश्वराजपुत्रा दशरथपुत्रास्तएवचत्वार ॥ प्राप्ता किल
पुनरवनावेको दरवासलोभेन ॥ १८ ॥ अनुजन्मना समेतस्तेज पालेन
वस्तुपालोयम् ॥ मदयति कस्यन हृदय मधुमासोमाधवेनेव ॥ १९ ॥
पन्थानमेको न कदापि गच्छेदिति स्मृतिप्रोक्तमिद स्मरन्तौ ॥ सहोदरौ दुर्द्धरमोहचौरे .
सभूयधर्माध्वनितौ प्रवृत्तौ ॥ २० ॥ इद सदा सोदरयोरुदेतु युग युगव्यायतदोर्यु-
गश्रि ॥ युगे चतुर्थे प्यनघेन येन कृत कृतस्यागमन युगस्य ॥ २१ ॥
मुक्तामयशरीरं सोदरयो सुचिरमेतयोरस्तु ॥ मुक्तामय किल महीवलयमिद भाति

यत्कीर्त्यां ॥ २२ ॥ एकोत्पत्तिनिमितौ यद्यपि पाणीतयो स्तथाप्येक ॥
वामो भूदनयो र्नतुसोदर्यो कोपि दक्षिणयो ॥ २३ ॥ धर्मस्थानाङ्किता
मुर्वींसर्वत कुर्वतामुना ॥ दत्त पादोबलाद्बन्धु युगुलेन कलेर्गले ॥ २४ ॥
इति श्चौलुक्यवीराणां वशे शाखाविशेषक ॥ अर्णोराजइतिख्यातो जातस्तेजोमय
पुमान् ॥ २५ ॥ तस्मादनन्तरमनन्तरितप्रताप प्राप क्षिति क्षतरिपुर्लवणप्रसाद ॥
स्वर्गापगाजलवलक्षितशङ्खशुभ्रा बभ्राम यस्य लवणाब्धिमतीत्य कीर्ति ॥ २६ ॥
सुतस्तस्मादासीद्दशरथककुत्स्थप्रतिकृति प्रतिक्ष्मापालाना कवलितबलो वीर-
धवल ॥ यश पूरेयस्य प्रसरति रतिक्लान्तमनसा मसाध्वीनां भग्नाभिसरणकलायां
कुशलता ॥ २७ ॥ चौलुक्य सुकृति स वीरधवल कर्णे जपाना जप य कर्णे पि
चकार न प्रलपतामुद्दिश्य यो मन्त्रिणौ ॥ आभ्यामभ्युदयातिरेकरुचिर राज्य
स्वभर्तु कृत वाहानां निवहाघटा· करटिना बद्धाश्वसौधाङ्गणे ॥ २८ ॥
तेनमन्त्रिद्वयेनाय जानेजानू (तू) पवर्तिना ॥ विभुर्भुजद्वये नैव सुखमाश्लिष्यति
श्रियम् ॥ २९ ॥ गौरीवरश्वशुरभूधरसभवोयमस्त्यर्बुद ककुदमद्रिकदम्बकस्य ॥
मन्दाकिनीं घनजटेदधदुत्तमाङ्गे य श्यालक शशिभृतो भिनयकरोति ॥ ३० ॥
क्वचिदिह विहरन्ती वीक्षमाणस्य रामा प्रसरतिरतिरन्तर्मोक्षमाकाङ्क्षतो पि ॥ क्वच-
नमुनिभिरर्थ्यां पश्यतस्तीर्थवीथिं भवति भवविरक्ति (क्तौ) धीरधीरात्मनोपि ॥ ३१ ॥
श्रेय · श्रेष्ठवसिष्ठहोमहुतभृक्कुण्डान्मृतण्डात्मज प्रद्योता धिकदेहदीधिति भर
कोप्याविरासीन्नर · ॥ तमत्वापरमारणैकरसिक सव्याजहारश्रुते राधार · परमार
इत्यजनितन्नामाथतस्यान्वय ॥ ३२ ॥ श्रीधूमराज प्रथमबभूव भूवासवस्तत्र
नरेद्रवशे ॥ भूमीभृतोय कृतवानभिज्ञान्पक्षद्वयोच्छेदनवेदनासु ॥ ३३ ॥
धन्धुकध्रुवभटादयस्ततस्तेरिपुद्वयघटाजितोभवन् ॥ यत्कुलेजनि पुमान्मनोरमो राम-
देव इतिकामदेवजित्॥ ३४ ॥ रोद कन्दरवर्तिकीर्तिलहरी लिप्तामृताशुंद्युते रप्रद्युम्न-
वशोयशोधवल इत्यासीत्तनूजस्तत · ॥ यश्चौलुक्यकुमारपालनृपतिप्रत्यर्पिता-
मागत मत्वासत्वरमेवमालवपतिं बल्लालमालब्धवान् ॥ ३५ ॥ शत्रुश्रेणीगलवि-
दलनोन्निद्रनिस्त्रिंशधारो धारावर्ष · समजनि सुतस्तस्यविश्वप्रशस्य · ॥ क्रो-
धाक्रान्तप्रधनवसुधानिश्चले यत्र जाता श्च्योतन्नेत्रोत्पलजलकणा · कोङ्कणा-
धीशपत्न्य · ॥ ३६ ॥ सोयं पुनर्दाशरथि:पृथिव्यामव्याहतौजा स्फुटमुज्जगाम ॥
मारीचवैरादिव योधनोपि मृगव्यमव्यग्रमति करोति ॥ ३७ ॥ सामन्तसिंह-
समितिक्षितिविक्षतौजा · श्रीगुर्जरक्षितिपरक्षणदक्षिणासि ॥ प्रल्हादनस्तदनुजो
दनुजोतमारिचारित्रमत्र पुनरुज्ज्वलयांचकार ॥ ३८ ॥ देवीसरोजासनसंभवा किं

कामप्रदा कि सुरसौरभेयी ॥ प्रल्हादनाकारधराधरायामायातवत्येष न निश्चयो मे ॥ ३९ ॥ धरावर्षसुतो य जयति श्रीसोमसिहदेवो य ॥ पितृत शौर्य विद्या पितृव्यतो ज्ञानमुभयतो जगृहे ॥ ४० ॥ मुक्ताविप्रकरानराति निकरान्निर्जिज्य तत्किंचन प्रापत्सप्रति सोमसिहनृपति सोमप्रकाश यश ॥ येनोर्वीतलमुज्ज्वलरचयताप्यु-त्ताम्यतामीर्ष्यया सर्वेषामिह विद्विषा नहि मुखान्मालिन्यमुन्मूलितम् ॥ ४१ ॥ वसुदेवस्येवसुत श्रीकृष्ण कृष्णराजदेवो स्य ॥ मात्राधिकप्रतापो यशोदयासंश्रितो जयति ॥ ४२ ॥ इतश्च ॥ अन्वयेन विनयेन विद्यया विक्रमेण सुकृतक्रमेण च ॥ क्वापि को पि न पुमानुपैति मे वस्तुपालसदृशो दृशो पथि ॥ ४३ ॥ दयिता ललितादेवीतनयमवीतनयमाप सचिवेन्द्रात् ॥ नाम्ना जयन्तसिंह जयन्त-मिन्द्रात्पुलोमपुत्रीव ॥ ४४ ॥ य शैशवे विनयवैरिणि बोधवन्ध्ये धत्ते नय च विनय च गुणोदय च ॥ सोय मनोभवपराभवजागरुक रुपो न क मनसि चुम्बति जैत्रिसिह ॥ ४५ ॥ श्रीवस्तुपालपुत्र कल्पायुरय जयन्तसिहो स्तु ॥ कामादधिक रूप निरूप्यते यस्य दान च ॥ ४६ ॥ सश्रीतेज पाल सचिवश्चिरकालमस्तु तेजस्वी ॥ येन जना निश्चिन्ताश्चिन्तामणिनेव नन्दन्ति ॥ ४७ ॥ यच्चाणक्या-मरगुरुमरुद्याधिशुक्रादिकाना प्रागुत्पाद व्यधितभुवने मन्त्रिणा बुद्धिधाम्नाम् ॥ चक्रे भ्यास स खलु विधिनानूनमेन विधातु तेज पाल कथमितरथा-धिक्यमापैषतेषु ॥ ४८ ॥ अस्ति स्वस्तिनिकेतन तनुभृता श्रीवस्तुपालानुज स्ते-ज पालइति स्थितिबलिकृता मुर्वीस्थले पालयन् ॥ आत्मीय बहुमन्यते नहि गुण-ग्राम च कामन्दकिश्चाणक्यो पि चमत्करोति न हृदि प्रेक्षास्पद प्रेक्ष्ययम् ॥ ४९ ॥ इतश्च महश्रीतेज पालस्य पत्न्याश्चानुपमदेव्या पितृवशवर्णनम् ॥ प्राग्वाटान्वय मण्डनैकमुकुट श्रीसान्द्रचद्रावतीवास्तव्य स्तवनीयकीर्तिलहरोप्रक्षालितक्ष्मा-तल ॥ श्रीगागाभिधयासुधीरजनि यद्वृत्तानुरागादभूत्कोनामप्रमदेनदोलित-शिरानोद्भूतरोमापुमान् ॥ ५० ॥ अनुसृतसज्जनसरणिर्धरणिगनामाबभूवतत्तनय. ॥ स्वप्रभुहृदये गुणिना हारेणेवस्थितयेन ॥ ५१ ॥ त्रिभुवनदेवी तस्य त्रिभुवनविख्यातशीलसपन्ना ॥ यदिता भूदस्या पुनरङ्ग द्वेधा मनस्त्वेकम् ॥ ५२ ॥ अनुपदेवीदेवी साक्षाद्दाक्षायणीव शीलेन ॥ तद्दुहिता सहिता श्रीतेज पालेनपत्या-भूत् ॥ ५३ ॥ इयमनुपमदेवी दिव्यवृत्तप्रसून व्रततिरजनितेज पालमन्त्रीशपत्नी ॥ नयविनयविवेकौ चित्यदाक्षिण्यदानप्रमुखगुणगणेन्दुद्योतिताशेषगोत्रा ॥ ५४ ॥ लावण्यसिहस्तनयस्तयोरय रयजयन्निन्द्रियदुष्टवाजिनाम् ॥ लब्ध्वापिमीन-ध्वजमङ्गलं वय प्रयाति धर्मैकविधायिना ध्वना ॥ ५५ ॥ श्रीतेजपाल-तनयस्य गुणानमुष्य श्रीलूणसिहकृतिन कति न स्तुवन्ति ॥ श्रीबन्धनो

ह्वरतरैरपियैसमन्ताद्दुद्दामतात्रिजगतिक्रियते स्म कीर्ति ॥ ५६ ॥ गुणधन निधानकलश प्रकटोयमवेष्ठितश्च खलसर्पै ॥ उपचयमयते सतत सुजनैरुपजीव्यमानो पि ॥ ५७ ॥ मल्लदेवसचिवस्य नन्दन पूर्णसिहइति लीलुकासुत ॥ तस्य नन्दति सुतोयमल्लगादेविभू सुकृतवेश्मपेथड ॥ ५८ ॥ अभूदनुपमापत्नी तेजपालस्यमन्त्रिण ॥ लावण्यसिंहनामायमायुष्मानेतयो सुत ॥ ५९ ॥ तेज पालेन पुण्यार्थं तस्यपुत्रकलत्रयो ॥ हर्म्यं श्रीनेमिनाथस्य तेने तेनेदमर्बुदे ॥ ६० ॥ तेज पालइति क्षितीन्द्रसचिव शङ्खोज्ज्वलाभि शिलाश्रेणीभि स्फुरदिन्दुकुन्दरुचिर नेमिप्रभोर्मन्दिरम् ॥ उच्चैर्मन्दिरमग्रतो जिनवरा वासद्विपञ्चाशत तत्पार्श्वेपु बलानक च पुरतो निष्पादयामासिवान् ॥ ६१ ॥ श्री मच्चण्डपसभव समभवच्चण्ड प्रसादस्तत सोमस्तत्प्रभवो श्वराजइति तत् पुत्रा पवित्राशया ॥ श्री मल्लूणिगमल्लदेव सचिव श्री वस्तुपालाह्वयस्तेज पाल समन्विता जिनमता रामोन्नमन्नीरदा ॥ ६२ ॥ श्रीमन्त्रीश्वरवस्तुपालतनय श्रीजैत्रसिहाह्वयस्तेज पालसुतश्च विश्रुतमति र्लावण्यसिहाभिध ॥ एतेषादशमूर्तय करिवधूस्कन्धाधिरूढाश्चिर राजन्ते जिनदर्शनार्थमवतादिङ्नायकानामिव ॥ ६३ ॥ मूर्त्तीनामिह पृष्ठत करिवधू पृष्ठप्रतिष्ठाजुषा तन्मूर्तीर्विमलाश्म खत्तकयुता कान्तासमेतादश ॥ चौलुक्यक्षितिपालवीरधवलस्याद्वैतबन्धु सुधी स्तेज पाल इति व्यधापयदय श्रीवस्तुपालानुज ॥ ६४ ॥ तेज पाल सकलप्रजोपजीव्यस्य वस्तुपालस्य ॥ सविधे विभाति सफल सरोवरस्येव सहकार ॥ ६५ ॥ तेन भ्रातृयुगेन या प्रतिपुरग्रामाध्वशैलस्थल वापीकूपनिपानकाननसर प्रासादसत्रादिका ॥ धर्मस्थानपरपरा नवतरा चक्रेथ जीर्णोद्धृता तत्सख्यापि नबुध्यते यदि पर तद्वेदिनी मेदिनी ॥ ६६ ॥ शम्भो श्वासगतागतानि गणयेद्य सन्मतिर्यो थवा नेत्रोन्मीलनमीलनानि कलये न्मार्कण्डनाम्नो मुने ॥ सख्यातु सचिवद्वयी विरचिता मेतामपेतापर व्यापार सुकृतानुकीर्तनततिं सोप्युज्जिहीतेयदि ॥ ६७ ॥ सर्वत्रवर्तताां कीर्तिरश्वराजस्य शाश्वती ॥ (उद्धर्तु) मुपकर्तु च जानीते यस्यसतति ॥ ६८ ॥ आसीच्चण्डपमण्डितान्वयगुरुर्नागेन्द्रगच्छश्रिय श्चूडारत्नमयत्नसिद्धमहिमा सूरिर्महेन्द्राभिध ॥ तस्माद्विस्मयनीयचारुचरित श्रीशान्तिसूरिस्ततो प्यानन्दामर सूरियुग्ममुदयच्चन्द्रार्कदीप्तद्युति ॥ ६९ ॥ श्री जैनशासनवनीनवनीरवाह . श्रीमास्ततोप्यघहरो हरिभद्रसूरि ॥ विद्वान्मनोमयगदेष्वनवद्यवैद्य स्यातस्ततो विजयसेन मुनीश्वरोयम् ॥ ७० ॥ गुरोस्तस्याशिषापात्र सूरिरभ्युदय प्रभु ॥

मैक्तिकानीवसूक्तानि भान्तियत्प्रतिमाम्बुधे ॥ ७१ ॥ एतद्धर्मस्थान धर्मस्थानस्य चास्यय कर्ता ॥ तावद्वयमिदमुदियादुदयत्ययमर्बुदोयावत् ॥ ७२ ॥ श्रीसोमेश्वरदेवश्चुलुक्यनरदेवसेविताङ्घ्रिपदयुग्म ॥ रचयाचकार रुचिरा धमर्स्थानप्रशस्तिमिमाम् ॥ ७३ ॥ श्रीनेमेरम्बिकायाश्च प्रसादादर्बुदाचले ॥ वस्तुपालान्वयस्यास्तु प्रशस्ति स्वस्तिशालिनी ॥ ७४ ॥ सूत्रकारकल्हणसुतधाधलपुत्रेण चण्डेश्वरेण प्रशस्तिरियमुत्कीर्णा श्री विक्रम सवत् १२८७ वर्षे श्रीश्रावण वदि ३ रवौ श्री विजयसेनसूरिभि प्रतिष्ठा कारिता ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १०

अचलेश्वरके मंदिरकी प्रशस्ति

परमार वश वर्णन

इतश्च ॥ अस्ति श्रीमानर्बुदाख्यो द्रिमुख्य शृगश्रेणिर्बिभ्रदभ्रलिहो य ॥ वृद्धिं विध्य किंपुनर्यात्यसावित्यादित्यस्य भ्रान्तिमतर्विधत्ते ॥ १० ॥ तत्राथ मैत्रावरुणस्य जुह्वतश्चडो ग्निकुडात्पुरुष पुरो भवत् ॥ मत्वा मुनींद्र परमारणक्षम स व्याहरत्त परमारसज्ञया ॥ ११ ॥ पुरा तस्यान्वये राजा धूमराजाह्वयो भवत् ॥ येन धूमध्वजेनेव दग्धा वशा क्षमाभृताम् ॥ १२ ॥ अपरे पि न सदग्धा धधूध्रुवभटादय ॥ जाता कृताहवोत्साहबाहवो बहवस्तत ॥ १३ ॥ तदनतरमभ्रगितकीर्तिसुधासिन्धु शुधितव्योमा ॥ श्रीरामदेवनामा कामादपिसुंदर सो भूत् ॥ १४ ॥ तस्मान्महीगविदितान्यकलत्रगात्रस्पर्शोयशोधवलइत्यवलबते स्म ॥ यो गुर्जरक्षितिपतिप्रतिपक्षमाजौ बल्लालमालभत मालवमेदिनींद्र ॥ १५ ॥ धारावर्षस्तत्सुत · प्रापलक्ष्मी र्लिप्तक्षोणि शोणितै कुकणेदो ॥ सर्वत्रापि स्वैश्चरित्रै पवित्रैर्ल्लक्षोघाराघवेणेव येन ॥ १६ ॥ तस्य प्रल्हादनो नाम वामनस्येव भूभुव ॥ अनुजन्मा भवद्येन दक्षा श्री रग्रजन्मना ॥ १७ ॥ श्रीसोमसिह पितुरेष धारा वर्षस्य राज्यं कुरुताच्चिराय ॥ तथाहि राज्य गणतस्तुराज्य दिशादिभिर्यस्य च दत्तमेव ॥ १८ ॥ सोमसिंहो नृसिंहोयमपूर्व पृथिवीतले ॥ यन्नाम्ना भुविदीर्यंते हृदयानि विरोधिनां ॥ १९ ॥ श्री – देव क्षितिदेवदौस्थ्यनिर्व्वासितव्याप्टतमासनो सौ ॥ श्रीसोमसिंहे पितरिस्वराज्ये वति स्थिर यो वति यौवराज्य ॥ २० ॥

इतश्च ॥

(यह प्रशस्ति बहुत बडी है, इसका सवत् जमीनमें गडाहुआ मालूम होता है, और इसके ऊपरके भागमे भी बहुत अक्षर खडित होगये है, इस वास्ते हमने मात्र परमार राजाओका हाल लिखा है)

शेषसंग्रह, नम्बर ११

(१) आबूके परमार राजा धारावर्ष का ताम्रपत्र, सं० १२३७

प्लेट १

संवत् १२३७ वर्षे कार्तिक शुदि ११ गुरावद्येहचाज्ञापन ॥ समस्त राजावलीसमलंकृत श्रीमदर्बुदाधिपति श्रीधूमराजदेवकुलकमलोद्योतनमार्तंडमांडलिकेषुचरतु श्री धारावर्षदेवकल्याणविजयराज्ये तत्पादपद्मोपजीविनमह० श्रीकोविदास समस्तमुद्राव्यापारान्परिपथयतीत्येव कालेप्रवर्तमाने शासनाक्षराणि लिख्यते यथा उदयेसजातेदेवा – – – का – – – महाप्रक्षीणनलिनीदलगतजललवतरलतरजीवितव्यासिदविधाय परमार्हैवाचार्य भट्टारकवीसलउग्रदमके

प्लेट २

– साहिलवाडा ग्रामेग्रह – मुक्ति ॥ तथाएतदीयधरणीगोचरेचरणीया तथाकुभारनुलीग्रामे सुरभिमर्यादापर्यंत भूमिदत्ताहल २ हलद्वयभूमिशासनेनोदक पूर्वप्रदत्ता ॥ घूतोत्र मह श्री कोविदासगी जाल्हणौ ॥ मतै ॥ श्री ॥ बहुभिर्वसुधा भुक्ताराजभि सगरादिभि ॥ यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदाफलम् ॥ १ ॥ स्वदत्ता परदत्तां वा यो हरेत वसुधरा ॥ षष्ठिवर्षसहस्त्राणि विष्टायांजायतेकृमि ॥ २ ॥ ममवंशक्षये क्षीणेअन्योह नृपतिर्भवेत् ॥ तस्याहकरलग्नोस्मि ममदत्त न लोपयेत् ॥ ३ ॥ ढ ॥ शुभभवतु

मागवाडीग्राम ग्रासभूमिदत्ता दातडलीग्राम ग्रासभूमिदत्ता ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १२

———✻———
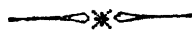
ॐ स्वस्ति ॥ य पुसा द्वैतभाव विघटयितुमिव ज्ञानहीनेक्षणानामर्द्धस्वीय विहायार्द्धमपि मुररिपोरेकभावात्मरूप ॥ – – – रोदजन्मा प्रलयजलधरश्यामल कठनाले भाले यस्यार्द्धलेखा स्फुरति शशभृत पातु व स त्रिनेत्र ॥ १ ॥ अवतीभूलोक निजभुजभृतां शौर्यपटलै पुनती विप्राणा श्रुतिविहितमार्गानुगमिना ॥ सदाचारैस्तारै स्मरसरसयूना परिमलैरवती हर्षतीजयति धनिना क्षेत्रधरणी ॥ २ ॥ एतस्यां पुरि नूतनाभिधमठात् सपन्नविद्या तया धीरात्मा चपलीयगोत्रिविभवो निर्वाणमार्गानुग ॥ एकाग्रेण तु चेतसा प्रतिदिनं चडीशपूजारत सजात

(१) यह ताम्रपत्र सिरोही राज्यके हाथल गामके एक शुक्ल ब्राह्मणके पास है

स च चडिकाश्रमगुरुस्तेजोमयस्तापस ॥ ३ ॥ शिष्यो मुनेरस्य महातपस्वी विवेक-विद्याविनयाकरो य ॥ गुरूरुभक्तिर्व्यसनानिरिक्तो बभौ मुनिर्वा कलराशिनाम ॥ ४ ॥ जज्ञे ततो ज्येष्ठजराशिरस्मादेकातरीशातमनास्तपस्वी ॥ त्रिलोचनाराधनतत्परात्मा बभूव यागेश्वरराशिनाम ॥ ५ ॥ तस्मादाविरभूदहस्करइव प्रव्यक्तलोकद्वय क्रोधध्वातविनाशनैकनिपुण श्रीमौनिराशिर्मुनि ॥ शांतिक्षातिदयादिभि परिकरै शूलेश्वरीसन्निभा शिष्या तस्य तपस्विनी विजयिनी योगेश्वरी प्राभवत् ॥ ६ ॥ दुर्वासराशिरेतस्या शिष्यो दुर्वाससा सम ॥ मुनीनासवभूवोग्रस्तपसा महसापि च ॥ ७ ॥ व्रतनियमकलाभिर्यामिनीनाथमूर्तिर्निजचरितवितानैर्दिक्षु विस्यातकीर्ति ॥ अमलचपलगोत्रप्रोद्यताना मुनीनामजनि तिलकरूपस्तस्यकेदारराशि ॥ ८ ॥ जीर्णोद्धार विशाल त्रिदिवपतिगुरोरत्र कोटेश्वरस्य व्यूढ चोत्तानपट्टं सकलकनखले श्रद्धया यश्चकार ॥ अत्युच्चैर्भित्तिभागैर्दिवि दिवसपतिस्य-दन वा विग्रहूणन् येनेहाकारि कोट कलिविहगचलच्चितवित्रासपाश ॥ ९ ॥ अभिनवनिजकीर्तिमुर्तिरुच्चैरवाद सदनमतुल नाथस्योद्धृत येन जीर्ण ॥ इहकनखलनाथस्याग्रतो येन चक्रे नवनिविडविशाले सद्मनीशूलपाणे ॥ १० ॥ यदीया भगिनिशाता ब्रह्मचर्यपरायणा ॥ शिवस्यायतन रम्य चक्रे मोक्षेश्वरी भुवि ॥ ११ ॥ प्रथमविहितकीर्ति प्रौढयज्ञक्रियासु प्रतिकृतिमिव नव्या मडपे यूपरूपा ॥ इह कनखलशभो सद्मनि स्तभमालाममलकषणपाषाणस्य सव्याततान ॥ १२ ॥ यावदर्बुदनागोय हेलया नदिवर्द्धन वहति पृष्ठतो लोके तावन्नदतु कीर्त्तन ॥ १३ ॥ यावत् क्षीर वहति सुरभी शस्यजात धरित्री यावत् क्षोणीं-कपटकमठो यावदादित्यचद्रौ ॥ यावद्वाणीप्रथमसुकवे र्व्यासभाषा च यावत् श्रीमल्ल-क्ष्मीधरविरचिता तावदस्तु प्रशस्ति ॥ १४ ॥ सवत् १२६५ वर्षे वैशाख शु० १५ भौमे चौलुक्योद्धरण परम भट्टारक महाराजाधिराज श्रीमद्भीमदेवप्रवर्द्धमान-विजयराज्ये श्री करणेमहामुद्रामत्यमहवा भूप्रभृति समस्तपचकुलेपरिपथयति चद्रावतीनाथ मांडलिकासुर शभु श्री धारावर्षदेवे एकातपत्र वाहकत्वेनभुवं पालयति षटदर्शन अवलंबनस्तभसकलकलाकोविदकुमार गुरुश्रीप्रल्हादनदेवे यौवराज्ये सति इत्येवकाले केदारराशिना निष्पादितमिद कीर्तन सूत्रपाल्हणहकेन उत्कीर्ण ॥

शेषसग्रह, नम्बर १३.

उँनम ✳✳✳✳✳✳✳✳✳✳✳✳✳✳

संवत् १२८७ वर्षे लौकिक फाल्गुन वदि ३ रवौ अद्येह श्रीमदणहिलपाटके चौ-

लुक्यकुलकमलराजहंससमस्तराजावलीसमलंकृत महाराजाधिराजश्रीभ ***** विजयराज्येत *********** (धा ?)

श्रीवशिष्ठकुण्डयजनानलोद्भूतश्रीमद्धूमराजदेवकुलोत्पन्न महामण्डलेश्वर राजकुल श्रीसोमसिंहदेव विजयराज्ये तस्यैव महाराजाधिराजश्रीभीमदेवस्य प्रसाद **** रात्रामण्डले श्री चौलुक्यकुलोत्पन्न महामण्डलेश्वर राणक श्री-लवणप्रसाददेवसुत महामण्डलेश्वर राणक श्री वीरधवलदेव सत्कसमस्त मुद्रा-व्यापारिणा श्री मदणहिलपुरवास्तव्य श्रीप्राग्वाट ज्ञातीय ठ० श्री चडपसुत ठ० श्रीचण्डप्रसादात्मज मह० श्रीसोमतनुज ठ० श्रीआसराज भार्या ठक्कुर श्री कुमारदेव्यो पुत्र मह० श्रीतेजपालेन श्रीमल्लदेवसंघपति मह० श्री वस्तु-पालयोरनुजसहोदरभ्रातृ मह० श्री तेज पालेन स्वकीयभार्या मह० श्री अनुप-मादेव्या स्तत्कुक्षिस ***

चित्रपुत्र महं० श्रीलुणसिंहस्यच पुण्ययशोभिवृद्धये श्रीमदर्बुदाचलोपरि देउलवाडाग्रामे समस्तदेव कुलिकालंकृत विशालहस्तिशालोपशोभितं श्री-लुणसिंहवसहिकाभिधानश्रीनेमेनाथदेवचैत्यमिदं कारितम् ॥ छ ॥

प्रतिष्ठित श्रीनागेन्द्रगच्छे श्रीमहेन्द्रसूरिसंताने श्रीशांतिसूरिशिष्य श्री-आनन्दसूरि श्री अमरचन्द्रसूरिपट्टालंकारणप्रभु श्रीहरिभद्रसूरिशिष्यै श्रीवि-जयसेनसूरिभि ॥ छ ॥ अत्र च धर्म स्थाने कृत श्रावकगोष्ठिकाना नामानि यथा ॥ मह० श्रीमल्लदेव मह० श्रीवस्तुपाल मह० श्रीतेज पाल प्रभृति भ्रातृत्रय संतान परं परया तथा मह० श्रीलूणसिंहसत्कमातृ कुलपक्षे श्रीचन्द्रावती वास्तव्य प्रागवाटज्ञातीय ठ० श्रीसावदेवसुत ठ० श्रीसालिगतनुज ठ०

श्रीसागर तनय ठ० श्री गागापुत्र ठ० श्रीधरणिगभ्रातृ मह० श्री राणिग महं० श्री लीला० तथा ठ० श्री धरणिगभार्या ठ० श्रीतिहुणदेवीकुक्षिसंभूत मह० श्री अनुपमादेवीसहोदर भ्रातृ ठ० श्री खीवसीह ठ० श्री आम्बसीह श्रीऊदल तथा मह० श्री लीलासुत मह० श्रीलूणसीह तथा भ्रातृ ठ० श्री जग-सीह ठ० रत्नसिंहानां समस्तकुटुम्बेन एतदीय संतानपरंपरया च एतस्मि न्धर्मस्थाने सकलमपिस्नपनपूजासारादिकं सदैव करणीय निर्वाहणीय च तथा ॥

श्री चन्द्रावत्या. सत्क समस्त महाजन सकलजिनचैत्यगोष्ठिक प्रभृति श्रा-वक समुदाय तथा उवरणी कीसरउली ग्रामीय प्राग्वाटज्ञा० श्रे० रासल उ० आसधर तथा ज्ञा० माणिभद्र उ० श्रे० आल्हण तथा ज्ञा० श्रे० देल्हण उ० खीम्वसी

हृधर्कटज्ञातीय श्रे० नेहा उ० साल्हा तथा ज्ञा० धउलिग उ० आसचद्र तथा ज्ञा० श्रे० वहुदेव उ० सोमप्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सावड उ० श्रीपाल तथा ज्ञा० श्रे० जीन्दा उ० पाल्हण धर्कट ज्ञा० श्रे० पासु उ० सादा प्राग्वाटज्ञातीय पूना उ० साल्हा तथा श्रीमाल ज्ञा० पूना उ० सल्हा प्रभृति गोष्ठिका अमीभि श्रीनेमिनाथदेवप्रतिष्ठावर्षग्रथियात्राष्टाहिकाया देवकीय चैत्रवदि ३ तृतीया दिने स्नपनपूजाद्युत्सव कार्य तथा कासहृदग्रामीय उएस वालज्ञातीय श्रेष्ठ सोहि उ० पाल्हण तथा ज्ञा० श्रे० सलखण उ० वालण प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० सानुय उ० देल्हय तथा ज्ञा० श्रे० गोसल उ० आल्हा तथा ज्ञा० श्रे० कोला उ० आम्रा तथा ज्ञा० श्रे० पासचद्र उ० पूनचन्द्र तथा ज्ञा० श्रे० जसवीर० उ० जगा तथा ज्ञा० ब्रह्मदेव उ० राल्हा श्रीमालज्ञातीय कडुयरा उ० कुलधरप्रभृति गोष्ठिका अमीभिस्तथा ४ दिने श्रीनेमिनाथ देवस्य द्वीतीयाकाष्टाहिका महोत्सव कार्य तथा ब्रह्माणवास्तव्यप्रागवाटज्ञातीय महाजनि० आमिग उ० पुनड० उ० एसल ज्ञा० महा० धान्वा उ० सागर तथा ज्ञा० महा० साटा उ० वरदेव प्राग्वाट ज्ञातीय महा० पाल्हण उ० उदयपाल ऊंइसवाल ज्ञा० महा० आबोधन उ० जगसीह श्रीमाल ज्ञा० महा० वीसल उ० पासदेवप्राग्वाटज्ञातीय महा० वीरदेव उ० अरसिह तथा ज्ञा० श्रे० धनचन्द्र उ० रामचन्द्र प्रभृति गोष्ठिका अमिभिस्तथा ५ पञ्चमी दिने श्रीनेमिनाथ देवस्य तृतीयाष्टाहिका महोत्सव कार्य ॥ तथा धउली ग्रामीय प्राग्वाट ज्ञातीय श्रे० साजण उ० पासवीर तथा ज्ञा० श्रे० वोहडि उ० पुना तथा ज्ञा० श्रे० जसडय उ० जेगण तथा ज्ञातीय श्रे० साजण उ० भोला तथा ज्ञा० पासिल उ० पूनुय तथा ज्ञा० श्रे० राजुय० ऊसावदेव तथा ज्ञा० दूगसरण उ० साहणीय ऊंइसवाल ज्ञा० श्रे० सलखण ऊ मह० जोगा तथा ज्ञा० श्रीदेवकुवार उ० प्रभृति गोष्ठिका ॥ अमिभिस्तथा ६ षष्ठीदिने श्री नेमिनाथ देवस्य चतुर्थाष्टाहिका महोत्सव कार्य तथामुण्डस्थलमहातीर्थवास्तव्यप्राग्वाटज्ञातीय श्रेष्ठसधीरण उ० गुणचन्द्रपाल्हा तथा श्रे० सोहिय उ० आस्वेसर तथा श्रे० जेजा० उ० खांखण तथा फीलाणि ग्राम वास्तव्य श्रीमालज्ञा० वापल गाजण प्रमुखगोष्ठिका अमीभिस्तथा ७ सप्तमी दिने श्री नेमिनाथ देवस्य पञ्चमाष्टाहिका महोत्सव कार्य तथा हएडाउद्राग्राम डवाणीग्राम वास्तव्य श्रीमाल ज्ञातीय श्रे० आस्वुय उ० जसराज तथा ज्ञा० श्रे० लखमण उ० आसु तथा ज्ञा० श्रे० आसल उ० जगदेव तथा ज्ञा० श्रे० समिग उ० धणदेव तथा ज्ञा० श्रे० जिणदेव उ० जाल प्राग्वाट ज्ञा० श्रे० आसल उ० सादा श्रीमालज्ञा० श्रे० देदा उ० वीसल

तथा ज्ञा० श्रे० आसधर उ० आसल तथा ज्ञा० श्रे० थिरदेव उ० विरुय तथा ज्ञा० श्रे० गुणचन्द्र उ० देवधर तथा ज्ञा० श्रे० हरिया उ० हेमा प्राग्वाटज्ञा० श्रे० लखमण उ० कडुया प्रभृतिगोष्ठिका अमिभिस्तथा ८ अष्टमी दिने श्री नेमिनाथ देवस्य षष्ठाष्टाहिका महोत्सव कार्य ॥ तथा मडाहडवास्तव्य प्राग्वाटज्ञातीय श्रे० देसल उ० ब्रह्मसर (सा ?)ण तथा ज्ञा० जसकर उ० श्रे० धणिया तथा ज्ञा० श्रे० देल्हण उ० अल्हा तथा ज्ञा० श्रे० वाला उ० पद्मसीह तथा ज्ञा० श्रे० आवुय उ० वोहडि तथा ज्ञा० श्रे० वोसरि उ० पूनदेव तथा ज्ञा० श्रे० वीरुय उ० सजण तथा ज्ञा० श्रे० पाहुय उ० जिणदेव प्रभृति गोष्ठिका अमीभिस्तथा ९ नवमि दिने श्रीनेमिनाथदेवस्य सप्तमाष्टाहिकामहोत्सव कार्य ॥ तथा साहिलवाडा (१) वास्तव्य उईसवाल ज्ञातीय श्रे० देल्हण उ० आल्हण श्रे० नागदेव उ० आस्वदेव श्रे० काल्हण उ० आसल श्रे० वोहिथ उ० लाखण श्रे० जसदेव उ० वहडा श्रे० सीलण उ० देल्हण श्रे० वहुदा श्रे० महघरा उ० धनपाल श्रे० पूनिग उ० बाघा श्रे० गोसल उ० वहडा प्रभृति गोष्ठिका अमीभिस्तथा दशमि दिने श्री नेमिनाथ देवस्य अष्टमाष्टाहिका महोत्सव कार्य तथा श्रीअर्बुदोपरि देउलवाडावास्तव्य समस्त श्रावकै श्रीनेमिनाथ देवस्य पञ्चापिकल्याणिकानि यथादिन प्रतिवर्ष कर्तव्यानि ॥ एवमियं व्यवस्था श्रीचन्द्रावतीपति राजकुल श्रीसोमसिहदेवेन तथा तत्पुत्रराज० श्रीकान्हडदेवप्रमुखकुमारै . समस्तराजलोकैस्तथा श्रीचन्द्रावतीयस्थानपतिभट्टारकप्रभृतिकविलास तथा गूगुली ब्राह्मण समस्त महाजन गोष्ठिकैश्च तथा अर्बुदाचलोपरि श्री अचलेश्वर श्रीवशिष्ठ तथा सनिहिता ग्राम देउलवाडा ग्राम श्रीश्री मातामहवुग्राम आवुयाग्राम ऊरासाग्राम उतरछग्राम सिहरग्राम सालग्राम हेठउजी ग्राम आखी ग्राम श्रीधान्धलेश्वर देवीय कोटडी प्रभृति द्वादशग्रामेषु सतिष्ठमान स्थानपति तपोधन गूगुली ब्राह्मण राठीय प्रभृति समस्त लोकैस्तथाभालिभाडा प्रभृति ग्रामेषु सतिष्ठमान श्रीप्रतिहारवशीय सर्वराजपुत्रैश्च आत्मीयात्मीय स्वेच्छया श्रीनेमिनाथदेवस्य मण्डपे समुपविष्योपविश्य मह० श्री तेज पाल पार्श्वात्स्वीयस्वीयप्रमोदपूर्वक श्रीलूणसिहवसहिकाभिधानस्यास्य धर्मस्थानस्य सर्वोपिरक्षापभार स्वीकृत तदेतदात्मीयवचन प्रमाणिकुर्वद्भिरेतै सर्वैरपि तथा एतदीयसतानपरपरया च धर्मस्थानमिदमाचन्द्रार्कं यावत्परिरक्षणीयम् ॥ यत किमिह कपालकमण्डलुवल्कलसितरक्तपटजटापटलै ॥

---

(१) ग्राम धारावर्षके ताम्रपत्रमें यही लिखा है– देखो शेषसंग्रह नम्बर ११

व्रतमिदमुज्वलमुन्नतमनसा प्रतिपन्ननिर्वहणम् ॥ तथा महाराज कुल श्री-सोमसिंहदेवेन अस्या श्रीलूणसिंह वसहिकाया श्रीनेमिनाथ देवाय पूजाङ्ग-भोगार्थ बाहिरहद्या डवाणिग्राम शासनेन प्रदत्त ॥ स च श्रीसोमसिंह-देवाभ्यर्थनया प्रमारान्वयिभिराचन्द्रर्क यावत्प्रतिपाल्य सिद्धिक्षेत्रमिति प्रसिद्ध-महिमा श्रीपुंडरीको गिरि श्री मान् रैवतकोपि विश्वविदित क्षेत्र विमुक्ते रिति ॥ नून क्षेत्रमिद द्वयोरपि तयो श्री अर्बुदस्तत्प्रभूमेजाते कथमन्यथा सममिद श्री आदिनेमीस्वयम् ॥ १ ॥ ससारसर्वस्वमिहैव मुक्ति (?) सर्वस्य मप्यत्र जिनेशदृष्टम् विलोक्यमाने भुवने तवास्मिन् ॥ पूर्व पर च त्वयि दृष्टि-पान्थे ॥ २ ॥ श्री कृष्णर्षीय श्री नयचन्द्रसूरेरिमे संसरवणपुत्रस सिहराजसाधू साजणस सहसासाईदे पुत्रीसुनथवप्रणमन्ति ॥ शुभम् ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १४

अचलेश्वरके मन्दिरकी प्रशस्ति

ॐ नम सर्वेशाय ॥ येन यस्य गुणागुणे – – णिन प्रायेण पाठ्या इव ****
****
मनिश मोह व्यपोह्य महदानदशिवनित्वेन कलमसौ सौवोचलेश ॥ १ ॥ ****
****
लानिकलया कर्माणि कर्म्मान्य वै व्यर्थव्यनुतान्य जात्म कुणपेतज्ज्ञान्वि ********
** हृचराचरमिद
पूरयन्नात्मभावैर्विशेषो निजमावयांच गुणवान्वक्ति त्रय**********************
*** विधिवेधाकरोत्यसु ॥ ३ ॥
विरचिविष्णुभर्गाणासरसया – – – त ॥ जीर्णोद्धार चकाराथ प्रशसा क्रियते मया ॥ ४ ॥ जीर्णोद्धार पुनश्चात्र त्वचलेश्वरमडपे ॥ अकारि लिख्यते येन तस्य वं-शागर पर ॥ ५ ॥ क्षितौ प्रशांतौ किल सूर्यसोमवशौ विशालौ प्रवरौ हि पूर्वात् ॥ तयोर्विनाशे भगवान् किवच्छ स्वचितयद्दोषभयान्महात्मा ॥ ६ ॥ तच्चितया चंद्रमसस्सुयोगाद्ध्यानान्महर्षेरभवभुविशुशेच (?) – – – – दिशासु सर्वासु दैत्यान्प्रविलोक्य वेगात् ॥ ७ ॥ निजायुधैर्दैत्यवरान्निहत्य सतोषयत् क्रोधयुतं तुवच्छ ॥ वच्छ्य स्तदाराधनतत्पराश्च चद्रस्य वो – – – चद्रवश्या ॥ ८ ॥ एते तदारभ्य विशालवश्या स्याता क्षितावत्र पवित्रगोत्रा · ॥ त्राणायत्रासात्वपक्षात्र चित्राक्षात्रविधिविधिवशात् प्रचरति चित्र ॥ ९ ॥ वंशे – – – – – विरमेच तस्मिन्गुणैर्गरिष्ठोहि – – – सोमौ ॥ स्वतेजसा निर्जितसर्ववश · पूर्वप्रसिद्धोत्र तु सिधुपुत्र ॥ १० ॥ ततश्चातीवतेजाचपुमान् यो रुयभू – – – –

णोलक्षणाधार सर्वाधाराय – विह ॥ ११ ॥ शाकम्भरीपूर्वयदा पुरावै माणिक्य-सञ्ज पुरुष प्रवीर ॥ स्ववीर्यधैर्यार्जितभूमिभागो नर्द्दत – – – दलक्ष्मणोभूत् ॥ १२ ॥ ततोभूदधिराजाख्य पुत्रस्तस्यपराक्रमी सोहीरक्कोशनोवशे शोभिभूमौ-हितत्सुत ॥ १३ ॥ महिदुर्महताश्रेष्ठोबलीवलिकुलोद्वह तदन्वयीचमतिमान्-सिंधुराजोविराजते ॥ १४ ॥ प्रतापेनपदप्रापन्मही दोर्महदद्भुत ॥ अभूत्तेषा कुलेशाना कुले कुलविवर्द्धन ॥ १५ ॥ रघुर्यथा वशकरो हि वशे सूर्यस्य शूरो भुविमंडले ग्रे ॥ तथा-बभूवात्रपराक्रमेण स्वनामसिद्ध प्रभुरासराजा ॥ १६ ॥ तस्यभूदान्दणोमानी चा-हुमानान्वयाधिप ॥ कीर्तिपाल सुतस्तस्मात्कीर्त्या ख्यातो ऽखिल क्षितौ ॥ १७ ॥ अभूत्समरसिंहो नु नामार्थपरिपालक ॥ समरेमृगराजेव निहता मृगमानवा ॥ १८ ॥ समरसिंहसुतौ द्वौ सिंहशावाविवानुगौ ॥ तयोरुदयसिंहोभूद्धाताराज्यधुरधर ॥ १९ ॥ यो वै परोदानगुणैर्गरिष्ठस्तस्यात्मजो मानवसिंहनामा ॥ बभूव भूमौ कि-लक्षत्रियाणामनाथनाथो महतानुरूप ॥ २० ॥ ततो भवद्वशविवर्द्धनो नु प्रतापनामा नयनाभिराम ॥ सदा स्वकीर्त्या किल चाहुमान . पूज्य प्रतापानलतापि तारि ॥ २१ ॥ तस्यात्मजो ऽ पूर्वगुणाधिवासस्त्वासीद्दशस्यदननाममाप ॥ बभार बीजानि तु बीज-श्रेयोचत्वारिराज्यायहरे प्रसादात् ॥ २२ ॥ याभूदतीवादितितेजतुल्यास्तुल्यास्तनू-जान्सुषुवे हि वीरान् ॥ सा मल्लदेवी दयिता तु तस्य धराचरा भारवहान्वरिष्ठान् ॥ २३ ॥ ज्येष्ठो लावण्यकर्णोभूद्दृढलक्षणसञ्ज्ञकौ ॥ लूणवर्मानुजस्तेषामग्रजोराजपा-लक ॥ २४ ॥ चकारकर्माणिचयानिनान्यै गच्छति सिद्धि नियत निरीह ॥ नी-ते क्षय क्षत्रवरे सुरेर्यौ स्वगोत्रगोपालपरायणोभूत् ॥ २५ ॥ लावण्यकर्णे नुगते तु नाक भ्रातानुजो लूणिगदेवसञ्ज ॥ स्वबाहुवीर्यार्जितसर्वदेशान् शशास शूर कुलकल्पवृक्ष ॥ २६ ॥ पुनर्गतान्ना पदरीन्निहत्य दैत्यान्निवद्यो समरे ऽ म-रीश ॥ प्रापत्प्रतापादपरान्हिदेशान् चद्रावती चार्बुददिव्यदेश ॥ २७ ॥ न तेन तुल्य समये च तस्मि देशे समोय समरे बिभर्ति ॥ शस्त्रीवशभू परमोपि येन साकवराकोत्रहि लुठिगेन ॥ २८ ॥ अकारिपुण्यानि पराक्रमच युक्त्यार्बुदे चार्बुदमानवेश ॥ निवेशयद्वे प्रतिमागमूर्ति राज्ञोस्यराज्ञ्यास्त्वचलेश्वराग्रे ॥ २९ ॥ एव गुणागराचारः लुढागरनरागर ॥ कालावप्य करोदत्र जीर्णोद्धार सुरेश्वरे ॥ ३० ॥ उद्धर्त्ता पुण्यतीर्थाना प्रासादाना नराश्रय ॥ अर्बुदे ऽ परनाकेतु नागराजाश्रये-सुधी ॥ ३१ ॥ तेन वै देवदेवस्य त्वचलेश्वरमंडप . ॥ जीर्णोद्धारस्य विधिना कारयित्वा प्रतिष्ठित ॥ ३२ ॥ सर्वदात्रोपचर्यार्थ शासनेश्रद्धयान्वित ॥ दत्तो सावचलेशस्य हेठुजीग्राममग्रत . ॥ ३३ ॥ प्रीत्यर्थ मस्य सतत स्थितिकं वत्सर प्रति ॥ श्रद्धयोत्पन्न मचलमचलेशायदत्तवान् ॥ ३४ ॥ शन्नाप्रशस्ता विशदान्वयेन

द्विजेनजात्माजनितेन तेन ॥ स्थानाग्रजे नागर नागरेण यशक्षिताशेन महाधरेण ॥ ३५ ॥ कृतार्थ रूपार्थ विनाविनाभू त्तेनेयमेनोऽनवनाशनेन ॥ भवाभवा भावन भावभूतिनात्मात्ममोदोदयमोहितेन ॥ ३६ ॥ मागल्यमस्तु ॥ सवत् १३७७ वर्षे वैशाख सुदी ८ सोमे – – सवत्सरेऽधेयचद्रावतीं प्रतिबद्ध बहुणसमा वासित महाराजकुल श्रीलुढागरे चद्रावती प्रभृति देशेषु तथा यावतीपुर प्रति बद्ध द्विराजकुलाधिप – – सतोशितत्रिशुक्के श्रीकरणादिपागारे महं० देवसिह प्रतिबद्ध देवकुल प्रतिपथे श्रीअर्बुदाचले देव श्रीअचलेश्वर महामडपजीर्णोद्धारो महाराज श्रीलुढापेन कारित

(यह प्रशस्ति बहुत खडित है, लेकिन् हमको जैसी मिली, वैसी ही यहा दर्ज कीगई है)

शेषसग्रह, नम्बर १५

आबू परके श्री वसिष्ठके मदिरकी प्रशस्ति

ओनम श्रीवसिष्ठाय ॥ निर्दोष सततोदितो मितकल श्रीमान् कलकोझ्झित तल्य पक्षयुगे पि हर्षितवपु र्मित्रप्रतापोदये ॥ अत्यत कविभिर्बुधैरनुदिन ससेवितो भूरिभि नव्य . को पि विराजते द्विजपति . पाढिर्महादेवक . ॥ १ ॥ योमग्न कलिकर्दमे कवलित पाखडिसत्वैरति क्रौरे किच गत श्रुतिस्मृतिकथा वैकल्यमभ्यागत ॥ श्रीमत्पाढि धरासुरेण सुगणैरुद्धृत्यपुष्टिकृत ' स्वच्छंदं परिबभ्रमीतिभुवने दानैरनेकैर्वृष ॥ २ ॥ विदितवचनतत्वा श्रीवसिष्ठाग्रभक्त निखिलभुवनकर्म्मा रभनिर्वाहदक्ष . ॥ अशुभ हरणधीरो धीरता य प्रयात सजयति भुवनेवै श्रीमहादेवपाढि ॥ ३ ॥ किच ॥ सरस्वतीयस्य पुराजनित्री गोपालसूनु सविराजते वै ॥ दाता द्विजानां सहजैकनिष्ठ . श्रीमान्महादेव चिरायजीवी ॥ ४ ॥ गजातापत्यतेलक्ष्मी र्ध्वजात यस्य कीर्त्तन श्रीमद्वसिष्ठभुवन स्वर्गा दपि मनोरम ॥ ५ ॥ गुरो प्रासादान्मधुसूदनस्य नरोत्तमोवैपरमोगुरुर्मे ॥ तयो प्रासादाद्भुवन सुरम्य पश्यतुलोका परम पवित्र ॥ स्वस्ति श्रीनृपविक्रमकालातीत सवत् १३९४ वर्षे वैशाष शुदि १० गुरावद्येह श्री चद्रावत्या चाहुमानवशोद्धरणधौरेयराज श्री तेजसिह सुतराज श्री कानडदेवे राष्ट्र प्रशासति सति पाढि श्री महादेवेन इद श्री वसिष्ठस्य धर्म्मायतन कारापितमित्यर्थ ॥ तथाच चहुमान ज्ञातीयराज श्री तेजसिहेन स्वहस्तेन ग्रामत्रय दत्त झाबटु १ द्वितीय ज्यातुलियाम २ तृतीय तेजलपुर मिति ३ तथा च देवडा श्री निहुणाकेन स्वहस्तेन सीहलुणग्राम दत्त तथा राज श्री कान्हडदेवेन स्वहस्तेन वीरवाडाग्रामं दत्त तथा चाहुमान जातीय राज श्री सामतसिहेन लुहुलि छापुली किरणथलु ग्रामत्रय दत्त ॥ शुभ भवतु छ॥

शेषसंग्रह, नम्बर १६

श्री वसिष्ठ मुनीजी

संवत् १५८९ वर्षे वैशाष सुदि १५ गुरुवारे स्वस्ति श्री महाराज श्री अधिराज चिरजीवी गत्रे भषकामना करावित पाढि श्री रायमल करापित पीरीजी स्वहस्त० २५०५ देवका घरू शुभभवतु

शेषसंग्रह, नम्बर १७

आबूपरके माना रावके मन्दिरकी प्रशस्ति

शाके नदाकशक्रे जलनिधिदहन क्षोणिपे विक्रमाब्दे ज्येष्ठे मासि द्वितीया दिनकर-दिवसे पूर्णताप्राप्तएष ॥ प्रासादश्चंद्रमौलेर्निजतनयवधु श्रेयसेकारितोद्वौ मात्रा-श्रीधारबाय्या नृपमुकुटमणेर्मानसिहस्यराज्ञ ॥ १ ॥ राज्ञ श्रीमानसिहस्य पत्नीपचकसयुता ॥ मूर्ति श्री मन्महेशस्य सदाराधनतत्परा ॥ २ ॥ हस्तयुग्मतुसयो-ज्य स्थितापुण्यवदग्रणी ॥ सर्वपापापनोदाय चित्तैकाग्र्ययुता स्थिता ॥ ३ ॥ भुक्त्वाराज्य तु धर्मेण देवडावशसभव ॥ प्रभव सर्वपुण्याना मानसिहस्य वर्मण ॥ ४ ॥ श्री रामभक्तिनिरत श्री शिवार्चनतत्पर ॥ शूरोदारगभीरात्मा मानसि-हो नृपाग्रणी ॥ ५ ॥ ज्योतिर्विदानाथाख्येन लिखत ॥ श्री अचलेश्वरोजयति ॥ श्रीमच्चौहाणवशालकारशौर्यौदार्यगाभीर्यधैर्याद्याश्रय श्रीमदुर्जनशल्यस्तस्यात्मज सकलराज गुणश्रेय श्री मानसिह श्री मदर्बुदाचले श्री मदचलेश्वरचरण-सेवारत. ॥ सर्वपापविमुक्तो य सर्वपुण्यरत सदा ॥ श्रद्धयापरयायुक्त. सेवते ह्यचलेश्वर ॥ तस्येय परमामूर्ति पत्नीपचकसयुता ॥ कारिता शिवसेवायै धार-बाय्या शिवालये ॥ स्वस्तिश्री मन्नृपविक्रमार्क समयातीत त्रयस्त्रिशदधिक शोड-श शततमे वर्षे पार्थिव नाम्नि सवत्सरे उत्तरायणगते श्रीसूर्ये ग्रीष्मर्तौ महामागल्य प्रदे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे द्वितीयाया तिथौ रविवासरे श्रीमदचलेश्वर सन्निधाने शिवभक्त्यर्थे शिवालय कारयित्वा मात्रा श्री धारबाय्या सपत्नीकस्यश्रीमानसि-हस्य स्वर्गगतस्य मूर्ति कारिता श्रीमानेश्वरपुत्रपुण्यर्थे श्रीमात्रा धारबाय्या नवीन चैत्य कारित सूत्र जोधाकेनकारित श्रीहर्षकमल कस्य लिपिरिय आचद्रार्कौ नदतात् गोत्रेषु वशेषु पुण्यवृद्धिर्भवतु ॥ उँ मगल भगवान् विष्णु सवत् १६३३ वर्षे ज्येष्ठशुक्ला २ रविवासरे.

सूरे गोरवालेकी, जो ब्रह्मपुरीमे हरनाथकी बावडीके पास महादेवजीके मदिरके बाहर चौतरेपर है उसकी नक्ल

सूरज गाय, बच्छ चद्रमा

स्वस्ति श्री महाराजा धीराज महाराणाजी श्री सग्रामसिहजी आदेशात्, प्रथम दुवे पचोली विसनदास भट देवराम अपरच, ब्रह्मपुरी राय श्री निवासरीमाहे ब्राह्मणे हुकमथी घर माड्या जणीरी धरती तथा माहोमाह बामण घर बेचे जीरी जगात तथा लागत विलगत भट देवराम हे स्वस्ति भणावे दीधी, अबे ब्रह्मपुरीथी कणी-वातरी दरबाररी आडीरी चोलण नही व्हे, अबे कोई कामदार तथा कोटवाल ओरही कोई चोलण करे, तीहे श्री एकलिगजी पोछे बामण घर बेचे, तो न्यातरा न्यातहे बेचे, तीनवरणने वेचवा पावे नही ब्रह्मपुरीमे कोटवाल नहीं आवे, राते चोकी सारु जाबता सारु आवे, इसो हुकम हो सवत् १७८१ वर्ष सावण विद ६ बुदे कर्कसक्रातरा पुण्यकाल माणे चीरो रोपावारो हुकम हुवो, उणीदिन जगात लागत विलगत तथा घर माड्या ज्या धरती भट देवरामहे स्वस्तिभणावे उदक आघाट करे श्री-रामार्पण करे दीधी श्रीदरबाररी आडी शिवनिर्माल्य है, राय श्रीनिवासरी पुलाथी तला-वरा ओटाथी गोलेरा अखाडा विचे ब्राह्मणारा घर है, यारी सब लागत छूटरो हुकम है

छप्पय

मिहर बश मणिमौलि अमर पत्तन अमरेश्वर ।
उन्नाशन आरूढ भये सग्राम नरेश्वर ॥
पुर, माडल, ले पटा मुगल सासन मेवाती ।
रान शुभट चखरत्त कढे तिन पे केवाती ॥
रन बाज खान नाहर मरन अरु जोरावर उब्बरिय ।
अति कोप साह आलम अखिल भाति जहर घुट्टन भरिय ॥ १ ॥
साह सु फर्रुखसियर खास अच्छर दल पट्ठय ।
जिजिया जारी करन रान रोखानल कट्ठय ॥
दूत बिहारी दासगौन दिल्लिय पुर किन्नो ।
फर्रुखसें फरमान रामपत्तन हठलिन्नो ॥
रट्ठोरवश दुग्गाशुभट बडपनाह दै दृढ्ढवर ।
जगतेश कँवर ब्याहन जबहि लौना पुर चालुक्य घर ॥ २ ॥
बीडर ईडर बिखम राख हीडर रट्ठोरन ।
लीडरपाय पनाह बड़े तोरन जलबोरन ॥

रामपुरा जागीर लेख माधव हित किन्नो ।
रच जयसिंह फरेब दाव कग्गर लिखदिन्नो ॥
संग्राम सकल कारज ब्यशद भावी राजन हित भये ।
परलोक बास हाहा परब सुत कलत्र नामहि ठये॥ ३ ॥
कुल चन्द्रावत कथा राम पत्तन जिम जेसी ।
ईडर धर इतिहास तास लेखिय तिम तेसी ॥
गिरपुर अन्वय गहर बश पत्तन घर बत्तन ।
देवलिया पुर दिघ्घ कथा शूरे उन मत्तन ॥
चहुवान थान अब्बुव चरित मिट्टत बल मुगलानको ।
जिम जहादार फर्रुखसियर मरन करन जन हानको॥ ४ ॥
कछु दिन रफिउश्शान कछुक दिन रफ़िउद्दौला ।
शाह मुहम्मद शाह हसन अछिय खत खोला ॥
ईरानी अवनीश शाह नादिर बढ आवन ।
सुपह अहम्मद शाह परे घर केद अपावन ॥
आलम्मगीर सानी अधिप शाहजु आलिम नाहशो ।
सानीय अकब्बर साहवह पिनसन पावत माहशो ॥ ५ ॥
ताहि बहादुर शाह परमसुख पिन्सन पावन ।
मिल सिपाह बदमाश, मुगल थल बश गमावन ॥
फिर लिख संग्रह शेष रान संग्राम पब्ब इम ॥
बानिक बीरबिनोद जानि कविराज श्याम जिम ॥
सज्जन महीप आशय सकल किलसासन फतमालको ॥
इतिहास खंड निज मति अनुग किय अंकित हित हालको ॥ ६ ॥

महाराणा संग्रामसिंह २,

ग्यारहवां प्रकरण समाप्त.

बारहवा प्रकरण,

महाराणा जगत्सिंह दूसरे
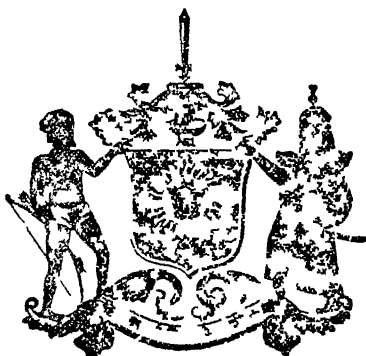
इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७९० माघ कृष्ण १३ [हि० ११४६ ता० २७ शश्रूबान = ई० १७३४ ता० २ फेब्रुअरी] को, और राज्याभिषेकोत्सव विक्रमी १७९१ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० ११४७ ता० १२ मुहर्रम = ई० १७३४ ता० १५ जून] को हुआ; लेकिन् राज्याभिषेकोत्सवके पहिले ही इनको मरहटोंके बारेमे फ़िक्र होचुकी थी, क्यौंकि महाराणा अमरसिंह दूसरेके वक्तमे पीपलियाके ठाकुर शक्तावत बाघसिंहको मरहटोंके पास बतौर एल्चीके भेजा गया था, जिसको साहू राजाने बडी खातिरके साथ रक्खा. महाराणाको सिताराके राजा, अपना मुरब्बी जानते रहे; लेकिन् फिर साहू राजाके नौकर पेश्वा, हुल्कर, सेंधिया, व गायकवाड वगैरह बर्खिलाफ़ व जबर्दस्त होगये. महाराणा संग्रामसिंहने मलहार राव हुल्करके साले नारायण रावको बूढाका पर्गनह जागीरमे दिया था; जब मलहार राव हुल्कर बच्चा रहगया, तब उसकी मा उसको अपने भाई नारायण रावके पास लेगई, जो खान्देशका बड़ा ज़मींदार था, नारायण रावके एक

बेटा और एक बेटी थी, बेटेका नाम बापके नामपर ही नारायण राव हुआ, और बेटीका नाम गौतमा बाई था, जो दक्षिणियोंकी रीतिके अनुसार मल्हार रावको ब्याह दी गई यह नारायण राव, महाराणा उदयपुरका नौकर बना इस सबबसे कि मरहटोंकी उन दिनोंमे बहुत कुछ तरक्की होगई थी, और सिताराके सम्बन्धसे महाराणाको वे लोग अपना सर्परस्त जानते थे, यह जागीर नारायण रावको मिली

नारायण राव कुछ दिनों बाद महाराणाकी खिद्मत छोडकर दक्षिणको चला गया, लेकिन् मरहटोंके लिहाजसे महाराणा इस जागीरकी आमदनी हमेशह उसके पास पहुचाते रहे इस तरहका इत्तिफ़ाक मरहटोंका पेश्तरसे मेवाडके साथ था, अब इस वक्त मुहम्मद शाहकी बादशाहतमे जोफ आगया, तो उनके नौकर आपसकी फूटसे एक दूसरेके गारत करनेके लिये मरहटोंको उभारते थे, यहा तक कि नर्मदा उतर कर मालवामे वे लोग हमलह करने लगे महाराणा जगत्सिह २ को भी इस समय बहुतसे विचार करने पडे, अव्वल यह कि बादशाहतका जोफ है, इस समय मुल्क बढाना चाहिये, दूसरा यह कि मालवापर मरहटे मुख्तार होगये, तो मेवाडके पडौसी होकर हमेशह दगा फसाद करेंगे, इस वास्ते कुल राजपूतानहके राजा एक मत होकर मालवापर कब्जह करलेवे, तो उम्दह है आंबेरके महाराजा सवाई जयसिहको भी यह बात अपेक्षित थी विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अह्दनामहसे महाराजाके छोटे बेटे माधवसिंह, जयपुरकी गद्दीका दावा करनेका हक रखते थे, जिससे उनके बडे बेटे ईश्वरीसिहका दरजह खारिज होता था महाराजाका खयाल था, कि अगर मालवाका कुछ हिस्सह भी हाथ लगे, तो माधवसिंहके लिये रामपुरेकी जागीरके शामिल करके बडी रियासत बना दीजावे जोधपुरके महाराजा अभयसिहको यह लालच था, कि मरहटोंको इधरसे दबादिया जावे, तो गुजरातको मारवाड़मे मिलानेसे बडी रियासत बनजावे

इन सबबोंसे तीन रियासतोंका एक इरादह होगया, कि मरहटोंके बर्खिलाफ कार्रवाई कीजावे, कोटा, बूंदी, करौली, शिवपुर, नागौर, और कृष्णगढके, छोटे बडे राजाओंने भी अपना मत्लब सोचकर महाराणाके शरीक होना चाहा सब लोगोंने इस कामका सर्गिरोह महाराणा जगत्सिंह २ को खयाल किया, क्योंकि टूटी कमान दोनों तरफ डराती है दूसरे राजाओंको बिदून बादशाही हुक्मके कोई कार्रवाई करनेमे खौफ था अब यह विचार हुआ, कि सब राजा किस जगह इकट्ठे होकर इस बातका अह्द व पैमान करें, तब वकीलोंकी मारिफ़त यह बात करार पाई, कि मेवाडकी हदपर यह बडी कौन्सिल इकट्ठी हो मरहटोंको निकालनेके लिये पहिले कुछ हिक्मत अमली कीगई, कि मालवा खाली करदेनेके वास्ते पाच लाख रुपये उनको दियेगये, जैसा कि नीचे लिखे हुए दोनों काग़ज़ोंसे ज़ाहिर होगा

कागज पहिला,

महाराणाके धव्वा राव नगराजका

सीध श्री जथा सुभसुथानै सरबओपमा राज श्रीमलारजी राज श्री राणुजी राज श्री अणन्द रावजी जोग्य, विजेलसकर थे धाय भाईजी श्री राव नगराजजी लीखावतु जुहार बाचजो जी, अठारा स्माचार भला है, राजरा सदा भला चाहजे जी, अप्रच– सुबा मालवारा काम बाबत रुपीया पाच लाखरी श्री म्हाराज थे, म्हे नीस्या लीवी है, सो तीरी वीगत देणारी तफसील–

३०००००) अखरे तीन लाख तो थारी सारी फौज गुजरातकी हदमै जाय पोहता, देणा सो या कबज म्हारी पाछी लीया नीस्या करनी

२०००००) अके दोय लाष मास १ एकमें देणा, ती मधे पींडत चिमना जी मालवारा सुबामै थी काट लेवेगा, तथा उजाड बीगाड नुकसान करेगा, सो ईणा रुपयामै भरे लीवायगो

५०००००) अके पाच लाख

मालवारा सुबामै चीमनाजी उजाड बीगाड करेगा, तो ईणा रुप्यामै भरे लेवारो श्री महाराजा धीराज म्हा तीरे लीखो कराय लीयो है, सो मुवाफिक करारके चालोगा, आपसका बोहारमे काई खत(रो) न आवे, सो कीजो म्हे ईत्री बात कीधी है, सो एक थाका भाईचारा वासते करनी पडे है मी० चैत वदी ९ स० १७८९ सदर हु रुपयामे वसूल रुपीया ३००००० तीन लाख पोहचा मि० चैत सुद १३ स० १७९०

ऊपरके कागजका जवाब

सिध श्री सर्व उपमा जोग्य, राज श्री धायभाई राव नगराजी एतान, लीखायत राज श्री मलार राव होलकर व राणोजी सीदे व अनद राव पवार केन राम राम बचणा, अठाका समाचार भला छे, राजरा सदा भलाई चाहीजे जी, अप्रच– रुपीया पांच लाख नगदी बाबत सुबे मालवा तीमे रुपीया दोय लाख बाकी था, सो बापुजी प्रभुके साथ मेल्या, सो पोहचा, जुमले पाच लाख रुपीया पोहचा, घणो काई लिखा मिती जेठ सुध २ समत १७९०

मुहर

यह ऊपर लिखेहुए रुपये महाराणाके धायभाई नगराजने जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहकी तरफसे भेजे थे, और उक्त महाराजाने यह खर्च बादशाही खजानहसे

लिया था; लेकिन् मरहटे उक्त रुपये लेनेपर भी मालवाको छोडना नहीं चाहते थे, तब महाराणाने अपनी राजकुमारी ब्रजकुवर बाईका विवाह कोटाके महाराव दुर्जन-शालके साथ विक्रमी १७९१ आषाढ कृष्ण ९ [हि० ११४७ ता० २३ मुहर्रम = ई० १७३४ ता० २६ जून] को करदिया, और आप मए महारावके उदयपुरसे रवानह होकर मेवाडकी उत्तरी हदपर हुरडा गावमे पहुचे, उसी जगह महाराजा सवाई जयसिह भी आ गये, इसी तरह जोधपुरके महाराजा अभयसिह, नागौरके राजा बख्तसिह, बूंदीके रावराजा दलेलसिंह, करौलीके राजा गोपालपाल व बीकानेर, कृष्णगढ वगैरह के छोटे बडे राजपूतानहके राजा लोग महाराणासे आ मिले इस वक्त महाराणाके लाल डेरे देखकर जोधपुरके महाराजा अभयसिहने भी अपने लिये लाल रगका डेरा खडा करवाया, खबरनवीसोने यह बात मुहम्मद शाहको लिख भेजी, बादशाहने जोधपुरके वकीलको बुलाकर पूछा, वकील होश्यार आदमी था, जिसने अर्ज की, कि बादशाहत का बन्दोबस्त करनेको सब राजा इकट्ठे हुए, लेकिन् सलाह करनेके लिये एक दूसरे के डेरेपर नहीं जा सक्ता था, इसलिये महाराजाने बादशाही दीवानखानह खडा करवाया, जिसमे सब राजा बैठकर सलाह करे यह सुनकर बादशाह खुश हुआ

हुरडाके मकामपर सब राजाओकी सलाहके मुवाफिक एक अह्दनामह लिखा-गया, जिसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है -

सीरदारारो लीखतरो

॥ श्री ॥

स्वस्ती श्री सारा सीरदार भेला होय या सलूहा ठेरावी, सो ईणां बाता माहे तफावत न होय स० १७९१ सावण वदी १३ मुकाम गाम हुरडे वीगत-

१ सारारी एक बात, भलाही बुराही माहे सारा तफावत न करे, जणीरा सुह सपत कीया, धरम करम थी रेवे, मुख सारारी लाज गाल एक जणी सारी बात

१ हराम षोर कोई कणीरो राखवा पावे नही

१ बाद बरसात काम उपज्यां रामपुरे सारा सीरदार जमीत सुदी भेला व्हे, कोई सरीर रे सबब न आवे तो डीलरी बदली कुवर तथा भाई आवे

१ जणी कुमरा लोग मांहे चुक बाक थे सीरदार चुकावे, पण और दखल न करे
१ काम नवो उपजे, तो सारा भेला होय चुकावे- स० १७९१ वर्षे

इसके बाद महाराणा जगत्सिंह राजधानी उदयपुरको आये, और दूसरे राजा अपनी अपनी रियासतोको पीछे गये, इस शर्तपर कि बाद बर्सातके कार्रवाई कीजावे बूंदीकी तवारीख वंशभास्करमे मिश्रण सूर्यमल्लने हुरडामें उक्त राजाओका इकट्ठा होना कार्तिक महीनेमे लिखा है; लेकिन् यह नही होसक्ता, क्योंकि हमने अस्ल अहदनामहकी जो नक्ल ऊपर लिखी है, उसकी मिती देखलेना चाहिये इस सलाहका फल, जैसा कि चाहिये था, न हुआ, क्योंकि महाराणा जगत्सिंह तो ऐश व इश्रतको जियादह चाहते थे, और उनके सर्दारोमे आपसका रंज बढता जाता था, इसपर भी भान्जे माधवसिंहका फसाद इस रियासतमे ऐसा घुसा, कि जिससे दिन ब दिन कमज़ोरी बढती गई

विक्रमी १७९२ पौष [हि० ११४८ शअ्बान = ई० १७३५ डिसेम्बर] मे महाराणाने शाहपुरापर चढाई की इसके कई सबब थे, अव्वल वहाके महाराज उम्मेदसिंहने, जिसको महाराणा संग्रामसिंहने कई दफा धमकाया था, इस समय उक्त महाराणाका परलोक वास होनेसे सर्कशी इख्तियार की, और मेवाडके दूसरे जागीरदारोको तक्लीफ देने लगा महाराणाके समझानेका कुछ असर न हुआ, तब महाराणाने बडी फौजके साथ शाहपुराको जा घेरा यह खबर सुनकर जयपुरसे महाराजा जयसिंहने भी महाराणाकी मददके लिये कूच किया यह मुआमलह ऐसा न था, कि जयपुरकी मदद दर्कार हो, लेकिन् महाराजा सवाई जयसिंहका यह इरादह था, कि शाहपुरा उम्मेदसिंहसे छीनकर माधवसिंहको दिलादिया जावे, जिसको महाराणा भी मंजूर करेंगे इसमे पेच यह था, कि रामपुरा तो महाराणासे माधवसिंहको दिलाया गया, और शाहपुरा फिर दिलाकर रामपुरासे इलाकह मिला लिया जावे इस बडे इलाकहके एक होजानेसे जयपुर तक कछवाहोका राज्य एक होगा, और कोटा व बूंदीके राजाओको भी अपने राज्यके शामिल करलेवेंगे, जिस तरह शैखावतोको मातहत करलिया था. इन दिनो महाराजा जयसिंहका इरादह मालवाको तहतमे करनेका कम होगया था, क्योंकि उधर मरहटे गालिब थे, इसलिये यह पेच उठाया गया, कि रामपुरा तक जयपुरकी हद बढाई जावे यह बात बेगूके रावत् देवीसिंहके कान तक पहुंच गई थी, जो महाराजा सवाई जयसिंहका मुखालिफ और मेवाडका ताकतवर सर्दार था, वह फज्रमे महाराणाके पास गया, और एक कबूतर उनके साम्हने छोड दिया, जिसका एक तरफका पर तोडा हुआ था, वह कबूतर उडना चाहता था, और गिरजाता महाराणाने पूछा, तो देवीसिंहने कहा, कि यही हाल मेवाडका है, जिसका एक पर

सलूंबर और दूसरा शाहपुराको जानना चाहिये, फिर सवाई जयसिंहकी दगाबाजीका सब हाल भी कह सुनाया रावत् देवीसिंहकी मारिफ़त राजा उम्मेदसिंह महाराणाकी खिदमतमे हाज़िर होगया इससे महाराणाने एक लाख रुपया फ़ौज खर्च लेकर शाहपुरासे घेरा उठालिया यह खबर सुनकर महाराजा सवाई जयसिंह पीछे लौट गये

इन्हीं दिनोमे मुहम्मदशाहने मालवाकी सूबहदारी बाजीराव पेश्वाके नाम लिख-भेजी, महाराणाने भी मरहटोंसे मिलकर अपना मत्लब निकालना चाहा, और बाबा तख्तसिंह, महाराणा जयसिंहोतको भेजकर पेश्वाको उदयपुर बुलाया उसने चपाबागके पास डेरा किया मुलाक़ातके बारेमे उससे कहा गया, कि तुम सिताराके नौकर हो, और उदयपुरकी गद्दीपर सिताराका राजा भी नहीं बैठ सक्ता, इसलिये खास प्रधानकी बराबर तुम्हारी इज़त की जायगी तब पेश्वाने कहा, कि मै ब्राह्मण हू, इसलिये कुछ इज़त बढाना चाहिये इस बातको महाराणाने मन्ज़ूर करके अपनी गद्दीके साम्हने दो गदेले रखवा दिये, एक पर बाजीराव पेशवा और दूसरे पर महाराणाका पुरोहित बिठाया गया बात चीत होनेमे यह करार पाया, कि मरहटे लोग महाराणाको साहू राजाकी जगह अपना मालिक जानकर हुक्मकी तामील करते रहेगे वंशभास्कर मे सूर्यमल्लने लिखा है, कि पेश्वाको जगमन्दिर देखनेके लिये बुलाया, तब लोगोने उसके दिलपर दगाबाजीका शक डाला, जिसपर वह बहुत नाराज हुआ, और महाराणाने पाच लाख रुपया देकर पीछा छुडाया, परन्तु यह बात हमको लिखी हुई अथवा जनश्रुतिसे दूसरी जगह नहीं मिली उसी दिनसे उदयपुरका राज्य पुरोहित महाराणाके साम्हने आसनपर बैठता है पेश्वा विदा होकर जयपुरकी तरफ़ चला गया, और उसने दिल्ली तक लूट मार मचाई, जिसका हाल महाराणा सग्रामसिह २ के बयानमे लिखा गया है

शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहकी दगाबाजीका हाल जानने बाद जोधपुरके महाराजा अभयसिंहसे स्नेह बढाया महाराजा अभयसिहने उम्मेदसिंहकी मदद की, उसके कई कारण थे, अव्वल महाराजा जयसिंहसे दिली अदावत, दूसरा जिले अजमेरके राठौड़ जागीरदार जोधपुरके मातहत होगये थे, और अभयसिंह भी उसे अपना समझते थे, इस सबब सावरके ठाकुर इन्द्रसिंहको महाराणा जगत्सिंह तो अपना मातहत खयाल करते, और अभयसिह अपनी मातहतीमे लेना चाहते थे, जिससे उम्मेदसिंहको अपनी तरफ करलेना मुफीद जाना विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] मे अभयसिंह उम्मेदसिंहको अपने साथ दिल्ली लेगये, और मुहम्मदशाहसे उनके बाप राजा भारथसिंहके एवज खिल्अ़त व राजाका खिताब दस्तूरके मुवाफ़िक दिलाया फिर नादिरशाह ईरानीने

हिन्दुस्तानपर चढ़ाई की, जिसका मुफ़स्सल हाल ऊपर लिखागया. उस लड़ाईमे शरीक होनेके लिये महाराजा जयसिंह व अभयसिंहको मुहम्मदशाहने फ़र्मान भेजा, लेकिन् दोनोने टाल दिया इस बारेमे एक कागज़की नक्ल, जो शाहपुरासे आई, हम नीचे दर्ज करते है -

शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहके नाम, मेडतासे उनके

वकील गुलाबका कागज

अपरच, अठे इसी बात हुई छे, बादशाह बुलाया, महाराजा अभयसिंहजीने तथा जयपुर जयसिंहजीने जब या दोनो राजावा सलाहकर बादशाहजीके नामे अरजी लिखी, अभयसिंहजी तो महाराज जयसिंहजीका माणसाने गढ रणथम्भोर बखशे, और पचास लाख रुपया खरचीका बखशे, जीसूं जयसिंहजीने लेर हज़ूर आऊ, और महाराज जयसिंहजी अरज लिखी, सो महाराज अभयसिंहजीको गुजरातका तो सूबा बखशे, और पचास लाख रुपया खरचीका बखशजे, जो महाराजा अभयसिंहजीने लेर हुज़ूर आऊ ई तरा दोनो राजावा ऊपर लिखी हुई बाता लिखी छै, और महाराज अभयसिंहजीके और महाराज जयसिंहजीके मुलाकात होबाकी बहुत ताकीद होरही छै, मगर श्री दिवाणजीको लिख्यो आयो है, सो बस्तपचमीने आय मिलस्या सो जाणबासे तो बस्तपचमीने तीनो राजावांकी मुलाकात होसी

सेखावत सार्दूलसिंहजी ऊपर महाराज जयसिंहजीकी फौज गई छी, अर अठी सू बख्तसिंहजीकी फौज सार्दूलसिंहजीकी मदद गई छी, सो महाराज जयसिंहजीको लिख्यो अठे महाराजके नाम आयो छो, जींमे लिखी छी, के या फौज महाराजका हुक्म सू गई छे, या बखतसिंहजी मोखली छे, और फौज बखतसिंहजी ही मोखली होय, तो म्हाने लिख्यो आजावे, सो बखतसिंहजी सू नागोरका परगणा सूं समझल्या; और श्री हज़ूरसु या भी मालूम होय, सो पहली भणायका मुकाता तावे अरज लिखी छी, जींको जवाब अब तक इनायत हुवो नही, सो जाणबामे आवे छे, सो श्री हुज़ूरकी सलाहमे आई नहीं होसी अठे भी ई बातकी ताकीद छे, जीसू श्री हुज़ूरने अरज लिखी छे; श्री हुज़ूरको हुक्म आ जावे, तो भणायका मुकाताकी रद बदल कर कमी बेशी कराय लेवां; और श्री हज़ूरको हुक्म न आवे, जद ई बातकी चरचा करां नहीं, और कवरजी जालमसिंहजी पर श्रीमहाराज विशेष महरबान है. सवत १७९५ पोष बद १४.

दिल्लीके बादशाहोंकी दिन बदिन बर्बादी देखकर राजपूतानहके राजा और ही घडत घड रहे थे, लेकिन् कभी खयाली पुलावसे भूक नहीं जाती; आपसकी फूटने उस इच्छाको पूर्ण नहीं होने दिया महाराजा अभयसिंहने कुछ अर्से बाद विक्रमी १७९७ वैशाख [हि० ११५३ सफ़र = ई० १७४० एप्रिल] में बीकानेरपर चढ़ाई करदी, और महाराणा जगत्सिंहके बडे कुंवर प्रतापसिंह जोधपुर शादी करनेको गये, जो महाराजा अजीतसिंहकी बेटी सौभाग्य कुंवरके साथ शादी करके पीछे चले आये महाराजा सवाई जयसिंहने सब राजाओंकी मददसे जोधपुरको जा घेरा; महाराणाने भी उनकी मददके लिये अपने मातहत सर्दार सलूंबरके रावत् केसरीसिंह को जमइयतके साथ भेज दिया, महाराजा जयसिंहने सब राजाओंको, जो दम दिया था, उस बातको छोडकर फ़ौज खर्च लेनेपर घेरा उठा लिया, और महाराणा जगत्सिंह भी, जो पुष्कर यात्राके बहानेसे रवानह हो चुके थे, इन सब राजाओंसे शौकिया मुलाक़ात करके पीछे अपनी राजधानीको आये महाराज बख़्तसिंह, महाराजा सवाई जयसिंहकी फ़िरेबी कार्रवाईसे ना खुश होकर अपने भाई अभयसिंहसे मिलगये, और दोनों बडी फ़ौजके साथ जयपुरकी तरफ़ चले, ज़िले अजमेर गगवाणा गांवमें सवाई जयसिंहसे मुक़ाबलह हुआ, जिसमें बख़्तसिंहको भागना पडा, राजा उम्मेदसिंहने उनका अस्बाब मए सेवाकी हथनीके छीन लिया इससे लडाईका नतीजह यह हुआ, कि अभयसिंह और बख़्तसिंहमें ज़ियादह रंज बढ गया इन आपसकी ना इत्तिफ़ाक़ियोंसे हर एक आदमी मरहटोंकी मदद ढूंढने लगा, जिससे दक्षिणी ग़ालिब होकर इनपर हुकूमतका डंका बजाते थे अगर हुरडा मक़ामके अह्दनामहकी तामील होती, तो राजपूतानहको ज़रूर फ़ायदह पहुंचता, लेकिन् बीकानेर व नागौरसे जोधपुरकी ना इत्तिफ़ाक़ी और जयपुरके महाराजाकी दग़ाबाज़ीसे बूंदी व कोटाकी तबाही और माधवसिंह ग़ैर हक़दारको हक़दार बनाकर अपना बडप्पन दिखलानेमें महाराणाकी कोशिशने राजपूतानहको ऐसा धक्का दिया, कि गवर्नमेन्ट अंग्रेज़ीके अह्द तक सब दुःखसागरमें गोता खाते रहे.

ईश्वर एक ढंगपर किसीको नहीं रखता, इन्हीं क्षत्रियोंके पूर्वजोंने इस भारतवर्षका बडप्पन चारों तरफ़ ज़ाहिर किया, फिर मुसल्मानोंने इनकी आज़ादी छीनकर अपनी हुकूमतका डंका बजाया, और थोडे दिनों तक पहाडी बर्साती नालेकी तरह मरहटोंने भी अपना ज़ोर शोर बतलाया, अब गवर्नमेन्ट अंग्रेज़ीकी आईनी राज्यनीति प्रकाशित होरही है इन बातोंके देखनेसे मनुष्यको ईश्वरकी कार्रवाइयोंपर धन्यवाद करना चाहिये इन्हीं दिनोंमें फिर महाराणाके मातहत उमराव सलूंबरके रावत्

कुबेरसिंहने राजपूतानहको एक मत करनेका उपाय किया, और एक खानगी अर्ज़ी महाराणाके नाम लिख भेजी, जिसकी नक़्ल हम नीचे लिखते हैं -

सलूंबर रावत् कुबेरसिंहकी अर्ज़ीकी नक़्ल

श्रीरामजी

समाचार ———————————————————

१ श्रीजीरो पास दसपता रुको आयो, सो माथे चडाय लीधो राज, श्रीजी हुकम कीधो, सो कछवाहा दगाषोर है, सो श्रीजी तो प्रमेसर है, ए दगापोर है, तो ईणारो बुरो होयगो, पण केबामे तो तथा रापे नु हे, ने श्री जेसीघजीरा पटारो गनीम जुआ पाडे, ने सुलझाड करे, हु हजुर आवुसु राज, ने नरुको हरनाथसीघ ने वीध्याधर बामणने लेने श्रीं हजुर आऊ हु मोने रुको मया व्हे, तो विद्याधर ने नरुका हरनाथसिघहे लेने आऊ, जरे काइ चीता राषो मती ईणरा पग आगानु पडे है, जणी थी रुकारो हुक्म व्हे, ने रुको १ नरुका हरनाथसीघरे नामे हुक्म व्हे, सो थारी सुफारस रावत् कुबेरसीघ लीषी, सो राजने याही जोग है, ने रुको १ वीद्याधररे नामे, सो रावत कुबेरसीघ साथे नचीत आवजो, कोई चीता रापो मती, माधोसीघजीरे वासते तो थाने रावत कुबेरसीघ समझाया ही होसी ईसो रुको वीद्याधर बामणने लीषाय राज आपरे ने कछवाहारे माहो माह मेल ठेराय ने हीदुस्थान ऐक करे ने गनीम तीरे थी मालवो षोसे लेणो, ने मालवारा बाटा ५ करणा, सो बाटा २ तो श्रीजीरा, ने बाटो १ राठोडारो, ने बाटो १ कछवाहारो, अर बाटो ॥ हाडारो, अर बाटो ॥ मे प्रचुनी हीदु इनी बातरा सूह सपत हुवा हे, ने श्रीजी डेरो मनदसोर करणो, ने मुकासदाराने गनीम नरबदा ऊतरेने लुटे लेणा, ने पेहली कछवाहा लुटे ने मारे, पछे सारा ई गनीमारा मुकासदारा थी परा पोटा व्हेणो ईणी थाप ऊप्रे वीद्याधरहे हजुर ल्याऊ हु राज ऐ रुको अरजदास कठे ही जाहर नु होय राज पीडत गोवद थी ललो पतो होये, पण पईसा भराय नी, ने श्रीजी हजुर आवे ने पछे जायने राजाजी श्रीजी हजुर आवे, ने श्रीजी ने राजाजी भेला व्हे ने हुरडे पधारे, ने म्हारावजी राजा अभयसीघजी तीरे जायने लावे, ने हुरडे मीलेने सीरदार भेलारा भेला मालवा सारु चाले राज फागण बदी १४-

पानो दूजो

श्रीजी हजुर मालम व्हे राज, श्रीजी सलामत, मालवामें मुकासा वे, सो उठावे देणा, अर श्रीजी बट करेदे, जणी प्रमाणे के ईसी अरज करे हे, सो श्रीजी प्रमेसर हे, पण म्हारे माथे हाथ देने जतन करावजे, ने ए स्माचार फुटवा पावे न्ही राज, ने म्हारावजी

पण बेगाई श्रीजी हजुर आवे हे राज, सो हकीकत म्हारावजी मालम करेगा राज, ने बुन्देला तीरे श्री द्रबाररी आडी थी तो ब्यास रुघनाथ, ने म्हाराजरी आडी थी व्यास राजारामरो भाई, म्हारावजीरी आडी थी षाडेरावरो जमाई, बुदेला थी वातरे वासते मोकलाय, अर माने के से जो, व्यास रुघनाथजीने मोकलो, जणी थी बीगर हुकम म्हे त्यारी कीधा है
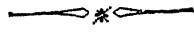
यह अर्जी सलूबरके रावत् कुबेरसिहने जयपुरसे लिख भेजी थी, परन्तु इस सलाहका भी कोई नेक नतीजह नहीं दिखलाई दिया कहावत है, "मनके लड्डू फीके क्यो" महाराजा सवाई जयसिहका तो किसीको एतिबार नही था, जिसकी इसी कागजसे तस्दीक होती है, और महाराणाके उमरावोमेसे भी हर एक आपसकी फूटसे दूसरेकी कार्रवाईको बिगाडता था इस ग्रन्थ कर्ताने अपने पिताकी जबानी सुना है, कि विक्रमी १७९७ [हि० ११५३ = ई० १७४०] मे सलूबरके रावत् केशरीसिहके देहान्तके समय देवगढका रावत् जशवन्तसिह आराम पूछनेके लिये गया, तब केशरीसिहने अपने बेटो और रावत् जशवन्तसिहसे कहा, कि भाई भाई आपसमे स्नेह रखना उक्त रावत् पीछा लौटा, तब उसके आदमियोमेसे एकने कहा, कि केशरीसिह मरते वक्त डरपोक होकर हमारे मालिकको अपने बेटोकी भलामन देता है यह बात केशरीसिहने उसी वक्त सुन ली, और जशवन्तसिहको पीछा बुलाकर कहा, कि मैने वह बात मामूली तौरपर कही थी, वर्नह तुमको इष्टकी कसम है, मेरे बेटोके साथ अच्छी तरह दुश्मनी रखना, मेरे बेटे भी उसका बदला ब्याज समेत अदा करेगे जशवन्तसिहने अपने आदमीकी बेवकूफी जाहिर करके बहुत लाचारी की, लेकिन् उसका गुस्सह कम न हुआ, और उसी हालतमे दम निकल गया

जब मुसाहिबोमे इस तरहकी अदावत हो, तो रियासतका इन्तिजाम कब होसक्ता है? इसके अलावह बेगम और देवगढमे, बेगम व सलूबरमे, आमेट व देवगढमे, और इन चारो चूडावतोके ठिकानो और भीडरमे फसादोकी बुन्याद काइम होगई थी, इससे जियादह चहुवान व चूडावतोमे व झाला व चूडावतोमे भी बिगाड था, और यही हाल राजधानीके अहलकारोका होरहा था, कायस्थ और महाजनोमे, और कायस्थोके आपसमे भी ना इत्तिफ़ाकी फैल रही थी इनके सिवाय गूजर धायभाई अपनेको जुदाही मुसाहिब खयाल करते थे, यहा तक कि एक हाथीका महावत फत्हखा भी महाराणाका मुसाहिब बनगया इतने ही पर खातिमह न हुआ, महाराणा और उनके वलीअह्द प्रतापसिहमे भी विरोध बढने लगा इस विरोधकी बुन्याद भी सर्दार व अहलकारोकी ना इत्तिफ़ाकी थी, क्योकि महाराणाके मुसाहिबोसे

वलीअहदके मुसाहिब और वलीअहदके मुसाहिबोंसे महाराणाके मुसाहिब डाह रखते थे. वलीअहदकी उम्र तो अठारह वर्षकी थी, लेकिन् वह बदनके बड़े मज्बूत, जबर्दस्त व दीदारू थे, उनसे कुश्ती करनेकी ताकत पहलवानोंको भी नहीं थी, जिस पत्थरके मुद्गरको वे एक हाथसे सौ सौ दफा आसानीसे घुमाते थे, और जो अब खीच मन्दिरके बाहर पड़ा है, उसको बड़ा ताकतवर पहलवान दोनों हाथोंसे एक बार नहीं घुमा सक्ता.

महाराणाको फिक्र हुई, कि वलीअहदको कैद करना चाहिये, लेकिन् उनका गिरिफ्तार करना कठिन जानकर अपने छोटे भाई नाथसिंहको तज्वीज किया, जो बड़ा जबर्दस्त पहलवान था. नाथसिंहने महाराणासे कहा, कि मैं पहिले वलीअहदसे ताकत आजमा लूं, तब महाराणाके हुक्मसे खीच मन्दिर नाम महलमें दोनों चचा भतीजोंकी कुश्ती होने लगी, प्रतापसिंहने नाथसिंहको कुछ हटाया, लेकिन् दर्वाजेकी चौखटका सहारा पैरको लगनेसे नाथसिंहने वलीअहदको रोका, और खीच मन्दिरके दर्वाजेकी चौखटका मज्बूत पत्थर टूटगया, फिर कुश्ती मौकूफ हुई. नाथसिंहने महाराणासे कहा, कि मैं वलीअहदको दगासे पकड़ सक्ता हूं. विक्रमी १७९९ माघ शुक्ल ३ [हि० ११५५ ता० २ जिल्हिज = ई० १७४३ ता० २९ जैन्युअरी] को, जब कि महाराणा कृष्णविलास महलोंमें थे, उनके इशारेसे नाथसिंहने पीछेकी तरफसे अचानक प्रतापसिंहकी पीठपर गोडी लगाकर दोनों हाथ बांध दिये. यह खबर सुनकर शक्तावत सूरतसिंहका बेटा उम्मेदसिंह, जो वलीअहदके पास रहता था, तलवार मियानसे निकालकर ड्योढ़ीमें घुसा, किसीकी मजाल न हुई, कि उसको रोके, वह सीधा महाराणाके साम्हने आया, महाराणाके पास उसका बाप सूरतसिंह मए अपने छोटे भाईके खड़ा था, पहिले उम्मेदसिंहने अपने चचाको मारलिया, जो महाराणाकी इजाजतसे उसे रोकनेको आया था, फिर सूरतसिंह तलवार खेंचकर अपने बेटेपर चला, उम्मेदसिंहने बापके लिहाजसे कुछ सब्र किया, इसी अन्तरमें सूरतसिंहका वार होगया, जिससे उम्मेदसिंह कत्ल होकर गिरा. महाराणाने सूरतसिंहको छातीसे लगाकर कहा, कि तुम दोनों बाप बेटोंने अच्छी तरह हक नमक अदा किया, बहुतसी तसल्ली दी, लेकिन् सूरतसिंहका कलेजा टूट गया, क्योंकि उसका भाई और बेटा दोनों उसके साम्हने मरे पड़े थे. उसके एक छोटा पोता अखैसिंह रहगया, सूरतसिंह उसको लेकर अपने घर बैठ गया. महाराणाने बहुतसी तसल्ली देकर कुछ जागीर व इन्आम देना चाहा, लेकिन् उसने रंजके सबब मंजूर नहीं किया. जब कुंवर प्रतापसिंह गद्दीपर बैठे, तब उन्होंने अखैसिंहको रावत्का खिताब और दारूका पट्टा देकर दूसरे नम्बरके सर्दारोंमें दाखिल किया.

इन दिनो मालवापर मरहटे काबिज होगये थे, बल्कि सूबह अजमेर वगैरह दूसरे जिलोसे भी बादशाही हुकूक वुसूल करते थे सूबह अजमेरके तअल्लुकका पर्गनह बनेडा, जो कदीमसे मेवाडका था, वह आलमगीरने मेवाडपर चढाईके वक्त छीनकर राजा भीमसिंहको जागीरमे दे दिया था, जो महाराणा राजसिंहका छोटा कुवर था, उसकी और जागीरे तो छिन गई, लेकिन् यह पर्गनह भीमसिंहके पोते सुल्तानसिंह तक उसकी औलादके कब्जहमे रहा, जब उसका देहान्त हुआ, और सर्दारसिंह उसका क्रमानुयायी बना, उससे मुहम्मद शाहके वक्तमे यह पर्गनह खालिसह हुआ, तब उदयपुरके वकीलोकी मारिफत महाराणा संग्रामसिंहके धायभाई नगराजको मिला, परन्तु खास बनेडा सर्दारसिंहके कब्जहमे था, और वह उदयपुरमे महाराणा जगत्सिंहके पास हाजिर रहता था पर्गनहको ठेकादारीके तौरपर महाराणा ने मेवाडके शामिल रक्खा, और वह ठेका पेशवाको दियाजाता था इस बारेमे हमको उसी समयका एक कागज मिला है, जिसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है –

कागजकी नक्ल

श्री

प्रगणा बणेडारा मुकातारी भरोती सनद दीषण्यारा हाथरी काका बषतसींघ जी साथे चलाई, हस्ते स्हा नेणसी पचोली देवकरणजीरा रुका प्रमाणे दीधी

बीगत

रु० २००००० मजमानीरा

रु० ४५००० स० १७९२ री उनालुरा

रु० ९०००० स० १७९३ रा ब्रषरा

रु० १२०००० स० १७९४ रा

रु० १५०००० स०१७९५ रा ब्र०

रु० ५२०००० ब्रस ४ स० १७९६ थी स० १७९९ सुधी, ब्र० प्र० रु० १३००००

रु० ११२५०००

अतो

रु० ६६०००१ भरोती १ रु० ६६०००१ लीखत पींडत सदासीव अप्रच ॥ स० १७९२ थी स० १७९८ रा ब्रष सुधी श्री जीरा भडारथी हस्ते पीडत सदासीव भरे पाया, भरोती स० १७९९ रा सावण सुद ११ री लीषी

रु० १०००० भरोती १ रु० १०००० पीडत रामचन्दरी लीषी स० १७९९ भादवा सु० ७ रा दसवासरी

रु० ४५५००० भरोती १ रु० ५२०००० री लीषत पीडत गोविंदराव श्री जीरा दरबार थी प्रगणा वणेडारी जागीरी ब्रष ४ म्हे रुपया ५२०००० स० १७९६ थी स० १७९९ असाढ सुद १५ अणी वीगतसु चुकावे लीया

बीगत

रु० ५५००० हस्ते पीडत स्दासीव जमे रुपया ६६०००० मध्ये
रु० १०००० हस्ते पीडत रामचद
रु० ४५५००० हस्ते पीडत गोवीदराए स० १७९९ रा असाढ सु० १५

इसी मितीका एक कागज जोधपुरके महाराजा अभयसिंहका जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहके नाम है, जिससे मालूम होता है, कि महाराणाने इस समय भी राजपूतानहके राजाओंको एक करना चाहा था, लेकिन् इसका अंजाम कुछ भी न हुआ, उस कागजकी नक्ल यह है –

१ श्री रामजी

सीतारामजी

सीध श्री माहाराजा धीराज श्री सवाई जैसीघजी सु मारो मुजरो मालम होय, अप्रच श्री दीवाणजीरा हुकमसु आपमु इकलास कीयो छै, सो हमे कीणी हींदु मुसलमानरा कयासु ओर भात नही करसा, इण करार वीची छै, साष श्री दीवाण छै, मीती असाढ सुद ७ वार सोम स० १७९९

पर्गनह रामपुरा, जो भाणेज माधवसिंहको महाराणा संग्रामसिंहने जागीरमें लिखदिया था, उसका ज़िक्र महाराणा संग्रामसिंहके हालमें लिखा गया है– (देखो पृष्ठ ९७५) महाराजा जयसिंहने माधवसिंहके बहानेसे अपने आदमी भेजकर उस पर्गनेको क़ब्ज़ेमें कर लिया था इस वक्त महाराणाने महाराजा जयसिंहको कहला भेजा, कि दाजीराजने पर्गनह रामपुरा, भाणेज माधवसिंहको दिया था, अब माधवसिंह होश्यार होगया, इस वास्ते उक्त पर्गनह हमारे आदमियोंकी सुपुर्दगीमें होजाना चाहिये, क्योंकि उक्त भाणेज यहां मौजूद है. अलावह इसके रामपुराके एवज़ माधवसिंहको मुकर्रर जमइयत सहित इक़ारके मुवाफ़िक नौकरी देनी चाहिये, लेकिन् यह बिना आमदनीके किस तरह होसक्ता है ? इस कागजके भेजनेसे महाराजा

जयसिंहने पर्गनह रामपुरासे अपना दख्ल उठा लिया, क्योंकि इस वक्त महाराजा बहुत बीमार थे, जिससे किसी तरहकी चेष्टा नहीं करसके उन्होंने अपने आदमियोंके नाम यह पर्गनह खाली करदेनेको, जो पर्वाना लिख भेजा, उसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है -

प्रवानो १ कछवाहा दोलतसीघरे नामे म्हाराजा श्री जेसीघजीरो तीरी नकल

श्री रामजी

श्री सीता रामो जयति, महाराजा धिराज सवाई जेसीघजी

स्वस्ति श्री महाराजा धिराज महाराजा श्री सवाई जेसीघजी देव वचनात, दोलतसीघ स्यो ब्रह्म पोता दीस्ये सुप्रसाद वच्य, अप्रचि - प्रगनो रामपुरो इस तठा भादवा सुदी ३ सबत् १८०० सो तालक चीमना माधोसीघके कियो छे, अर वेठे अखतयार रावत कुबेरसीघजीको छे, सो वाहकी तरफ जो आवे, तीहने अमल दीजो मीती भादवा बदी १४ स १८०० प्रवानो साह बधीचद हे श्रीजी सोपायो सो सोप्यो सवत १८०० वर्षे सुदी ४ सोमे सोप्यो
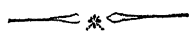
महाराजा सवाई जयसिंह इस वक्त जियादह बीमार न होते, तो रामपुरा वापस देनेमें भी कुछ न कुछ दगाबाजीकी बाजी खेलते बूंदीका मिश्रण सूर्यमल्ल अपने ग्रन्थ वंशभास्करमें लिखता है, कि इन महाराजाने ताकतके वास्ते धातु औषधी खाई थी, जिससे उनका तमाम बदन फूट गया, और उसकी तक्लीफसे वह विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल १४ [हि० ११५६ ता० १३ शअबान = ई० १७४३ ता० ३ ऑक्टोबर] को परलोक सिधारे उनके बाद ईश्वरीसिंह गद्दीपर बैठे यह बात सुनकर महाराणा जगत्सिंहने विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अह्दनामहकी शर्तके मुवाफिक माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठाना चाहा, लेकिन् इस बातके लिये ताकतकी ज़रूरत थी, इसलिये मरहटोंसे दोस्ती बढाई, और कोटेके महाराव दुर्जनसालको बुलाया महाराव अन्नकूटके दर्शन् नाथद्वारेमें करके नाहरमगरामें महाराणाके पास पहुंचे, और उनकी सलाहके मुवाफिक फौजबन्दीका हुक्म दिया गया इस वक्त महारावकी फौज भी शामिल होगई महाराणाने नाहरमगरासे कूच करके जहाज़पुरके ज़िलेके गांव जामोलीमें मकाम किया महाराजा ईश्वरीसिंह भी मुकाबलह करनेको अच्छी फौजके साथ जयपुरसे चले, और उनके प्रधान राजामल्ल

खत्रीने हिक्मत अमली करनी चाही महाराणाने चालीस दिन तक बनास नदीके किनारे जामोलीमे कियाम रक्खा, और वहासे करीब पडेर गावमे ईश्वरीसिंह आ ठहरे राजामल्ल खत्री महाराणाके पास आया, और कहा, कि आपको महाराव दुर्जनसालके बहकानेसे हमारी दोस्ती न तोडना चाहिये तब महाराणाने राजामल्लसे कहा, कि माधवसिंहके लिये विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] के अह्दनामहकी तामील होना जुरूर है इसपर राजामल्लने कहा, कि दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहने हक़दार जानकर ईश्वरीसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठाया है, और आपको भी बादशाहके हुक्ममे खलल डालनेसे फायदह न होगा इस तरहकी रद बदल होनेके बाद ५०००००) पाच लाख रुपया सालानह आमदनीका पर्गनह टोंक माधवसिंहके लिये करार पाया, और दोनो तरफके मुसाहिबोने महाराणा व महाराजाके आपसमे मेल करा दिया इस बातसे नाराज होकर महाराव दुर्जनसाल बगैर रुख्सत लिये कोटा को चले गये, और महाराजा ईश्वरीसिंह भी सुलह करनेके बाद पीछे जयपुर चले गये

महाराणाके खालिसहका देवली गाव, जो सावरके ठाकुर इन्द्रसिंहने दबा लिया था, वह इस समय महाराणाने छुडाना चाहा, ठाकुर इन्द्रसिंह यह गाव देनेपर राजी होगया, परन्तु उसके कुवर सालिमसिंहने मजूर नही किया, और अच्छे अच्छे राजपूतोके साथ देवलीकी गढीमे घुसकर लडाई करनेको मुस्तइद हुआ यह खबर सुनकर महाराणाने बीरमदेवोत राणावत बाबा भारतसिंहको फौज और कुछ तोपखानह देकर भेजा भारथसिंहने सालिमसिंहको बहुत समझाया, लेकिन् उसने एक न माना, तब गोलन्दाजी होने लगी, तीन दिन तक तोपो और बन्दूकोसे मुकाबलह हुआ, चौथे दिन सालिमसिंह बडी बहादुरीके साथ गढीके किवाड खोलकर बाहर निकला महाराणाकी फौजने बडे जोर शोरके साथ हमलह किया, बहादुर सालिमसिंहने तलवार और कटारियोसे अच्छी तरह रोका, और टुकडे टुकडे होकर मारागया यह कुवर सालिमसिंह, जिसने चन्द रोज पहिले विवाह किया था, शादीके ककण भी न खोलने पाया था, और बड़ी खुशीके साथ लडकर दूसरी दुन्याको सिधारा उस जमानेमे अक्सर ऐसे राजपूत राजपूतानहमे पाये जाते थे, जो इस नाशवान शरीरके एवज नामवरी को जियादह पसन्द करते थे इक्यावन आदमी महाराणाकी फौजके, और सत्तरह सालिमसिंहके साथके मारेगये बाबा भारतसिंहने देवलीकी गढीमे कब्जह करलिया, और सावरका सीसोदिया ठाकुर इन्द्रसिंह भी महाराणाके पास जामोलीमे हाज़िर होगया महाराणा अपने भान्जे माधवसिंह समेत उदयपुर आये, तो शाहपुराके राजा उम्मेदसिंहने महाराणाके पास

हाजिर होकर तलवार बधाईके जो ५००००) पचास हजार रुपये बाकी थे, उनमेंसे ९९२४) नक्द और १५०००) पन्द्रह हजारके दो हाथी विक्रमी फाल्गुन् शुक्ल ४ [हि० ११५७ ता० ३ मुहर्रम = ई० १७४४ ता० १७ फेब्रुअरी] को नज्र किये, और महाराणासे सफाई हासिल करली, क्योंकि राजा उम्मेदसिंह थोडे दिनोंसे महाराणाकी उदूल हुक्मी करने लगे थे, परन्तु इस समय जयपुरकी चढाईका मौका देखकर उससे बाज आये

विक्रमी १८०१ [हि० ११५७ = ई० १७४४] मे जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंह अपनी गद्दीनशीनीको मज्बूत करनेके लिये मुहम्मदशाहके पास दिल्ली पहुंचे पीछेसे महाराणा जगत्सिंहने अपने मातह्त सर्दार बाबा बख्तसिंह और रावत् कुबेरसिंहको मल्हार राव हुल्करके पास भेजा, और एक करोड रुपया देना मंजूर करके जयपुरकी गद्दीपर माधवसिंहको बिठलाना ठहराया महाराणाने ढूंढाडकी तरफ कूच किया, तो यह खबर सुनकर जयपुरके उमराव सर्दार भी मुकाबलह करनेको आये बूंदीका मिश्रण सूर्यमल्ल वंशभास्करमे लिखता है, कि ढूंढाडके उमरावोंने महाराणाको धोखा देकर कहा, कि हम माधवसिंहको चाहते है, ईश्वरीसिंहको गिरिफ्तार करादेंगे यह धोखा इसी वास्ते दिया गया था, कि दिल्लीसे राजा ईश्वरीसिंहके वापस आजाने तक लडाई मुल्तवी रहे दिल्लीसे ईश्वरीसिंहके फौजमे पहुंचते ही सब सर्दार उनके फर्मांबर्दार होगये, और जयपुरके प्रधान राजामल्ल खत्रीने मरहटोंको भी लालच देकर मिला लिया, एक मल्हार राव हुल्करने ईमान नही छोडा, लेकिन् दूसरे मरहटे लोग महाराणासे मुकाबलह करनेको तय्यार होगये, तब उनको कुछ रुपया देकर महाराणा मए माधवसिंहके उदयपुर चले आये यह कुल बात हमने वंशभास्करसे लिखी है, मेवाडकी तवारीखोंमे नही मिली एक कागज रावत् कुबेरसिंहका महाराणाके काका बख्तसिंहके नामका हमको मिला है, जो उसने मकाम कोटा मरहटोंके लश्करमेसे लिखा था, उसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है -

कागजकी नक्ल

सिध श्री सरब उपमा जोग, महाराजा श्री बखतसिंघजी एतान, कोटाथी लखता रावत् कुबेरसिंघजी केन मुजरो बचजो राज, अपरच ॥ मारे आप उप्रात और कई बात नहीं छे राज, अप्रच ॥ बुंदीरी लडाइ हुई, ने पछे छोडे, सो समाचार तो पैलका कागदमे लख्या छा, सो पहुंचा होसी राज, ने पोस सुद १५ रवे रे दने कोटे आणे लागा राज, सो जणी दन आपाजीरे गोली लागी, तथा लडाई हुई सो

तो समाचार पैली लषा था राज, सो जाणा होसी जी, नै तुरत लडाई होवै छै राज माह बद ८ भोमेरे दन मे कोटे आव्या राज राजा ईशरीसीघजी सु पण कोल करार सारी बातरो लीदो जी, राजा श्री माधोसीघजीरा पटारो तथा सारा सरदारारो एक वेवार करणो, तथा महारावजीसु पण एक वेवार करणो असो जतन तो ईसरीसीघजी कीदो जी. ने मे, नरुका हरनाथसीघजीने महारावजी सु मलायो छै जी, सो महारावजी पण रजाबद हुआ छे जी, सो ओ सुलुक हुवाथी माहारावजी पण दन ४ तथा ५ पाचमे नाथदवारे आवसी, श्रीजी हजूर आवसी जी असी थाप ठैराई छे जी, बडी मेनत करी छै, राजामलसु जदी सारा समाचार राजसु कहसा जदी थे तथा श्रीजी हजूर समाचार मालम करसो, जदी आप पण रजाबद होसो जी, ने श्रीजी पण मेहरवान होसी राजने दषणयासु आर-दल छे राज, सो दषणी तो १७ लष असरा मागे छे राज, ५ पाच लाष हर बरसोदा मागे छे राज, सो रदल बदल करे तो कमजाफा करे ने काम चुकावा छा राज, ने आप मने हमेसे लषे छे, सो आपरे कई काम करणो होवे, सो कीज्यो, अबे मे बेगा आवा छां राज, ढील न जाणसे राज सवत् १८०१ रा महा वदी १२

सुकरे चोडावत जोरावरसीघ

राणावत सामतसीघरो जोहार बचजो जी, चोडावत सुजारो मुजरो बचजो जी

वंश भास्करमे महाराणासे मरहटोका बदलजाना इसी वर्षके विक्रमी माघ कृष्ण पक्ष [हि० ११५७ जिल्हिज = ई० १७४५ जैन्युअरी] मे लिखा है, और यह कागज भी विक्रमी माघ कृष्ण १२ [हि० ११५७ ता० २६ जिल्हिज = ई० १७४५ ता० ३१ जैन्युअरी] को लिखागया, जिस वक्त महाराणा उदयपुरमे मौजूद मालूम होते है, शायद आगे पीछे वह मुआमलह हुआ हो, तो तअज्जुब नहीं इसमे सत्तरह लाख रुपया पहिले और पाच लाख सालानह मरहटोको देनेकी जो तहरीर है, शायद यह बात माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेके बारेमे होगी

विक्रमी १८०२ [हि० ११५८ = ई० १७४५] मे महाराणा जगत्सिंहने अपने नामपर पीछोला तालाबमे जगन्निवास नाम महल बनवाये, इस बारेमे यह मशहूर है, कि महाराणा संग्रामसिंहसे जगत्सिंहने अर्ज़ किया था, कि मै चन्द रोजके वास्ते जनानह समेत जगमन्दिरोमे जाऊ महाराणाने इस बातको कुबूल नही किया, और ताना दिया, कि ऐसी मर्जी हो, तो नये महल बनवाकर उनमें रहना चाहिये उसी तानेको याद रखकर जगत्सिंहने यह महल तय्यार करवाये इसकी नीवका मुहूर्त विक्रमी १८०० वैशाख शुक्ल १० गुरुवार [हि० ११५६ ता० ९ रबीउल्अव्वल = ई० १७४३

ता० ४ मई] को हुआ, और विक्रमी १८०२ माघ शुक्ल ९ [हि० ११५९ ता० ८ मुहर्रम = ई० १७४६ ता० १ फेब्रुअरी] सोमवारको वास्तू मुहूर्त किया गया इसके उत्सवमे लाखो रुपयेका खर्च हुआ था, जिसकी तफ्सील "जगत्विलास" ग्रन्थमे अच्छीतरह लिखी है, जो नन्दराम कविने उसी जमानेमे हिन्दी कवितामे बनाया था, उस ग्रन्थसे मुख्तसर मतलब हम नीचे दर्ज करते है -

यह इमारत डोडिया ठाकुर सर्दारसिहकी निगरानीसे तय्यार हुई थी नन्दराम कवि लिखता है, कि विक्रमी १८०२ माघ शुक्ल ९ [हि० ११५९ ता० ८ मुहर्रम = ई० १७४६ ता० १ फेब्रुअरी] को वास्तू मुहूर्त हुआ, और दूसरे दिन सब जनानह बुलाया गया, जिसकी तफ्सील नीचे लिखी जाती है -

१ महाराणा अमरसिहकी राणी दादी झाली-
१ महाराणा सग्रामसिहकी महाराणी झाली, जिनके गर्भसे बाघसिह और अर्जुनसिह हुए थे

महाराणा जगत्सिहकी महाराणियोके यह नाम थे -

१- महाराणी बडी ईडरेची, २- महाराणी छोटी ईडरेची,
३- महाराणी राठौड छप्पनी, ४- महाराणी राठौड मेड़तणी,
५- महाराणी भटियाणी, ६- महाराणी चावडी,
७- महाराणी झाली, ८- महाराणी छोटी झाली
हलवदकी, जिनके गर्भसे एक कन्या और एक कुवर अरिसिह थे,
९- महाराणी देवडी,

भाणेज महाराज माधवसिहकी राणिया -

१- महाराणी राठौड ईडरेची, २- महाराणी सीसोदणी,
३- महाराणी चूडावत, ४- महाराणी भटियाणी,

भाई नाथसिंहकी ठकुराणिया.

१- बहू बीरपुरी, २- बहू मालपुरी, ३- बहू मेड़तणी, ४-बहू बडी जोधपुरी, ५- बहू छोटी जोधपुरी, ६- बहू झाली

युवराज प्रतापसिहकी कुवराणियां

१- बहू भटियाणी, २- बहू हाडी, ३- बहू झाली भाई बाघसिहकी ठकुराणिया - १- बहू भटियाणी, २- बहू छप्पनी, ३- बहू चावड़ी, ४- बहू पवार भाई अर्जुनसिहकी ठकुराणी १- बहू झाली

इनके बाद कवि नन्दरामने उन सर्दारोंके नाम लिखे हैं, जिनको महाराणाने इस उत्सवमें घोड़े दिये हैं, और उन घोड़ोंके नाम भी लिखे हैं –

१– भाणेज माधवसिंहको, धसलबाज कुमैत २– चहुवान राव रामचन्द्रको हरबख्श नीला ३– चहुवान रावत् फत्हसिंहको बाज बहादुर ४– रावत् जशवन्तसिंहको, पतंग राज कुमैत ५– रावत् मेघसिंहको, नीलराज नीला ६– झाला मानसिंहको, दिलमालक महुआ ७– चूंडावत रावत् फत्हसिंह दुलहसिंहोतको, सियाह लक्खी बछेरा ८– झाला राज कान्हसिंहको, प्राणप्यारा नीला ९– रावत् पृथ्वीसिंह सारंगदेवोतको, प्राणप्यारा नीला १०– शक्तावत महाराज कुशलसिंहको, सोनामोती ११– शक्तावत रावत् हटीसिंहको, सुर्खा १२– महाराज तख्तसिंहको, लालप्यारा कुमैत १३– महाराज नाथसिंहको, पीताम्बर बख्श कुमैत १४– महाराज बाघसिंहको, बसन्तराज सुरंग १५– महाराज बख्तसिंहको, तेज बहादुर कुमैत १६– राजा भाई सर्दारसिंहको, कल्याण कुमैत १७– राजा उम्मेदसिंहको सूरती कुमैत १८– डोडिया ठाकुर सर्दारसिंहको, सोवनकलस समन्द १९– बाबा भारतसिंहको, अतिगति कुमैत २०– राठौड़ मुह्कमसिंहको, कन्हवा समन्द २१– रावत् लालसिंहको, रत्न कुमैत २२– चहुवान जोरावरसिंहको, प्यारा सुर्खा २३– चूंडावत् रावत् जयसिंहको, हय गुमान सुरंग २४– झाला कुंवर नाथसिंहको, रूपवन्त २५– पुरोहित सन्तोषरामको, रणछोरपसाव २६– प्रधान देवकरणको, चौगानबाज बोज रंगका इसके सिवाय चारणोंको भी हाथी, घोड़े, कपड़े, व जेवर इन्आममें दिये, तीन दिन तक बड़ा भारी जल्सह रहा

महाराणा अव्वल जगत्सिंहने तो जगमन्दिर बनवाये थे, जो पीछोला तालाबके दक्षिणी तीरके पास है, और इन महाराणा याने दूसरे जगत्सिंहने जगन्निवास बनवाये, जो उत्तरी तटके करीब राजधानीके महलोंसे पश्चिमको है ये दोनों मकाम सैरके लाइक पीछोला तालाबमें बने हैं, किश्तियोंमें बैठकर लोग देखनेको जाते हैं उनके बगीचे, हौज व फव्वारोंको देखकर आदमीका दिल यह नहीं चाहता, कि यहांसे दूसरी जगह चले यह महाराणा अपने पिताकी तरह मुल्की इन्तिज़ाम भी उम्दह करना चाहते थे, लेकिन् जैसा कि चाहिये, वैसा नहीं हुआ, कुल सर्दार और उमरावोंसे मुल्की अम्नके लिये मुचल्के लिये गये थे, जिनमेंसे एक मुचल्केकी नक्ल हम नीचे दर्ज करते हैं –

मुचल्केकी नक्ल

सीध श्री श्रीजीहज़ूर, अठे हुक्म हुवो, जणी मांहे तफावत पड़े, तो म्हारो

पट्टो खालसे, जणीरी अरज करवा पावे नहीं, ने कोई झूठी साची मालम करे तो साच झूट काडे ओलभो दे, इत्री बात ठैहरी -

बगत

पट्टा परवाणे साथ राखणो, पट्टा माहे सदा लागत लागे है, जो देणी, पट्टामाहे चोर पासीगररो बट ले, तो ओलबो पावे, श्री दरबाररो चीठीवालो आवे, जणीथी बोले नहीं, भोम पचसाइ हुकम प्रमाणे छाड देणी सावण बद ६ रवे स० १८०३ लखतु रावत जसूतसीघ, ऊपरलो लिख्यो सही

चोर डकैत और पासीगरोंको सर्दार लोग अपने पास रखकर चौथा हिस्सा लेते थे, जिसको चौथान बोलते थे फिर वे लोग खालिसेके अथवा गैर इलाकेके बाशिन्दोंको खूब लूटते, इस बे इन्तिजामीके सबब ऐसे मुचल्के लिखवाये गये, लेकिन् महाराणाके ऐश व इश्रतमें ज़ियादह गिरिफ्तार होनेसे हुकूमतमें भी ज़ोफ़ आनेलगा, कभी सलूंबरके रावत् कुबेरसिंहकी बातोंपर ज़ियादह एतिबार होता, कभी रावत् जशवन्तसिंहको अपना सलाहकार बनालेते, कभी मरहटोंसे मेल मिलाप रखते, कभी उनके बर्खिलाफ़ कार्रवाई करते, कभी जोधपुरके महाराजा अभयसिंहको अपना दोस्त बनाते, कभी उनके बर्खिलाफ़ महाराज बख्तसिंहकी सलाहपर चलते, कभी बूंदीके माज़ूल राव राजा उम्मेदसिंहको मदद देनेके लिये तय्यार होते, और कभी दलेलसिंहकी मज्बूती चाहते ऐसी कार्रवाइयोंसे दिन बदिन बे एतिबारी फैलती जाती थी, और उसका ख़राब नतीजह तरक्की पकड़ता था, इसपर भी माधवसिंहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेका इरादह माल और मुल्कको बर्बाद करनेवाला होगया

विक्रमी १८०४ फाल्गुन् शुक्लपक्ष [हि० ११६१ रबीउल्अव्वल = ई० १७४८ मार्च] में राज महलके पास बनास नदीपर महाराणाकी फ़ौज और जयपुर वालोंसे, जो लड़ाई हुई, उसका हाल इस तरहपर है -

महाराणाने मल्हार राव हुल्करसे इस काममें मदद चाही, हुल्करने अपने बेटे खंडेरावको मए फ़ौज व तोपखानहके भेज दिया, महाराणाने अपनी फ़ौजके शरीक कोटेके महाराव दुर्जनसाल व राव राजा उम्मेदसिंहको भी किया, लेकिन् दुर्जनसालने अपने एवज अपने प्रधान दधिवाडिया चारण भोपतरामको भेज दिया जयपुरसे राजा ईश्वरीसिंह कूच करके राज महलके पास पहुंचे, और उसी जगह मुक़ाबलह हुआ इस लड़ाईमें हज़ारहा राजपूत मारे गये, जयपुरकी फ़ौजके पैर उखड़ने वाले थे, परन्तु महाराज माधवसिंह, जो मेवाड़ और मरहटी फ़ौजके शामिल

थे, उनका निशान (झंडा) जयपुरके मुवाफ़िक देखकर लोगोंको धोखा हुआ, कि जयपुरवाले हमारी फ़ौजमें आ घुसे, इससे मेवाड़ और कोटा वगैरहके सर्दार भाग निकले, और चन्द सर्दारोंने पीछे लौटकर जान दी, परन्तु फ़त्हका झंडा जयपुरके हाथ रहा. शाहपुराका राजा उम्मेदसिंह अपनी जमइयत समेत वहीं खड़ा रहा, राजा ईश्वरीसिंहने कहलाया, कि वह चला जावे, पर वह न हटा, तब महाराजाने हमलह करनेके लिये अपने सर्दारोंको हुक्म दिया, शेखावत शिवसिंह, जो हरावलका मुख्तार था, रुका, वह उम्मेदसिंहका श्वसुर था, जिससे लाचार होकर ईश्वरीसिंह को अपना हुक्म मुल्तवी रखना पड़ा. उम्मेदसिंह वहांसे दूसरे रोज़ कूच करके शाहपुरे आया, और मेवाड़, हाड़ौती और मरहटोंकी फ़ौज भी शाहपुरामें ठहरी. महाराणाने फिर मददगार फ़ौज उदयपुरसे भेजकर लड़ाई करना चाहा, लेकिन् मरहटोंकी यह सलाह थी, कि दोबारह एक जबर्दस्त फ़ौज लाकर हमलह किया जावे. इसी सबबसे ईश्वरीसिंह तो जयपुर गये, और मेवाड़की फ़ौजें लौट आईं.

मिश्रण सूरजमल्लने वंशभास्करमें जयपुरकी फ़ौजके हाथसे मेवाड़के कस्बह भीलवाड़ाका लुटजाना लिखा है, परन्तु हमको इस बातका पता दूसरी जगहसे नहीं मिला. महाराणाको इस शिकस्तसे बहुत शर्मिन्दगी हुई, जिससे विक्रमी १८०५ [हि० ११६१ = ई० १७४८] में उन्होंने महाराव दुर्जनसालको कोटासे बुलाकर सलाह की, और मल्हार रावके बेटे खंडेरावको मए फ़ौजके मददपर बुलाया. उक्त महारावको महाराणाने गद्दीपर बिठाया, सरपर हाथ लगाकर सलाम लिया, और उनके नाम ख़रीतह लिखनेका दरजह दिया. इस वक्त तक कोटाके महाराव, महाराणाकी गद्दीके नीचे बैठकर उमराव सर्दारोंके मुवाफ़िक दरजह रखते थे, अब पूरे राजा बनगये. इस बातसे इह्सानमन्द होकर दुर्जनसाल तमाम ज़िन्दगी तक उदयपुरका शुभचिन्तक रहा, और अब तक भी उस रियासतमें इस उपकारकी यादगार भूली नहीं गई है. फिर दोबारह फ़ौज तय्यार होकर महाराणा सहित खारी नदीके किनारे तक पहुंची, उसमें मेवाड़ हाड़ौती और खंडेराव शरीक थे. राजा ईश्वरीसिंह भी उक्त नदीके दूसरे किनारेपर आ ठहरे. एक दिन थोड़ासा मुकाबलह हुआ, जिसमें भगरोपके बाबा रत्नसिंह और आरजेके रणसिंहने अपनी जमइयतसे जयपुरकी हरावलको हटा दिया, फिर रात होनेके कारण लड़ाई मुल्तवी रही. इसपर महाराणाने खुश होकर दादूथल व दांदियावास रत्नसिंहको, और सिंगोली रणसिंहको जागीरमें दी. रातके वक्त जयपुरकी तरफ़से सुलहके पैग़ाम आने लगे, दूसरी तरफ़ सलाहमें फूट थी, हाड़ा चाहते थे, कि हमारा मत्लब जियादह निकले; माधवसिंहने जाना, कि मैं कुछ अपना मत्लब अधिक निकालूं, महाराणाने

कुछ और ही बात ठानी, मरहटे अपना लालच चाहते थे इसी पसोपेशसे न कोई मत्लब निकला, न लडाई हुई

महाराजा ईश्वरीसिह तो जयपुरकी तरफ गये, और महाराणा, उदयपुर चले आये, महाराज माधवसिह खडेरावके साथ रामपुराको चले गये, जो आपसमे पगडी बदल भाई बने थे माधवसिहने अच्छी तरहसे जानलिया, कि बगैर मरहटोकी मददके काम्याबी हासिल न होगी, इस वास्ते खडेरावसे दोस्ती बढाई, जिससे मलहार राव हुल्कर इस कामको पूरा करनेके लिये अच्छी तरह तय्यार था जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिहने पहिली शर्तोको तोड दिया, जो जामोली और पडेरके मकामपर महाराणासे की गई थी इन शर्तोका तोडना गैर वाजिब नही था, क्योकि महाराणाने इक्रारके बर्खिलाफ ईश्वरीसिहपर चढाई करदी, तो जिस तरह महाराणाने पहिले अपने इक्रारको तोडा, उसी तरह ईश्वरीसिहने भी बर्खिलाफी की महाराज माधवसिह और राव राजा उम्मेदसिह दोनो मलहार राव हुल्करको जयपुरपर चढ़ा लाये, हुल्करने महाराणा और जोधपुरके महाराजाको भी लिख भेजा, महाराणा तो इस कामके लिये दिलसे तय्यार थे, परन्तु मरहटोका एतिबार न था, क्यौकि जिससे उनका मत्लब निकलता, उसीके सहायक बन बैठते इस वास्ते महाराणा खुद तो न गये, चार हजार सवारोके साथ शाहपुराके राजा उम्मेदसिह, बेगूके रावत् मेघसिह, और देवगढके रावत् जशवन्तसिह, बीरमदेवोत राणावत शभूसिह और कायस्थ गुलाबरायको भेजदिया ये लोग ढूढारकी हदमे मलहार रावकी फौजसे जामिले, राव राजा उम्मेदसिह व महाराज माधवसिह पेश्तरसे वहा मौजूद थे, जोधपुरके महाराजा अभयसिहने दो हजार सवारो सहित रीयाके ठाकुर मेडतिया शेरसिह और ऊदावत कल्याणसिह वगैरहको भेज दिया, और कोटाकी फौज भी आमिली मलहार राव हुल्करने कुछ फौजके साथ तातिया गगाधरको जयपुर भेजा, परन्तु वह शिकस्त खाकर वापस लौटा, महाराजा ईश्वरीसिहने उसका पीछा किया, और भरतपुरके राजा सूरजमल्ल जाटको अपना मददगार बनालिया, इस शर्तपर, कि हम तुमको गद्दीपर बिठाकर बराबरीका रुत्बह देगे

बगरू गावके पास विक्रमी १८०५ भाद्रपद कृष्ण ४ [हि० ११६१ ता० १८ शअ्बान = ई० १७४८ ता० १४ ऑगस्ट] को महाराजा ईश्वरीसिह और सूरजमल्ल जाटने मलहार राव हुल्करसे उसकी मददगार फौजो समेत मुकाबलह किया, विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ६ [हि० ता० २० शअ्बान = ई० ता० १६ ऑगस्ट] तक लडाई होती रही, आखिरकार महाराजा ईश्वरीसिहकी ताकत और हिम्मत टूटगई, तब उनके मन्त्री केशवदास खत्रीने तातिया गंगाधरको लालच

देकर मिलाया, उसने मलहार राव हुल्करको कहा, कि ईश्वरीसिंहसे बड़ा भारी दंड लेकर क्षमा कीजिये, जिससे आपकी प्रभुता प्रसिद्ध हो. मलहार राव भी लोभके जालमें फंस गया, लेकिन् बूंदीका राज्य, राव राजा उम्मेदसिंहको, और टोंकके चार पर्गने महाराज माधवसिंहको दिला दिये. अगर इस वक्त मलहार राव लोभ न करता, तो माधवसिंहको जयपुरका राज्य इसी लड़ाईमें मिलसक्ता था, परन्तु ईश्वरको चन्द रोज़ फिर इस मुआमलहको चलाना मंजूर था, इस लिये इसी ढंगपर रहा, लेकिन् शिकस्त महाराजा ईश्वरीसिंहकी गिनीगई, और राव राजा उम्मेदसिंहको बूंदी दिलाकर सब मददगार फ़ौज अपनी अपनी जगहपर पहुंची. यह हाल हमने बूंदीकी तवारीख़ उम्मेदसिंह चरित्रसे लिया है. इस वक्त केशवदास खत्रीने खैरख्वाहीसे अपने मालिकको बचाया, लेकिन् हरगोविन्द नाटाणी वगैरह उसके विरोधी लोगोंने ईश्वरीसिंहसे कहा, कि इसी बदख्वाह केशवदासने उम्मेदसिंहको बूंदी और माधवसिंहको टोंकके चार पर्गने हुल्करसे मिलकर दिलाये हैं. ऐसी बातोंको सुननेसे महाराजा ईश्वरीसिंह, केशवदाससे दिन ब दिन दिलसे नाराज़ होने लगे; आखिरकार विक्रमी १८०६ [हि० ११६२ = ई० १७४९] में केशवदासको महाराजाने अपने साम्हने ज़हर देकर मारडाला, और मरते वक्त कहा, कि "अब तेरा मददगार हुल्कर कहां है ?" उसने हाथ जोड़कर महाराजासे कहा, "मुझ बे कुसूर खैरख्वाहको मारनेका बदला ईश्वर आपको जल्द ही देगा" इस बातपर किसी कविने मारवाड़ी भाषामें एक दोहा कहा, जो नीचे लिखा जाता है -

दोहा

मंत्री मोटो मारियो, खत्री केशवदास ॥ जद ही छोडी ईसरा, राज करणरी आस ॥ १ ॥

अर्थ- जबसे अपने बड़े सलाहकार केशवदास खत्रीको मारडाला, तबसे हे ईश्वरीसिंह तुमने राज्य करनेकी उम्मेदको भी छोड़दिया.

यह बात दक्षिणमें मलहार राव हुल्करके कान तक पहुंची, तो वह आग होगया, कि मेरी मिलावटका इल्ज़ाम लगाकर ईश्वरीसिंहने केशवदासको क्यों मारा. वह पेश्वासे रुख़सत लेकर विक्रमी १८०७ आश्विन शुक्ल १० [हि० ११६३ ता० ९ ज़िल्काद = ई० १७५० ता० ११ ऑक्टोबर] को दक्षिणसे रवानह हुआ, और हाड़ौतीके इलाकहमें पहुंचने बाद वहांसे ढूंढारकी तरफ़ चला. महाराजा ईश्वरीसिंहने बहुतसी हिक्मत अमली की, परन्तु हुल्कर न रुका. उन दिनोंमें महाराजाने केशवदासके एवज़ हरगोविन्द नाटाणीको अपना प्रधान बना रक्खा था, और आप उस मन्त्रीकी बेटीपर आशिक थे, उन्होंने अपनी माशूकाको देखनेके लिये महलोंके दक्षिणी किनारे पर एक मीनार बनाया, जो "ईश्वर लाट" के नामसे मश्हूर और अब तक मौजूद है. वह मन्त्री अपनी

बिरादरी वगैरहमे इस बातसे शर्म और बदनामी उठानेके सबब महाराजाका सख्त बदख्वाह बनगया जब महाराजाने उस प्रधानको हुक्म दिया, कि लडाईका सामान करना चाहिये, उस बदख्वाह दीवानने जवाब दिया, कि ३००००० तीन लाख कछवाहोकी फौज मेरी जेबमे है, मरहटोकी क्या ताकत है, जो आपसे मुकाबलह करसके ? आप अच्छी तरह आराम कीजिये मलहार राव हुल्कर जो करीब आता जाता था, उसको हरगोविन्दने मिलावट करके लिख भेजा, कि तुम बे खौफ चले आओ, यहा लडाईका कुछ सामान तय्यार नही है

महाराजा ईश्वरीसिहके पास छोटे आदमी मुसाहिब बन गये थे, जैसे खानू महावत और शभू बारी वगैरह ये लोग भी बडा जुल्म करते थे, किसीकी स्त्री पकडवा मगाते, किसीका धन लूट लेते, जिससे राज्यके लाइक आदमी खामोश हो बैठे महाराजा शराबके नशेमे बे होश रहकर अय्याशीमे फस गये, और हरगोविन्द नाटाणी जो इख्तियार दीवान अपनी इज्जत की खराबीसे चाहता था, कि जल्द इस बातका एवज लियाजावे मलहार राव हुल्कर, जिसके साथ बूदीके राव राजा उम्मेदसिह भी थे, जयपुरके करीब आ ठहरा, उस समय हरगोविन्दको बुलाकर महाराजाने कहा, कि अब दुश्मन करीब आगया, वह फौज कहा है, जो तू अपनी जेबमे बतलाता था ! दीवानने जवाब दिया, कि आपके दुरा चरण (चूहा) ने मेरी जेब काट डाली यह सुनकर महाराजा एक दम हैरान होगये, और कुछ भी बात न बनपडी, वह विक्रमी १८०७ पौष कृष्ण ९ [हि० ११६४ ता० २३ मुहर्रम = ई० १७५० ता० २३ डिसेम्बर] को जहर खाकर महलमे सो रहे इस खबरके मश्हूर होते ही शहरमे शोर मच गया दूसरे रोज हुल्करने अपने आदमी भेजकर शहरपर कब्जह कर लिया, और महाराज माधवसिहको जयपुर आनेके लिये खबर दी माधवसिह रामपुरासे उदयपुर आये, और चाहा था, कि कुछ मदद (फौज) लेकर मलहार रावके शामिल होवे, परन्तु किसी खास कारणसे देर हुई उन्होने कायस्थ कान्हको, जो महाराणाका मुसाहिब था, मलहार रावकी फौजमे पहिले भेजकर कहला दिया, कि मै भी आता हू हरगोविन्दकी मिलावटसे मलहार राव एकदम खास जयपुरमे जा पहुचा, और जातेही कामयाब हुआ माधवसिह भी खबर मिलते ही उदयपुरसे रवानह होकर सागानेर पहुचे, मलहार राव हुल्कर, उनका बेटा खडेराव, बूदीके राव राजा उम्मेदसिह, करौलीके राजा गोपालपालने पेशवाई की, और जयपुरके महलोमे पहुचाकर सब अपने अपने डेरोको गये इसी अरसहमे राणूजी सेधियाका बेटा जय आपा भी अपने लश्करके साथ आ पहुचा, जो पेशवाकी इजाजतसे हुल्करके साथ दक्षिणसे विदा हुआ, और किसी खास कामके लिये पीछे रहगया था हुल्करने पहिले एक करोड रुपया फौज खर्च जयपुरसे ठहरा लिया था, जिसमे तीन हिस्से पेशवाके

और एक उसका था, परन्तु सेंधियाके आ पहुचनेसे अपने हिस्सेमेसे आधा उसको देना पडा

दूसरे रोज मरहटी फौजके आदमी शहर जयपुरमे खरीद व फरोख्त देखनेके लिये गये थे, इसी अरसहमे एक शेखावतने किसी मरहटेकी घोडी छिपा दी, जिसको मरहटोने पहिचानकर छीन लिया, शेखावतोने उन मरहटोको तलवारसे मार डाला इस शोर व गुलसे शहरके दर्वाजे लग गये, चार हजार मरहटी फौजके आदमी, जो शहरके अन्दर थे, उनमेसे तीन हजार मारेगये, और एक हजार जख्मी हुए इस फसादको महाराजा माधवसिहने बडी मुश्किलसे मिटाया, और हुल्करके पास आदमी भेजकर अपनी बरिय्यत जाहिर की जय आपा बहुत नाराज हुआ, परन्तु महाराजाकी लाचारीसे हुल्करने उसे समझाया, और महाराजाने टोंकके चार पर्गने और रामपुरा हुल्करको देकर पीछा छुडाया महाराजा माधवसिहने तमाम इह्सानोंको भूलकर महाराणाका पर्गनह रामपुरा मरहटोको देदिया, महाराणा जगत्सिंहने चौरासी लाख रुपया और हजारो राजपूतोके सिर माधवसिहको जयपुरकी गद्दीपर बिठानेमे बर्बाद किये, लेकिन् इस कहावती दोहेको महाराजाने सच्चा कर दिखाया –

दोहा

जाट, जवाई, भाणजो, रैबारी रु सुनार ॥
अतरा कदे न आपणा करदेखो उपकार ॥ १ ॥

मरहटी फौजोने अपनी अपनी राह ली, और महाराणा यह खबर सुनकर खुश हुए, परन्तु रामपुरा हुल्करको देनेसे दिलमे नाराज हुए होगे राजपूतानहके राजा इस वक्तसे मरहटोके शिकार बनगये

महाराणा जगत्सिहका उनकी अय्याशीने रोब खो दिया था जब शाहजहा बादशाहने विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] मे चढाईके वक्त माडल गढ, पुर माडल, बधनोर, मेवाडसे छीन लिये, तब पर्गनह फूलिया भी अपने कब्जहमे करलिया होगा, क्योंकि महाराणा अमरसिह अव्वलकी सुलहके वक्त यह पर्गनह भी जहागीरके फर्मानमे कुवर करणसिहके नाम लिखा हुआ है उस फर्मानके मुवाफिक कुल पर्गने विक्रमी १७११ (१) [हि० १०६४ = ई० १६५४] तक काइम रहे शायद उसी वक्त यह पर्गनह सुजानसिह, सूरजमलोतको बादशाह शाहजहाने जागीरमे देदिया था, परन्तु फिर महाराणा राजसिहने अपने मातहत करलिया विक्रमी १७३६ [हि० १०९०

(१) लेकिन् नैनसी महता लिखता है, कि फूलिया बादशाहने १६८४ के सवत्मे खालिसे किया था इस तहरीरसे शायद शाहपुरेवालोका बयान सच हो, वे कहते हैं, कि सवत १६८६ मे फूलिया सुजानसिहको शाहजहाकी तरफसे मिला था.

= ई० १६७९] की चढ़ाईके बाद आलमगीरने उसको दोबारह मेवाड़से अलहदह कर-लिया, और महाराणा दूसरे अमरसिंहने विक्रमी १७६३ [हि० १११८ = ई० १७०६] से भारतसिंहको अपना मातहत बनाया, लेकिन् भारतसिंहकी बादशाही खिद्मत मुआफ़ न हुई महाराणा संग्रामसिंहने विक्रमी १७८५ [हि० ११४१ = ई० १७२८] मे फूलियाको मेवाड़के तअल्लुक़मे करलिया, राजा उम्मेदसिंह विक्रमी १७९४ [हि० ११५० = ई० १७३७] मे महाराजा अभयसिंहके साथ मुहम्मदशाहके पास दिल्ली गये, जिससे फूलियाकी पेशकशी जुदी बतलाने लगे तब महाराणाने विक्रमी १७९८ [हि० ११५४ = ई० १७४१] मे अपना वकील दिल्ली भेजकर बादशाही हुक्मसे वज़ीरो वगैरह की तहरीरे अपने नाम लिखा ली उस वक्तके बाज फ़ार्सी काग़ज़ातमेसे तर्जमह समेत एक तहरीर यहा दर्ज कीजाती है -

कमरुद्दीनखां वज़ीरकी तह्रीर, ता० ५ शअ्बान हिज्री ११५६ [विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल ६ = ई० १७४३ ता० २५ सेप्टेम्बर] (१)

पर्गनह शाहपुरा, सावर, जहाजपुर और बनेड़ा, ज़िला और सूबा अजमेरके मौजूद और आइन्दह कामदारोको मालूम हो, कि इन दिनोमे वकील, इज्जतदार सर्दार, बहादुरीकी

---

(1) * برابه

متصدیان مهمات حال و استقبال پرگنه شاهپوره ساور و جهاجپور و بهیره
سرکار صوبه اجمیر بدانند که درین ولا وکیل امارت و ایالت مرتبت

निशानी, बड़े दरजह वाले, हिन्दुस्तानके राजाओंके बुज़ुर्ग, महाराणा जगत्सिंहने अ़र्ज़ किया, कि लिखी हुई जागीरें सीसोदिया राजपूतोंकी जागीरमें, जो महाराणाके हम कौम हैं, मुक़र्रर हैं, इन पर्गनोंके रहने वाले सूबहदारके नज़ानोंसे बहुत तक्लीफ़ उठाते हैं, महाराणा मिहर्बानी और रिआ़यतके क़ाबिल उम्मेदवार हैं, कि मुआ़फ़ीका पर्वानह इनायत हो इस वास्ते लिखा जाता है, कि ज़िक्र किये हुए बड़े सर्दारकी ख़ातिरसे सूबहदारके नज़ाने वग़ैरह शुरूअ़् फ़स्ल ख़रीफ़ सन् ११५१ फ़स्लीसे इन जागीरोंकी बाबत मुआ़फ़ किये गये, चाहिये कि इन पर्गनोंको मुआ़फ़ समझकर किसी तरहकी दस्तन्दाज़ी न करें, इस बाबत ताकीद जानें ता० ५ शअ़्बान, सन् २६ जुलूस (मुहम्मदशाही)

अ़र्ज़के दफ़्तरकी तफ़्सील तारीख़ ५ शअ़्बान सन २६ जुलूस मुबारक

पुश्तकी तह्रीर

मुक़र्रर जागीर, बड़े दरजहके सर्दार, महाराणा जगत्सिंहके वकीलकी अ़र्ज़ीके मुवाफ़िक दस्तख़तमें आई, कि पर्गनात शाहपुरा, सावर, जहाज़पुर, बनेड़ा, जो महाराणाके हम कौम सीसोदिया राजपूतोंकी ज़मीदारीमें क़दीमसे मुक़र्रर हैं, वहांकी रअ़य्यत सूबहदारके नज़ानोंसे तक्लीफ़ें उठाती है, और महाराणा रिआ़यतके लाइक़ उम्मेदवार हैं, कि सूबेके नज़ानों वग़ैरहकी मुआ़फ़ीका पर्वानह शुरूअ़् फ़स्ल ख़रीफ़ सन् ११५१

ایهت و بسالت مرتبت گرامی قدر عالیشان سرآمد راجهای هندوستان مهارانا جگت سنگه
التماس نمود، که محالات مذکوره زمینداری راجپوتان سیسودیه، که از برادران موکل اند، از قدیم
مقرّر است، ساکنان پرگنات از تسکس نظامت تصدیع میکشند - چون مهارانای واجب الرعایت
امیدوار است که پروانه معافی مرحمت شود، لهذا نگارش میرود، که پاس خاطر امارت و ایالت
مرتبت مذکور از تسکش نظامت وغیره ابواب محالات مذکوره را حسب الضمن من ابتدای
فصل خریف بیل سنه ۱۱۵۱ فصلی معاف نموده شد - باید که محالات مذکور را معاف و
مرفوع القلم دانسته بوجهی من الوجوه مزاحم و متعرض نشوند - درین باب تاکید دانسته - تاریخ
پنجم شهر شعبان سنه ۲۶ جلوس والا قلمی شد فقط *

नक़्ल सहीह है, सरिश्तहमें पहुंचाई, दफ्तरके हुक्मोंके मुवाफ़िक़ है, दफ्तरके मुवाफ़िक़ है, मुलाहज़ह हुआ.

फ़स्लीसे अहलकारोंके नाम जारी हो, अर्ज़, ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ मन्ज़ूर हुई.

बयान दस्तख़त जुब्दतुलमुल्क, मदारुल्महामका यह है, कि मुआ़फ़ीका पर्वानह लिखदिया जावे.

चार पर्गने

पर्गनह,	पर्गनह,	पर्गनह,	पर्गनह,
बदनौर,	बनेड़ा,	जहाजपुर,	सावर,
जागीर	जागीर.	जागीर	जागीर

معروضه ضمن بموجب عرض وکیل امارت وایالت مرتبت مهارانا
جگت سنگه بدستخط رسیده که پرگنه سانبهوره ساور وجاجپور بهیره
محالات در زمینداری راج وتان قوم سیسودیه راو راجان موکل از قدیم
مقرر است رعایای آنجا از سختی نظامت بجان تصدیعه میکشند
چون موکل واجب الرعایت امیدوار است که پروانه معافی پیشکش
وغیره ابواب نظامت بنام متصدیان حال واستقبال از ابتدای
فصل خریف ئل سنه ۱۱۵۱ فصلی مرحمت شود المماس شرح
صدر دارد بدرسالت امر

شرح دستخط جمله الملک مدار المهام آنکه
پروانه معافی بنویسند فقط

بمشاهده حضور) نقل درست) بموجب سیاهه) موافق دفتر است) ملاحظه شد
(حضور) صورت دستخط) احکام است)
تاریخ ۸ شعبان سنه ۲۲ جلوس مبارک *

لله محال

پرگنه	پرگنه	پرگنه	پرگنه
بدنور	بهیره	جاجپور	ساور
محال	محال	محال	محال

विक्रमी १८०८ आषाढ कृष्ण ७ [हि० ११६४ ता० २१ रजब = ई० १७५१ ता० १६ जून] को इन महाराणाका देहान्त होगया इनका जन्म विक्रमी १७६६ आश्विन कृष्ण १० शनिवार [हि० ११२१ ता० २४ रजब = ई० १७०९ ता० २९ सेप्टेम्बर] को हुआ था. वंशभास्करमे लिखा है (१), कि जब यह महाराणा जियादह बीमार हुए, तो जिन लोगोने वलीअह्द प्रतापसिंहको गिरिफ्तार किया था, उन्होने डरकर विचार किया, कि कुवर प्रतापसिंहको ज़हर देदिया जावे, और महाराणाके छोटे भाई नाथसिंहको गद्दीपर बिठा देवे, परन्तु महाराणाने यह बात सुनकर उन लोगोको शहरसे बाहर निकलवा दिया. यह बन्दोबस्त करने बाद उनका दम निकल गया कुवर प्रतापसिंह करणविलास महलमे, जिसको रसोडा कहते है, नजर कैद थे, खैरख्वाह लोगोने उनको बुलाकर गद्दीपर बिठाया

महाराणा जगत्सिंह दूसरेका मझोला कद, साफ गेहुवा रंग, चौडी पेशानी थी वह हसत मुख, और रहमदिल, उदार, क़द्रदान, इल्मके शौकीन, अपने मज्हबके पक्के और अय्याश थे, इक़ारके कच्चे और अपनी मौरूसी बातोके घमडी, साफ दिल और फ़िरेबको ना पसन्द करने वाले थे. इनके वक्तमे ऐश व इशरत और बाप बेटोकी ना इत्तिफ़ाक़ीसे रियासतमे खराबीकी सूरत पैदा होकर तनज्जुलीकी बुन्याद काइम हुई उन्होने महलोमे छोटी चित्रशालीकी चौपाडमे इजारेका काम, पीतमनिवास महलमे चीनीकी ओवरी, तिबारी, जगन्निवास महल और जगन्नाथरायके मन्दिरका, जो बादशाही फौजने बर्बाद किया था, जीर्णोद्वार वगैरह इमारती काम बनवाया इन महाराणाने अपने पिता महाराणा संग्रामसिंहकी छत्री, अहाड ग्राम (महासती) मे बहुत बडी बनवाई, लेकिन् उसके ऊपरका काम गुम्बज वगैरह नही बनने पाया था, कि इन महाराणाका देहान्त होगया; वह छत्री अब तक वैसी ही बगैर गुम्बज अधूरी पड़ी है

इन महाराणाके दो महाराजकुमार प्रतापसिंह और अरिसिंह थे.
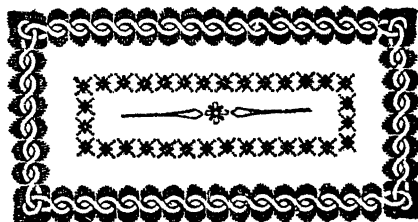
(१) यह बात हमने यहांकी किसी पोथीमें नही देखी, और न किसी कहावतमे सुनी.

राज्य जयपुरकी तवारीख

जुग्राफ़ियह

रियासत जयपुरकी उत्तरी सीमा बीकानेर, लोहारु झज्झर ओर पटियाला, दक्षिणी सीमा ग्वालियर, बूंदी, टोंक, मेवाड ओर अजमेर, पूर्वी सीमा अलवर, भरतपुर, ओर करौली, और पश्चिमी सीमा कृष्णगढ, मारवाड और बीकानेर है यह राज्य २५° ४३′ ओर २८° ३०′ उत्तर अक्षांशके बीच ओर ७४° ५०′ और ७७° १८′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाके है, जिसका रक्बह १५२५० मील मुरब्बा, आबादी सन् १८८१ ई० की मर्दुम शुमारीके मुताबिक २५३४३५७ आदमी, ओर सालानह आमदनी अन्दाजन पचास लाख रुपया है

जमीन — इलाकेकी जमीन बराबर साफ ओर खुली हुई है, लेकिन् कई मकामोंपर पहाडियोंका समूह व सिल्सिला ओर ऊंचे टीले नजर आते हैं रियासतका दर्मियानी हिस्सह मुसल्लस (त्रिकोण) की सूरतपर समुद्रके सतहसे १४०० से लेकर १६०० फुट तक बलन्द है, जिसकी दक्षिणी आधार रेखा खास शहर जयपुरके पश्चिमी तरफको चलीगई है; पूर्वी अलग पहाडियोंका सिल्सिला है, जो उत्तर दक्षिण अलवरकी सीमाके नज्दीक है इस मुसल्लसी टीलेके उत्तर पश्चिमको जुदा जुदा पहाडियोंका एक सिल्सिला वाके है, वह अर्वली पहाडका एक हिस्सह है, जो त्रिकोणका सिरा है, ओर पूर्वी सिल्सिलेको शैखावाटी खेतडीके पास जुदा करता है इस जगह पहाडियां बहुत बलन्द हैं, जिनका यह सिल्सिला शैखावाटीके रेगिस्तानी व जंगली हिस्सों, और बीकानेर ओर जयपुरकी जियादह उपजाऊ जमीनकी उत्तर पश्चिमी कुद्रती सीमा है जयपुरके पूर्वमें शहरके करीब पहाडी सिल्सिलेके परे दो तीन मील तक तीन चार सौ फुटकी गहराई (उतार) होगई है, फिर आगे बढकर बाणगंगा नदीकी तराईके बराबर भरतपुरकी सीमातक सरल उतार है, और जमुनाकी तरफ जमीन रफ्तह रफ्तह कुशादह होती गई है जयपुरके पूर्वी हिस्सेमें छोटी छोटी पहाडियोंका एक सिल्सिला, ओर करौली सीमाके पास कई नाले हैं दक्षिण पूर्वको बनास नदीकी तरफ जमीनका हिस्सह झुकता हुआ याने ढालू है, ओर मैदानमें चन्द जुदी जुदी पहाडियां नजर आती हैं, लेकिन् दक्षिणमें फ़ासिलेपर

फिर पहाडी सिल्सिला दिखाई देता है, और राजमहलके पास, जहां बनास नदी उक्त सिल्सिलेके दर्मियान होकर गुजरती है, मौका बहुत दिलचस्प मालूम होता है. जयपुरसे पश्चिमी तरफ कृष्णगढकी सीमाकी ओर मुल्कका हिस्सह रफ्तह रफ्तह बलन्द होगया है, और चौडे खुले हुए मैदान, जिनमें दरख्त नहीं पाये जाते, मए चन्द जुदा जुदा पहाडियोंके वाके हैं. खास शहर जयपुरके आस पासकी जमीन, वायु कोणको अक्सर रेतीली है, बाज जगहपर सिर्फ बालूके खड हैं. मगर इस रेतीली जमीनके नीचे सख्त मिट्टी, कंकर मिली हुई पाई जाती है. पूर्वी तरफ बाणगंगाकी तराईके पास अक्सर जमीन काली मिट्टीकी, और कुछ दूर आगे बढकर रेतीली, लेकिन् उपजाऊ है. जयपुरके दक्षिण दिशामें अक्सर जमीन उम्दह व जरखेज है, और बनास नदीके पासकी जमीन, जो काली मिट्टीकी रेती मिली हुई निहायत उम्दह है, तमाम रियासतमें सबसे ज़ियादह उपजाऊ हिस्सह है, परन्तु शैखावाटीको जुदा करने वाली श्रेणीके उत्तरमें अक्सर रेत ही रेत है.

जयपुरके इलाकहकी पहाडियोंमें, जिनका ज़िक्र ऊपर होचुका है, अक्सर दानादार और रेतीले पत्थर पाये जाते हैं, बाज औकात सिफेद और काला चमकीला पत्थर और कभी कभी अभ्रक (भोडल) भी निकल आता है, और दक्षिण पूर्वकी पहाडियोंमें रेतीला, और उत्तर वालियोंमें ज़ियादहतर दानादार पत्थर मिलता है. उत्तरकी तरफ, जहां खेतडी और अलवरका पहाडी सिल्सिला मिला है, कई किस्मकी धातु पाई जाती है, पत्थरोंके दर्मियान फिटकरी, तांबा, कोबाल्ट याने सेता और निकेलकी धारियां नजर पडती हैं. खेतडीके आसपास तांबा निकाला जाता है, लेकिन् उम्दह कल वगैरह न होनेके सबब नफा नहीं होता, कई खानोंके पानीमें भी तांबाकी सल्फेट और फिटकरी बहुत है, और तांबेकी धारियोंके बीचमें कोबाल्ट (सेता) की तह मिलती है. जयपुरमें कोबाल्ट (सेता) मीनाकारीके काममें जियादह सर्फ होता है, और दिल्ली व हैदराबाद वगैरहको भी इसी मक्सदसे भेजा जाता है. सांभर झीलका नमक सबसे जियादह कार आमद चीज है, जो दूर दूर तक लेजाया जाता है. अब नमककी झील पर अंग्रेजी इन्तिजाम है.

इस इलाकहके कई स्थानोंमें इमारत बनानेका पत्थर बहुत है, आंबागढ किलेके नीचे शहरके पूर्वी पहाडी सिल्सिलेमें एक किस्मका रेतीला पत्थर, जो मकानात और फर्श बनानेके काममें आता है, निकलता है. जयपुरसे २४ मील पर दनाउ मकामसे एक तरहका मोटा रेतीला पत्थर निकाला जाता है, जो चौखट, दिहली और स्थम्भोंके बनानेमें काम आता है. जयपुरसे ३६ मील धौसा गांवके पास भाकरी मकामसे एक किस्मका पत्थर निकाला जाता है, जो छतके काममें

आता है, और लंबाईमें ३० फुटके करीब तक भी होता है. जयपुरसे ८२ मील करौलीके पाससे, और ९२ मील बसीसे बहुत उम्दह लाल और भूरे रंगका पत्थर आता है, जो जेवर वगैरह बनानेके काममें लाया जाता है. मकराणा वाके मारवाड़से सिफ़ेद पत्थर आता है, जो मूर्ति वगैरह बनानेके लिये सबसे उम्दह और नर्म है. रायावाला वाके जयपुरसे एक तरहका मोटा सिफ़ेद पत्थर, जिसका रंग बाद एक मुद्दतके पीला पड़जाता है, निकलता है, भैंसलाना वाके कोटपूतलीसे काला पत्थर मूर्ति वगैरह बनाने और मीनाकारीके कामका निकाला जाता है, इलाकेमें चिनिया पत्थर बहुत है, लेकिन् काणोता मकामके पासका उम्दह होता है. कंकर तमाम जगहों में मिलता है.

कीमती पत्थर - राज महलके पास होता है, और उसीके पास टोडा मकामपर पहिले कई किस्मका कीमती पत्थर पाया जाना बयान करते हैं.

नदियां - देशका ढाल व पानीका बहाव रियासतके दर्मियानी बलन्द हिस्सेसे पूर्व और दक्षिण पूर्व रुखको है. कई धारा उत्तर पश्चिमको भी बहती है, जो उत्तरी पहाड़ियोंका पानी उत्तरके रेतीले मैदानको लेजाती है, और जहां पानी जज़्ब हो जाता है.

बनास - यह नदी इस रियासतमें सबसे बड़ी है, जो पहाड़ी सिल्सिले अर्वली मकाम सेमलके पाससे निकलकर उदयपुरके उत्तर और पूर्वको बहती हुई १०० मीलसे ज़ियादह फ़ासिले पर जयपुरके राज्यमें देवलीके पास दाखिल होती है, और बिलासपुरसे १० मील पश्चिम रुख होती हुई टोडा श्रेणीके पासकी पहाड़ियोंके दर्मियानी तंग रास्तहसे गुज़रकर पूर्व रुख बहने बाद रणथम्भोर और खन्डारकी पहाड़ियोंमें, (जहां रियासत जयपुरके नामी किले हैं) होती हुई टोंकसे ८५ मील नीचे चम्बलमें गिरती है. इस नदीकी गहराई औसत ३० फुट है, और कई जगह, जहां पानीके ज़ोरसे गड्ढे पड़गये हैं, बहुत ही गहरी है, चौड़ाई बिलासपुरके पास ५०० फुट और टोंकके करीब २००० फुट है, सालमें पांच महीने तक तेज़ीके सबब पार उतरनेके लिये किश्तियें दर्कार होती हैं, बिदून किश्तीके मुसाफ़िर पार नहीं जा सक्ता; गर्मीके मौसममें यह नदी सूख जाती है, लेकिन् गहरे खड्डोंमें सालभरके करीब तक पानी रहता है. माशी, ढोल और मोरेल वगैरह इसकी बाज गुज़ार यानी पानी पहुंचाने वाली नदियां हैं.

बाणगंगा - यह नदी, मनोहरपुरके पासकी पहाड़ीमेंसे निकलकर जयपुरसे ठीक २५ मीलके करीब उत्तर और इसी क़द्र दक्षिण पूर्वको बहती हुई रामगढ (जो किसी ज़मानहमें रियासत जयपुरकी राजधानी था,) के पास पहाड़ी सिल्सिलेमें

दाखिल होजाती है, जहां उसकी पहाडी गुजरगाहकी लंबाई एक मील, चौडाई ३५० से ५०० फुट तक, और गहराई ४०० फुट है. वह यहांसे निकलकर ठीक पूर्वको ६५ मील बहने बाद रियासत भरतपुरमें महुवाके पास दाखिल होती है, इसपर राजपूतानह रेल्वेका एक पुल है, और १० मील आगे बढकर इसमें सिशीत मिली है, जो उत्तरसे आती है; इसकी गहराई बहुत है, रामगढके पास पहाडोंके बीचमें यह साल भर तक बहती है, लेकिन् नीचेकी तरफ़ जाकर सूखजाती है, केवल बारिशमें पानी बहता है, रामगढके पास २३ फुट पानी चढ जाता है

गभीरी- हिंडौनके दक्षिणकी पहाडीमेंसे निकलकर जयपुरकी पूर्वी सीमामें पूर्व और उत्तर पूर्व बहती है, और जयपुरके इलाकहमें २५ मील बहकर भरतपुरके इलाकहमें गुजरती हुई रूपबासके पास बाण गंगासे मिलकर जमुनामें जा मिली है इस नदीमें नाले बहुतसे हैं, हिंडौनके पश्चिमकी पहाडियोंका पानी, टोडा भीमसे खेरा तक इसी नदीमें जाता है.

बांडी- जयपुरके ठीक उत्तर २० मील सामोद और आमलोदाके पास पहाडियोंसे जारी होती, और दक्षिण व दक्षिण पूर्व बहकर कालवाड और कालक (१) के पास चटानी पहाडी सिल्सिलेकी रुकावटके सबब पश्चिम रुखको इन पहाडियोंके दर्मियानसे गुजरती हुई १०० मीलके बाद माशीमें जामिलती है आसलपुर स्टेशनके पास, जयपुरसे २५ मीलपर अजमेर और आगराकी सडक को पार करती है, इस जगहपर यह ८०० फुट चौडी है, बल्कि बाढके वक्त हद्दसे बाहर बहुत दूर तक निकलजाती है, लेकिन् यह ज़ोर सिर्फ़ चन्द घंटों तक रहता है, करारोंकी ऊंचाई १० से १५ फुट तक है

अमानी शाहका नाला- जयपुर शहरसे उत्तरी तरफ़ इस नदीका मुहाना है, और दक्षिण दिशा क़दीम शहर सांगानेरके नीचे होकर २२ मील बहने बाद ढूंढ नदीमें शामिल होती है इसमें साल भर तक पानी रहता है, सोतेके पासके सिवाय जयपुर स्टेशनके पश्चिमको एक मीलपर राजपूतानह रेल्वेका एक आहनी पुल है इसी नदीका पानी नलोंके जरीएसे १०४ फुटके क़रीब ऊंचाईपर हौज़ोंमें लेजाया जाता है, जो शहर जयपुरसे ऊंचे हैं, और उनमेंसे शहरके भीतर ५० फुटकी नीचाईपर आहनी नलोंके द्वारा पहुंचता है.

(१) कालककी इन्हीं चटानोंके पास महाराजा रामसिंह २, ने बन्द बंधवाकर पानीको रोका है, और उस भरे हुए पानीका नाम कालक सागर रक्खा है, आसलपुर स्टेशनके करीब (जहां इस नदीपर पुल बंधा हुआ है,) एक नहर काटकर काठेडेकी तरफ़ निकाली है, जिससे ज़िराअतको बहुत फ़ायदह पहुंचता है

मोरेल- यह बनासकी सहायक नदी है, जिसका निकास दूणीके पासकी पहाडियोंमेंसे है, और ३५ मील बहकर ढूंढसे मिलती है, जो ५० मीलके फ़ासिलेसे आती है- ये दोनो मिलकर मोरेल नामसे दक्षिण पूर्व रुखको ४० मील बहने बाद खारी नदीका पानी लेती हुई पेचीदह राहसे बनासमे जा मिलती है

माशी- बनासकी एक सहायक नदी है, जो राज कृष्णगढसे निकलकर जयपुरके इलाकहमे पचेवरके पश्चिम १० मील बहकर ५० मीलकी दूरीपर पूर्व तरफ़ बाडीसे जा मिली है

ढूंढ- इस नदीका निकास जयपुरके ठीक उत्तरमे १५ मीलकी दूरीपर अचरौल मकामके पासकी पहाडियोंमेंसे है, और मोरेलमे जा गिरती है वह दक्षिणमे बहती है, और आंबेरके पूर्व दो मील तक गुजरकर काणोतामे होती हुई अजमेर व आगराकी सडकको पार करती है

खारी- बामणवासके उत्तरमे १० मीलके करीब टोडा भीम और लालसोटके पहाडी सिल्सिलेमेंसे निकलकर दक्षिणी जरखेज जमीनमे होतीहुई बीस फ़ुटकी गहराईसे ३५ मीलकी दूरीपर मोरेलमे जा मिलती है

मींढा- जयपुरके उत्तर जैतगढके पासकी पहाडियोंमेंसे निकलकर पश्चिमी तरफ़ बहती हुई साभर झीलमे गिरती है

साबी- जयपुरसे उत्तर २४ मीलके अनुमान जैतगढ और मनोहरपुरके पास की पहाडियोंमेंसे बहकर उत्तर पूर्व रुखको गुडगावाकी तरफ़ बहती हुई जयपुर रियासतमेंसे गुजरकर नाभा रियासतमे दाखिल होजाती है

सोता- यह नदी झाडली और जैतगढके पास पहाडियोंमेंसे जयपुरसे ४० मीलके फ़ासिलेपर शुरूअ् होकर उत्तरी पूर्वी तरफ़ इलाकेमे गुजरती हुई ४० मील बहकर साबीसे जा मिलती है

काटली- खंडेलाके पास पहाडियोंमेंसे निकलती है, और जयपुरके उत्तर पश्चिम और झूंझणूंके पूर्व बहकर ६० मीलके क़रीब शेखावाटी इलाकहमे बहने बाद बीकानेर इलाकहके रेतेमे गाइब होजाती है

झील साभर- यह जयपुरकी रियासतमे सबसे बडी झील है जो २६° ५८′ उत्तर अक्षांश और ७५° ५′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान जयपुर व जोधपुरकी सीमापर अर्वली श्रेणीके पूर्व, जो श्रेणी राजपूतानहमे उत्तर पश्चिम है, वाके है, जब यह भरती है, तो इसकी लम्बाई २० मील, चौडाई ½ मीलसे ७ ½ मील तक और गहराई १ से चार फ़ुट तक होजाती है. झीलके आस पासकी जमीनमे अनाज वगैरह कुछ

नहीं निपजता इसमे नमककी पैदावारका सालानह औसत ९०००० मन समझा जाता है, और कभी जियादह भी होता है, मसलन् सन् १८३९ ई० मे २०००००० मन नमक निकला, जो दर्ज रजिस्टर है; और फी मन आध आना, नमक निकालनेकी मज्दूरी पर खर्च पडता है, लेकिन् यह बात मालूम नही, कि झीलमे नमक क्योंकर जमा होता है, बाजे लोग कहते है, कि उसमे नमककी चटान है, लेकिन् गालिब यह गुमान किया जाता है, कि झीलके आस पासकी पहाडियोमे नमक है, जो बर्साती पानीके साथ गलकर उसमे बह आता है. इस जगह तीन किस्मका नमक याने नीला, सिफेद और सुर्ख, निकलता है जिसमेसे नीला व सिफेद रगका जियादह राइज और काबिल पसन्द है, जो जिला रुहेलखड और राजपूतानह वगैरहमे कस्रतसे जाता है, टोंकमें सिर्फ लाल रगके नमककी चाह जियादह रहती है

आबो हवा व बारिश– जयपुरकी आबो हवा गर्म और सिहत बख्श (नैरोग्य) है, मुल्ककी जमीन ऊची और रेतीली होनेके सबब सख्त बीमारिया कम होती है सर्दीके मौसममे आबो हवा उम्दह रहती है, लेकिन् शैखावाटीमे अक्सर खराब पाई जाती है, क्योंकि वहा सूर्य निकलने तक कुहर रहता है गर्मीके दिनोमे पश्चिमकी लू शैखावाटी और जयपुरके उत्तरी हिस्सेमे तेज चलती है, लेकिन् रेतमेसे गर्मी जल्द निकल जानेके सबब रातके वक्त गर्मी कम रहती है, और सुबहके वक्त ठडक होजाती है दक्षिण और पूर्व तरफ लू कम चलती है, लेकिन् जमीन रेतीली न होनेसे रात व सुबहको गर्मी ही रहती है यहापर गर्मीके दिनोमे जियादह गर्मी १०६ दरजे, और सर्द मौसममे जियादह सर्दी ३८ दरजे तक अक्सर पहुच जाया करती है शैखावाटीको छोडकर, जिसमे बारिशका कुछ ठिकाना नही है, रियासत भरमे बारिश उम्दह होती है, उसका औसत २६ इचके करीब माना गया है, और बारिश अच्छी होनेकी वजह, मुल्कका दक्षिण पश्चिमी और दक्षिण पूर्वी मौसमी हवाके बीचमे वाके होना है, जिससे दोनो तरफसे पानी आता है, और यही सबब कहतसाली कम होनेका है जयपुरमे ज़मीनसे कई तरहका पानी निकलता है, और कुओ वगैरहकी गहराई भी एकसी नही है, जयपुर और शैखावाटीके बीचकी श्रेणीके दक्षिण ३० या ४० फुटकी गहराईके दर्मियान पानी निकल आता है, लेकिन् शैखावाटीमे उसी श्रेणीके उत्तर ८० से १०० फुट तक गहरा पाया जाता है, अक्सर जगह पानी खारा है, मगर पूर्व दक्षिण तरफ अक्सर मीठा है उत्तरमे शैखावाटी और जयपुरके आस पास कहीं मीठा कही खारा है

जगल वगैरह– जयपुरकी रियासतमे कोई बडा जगल नही है; शहरके पास और रियासतके दक्षिणी हिस्सेकी पहाडियोपर धाव ऊगता है, और ऐसे दरख्त,

जिनकी लकडी जलानेके काम आवे, पैदा होते हैं नींब, बबूल, आम, इमली, बड, पीपल, सिरस, शीशम, जामुन, वगैरह दरख़्त आबादीके करीब पाये जाते हैं, बबूल और नींब दो किस्मके दरख़्त जियादह होते हैं, और इन्हींसे लकडीकी तमाम चीजें बनाई जाती हैं शैखावाटीमें दरख़्त बहुत कम होते हैं, खेजडा और फोग (एक किस्मका सिरस) अक्सर ऊगता है, जिसमेंसे पहिलेकी फलियां मवेशीके खानेमें आती हैं, और दूसरेके फूल आदमी और ऊंट खाते हैं घास इस रियासतमें कई किस्मकी होती है, जो मवेशीके चराने, छप्पर छाने, और टट्टे, टोकरी वगैरह बनानेके काममें आती है

पैदावार- यहांपर पैदावारकी फ़स्ल एक तरहकी नहीं है, जैसी जमीन होती है, उसीके मुवाफ़िक़ अनाज पैदा होता है शैखावाटीमें खासकर बाजरा और मूंग, जयपुर शहरके पास उत्तरमें भी बाजरा और कुछ गेहूं व जव पैदा होते हैं, दक्षिण पूर्व तरफ़ जवार, मक्की, कपास, और तिल, गेहूं, जव, चना, ईख, अफ़ीम, तम्बाकू, दाल, अलसी और कुसूम जियादह पैदा होता है, पूर्वी जिलोंमें किसी क़द्र मोटा चावल भी बोया जाता है, और हरी तर्कारियां, जैसे मूली, पियाज, बैंगन, मिर्च, ककडी, कोला, आल, सोया (एक किस्मका साग) वगैरह होती हैं, गर्मीके मौसममें नालोंके रेतमें तर्बूज और खर्बूजे कस्रतसे बोये जाते हैं

राज प्रबन्धका ढंग- राजपूतानहकी तमाम रियासतोंके मुवाफ़िक़ जयपुरके रईस अपने मुल्कका पूरा इख्तियार दीवानी और फ़ौज्दारीका रखते हैं, और अपनी रिआयाके जीवन मृत्युका उनको अधिकार है राजधानीमें आठ मेम्बरोंकी एक कॉन्सिल, और खुद महाराजा प्रेसिडेण्टके हुक्मके मुताबिक़ रियासती बन्दोबस्त होता है, एक सेक्रेटरी है, जो ब एतिबार उहदेके मेम्बर भी है कॉन्सिलके कामोंके चार हिस्से हैं- अदालत, माल, फ़ौज और बाहर सबन्धी, यह सब काम मेम्बरोंके तअल्लुक़ है इलाकेका न्याय प्रबन्ध ऐसे अफ़्सरोंके तअल्लुक़ है, जो नाजिम कहलाते हैं, और जिला मॅजिस्ट्रेट या दीवानी जज हैं हर एक जिलेकी नालिश उन्हींकी अदालतोंमें गुजरानी जाती है, ३०० से कमकी नालिश राजधानीके महकमए मुन्सिफ़ीमें, और उससे ज़ियादहकी सद्र दीवानी अदालतमें दाइर होती है, जिसमें निज़ामत व मुन्सिफ़ी अदालतोंकी अपील भी होती है खफ़ीफ़ मुक़द्दमोंके सिवा, जो कोतवालके पास जाते हैं, कुल फ़ौज्दारी मुक़द्दमे पहिले सद्र फ़ौज्दारीमें फ़ैसल होते हैं राजधानीमें अदालत अपील भी है, जिसमें सद्र फ़ौज्दारी और दीवानीकी अपील होती है, और जिसको ५०० रुपयेसे कम मालियतके दीवानी मुक़द्दमोंका अखीर फ़ैसला करदेनेका इख्तियार है. इन सबकी अपील कॉन्सिलमें

होती है, जो रियासतकी सबसे बडी अदालत है, लेकिन् यह बात याद रखनी चाहिये, कि अगर जयपुरमे किसी फरीकको अखीर फैसलेकी डिक्री (डिगरी) मिलजावे, ताहम उसकी तक्लीफ दूर नही होती

फौज- रियासत जयपुरके ३८ किलेपर २०० तोपे चढी रहती है नागा लोग, याने दादूपन्थी साधू ४००० और ५००० के दर्मियान तादादमे है, नमक हलाल और बहादुर माने जानेके सबबसे उनकी तादाद जियादह है ये लोग कवाइद नही करते, और वर्दी भी नहीं पहिनते; तलवार, बर्छी, तोडेदार बन्दूक और ढालसे तय्यार रहते है सन् १८५७ ई० के गद्रमे रईसके नमक हलाल और खैरख्वाह यही लोग रहे, अगर ये न होते, तो कवाइद दा फौज रियासतमे फसाद पैदा करती पर्गनो व खास राजधानीकी पुलिस जुदा जुदा है इस रियासतका सालानह फौज खर्च ६२०००० रुपया है राजधानीमे तोपे ढालनेका कारखानह है, लेकिन् उसमे बडी तोपे जियादह नही बनतीं

टकशाल- खास शहर जयपुरकी टकशालमे अश्रफी (जो १६ रुपयेकी होती है, (१)), रुपये और पैसे बनते है

डाकखानह, तारघर और मद्रसह- जयपुरमे ३८ अंग्रेजी डाकखानोके सिवा राजके भी डाकखाने है, जिनके जरीएसे रियासतके जिलो वगैरहमे सर्कारी कागजात और आम लोगोके खत आते जाते रहते है, लेकिन् कागजात वगैरहका मह्सूल अंग्रेजी हिसाबसे ही लिया जाता है

तारघर- पश्चिमोत्तर देशका बम्बईको जाने वाला तार, जयपुरकी रियासतमे होकर गुजरा है, और उसका राजधानीमे एक तारघर है

मद्रसह- राजपूतानहकी तमाम रियासतोकी बनिस्बत जयपुरके राज्यमे तालीमका सिल्सिलह उम्दह है, जिसने परलोक वासी महाराजा रामसिह दूसरेके वक्तसे खूब तरक्की पाई राजधानीका कॉलेज सन् १८४४ ई० मे जारी हुआ, उस वक्त तालिब-इल्मोकी तादाद बहुत ही कम थी, लेकिन् इस वक्त बहुत जियादह होनेके सिवा तालीमी तरीको व इम्तिहानोकी पढ़ाईमे सर्कार अंग्रेजीके कॉलेजोकी बराबरी करता है इसमे १५ अंग्रेजी मुदर्रिस, ११ फार्सी पढानेवाले मौलवी, और ४ हिन्दी पाठक है. उस वक्त मद्रसेका सालानह खर्च २४००० रुपयेके करीब था कॉलेजमे एन्ट्रेन्स और फर्स्ट आर्ट्स तककी पढाई होनेपर विद्यार्थी कलकत्ता यूनिवर्सिटीको इम्तिहानके लिये भेजे जाते है राजधानीमे बडे अह्लकारो व ठाकुरोके लड़कोकी तालीमके लिये एक जुदा पाठशालाके सिवा सस्कृत स्कूल, लडकियोकी पाठशाला, कई

(१) आज कल अनुमान २३, रुपये कलदारमे बिकती है

ब्रांच स्कूल और एक शिल्प शाला भी है जिलोमेके ३३ मद्रसोका खर्च राज्यके खजानहसे दिया जाता है, और इनके सिवा ३७९ देशी शाला हिन्दी व उर्दूके है, जिन सबकी सहायता किसी कद्र राज्यसे कीजाती है

जात, फ़िर्कह और कौम- रियासतमे ब्राह्मण, राजपूत, साधू, बनिया, कायस्थ, गूजर, जाट, अहीर, मीने, मुहम्मदी, काइमखानी, वगैरह कई कौमे है दर्मियानी इलाकहमे राजपूतोके सिवा, जो जियादहतर कछवाहा नस्लसे है, बागरे ब्राह्मण बहुत है, जो काश्तकारी करते है, और इनके अलावह कई दस्तकारी पेशह लोग रहते है पूर्वी सीमाके पास और दक्षिण पूर्वमे मीने जियादह है, जिनकी तादाद राजपूत कौमके बराबर समझी जाती है, राजपूत व बनियो वगैरहकी सख्या बराबर है दक्षिणी और मध्य ज़िलोमे ब्राह्मण व गूजर जियादह आबाद है उत्तर तरफ़ राजधानीके आस पास और पश्चिममे जाट, और शैखावाटीमे मुहम्मदी व काइमखानी (१) जियादह है गूजर, जाट, अहीर, वगैरह लोग खेती करते है, और मीने, जिनका कब्जह राजपूतोके आनेसे पहिले जयपुरकी जमीनपर था, दो तरहके है, एक चौकीदार और लुटेरे, दूसरे जमीदार खेती करने वाले नागा साधू, जो एक फ़िर्कह दादूपन्थियोका है, ग्रहस्थी नही होते, जयपुरके राज्यमे ये लोग सिपाहगरीका काम करते है जयपुरमे मुहम्मदी कम है, लेकिन् शैखावाटीमे काइमखानी कस्रतसे आबाद है, जो पहिले चहुवान राजपूत थे, पर पीछे मुसल्मान होगये, कदीम जमानहमे इन्ही लोगोका इस इलाकहपर कब्ज़ह होना सुना जाता है, जिनको पीछेसे कछवाहा राजा उदयकरणके पोते शैखाने बे दख्ल करके इलाकह छीन लिया, और शैखावत फ़िर्कोकी बुन्याद डाली, जो शैखावाटीके जिलेमे मौजूद है

जमीनका कब्जह व महसूल वगैरह- यह बात तहकीक मालूम नहीं, कि जयपुरके राज्यमे खालिसह, जागीरदारो और पुण्यार्थकी जमीन किस कद्र है, लेकिन् जयपुरके कई वाकिफ़कार अफ्सरो वगैरहके बयानसे ऐसा पाया गया, कि करीब $\frac{1}{2}$ हिस्सह

---

(१) काइम खानियोकी जो एक कलमी तवारीख "शजतुलमुस्लिमीन," शैख् नज्मुद्दीनकी बनाई हुई फ़ार्सी जबानमे हमारे पास है, उसमे तफ्सीलवार लिखा है, कि धुरेराके चहुवान राजा मोतीरायके पांच बेटे थे, जिनमेसे बडेका नाम जयचन्द, दूसरेका करमचन्द, तीसरेका नाम मालूम नहीं, चौथेका जगमाल और पाचवेका जशकरण था पहिला जैनुद्दीनखा नामसे मुसल्मान होने बाद नारनौलका हाकिम हुआ, दूसरा कियामखा नामसे मुसल्मान किया गया, तीसरेका नाम जबरुद्दीनखा रक्खा गया, और दो पिछले अपनी अस्ली हालतमे राजपूत बने रहे दूसरे कियामखाकी औलाद कियामखानी हुई, जिसको आम लोग काइमखानी बोलते हैं

रियासतका खालिसह, $\frac{१}{८}$ हिस्सह खिराजगुज़ार और नौकरी देनेवाले जागीरदारोंका, और $\frac{२}{८}$ याने $\frac{१}{४}$ हिस्सह बख़्शिश व धर्म वगैरहमें दीहुई जागीरोंका है जोती बोई जानेवाली जमीनका अभी पता नहीं, कि किस क़द्र है, और न इस बारेके राज्यमें कागज़ पायेगये, लेकिन् वहांके लोगोंके अन्दाजेके मुवाफ़िक़ सींचीजानेवाली जमीन कुल रियासतका दसवां हिस्सह है, परन्तु बारिशके मौसममें दुगनी जमीन जोती बोई जाती है, और साल दरसाल इसमें भी कमी बेशी होती रहती है जागीरदार राजपूतोंमें कई ठिकानेवाले खिराज, और कई सिर्फ़ चाकरी देते हैं, और बाज़ लोग लगान और चाकरी दोनों देते हैं खिराजका कोई क़ाइदह या मामूल नहीं है, धर्मार्पण और मूंडकटी वगैरहकी जमीनसे लगान नहीं लिया जाता काश्तकार लोगोंसे जमीनके हासिलमें नक्द रुपया और अनाज दोनों लिया जाता है फ़ी बीघा या फ़ी हल कोई निर्ख़ मुक़र्रर नहीं जमीन व पैदावारके लिहाज़से छठे हिस्सेसे लेकर आधे तक वुसूल होता है जयपुरमें पटैल, गांवके मुखियाके तौर तह्सीलदारको जमा वगैरह वुसूल करनेमें मदद देता है, पटवारी गांवका हिसाब रखता और कानूगो उसका मददगार रहता है

रियासत जयपुरमें मए बादी कुईके ग्यारह निज़ामतें याने पर्गने हैं, जिनका हाल मए उनकी मातह्त तह्सीलोंके यहांपर लिखा जाता है -

१ निज़ामत हिंडौन

इसके मुतअल्लिक़ छ तह्सीलें हैं, १ खास तह्सील हिंडौन, २ तह्सील महुवा, ३ तह्सील वालघाट, ४ रत्न जिला, ५ तह्सील घोसला, और ६ तह्सील टोडा भीम. क़स्बह हिंडौन व्यापारका एक बड़ा स्थान है, जिसमें रियासतकी तरफ़से चार सौ के क़रीब जवानोंकी पल्टन, दो तोप, दो सौ नागे रहते हैं; कचहरीका मकान निहायत उम्दह है एक थाना, और एक शिफ़ाखानह व मद्रसह भी हैं; इस ज़िलेमें गेहूं, जव, चना, जवार, बाजरा, उड़द, मूंग, मोठ, तिल, चीना, सिंघाड़ा, तम्बाकू और मूली व गाजरकी पैदावारके सिवा आबो हवा भी उम्दह है

महुवा- तक़्रीबन दो हज़ार चार सौ घरोंकी बस्तीका क़स्बह है, यहांके क़िलेपर दो तोप और चन्द सवार व पैदल रियासतकी तरफ़से रहते हैं, और १०० नागा व ४० सवार तह्सीलके मातह्त हैं

वालघाट- क़स्बह पहाड़के दामनमें बस्ता है, यहां १०० नागे और ४० सवार मातह्त तह्सील व थानाके रहते हैं, और पहाड़के दक्षिणी तरफ़ एक झील राजके मुलाज़िम जैकब

साहिबकी मददसे बांधा गया, जिससे काश्तकारीको बहुत कुछ फ़ायदह पहुंचता है

तह्सील खण्डार- ब सबब जियादह और उम्दह पैदावार होनेके रत्न जिलाके नामसे प्रसिद्ध है, यह कस्बह एक टीलेपर वाके है, राज्यकी तरफ़से थाने व तह्सीलमें १०० नागे, ४० सवार और चन्द सिपाही तईनात हैं इस तह्सीलकी हद रियासत करौलीसे मिली हुई है

कस्बह घोसलामें १०० नागे, एक थाना, और चन्द सवार राज्यकी तरफ़से मुकर्रर हैं

टोडा भीम- यह कस्बह एक पहाडके दामनमें, जो बहुत दूरतक फैला हुआ है, उदयपुरके महाराणा अमरसिंह १, के बेटे भीमसिंहके नामसे प्रसिद्ध है, जिसमें एक थाना, मद्रसह, १०० नागे और चन्द सवार मातह्त तह्सील व थानाके रहते हैं, आबो हवा इस तह्सीलकी मोतदल है

२ निजामत सवाई माधवपुर

इसके मुतअल्लिक ४ तह्सीलें, खास तह्सील सवाई माधवपुर, खंडार, मलारना-डूंगर, और पूतली हैं शहर सवाई माधवपुर बहुत उम्दह जगहपर आबाद है, जो चारों तरफ़ पहाडसे घिरा हुआ है, और चन्द दर्वाजे भी हैं इस इलाकेमें मश्हूर किला रणथम्भोर एक ऊंचे और चौडे पहाडपर बना हुआ है, जिसका मुफ़स्सल हाल मश्हूर मकामातकी तफ्सीलमें बयान किया जावेगा यहां एक निशान पल्टन, दो सौ ढाई सौ नागा, और पचास सवार तह्सील व थानेके तईनात हैं; राज्यकी तरफ़से एक मद्रसह और शिफ़ाखानह भी काइम किया गया है कलम्दान, शत्रंज, गंजफ़ा, और पलंगके पाये यहां उम्दह तय्यार होते हैं, यहांके पहाडोंमें शिलाजीत पैदा होता है बर्सातका मौसम इस जगह खराब होनेसे बाशिन्दगानको बुखारकी शिकायत जियादह रहती है

खंडार- यहां पहाडपर इसी कस्बहके नामका किला खंडार बहुत उम्दह और मज्बूत बना हुआ है, जिसमें कई तोपें, और पचास जवान बिरादरीके रहते हैं, थाना व राहदारी राज्यकी तरफ़से मुकर्रर है रणथम्भोर और खंडारके दर्मियान एक बहुत बडा जंगल वाके है, जहां शेर, चीते, लंगूर, नीलगाय, रीछ और जंगली कुत्ते कस्रतसे पाये जाते हैं, ये कुत्ते बाज़ वक्त गाय व बैल वगैरहको भी फाड डालते हैं, पहाडपर शिलाजीत पैदा होनेके अलावह खरिया मिट्टीकी भी खान है पलंग व बान और पाये यहांपर उम्दह बनाये जाते हैं

क़स्बह मलारना डूंगर, एक पहाडके नीचे आबाद है, जिसमें पहाडपर एक मकानके अन्दर चन्द कब्रें हैं यहांपर भी मिस्ल दूसरी तह्सीलोंके राज्यकी तरफ़से जमइयत रहती है, कस्बहके साम्हने वाले तालाबमें मवेशी वगैरह पानी पीते हैं

पूतली- कस्बह पहाडके दामनमें वाके है, इस पहाडपर एक किला बहुत उम्दह बना हुआ है, जिसमें चन्द तोपें, दो सौ जवान, १०० नागा, और चालीस सवार

रहते हैं, थाना और मद्रसह राज्यकी तरफसे हैं, यहांके इलाकहमें मीना लोग और तह्सीलके मुतऋल्लक गावोंमें तालाब बहुत हैं यह पर्गनह लॉर्ड लेकने मरहटोंसे छीनकर ईसवी १८०३ [वि० १८६० = हि० १२१८] में खेतडीके सर्दारको फ़ौजी मददके एवज दिया था

३ निज़ामत गंगापुर

यह कस्बह एक मैदानमें वाके है, और रअय्यत यहांकी आसूदह हाल है यहांपर एक निशान पल्टनका, १०० नागा, और ४० सवार राज्यकी तरफसे रहते हैं इस इलाकेमें चावल, अफ़्यून, और तम्बाकू, जमीन उम्दह होनेकी वज्हसे अच्छी तरह पैदा होता है तम्बाकू खास गांव ऊदीका बहुत उम्दह और मश्हूर है कस्बहके चारों तरफ़ शहर पनाह, और उत्तरकी तरफ वाले मैदानमें किलेके गिर्द खन्दक खुदी हुई है पानी यहांका मीठा और उम्दह है इस निज़ामतके मातहत दो तह्सीलें- बामनवास और वज़ीरपुर हैं

बामनवास- कस्बह एक टीलेपर आबाद है; यहांपर भी और तह्सीलोंके मुताबिक सवार व सिपाही वगैरह राज्यकी तरफसे रहते हैं इस तह्सीलमें जियादह आबूरेजीके सबब पानीसे बन्द और खेत भरे रहते हैं, इसी वज्हसे चावल खूब पैदा होता है, खास कस्बह और मुतऋल्लक गांवोंमें शकरकन्दी और अफ़ीम जियादह निपजती हैं. उम्दह आबो हवापर भी मौसम बर्सातमें पानीकी कस्रतसे यहांके बाशिन्दोंको तक्लीफ़ और बुखारकी बीमारी होजाती है

वज़ीरपुर- कस्बहमें १०० नागा और सवार व थाना राज्यकी तरफसे मुकर्रर हैं इस उम्दह पैदावार वाली तह्सीलमें कई तालाब हैं, और जमीन सेराब होनेकी वज्हसे चावल, अफ़ीम और गन्ना (साठा) जियादह पैदा होता है. कस्बहसे तीन कोस फ़ासिलेपर इस तह्सीलकी हद रियासत करौली से मिली हुई है

४ निज़ामत दौसा

दौसाके मुतऋल्लक लालसोट, सकराय, और बस्वा, तीन तह्सीलें हैं कस्बह दौसा एक पहाडके नीचे वाके है, इस पहाडपर किलेमें दस पन्द्रह जवान मुतअय्यन हैं कस्बहमें एक निशान, २०० नागा और ४० सवार, एक थाना और कुछ जवान बिरादरीके रहते हैं, और कस्बहसे आध मीलपर रेल्वे स्टेशन है यह कस्बह पुराने जमानेमें आंबेरसे पहिले रियासत जयपुरकी राजधानी था, जिसके

करीब परोन जगलमे मश्हूर बागी तातिया टोपी ईसवी १८५९ [वि० १९१६ = हि० १२७५] मे सर्कारी फौजके हाथ गिरिफ्तार हुआ था

कस्बह लालसोट– पहाडके नीचे वाके है, यहा कौम ब्राह्मण कसरतसे आबाद है पहाडपर एक पुरूतह किला वीरान पडा है, इस तह्सीलमे पैदावारी अच्छी होती है, और कस्बह मौरानमे पान कसरतसे पैदा होता है

कस्बह मकरायमे १०० नागा और ४० सवार और एक थाना राज्यकी तरफसे काइम है यह तह्सील पैदावारीमे दूसरी तह्सीलोके मुवाफिक् नही समझी जाती, यहाकी जमीन कोट कासिम कीसी है.

तह्सील बस्वा– कस्बह बस्वामे एक कच्चा किला बना हुआ है, जिसमे दो तोपे और चन्द पहरे सर्कारकी तरफसे रहते है, और तह्सीलके मुतअ़ल्लक १०० नागा और ४० सवार मुकर्रर है पैदावारीमे यह तह्सील उम्दह गिनी जाती है, इन्आम और उदक वगैरह जागीरी गाव भी इसमे जियादह है, इस तह्सीलकी हद रियासत अलवरसे मिली हुई है मिट्टीके उम्दह बर्तनो और आध मीलके फासिलेपर राजपूतानह स्टेट रेल्वेका एक स्टेशन काइम होनेसे यह कस्बह ज़ियादह प्रसिद्ध है; यहाकी जमीनमे गल्लह दो फस्ली पैदा होता है

५ निजामत कोट कासिम

जमीन यहाकी खराब और कम पैदावारकी है, आबो हवा भी अच्छी नही, बर्सातमे रास्तह खराब और बन्द होजाता है; बाशिन्दोको बुखारकी शिकायत रहती है यह तह्सील चारो तरफ इलाकह नाभा, इलाकह अंग्रेजी और अलवरसे घिरी हुई है कस्बह कोट कासिम सात सौ घरोकी आबादी है, जहा एक निशान, २ तोप, चालीस सवार और चन्द जवान बिरादरीके रहते है, एक मस्जिद और अक्सर मकानात और एक मीनारा शाही बना हुआ है, यहा खानज़ादह लोग, (खान जादव नामीकी औलाद) जियादह रहते है

६ निजामत छावनी नीब,

खास कस्बह छावनीसे एक मील दूर है, उसमे ५०० घरोकी और छावनीमे २०० घरोकी आबादी है, जहा दो सौ के करीब सवारोका एक रिसाला, १००० नागोकी जमाअत, चार निशान, चालीस सवार, २ तोप और एक थाना राज्यकी तरफसे मुकर्रर है छावनीके अन्दर एक किला खन्दक समेत बना हुआ है, नाजिम और तह्सीलदार वगैरह यही रहते है, और एक शिफाखानह भी है उदक और इन्आमके

गाव इस पर्गनेमे जियादह है, बाजरा और जवार यहा जियादह निपजती है

इस निजामतकी मातहत तहसील बैराठके गिर्द पहाड वाके हैं, और एक किला पुख्तह कस्बहसे नज्दीक ही मए चारो तरफ खाईके बना हुआ है, चार तोप, २५ जवान किलेमे रहते हैं कस्बह पिरागपुरा और महेडमे, जो इस तह्सील के मुतअ़ल्लक़ हैं, एक एक पुख्तह और उम्दह किला बना हुआ है, जिनमे चन्द तोपे और २५ जवान रहते हैं महेडके पास वाले मैदानमे एक खजूरके दरख्तसे बाणगगाका निकास है, जो बारह महीने रवा रहती है इस तह्सीलके जगलोमे हर तरहके जानवर पाये जाते है, और यहाके सन्दूकचे, खुशबूदार मिट्टी और तम्बाकू काबिल तारीफ़ हैं

७ निजामत शैखावाटी

यह इलाकह रेतीला और बहुत कम पैदावारका है, इस तह्सीलके मुतअ़ल्लक़ कोई खालिसेका गाव नही, सिर्फ भोमिये लोग रहते हैं, जो कुछ रुपया राज्यको देते हैं, ठिकानोके वकील इस निजामतमे हाजिर रहते हैं यहा एक पुख्तह किलेके अन्दर कचहरी निजामत होती है; कस्बहकी आबादी ४००० घरकी है यहा दो रिसाले, एक जमाअ़त नागोकी, एक थाना और शिफाखानह राज्यकी तरफसे है, इलाकहकी सर्हद बीकानेर, पटियाला, जोधपुर और अंग्रेजी इलाकहसे मिली हुई है

८ निजामत साभर

चूकि साभर नमक यहा जियादह पैदा होता है, इसलिये इसका नाम सांभर (१) मश्हूर है यहापर रियासत जोधपुरकी हद मिली हुई है, और वहाके अह्लकार वगैरह भी यहा रहते हैं साभरकी झील, जिसमे नमक पैदा होता है, सर्कार अंग्रेजीके ठेकेमे है, उसका सालानह ७३२५६६ रुपया रियासत वालोको मिलता है. यहापर कई कोठिया, बगले, शाही महलात और एक तालाब मुहम्मदशाह गौरीका बनवाया हुआ मए उम्दह घाट व छत्रियोके, और दादूपन्थी साधुओके कियामके लिये जहागीरशाहका बनवाया हुआ एक मन्दिर काबिल देखनेके हैं दांता रामगढ और मुअ़ज्जमाबाद दो तहसीले निजामत साभरके मुतअ़ल्लक़ हैं

दाता रामगढ अच्छा आबाद कस्बह है, जिसके पश्चिमी तरफ एक पुख्तह किला बना हुआ है, उसमे बहुतसी तोपे और ७५ जवान बे कवाइद रहते हैं तह्सील के मातह्त २५ जवान और १०० नागा है.

---

(१) पुराने जमानेमे यहां चहुवान राजपूतोकी राजधानी थी, जहा शाकभरी देवीका प्रसिद्ध मन्दिर होनेके कारण इस स्थानका नाम शाकम्भरी शब्द बिगडकर साभर होगया, यहांसे निकले हुए चहुवान राजपूत अब तक साभरिया कहलाते है

मुअज़्ज़माबाद दो हज़ार घरकी आबादी है, यहांकी ज़मीन पैदावारके लिहाज़से अच्छी है

९ निज़ामत मालपुरा

मालपुरामें दो हज़ार घरकी आबादी है, और कस्बहके किनारेपर एक उम्दह तालाब है, तह्सीलमें दो जमाअत नागोंकी और सौ सवार मुतअय्यन हैं महाराजा दूसरे रामसिंहके हुक्मसे जेकब साहिबने कस्बहसे तीन कोस दूरीपर एक बन्द बंधवाया, जिसके पानीसे हज़ारों बीघा ज़मीन बोई जोती जाती है, बल्कि इलाकह टोंक और दूसरी जागीरके गांवोंको भी उससे बहुत कुछ फ़ाइदह पहुंचता है तह्सील टोडा रायसिंह, और तह्सील नवाय इस निज़ामतके मातह्त हैं

कस्बह टोडा रायसिंह, जिसको महाराणा अव्वल अमरसिंहके पोते और भीमसिंहके बेटे रायसिंह राजाने बसवाया था, चारों तरफ़ पहाड़से घिरा हुआ है कस्बहकी आबादी उम्दह तर्तीबसे होने और महलों वगैरहकी बनावट देखनेसे उक्त राजाका होश्यार और रोबदार होना पाया जाता है, महलोंके दर्मियान मन्सूर शाहकी एक खानकाह (दर्वेशोंके रहनेकी जगह) है

क़स्बह नवाय एक पहाड़के दामनमें आबाद है, और पहाड़पर एक किला बना हुआ है

१० खास निज़ामत सवाई जयपुर

खास शहर जयपुरकी कैफ़ियत और तर्तीब आबादी वगैरहका हाल मश्हूर मकामातके बयानमें दर्ज किया जावेगा तह्सील चाटसू, तह्सील कालक, और तह्सील महुवा रामगढ़ इस निज़ामतके मुतअल्लिक हैं

चाटसूकी तह्सील पैदावारीके हकमें निहायत उम्दह है, और जियादह पैदावारी होनेकी वज्ह इलाकहमें तालाबों और नदी नालों वगैरहकी कस्रत होना है आबो हवा यहांकी अच्छी और ज़मीन हमवार है

तह्सील कालक- कस्बह पहाड़के नीचे आबाद है, जिसमें अच्छी आबादी, और पहाड़पर एक पुरूतह किला है कस्बहके पूर्वमें किनारेपर एक बन्द बंधा हुआ है, जिसका पानी मालपुरा और मुअज़्ज़माबादकी ज़मीनको सेराब करता है

तह्सील रामगढ़का कस्बह ढाई हज़ार घरोंकी आबादी है यहां शाही इमारतें महल और कई उम्दह तालाब भी हैं, ज़मीन औसत दरजहकी है

११ बादीकुई.

इसका नाम किसी बादीके कुआ बनानेसे काइम हुआ यह एक बडा सद्र स्टेशन राजपूतानह स्टेट रेलवेपर राज्य जयपुरमे है, और कस्बह मोहनपुरा स्टेशनसे एक मील दूरीपर है आबो हवा यहाकी अच्छी है अगले ज़मानेमे यहा लुटेरे और डाकू वगैरह लोग ज़ियादह रहते थे, जो वीरानह, घाटी और दर्रोके आने जाने वाले मुसाफ़िरोको लूट मारकर जगलमे भाग जाया करते थे; लेकिन् अब रेलवे स्टेशनके नये इन्तिज़ामसे सब शिकायते मिट गई यहा एक नाज़िम राज्य जयपुरकी तरफ़से रहता है, जिसको मॅजिस्ट्रेटी-का काम सुपुर्द है, वह बस्वासे अजमेर तक रियासती मुक़द्दमातमे दस्ल रखता है, और सर्कार अंग्रेज़ीसे उसको पास मिला हुआ है, कि जिससे महसूलकी बाबत कोई रोक टोक न करसके. इस जगह गेहू, जवार, बाजरा, उडद, मूग, मोठ, कपास तिल, चना वगैरह पैदा होते है.

मश्हूर शहर व कस्बे.

जयपुर- यह रियासतकी राजधानी, जो दक्षिणके सिवा हर तरफ़ पहाडोसे घिरी हुई है, एक मुख्तसर मैदानमे वाके है, उत्तरी तरफ़ शहरसे मिला हुआ कई सौ फ़ुट ऊचा पहाड, और उसपर आलीशान महल है दक्षिणी तरफ़ इस पहाडकी चढाई बहुत खडी और चढने उतरनेके क़ाबिल नही है, अल्बत्तह उत्तरकी ओर रफ़्तह रफ़्तह क़दीम राजधानी आबेर तक नीचा होता गया है. शहर जयपुरकी लम्बाई पूर्व और पश्चिममे करीब दो मील, और चौडाई उत्तर व दक्षिणमे एक मीलके करीब है; उसके हर तरफ़ पक्की शहरपनाह मए ऊचे बुर्जों व दर्वाज़ोके है, लेकिन् शहरपनाहकी चौडाई इतनी कम है, कि मैदानी तोपखानहका मुक़ाबलह नही कर सक्ती, और बलन्दी भी कम है, जिससे रेता, जो हमेशह उडता रहता है, अक्सर मकामातपर दीवारके पास कगूरो तक जमा होगया है; और अगर कभी इस दीवारके गिर्द खाई थी, तो उसका निशान मिटादिया है. शहरपनाहसे बाहर दर्वाज़ोके मुक़ाबिलमे दीवारे है, जिनको घोघस कहते है, उनमे तोपोके वास्ते दमदमे और बन्दूकोके मोर्चे बने हुए है; शहरके सात दर्वाज़े एकसी बनावटके है हिन्दुओके आबाद किये हुए तमाम शहरोमे जयपुर शहर बहुत खूबसूरती और क़ाइदहके साथ बसा है. सद्र बाजार पूर्वसे पश्चिमको दो मील लम्बा और चालीस गज चौडा है; और इसी चौडाईके चन्द बाजार उत्तर और दक्षिणमे है, दोनो तरफ़के बाज़ारोके हर एक मिलानपर चौक है, जहा गुदडीका बाजार लगता है इन बाज़ारोके

मुकाबिलमे दूसरे दरजेके बाजार २० गज चौडे, और तीसरे दरजेकी गलिया ९ गज चौडी है, जिस जगह बाजार या गलिया बाहम बीचमे मिलते है, वह चौक चौपड कहलाता है, और कुल शहर चौरस हिस्सोमे तक्सीम होरहा है बडे बाजारोमे तमाम दुकाने एक ही तर्जकी पक्की बनाई गई है, जिन सबके आगे सायबान है, और बाजारोको जुदा जुदा रगोसे रग दियागया है

महाराजा साहिबका महल और बाग मए मकानातके शहरके दर्मियानी हिस्सेमे, जिसकी लम्बाई आध मील है, वाके है, महलका अव्वल मकान 'हवा महल' बाजारके किनारेपर सात आठ मन्ज़िल ऊचा है, उसके गिर्द बलन्द बुर्ज और उनपर छत्रिया है, इहातेके भीतर दो बहुत बडे और कई छोटे दीवान खाने सगीन थम्भोके है, और बाग, जिसके गिर्द बलन्द मोर्चेदार दीवार है, निहायत खूबसूरत और रौनककी जगह है, उसकी सडकोपर फव्वारे और सर्व व शमशाद तथा कई किस्मके फूलदार दरख्त और जा बजा आराइशके चबूतरे कस्रतसे है, अगर्चि हरएक तरहतह जियादह खूबसूरत नही है, लेकिन् हकीकतमे कुल बाग बहुत उम्दह और दिलचस्प है जैकोमिन्ट साहिबने लिखा है, कि इस बडे इहातेके अन्दर १२ महल है, कि हर एकसे दूसरेको नाल या बागमे होकर आने जानेका रास्तह है सबसे उम्दह मकान दीवान खास बिल्कुल सग मर्मरका बनाहुआ है, और यही पत्थर कुल मकानातमे कस्रतसे खर्च हुआ है, बडे बाजार और गलियोमे भी मकानात इसी पत्थरके बडी खूबसूरतीसे बने है, और ऐसेही मन्दिरो और मस्जिदोकी बडी बडी इमारतोकी कस्रतसे शहरने रौनक और दुरुस्ती पाई है शहरसे चार मीलके फासिलेपर अमानी शाहके नलेसे आहनी नलोके द्वारा शहरमे मीठा पानी लाया जाता है, जिससे बाशिन्दोको बडा आराम रहता है. इस शहरको महाराजा सवाई जयसिह दूसरेने विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = ई० १७२८] मे आबाद करके अपने नामसे नामजद किया था, और अपने निवासके कारण कुल राज्यका कारखानह कदीम शहर आबेरसे लाकर यहापर काइम किया, कि जबसे दिन बदिन कम होकर अब आंबेर वीरान होगया है

आबेर- जयपुरसे चार मील उत्तरमे पहाड़ोके अन्दर एक छोटे तालाबके किनारेपर वाके है, उसके मन्दिर और मकानात और गलिया पहाडोके नालोपर, जो कि तालाबसे मिले है, फटी है. इन गलियोमे, जो बहुत पेचदार और गुजान दरख्तोके छायासे अधेरी है, अब सिवा खाकी जटाधारी वैरागियोके, जो वीरान मकानात और मन्दिरोमे रहते है, कोई नही रहता तालाबके पश्चिमी किनारे और पहाड़के दामनपर आंबेरका बडा भारी महल और शिलादेवीका मन्दिर है,

जिसकी इमारत बहुत मज्बूत और चौडे आसारोकी काश्मीरकी कदीम इमारतसे बहुत कुछ मिलती है जैकोमिन्ट साहिब और हेबर साहिब दोनोने लिखा है, कि हमने ऐसा दिलचस्प, खुशनुमा और खूबसूरत मकाम और कोई नहीं देखा पहाडके ढालपर और भीतरी अधेरी जगहमे चार बुर्जोंसे महफूज जनानह महल, और उससे बढकर, मगर बुर्जों व दर्वाजोके जरीएसे महलसे मिला हुआ बडा किला है, जिसके हर तरफ दमदमे और मोर्चे बने हुए है, और सबसे बलन्दीपर एक उम्दह खूबसूरत मीनार है लडाई झगडोके जमानहमे किलेके तौर पर काम आनेके सिवा यह मकाम बतौर राज्यके खजानह और जेलखानहके काममे लाया जाता है कहते है, कि शिला देवीके मन्दिरमे पुराने जमानेमे हर रोज आदमी मारा जाता था, अब उसकी जगह बकरा मारा जाता है जयपुरके आबाद होनेसे पहिले कदीम जमानहमे आबेर राजधानी था, जिसको कछवाहा राजपूतोने विक्रमी १०९४ [हि० ४२८ = ई० १०३७] मे सूसावत मीनोसे बडी लडाईके बाद छीना, और उनको वहासे हटाकर चन्द गाव देने बाद रियासतके किलो और खजानहकी हिफाजत रखनेकी नौकरी सुपुर्द की, जिसका हक जमानए हाल तक वही लोग रखते है यह शहर २६° ५९′ उत्तर अक्षाश और ७५° ५८′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाके है

किला रणथम्भोर- यह किला शहर जयपुरसे ७५ मील दक्षिणी सर्हद याने बूंदीकी तरफ एक पहाडपर, जिसके हर तरफ गहरे और पेचदार नाले तथा पहाड है, और एक तग रास्तहसे गुजर है, वाके है. ऊपर जाकर पहाडकी बलन्दी ऐसी सिधी है, कि सीढियोके जरीएसे चढना पडता है, और चार दर्वाजे आते है पहाडकी चोटी एक मीलके करीब लम्बी और इसी कद्र चौडी है, जिसपर बहुत सगीन फसील बनी हुई है, जो पहाडकी हालतके मुवाफिक ऊची और नीची होती गई है, और जिसके अन्दर जा बजा बुर्ज और मोर्चे बने हुए है इहातेके भीतर किलेदारके रहनेका महल है, और किसी मुसल्मान पीरका मजार और एक पुरानी मस्जिद बाकी है. फौजके लिये कई बारकें भी मौजूद है किलेके अन्दर कई ऐसे बर्साती चश्मे और तालाब है, जो वहांकी ज़रूरतके लिये काफी होसक्ते है, किलेके पूर्वी तरफ एक तंग और सगीन जीनहके जरीएसे मिला हुआ कस्बह आबाद है. इस क़िलेका फ़तह करना चारो तरफ पहाडोसे घिरे रहनेके सबब हमेशह मुश्किल समझा गया है. राज्य जयपुरकी तरफसे इसमे एक हजारके करीब फौज तीस तोपो समेत रहती है

इस नामी क़िलेको दर्मियानी तेरहवीं सदी ईसवीमे किसी चहुवान राजाने

बनवाया था विक्रमी १३४८ [हि० ६९० = ई० १२९१] मे जलालुद्दीन फ़ीरोज-शाह खिल्जीने इसपर घेरा डाला, लेकिन् वह कामयाब न होसका विक्रमी १३५४ [हि० ६९६ = ई० १२९७] मे अलाउद्दीन मुहम्मदशाह खिल्जीने किलेकी दीवार तक पुश्तह बनाने बाद राजा हमीरदेवको कत्ल करके, जो पृथ्वीराजका रिश्तहदार था, (१) इसे छीन लिया; और खिल्जियो और तुगलकोके आखिर अह्द तक वह दिल्लीके मुतअल्लक रहा. तेरहवी सदी ईसवीके खत्मपर, जब कि तुगलकोके कमज़ोर होनेसे उनके मातहत सूबहदार, दक्षिण, गुजरात, मालवा, बगाला वगैरहके सूबोपर खुद मुख्तार बन बैठे, और तीमूर लगने दिल्लीको गारत और तबाह किया, यह किला मालवी बादशाहोके कब्जहमे गया; और वह यहापर विक्रमी १५७२ [हि० ९२१ = ई० १५१५] तक काबिज पाये जाते है खयाल किया जाता है, कि विक्रमी १५७६ [हि० ९२५ = ई० १५१९] मे, जब कि मालवेका मह्मूद सानी मुकाबलह करके महाराणा सांगाकी कैदमे पडा, तो किला रणथम्भोर कुछ इलाकह समेत मेवाडके कब्जहमे आया, और उनके बेटे महाराणा रत्नसिंहके बाद तक वहीसे मुतअल्लक रहा विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२७] मे महाराणा सांगाके गुजरनेपर उनका बडा बेटा रत्नसिंह चित्तौडकी गद्दीपर बैठा, और दूसरे विक्रमादित्यके कब्जहमे रणथम्भोर रहा तुजुक बाबरीसे पायाजाता है, कि इन दोनो भाइयोमे अदावत होनेसे बडा रणथम्भोरको और छोटा चित्तौडको लेनेकी फ़िक्रमे था, इसी सबबसे विक्रमादित्यने किले रणथम्भोरको जिले शम्साबादके एवज बाबर बादशाहके हवाले करदेनेका इरादह किया था, जो उनके बडे भाईके गुजरजाने और उनके राज पानेसे मुल्तवी रहा विक्रमी १६०० [हि० ९५० = ई० १५४३] मे, जब शेरशाह सूरने राजपूतानहपर चढाई और मालदेवसे लडाई करके नागौर व अजमेरको लेलिया, तो उस वक्त या उससे कुछ पहिले उसने रणथम्भोरको दबा लिया; और अपने बडे बेटे आदिलखांको जागीरमे देदिया शेरशाहके मरने बाद, जब उसकी औलाद मे बद इन्तिजामी फैली, और हुमायूने काबुलकी तरफ़से पंजाब आ दबाया, तो पठानोको मज्बूत मकामातसे हाथ उठाना पड़ा; चुनाचि मुहम्मदशाह अद्लीके अह्द विक्रमी १६१५ [हि० ९६५ = ई० १५५८] मे झुझारखा किलेदारने राव सुर्जन हाडाको, जो मेवाडका एक मातहत सर्दार और बूंदीका जागीरदार था, कुछ रुपया लेकर किला हवाले कर दिया विक्रमी १६२५ फाल्गुन [हि० ९७६ रमजान =

---

(१) फ़ीरोज शाहीमें हमीरदेवको पृथ्वीराजका "नबीसह" लिखा है, जिसका अर्थ 'दोहिता' और 'पोता' होता है

ई० १५६९ फ़ेब्रुअरी] मे अक्बर बादशाहके चढाई करनेपर राव सुर्जननने उसको किला हवालह करके मेवाडके एवज बादशाही इताअत कुबूल की, और फिर इस किलेपर मेवाड वालोका दख़्ल न होसका विक्रमी १६७६ [हि० १०२८ = ई० १६१९] मे जहांगीर इस किलेकी सैर करके बहुत खुश हुआ वह लिखता है, कि 'रण' और 'थम्भोर' दो टेकरियोमेसे, जो करीब है, पिछलीपर किला बनाया गया था, और दोनो टेकरियोके नाम मिलाकर किलेका नाम रणथम्भोर रख दिया गया है शाहजहाने अपने शुरूअ् अह्द विक्रमी १६८८ वैशाख कृष्ण ८ [हि० १०४० ता० २२ रमजान = ई० १६३१ ता० २४ एप्रिल] को यह किला राजा विठ्ठलदास गौडको इनायत कियाथा, लेकिन् आलमगीरने इसको वापस खालिसेमे दाखिल किया, जो दर्मियानी अठारहवी सदी ईसवी तक दिल्लीके मातह्त रहा अजीजुद्दीन आलमगीर सानीके अह्द विक्रमी १८१२ [हि० ११६८ = ई० १७५५] मे, जब कि मुग़्लियह सल्तनत तबाहीके करीब पहुची, तो बादशाही किलेदारने मरहटोके खौफसे यह किला जयपुरके महाराजा माधवसिंह अव्वलको सौप दिया, और जबसे अब तक वहींके कब्ज़हमे चला आता है किलेदारकी औलादमेसे कई जागीरदार अब तक जयपुरके मातह्त है, जिनकी वहा बहुत कुछ ताजीम व इज़्ज़त कीजाती है

ईसरदा- एक आबाद रौनकदार कस्बह शहरपनाह और खाईसे घिरा हुआ जयपुरसे साठ मील बनास नदीके तीरपर वाके है यह एक जागीरदारका ठिकाना है, और इसमे एक गढ है

खेतडी- जयपुरके एक बडे सर्दारकी राजधानी किला समेत है, जिसकी पहाडीके करीब तांबेकी खाने है कस्बहमे एक मद्रसह, अस्पताल और एक सर्कारी डाकखानह भी है

बगरू- एक मश्हूर कस्बह आगरा व अजमेरकी सडकपर राजधानी जयपुरसे १८ मील दूरीपर है, जिसमे रंगसाजी और कपडा छापनेका काम जियादह होता है.

डिग्गी- एक मश्हूर और आबाद कस्बह कच्ची शहरपनाह व कच्चे किले सहित जयपुरसे ४२ मील दक्षिणको है, और खासकर कल्याणरायजीके मेलेके लिये मश्हूर है, जिसमे १५००० आदमी हर साल जमा होते है.

दूदू- आगरा व अजमेरकी सडकपर कच्ची शहरपनाहसे घिरा हुआ है, जिसमे एक छोटा, लेकिन् मज्बूत किला है

दूणी- यह एक आबाद कस्बह है, जिसका किला विक्रमी १८६६ [हि० १२२४ = ई० १८०९] मे दौलत राव सेंधियाके मुकाबलहमे मज्बूत रहने और बचाव करनेमे कामयाब होनेके सबब मश्हूर है

फत्हपुर- शैखावाटी जिलेमे मोर्चा बन्द कस्बह सीकरके सर्दारका है, जो जयपुरका खिराज गुजार है, इसको राव राजा लक्ष्मणसिंहने अपने रहनेके लिये आबाद किया था, उस वक्त यह बडी रौनकपर था

नाराणा– अगर्चि यह एक छोटा कस्बह जयपुरसे ४० मील फ़ासिलेपर पश्चिमकी तरफ वाके है, लेकिन् पुराने ज़मानहका बसा हुआ, और अच्छे अच्छे मन्दिर तथा दादूपन्थी साधुओंका मुख्य स्थान होनेके सबब मश्हूर है ऊपर लिखे हुए कस्बोंके सिवा लक्ष्मणगढ, नवलगढ, उनियारा, रामगढ, सामोद, सीकर व सांगानेर, सिंघाणा, सांभर वगैरह भी अक्सर प्रसिद्ध कस्बे हैं

मज़्हबी मकामात– गलता, अंबिकेश्वर, सांगानेरके जैन मन्दिर, जिनमेंसे कितने एक १००० से ज़ियादह सालके बने हुए और आबूपर देलवाडा मकामके मश्हूर जैन मन्दिरोंकी तर्ज़पर बनाये गये हैं, खो, एक छोटासा गांव इस लिये मश्हूर है, कि कछवाहा राजपूतोंने पहिले पहिल जयपुरकी रियासतमें इसी गांवपर कब्ज़ह पाया था, चर्णपाद, वैराट, गेहटोरकी छत्रियां वगैरह कई प्रसिद्ध और क़दीम ज़मानेके मक़ामात तीर्थ यात्रा आदिके लिये मश्हूर हैं

मश्हूर मेले– चाटसूमें डूंगरी शेलरमाता, कालकमें ज्वाला माता, नराणामें दादू, आंबेरमें शला देवी, जयपुरमें रामनवमी, तालामें पीर बुर्हान, गोदेरमें गोदेर जगन्नाथ, नईमें महादेव, शामोदमें महिमाई, डिग्गीमें कल्याणराय, हिंडोनमें महावीर, धौसामें रघुनाथ, भाडारेजमें गोपाल, बसवामें पीर शाहखारार, टोडा भीममें खडमखडी, सकराय में माता, सवाई माधवपुरमें गणेश व काला गोरा भैरव, बर्वाडामें चौथ माता और खडारमें रामेश्वरका मेला होता है ऊपर लिखे हुए मक़ामोंके सिर्फ़ व्यापार व धर्म सम्बन्धी मुख्य मेलोंके नाम यहां दर्ज किये गये हैं, जिनमें प्रति वर्ष हज़ारहा आदमी जमा होते हैं, परन्तु सांगानेर व आंबेर वगैरहमें हर साल कई छोटे छोटे मेले और भी होते हैं

खास शहर जयपुरमें संगतराशीका काम याने सियाह व सिफ़ेद पत्थरकी मूर्तियां वगैरह कई चीज़ें उम्दह बनती हैं ऊनी कपडा याने बारानी, घुग्घी व चकमे मालपुराके मश्हूर हैं सोने व चांदीकी लेस, कलाबतूनी कामके जूते, चूडियां, दो-पट्टे, छींट, और मीनाकारीकी चीज़ें जयपुरमें बहुत उम्दह और मश्हूर बनती हैं, यहांकी बनी हुई मीनाकारीकी चीज़ें पैरिस, लंडन व वियेनाकी नुमाइशगाहोंमें भेजी जाती हैं

बाहर जानेवाली व्यापारकी खास चीज़ें इस रियासतमें कपास, अनाज, किराना, शक्कर, छपे हुए कपडे, चमडा, शैखावाटीकी ऊन, संगमर्मरकी मूर्तें, चूडी और जूता वगैरह हैं बाहरसे आनेवाली चीज़ें अनाज, विलायती कपडा, शक्कर, बर्तन, और मुसालिह (मसालह) वगैरह हैं.

आमदो रफ्त व व्यापारके रास्ते– १ जयपुरसे टौंक तक जानेवाली सड़क, ६० मील

लम्बी, २ मडावर व करौलीकी सड़क, मडावरसे करौली तक ४९ मील लम्बी है, ३ आगरासे अजमेरको जानेवाली राजपूतानह रेल्वे लाइन, राजधानी और राज्यके बीचमे होकर पूर्व और पश्चिमको गई है, जो सबसे बडा रास्तह तिजारती सामान लाने और नमक व रूई वगैरह कई चीजे पश्चिमोत्तरी देश व पजाब वगैरहमे लेजानेका है, और भी छोटे छोटे बहुतसे रास्ते है, जिनका बयान तवालतके सबब छोड़दिया गया है.

राज्य जयपुरकी तवारीख,
कछवाहोका इतिहास

इस राज्यकी तवारीख एकट्ठी करनेके लिये हमने बहुत कुछ कोशिश की, महाराजा धिराज श्री माधवसिह २, को वर्तमान महाराणाने और रेजिडेण्ट मेवाड, कर्नेल वाल्टरने भी कहा, और मै (कविराज श्यामलदास) ने भी रूबरू निवेदन किया, उक्त राजधानीके मन्त्री व प्राइवेट सेक्रेटरी व सर्दारोके पास यहासे एक आदमी भेजा गया, तथापि हमको इच्छानुसार वहाका इतिहास न मिला. तब लाचार नीचे लिखी हुई किताबोसे काम लिया

नेनसी महताकी पुरानी तहकीकात, कर्नेल टॉडका इतिहास, राजपूतानह गजेटियर, कर्नेल ब्रुकका जयपुर गजेटियर, जयसिह चरित्र (भाषा कविताका ग्रन्थ, आत्माराम कवि कृत), जयवश महाकाव्य संस्कृत, राम पडितका बनाया हुआ, एक पुस्तक जयपुरकी ख्यात भाषावार्तिक, पडित रामचरण डिप्युटी कलेक्टर झालरापाटनकी भेजी हुई, तथा एक दूसरी ख्यात जयपुरकी, जो हमने छोटू नागर की पुस्तकसे लिखवाई, उक्त नागर महाराणा स्वरूपसिहके समय जयपुरकी खबर नवीसीपर मुकर्रर था, तीसरी ख्यात जोधपुरके रेजिडेण्ट पाउलेट्की हिन्दी पुस्तकसे नक्ल करवाई, शिखर वशोत्पत्ती, चारण कविया गोपालकी बनाई हुई, जो कर्नेल पाउलेट्की पोथीसे नक्ल कराई गई, वशभास्कर, बूदीके मिश्रण चारण सूर्यमल्ल कृत भाषा कविता. इनके अलावह फार्सी तवारीखे अक्बर नामह, इक्बालनामए जिहांगीरी, तुजुक जिहांगीरी, बादशाह नामह, अमल स्वालिह, आलमगीर नामह, मआसिरे आलमगीरी, मुन्तखबुल्लुबाब, मिराति आफ्ताब नुमा,

सैरुल्मुतअख्खिरीन, मआसिरुल् उमरा वगैरहसे राजा भारमल्लके बाद इस वंशका हाल चुनागया, परन्तु हमारी तसल्लीके लाइक नई तहकीकात और जयपुरके दफ्तरसे अथवा वहाके मुलाजिमोसे कोई कागजात नही मिले, और ऊपर लिखी हुई सामग्रीसे राजा भारमल्लके बादका हाल कुछ ठीक होगा, परन्तु उक्त राजासे पहिला इतिहास, जो कहानी व किस्सोके मुवाफिक मिलता है, वह अगर्चि काबिल इत्मीनान नही है, लेकिन् लाचारीके सबब उसीका आश्रय लेना पडा

इस वंशको सूर्य कुलकी एक शाख बतलाते हे, परन्तु ईषासिंह और सोढदेवके पहिलेका इतिहास बिल्कुल अन्धकारमे पडा हुआ है, टटोलनेसे भी अस्ल मत्लब हाथ नही लगता, कुर्सीनामे अनेक तरहके मिलते हे, किसीमे दस पाच नाम जियादह किसीमे कम, किसीमे नये ही नाम घडत किये गये है, बाज रामचन्द्रके पुत्र कुशसे जुदी ही शाखा ईषासिंह तक मिलाते है, और किसीने अयोध्याके आखिरी राजा सुमित्रसे ईषासिंह तक वंश चलाया इस इख्तिलाफको देखकर दिल कुबूल नही करता, कि मै भी उन लकीरोमेसे किसी एकपर चलू, आखिरकार यही ठहराया, कि राजा सुमित्रसे पहिला हाल तो भागवत पुराण, और महाभारतके हरिवंश वगैरह संस्कृत ग्रन्थोमे लिखा हुआ है, जिसमे हेर फेर नही होसक्ता, और सुमित्रसे लेकर ईषासिंहके बीचका हाल छोडकर ईषासिंहसे तवारीख लिखना शुरूअ् किया है

देवानीकके पुत्र १ राजा ईषासिंह ग्वालियरका राज्य करते थे एक समय विद्वान ब्राह्मणोके कहनेसे धन दौलत उन्होने कुल ब्राह्मणोको लुटादी, और ग्वालियरका राज अपने भानजेको देकर किसी दूसरी जगह जारहे उनका पुत्र २ सोढदेव विक्रमी १०३३ कार्तिक कृष्ण १० [हि० ३६६ ता० २४ मुहर्रम = ई० ९७६ ता० २२ सेप्टेम्बर] को नैशध देश बरेलीमे अपने बापकी जगह राजा हुआ, और यादव कुलकी राजकन्याके साथ विवाह किया, जिसके गर्भसे दुर्लभराज अर्थात् दुल्लहराय कुवर पैदा हुआ इस कुवरने अपने बापके हुक्मसे फौजकशी करके द्यौसामे अमल करलिया, जहा बडगूजर राजपूतोका राज था, और जो बहुतसे मारे गये इस राजकुमारने भाडारेजमे अमल किया, और इसी तरह माचीपर हमलह किया, जो मीना लोगोके रहनेका बडा बिकट स्थान था; परन्तु वहा फौज सहित यह खुद जख्मी हुआ ख्यातमे लिखा है, कि अपनी कुलदेवीकी दुआ (बरदान) से उसने फिर मीनोको मारकर माचीमे अमल करलिया, और वहा एक किला बनाकर उसका नाम रामगढ रक्खा, और अपनी कुलदेवी जमुहाय माताका भी एक मन्दिर बनवाया सोढदेवने अपने पुत्र दुल्लह-रायको युवराज बना दिया कुछ अरसे बाद सोढदेवका इन्तिकाल हुआ, और

३ दुल्हहराय राजा होने बाद मीणा वगैरह सर्कश लोगोको दबाकर जबर्दस्त होगया फिर वह ग्वालियरकी तरफ लडाईमे मारा गया तब उनके बेटोमेसे बडा काकिल गादी बैठा, और छोटा बिकल था, जिसके बिकलावत कछवाहा कहलाये, और जिसकी औलाद रामपुर वगैरहमे है

४ काकिलने अपनी बहादुरी और जमुहाय माताके हुक्मसे मीणा लोगोको मारकर अम्बिकापुर (आबेरके) शहरकी नीव डाली, और अम्बिकेश्वर महादेवका मन्दिर बनवाया काकिलका देहान्त हुआ, तो उनके चार बेटोमेसे बडा ५ हणू गादी बैठा; दूसरा अलखरायके, झामावत कछवाहा हुए, जिनका वंश अब कोटडीमे है, तीसरा देलण, जिनकी औलाद पूर्वमे हरड्या वैद्यनाथके पास है, चौथा रालण, जिनकी औलाद नगली पालखेडाके पास लहरका कछवाहा कहलाती है हणूका इन्तिकाल होने बाद उनका बेटा ६ जानडदेव गादी बैठा, और उनके बाद ७ प्रजूनराय राजा बना, जो बडा पराक्रमी और राजा पृथ्वीराज चहुवानके सामंतोमे नामवर था यह भी लिखा है, कि पृथ्वीराजकी बहिनके साथ उसकी शादी हुई थी प्रजून के बाद ८ मलेसीने अपने पिताका पद पाया, और उनके बाद ९ बीजलदेव क्रमानुयायी हुआ, जिनके पीछे १० राजदेव गद्दीपर बैठा, जिसने अपने पूर्वज काकिलके बनाये हुए आबेर स्थानमे शहर आबाद करके राजधानी बनाई इसके छ बेटे हुए, १ कील्हण, २ भोजराज, इनकी औलाद लवाणगढके कछवाहे कहलाते है; सिवाय इसके इनके वंशकी शाखा प्रशाखा और भी कई शाखे है ३ सोमेश्वर (१), ४ बीकमसी, ५ जयपाल, ६ सीहा, जिसके सीहावत कछवाहा कहलाते है

राजदेवके पीछे ११ कील्हण गद्दी नशीन हुआ महाराणा रायमल्लका रासा, जो उक्त महाराणाके ही समयमे बना था, और जिसकी दो सौ वर्ष पहिलेकी लिखित एक पुस्तक हमारे पास है, उसमे महाराणा कुंभाके हालमे कुंभलमेरुपर कील्हणका सेवा करना लिखा है यह बात अच्छी तरह खुलासह नहीं हुई, कि वह उक्त महाराणाकी पनाहमे रहता था, या ताबेदारोकी गिन्तीमे था, लेकिन् जैसे उस समयमे मालवी और गुजराती बादशाह बडे जबर्दस्त थे, महाराणा राजपूतानहके दूसरे राजाओंपर गालिब थे, जिससे दोनो बाते संभव है कील्हणके तीन बेटे थे, १ कूंतल, २ अखेराज, जिसके वंशके धीरावत कछवाहा है, ३ जसराज, जिसके जसरेपोता कछवाहा कहलाते है

---

(१) इनकी औलादको नेनसी महता राणावत कछवाहा कहलाना लिखता है, और जयपुरकी ख्यातकी पुस्तकमे लिखा है, कि सोमेश्वरकी औलाद वाले सोमेश्वर पोता कछवाहा कहलाते है

कील्हणके बाद १२ राजा कूतल गादी बैठा इनके चार बेटे थे, १ झोणसी, २ हमीर, जिनके हमीरदेका कछवाहा, ३ भडसी जिसके भाखरोत कीतावत कछवाहा ४ आल्हण, जिसके जोगी कछवाहा कहलाते हैं कूतलके बाद राजा १३ झोणसी ने अधिकार पाया झोणसीके चार बेटे थे, १ उदयकरण, २ कुंभा, जिसके कुम्भाणी कछवाहा, ३ सागा, ४ जैतकरण.

झोणसीके बाद १४ उदयकरण आंबेरके राजा बने. इसके छ बेटे थे, १ नृसिंह २ बरसिंह, जिसकी औलाद नरूका (अलवर, उणियारा, लावा, लदाना वगैरह) है, ३ बाला, जिसके शेखावत, ४ शिवब्रह्म, जिसके शिवब्रह्म पोता, ५ पातल, जिनके पातल पोता, ६ पीथा, जिसके पीथल पोता कछवाहा कहलाये.

१५ नृसिंह आंबेरकी गादीपर बैठा, जिसके १ बनवीर, २ जैतसी, ३ काधल, तीन कुंवर हुए; इनमेंसे बड़ा १६ बनवीर आंबेरके मालिक हुए इनके १ उद्धरन २ नरा, ३ मेलक, ४ बरा, ५ हरा और ६ वीरम थे; इन छ: मेंसे ३ मेलकके मेलक कछवाहे हैं; बाकी सबकी औलाद बनवीर पोता कहलाई

बनवीरके बाद १७ राजा उद्धरन हुआ, इसके बाद १८ राजा चन्द्रसेन गादी बैठा इनका चाटसूके मकाम माडूके बादशाहसे लड़ाई करना लिखा है, लेकिन् उस बादशाहका नाम नहीं लिखा. इसके पुत्र १ पृथ्वीराज, २ कुम्भा, ३ देवीदास हुआ जब चन्द्रसेनका इन्तिकाल हुआ, तब १९ पृथ्वीराज आंबेरकी गादीपर बैठा.

जयपुरकी ख्यातमें चन्द्रसेनका देहान्त और पृथ्वीराजका गद्दी नशीन होना विक्रमी १५५९ फाल्गुन् कृष्ण ५ [हि० ९०८ ता० २० रजब = ई० १५०३ ता० १८ जैन्युअरी] लिखा है, परन्तु हमको इस समयसे पहिले की ख्यातोंमें लिखे हुए साल संवतोंपर एतिबार नहीं है, शायद पृथ्वीराज रासाके संवत्से धोखा खाकर बडवा भाटोंने कियासी संवत् बनालिये, और उन्हींके अनुसार रियासती लोगोंने भी अपनी अपनी ख्यातोंमें लिख लिया है. जयपुरकी ख्यातमें गादीनशीनीके संवत् नीचे लिखे मुवाफ़िक दर्ज हैं -

१- ईशासिंह-----

२- सोढदेव विक्रमी १०२३ कार्तिक कृष्ण ९ [हि० ३५५ ता० २४ शव्वाल = ई० ९६६ ता० १३ ऑक्टोबर]

३- दुलहराय, विक्रमी १०६३ माघ शुक्ल ६ [हि० ३९७ ता० ५ जमादियुल्-अव्वल = ई० १००७ ता० २८ जैन्युअरी]

४- काकिल विक्रमी १०९३ माघ शुक्ल ७ [हि० ४२८ ता० ६ रबीउस्सानी = ई० १०३७ ता० २७ जैन्युअरी]

५- हणू विक्रमी १०९६ वैशाख कृष्ण १० [हि० ४३० ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० १०३९ ता० २२ मार्च]

६- जानडदेव विक्रमी १११० कार्तिक शुक्क २ [हि० ४४५ ता० १ रजब = ई० १०५३ ता० १९ सेप्टेम्बर]

७- प्रजून विक्रमी ११२७ चैत्र शुक्क ६ [हि० ४६२ ता० ५ जमादियुस्सानी = ई० १०७० ता० २२ मार्च].

८- मलेसी विक्रमी ११५१ ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ४८७ ता० १७ रबीउस्सानी = ई० १०९४ ता० ६ मई]

९- बीजलदेव विक्रमी १२०३ फाल्गुन शुक्क ३ [हि० ५४१ ता० २ रमज़ान = ई० ११४७ ता० ५ फेब्रुअरी]

१०- राजदेव विक्रमी १२३६ श्रावण शुक्क ४ [हि० ५७५ ता० ३ सफर = ई० ११७९ ता० ११ जुलाई]

११- कील्हण विक्रमी १२७३ पौष कृष्ण ६ [हि० ६१३ ता० २० शत्र्अ्बान = ई० १२१६ ता० २ डिसेम्बर]

१२- कुंतल विक्रमी १३३३ कार्तिक कृष्ण १० [हि० ६७५ ता० २४ रबीउस्सानी = ई० १२७६ ता० ५ ऑक्टोबर]

१३- भ्रोणसी विक्रमी १३७४ माघ कृष्ण १० [हि० ७१७ ता० २४ शव्वाल = ई० १३१७ ता० ३० डिसेम्बर]

१४- उदयकरण विक्रमी १४२३ माघ कृष्ण २ [हि० ७६८ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १३६६ ता० २० डिसेम्बर]

१५- नृसिंह, विक्रमी १४४५ फाल्गुन कृष्ण ३ [हि० ७९१ ता० १७ मुहर्रम = ई० १३८९ ता० १६ जैन्युअरी]

१६- बनवीर- विक्रमी १४८५ भाद्रपद कृष्ण ६ [हि० ८३१ ता० २० शव्वाल = ई० १४२८ ता० ३ ऑगस्ट]

१७- उद्धरन विक्रमी १४९६ आश्विन कृष्ण १२ [हि० ८४३ ता० २६ रबीउल्अव्वल = ई० १४३९ ता० ५ सेप्टेम्बर].

१८- चन्द्रसेन विक्रमी १५२४ मार्गशीर्ष कृष्ण १४ [हि० ८७२ ता० २८ रबीउस्सानी = ई० १४६७ ता० २७ नोवेम्बर]

१९- पृथ्वीराज विक्रमी १५५९ फाल्गुन कृष्ण ५ [हि० ९०८ ता० २० रजब = ई० १५०३ ता० १७ जैन्युअरी]

इन सबतोमे हमको सन्देह होनेका यह कारण है, कि प्रजूनरायकी गद्दी नशीनी

का संवत् ११२७ लिखा है, जो एक सौ वर्षके बाद याने संवत् १२२७ होता, तो पृथ्वी-राजके अस्ली संवत्के बराबर होता, लेकिन् "पृथ्वीराज रासा" के बनाने वालेने गलती की, उसको सहीह मानकर राजपूतानहके बडवा भाटोंने ऐसे संवत् बना लिये, जिसका मुफ़स्सल हाल हमने एशियाटिक सोसाइटीके जर्नल सन् १८८६ ई० [विक्रमी १९४३ = हि० १३०३] में लिखा है.

दूसरा शक यह है, कि कील्हणरायका संवत् १२७३ लिखा है, जो पृथ्वी-राजके मारेजानेसे २४ वर्ष पीछे हुआ, और प्रजूनसे कील्हण तक पांच पुश्तें होती हैं, जिनके लिये २४ वर्ष बहुत कम ज़मानह होता है, लेकिन् यह क़ियासी वज्ह कुछ माकूल सुबूत नहीं है. एक दूसरी दलील इस खयाली बातको मज्बूत करनेवाली यह है, कि महाराणा रायमल्लके रासेमें कील्हणरायका महाराणा कुम्भाकी सेवामें रहना लिखा है, और उक्त ग्रन्थ उसी ज़मानहके कविने बनाया था; महाराणा कुम्भा विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] में गद्दी नशीन हुए, और विक्रमी १५२५ [हि० ८७२ = ई० १४६८] तक राज्य करते रहे, लेकिन् सोचना चाहिये, कि विक्रमी १२७३ [हि० ६१३ = ई० १२१६] से विक्रमी १४९० [हि० ८३६ = ई० १४३३] के बाद तक कील्हणरायका ज़िन्दह रहना खयालमें नहीं आता; अगर विक्रमी १३७३ [हि० ७१६ = ई० १३१६] खयाल कियाजावे, तो भी गैर मुम्किन् है. हमारा खयाल है, कि बडवा भाटोंने इस गलतीको राव चन्द्रसेनके बनावटी इन्तिकालसे ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ दर्ज करदिया होगा, हमारे अनुमानसे राजा पृथ्वीराजके इन्तिकालका संवत् ठीक मालूम होता है, जिसकी तस्दीक़ बीकानेरकी तवारीख़से भी मिलती है, इस वास्ते हम उक्त संवत्को सहीह मानकर वहांसे तारीख़ी सिल्सिलह रक्खेंगे.

राजा पृथ्वीराज

यह राजा आंबेरके रईसोंमें बडे सीधे सादे, हरि भक्त, सर्व प्रिय और प्रजा पालक थे. इनकी राणी बालाबाई, जो बीकानेरके राव लूणकरणकी बेटी थी, वह भी बडी भक्त कहलाई. राजा पृथ्वीराज, उनकी राणी, और उनके गुरु कृष्णदास पैहारीका हाल "भक्त माल" नाम ग्रन्थमें नाभाने बहुत बढावेके साथ लिखा है, कृष्णदास पैहारी रामानुज सम्प्रदायमें बड़ा मश्हूर शख़्स हुआ है, जिसके क्रमानुयायी आंबेरमें गलता मकामपर बडी प्रतिष्ठाके साथ अब तक राज्य गुरु कहलाते हैं. "भक्त माल" और जयपुरकी ख्यातोंमें लिखा है, कि पहिले राजा पृथ्वीराजके गुरु

कनफ़टा जोगी, जो कापालिक मतमे नाथ कहलाते हैं, थे लिखा है, कि कृष्णदासने अपनी करामातसे नाथोंको रद करके राजा और राणीको अपना चेला (शिष्य) बनाया, और गलताको अपना प्रतिष्ठित स्थान करार दिया बालाबाई भी मीराबाई के मुवाफ़िक बडी नामवर हरिभक्त कहलाई, और चित्तौडके महाराणा सांगाने भी राजा पृथ्वीराजके साथ अपनी बहिनकी शादी करदी इस राजाका जियादह हाल मज़्हबी व करामाती बातोंके अलावह तवारीख़ी तौरपर बहुत कम मिलता है राजा पृथ्वीराजका देहान्त विक्रमी १५८४ कार्तिक शुक्ल १२ [हि० ९३४ ता० ११ सफ़र = ई० १५२७ ता० ५ नोवेम्बर] को हुआ इनके १९ बेटे थे- १ पूर्णमल्ल, जो राणी तवर से पैदा हुआ, जिसकी औलाद नींबाडेमे पूर्णमल्लोत कछवाहा कहलाती है, २ भीम, जिसकी औलाद नर्वरमे गई, ३ भारमल्ल, जो बालाबाईसे पैदा हुआ था, ४ रामसिंह, बालाबाईके गर्भसे, जिसकी सन्तान खोहमे रामसिंहोत कछवाहा कहलाई; ५ सांगा, बालाबाईके गर्भसे, ६ गोपाल, बालाबाईसे, जिसके वंशवाले सामोद व चौमू के नाथावत कछवाहा कहलाते हैं, ७ पचायण, बालाबाईसे, जिसकी औलादके नायले वगैरह मे पचायणोत हैं, ८ जगमाल, बालाबाईसे, जिसके सांईवाड तथा नरायणामे खंगारोत हैं, ९ सुल्तान, बालाबाईसे, जिसकी सन्तान काणोते वाले सुल्तानोत कछवाहा हैं, १० प्रताप, बालाबाईके गर्भसे, जिसका वंश कोटडेमे प्रतापपोता नामसे काइम है, ११ बलभद्र, बालाबाईका, जिसकी औलाद अचरोल वाले बलभद्रोत हैं, १२ सांईदास, यह भी बालाबाईसे पैदा हुआ था, जिसके वंशमे बड़ौदेके सांईदासोत हैं; १३ कल्याण, चित्तौडके महाराणा सांगाकी बहिन राणावत के गर्भसे पैदा हुआ, इसके कल्याणोत कालवाड वाले हैं, १४ भीका, राणावतके गर्भसे, १५ चत्रभुज, बालाबाईसे, जिसके वंशमे बगरू वाले चत्रभुजोत हैं, १६ रूपसी, राणी गौडके गर्भसे, जिसने अजमेरमे रूपनगर आबाद किया, १७ तेजसी, राणावतके गर्भसे, १८ सहसमल्ल, और १९ रायमल्ल

राजा पृथ्वीराजका देहान्त होनेपर २०- पूर्णमल्ल गादीपर बैठा, जो राजका हक्दार था, लेकिन् विक्रमी १५९० माघ शुक्ल ५ [हि० ९४० ता० ४ रजब = ई० १५३४ ता० १९ जैन्युअरी] को पूर्णमल्लका देहान्त होगया, और उनका बेटा सूजा अपनी माके साथ ननिहाल चला गया, तब २१- भीमसिंह पृथ्वीराजोत आंबेरकी गादीपर बैठा, परन्तु ईश्वरेच्छासे विक्रमी १५९३ श्रावण शुक्ल १५ [हि० ९४३ ता० १४ सफ़र = ई० १५३६ ता० १ ऑगस्ट] को उनका भी इन्तिकाल होगया, और भीमसिंहकी जगह उनका बेटा २२- रत्नसिंह गादी बैठा; लेकिन् यह गाफ़िल हमेशह शराबके नशेमे चूर रहता था, भाइयोने चारो तरफ़से इलाक़ह दबालिया, सांगा पृथ्वीराजोत उससे नाराज होकर

अपनी ननिहाल बीकानेरको चला गया, और अपने मामूसे मदद चाही, तब बीकानेर के राव जैतसिंहने नीचे लिखे सर्दार मए फ़ौजके उसके साथ दिये -

१- बणीर बाघावत, चेचावादका, २- रत्नसिंह लूणकरणोत, महाजनका; ३- रावत् कृष्णसिंह काधलोत राजासरका, ४- खेतसिंह ससारचन्दोत, द्रोणपुरका, ५- महेशदास मडलावत, सारूंडेका, ६- भोजराज सदावत, भेलूका, ७- बीका देवीदास घडसीसरका, ८- राव वैरीसिंह भाटी, पुगलका, ९- धनराज शैखावत, बीठणोक वालोंका पूर्वज, १०- भाटी कृष्णसिंह बाघावत, खारवेका, ११- जोइया हासा, मिलकका. १२- मिहाणाका वैद्य महता अमरा, १३- बछावत महता सागा, १४- पुरोहित लक्ष्मीदास, देवीदासोत वग़ैरह, पन्द्रह हज़ार (१) फ़ौज लेकर सागा ढूंढाड को रवानह हुआ. अमरसर पहुचनेपर रायमल्ल शैखावत आ मिला, और उसने तेजसिंहको भी आंबेरसे बुलालिया, जो रत्नसिंहका मुसाहिब था सागाने तेजसिंह से कहा, कि तुम्हारी मुसाहिबीमें आंबेरका इलाकह भाइयोंने दबा लिया, तब तेजसिंह ने जवाबमें रत्नसिंहकी ग़फ़्लत और शराब ख़ोरीकी शिकायत की, और कहा, कि अब आप चाहेंगे, तो सब छीनलिया जायेगा सागाने कहा, कि नरूका करमचन्द दासावतको मारे बिना यह काम मुश्किल है, तेजसिंहने कहा, कि यह बात भी होसकेगी तब सागा मए फ़ौजके मौजाबाद पहुंचा, और तेजसिंहके पास जो नरूका करमचन्दका भाई जयमल्ल रहता था, उसे कहा, कि तू अपने भाई को लेआ जयमल्लने जवाब दिया, कि उसने जो ४० गांव आंबेरके दबा लिये हैं, उनको सागा लेना चाहता है, और वह नहीं देगा तेजसिंहने उसको समझाया, कि मुझसे भी सागा नाराज़ था, परन्तु उसके पास पहुंचकर मैं नर्मीसे पेश आया, तबसे वह बहुत मिहर्बानी रखता है नर्मी करनेसे करमचन्दका भी नुक्सान नहीं होगा जयमल्ल अपने भाईको लेनेके लिये चला, और सागा व तेजसिंहने करमचन्दके मारने को नापाके भाइयोंमेंसे लाला सांखलाको तय्यार किया, जब करमचन्द और जयमल्ल मौजाबादकी छत्रीमें सागाके पास पहुंचे, उस समय इशारा होते ही लालाने तलवारसे करमचन्दके दो टुकडे करडाले, तब जयमल्लने तेजसिंहको मारलिया, और सागापर चला, उस समय उसका छोटा भाई भारमल्ल पृथ्वीराजोत बीचमें आया, जयमल्लने उसको हाथसे झिड़ककर कहा, कि तुझ छोकरेको क्या मारूं? इसके बाद एक कटारी छत्रीके स्तम्भमें मारी, जिसका निशान इस वक्त तक मौजूद बतलाते हैं इसी अरसहमें लाला सांखलाने जयमल्लको भी मार लिया. इस बातसे सागाका रोब जमकर आसपासके

(१) यह हाल बीकानेरकी तवारीख़से लियागया है, जो साहिब रेजिडेन्ट मारवाड़से हमको मिली.

कुल इलाकेमे उसका कब्ज़ह होगया, और बागी लोगोने ताबेदारी इस्तियार की सागा रत्नसिंहको टीकैत मानकर आंबेर नही गया, परन्तु उसके करीब ही सागानेर शहर बसाकर वहा रहने लगा उसने मौजाबाद वगैरह सब जमीनपर अपना कब्ज़ह करलिया

करमचन्द और जयमल्ल नरूका, जो मारे गये, उनके राजपूतोमेसे एक चारण कान्हा आडाने, जो करमचन्दके मारेजानेके वक्त कही गया था, ताना देकर राजपूतोसे कहा, कि तुमको करमचन्दने बडे आरामसे इसलिये रक्खा था, कि उसका आखिर तक साथ दो तब किसी राजपूतने जवाब दिया, कि ऐ कान्हा करमचन्दने तक्लीफ तो तुमको भी नहीं दी थी, अगर बहादुरी रखते हो, तो उनका एवज लेना चाहिये कान्हाने उसी वक्त यह प्रण लिया, कि जबतक मैं सागाको नही मारू, अन्न न खाऊगा, और उसी दिनसे दूध पीने लगा वह सागाके पास जारहा, सो दो तीन ही दिनके बाद मौका पाकर कान्हाने सागाको कटारीसे मार लिया, और उसी हालतमे वह खुद भी मारागया उस समयसे कान्हा चारणकी औलादके लोग उणियाराके रावके पास बडी इज्ज़तके साथ रहते है

सागाके मारेजाने बाद उसके कोई औलाद न होनेके सबब उसका छोटा भाई भारमल्ल पृथ्वीराजोत सागानेरका मुरूतार बना, और कुछ अरसह बाद आसकरण भीमसिंहोत, रत्नसिहके छोटे भाईको राजका लालच देकर मिला लिया, और विक्रमी १६०४ ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० ९५४ ता० ७ रबीउस्सानी = ई० १५४७ ता० २७ मई] को उसके हाथसे जहर दिलवाकर रत्नसिंहको मरवा डाला

२३- राजा भारमल्ल,

जब रत्नसिहको आसकरणने जहर देकर मारा, उसी वक्त भारमल्लने आबेरपर कब्ज़ह करलिया, और उस बेईमान आसकरणको, जो अपने भाईको मारकर राज्यका उम्मेदवार हुआ था, राज्यमे बाहर निकाल दिया वह दिल्ली पहुचा, शेरशाह सूरके बेटे सलीमशाहने उसको नर्वर जागीरमे दिया, जहापर उसकी औलाद मुद्दत तक काबिज रहकर मरहटोके दबावसे खारिज हुई.

जब हुमायू बादशाह पठानोको निकालकर दोबारह दिल्लीके तख्तपर बैठा, और थोडे ही दिनो बाद उसका इन्तिकाल होगया, तब कलानौरमे विक्रमी १६१२ फाल्गुन शुक्ल ५ [हि० ९६३ ता० ४ रबीउस्सानी = ई० १५५६ ता० १५ फेब्रुअरी] को उसका बेटा अक्बर बादशाह तख्त नशीन हुआ, उसके राज्यमे चारो तरफ बखेडा फैला हुआ था, उस समय सूर बादशाहोके नौकर हाजीखां पठानने राजा भारमल्ल कछवाहेकी मददसे

नारनौलको घेरा, जो मजनूखां काकशालके कब्जहमें था. राजा भारमल्लने बुद्धिमानी और दूर अन्देशीसे मजनूखांको माल अस्बाब व बाल बच्चों समेत हिफ़ाज़तसे निकाल दिया. जब अक्बर बादशाहने हेमू ढूसर वगैरह ग़नीमोंको बर्बाद करके दिल्लीमें क़ब्ज़ह किया, तब मजनूखां काकशालकी सिफ़ारिशसे राजा भारमल्ल भी दिल्ली पहुंचे. बादशाहने उसे और उसके बड़े दरजे वाले कुल राजपूतों वगैरहको ख़िल्अ़त दिये, और वे साम्हने लाये गये. बादशाह एक मस्त हाथीपर सवार थे, जो राजपूतोंकी तरफ़ दौड़ा, परन्तु ये लोग अपनी जगहसे न हिले. हाथी रोक लिया गया, और इसी दिनसे बादशाहको राजपूत लोगोंकी क़द्र मालूम होगई, कि यह क़ौम कैसी दिलेर है ? फिर राजा अपने वतनको चले आये. आंबेरमें मीनोंने बहुत फ़साद कर रक्खा था, जिनको राजाने मारकर सीधा किया.

बादशाहने मिर्ज़ा शरफ़ुद्दीन हुसैनको अजमेरका सूबहदार बनाया था, जिसने कुछ रुपया वगैरहके लालचसे पूर्णमल्ल पृथ्वीराजोतके बेटे सूजाकी हिमायत करके भारमल्ल पर चढ़ाई करदी, और भारमल्लके बेटे जगन्नाथ और उसके भतीजे राजसिंह आसकरणोत और खंगार जगमालोतको गिरिफ़्तार करलिया. बादशाह अक्बर भी विक्रमी १६१८ के माघ [हि० ९६९ जमादियुलअव्वल = ई० १५६२ जैन्युअरी] में आगरेसे राजपूतानहकी तरफ़ रवानह हुआ, और कलावली ग्राममें भारमल्लके दोस्त चग़त्ताखाने बादशाहसे राजाकी तक्लीफ़का हाल अ़र्ज़ किया. तब बादशाहने मिहर्बान होकर राजा भारमल्लको बुलानेकी इजाज़त दी. चौसा मकामपर उनका भाई रूपसिंह अपने बेटे जयमल्ल समेत हाज़िर होगया, और जब बादशाह सांगानेरमें पहुंचा, तो राजा भारमल्ल भी बादशाहकी ताबेदारीमें आया. राजपूतानहके राजाओंमेंसे यह पहिला राजा है, जो बादशाही ताबेदार बना. इस राजाका बहुत बड़ा राज्य नहीं था, परन्तु एक बड़े गिरोह कछवाहोंका पाटवी होनेके कारण वह ताक़तवर गिना जाता था, क्योंकि इस गिरोहके शैखावत व नरूका वगैरह राजपूत जो जुदा जुदा अपने इलाक़ोंपर मुरूतार थे, बाहरके दुश्मनोंकी चढ़ाईके समय अपने सरगिरोहको अकेला छोड़देनेमें बड़ी शर्मिन्दगीकी बात जानते थे. इस राजाने बादशाही ताबेदार होनेसे पहिले अपने बेटे भगवानदासको चित्तौड़के महाराणा उदयसिंहकी ख़िदमतमें भेजदिया था, (१) जिससे वे इनके सरपरस्त और मददगार बने रहे.

चग़त्ताखांकी सलाहसे यह राजा अपनी बेटी बादशाहको देनेके लिये राजी होगया. इस बातके लिये ईरानके बादशाहकी नसीहतसे हुमायूंशाह अभिलाषा रखता था, और

---

(१) यह बात अमरकाव्यमें लिखी है.

अक्बरने भी अपने बापकी ख्वाहिश और नसीहत पूरी करनेके लिये इस शादीको गनीमत समझा वह राजापर जल्द मिहर्बान होगया, कि उसको पाच हज़ारी जात व सवारका मन्सबदार बनाकर इज़्ज़ते दी अक्बरने राजाको शादीका लवाज़िमा तय्यार करनेकी रुख्सत देकर कूच किया, और राजा शादी व जिहेजका सामान मए अपनी बेटीके लेकर मकाम साभरपर हाज़िर होगया बडी खुशीके साथ उस राजकुमारीसे शादी हुई, और मिर्ज़ा शरफुद्दीन हुसैनकी कैदसे राजाके बेटे व भतीजोको अपनी खिद्मतमे बुलाकर फाल्गुन् शुक्ल १० [हि० ता० ८ जमादियुस्सानी = ई० ता० १२ फेब्रुअरी] को आगरेकी तरफ लौटा राजा भारमल्ल बडी इज़्ज़त व इन्ऋामो इक्राम पाकर आंबेर गया, और उनका बेटा भगवानदास व पोता मानसिंह वगैरह बादशाहके साथ आगरे गये विक्रमी १६२४ [हि० ९७५ = ई० १५६७] मे, जब बादशाह अक्बरकी चढाई किले चित्तौडकी तरफ हुई, तो यह राजा भी उसके साथ था, और राजपूतोकी लडाई के तरीके व खानगी बर्ताव की बाते बादशाहको बताया करता था, जिससे अक्बर बादशाह उसपर दिन ब दिन जियादह मिहर्बान होतागया विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] मे बादशाहने किले रणथम्भोरको घेरा, तब वहाके किलेदार राव सुर्जणको इसी राजाने सलाह देकर बादशाही ताबेदार बनाया

विक्रमी १६२६ आश्विन कृष्ण ३ [हि० ९७७ ता० १७ रबीउल्अव्वल = ई० १५६९ ता० ३० ऑगस्ट] को राजा भारमल्लकी बेटीके गर्भसे फ़तहपुर सीकरी के मकाममे शैख सलीम चिश्तीके घरपर बादशाह अक्बरके शाहज़ादह सलीम पैदा हुआ, और इससे खानदान कछवाहाकी रिश्तहदारी मुगलबादशाहोके साथ जियादह मज्बूत होगई (ईश्वर जिसको बढाना चाहे, उसके लिये हर सूरतसे तरक्कीके सामान खुद बखुद मौजूद होजाते है) विक्रमी १६३० माघ शुक्ल ५ [हि० ९८१ ता० ४ शव्वाल = ई० १५७४ ता० २८ जैन्युअरी] को इस राजाका देहान्त होगया

इनके आठ (१) कुवर- १ भगवन्तदास (२), २ भगवानदास, जिनके बाकावत लवाण वाले है, ३ जगन्नाथ, जिनके जगन्नाथोत, ४ परसराम, ५ शार्दूल, ६ सुन्दरदास, ७ पृथ्वीदीप, और ८ रामचन्द्र थे

---

(१) इन आठके सिवा जयपुरकी एक ख्यातमे १ शलहदी, २ विट्ठलदास, और एक ख्यातमे भोपत, तीन नाम जियादह पायेगये है, लेकिन् इन नामोकी बाबत हमको कुछ तहकीक नही है

(२) जयपुरकी तवारीखमे बडेका नाम भगवन्तदास और उससे छोटेका नाम भगवानदास लिखा है, लेकिन् फार्सी तवारीखोमे भगवानदासको ही भगवन्तदास लिखना पायाजाता है

२४- राजा भगवानदास

जब राजा भारमल्लका इन्तिकाल हुआ, तो भगवानदास मए अपने कुंवर मानसिंह के बादशाह अक्बरकी खिझतमे हाज़िर होगये बादशाहने मिहर्बान होकर उसके बापका मन्सब उसके नामपर बहाल रक्खा, और दिन बदिन मिहर्बानी जियादह की इस राजाने विक्रमी १६२९ [हि० ९८० = ई० १५७२] मे गुजरात फत्ह होने बाद सरनालकी लडाईमे, जब अक्बर बादशाह ने इब्राहीम हुसैन मिर्ज़ापर पाच सौ सवारोके साथ हमलह किया, अच्छी बहादुरी दिखलाई, जिसके इन्आममे इसको नक्कारह और निशान मिला गुजरातकी चढाईमे भी इस राजासे बडी बहादुरी जाहिर हुई बादशाहने इसको फौज देकर ईडर व मेवाडकी तरफ़ रवानह किया, इस सफ़रमे भी वह फौजी व मुल्की कार्रवाइया करता हुआ बादशाहके पास पहुचा

विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] मे इस राजाकी बेटी की शादी बडे शाहजादह सलीमके साथ बडी धूमधामसे हुई, जिसकी तफ्सील अक्बर नामहकी तीसरी जिल्दके पृष्ठ ४५५ व ५६ मे बहुत कुछ लिखी है खुद बादशाह अपने बेटेको लेकर राजाके मकानपर गये, और राजाने एक सौ हाथी और बहुतसे घोडे इराकी, अरबी, तुर्की कच्छी वगैरह, और बहुतसे लौंडी गुलाम जर व जेवर समेत जिहेजमे दिये दो करोड रुपया मिहर (१) दुलहिनका करार पाया मआसिरुल उमरामे लिखा है, कि खुद बादशाह और शाहजादह दुलहिनका डोला उठाकर बाहर लाये इसी राजकुमारीके पेटसे विक्रमी १६४४ [हि० ९९५ = ई० १५८७] मे सुल्तान खुस्रौ पैदा हुआ

अक्बरके तीसवे जुलूसमे यह राजा सीस्तानकी हुकूमतपर भेजा गया, लेकिन् जियादह सामान वगैरहका उज्र करनेसे यह हुक्म मुल्तवी रहा, और फिर वह आजिजी करनेपर वहा रवानह किया गया, परन्तु जब सिन्धु उतरकर खैराबादमे पहुचा, तो एकदम दीवाना होगया कुछ दिनो बाद विक्रमी १६४६ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ९९८ ता० ६ सफ़र = ई० १५८९ ता० १५ डिसेम्बर] को लाहौरमें इस राजाका इन्तिकाल हुआ वह टोडरमल्लके दागमे गया था, वापस आनेपर कै (उछाट) हुई, और पेशाब बन्द होकर पाचवे रोज़ मरगया. मआसिरुल उमरा मे लिखा है, कि इस राजाने लाहौरमे (मुसल्मानोको खुश करनेके लिये) एक

---

(१) मुसल्मानो मे शरअ़के मुवाफ़िक मिहर एक तरहका अह्दनामह करार पाता है, अगर औरत को उसका खाविन्द तक्लीफ या तलाक दे (छोड़ दे), तो मिहरका रुपया मुकर्ररह उसको दे देना पडता है

मस्जिद बनवाई थी, जिसमे अक्सर मुसल्मान लोग जुमएकी नमाज पढ़ा करते थे

इनके ४ कुवर थे १ मानसिह, २ माधवसिह, जिसके माधाणी कछवाहे हैं, ३ सूरसिह, जिसके सूरसिहोत हैं, और ४ बनमालीदास, जिसके बनमाली दासोत कछवाहा कहलाते हैं

२५-राजा मानसिंह

इन महाराजाका जन्म विक्रमी १६०७ पौष कृष्ण २ [हि० ९५७ ता० १६ जिल्काद = ई० १५५० ता० २७ नोवेम्बर] को, राज्याभिषेक विक्रमी १६४६ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० ९९८ ता० ६ सफर = ई० १५८९ ता० १५ डिसेम्बर] को, और राज्याभिषेकोत्सव माघ कृष्ण ५ [हि० ९९८ ता० १९ रबीउल्अव्वल = ई० १५९० ता० २६ जैन्युअरी] को हुआ

यह राजा जब अपने दादा और बापके साथ बादशाही खिदमतमे पहिले पहुचा था, उसका जिक्र शुरूअमे लिखागया है यह अपनी अक्ल और बहादुरी व बादशाही खैरख्वाहीसे ऐसा बढगया था, कि बादशाह अक्बर कभी इसको फर्जन्द और कभी मिर्जा राजा कहकर बोलता था, वह अव्वल दरजेके उमराओसे भी जियादह इज्जतदार गिनागया अक्बरके जमानेमे पाच हजारीसे जियादह मन्सब नौकरोको नहीं मिलता था, लेकिन् दो सर्दारोको सात हजारी तक मन्सब मिला, जिनमे एक राजा मानसिंह और दूसरा कोका अजीज था यह राजा अपने बापकी मौजूदगीमे ही नामवर होगया था, अक्बर बादशाहने पहिले गुजरातपर चढाईके वक्त और उस मुल्कको फत्ह करनेके बाद ईडर, डूगरपुर और उदयपुरकी तरफ राजा भगवानदास और कुवर मानसिंहको भेजा था, जिसका हाल महाराणा प्रतापसिह अव्वलके जिक्रमे लिखागया है-(देखो पृष्ठ १४६) विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] मे बादशाहने मेवाडपर फौज कशीके लिये खुद अजमेरमे ठहरकर कुवर मानसिह को लड़ाईके लिये भेजा इसका हाल भी महाराणा प्रतापसिह अव्वलके जिक्रमे दर्ज कियागया है-(देखो पृष्ठ १५०) जयपुर की ख्यातकी पोथियोमे इसी लडाईके बाद राजा भगवानदासका मरना लिखा है, जबकि मानसिह मेवाडकी मुहिमपर थे, परन्तु यह बात ठीक नहीं, क्योंकि उक्त लडाईसे पीछे तरह बरससे जियादह अरसे तक राजा भगवानदास जीते रहे हैं, जैसा कि पहिले लिखागया और फिर लिखा जायेगा

विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] मे मिर्जा हकीम, बादशाहका सौतेला भाई मरगया, जो काबुलका हाकिम था, कुवर मानसिहने बादशाही हुक्मके

मुवाफ़िक़ काबुल पहुंचकर वहांके लोगोंकी दिलजमई की, और उक्त मिर्ज़ाके लड़कों अफ़्रासियाब व कैकुबादको उनके साथियों समेत बादशाहके पास ले आया. बादशाह भी नीलाब (सिन्धु) नदी तक आपहुंचे थे, कुंवरको काबुलकी सूबहदारी दी, उसने वहां पहुंचकर खैबर वगैरहके रास्ते लूटने वाले पठानोंको सज़ा देकर सीधा करदिया. जब यूसुफ़ ज़ई पठानोंकी मुहिमपर राजा बीरबर व जैनखां कोका व हकीम अबुल्फ़त्ह गये, तो बीरबरके मारेजाने बाद जैनखां व अबुल्फ़त्हको बादशाहने वापस बुलालिया, और वहांका बन्दोबस्त कुंवर मानसिंहके सुपुर्द किया, फिर सीस्तानकी हुकूमत राजा भगवानदासको मिली, परन्तु वह रास्तहमें दीवाना होगया, जिससे वह इलाक़ह भी कुंवरके सुपुर्द हुआ।

विक्रमी १६४४ चैत्र [हि० ९९५ रबीउस्सानी = ई० १५८७ मार्च] में बादशाहने कुंवर मानसिंहके राजपूतोंकी तरफ़से रिआयापर ज़ुल्म करने और मानसिंहकी चश्मपोशी करने, और सर्द मुल्कमें रहनेसे कुंवरको तक्लीफ़ जानकर बुलालिया, और सूबह बिहारमें राजा भगवानदास व कुंवर मानसिंहको जागीर देकर उसी तरफ़ भेजदिया. विक्रमी १६४७ [हि० ९९८ = ई० १५९०] में राजा भगवानदास लाहौरमें गुज़रे, तब यह अपने बापकी जगह राजा हुए. इसी सालमें पूर्णमल्ल केदौरियापर चढ़ाई की, जिसको फ़त्ह करके राजा संग्रामको जा दबाया, और उससे हाथी वगैरह चीज़ें पेशकश लेकर पटनाके बाग़ियोंको सीधा किया. झाड़खंडके रास्तेसे मुल्क उड़ीसापर चढ़ाई की, उस तरफ़ कत्लू लोहानी पठान बड़ा ज़बर्दस्त होरहा था, जब राजा वहां पहुंचा, उसने मुक़ाबलह किया. इस मुक़ाबलेमें बादशाही फ़ौजके पैर उखड़ गये थे, परन्तु राजा न हटा; ईश्वरकी कुद्रतसे कत्लू एकदम बीमार होकर मरगया, तब उसके वकील ईसा ने कत्लूके बेटे नसीरको सर्दार काइम करके सुलह करली. राजाने जगन्नाथपुरीको इलाक़ह समेत उसके क़ब्ज़ेसे निकाल लिया, फिर आप बिहारको चलाआया. जब तक ईसा जीता रहा, तब तक इक़ारमें फ़र्क़ नहीं पड़ा, परन्तु उसके मरने बाद कत्लूके बेटे ख़्वाजह सुलैमान व ख़्वाजह उस्मानने फिर बग़ावत इख़्तियार की, जिसका हाल अक्बर नामहकी तीसरी जिल्दके ६४१ पृष्ठसे यहां लिखाजाता है -

"ईसा पठान जब मरगया, तो फिर पठानोंने हर तरफ़ दगा फ़साद करके जगन्नाथपुरी लेली, और राजा हमीरके इलाके पर लूट मार शुरूअ़ की. हिज्री १००० [विक्रमी १६४९ = ई० १५९२] में राजा मानसिंह फ़त्हका इरादह करके दर्याके रास्तेसे चला, और तोलकखां, फ़र्रुख़खां, गाज़ीखां, मेदिनीराय, मीर कासिम बदख़्शी, राय भोज बूंदीके हाड़ा सुर्जणका बेटा, संग्रामसिंह, शाह, अगर और सगर तीनों महाराणा उदयसिंहके बेटे, चत्रसेनका बेटा बज्जा, भोपतसिंह और बर्ख़ुरदार वगैरह ख़ुश्कीके रास्ते

गये. मानसिंहका भाई माधवसिंह, लखमीराय कोकरा, पूर्णमल्ल केदोरिया, रूपनारायण सीसोदिया वगैरह कश्मीरके जागीरदार यूसुफखाकी मातहतीमे झाडखडके रास्तेसे रवानह हुए जब फौज बगालेमे पहुची, तो वहाका हाकिम सईदखा बीमारीके सबब ठहरा रहा, और राजा आगे बढा, सईदखा आराम होनेपर बहादुरखा, ताहिरखा वगैरह साढे छ हजार सवार साथ लेकर फौजमे जा पहुचा उस इलाकहके बहुतसे मकाम कब्जेमे आगये, पठानोने बहुतसे हीले हवाले करने चाहे, लेकिन् उनकी बाते कुछ न सुनीगई, लडाईकी तय्यारी होगई, और राजा मानसिंहके मातहत् राय भोज, राजा सग्राम, बाकरखा, फर्रुखखा, दुर्जनसिंह, सुजानसिंह, सबलसिंह, मीर कासिम, शिहाबुद्दीन वगैरह हर रोज हमले करते थे, और फसादी लोग भागते थे"

"पहिली फर्वर्दीको राजाने अपना हरावल आगे रवानह करदिया, पठान लोग नसीबखा, जमालखा, कतलूके बेटो वगैरहकी मातहतीमे लडाईपर मुस्तइद हुए, मुकाबलह होनेपर दुश्मनोका 'मिया लहरी' हाथी तोपका गोला लगनेसे कई हाथियो समेत जल मरा, दूसरे लोगोने और हाथी बढाया, मीर जम्शेद बख्शी बहादुरीसे हमलह करके काम आया, हाथीने कई आदमियोको नुक्सान पहुचाया, लेकिन् बाजो ने घोडोसे उतरकर हाथीको जरूमी करने बाद पकड लिया 'बहादुर कोह' हाथीने फर्रुखखाको दबाया, राय भोज और राजा सग्रामने जल्द् कदम बढाया जगत्सिंह भी दुर्जनसिंह वगैरहको साथ लेकर पठानोपर दौडा, और उनको बीचमेसे हटता हुआ देखकर दाहिनी तरफसे जोर किया बाबू मगली शाही फौजमेसे बढकर हट आया, बहारखाने पीछेसे पहुचकर बडा काम किया, एक जवान सिपाही आगे बढा, जिसको बहारखाने रोका, लेकिन् वह दूसरी दफा बढकर मारागया, मख्सूसखा ने भी बहुत कोशिश की, और ख्वाजह हलीम अपने साथियो समेत मौकेपर, जब मुखालिफ लोग भागने वाले या मारेजानेकी जगह थे, मददको पहुचा, जिसके साथ ख्वाजह वैस मारा गया तीन सौ से जियादह पठान लडाईके मैदानमे बेजान हुए, और बादशाही फौजमेसे चालीस आदमी काम आये, बादशाही फौजने काम्याबी हासिल की"

कतलूके बेटोने सारगगढके राजा रामचन्द्रकी पनाह ली, बगालेका सूबहदार सईदखा वापस लौटगया, परन्तु राजाने पीछा न छोडा, और सारगगढको जा घेरा तब वे दोनो लाचार होकर मानसिंहके पास हाज़िर होगये राजाने उनको बादशाही हुक्मसे कुछ जागीर देदी विक्रमी १६४९ [हि० १००० = ई० १५९२] के अन्दर कुल उडीसेपर बादशाही अमल होगया

विक्रमी १६५१ [हि० १००२ = ई० १५९४] मे बादशाहके पोते सुल्तान

खुस्रौके नाम उडीसा जागीरमे मुकर्रर होकर यह राजा शाहजादेका अतालीक बनाया गया, और राजाको बंगालेमे जागीर देकर उसी तरफ रवानह किया उसने वहा पहुचकर अपनी बहादुरी व बुद्धिमानीसे बगाली राजाको ताबे बनाया विक्रमी १६५३ [हि० १००४ = ई० १५९६] मे एक अच्छी मौकेकी जगह देखकर एक शहर 'अक्बरनगर' नाम आबाद कराया, जिसको 'राजमहल' भी कहते है विक्रमी १६५४ [हि० १००५ = ई० १५९७] मे कूचके राजा लक्ष्मीनारायण (१) को तावे बनाया, जिसका मुल्क मआसिरुलउमरामे दो सौ कोस लम्बा और चालीससे लेकर सौ कोस तक चौडा लिखा है इस राजाने अपनी बहिनकी राजा मानसिहसे शादी भी करदी लक्ष्मी-नारायणसे जो मुकाबलह हुआ, उसमे राजा मानसिहका बेटा दुर्जनसिह मारागया

जयपुरकी तवारीखमे लिखा है, कि बगालेकी तरफ केदार नामी एक कायस्थ का राज्य था, और उस कायस्थके पास शिला देवी की मूर्ति थी, जिसे केदारपर फत्ह पाकर राजा लेआया, और वह अब आबेरमे मौजूद है लिखा है, कि इस देवीको मनुष्यका बलिदान लगता था, राजाने इसको पशुबली करदिया

विक्रमी १६५७ [हि० १००८ = ई० १६००] मे जब बादशाह अक्बर दक्षिण की तरफ गया, और इस राजाको वलीअह्द शाहजादह सलीम सहित उदयपुरके महाराणाकी लडाईपर अजमेर छोडगया, तब मानसिहने अपने बडे बेटे जगत्सिहको बगालेके बन्दोबस्तके लिये रवानह किया, परन्तु वह रास्ते ही मे मरगया, तब जगत्-सिंहके बेटे महासिंहको, जो बच्चा था, बगालेकी तरफ भेजदिया, और आप शाह-जादहके पास अजमेरमे रहा बगालेमे कत्लूके बेटे उस्मानने मौका देखकर फसाद करना शुरू किया, राजाके लोगोने सहल जानकर मुकाबलह किया, परन्तु शिकस्त खाई, पठान बगालेमे बहुतसे इलाकोपर क़ाबिज़ होगये शाहजादह उदयपुरकी चढाईके एवज शाही हुक्मके बर्खिलाफ़ इलाहाबाद चलागया, और राजा उससे अलह्दह होकर बगालेके बन्दोबस्तको रवानह हुआ उसने शेरपुरके पास पठानोको

---

(१) जयपुरकी ख्यात जयसिह चरित्र वगैरहमे इस राजाका नाम प्रतापदीप और शहरका नाम हेला लिखा है, और एक दोहा भी मश्हूर है, जो हरनाथ कविने कहा था, जिसको सुनकर राजा मानसिहने दस लाख रुपया इन्आम दिया, वह दोहा इस जगह अर्थ सहित दर्ज किया जाता है —

दोहा

जात जात गुन अधिक हौ सुनी न अजहू कान ॥ राघव वारिधि बांधियो हेला मार्‌यो मान ॥ १ ॥

अर्थ- पूर्वजसे औलादका गुण अधिक हो, यह कानसे नही सुना, परन्तु रामचन्द्रको तो समुद्र बांधना पडा (लका जानेके लिये), और मानसिहने हेला शहरको मारा, (जो लकासे भी जियादह मुश्किल था).

लड़ाईमें शिकस्त दी, मीर अब्दुर्रज्ज़ाक़ मामूरी बख़्शी सूबह बंगालेका, जो मुख़ालिफ़ोंके पास क़ैद था, इस लड़ाईमें बेड़ी तौक़ समेत राजाके हाथ आगया. जब राजा बंगालेके बन्दोबस्तसे फ़ारिग़ (निश्चिन्त) होकर बादशाहके पास आया, तो सात हज़ारी ज़ात व छ हज़ार सवारका मन्सब पाया. मआसिरुल उमरामें लिखा है, कि उस वक़ इतना मन्सब किसी उमराव सर्दारको नहीं मिला था.

जब अक्बर बादशाहका इन्तिकाल हुआ, तो यह राजा अपने भानजे शाहज़ादह ख़ुस्रोका मददगार था, लेकिन् जहांगीरने इसको बंगालेकी सूबहदारी वगैरह देकर वहां भेजदिया. वह इसी सालमें बंगालेसे अलहदह हुआ, कुछ दिनों रुहतासके सर्कशों को सज़ा देनेके लिये मुक़र्रर रहा, फिर हुज़ूरमें आगया.

विक्रमी १६६४ [हि० १०१६ = ई० १६०७] में इस तज्वीज़से राजाको घर जानेकी रुख़सत मिली, कि दक्षिणकी लड़ाईका बन्दोबस्त करके ख़ानख़ानाकी मदद के वास्ते जल्द पहुंचे, सो राजा मुद्दत तक दक्षिणमें रहा, और वहीं वह नवें साल जुलूस जहांगीरी, विक्रमी १६७१ आषाढ शुक्ल १० [हि० १०२३ ता० ९ जमादि-युस्सानी = ई० १६१४ ता० १७ जुलाई] को बीमार होकर गुज़र गया, जिसके साथ साठ औरतें सती हुईं. इस राजाकी आदत, बर्ताव व इज़त वगैरहका हाल मआसिरुल-उमराके मुसन्निफ़ने उस ज़मानेकी किताबों वगैरहसे लेकर मुफ़स्सल लिखा है, जिसका ख़ुलासह नीचे लिखाजाता है -

"राजा मानसिंह बंगालेकी हुकूमतमें बड़ी सर्दारी और बहुत कुछ सामान रखता था, इसके कवि (१) के पास १०० हाथी थे, और नौकर, मोतबर सर्दार और सब सिपाह बेश क़रार दरमाहा दार रखता था, जिस ज़मानेमें दक्षिणकी मुहिम ख़ानिजहां लोदीके सुपुर्द हुई थी, तब उसके साथ १५ पंज हज़ारी, नक़्क़ारह और निशान वाले थे, जैसे ख़ान ख़ाना, राजा मानसिंह, मिर्ज़ा रुस्तम सफ़वी, आसिफ़ख़ां, जाफ़र, शरीफ़ अमीरुलउमरा वगैरह, और चार हज़ारीसे एक सदी तक एक हज़ार सात सौ मन्सब्दार मददको तईनात थे. जब बालाघाट मक़ामपर गल्लेके न मिलनेसे बड़ा अकाल पड़ा, जिसमें कि रुपयेका एक सेर आटा भी नहीं मिलता था, एक दिन राजाने सरे दर्बार खड़े होकर नर्मीसे कहा, कि अगर मैं मुसल्मान होता, तो हर रोज़ एक वक़ ख़ाना तुम्हारे साथ खाता, लेकिन् मैं बुड्ढा हूं, सो एक बीड़ी पानकी मेरी तरफ़से क़बूल करो. यह सुनकर सबसे पहिले ख़ानिजहांने सलाम करके कहा, "मुझे क़बूल है"

(१) यह शख़्स चारण हापा बारहठ था, जिसका ज़िक्र अबुल्फ़ज़्लने अक्बरनामहमें गुजरात की लड़ाईके वक़ किया है.

इसी तरह सबने कुबूल किया राजाने सौ रुपये रोजानह पज हजारीके हिसाबसे एक सदी तक सबका वजीफह मुकर्रर करदिया हर रात उसी कद्र रुपया थैलियोमे रखकर और उनपर उन शख्सोके नाम लिखकर हिस्से मुवाफिक हर एकको भेज देता था यह हाल तीन चार महीने, जब तक यह सफर पूरा न हुआ, रहा, राजाने कभी नागह न किया, और जब तक लश्करके लोगोको रसद मिलती, जिन्स भी निर्खके मुवाफिक अपने पाससे देता था कहते है, कि उसकी राणी रायकुवर बडी दाना और तद्वीर वाली थी; यह सारा सरजाम वही अपने वतनसे करके भेजती थी राजा सफरमे मुसल्मानोके वास्ते कपडेके हम्माम और मस्जिद बनवाकर खडे करवादेता था, और एक वक्तका खाना अपने पाससे सब साथियोको भेजता था"

"कहते है, कि एक दिन एक सय्यद और एक ब्राह्मण आपसमे अपने अपने दीनकी बडाईपर बहस करने लगे, और दोनोने राजाको मध्यस्थ मुकर्रर किया, राजाने कहा, कि अगर मै दीन इस्लामको अच्छा कहता हू, तो लोग कहेगे, कि बादशाही वक्तकी खुशामद से कहता है, और जो हिन्दुओके दीनको अच्छा कहता हू, तो तरफदारी समझी जायेगी जब दोनोने जियादह हठ की, तो राजाने कहा, कि मै जियादह तो नहीं कह सक्ता, परन्तु इतना जानता हू, कि हिन्दुओमे बहुत मुद्दतसे साहिबे कमाल मज्हबके पैदा होते है, जब वे मरे, जलादिये जाते है, और बर्बाद होजाते है, जब कभी कोई रातको वहा जावे, तो भूत, प्रेत वगैरह आसेबका डर पैदा होता है, और मुसल्मानोके हरएक कस्बोमे बहुतसे बुजुर्ग कब्रोमे है, जिनकी ज़ियारत कीजाती है, बरकत लीजाती है, और तरह तरहके जल्से होते है

बगाले जाते वक्त जब वह मुगेर पहुचा, तो वहा शाह दौलतकी खिद्मतमे, जो उस वक्त के बडे साहिबे कमाल थे, गया, शाह साहिब ने कहा, कि इतनी दानाई और शुऊरके उप्रान्त भी तुम मुसल्मान क्यो नही होजाते ? राजाने कहा, कि कुर्आन शरीफमे लिखा है, कि बहुतसोके दिलोपर अल्लाहकी छाप लगी है, (ختم الله على قلوبهم) जिससे ईमान नही लाते अगर आपकी कृपासे यह ताला मेरी छातीसे खुल जावे, तो मुसल्मान होजाऊ इस बातपर एक महीने तक राजा वहा ठहरा, परन्तु दीन इस्लाम उसके नसीबमे नही था, फायदह न हुआ"

इस राजाके डेढ हजार औरते, राणियां वगैरह थी, और हर एकसे दो दो तीन तीन लडके पैदा हुए, जो राजाके रूबरू ही मरगये, सिर्फ भाऊसिंह बाकी रहे थे.

राजा मानसिंह छोटे कद व काले रगके आदमी थे, और कुछ खूबसूरत न थे, इसपर एक कहावत मश्हूर है, कि एक दिन अक्बर बादशाहने पूछा, कि मानसिंह खुदाके यहां जिस वक्त नूर बटता था, तब तुम कहा रहगये ? राजाने कहा, कि हा हज्रत जहा अक्ल

और बहादुरी बटती थी, उसके लेनेमे फसगया मानसिह उदारतामे भी बडे मश्हूर हुए उनकी एक शादी बीकानेरके राजा रायसिहकी बेटीके साथ हुई थी, एक दिन महाराणी बीकानेरीने जल्सा किया, तब राजाने पूछा, कि आज तुमको किस बातकी खुशी है ? राणीने जवाब दिया, कि मेरे बापने करोड पशाव दिया है, जो आज तक किसी राजाने नही दिया यह बात सुनकर राजा चुप होरहे, और खानगीमे अह्ल-कारोको हुक्म दे दिया, कि फ़ज्रको छ करोड पशावका सामान और छ चारण हाजिर रहे अह्लकारोने हुक्मके मुवाफ़िक छ ही चारणोको मए बख्शिशके हाजिर किया, और महाराजाने उन छओको करोड पशाव देकर रोजमर्रहका मामूली काम काज किया शामके वक्त उन्ही बीकानेरी राणीके महलमे गये, तब राणीने शर्मिन्दह होकर कहा, कि आपसे तो बिह्तर नहीं, लेकिन् दूसरे राजाओसे तो मेरा बाप बढकर है इस इन्आमके बारेमे किसी मारवाडी शाइरने अपनी जबानमे एक छप्पय कहा था, जो नीचे लिखाजाता है –

छप्पय

पोळ पात हरपाल । प्रथम प्रभता कर थप्पे ॥
दळमे दासो नरू । सहोड घण हेत समप्पे ॥
ईसर कसनो अरघ। बडी प्रभता बाधाई ॥
भाई डूगर भणे । क्रीत लख मुखा कहाई ॥
अई अई मान उनमान पहो । हात धनो धन धन हियो ॥
सुरज घडीक चढता समो । दे छ कोड दातण कियो ॥ १ ॥

अर्थ– १– पहिला हरपाल हापावत बारहठ, जो उनके दर्वाजेपर नेग पाने वाला था, उसकी बडी इज्जत बढाई (कोट गाव दिया)

२– दासा खडिया, (जिसको गगावती गाव दिया)

३– नरू अलूओत कविया, (जिसको भैराणा दिया)

४– ईसर दास रतनू, (जिसको खेडी गाव मिला)

५– किसना (कृष्ण) भादा (जिसको कचोल्या गाव दिया)

६– डूगर कवियाको (डोगरी गाव मिला), जिसको भाईका खिताब था

इन छओकी औलाद् वालोके कब्जेमे ऊपर लिखे छ गाव मए उनकी दस्तावेजोके अब तक मौजूद हैं.

२६– मिर्ज़ा राजा भावसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६३३ आश्विन शुक्ल २ [हि० ९८४ ता० १ रजब =

ई० १५७६ ता० २६ सेप्टेम्बर] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १६७१ आषाढ शुक्ल १० [हि० १०२३ ता० ९ जमादियुस्सानी = ई० १६१४ ता० १६ जुलाई] को हुआ महाराजा मानसिंहके बाद उनके कुंवर जगत्सिंहके बडे बेटे महाराज महासिंह आंबेरके हकदार थे, परन्तु बादशाहने महाराजा मानसिंहके छोटे बेटे भावसिंहको राजा बना दिया, जिसका हाल खुद बादशाह जहांगीरने अपनी किताब तुज़ुक जहांगीरीके एष्ठ १३० मे इस तरहपर लिखा है -

"पांचवीं अमरदादको राजा मानसिंहके मरनेकी खबर पहुंची, यह राजा मेरे बापके मातहत बडे सर्दारोमेसे था, मैने कई दफा अपने जिन सर्दारोंको दक्षिणमे भेजा, उनमे यह राजा भी उसी नौकरीपर तईनात था, जब राजा उस जगह मरगया, तो मैंने उसके बेटे मिर्जा भावसिंहको बुलाया, जो शाहजादगीके दिनोंसे ही मेरी खिझत बहुत जियादह करता रहा था हिन्दुओंके रवाजके मुवाफिक रियासत और पाटवीका हक मानसिंहके बडे बेटे जगत्सिंहके कुंवर महासिंहका (जिसका बाप अपने बापकी जिन्दगी ही मे मरगया,) था, लेकिन् मैंने उसको मंजूर नही किया, और भावसिंहको मिर्जा राजा खिताब और चार हजारी जात तीन हजार सवारका मन्सब देकर उसके बुजुर्गोंकी जगह आंबेरका हाकिम बनाया महासिंहको खुश करनेके लिये पांच सदी मन्सब उसके पहिले मन्सबपर बढादिया, इन्आममे मांडूके इलाकहमे जागीर मुकर्रर करके कमरपटका, जडाऊ खन्जर, घोडा व खिल्अत उसके लिये भेजा"

राजा भावसिंह शराब जियादह पीते थे, जिनकी मौतका हाल तुज़ुक जहांगीरीके ३३७ एष्ठमे इस तरह लिखा है -

"हिज्री १०३१ सफर [विक्रमी १६७८ पौष = ई० १६२२ जैन्युअरी] मे अर्ज हुआ, कि दक्षिणके सूबहमे राजा भावसिंह बहुत शराब पीनेसे मरगया. वह शराबकी जियादतीसे बहुत कमजोर और दुबला होगया था, एक दिन गश (तान या तासीर) आनेसे एक रात व दिन बेहोश पडारहा, हकीमोंने बहुत कुछ इलाज किये, और सिरपर दाग भी दिया, परन्तु कुछ फ़ाइदह न हुआ, और वह मरगया उसके बडे भाई जगत्सिंह और भतीजे महासिंहने भी इसी मरजमे जान खोई थी, लेकिन् भावसिंहने उनके अहवालसे इब्रत न पकडी वह बहुत बहादुर, नेक और शायस्तह आदमी था. शाहजादगीके जमानेसे मेरी खिझतमे रहकर उसने पांच हजारी मन्सब पाया था. उसके कोई लडका नहीं था, जिससे उसके बडे भाईके पोतेको, जो थोडी उम्रका था, राजाका खिताब और दो हजारी जात व सवारका मन्सब दिया. आंबेर, जो उनका कदीम वतन है, जागीरमे बहाल रक्खा. भावसिंहके साथ दो राणियां और आठ सहेलियां सती हुईं"

भावसिंहका देहान्त विक्रमी १६७८ पौष शुक्ल १० [हि० १०३१ ता० ९ सफ़र = ई० १६२१ ता० २३ डिसेम्बर] को दक्षिणमे हुआ उनके कोई पुत्र नहीं था

———

२७- मिर्ज़ा राजा जयसिंह—१

इनका जन्म विक्रमी १६६८ आषाढ कृष्ण १ [हि० १०२० ता० १५ रबीउल्अव्वल = ई० १६११ ता० २९ मई] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १६७८ पौष शुक्ल १० [हि० १०३१ ता० ९ सफर = ई० १६२१ ता० २३ डिसेम्बर] को हुआ जब मिर्ज़ा राजा भावसिंहके कोई पुत्र नही रहा, तब राजा मानसिंहके पडपोते, जगत्सिंहके पोते और महासिंहके बेटे जयसिंहको आबेरकी गद्दी मिली, जैसा कि ऊपर लिखा गया है कुंवर जगत्सिंह, जो अपने बापके साम्हने मरगये थे, उनका जन्म विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] मे, और देहान्त विक्रमी १६५५ कार्तिक शुक्ल [हि० १००७ रबीउस्सानी = ई० १५९८ ऑक्टोबर] मे हुआ उनके बेटे महासिंहका जन्म विक्रमी १६४२ [हि० ९९३ = ई० १५८५] मे हुआ, जिनका हाल मआसिरुल उमरामे इस तरहपर लिखा है -

" महासिंह, जगत्सिंहका बेटा, जो राजा मानसिंहका पोता है, अपने बापके मरने बाद अपने दादाका काइम मकाम होकर बंगालेकी हुकूमतपर गया; पैतालीसवे जुलूस अक्बरीमे, जिन दिनो बंगालेके पठानोने फ़साद कर रक्खा था, वह कम उम्र था मानसिंहका भाई प्रतापसिंह काम चलाता था, उसने इस फसादको थोडासा जानकर पक्का बन्दोबस्त न किया, और एकदम भदरक मकाममे मुकाबलह कर बैठा, जिसमे पठान गालिब रहे; बहुतसे राजपूत मारे गये, और महासिंह ठहर न सका सैतालीसवे सन् जुलूसमे, जब जलाल गक्खड और काजी मोमिनने इलाकए बंगालामे फसाद मचाया, तो महासिंहने उन लोगोको सज़ा देनेमे खूब जुरुअत और मर्दानगी दिखलाई पचासवे साल जुलूसमे उसका मन्सब दो हजारी तीन सौ सवार किया गया "

" दूसरे सन् जुलूस जहांगीरीमे वह फौजके साथ बंगशकी मुहिमपर तईनात हुआ तीसरे साल जुलूसमे उसकी बहिनकी शादीके वास्ते अस्सी हज़ारका सामान भेजा गया, और वह बादशाही महलमे दाखिल हुई दादा राजा मानसिंहने उसके साठ हाथी जिहेजमे दिये पाचवे सन् जुलूसमे उसको निशान मिला इसी सालमे बांधूका राजा विक्रमादित्य बागी होगया, उसको सज़ा देनेके लिये यह

मुकर्रर हुआ नवे साल जुलूसमे राजा मानसिंहके मरनेपर उसने पाच सौ जात पाच सौ सवारकी तरक्की पाई, क्योंकि बादशाहकी भावसिंहपर बडी मिहर्बानी थी, जिसको उसकी कौमका बुजुर्ग बनाकर उसके बदलेमे इसके मन्सबपर पाच सदी जातका इजाफह किया, खिल्अत व खन्जर जडाऊ इसके वास्ते भेजा, और माडूमे जागीर इन्आमके तौर दी दसवे साल जुलूसमे राजाका खिताब पाया, और नक्कारह मिला ग्यारहवे साल जुलूसमे उसने पाच सौ जात व पाच सौ सवारकी तरक्की पाई. बारहवे साल जुलूस हिज्री १०२६ ता० ३ जमादियुस्सानी [वि० १६७४ ज्येष्ठ शुक्ल ४ = ई० १६१७ ता० ८ जून] को वह बालापुर, बरारके मुल्कमे मरगया उस का बेटा १ मिर्जा राजा जयसिंह था, जो राजा भावसिंहके मरने बाद आंबेरका राजा हुआ ''

जगत्सिंहका छोटा बेटा जुझारसिंह था, जिसकी औलादमे झलाय, साइबाड, बगडी और मूंडे वगैरहके जुझारसिंहोत कछवाहे कहलाते है

जब शाहजहा दक्षिणसे विक्रमी १६८५ [हि० १०३७ = ई० १६२८] मे अजमेर होता हुआ आगरेको बादशाह बननेके लिये जाता था, रास्तेमे राजा हाजिर हुआ, और आगरा पहुचने बाद महाबनका फसाद मिटानेके लिये उनको भेजा जब विक्रमी १६८६ चैत्र कृष्ण ६ [हि० १०३९ ता० २० रजब = ई० १६३० ता० ५ मार्च] को निजामुल्मुल्क वगैरहपर फौज कशी हुई, उसमे यह भी भेजेगये उस वक्त इनका मन्सब एक हजारकी तरक्कीसे चार हजारी चार हजार सवार कियागया था, और उस बडी फौजमे वह हरावल मुकर्रर हुए थे. विक्रमी १६८७ पौष कृष्ण ५ [हि० १०४० ता० १९ जमादियुल्अव्वल = ई० १६३० ता० २५ डिसेम्बर] को बीजापुरपर फौज गई, तो उसमे भी वह तईनात थे

विक्रमी १६९० ज्येष्ठ कृष्ण ३० [हि० १०४२ ता० २९ ज़ीकाद = ई० १६३३ ता० ८ जून] को हाथियोकी लडाईमेसे एक हाथीने शाहजादह औरंगजेबपर हमलह किया, इस राजाने पीछेसे पहुचकर हाथीके एक बर्छा मारा, जिससे वह चलदिया विक्रमी १६९० भाद्रपद कृष्ण ८ [हि० १०४३ ता० २२ सफर = ई० १६३३ ता० २९ ऑगस्ट] को बादशाहजादह मुहम्मद शुजाअके साथ, जो बहुतसी फौज समेत बीजापुर गया था, राजा जयसिंह भी थे. उन्होने वहाकी लडाइयोमे बडे बडे काम किये. विक्रमी १६९२ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १०४४ ता० १९ शव्वाल = ई० १६३५ ता० ८ एप्रिल] को जश्नके दिन उन्होने पाच हजारी जात पाच हजार सवारका मन्सब पाया, और विक्रमी १६९२ भाद्रपद शुक्ल १५ [हि० १०४५ ता० १४ रबीउस्सानी = ई० १६३५ ता० २७ सेप्टेम्बर] को दक्षिणसे बादशाहके पास

वापस आगये. विक्रमी १६९२ माघ कृष्ण ३ [हि० १०४५ ता० १७ शअ्बान = ई० १६३६ ता० २५ जैन्युअरी] को जब साहू और निज़ामुल्मुल्कके लोगोंने दक्षिणमें फ़साद उठाया, और उनको सज़ा देनेके लिये बीस हज़ारके करीब फ़ौज तईनात हुई, उसमें जयसिंह भी भेजदिये गये. बहुतसी लड़ाइयोंके बाद देवगढ़के क़िलेपर धावा हुआ, और कई सुरंगें लगाकर क़िलेके बुर्ज वगैरह उड़ादिये गये. एक बुर्जके गिरनेसे रास्तह होजानेपर सिपहदारख़ां और यह राजा अन्दर घुसगये, और बड़ी मर्दानगीके साथ दुश्मनोंको मारने बाद वहांके क़िलेदार देवाको ज़िन्दह पकड़कर क़िलेपर बादशाही अमल जमादिया. विक्रमी १६९३ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १०४६ ता० २५ शव्वाल = ई० १६३७ ता० २२ मार्च] को दक्षिणसे ख़ानदौरां अपने साथ इब्राहीम आदिलशाहके पोते इस्माईलको लेकर साथियों समेत बादशाहके पास आया, तो उस वक्त जयसिंहका मन्सब पांच हज़ारी पांच हज़ार सवार हुआ, और चाटसूका पर्गनह, खिल्अत, जड़ाऊ खपुवा फूलकटारा समेत इन्आममें मिला. इनको विक्रमी १६९४ वैशाख शुक्ल १५ [हि० १०४६ ता० १४ ज़िल्हिज = ई० १६३७ ता० ९ मई] को आंबेर जाकर कुछ दिनों आराम करनेकी रुख़्सत मिली. इनके मुल्कमें एक एक हज़ार रुपयेकी क़ीमतका घोड़ा पैदा होता था, इसलिये बीस घोड़ियां बच्चे लेनेके वास्ते साथ दीगई.

विक्रमी १६९४ फाल्गुन [हि० १०४७ शव्वाल = ई० १६३८ फेब्रुअरी] में बीस हज़ार फ़ौजके साथ शाहज़ादह शुजाअ् कन्धार भेजे गये, तो राजा जयसिंह उसके साथ थे. विक्रमी १६९६ वैशाख कृष्ण ११ [हि० १०४८ ता० २५ ज़िल्हिज = ई० १६३९ ता० २९ एप्रिल] को राजा जयसिंह, जो नौशहरेमें बादशाहज़ादह दाराशिकोहके पास था, रावलपिंडी मकामपर शाहजहांके काबुल जाते वक्त हुक्मके मुवाफ़िक़ उसके पास आगया. नौशहरेमें फ़ौजकी हाज़िरी होनेके वक्त राजाको बादशाहने एक घोड़ा और मिर्ज़ा राजाका ख़िताब, जो उनके बाप दादाको था, दिया; और काबुलसे वापस आजाने बाद विक्रमी १६९६ मार्गशीर्ष कृष्ण ३० [हि० १०४९ ता० २९ रजब = ई० १६३९ ता० २५ नोवेम्बर] को आंबेर जानेकी रुख़्सत और खिल्अत मिला. विक्रमी १६९७ फाल्गुन शुक्ल १३ [हि० १०५० ता० १२ ज़ीक़ाद = ई० १६४१ ता० २२ फेब्रुअरी] को वह वापस शाहजहांके पास गया. विक्रमी १६९८ चैत्र शुक्ल १० [हि० १०५० ता० ९ ज़िल्हिज = ई० १६४१ ता० २१ मार्च] को शाहज़ादह मुराद बख़्शके साथ राजा जयसिंहको काबुल जानेका हुक्म हुआ, और खिल्अत, मीनाकार जम्धर, फूलकटारा और घोड़ा सुनहरी सामान समेत इन्आममें मिला. विक्रमी १६९८ मार्गशीर्ष [हि० १०५१ रमज़ान

= ई० १६४१ डिसेम्बर] मे शाहजादह मुरादबख़्श सियालकोट होता हुआ जगत्सिंह की जागीर पीथानमे पहुचा, जो मऊसे तीन कोस है इस मकामसे जगत्सिंहके मुकाबलहपर सईदखां बहादुर जफ़रजंग, राजा जयसिंह और असालतखाको आगे भेजा. वहापर बहुतसी लडाइया हुई, और बहुतसे आदमी गनीमके मुकाबलहमे मारेगये, बाकी भागगये इन मारिकोमे राजाने बडी बहादुरी दिखाई, जिससे उसका मन्सब पाच हजारी जात पाच हजार सवार, दो हजार सवार दो अस्पह सेअस्पह किया गया विक्रमी १६९८ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १०५१ ता० २५ जिल्हिज = ई० १६४२ ता० २६ मार्च] को जगत्सिंहको गिरिफ्तार करके शाहजादह और उसके साथी बादशाहके पास चले आये

विक्रमी १६९९ चैत्र शुक्ल [हि० १०५२ मुहर्रम = ई० १६४२ एप्रिल] मे शाहजादह दाराशिकोहकी तय्यारी कन्धारपर जानेको हुई, तो राजा जयसिंह भी खिल्अत, जम्धर जडाऊ, फूलकटारा, घोडा और हाथी इन्आम पाकर उसके साथ तईनात हुए विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ शब्बान = ई० ता० १४ नोवेम्बर] को बादशाहने लाहौरसे अक्बराबाद आतेहुए राजा को खासह खिल्अत दिया विक्रमी १७०१ कार्तिक कृष्ण १ [हि० १०५४ ता० १५ शअ्बान = ई० १६४४ ता० १७ सेप्टेम्बर] को खानिदौरा नुस्रत जंग किसी ज़ुरूरतके सबब दक्षिणसे बादशाही दर्बारमे बुलायागया, राजा जयसिंहके नाम काइम मकाम काम करनेके लिये दक्षिण जानेका हुक्म हुआ; और उनके लिये दक्षिणमे विक्रमी १७०२ श्रावण कृष्ण २ [हि० १०५५ ता० १६ जमादियुल अव्वल = ई० १६४५ ता० १० जुलाई] को खिल्अत भेजा गया विक्रमी १७०३ आश्विन कृष्ण १३ [हि० १०५६ ता० २७ शअ्बान = ई० १६४६ ता० ८ ऑक्टोबर] को राजा जयसिंह, जो दक्षिणमे थे, बादशाहने पिशावरसे उनके बुलानेका हुक्म भेजा, और उनके बेटे रामसिंहको खिल्अत और घोडा सुनहरी सामान समेत देकर घर जानेकी रुख़्सत इनायत की विक्रमी १७०४ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १०५७ ता० २४ रबीउस्सानी = ई० १६४७ ता० २९ मई] को राजा जयसिंह हस्बुल्हुक्म दक्षिणसे वापस बादशाहके पास आगये.

विक्रमी आश्विन [हि० रमजान = ई० ऑक्टोबर] मे, जब बादशाही फ़ौज बल्ख और बदख़्शाका इलाकह दबाये हुए थी, राजा जयसिंह भी वहा पीछेसे भेजे गये दुरुस्त इन्तिजाम न होनेके सबब वह मुल्क वहाके पहिले बादशाह नजर मुहम्मदखाको वापस दियागया; और बादशाही चार करोड रुपया फ़ुजूल खर्च

पडा शाहजादह दाराशिकोहके मुल्क सौंपने बाद बादशाहजादह औरंगजेब फ़ौज लेकर अलीमर्दानखां, राजा जयसिंह, बहादुरखां, मोतमदखां, व एथ्वीराज समेत काबुलको लौटा रास्तहमें बर्फ़के पडने और लुटेरोंके हमलोंके सबब बहुत तक्लीफ़ पाई विक्रमी १७०७ [हि० १०६० = ई० १६५०] में जश्नके दिन इन्होंने आंबेर आनेकी रुख्सत ली, और इनके छोटे कुंवर कीर्तिसिंहको मेवातका इलाकह जागीरमें मिला, जहांके मेव लोग बडे सर्कश और लुटेरे थे कीर्तिसिंहने वहांका इन्तिजाम अच्छा किया विक्रमी १७०८ चैत्र कृष्ण २ [हि० १०६२ ता० १६ रबीउल्अव्वल = ई० १६५२ ता० २५ फेब्रुअरी] को बादशाहने सादुल्लाहखां वज़ीरको कन्धारपर भेजा, तो राजा जयसिंहको उस फ़ौजका हरावल अफ़्सर मुकर्रर किया विक्रमी १७१४ कार्तिक कृष्ण ६ [हि० १०६८ ता० २० मुहर्रम = ई० १६५७ ता० २७ ऑक्टोबर] को राजा जयसिंह एक हजारकी तरक्कीसे छ हज़ारी ज़ात छ हज़ार सवारका मन्सब पाकर सुलैमांशिकोहके साथ, जब कि शाहज़ादोंमें शाहजहांकी बीमारीसे तख़्तके दावेपर फ़साद उठा, बंगालेकी तरफ़ शुजाअ़पर भेजे गये इस मारिकेमें राजाने बडी बहादुरी दिखलाई, जिससे विक्रमी १७१४ चैत्र कृष्ण १२ [हि० १०६८ ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० १६५८ ता० २९ मार्च] को एक हजारकी तरक्कीसे सात हजारी सात हजार सवारका मन्सब हुआ, लेकिन् राजा औरंगजेबके गालिब होजानेसे विक्रमी १७१५ आषाढ शुक्ल ६ [हि० १०६८ ता० ५ शव्वाल = ई० १६५८ ता० ५ जुलाई] को सुलैमांशिकोहका साथ छोडकर मथुरामें उसके पास चले आये विक्रमी भाद्रपद कृष्ण २ [हि० ता० १६ ज़ीकाद = ई० ता० १४ ऑगस्ट] को औरंगजेबने दिल्लीसे लाहौर जाते हुए सिकन्दर बाडी मकामपर इनको एक करोड दाम (ढाई लाख रुपया) सालानह की जागीर दी औरंगजेबको इन महाराजाके मिलनेसे बडा फ़ाइदह हुआ, क्योंकि इनके समझानेसे बहुतसे हिन्दू राजाओंने दाराशिकोहका साथ छोडदिया बर्नियरने अपनी किताबमें औरंगजेब और महाराजा जयसिंहके मिलनेका जो हाल लिखा है, वह महाराणा जयसिंहके प्रकरणमें दर्ज किया गया है- (देखो एष्ठ ६८५) इन महाराजाने औरंगजेबको खुश करनेके लिये महाराजा जशवन्तसिंहको समझा बुझाकर जोधपुरसे बुलाया, और विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० ता० २५ ज़ीकाद = ई० ता० २३ ऑगस्ट] को पंजाबमें सतलजके किनारेपर औरंगजेबके पास हाज़िर किया

औरंगजेबने राजा जयसिंह और दिलेरखांको लाहौरकी तरफ़ इस मत्लबसे भेजा,

कि सुलैमाशिकोह, जो कश्मीरसे आता था, दाराशिकोहके शामिल न होजावे ये लोग विक्रमी भाद्रपद कृष्ण ३० [हि० ता० २९ जीकाद = ई० ता० २७ ऑगस्ट] को लाहोरमे पहुचे, कश्मीरके राजा राजरूपको व्यासा नदीपर विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ७ [हि० ता० ६ जिल्हिज = ई० ता० ३ सेप्टेम्बर] को औरंगजेबके पास लेआये विक्रमी १७१५ फाल्गुन शुक्ल १५ [हि० १०६९ ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १६५९ ता० ७ मार्च] को औरंगजेबने अजमेरमे दाराशिकोहसे लडाईके वक्त राजा जयसिंह और दिलेरखांको अपने हरावलका अफ्सर बनाया, जिन्होने बडी बहादुरीके साथ काम दिया इस राजाने जशवन्तसिंहको भी समझाकर दाराशिकोहसे अलग करदिया. जब दाराशिकोह अजमेरसे भागा, तब औरंगजेबने राजा जयसिंह और दिलेरखांको उसका पीछा करनेके लिये भेजा; उस वक्त राजाको खिल्अत, हाथी, तलवार और एक लाख रुपया नक्द इन्आम दिया इन लोगोने दाराशिकोहको अहमदाबाद और गुजरातकी तरफसे निकाल दिया, और कच्छके राव तमाची को मिला लिया, जो दाराका मददगार बनगया था जब दाराशिकोह कत्ल होचुका, तो पीछेसे विक्रमी १७१६ आश्विन कृष्ण ९ [हि० १०६९ ता० २३ जिल्हिज = ई० १६५९ ता० ९ सेप्टेम्बर] को इस राजाने आलमगीरके पास आकर एक हजार मुहर और दो हजार रुपया नज्र किया; बादशाहने खास खिल्अत, जडाऊ पहुची, एक हाथी, एक हथनी, चादीके जेवर और सुनहरी सामान समेत, और दो सौ घोडे इन्आममे दिये. विक्रमी १७१६ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि० १०७० ता० ४ रबीउलअव्वल = ई० १६५९ ता० १८ नोवेम्बर] को बयालीसवीं साल गिरहपर आलमगीरने राजा जयसिंहको एक लाख रुपया नक्द और इनके कुवर कीर्तिसिंहको जडाऊ सर्पेच और कामा पहाडीकी फौज्दारी दी. विक्रमी १७१७ आषाढ [हि० १०७० जीकाद = ई० १६६० जुलाई] मे राजाने एक लाख तीस हजार रुपये कीमतके हथियार व जवाहिर बादशाहको नज्र किये. विक्रमी १७१७ पौष शुक्ल ६ [हि० १०७१ ता० ५ जमादियुल अव्वल = ई० १६६१ ता० ६ जेन्युअरी] को इनके बडे कुवर रामसिंहने दाराके बेटे सुलैमाशिकोहको श्रीनगरके राजाकी मददसे गिरिफ्तार करलिया, जिसको आलमगीरने कैद करदिया यह बयान बादशाह आलमगीरके हालमे लिखागया है-(देखो पृष्ठ ६८९) फिर विक्रमी १७१८ ज्येष्ठ [हि० शुरू शव्वाल = ई० जून] मे इन राजाको पहिलेके सिवा ढाई लाख आमदनी की जायदाद और मिली

विक्रमी १७२० मार्गशीर्ष कृष्ण २ [हि० १०७४ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १६६३ ता० १६ नोवेम्बर] को राजा जयसिंह दिलेरखां समेत दक्षिणकी तरफ शिवा

मरहटेके मुकाबलहपर भेजेगये, जिसका हाल मुख्तसर तौरपर आलमगीर नामहसे यहां लिखाजाता है -

" हिज्री १०७५ जिल्हिज [वि० १७२२ आषाढ = ई० १६६५ जुलाई] मे राजा जयसिंह और दिलेरखाने दक्षिणमे बहुतसे किले और मकाम फत्ह करके वहांपर कब्जह करलिया, और शिवाको राजगढके किलेमे घेरलिया, तब वह भागकर शिवापुर गावमे जाछिपा, और उसने वहांके थानहदार सर्फराजखाकी मारिफत बादशाही ताबेदारीके इरादहसे राजाकी मुलाकात करनी चाही राजाने अपने मुन्शीको पेश्वाई के लिये भेजा, लश्करके भीतर राजाके फौजी बख्शी जानीबेगने पेश्वाई की, खेमेमे पहुचनेपर राजाने खडे होकर उसको अपने पास बिठाया शिवाने बडी लाचारीके साथ कुसूरोंकी मुआफी चाही, और कई किले सौंपनेपर बादशाही ताबेदारी इख्तियार की दिलेरखा और कीर्तिसिंहने किलेपर गोलन्दाजी बन्द की, और राजाकी दर्ख्वास्तपर बादशाही फ़र्मान और खिल्अत शिवाके लिये पहुंचा, जिसको उसने तीन कोस पेश्वाई करके लिया राजा और दिलेरखाने पैतीस किलोमेसे, जो निजामके इलाकेके उसने दबालिये थे, बारह किले एक लाख हौन (पाच लाख रुपये) जागीर के शिवाको छोडे, और तेईस किले, जिनकी जागीरी आमदनी दस लाख हौन (पचास लाख रुपया) थी, बादशाही कब्जहमे लिये शिवाका बेटा शम्भा, जिस की उम्र आठ वर्षकी थी, बादशाही नौकरोंके तौर राजाकी खिद्मतमे रक्खागया "

" हिज्री १०७६ रबीउल्अव्वल [वि० १७२२ भाद्रपद = ई० १६६५ ऑक्टोबर] मे बादशाहने राजा जयसिंहकी दर्ख्वास्तपर शिवाके बेटे शम्भाको पाच हजारी जात व सवारका मन्सब दिया शिवा, राजा जयसिंहके पास मुलाकातको बगैर हथियार आता था, इसलिये राजाने एक तलवार और जडाऊ जम्धर देकर उसको शस्त्र बाधनेकी इजाजत दी राजाने मए दिलेरखाके बीजापुरके इलाक़हमे पहुचकर उसको तबाह किया, तब आदिलखा (शाह) बीजापुरीने सुलह करना चाहा राजाके तसल्ली देने और समझानेसे शिवा, हिज्री १०७६ ता० १५ जीकाद [वि० १७२३ ज्येष्ठ कृष्ण १ = ई० १६६६ ता० १९ मई] को बादशाही दर्बारमे आगया, जिसकी कुवर रामसिंहने पेश्वाई करके बादशाहके साम्हने सलाम कराया, शिवाने डेढ हजार मुहर और छ हजार रुपया नज्र किया कुछ अरसह बाद वह पंज हजारियोंकी सफमे खडे रहनेको बेइज्जती समझकर शर्मसे भाग गया इस कुसूरमे बादशाहने जयसिंहके कुवर रामसिंहको मन्सबसे माजूल करके उसकी ड्योढी बन्द करदी "

इसका अस्ल मतलब यह था, कि शिवाको राजा जयसिंहने कस्मियह तसल्ली

देकर बादशाहके पास भेजा था, लेकिन् आलमगीर अपनी आदतके मुवाफिक दगाबाजीको काममे लाया, कि राजा शिवाको कैद करदिया, उसके भागजानेसे रामसिंहपर इल्जाम रक्खा अगर अस्लमे रामसिंहने ही शिवाको निकाल दिया हो, तो भी तअज्जुब नही, क्योंकि रामसिंहको उसके बापने लिखदिया होगा, कि बादशाह दगाबाजी करे, तो तुम खबरदार रहकर इसको बचाना यह बात फार्सी तवारीखोमे नही लिखी, लेकिन् जयसिंह चरित्र वगैरह जयपुरकी पुस्तकोमे साफ साफ मौजूद है, कि कुवर रामसिंहने शिवा राजाको निकाला, और शिवा राजाके जमाई नेतू (१) को राजा जयसिंहने एवजमे पकडकर बादशाहके पास भेजदिया राजा, बर्सात आजानेके सबब बीजापुरका फैसलह मुल्तवी रखकर औरगाबादमे चले आये कुछ दिनो बाद बादशाही फर्मान् पहुचा, कि शाहजादह मुअज्जम, जिसको औरगाबादकी सूबहदारी मिली थी, उसके वहा पहुचने बाद राजा यहा चला आवे

आलमगीर नामहमे लिखा है, कि बुर्हानपुरके वाकिअह नवीसोकी अर्जियोसे मालूम हुआ, कि राजा जयसिंह, जो औरगाबादसे हुक्मके मुवाफिक हुजूरमे आता था, बुर्हानपुरमे विक्रमी १७२४ श्रावण कृष्ण १४ [हि० १०७८ ता० २८ मुहर्रम = ई० १६६७ ता० १९ जुलाई] को बीमारीसे मरगया, और जयपुरकी पोथियोमे इनके मरनेका हाल इस तरहपर लिखा है, कि शिवा राजाके निकालनेके कुसूरमे आलमगीर, कुवर रामसिंहसे नाराज हुआ, और इसी सबबसे राजा जयसिंह और आलमगीरके दर्मियान रज बढतागया, जिससे वह खुद आलमगीरके पास आनेको रवानह हुआ; तब आलमगीरने अन्देशहके सबब बुर्हानपुरमे इस राजाको किसी खवासके हाथसे जहर दिलवाकर विक्रमी १७२४ आश्विन कृष्ण ६ [हि० १०७८ ता० २० रबीउल्अव्वल = ई० १६६७ ता० ८ सेप्टेम्बर] को मरवाडाला राजा जयसिंहका नाराज होकर दक्षिणसे आना तो फार्सी तवारीखोसे नही मालूम होता, लेकिन् जहरसे मरवाडालना आलमगीरकी आदतसे तअज्जुबकी बात नहीं है, क्योंकि उसने अपने भाइयोको बकरोकी तरह मरवाया, बापको कैद किया, और बडे बेटे सुल्तान मुहम्मदको सख्त कैदमे डाला, जिसकी बहादुरीसे उसको तख्त मिला था, और मीर जुम्लाके मरनेसे खुश हुआ, जो उसका दिली खैरख्वाह मददगार था

राजाके मरनेकी तारीखमे जयपुरकी पोथियो व फार्सी तवारीखोके देखनेसे पौने दो महीनेका फर्क मालूम होता है, और हमने जयपुरके मोतबर आदमियोसे दर्याफ्त किया, तो उनका बयान यह है, कि हमारे यहा उक्त महाराजाका सावत्सरिक

---

(१) आलमगीर नामहमें कुछ अरसह बाद इसका मुसल्मान होजाना लिखा है

श्राद्ध आश्विन कृष्ण ६ को होता है, इस सबबसे यह तिथि गलत नहीं होसक्ती आलमगीरनामहका मुसन्निफ भी उसी जमानेका आदमी है, जिसकी तहरीरको भी हम गलत नहीं कहसक्ते, अल्बत्तह आलमगीरनामहके लिखेजाने या छपनेमें गलती होगई हो, तो तअज्जुब नहीं हमको मरने वगैरहकी तिथियोंमें जयपुरकी पोथियों पर जियादह एतिबार है, क्योंकि उस समयसे आज तक जो सांवत्सरिक श्राद्ध होता चला आया है, उसमें मज़्हबी खयालसे फ़र्क नहीं होसक्ता

महाराजा जयसिंहके साथ एक राणी बीकावत, दो ख़वास और दो पातर कुल पांच सतियां हुईं

इनके बेटोंमेंसे इस वक्त रामसिंह और कीर्तिसिंह, जिसको कामां जागीरमें मिला, मौजूद थे यह महाराजा बुद्धिमान, बहादुर, फ़य्याज, मज़्हब व ईमानके सच्चे, और पोलिटिकल मुआमलात, याने राजनीतिमें बहुत होश्यार थे

२८- महाराजा रामसिंह-१

इन महाराजाका जन्म विक्रमी १६९२ द्वितीय भाद्रपद कृष्ण ५ [हि० १०४५ ता० १९ रबीउल्अव्वल = ई० १६३५ ता० १ सेप्टेम्बर] को, और राज्याभिषेक विक्रमी १७२४ आश्विन कृष्ण ६ [हि० १०७८ ता० २० रबीउलअव्वल = ई० १६६७ ता० ८ सेप्टेम्बर] को हुआ था जब बादशाह शाहजहां अजमेर आये, तब विक्रमी १६८९ [हि० १०४२ = ई० १६३२] में यह अपने बापके साथ बादशाही खिद्मतमें पहुंचे, और विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में बादशाह शाहजहांके लाहौरसे काबुलकी तरफ़ जानेके वक्त इनको पांच सौ सवारकी तरक्की और निशान मिला जिस वक्त बादशाह शाहजहांके बेटोंमें लड़ाइयां हुईं, उस समय महाराजा जयसिंह तो सुलैमानशिकोहके साथ बंगालेकी तरफ़ भेजेगये, और यह अपने भाई कीर्तिसिंह समेत दाराशिकोहके साथ थे

विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में यह सुलैमानशिकोहके लानेको श्रीनगरकी तरफ़ भेजेगये, सो वहांके राजासे मिलावट करके उक्त शाह-जादहको लेआये जब मरहटा राजा शिवाके भागजानेसे इनपर बादशाही नाराजमी हुई, तो इनका मन्सब जब्त और सलाम बन्द किया गया इनके बाप राजा जयसिंहके बुर्हानपुरमें इन्तिकाल होने बाद इन (कुंवर रामसिंह) को आगरेसे बुलाकर बादशाह आलमगीरने खिल्अत, जड़ाऊ जम्धर, मोतियोंकी कंठी, तलवार जड़ाऊ सामान समेत, अरबी घोड़ा सुनहरी सामान समेत, खासह हाथी ज़रदोज़ी झूल

और चांदीके जेवर समेत, चार हज़ारी ज़ात और सवारका मन्सब और राजाका खिताब दिया फिर विक्रमी १७२६ आषाढ शुक्ल १२ [हि० १०८० ता० ११ सफ़र = ई० १६६९ ता० ९ जुलाई] को आलमगीरने इन्हें एक हज़ारकी तरक्की देकर एक बडी फ़ौजके साथ आसामकी तरफ़, जहां कि फ़सादियोंने फ़ीरोज़खां थानेदारको मारडाला था, भेजा विक्रमी १७३१ आश्विन कृष्ण १० [हि० १०८५ ता० २४ जमादियुस्सानी = ई० १६७४ ता० २५ सेप्टेम्बर] को महाराजा रामसिंहके कुंवर कृष्णसिंह, आगरखां, व नुस्रतखां वगैरह समेत जमरूद और खैबरके पठानोंको सज़ा देनेके लिये भेजेगये, और विक्रमी १७३३ चैत्र कृष्ण १० [हि० १०८८ ता० २४ मुहर्रम = ई० १६७७ ता० २८ मार्च] को उस तरफ़की नौकरी बजा लाकर बादशाहके पास आने पर उनको चार महीनेकी रुख्सत घर जानेके लिये मिली

विक्रमी १७३९ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १०९३ ता० १३ रबीउस्सानी = ई० १६८२ ता० २३ मार्च] को वह किसी खानगी फ़सादमें लडकर मारेगये जयपुरकी ख्यातमें उनका बादशाही दक्षिणकी लडाईमें माराजाना लिखा है, लेकिन् फ़ार्सी तवारीखोंमें खानगी फ़सादके सबब माराजाना पाया जाता है कृष्णसिंहका जन्म विक्रमी १७११ द्वितीय भाद्रपद कृष्ण ९ [हि० १०६४ ता० २३ शव्वाल = ई० १६५४ ता० ५ सेप्टेम्बर] को हुआ था जयपुरकी ख्यात व जयसिंह चरित्रमें महाराजा रामसिंह (१) का काबुलकी तरफ़ भेजा जाना लिखा है, परन्तु फ़ार्सी तवारीखोंमें इनका पिछला हाल बहुत कम मिलता है इन महाराजाका देहान्त विक्रमी १७४६ आश्विन शुक्ल ५ [हि० ११०० ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १६८९ ता० १९ सेप्टेम्बर] को हुआ यह महाराजा बड़े बहादुर और सच बोलने वाले थे, इनको मज़्हबी तअस्सुब भी ज़ियादह था, अपने बाप दादोंके मुवाफ़िक मुसल्मानोंसे हिलमिलकर रहना नापसन्द करते थे, इसलिये आलमगीर इनसे खुश नहीं था राजा रामसिंहके बाद उनके पोते विष्णुसिंह आंबेरकी गद्दीपर बैठे.

२९- महाराजा विष्णुसिंह

इनका जन्म विक्रमी १७२८ [हि० १०८२ = ई० १६७१] में, और राज्याभिषेक विक्रमी १७४६ आश्विन शुक्ल ५ [हि० ११०० ता० ४ ज़िल्हिज = ई० १६८९ ता० १९

---

(१) यह वही रामसिंह है, जिनका हवाला महाराणा राजसिंहने अपने कागज़में दिया है, जो जिज़्यहकी बाबत आलमगीरको लिखा था— (देखो पृष्ठ ४६०)

सेप्टेम्बर] को हुआ था जब इनके दादा रामसिंहका इन्तिकाल हुआ, तब यह उन्हींके साथ (१) काबुलमे थे, वहा इनके नाम बादशाह आलमगीरका हुक्म पहुचा, कि हिन्दुस्तानमे सिनसिनीके जाटोने फसाद उठाया है, तुम वहा पहुचकर बन्दोबस्त करो तब वे रवानह होकर आबेर आये, और वहासे जाटोको सजा देनेके लिये गये इस मुहिमको तै करने बाद वे मुल्तानमे तईनात हुए, जहाके लोगोने बगावत कर रक्खी थी

विक्रमी १७४७ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ११०२ ता० १९ सफर = ई० १६९० ता० २१ नोवेम्बर] को, जब बादशाह दक्षिणमे थे, वहापर इनकी अर्जी इस मत्लबसे पहुची, कि विक्रमी १७४७ ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० ११०१ ता० ३ रमजान = ई० १६९० ता० ११ जून] को सक्खरकी गढी फत्ह होगई फिर उसी तरफ तईनात रहे विक्रमी १७५५ आश्विन कृष्ण ३० [हि० १११० ता० २९ रबीउलअव्वल = ई० १६९८ ता० ५ ऑक्टोबर] को शाहजादह मुअज्जमके साथ काबुलको गये, वहा पहुंचनेपर बगश वगैरह पठानोकी लडाईमे बडी दिलेरी और बहादुरीके साथ नौकरी दिखलाई, परन्तु ईश्वरेच्छासे विक्रमी १७५६ माघ कृष्ण ५ [हि० ११११ ता० १९ रजब = ई० १७०० ता० १० जैन्युअरी] को काबुलमे ही इनका इन्तिकाल होगया इनके दो बेटे, बडे जयसिह और छोटे विजयसिह थे, राजा भगवानदाससे लेकर विष्णुसिह तक जयपुरका मुल्की हाल तवारीखमे लिखने काबिल नही मिलता, क्यौ कि बादशाही नौकरीके सबब वतनमे रहनेकी फुर्सत उनको बहुत कम मिली, जो हालात बादशाही नौकरीमे रहनेके वक्त काबिल लिखनेके थे, ऊपर लिखेगये

३०- महाराजा सवाई जयसिह- २

इनका जन्म विक्रमी १७४५ मार्गशीर्ष कृष्ण ६ [हि० ११०० ता० २० मुहर्रम = ई० १६८८ ता० १४ नोवेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १७५६ [हि० ११११ = ई० १७००] के अखीरमे काबुलसे विष्णुसिंहके मरनेकी खबर आनेपर हुआ, और वह जल्दी ही आबेर से रवानह होकर दक्षिणमे आलमगीरके पास पहुचे वहा हाजिर होनेपर बादशाहने इनके दोनो हाथ पकडलिये, और कहा, कि अब तू क्या करसक्ता है ? राजाने जवाब दिया, कि अब मै सब कुछ करसक्ता हू, क्योंकि मर्द औरतका एक हाथ पकड़ता है, तो उसको बहुत कुछ इख्तियार देता है, और हुजूरने मेरे दोनो

(१) इनका काबुलमे होना जयपुरकी तवारीखोमे लिखा है

हाथ पकड लिये, जिससे यकीन है, कि मै सबसे बढकर हो गया तब बादशाहने खुश होकर कहा, कि यह बडा होशयार होगा, और कहा, कि इसको सवाई जयसिह कहना चाहिये (याने अव्वल जयसिहसै जियादह) इनका अस्ली नाम विजयसिह था, लेकिन् बादशाहने यह नाम इनके छोटे भाईको दिया, और इनका नाम सवाई जयसिह रक्खा मआसिरे आलमगीरीके ४२४ पृष्ठमे यह बयान इस तरह लिखा है -

" विजयसिह आवेरके भोमियेको उसका बाप मरजानेसे राजा जयसिहका खिताब और उसके भाईको विजयसिह नाम दियागया, उसको ५०० पाच सौ जात दो सौ सवारकी तरक्कीसे डेढ हजारी जात हजार सवारका मन्सब अता हुआ. "

इन महाराजाका जियादह हाल महाराणा अमरसिह दूसरे व सग्रामसिह दूसरे के जिक्रमे इनकी पॉलिसीके साथ लिखदिया गया है, इस वास्ते हम यहा वही हाल लिखते है, जो मआसिरुलउमरा वगैरह फार्सी तवारीखोमे दर्ज है, क्योंकि मुल्की हाल इनका ऊपर आचुका, दुबारह लिखना बे फाइदह होगा

जब ये आलमगीरके पास रहने लगे, तो दक्षिणमे किले खेलनाके फत्ह करनेको मुकर्रर हुए, वहा इनकी और इनके राजपूतोकी हमलहके वक्त बडी बहादुरी दिखलाई दी, जिससे आलमगीरने पाच सौ की तरक्कीसे दो हजारी जात व दो हजार सवारका मन्सब इनको दिया आलमगीरके मरने बाद ये राजा शाहजादह मुहम्मद आजमकी फौजमे थे, जब उसका आगरेके पास बहादुरशाहसे मुकाबलह हुआ, और आज़म मारा गया, (मआसिरे आलमगीरीमे लिखा है), उसी दिन वह बहादुरशाहके पास चला आया, इस वास्ते उस राजाकी बातका एतिबार न रहा इनका छोटा भाई विजयसिह, जो काबुलमे बहादुरशाहके साथ था, उसको बहादुरशाहने तीन हजारी जात और सवारका मन्सब देकर जयसिहके एवज आबेरका मालिक बनाना चाहा, और आबेरके खालिसहपर सय्यद हुसैन अलीको भेज दिया बहादुरशाह काम्बख्शकी लडाईपर दक्षिणको गये, तब यह राजा, जो बादशाहके हमराह थे, राजा अजीतसिह सहित नाराज होकर नर्मदा नदीसे लौट आये; और उदयपुर शादी करके जोधपुरको गये इनके दीवान रामचन्दने सय्यदोको आबेरसे निकाल दिया, और साभरके मकामपर सय्यद हुसैन अलीखा वगैरह इन दोनो राजाओसे लडकर मारे गये जब बहादुरशाह दक्षिणसे पीछा राजपूतानहमे आया, तो ये दोनो राजा खानखानाकी मारिफत बादशाहके पास हाज़िर होगये, बादशाह भी सिक्खोकी बगावतके सबब इनसे दर्गुजर करके लाहौरको चलेगये यह हाल महाराणा दूसरे अमरसिहके बयानमे मुफस्सल लिखा गया है-(देखो पृष्ठ ९२९)

बादशाह फर्रुखसियरने इनको राजाधिराजका खिताब दिया, जिसके पाचवे सन् जुलूस विक्रमी १७७२ [हि० ११२७ = ई० १७१५] मे चूडामणि जाटने

बगावत की, और उसपर इनको भेजा करीब था, कि चूडामणि बर्बाद होजावे, सय्यद अब्दुल्लाहखां वज़ीरने राजाधिराजसे दुश्मनीके सबब खानिजहां बारहको पीछेसे भेजकर बाला बाला सुलह करवाली यह बात राजाधिराजको बहुत नागवार गुजरी हुसैनअलीखां दक्षिणसे आया, तब उससे दबकर फ़र्रुखसियरने राजाधिराजको वतनकी रुख्सत देदी, और पीछेसे खुद बादशाह मारा गया. यह हाल महाराणा संग्रामसिंहके ज़िक्रमें लिखागया है- (देखो पृष्ठ ११४०)

मुहम्मदशाहके तख्तपर बैठने बाद राजा दिल्लीमें हाज़िर होगये, तो बादशाह बडी मिहर्बानीसे पेश आये फिर वह चूडामणि जाटपर तईनात किये गये, और जाटोंसे कुल इलाके छीन लिये विक्रमी १७८९ [हि० ११४५ = ई० १७३२] में मुहम्मदखां बंगशसे मालवेकी सूबहदारी उतरकर राजाधिराजको हासिल हुई विक्रमी १७९२ [हि० ११४८ = ई० १७३५] में इनकी दर्ख्वास्तसे खानिदौराकी मारिफ़त मालवेकी सूबहदारी बाजीराव पेश्वाको मिली

विक्रमी १७८४ श्रावण [हि० ११३९ ज़िल्हिज = ई० १७२७ जुलाई] में महाराजाने आंबेरके दक्षिणी तरफ अपने नामपर जयपुर शहरकी बुन्याद डाली, जिसके बाजार, गली कूचे, महल वगैरह सब लैन डोरीसे मापकर बनवाये गये इसके सिवा उन्होंने जयपुर व बनारस वगैरह कई शहरोंमें ग्रह नक्षत्र बेधनेके यन्त्र भी बनवाये इन महाराजाका देहान्त विक्रमी १८०० आश्विन शुक्ल १४ [हि० ११५६ ता० १३ शअ्बान = ई० १७४३ ता० २२ सेप्टेम्बर] को खून बिगडजानेकी बीमारीसे बहुत तक्लीफ़के साथ हुआ ये राजा बहुत बुद्धिमान, इल्मको तरक्की देनेवाले, विद्वानोंके परीक्षक, राजनीतिके पूरे पक्के और अपनी रियासतको तरक्की देनेवाले हुए, इनकी अक्लमन्दी व होश्यारीका सुबूत जयपुरका शहर मौजूद है, जो उन्होंने अपनी तज्वीजसे आबाद किया "भूगोल हस्तामलक" में बाबू शिवप्रसादने एक इटॅलियन इन्जिनिअरकी सलाहसे यह शहर आबाद कियाजाना लिखा है, अगर ऐसा भी किया, तो भी उनकी बुद्धिमानीमें कमी नहीं आसक्ती, क्योंकि यूरोपियन लोग जो उस समय हिन्दुस्तानमें थे, उनमेंसे किसीने ऐसा नामवरीका काम नहीं किया

इसके सिवा जयपुरकी इतनी बडी रियासत, जो अब मौजूद है, उसको उन्हींकी बुद्धिमानीका फल कहना चाहिये, क्योंकि राजा भारमल्लसे पहिले तो कुछ बडा इलाकह उनके कब्जहमें नहीं था, राजा भगवानदाससे विष्णुसिंह तक ये लोग बादशाही मिहर्बानी और नवाजिशसे बडे अमीर होकर दूरके मुल्कोंमें जागीरें तथा सूबहदारियां पाते रहे, जो बदलती रहीं, परन्तु मौरूसी मुल्कमें बडे हिस्सेपर महाराजाधिराज बनना इन्हींका काम था राजाओंके चार अंग- साम, दाम, दंड और भेद,

सब इनमे मौजूद थे, जिनकी राजनीतिके लिये राजाओंको बहुत ज़रूरत है बूंदीके मिश्रण सूर्यमल्लने अपने ग्रन्थ वंशभास्करमे बुधसिंह चरित्रके पृष्ठ १०० मे इनकी दस बाते अनुचित लिखी है, जिसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है -

जो निज धरम रच्यो कूरम हिय । क्यो तब कर्म अधर्म इते किय ॥
हन्यो प्रथम सिवसिंह स्वीय सुत । जोहु तास जननी निज तिय जुत ॥
पुनि जननी निज स्वर्ग पठाई । भट बर विजयसिंह बलि भाई ॥
पुनि भानेज सत्य जो होतो । अरु असत्य सिसु होतउसो तो ॥
पुनि संग्राम रामपुर स्वामी । हन्यो दगा रचि होय हरामी ॥
सत्त अठ्ठ सत्रह १७८७ मित संवत । तेरह लक्ख १३००००० साह रुप्पय तत ॥
लै अरु कितव मिल्यो मर हठ्ठन । सो मुल्यो न अबलग अधर्म सन ॥
साह तास बिस्वास हि रक्खै । यह तउ मन्त्र दक्खिनिन अक्खै ॥

अर्थ - जो कछवाहेके दिलमे राजपूतोंका धर्म माना गया, तो इतने बुरे काम क्यों किये - पहिले अपने बेटे शिवसिंहको मारा, अपनी राणी शिवसिंहकी माको मारा, अपनी माताको मारा, और अपने छोटे भाई विजयसिंहको मारा, अपने भानूजे राव राजा बुद्धसिंहके बेटेको मारा, रामपुराके राव संग्रामसिंह चन्द्रावतको दगासे मारा, और संवत् १७८७ में तेरह लाख रुपये बादशाहसे लेकर मरहटोंसे मिल गया, बादशाह उसपर एतिबार रखता था, और वह पोशीदह सलाह मरहटोंसे करता था

३१ - महाराजा ईश्वरीसिंह

इनका जन्म विक्रमी १७७८ फाल्गुन् शुक्ल ८ [हि० ११३४ ता० ७ जमादि-युल अव्वल = ई० १७२२ ता० २२ फेब्रुअरी] रविवारको हुआ था जब महा-राजा सवाई जयसिंहका देहान्त हुआ, तब इनको गद्दी मिली; परन्तु अपने छोटे भाई माधवसिंहका खौफ़ था, कि वह ज़रूर राज्यका दावा करेगा, इस वास्ते ये दिल्ली पहुंचे, और बादशाहसे अपने बापका खिताब, मन्सब, और जयपुरकी गद्दीका फ़र्मान हासिल किया पीछेसे माधवसिंहके मददगार मरहटो और महाराणाकी फौजे ढूंढाडमे पहुंची; यह सुनकर ईश्वरीसिंह दिल्लीसे एकदम जयपुर पहुंचे, और अपने सर्दारोंके शामिल होकर लडाईपर आये, जहा मरहटोंको लालच देकर कामयाब होगये यह हाल पहिले लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १२३२) इसी तरह इनकी दूसरी लडाइयां भी, जो मेवाड और मरहटोंके साथ हुई थीं, महाराणाके जिक्रमे लिख दीगई

इस वास्ते दोबारह लिखना बे फ़ाइदह होगा, महाराणा जगत्सिंहका बयान पढनेसे पाठक लोगोंको इनका कुल हाल मालूम होजायगा

विक्रमी १८०४ [हि० ११६० = ई० १७४७] मे, जब अह्मदशाह अब्दाली हिन्दुस्तानपर चढ आया, तब मुहम्मदशाहने अपने शाहजादहके साथ महाराजा ईश्वरीसिंहको भी मुकाबलहके लिये मए बडी जमइयतके भेजा था फ़ार्सी तवारीख़ वाले इस लडाईका हाल इस तरह लिखते है, कि "दुर्रानी शाहसे मुकाबलेके वक्त राजा मए अपने राजपूतोंके जाफ़रानी (केसरिया) पोशाक पहिने तय्यार था, जिसको राजपूत लोग लडाईके वक्त पहनकर पीछे हर्गिज नही हटते, लेकिन् वह मुकाबलह होते ही भाग गया "

इस भागनेका सबब भी यही था, कि राजाको उस वक्त ख़बर लगी, कि माधवसिंहकी हिमायती फ़ौजे जयपुरके मुल्कमे आपहुची है, इस वास्ते उनको लाचार लडाई छोडकर आना पडा, आख़िरकार यह महाराजा विक्रमी १८०७ पौष कृष्ण १२ [हि० ११६४ ता० २६ मुहर्रम = ई० १७५० ता० २५ डिसेम्बर] को जहर खाकर मरे (१) इनके मरनेका हाल भी ऊपर लिखा गया है- (देखो पृष्ठ १२४०) यह महाराजा बडे बहादुर और फ़य्याज थे, लेकिन् लोगोंके बहकानेसे बेजा काम भी कर बैठते; आख़िर ऐश व इश्रतमे जियादह पडगये, इसीके तुफ़ैल उनकी जान भी गई, और वे अपनी बदनामीका निशान "ईशर लाट" नाम मीनार बाकी छोडगये महाराजा सवाई जयसिंहने तो इनकी मज्बूतीका सामान बहुत कुछ किया था, लेकिन् परमात्मा को यह मन्जूर था, कि माधवसिंह भी जयपुरका महाराजा कहलावे

३२- महाराजा माधवसिंह -१

इनका जन्म विक्रमी १७८४ पौष कृष्ण १२ [हि० ११४० ता० २६ रबीउस्सानी = ई० १७२७ ता० ९ डिसेम्बर] को हुआ, और जयपुरकी गद्दीपर विक्रमी १८०७ पौष शुक्ल १४ [हि० ११६४ ता० १३ सफ़र = ई० १७५१ ता० १० जैन्युअरी] को बैठे जब महाराजा ईश्वरीसिंहका इन्तिकाल हुआ, तब यह उदयपुर मे थे, इनके वकील कायस्थ कान्हने ख़बर भेजी, जो मल्हार राव हुल्करकी फ़ौजमे था यह हाल हम महाराणाके जिक्रमे ऊपर लिख आये है- (देखो पृष्ठ १२४०)

महाराजाने जब हुल्कर व सेंधिया वगैरह मरहटोंको रुख़्सत करके अपना और अपनी रअय्यतका पीछा छुडाया, तब उनको अपनी जानकी फ़िक्र पडी, जो लोग महाराजा ईश्वरीसिंहसे बदलकर इनके ख़ैरख़्वाह बने थे, उनका एतिबार जाता रहा, कि ये

(१) वंशभास्करमे पौष कृष्ण ९ लिखा है

लोग जैसे उनसे बदले, उसी तरह मुझसे भी किसी वक्त बेईमानी करे, तो तअज्जुब नहीं, इस वास्ते पहिले तो अपने खाने पीने और पहननेके कामोंपर अपने एतिबारी आदमी मुक़र्रर किये, जो उदयपुरसे इनके साथ आये थे, और उन्हीं लोगोंकी औलाद जयपुरकी रियासतमें खानगी कारखानोंपर आज तक मुक़र्रर हैं, इनमें जियादह पल्लीवाल ब्राह्मण हैं, जो उदयपुरके राज्यमें बड़ा प्रतिष्ठित खानदान इन ब्राह्मणोंका है

इन महाराजाने राज्यका प्रबन्ध अच्छी तरह किया, वे विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] में दिल्लीको गये, वहांसे फ़र्मान व खिल्अ़त वगैरह हासिल करके जयपुर आये, और बाज़े कामोंके लिये अपने दीवान हरगोविन्द नाटाणीको दिल्ली छोड़ आये थे, जब वह दीवान दिल्लीसे फिरा, तो रास्तेमें मरहटोंने आ घेरा, जिसके साथ बूंदीका माधाणी हाड़ा भगवन्तसिंह था, लेकिन् दीवान मरहटोंको शिकस्त देकर जयपुर चला आया

कुछ अरसहके बाद मल्हार राव हुल्कर जयपुरके इलाक़हपर चढ़ आया, क्योंकि उसको रामपुरा और पर्गनह टौंक महाराजाने देनेका पूरा इक़ार करलिया था, परन्तु वे उसके क़ब्ज़हमें नहीं आये विक्रमी १८१५ वैशाख [हि० ११७१ रमज़ान = ई० १७५८ मई] में हुल्करकी चढ़ाईसे ख़ौफ़ खाकर महाराजाने रामपुरा व टौंक वगैरह चारों पर्गने मए ११००००० रुपयेके देकर इस बलाको टाला इसी सालके पौष शुक्ल पक्ष [हि० ११७२ जमादियुलअव्वल = ई० १७५९ जैन्युअरी] में रणथम्भोरका किला बादशाही आदमियोंसे जयपुरके क़ब्ज़हमें आया यह किला विक्रमी १६२५ [हि० ९७६ = ई० १५६८] में मेवाड़के मातहत किलेदार बूंदीके राव सुरजण हाड़ासे बादशाह अक्बरने छीन लिया, तबसे मुग़ल बादशाहोंके क़ब्ज़हमें रहा, शाहजहां बादशाहने राजा विट्ठलदास गौड़को जागीरमें दिया था, जिसका हाल बादशाहनामहमें लिखा है; जब उसकी औलादमें कोई लाइक़ आदमी न रहा, तब बादशाह आलमगीरने इस किलेको फिर ख़ालिसहमें रक्खा महाराजा सवाई जयसिंहने इस किलेको अपने क़ब्ज़ेमें लानेके लिये बहुतसी कोशिशें कीं, लेकिन् उनकी मुराद हासिल न हुई मुहम्मदशाह जब महाराजा ईश्वरीसिंहको अहमदशाह दुर्रानीकी लड़ाईपर भेजने लगे, तब राजाने इस किलेके मिलनेकी दर्ख्वास्त की, जिसको ख़ानदान आलमगीरी व मिरातिआफ़्ताब नुमामें इस तरह लिखा है -

" जब कि अहमदशाह दुर्रानीने पंजाबका इलाक़ह दबालिया, तब मुहम्मदशाह बादशाहने मुक़ाबलहके लिये शाहज़ादह अहमदशाह, ज़ुल्फ़िक़ारजंग और राजा ईश्वरीसिंहको रवानह किया राजाकी ख़्वाहिश थी, कि अगर किला रणथम्भोर हुज़ूरसे इनायत हो, तो लड़ाईमें बहुत अच्छी ख़िद्मत अदा कीजावे; लेकिन् नव्वाब क़मरुद्दीनख़ां

वज़ीर और सफ़्दर जगने यह बात मन्ज़ूर न की, और राजाके वकीलको सख़्तीसे जवाब दिया, कि यह हर्गिज़ नहीं होसक्ता, राजा लाचारीसे साथ चलागया लड़ाईके मौकेपर नव्वाब कमरुद्दीनखां, नव्वाब सफ़्दर जंग, नव्वाब जुल्फ़िकार जंग और राजा ईश्वरीसिंहने ईरानियोंसे मुकाबलह किया, राजा अपने राजपूतों समेत, जो केसरिया लिबास पहने हुए थे, राजपूतोंकी रस्मके ख़िलाफ़ अव्वल हमलहमें अपने वतनकी तरफ़ भाग गया इस वक्त सादुल्लाहखां और राजा बख़्तसिंह (राठौड़) शामिल नहीं थे"

इस तरहकी ख्वाहिशोंके होनेपर भी जो किला राजा माधवसिंहके बुज़ुर्गोंको नहीं मिला, वह मरहटोंके दबावसे सहजमें इनके कब्ज़हमें आगया. जब पेश्वाके मुलाज़िमोंने इस किलेको लेना चाहा, तीन साल तक मुकाबलह रक्खा, परन्तु शाही मुलाज़िमोंने उनको दख़्ल न दिया, आख़िर फ़ौजकी कमी और नाताकतीके सबब राजा माधवसिंहको किला सुपुर्द करनेके इरादेसे खंडारके किलेदार पचेवरके ठाकुर अनूपसिंह खंगारोतको बुलाकर किला सुपुर्द करदिया, और वे लोग दिल्ली चलेगये; महाराजाकी फ़ौजने मरहटोंको वहांसे हटा दिया, और ख़ुद महाराजा रणथम्भोर पहुंचे, क़िलेका सामान दुरुस्त करके उसके करीब जयपुरके तर्ज़पर एक शहर अपने नामपर आबाद किया, जो माधवपुर मश्हूर है यह सुनकर पेश्वाने नाराज़गीसे गंगाधर तांतियाको जयपुर वालोंसे किला रणथम्भोर छीन लेनेके लिये विक्रमी १८१६ मार्गशीर्ष [हि० ११७३ रबीउस्सानी = ई० १७५९ नोवेम्बर] में भेजा, ककोड़ गांवके पास महाराजाकी फ़ौजसे मुकाबलह हुआ इस लड़ाईमें ठाकुर जोधसिंह नाथावत चौमूंका और बगरूका ठाकुर गुलाबसिंह चतुरभुजोत, दोनों अच्छी तरह लड़कर मारेगये, और गंगाधर तांतिया ज़ख़्मी होकर भागा, दोनों तरफ़के पांच सौ आदमी काम आये

दोबारह मल्हार राव हुल्कर ढूंढाड़पर चढ़ा, जिसने पहिले उणियाराके राव सर्दारसिंहको आ दबाया; उसने कुछ भेट देकर नर्मीसे अपना पीछा छुड़ाया. फिर बरवाड़ासे कछवाहोंको निकाल दिया, और राठौड़ जगत्सिंहको बिठाया, जिससे पहिले कछवाहोंने यह ठिकाना छीन लिया था. हुल्करको इस जगह यह ख़बर मिली, कि अहमदशाह अब्दाली हिन्दुस्तानकी तरफ़ आता है, इससे वह जयपुरकी लड़ाई छोड़कर दिल्लीकी तरफ़ चला, रास्तेमें चाटसू वगैरह कई कस्बे लूट लिये, महा-राजाने सब्र किया; लेकिन् दक्षिणियोंके जाने बाद उणियाराके रावको जा दबाया, इस वजहसे कि उसने हुल्करसे मिलावट करली थी मरहटे दूसरी तरफ़ फंस रहे थे, इसलिये राजपूतानहकी तरफ़ ज़ियादह ज़ोर नहीं डाल सके, परन्तु एक दूसरा फ़साद खड़ा हुआ, जिसका हाल इस तरहपर है -

भरतपुरके महाराजा जवाहिरसिंहके छोटे भाई नाहरसिंहने वहांका राज तक्सीम

करनेके इरादेसे मरहटोंकी मदद लेकर अपने बड़े भाईके साथ मुकाबलह किया, परन्तु वह शिकस्त खाकर दक्षिणकी तरफ़ चलागया कुछ अरसह बाद नाहरसिंह, जयपुर के महाराजा माधवसिंहके पास आ रहा, तब उसकी औरत और अस्बाबको जवाहिरसिंहने तलब किया महाराजा माधवसिंहने उस औरतको (१) जानेके लिये कहा, लेकिन् उसने बिल्कुल इन्कार किया, और ज़ियादह कहागया, तो उसने ज़हर खा लिया यह बात जयपुर और भरतपुरकी रियासतोंके लिये बारूदमें चिन्गारी होगई

इसके बाद कामाका पर्गनह, जो जयपुरके राज्यमें था, महाराजा जवाहिरसिंहने दबा लिया यह बात महाराजा माधवसिंहको नागुवार गुज़री जवाहिरसिंह, जोधपुरसे इत्तिफ़ाक़ करनेके इरादेसे विक्रमी १८२४ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० ११८१ ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १७६७ ता० ५ नोवेम्बर] को पुष्कर स्नान करनेको आया, और जोधपुरसे महाराजा विजयसिंह भी आमिले, दोनों पगड़ी बदल भाई बनकर आपसके नफ़ा नुक्सानमें शरीक होगये महाराजा विजयसिंहने अपना मोतमद भेजकर महाराजा माधवसिंहको कहलाया, कि आप भी पुष्कर आइये, ताकि एक मत होकर मरहटोंको नर्मदा उतार देवें, आप सूबह मालवा लेलीजिये, गुजरात पर हम क़ब्ज़ह करलेवें, और अन्तरबेदकी तरफ़ जवाहिरसिंह अपनी अमल्दारी बढ़ावे माधवसिंहने ख़याल किया, कि हमको जाट जवाहिरसिंहसे लड़ाई करना है, इस वास्ते महाराजा विजयसिंहको जुदा करना चाहिये, वर्नह दो ताक़तोंका तोड़ना मुश्किल होगा; उन्होंने अपने मोतमदको पुष्कर भेजकर महाराजा विजयसिंहसे कहलाया, कि मैं बीमार हूं, इस सबबसे नहीं आसक्ता, वर्नह आपकी सलाहसे हम जुदे नहीं हैं

उस एल्चीने जवाहिरसिंहसे लड़ाई न करनेका पक्का इक़ार करलिया था, तो भी महाराजा विजयसिंहने साथ होकर भरतपुर तक पहुंचानेका इरादह किया; परन्तु जवाहिरसिंहने इन्कार करके कहा, कि 'क्या मक्दूर है जयपुरका, जो हमारे साम्हने आवे?'' इसपर भी अजमेर ज़िलेके गांव देवलिया तक ख़ुद विजयसिंह साथ रहा, और महता मनरूप और सिंगवी शिवचन्दको ३००० फ़ौज समेत जवाहिरसिंहके साथ दिया जयपुरमें महाराजा माधवसिंहने अपने सर्दारोंको एकट्ठा करके कहा, कि मैं "बीमार हूं, इसलिये कामाका पर्गनह छोड़ देना चाहिये, जो जवाहिरसिंहने लेलिया है " तब धूलाके

---

(१) बूंदीके ग्रन्थ वंशभास्करमें लिखा है, कि यह औरत बहुत ख़ूबसूरत थी, जिसको जवाहिरसिंह चाहता था, इसी भयसे उस औरतने इन्कार किया, और आख़िरको ज़हर खाकर मरगई

ठाकुर दलेलसिंहने कहा, कि जब तक एक भी कछवाहा जीता है, तब तक यह बात हर्गिज न होसकेगी इसी तरह दीवान हरसहाय और बख्शी गुरसहायने भी जवाब दिया तब यह विचार हुआ, कि सावर गावके पास लडाई कीजावे, जिसपर ठाकुर दलेलसिंहने जवाब दिया, कि वहा राठौड शरीक होजावेगे, इस वास्ते आगे पहुचने पर मुकाबलह किया जावे, पाच हजार फौज उदयपुरकी और तीन हजार बूदीकी तो जयपुर व आंबेरकी हिफाजतके लिये महाराजाने अपने पास रक्खी, और साठ हजारके करीब फौज लडाईके लिये तय्यार करके रवानह की, जिसमे दीवान हरसहाय व बख्शी गुरसहाय और ठाकुर दलेलसिंह वगैरह मुसाहिब थे तवरोकी जागीरके गाव मावडाके पास राजपूतोने जवाहिरसिंहको जा घेरा, और दोनो तरफसे बडी सख्त लडाई हुई इस लडाईमे शिमरू फरंगी जवाहिरसिंहके तोपखानहके अफ्सरने बहुत गोले बरसाये, लेकिन् गोश्तकी दीवारका टूटना मुश्किल होगया; शैखावत राजसिंह और भोपालसिंह, जो महाराजा माधवसिंहसे रंजीदह थे, किनारा करगये, परन्तु दूसरे कछवाहोने बडी बहादुरीके साथ लडाई की, जाटोने भी कमी न रक्खी, परन्तु आखिरकार जवाहिरसिंह भागकर शिमरूकी मददसे भरतपुर पहुंचा

जयपुरके सर्दारोमेसे दीवान हरसहाय खत्री, बख्शी गुरसहाय खत्री, धूलाका ठाकुर दलेलसिंह, दलेलसिंहका छोटा बेटा लक्ष्मणसिंह, सावलदास शैखावत, गुमानसिंह, सीकर राव शिवसिंहका छोटा बेटा बुद्धसिंह, धानूताका ठाकुर शैखावत शिवदास, शैखावत रघुनाथसिंह, ईटावाका नाहरसिंह नाथावत वगैरह, हजारो आदमी काम आये, और दूसरी तरफके बहुतसे लोग इसी तरह मारे गये

जवाहिरसिंहका डेरा, अस्बाब व तोपखानह जयपुरकी फौजने लूट लिया महाराजा माधवसिंह, जो बीमारीकी हालतमे थे, यह खबर सुनकर बहुत खुश हुए, और बूदीके कुवर अजीतसिंहको व मेवाडकी फौजको कुछ दिनो मिह्मान रखकर मुहब्बतके साथ रुख्सत किया, लेकिन् महाराजाकी बीमारी दिन बदिन बढती जाती थी, यहातक कि वे विक्रमी १८२४ चैत्र कृष्ण २ [हि० ११८१ ता० १६ शव्वाल = ई० १७६८ ता० ४ मार्च] को इस दुन्याको छोड गये

जोधपुरकी तवारीखमे फाल्गुन् शुक्ल १५ और जयपुरकी ख्यातमे कही कही चैत्र कृष्ण ३ भी लिखी है, परन्तु वंशभास्करमे विक्रमी १८२५ चैत्र शुक्ल १५ [हि० ११८१ ता० १४ जिल्काद = ई० १७६८ ता० २ एप्रिल] लिखी है, जिससे एक महीनेका फर्क मालूम होता है हमारे विचारसे मिश्रण सूर्यमल्लने फाल्गुन् शुक्ल १५ के एवज भ्रमसे चैत्र शुक्ल १५ लिखदिया होगा, और कर्नेल् टॉड व डॉक्टर स्ट्रैटनने अपनी किताबोमे लिखा है, कि जाटोकी लडाईके चार दिन बाद महाराजा माधवसिंहका देहान्त होगया. यह बात गलत मालूम

होती है, क्योंकि महाराजा जवाहिरसिंह कार्तिक शुक्ल १५ को पुष्कर स्नानके लिये गये थे, और इस लड़ाईका होना वंशभास्कर वगैरह किताबोंसे हेमन्त ऋतु (सर्द मौसम) में लिखा है, और महाराजा माधवसिंहका देहान्त फाल्गुन् शुक्ल १५ के लगभग हुआ, जिससे लड़ाई पौषमें और देहान्त उसके दो महीने बाद होना पाया जाता है.

यह महाराजा पुष्ट शरीर, हसमुख, मझोला कद, गेहुवा रंग, और मिलनसार थे. वह पोलिटिकल् याने राजनीतिके विषयमें अपने पितासे कम न थे. उनका देहान्त होनेके पांच महीने बाद भरतपुरके महाराजा जवाहिरसिंह भी मरगये, जिससे दोनों तरफ़की दुश्मनी ठंडी हुई. महाराजाके दो कुंवर बड़े पृथ्वीसिंह और छोटे प्रतापसिंह थे.

३३- महाराजा पृथ्वीसिंह

इनका जन्म विक्रमी १८१९ माघ कृष्ण १४ [हि० ११७६ ता० २८ जमादियुस्सानी = ई० १७६३ ता० ३ जैन्युअरी] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८२४ फाल्गुन् शुक्ल १५ अथवा चैत्र कृष्ण ३ को हुआ. महाराजा सवाई जयसिंहने उदयपुरकी हिमायतको नर्म करनेके मत्लबसे अपने बड़े पुत्र ईश्वरी-सिंहकी एक शादी तो महाराणा जगत्सिंहकी कुमारी सौभाग्यकुंवरके साथ और दूसरी सलूंबरके रावत् केसरीसिंहकी कन्यासे की थी, जो कृष्णावतोंका सरगिरोह था, और इसी विचारसे सांगावतोंके सरगिरोह देवगढ़के रावत् जशवन्तसिंहकी बेटीके साथ माधवसिंहकी शादी हुई, जिसके पेटसे दो महाराजकुमार पैदा हुए, उनमेंसे बड़ा पृथ्वीसिंह पांच वर्षकी उम्र वाला जयपुरकी गद्दीपर बैठा. इस राजाके नाबालिग होनेके सबब जनानी ड्योढ़ीका हुक्म तेज रहनेसे राज्यमें बद इन्तिज़ामी बढ़ने लगी.

विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में इनका विवाह बीकानेर के महाराजा गजसिंहकी पोतीके साथ हुआ, लिखा है, कि इस विवाहमें दोनों तरफ़से त्याग और सरबराहमें लाखों रुपया खर्च हुआ. इसके सिवा और कोई बात इन महाराजाकी लिखने लाइक नहीं है. विक्रमी १८३५ (१) वैशाख कृष्ण ३ [हि० ११९२ ता० १७ रबीउलअव्वल = ई० १७७८ ता० १५ एप्रिल] को इनका देहान्त होगया.

३४- महाराजा प्रतापसिंह

इनका जन्म विक्रमी १८२१ पौष कृष्ण २ [हि० ११७८ ता० १६ जमादियुस्सानी

(१) जयपुरकी तवारीखमें यह संवत् लिखा है, परन्तु चैत्रादि महीनेसे विक्रमी १८३६ लगगया होगा, क्योंकि जयपुरमें श्रावणादिक प्रचलित है.

=ई० १७६४ ता० ९ डिसेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८३५ वैशाख कृष्ण ४ [हि० ११९२ ता० १८ रबीउलअव्वल = ई० १७७८ ता० १६ एप्रिल] को हुआ ख्यात वगैरह पोथियोंमें इन महाराजाका ठीक ठीक हाल नहीं मिलनेके सबब चन्द अंग्रेजी किताबोंसे खुलासह करके नीचे लिखाजाता है -

(जेम्स ग्रैंट डफ्की तवारीख जिल्द ३, पृष्ठ १५)

"ईसवी १७८५ [वि० १८४२ = हि० ११९९] में सेंधियाने कई एक मुसल्मान सर्दारोंकी जागीरें छीन ली, जिससे कि वे नाराज होगये मुहम्मदबेग हमदानीकी जागीर तो नहीं छीनी थी, लेकिन् उसके दिलमें धोखा था ईसवी १७८६ [वि० १८४३ = हि० १२००] में बादशाहके नामसे सेंधियाने राजपूतोंपर खिराजका दावा काइम किया, और अपनी फौजके साथ जयपुरके पास जाकर साठ लाख रुपया पहिली किस्तका मुकर्रर किया, जिसमेंसे कुछ तो वुसूल करलिया, और बाकीके वास्ते कुछ मीआद मुकर्रर करली जब कि वह मीआद पूरी होगई, सेंधिया ने रायाजी पटैलको बाकी तह्सील करनेके लिये भेजा, लेकिन् राजपूत लोग साम्हना करनेके लिये तय्यार हुए, और उनको यह भी भरोसा था, कि मुहम्मदबेग और दूसरे मुसल्मान सर्दार, जो सेंधियासे नाराज थे, मदद देवेंगे, इसलिये उन्होंने रुपया देनेसे इन्कार किया रायाजी पटैलकी फौजपर हमलह हुआ, और उनको भगा दिया जो लोग कि दिल्लीमें सेंधियाके बर्खिलाफ थे, वे इस बगावतसे बहुत मज्बूत हुए, बादशाह भी उनकी पक्षपर हुआ, और कहा, कि मरहटे सर्दार बडा उपद्रव मचा रहे हैं, लेकिन् सेंधिया इस बातसे कुछ भी न डरा, उसका खज़ानह भी खर्च होगया था, फौजकी तन्ख्वाह चढगई थी, तो भी उसने राजपूतोंसे लडने का पक्का इरादह करलिया, और आपा खंडेरावकी फौज व डीबाइनीकी दो पल्टनें अपने साथ करली, इनके अलावह फौजके दो गिरोह दिल्लीके उत्तर तरफ भेजने पडे, जिनके अफ्सर हैबतराव फालके, अबाजी इंगलिया मुकर्रर कियेगये, कि जाकर सिक्ख लोगोंके हमलहको हटावें "

" ईसवी १७८७ [वि० १८४४ = हि० १२०१] में जयपुर पहुचनेपर सेंधि-याने सुलहकी शर्तें करनेकी कोशिश की, लेकिन् जयपुर वालोंने उनपर कुछ ध्यान न दिया जोधपुरका राजा और दूसरे भी कई एक राजपूत सर्दार जयपुरके राजा प्रतापसिंहके साथ हो लिये, उनकी फौज बहुत बडी थी सेंधियाकी फौजका बडा हिस्सह मरहटोंकी फौजसे जुदे तौरका था, और राजपूतोंने साम्हना रोक देनेके सबब उनको बडी मुश्किलमें डाला, मरहटा और मुगल दोनों बडी तक्लीफके सबब

नाराज हुए, मुहम्मद बेग हमदानी और उसके भतीजे इस्माईलबेगने यह मौका सेधियाको छोडकर राजपूतोंसे मिलजानेका मुनासिब जाना, सेधियाने खयाल किया, कि अगर देर होगी, तो बादशाहकी कुल फौजमे नाराजगी फैल जायगी, उनको जल्द लडाईमे शामिल किया बडी लडाई हुई, जिसमे मुहम्मदबेग तोपके गोलेसे मारा गया, उसकी फौज भागनेके करीब थी, जब कि इस्माईलबेगने उनको दुरुस्तीके साथ रखकर मरहटा लोगोको हटा दिया. सेधिया दोबारह लडाई करनेके वास्ते तय्यारी कर रहा था, लेकिन् लडाई होजानेके तीन दिन बाद बादशाहकी बिल्कुल पैदल पल्टन, जो कवाइद सीखी हुई थी, अस्सी तोपोके साथ इस्माईलबेगकी मददके वास्ते आगई" इसके बाद जॉर्ज टॉमस (मशहूर जहाज फरंगी) की इन महाराजासे लडाई हुई, जिसका हाल उक्त साहिबके ईसवी १८०५ [वि० १८६२ = हि० १२२०] के छपे हुए सफर नामहके पृष्ठ १५१ मे इस तरह लिखा है -

ईसवी १७९९ [वि० १८५६ = हि० १२१४] जयपुरपर चढाई

"इस वक्तके करीब लखवाने, जो कि नर्मदाके उत्तरी तरफ सेधियाकी फौजका कमान्डर-इन-चीफ था, वामन रावको हुक्म लिखा, कि जयपुरपर चढाई करे इस बारेमे, जो खत लिखा, उसमे पहिले जिलोसे, जो रुपया वुसूल किया गया था, उसकी तादाद लिखकर उसने वामन रावको दी इस मौकेपर भी उतना ही तह्सील करनेके वास्ते लिखा, और यह भी कह दिया, कि रुपयेमे दस आने तो फौजके लोगोको तक्सीम करदिये जावे, और बाकी छ आने उसके खजानेमे भेज दिये जावे"

"(पृष्ठ १५२) यह हुक्म पहुचनेपर वामन रावने टॉमसके नाम इस चढाईमे शामिल होनेके वास्ते खत लिखा, लेकिन् उसने पहिले तो इन्कार किया, जो कि दिलसे कुछ दिनोके लिये जयपुरमे जाना चाहता था उसको मालूम था, कि ऐसी चढाईमे फौजका खर्च चलानेके वास्ते पूरा खजानह चाहिये, और उस वक्त उसका हाथ तग था उसको यह भी मालूम था, कि जयपुरका राजा लडाईके मैदानमे बहुत बडा रिसालह ला सक्ता है, जिससे कि रसद मिलनेमे दिक्कत वाके होगी. और इसके बगैर फत्ह मिलनेमे शक है. उसने वामनरावको लिखा, कि अगर कामयाबी हासिल भी हुई, तो जयपुरका राजा उनको उतना रुपया नही देगा, बल्कि बाला बाला लखवाके साथ कार्रवाई करेगा, जिससे कि उनको मिह्नतका फल न मिलेगा, लेकिन् इन सब बातोसे वामन रावने अपना इरादह नहीं छोडा."

"(पृष्ठ १५३) उस जिलेके सर्दारने अपना वकील टॉमसके पास भेजा, और

उसके हम्राह यह कहलाया, कि मदद दोगे, तो कुछ रुपया दिया जायेगा, जिसकी कि, टॉमसको बडी हाजत थी उसकी फौजमे उस वक्त चार चार सौ आदमियोकी तीन पल्टने, १४ तोपे, ९० सवार, ३०० रुहेले और दो सौ हरियानेके लोग थे, जिनके साथ वह कानूड मकाममे वामनरावसे जा मिला वामनरावके पास एक पल्टन पैदल, चार तोपे, ९०० सवार और छ सौ सिपाही भी थे इस फौजके साथ उन्होने जयपुरकी तरफ कूच किया देशमे दाखिल होनेपर राजपूतोकी फौज, जो खिराज तह्सील करलेनेके वास्ते रक्खी गई थी, भाग गई, तब जिलेके हाकिमोने टॉमसके कैम्पमे अपने वकील भेजे, जिन्होने लखवाका मुकर्रर किया हुआ दो सालका खिराज देनेका इक्रार किया "

"(पृष्ठ १५४) यह बात मजूर कीगई, और फौजने आगे बढकर और भी कई हाकिमोसे वैसाही इक्रार करा लिया तकरीबन् एक महीने तक बे रोक टोक दोनो फौजे बढती गई, लेकिन् इसी दर्मियानमे जयपुरके राजाने अपनी फौज एकट्ठी करली थी, वह चढाई करने वालोको सजा देनेका इरादह करके अपने इलाकोंके बचावके वास्ते चला उसकी फौजमे चालीस हजार आदमी थे, जिनको लेकर राजा, टॉमस और वामनरावके बर्खिलाफ चला, जिनको अभी तक कोई ऐसा मकाम नही मिला था, जहासे कि सामान मिल सके, और उनको मालूम हुआ, कि इस बातमे बडी गलती हुई वामनरावने देखा, कि ऐसी बडी फौजका साम्हना करना गैर मुम्किन् है, और टॉमससे कहा, कि अब अपने ही ऊपर भरोसा रक्खो, क्योंकि दुश्मनकी फौजका शुमार और उनकी दिलेरी देखकर उनसे साम्हना करके फत्हयाब होनेकी उम्मेद नहीं है इस विचारसे टॉमसको सलाह दी, कि पीछे हट चले, तब (पृष्ठ १५५) टॉमसने वामन रावको जतलाया, कि पहिले तुमने बे समझे जल्दी करदी, और इस मुश्किल मकाम तक पहुचाया, लेकिन् एक बार तो साम्हना जुरूर करना चाहिये, क्योंकि सिपाह लडनेको तय्यार है, अगर इस मौकेपर बगैर कुछ कोशिश किये लौट चले, तो उसके लिये और उसके बाप दादोके लिये बे इज्जती होगी, जो कभी दुश्मनके साम्हनेसे नही भागे थे, और यह भी कहा, कि अगर इस वक्त पर तुमने मुह मोडा, तो सेधिया या उसका और कोई सर्दार तुमको नौकर न रक्खेगा."

"इन बातोसे वामन रावका इरादह लडनेका होगया (पृष्ठ १५६) इस इरादहसे फत्हपुरकी तरफ चले, जहापर फौजके वास्ते खानेका सामान मिलने की उम्मेद थी, लेकिन् वहाके बाशिन्दे उनके आनेकी खबर सुनकर फौजको तक्लीफ देनेके वास्ते आस पासके कुओको बन्द करने लगे थे, और जब टॉमस

पहुचा, उस वक्त सिर्फ एकही कुआ खुला मिला इस कुएकी बाबत टॉमस और शहरके चार सौ आदमियोमे, जो उसके बन्द करनेके वास्ते आये थे, झगडा हुआ, टॉमसने फौरन् अपने रिसालेको बढाया, पहिले खूब लडाई हुई, लेकिन् दुश्मनके दो सर्दार मारे गये, और बाकी भाग गये इस तौरसे कुआ बचगया उस दिन टॉमसकी फौजने बडी मिहनत की थी, क्योंकि पच्चीस मील तक गहरे रेतमे सफर करचुकी थी, जो कही कही घुटने तक गहरा था, इस लिये टॉमसने फौजको आराम देनेके वास्ते डेरा डालदिया "

"(पृष्ठ १५७) मुगल लोगोंके साथ एक तातार काइमखां हिन्दुस्तानको चला आया था, जब कि उन्होने पहिली चढाई की, और उस मौकेपर अच्छी नौकरी देनेके सबब हरियाना और झूंझनूंकी हुकूमत पाई कुछ दिनो बाद दिल्लीके मुगल बाद-शाहोने जुल्म करके उसके घरानेके लोगोको निकाल दिया, और वे लोग जयपुरके इलाकहमे जाकर ठहरे उनके रहनेके लिये महाराजा जयपुरने फत्हपुर दिया (पृष्ठ १५८) उसी जमानहसे काइमखांकी औलाद अब तक काइमखानीके नामसे मश्हूर है (१) फत्हपुरके शहरमे लोग बहुत थे, इसलिये टॉमसने खूंरेजी बचाने के वास्ते चाहा, कि बाशिन्दे कुछ रुपया देदेवे, लेकिन् वामनरावने इतना जियादह मागा, कि वे देनेको राजी न हुए उस मरहटेने दस लाख रुपये मागे, लेकिन् शहर के लोग सिर्फ एक लाख देनेको राजी थे, क्योंकि उनको शायद यह उम्मेद थी, कि जयपुरके राजासे मदद मिलेगी, जो जल्दीके साथ उस तरफ आता था (पृष्ठ १५९) इतनेमे रात पडगई, और रुपयेके बारेमे कुछ फैसलह न हुआ, लेकिन् चन्द लोग, जिनको टॉमसने इस मतलबसे शहरमे भेजा था, कि जब तक बाशिन्दोंके ताबे होजानेकी शर्त न होजावे, तब तक शहरकी हिफाजत करे, उन्होने बाशिन्दोको लूटना शुरू करदिया इस बातसे अफ्सरने और शर्तें बन्द करके उसको छापा मार कर लेलिया यह काम खत्म नही होचुका था, कि राजाके पहुचनेकी खबर टॉमसको मिली, और उसने अपने कैम्पको मज्बूत करना मुनासिब समझकर बडे बडे कांटेके दरख्त कटवाकर अपने कैम्पके साम्हने और दोनो बाजू पर लगवादिये पीछे की तरफ फत्हपुरका शहर था (पृष्ठ १६०) जियादह मज्बूतीके वास्ते दरख्तो की डालिये एक दूसरेमे पैवस्त करदी गई, और रस्सियोसे बाध दीगई, ताकि रि-साला रुकजावे इसके अलावह डालियोंके दर्मियान बहुतसी रेत डालदी गई, जो कि

---

(१) काइमखानियोकी तवारीख, जो हमारे पास फार्सी जबानमे कलमी मौजूद है, उसमे राजपूत खानदानसे फीरोज शाह तुग्लकके वक्तमे इस खानदानका मुसल्मान होना लिखा है

दुश्मनकी तरफ़ थी, खाई नहीं खोदी जासक्ती थी, क्योंकि रेत ऐसी थी, कि खोदने पर फ़ौरन् बन्द होजाती थी, लेकिन् जो तज्वीज ऊपर कही गई, उससे टॉमसको बहुत फ़ाइदह पहुंचा, क्योंकि दुश्मनके रिसालेका हमलह रोकनेके अलावह कैम्पकी भी हिफ़ाज़त हुई उसने आस पासके कुओंके बचावके वास्ते बन्दोबस्त किया, जिनको कि उसने खुदवाकर दुरुस्त करवालिया था उसने शहरको लेकर अच्छी तरहसे मोर्चा बन्द किया, कैम्पमें बहुतसा सामान मंगवाया, और इतनी तय्यारी हो ही रही थी, कि दुश्मनकी फ़ौजके आगेका हिस्सह (हरावल) नज़र आया"

"(एष्ठ १६१) आते ही उन्होंने टॉमससे चार कोसकी दूरीपर अपना कैम्प जमाया, और थोड़े दिनों बाद रिसाले और पैदलका एक गिरोह आस पासके कुओंको साफ़ करनेके वास्ते भेजा दो दिन तक टॉमसने उनको नहीं रोका, लेकिन् तीसरे दिन सुब्हके वक्त वह दो पल्टन पैदल, आठ तोपें और अपने ही रिसालेके साथ उनके तोपखानहपर हमलह करनेके इरादहसे चला, और जो सिपाह पीछे रह-गई, उसको हुक्म दिया, कि हरावलपर हमलह करके तित्तर बित्तर करदेवे कूच करनेके वक्त वामनरावके नाम एक चिट्ठी लिखकर रखगया, कि अपने बचे हुए रिसालेके साथ पीछे आवे, और जो पैदल पल्टन उसके साथ थी, उससे कैम्पकी हिफ़ाज़तका बन्दोबस्त करदेवे (एष्ठ १६२) रातके वक्त वह रवानह हुआ था, इसलिये ज़ियादह दूर न चल सका, क्योंकि एक गाड़ी उलट गई थी, जो सुब्हके पहिले सीधी नहीं होसकी, और जब कैम्पके पास पहुंचा, तो दुश्मनको लड़नेके लिये तय्यार पाया पहिली तज्वीज तो उस वक्त नहीं हो सक्ती थी, लेकिन् वह बढ़ता ही गया, और सात हज़ार आदमियोंका गिरोह, जो उसके साम्हने आया, उसपर बड़ी दिलेरीके साथ हमलह किया दुश्मनोंने अच्छा मुकाबलह नहीं किया, और बहुत नुक्सानके साथ अपने बड़े गिरोहमें जाकर शामिल होगये जो कुए साफ़ किये गये थे, वे भर दिये गये, और टॉमस घोड़ों और दूसरे चौपायोंको जो खेतमें छूट गये थे, एकट्ठा करके अपनी फ़ौजके साथ कैम्पको वापस चला गया रास्तेमें मरहटा लोगोंके रिसालहसे मुलाकात हुई, जिन्होंने इस बातसे नाराज़ी ज़ाहिर की, कि ऐसे बड़े मौकेपर उनकी सलाह नहीं लीगई, लेकिन् वामनरावने उन लोगोंसे साफ़ साफ़ कह दिया, कि उन्होंने तय्यार होनेमें देर करदी यही सबब था, कि उनकी उम्मेद पूरी नहीं हुई"

"(एष्ठ १६३) उस वक्त टॉमसके अफ़्सरोंको मरहटा सर्दारोंने खिल्अत दिये, और दुश्मनी रोकनेके लिये मरहटा रिसालेके सर्दारोंको भी खिल्अत मिले, जो कि रज़ामन्दीके साथ नहीं थे दुश्मनने एक बड़ी भारी लड़ाईके वास्ते तय्यारी की,

दूसरे दिन सुबहको टॉमसने खबर पाई, कि दुश्मनके कैम्पमे बडी हल चल मच रही है, और थोडी ही देरमे उनके पहुचनेकी खबर आगई उसको मालूम था, कि मरहटा लोगोपर भरोसा नही रक्खा जा सक्ता, इसलिये अपनी पैदल पल्टनका एक हिस्सह और चार तोपे तीन सेरके गोले वाली कैम्प और फौजकी चदावल हिफाजतके लिये छोड दीं, बाकी दो पल्टने पैदल, दो सौ रुहेले, दस तोपे और रिसालह लेकर लडाईके वास्ते तय्यार हुआ (एष्ठ १६४) मरहटा लोग दुश्मनकी बडी फौज देखकर ना उम्मेद होगये, टॉमसको इस बडी लडाईमे बगैर मदद लडना पडा, कुछ देरके बाद उसे बडी खुशी हुई, कि दुश्मनने अपनी फौज उसी तरह रक्खी, जैसी टॉमस चाहता था दाहिनी तरफका हिस्सह, जिसमे कि बिल्कुल राजपूतोका रिसालह था, उसके कैम्पपर हमलह करनेके वास्ते मुकर्रर किया गया, उनको फत्हकी इतनी पूरी उम्मेद थी, कि ऊपर बयान किये हुए दरख्तोकी आडको देखकर उन्होने खयाल किया, कि यह थोडेसे झाड हम लोगोको नही रोक सक्ते बाई तरफ चार हजार रुहेले, (एष्ठ १६५) तीन हजार गुसाई, छ हजार पैदल, जो कि कवाइद नही सीखे हुए थे, अपने अपने जिलोके अफ्सरके हमाह एक बारगी बडी तेजीके साथ जोरसे चिल्लाते हुए शहर लेनेके वास्ते चले तीसरा गिरोह याने खास गिरोहमे दस पल्टन पैदल, बाईस तोपे और राजाके सिलहपोश (बॉडी गार्ड) थे, जिसमे सोलह सौ आदमी तोडेदार बन्दूक और तलवार लिये हुए थे, और जिनका अफ्सर राजा रोडजी मईदोज था गोकि यह फौज इतनी भारी थी, तो भी टॉमसकी फौजका ऐसा मौका था, कि उससे बहुत फाइदे निकले" (एष्ठ १६६)

"दुश्मनका रिसालह आगे बढा, और मरहटा लोगोने, जो कि पीछे थे, मदद चाही, टॉमसने चार कम्पनी और दो तोपे भेजदीं, जो कैम्पकी रक्षाके वास्ते रह गई थीं, वह तीन तोपे और पाच कम्पनी पैदल लेकर दुश्मनके रिसालेका हमलह रोकनेके वास्ते चला उसके खास गिरोहका अफ्सर जॉन मॉरिस (अंग्रेज) था टॉमस एक ऊचे रेतके टीलेपर था, इस तरहपर दुश्मन दो टुकडोके बीचमे पड गये, न उसपर हमलह कर सके, न कैम्पपर, और हटने लगे, लेकिन् यह देखकर, कि टॉमसके पास रिसालह बहुत कम है, अगर्चि सवार उसके पीछे थे, अचानक उनपर हमलह किया, जिससे कि अफ्सर और कई दिलेर आदमी फौरन् मारे गये, और जब तक दो कम्पनी पैदल सिपाहियोकी न पहुची, जिन्होने फायर करनेके बाद सगीनोसे हमलह किया, दुश्मन नही हटे अगर उनकी फौजके दूसरे हिस्से भी दिलेरी करते, तो फत्ह उन्हींकी होती" (एष्ठ १६७)

"जब तक उनका रिसालह पीछे नहीं हटा, तब तक शहर लेनेके वास्ते, जो

गिरोह भेजागया था, दोबारह नहीं बढा, क्योंकि पहिले एक दफा बहुत नुक्सान के साथ पीछे हटाया गया था शहरके भीतर टॉमसने हरयानेके पैदल सिपाही और सौ रुहेले रखदिये थे, जिन्होंने मज्बूत और ऊचे मकानोंको मोर्चे बन्द करलिया था, और सिवाय तोपोंके हरएक हमलहसे बच सक्ते थे यह बात दुश्मनोंको मालूम होगई थी, और उन्होंने छ तोपें शहरकी तरफ़ भेजी टॉमसने उनके रिसालेको खेतसे हटते हुए देखकर शहरवालोंकी मददके वास्ते दुश्मनपर फ़ौरन् हमलह किया, जिन को तोपें लेकर भागजाना पडा, उनकी बिल्कुल फ़ौज तित्तर बित्तर होगई उनका यह पक्का इरादह था, कि टॉमसकी फ़ौजके खास गिरोहपर हमलह करे, लेकिन् उनके अफ्सरने सब सिपाहियोंको राजी नहीं पाया टॉमसने उनको ठहरे हुए देखकर अपनी तोपोंसे जजीरदार गोले चलवाये, और दुश्मन बहुत नुक्सानके साथ पीछे हटे (पृष्ठ १६८) टॉमसने उन पल्टनोंको पीछा करनेका हुक्म दिया, जिनको कि पहिले हमलहमें बहुत कम मिहनत पडी थी, लेकिन् तोपखानहके बैल एक टीलेके पीछे रहगये थे, वह जल्दी नहीं आसके इस वक्त मरहटा लोगोंका रिसालह बढ आया, और थोडी देरमें टॉमसको एक तोपके लिये बैल मिलगये उसको एक पैदल पल्टनके साथ लेकर वह दुश्मनकी तरफ चला, और मरहटा सवार भी अपनी पहिली बेइज्जती दूर करनेके वास्ते उसके साथ होगये दुश्मन हर एक तरफ़ भाग रहे थे, टॉमसने दो तोपें लेलेनेका इरादह किया, जिनसे बारह सेरका गोला चल सक्ता था, और जो उसीके पास पडी थीं (पृष्ठ १६९) फ़ौरन् राजपूत सवारोंका एक बडा गिरोह हाथमें तलवार लियेहुए तोपोंको बचानेके वास्ते चलाआया, तब मरहटे लोग कम हिम्मतीसे भाग गये टॉमसने यह देखकर, कि दुश्मन बढ रहा है, अपनी फ़ौजको दुरुस्त किया, लेकिन् मरहटा सवार उसके बाई तरफ़के गिरोहके बीच होकर निकल गये थे, और राजपूत लोग उनका पीछा करते हुए उसके आदमियोंको क़त्ल करने लगे "

"इन सिपाहियोंने खूब साम्हना किया, और कई एकने मरते मरते भी दुश्मनके घोडोंकी लगाम पकडली मकाम बहुत मुश्किल था, सिर्फ़ एक तोप और डेढ सौ आदमियोंके साथ वह दिलेरीसे खडा रहा जब दुश्मन चालीस गजके फ़ासिलेपर आगया, तब तोप और बन्दूकोंके फ़ायर ऐसी तेजीसे शुरू किये कि दुश्मनके बहुतसे आदमी फ़ौरन् गिरगये, और दुश्मन आखिरमें तित्तर बित्तर होगये (पृष्ठ १७०) मरहटा सवारोंने कैम्पकी रक्षाके वास्ते जल्दी की, लेकिन् टॉमसके हुक्मसे वे नहीं आने पाये, और राजपूतोंके छोटे गिरोहने, जो कि पीछे पीछे चले आये थे, अक्सरको बेरहमीके साथ क़त्ल किया दुश्मनके पैदल सिपाही, रिसालेका

हमलह देखकर फिर लडनेके वास्ते तय्यार मालूम होते थे उनको ऐसा करनेका मौका देनेके लिये टॉमस अपने बचे हुए सिपाहियोको एकट्ठा करके हमलेका मुन्तज़िर रहा दिन खत्म होनेपर आया, और दुश्मनने पीछे हटना मुनासिब समझा, टॉमस ने बारह सेरके गोले वाली तोपोको तलाश किया, लेकिन् नही मिली, तब वह अपनी फौजके साथ कैम्पको वापस गया (पृष्ठ १७१) इस लडाईमे टॉमसके तीन सौ आदमियोका नुक्सान हुआ, जिसमे घायल भी शामिल है, मॉरिस भी मारा गया दुश्मनके दो हजारसे जियादह आदमियोका नुक्सान हुआ, इसके अलावह घोडे और बहुतसा अस्बाब खेतमे छूटगया "

" (पृष्ठ १७२) दूसरे दिन सुब्हको टॉमसने दुश्मनके अफ्सरसे कहा, कि मुर्दोको दफ्न करनेके वास्ते, जिन शख्सोको मुनासिब समझे, भेजदेवे, और घायलोको लेजानेमे भी हमारी तरफसे कुछ रोक नही है यह बात कुबूल हुई, और सुलहके वास्ते भी अर्ज कीगई वामनरावने उससे लडाईके हरजानहके बदले बहुतसा रुपया मागा, लेकिन् उस अफ्सरने यह कहकर इन्कार किया, कि जयपुरके राजाने मुझको बगैर हुक्म इतना खर्च करनेका इख्तियार नही दिया है (पृष्ठ १७३) यह जवाब मिलनेपर टॉमसने समझा, कि दुश्मन सिर्फ मौक़ा देखरहा है, और वामनरावसे कहा, कि दुश्मनको चलने दो उसने लडाईकी बनिस्बत मुआमलह याने इक्रारनामह बिह्तर खयाल किया, और इसलिये टॉमसके एतिराजपर ध्यान न दिया सुलह नही हुई, और दुश्मनने अपनी फौजको एकट्ठा करके अपना पहिला मकाम लडनेके वास्ते मुकर्रर किया इतने ही मे सेंधियाके पाससे इस मत्लबके कागज पहुचे, कि जयपुरकी फौजके साथ दुश्मनी बन्द करदी जावे इसी मत्लबके खत वामनराव के नाम पेरन साहिबके पाससे आये, जो कि थोड़े दिनोसे जेनरल डिबॉइनकी जगह सेंधियाकी फौजका कमाडर इन्चीफ होगया था. दुश्मन अब अपनी ही रजामन्दीसे ८०००० रुपया देनेको तय्यार हुआ, लेकिन् वामनरावने बे सोचे बिचारे इन्कार कर दिया इसी अरसेमे बहुतसी फौज जयपुरके कैम्पमे पहुच गई, और दोनो तरफसे दूनी तेजीके साथ दुश्मनी शुरू हुई "

" (पृष्ठ १७४) टॉमसकी फौजको दूरसे चारा लानेके सबब बडी तक्लीफ हुई, क्योकि कैम्पसे बीस मील जाना पडता था, और रास्तेमे दुश्मनकी फौजके छोटे छोटे गिरोह उनको दिक्क करते थे, और उनकी तक्लीफ बढानेके लिये जयपुरकी फौजको पाच हजार आदमियोके साथ बीकानेरके राजाने मदद पहुचाई टॉमसके कैम्पमे नौ मरहटे थे, वे सब इसी मत्लबके थे, कि बेचारे किसानोको लूटे, और बर्बाद करे ऐसे मौकेपर पहुचने, और दिन दिन चारा घटनेसे टॉमस और वामनरावने एक जगी

कॉन्सिल की, जिसमे दूसरे अफ्सर भी शामिल थे सबकी यह राय हुई, कि अपने मुल्कको वापस चले जावे इसी इरादेके मुताबिक दूसरे दिन सुब्ह होनेके पहिले ही फौज रवानह होने लगी इतनेमे दुश्मनकी तमाम फौज हमलहके लिये आगई, जब तक अन्धेरा रहा, तब तक बडी खराबी रही, लेकिन् दिन निकलनेपर टॉमसने अपने आदमियोको कवाइदके साथ जमा करके दुश्मनको बडे नुक्सानके साथ हटा दिया, फिर भी वे उसके पीछे लगे रहे, और तोपखानहके फायर व अग्निबाणसे उसे तग करते रहे उसकी कूचकी तेजीके सबबसे दुश्मनकी भारी तोपे पीछे रहगई, सिर्फ तोडेदार बन्दूक और बाणवाले आदमी पीछा करनेके वास्ते रहगये गर्मी खूब पडती थी, सिपाहियोको पानी बगैर बडी तक्लीफ थी, लेकिन् दुश्मनको भी ऐसी ही तक्लीफ होनेके सबब उनकी बन्दिशे पूरी न हो सकी लडाई सख्त हो रही थी, थकावट भी बहुत थी आखिर बहुत धावा करने बाद टॉमस शामके वक्त एक गावमे पहुचा, जहापर दो कुए अच्छे पानीके मिले सिपाह पानीके वास्ते इतनी बे चैन थी, कि आदमी एक दूसरेपर पडने लगे, और दो कुएमे गिरगये, एक तो फौरन् बेदम होगया, और दूसरा बडी मुश्किलके साथ निकाला गया इस बातको रोकनेके लिये कुएपर गार्ड रखदिया गया, और रफ्तह रफ्तह सबको थोडा थोडा पानी मिलनेसे तसल्ली हुई ''

"(पृष्ठ १७६) दुश्मन अभीतक पीछे पीछे चले आये, और दो कोसके फासिलेपर डेरा जमाया टॉमसने दूसरे दिन फिर हमलह करनेका इरादह किया, उसको यह मालूम होगया, कि सिपाहियोकी हिम्मत कुछ कम होगई है, उनका दिल बढानेके लिये खुद पैदल उनके साथ होलिया, और दिनभर रहा दुश्मन कई दफा हमलह करनेका इरादह करते हुए नजर आये, इसलिये टॉमसने तोपखानहके अफ्सरको हुक्म देदिया, कि पीछेकी तरफ बराबर फायर करता रहे इससे उनकी हिम्मत कुछ कम हुई, और टॉमसकी फौजको आगे बढनेका मौका मिला दूसरे दिन भी वैसी ही तक्लीफके साथ, जैसी कि पहिले दिनके सफरमे हुई थी, टॉमस एक बडे कस्बेके पास पहुचा, जिसके पास पाच कुओसे पानीकी इफ़ात पाई (पृष्ठ १७७) यहापर दुश्मनने पीछा छोडा, और टॉमसने अपनी फौजकी हालतपर खयाल करनेका मौका पाया बीमार और घायल लोग हिफाजतकी जगहमे पहुचाये गये, और उन्हीके साथ वे लोग भी, जो कि दुश्मनकी तरफसे पहिली दफा सुलहकी शर्त करनेके वक्त जमानतके तौरसे आये थे, भेजे गये टॉमसने दुश्मनके मुल्कपर फिर दुश्मनी शुरू की, जब कि उसके आदमियोने अच्छी तरह आराम लेलिया, जुर्मानह वगैरह कई तरहसे अपना खर्च चलाने और सिपाहियोकी पिछली तन्ख्वाह

चुका देनेके वास्ते काफी रुपया एकट्ठा करलिया इस वक्तपर जयपुरके राजाने जान लिया, कि इस लूट मारसे दुश्मनको बडा नुक्सान पहुचेगा, और इसलिये वामनरावके पास एक वकील अपना मुल्क खाली करालेनेकी शर्तें लेकर भेजा, जो मन्जूर कीगई, और कुछ रुपया दिया गया इस तरहसे दुश्मनी खत्म हुई ''

इस लडाईमे जो कि बीकानेरके महाराजाने जयपुरकी मददके लिये फौज भेजी थी, इससे टॉमसने दूसरे वर्ष बीकानेरसे बदला लिया महाराजा प्रतापसिंहका देहान्त विक्रमी १८६० श्रावण शुक्ल १३ [हि० १२१८ ता० १२ रबीउस्सानी = ई० १८०३ ता० १ ऑगस्ट] को हुआ इनकी प्रकृति मिलनसार थी, वह हसमुख, इल्मके बडे कद्रदान थे, अनेक ग्रन्थ इन्होने नये बनवाये, जिनमेसे वैद्यकका अमृतसागर नाम ग्रन्थ, चरक सुश्रुत, वाघ भट्ट, भाव प्रकाश, आत्रेय आदिका खुलासह लेकर बनवाया, जो इस समय भी भरतखडमे बहुत प्रचलित है इसी तरह शिक्षा राज्यनीति, गान विद्याकी पुस्तके बनवाई थी, अब तक बहुतसे विद्वान लोग उनको प्रीतिके साथ याद करते है, परन्तु उनकी उदारता और बहादुरी ऐश व इश्रतमे छिपगई थी

३५–महाराजा जगत्सिंह

इनका जन्म विक्रमी १८४२ चैत्र कृष्ण ११ [हि० १२०० ता० २५ जमादियुल अव्वल = ई० १७८६ ता० २५ मार्च] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८६० श्रावण शुक्ल १४ [हि० १२१८ ता० १३ रबीउस्सानी = ई० १८०३ ता० २ ऑगस्ट] को हुआ यह राजा अय्याशी और बुरी आदतोसे बदनाम होगये थे, इस वास्ते हम अपनी तरफसे कलम उठानेमे किनारह करके ज्वालासहायकी किताब वक़ाये राजपूतानहका बयान नीचे लिखेदेते है –

जिल्द १, पृष्ठ ६४६

" वह अपने खानदान और जमानेमे सबसे जियादह अय्याश और बदचलन रईस हुआ है अगर उसके वक्तका हाल बिल्कुल लिखनेके लाइक होता, तो उसकी तारीखकी एक अलग जिल्द होती; मगर वह अह्वाल ऐसे खराब है, कि उनके लिखने मे अपना वक्त जाया करना, और पढने वालोके दिलोमे इस किताबके पढनेसे नफरत पैदा करना है मुख्तसर यह है, कि उसके अह्दमे दूसरी रियासतोकी चढाई, शहरो का मुहासरा, मुल्ककी खराबी, रअय्यतकी तबाही, बराबर जारी रही रसकपूर नामी

एक अदना कस्बीने वह फरोग (मर्तबह) पाया, कि उसके मुकाबलहमे उम्दह खानदानकी जोधी, जैसी, राठौड़, व भटियाणी राणिया गर्द होगई उसपर यहा तक इनायते हुई, कि उसको राज्यके आधे मुल्ककी राणी बनादिया, और राज्यका कुल सामान, बल्कि महाराजा सवाई जयसिंहका कुतुबखानह तक आधा उसको बांटदिया, जयमन्दिरका ख़जानह, जिसकी हिफाजतमे काली खोहके मीने दिलोजानसे लगे रहते थे, मुफ्त फुज़ूल खर्चीमे जाया करदिया, तिजारतमे खलल पडा, खेती बाडी जल्दी. मौकूफ होगई, एक रोज रोडाराम दर्जी मुख्तार हुआ, दूसरे रोज कोई बनिया हुआ, तीसरे रोज कोई ब्राह्मण मुक़र्रर हुआ, और हर एक बारी बारीसे नाहरगढके जेलखाने मे भेजाजाता था, रसकपूरके नामसे सिक्कह जारी हुआ, वह राजाके साथ हाथीपर सवार होकर निकलती, सर्दारोको हुक्म था, कि मिस्ल राणियोके उसका अदब और इज्जत करे अगर्चि मिश्र शिवनारायण, जो मुसाहिब था, उसको बाईजी याने बेटी व बहिन कहकर बोलता था, मगर चादसिंह सर्दार दूनीने हर जल्सहमे, जिसमे कि वह कस्बी मौजूद होती, शरीक होनेसे इन्कार किया इस इल्लतमे उसपर दो लाख रुपया, जो उसकी चार सालकी आमदनी थी, जुर्मानह हुआ. सर्दारान रियासत, राजा और उसकी हुकूमतसे ऐसे तंग थे, कि उन्होने एक दफा उसको गद्दीसे उतारनेकी कोशिश की, अगर रसकपूरको नाहर गढमे कैद न करदिया जाता, तो यकीन है, कि इस तज्वीजपर ज़रूर अमल करते आखिरकार ईसवी १८१८ ता० २१ डिसेम्बर [वि० १८७५ पौष कृष्ण ९ = हि० १२३४ ता० २३ सफ़र] को महाराजा जगत्सिंहका देहान्त होगया"

माल्कम साहिबकी किताब सेन्ट्रल इन्डिया,

जिल्द पहिली, पृष्ठ १९६ से

"जब जशवन्तराव पंजाबसे वापस आया, तब एक महीने तक जयपुरके मुल्कमे ठहरा उसकी फौजने खेतोको बर्बाद किया, और उसने राजा और प्रधानको डराकर अठारह लाख रुपया वुसूल करलिया."

महाराजा जगत्सिंहकी सगाई महाराणा भीमसिंहकी राजकुमारी बाई कृष्णकुमारीके साथ हुई थी, जिससे उस राजकन्याका देह नष्ट किया गया यह हाल महाराणा अमरसिंह दूसरेके प्रकरणमे मारवाडकी तवारीखमे लिखा गया है-(देखो पृष्ठ ८६२). बाक़ी यह माजरा महाराणा भीमसिंहके हालमे भी लिखा जायेगा यहा मुख्तसर दर्ज करते है

मॉल्कम साहिबकी तवारीख जिल्द १, पृष्ठ २६७ से

"अमीरखांकी तवारीख जशवन्तरावके हिन्दुस्तानसे वापस आजानेके पहिले उसीके साथ मिली हुई है, लेकिन् पीछे वह अलग होगया, और उस वक्त वह जयपुरके राजा जगत्सिंहका नौकर होगया, क्योंकि जोधपुरके राजाके साथ उदयपुरके राणाकी बेटीकी बाबत, जो लड़ाई होने वाली थी, उसके लिये उसकी मदद चाही कृष्णकुमारीकी सगाई जोधपुरके राजा भीमसिंहके साथ हुई थी, जिसका देहान्त होगया उसके मरनेपर मानसिंह, जो दूरका रिश्तह रखता था, गद्दीका मालिक हुआ, लेकिन् दो वर्ष पीछे भीमसिंहके सर्दार सवाईसिंहने उस राजाके एक हकीकी या खयाली लडकेकी मददके वास्ते एक मज्बूत गिरोह एकट्ठा करलिया, और अपनी मुराद पूरी करनेके वास्ते एक वसीलह यह निकाला, कि जोधपुर और जयपुरके राजाओंमें बडी दुश्मनी पैदा करे यह जानकर कि मानसिंह उदयपुरकी राजकुमारीसे शादी करनेकी उम्मेद करता है, सवाईसिंहने जयपुरके राजा जगत्सिंहको, जो बडा अय्याश था, उससे शादी करनेको उभारा, और जगत्सिंह उस राजकुमारीकी खूबसूरतीका बयान सुनकर इस फ़िक्रमें पडा उदयपुरके राणाकी बेटी विवाहनेके लिये कार्रवाई शुरू कीगई, और शादीका वक्त मुकर्रर होगया, लेकिन् सवाईसिंहने इस बातको रोकनेके लिये कोशिश की, तब जोधपुरके राजाकी तबीअत बढी, कि अपने पहिले दावेको मज्बूत करे, और अपने मुखालिफ़की ख्वाहिश पूरी न होने देवे"

"राजपूत कौमके जितने राजा थे, सबके दिलमें दुश्मनी हद दरजेकी पैदा हुई, और सब तरफ़से मददकी चाह होने लगी अंग्रेज़ोंकी मुदाखलत भी चाही गई, लेकिन् सर्कार अंग्रेज़ी राज़ी न हुई सेंधियाने यह मौका राजपूतोंकी नाइत्तिफ़ाकीका देखकर बापूजी सेंधिया और सिरजीराव घाटकियाको सहारा दिया, कि अपने लुटेरे गिरोहका गुज़र करनेके वास्ते कोशिश करे, और हुल्करने उनको अमीरखां और उसके पठानोंका शिकार बनाया, जिसका नतीजह यह हुआ, कि दोनों राज्योंकी पूरी बर्बादी हुई, जयपुरका कमसे कम एक करोड बीस लाख रुपया लडाईमें खर्च हुआ, आखिरमें बे इज्ज़ती उठाकर शिकस्त पाई"

"सवाईसिंहने मानसिंहको इस तरह फंसा हुआ देखकर धौकलसिंहके लिये फिर कोशिश की, जो भीमसिंहका लडका समझागया था उस राजाकी सुस्ती देखकर उसने उसको छोड दिया, और हर एक सर्दारसे कहा, कि उसको छोड देवे मानसिंह, जो लडनेके लिये मैदानमें गया था, लाचार होकर थोडेसे आदमियोंके साथ भागा, और उसके कैम्पको जगत्सिंह और उसके मददगारोंने लूट लिया मानसिंहकी

मुसीबते यहीं खत्म नहीं हुईं, जोधपुर तक उसका पीछा कियागया, उसके तमाम मुल्कपर दुश्मनका धावा होगया धौकलसिंह राजा बनाया गया, हर एक राठौड सर्दारने उसको अपना मालिक माना, झगडा खत्म हुआ, लेकिन् मानसिंहकी ओर जो थोडेसे सिपाही उसके साथ रहे थे, उनकी हिम्मत पस्त नहीं हुई थी उसने पहिले ही अपने दुश्मनोंको अलग करनेका उद्योग किया था, और बहुत दिनो तक घेरा रहनेके सबब, जो कठिनाई पडी, उससे उसकी कोशिशोंको मदद पहुंची अमीरखांने उसकी शर्तें कुबूल की, और तन्स्वाहके न मिलनेके बहानेपर घेरा डालने वाली फौजसे अलग होकर जोधपुर व जयपुरके इलाकोंको खूब लूटने लगा जयपुरकी रियासतके हर एक सर्दारकी जमीन उसकी लूट मारसे बर्बाद हुई, और उनकी नाराजगीसे लाचार होकर जगत्सिंहको उस पठानके सजा देनेके लिये फौज का एक गिरोह भेजना पडा, वह पहिले टोंककी तरफ भाग गया, लेकिन् फौज और तोपोंकी मदद पाकर उसने जयपुरकी फौजपर फिर हमलह किया, और शिकस्त दी "

"इस काम्याबीके बाद, जो बहुत अच्छी हुई, अमीरखांके जयपुरमे आनेकी उम्मेद थी, जिसके बाशिन्दे बडी हलचलमे पडगये थे, लेकिन् इस मौकेपर यही साबित होगया, कि वह सिर्फ लुटेरोंका सर्दार है, वह राजधानीके करीब लूट खसोट करके चलागया जयपुरकी फौजकी शिकस्तका हाल सुनकर घेरा डालने वाली फौजमे इतना डर और खराबी फैलगई, कि जगत्सिंहने अपनी राजधानीकी तरफ जानेका इरादह किया, और सेंधियाने जो मददगार भेजे थे, उनको बहुतसा रुपया देकर कहा, कि उसको वहां तक हिफाजतसे पहुंचादेवें (पृष्ठ २७१) पहिली लडाईमे जो तोपें और अस्बाब लूटकर लियागया था, आगे भेजदिया, और थोडेसे राठौड सर्दार, जो मानसिंहके साथ रहगये थे, उनपर शुब्ह होगया था, इसलिये वह मज्बूर होकर जोधपुरसे चले गये थे इस वक्तपर उन्होंने अपने राजाकी खैरख्वाहीका सुबूत दिखलाना चाहा, और जो फौज कि उनके मुल्कसे अस्बाब लूटकर लेजाती थी, उसपर हमलह करके उसको शिकस्त दी चालीस तोपें और बहुतसा अस्बाब वापस लेलिया; और अमीरखांसे मेल करके उसके साथ जोधपुरको चलेगये" इन महाराजाका हाल हमने तवारीखोंसे चुनकर लिखा है, अपनी तरफसे बिल्कुल कलम नहीं उठाया इनके देहान्तसे थोडे ही अरसह पहिले गवर्न्मेंट अंग्रेजीसे रियासत जयपुरका अहदनामह हुआ आखिरकार विक्रमी १८७५ पौष कृष्ण ९ [हि० १२३४ ता० २३ सफर = ई० १८१८ ता० २१ डिसेम्बर] को इन महाराजाका देहान्त होगया.

३६- महाराजा जयसिंह तीसरे

इनका जन्म विक्रमी १८७६ वैशाख शुक्ल १ [हि० १२३४ ता० ३० जमादियुस्सानी = ई० १८१९ ता० २५ एप्रिल] को हुआ, और जन्म दिनको ही राज्याभिषेक मानना चाहिये, क्योंकि जब महाराजा जगत्सिंहका देहान्त होगया, और कोई औलाद न रही, तब दत्तक रखनेकी फ़िक्र हुई, कुल रियासतके सर्दारान व अहलकाराननें एक मत होकर नर्वरके खारिज रईस मोहनसिंहको गद्दीपर बिठा दिया. इस कामके करनेमें मोहन नाज़िर और डिग्गीका ठाकुर मेघसिंह खंगारोत मुखिया थे, लेकिन् उसी अरसेमें मुखिया लोगोंकी अदावतके कारण विरोध बढ़ गया, एक बडे गिरोहने एकट्ठा होकर मोहनसिंहकी गद्दी नशीनीसे इन्कार किया, और कहा, कि झलाय, ईसरदा व बरवाड़ा वगैरह हकदारोंकी मौजूदगीमें नर्वरवालोंको गद्दी नहीं मिल सक्ती. इसी अरसेमें मश्हूर हुआ, कि महाराजा जगत्सिंहकी राणी भटियाणीको गर्भ है, इस बातकी तह्कीकात अच्छी तरह होने बाद ऊपर लिखी हुई तारीखको महाराजा तीसरे जयसिंह पैदा हुए, और मोहनसिंह माज़ूल किया गया.

महाराजा तीसरे जयसिंहके अह्दमें कोई बात लिखनेके लाइक नहीं है, जनानी ड्योढ़ीके हुक्मसे मुसाहिब व अहलकार काम करते थे, एक रूपा बडारण, जो महाराजा जगत्सिंहकी लौंडियोंमेंसे थी, जनानह हुक्म उसीके ज़रीएसे जारी होता था. यह बडारण आला दरजेकी मुसाहिब गिनीगई, जिसके कई कागज़ात हमारे पास मौजूद हैं, जिनकी नक्लें महाराणा भीमसिंहके हालमें लिखी जावेंगी. विक्रमी १८८५ [हि० १२४३ = ई० १८२८] में जमुहाय माताके दर्शन करनेको महाराजा बाहर लाये गये, और तमाम रिआयाको उनके देखनेसे खुशी हुई. विक्रमी १८८८ माघ कृष्ण १३ [हि० १२४७ ता० २७ शअ्बान = ई० १८३२ ता० ३१ जैन्युअरी] को लॉर्ड बेन्टिककी मुलाकातको यह महाराजा अजमेर आये. यह ज़िक्र तफ्सीलवार महाराणा जवानसिंहके हालमें लिखा जायेगा. इन महाराजाका इन्तिकाल विक्रमी १८९१ माघ शुक्ल ८ [हि० १२५० ता० ७ शव्वाल = ई० १८३५ ता० ६ फेब्रुअरी] को हुआ, जिसकी निस्बत खयाल कियाजाता है, कि झूंथाराम प्रधान नमक हरामके ज़हर देनेसे हुआ.

३७- महाराजा रामसिंह २.

इनका जन्म विक्रमी १८९० द्वितीय भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२४९ ता० १३ जमादियुल अव्वल = ई० १८३३ ता० २८ सेप्टेम्बर] को और राज्याभिषेक विक्रमी १८९१ माघ शुक्ल ८ [हि० १२५० ता० ७ शव्वाल = ई० १८३५ ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को

को हुआ, उस वक्त इनकी उम्र एक वर्ष चार महीने और चौबीस दिनकी थी इस वक्त सिंघी झूथाराम रियासतका कारोबार चलाने लगा, और रूपा बडारण, जो पेश्तर माजी भटियाणीकी जान थी, अब माजी चन्द्रावतकी जबान बनगई दो पुश्त तक पर्दानशीन महाराणियोकी मुख्तारी और अह्लकार व मुसाहिबोकी खुद गरज़ीसे रियासतमे कई दफा फसाद व खूरेजिया होगई, परन्तु ब्रिटिश गवर्मेण्ट की हुकूमतके अम्न व आमानसे रियासतपर कोई बडा ज़वाल नहीं आया, ताहम कर्जदारीकी तरक्की व बे इन्साफीका बाजार गर्म था इस रियासतमे सर्दारोकी निस्बत अह्लकार लोग गालिब रहे है, क्योंकि मुगलियह बादशाहतके जमानहमें यहाके राजा हमेशह काबुल, बगाला, दक्षिण वगैरह दूरके देशोमे नौकरीपर रहते थे, और राजधानी का कारोबार सब मुसाहिबोके इख्तियारमे था इसके बाद महाराजा सवाई जयसिंहने मुसल्मानी बादशाहतकी तनज़्ज़ुलीके वक्त अपनी अमल्दारीको बढाया, और शैखावत, नरूका व राजावत वगैरह बडे बडे जागीरदारोको अपने मातहत करलिया, जो पहिले खुदमुख्तार और पीछे मुगल बादशाहोके जुदे मन्सबदार नौकर कहलाते थे. महाराजा सवाई जयसिंहने, जो बडे पोलिटिकल हालातके जानने वाले थे, इनको नाताकत करके अपने अह्लकारोके मातहत करलिया उनके बाद रामचन्द दीवान, व केशवदास खत्री, हरगोविन्द नाटाणी, हरसहाय व गुरसहाय खत्री वगैरह बडे जबर्दस्त अह्लकार हुए, जिनकी ताकतने जागीरदारोको कभी सिर न उठाने दिया इसी सबबसे नाबालिगीकी हालतमे भी अह्लकारोने रियासतके कारोबारको अच्छी तरह चलाया, लेकिन् आपसकी ना-इत्तिफाकियोसे इस रियासतका अन्दरूनी हाल बहुत खराब था

जब इन महाराजके पिता जयसिंह ३ का देहान्त हुआ, तो उनकी दग्धक्रिया करके शहरमे वापस आनेपर सिंघी झूथारामके बर्खिलाफ शहरके लोगोने बगावत की, लेकिन् झूथारामने फौजकी ताकतसे उसको दबाकर अपना रोब जमा लिया इल्जाम यह लगाया था, कि झूथाराम और रूपा बडारणने महाराजाको मार डाला कुछ अरसे बाद वह कैद किया गया, और उसी हालतमे विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] मे चनारगढमे मरगया रूपा बडारण भी उसी वक्त कैद होकर बाहर भेजी गई थी इस मुकद्दमेकी तह्कीकातके लिये गवर्नर जेनरलके एजेण्ट कर्नेल आल्विज् और उनके असिस्टेंट मिस्टर ब्लैक आये थे जब रूपा बडारणसे हाल दर्याफ्त करके पीछे फिरे, तो महलोके चौकमे बदमआशोने शोर करदिया, कि यह महाराजाको मारने आये थे कर्नेल आल्विज् जख्मी होकर बमुश्किल रेजिडेन्सीमे पहुचे, और असिस्टेंट ब्लैक रास्तहमे मारेगये इस कुसूरमे दीवान अमरचन्दको फांसी दीगई

एजेण्ट साहिबकी सलाहसे सामोदका रावल वैरीशाल कुल कामका मुरुतार बना, जो विक्रमी १८९५ ज्येष्ठ शुक्ल ४ [हि० १२५४ ता० ३ रबीउलअव्वल = ई० १८३८ ता० २७ मई] को बीमार होकर मरगया तब उसका जानशीन रावल शिवसिंह और चौमूका ठाकुर लक्ष्मणसिंह हुआ, और एक पंचायत भी इन्तिज़ामके लिये मुक़र्रर हुई, जिसमे डिग्गीका ठाकुर मेघसिंह और दूणीका राव जीवनसिंह थे, परन्तु इनसे भी काम दुरुस्त न चलसका, फिर रावल शिवसिंह और लक्ष्मणसिंहका इख्तियार बढ गया किसीको महाराजाका देखना मुयस्सर नहीं था, वे जनानहमे रहते थे

विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = ई० १८३९] मे मेजर थॉर्सबी साहिब जयपुरमे पोलिटिकल एजेण्ट मुकर्रर हुए उन्होने फौज वगैरहके फुजूल खर्च तख्फ़ीफ़ करके इन्तिज़ामके लिये दीवानी और फौज्दारीकी अदालते काइम कीं उन्होने राजकी जेरबारी और कम आमदनीपर खयाल करके, जो उस वक्तमे तीस लाख सालानह तक रह गई थी, अंग्रेजी सर्कारमे खिराज कम होनेकी रिपोर्ट की, इसपर विक्रमी १८९७ वैशाख कृष्ण ३० [हि० १२५६ ता० २९ सफर = ई० १८४० ता० १ मई] से बाकी खिराजका उन्तालीस लाख रुपया मुआफ होकर आगेके लिये आठ लाखके एवज चार लाख रुपया सालानह सर्कारी खिराज काइम रक्खा गया इसके बाद साभरका कब्जह राजको सौंपकर शैखावाटी ब्रिगेडका खर्च, जो लूट मार दूर करनेके लिये एक फौज काइम हुई थी, सर्कारने अपने जिम्मह लिया माजी व ठाकुर मेघसिंहने अपने इख्तियार कम होनेसे रंजीदगीके सबब बगावत कराई, लेकिन् हिन्डौन की बागी पल्टन हथियार छीने जाने बाद मौकूफ कीगई चन्द रोज बाद माजी व मेघसिंहने कालकका किला, जो कि जयपुरसे बीस मील पश्चिमी तरफ है, दबालिया मेजर थॉर्सबी साहिबने राजकी फौजसे और मेजर फॉस्टर साहिबने शैखावाटी ब्रिगेडसे किलेका मुहासरह किया, जिसमे तीन सौ आदमी कत्ल और जख्मी हुए आखिर किले वालोने तंग होकर फर्मांबर्दारी इख्तियार की फिर फसादियोकी हर एक बगावत फौजी ताकतसे दबादी गई

विक्रमी १८९७ आषाढ शुक्ल २ [हि० १२५६ ता० १ जमादियुलअव्वल = ई० १८४० ता० १ जुलाई] को चन्द मुसाहिबोने महाराजाको देखकर पहिली नज्र पेश की, लेकिन् रियासती आम आदमियोको महाराजाके देखनेकी उम्मेद बनी रही विक्रमी १८९९ चैत्र शुक्ल १५ [हि० १२५८ ता० १४ रबीउलअव्वल = ई० १८४२ ता० २७ मार्च] को महाराजासे सदर्लैण्ड साहिबकी खानगी मुलाकात हुई, जिसमे चन्द मुसाहिब और सर्दार भी शामिल थे ब्रिटिश अफ्सर चाहते थे, कि महाराजा बाहर निकले. लेकिन् माजी और बडारणे उनको अपने काबूसे निकालना ना पसन्द करती थीं, और मुसाहिब भी इसीमे अपन

फाइदह जानते थे रावल शिवसिंह व लक्ष्मणसिंहसे माजी व बडारणोकी अदावत बढती जाती थी, यहा तक कि इसी सवत्के फाल्गुन् शुक्ल ११ [हि० १२५९ ता० १० सफर = ई० १८४३ ता० १० फेब्रुअरी] को कई सौ विलायतियोने मुसाहिबोपर हमलह करना चाहा, फौजी ताकतसे सत्तरह आदमियोको मारकर बाकीको निकाल दिया, और कुछ गिरिफ्तार भी होगये इस बगावतमे माजी, बडारणो, सर्दारो व अहूलकारोकी साजिश सुबूतको पहुची, मगर झगडा बढजानेके खौफसे एजेण्ट साहिबने दो चार छोटे मुखिया आदमियोको सजा देकर मुकद्दमह खत्म किया

विक्रमी १८९९ माघ [हि० १२५९ मुहर्रम = ई० १८४३ जैन्युअरी] से मेजर लडलो साहिबने मेजर थॉर्सबी साहिबके एवज जयपुरका काम सभाला उनके साम्हने बहुतसी नाकिस रस्मे, सती होना, लौंडी गुलाम बेचना और बहुतसा त्याग देना, जिससे कि राजपूत लडकियोको अक्सर मारडालते (१) थे, जुर्म करार पाकर मौकूफ कीगई रावल शिवसिह और उसके भाई लक्ष्मणसिहने सख्त कार्रवाईसे सब अहूलकारोको नाराज किया, क्योंकि वह राजका रुपया खराब करके अपने रिश्तह-दारोको बहुतसी जागीरे देने लगे थे इसलिये एजेण्ट साहिबने लक्ष्मणसिहको मौकूफ करके उसकी जागीरपर जानेका हुक्म दिया मेजर लडलो साहिबने राजकी आमदनीको तरक्की देकर बहुतसे मुफीद काम जारी किये शहरके करीब सडक, बाग, शिफाखानह और मद्रसह वगैरह तय्यार कराया

ब्रिटिश गवर्मेण्टकी कोशिशसे महाराजाको जनानहसे बाहर निकालकर विक्रमी १९०० वैशाख शुक्ल १३ [हि० १२५९ ता० १२ रबीउस्सानी = ई० १८४३ ता० ११ एप्रिल] को जमुहाय माताके दर्शन करवाये गये, और आम लोगोने महाराजके दर्शन करके ईश्वरका धन्यवाद किया महाराजा जब कुछ होश्यार हुए, तब उन्होने पोशीदह तौरसे हिन्दुस्तानके कई हिस्सोकी सैर की, और अपनी रियासतके कामोपर तवज्जुह की

विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] मे पंडित शिवदीन, जो आगरा कॉलेज का तालिबइल्म था, महाराजा साहिबका उस्ताद मुकर्रर हुआ, उसने अपने कामको दुरुस्तीके साथ अजाम दिया विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] मे मेजर लडलो साहिब बडी नेकनामीके साथ जयपुरसे गये, और उनकी जगह कप्तान रिकार्ड्स मुकर्रर हुए इन्हीं दिनोमे कर्नेल सदर्लैण्ड साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके चले जानेसे

---

(१) यह तर्जमह दूसरी तवारीखोंसे किया गया है त्यागका देना फुजूल खर्च लिखते, तो ठीक था लडकीका बाप त्याग नहीं देता, त्याग लडकेका बाप देता है लडकी मारनेकी बुन्याद सगाईके वक्त टीका लेना है, जो लडकीके बापकी तरफ़से दिया जाता है

भी अफ्सोस हुआ, जिन्होंने राज जयपुरकी बिहतरीके लिये बहुत तवज्जुह सर्फ़ की थी

विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] मे कर्नेल लो साहिब एजेएट गवर्नर जेनरलने पचायतकी निगरानी उठाकर महाराजा साहिबको मुल्की इख्तियार मिलजानेकी रिपोर्ट की, जिसपर लिहाज होकर विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] मे महाराजाको सर्कारकी तरफसे इख्तियारात हासिल होगये, लेकिन् रावल वजीरके जबर्दस्त काबूसे महाराजा दबेहुए थे जब कर्नेल सर हेनरी लॉरेन्स, के सी बी एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहसे सब हाल बयान किया, तो साहिबने निहायत मिहर्बानी और तसल्लीसे नेक सलाहके साथ कार्रवाइया बतलाई महाराजा साहिबने फौरन् रावलको मौकूफ करके ठाकुर लक्ष्मणसिहको वजीर, शिवदीनको हाकिम माल, और एक दूसरे शख्सको फौज बख्शी मुकर्रर किया

रावल शिवसिहसे मुसाहबत पडित शिवदीनको मिली, जो महाराजाका उस्ताद था महाराजाने अपनी रियासतका इन्तिजाम इस खैरख्वाह पडितके जरीएसे बहुत ही उम्दह किया

विक्रमी १९२० माघ [हि० १२८० रमजान = ई० १८६४ फेब्रुअरी] मे महाराजा साहिबने जोधपुर जाकर अपनी दो शादिया की, और इसी सालमे अग्रेजी सर्कारसे उनको अव्वल दरजेका तमगाय सितारए हिन्द इनायत हुआ अफ्सोस है, कि चन्द रोज बाद महाराजाका लाइक मुसाहिब पडित शिवदीन मरगया इसके बाद महाराजा साहिबने एक कॉन्सिल मुकर्रर की, जिसमे अव्वल मुसाहिब बख्शी फैजअलीखा रक्खे गये बख्शीकी कारगुजारीसे महाराजा साहिबकी रजामन्दीके सिवा हर एक पोलिटिकल अफ्सर भी खुश रहा, जिसके सबब एजेन्सीकी कोई रिपोर्ट उसकी तारीफ से खाली नही होती थी विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] मे बख्शी फैजअलीखाको अग्रेजी सर्कारसे नव्वाब मुम्ताजुद्दौलह खिताब और तीसरे दरजेका तमगाय सितारए हिन्द अता हुआ

विक्रमी १९२७ आश्विन [हि० १२८७ रजब = ई० १८७० ऑक्टोबर] मे लॉर्ड मेओ साहिब (१) वाइसरॉय हिन्द, दौरेके तौर अजमेरको जाते हुए अव्वल बार जयपुरमे दाखिल हुए, जिनकी खातिरदारी और मिहमानी महाराजा साहिबने उम्दह तौरपर की दूसरे साल लॉर्ड मेओ साहिबके जजीरे ऐण्डमानमे एक कैदीके हाथसे मारे जानेके सबब महाराजा साहिबको सख्त रज पहुचा, जिसका शोक बहुत दिनो तक उन्होने

(१) इनकी यादगारके लिये मेओ हॉस्पिटल और उक्त लॉर्ड साहिबकी कद्दे आदम मूर्ति महाराजाने जयपुरमे बनवाई

किया. थोडे दिनो बाद महाराजा साहिब खुद बीमार होगये, और उनकी बीनाई (दृष्टि) मे फ़र्क़ आगया. इसलिये उन्होंने शिमले जाकर मश्हूर डॉक्टर मेक्नामारासे आंखका इलाज कराया. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] मे नव्वाब फ़ैज़-अलीख़ाने बीस सालकी नेकनाम नौकरीके बाद राज जयपुरकी विज़ारतसे इस्तिअ्फ़ा दिया. अंग्रेज़ी सर्कारने निहायत क़द्रदानीसे उसको राज कोटेका पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेण्ट मुक़र्रर किया, और दूसरे दरजेका तमग़ाय सितारए हिन्द याने के० सी० एस० आइ० इनायत हुआ. महाराजा साहिबने नव्वाबके चलेजाने बाद ठाकुर फ़त्हसिंह राठौडको मुसाहबतका उह्दह दिया, जिसका काम उसने निहायत मुस्तइदी और दुरुस्तीसे अंजाम दिया.

विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष [हि० १२९२ ज़िल्काद = ई० १८७५ डिसेम्बर] मे लॉर्ड नॉर्थब्रुक साहिब गवर्नर जेनरल मुल्क हिन्द, और विक्रमी १९३२ माघ [हि० १२९३ मुहर्रम = ई० १८७६ फेब्रुअरी] मे शाहज़ादह साहिब वेल्स वलीअह्द इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तान सैरके तौर जयपुरमे तश्रीफ़ लाये. दोनो मौकोंपर महाराजा साहिबने निहायत ख़ातिर और मिहमादारीसे सर्कारी ख़ैरख़्वाहीका सुबूत दिया. इस ख़ुशीकी यादगारमे महाराजा साहिबने मेओ हॉस्पिटल और मेओ साहिबकी बिरंजी (पीतलकी) तस्वीरके सिवा, जो पहिलेसे तय्यार होरहे थे, शाहज़ादह साहिबके नामपर एक मकान 'ऑल्बर्ट हॉल' बनाना तज्वीज़ किया, और उसकी बुन्यादका पत्थर शाहज़ादह साहिबने अपने हाथसे रक्खा. इन दोनोंका हाल मए सफ़ाई व सडको वग़ैरहके नीचे लिखा जाता है -

महकमह पब्लिक वर्क्स (तामीरात)

इस महकमहकी इब्तिदा यानी आरंभ विक्रमी १९१७ [हि० १२७६ = ई० १८६०] मे हुई. उस वक्त यह महकमह कर्नेल प्राइस साहिबके मातह्त किया गया था. विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] मे लेफ्टिनेन्ट कर्नेल एस० एस० जैकब साहिब उस जगहपर नियत हुए, जो इस राज्यके एग्ज़िक्युटिव एन्जिनिअर है. विक्रमी १९३७ भाद्रपद [हि० १२९७ शव्वाल = ई० १८८० सेप्टेम्बर] तक इस महकमेका ख़र्च रास्ता, तालाब, मकानात, वग़ैरह बनानेमे ४९०००० लाख रुपया हुआ.

रास्ते - ख़ास अजमेर और आगराकी बडी सडके बनाई गई.

तालाब वग़ैरह - विक्रमी १९४२ [हि० १३०२ = ई० १८८५] तक छोटे बडे १०० के क़रीब बनाये गये है, और उनसे बत्तीस हज़ार एकड ज़मीन सींची जाती है. बडी झीलें - टोरी, कालक, मोरा, खुर, बचरा है, जिनका क्षेत्रफल क्रमसे $6\frac{1}{2}$, $2\frac{1}{2}$, २, $1\frac{3}{4}$, $1\frac{3}{4}$ वर्ग मील है.

शहरमे आहनी नलोके द्वारा पानी पहुचानेका काम विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] मे शुरू होकर विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] मे खत्म हुआ इसका खर्च ६५८१७० रुपया हुआ, और वार्षिक खर्च ४७००० रुपया होता है

गैसकी रौशनीका कारखानह विक्रमी १९३५ [हि० १२९५ = ई० १८७८] में शुरू हुआ और विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] मे खत्म हुआ इसका खर्च ३१७८२२ रुपया हुआ, जिसके वार्षिक खर्चके ३६८६६ रुपये होते है

रामनिवास बाग- इसका क्षेत्र फल ७६ एकड है इसका काम विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] मे शुरू हुआ, और अब तक जारी है इस बागका खर्च ८१०७१५ रुपये होचुका है

ऊपर लिखा हुआ हाल जैकब साहिबने विक्रमी १९४६ चैत्र शुक्ल ५ [हि० १३०६ ता० ४ शअ्बान = ई० १८८९ ता० ५ एप्रिल] को जयपुरसे लिखकर भेजा था, उससे और डॉक्टर स्ट्रैटन साहिबकी बनाई हुई " जयपुर आंबेर फेमिली " नाम किताबसे लिया गया है

दवाखानह- जयपुरके राज्यमे मेओ हॉस्पिटलके सिवा नीचे लिखी २४ जगहपर दवाखाने है -

१ महल	२ पुरानी बस्ती	३ मोती कटरा	४ कैदखानह
५ पागलखानह	६ सागानेर	७ हिंडौन	८ सवाई माधवपुर
९ झूंझणू	१० दौसा	११ गंगापुर	१२ चाटसू
१३ साभर	१४ मालपुरा	१५ लालसोट	१६ महुवा
१७ श्री माधवपुर	१८ बादी कुई	१९ खेतडी	२० कोटपुतली
२१ चीरवा	२२ सीकर	२३ उनियारा	२४ चौमू

विक्रमी १९४५ [हि० १३०५ = ई० १८८८] की दवाखानोकी रिपोर्ट, जो सर्जन मेजर हॅन्डली साहिबने हमारे पास भेजी है, उससे मालूम होता है, कि इस वर्षमे दवाखानोका कुल खर्च ३४५४०-७-३ हुआ, और १५४९२८ मरीजोका इलाज किया गया मेओ हॉस्पिटल, जो जयपुरमे सबसे बडा दवाखानह है, उसकी नींव विक्रमी १९२७ कार्तिक कृष्ण ४ [हि० १२८७ ता० १८ रजब = ई० १८७० ता० १४ ऑक्टोबर] को रक्खी गई थी, और विक्रमी १९३५ श्रावण [हि० १२९५ शअ्बान = ई० १८७८ ऑगस्ट] मे काम खत्म हुआ इसमे कुल खर्च रु० १८४८८३-११-६ हुआ

ऑल्बर्ट हॉल

इसकी नीव विक्रमी १९३२ माघ शुक्ल ३ [हि० १२९३ ता० २ मुहर्रम = ई० १८७६ ता० १६ फेब्रुअरी] को मलिकए मुअज्जमहके पाटवी बेटे प्रिन्स ऑफ़ वेल्सके हाथसे रखवाई गई थी, और महाराजा रामसिंह दूसरेने उनकी मुलाक़ातकी यादगारके लिये इसका नाम 'ऑल्बर्ट हॉल' रक्खा यह मकान रामनिवास बागमे वाके है कर्नेल जैकब ता।हिनें बहुत उम्दह कतापर इसको जयपुरके कारीगरोके हाथसे बनवाया है यह बडा विशाल, सुशोभित, और देशी कारीगरी और इस देशकी पुरानी इमारतोका नमूना है इसके नीचले भागमे दो बडे हॉल है, जिनमेसे एक, जो मीटिंग, व्याख्यान वगैरहके लिये अवामके काममे आसके, खाली रक्खा गया है इनके सिवा नीचे और ऊपर कई बडे बडे कमरे व गैलेरी वगैरह सग्रह रखनेके लाइक बनाये गये है स्तभ व फर्श वगैरहमे तरह तरहके रगके पत्थर काममे लाये गये है, फर्शपर दिह्लीके जेलखानेमे तय्यार कीहुई चटाइये और जयपुरके कैदखानेमे बनाई हुई दरिया बिछाई गई है कठहरे वगैरह भी देशी पत्थर और लकडीके उम्दह बनाये गये है गैसकी रौशनीके वास्ते बडे बडे खूबसूरत फानूस खास इस म्युजिअमके वास्ते तय्यार करवाकर मगवाये गये है दीवारके ऊपर उम्दह बडे अक्षरोमे देशी और अग्रेजी जबानोमे कई नसीहते लिखी है इनके सिवा हिन्दुस्तान, यूनान, रोम वगैरह देशोके पुराने जमानेके चित्रोकी अस्लके मुताबिक बडी नक्के उम्दह चितारोके हाथसे बनवाई गई है बादशाह अक्बरने महाभारतका फार्सीमे जो तर्जमह करवाया था, (जिसको रज्मनामह कहते है), उसकी अस्ल प्रतिमे कई विषयोके चित्र उस वक्तके प्रख्यात, लाल, बसवान, मशकिन और मुकुन्द, चितारोके हाथके बनाये हुए है, जिनमेसे छ चित्रोको कदमे बटाके अस्लके मुताबिक बडे खर्चसे यहा तय्यार करवाया गया है पहिले चित्रमे युधिष्ठिरका द्यूत खेलना है, २ दमयन्ती का स्वयबर, ३ हनुमानका लंका जलाना, और राक्षसोका भागना, ४ चद्रहास और विखियाका लग्न, ५ राजा मोरध्वजका यज्ञ, ६ अनुसालका श्वेत अश्वको लेजाना ऐसे ही मिश्र, रोम वगैरहके चित्रोमे भी प्राचीन वक्तके धर्म सम्बन्धी और दूसरे चित्र है हॉलकी दोनो बारियोके शीशोपर सूर्य और चन्द्रकी मूर्तिया बनाई है आज तक इस मकानका खर्च ४८१७३८-१-२ होचुका है, और अभी इसका काम जारी है

विक्रमी १९३८ भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० १२९८ ता० २ शव्वाल = ई० १८८१ ता० २६ ऑगस्ट] को एक दूसरे मकानमे कर्नेल वॉल्टर साहिबने एक म्युजिअम (सग्रह स्थान) खोला था, और विक्रमी १९४३ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १३०३ ता० १२ जिल्हिज = ई० १८८६ ता० ११ सेप्टेम्बर] तक वह सग्रह वही रहा. फिर ऑल्बर्ट हॉल तय्यार

होनेपर चीज़ोंका संग्रह यहां लाया गया, और विक्रमी १९४३ माघ कृष्ण १२ [हि० १३०४ ता० २८ रबीउस्सानी = ई० १८८७ ता० २१ फेब्रुअरी] को सर एडवर्ड ब्राडफोर्ड साहिब, उस वक्तके एजेएट गवर्नर जेनरलने इस मकानको खोलनेकी रस्म अदा की

इस म्युजिअममें कई तरहके सादे और नक्काशीके तांबा पीतलके बर्तन, जयपुर, बनारस, मुरादाबाद, लखनऊ, हैदराबाद वगैरह शहरोंमें बने हुए एकट्ठे किये हैं, और वे अपने अपने दरजहके मुवाफ़िक़ जगहपर रक्खे गये हैं लंका, ब्रह्मा, कच्छ और दिहलीके बने हुए रूपेके बर्तन और दूसरी चीजें भी बहुत हैं पुराने जमाने के लड़नेके हथियार और लड़नेके वक्त पहिननेके बक्तर वगैरह भी एकट्ठे किये हैं पुराने जमानेके बर्तन और पुराने वक्तसे लेकर मुग़ल बादशाहोंके वक्त तकके सोना चांदी और तांबाके सिक्के, जो आज तक मिले हैं, उनका संग्रह काबिल देखनेके है पुराने वक्तसे आज तकके ग़रीबसे लेकर राजा तकके पहिननेके सोना, चांदी और पीतल के जेवर भी खूब एकट्ठे किये गये हैं

पुराने जमानेसे आज तक हिन्दुस्तानकी जुदी जुदी बादशाहतोंके वक्तमें हिन्दुस्तानके विभाग किस तरह किये गये थे, और उस वक्तके देशोंके नाम वगैरह क्या थे, उसके अलग अलग नक़्शे इस म्युजिअमके ऑनरेरी सेक्रेटरी सर्जन् मेजर हेन्डली साहिबने बड़े परिश्रमसे तय्यार करके यहां रक्खे हैं

जयपुरकी बनाई हुई पत्थरकी मूर्तियां और जयपुर, दिहली, सिंध, पिशावर, जापान, चीन, जालंधर, मुल्तान, लंका, वगैरहके बनाये हुए मिट्टी (चीनी) के बर्तन का संग्रह बहुत बड़ा है इन बर्तनोंके ऊपर कई तरहके चित्र बनाये गये हैं, किसी किसीपर महाभारत, रामायण वगैरहकी कथाओंमें लिखे हुए पुरुषोंके चित्र, किसी पर राशियोंके चित्र वगैरह धर्म और विद्या सम्बन्धी चित्र हैं ब्रह्माकी बनाई हुई पत्थरकी चीजें और आगरेका पच्ची कारीका काम और हिन्दुस्तानकी कई जगहकी बनी हुई लकड़ी और हाथी दांतकी नक्काशीकी चीजें, लाहौर और शिमलाकी नुमाइशगाहोंमें जो चीजें आईं उनके फोटोग्राफ, जयपुर राजके बड़े बड़े मकानातके फोटोग्राफ, राजपूतानह और सेन्ट्रल इन्डियाके प्रख्यात मकामातके फोटोग्राफ, कई दूसरे राजाओंके फोटोग्राफ वगैरहका संग्रह भी बहुत बड़ा है महाराजा सवाई जयसिंहके बनाये हुए ज्योतिषके यन्त्र साम्राट्, ऋषिवलय, गोलयन्त्र, दिगंशयन्त्र, अयनयन्त्र, यन्त्रराज, नाडीवलय वगैरह पुराने और उपयोगी पीतलके यन्त्र भी यहां जमा किये हैं. महाराजाने अपने खानगी संग्रहमेंसे ये यन्त्र दिये हैं चटाई, दरी, गालीचा वगैरहके तरह तरहके नमूने और २०० । ३०० बर्षके पुराने कपड़े, जो जयपुर राज्यमें संग्रह करके रक्खे हैं, उनकी अस्लके मुताबिक़ नई नक़्लें, हिन्दुस्तानके कई शहरोंके बने हुए जर और कलाबत्तूके

नमूने, रेशमी कपडोंके नमूने, कई तरहकी छींटोंके नमूने भी बहुत एकट्ठे किये गये हैं पूना, कश्मीर, लखनऊ वगैरह शहरोंके बने हुए मिट्टीके खिलौने, मूर्तियां तथा कई किस्मकी मिट्टी, कई किस्मके पत्थर, धूल और पत्थरमें मिली हुई धातुएं, कई तरहके चटानके नमूने और शंख वगैरहका संग्रह भी बहुत उम्दह है जयपुर राज्यमें जितनी जातके लोग बसते हैं, उनके सिर और पघड़ियां मिट्टीकी बनाई हुई, और दुन्यामें जितने बडे बडे हीरे हैं, उनके बराबर उसी रंगके कांचके बनाये हुए हीरे, सूक्ष्म दर्शक यन्त्र, जादूका फ़ानूस, फोटोग्राफ़, रसायन शास्त्र, पदार्थ विज्ञान शास्त्रके उपयोगी यन्त्र, डॉक्टरी विद्याके उपयोगी कृत्रिम शरीर विभाग, कई किस्मके नाज, दवा वगैरहका संग्रह भी बहुत है

मरे हुए पक्षी और जानवरों को रखने के लिये अब जगह नहीं है, इसवास्ते सिर्फ़ राजपूतानह के पक्षी और जानवरों का संग्रह किया जायेगा

कुद्रती तवारीख पढने वालों के वास्ते बहुत उम्दह संग्रह होरहा है

करो शहर (काहिरह) के गवर्नर ब्रुक्स बे साहिबने मिश्र देशकी कई पुरानी चीजें यहां भेजी हैं, जिनमें एक औरतकी लाश करीब ३००० बर्षकी पुरानी, जिसको ममीई कहते हैं, और जमीनमेंसे निकली हुई पुराने जमानेकी धातुकी मूर्तियां हैं, जिनमें हनुमान वगैरह हिन्दुओंके कई देवताओं की शक्लें हैं इस म्यूजिअम में कमसे कम १४००० चीजें रक्खी गई हैं, और कईएक यहां रखनेके लिये तय्यार हैं, वे भी रखनेका पुख्तह बन्दोबस्त होनेपर रक्खी जायेंगी सिवाय ऊपर लिखे मकान खर्चके, आज तक रु० ९६३८४-३-४ सामान खरीदनेमें खर्च होचुके हैं

यह हाल हमने विक्रमी १९४५ फाल्गुन शुक्ल १४ [हि० १३०६ ता० १३ रजब = ई० १८८९ ता० १६ मार्च] को राव बहादुर ठाकुर गोविन्दसिंहके साथ वहां जाकर खुद देखने बाद, और इस म्यूजिअमकी तीसरी रिपोर्ट, जो सर्जनमेजर हेन्डली साहिबने हमारे पास भेजी, उससे लिखा है

अगर्चि राज्य जयपुरके सरिश्तह तालीमका किसी कद्र बयान जुग्राफियेमें होचुका है, लेकिन् वह तफ्सीलवार और काफी न समझा जाकर यहांपर मुफस्सल दर्ज किया जाता है -

खास राजधानी शहर जयपुरमें सबसे बडा मद्रसह 'महाराजा कॉलेज' नामसे मश्हूर है, जिसकी बुनयाद महाराजा रामसिंह २ के अह्द विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में डाली गई, और इसकी तालीम व तर्बियतका इन्तिजाम पंडित शिवदीन, मुन्शी कृष्णस्वरूप व पंडित वंशीधरके सुपुर्द किया गया, लेकिन् काइम होनेके जमानहसे विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] तक कॉलेजमें कुछ तरक्की न होनेके सबब महाराजाने तीन बंगाली कलकत्तेसे बुलाकर कॉलेजमें नियत किये, जिनकी मिह्नत और खुश इन्तिज़ामीसे कॉलेजने बहुत रौनक़ पाई, और

तालिबइल्मोकी तादाद भी रोज बरोज बढती गई अब यह कॉलेज राजपूतानह मे सबसे बढकर है, इसमे अंग्रेजी, सस्कृत, अरबी, फार्सी, उर्दू, और हिन्दीकी तालीम दी जानेके सिवा फन् इन्जिनिएरी और सर्वेइग याने पैमाइश और लेवलिग याने जमीनकी ऊंचाई नीचाईका हाल दर्याफ्त करना भी सिखाया जाता है हर साल कई तालिबइल्म एन्ट्रेन्स और फर्स्ट आर्ट्सका इम्तिहान देनेके लिये कल्कत्तह युनिवर्सिटीको जाते है, और अक्सर कामयाब होते है चाद पौलका स्कूल इस कॉलेजकी एक शाख है, जिसमे फार्सी व हिन्दी पढाई जाती है शहरमे एक सस्कृत कॉलेज भी है, जो विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] मे जारी हुआ, उसमे सस्कृत जबानकी तालीम बहुत अच्छी होती है, और वहासे मुस्तइद पडित तय्यार होकर निकलते है

ठाकुरोका मद्रसह शुरूमे पडित शिवदीनके जमानेमे इस गरजसे काइम किया गया था, कि राज्यके सर्दार व जागीरदारोके लडके तहसील इल्म करके लियाकत हासिल करे. और राज्यकी उम्दह खिझतोके लाइक हो, लेकिन् तजिबहसे यह पाया गया, कि राजपूत लोगोका शौक इल्मकी तरफ नहीं है, बल्कि वे कदीम दस्तूरोकी पाबन्दीके खयालातसे इल्म व हुनर सीखना अपनी हतकका बाइस समझते है, उन का एतिकाद यह है, कि पढना लिखना ब्राह्मण और बनियोका काम है, अमीर लोग इस किस्मका काम अपने मातहत अहलकारोसे लेसक्ते है, तो फिर उनको पढने लिखनेमे कोशिश करना बेफाइदह है, और इसी वजहसे मद्रसेकी तरक्की नहीं हुई. अगर्चि मद्रसेको काइम हुए कई साल होचुके थे, लेकिन् विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] मे देखागया, तो स्कूलमे अहलकारोके ८ लडके और राजपूतोके सिर्फ पाच ही थे, तब दूसरे साल महाराजाने इस अब्तरीको देख कर, जो किसी कद्र राजपूतोकी बेपर्वाई और किसी कद्र अगले उस्तादोकी गफलत और बदइन्तिजामीसे थी, नया बन्दोबस्त करके, सर्दारोको अपने लडकोंके मद्रसे में भेजनेकी ताकीद की, और बाबू ससारचन्द्रसेनको इस मद्रसेका हेड मास्टर बनाया, उस वक्तसे दिन ब दिन लडकोकी तादाद व इल्ममे तरक्की होने लगी विक्रमी १९३१ - ३२ [हि० १२९१ - ९२ = ई० १८७४ - ७५] मे तालिब इल्मोकी तादाद ५६ थी.

जनानह मद्रसह भी एक मुद्दतसे मुकर्रर था, लेकिन् उसकी हालत भी अब्तरी पर थी, विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] तक सिर्फ २५ लडकिया हिन्दीकी इब्तिदाई किताबे पढती थी इस हालतको देखकर इसी सालमे महाराजाने मिस्ट्रेस ऑकल्टनको कलकत्तेसे बुलाकर हेड मिस्ट्रेस मुकर्रर किया, जिसने लडकियोको तालीम देनेमे बहुत कुछ कोशिश की, और जरदोजी व सोजनीका काम भी सिखलाया.

इस कामकी आमदनीमे, लडकियोकी तादाद बढजानेके सबब, पांच लडकिया तनख्वाहपर पढानेके लिये मुकर्रर कीगई विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] से इस मद्रसेकी हेड मिस्ट्रेस, मिस्ट्रेस ज्वायसी है, जिनके इन्तिजामसे स्कूल की पहिलेके मुवाफिक ही रौनक और तरक्की है विक्रमी १९३१-३२ [हि० १२९१-९२ = ई० १८७४-७५] मे इस मद्रसेकी चन्द शाखे और मुकर्रर हुई, एक ट्रेनिंग स्कूल, कि जिसमे लडकिया इल्म हासिल करके पाठक मुकर्रर हुआ करे, दूसरा अपर स्कूल, कि उसमे दौलतमन्द लोगोकी लडकिया पढा करे इसी तरह शहरमे १० शाखे मुकर्रर होकर लडकियोकी तादाद विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] मे एक दम ५६४ को पहुच गई, जो विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] मे सिर्फ १६७ थी उस स्कूलमे सिवाय हिन्दीके फार्सी और उर्दू भी चन्द जमाअतोको पढाई जाती है

कारीगरीका मद्रसह बनानेकी सलाह महाराजाको विक्रमी १९२१ [हि० १२८० = ई० १८६४] मे बमकाम कलकत्ता सर चार्ल्स ट्रेविलिअन साहिबने दी थी, और बाद उसके डॉक्टर हटर साहिब मुतअल्लिक मद्रसे कारीगरीने, जो लॉर्ड नेपियर साहिबके साथ हिन्दुस्तानके मुख्तलिफ हिस्सोकी कारीगरी और कारखानोका हाल दर्याफ्त करनेके लिये आये थे, डॉक्टर वैलिन्टाइनकी ख्वाहिशके मुवाफिक जयपुरमे जाकर वहाका पत्थर, धातु वगैरह चीजे मुतअल्लिक सन्अत, कि जिनकी तरक्की कारीगरीके जरीएसे बहुत कुछ होसक्ती है, देखकर, महाराजाको दस्तकारीके कामोकी तरक्कीके लिये मुतवज्जिह किया, जिसपर उन्होने विक्रमी १९२४ ज्येष्ठ [हि० १२८४ सफर = ई० १८६७ जून] मे कारीगरीका मद्रसह मुकर्रर किया कुछ अरसे बाद डॉक्टर डिफेबिकने, जो देवलीकी छावनीमे थे, इत्तिफाकन् जयपुरमे आकर महाराजासे इस कारखानेके इन्तिजाम की दर्ख्वास्त की, जो मन्जूर होकर उक्त साहिब सुपरिन्टेन्डेएट मुकर्रर हुए उसी अरसेमे वह किसी जुरूरतके सबब छ महीनेकी रुख्सत लेकर गये, और फिर विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] मे वापस आकर काम शुरू किया कारखानेमे उस वक्त कोई लाइक उस्ताद नही था, इसलिये शुरूमे लडकोको नक्शह खेचनेका काम सिखाना शुरू किया बाद उसके दो कारीगर एक लुहार दूसरा कुम्हार मद्राससे, दो लकडीका काम करने वाले सहारनपुरसे, और जरदोजीका काम सिखाने वाले बनारससे बुलाये गये, सग तराशीका काम जयपुरमे बहुत उम्दह होता है, इसलिये इस कामके उस्ताद शहरमेसे नौकर रक्खे गये इन सब कामोकी तालीम और सिवा उनके कलमी तस्वीर खेचनेका काम, फोटोग्राफ, कासी पीतलके बर्तन बनाना, और हर किस्मका सादा व खुदाईका काम सिखलाना शुरू किया

गया हरएक काम सीखने वालेको दो माह तक इम्तिहानन् काम करने बाद कामकी उजत और पहिली जमाअत वालोंको एक रुपया माहवार, और इसी तरह चौथी जमाअतमे दाखिल होनेपर ४ रुपये माहवार वजीफा देना मुकर्रर किया गया, लेकिन् यह अमल लडकोंको कारीगरी सीखनेका शौक दिलानेके लिये थोडे ही अरसे तक रहा इस मद्रसेमे एक कुतुबखानह था, जिसमे सिवा संस्कृत किताबोंके, जो पहिलेसे थीं, महाराजाने हर एक इल्म, फन, और ज़बानकी ६००० जिल्दे इंग्लिस्तानसे मंगवाकर शौकीन लोगोंके पढनेके लिये रखवाई थी, और हफ्तेमे दो बार इल्म तिब्बी (वैद्यक) और तबीई (पदार्थ विद्या) पर डॉक्टर वैलिन्टाइन साहिब और जरसकील (शिल्प शास्त्र) पर कप्तान जैकब साहिब लेक्चर (व्याख्यान) दिया करते थे, जिसे सुननेके वास्ते शहरके शरीफ लोग और मद्रसेके होश्यार तालिब इल्म और खुद महाराजा तशरीफ़ लाते थे

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] मे मदरासके उस्तादोंकी जगह कई दूसरे उस्ताद दिल्ली, लखनऊ और कानपुरसे बुलाये गये, इस सबबसे कि मदरासके उस्ताद यहांकी बोलीसे वाकिफ़ नहीं थे, इसलिये लडकोंको उनका बयान समझमे नहीं आता था अगर्चि इस कामके शुरू करनेमे कई तरहकी मुश्किले पेश आईं, मगर डॉक्टर डिफेबिक साहिबने अपनी कोशिश और पैरवीसे कारखानेको जारी रखकर थोडे ही अरसेमे बहुत रौनक दी, इन डॉक्टर साहिबको सिर्फ यही काम सुपुर्द नहीं था, बल्कि उस ज़मानेकी बनी हुई तमाम मुफीद तामीरातकी तज्वीज और नक्शोंमे उनकी सलाह लीगई थी स्कूलमे लुहार व खातीका काम, संगतराशी, खरांद, जवाहिर खराशी, मिट्टीके बर्तन बनाना, जिल्दसाजी, केमिस्टरी, लिथोग्राफ, टाइपोग्राफ, मुलम्मा साजी, फोटोग्राफ और ज़र्दोजी वगैरहका काम सिखाया जाता है, और हर फनके शागिर्द अपना अपना काम बडी सफाईके साथ करते हैं शागिर्दोंकी तादाद सिवा मुसव्विरोंके विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] मे ६४ थी, जो डॉक्टर डिफेबिक साहिब सुपरिन्टेन्डेन्ट मद्रसे कारीगरीने विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७०-७१] की रिपोर्टमे दर्जकी है, और विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४ मे १०४ तक पहुंची विक्रमी १९२८ कार्तिक शुक्ल ४ [हि० १२८८ ता० ३ रमज़ान = ई० १८७१ ता० १६ नोवेम्बर] के रेज़ोल्युशन गवर्मेंट सीगे माल नम्बरी ४९१० के मुवाफ़िक डॉक्टर डिफेबिक साहिबका इस मद्रसेसे विक्रमी १९२९ आश्विन कृष्ण ३० [हि० १२८९ ता० २९ रजब = ई० १८७२ ता० १ ऑक्टोबर] को अलहदह होना ज़रूरी खयाल किया गया इसी सालके जूनमे महाराजाने मिस्टर स्कोरजी साहिब हेड-मास्टर मद्रसे अकोलाको बुलाया, जो ऑक्टोबरकी ३ तारीखको जयपुरमे आया; और दो साल

रहकर पूनाको चलागया अब यह मद्रसह ऐसे लाइक शख़्सके बिदून सभाल तनज़्ज़ुलीकी हालतमे है शुरू ज़मानेमे जैसी तरक्की शागिर्दोंने की, और कलकत्तेकी नुमाइशगाहमे इन्आम हासिल किये, ये सब हालात डॉक्टर डिफेबिककी सन् १८७०-७१ व १८७१-७२ की रिपोर्टोंको देखनेसे अच्छी तरह मालूम होसके है, जो यहापर ब सबब तवालतके दर्ज नहीं कीगई- (देखो वकाये राजपूतानह पहिली जिल्द-पृष्ठ ८४२ से ५१ तक)

विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = ई० १८६१] मे जयपुरमे मेडिकल स्कूल मुकर्रर हुआ था, जो उस वक्तसे डॉक्टर बर साहिब एजेन्सी सर्जन के इह्तिमाममे रहा इस मद्रसेको तोड देनेकी बाबत विक्रमी १९२३ [हि० १२८३ = ई० १८६६] से बह्स होरही थी, डॉक्टर बर साहिबकी रिपोर्ट पर गवर्मेण्ट हिन्दुस्तानसे इस बारेमे महाराजाकी राय तलब हुई उनमे अव्वल बात यह है, कि डॉक्टर साहिबने फी तालिबइल्म ५००) रुपया सालानह खर्च लिखा था, जिसपर कर्नेल ईडन साहिबकी तज्वीज हुई थी, कि अगर महाराजा चन्द लडकोको चाहे, तो कलकत्तेके मेडिकल स्कूलमे भेजा करे, ताकि खर्च भी बहुत कम लगे, और फाइदह जियादह हो, इस बातको महाराजाने मन्जूर किया, लेकिन् डॉक्टर एवर्ट साहिब प्रिन्सिपल मेडिकल स्कूलने इस तज्वीजको नापसन्द किया आखिरको विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में गवर्मेण्टके मन्शाके मुवाफिक मेडिकल स्कूल तोडा जाकर तालिबइल्मोको आगरे के मेडिकल स्कूलमे भेजा जाना करार पाया, और डॉक्टर फ्लिपर साहिब प्रिन्सिपलके पास विद्यार्थी भेजे गये

सिवाय ऊपर लिखे मद्रसोके, जो खास राजधानी शहर जयपुरमे है, महाराजाने विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] मे देहाती स्कूल कस्बो व गावोमे मुकर्रर किये, और विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] मे ठाकुर गोविन्दसिंह चौमू वालेने, जो खुद निहायत लईक है, चौमूमे मद्रसह काइम किया विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] से विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] तक कस्बो व गावोमे ४१२ मद्रसे व मक्तब काइम किये गये, जिनमेसे ३३ तो खास राज्यके खर्चसे जारी है, और बाकी ३७९ को राज्यसे किसी कद्र मदद दी जाती है इन कुल मद्रसोके विद्यार्थियोकी सख्या विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] मे ७९०५ थी खास शहरके मद्रसो और जिलोके छोटे बडे स्कूलोके नक्शे राजपूतानह गजेटियरसे यहा दर्ज किये जाते है

सन् १८७४-७५ में कॉलेजों और पाठशालाओंकी आमद व ख़र्च वग़ैरहका नक़्शह

पाठशाला	मकाम	कब जारी हुआ	सालके अख़ीर में तालिब इल्मों की तादाद				औसत रोज़ानह हाज़िरी	सालके अख़ीरमें हरएक ज़बान पढ़ने वाले तालिब इल्मोंकी तादाद							आमदनी	ख़र्च		मीज़ान	हर एक तालिब इल्मकी तालीम में सालानह औसत ख़र्च
			हिन्दू	मुसल्मान	क्रिश्चियन	कुल		अंग्रेज़ी	फ़ार्सी	उर्दू	बंगाली	अरबी	संस्कृत	हिन्दी		मामूली	ग़ैर मामूली		
महाराजा कॉलेज	जयपुर	१८४४	६८४	१३७	४	८२५	५९७	६०२	३३७	२९७	०	६	५	१८४	२३८१२।≠)॥	२२३०५॥।≠)॥	१५०६॥)	२३८१२।≠)॥	२८॥।)॥२
संस्कृत कॉलेज	ऐजन	१८४५	२०८	०	०	२०८	१७८	०	०	०	०	०	१५४	५४	७४३०॥≠)	७३८८)	४२॥≠)	७४३०॥≠)	३५॥≠)७
चांदपौल ब्रैंच स्कूल	”	१८४२	६०	१०	०	७०	५६	०	५०	०	०	०	२०	०	२८९॥)	२८८॥)	०	२८८॥)	४॥।/)२
राजपूत स्कूल	”	१८६२	५२	४	०	५६	३५	४८	३९	५	०	०	१	१२	५०६९॥।≠)	१८१२)	२५७॥।≠)	५०६ ॥।≠)	९०॥)॥
जनानह स्कूल	”																		
दस्तकारीका स्कूल	शहर	१८६७	६५	३	०	६८	६०	०	०	०	०	०	०	६८					
मध्य	”	१८७५	१७८	२३	०	२०१	१९३	०	०	३७	७	०	०	२०१					
हथरोल ब्रैंच	हथरोल	१८७४	३०	२	०	२५	२५	०	०	०	०	०	०	२५					
गंगा पौल	गंगापौल	”	१००	१५	०	१००	९८	०	०	१५	०	०	०	१००					
घाट दर्वाज़ा	घाटदर्वाज़ा	१८७५	६५	९	०	७२	६९	०	०	०	०	०	०	७२					
चांदपौल ब्रैंच	चांदपौल	१८७४	४०	५	०	४५	४१	०	०	०	०	०	०	४५		३९०२)	६२३॥≠)॥	४५२५॥≠)॥	८)४
	शहर	१८७५	२३	०	०	२३	२३	२३	०	२३	२३	०	०	२३					
ऊपरका दरजा ⁕	”	१८७४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०					
साप्ताहिक अंग्रेज़ी दरजा*	”	”	०	०	०	६०	०	०	०	०	०	०	०	०					
औरतोंके कामका दरजा	”	”	८	०	०	८	७	०	०	०	०	०	०	८					

⁕ अब बन्द होगया

* अच्छी शिक्षा दीजाती है

जयपुरके जिलोंकी छोटी पाठशालाओंका नक्शह

जिला व पर्गनह	फ़ार्सी पाठशा-लाओंकी तादाद	हिन्दी पाठशा-लाओंकी तादाद	कुल	तालिब इल्मों की कुल तादाद	कैफ़ियत
हिंडौन	१	१	२	९४	
सवाई माधवपुर	१	१	२	६३	
चाटसू	१	१	२	५७	
पर्गनह नवाई	१	०	१	३७	
मलारना	०	१	१	२३	
मालपुरा	०	१	१	२५	
द्यौसा	१	०	१	२९	
वस्वा	१	०	१	३५	
बैराट	१	०	१	३२	
प्रयागपुरा	१	०	१	२९	
तोरावाटी (रामगढ)	१	१	२	५२	
सांभर	१	०	१	३०	
श्री माधवपुर	०	१	१	१८	
कोट क़ासिम बानावड	१	०	१	२८	
टोडा रायसिंह	०	१	१	२९	
कस्बह सांगानेर,	१	१	२	४३	
कस्बह आंबेर	०	१	१	३५	
शैखावाटी	०	०	०	०	
उदयपुर	१	०	१	३०	
झूझणू	१	०	१	७३	
ठिकानेके गांव	८	१	९	८२	
मीज़ान.	२२	११	३३	८४४	

जयपुरके मक्तब और पाठशाला, जिनकी सहायता किसीक़द्र राज्यकी तरफ़से होती है

मकाम	तादाद मक्तब	तादाद पाठशाला	मीज़ान	तादाद तालिबइल्म	कैफ़ियत
सवाई जयपुर	४४	९१	१३५	१३०४	
जिला जयपुर	२	३९	४१	७०२	
जिला हिंडौन	०	७	७	११३	
सवाई माधवपुर	१	८	९	२०५	
चाटसू	०	८	८	१६७	
मलारना	३	१३	१६	२९९	
दौसा	१	२३	२४	४१९	
बस्वा	१	१५	१६	३०५	
तोरावाटी	२	२९	३१	११३७	
पर्गनह सांभर	०	३	३	८२	
जिला गगापुर	२	१५	१७	३०९	
जिला लालसोट	०	६	६	२७३	
टोडा भीम	१	६	७	१३९	
जिला शैखावाटी	७	३१	३८	१०७०	
मालपुरा	०	८	८	२७३	
फागी	१	४	५	१३८	
बैराट	०	५	५	७९	
कोटकासिम	१	२	३	४७	
मीजान	६६	३१३	३७९	७०६१	

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमें ब्रिटिश गवर्मेण्टने ख़ैरस्वाहीके एवज कोटपूतलीका पर्गनह महाराजाको दिया महाराजाने शहर जयपुरको बहुत ही आरास्तह किया, सडकोंकी दुरुस्ती, पानीके नल, गैसकी रौशनी, रामनिवास बागकी तय्यारी, सरिश्तह तालीमके लिये मद्रसोंकी बुन्याद और लाइब्रेरीकी तरक़्क़ी की इन कामोंसे शहरको ऐसी रौनक दी, कि मानो महाराजा सवाई जयसिंहने दोबारह जन्म लेकर अपनी बाकी रही हुई मुरादको पूरा किया मैंने तीन चार दफ़ा इन महाराजाके पास जानेका मौका पाया, बात चीत करनेमें उनको बडा बुद्धिमान और तज्रिबह कार देखा, अल्बत्तह पिछले दिनोंमें बद हज़्मीकी

शिकायत वगैरह बीमारियोंसे सुस्त होगये थे, लेकिन् पहिले रियासतका इन्तिज़ाम बहुत अच्छा करदिया था, जिससे कोई खलल नहीं आया मैंने उनका रोब हर एक आदमी पर ऐसा देखा, कि मानो महाराजा उसके पास खड़े हैं जयपुरकी रियासतके चालाक आदमियोंपर ऐसा रोब जमालेना आसान काम नहीं था कुल काम व इन्तिज़ाम रियासतका एक कॉन्सिलके ज़रीएसे करते थे, जिसकी बुन्याद उन्हींके वक्तमें पड़ी थी

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] से नव्वाब गवर्नर जेनरलकी कॉन्सिलमें महाराजा ब तौर मेम्बर्के मुकर्रर हुए, और कई बार कलकत्ते व शिमले जाकर इज्लासमें शामिल हुए विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में, जब बड़ौदेके गायकवाड़पर सर्कारी रेज़िडेन्टको ज़हर दिलवानेका मुकद्दमह काइम हुआ, और एक कमिशन तह्क़ीक़ातको जमा कीगई, तो महाराजा रामसिंह भी उसमें शरीक रक्खे गये पंडित शिवदीनके मरने बाद अव्वल नव्वाब फ़ैज़अलीखांको और फिर ठाकुर फ़त्हसिंहको महाराजाने मुसाहिब बनाया था इन शख़्सोंकी लियाक़त उक्त पंडित से ज़ियादह साबित हुई इनके वक्तमें सांभरकी झीलपर महसूलका सालानह हर-जानह देने बाद एक इक़ारनामहके साथ अंग्रेज़ी सर्कारका कब्ज़ह हुआ आख़िर-कार विक्रमी १९३७ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२९७ ता० १३ शव्वाल = ई० १८८० ता० १७ सेप्टेम्बर] को इन महाराजाका देहान्त होगया इनके मरनेका अफ्सोस ब्रिटिश गवर्मेण्ट और हिन्दुस्तानके अक्सर रईसोंको बहुतही हुआ उनके कोई सन्तान न रहनेसे ठाकुर ईसरदाके छोटे बेटे काइमसिंहको बुलाकर गद्दीपर बिठाया गया, और उनका नाम दूसरे माधवसिंह रक्खा गया, जो अब जयपुरकी गद्दीपर विद्यमान हैं

३८- महाराजा माधवसिंह- २

यह विक्रमी १९३७ [हि० १२९७ = ई० १८८०] में गद्दीपर बैठे शुरूमें कॉन्सिलकी निगरानी एक यूरोपियन अफ्सरके मुतअल्लक़ रही, फिर विक्रमी १९४२ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में इनको पूरे इख्तियारात सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से मिले इन महाराजाको विक्रमी १९४५ [हि० १३०६ = ई० १८८८] में कर्नेल सी० के० एम० वाल्टर साहिब, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहकी मारिफ़त, सर्कार अंग्रेज़ीसे अव्वल दरजहका तमगाय सितारए हिन्द यानें जी० सी० एस० आइ० इनायत हुआ

आज कल मुसाहबतका काम बंगाली बाबू कान्तिचन्द्र अंजाम देता है, जिसको सर्कारी तरफ़से ज़ाती तौरपर 'राव बहादुर' का ख़िताब मिला है इलाके और सद्र की कुल कचहरियोंका अपील कॉन्सिलमें होता है

रियासत जयपुरके खास जागीरदार और ठाकुर

रियासत जयपुरके मुख्य जागीरी ठिकानोंमें खेतडी, सीकर, मनोहरगढ, मडावा, नवलगढ, सूरजगढ, खडेला वगैरह शैखावत, और उणियारा, लदाना वगैरह नरूका, और दूणी वगैरह गोगावत, चौमू, सामोद, वगैरह नाथावत, डिग्गी, पचेवर, दूदू वगैरह खगारोत, अचरोल वगैरह बलभद्रोत, बगरू वगैरह चतुर्भुजोत, झलाय, ईसरदा, बरवाडा वगैरह राजावत, और नायला, काणोता, गीजगढ वगैरह चापावत इत्यादि बहुतसे ठिकानेदार हैं, जिनका हाल किसी मौकेपर मुफस्सल लिखाजायेगा

जयपुरके खास उमराव और ठाकुर बारह कोटडी (गोत्री) कहलाते हैं, और यह नाम जयपुरके राजा पृथ्वीराजने अपने बारह बेटोंमेंसे हर एकको जागीर देकर काइम किया था, दूसरे गोत्रियोंको भी, जो उससे पहिले राजाओंके हाथसे मुकर्रर कियेगये थे, इनमें शामिल समझते हैं बारह गोत्रियोंमेंसे तीन तो निर्वंश होगये, बाकीके नाम नीचे लिखे जाते हैं -

जयपुरके बडे जागीरदारोंका नक्शह (१)

नम्बर	कोटडी (गोत्र)	नाम ठिकाना	खास ठिकाने की जमा	भाई बेटोंके ठिकाने	कुल घरानेकी जमा	कैफियत
१	पूर्णमलोत	निमेरा	१०००० रु०	१	१०००० रु०	पृथ्वीराज नियत १२ कोटडी
२	भीमपोता	(निर्वंश)	०	०	०	
३	नाथावत	चौमू	७०००० रु०	१०	२२०००० रु०	
४	पचायणोत	समरा	१७७०० रु०	३	२४७०० रु०	
५	सुल्तानोत	सूरत	२२००० रु०	०	०	
६	खगारोत	डिग्गी	५०००० रु०	२२	६००००० रु०	
७	राजावत	चन्दलाय	२०००० रु०	१६	१९८१३७ रु०	
८	प्रतापजी	(निर्वंश)	०	०	०	
९	बलभद्रोत	अचरोल	२८८५० रु०	२	१३०००० रु०	
१०	शिवदासजी	(निर्वंश)	०	०	०	
११	कल्याणोत	कलवाडा	२५००० रु०	१९	२४५००० रु०	
१२	चतुर्भुजोत	बगरू	४०००० रु०	६	१००००० रु०	

(१) यह नक्शह हमारी दानिस्तमें जैसा चाहिये, नहीं मिलसका, इससे लाचार राजपूतानह गजेटियरके मुताबिक छाप दिया गया है

गोगावत	दूनी	७०००० रु०	१३	१६७९०० रु०	
खुमबानी	बासखो	२१००० रु०	२	२३७८७ रु०	
खूमावत	महार	२७५३८ रु०	६	४०७३८ रु०	
शिवब्रह्मपोता	नीन्दड	१०००० रु०	३	४९५०० रु०	
बनवीरपोता	बालखोह	१९००० रु०	३	२६५७५ रु०	
नरूका	उणियारा	२००००० रु०	६	३००००० रु०	
बांकावत	लवान	१५००० रु०	४	३४६०० रु०	

खेतडी- शेखावत राजा अजीतसिंहका ठिकाना है, जिसमे चार पर्गने खेतडी, बीवई, सिघाणा और झूंझणू है ठिकानेकी आमदनी ३५०००० रुपये सालानह मेसे ८०००० रुपये रियासत जयपुरको खिराजके दिये जाते हैं सिवाय इसके सर्कार अंग्रेजीकी तरफसे पर्गनह कोट पुतली, जिसकी सालानह आमदनी करीब १००००० एक लाख रुपयेके है, इस राजाकी जागीरमे है, जो राजा अभयसिंहको लॉर्ड लेकने मरहटोकी लडाईमे चम्बलके किनारे सेंधियाकी फौजके मुकाबलेमे कर्नेल मॉन्सनको मदद देनेके एवज बख्शा था

सीकर- एक बडा ठिकाना शेखावत राव राजा माधवसिंहका है, जिसकी सालानह आमदनी ४००००० रुपयेकी है, इसमेसे ४०००० रुपया रियासत जयपुरको सालानह खिराजका दिया जाता है

पाटन- एक छोटा खिराज गुजार ठिकाना जयपुरके उत्तर कोट पुतली और खेतडीके बीच पहाडी जिले तोरावाटीमे दिल्लीके प्राचीन तवर राजाओंके खानदानमे है, जो मुसल्मानोकी अमल्दारीके बाद पाटनमे आजमा, और तोरावाटी सूबहके इर्द गिर्द कई बार हल चल पडनेपर भी साबित कदमीसे काइम रहा

उणियारा-रियासत जयपुरके बडे जागीरदारोमेसे नरूका फिर्केके सर्दार गुमानसिंहका ठिकाना रियासतके दक्षिण और जरखेज हिस्सेमे वाके है, जिसकी सालानह आमदनी तक्रीबन् १७५००० रुपया है, इसमेसे ४५००० रुपया राज्य जयपुरको दियाजाता है मौजूद राव राजाकी कम उम्रीके सबब यह ठिकाना कुछ अरसहसे राज्य जयपुरकी निगरानीमे है

शेखावाटी ज़िलेके बड़े ठिकाने बस्वा, नवलगढ और सूरजगढ हैं इन ठिकानोकी आमदनीका हाल अच्छी तरह मालूम नहीं है, लेकिन् अन्दाजेसे मालूम हुआ, कि बस्वाकी आमदनी ७०००० रुपये सालानहसे कम नहीं, और बाक़ी हर एककी ५०००० रुपया है, जिसमेसे पांचवां हिस्सह रियासत जयपुरको ख़िराजका

दियाजाता है राज्य जयपुरके बाकी कुल छोटे मातहत ठिकाने सिवाय दो एकके खुश और आसूदा हैं, इन्तिज़ाम दुरुस्त और रत्र्प्रय्यत खुश हाल है

एचिसन साहिबकी किताब जिल्द ३, अह्दनामह नम्बर २४

अह्दनामह जयपुर (या जयनगर) के राजाके साथ, जो सन् १८०३ ई॰ मे करार पाया

दोस्ती और एकताका अह्दनामह ऑनरेब्ल अंग्रेजी ईस्ट इन्डिया कपनी और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके दर्मियान, हिज एक्से-लेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक, हिन्दुस्तानकी अंग्रेजी फौजोके सिपाह सालारकी मारिफत, हिज एक्सेलेन्सी मोस्ट नोब्ल रिचर्ड मारक्विस ऑफ वेलेस्ली, नाइट ऑफ दी मोस्ट इलस्ट्रिअस ऑर्डर ऑफ सेन्ट पेटेरिक, वन ऑफ हिज ब्रिटॅनिक मैजिस्टीज मोस्ट ऑनरेब्ल प्रीवी कॉन्सिल, गवर्नर जेनरल इन् कॉन्सिलके दिये हुए इख्तियारातसे, जो उनको हिन्दुस्तानके तमाम अंग्रेजी इलाको और हिन्दुस्तानकी तमाम मौजूदह अंग्रेजी फौजोकी बाबत हासिल हैं, ऑनरेब्ल अंग्रेजी ईस्ट इन्डिया कपनीकी तरफसे, और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके, उनकी जात खास, उनके वारिसो और जानशीनोकी तरफसे करार पाया

शर्त पहली– हमेशहकेलिये मज्बूत दोस्ती और एकता ऑनरेब्ल अंग्रेजी कपनी और महाराजाधिराज जगत्सिंह बहादुर और उनके वारिसो व जानशीनोके दर्मियान काइम हुई

शर्त दूसरी– चू कि, दोनो सर्कारोके दर्मियान दोस्ती करार पाई, इसलिये दोस्त और दुश्मन एक सर्कारके, दोस्त और दुश्मन दोनोके समझे जावेगे, और इस शर्तकी पाबन्दीका दोनोको हमेशह लिहाज रहेगा

शर्त तीसरी– ऑनरेब्ल कपनी किसी तरहका दख्ल मुल्की इन्तिज़ाममे, जो अब महाराजा धिराजके कब्ज़हमे है, नहीं देगी, और उससे खिराज तलब न करेगी

शर्त चौथी– उस हालतमे, कि ऑनरेब्ल कपनीका कोई दुश्मन हमलहका इरादह उस मुल्कपर करे, जो हिन्दुस्तानमे कपनीके कब्ज़हमे है, या थोडे असहसे उनके कब्ज़हमे आया है, महाराजाधिराज अपनी कुल फौज कपनीकी फौजकी मददको भेज देगे, और आप भी पूरी कोशिश दुश्मनके निकाल देनेमे करके दोस्ती और मुहब्बतमे कोई कमी न रक्खेगे

शर्त पाचवीं– जो कि इस अह्दनामहकी दूसरी शर्तके मुवाफिक ऑनरेब्ल कपनी गैर दुश्मनके मुक़ाबिल मुल्की हिफाजतकी ज़िम्महदार होती है, इसलिये महाराजा धिराज इस तहरीरके ज़रीएसे वादह करते है, कि अगर कोई तक्रार उनके और किसी

दूसरी रियासतके दर्मियान पैदा होगी, तो महाराजाधिराज उसकी हकीकृत अंग्रेजी सर्कारमें बयान करेंगे, ताकि सर्कार उसका वाजिबी फ़ैसलह करनेकी कोशिश करे और अगर दूसरे फरीककी जिद और जबर्दस्तीसे वाजिबी फैसलह तै न पावे, तो महाराजा धिराज सर्कार कम्पनीसे मददकी दर्ख्वास्त करेंगे अगर मुआमलह ऊपरके बयानके मुवाफ़िक होगा, तो मदद दीजावेगी, और महाराजा धिराज वादह करते हैं, कि जो कुछ खर्च इस मददका होगा, उस दस्तूरके बमूजिब, जो और रियासतोंके साथ करार पाये हैं, वह अदा करेंगे

शर्त छठी- महाराजा धिराज इस तहरीरके जरीएसे वादह करते हैं, कि चाहे वह अपनी फौजके पूरे हाकिम हैं, लेकिन् लड़ाईके वक्त या लड़ाईका जब खयाल हो, वह अंग्रेजी फौजके कमानियरकी सलाहके मुवाफ़िक, जिसके वह साथ होंगे, कार्रवाई करेंगे

शर्त सातवीं- महाराजा धिराज किसी अंग्रेजी या फ़रासीसी रिआया या यूरपके और किसी बाशिंदहको अपनी नौकरीमें या अपने पास सर्कार कम्पनीकी रजामन्दीके बगैर नहीं रक्खेंगे

ऊपरका अह्दनामह, जिसमें सात शर्तें दर्ज हैं, दस्तूरके मुवाफ़िक मकाम सहिन्द सूबह अक्बराबादमें तारीख १२ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक २६ शश्र्बान सन् १२१८ हिज्री और १४ माह पौष संवत् १८६० को हिज एक्से-लेन्सी जेनरल जिराई लेक और महाराजा धिराज राज राजेन्द्र सवाई जगत्सिंह बहादुरके मुहर और दस्तखत होकर मंजूर हुआ

जब एक अह्दनामह, जिसमें ऊपरकी सात शर्तें दर्ज होंगी, हिज एक्सेलेन्सी मोस्ट नोब्ल गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलके मुहर और दस्तखतके साथ महाराजा धिराजको दिया जायगा, तो हिज एक्सेलेन्सी जेनरल लेककी मुहर और दस्तखतका यह अह्दनामह वापस होगा

* * * * *
* कम्पनीकी *
* मुहर *
* * * * *

(दस्तखत) वेलेज़्ली

इस अह्दनामहको गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलने ता० १५ जैन्युअरी, सन् १८०४ ई० को तस्दीक किया

(दस्तखत) जे० एच० बारलो
(दस्तखत) जी० अडनी.

अह्दनामह नम्बर २५

अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेजी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराज सवाई जगत्सिंह बहादुर राजा जयपुरके दर्मियान, सर चार्ल्स थिऑफिलस मेटकाफकी मारिफत ऑनरेबल कम्पनीकी तरफसे, जिसको हिज एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबल मार्किस ऑफ हेस्टिंग्ज, के० जी० गवर्नर जेनरल वगैरहकी तरफसे इख्तियार मिले थे, और ठाकुर रावल वैरीसाल नाथावतकी मारिफत, जिसको राज राजेन्द्र श्री महाराजाधिराज सवाई जगत्सिंहकी तरफसे इख्तियार मिले थे, तै पाया

शर्त पहली- हमेशह दोस्ती, एकता और खैरख्वाही ऑनरेबल कम्पनी और महाराजा जगत्सिंह और उनके वारिस व जानशीनोंके दर्मियान काइम रहेगी, और दोस्त व दुश्मन एक सर्कारके दोस्त और दुश्मन दूसरी सर्कारके समझे जायेंगे

शर्त दूसरी- अंग्रेजी सर्कार वादह करती है, कि वह मुल्क जयपुरकी हिफाजत करेगी, और उसके दुश्मनोंको खारिज करेगी

शर्त तीसरी- महाराजा सवाई जगत्सिंह और उनके वारिस व जानशीन अंग्रेजी सर्कारकी फर्मांबर्दारी करके उसकी बुज़ुर्गीका इक्रार करेंगे, और किसी दूसरे राजा या सर्दारसे सरोकार न रक्खेंगे

शर्त चौथी- महाराजा और उनके वारिस व जानशीन किसी राजा या सर्दारके साथ अंग्रेजी सर्कारकी इत्तिला और मंजूरी बगैर मेल न रक्खेंगे, लेकिन् उनकी दोस्तानह लिखापढ़ी उनके दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी

शर्त पांचवीं- महाराजा उनके वारिस व जानशीन किसीपर जियादती नहीं करेंगे, अगर इत्तिफाकसे किसीके साथ कुछ तक्रार होगी, तो वह सर्पंची और फैसलहके लिये अंग्रेजी सर्कारके सुपुर्द होगी

शर्त छठी- हमेशहके वास्ते रियासत जयपुरसे अंग्रेजी सर्कारको दिहलीके खजानहकी मारिफत नीचे लिखे हुए मुवाफिक खिराज दिया जायेगा -

अव्वल सालमें इस अह्दनामहके लिखेजानेकी तारीखसे, मुल्की लूट मार और खराबीके सबब, जो मुद्दतसे जयपुरमें रही, खिराज मुआफ

दूसरे साल चार लाख रुपया सिक्कह दिहली

तीसरे साल पांच लाख

चौथे साल छ लाख

पांचवें साल सात लाख

छठे साल आठ लाख

इसके बाद आठ लाख रुपया सालानह सिक्कह दिहली रहेगा, जब तक ि हासिल याने रियासतकी आमदनी चालीस लाख रुपयेसे जियादह न होजावे

और जब राजकी आमदनी चालीस लाख रुपये सालानहसे जियादह हो जावेगी, तो पाच आना फ़ी रुपया जियादतीका, जो चालीस लाखसे होगी, सिवा आठ लाख रुपये मामूलीके दिया जावेगा

शर्त सातवीं- रियासत जयपुर अपनी हैसियतके मुवाफ़िक तलब किये जानेपर अंग्रेज़ी सर्कारको फ़ौजसे भी मदद देगी

शर्त आठवी- महाराजा और उनके वारिस व जानशीन कदीम दस्तूरके मुवाफ़िक अपने मुल्क और मातहतोंके पूरे हाकिम रहेंगे, और ब्रिटिश दीवानी व फ़ौज्दारी वग़ैरहकी हुकूमत इस राजमे दाखिल न होगी

शर्त नवीं- जिस सूरतमे कि महाराजा अपनी दिली दोस्ती अंग्रेज़ी सर्कारकी निस्बत जाहिर करेंगे, तो उनके आराम और फ़ाइदहका लिहाज और खयाल रहेगा

शर्त दसवी- यह अह्दनामह, जिसमे दस शर्तें है, मिस्टर चार्ल्स थिऑफ़िलस मेटकाफ़ और ठाकुर रावल वैरीसाल नाथावतके मुहर और दस्तखतसे खत्म हुआ; और इसकी तस्दीक हिज एक्सेलेन्सी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और राज राजेन्द्र श्री महाराजा धिराज सवाई जगत्सिंह बहादुरकी तरफ़से होकर आजकी तारीख़से एक महीनेके अन्दर आपसमें एक दूसरेको दिया जायेगा

मकाम दिहली, ता० २ एप्रिल, सन् १८१८ ई०.

गवर्नर जेनरल की छोटी मुहर,

(दस्तखत) सी० टी० मेटकाफ़ — मुहर

(दस्तखत) ठाकुर रावल वैरीसाल नाथावत — मुहर

(दस्तखत) हेस्टिंग्ज

इस अह्दनामहको हिज एक्सेलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने कैम्प तुलसीपुर में ता० १५ एप्रिल सन् १८१८ ई० को तस्दीक किया

(दस्तखत) जे० ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

नम्बर २६.

हिन्दी अर्ज़ीका तर्जमह तमाम ठाकुरो और नौकरोकी तरफ़से बाई भटियाणी जी साहिबाके नाम, जो ई० १८१९ ता० १२ मई को लिखी गई, और जिसकी नक़्ल

राय ज्वालानाथ और दीवान अमीरचन्दकी मारिफत जेनरल साहिबके पास भेजी गई थी, उसका मज्मून यह है -

बाई साहिबा की खिद्मतमे तमाम ठाकुरो और मुतसद्दियोकी तरफसे यह अर्ज है, कि जबतक महाराजा श्री सवाई जयसिहजी होश्यार न होगे, हममेसे कोई खालिसह की जमीन अपने वास्ते न लेगा, और हम सब हमेशह नमक हलालीके साथ राजका काम अजाम देते रहेगे

(दस्तखत) रावल वैरीसाल	(द०) बाघसिह, चतुर्भुजोत
(द०) किसनसिह	(द०) बहादुरसिह, राजावत
(द०) काइमसिह, बलभद्रोत	(द०) लक्ष्मणसिह, झूंझणूवाला
(द०) उदयसिह, खगारोत	(द०) राजा अभयसिह, खेतडी
(द०) राव चतुर्भुज	(द०) मानसिह, खगारोत
(द०) वैरीसाल, खगारोत	(द०) बख्शी श्रीनारायण
(द०) सरूपसिह, वीरपोता	(द०) अमानसिह, बचावत
(द०) भारतसिह, चापावत	(द०) शार्दूलसिह, नरूका
(द०) सलासिह, पचावत	(द०) लछमण
(द०) कृपाराम, वकायेनवीस	(द०) जीतराम, साह
(द०) कृपाराम	(द०) बासखोह वाला
(द०) मगलसिह, खुमाली	(द०) राय ज्वालानाथ
(द०) सवाईसिह, कल्याणोत	(द०) रावत् सरूपसिह
(द०) दीवान अमरचन्द	(द०) दीवान नवनिद्धराम
(द०) कुभावत महारवाला	(द०) साहजी मन्नालाल
(द०) राय अमृतराम, पल्लीवाल	(द०) लालराम धायभाई
(द०) बालमसिह, राणावत	(द०) अर्थराम बुज

(दस्तखत) रावल वैरीसाल

हिन्दी अर्जीका तर्जमह तमाम मुतसद्दियोकी तरफसे बाई साहिबाके नाम ई० १८१९ ता० १२ मई

बाई साहिबाकी खिद्मतमे तमाम मुतसद्दियोकी तरफसे अर्ज यह है, कि जब तक महाराजा श्री सवाई जयसिहजी होश्यार होगे, जो काम हमारे सुपुर्द दर्बारसे हुआ है, और जो हुक्म हमारे नाम सादिर होगा, उसकी तामीलमे हम नीचे लिखी हुई शर्तोंके पाबन्द रहेगे -
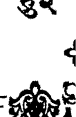
अव्वल- हम अपने जिम्महके कामको ईमान्दारीसे अजाम देंगे, और किसीसे रिश्वत न लेंगे

दूसरे- हम हर फ़स्लमें मुख़्तारकी मारिफ़त सर्कारमें हिसाब दाख़िल करेंगे

तीसरे- हम उसके सिवा, जिसने कि उदूल हुक्मी की होगी, और किसीसे दंड वुसूल न करेंगे

चौथे- हम सर्कारी कामकी बाबत आपसमें किसी तरहकी ज़ाहिरी और गुप्त तकार न रक्खेंगे

(दस्तख़त) राय ज्वालानाथ

(द०) दीवान अमरचन्द

(द०) कृपाराम

(द०) लक्ष्मण

(द०) बोहरा जयनारायण

(द०) सरूपचन्द, दारोगा

(द०) रावल बैरीसाल

(द०) दीवान नवनिद्धराम

(द०) घासीराम

(द०) बख़्शी श्रीनारायण

(द०) जीवणराम

(द०) ज्ञानचन्द

(द०) मुन्शी श्रीलाल

(द०) मुन्शी देवचन्द

(द०) शिवजीलाल

(द०) जीतराम साह

(द०) बदनचन्द

(द०) राय अमृतराम

(द०) कृपा चरबुरा

(द०) चतुर्भुज

(द०) सुवागी मन्नालाल

(द०) अर्हतराम

(द०) संपतराम

(द०) रामलाल धायभाई

(द०) देवराम दारोगा

अह्दनामह नम्बर २७.

जो अह्दनामह सन् १८१८ ई० में ब्रिटिश गवर्मेंएट और जयपुर राज्यके दर्मियान तै हुआ, उसका ततिम्मह

चूंकि वह कौल व करार जो उस अह्दनामहकी छठी शर्तमें मुन्दरज हैं, जो ब्रिटिश गवर्मेंएट और जयपुर राज्यके दर्मियान ता० २ एप्रिल सन् १८१८ ई० को करार पाया, और ता० १५ एप्रिल सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया गया, मुज़िर है, इस लिहाज़से ज़ैलकी शर्तोंपर इत्तिफ़ाक़ किया जाता है -

शर्त पहिली- उक्त अह्दनामहकी छठी शर्त इस अह्दनामहके रूसे मन्सूख़ की गई है.

शर्त दूसरी- महाराजा जयपुर खुद आप व अपने वारिसो और जानशीनोंके वास्ते ब्रिटिश गवर्मेंएटको हमेशह सालियानह खिराज चार लाख सर्कारी रुपया देना कुबूल करते हैं

शर्त तीसरी- यह अह्दनामह उस पहिले जिक्र किये हुए अह्दनामहका, जो सन् १८१८ ई० मे हुआ, ततिम्मह समझा जावेगा

यह अह्दनामह कप्तान एडवर्ड रिडले कोलबर्न ब्रेडफर्ड, काइम मकाम पोलिटिकल एजेएट जयपुरने अज तरफ ब्रिटिश गवर्मेंएट, और मुमृताजुद्दौलह नव्वाब मुहम्मद फैजअलीखा बहादुर, सी० एस० आइ० ने, अज तरफ राज्य जयपुर, उन कामिल इख्तियारातके रूसे, जो इस कामके लिये उनको दियेगये थे, ऑगस्ट महीनेकी ता० ३१, सन् १८७१ ई० को मकाम शिमलेपर तै किया

[मुहर] (दस्तखत) ई० आर० सी० ब्रेडफर्ड, कप्तान, काइम मकाम पोलिटिकल एजेएट, जयपुर

[मुहर] (दस्तखत) नव्वाब मुहम्मद फैजअलीखा बहादुर
(फार्सी हुरूफमे)

[मुहर] (दस्तखत) सवाई रामसिंह

[मुहर] (दस्तखत) मेओ

श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल, हिन्दने ता० ४ सेप्टेम्बर सन् १८७१ ई० को शिमले मकामपर तस्दीक किया

(दस्तखत) सी० यू० एचिसन्,
सेक्रेटरी गवर्मेंएट हिन्द

अह्दनामह नम्बर २८

अह्दनामह बाबत लेन देन मुजिमोंके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेंएट और श्री मान् सवाई रामसिंह महाराजा जयपुर, जी० सी० एस० आइ०, व उनके वारिसो और जानशीनोंके, एक तरफसे मेजर विलिअम एच० बेनन, पोलिटिकल एजेएट, जयपुरने ब इजाजत लेफ्टिनेएट कर्नेल विलिअम फ्रेड्रिक एडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इख्तियारोंके मुवाफिक, जो कि उनको राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०,

वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से नव्वाब मुहम्मद फ़ैजअलीखां बहादुरने उक्त महाराजा रामसिंहके दिये हुए इख्तियारोंसे किया

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाकहमें संगीन जुर्म करके जयपुरकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो जयपुर की सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और दस्तूरके मुवाफ़िक उसके मांगे जानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी

शर्त दूसरी- कोई आदमी जयपुरके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ्तार करके जयपुरके राज्यको काइदहके मुवाफ़िक तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो जयपुरके राज्यकी रअय्यत न हो, और जयपुरकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुकद्दमहकी तह्क़ीकात सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें कीजायेगी, अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुकद्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्तपर जयपुरकी पोलिटिकल निगरानी रहे

शर्त चौथी- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुवाफ़िक खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाकहमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाकहके कानूनके मुवाफ़िक सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम करार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगे -

१- खून २- खून करनेकी कोशिश ३- वह्शियानह कत्ल ४- ठगी ५- जहर देना ६- जिनाबिल्जब्र (जबर्दस्ती व्यभिचार) ७- जियादह जख्मी करना ८- लडका बाला चुरा लेजाना ९- औरतोंका बेचना १०- डकैती ११- लूट १२- सेंध (नकब) लगाना १३- चौपाया चुराना १४- मकान जलादेना १५- जालसाजी करना. १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- खयानते मुज्रिमानह १८- माल अस्बाब चुरा लेना १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना, या वर्गलाना

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक मुज्रिमोंको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमें, जो खर्च लगे, वह दर्ख्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पडेगा

शर्त सातवीं-ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्त तक बर्क़रार रहेगा, जब तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनो सर्कारोंमेंसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे

शर्त आठवीं-इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो दोनो सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्खिलाफ़ हो.

(दस्तख़त (डब्ल्यू० एच० बेनन, पोलिटिकल एजेंएट

दस्तख़त, मुहर व अदला बदली ता० १३ जुलाई सन् १८६८ ई० को जयपुरके महलमें की गई

(दस्तख़त) सवाई रामसिंह

(दस्तख़त) जॉन लॉरेन्स

वाइसरॉय ऐन्ड गवर्नर जेनरल, हिन्द

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मकाम शिमलेपर ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६८ ई० को की

(दस्तख़त) डब्ल्यू० एस० सेटन्कार, सेक्रेटरी, सर्कार हिन्द

अह्दनामह नम्बर २९

अज तरफ़ श्री मान् महाराजा जयपुर,

ब नाम पोलिटिकल एजेंएट जयपुर, ता० ५ फेब्रुअरी, सन् १८६८ ई०

जो बातचीत मैंने आपसे रेलवेकी बाबत की थी, दोबारह विचार करनेसे उन शर्तोंको, जिनको मैंने पहिले पेश किया था, अब वापस करनेको मैंने दिलमें ठहराया है, और जो शर्तें गवर्मेंएट हिन्दने साबिक़में नम्बर ७२१ ता० २४ मार्च सन् १८६५ ई० मे ठहराई थीं, उनपर मैं अपनी रज़ामन्दी ज़ाहिर करता हूं

अपने इस विचारकी बाबत आपको ज़ाहिर करनेमें सिर्फ़ मुझे यही कहना है, कि मुझे पूरा भरोसा है, कि जब मुझे सर्कारी दस्तन्दाज़ीकी ज़ुरूरत हो, तो सर्कार हर तरह मेरे हुकूककी हिफ़ाज़त करेगी, और झगडा पेश आनेपर फ़ैसलह सिर्फ़ इन्साफ़ और क़ानूनके ही उसूलपर ही न करेगी, बल्कि मुल्कके हालात और दस्तूर और रवाज और रअय्यतके खयालातपर भी लिहाज़ रक्खेगी

अह्दनामह नम्बर ३०

अह्दनामह दर्मियान सर्कार अंग्रेजी और श्रीमान् सवाई रामसिंह, जी० सी० एस० आइ० महाराजा जयपुर व उनके वारिसो और जानशीनोंके, जो एक तरफ मेजर विलिअम एच० बेनन, पोलिटिकल एजेएट, राज्य जयपुरने ब हुक्म लेफ्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हॉर्ट कीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी०, एजेएट गवर्नर जेनरल, राजपूतानहके, जिनको पूरा इख्तियार श्रीमान् राइट ऑनरेबल रिचर्ड- साउथ वेल बुर्क अर्ल ऑफ मेओ, वाइकाउन्ट मेओ, ऑफ मोनी क्रोवर, बेरन नास ऑफ नास, के० पी०, जी० एम० एस आइ०, पी० सी० वगैरह, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिया था, और दूसरी तरफ नव्वाब मुहम्मद फैजअलीखां बहादुरने, जिसको उक्त महाराजा रामसिंहसे पूरा इख्तियार मिला था, तै किया

शर्त पहिली- नीचे लिखे हुए अह्दनामहकी शर्तोंके मुताबिक जयपुरकी सर्कार सांभर झीलके किनारेकी जमीनकी हद्दोंके भीतर (जैसा कि चौथी शर्तमें लिखा है,) नमक बनाने और बेचने और इस हद्दके पैदावार नमकपर मह्सूल लगानेके इख्तियारका पट्टा सर्कार अंग्रेजीको करदेगी

शर्त दूसरी- यह पट्टा उस वक्त तक काइम रहेगा, जब तक कि सर्कार अंग्रेजी इसको छोडनेकी ख्वाहिश न करे, इस शर्तपर कि सर्कार अंग्रेजी जयपुरकी सर्कारको उस तारीखसे दो वर्ष पहिले इस बन्दोबस्तके खत्म करनेका इरादह जाहिर करे, जिसपर पट्टा खत्म होना चाहे

शर्त तीसरी- इस वास्ते कि अंग्रेजी सर्कार सांभर झीलपर नमक बनाने और बेचनेका काम करसके, सर्कार जयपुर, सर्कार अंग्रेजी और उसके इस कामके लिये मुकर्रर किये हुए तमाम अफ्सरोंको इख्तियार देगी, कि वह शुब्हेकी हालतमें नीचे लिखी हुई हद्दके भीतरवाले मकान और दूसरी जगह, जो खुली या बन्द हो, उसके भीतर जावें, और तलाशी लेवे, और अगर उस हद्दके भीतर जो कोई एक या कई शख्स खिलाफ उन काइदोंके जो उस हद्दके भीतर नमक बनाने, बेचने, हटाने वगैरह लाइसेन्सके बनाने व बे जाबितह लानेकी मनाईके बाबत सर्कार अंग्रेजी मुकर्रर करे, पाये जावें, उनको गिरिफ्तार करे, और जुर्मानह, कैद, मालकी जब्ती करे, या और किसी तरहकी सजा देवे

शर्त चौथी- झीलके किनारेकी जमीन, जिसमें सांभरका कस्बह और बारह दूसरे खेड़े हैं, और जिस कुल जमीनपर अब जयपुर और जोधपुर दोनोंका शामिलाती कब्जह है, उसका निशान किया जायेगा, और निशानकी लाइनके भीतरकी बिल्कुल जमीन तथा झीलका या उसके सूखे तलेका हिस्सह, जो ऊपर कही हुई दोनों रियासतोंके मातहत है, वही हद्द समझी जायेगी, जिसके भीतर सर्कार अंग्रेजी और उसके अफ्सरोंको तीसरी शर्तके दर्ज किये हुए इख्तियार होंगे

शर्त पाचवीं- कही हुई हद्दोंके भीतर और इस अह्दनामहकी तीसरी शर्तके मुताबिक काइदोंकी कार्रवाई करानेके लिये, और नमकके बनाने, बेचने, हटाने, बग़ैर इजाज़तके लानेसे रोकनेके लिये, जहांतक ज़रूरत हो, सर्कार अंग्रेज़ी या उसकी तरफ़से इख्तियार पायेहुए अफ्सरोंको इख्तियार होगा, कि इमारतों या दूसरे मत्लबोंके लिये ज़मीन लेलेवें, और सड़क, आड़, झाड़ी, व मकान बनावें, और इमारतें या दूसरा सामान हटादेवें ऊपर लिखे हुए इसी मत्लबके लिये जयपुर सर्कारकी ख़िराज देनेवाली ज़मीनपर सर्कार अंग्रेज़ीका दख़्ल करलिया जावे, तो वह सर्कार जयपुरको उस ख़िराजके बराबर सालानह किराया दिया करेगी जब कभी किसी शख़्सकी जायदादको सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ्सर किसी तरह इस शर्तके मुताबिक़ नुक्सान पहुंचावेंगे, तो जयपुरकी सर्कारको एक महीना पेश्तरसे इत्तिला दीजायेगी, और सर्कार अंग्रेज़ी उस नुक्सानका बदला मुनासिब तौरसे चुका देवेगी जब किसी हालतमें सर्कार अंग्रेज़ी या उसके अफ्सर, और मालिक जायदादके दर्मियान नुक्सानकी तादादके बारेमें बह्स होगी, तो तादाद पचायतसे ठहराई जायेगी ऊपर लिखी हुई हद्दोंके भीतर इमारतोंके बनानेसे सर्कार अंग्रेज़ीका कोई मालिकानह हक़ ज़मीनपर न होगा, जोकि पट्टेकी मीआद ख़त्म होनेपर सर्कार जयपुरके क़ब्ज़ेमें वापस चली जावेगी मए उन इमारतों और सामानके, जो कि सर्कार अंग्रेज़ी वहांपर छोड़ देवे, किसी मन्दिर या मज़्हबी पूजाके मकानमें दख़्ल नहीं दिया जायेगा

शर्त छठी- जयपुर सर्कारकी मंज़ूरीसे सर्कार अंग्रेज़ी एक कचहरी काइम करेगी, जिसका इख्तियार एक लाइक़ अफ्सरको रहेगा, जो ऊपर बयान कीहुई हद्दोंके भीतर अक्सर इज्लास करेगा, इस ग़रज़से कि उन मुक़द्दमोंकी रूबकारी कीजावे, जो कि शर्त तीसरीमें लिखे हुए काइदोंके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाईके सबब दाइर होवें, और तमाम मुज्रिमोंको सज़ा दीजावे, और सर्कार अंग्रेज़ीको इख्तियार रहे, कि जिन मुज्रिमोंको जेलख़ानहकी सज़ा होवे, उनको चाहे उक्त हद्दोंके भीतर या अपने ही इलाक़हमें, जहां मुनासिब हो, क़ैद करे

शर्त सातवीं- पट्टेके शुरू होनेकी तारीख़से ऊपर लिखी हुई हद्दोंमें बने हुए उस नमककी क़ीमत, जो इस शर्तके लिखे हुए दूसरे फ़िक्रेके सिवाय बेचा जायेगा, सर्कार अंग्रेज़ी वक्त वक्तपर मुक़र्रर करती रहेगी जयपुरकी रियासत हक़्दार होगी, कि उसको सालानह रियासतके ख़र्चके लिये अंग्रेज़ी सर्कारसे नमक बननेके मकामपर ही नमककी कोई मिक्दार (प्रमाण), जो जयपुरकी सर्कार मांगे, ब शर्ते कि वह मिक्दार (१७२०००) मन अंग्रेज़ीसे ज़ियादह न हो, फ़ी मन ॥⁄) आने अंग्रेज़ीके हिसाबसे मिलती रहे

जयपुरकी सर्कारको इख्तियार होगा, कि इस नमकको चाहे जिस निर्खसे बेचे

शर्त आठवीं - नमकके उस जखीरेमेसे, जो रियासत जयपुर और जोधपुर दोनोकी मिल्कियतमे पट्टेके शुरूके वक्त लिखी हुई हद्दोके अन्दर मौजूद है, जयपुरकी रियासतका हिस्सह, जो ऊपर लिखे जखीरेका आधा है, रियासत मज्कूर नीचे लिखी शर्तोंपर अंग्रेजी सर्कारको देदेगी -

दस्तूरके मुवाफिक पाच लाख दस हजार अंग्रेजी मन नमकमेसे जयपुरकी रियासत अपना हिस्सह सर्कार अंग्रेजीको मुफ्त देगी जखीरेमे जो हिस्सह जयपुर का बाकी रहेगा, उसकी कीमत अंग्रेजी मनपर साढे छ आने फी मन अंग्रेजीके हिसाबसे गिनीजायेगी, और यह कीमत जयपुरकी रियासतको दीजावेगी, मगर यह देना उस वक्त शुरू होगा, जब कि अंग्रेजी सर्कार किसी सालमे आठ लाख पच्चीस हजार अंग्रेजी मनसे जियादह नमक बेचे, या निकाले, और उस वक्त भी उस जियादतीके उस हिस्सेकी बाबत, जो जयपुरकी रियासतका होगा, और जब तक कि इस सालानह जियादतीकी मिक्दारोसे पूरी मिक्दार नमकके जखीरेकी, जो पाच लाख दस हजार अंग्रेजी मनके अलावह दियागया है, पूरी होगी उस वक्त तक अंग्रेजी सर्कार इस जियादतीके बिकनेकी कीमतपर वह बीस रुपये सैकडा मह्सूलका, जो बारहवीं शर्तमे लिखागया है, नहीं देगी ऊपर लिखे आठ लाख पच्चीस हजार मन नमकमे वह मिक्दार शामिल होगी, जो सातवी शर्तके दूसरे फिक्रेके मुवाफिक जयपुरकी रियासतके खर्चके लिये रक्खी जायेगी

शर्त नवी- जयपुरकी सर्कारको इख्तियार न होगा, कि किसी नमकपर, जो पहिले कही हुई हद्दोमे अंग्रेजी सर्कार बनावे, या बेचे, या जब कि जयपुरकी रियासतसे बाहर किसी दूसरी जगहको अंग्रेजी पर्वानेके जरीएसे जयपुर राज्यमे होकर गुजरता हो, मह्सूल, लागत, राहदारी, या और किसी किस्मकी लगान खुद वुसूल करे, या किसी दूसरे शख्सोको वुसूल करनेकी इजाजत दे, मगर उस नमकपर, जो सातवीं शर्तके मुताबिक दिया जावे, या खर्चके लिये जयपुरके राज्यमे बेचा जावे, उस रियासतको इख्तियार होगा, कि जो मह्सूल चाहे, वुसूल करे

शर्त दसवी- इस अह्दनामहमे कोई बात उस मालिकानह हककी रोकनेवाली न होगी, जो जयपुर सर्कारको ऊपर लिखी हद्दोमे सिवाय उन मुकद्दमातके, जो नमकके बनाने, बेचने या हटाने और बे इजाजत बनाने या मह्सूलकी चोरी रोकनेके कुल बातो दीवानी और फौज्दारीमे हासिल है

शर्त ग्यारहवीं- उन तमाम खर्चोंका बोझ, जो ऊपर लिखी हद्दोमे नमक बनाने, बेचने, हटाने और बे इजाज़त बनाने या मह्सूलकी चोरी रोकनेसे मुतअ़ल्लिक़ है,

जयपुरकी रियासतसे उठा लिया जावेगा, और दिये हुए पट्टेके एवजमें अंग्रेजी सर्कार इक्रार करती है, कि ऊपर लिखी हद्दोंमें बिके हुए नमकमें जयपुरकी रियासतके हिस्सेकी बाबत सवा लाख रुपया अंग्रेजी चलनका और उस महसूलके एवजमें, जो सर्कार जयपुर नमकपर लेती है, और जो इस अहदनामहके मुवाफ़िक अंग्रेजी सर्कारको देदिया गया है, १५००००) रुपया सिक्कह अंग्रेजी सालियाना दो छ माहीकी किस्तमें जयपुरकी सर्कारको देती रहेगी, और कुल रुपया इस सालानह खिराजका यानी २७५०००) रुपया कल्दार अदा करनेमें ऊपर लिखी हुई हद्दमेंसे नमककी बिकी हुई या निकास कीहुई अस्ल मिक्दार पर कुछ लिहाज़ न होगा

शर्त बारहवीं- अगर किसी सालमें कही हुई हद्दोंके भीतर आठ लाख पच्चीस हज़ार अंग्रेजी मनकी बनिस्बत जियादह नमक सर्कार अंग्रेजी बेचे, या उस हद्दके बाहर चालान करे, तो सर्कार अंग्रेजी जयपुरकी सर्कारको उस बढतीपर (आठवीं शर्तमें जो मिक्दार लिखी है, उसके खर्च होजानेके पीछे) बीस रुपये सैकडेके हिसाबसे एक महसूल फ़ी मनके उस दामपर देगी, जो कि सातवीं शर्तके पहिले जुम्लेके मुताबिक बिकनेका निर्ख मुकर्रर किया जावे

जब कभी इस बारेमें सन्देह हो, कि किस सालमें कितने नमकपर महसूल लेना है, तो जो हिसाब सर्कार अंग्रेजीके बडे अफ्सरकी तरफसे पेश किया जावे, जो साभरका मुख्तार है, इस बातकी कतई गवाही समझी जावेगी, कि दर अस्ल कितना नमक सर्कार अंग्रेजीने उस वक्तमें बेचा, या बाहर चालान किया है, जिसकी बाबत हिसाबमें हो, मगर जयपुर सर्कारको अपनी तसल्लीके वास्ते भी इस बातकी रोक न होगी, कि वह अपने अफ्सर बिकरीका हिसाब रखनेको मुकर्रर करे

शर्त तेरहवीं- सर्कार अंग्रेजी वादह करती है, कि हर साल सात हज़ार मन अंग्रेजी तोलका नमक बगैर किसी किस्मकी लागतके जयपुर दर्बारके खर्चके वास्ते दिया करेगी, वह नमक उस जगहपर दिया जायेगा, जहां कि बनता है, और उस अफ्सरको दिया जावेगा, जिसको जयपुर सर्कारकी तरफसे लेनेका इख्तियार मिला हो

शर्त चौदहवीं- सर्कार अंग्रेजीका कोई दावा किसी ज़मीनके या दूसरे खिराज पर नहीं होगा, जो नमकसे तअल्लुक नहीं रखता, और साभरके कस्बे या दूसरे गावों या ज़मीनोंसे दिया जाता है, जो कही हुई हद्दोंके भीतर शामिल हैं

शर्त पन्द्रहवीं- अंग्रेज़ी सर्कार जयपुरके इलाकहमें ऊपर लिखी हुई हद्दोंके बाहर नमक नहीं बेचेगी

शर्त सोलहवीं- अगर कोई शख्स, जिसको सर्कार अंग्रेजीने कही हुई हद्दोंके भीतर मुकर्रर किया हो, कोई जुर्म करके भाग गया हो, या कोई शख्स इस अहदनामहकी

तीसरी शर्तके काइदोंके बर्खिलाफ़ कोई काम करके भाग गया हो, तो जयपुरकी सर्कार जुर्मकी पुख्तह गवाही होनेपर हर एक तरह उसको गिरिफ्तार करने और कही हुई हद्दोंके भीतर अंग्रेज़ी हाकिमोंको सुपुर्द करनेकी कोशिश करेगी, जिस हालतमें कि वह शख़्स जयपुरके इलाकहके किसी हिस्सहमें होकर गुज़रा हो, या कहीं आश्रय लिया हो

शर्त सत्तरहवीं- इस अह्दनामहकी कोई शर्त अमलमें न आएगी, जब तक कि सर्कार अंग्रेज़ी दर हक़ीक़त कही हुई हद्दोंके भीतर नमक बनानेका काम अपने हाथमें न लेवे, ऐसे काम हाथमें लेनेकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी मुकर्रर करेगी, इस शर्तसे कि वह तारीख़ नीचे लिखी हुई तारीख़ोंमेंसे कोई एक होगी - ता० १ नोवेम्बर सन् १८६९ ता० १ मई, या १ नोवेम्बर सन् १८७० या ता० १ मई० सन् १८७१ अगर पहिली मई सन् १८७१ को या उसके पेश्तर चार्ज न लिया जावे, तो यह अह्दनामह मन्सूख़ हो जावेगा

शर्त अठारहवीं- इस अह्दनामहकी कोई शर्त बग़ैर दोनों सर्कारोंकी पेश्तर रज़ामन्दी होनेके न बदली जावेगी, न मन्सूख़ कीजावेगी, और अगर कोई फ़रीक़ इन शर्तोंके मुताबिक़ न चले, या बे पर्वाई करे, तो दूसरा फ़रीक़ इस अह्दनामहकी पाबन्दीसे छूट जावेगा

(दस्तख़त) डब्ल्यू० एच० बेनन, पोलिटिकल एजेंएट

(दस्तख़त) नव्वाब मुहम्मद फ़ैज़अलीख़ां बहादुर

दस्तख़त, मुहर और अदला बदली ब मक़ाम शिमला ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६९ ई० को हुई

(दस्तख़त) सवाई रामसिंह

(दस्तख़त) मेओ

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने ब मक़ाम शिमला ता० ७ ऑगस्ट सन् १८६९ को की

(दस्तख़त) डब्ल्यू० एस० सेटनकार, सेक्रेटरी गवर्मेण्ट हिन्द

ता० १८ मार्च सन् १८७० ई० को ऊपर लिखे अह्दनामहकी बुन्याद पर गवर्मेण्टने सांभर झील कोर्टके मुकर्रर होनेका इश्तिहार दिया, इसी इश्तिहारके मुवाफ़िक़ असिस्टेंट कमिश्नर ब्रिटिश इनलैण्ड कस्टम्स डिपार्टमेण्टका जो सांभर झीलपर रहे, वह इस अदालतका जज मुकर्रर हुआ इस जजको दफ़ा २२ ज़ाबितह फ़ौज्दारी के मुवाफ़िक़ सबॉर्डिनेट मैजिस्ट्रेट फ़र्स्ट क्लासके इख्तियारात नीचे लिखे हुए दोनों क़िस्मके मुक़द्दमातमें हैं -

(ए) मुकर्ररह हुदूदके अन्दर जाबिते फ़ौज्दारीकी दफ़ा २१ मे लिखे हुए जुर्मक
इर्तिकाब सर्कार अंग्रेजीकी रिआयासे होना

(बी) अह्दनामोकी तीसरी शर्तमे लिखे हुए काइदोके खिलाफका इर्तिका
उसी हुदूदमे, चाहे किसीसे भी हो

पहिली किस्मके मुकद्दमातकी बाबत यह अदालत डिप्युटी कमिश्नर अजमेरवे
मातह्त रहेगी, जो वहाका अपील सुनेगा

दूसरी किस्मके मुकद्दमातकी बाबत शिकायत होनेपर एजेएट गवर्नर जेनरल
राजपूतानह, बशर्ते मुनासिब मिस्ल मगाकर साभर झील कोर्टके फैसलहकी मन्जूरी
मन्सूखी या तर्मीम वगैरह करसकेगे

राज्य अलवरकी तारीख

रियासत अलवर राज्य जयपुरकी शाखमे है, इसलिये उसकी तारीख यहा दर्ज कीजाती है -

जुग्राफियह (१)

रियासत अलवर राजपूतानहके पूर्वोत्तरी हिस्सेमे २७° ५′ और २८° १५′ उत्तर अक्षाश और ७६° १०′ और ७७° १५′ पूर्व देशान्तरके दर्मियान वाके है इसका रक्बह ३०२४ मील मुरब्बा, आबादी करीब ८००००० आदमी, सालानह आमदनी २९४१८८३ रुपया और खर्च २२४५१५४ रुपयेके करीब माना गया है यह रियासत उत्तरमे अंग्रेजी जिले गुडगावा, बावल पर्गनए नाभा, और कोटकासिम पर्गनए रियासत जयपुरसे, पूर्वमे रियासत भरतपुर व गुडगांवासे, दक्षिणमे जयपुर, और पश्चिममे जयपुर, कोटपुतली, रियासत नाभा व पटियालासे घिरी हुई है राज्य अलवर और जयपुरकी दर्मियानी सहद सन् १८६९-७२ मे कप्तान ऐबटने काइम करके नक्शहमे दर्ज की, सन् १८७४-७५ में लेफ्टिनेण्ट मासीने पटियाला और अलवरकी सीमा नियत की, और रियासत नाभा और इस राज्यके, जो बाहमी सहदी तनाजा था, मिटा दिया सन् १८५३-५४ ई० मे कप्तान मॉरिसनने भरतपुर और अलवरकी सीमा मुकर्रर की, और वह सहद जिसकी बाबत अलवर और सर्कार अंग्रेजीके दर्मियान बहस थी, राज्य अलवर और गुडगावाके बन्दोबस्तके अंग्रेजी हाकिमोने तस्फियह करके काइम करदी.

कुद्रती सूरत- कुल राज्यमे उत्तरसे दक्षिणी तरफ बराबर पहाडियोके सिल्सिले नजर आते है पूर्व और उत्तरकी तरफ कई एक छोटे पहाडी सिल्सिले है, जो कम ऊचे, तग, और अक्सर जुदा जुदा, दूर दूर एक एक या दो दो शामिल है उत्तर पूर्वी सीमाकी पहाडियोका सिल्सिलह बराबर चला गया है, जिनमे अक्सर पहाडियां कई मील चौडी है, तो भी उत्तर और पूर्वमे इस राज्यका अक्सर हिस्सह कुशादह है

(१) यह जुग्राफियह कप्तान सी० ई० येट (Captian C E Yate) के बनाये हुए राजपूतानह गजेटिअरकी तीसरी जिल्दसे खुलासह करके लिखा गया है

ठीक दक्षिणी तरफ़, अलवरकी सीमापर, इस देशका दूसरा कस्बह राजगढ है इन दोनों मकामोंके बीचवाली जमीन अक्सर बराबर है, लेकिन् उनके बीचकी रेखाके पश्चिम और उत्तर पश्चिम खूबसूरत पहाड़ियोंका एक सिल्सिलह है, जिसके बहुतही नज्दीक वाली पंक्तियां, उनकी दर्मियानी घाटियां जियादह सकडी होनेकी वज्हसे बे डौल और मिली हुई मालूम होती है, लेकिन् दूरकी पंक्तियोंके बीच चौडी चौडी घाटियें है, और दक्षिण पश्चिम तरफ़की पहाड़ियां बहुत उपजाऊ हैं राज्यकी उत्तरी व पश्चिमी जमीन बहुत हलकी है, लेकिन् पश्चिमी सीमाके कई मकामातके सिवा शेखा-वाटीकी तरह बालू रेतके टीले नहीं है पूर्वकी तरफ़ वाली जमीनमे पानीकी आमद बहुत है, और इसीलिये वह उपजाऊ भी जियादह है, मगर जहां पानी नहीं ठहरता उस हिस्सेकी जमीन बहुत हलकी है दक्षिणकी जमीन अक्सर उम्दह है

पहाड़ियोंके पासकी जमीनमे शिखर (चोटियां) कम हैं, अगर्चि कहीं कहीं नजर आते हैं एक ही सिल्सिलेकी ऊंचाई और नीचाई हर एक जगहपर क्रमसे है, लेकिन् अक्सर पहाड़ियोंमे सीधी खडी चटानें हैं, कि जिनके सबब पैदल आदमी भी पहाडीके पार नहीं जासक्ता कहीं कहीं उनमे ऊंचे ऊंचे मैदान हैं, जिनपर घास कस्रतसे ऊगती है, पहाडी बलन्द मकामात (१) १९०० फ़ुटसे लेकर २४०० फ़ुट तक सत्ह समुद्रसे ऊंचे हैं अक्सर पहाडियां देखनेमे खूब्सूरत और दिलचस्प मालूम होती हैं, जो घने जंगलोंसे ढकी हुई हैं, और पोशीदह जगहोंमेसे पानीके चश्मे जारी रहते हैं

---

(१) नाम शिखर	कहां वाके हैं	ऊंचाई फ़ुट
भानगढ शिखर	भानगढसे $\frac{३}{४}$ मील उत्तरको	२१२८
कानकारी "	कानकारी गढसे १ $\frac{१}{२}$ मील उत्तर पूर्व	२२१४
सिर्वास "	सिर्वाससे ——— दक्षिण पश्चिम	२१३१
अलवरका किला		१९६०
भूरासिन्ध	छावनीसे एक मील पश्चिम	१९२७
बन्द्रोल शिखर	जयपुरकी सीमाके समीप (जो गाजीके थानह और बैराटके घाटेके ऊपर है) बन्द्रोलसे एक मील दक्षिण	२३०७
बहराइच "	जयपुर सीमापर बहराइचसे $\frac{१}{२}$ मील पश्चिम	२३९०
बीरपुर "	देवती और टहलाके घाटेके ऊपर	२०४८

नदिया व नाले- राज्य अलवरकी मश्हूर नदिया, साबी, रूपारेल, चूहरसिंध, लिंडवा, प्रतापगढ, और अजबगढके नाले हैं, जिनमे सबसे बडी नदी साबी है, जो इस राज्यकी १६ मीलतक पश्चिमी कुद्रती सीमा बनाती और सोतामे मिलकर राज्यके उत्तरी पश्चिमी कोणको जुदा करदेती है, वह रियासत नाभाके मकाम बावलके एक हिस्सेको अलवरसे जुदा करती हुई राज्य जयपुरके पर्गनह कोट कासिममे दाखिल होती है इसमे कई छोटी छोटी नदिया मिलती है, और उत्तरी जयपुरका बहाव इसमे आता है, लेकिन् इसके करारे ऊचे होने और पेटेमे रेत जियादह होनेकी वजहसे खेती नही होसक्ती, और दूसरी नदियोकी तरह खेतीके हकमे फाइदहमन्द नहीं है, इसकी बाढसे इलाकए अंग्रेजीके रेवाडी देशको उत्तरकी तरफ बहुत नुक्सान पहुचता है, क्योंकि वह अच्छी जमीनको काटकर बहा लेजाती है, और उसकी जगह रेता वगैरह छोडजाती है, जो जिराअतके काबिल नहीं होता बर्सातके बाद यह नदी सूख जाती है, इसपर राजपूतानह स्टेट रेल्वेका एक पुल अलवरकी सीमाके बाहर बना हुआ है

अलवर शहरके पश्चिम और दक्षिणकी पहाडियोका पानी खासकर रूपारेल और चूहरसिधमे जाता है ये दोनो नदिया पूर्व दिशाको बहती हैं, और इनमे खेतीको बहुत बडा फाइदह पहुचता है रूपारेल, जो जियादहतर बारा नामसे मश्हूर है, उसमे पानीका प्रवाह अक्सर रहता है, और चूहरसिधमे सिर्फ बर्सातके बाद पाया जाता है इस (चूहरसिध) के सोतेके पास एक मश्हूर देवस्थान है, और रूपारेलकी एक शाखापर सीलीसेढकी झील है

उत्तरी पश्चिमी पहाडियोके एक हिस्सेका पानी लिंडवा नदीमे जाता है यह नदी १२ या १५ मील तक दक्षिणकी तरफ बहने बाद, जहा वह जुदा होती है, पूर्वको मुडकर इलाकए अंग्रेजीमे दाखिल होती है, खेतीको इसके पानीसे बहुत फाइदह होता है, लेकिन् गर्मीके मौसममे इसका प्रवाह बन्द होजाता है

टहला, अजबगढ, और प्रतापगढ पर्गनोसे राज्यके दक्षिणकी तरफ बडे बडे नाले जयपुरके इलाकेमे बहते है, जहा वे बाणगगासे मिलजाते हैं इनमेसे प्रतापगढ़ और अजबगढके नाले अक्सर गर्मियोमे भी बहते रहते है

झीलें-पश्चिममे नरायणपुरका नाला उत्तर तरफ बहकर साबीमे जामिलता है, लेकिन् बर्सातके बाद सूखजाता है इस राज्यमे सीली सेढ़ और देवती नामकी दो छोटी छोटी झीलें या ताल हैं

ईसवी १८४४ के लगभग महाराव राजा विनयसिंहने रूपारेल नदीकी एक सहायक धारापर ४० फुट ऊचा और १००० फुट लम्बा एक बन्द बन्धवा दिया था,

जिससे " सीली सेढ " ताल बनगया यह झील शहर अलवरसे ९ मील दक्षिण-पश्चिमको है, जब यह भरती है, तो इसकी लम्बाई १ मील और चौडाई ४०० गजके करीब होजाती है. इसके ऊपर एक चटानपर सुबिधेका एक महल बना है, पानीमें किश्तियां रहती हैं, मछलियां और घडियाल भी बहुत कसरतसे पाई जाती हैं, इसके आसपासके मकामोंमें शिकारी जानवर ज़ियादह होने, शहरसे करीब वाके होने और सब्ज़ी वगैरहके सबब रौनक व सैरकी जगह होनेकी वजहसे, बहुतसे सैर करने वाले मनुष्य आया जाया करते हैं यहांसे बज़रीए एक नहरके शहर अलवरमें पानी जाता है, और उस नहरके सबब राजधानीकी सीमाकी बहुत कुछ रौनक है

देवती झील अलवरसे ठीक दक्षिण तरफ़ जयपुरकी सीमाके पास है, इसकी पाल जयपुरके एक सर्दारने बंधवाई थी यहांपर जंगली, और पानीमें रहनेवाले जानवरोंके जमा होनेकी वजहसे यह झील मश्हूर है, और पानीमें रहनेवाले सांपोंके लिये भी, कि जिसके सबब वहांके महलमें कोई नहीं रहता सीलीसेढसे यह झील लम्बाई चौडाई और गहराईमें कम है, और अक्सर गर्मीके मौसममें सूख जाती है

ऊपर लिखी हुई झीलोंके सिवा खेतोंको सींचनेकी गरज़से कई नालोंमें पाल बांधी हुई हैं लेकिन् उनमें पानी बहुत कम मुद्दत तक रहता है. चन्द तालाब भी हैं, जिनमें सालभर तक पानी रहता है

आबो हवा और सर्दी गर्मी- आबो हवा इस इलाकेकी उम्दह और पानी भी तन्दुरुस्तीके हक़में फ़ाइदह बख़्शनेवाला पाया गया है सन् १८७१ से सन् १८७६ ई० तक की बारिशका हिसाब करनेसे मालूम हुआ, कि इस राज्यमें हर साल २४ या २५ इंचके करीब पानी बरसता है

सर्दी और गर्मीका कोई सहीह अन्दाज़ह नहीं रक्खा जाता अक्सर राज्यके उत्तरी हिस्सेमें, जहांकी ज़मीन हलकी और मुल्की हिस्सह कुशादह मैदान है, गर्मीके दिनोंमें पहाडी मकामोंकी निस्बत गर्मी कम याने औसत दरजेकी रहती है; और पूर्व तथा पश्चिममें ज़मीनके सख़्त और पहाडी होनेकी वजहसे गर्मी बहुत तेज़ पडती है बर्सातके मौसममें पहाडियोंके ऊंचे मकामोंमें सर्दी रहती है, और बनिस्बत मैदानके उन जगहोंमें जाकर रहना अच्छा मालूम होता है ऊपरी गढ, जो शहर अलवरसे १००० फ़ीट ऊंचा है, इस मौसमके लिये बहुत ही उम्दह तन्दुरुस्तीकी जगह है

पत्थर व धातु वगैरह- पहाडी हिस्सेकी कुल पहाडियां कार्ट्ज़की हैं, जिनमें सिफ़ेद पत्थर तथा अब्रक़ वगैरहकी धारियां नज़र आती हैं. दक्षिणकी तरफ़ कुछ ट्रैप और नीस चटान भी पाया जाता है, पश्चिमोत्तरमें काला स्लेट, दक्षिण-

पश्चिममे अच्छे सिफ़ेद् सग मर्मर और बाज जगह सिफ़ेद् बिल्लौरके मुवाफ़िक, और मोतिया या गुलाबी रगका पत्थर भी मिलता है, जो मकानातके बनानेमे काम आता है अलवर शहरके पूर्वोत्तर २० माइल फ़ासिलेपर खानोमेसे मेटा मॉर्फ़िक् (रूपान्तर कृत) स्लेटके रगके रेतीले पत्थरकी पट्टिया निकलती है, शहरके दक्षिण पूर्व बीस मीलके भीतर वैसी ही पट्टिया निकलती है, और अच्छा सिफ़ेद् चौकोर रेतीला पत्थर भी दक्षिण पूर्वमे पाया जाता है, जो मकानातकी तामीरमे बहुत काम आता है छत पाटनेका पत्थर राजगढ, रेवाडी और माडणके नज्दीक बहुत निकाला जाता है, राजगढमे २० फुट लम्बी और २ फुट तक चौडी पट्टी निकलती है, और अजबगढ की स्लेटका रेलवे स्टेशनकी तामीरमे बहुत काम हुआ है चूना बनानेका मोटा सिफ़ेद् पत्थर इस इलाकेमे पाया जाता है सग मूसा (काला पत्थर) शहरसे पूर्व १६ मीलके फ़ासिलेपर और आस पासकी जगहोमे निकलता है अब्रक, लाल मिट्टी, एक किस्मका खराब नमक, शोरा, और पोटाश (खार, जवाखार, या सज्जी) भी मिलते है, लोहेकी कच्ची धातुके ढेरके ढेर पाये जाते है, और पहिले लोहा बहुत निकाला जाता था, ताबा और किसी कद्र सीसा भी पाया गया है

जगल वगैरह— राज्यके कई हिस्सोमे दरख्तोकी हिफ़ाजत रक्खी जाती है, पहाडियोपर दरख्त बहुत कस्रतसे है, और दूसरे मकामोमे मैदानोमे मिलते है, खास शहरके आसपास जोती जानेवाली और ऊसर जमीनपर जाबजा बबूलके बडे बडे दरख्त लगे हुए है, लेकिन् कोई बडा गुञान जगल नहीं है

पहाडी जमीन तथा पहाडियोके ढालो और ऊची ज़मीनपर सालर व ढाकके छोटे बडे पेड अक्सर पाये जाते है, पहाडियोके आधारपर और सकडी घाटियोमे ढाक जियादह जमा हुआ है एक जगह तालके दरख्तोका बडा खूबसूरत जगल है, और जाबजा ताल व खजूरके दरख्त बे शुमार खडे है दक्षिण और पश्चिमी पहाडियोपर कीमती मज्बूत बास बहुत होता है, और कहीं कहीं बडके दरख्त भी नजर आते है पहाडियो और घाटियोमे खैर, खैरी, कधू, हरसिगार, करवाला या अमलतास, गुर्जन, आटन या जरखैर, कीकर, कुभेर, आवला, डोलिया हड, बहेडा, तेदू, सेमल, गजरेड, गूलर, गगेरन, जामुन, कदब, बेर, पापरी, गूगल, झालकटीला, जिगर, कुम्हेर, अडूसा वगैरह कई किस्मके छोटे बडे दरख्त पायेजाते है खेजडा, खैर, नीम, कीकर, पीपल, फिरास, सीसम, रोहिडा, पीलू, आम, इमली, सेजना, और बड भी बहुत होते है, और कई किस्मकी घास होती है, कि जो सिवाय मवेशियोकी खुराकके मकानोकी छान, टोकरिया व पखे वगैरह चीजे बनानेमे काम आती है

शेर, तेंदुए और बघेरे बहुत हैं, और करीब क़रीब तमाम जंगलोंमें बल्कि शहरके आसपास तथा बगीचोंमें भी फिरते रहते हैं. सांभर, हिरन और नीलगायोंके झुंड खुले मैदानोंमें फिराकरते हैं, और कहीं कहीं सूअर भी मिलते हैं, लेकिन् पहिलेकी बनिस्बत बहुत कम हैं. खर्गोश, भेड़िया, चर्ख, चिकार, धीम, खर्गोश, सेह याने कलगारी, गीदड़ लोमड़ी, फेकरी, बीजू, मुश्कबिलाई, साल (चींटी खानेवाला जानवर), सियहगोश, नेवला, घोड़ागोह, गडरबिलार और लंगूर वगैरह कई जानवर जंगलों व पहाड़ोंमें पाये जाते हैं. उड़नेवाले जानवर याने परिन्दे भी कई प्रकारके देखे गये हैं, मसलन तीतर, बटेर, काला तीतर, जंगली मुर्ग, मोर बाज, शिकरा, मोरायली, तुरमची, सिफ़ेद मोर, बटबल कुलंग, जो जमीनपर नहीं दिखाई देता, टिटहरी, हरयल, बया, लकलाठ या बदानी, जो सोते हुए नाहरके मुंहमेंसे गोश्तके टुकडे निकाल लेती है, और सिवा इनके कई जानवर तालाब वगैरहमें तैरने वाले तथा उनके किनारोंपर रहनेवाले भी पाये जाते हैं, जिनकी खुराक मछली वगैरह पानीके छोटे जानवर हैं.

पैदावार- राज्य अलवरकी खास पैदावार यह है - गेहूं, जव, चना, जवार, बाजरा, मोठ, मूंग, उड़द, चौला, मक्का, गवार, चावल, तिल, सरसों, राई, जीरा, कासनी, अफ़ीम, तम्बाकू, ईख, रुई वगैरह. लेकिन् मक्का और अफ़ीम मालवा व मेवाड़की तरह कसरतसे नहीं बोई जाती, किसी किसी जगह गावोंमें पैदा होती है, और अफ़ीम डोडियोंमेंसे कम निकाली जाती है, क्योंकि इस इलाकेमें बनिस्बत अफ़ीमके पोस्त पीनेका रवाज जियादह है, ईख भी कम पैदा होता है. गाजर, मूली, बथुवा, करेला, बैंगन, तुरोई, कचरा, सेम, कोला, आल, घिया वगैरह तर्कारियां इलाकहमें अच्छी और जियादह मिलती हैं, अरुई, रतालू, व आलू वगैरह तर्कारियां और कई किस्मके फल खास राजधानी अलवरके बागीचोंमें पैदा होते हैं.

राज्य प्रबन्ध- महाराव राजा शिवदानसिंहके इन्तिकाल करनेपर मौजूद जानशीन महाराजाके नाबालिग होनेके सबब राज्य प्रबन्धके लिये एक सभा या कमिटी मुकर्रर कीगई, उस वक्त याने ई० १८७६ में पंडित रूपनारायण, ठाकुर मंगलसिंह गढीवाला, ठाकुर बल्देवसिंह श्री चन्द्रपुराका, और राव गोपालसिंह पाई वाला इस कमिटीके मेम्बर करार पाकर विद्यमान महाराजाकी नाबालिगीके जमानह तक उम्दगीके साथ राज्यका काम करते रहे. जबसे उक्त महाराजाने राज्यका काम अपने हाथमें लिया, तबसे वह सभा महाराजाकी राय व हुक्मके अनुसार काम अंजाम देती है.

अपीलकी कचहरी - इस कचहरीपर ५०० रुपये माहवारका एक अफ्सर है, जो फ़ौज्दारी, दीवानी और नुजूल (इमारत) की कचहरियोंकी अपील सुनता है मुकद्दमात फ़ौज्दारीमें, जिनपर कि दो साल कैदकी सज़ा हो, और १००० एक हज़ार रुपये तकके दीवानी मुकद्दमोंमें उसीकी रायपर अमल दरामद होता है उसको फ़ौज्दारके इरिल्तयारातसे बाहर वाले मुकद्दमोंकी कार्रवाईका इरिल्तयार है

मालगुजारीका मह्कमह - माल सद्रका हाकिम डिप्युटी कलेक्टर कहलाता है, जो ज़मीनकी मालगुजारीके मुतअल्लिक तमाम कामोंका इरिल्तयार रखता है, और इस कामका नाज़िर है वह ज़मीनकी मालगुजारीके मुकद्दमोंकी समाअत करता है, और ज़मींदारोंके बखिलाफ़ महाजनोंके मुकद्दमोंको भी सुनता है, जिन्होंने मालगुज़ारी के वास्ते ज़मींदारोंको बतौर कर्ज़के रुपया दिया हो एक असिस्टेंट डिप्युटी कॅले-क्टर उसकी मददके लिये मुकर्रर है

फ़ौज्दारी - मह्कमह फ़ौज्दारीका हाकिम जुदा है, उसको इरिल्तयार है, कि इस किस्मके मुकद्दमोंमें मुजिमोंको एक सालकी कैद और तीनसौ ३०० रुपया जुर्मानह या इसके बदलेमें एक साल जियादह कैदकी सज़ा दे अक्सर ऐसे मुकद्दमातमें, कि जिनमें वह ६ महीनेका जेलखानह या ३० रुपया जुर्मानहकी सज़ा देवे, उसीकी राय बहाल रहती है, और अदालत अपील ऐसे मुकद्दमोंकी बाबत समाअत नहीं करती फ़ौज्दार तहसीलदारोंकी अपील सुनता है, जो एक माह कैद और २० रुपये तक जुर्मानह करसक्ते हैं

मह्कमह दीवानी - दीवानीका हाकिम कुल मुकद्दमात दीवानीको सुननेका इरिल्तयार रखता है हाकिमकी तन्ख्वाह ३०० रुपया माहवार मुकर्रर है अपील सिर्फ़ ५० रुपयेसे जियादह मालियतके मुकद्दमोंमें होसक्ती हैं तहसीलदारको १०० रुपया मालियतके दावेकी समाअत करनेका इरिल्तयार है, जिसके फ़ैसलोंकी अपील मह्कमह दीवानीमें होती है

नुजूल (मकानात वगैरह) का मह्कमह - यह मह्कमह अलवर शहरके अन्दर और आसपासके सर्कारी मकानोंकी मरम्मतका बन्दोबस्त करता है, और राजगढ़के मकानोंकी भी, निगरानी रखता है, जो अलवरके वर्तमान राजाओंका कदीम स्थान था इस मह्कमेके सुपुर्द खालिसहके मकानोंकी निगरानी करना, और कोई शरूस अपना मकान किसीको बेचे, तो उसकी तह्कीकात करना, बिकावकी रजिस्टरी करना और इस किस्मका सर्कारी मह्सूल वुसूल करना वगैरह मकानातके खरीद फ़रोख्तसे तअल्लुक रखनेवाले काम हैं सिवाय अलवर व राजगढके दूसरे मकामोंका काम मह्कमह मालगुजारीके ताबे है मह्कमह नुजूलके हाकिमकी अपील, अपीलकी कचहरीमें होती है राज्यके महलातकी

तामीरका काम एक होश्यार इन्जिनिअरके सुपुर्द है, जो ३०० रुपये माहवार पाता है

खज़ानह - इस कामपर एक मोतबर खानदानी महाजन मुकर्रर है, जो अपने मातह्तोंकी मौकूफ़ी बहालीका इख्तियार रखता है हिसाब हिन्दी व फ़ार्सी दोनोंमे होता है, और रोजमर्रहकी आमद व खर्चके हिसाबका तख्मीना हमेशह देखलिया जाता है दाण याने साइरकी आमदनी ईसवी १८६८-६९ मे १२०००० रुपया थी, लेकिन् ईसवी १८७७ मे दाण मुआफ़ करदिया गया, अब सिर्फ़ बहुत कम चीज़ोंपर बाकी रहगया है

म्युनिसिपॅलिटी-(शहर सफ़ाई वगैरह) शहरकी सफ़ाईके लिये चन्द सालसे अलवर, राजगढ व तिजारा वगैरह शहरोंमे म्युनिसिपल कमिटी मुकर्रर कीगई है इसके मेम्बर कुछ तो राज्यके नौकर और कुछ बे नौकर है मकानोंके मह्सूलकी बनिस्बत, जो कि पहिले लगता था, दाण अच्छा समझा जाता है यह कमिटी हर सालके शुरू होनेसे पहिले सालानह आमदनीका हिसाब देखती है, और हर सालके अखीरसे उन कामोंकी रिपोर्ट देखती है, जो कि सालभरमे होते है

धर्मखाता व इन्आम- ब्राह्मणों तथा मन्दिरोंके लिये माहवारी बधानके मुवाफ़िक रुपया मिलता है इस राज्यमे इस किस्मके ३७६ मन्दिर है, इनमेंसे तीन राणियोंके बनवाये हुओंका खर्च ३००० रुपया सालानह, द्वारिकानाथ के मन्दिरका खर्च ३६०० रुपया, और जगन्नाथके मन्दिरके लिये ६०० रुपया सालानह दिया जाता है, जो खास शहर अलवरमे है; और राजगढमे गोविन्दजी के मन्दिरके सिवा, जिसके लिये २५०० रुपये मुकर्रर है, बाकी मन्दिरोंके लिये थोडा थोडा मासिक खर्च मुकर्रर है मन्दिरोंका कुल सालानह खर्च ४०००० रुपयेके करीब समझा जाता है ब्राह्मणोंके लिये २८००० और फ़क़ीरों वगैरहके लिये ७००० रुपया नियत था हर एक अहलकार व सर्कारी नौकरको विवाह और मौतके कामोंमे मदद देनेके लिये ५ रुपयेसे लेकर ३००० से जियादह तक बतौर इन्आम मिलता है

फ़ौज - पियादह पल्टन, रिसाला, तोपखानह व पुलिस वगैरह फ़ौजी आदमियों की तादाद छ हजारसे जियादह मानी जाती है, मेजर पी० डब्ल्यू० पाउलेट ने अपने बनाये हुए अलवर गजेटिअरमे ६७९५ लिखी है अगर्चि पहिले पुलिस जुदा न थी, और थानेदारोंकी तन्ख्वाह भी बहुत कम थी, लेकिन् अब थानेदारोंके लिये ३० से ४० रुपये तक माहवार मुकर्रर होगया है, गढकी पल्टनमेंसे अच्छे अच्छे जवान चुनकर तन्ख्वाहकी तरक्कीके साथ पुलिस काइम कीगई है, और एक लाइक शख्स सुपरिन्टेन्डेन्ट १०० रुपये माहवार तन्ख्वाहपर मुकर्रर कियागया है, जिसका काम पुलिसका इन्तिज़ाम करनेके सिवा, मीनों वगैरह लुटेरोंकी निगहबानी

रखनेका भी है वे सिपाही जिनको कि जमीन मिली है, एक किस्मके छोटे जागीरदार है, जो घोडे व सवारके एवज तह्सील व गढोमे पैदल सिपाहीकी नौकरी देते है ये लोग सर्दार कहलाते है

जेलखानह- एजेन्सी सर्जनके इस्तियारमे है, जिसके मातह्त एक सुपरिन्टेन्डेन्ट है यह मकान महाराव राजा विनयसिंहने एक सरायके साम्हने उम्दह मौके और तर्जपर बनवाया है, जो कैदियोके लिये सिहत बख्श है यहापर दरी, गालीचे व नवार वगैरह चीजे अच्छी तय्यार होती है इसके पास एक पागलखानह भी है, जहापर पागलोका इलाज होता है, और वे लोग यहीपर रक्खे जाते है काइदह जेलखानेका उम्दह है, जेलगार्डमे एक सूबेदार, ६ हवाल्दार, ११९ सिपाही, ३ भिश्ती, १ जमादार, ५ नायक हवाल्दार, १ मुहर्रिर और १ खलासी रहता है, काम करने वाले कैदियोकी रोजानह खुराक सेर नाज और दाल या तर्कारी है जेलका सालानह खर्च ९१४० रुपयेके करीब पडता है

टकशाल- यहाके टकशालमे कभी कभी देशी रुपये बनते है, जो हाली कहलाते है, लेकिन् इनका चलन अब जियादह नही है, कल्दार रुपयेका चलन बहुत ही बढगया है, और पैसा भी अंग्रेजी ही चलता है, पैसा और पाई दोनो राइज है, लेकिन् बनिस्बत पाइयोके बनिये लोग कौडिया जियादह पसन्द करते है चन्द सालसे मौजूद महाराजा मंगलसिंहने कल्दारकी कीमतके बराबर और उसी शक्लका, कि जिसके एक तरफ फार्सीमे उनका नाम है, जारी किया है, वह हर जगह कल्दारके भावसे चल सक्ता है पुराने पैसे, जो यहा पहिले चलते थे, उनको सिवाय घास व लकडी बेचनेवालोके कोई नही लेता

मद्रसह -सरिश्तह तालीमका इन्तिजाम अब यहा बहुत उम्दह होगया है, अगर्चि विद्याका प्रचार तो पहिले हीसे था, और खास शहर अल्वरका बडा मद्रसह विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] मे महाराव राजा विनयसिंहने काइम किया था, लेकिन् महाराव राजा शिवदानसिंहने मालगुजारीपर १ रुपया सैकडा मह्सूल जारी करके बडे बडे गावो और तह्सीलोमे मद्रसे काइम करदिये, जिनमे फार्सी, उर्दू और हिन्दी पढाई जाती है, और विक्रमी १९३० कार्तिक [हि० १२९० रमजान = ई० १८७३ नोवेम्बर] मे राजधानीके बडे मद्रसेको, जो पहिले महाराव राजा बख्तावरसिंहकी छत्रीमे था, शहरके खास दर्वाजेके बाहर कुशादह और उम्दह जगहपर अंग्रेजी कताका दुमन्जिला,मकान तय्यार होने बाद मुकर्रर किया, यहा एक पाठशाला ठाकुर सर्दारो तथा बडे अह्लकारोकी औलादको तालीम देनेकी गरजसे विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] मे काइम कीगई, जो

अब तक मौजूद है सिवाय इनके मिशन स्कूल और कई छोटे छोटे हिन्दी व फार्सी के मक्तब है, एक लड़कियोंकी पाठशाला भी है यहापर सरिश्तह तालीमका एक महक्मह है, जिसका अफ्सर और उसका मातह्त इन्स्पेक्टर तह्सीलो व देहातमे, जहा जहा मद्रसे है, दौरा करते रहते है

राज्यका पुस्तकालय देखनेके लाइक है, इसमे कई कदीम सस्कृत पुस्तके और कई अरबी व फार्सीकी कलमी किताबे मए तस्वीरोके रक्खी है, और एक गुलिस्ता कलमी अजीब तुह्फा है, जो पचास हजार रुपयेकी लागतसे तय्यार हुई, और शायद वैसी कही नही मिलसक्ती

शिफाखानह- खास राजधानी अलवरमे एक बडा और कुशादह अंग्रेजी कताका शिफाखानह बना हुआ है, जिसमे बीमारोके रहनेके लिये उम्दह मकान और रहने वाले मरीजोको खाना वगैरह राज्यसे मिलता है सिवा इसके एक शिफाखानह राजगढमे और तिजारामे है, और अब हर एक तह्सीलके बडे कस्बोमे बनते जाते है

बागीचे- रियासत अलवरमे ६५ से जियादह बागीचे है, जिनमेसे दो तो खास शहरके अन्दर, २७ सीमापर, १ कृष्णगढ पर्गनेमे, २ तिजारामे, २ बानसूरमे, १ गोविन्दगढमे, ३ लक्ष्मणगढमे, ६ थानह गाजीमे, २० राजगढमे, और सिवाय इनके कई एक और भी है

कौम व फिर्के- रियासत अलवरमे जिस जिस कौमके लोग आबाद है, उनके नाम यहापर लिखे जाते है- ब्राह्मण, राजपूतोमे चहुवान, कछवाहा, राठौड, तवर, गौड, यादव, शेखावत, नरूका (१), बडगूजर, और बनिया, कायस्थ, गूजर, अहीर, माली, सुनार, खाती, लुहार, कहार, दर्जी, पटवा, चितारा, तेली, तबोली, भडभूजा, मनिहार, कुम्हार, नाई, बारी, ठठेरा, रैबारी, गडरिया, बावरी, मीना, चाकर, (गुलाम), डाकौत, भाड, ढाडी, खानजादह (२) मुसल्मान, मेव (३), काइमखानी,

---

(१) अलवरके राजा इसी खानदानके है, और इनकी तथा कछवाहा खानदानकी कुलदेवी जमुहाय महादेवी है, जिसका मन्दिर जयपुरके राज्यमे बाणगगा नदीके नालेमे, राज्य अलवरके दक्षिणी पूर्वी कोणसे नज्दीक ही है यहीपर जयपुर राज्यके जमानेवाले दुलहाराय तथा पीछेसे उसके बेटेने मीना और बडगूजरोकी लडाईमे देवीसे बडी मदद पाई थी

(२) ये लोग खान जादव नाम राजपूतकी औलादमे हैं, जो मुसल्मान होगया था मेवातमे कदीमसे राज्य इन्हीका था, लेकिन् अब इन लोगोके कोई जागीरी या मुआफीका गाव नहीं है, केवल नौकरीसे गुज़र करते है

(३) ये लोग नामके मुसल्मान है, वर्नह इनके गावके देवता वही है, जो कि हिन्दू जमीदारो के, इनके यहां कई एक हिन्दुओके त्यौहार, मसलन होली, दिवाली, दशहरा, व जन्माष्टमी वगैरह उसी खुशीके साथ माने जाते है, जैसे मुहर्रम, शबबरात व ईद

रंगरेज, जुलाहा, कूजड़ा, भिश्ती, कसाई, कमनीगर, धोबी, कोली, चमार, और कई मत वाले साधू तथा बहुतसे मुतफ़र्रक फ़िर्के आबाद हैं ब्राह्मणोंमें सबसे जियादह आदगौड़ इस इलाकहमें बस्ते हैं

जमीनका पट्टा व महसूल वगैरह- इस राज्यमें सिवाय थोड़ेसे हिस्सेके, जो जागीरदारों वगैरहके कब्जेमें है, खालिसेकी जमीन जियादह है राज्यमें जमीनका पट्टा दो तरहका है, एक बटी हुई जमीन, जो बापोतीके हकके मुवाफ़िक बांटी गई है, जिसको पश्चिमोत्तर देशमें पट्टीदारी कहते हैं, और दूसरी गैल याने बगैर बटी हुई, यह दो तरहकी होती है, अव्वल यह कि, जिस शख्सका जमीनपर कब्जह है उसीको पूरा इख्तियार होगया है, वह भाइयों व हकदारोंमें नहीं बट सक्ती, उस जमीनका जवाबदिह वही शख्स होता है, जिसके कब्जेमें जमीन हो, चाहे वह उसे जोते बोवे या पड़ा रहनेदे, और जमाकी बांट अक्सर जमीनके लिहाजसे बीघोड़ीके हिसाबपर होती है दूसरे गैल पट्टेमें गांवकी जमीन शामिलातमें रहती है, और किसानोंको किरायेपर दीजाती है इसमें बापोतीके हकके अनुसार सबको भाई बट बराबर मिलता है, और हासिल भी बराबर देते हैं, नफ़े नुक्सानमें सब हिस्सेदार शामिल रहते हैं यह भी एक किस्मका जमींदारी पट्टा है, ऐसे पट्टे इस राज्यमें अक्सर लोगोंको मिले हैं

जहां जागीरदार हिस्सह लेता है, वह या तो आधा आधा, पांचवां तिहाई, या चौथाई होता है, और इससे जियादह एक महसूल और है, लेकिन् कभी कभी तिहाई, और हमेशह चौथाई मुफ़ीद समझा जाता है कुल पैदावारका तीसरा हिस्सह, और सिवा इसके फ़ी मन एक सेर अनाज जियादह, गांवमें हर एक हलसे एक दिनका काम, हर एक लाव वालेसे एक बोझ हरा अनाज (बाल या भुट्टे) और हर एक शादीमें २) रुपये नक्द और कभी नौकरोंके लिये खाना, बगैर जोती हुई जमीनकी घास और जंगली पैदावार, और पड़त जमीनपर १।) सवा रुपया एकड़के हिसाबसे हासिल लेनेका इख्तियार जागीरदारको समझा जाता है जागीरदारको इख्तियार है, कि चाहे वह हासिलका नक्द रुपया लेवे या अनाज लेवे मालगुजारीका कोई एक मुकर्रर निर्ख नहीं है, लेकिन् विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में जब मालगुजारीका नया बन्दोबस्त हुआ, उस वक्त हासिलका निर्ख जमीन और जिन्स के लिहाजसे सींची जानेवाली जमीनपर १) रुपयेसे लेकर ९।=) तक, और बगैर सींचीजानेवालीपर ॥) आठ आनेसे ३॥) रुपये तक मुकर्रर करदिया गया है कुए वाली रेतीली ज़मीन, जो ख़राब तरहसे सींची जाती है, और ख़ास उत्तरमें

जियादह है, उसके लिये ५) रुपये फ़ी एकड, और उम्दह तौरपर सीची जानेवाली दक्षिण पश्चिमकी जमीनके लिये २२) रुपये तक मह्सूल लिया जाता है महसूल जो दिया जाता है, वह नज़्अ्जुबके लाइक है, याने राज्यके एक बीघेके लिये १।।) रुपया, लेकिन् किसी किसी बागकी जमीनको सालभरमे बारह मर्तबह पानी दिया जाता है, इसलिये सिर्फ़ पानीका हासिल ४५) रुपया फ़ी एकड देना पडता है, और अगर इसमे मालगुजारी जोडीजावे, तो पचास रुपये होजाते है जिस जमीन पर बाढ आती है, उसका हासिल फ़ी एकड ९) रुपये लिया जाता है यह निर्ख महकमह बन्दोबस्तके जारी होनेसे पेश्तर ही ठहराया गया था नहरोसे सीची जानेवाली जमीन इस राज्यमे ४१६० बीघेसे जियादह है, विक्रमी १९३१-३२ [हि० १२९१- ९२ = ई० १८७४-७५] मे नहरोकी जुदी आमदनी १७०४०) रुपये हुई थी

जब गावोमे ठेका नही हुआ था, और कुल इन्तिजाम तह्सील्दार करते थे, तब रईसका मन्शा यह था, कि सिवाय २ और ३ रुपये सैकडाके, जो हक मुत्राई कहलाता था, और गावके सर्दारो या नम्बरदारोको दिया जाता था, पूरा मह्सूल वुसूल होजावे उस वक्त यह क़ाइदह था, कि हर एक फ़स्लकी मालगुजारी कई पीढियोसे हर एक हिस्सेके लिये राज्यकी तरफ़से बजरीए कानूनगो लोगोके मुकर्रर होजाती थी जब विक्रमी १९१९ [हि० १२७९ = ई० १८६२] मे दस सालका बन्दोबस्त शुरू हुआ, तबसे राज्यभरमे लाओकी तादाद १२६०४ से बढकर १६०७४ होगई है विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] मे बहुतसे जमीदारोको सभाकी रायके मुवाफ़िक ८०००० रुपया पेशगी दिया गया, जिससे ३०० नये कुए बनाये गये, और १०० से जियादहकी मरम्मत कीगई इस राज्यमे रहटके जरीएसे पानी नही निकाला जाता, कुओपर चरसोसे काम लेते है, जिसका खास सबब यही है, कि कुए गहरे जियादह होनेसे रहट काम नही देसक्ता यहाके कुओका पानी सात तरहका होता है, मतवाला, मलमला, रुकछा, मीठा, खारा, तेलिया, और वज्रतेलिया, जिसमे तेल और सख्त खार होता है इनमेसे पहिला पैदावारके हकमे सबसे बढकर और पिछले दो बिल्कुल खराब और बेकार होते है, ये पीने या खेतीको सीचने वगैरह किसी काममे नही आते यहाके जमीदार लोग बनिस्बत अंग्रेज़ी इलाक़हके बिह्तर हालतमे है तह्सीलोमे गावोका हासिल बजरीए पटवारी व अह्लकारोके वुसूल होता है

तह्सीले - राज्य अलवरमे १२ तह्सीले १-तिजारा, २-कृष्णगढ, ३-मडावर, ४

४-बहरोड़, ५-गोविन्दगढ, ६-रामगढ, ७-अलवर, ८-बान्सूर, ९-कठूबर, १०- लक्ष्मणगढ, ११-राजगढ, और १२- थानहगाजी है, जिनका मुफ़स्सल बयान नीचे दर्ज किया जाता है -

१-तह्सील तिजारा-यह तह्सील मेवातके बीचोबीच अंग्रेजी इलाकह, जयपुर की तह्सील कोट कासिम और अलवरकी तह्सील कृष्णगढके नज्दीक २५७ मील मुरब्बाके विस्तारमे वाके है आबादी कुल तह्सीलकी क़रीब ५२००० आदमीके है इस तह्सीलमे दो पर्गने-एक खास तिजारा और दूसरा टपूकडा (१) है, जिनके मातह्त १९९ गाव खालिसेके और सब मिलाकर २०२ है इस तह्सीलकी जमीनका जियादह हिस्सह कम उपजाऊ है, सबसे उम्दह जमीन दक्षिणी पश्चिमी तरफको है खास फस्ल बाजरा और इससे दूसरे दरजेपर उडद, मूग, मोठ, वगैरहकी होती है पडत जमीन किसी काममे नही आती तिजारामे सीची जाने वाली जमीन सैकडे पीछे बारहवे हिस्सेसे भी कम पाई जाती है पूर्वकी पहाडियोका बहाव तह्सीलके मुख्य बाधको पानी पहुचाता है, जो गढ और बलवन्तसिंहके महलके नीचे है आबोहवा इस तह्सीलकी आदमी और जानवरके लिये सिहतबख्श और पुष्ट है, पहाडियोके आसपास तो पानी बहुत ही नीचे निकलता है, लेकिन् और जगहोमे २० से ५० फुट तक की गहराईपर पाया जाता है शहर तिजारा अलवरसे ३० मील दूरीपर पूर्वोत्तरको वाके है, इसमे आबादी ७४०० आदमी और मालिक यहाके मेव, माली और खानजादह है शहरमे एक म्युनिसिपल कमिटी, एक हॉस्पिटल, एक मद्रसह और बडा बाजार है खेतीके सिवा यहापर कपडा और कागज भी बनता है यह शहर मेवातकी कदीम राजधानी था, और मौजूदह जमानेमे भी एक मशहूर मकाम गिनाजाता है बहुधा हिन्दुओके जबानी बयानसे मालूम होता है, कि तिजारा सरेहताके राजा सुशर्माजीतके बेटे तेजपालने बसाया था, और इसका पुराना नाम 'त्रीगर्तक' था तेजपाल यादवका नाम पिछले वक्तोकी तिजाराकी जैन कथामे मिलता है तिजारामे एक गढ, कई पुरानी मस्जिदे और मशहूर शख्सोकी कब्रे तथा पुरानी इमारते पाई जाती है इस तह्सीलमे कई गाव बहुत कदीम जमानेके बसे हुए इस वक्त तक मौजूद है

२- तह्सील किशनगढ (कृष्णगढ) - यह तह्सील तिजाराके पास पश्चिमकी तरफ मेवातमे, उत्तरकी तरफ राज्य जयपुरकी तह्सील कोट कासिमसे मिली हुई करीब २१७ मील मुरब्बाके विस्तारमे वाके है तह्सीलमे ९ पर्गने है, जिनमे

---

(१) पहिले यह ईदोर और दक्षिणी तिजाराके नामसे प्रसिद्ध था

१४४ $\frac{1}{2}$ गाव खालिसेके और १५ $\frac{1}{2}$ गाव मुआफ़ीके है ६१००० आदमियोकी आबादी कुल तह्सीलमे मानी गई है इस तह्सीलकी आधी जमीन अच्छी है बाजरा, ज्वार, जव और रुई कस्रतसे पैदा होती है, कुओका पानी किसी किसी जगह ८० फ़ुटसे भी जियादह गहराईपर लेकिन् अक्सर १५ से ३५ फ़ुट तक मिलता है कृष्णगढसे एक मील पश्चिमकी तरफ वासकृपालनगर एक बडा व्यापारका कस्बह है, और इससे दूसरे दरजेका राजपूतानह स्टेट रेलवेपर खैरथल स्टेशन है, जो बजरीए एक पक्की सडकके किशनगढसे मिला है

३- तह्सील मडावर- यह तह्सील किशनगढके पश्चिम और उत्तरकी तरफ है, इसके पास बावल पर्गनए नाभा और शाहजहापुर वगैरह कई गाव इलाके अंग्रेजी के वाके है तह्सीलका कुछ हिस्सह राठमे और कुछ मेवातमे है रक्बह तक्रीबन् २२९ मील मुरब्बा और आबादी ५४००० आदमी है तह्सीलके मुतअल्लक ६ पर्गनो मे १२७ गाव खालिसेके और १७ गाव जागीरदारोके है बाजरा, चना, जव और ज्वार यहा जियादह पैदा होती है पानी कुओमे २० से ४० फ़ुटकी गहराईपर निकल आता है, लेकिन् कही कही ८० फ़ुटपर पाया जाता है इस तह्सीलकी जमीन मुख्य चहुवान ठाकुरोके कब्ज़हमे रही है कस्बह मडावर, जो अलवरसे २२ मील उत्तरको है, करीब करीब पहाडियोसे घिरा हुआ है, जो दक्षिणकी चटानी जमीनकी एक शाख है, और १७५७ फ़ुटकी ऊचाई तक चली गई है इस क़स्बेमे रावकी हवेलीके सिवा मस्जिद और कब्रे मश्हूर है, कस्बेके पास ही एक पुराना बडा तालाब है मडावरमे एक थाना और तह्सील राज्यकी तरफसे नियत है घरोकी तादाद ४८२ और आदमियोकी आबादी २३३७ है

४- तह्सील बहरोड- राज्यके पश्चिमोत्तरी भागमे है इसकी सीमाके चारो तरफ फिरनेसे यह मालूम होगा, कि राज्यके ठीक बाहर मुल्की बन्दोबस्तमे सात बार फेर फार है, दक्षिण पश्चिममे कोटपुतलीका कुछ थोडा हिस्सह साबी और सोताके बीचमे, और बाद उसके पटियाला और फिर नाभाकी रियासत है, उत्तरी तरफ गुडगावा, पूर्वोत्तरमे बावल पर्गनए नाभा, उससे आगे अलवरका एक कोना, और बाद उसके शाहजहापुर और गुडगांवाके दूसरे गाव और सबसे पीछे अलवरका इलाकह मिलता है यह तह्सील राठमे है, जिसका रक्बह २६४ मील मुरब्बा और आबादी तक्रीबन् ६०००० आदमी गिनीजाती है इस तह्सीलमे तीन पर्गने है, जिनके मुतअल्लक १३१ गाव ख़ालिसहके और २० मुआफ़ीके है जमीन तह्सीलमे किसी जगह उपजाऊ और कहीं बहुत कम उपजाऊ है, बाजरा, ज्वार, मोठ, चना,

जव और गेहूं बनिस्बत दूसरे अनाजके अच्छा निपजता है कुओंमें पानी २० से ५० फुट तककी गहराईपर अक्सर निकलआता है, लेकिन् कई जगह १३० फुट पर पायाजाता है कस्बह बहरोड अलवरसे ३४ मील पश्चिमोत्तर, और नारनौलसे १२ मील दक्षिण पूर्व तरफ़ है, जिसमें १०३० के करीब घर, ५३६८ आदमियोंकी आबादी, एक कच्चा मिट्टीका गढ़, जो हालमें बिल्कुल बेमरम्मत पडा है, तह्सील, थानह, और एक मद्रसह भी है मद्रसेमें फ़ार्सी और हिन्दी पढाई जाती है, हालमें एक हॉस्पिटल भी मुकर्रर किया गया है कस्बेमें एक उम्दह छोटा बाजार और कई बडे बडे सगीन मकान हैं, अगर्चि यह कस्बह इस वक्त भी ठीक आबाद है, लेकिन् विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] में मरहटोंके हाथसे तबाह होने बाद अपनी क़दीम अस्ली हालतको नहीं पहुच सका

५- तह्सील गोविन्दगढ- सिर्फ़ एक पर्गनह है, जिसके मुतअल्लक ५३ गाव खालिसेके, और ३ मुआफ़ीके हैं, मेवातमें वाके है इसका रक्बह करीब ५२ मील मुरब्बा और आबादी २६००० आदमियोंकी है तह्सीलकी जमीन अक्सर अच्छी है, रुई, बाजरा और ज्वार बहुत निपजती है, पानी सिर्फ़ १० से लेकर २५ फुट तक कुआ खोदनेसे निकल आता है, और तह्सीलोंकी तरह यहा गहराई बिल्कुल नही पाई जाती कस्बह गोविन्दगढमें एक तह्सील, एक थानह, और एक पाठशाला, और बाशिन्दोंकी तादाद ४२९० है. यह कस्बह अलवरसे २५ मील पूर्वको बस्ता है

६- तह्सील रामगढ- यह तह्सील राज्यके मध्यमें तह्सील गोविन्दगढ और जियादहतर रियासत भरतपुरसे मिली हुई मेवातमें वाके है, जिसका रक्बह १४६ मील मुरब्बा और आबादी ५१००० आदमीकी है रामगढकी जमीन पैदावारीके लिहाजसे उम्दह समझी जाती है, बाजरा, ज्वार, और जव यहाकी मुख्य पैदावार है तह्सील के मुतअल्लक एक पर्गनह और १०५ गाव है डेढ सौ वर्ष पहिले इस कस्बेमें आबादी बिल्कुल नही थी, लेकिन् इस अरसेमें भोज नामका एक मुखिया चमार मए कई एक दूसरे चमारोंके पहिले पहिल वहा आकर रहा, और कुछ अरसे तक अपने भाइयोंकी सहायताके लिये बेगारमें काम करनेके सबब आसपासके बडे गावोंमें इसका नाम भोजपुर मश्हूर होगया, और चमारोंने अपना बहुतसा रुपया लगाकर रहनेके लिये पक्के मकानात बना लिये विक्रमी १८०२-३ [हि० ११५८-५९ = ई० १७४५-४६] में पद्मसिंह नरूकाने इसको अपने कब्जेमें लिया, और उसमें एक गढ बनवाकर उसका नाम रामगढ रक्खा, इस क़स्बेमें एक तालाब है

७ - तह्सील अलवर- यह तह्सील रामगढके पश्चिम और नज्दीक ही मेवातमें

है राज्यमे सिर्फ़ यही तह्सील है, जो किसी गैर इलाकेसे नही मिली है इसका रक्बह ४९६ मील मुरब्बा और आबादी १५२००० आदमी है तह्सीलके मुतअल्लक ३ पर्गने और १४० गाव खालिसेके है पानी जमीनकी सत्हसे २० या ३५ फुटकी गहराई पर निकल आता है, और कई जगह ६० फुटपर निकलता है, जो सबसे जियादह गहराई मानी जाती है जमीन इस तह्सीलकी सेराब है, राजधानीका नाम अलवर रक्खे जानेके दो सबब है- अव्वल तो यह कि पहिले यह अलपुर याने मज्बूत शहर कहलाता था, और दूसरे, यह कि इसका नाम अरबल लफ्जके हुरूफ बदलनेसे बना है, जो उस पहाडी सिल्सिलेका नाम है, जिससे अलवरकी पहाडिया मिली हुई है शहर उसी पहाडी सिल्सिलेके दामनमे बसा है, और चोटीपर एक गढ मण महलके १००० फुट ऊचा बना हुआ है लोगो के जबानी बयानसे पाया जाता है, कि यह गढ और प्राचीन शहर, जिसके निशानात गढके नीचे पहाडियोमे दिखाई देते है, इस राज्यके कदीम मालिक निकुप राजपूतोने बनवाया था शहर अलवरके गिर्द पाच दर्वाजो सहित शहर पनाह और खाई बनी हुई है, और उसके अन्दर बाजारकी सडको व गलियोमे पत्थर जडे हुए है रावराजा विनयसिहका बनवाया हुआ महल, और साम्हनेकी तरफ बख्तावरसिहका जलाशय और छत्री, मद्रसह, बाजार, हॉस्पिटल बाजारमे जगन्नाथजीका मन्दिर उम्दह व देखनेके लायक मकानात है, परन्तु सबमे बढकर कारीगरी व खूबसूरतीमे बख्तावरसिहकी छत्री काबिल तारीफके है एक गुम्बजदार मकानमे, जो बाजारकी चारो सडकोके बीचमे त्रिपोलिया नामसे प्रसिद्ध है, फीरोजशाहके भाई तरग सुल्तानकी प्राचीन कब्र है सिवा इसके कई पुरानी मस्जिदे है, जिनपर लेख खुदे हुए है सबसे बडी मस्जिद महलके दर्वाजेके पास है, जिसके बननेका साल विक्रमी १६१९ [हि० ९६९ = ई० १५६२] लिखा है, उसमे अब राज्यका भडार है, अलावह इनके कई कब्रे नामी आदमियोकी और मस्जिदे वगैरह पुरानी इमारते मश्हूर है, मोती डूगरीका बाग और रेल्वे स्टेशनके पास थोडी दूरपर महल बडी रौनक और सैरका मकाम है

८- तह्सील बान्सूर- राज्यके मध्यमे अलवरकी तह्सीलके पास कुछ तो राठमे और कुछ वालमे ३३० मील मुरब्बा रक्बेके विस्तारसे पश्चिमी तरफ कोटपुतली तथा जयपुरके इलाकहसे मिलीहुई वाके है आबादी कुल तह्सीलकी ६७००० आदमी, आठ पर्गने, और १३६ गांव है जमीन इस तह्सीलमे सब तरहकी है, कही सबसे उम्दह और कहीं बिल्कुल खराब, पानीकी औसत गहराई २० से ३०

फुट तक और कही कही ७० फुट भी पाईजाती है कस्बह बान्सूर शहर अलवर से २० मील पश्चिमोत्तरमे है, सडकके रास्ते ३० मीलसे भी जियादह पडता है, कस्बेमे ६२० घर और २९३० आदमीकी आबादी है शहरके साम्हने चटानी पहाडीपर एक गढ बना हुआ है, और वहीं तह्सीलके लिये एक मकान बनाया गया है

९- तह्सील कठूबर- यह तह्सील राज्यकी दक्षिणी तह्सीलो मेसे सबसे अव्वल, कुछ तो नरूखडमे और कुछ कटेरमे वाके है, जिसके तीन तरफ भरतपुरकी जमीन है इसका रक्बह १२२ मील मुरब्बा और आबादी ३९००० आदमी है तह्सील मे तीन पर्गनोके मुतअल्लक ८१ गावोमेसे ६७ खालिसेके और १४ मुआफीके है जमीनका $\frac{2}{3}$ हिस्सह तो खराब और बाकी अच्छा है बाजरा, मोठ, ज्वार, रुई और जव यहाकी धरतीमे अच्छे निपजते है कठूबरके बाज बाज कुओमे पानी ७० और ८० फुटके दर्मियान गहराईपर मिलता है, लेकिन् आम जगहोमे ३० फुटके लग भग निकल आता है कस्बह कठूबर अलवरसे ३८ मील दक्षिण पूर्वमे ८२८ घर और ३१४९ मनुष्योकी बस्तीका पुराना कस्बह है

१०- तह्सील लक्ष्मण गढ- लक्ष्मणगढकी तह्सील कठूबरके पास नरूखडमे जयपुर और भरतपुरके राज्यसे मिली हुई है, रक्बह इसका २२१ मील मुरब्बा और बाशिन्दोकी तादाद ७०००० है तह्सीलमे सिर्फ एक पर्गनह और १०८ गाव है, जहा बाढ आती है, वह जमीन जियादह हल्की है, बाजरा, मोठ, ज्वार, जव, रुई और चना यहाकी खास पैदावार है कुओकी गहराई खासकर १९ से ३९ फुट तक, परन्तु तह्सीलमे ७० फुटकी गहराई मिलती है लक्ष्मणगढका कदीम नाम टवर था प्रतापसिंहने स्वरूपसिंहसे यह मकाम पाकर गढ़को बढाया, और उसका नाम लक्ष्मण गढ रक्खा

११- तह्सील राजगढ- दक्षिणी तह्सील राजगढका किसी कद्र हिस्सह नरूखडमे है, लेकिन् इसका पश्चिमी हिस्सह बडगूजर और राजावत देश था रियासत जयपुर इसकी दक्षिणी सीमाके किनारेपर है इसका रक्बह ३७३ मील मुरब्बा और आबादी ९८००० आदमीके करीब मानी गई है तह्सीलमे ७ पर्गने, १०८ गाव खालिसेके और ९९ गाव मुआफीके है यहाकी क़रीब करीब तमाम जमीन उपजाऊ है, जव, मोठ, बाजरा, रुई, ज्वार मुख्य पैदावार है राजगढके आसपासकी पहाडियोका पानी, जो भागुला बन्दमे रोका जाता है, उससे बहुतसी ज़मीन तथा आसपासके गावोको भी फ़ायदह पहुचता है.

कुओंमे पानी १० फुटमे लेकर ३५ फुटतक तो हर जगह मिलता, और कहीं कहीं ७५ फुटकी गहराईपर निकलता है राजगढमे बहुतसे उम्दह मकानात है, खास गढ और उसके महल, एक मन्दिर और दादूपन्थियोका मठ वगैरह जियादह मश्हूर है लक्ष्मणगढ और राजगढ, दोनो तह्सीलें नरूका राजपूतोके रहनेकी खास जगह कही जाती है पर्गने टहलामे पहाडीपर नीलकण्ठ का एक प्रसिद्ध प्राचीन स्थान है किसी जमानेमे इन पहाडियोकी ऊची जमीनपर एक बडा शहर मन्दिरो और मूर्तियोसे सुशोभित था कस्बह राजगढका पुराना नाम राजोडगढ था, जो टॉड साहिबके लेखके मुवाफिक कदीम जमानेमे बडगूजर राजाओकी प्राचीन राजधानी समझी जाती थी इस मकाममे चटानको काटकर बनाई हुई, आदमीकी मूर्ति और एक बडा गुम्बज़दार मन्दिर देखनेके लाइक अजायबातमेसे है

१२- तह्सील थानहगाजी- यह तह्सील राजगढके पास दक्षिण और पश्चिममे रियासत जयपुरसे जामिली है, रक्बह इसका २८७ मील मुरब्बा और आबादी ५५००० आदमी है तह्सीलके पाच पर्गनोमे १२१ गांव खालिसहके और २३ मुआफीके है, जमीन यहाकी बहुत उम्दह है मक्की, जव और मोठ कसरतसे निपजते है कुओंमे पानी ३० फुटसे नीचे गहराईपर निकल आता है, और अजबगढमे १५ फुटसे भी कम गहराईपर बलदेवगढ, प्रतापगढ और अजबगढमे आबादी अच्छी है, और कस्बोमे एक एक गढ बना हुआ है

मेले और देवस्थान- शहर अलवरमे गनगौर और श्रावणी तीजके प्रसिद्ध उत्सव, मार्च और ऑगस्टमे होते है आषाढमे जगन्नाथका उत्सव, साहिबजी (देवता) का मेला, जिनका स्थान शहरके पास तिजाराकी सडकपर है, होता है पर्गने डेहरामे शहरसे ८ मील पश्चिमोत्तरको फेब्रुअरी महीनेमे चूहर सिध (१) का मेला शिवरात्रिके दिन होता है बान्सूरमे हर साल मार्च और एप्रिलमे बिलाली माताका मेला लगता है राजगढमे रथयात्राका मेला आषाढमे, वैशाखमे अलवरसे ८ मील दूर सीलीसेढ नामकी झीलपर शीतला देवीका मेला, कुडल्क, थानह गाजीमे वैशाख और भाद्रपदमे भर्तृहरिका मेला, घसावली, (घासोली) किशनगढ़मे भाद्रपद महीनेमे साहिबजीका

---

(१) यह मेला एक मेव महापुरुषके नामपर होता है, जिसकी पैदाइश एक मेव और नाई कौमकी औरतसे औरंगजेबके वक्तमे होना बयान कीजाती है वह धनेता गांवमे पैदा हुआ, और महसूल वुसूल करने वालेके डरसे घर छोड़कर खेतोंकी रखवाली और मवेशीकी चराईपर अपना गुजर करता था इत्तिफाकसे उसको शाह मदार नामी एक मुसल्मान वली कहीं मिल गये, जिससे वह अजीब अजीब काम करने लगा आखिरको उसने वर्तमान धामकी जगह अपने रहनेका मक़ाम क़रार दिया

मेला, पालपुर, किशनगढमे माघ, वैशाख और ज्येष्ठमे हरसाल तीन मर्तबह शीतला देवीका मेला, दहमी, बहरोडमे चैत्र व आश्विनमे देवीका मेला, माचेडी, राजगढमे चैत्रमे देवीका मेला, वरवाडूगरी, बलदेवगढ, थानह गाजीमे वैशाखमे नारायणीका मेला, और शेरपुर, रामगटमे आश्विन, आषाढ व माघमे लालदासका मेला होता है ऊपर लिखे हुए मेलोमेसे बिलाली और चूहरसिधके मेले सबसे बडे है लोगोके जबानी बयानसे मालूम हुआ कि, पिछले दो मेलोमे अस्सी हजार आदमियोके करीब यात्री जमा होते है

सडके और रास्ते- रेलकी सडक, विक्रमी १९३२ भाद्रपद शुक्ल १२ [हि० १२९२ ता० ११ शअ्बान = ई० १८७५ ता० १४ सेप्टेम्बर] को दिल्लीसे अलवर तक राजपूतानह स्टेट रेलवेकी सडक खुली, और इसी सालके मृगशिर शुक्ल ६ [हि० ता० ५ जिल्काद = ई० ता० ६ डिसेम्बर] को वह दिल्लीसे बादीकुई होकर गुजरी यह सडक उत्तरसे दक्षिणको अलवर राज्यमे होकर इलाकेके दो हिस्से करती हुई गई है अजेरका, खैरथल, अलवर, मालाखेडा और राजगढ वगैरह इस राज्यमे कई रेलवेके स्टेशन हे, दो बडे बडे पुल सडकपर बने है, जिनमे एक तो अलवरसे ४ मील उत्तरमे और दूसरा किसी कद्र जियादह दक्षिणकी तरफ है कप्तान इम्पी पोलिटिकल एजेण्टकी कोशिश व मेजर स्ट्रॅटन और बॉयर्स साहिब एग्जिक्युटिव एन्जिनिअरके प्रबन्धसे यह रेलवे तय्यार हुई सिवा इस लाइनके राज्यमे बडे बडे २६ रास्ते तथा सडके गाडी, घोडा व पैदलके जाने आनेके लिये है, जिनमेसे कई एकको कप्तान इम्पी और सभाकी रायके मुवाफिक तय्यार किया गया है विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] मे मुल्की इन्तिजामके लिये एक सभा मुकर्रर होने बाद सडकोपर बहुत ध्यान दिया गया मेजर केडलने रेलके स्टेशनोको जानेवाली सडकोका प्रबन्ध किया, और नीचे लिखी हुई सडके तय्यार की - १- अलवरसे भरतपुरकी सर्हद तक, २- अलवरसे गुडगावा जिलेको, ३- अलवरसे कृष्णगढतक, ४- खैरथलसे तिजाराको, ५- तिजारासे फीरोजपुरकी तरफ, ६- लक्ष्मणगढसे मालाखेडाको, ७- मौजपुरसे राजगढ तक, ८- खैरथलसे हरसोरा, बहरोड, और बान्सूरको, और ९- मालाखेडासे गाजीके थानह तक ये ९ सडके ऊपर बयान किये हुए रास्तोके सिवा है

व्यापार और दस्तकारी- इस राज्यमेसे व्यापारके लिये नाज, रुई, चीनी, गुड, चावल, नमक, घी, कपडा और कई फुटकर चीजे बाहर जाती है; और यही चीजे बाहरसे यहा बिकनेके लिये आती है इनका सर्कारमे महसूल लिया जाता है लोहा और तावा पहिले इस राज्यमे बहुत निकाला जाता था, जिसमे

बहुतसे लोगोंका निर्वाह होता था, लेकिन् अब यह काम बन्द होगया है अलवरके पेचे, चीरेकी रंगत, उन्नाबी, सब्ज़ काही, वगैरह हर तरहके रंग तारीफके लायक हैं, और मछली मकामका बना हुआ तोड़ेदार व चापदार धमका मश्हूर है, तिजारेमें कागज बहुत बनाया जाता है, और एक तरहका घटिया कांच भी एक किस्मकी मिट्टीसे बनता है कारीगर यहांके होश्यार और चतुर हैं

अलवरका इतिहास

जयपुरके बाद हम नरूके राजपूतोंका इतिहास लिखते हैं, जो उनकी शाखमेंसे एक खानदान पिछले जमानेमें इस देशपर काबिज हुआ रियासतकी तरफसे हमको कोई तवारीख नहीं मिली, इसलिये यह हाल मेजर पी० डब्ल्यू० पाउलेट्के गजेटिअर व वकाये राजपूतानह अथवा पोलिटिकल एजेन्टोंकी रिपोर्टोंसे खुलासह करके लिखा गया है

ढूंढाड़के १४ वें राजा उदयकरणका हाल जयपुरकी तवारीखमें लिखा गया है, पाउलेट् साहिबने उनकी गादी नशीनीका संवत् विक्रमी १४२४ [हि० ७६८ = ई० १३६७] लिखा है, और जयपुरकी तवारीखसे विक्रमी १४२३ माघ कृष्ण २ [हि० ७६८ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १३६६ ता० २० डिसेम्बर] मालूम हुआ, लेकिन् ये दोनों संवत् काबिल एतिबार न समझकर इस विषयमें हमने अपनी राय जयपुरकी तवारीखमें जाहिर की है- देखो पृष्ठ १२७२)

मेजर पाउलेट् लिखते हैं, कि उदयकरणका बड़ा पुत्र बरसिंह था, जिसने अपने बापको एक बातकी जुरूरतपर दूसरी शादी करवाकर उस राणीसे, जो बेटा (नृसिंह) पैदा हुआ, उसके लिये राजगद्दी छोड़ी, और आप चौरासी गांव समेत मौजाबाद वगैरहकी जागीर लेकर छोटे भाईका ताबेदार बना १- बरसिंहके

२- महराज और उसका नरू हुआ, जिसका वंश कछवाहोंमें नरूका मश्हूर है ३- नरूके पांच पुत्र थे, १- लाल, जिसके लालावत नरूका अलवरके राव राजा वगैरह, २- दासा, जिसके दासावत नरूका उणियारा, लावा, लदूणा वगैरह, ३- तेजसिंह, जिसके तेजावत नरूका जयपुर तथा अलवरमें हादीहेडा वगैरह, ४- जैतसिंह, जिसके जैतावत नरूका, गोविन्दगढ वगैरह, ५- छीतर, जिसके छीतरोत नरूका अलवरके इलाके नैतला, केकडी वगैरहपर काबिज हैं

नरूका बडा पुत्र लालसिंह कम हिम्मतीके कारण छोटा बनकर बारह गावों सहित झाकका जागीरदार बना, और उससे छोटा दासा, जो बडा बहादुर था, अपने बापकी जगहपर काइम रहा ४- लालसिंह, कछवाहा वंशके सर्दार राजा भारमल्लका खैरख्वाह रहा, इस वास्ते राजाने उसको रावका खिताब और निशान दिया लालसिंहका बेटा उदयसिंह राजा भारमल्लकी हरावल फौजका अफ्सर गिना जाता था इसके एक पुत्र लाडखां (१) हुआ

५- लाडखां आंबेरके महाराजा मानसिंहके बडे सर्दारोंमें गिनाजाता था, और उसका बेटा फत्हसिंह था ६- फत्हसिंहके १- राव कल्याणसिंह, २- कर्णसिंह, जिसकी सन्तान अलवरमें राजगढके ग्राम बहालीपर काबिज है, ३- अक्षयसिंह, जिसकी नस्ल वाले राजगढके ग्राम नारायणपुरके मालिक हैं ४- रणछोडदासकी औलाद वाले जयपुर इलाकहके टीकेल ग्रामपर काबिज हैं

७- कल्याणसिंह, पहिला पुरुष था, जो, अलवरके इलाकहमें जमाव करने वाला हुआ, लेकिन् दासावत नरूके अलवरके देश नरूखण्डमें पहिलेसे आबाद थे, उनको आंबेरके महाराजा जयसिंह अव्वलने माचेडी गांव जागीरमें दिया, जो नरूखण्डकी सीमापर है, उसकी नौकरी कामांमें बोली गई, जो अब भरतपुरके राज्यमें है कल्याणसिंहके छ पुत्र थे, जिनमेंसे पांचकी सन्तान बाकी है १- आनन्दसिंह माचेडीपर, २- श्यामसिंह पारामें, ३- जोधसिंह पाईमें, ४- अमरसिंह खोरामें, ५- ईश्वरीसिंह पलवामें काबिज रहा इन पांचोंके पास कुल चौरासी घोडोंकी (२) जागीर थी

८- आनन्दसिंहके दो बेटे थे, बडा जोरावरसिंह, जो माचेडीका पांचवीं सर्दार बना, और दूसरा जालिमसिंह, जिसको बीजवाड मिला इस समय अलवरके क़रीबी

(१) लाडखांका खिताब बादशाह अक्बरका दिया हुआ था

(२) एक घोडेकी जागीरमें ४०० बीघाके अनुमान जमीन समझी जाती है

हकदारोंमें बीजवाड वाले अव्वल नम्बर हैं वकाये राजपूतानहमें पाउलेट् साहिबके लेखके खिलाफ़ और सिवाय इस तरहपर लिखा है -

" कि कल्याणसिंह विक्रमी १७२८ आश्विन कृष्ण २ [हि० १०८२ ता० १६ जमादि-युलअव्वल = ई० १६७१ ता २० सेप्टेम्बर] को माचेडीमें आया, और उसका बेटा ९- राव उग्रसिंह (१) था, जिसके १०- तेजसिंह, उनके ११- जोरावरसिंह, उनके १२- मुहब्बत-सिंह, उनके १३- प्रतापसिंह, जिनका जन्म विक्रमी १७९७ ज्येष्ठ कृष्ण ३ [हि० ११५३ ता० १७ सफ़र = ई० १७४० ता० १३ मई] को हुआ था

१- राव राजा प्रतापसिंह
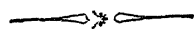
इनकी जागीरमें ढाई गांव, माचेडी, राजगढ और आधा रामपुर, राज्य जयपुरकी तरफ़से थे, लेकिन् इस शख़्सने बडी तरक्की करके एक रियासत बनाली पहिले इन्होंने अपने मालिक जयपुरके महाराजा माधवसिंहकी नौकरीमें नाम पाया जब कि किला रणथम्भोर बादशाही मुलाजिमोंने मरहटोंसे तंग आकर जयपुरके सुपुर्द करदिया, उस समय बहादुरी और हिक्मत अमलीमें प्रतापसिंह अव्वल नम्बर रहे, लेकिन् इनकी तरक्कीसे दूसरे लोगोंके दिलोंपर खौफ़ छा जानेके सबब उन लोगोंने विक्रमी १८२२ [हि० ११७९ = ई० १७६५] में ज्योतिषी वगैरह लोगोंसे महाराजा माधवसिंहको कहलाया, कि प्रतापसिंहकी आंखोंमें राज्य चिन्ह दिखाई देता है इस बातसे महाराजा नाराज रहने लगे, और प्रतापसिंहको जानका खतरा हुआ, बल्कि एक दफ़ा शिकारमें महाराजाकी तरफ़से उनपर बन्दूक भी चली, जिसकी गोली उनके बदनसे रगडती हुई निकल गई इस डरसे वे अपनी जागीर माचेडीको चले गये, और वहांसे भरतपुरके राजा सूरजमल्ल जाटके पास पहुंचकर उसके नौकर बनगये फिर सूरजमल्लके बेटे जवाहिरसिंहने पुष्करकी तरफ़ कूच किया, तो उसका इरादह जयपुरके बख़िलाफ़ जानकर प्रतापसिंह अलहदह होगये

जिस वक्त मौजे डेहरासे प्रतापसिंह रवानह होनेवाले थे, उस वक्त एक लौंडीको बर्तन मांझनेके वक्त मिट्टी खोदते हुए अशरफ़ी व बहुतसा रुपया वगैरह धन गडा

---

(१) शायद पाउलेट् साहिबने उग्रसिंहका आनन्दसिंह लिखदिया है, अथवा ज्वालासहायने आनन्दसिंहको उग्रसिंह लिखदिया.

हुआ मिला, जिसको राव राजाने ऊंटोंपर लदवाकर जयपुरकी तरफ कूच किया वहां पहुंचकर महाराजा माधवसिंहसे जवाहिरसिंहके पुष्कर स्नानको आने और अपने खैरख्वाहीकी नज़रसे हाज़िर होजानेकी अर्ज़ की इसपर महाराजा बहुत खुश हुए, और शाबाशी दी लौटते समय जवाहिरसिंहसे जयपुरकी फ़ौजका मावंडा मकामपर विक्रमी १८२३ [हि० ११८० = ई० १७६६] में मुकाबलह हुआ, तब प्रतापसिंहने जवाहिरसिंहपर हमलह किया इस बातसे उसकी जयपुरसे दुश्मनी जाती रही, बल्कि महाराजा माधवसिंहने राव राजाका ख़िताब और माचेड़ीके सिवाय राजगढमें किला बनानेकी इजाज़त दी इसके बाद प्रतापसिंहने खुद मुख़्तार होनेकी कार्रवाई की, और विक्रमी १८२७ [हि० ११८४ = ई० १७७०] में टहला और राजपुरमें गढ बनवाये विक्रमी १८२८ [हि० ११८५ = ई० १७७१] में राजगढका किला पूरा करके कस्बह आबाद किया, और देवती झीलमें जलमहल बनवाकर पालके नीचे बाग लगाया विक्रमी १८२९ [हि० ११८६ = ई० १७७२] में मालाखेड़ाका किला तय्यार करवाया विक्रमी १८३० [हि० ११८७ = ई० १७७३] में बलदेवगढ, और इन्हीं दिनोंमें सेथल, मेड, बैराट, आबेला, भाभरा, तालाधौला, डब्बी, हरदेवगढ, सिकराय और बावडीखेडा गांव भी राव राजाके कब्ज़हमें आगये थे, मगर कुछ अरसह बाद राज जयपुरके शामिल होगये

विक्रमी १८३१ [हि० ११८८ = ई० १७७४] में नव्वाब मिर्ज़ा नजफ़ख़ांके साथ रहकर भरतपुरकी फ़ौजसे आगरा खाली कराया इस खैरख्वाहीके एवज़ उक्त नव्वाबकी सिफ़ारिशसे बादशाह शाहआलमने प्रतापसिंहको राव राजाका ख़िताब, पांच हज़ारी मन्सब, माचेड़ीकी जागीर व माही मरातिब दिया, और माचेड़ी हमेशहके लिये राज्य जयपुरसे अलहदह होगई विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में प्रतापगढका किला बनवाया

इसी समयके लग भग काकवाड़ी, गाजीका थानह, और अजबगढके किले बने, जो अलवरसे नैर्ऋत्य कोणमें वाके हैं, और कुछ अरसह बाद उसने सीकरके रावसे मेल करके उस तरफ़ अपना राज्य बढाया फिर उसने विक्रमी १८३२ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० ११८९ ता० २ शव्वाल = ई० १७७५ ता० २५ नोवेम्बर] को अलवरका किला भरतपुर वालोंसे लेलिया इसी सालसे प्रतापसिंहको उनके भाइयोंने भी अपना मालिक माना, और ज़ियादहतर उस वक्तसे, जब कि उसने लक्ष्मणगढ (पहिले टॉडगढ) के मालिक स्वरूपसिंहको दगासे पकडकर मरवाडाला, नरूखंडमें उसका रोब खूब जम गया

विक्रमी १८३६ [हि० ११९३ = ई० १७७९] के लगभग उसने नजफ़खां, बादशाही मुलाज़िमके पंजेसे निकलकर लक्ष्मणगढका आसरा लिया विक्रमी १८३९ [हि० ११९६ = ई० १७८२] मे रावल नाथावत व दौलतराम हलदियाकी सलाहसे, जो पहिले राव प्रतापसिंहका नौकर था, और नाराज़ होकर जयपुर चलागया था, राजगढपर जयपुरके महाराजा सवाई प्रतापसिंहने चढाई की, और बस्वामे पहुचकर ठहरे महाराव राजा प्रतापसिंह पाच सौ सवार लेकर रातके वक्त महाराजाके लश्करमे पहुचे, खौफ़ या गफ़लतके सबब लश्कर वालोमेसे किसीने उनको नही रोका उन्होने जातेही अव्वल महाराजाके खेमेके दर्वाजेपर जो एक पखालका भैसा खडा था, उसे मारा, वहासे नाथावत ठाकुरोके डेरेपर जाकर कई आदमी कत्ल किये, और राजगढकी तरफ़ लौटे लौटते वक्त जयपुरके लश्करवालोने उनका पीछा किया; रास्तेमे बडी भारी लडाई हुई, दोनो तरफ़के सैकडो आदमी मारेगये राव राजाकी तरफ़ वालोमेसे सावन्तसिंह नरूका, जिसकी शक्ल कुछ कुछ महाराव राजाकी सूरतसे मिलती हुई थी, मर्दानगीके साथ लडकर काम आया, जयपुरके लोग उसकी लाशको महाराव राजाकी लाश खयाल करके महाराजा प्रतापसिंहके रूबरू लेगये, जिसको देखकर महाराजा बहुत खुश हुए, और उस लाशको ताजीमके साथ दाग दिलवाया, लेकिन् जब मालूम हुआ, कि महाराव राजा जिन्दह है, महाराजाको बडी शर्मिन्दगी पैदा हुई, और राजगढपर फौज कशी करनेका हुक्म दिया, मगर खुशालीराम बोहराने, जो पहिले महाराव राजा प्रतापसिंहके पास नौकर था, और इस वक्त भी उनका दिलसे खैरख्वाह था, महाराजाको लडाई करनेसे रोका आपसमे सुलह होकर फौज जयपुरको वापस गई, मगर इस अरसहमे जयपुर वालोने पिरागपुरा व पावटा वगैरह गावोपर कब्ज़ह करलिया, और खुशालीराम बोहरापर सख्ती की तब महाराव राजाने जयपुरके सर्दारोसे मिलावट करके यह तज्वीज की, कि महाराजा प्रतापसिंहको गद्दीसे खारिज करके उनकी जगह दूसरा रईस मुकर्रर करदिया जावे इस गरजसे वह महाराजा सेंधियाकी फौजको जयपुरपर लेगये, और कृष्णगढ डूगरी मकामपर डेरा किया महाराजा जयपुरने पोशीदह तौरपर सुलह करनेकी महाराव राजासे दर्ख्वास्त की, जिसे महाराव राजाने चन्द शर्तोपर मंजूर किया, और महाराजा सेंधियाकी फ़ौजको रवानह करने बाद जिस शख्सको जयपुरकी गद्दीपर बिठाना तज्वीज किया था, उसे महाराजा सेंधियासे इलाकह मान्ट और महाबनकी सनद दिलाकर अपनी रियासतको वापस आये

महाराव राजा प्रतापसिंहके मुसाहिब होश्दारखां, नबीबख्शखां, और इलाही-

बख्शखा शैखोने बहुत बड़े बडे काम अंजाम दिये एक पुरानी तवारीखमे लिखा है, कि उक्त महाराव राजाने हमेशह जबर्दस्त और ताकतवर फरीकके शामिल रहकर अपनी कुव्वत और मर्तबेको हर तरह काइम रक्खा विक्रमी १८४७ पौष कृष्ण ५ [हि० १२०५ ता० १९ रबीउस्सानी = ई० १७९० ता० २६ डिसेम्बर] को १५ (१) वर्ष राज्य करने बाद राव राजा प्रतापसिंहका इन्तिकाल होगया यह महाराव राजा बडे बहादुर सिपाही थे उनके कोई लडका न था, परन्तु अपने जीवनमे उन्होने थानहकी कोटडीसे बख्तावरसिंहको वलीअह्द बनालिया था प्रतापसिंहके मरनेके समय छ या सात लाख रुपया सालानह आमदनीके नीचे लिखे हुए जिले उनके कब्जहमे थे -

अलवर, मालाखेडा, राजगढ, राजपुर, लक्ष्मणगढ, गोविन्दगढ, पीपलखेडा, रामगढ बहादुरपुर, डेहरा, जीदोली, हरसोरा, बहरोड, बर्डोद, बान्सूर, रामपुर, हाजीपुर, हमीरपुर, नरायणपुर, गढी मामूर, गाज़ीका थानह, प्रतापगढ, अजबगढ, बलदेवगढ, टहला, खूटेता, ततारपुर, सेथल, गुढा, दुब्बी, सिकरा, बावडी खेडा

२- महाराव राजा बख्तावरसिंह

यह विक्रमी १८४७ [हि० १२०५ = ई० १७९०] मे १५ वर्ष उम्रके होकर गद्दीपर बैठे प्रतापसिंहके पुराने दीवान रामसेवकने मरहटोको राजगढ पर बुलाया, और माजी गौडजीसे नाइत्तिफाकी करादी, इस कुसूरपर महाराव राजाने उस काम्दारको धोखेसे अलवरमे बुलाकर राजगढमे कैद रखने बाद मरवा डाला, और मरहटोकी फौज वापस चली गई जब विक्रमी १८५० [हि० १२०७ = ई० १७९३] मे बख्तावरसिंह मारवाडमे कुचामनके ठाकुरकी बेटीसे शादी करनेको गये, और लौटकर जयपुर आये, तो महाराजाने उसको नजर कैद रक्खा, उससे सेथल, गुढा, दुब्बी, सिकरा, और बावडी खेडा लेकर छोड दिया, और उसने बावल, काटी, फीरोजपुर और कोटपुतलीपर कब्जह करलिया विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १८००] मे खानजादह जुल्फिकारखाको घसावलीसे निकालकर उसके पास गोविन्दगढ आबाद किया और मरहटोके गद्रके वक्त अपने वकील अहमदबख्शखाको भेजकर गवर्मेण्ट अंग्रेजीकी सहायता ली, जब कि लॉर्ड लेकने लसवाडीको विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] मे फत्ह किया उसको अलवरसे फौज और सलाहकी अच्छी मदद मिली, इस खिद्मतके एवज राठका जिला सर्कार अंग्रेजीसे बख्तावरसिंहको इन्आममे मिला, और

(१) इसका राजा होना उस दिनसे माना गया है, जबसे बादशाह शाह आलमने राव राजाका खिताब दिया

अहमदबरूशको फ़ीरोज़पुरका ज़िला बख़्शा गया. अलवरके राव राजाने अपने वकीलको इस इन्आममें लुहारुकी जागीर दी, जो उनकी औलादके कब्ज़ेमें है, और इसी तरह लॉर्ड लेकने बएवज़ उम्दह ख़िद्मतोंके पर्गनह फ़ीरोज़पुर दिया था, जो एक मुद्दत तक उसके कब्ज़हमें रहा, परन्तु उसके बेटे नव्वाब शम्सुद्दीनखांकी मस्नदनशीनीके ज़मानेमें, मिस्टर विलिअम फ्रेज़र साहिब कमिश्नर व रेज़िडेएट दिल्लीको कत्ल करनेका जुर्म साबित होनेपर नव्वाबको फांसी दीगई, और पर्गनह फ़ीरोज़पुर सर्कारमें ज़ब्त होकर ज़िले गुड़गांवामें शामिल किया गया. अब ये दोनों जागीरें अलवरसे जुदी हैं. फिर सर्कारने बरतावरसिंहको हरियानाके ज़िलों दादरी व बधवाना वगैरहके एवज़ कठूबर, सूखर, तिजारा और टपूकड़ा देदिया.

बख़्तावरसिंहने विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में दुब्बी और सकराका ज़िला जयपुरसे छीनलिया, लेकिन् अह्दनामहके बर्ख़िलाफ़ जानकर गवर्मेएटने पीछा दिलानेको कहा, तब बख़्तावरसिंहने इन्कार किया, इसपर जेनरल मार्शलकी सिपहसालारीमें उसपर सर्कारी फ़ौज भेजी गई. महाराव राजाने तीन लाख रुपया फ़ौज ख़र्च देकर हुक्मकी तामील की. इस फ़ौज ख़र्चके एवज़में उन्होंने अपनी रिआयापर नया मह्सूल जारी करके छ लाख रुपया वुसूल किया था. आख़िरमें राव राजाको मज़्हबी जुनून व तअस्सुब होगया था, जिससे उन्होंने मुसल्मान फ़क़ीरोंके नाक कान कटवाकर एक टोकरेमें भरे, और फ़ीरोज़पुरमें नव्वाब अहमदबरूशके पास भेज दिये. कब्रोंको खुदवाकर मुसल्मानोंकी हड्डियां अपने इलाकहसे बाहर फिकवा दीं, और मस्जिदोंको गिरवाकर उनकी जगह मन्दिर बनवाये. यह बात सुनकर दिल्लीके मुसल्मानोंको बड़ा जोश पैदा हुआ, तब रेज़िडेएटने उनको समझाया, और राव राजाको ऐसा जुल्म करनेसे रोका (१).

विक्रमी १८७१ माघ शुक्ल २ [हि० १२३० ता० १ रबीउलअव्वल = ई० १८१५ ता० ११ फेब्रुअरी] को रावराजा बख़्तावरसिंह ऊपर लिखी हुई बीमारीकी हालतमेंही

---

(१) इस बारेमें एक ऐसा क़िस्सह मश्हूर है, कि रावराजा बख़्तावरसिंहने एक मुसल्मान करामाती फ़क़ीरको अपने शहरसे निकलवा दिया, उसकी बद दुआसे रावराजा पेटमें दर्द होनेके सबब मरनेके क़रीब होगये, तब उन्होंने कहा, कि हमारे कोई देवता ऐसे नहीं हैं, जो मुसल्मानोंकी बद-दुआको रद्द करें, उस समय उनके बारहट चारणने कहा, कि करणी देवीका ध्यान कीजिये, जिनके साम्हने मुसल्मान औलियाओंकी करामातकी कुछ हक़ीक़त नहीं है. इसी तरह किया गया, जिससे फ़ौरन् दर्द जाता रहा. तब रावराजाने ऊपर लिखी हुई सख़्तियां मुसल्मानोंपर कीं, और अलवरमें करणी माताका मन्दिर बनवाया.

इन्तिक़ाल करगये, और मूसी रंडी उनके साथ सती हुई उनके कोई असील औलाद न थी, इस लिये गद्दी नशीनीके बारेमें बड़ी बहस हुई, और सर्कार अंग्रेज़ीमें यह सवाल पेश हुआ, कि लॉर्ड लेकका बख़्शा हुआ नया इलाक़ह वापस लेलिया जावे या नहीं आख़िरको बख़्शा हुआ मुल्क वापस लेना मुनासिब न समझाजाकर बदस्तूर बहाल रक्खा गया

३ - महाराव राजा विनयसिंह (बनेसिंह)

बख़्तावरसिंहके दो औलाद, एक लड़की चांदबाई, जिसकी शादी ततारपुरके ठाकुर कान्हसिंहके साथ हुई थी, और एक लड़का बलवन्तसिंह, मूसी खवाससे थे महाराव राजाने अपने भाईके लड़के विनयसिंह थानावालेको सात सालकी उम्रसे अपने पास रक्खा था अगर्चि काइदेके मुवाफ़िक़ वह गोद नहीं लिया गया, लेकिन् सर्दार लोग उनको गोद लिया हुआ ही समझते थे, और शायद रावराजाके दिलमें भी ऐसा ही था, चुनांचि जब मस्नदनशीनीकी बाबत बहस हुई, कि गद्दीपर कौन बिठाया जावे, तो हमक़ौम ठाकुरों व राव हरनारायण हल्दिया व दीवान नौनिद्धरामने बलवन्तसिंहको गद्दी बिठाना नाजाइज़ समझकर विनयसिंहको राजा बनाना चाहा, लेकिन् मुसल्मान व चेले तथा शालिगराम, नव्वाब अहमदबख़्शख़ांकी तरफ़ रहकर राजपूतोंसे मुत्तफ़िक़ न हुए, और बलवन्तसिंहकी तरफ़दारी करने लगे, कि बलवन्तसिंह, जिसकी उम्र छ वर्षकी थी, बख़्तावरसिंहकी पासबानका बेटा होनेके सबब विनयसिंहका हिस्सहदार है आख़िरकार बाकावत अक्षयसिंह व रामू चेला वगैरहने, जिन्होंने विनयसिंहके बारेमें इस वक़्त बहुत कोशिश की थी, विक्रमी १८७१ माघ शुक्ल ३ [हि० १२३० ता० २ रबीउलअव्वल = ई० १८१५ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को विनयसिंहको गद्दीपर बिठा दिया, तक़ार दूर होनेकी गरज़से विनयसिंहकी गद्दीपर बाईं तरफ़ बलवन्तसिंह भी बिठाया गया, और यह करार पाया, कि दोनों राम व लक्ष्मणकी तरह माने जावें जब रामू खवास, ठाकुर अक्षयसिंह व दीवान शालिगरामने दिल्ली पहुंचकर मेट्कॉफ़ साहिब रेज़िडेएटसे मस्नद-नशीनीके दो ख़िल्अ़त बराबर मिलनेकी दर्ख़्वास्त की, तो रेज़िडेएटने एक गद्दीपर दो रईस काइम होना ख़िलाफ़ दस्तूर व फ़सादकी बुन्याद समझकर इन लोगोंको समझाया, और कहा, कि विनयसिंह महाराव राजा करार दिया जाकर गद्दीपर बिठाया जावे, और बलवन्तसिंह कुल कामका मुख़्तार होकर इन्तिज़ाम रियासतका करे, लेकिन् इन लोगोंने बयान किया, कि विनयसिंह व बलवन्तसिंह दोनों मुत्तफ़िक़ राय रहकर राज करेंगे, और इनके आपसमें कभी तक़ार न होगी इस तरहकी बहुतसी बातें कहनेपर उक्त

साहिबने सद्रको दर्ख्वास्त करके दो खिल्अत बराबरीके मगवा दिये, और नव्वाब अहमदबख्शखा, रामू खवास व ठाकुर अक्षयसिहकी दर्ख्वास्तपर गवर्मेंएटकी मन्जूरी से बन्दोबस्त रियासतके वास्ते नव्वाब अहमदबख्श वकील ब खिद्मत सर्कार अंग्रेजी, ठाकुर अक्षयसिह मुसाहिब राज, दीवान नोनिद्धराम व शालिगराम फौजबख्शी, दीवान बालमुकुन्द रियासतका प्रधान, और ठाकुर शम्भूसिह तवर अलवरका किलेदार मुकर्रर किया गया विक्रमी १८७३ माघ शुक्ल १३ [हि० १२३२ ता० १२ रबीउल अव्वल = ई० १८१७ ता० ३० जैन्युअरी] को नव्वाब अहमदबख्शखाने पर्गनह तिजारा व टपूकडाका ठेका लिया

विक्रमी १८८१ [हि० १२३९ = ई० १८२४] तक तो अह्लकारोने हर तरह खराबीकी हालतमे राज्यका काम चलाया, लेकिन् जब दोनो राजा होश्यार हुए, और जवानीके जोशने हर एकके दिलोमे अपनी ही खुद मुख्तारी व हुकूमत रखनेका इरादह पैदा किया, तो आपसमे जियादह रजिश जाहिर होने लगी, और शुरू रजिशकी बुन्याद यह हुई, कि जेनरल अक्टरलोनी साहिब रेजिडेएटने एक जोडी पिस्तोल और एक पेशकब्ज बतौर तुहफेके अलवर भेजे थे, जिनमेसे रावराजा विनयसिहने पिस्तौल और पेशकब्ज लेलिये, और बलवन्तसिहको सिर्फ पिस्तौल ही मिला आखिरकार रियासती लोगोमे दो फिर्के होगये, नव्वाब अहमदबख्श वगैरह, जो शुरूसे बलवन्तसिहकी मदद करते थे, उसके तरफदार बनगये, और मल्ला, खुशाल व जहाज चेले तथा नन्दराम दीवान, रावराजा विनयसिहका पक्ष करने लगे, इन लोगोने साजिशके साथ एक मेवको कुछ नक्द व गाव इन्आम देनेका लालच देकर नव्वाब अहमदबख्शखाको मारडालनेके लिये उभारा, जिसने आठ माह तक दाव घातमे लगे रहने बाद विक्रमी १८८० वैशाख कृष्ण ६ [हि० १२३८ ता० २० शअ्बान = ई० १८२३ ता० २ एप्रिल] को दिल्लीमे मौका पाकर रातके वक्त खेमेके अन्दर नीदकी हालत मे नव्वाबको तलवारसे जख्मी किया, जब कि वह दिल्लीमे रेजिडेएटका मिहमान था, लेकिन् नव्वाबको कुछ अरसे बाद आराम होगया, और इस बातका भेद खुल गया, कि अलवरके लोगोकी साजिशसे यह वारिदात हुई बलवन्तसिहने मेवको गिरिफ्तार करलिया, मल्ला व खुशाल, जहाज और नन्दराम दीवान कैद किये गये

रामू खवास और अहमद बख्शने दिल्ली जाकर सर डेविड अक्टरलोनीके पास अपना अपना पक्ष निबाहनेकी कोशिश की, लेकिन् रामूने मुन्शी करमअहमदकी मारिफत अपना रुसूख (पक्ष) जेनरल अक्टरलोनीके पास जियादह बढा लिया, जेनरल साहिब भी उसकी बातपर तवज्जुह करने लगे इसने रफ्तह रफ्तह मुकद्दमेकी सूरत निकाली, और बलवन्तसिह

के तरफ़दारों याने रियासतमें फ़साद पैदा करनेवाले चन्द लोगोंको तबीह करनेकी इजाजत उक्त जेनरलसे लेकर राव राजा विनयसिंहके तरफ़दारोंको अलवर लिख भेजा, कि सिवाय बलवन्तसिंहके कुल मुफ़्सिदोंको मारडालो. यह खत पहुंचनेपर विक्रमी १८८० श्रावण शुक्ल १० [हि० १२३८ ता० ९ ज़िल्हिज = ई० १८२३ ता० १८ जुलाई] को राजपूतोंने जमा होकर शहरके दर्वाजोंका बन्दोबस्त करने बाद महलपर हमलह किया, राव राजा विनयसिंहको अक्षयसिंहकी हवेलीमें लेआये, आधी रातसे पहर दिन चढ़े तक लड़ाई रही, जिसमें बलवन्तसिंहकी तरफ़के दस आदमी मारे गये, बाकी लोगोंने हथियार छोड़कर राव राजाकी इताअत कुबूल की. पहर दिन चढ़े बलवन्तसिंह गिरिफ्तार होकर एक हवेलीमें शहरके अन्दर नज़रबन्द किये गये, और दो वर्ष कैद रहे. बलवन्तसिंहके साथी ठाकुर बलीजी, कप्तान फास्ट व टामी साहिब भी कैद हुए, और बाकावत अक्षयसिंहकी मददसे राव राजाने फ़त्ह पाई.

जेनरल अक्टरलोनी व नव्वाब अह्मदबख़्शकी रिपोर्टें इस लड़ाईकी बाबत पहुंचनेपर गवर्मेंएटसे उनके जवाबमें यह हुक्म हुआ कि, नव्वाबकी सलाहके मुवाफ़िक अमल किया जाकर राजीनामह लियाजावे, लेकिन् उन दिनों कलकत्तेकी तरफ़ किसी फ़सादके सबब सर्कारी फ़ौज भेजी जाती थी, इस वजहसे अलवरके मुआमलेमें कार्रवाई न होसकी. जेनरल अक्टरलोनीने पहिले यह चाहा था, कि बलवन्तसिंहको पन्द्रह हजार रुपया सालानह वज़ीफ़ह अलवरकी तरफ़से करादिया जावे, परन्तु विनयसिंहने इसको नामन्ज़ूर किया. कुछ अर्सेसे बाद जेनरल साहिब जयपुरको गये, नव्वाब व रामू भी साथ थे, रामूने रास्तेमें रुख्सत लेकर अलवरको आते हुए मल्ला, खुशाल, जहाज, व नन्दरामकी रिहाईकी खबर सुनी, और घबराया, लेकिन् अलवर पहुंचकर उनको बदस्तूर कैद करदिया. जेनरल साहिबने अलवर आते हुए राहमें मुज्रिमोंको रिहा करदेना सुनकर बहुत नाराजगी जाहिर की, रामू व ठाकुर अक्षयसिंह पेश्वाईके लिये गये, लेकिन् जेनरलने रामूपर खफ़ा होकर अलवर जाना मौकूफ़ रक्खा, और रामूसे कहा, कि या तो मुज्रिमों और उन्हें रिहा करने वालोंको हमारे सुपुर्द करो, और आधा मुल्क व माल बलवन्तसिंहको देदो, या लड़ाईपर मुस्तइद हो, परन्तु राव राजाने इस बातको टालदिया. फिर दोबारह फ़ीरोजपुरसे जेनरलने सख्त ताकीद लिखी, उसकी भी तामील न हुई. तब गवर्मेंएटकी मन्ज़ूरीसे भरतपुरकी लड़ाई खत्म होने बाद लॉर्ड कम्बरमेअरकी मातह्तीमें एक अंग्रेजी फ़ौज अलवरकी तरफ़ रवानह हुई. उस वक्त विनयसिंहने बलवन्तसिंहको माल अस्बाब सहित रेजिडेएटके पास भेज दिया, और उनको दो लाख आमदनीकी जागीर व दो लाख सालानह नक्द देना करार पाया. बलवन्तसिंह तिजारामें

रहने लगे विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = ई० १८२६] से विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] तक बीस साल तिजारेकी हुकूमत करने बाद उनके बग़ैर औलाद मरजानेपर उनके तहतका इलाकह मए बहुतसे जर जेवरके अलवरमे शामिल हुआ

महाराव राजा विनयसिंह अगर्चि अकेले खुद मुख्तार राज करते रहे, लेकिन् सर्कार अंग्रेजीसे नारसाई ही रही, नव्वाब अहमदबख्शको मारनेका इरादह रखने वालोंको बजाय सजा देनेके बडे दरजोंपर मुकर्रर करना और विक्रमी १८८८ [हि० १२४६ = ई० १८३१] मे जयपुर वालोंसे मातहत रईसोंकी तरह मातमपुर्सीका खिल्अत लेने वगैरहकी बाबत खत किताबत करना, सर्कारको बुरा मालूम हुआ, और ऐसी ही बातोंपर चन्द मर्तबह फौज वगैरहसे धमकी दीगई उस वक्त राजमे बदइन्तिजामी थी, और अहलकार वगैरह अपना मन माना करते थे, गारतगर लोग सर्कश होरहे थे, जिनको उक्त रावराजाने सजा देकर सीधा किया उन्होंने मेव लोगोंको, जो सबसे जियादह लुटेरे व बदमआश थे, मवेशी वगैरह छीन लेने व गांव जलादेने और सख्त सजा देनेसे ताबेदार बनाने बाद कोलानी गांवमे विक्रमी १८८३ [हि० १२४१ = ई० १८२६] मे किला बनवाकर उसका नाम रघुनाथगढ रक्खा, और विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] मे किला बजरंगगढ बनवाया इसी अरसेमे मल्ला चेलेको, जो राजमे बहुत ही दखल रखता था, मौका पाकर बेदख्ल किया दीवान जगन्नाथ व बैजनाथके वक्तमे राज जेरबारी व तंगीकी हालतमे रहा, इसपर विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ ई० १८३८] मे मुन्शी अम्मूजान, सरिश्तहदार कमिश्नरी व रेजिडेण्टीको दिल्लीसे बुलाकर अपना दीवान बनाया, और मिर्जा इस्फिन्दयारबेगको नाइब दीवान मुकर्रर किया अम्मूजानने अव्वल साह दुलीचन्द साहूकार व फोतेदार राज्यके दबावसे रियासत और रिआयाको निकाला, जिसने राज्यकी तरफ बहुतसा रुपया बेजा तरीकोंसे बाकी निकाल रखनेके सिवा जमींदार रिआयाको भी अपना कर्जदार बना रक्खा था, और बहुतसा रुपया, जेवर और माल व अस्बाब उसके जिम्मेकी बाकियातके एवज राज्यके खजानहमे दाखिल कराकर उसे बेदख्ल किया, पर्गनोंमे अपनी तरफसे तहसीलदार मुकर्रर किये कुछ अरसे बाद राज्यकी जेरबारी दूर होकर उम्दगीसे काम चलने लगा, कई साल तक अम्मूजान व इस्फिन्दयारबेगने इत्तिफाकके साथ महकमह माल व अदालते वगैरह काइम करके नमक हलाली व दियानतदारीसे काम किया, लेकिन् इसके बाद अम्मूजानने रियासतके मालमे चोरी करना और रिश्वत लेना शुरू करदिया, जिसके लिये इस्फिन्दयारबेगने, जो बडा ईमान्दार था, उसे मना किया, और कई तरह समझाया, अम्मूजानने

इस्फिन्दयारबेगकी नसीहतोंसे नाराज होकर उसकी जगह अपने भाई फ़ज़्लुल्लाहख़ांको बुला लिया, और रियासती कारोबार उसकी निगरानीमें करके आप रावराजाके पास हाज़िर रहने लगा थोड़े दिनों पीछे तीसरा भाई इनआमुल्लाहख़ां राज्यकी सिपहसालारीपर मुक़र्रर हुआ अगर्चि ये तीनों भाई मुल्की व माली कामोंमें होश्यार व चालाक थे, लेकिन् लालची व बदचलन ज़ियादह थे गरज़ कि इन लोगोंने कई लाइक़ आदमियों व चन्द सर्कारी अहल्कारों, गुलामअलीख़ां, सलीमुद्दीन, मीरमहदीअली, सुल्तानसिंह, बहादुरसिंह व गोविन्दसिंहके इत्तिफ़ाक़से रियासतका इन्तिज़ाम अच्छा किया, और बहुतसा रुपया भी पैदा किया. आख़िरको मिर्ज़ा इस्फिन्दयारबेगने, जो अम्मूजानके साथ ज़ाहिरा दोस्ती और दिलसे दुश्मनी रखता था, विक्रमी १९०८ [हि० १२६७ = ई० १८५१] में बहरोड़के तह्सीलदार कायस्थ रामलाल व सीताराम की मारिफ़त अम्मूजानके गब्न व रिश्वत लेनेकी बाबत राव राजाको अच्छी तरह पूरा हाल रौशन कराकर, तीनों भाइयोंको मए उनके वसीलहदारोंके क़ैद करादिया, जिन्होंने सात लाख रुपया दण्ड देकर रिहाई पाई दीवानका उह्दह इस्फिन्दयार बेगको मिला, दो सालतक उसने काम दियानतदारीसे किया, लेकिन् अपने मातह्तों पर ज़ियादह बेएतिबारी रखनेके सबब उससे काम न चलसका, तब राव राजाने मिर्ज़ा इस्फिन्दयारबेगको तो दीवान हुज़ूरी रक्खा, और अम्मूजान व दीवान बालमुकुन्द को आधे आधे इलाक़हके सरिश्तह मालका काम सुपुर्द किया इसी ज़मानेमें मम्मन नामी एक चाबुक सवार राव राजाके ज़ियादह मुंह लगगया, और सौदागरों व रिआयाको जुल्मसे बहुत तक्लीफ़ पहुंचाने लगा, सिवा इसके मिर्ज़ा इस्फिन्दयारबेगसे भी दुश्मनी रखता था

विक्रमी १९१३ [हि० १२७२ = ई० १८५६] तक इस तरह रियासतका काम चलता रहा, पिछले पांच सालमें राव राजाको फ़ालिजकी बीमारीने राजके काम काज संभालनेसे लाचार करदिया इन दिनों मिर्ज़ा व दीवान बालमुकुन्द अकेले काम करते थे, और अम्मूजानके साथ एक बड़ा गिरोह था, उसने महाराव राजाकी बीमारीमें रफ़्तह रफ़्तह अपने इख़्तियार बढ़ाकर आख़िरको कुल मुख़्तारी हासिल की

यह राव राजा अगर्चि ख़ुद आलिम नहीं थे, लेकिन् आलिमोंकी बड़ी क़द्र करनेवाले थे, इनके वक्तमें हरएक फ़न व पेशेके उम्दह कारीगर नौकर रक्खे गये उन्होंने शहर अलवरको बड़ी रौनक दी; और कई मकान भी उम्दह बनवाये विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमें उन्होंने अपनी सख़्त

बीमारीकी हालतमे आठ सौ पैदल और चार सौ सवार मए चार तोपके आगरेकी घिरी हुई सर्कारी पल्टनोको मदद देनेके लिये अलवरसे रवानह किये, जो भरतपुर और आगराके बीचवाली सडकपर अचनेरा गावमे मुकीम थे, नीमच और नसीराबादकी बागी पल्टने उनपर एक दम आगिरी, उस समय पचपन आदमी अलवरके मारे गये, जिन मे दस बडे नामी सर्दार थे इस शिकस्तका हाल रावराजाने नहीं सुना, क्यों कि वे मरनेकी हालतमे होरहे थे आखिरकार विक्रमी १९१४ श्रावण कृष्ण ९ [हि० १२७३ ता० २३ जिल्काद = ई० १८५७ ता० १५ जुलाई] को बयालीस वर्ष राज्य करने बाद फालिजकी बीमारीसे उक्त महाराव राजाका इन्तिकाल होगया इनकी बीमारी की हालतमे मिर्जा इस्फिन्दयारबेगके बहकानेसे मेदा चेला वगैरह चन्द शख्सोने मम्मन चाबुकसवार, गनेश चेला व बलदेव मुसव्विरपर महाराव राजाको मारनेकी गरजसे जादू करानेकी झूटी तुहमत लगाकर तीनोको बेगुनाह कत्ल करादिया, और मेदाने कई मुसल्मानोके मुहमे सूअरकी हड्डिया दिलाकर तक्लीफ पहुचाई, जिसकी सजा उसने अचनेरेमे बडी बेरहमीसे मारेजाकर पाई, और अखीरमे मिर्जाने भी अपनी बदीका फल पाया, याने कुछ मुद्दत बाद मुल्कसे निकाला गया

४- महाराव राजा शिवदानसिंह

यह महाराव राजा, जिनका जन्म विक्रमी १९०१ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२६० ता० १३ रमजान = ई० १८४४ ता० २६ सेप्टेम्बर] को शाहपुरावाली राणीसे हुआ था, अपने पिताके इन्तिकाल करनेपर विक्रमी १९१४ श्रावण कृष्ण ९ [हि० १२७३ ता० २३ जिल्काद = ई० १८५७ ता० १५ जुलाई] को गद्दीपर बिठाये गये इस समय मुसल्मान अहलकारोका बहुत असर बढ गया मुन्शी अम्मूजान, जो राव राजा विनयसिंहके बड़े लाइक अहलकारोमे गिना जाता था, और जिसने शाहपुरावाली राणीके साथ विनयसिंहकी मौजूदगीमे ही बहिनका रिश्तह पैदा करलिया था, और सिवाय इसके दिल्ली फत्ह होने बाद उसने दिल्लीके भागे हुए कई बागियोको गिरिफ्तार व सजायाब कराके सर्कार अंग्रेजीको भी अपनी खैरख्वाहीका यकीन दिलादिया था, इस वक्त महाराव राजाकी नाबालिगीके जमानेमे आम गद्रके सबब सर्कार अंग्रेजीकी तरफसे रियासती प्रबन्धके वास्ते महक्मह एजेन्सी काइम न होनेसे काबू पाकर और ही घडन्त करने लगा, याने अपना मतलब बनानेके लिये राव राजाके पास अपने रिश्तहदार वगैरह मुसल्मानोको भरती किया, जिनकी सुहबतसे वह नशे व अय्याशी वगैरह वाहियात बातोमे लगकर अपने राजपूतोसे नफरत और

मुसल्मानी रवाजको पसन्द करने लगे यहांतक सुना गया है, कि अम्मूजान के खानदानसे एक लड़कीका निकाह राव राजाके साथ करके उनको मुसल्मान बना लेनेकी सलाह ठहरी जब रईसको इस तरहपर फांसकर अम्मूजान वगैरहने रियासतको लूटना शुरू किया, तो मिर्ज़ा इस्फिन्दयारबेगने, जो पुरानी दुश्मनीके सबब अम्मूजानकी घातमें लगा हुआ था, यह हाल राजपूतोंपर अच्छी तरह रौशन करके फ़सादपर आमादह किया, और सर्कार अंग्रेज़ीसे किसी तरहकी बाज़पुर्स न होनेकी उन्हें तसल्ली करदी इस बातके सुननेसे राजपूतोंको, जिनका सरगिरोह ठाकुर लखधीरसिंह बीजवाड़ वाला था, बड़ा जोश आया, और विक्रमी १९१५ श्रावण [हि० १२७५ मुहर्रम = ई० १८५८ ऑगस्ट] में एक बगावत पैदा होगई, जिसमें अम्मूजानने तो बड़ी मुश्किलसे भागकर जान बचाई, और उसका भतीजा मुहम्मद नसीर और एक खिद्मतगार मारा गया ठाकुर लखधीरसिंहने साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरल और कप्तान निक्सन साहिब पोलिटिकल एजेण्ट भरतपुरको इत्तिला दी कप्तान निक्सनने भरतपुरसे अलवरमें पहुंचकर राजपूतोंका क्रोध ठंडा किया, और ठाकुर लखधीरसिंह की मातहतीमें रियासती कारोबारके इन्तिज़ामके लिये सर्दारोंकी एक पंचायत सर्कारी मन्ज़ूरीसे मुकर्रर करके राज्यमें एजेन्सी काइम कियेजानेकी ग़रज़से सद्रको रिपोर्ट की, जिसपर विक्रमी १९१५ कार्तिक [हि० १२७५ रबीउस्सानी = ई० १८५८ नोवेम्बर] में कप्तान इम्पी अलवरके पोलिटिकल एजेण्ट मुकर्रर हुए

उस वक्त रियासतका ढंग बिगड़ा हुआ था, इस लिये कप्तान इम्पीने बहुत होश्यारी व साबित क़दमीके साथ कारोबारका बन्दोबस्त किया, जिसमें उनको कई तरहकी दिक्कतें उठानी पड़ीं उनमें जियादह तर रईसकी मुदाख़लत और विरुद्धता थी विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] में महाराव राजाने खुद मुख्तार व आज़ाद होनेके मन्शा पर कई बदमआशोंकी मददसे महकमह एजेन्सी व पंचायतको जबर्दस्ती बर्खास्त करके लखधीरसिंहको मारडालना चाहा, और चन्द फ़ौजी अफ्सरोंसे मिलावट की यह ख़बर पाकर इम्पी साहिबने उस गिरोहको गिरिफ्तार करलिया, और इस कार्रवाईके शुब्हेमें अम्मूजान, फ़ज़्लुल्लाहखां व इन्आमुल्लाहखां, तीनोंको अलवरसे निकालकर मेरठ, बनारस व दिल्ली, अलहदह अलहदह मकामातपर रहनेका हुक्म दिया गया इसी अर्सेमें इस्फिन्दयारबेग भी ३००) माहवार पेन्शन् मुकर्रर की जाकर अलवर से निकालदिया गया, और कप्तान इम्पी साहिबने अहलकारोंका रिश्वत लेना, रियासतकी ज़ेरबारी और रिआयाकी तक्लीफ़ातके सबबों व ख़राबियों वगैरहका पूरा इन्तिज़ाम करके मिस्टर टॉमस हद्रलीकी मददसे तीन सालका सर्सरी बन्दोबस्त किया,

जिसमे औसत १४२९२२५ रुपया सालानह आमदनी हुई रिआया इस इन्तिजामसे खुश हुई, और अक्सर वीरान गाव नये सिरसे आबाद हुए आगेके दह सालह बन्दोबस्तके लिये रिआयाने महसूलका बढाया जाना खुशीसे मन्जूर किया इस बन्दोबस्तमे विक्रमी १९१९ [हि० १२७८ = ई० १८६२] से विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] तक औसत जमा १७१९८७५ रुपये मुकर्रर हुई सिवाय इसके उक्त कप्तानने अपने इन्तिजाममे कचहरियोंके वास्ते एक बडा मकान महलके चौकमे बनाया, रिआयाके आरामके वास्ते 'इम्पी ताल' नामका एक तालाब घोडाफेर इहातेके पास तय्यार कराया, जिसमे सीलीसेढकी नहरसे पानी आता है अलवर व तिजाराके दर्मियानी सडक बनवाई, और महाराव राजाकी शादी रईस झालरापाटनके यहा बडी धूम धामसे की जब कप्तान निक्सनकी काइम कीहुई अगली पचायतसे प्रबन्धकी दुरुस्ती अच्छी तरह न हुई, तब थोडे दिनो तक इम्पी साहिबने खुद रियासतका काम किया, फिर पाच ठाकुरोकी एक कॉन्सिल मुकर्रर की उसमे भी बिगाड नजर आया, तब विक्रमी १९१७ [हि० १२७७ = ई० १८६०] मे दूसरी कॉन्सिल काइम कीगई, जिसका मुख्तार ठाकुर लखधीरसिंहको और मेम्बर ठाकुर नन्दसिंह व पण्डित रूपनारायणको बनाया इस कॉन्सिलने महाराव राजाको इख्तियारात मिलनेके वक्त तक अच्छा काम किया

विक्रमी १९२० भाद्रपद शुक्ल २ [हि० १२८० ता० १ रबीउस्सानी = ई० १८६३ ता० १४ सेप्टेम्बर] मे राव राजाको इख्तियार मिलगया, और कुछ अरसह बाद एजेण्टीका इख्तियार उठगया महाराव राजाने रियासतके इख्तियारात मिलते ही अम्मूजानके बर्खिलाफ बगावत करनेकी नाराजगीके सबब लखधीरसिंहको बीजवाड जानेका हुक्म दिया, और गाव बागरोली, जो विक्रमी १९१५ [हि० १२७५ = ई० १८५८] मे मुवाफिक ख्वाहिश परलोकवासी महाराव राजा विनयसिंहके इन्तिजाम एजेन्सीके जमानेमे लखधीरसिंहको दिया गया था, छीन लिया इसपर गवर्मेटने महाराव राजाको बहुत कुछ हिदायत की, कि सर्कार अंग्रेजी ठाकुरकी उम्दह कारगुजारीसे बहुत खुश है, अगर इसके अलावह उसके साथ और कुछ जियादती होगी, तो सर्कार बहुत नाराज होगी

विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] मे, जब कि महकमह एजेन्सी बदस्तूर था, महाराव राजाने कलकत्तेमें नव्वाब गवर्नर जेनरलके पास जाकर अपनी होश्यारी व लियाकत जाहिर की, लेकिन् नव्वाब साहिबको उनकी तरफसे नेक चलनी का भरोसा न था, तौभी इह्तियातके तौरपर कहा, कि अगर अलवरमे कोई फ़साद पैदा होगा, तो उसका बन्दोबस्त करनेके लिये सर्कार मदद न देगी इसी अरसेमे

विक्रमी १९२१ ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० १२८० ता० २६ जिल्हिज = ई० १८६४ ता० १ जून] को मियाजान चाबुक सवार, जिससे महाराव राजा नाराज थे, राजगढमें मारा गया, और उसके कत्लका शुब्ह महाराव राजाकी निस्बत हुआ, लेकिन् गवाही वगैरहसे पूरा सुबूत न पहुंचा. उस जमानेमें कप्तान हमिल्टन रियासतके एजेएट थे, उनकी रिपोर्टोंमें इख्तिलाफ और मुकद्दमेकी तह्कीकातमें सुस्ती पाये जानेके सबब और महाराव राजाको पूरे इख्तियारात मिलनेके लाइक होश्यार और बालिग समझकर गवर्मेंटने एजेन्सीको तोडदिया, और कप्तानको फौजमें भेजदिया. कुछ अरसे तक तो महाराव राजाने रियासतका काम होश्यारी व अक्लमन्दीके साथ किया, लेकिन् इन्हीं दिनोंमें खारिज किये हुए अह्लकारोंको, कि जो बनारसमें थे, अलवरसे खत किताबत न रखनेकी शर्तपर सर्कारसे दिल्लीमें रहनेकी इजाजत मिलगई. महाराव राजाने उन लोगोंको दिल्ली आते ही रियासतका सारा काम सुपुर्द करके चार हजार रुपयेके करीब माहवारी तन्ख्वाह उनके पास भेजना शुरू कर दिया, इम्पी साहिबके जमानेके खैरख्वाह अह्लकार मौकूफ किये जाकर दिल्लीके सिफारिशी मुसल्मान नौकर रक्खे गये, रिश्वतका बाजार फिर गर्म हुआ, और तमाम काम दिल्लीमें रहने वाले प्रधानोंकी मारिफत होने लगा, जिसका नतीजा यह निकला, कि रियासतमें पहिलेकी तरह फिर खराबी पैदा होगई.

इसी अरसेमें उक्त महाराव राजाने जयपुरके महाराजासे ना इत्तिफाकी पैदा की, और अपने मातह्त जागीरदारोंके साथ कई तरहके झगडे उठाये, ठाकुर लखधीरसिंह पुष्कर स्नानके बहानेसे जयपुर चलागया. विक्रमी १९२२ [हि० १२८२ = ई० १८६५] में जब महाराव राजा अपनी ननसाल मकाम शाहपुराको जाते थे, तो रास्तेमें जयपुरके पास कर्नेल ईडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, व मेजर बेनन पोलिटिकल एजेएट जयपुरसे काणोता मकामपर मुलाकात हुई, दोनों साहिबोंने महाराव राजाको बहुत कुछ समझाया, और ठाकुर लखधीरसिंहको वापस अपने साथ अलवर लेजानेको कहा, लेकिन् उन्होंने नहीं माना, इसपर ईडन साहिब व बेनन साहिबको बडा रंज हुआ. ठाकुर लखधीरसिंहने दोनों साहिबों व महाराजा जयपुरको अपना मिहर्बान व तरफदार समझकर जयपुरके राज्यमेंसे लुटेरोंको एकट्ठा किया, और विक्रमी १९२३ [हि० १२८३ = ई० १८६६] में राव राजाके बर्खिलाफ रियासत अलवरमें लूट मार मचाई. इस समय लखधीरसिंहके खानगी मददगार जयपुरके महाराजा रामसिंह थे, लेकिन् लखधीरसिंहको अलवरकी फौजसे शिकस्त खाकर भागना पडा.

इस लडाईमें, जो घाटे बादरोल व गोलाके बासपर हुई, लखधीरसिंहके साथके बहुतसे गारतगर मारे गये, और उनमेंसे सतीदान मेड़तिया बडी बहादुरीके साथ लडा; राज्यकी फ़ौजके जादव राजपूतोंने खूब मर्दानगी जाहिर की. राव राजाने

बसबब पनाह देने लखधीरसिंहके जयपुर वालोंपर अपने नुक्सानका दावा किया, और जयपुरकी तरफ़से उससे भी ज़ियादह नुक्सानकी नालिश पेश हुई, लेकिन् वाकिआतकी अस्लियत बख़ूबी दर्याफ़्त न होनेके कारण मुक़द्दमह डिस्मिस होगया अंग्रेज़ी गवर्मेंएट लखधीरसिंहकी सर्कशीसे बहुत नाराज़ हुई, और महाराव राजाको उसकी पेन्शन व जागीर बदस्तूर बहाल रखनेकी हिदायत करके लखधीरसिंहको रियासत जयपुर व अलवर दोनोंसे बाहर रहनेका हुक्म दियागया, जिसपर वह अजमेरमें रहने लगा, मगर महाराव राजाने थोडे दिनों बाद मौज़ा बीजवाडको तबाह करके वहांकी ज़मीनपर खेती वगैरह होना बन्द करदिया इस तरहके झगडे बखेडोंके हमेशह रहनेसे नव्वाब वाइसरॉय गवर्नर जेनरलने उक्त महाराव राजाको एक अरसे तक गद्दीनशीनी व रियासतके पूरे इख्तियारातका खिल्अत नहीं भेजा, लेकिन् जब विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में एजेंएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने उनकी नेक चलनी वगैरहकी बाबत रिपोर्ट की, तो १०००० रुपयेका खिल्अत सर्कारसे बख़्शा गया

विक्रमी १९२६ [हि० १२८६ = ई० १८६९] तक इस रियासतका सबन्ध एजेन्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके साथ रहा, और उसके बाद इसी सालके मई महीनेमें महकमह एजेन्सी पूर्वी राजपूतानह मुकर्रर होकर भरतपुर, धौलपुर व करौलीके सिवा अलवर भी उसके मुतअल्लक हुआ, और कप्तान वाल्टर साहिबके रुख़्सत जानेपर कप्तान जेम्स ब्लेअर साहिब काइम मकाम पोलिटिकल एजेंएट मुकर्रर हुए इसी ज़मानेमें नीमराना व राज अलवरका बाहमी झगडा, जो मुद्दतसे चलाआता था, फैसल होकर नीमरानावाले रईससे तीन हज़ार रुपया सालानह खिराज, सर्कार अंग्रेज़ीकी मारिफ़त अलवरको दिया जाना करार पाया और कप्तान एबट साहिबके इह्तिमामसे नीमरानेके इलाकेकी हदबस्त तै पाकर जयपुर व अलवरकी शामिलातके गांव दोनों राज्योंकी रज़ामन्दीसे तक्सीम हुए

महाराव राजाने फ़ुज़ूल खर्ची और क्रूरतासे बडी बदनामी पैदा की, याने कुल आमद-नीके सिवा बीस लाख रुपया, जो इम्पी साहिबने ख़ज़ानेमें छोडा था, फ़ुज़ूल खर्चीमें उडाकर बहुतसा कर्ज़ करलिया, विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में बहुतसे राजपूतों की जागीरें और मज़्हबी व खैराती सीगेकी ज़मीन वगैरह छीन ली. इस तरहकी बेजा बातोंसे तमाम लोग रंजीदह होगये, पंडित रूपनारायण गिर्दावर राज इस्तिअ्फ़ा देकर चला गया, और दिल्लीके दीवानोंकी सिफ़ारिशसे मुन्शी रुकलाल गिर्दावर, अब्दुर्रहीम हाकिम अदालत, और शम्शाद अली डिप्युटी कलेक्टर बनाया गया

महाराणी झालीसे कुंवर पैदा हुआ, तो उसकी खुशीमें महाराव राजाने जश्न करके

नाच व राग रंग और दावतमें लाखों रुपया खर्च किया, और विक्रमी १९२६-२७ [हि० १२८६-८७ = ई० १८६९-७०] में राव राजाकी दर्ख्वास्तपर शाहजादह ड्यूक ऑफ एडिम्बरा अलवरमें तश्रीफ़ लाये, जिनकी ज़ियाफ़त बड़ी धूम धामसे नाच व रोशनी वगैरहके साथ की गई. महाराव राजाने कई क़िस्मकी चीजें और एक उम्दह तलवार शाहजादहको नज़ की, दूसरे रोज़ सुब्हको शाहजादह साहिब वापस तश्रीफ़ लेगये. विक्रमी १९२६ माघ [हि० १२८६ ज़िल्क़ाद = ई० १८७० फ़ेब्रुअरी] में महाराव राजाने राजपूतोंका खास चौकीका रिसालह, जिसकी तन्ख्वाह जागीरके मुवाफ़िक़ समझी जाती थी, मौकूफ़ कर दिया, और राजपूतोंकी जगह बहुतसे नये मुसल्मान भरती करलिये. ठाकुर मंगलसिंह गढ़ीवाला और दूसरे ठाकुर, जिनकी जागीरें खालिसह हुई थीं, अव्वलसे ही नाराज़ थे, इस वक्त बारगीरोंकी मौकूफ़ीसे ज़ियादह जोशमें आकर एक मत होगये, और खेड़लीके ठाकुर जवाहिरसिंह व दूसरे सर्दारोंसे, जो जागीरें ज़ब्त होजानेका अन्देशह दिलोंमें रखते थे, मिलावट करके फ़साद करनेको तय्यार हुए. यह हाल सुनकर कप्तान जेम्स ब्लेअर साहिब पोलिटिकल एजेएट पूर्वी राजपूतानह, अलवरमें तश्रीफ़ लाये, और राजगढ़ मकामपर महाराव राजा व सर्दारोंके आपसमें सफ़ाई करादेनेमें पूरी कोशिश की, मगर उसका नतीजा उक्त साहिबके मन्शाके मुवाफ़िक़ न निकला; वह वापस चले गये, और करौलीमें पहुंचनेपर चन्द रोज़ बाद विक्रमी १९२६ फाल्गुन [हि० १२८६ ज़िल्हिज = ई० १८७० मार्च] में उनका इन्तिकाल होगया.

जेम्स ब्लेअरकी जगह विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में कप्तान केडल सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से महाराव राजा व सर्दारोंके सुलह करादेनेके वास्ते पोलिटिकल एजेएट नियत हुए. इन्होंने भी सुलहके बारेमें बहुत कुछ कोशिश की, मगर कारगर न हुई. रियासतमें हर तरहकी बुराइयां फैल रही थीं, राज्यका कोई प्रबन्ध कर्ता और राव राजाको नेक सलाह देने वाला नहीं था, अब्दुर्रहीम, इब्राहीम सौदागर और शम्शाद अली, जो उनके मुसाहिब थे, अपनी बेजा मुदाखलतके डरसे भाग गये. सर्दार लोगोंने इस वक्त मौका पाकर महाराव राजाको गद्दीसे खारिज करके उनकी जगह कुंवर शिवप्रतापसिंहको काइम करना चाहा, लेकिन् थोड़े ही दिनों बाद कुंवरका इन्तिकाल होगया, और इसी अर्सेमें महाराणी झाली भी इस दुन्यासे कूच करगई, इन दोनों हादिसोंसे महाराव राजाके दिलको बड़ा सदमह पहुंचा, और इन्हीं दिनोंमें केडल साहिबके नाम एजेन्सी मुक़र्रर किये जानेका हुक्म गवर्मेएटसे आगया. राज्यके प्रबन्धके वास्ते रियासती सर्दारोंकी कौन्सिल नियत कीगई, जिसके प्रेसिडेएट पोलिटिकल एजेएट हुए, और कौन्सिलके मेम्बरोंमें ठाकुर लखधीरसिंह बीजवाड़का, ठाकुर महताबसिंह खोड़ाका, ठाकुर हरदेवसिंह थानाका, ठाकुर

मंगलसिंह गढीका, चार नरूका राजपूत, और पांचवां पण्डित रूपनारायण कान्यकुब्ज ब्राह्मण था. राव राजाका इख्तियार घटाया जाकर एक मेम्बरके मुवाफिक करदिया गया. महाराव राजाको तीन हज़ार रुपया माहवारी मिलना करार पाया, और उनके खिद्मतगारोंका भी प्रबन्ध करदिया गया. जिन सर्दारों वगैरहकी जागीरें बे इन्साफ़ीसे छीनी गई थीं, वे वापस देदी गईं, और नये सिपाहियोंको मौकूफ़ करके पुराने हक्दारोंको भरती करलिया. विक्रमी १९२८ ज्येष्ठ [हि० १२८८ रबीउलअव्वल = ई० १८७१ मई] में महाराव राजाका ढंग बहुत बिगड़ गया, कि सुलह चाहनेवालोंको फ़साद पैदा होनेका खौफ़ हुआ, जेलखानहमें बखेड़ा मचा, और कई तरहकी खराबियां पैदा हुई. उसी ज़मानेमें साबित हुआ, कि साहिब पोलिटिकल एजेण्ट व ठाकुर लखधीरसिंहको मारनेकी साज़िश हुई है, मोती मीना व कई दूसरे मीने, जो इस जुर्मके करनेपर आमा-दह हुए थे, गिरिफ्तार किये गये, और महाराव राजाको गवर्मेण्टसे सख्त हिदायत हुई. जिन ठाकुर वगैरह जागीरदारोंने फ़सादके ज़मानेसे खुद मुख्तार बनकर राजकी जमा देना बन्द करदिया था, उनमेंसे कई लोगोंको कैद व जुर्मानहकी सज़ा देकर पोलिटिकल एजेण्टने ताबिअ् बना लिया, और रियासतकी कर्जदारी व ज़ेर-बारीको दूर करनेके लिये गवर्मेण्टसे दस लाख रुपया बतौर क़र्ज़ लिया, जिसकी किस्त अव्वल विक्रमी १९२८-२९ [हि० १२८८-८९ = ई० १८७१-७२] में एक लाखकी और आयन्दह वर्षोंके लिये तीन लाख रुपये सालानहकी मुकर्रर कीगई. इस कर्जेके मिलनेसे मुलाज़िमोंकी चढ़ीहुई तन्स्वाह और कर्जदारोंका रुपया दिया जाकर हर महकमह व सरिश्तेका प्रबन्ध कियागया, और मुफ्सिद लोग मौकूफ़ किये गये.

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] में ज़मीनके हासिलका प्रबन्ध किया गया. महाराव राजाने रियासतके इन्तिज़ाममें हाथ न डाला, और मेम्बरान कमिटीने अच्छी तरह काम किया. विक्रमी १९३०-३१ [हि० १२९०-९१ = ई० १८७३-७४] में रिआयाने बगैर उज्र मालगुज़ारीमें साढ़े सात रुपया फ़ी सैकड़ाका इज़ाफ़ह खुशीके साथ मन्ज़ूर किया.

आख़िरकार विक्रमी १९३१ आश्विन कृष्ण ऽऽ [हि० १२९१ ता० २९ शअ्बान = ई० १८७४ ता० ११ ऑक्टोबर] को उन्तीस वर्षकी उम्र पाकर दिमागी बीमारीसे महाराव राजाका इन्तिकाल होगया. उनके कोई औलाद न रहनेके सबब गोदके बारेमें बहुत झगड़ा होने लगा, तब सर्कार अंग्रेज़ीने दो आदमियोंमेंसे एकको चुननेकी इजाज़त दी, एक बीजवाड़का ठाकुर लखधीरसिंह और दूसरा थानाके ठाकुरका बेटा

मंगलसिंह था, जिनमेंसे रियासती सर्दारोंकी कस्रत रायपर मंगलसिंहको गद्दीपर बिठाना तज्वीज हुआ

५- महाराजा मंगलसिंह

यह विक्रमी १९३१ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ [हि॰ १२९१ ता॰ ४ जिल्काद = ई॰ १८७४ ता॰ १४ डिसेम्बर] को गद्दीपर बिठाये गये, इस बातसे ठाकुर लखधीरसिंह और दूसरे कई जागीरदार नाराज रहे, और राव राजाको नज़ नहीं दी तब विक्रमी १९३१ फाल्गुन् कृष्ण ४ [हि॰ १२९२ ता॰ १८ मुहर्रम = ई॰ १८७५ ता॰ २५ फेब्रुअरी] को उनकी जागीरोंपर राज्यका प्रबन्ध किया जाकर किसी कद्र जब्ती हुई, और लखधीरसिंहको अजमेरमें रहनेका हुक्म मिला दूसरे सर्कश ठाकुर भी उसके साथ खिलाफ़ हुक्म अजमेरको गये, लेकिन् वहां रहने न पाये

विक्रमी १९३१ फाल्गुन् कृष्ण ८ [हि॰ १२९२ ता॰ २२ मुहर्रम = ई॰ १८७५ अखीर फेब्रुअरी] को पंडित मनफूल सितारए हिन्द (सी॰ एस॰ आइ॰) महाराव राजाका अतालीक (गार्डिअन) मुक़र्रर कियागया इसी सालके फाल्गुन् [हि॰ १२९२ सफर = ई॰ १८७५ मार्च] में महाराव राजा नव्वाब गवर्नर जेनरलके हुक्मके मुवाफिक दिल्लीके दर्बारमें गये, जहांपर गवर्नर जेनरल व लेफ्टिनेन्ट गवर्नर पंजाब तथा पटियाला व नाभाके राजाओंसे मुलाकात हुई इस अर्सेमें कचहरियों वगैरहमें बहुत कुछ तरक़ी हुई, अपीलका महकमह अलहदह काइम हुआ, कि जिसमें फौज्दारी, दीवानी व मालकी अपील सुनीजाती है, लेकिन् संगीन जुर्म वाले मुक़द्दमोंकी तज्वीज पंचायतसे होती है, और अखीर मन्ज़ूरी महाराजा व पोलिटिकल एजेन्टकी इजाजतसे दीजाती है इन्हीं दिनोंमें सर्कार अंग्रेजीके कर्जहका दस लाख रुपया अस्ल और सूद, जो महाराव राजा शिवदानसिंहके वक्तका बाकी था, अदा कियागया विक्रमी १९३२ भाद्रपद [हि॰ १२९२ शअ्बान = ई॰ १८७५ सेप्टेम्बर] में जयपुर मकामपर ठाकुर लखधीरसिंहका इन्तिकाल होगया, और उसकी जगह उसके वारिस रिश्तहदार माधवसिंहके गद्दी बैठनेपर गवर्मेएटकी मन्ज़ूरीसे लखधीरसिंहकी जागीर, जो जब्त होगई थी, उसको बहाल करदी गई विक्रमी १९३२ कार्तिक कृष्ण ६ [हि॰ १२९२ ता॰ २१ रमजान = ई॰ १८७५ ता॰ २२ ऑक्टोबर] को महाराव राजा अजमेरके मेओ कॉलेज में सबसे पहिले दाखिल हुए दाखिल होनेसे थोड़े ही हफ्तों बाद नव्वाब वाइसरॉय अजमेरमें आये, उन दिनों पढ़ने लिखनेमें जियादह तवज्जुह नहीं रही, उसके बाद एक महीने तक पढ़नेमें कोशिश करके दिल्लीमें फौजकी क़वाइद देखनेके लिये इजाज़त

लेकर चलेगये, और वहांसे आगरे पहुंचकर शाहज़ादह प्रिन्स ऑफ़ वेल्सकी पेश्वाईमें शामिल हुए, जहां शाहज़ादे साहिबसे मुलाकात और बात चीत हुई. विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] में दिल्लीसे अलवर तक रेल्वे लाइन खोली गई, और विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में बांदी कुई तक जारी हुई. विक्रमी १९३३ कार्तिक [हि० १२९३ शव्वाल = ई० १८७६ नोवेम्बर] में राव राजा विनयसिंहकी राणी और मंगलसिंहकी दादी रूपकुंवरका इन्तिकाल हुआ, यह बड़ी अक्लमन्द और राज्यके कामोंसे वाकिफ़ थी. इसी सालमें ठाकुर महताबसिंह खोड़ वालेका इन्तिकाल हुआ. विक्रमी १९३३-३४ [हि० १२९३-९४ = ई० १८७६-७७] में महाराव राजाके पढ़नेमें ज़ियादह हर्ज हुआ, और इसी वक्त पण्डित मनूफूलने इस्तिअ्फ़ा दिया, उसकी जगह कप्तान मार्टेली असिस्टेण्ट एजेण्ट गवर्नर जेनरल इस कामपर मुकर्रर हुए.

विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में महाराव राजाकी शादी कृष्णगढ़के महाराजा एथ्वीसिंहकी दूसरी बेटीके साथ हुई, जिसमें रिआयासे न्योतेका रुपया, जो पहिले लियाजाता था, वुसूल न करनेपर उनकी बड़ी नेकनामी व रिआया पर्वरी ज़ाहिर हुई. इसी वर्ष पंचायतके मेम्बरोंमेंसे ठाकुर मंगलसिंह गढ़ीवाले, और पंडित रूपनारायण दीवानको उनकी उम्दह कारगुज़ारीके एवज़ सर्कार अंग्रेज़ीसे राय बहादुरका ख़िताब अता हुआ.

विक्रमी १९३४ कार्तिक [हि० १२९४ ज़िल्काद = ई० १८७७ नोवेम्बर] महीनेमें महाराव राजाको सर्कारी तरफ़से पूरे इख्तियारात मिले, और इसी अरसेमें मेजर टॉमस केडल वी० सी० पोलिटिकल एजेण्ट अलवर, जिन्होंने कई साल तक राज्यके इन्तिज़ाममें मश्गूल रहकर हर एक सरिश्ते व शहर तथा कस्बोंको हर तरहसे रौनक दी, और मिहर्बानी व नर्मीसे रिआयाके साथ बर्ताव रक्खा, मारवाड़की एजेन्सीपर तब्दील होकर जोधपुर गये.

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] में महाराव राजाको अव्वल दरजहका तमगाय सितारए हिन्द (G C S I) हासिल हुआ. विक्रमी १९४५ [हि० १३०६ = ई० १८८८] के शुरूपर सर्कारने उनको फ़ौजी कर्नेलका उह्दह और मौरूसी तौरपर 'महाराजा' ख़िताब इनायत किया, जिसकी रस्म कर्नेल वाल्टर, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके हाथसे अदा हुई.

अलवरके जागीरदार व सर्दार

रियासत अलवरके उत्तर पश्चिम राठमें पुराने चहुवान सर्दार और नरूखड़के

दक्षिणमे नरूका खानदानके लोग रहते है, लालावत नरूकोका पुर्षा लाला था, इसी खानदानमे कल्याणसिंह हुआ, इसकी औलादमे, जिनको बारह कोटड़ी कहते है, २५ जागीरदार है इनके सिवा कई एक नरूका खानदान "देश" के नामसे मश्हूर है, जो नरूका देशसे आकर सर्दारोके बुलानेपर अलवरमे आ बसे है

चहुवान- इनका बयान है, कि दिल्लीके प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराजकी नस्ल मेसे है

नीमराणा- यहाका जागीरदार अपनेको खुद मुख्तार बयान करता है, सर्कार अंग्रेजीको इस बारेमे बडी फिक्र हुई, आखिरकार विक्रमी १९२५ [हि० १२८४ = ई० १८६८] मे यह करार पाया, कि नीमराणाके राजाको मुल्की और फौज्दारीका इख्तियार अपने इलाक़हमे रहे, सर्कार अंग्रेज़ीके हुक्मके मुवाफिक अलवर दर्बारको अपनी आमदनीका आठवा हिस्सह खिराजके तौर दिया करे, और अलवरकी गद्दीनशीनीके वक्त ५००) रुपया नज्रानह करे; नीमराणाकी गद्दीनशीनीके वक्त सर्कार अंग्रेजीके मातह्तोके दस्तूरके मुवाफिक बर्ताव किया जावे; नीमराणाका एक वकील अलवरमे और दूसरा एजेण्ट गवर्नर जेनरलके साथ रहा करे, नीमराणामे तिजारतपर मह्सूल न लियाजाये, और अस्बाबके आने जानेपर राज अलवर मह्सूल न लेवे, नीमराणा अलवरका जागीरदार सर्दार समझा जावे, विक्रमी १९२५ [हि० १२८४ = ई० १८६८] से विक्रमी १९५५ [हि० १३१५ = ई० १८९८] तक नीमराणासे तीन हजार सालानह मह्सूल दिया जावे. इस बातको दोनोने मान लिया नीमराणामे दस गाव २४०००) रुपया सालानह आमदके है

जागीरदार- नीचे उन गोत्रो और उपगोत्रोके नाम लिखे है, जिनको जागीर घोडेके हिसाबसे मिलती है घोडोके टुकडेसे नक्द रुपया समझना चाहिये

नक्शह

राजपूत गोत्र		जागीरदारोकी सख्या	घोड़े
नरूका	बारह कोटडी	२६	२२२ १/२
	दशावत	६	४१ १/२
	लालावत	७	४२ १/४
	चित्तरजिका	५	१८ १/२
	देशका	१०	७१ ३/४

राजपूत गोत्र	जागीरदारोंकी संख्या	घोड़े
चहुवान	१९	१११ $\frac{3}{4}$
कल्याणोत	२	१३
पचाणोत	७	४१
जनावत	१	१०
राजावत	२	२
कुंभावत	१	४
जोग कछवाहा	१	२
राधाक	१	१ $\frac{1}{4}$
शैखावत	१	३
बाकावत	१	१
गौड़	९	५८
राठौड़	९	७३
यादव भाटी	७	५६ $\frac{1}{2}$
बड़गूजर	६	७०
तवर	१	४
१ सय्यद, १ गुसाई, १ सिक्ख, १ गूजर, १ कायस्थ	५	३३

ताज़ीम - नीचे लिखे १७ जागीरदार दर्बारमे ताज़ीम पाते हैं -

१२ कोटडीके नरूका, बीजवाड़, पलवा, पारा, पाई, खोड, थाना, खेडा, श्रीचंदपुरा, दशावत नरूका, गढी (२० घोडे) राठौड, सालपुर (२८ घोडे) सुखमेडी (११), रसूलपुर (५) बड़गूजर, तसींग (४) गौड़, चमरावली (२४) जादव, काक वाडी (९), मुकुन्दपुर (३) नव ठाकुर, जिनको मालगुजारी नहीं लगती, और ताज़ीम दीजाती है, इनमे जाउली ठाकुर जिनके तीन गांव हैं, मुख्य हैं, बख़्शी, शाहाबादके खानज़ादह नव्वाब, मंडावरके राव और १३ ब्राह्मणोको ताज़ीम मिलती है ·

शैखावत - ये लोग वाल (बान्सूरकी तह्सील) में रहते हैं, और जियादह कछवाहा गोत्रकी शाख जयपुरके उत्तरमें आबाद है यह आंबेरके राजा उदयकरणसे उत्पन्न हुए हैं

शैखाजीका बेटा रायमल्ल इन लोगोंका पिता था -
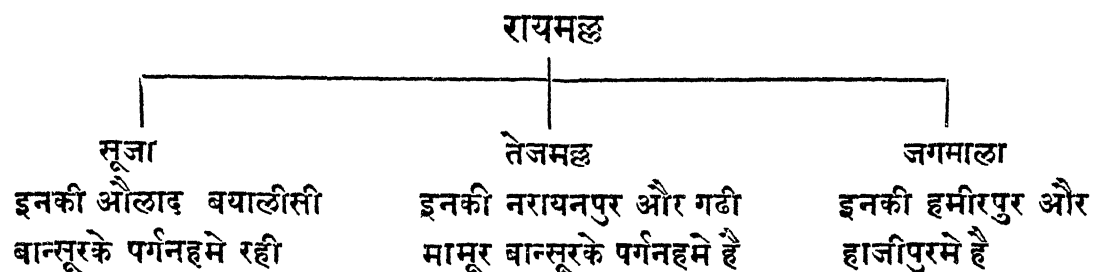
नरायनपुरके पास एक पुराना मन्दिर और इसके नज्दीक खेजडेके दरख़्तका कुछ बचा हुआ हिस्सह है, जिसके हरे होने और मुरझानेपर शैखावत खानदानकी बढती और घटती खयाल कीजाती है, इनकी अब बहुत कम जागीर रहगई है, और इनके गांवोंपर थोडा मह्सूल लगाया गया है

राजावत - ये लोग आंबेरके राजा भगवानदासकी औलाद, उस जगहपर, अब जहां थानह गाजीकी तह्सील है, पहिले आबाद थे उनके नगर, महलों और मन्दिरोंके खंडहर भानगढमें अबतक पाये जाते हैं अगर्चि अब ये लोग अक्सर गांवोंमें खेतीसे गुजर करते हैं, तो भी वे अपना अमीराना व्यवहार रखते हैं

एचिसन्की किताब जिल्द ३,
अहदनामह नम्बर ७७

शराइत अहदनामह, जो हिज़ एक्सेलेन्सी जेनरल जिरार्ड लेक साहिब सिपहसालार हिन्द फ़ौज अंग्रेजीके, (मुवाफ़िक दिये हुए इख्तियारात हिज एक्सेलेन्सी दी मोस्ट नोब्ल मारक्विस वेल्ज़ली गवर्नर जेनरल बहादुरके), और महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंह बहादुरके दर्मियान करार पाई.

शर्त पहिली- हमेशहकी दोस्ती ऑनरेब्ल अंग्रेजी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंह बहादुर और उनके वारिसो व जानशीनोके दर्मियान करार पाई

शर्त दूसरी- ऑनरेब्ल कम्पनीके दोस्त व दुश्मन महाराव राजाके दोस्त व दुश्मन समझे जावेगे, और महाराव राजाके दोस्त व दुश्मन ऑनरेब्ल कम्पनीके दोस्त व दुश्मन माने जायेगे

शर्त तीसरी- ऑनरेब्ल कम्पनी महाराव राजाके मुल्कमे दख्ल न देगी, और खिराज तलब न करेगी

शर्त चौथी- उस सूरतमे, जब कि कोई दुश्मन हिन्दुस्तानमे ऑनरेब्ल कम्पनीके या उसके दोस्तोके इलाकहपर हमलहका इरादह करेगा, तो महाराव राजा वादह करते है, कि वह अपनी तमाम फ़ौज उनकी मदद्को देगे, और आप भी पूरी कोशिश दुश्मनके निकालदेनेमे करेगे, और किसी तरहकी कमी दोस्ती और मुहब्बतमे रवा न रक्खेगे

शर्त पांचवी- जो कि इस अहदनामहकी दूसरी शर्तके रूसे ऐसी दोस्ती करार पाई है, कि उससे ऑनरेब्ल कम्पनी गैर मुल्कवाले दुश्मनके खिलाफ़ महाराव राजाके मुल्ककी हिफ़ाजतकी जिम्महवार होती है, तो महाराव राजा वादह करते है, कि अगर दर्मियान उनके और किसी दूसरे रईसके कोई तकारकी सूरत पैदा होगी, तो वह अव्वल तकारकी वजूहको गवर्मेएट कम्पनीसे रुजू करेगे, इस नियत से, कि गवर्मेएट आसानीसे उसका फ़ैसलह करदे; अगर दूसरे फ़रीककी जिदसे फ़ैसलह सुहूलियतके साथ न होसके, तो महाराव राजा गवर्मेएट कम्पनीसे मददकी दर्ख्वास्त करेगे, और अगर शर्तके बमूजिब उनको मदद मिले, तो वादह करते है, कि जिस कद्र फ़ौज खर्चकी शरह हिन्दुस्तानके और रईसोसे करार पाई है, उसी कद्र वह भी देगे

ऊपरका अह्दनामह, जिसमे पाच शर्तें है, हिज एक्सेलेन्सी जेनरल जिराई लेक और महाराव राजा बख्तावरसिंह बहादुरकी मुहर और दस्तखतसे पहेसर मकामपर ता० १४ नोवेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक़ २६ रजब सन् १२१८ हिज्री और १५ माह अगहन सवन् १८६० को दोनो फरीकने लिया दिया, और जब ऊपर लिखी शर्तोंका अह्दनामह हिज़ एक्सेलेन्सी दी मोस्ट नोबल मारक्किस वेल्ज़ली गवर्नर जेनरल बहादुरकी मुहर और दस्तखतसे महाराव राजाको मिलेगा, यह अह्दनामह, जिसपर मुहर और दस्तखत हिज एक्सेलेन्सी जेनरल लेकके है, वापस किया जायेगा

| राजाकी मुहर | (दस्तखत)-जी० लेक | मुहर |

| कम्पनीकी मुहर | (दस्तखत)-वेल्ज़ली |

यह अह्दनामह गवर्नर जेनरल इन् काउन्सिलने ता० १९ डिसेम्बर सन् १८०३ ई० को तस्दीक़ किया

अह्दनामह नम्बर ७८

उस सनदका तर्जमह, जो जेनरल लॉर्ड लेक साहिबने राजा सवाई बख़्तावरसिंह अलवर वालेको दी

तमाम मौजूद और आगेको होनेवाले मुतसद्दी और आमिल, चौधरी, कानूनगो, जमीदार, और काश्तकार, पर्गनो इस्माईलपुर, और मुडावर मए तअल्लुका दर्बारपुर, रताय, नीमराना, माडन, गुहिलोत, बीजवाड, सराय, दादरी, लोहारु, बुधवाना, भुदचल नहर, इलाकृए सूबह शाहजहांआबादके मालूम करे, कि ऑनरेबल अंग्रेजी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव राजा सवाई बख्तावरसिंहके दर्मियान दोस्ती पुरानी और पक्की हुई, इस वास्ते इस दोस्तीके साबित और जाहिर करनेको जेनरल लॉर्ड लेक हुक्म देते है, कि ऊपर जिक्र किये हुए ज़िले बशर्त मंजूरी मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल लॉर्ड वेलजली बहादुर, महाराव राजाको उनके खर्चके लिये दियेजाये

जब मन्जूरी गवर्नर जेनरल बहादुरकी आजायेगी, तो दूसरी सनद इस सनदके एवज दीजायेगी, और यह लौटाई जायेगी

जबतक दूसरी सनद आए, उस वक्त तक यह सनद महाराव राजाके दख़्लमे रहेगी

पर्गनोंकी तफ्सील

पर्गनह इस्माईलपुर, मडावर, तअ़ल्लुका दर्बारपुर, रताय, नीमराना, बीजवाड, और गुहिलोत और सराय दादरी, लोहारु, बुधवाना, और बुदचलनहर

ता० २८ नोवेम्बर सन् १८०३ ई० मुताबिक १२ शअ़बान १२१८ हिज्री, और अगहन सुदी १५ सवत् १८६०

(दस्तखत) - जी० लेक

अह्दनामह नम्बर ७९

उस इक़ार नामहका तर्जमह, जो रावराजाके वकीलने किया

मैं अह्मदबख़्शखां उन पूरे इख्तियारातके रूसे, जो महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहने मुझको दिये हैं, और अपनी तरफ़से इक़ार करता हूं, कि एक लाख रुपया सर्कार अंग्रेज़ीको बाबत क़िले कृष्णगढ मए इलाके और सामानके, जो उसमें हो, दिया जायेगा, और पर्गने तिजारा, टपूकडा और कलतूमन, जो दादरी, बदवनोरा और भावनाकरजबके एवज मिले थे, महाराव राजाकी मुहर व दस्तखतसे दिये जायेंगे, और हमेशहके वास्ते लासवाडी नदीका बन्द, जिस क़द्र कि राजा भरतपुरके मुल्कके फ़ाइदहके वास्ते ज़रूरी होगा, खुला रहेगा, और महाराव राजा इस इक़ार नामहके मुवाफ़िक पूरा अ़मल करेंगे

जब एक इक़ार नामह महाराव राजाका तस्दीक किया हुआ आयेगा, तो यह काग़ज़ वापस होगा

यह कागज इक़ारनामहके तौर हस्ब ज़ाबितह समझा जावेगा. ता० २१ रजब सन् १२२० हिज्री.

तर्जमह सहीह है.

(दस्तखत) - सी० टी० मेटकाफ़,
एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

मुहर

अह्दनामह नम्बर ८०

इक्रारनामह महाराव राजा बख़्तावरसिंह रईस माचेडीकी तरफ़से, जो ता० १६ जुलाई सन् १८११ ई० को लिखा गया -

जो कि एकता और दोस्ती पूरी मज्बूतीके साथ सर्कार अंग्रेज़ी और महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहके दर्मियान क़रार पाई है, और चूंकि बहुत ज़रूर है, कि इसकी इत्तिला सब ख़ास व आमको हो, इसलिये महाराव राजा अपनी और अपने वारिसों व जानशीनोंकी तरफ़से इक्रार करते हैं, कि वह हर्गिज़ किसी गैर रईस और सर्दारसे किसी तरहका इक्रार या इत्तिफ़ाक़ अंग्रेज़ी सर्कारकी बगैर मर्ज़ी और इत्तिला के नहीं करेंगे इस निय्यतसे यह इक्रारनामह महाराव राजा सवाई बख़्तावरसिंहकी तरफ़से तह्रीर हुआ

ता० १६ जुलाई सन् १८११ ई० मुताबिक़ २४ जमादियुस्सानी सन् १२४६ हिज्री और ज़ाहिर हो, कि यह अह्दनामह, जो दोनों सर्कारोंके दर्मियान क़ाइम हुआ है, किसी तरह उस अह्दनामहको रद न करेगा, जो पहिले ज़ाबितह के मुवाफ़िक़ आपसमें तै हुआ है; बल्कि इससे उसकी और मदद और मज्बूती होगी

दस्तख़त- महाराव राजा बख़्तावरसिंह

मुहर महाराव राजा बख़्तावरसिंह

अह्दनामह नम्बर ८१

इक्रारनामह महाराव राजा सवाई बनेसिंहकी तरफ़से -

जो कि तिजारा, टपूकडा, रताय और मंडावर वगैरहके ज़िले पर्लोकवासी राव राजा बख़्तावरसिंहको अंग्रेज़ी सर्कारसे जेनरल लॉर्ड लेक साहिबकी सिफ़ारिशपर इनायत हुए थे, मैं इन ज़िलोंकी जमाके मुताबिक़ अपने भाई राजा बलवन्तसिंहको और उसके वारिसोंको हमेशहके लिये आधा नक्द और आधा इलाक़ह अंग्रेज़ी सर्कारकी हिदायतके मुवाफ़िक़ देता हूं; राजा इलाक़ह और रुपयेका मालिक रहेगा अगर राजा या उसकी औलादमेंसे कोई लावारिस इन्तिक़ाल करेगा, तो इलाक़ह अलवरमें शामिल होजायेगा, और अगर राजा या कोई उसकी औलादमेंसे किसी गैरको, जो उनका सुल्बी (औरस) न हो, गोद रक्खेंगे, तो ऐसे गोद लिये हुएको

मामूली इलाकह और रुपया नहीं दिया जावेगा जो इलाकह राजाको दिया जायेगा, वह अंग्रेज़ी इलाकहके पास और मिला हुआ होगा, और अंग्रेज़ी सर्कारकी हिफ़ाजतमें समझा जावेगा भाईचारेका बर्ताव मेरे और राजा मज्कूरके दर्मियान काइम और जारी रहेगा, और अंग्रेज़ी सर्कार मेरी और राजाकी तरफ़से इस इक़ारनामहकी तामीलकी ज़ामिन रहेगी

तारीख़ माघ सुदी ६ संवत् १८८२ मुताबिक़ १४ रजब सन् १२४१ हिज्री, और ता० २१ फ़ेब्रुअरी सन् १८२६ ई०

तर्जमह सहीह-
दस्तख़त-सी० टी० मेटकाफ़,
रेज़िडेण्ट.

मुहर

गवर्नर जेनरल बहादुरने इसको कौन्सिलके इज्लासमें तस्दीक़ किया ता० १४ एप्रिल सन् १८२६ ई०

अह्दनामह नम्बर ८२

अह्दनामह बाबत लेन देन मुज्रिमोंके ब्रिटिश गवर्मेण्ट और श्रीमान् सवाई शिवदानसिंह महाराव राजा अलवरके व उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान, एक तरफ़से कर्नेल विलिअम फ्रेडरिक ईडन एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने उन कुल इख्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको हिज़ एक्सेलेन्सी दि राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बेरोनेट, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से लाला उमाप्रसादने उक्त महाराव राजा सवाई शिवदानसिंहके दिये हुए इख्तियारोंसे किया

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाक़हमें संगीन जुर्म करके अलवरकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो अलवरकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी

शर्त दूसरी- कोई आदमी अलवरके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेज़ी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम गिरिफ्तार करके अलवरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो अलवरके राज्यकी रअय्यत न हो, और अलवरकी राज्य सीमामे कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेजी सीमामे आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुकद्दमहकी तहकीकात सर्कार अंग्रेजी की बतलाई हुई अदालतमे कीजायेगी, अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुकद्दमोका फैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमे होगा, कि जिसके तहतमे वारिदात होनेके वक्तपर अलवरकी पोलिटिकल निगरानी रहे

शर्त चौथी- किसी हालतमे कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जब तक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमे कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जो कि उस इलाकहके कानूनके मुवाफिक सहीह समझी जावे, जिसमे कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ्तारी दुरुस्त ठहरेगी; और वह मुज्रिम करार दियाजायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है

शर्त पांचवीं- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जायेंगे -

१- खून २- खून करनेकी कोशिश ३- वहशियानह कत्ल ४- ठगी ५- जहर देना ६- जिना बिल्जब्र (ज़बर्दस्ती व्यभिचार) ७- ज़ियादह ज़ख्मी करना ८- लडका बाला चुरालेना ९- औरतोका बेचना १०- डकैती ११- लूट. १२- सेंध (नकब) लगाना १३- चौपाया चुराना १४- मकान जलादेना १५- जालसाजी करना १६- झूठा सिक्कह चलाना. १७- खयानते मुज्रिमानह १८- माल अस्बाब चुरालेना १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमे मदद देना, या वर्गलाना

शर्त छठी- ऊपर लिखीहुई शर्तोंके मुताबिक मुज्रिमोको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमे, जो खर्च लगे, वह दर्ख्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पडेगा

शर्त सातवीं- ऊपर लिखाहुआ अहदनामह उस वक्त तक बर्करार रहेगा, जब तक कि अहदनामह करनेवाली दोनो सर्कारोमेसे कोई एक दूसरेको उसके रद करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे

शर्त आठवीं- इस अहदनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अहदनामहपर, जो दोनों सर्कारोके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अहदनामहके, जो कि इस अहदनामहकी शर्तोंके बर्खिलाफ़ हो

ता० १२ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को मकाम माउंट आबूपर तै किया

फार्सीमे

(दस्तख़त) - उमाप्रसाद,
वकील अलवरका

(दस्तख़त) - डब्ल्यू० एफ़्० ईडन,
एजेण्ट गवर्नर जेनरल

(दस्तख़त) - जॉन लॉरेन्स

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर ता० २९ ऑक्टोबर सन् १८६७ ई० को की

(दस्तख़त) - डब्ल्यू० म्यूर,
फ़ॉरेन सेक्रेटरी
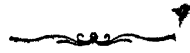
रियासत कोटाकी तारीख

जुग्राफ़ियह

यह रियासत राजपूतानहके पूर्वी दक्षिणी हिस्से हाडौतीमे बूंदीकी शाख गिनी जाती है इसका विस्तार उत्तर अक्षांश २४°- ३०′ और २५°- ५१′ और पूर्व देशान्तर ७५°- ४०′ से ७६°- ५९′ तक है इसके पश्चिम व उत्तरमे चम्बल नदीके पश्चिमी किनारेपर बूंदी और उदयपुर, दक्षिणको मुकन्दरा नाम घाटेकी पहाडिया व झालावाड, और पूर्वी हदपर इलाकह सेंधिया व छपरा इलाकह टौंक और झालावाड़ है, कुल रियासतकी लम्बाई दक्षिणसे उत्तरको करीब ९० मील और चौडाई पूर्वसे पश्चिमको अनुमान ८० मीलके है रकबह ३७९७ मील मुरब्बा, और करीब ५१७२७५ कुल आबादीमेसे ४७९६३४ हिन्दू, ३२८६६ मुसल्मान, २५ ईसाई, और ४७५० जैनी है खालिसेकी आमदनी पच्चीस लाख रुपया सालानह मेसे १८४७२० रुपया खिराज और २००००० रुपया कन्टिन्जेण्ट फौजके लिये सर्कार अंग्रेजीको दिया जाता है

मुल्कका सतह दक्षिणसे उत्तरकी तरफ़ ढालू है, और नदिया चम्बल, कालीसिन्ध, उजार और नेवज वगैरह बहती है, इनमे चम्बल और कालीसिन्ध बर्सातके दिनोमे पायाब नहीं होती, और कहीं बारह महीनो इनमे नावे चला करती है. पहाडो का एक सिल्सिलह अग्निकोणसे वायव्य कोणकी तरफ़ चलागया है, यह पहाड कोटा व झालावाडकी सर्हद भी होगया है, और मालवा व हाडौतीकी हद भी इसी पहाडसे गिनी जाती है इसीमे मुकन्दराका वह मश्हूर घाटा है, जिसको दक्षिणसे उत्तरका राजमार्ग कहना चाहिये जमीन इस मुल्ककी उपजाऊ और आबाद होनेपर भी आबो हवा खराब है गर्मीमे जियादह तेजीके सबब और बर्सातमे कीचड (दलदल) की खराब हवामे बीमारी फैलजाती है राजधानी कोटा चम्बल नदीके दाहिने किनारेपर एक शहर पनाहके अन्दर आबाद है; मुसाफिर लोग नदीकी तरफ़से किश्तियोमें बैठकर जासक्ते है शहरके पूर्व एक तालाब है, जिसके किनारेपर दरख्तोकी बहुतायतके सबब एक उम्दह और दिलचस्प मकाम नजर आता है चम्बल नदीके किनारेपर महारावके महल और एक बहुत बडा बुर्ज, जिसको छोटा क़िला कहना चाहिये, एक छोटी गढीके अन्दर बहुत उम्दह बने हुए है. ज्यो ज्यो शहरकी आबादी बढती गई, वैसे ही शहरपनाहकी दीवारोसे जुदे जुदे अन्दरूनी हिस्से होगये है; शहरमे बहुतसे हिन्दुओके मन्दिर है, और धनवान लोग भी ज़ियादह आबाद है.

कोटेकी निज़ामतें.

१- लाड पुरया- कोटेसे आध कोस पूर्व दिशामें है २- दीगोद- कोटेसे ८ कोस पूर्व दिशामें ३- बड़ोद- कोटेसे १२ कोस पूर्व दिशामें ४-बारा- कोटेसे २० कोस दक्षिण पूर्वमें ५- किशन गंज- कोटेसे ३० कोस उत्तरमें ६- मांगरोल- कोटेसे ३० कोस उत्तर पूर्वमें ७- अटव्यावा- कोटेसे २५ कोस पूर्वोत्तरमें ८- अणता- कोटेसे १५ कोस उत्तरमें ९- खानपुर- कोटेसे ३० कोस पूर्व दिशामें १०- शेरगढ- कोटेसे २५ कोस उत्तर दिशामें ११- कनवास- कोटेसे २० कोस दक्षिण दिशामें १२- घाटोली- कोटेसे १५ कोस दक्षिणमें १३- नाहरगढ- कोटेसे ३० कोस पूर्व दिशामें १४- सांगोद- कोटेसे १७ कोस उत्तरमें १५- कुंजेड़- कोटेसे २५ कोस पूर्वमें है
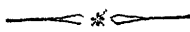
मश्हूर क़िले

१- शेरगढ- यह क़िला कोटेसे २५ कोस परवण नदीपर वाके है २- गागरूण- कोटेसे २० कोस अग्नि कोणमें अउ, अमजार और कालीसिंध तीन नदियोंके बीचमें वाके है ३- भमर गढ- कोटेसे ३० कोस अग्नि कोणमें सीताबाड़ीसे १ कोसपर है ४- नाहरगढ- कोटेसे ३० कोस अग्नि कोणमें है ऊपर लिखे क़िलूआंके सिवा कई छोटे क़िले नीचे लिखे हुए मकामातपर हैं - अणता- अटरू- अट्यावा- मांगरोल- रावठा- नानता- मुकन्दरा- घाटोली- मधुकरगढ़- बारा वगैरह
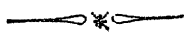
प्रख्यात और मज़्हबी जगह

१- गेपरनाथ महादेव- कोटेसे ५ कोसपर है २- गराडीनाथ महादेव- चम्बलके पश्चिम किनारेपर ३- कर्णेश्वर महादेव- कोटेसे २ कोस पूर्व तरफ़ कसवा गावमें है ४- कपिलधारा- नाहरगढके नज़्दीक ५- अधरशिला- अमर निवासके नज़्दीक कोटेसे आध कोस ६- काकड़दाकी माता- कोटेसे पूर्व दिशामें है ७- कर्णाका महादेव- कोटेसे २ कोस अग्निकोणमें ८- महादेव चार चौमाका- चतुर्मुख, कोटेसे ८ कोस पूर्व दिशामें ९- बालाजी रंगबाडी- कोटेसे २ कोस दक्षिणमें १०- कृष्णाई माताजी- कोटेसे २० कोस पूर्व रामगढमें ११- मठ्ठे साहिब- गागरूणमें १२- गेपीरजी- गराडीके पास
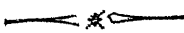
तारीख़

प्राचीन कालमे यहा नागवशी और मौर्यवशी राजाओका राज्य रहा था, जिनके दो पाषाण लेख हमको मिले है, और जिनकी नक्लें शेष सग्रहमे दी गई है

कोटाके राजा चहुवान जातके हाडा गोत्रमे बूदीकी शाख कहलाते है उनके मूल पुरुष बूदीके राव रत्नके छोटे बेटे माधवसिह थे, जिनको विक्रमी १६८८ [हि० १०४१ = ई० १६३१] मे जुदी रियासत मिलनेका हाल 'बादशाह नामह' की पहिली जिल्दके ४०१ पृष्ठमे इस तरहपर लिखा है -

"बालाघाट, मुल्क दक्षिणके लश्करकी अर्जियोसे बादशाही हुजूरमे मालूम हुआ, कि राव रत्न हाडाकी जिन्दगीके दिन पूरे हो गये, इस लिये कद्रदान बादशाहने उसके पोते शत्रुशालको, जो उसका वलीअह्द था, तीन हजारी जात और दो हजार सवारका मन्सब और रावका खिताब देकर बूदी और खटकड और उस तरफके पर्गने, जहा राव रत्नका वतन था, उसकी जागीरमे इनायत किये, और मिहर्बानीके साथ फर्मान भेजकर उसको बादशाही दर्गाहमे तलब फर्माया राव रत्नके बेटे माधवसिहको पाच सौ जात और सवारकी तरक्कीसे ढाई हजारी जात और डेढ हजार सवारका मन्सब देकर पर्गनह कोटा और फलायता उसकी जागीरमे मुकर्रर किया"

बूदीकी तवारीख वशभास्कर और वशप्रकाशमे इस रियासतके जुदा होनेका सबब और तरहसे लिखा है, और कोटावाले अपनी तवारीखमे जुदा ही ढग जाहिर करते है उदयपुरमे प्रसिद्ध है, कि महाराणा जगत्सिहकी सिफारिशसे माधवसिह को कोटा मिला किसी तरहसे हो, परन्तु बढावेसे खाली नहीं है, इसलिये लाचार हमको फार्सी तवारीखोका आसरा लेना पडा अल्बत्तह यह तवारीखे भी मुसल्मानोकी बडाईके साथ लिखी गई है, परन्तु साल सवत्की दुरुस्ती और तारीखके ढगसे लिखेजानेके सबब मुवर्रिख़ लोग उन्हीपर सब्र करते है 'मआसिरुलउमरा' मे माधवसिहका हाल इस तरहपर लिखा है -

"माधवसिह हाडा, राव रत्नका दूसरा बेटा है शाहजहाके पहिले साल जुलूस हिज्री १०३७ [वि० १६८४ = ई० १६२८] को उसका अगला मन्सब हजारी छ सौ सवारका बहाल रहा. दूसरे साल खानेजहा लोदीका पीछा करनेका हुक्म पाया तीसरे साल जुलूसमे, जब बादशाह दक्षिणको गया था, और एक फौज, जिसका सर्दार शायस्तहखा था, फिर सय्यद मुजफ्फ़रखा हुआ, और जो खानेजहा लोदीके सजा देनेको तईनात हुई थी, उसमे यह राजा भी

उनके साथ मुक़र्रर हुआ था उन दिनो खानेजहाने दक्षिणसे निकलकर मालवेकी राह ली, सो यह खूब तलाश करके उसतक जा पहुंचा वह भी लाचार घोडेसे उतर पडा, और लडाई हुई. इसमे माधवसिंहने, जो सय्यद मुजफ्फ़रखाका हरावल था, खानेजहाके बर्छा मारा, जिससे उसका काम तमाम हुआ राजाको इस उम्दह चाकरीके एवजमे अस्ल व इजाफ़ह समेत दो हजारी हजार सवारका मन्सब और निशान मिला इसी सालमे इसका बाप राव रत्न मरगया, तो बादशाहने इसको अगले मन्सबपर पाच सदी ज़ात पाच सौ सवारकी तरक्की दी, और पर्गनह कोटा व फलायता जागीरमे बख़्शा"

"छठे साल जुलूस हिज्री १०४२] वि० १६८९ = ई० १६३३] मे यह सुल्तान शुजाअ्के साथ दक्षिणको गया जब महाबतखा दक्षिणका सूबहदार मरगया, तो यह खानेदौरा सूबहदार बुर्हानपुरके साथ तईनात हुआ, और जब कि साहू भोसलेने दौलताबादकी तरफ फसाद उठाया, तो खानेदौरां एक फौजके साथ उसके तदारुकको रवानह हुआ इसको बुर्हानपुर शहरकी हिफाजतके वास्ते छोडगया"

"सातवे साल जुलूस हिज्री १०४३ [वि० १६९० = ई० १६३४] में खानेदौराके साथ जुझारसिंह बुंदेलेकी सजादिहीपर मुक़र्रर हुआ, जब उसके मुल्कमे पहुचे, उस दिन बहादुरखा रुहेलेका चचा नेकनाम लडाई करके बीचमे जख्मी पडा था, माधवसिंहने उसी जगहसे बाग उठाई, बहुतसे उन बागियोको जानसे मारा, और कितनोको भगादिया जब वे लोग अपने बालबच्चोका जौहर करनेमे थे, तब माधवसिंहने खानेदौराके बडे बेटे सय्यद मुहम्मदके साथ उनपर दौड की, और बहुतसोको मारडाला जब माधवसिंह बादशाही हुजूरमे आया, तो अस्ल व इजाफह समेत उसका मन्सब तीन हजारी एक हजार छ सौ सवार हुआ"

"नवे साल जुलूस हिज्री १०४५ [वि० १६९२ = ई० १६३५] मे जब बादशाह बुर्हानपुरमे आया, और साहू भोसलेकी सजादिही, और आदिल-खानियोका मुल्क लेनेके वास्ते तीन फौजे तीन सर्दारोके साथ मुक़र्रर हुई, तो माधवसिंह खानेदौरा बहादुरके साथ तईनात हुआ"

"दसवे साल जुलूस हिज्री १०४६ [वि० १६९३ = ई० १६३६] मे बादशाहके हुजूरमें आया, तो अस्ल व इजाफह मिलाकर तीन हजारी दो हजार सवारका मन्सब हुआ"

"ग्यारहवे साल जुलूस हिज्री १०४७ [वि० १६९४ = ई० १६३७] मे सुल्तान मुहम्मद शुजाअ्के साथ काबुलको गया"

"तेरहवे साल जुलूस हिज्री १०४९ [वि० १६९६ = ई० १६३९] मे सुल्तान मुरादबख़्शके साथ फिर काबुलको गया."

"चौदहवे साल जुलूस हिज्री १०५० [वि० १६९७ = ई० १६४०] मे जब शाहजादह वापस लौटा, और यह दर्बारमे हाजिर हुआ, इसको तीन हजारी ढाई हजार सवारका मन्सब मिला"

"सोलहवे साल जुलूस हिज्री १०५२ [वि० १६९९ = ई० १६४२] मे ५०० सवारका इजाफह पाया"

"अठारहवे साल जुलूस हिज्री १०५४ [वि० १७०१ = ई० १६४४] मे जब अमीरुल उमरा सूबहदार काबुलको बदख्शा लेनेका हुक्म हुआ था, तो यह उसकी मददको मुकर्रर हुआ पीछे सुल्तान मुरादबख्शकी खिद्मतमे बल्खको गया, जब सुल्तान मुरादबख्श बल्खको छोडआया, और सुल्तान औरंगजेब उसकी जगह मुकर्रर हुआ, तब इसने उम्दह खिद्मते की, और कुछ मुद्दतके लिये बल्खके किलेकी हिफाजतपर मुकर्रर रहा जब बादशाहके हुक्मके मुताबिक शाहजादह ओरंगजेब बल्खका मुल्क वहाके अगले मालिकको सौपकर वहासे लौटा, तो माधवसिंह काबुल पहुचने बाद हुक्मके मुवाफिक शाहजादहसे रुख्सत होकर इक्कीसवे साल जुलूस हिज्री १०५७ [वि० १७०४ = ई० १६४७] मे बादशाहके हुजूरमे पहुचा, और वहासे रुख्सत लेकर वतनको गया उसने इसी सालमे इस दुन्यासे कूच किया"

कर्नेल टॉडने माधवसिंहका जन्म विक्रमी १६२१ [हि० ९७१ = ई० १५६४] मे और मृत्यु विक्रमी १६८७ [हि० १०३९ = ई० १६३०] मे लिखा है, लेकिन् यह नही होसक्ता, क्योंकि विक्रमी १६८८ [हि० १०४० = ई० १६३१] मे जब उनके बाप रत्नसिंहका इन्तिकाल हुआ, तब इनको कोटा और फलायता मिला, विक्रमी १७०४ [हि० १०५७ = ई० १६४७] मे माधवसिंहका इन्तिकाल होना उसी जमानेकी किताब बादशाहनामहमे लिखा है, सिवा इसके अक्बरनामहमे अबुल्फज्ल लिखता है, कि जब रणथम्भोरका किला अक्बर बादशाहने फत्ह किया, तब विक्रमी १६२५ [हि० ९७५ = ई० १५६८] मे बूंदीके राव सुर्जणके बेटे दूदा और भोज बादशाहकी खिद्मतमे हाजिर होगये, उस वक्त उनकी उम्र शुरू जवानीपर थी भोजका पोता माधवसिंह है, जिससे कर्नेल टॉडके लेखपर यकीन नही होसक्ता. माधवसिंहके पाच बेटे थे- १- मुकुन्दसिंह, २- मोहनसिंह, ३- कान्हसिंह, ४- जुझारसिंह, ५- किशोरसिंह इनमेसे बडे मुकुन्दसिंह गादी बैठे, उनसे छोटे मोहनसिंहको फलायता, कान्हसिंहको कोयला, जुझारसिंहको कोटडा, और किशोरसिंहको सांगोद जागीरमे मिला यह हाल कोटेकी तवारीखसे लिखागया है

मुकुन्दसिंहका हाल मआसिरुल उमरामे इस तरहपर लिखा है -

"मुकुन्दसिंह हाडा माधवसिंहका बेटा है, वह अपने बापके मरने बाद

इक्कीसवे जुलूस शाहजहानीमे हुजूरमे आया, दो हजारी और डेढ हजार सवारका मन्सब और वतन जागीरमे मिला फिर पाच सौ सवारका इजाफह हुआ बाईसवे साल जुलूस हिज्री १०५८ [वि० १७०५ = ई० १६४८] मे सुल्तान औरंगजेबकी खिझतमे कन्धारकी लडाईपर गया, जब वहासे लौटा, तो २५ वे जुलूस हिज्री १०६१ [वि० १७०८ = ई० १६५१] मे पाच सौ जातका इजाफह और नकारह निशान मिला इसी सालमे सुल्तान औरंगजेबके साथ दोबारह कन्धारको गया, और २६ साल जुलूस हिज्री १०६२ [वि० १७०९ = ई० १६५२] मे सुल्तान दाराशिकोहके साथ कन्धार गया जब वहासे लौटा, तो अस्ल व इजाफह समेत तीन हजारी दो हजार सवारका मन्सब हुआ

२८ साल जुलूस हिज्री १०६४ [वि० १७११ = ई० १६५४] मे सादुल्लाहखाके साथ किले चित्तौडके बिगाडनेको तईनात हुआ, और ३१ वे जुलूस हिज्री १०६७ [वि० १७१४ = ई० १६५७] मे महाराजा जशवन्तसिंहके साथ, जब वह सुल्तान औरंगजेबके रोकनेको मालवेपर तईनात हुआ था, मुकर्रर हुआ इसने अपने छोटे भाई मोहनसिंह सहित लडाईके दिन ऐसी जुरूत की, कि हरावल फौजके मुकाबिल तोपखानहसे बढगया, और ऐसी कोशिश की, कि कारनामह रुस्तमका दिखा दिया आखिर इन दोनो भाइयोने आबरूके साथ जाने वारदी, याने हिज्री १०६८ [वि० १७१५ = ई० १६५८] मे मारेगये "

कोटेकी तवारीखमे इनका इतना हाल जियादह लिखा है, कि मुकुन्दसिंहने अपने मुल्ककी दक्षिणी हदके पहाडी घाटेमे किला और शहर आबाद करके उसका नाम मुकन्दरा रक्खा, और आखिरी वक्त महाराजा जशवन्तसिंहके मददगारोमे अपने चारो छोटे भाइयो समेत तईनात हुआ फतूहाबादमे विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ [हि० १०६८ रमजान = ई० १६५८ जून] मे औरंगजेबसे मुकाबलह करके बडी बहादुरीके साथ मुकुन्दसिंह, मोहनसिंह, कान्हसिंह, जुझारसिंह चारो भाई मारेगये, और पाचवा किशोरसिंह ४२ जख्म खाकर जिन्दह बचा किसी कविने मारवाडी भाषामे उस वक्त एक गीत कहा था, जो यहापर दर्ज किया जाता है -

गीत

प्रथम मुकन मोहण अणी घणी जूझार पण, सही भड किसोवर कान्ह साथै ॥
अथग अवरग अलग ढीलडी आवता, मधारा रावता लीध माथै ॥ १ ॥
उरेडे सेन सारसगडै ऊपडै, जागिया रुडै घण सबद जाडा ॥
काळ दखणादरा दळीसर दाकलै, हाकलै आणिया सीस हाडा ॥ २ ॥

लगस फौजा गजा बलो बल लूबिया, साचरे हिया कहै भडा साचा ॥
उरसरीगजा साही सरस ऊतरै, पाधरा ओढिया कमळ पाचा ॥ ३ ॥
किसवटे रणबटै थटै अवरग कसै, अवर सह धरहरै फरहरै आच ॥
पाचनर नीमटै नाहि सारी पृथी, पेट हेकण तणा नीमटै पाच ॥ ४ ॥
बेस चाढे जहर रमा आवध बगल, स्याम ध्रम पार पाडे सऊजा ॥
सार अडबड थका उपाडे किसोवर, देवपुर च्यार गा रतन दूजा ॥ ५ ॥

मुकुन्दसिंहके सिर्फ एक बेटे जगत्सिंह थे, जो चौदह वर्षकी उम्रमे कोटाकी गादीपर बैठे मआसिरुल उमरामे लिखा है, कि मुकुन्दसिंहका बेटा जगत्सिंह अह्द आलमगीरीमे दो हजारी मन्सब और वतनकी सर्दारी पाकर मुद्दत तक दक्षिणमे तईनात रहा

जब जगत्सिंह विक्रमी १७४० [हि० १०९४ = ई० १६८३] मे गुजरे, और उनके कोई औलाद न रही, तब रियासती लोगोने कोयलाके कान्हसिंह माधवसिंहोतके बेटे पेमसिंहको गादीपर बिठादिया, लेकिन यह चाल चलन खराब होनेके सबब तेरह महीने बाद खारिज कियागया, और माधवसिंहके पाचवे बेटे किशोरसिंहको गादी मिली इनका हाल मआसिरुल उमरामे इस तरहपर दर्ज है -

"जब मुकुन्दसिंह हाडेका बेटा जगत्सिंह २५ वे साल जुलूस आलमगीरी हिज्री १०९२ [वि० १७३८ = ई० १६८१] मे मरगया, और उसके कोई बेटा नही रहा, तो बादशाहने कोटेकी हुकूमत मुकुन्दसिंहके भाई किशोरसिंहको, जो जगत्सिंका चचा था, अता फर्माई, और किशोरसिंह, मुहम्मद आजमके साथ बीजापुरकी लडाईपर तईनात हुआ जिस दिन कि अल्लाहवर्दीखाका बेटा अमानुल्लाह काम आया, इसने भी जख्म उठाया ३० वे साल जुलूस हिज्री १०९७ [वि० १७४३ = ई० १६८६] मे सुल्तान मुअज्जमके साथ हैदराबादकी तरफ गया ३६ वे साल जुलूस हिज्री ११०४ [वि० १७४९ = ई० १६९३] मे इसको नक्कारह इनायत हुआ इसके बाद किशोरसिंह गुजरगया जुल्फिकारखा बहादुरकी अर्जके मुवाफिक कोटेकी हुकूमत उसके बेटे रामसिंहको, जो वतनमे था, मिली"

कोटेकी तवारीखमे यह हाल जियादह लिखा है, कि सिन्सिनीके जाटोकी बगावत मिटानेके लिये आलमगीरने अपने पोते शाहजादह बेदारबख्तके साथ राव किशोरसिंहको भेजा, यह वहा बडी बहादुरीके साथ लडकर जख्मी हुए इनके साथ वालोमेसे घाटीका रावत् तेजसिंह, राजगढका आपजी गोवर्धनसिंह, पानाहेडाका ठाकुर सुजानसिंह सोलखी, तारजका ठाकुर राजसिंह वगैरह मारेगये यह जख्मी

हालतमे अपनी राजधानी कोटेको आये, और कुछ अरसह बाद आलमगीरने इनको दक्षिण मे बुलाया ये बीमारीसे लाचार थे, इस सबबसे इन्होने अपने बडे बेटे विष्णुसिह को जानेके लिये कहा, लेकिन् वह टालगया, और इसी तरह दूसरे बेटे हरनाथसिहने भी बहाना ढूढा, तब तीसरे बेटे रामसिहको कहा, जो पिताके हुक्मके मुवाफिक खुशीसे रवानह होकर बादशाहके पास पहुचा कुछ दिनो बाद किशोरसिह भी बीमारीसे फुर्सत पाकर बादशाही खिद्मतमे जा हाजिर हुए, और विक्रमी १७५२ [हि० ११०६ = ई० १६९५] मे अर्काटके हमलेमे बडी बहादुरीके साथ मारेगये इनके बेटे रामसिह, जो जख्मी होकर जिन्दह बचे, वह गद्दीपर बैठे

५ - राव रामसिह

रामसिह जख्मोसे तन्दुरुस्त होकर आलमगीरके पास दर्बारमे गये, तब बादशाहने इनसे दर्याफ्त किया, कि किशोरसिहका हक्दार कौन है ? रामसिहने जवाब दिया, कि बडे विष्णुसिह, दूसरे हरनाथसिंह है, और तीसरे नम्बरपर मै हू बादशाहने कहा, कि जिसने अपने बापके साथ सर्कारी खिद्मतमे जख्म उठाये, वही उसका हक्दार है रामसिहने सलाम किया, और बादशाहने उसको किशोरसिंहका वारिस बनाया

कोटेमे विष्णुसिहने गद्दीपर बैठकर सुना, कि रामसिह बादशाही मदद लेकर आता है, तो वह भी अपनी जमइयतसे मुकाबलेको चले, गाव आवाके पास लडाई हुई, जिसमे विष्णुसिह जख्मी हुआ, और हरनाथसिह मारागया, रामसिहने फत्हयाबीके साथ कोटेपर कब्जह करलिया विष्णुसिह अपनी ससुराल मेवाडके इलाके पडेरमे पहुचा, वहाके राणावतोने उसकी अच्छी खातिर की, और तीन वर्ष बाद वह उसी जगह मरगया विष्णुसिहके एक बेटा पृथ्वीसिह था, जिसको रामसिहने बुलवाकर अणता जागीरमे दिया, और इसी तरह हरनाथसिहके बेटे कुशलसिंहको सागोद इनायत किया

मआसिरुल उमरामे राव रामसिहका हाल इस तरहपर लिखा है -

" रामसिह हाडा, माधवसिह हाडेका पोता है जब जगत्सिह, मुकुन्दसिंह हाडेका बेटा २५ वे साल जुलूस आलमगीरी हिज्री १०९३ [वि० १७३९ = ई० १६८२] मे गुजरगया, और उसके कोई बेटा न रहा, तो बादशाहने कोटेकी हुकूमत मुकुन्दसिहके भाई किशोरसिहको, जो जगत्सिंहका चचा था, इनायत फर्माई किशोरसिह शाहजादह मुहम्मद आजमके हमाह बीजापुरकी लडाईपर

तईनात हुआ जिस दिन, कि अल्लाहवर्दीखाका बेटा अमानुल्लाहखा काम आया, इसने भी जख्म उठाया ''

''३० वे साल जुलूस हिज्री १०९८ [वि० १७४४ = ई० १६८७] मे वह सुल्तान मुअज्जमके साथ हैदराबादकी तरफ गया, ३६ वे साल जुलूस हिज्री ११०४ [वि० १७४९ = ई० १६९२] मे नक्कारह इनायत हुआ फिर किशोरसिंह गुजर गया, जुल्फिकारखा बहादुरकी अर्जके मुवाफिक कोटेकी हुकूमत उसके बेटे रामसिंहको, जो वतनमे था, मिली रामसिंहने अव्वल ढाई सदी, दोबारह छ सदी और पीछे हजारीका मन्सब पाया वह हमेशह जुल्फिकारखाके साथ तईनात रहा, और सताके बेटे राणू वगैरह मरहटोकी सजादिहीमे मश्गूल था ४४ वे साल जुलूस हिज्री ११११२ [वि० १७५७ = ई० १७००] मे नक्कारह मिला, ४८ वे साल जुलूस हिज्री १११६ [वि० १७६१ = ई० १७०४] मे ढाई हजारी मन्सब पाया, और मऊ मैदानाकी जमीदारी राव बुद्धसिंहसे उतारकर उसको दीगई, जिसकी यह बडी आर्जूमे था उसको एक हजार सवार रखनेका हुक्म हुआ, और उसने आलमगीरके इन्तिकालपर आजमशाहकी हवाही इरितयार की, वह चार हजारी मन्सब पाकर लडाईके दिन सुल्तान अजीमुश्शानके मुकाबलेमे बडी मर्दानगीसे मारा गया उसके पीछे उसके बेटे भीमसिंहने वतनकी सर्दारी पाई ''

'' हिज्री ११३१ [वि० १७७६ = ई० १७१९] मे, जब सय्यद दिलावर-अलीखाकी निजामुल्मुल्क आसिफजाहसे लडाई हुई, और उसमे सय्यद दिलावर-अलीखा मारा गया, तब यह (भीमसिंह) जान बचाकर न भागा, और इसने बडी मर्दानगीसे लड़कर जान देदी पीछे इसका पोता गुमानसिंह, शत्रुसाल व दुर्जनशाल कोटेके मालिक हुए ''

रामसिंहका जिक्र कोटाकी तवारीखमे भी बहुत है, पर उसका खुलासह मआसिरुल उमराके लेखमे आचुका है, और राव रामसिंहके मारेजानेका हाल महाराणा दूसरे अमरसिंहके बयान व बहादुरशाहके जिक्रमे तफ्सीलवार लिखागया है- (देखो पृष्ठ ९२९) इनके एक बेटे भीमसिंह थे

६ – महाराव भीमसिंह

जब राव रामसिंह सुल्तान आजमके साथ बहादुरशाहके मुकाबलहपर मारेगये, तब बूंदीके राव बुद्धसिंह बहादुरशाहकी तरफ़ थे, उन्होने कोटेको अपनी रियासतमें

मिलालेना सोचकर बहादुरशाहसे उस जागीरका फर्मान अपने नाम लिखा लिया, और अपने मुलाज़िमोंको लिख दिया, कि फ़ौज लेजाकर कोटा खाली करालो. हाडा जोगीराम वगैरह बूंदीसे फ़ौज लेकर चढ़े, पच्चीस वर्षकी उम्रका राव भीमसिंह भी अपनी जमइयतके साथ कोटासे चला. पांच कोसपर पाटणके पास मुकाबलह हुआ, बूंदीकी फ़ौज शिकस्त खाकर भाग गई. बहादुरशाहको राजपूतानहका फ़साद बढ़ाना मन्ज़ूर नहीं था, क्योंकि उसको दक्षिणकी तरफ़ शाहज़ादह कामबख़्शका मुकाबलह दर्पेश था.

कोटा और बूंदीके विरोधका सविस्तर हाल बूंदीके मिश्रण सूर्यमल्लने अपनी किताब वंशभास्करमें लिखा है, और विरोध शुरू करनेका कारण बुधसिंहको ठहराकर उनकी शिकायत की है, लेकिन् हम इन दोनों रियासतोंकी नाइत्तिफ़ाक़ीका बानी (जड़) राव बुधसिंहको नहीं कहसक्ते, क्योंकि अव्वल माधवसिंहने कोटा व फलायता वगैरह पर्गने बूंदीसे जुदा करालिये, दूसरे राव रामसिंहने मऊ मैदानाके पर्गने बूंदीसे छीनकर आलमगीरके हुक्मसे अपनी रियासतमें शामिल करलिये, तब राव बुधसिंहने भी इस वक्त कोटा छीन लेनेकी कोशिश की, लेकिन् हम यह इल्ज़ाम बुधसिंहकी निस्बत लगा सक्ते हैं, कि इस समय वह कोटापर इह्सान दिखलाकर भीमसिंहको अपना दोस्त बनासक्ता था, इस मिलापसे दोनों रियासतें आनेवाली आफ़तोंसे बची रहतीं.

राव भीमसिंहको भी यह फ़िक्र हुई, कि दक्षिणसे आनेपर बहादुरशाह ज़रूर फ़ौज भेजेंगे, लेकिन् ईश्वरकी कुद्रतसे बादशाहको सीधा दक्षिणसे पंजाबको जाना पड़ा, जहां सिक्खोंने बड़ी भारी बगावत कर रक्खी थी. बहादुरशाह तो उसी तरफ़ बीमारीसे मरगये, और थोड़े दिनोंतक जहांदारशाहकी बादशाहत रही. फिर भीमसिंहने फ़र्रुख़सियरके अह्दमें हुसैनअलीखां अमीरुलउमराको अपना मददगार बनाया, यहांतक, कि फ़र्रुख़सियरको तख़्तसे उतारनेमें यह भी सय्यदोंके शरीक थे. आख़िरकार मुहम्मदशाहके शुरू अह्दमें सय्यदों और तूरानियोंमें नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ी, उसका हाल मुहम्मदशाहके ज़िक्रमें लिखा गया है- (देखो पृष्ठ ११४३-४४)

बूंदीसे बदला लेनेके बहानेसे सय्यदोंने राव भीमसिंहको बहुत बड़ा मन्सब और फ़ौज देकर भेजा, और इशारह यह था, कि निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगपर चढ़ाई करनेको तय्यार रहे. महाराव भीमसिंहने हाड़ौती पहुंचकर बूंदीपर क़ब्ज़ह करलिया, और बहुतसे ज़िले मालवा व गिर्दनवाहके अपनी रियासतमें मिला लिये. फिर महाराव वगैरह निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगसे मुकाबलह करनेको चले. इसका हाल मुन्तख़बुल्लुबाबमें ख़फ़ीख़ानें इस तरहपर लिखा है -

"हिज्री ११३२ [वि० १७७७ = ई० १७२०] में कोटेके महाराव

भीमसिंह हाडा और नर्वरके राजा गजसिंह कछवाहेकी तबाहीका बडा मुआमलह पेश आया, जो सय्यद दिलावरअलीखां और आलमअलीखांके हमाह फ़ौज और सामानकी ज़ियादतीके सबब अमीरुलउमरा हुसैनअलीखांकी मददगारीका बडा दम भरते थे हुसैनअलीखां बादशाही बख़्शीने महाराव भीमसिंहसे इक़ार किया, कि बूंदीके ज़मीदार सालिमसिंहकी सज़ादिही और निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगका मुआमलह तै होने बाद उसको 'महाराजा' का ख़िताब और जोधपुरके अजीतसिंहके बाद दूसरे राजाओंसे ज़ियादह इज़्ज़त दीजावेगी उसको सात हज़ारी मन्सब और माही मरातिब देकर राजा गजसिंह नर्वरी और दिलावरअलीखां वगैरहके साथ १५००० पन्द्रह हज़ार जर्रार सवारों समेत मुक़र्रर किया, कि सालिमसिंहके ख़ारिज करनेको बहाना बनाकर मालवेकी तरफ़ निज़ामुल्मुल्कके हालसे ख़बरदार रहे, और जल्द इशारह होनेपर उसका काम तमाम करे इन लोगोंने बूंदी क़ब्ज़ेमें लाकर हुसैनअलीखांको कार्रवाईसे ख़बर दी; उसने ताकीद की, कि जिस वक़्त मौक़ा पावे, आलमअलीखांसे मिलकर निज़ामका मुआमलह तै करे दिलावर अलीखां बूंदी लेने बाद राजा भीमसिंह व गजसिंह समेत मालवेमें पहुंच गया निज़ाम पहिले ही दक्षिणमें जमाव करनेके लिये चलदिया था दिलावरअलीखां वगैरहने निज़ामके आदमियोंको मालवेमें क़ैद और क़त्ल करना शुरू किया, और बुर्हानपुरकी तरफ़ रुजू हुए निज़ामने यह हाल सुनकर बहुत जल्द बुर्हानपुरके शहर व आसीरगढको अपने क़ब्ज़ेमें लिया इसपर हुसैनअलीखांने दिलावरअलीखां और महाराव भीमसिंहको निज़ामके मुक़ाबलहकी सख़्त ताकीद लिखी"

"बुर्हानपुरसे सत्तरह अठारह कोसके फ़ासिलेपर निज़ाम अपना तोपख़ानह और फ़ौज लेकर दिलावरअलीखां और महाराव भीमसिंहके मुक़ाबलेपर आपहुंचा हिज्री ११३२ ता० १३ शअ्बान [वि० १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १५ = ई० १७२० ता० २० जून] को दोनों तरफ़से मुक़ाबलेकी तय्यारी होगई शुरूमें निज़ामकी फ़ौज हटनेको थी, लेकिन् एवज़खां हरावलकी दिलेरीसे जमगई, कई बार दोनों तरफ़से हार जीतकी सूरत पेश आती रही, आख़िरमें दिलावरअलीखांकी हरावल फ़ौजमेंसे शेरखां और बाबरखां कारगुज़ार मारे गये, और दिलावरअलीखां भी, जो हाथीपर आगे बढगया था, गोला लगनेसे मारा गया इनकी फ़ौजके कुछ पठान वगैरह भाग निकले, लेकिन् राजा भीमसिंह व गजसिंहने यह शर्म पसन्द न की, अपने राजपूतों समेत हाथी घोडोंसे उतर कर ख़ास निज़ामकी फ़ौजपर हमलह करने लगे मरहमतखां, निज़ामकी बाईं फ़ौजका अफ़्सर दोनों राजपूतोंपर एकदम टूट पडा, और उसने एक धावेमें चार सौ

राजपूतोंको बेजान किया. निज़ामके मुकाबलहपर कुल चार पांच हज़ार हिन्दू मुसल्मान सवार क़त्ल हुए, भागनेको बहुत कम बचे. निज़ामुल्मुल्क फ़त्हजंगकी फ़ौजने फ़त्हका नक्कारह बजाया. निज़ामकी तरफ़से बदख़्शीख़ां और दिलेरख़ांके सिवा, जो अपने साथियों समेत काम आये, कोई नामी सर्दार नहीं मारागया. निज़ामके हाथ बहुतसा तोपख़ानह और सामान आया. इसके बाद अब्दुल्लाहख़ां वज़ीर व हुसैनअलीख़ां बख़्शीने बादशाहको साथ लेकर निज़ामपर चढ़ाईका इरादह किया."

जब महाराव भीमसिंह विक्रमी १७७७ ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ११३२ ता० १३ शश्रूवान = ई० १७२० ता० २० जून] को मारे गये, उस वक्त उनके तीन बेटे, अर्जुनसिंह, श्यामसिंह, और दुर्जनशाल थे, जिनमेंसे बड़े अर्जुनसिंह कोटेकी गद्दीपर बैठे. भीमसिंहके पीछे कोटेमें दो राणियां और पांच खवासें, कुल सात औरतें सती हुई.

७- महाराव अर्जुनसिंह

इन्होंने माधवसिंह झालाकी बहिनके साथ शादी की थी. यह थोड़े ही दिनों जिन्दह रहकर विक्रमी १७८० [हि० ११३५ = ई० १७२३] में इस दुन्या को छोड़गये. इनके कोई औलाद न होनेके कारण उनकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ उनके तीसरे भाई दुर्जनशालको गद्दी मिली.

८- महाराव दुर्जनशाल

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १७८० मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० ११३६ ता० १९ सफ़र = ई० १७२३ ता० १८ नोवेम्बर] को हुआ. इस वक्त श्यामसिंह नाराज़ होकर महाराजा जयसिंहके पास जयपुर चलेगये. महाराजा जयपुर पहिलेसे कोटाके बर्ख़िलाफ़ थे, क्योंकि महाराव भीमसिंह हुसैनअलीख़ांकी हिमायतसे जयपुरकी बर्बादीको तय्यार हुए थे, इस समय जयसिंहने श्यामसिंहको अपनी पनाहमें रखलिया.

विक्रमी १७८५ [हि० ११४० = ई० १७२८] में जयपुर वालोंने श्यामसिंहको फ़ौजकी मदद देकर कोटा लेनेके लिये भेजा. अत्रालिया गांवके पास महाराव दुर्जनशालसे मुक़ाबलह हुआ, श्यामसिंह लड़कर मारागया, जिसकी छत्री अत्रालिया गांवमें मौजूद है.

विक्रमी १७९१ [हि० ११४७ = ई० १७३४] में उदयपुरके महाराणा जगतसिंहकी कन्या ब्रजकुंवरका विवाह महाराव दुर्जनशालके साथ हुआ.

विक्रमी १८०० [हि० ११५६ = ई० १७४३] मे जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहका इन्तिकाल हुआ, तो बूंदीके रावराजा उम्मेदसिंह, जो अपनी ननिहाल बेगूंमे रहते थे, महारावके पास आए, क्योंकि महाराजा जयसिंहने रावराजा बुद्धसिंहसे बूंदी छीनकर वहांकी गद्दीपर दलेलसिंहको बिठादिया था भीमसिंहने विक्रमी १८०१ आषाढ शुक्ल १२ [हि० ११५७ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १७४४ ता० २२ जुलाई] को राजा उम्मेदसिंह शाहपुरावालेके साथ बूंदीको जा घेरा, और दलेलसिंहको निकालने बाद राव राजा उम्मेदसिंहको कुछ पर्गनह निकालकर बूंदीपर अपना कब्जह करलिया यह हाल मुफस्सल तौरपर बूंदीकी तवारीख वंशभास्करमे मिश्रण सूर्यमल्लने लिखा है फिर जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंहने जयआपा सेंधियाकी मददसे बूंदी छीनकर दलेलसिंह को दिला दी, और मरहटी फौजने मए जयपुरकी मददके कोटेको आ घेरा.

विक्रमी १८०२ वैशाख शुक्ल पक्ष [हि० ११५८ रबीउस्सानी = ई० १७४५ मई] मे जियाजी सेंधियाके गोली लगने बाद कोटेकी तवारीखमे सुलह होना लिखा है, और इस बातका जिक्र सलूंबरके रावत् कुबेरसिंहने अपने कागजमे किया है, जो विक्रमी १८०१ माघ कृष्ण १२ [हि० ११५७ ता० २६ जिल्हिज = ई० १७४५ ता० ३० जैन्युअरी] को उदयपुर महाराजा बख्तसिंहके नाम लिखा था, उसमें उक्त मितीको सुलह होना पायाजाता है उस कागजकी नक्ल हम महाराणा जगत्सिंह दूसरेके हालमे लिखआये हैं- (देखो एष्ठ १२३२)

शायद इस कागजके लिखने बाद फिर लडाई शुरू होगई हो, तो कोटेकी तवारीखका लिखना ठीक होसक्ता है आखिरकार मरहटोंको पाटण व कापरणका पर्गनह और ४००००० चार लाख रुपया देकर महारावने पीछा छुडाया. इनका बाकी हाल उदयपुर और जयपुरके जिक्रमे आचुका है यह बडे दिलेर और मुल्की मुआमलातमे होश्यार थे विक्रमी १८१३ श्रावण शुक्ल ५ [हि० ११६९ ता० ४ जिल्काद = ई० १७५६ ता० १ ऑगस्ट] को इनका देहान्त होगया

९- महाराव अजीतसिंह

दुर्जनशालके कोई औलाद न होनेके सबब माधवसिंहके पोते और महाराव किशोरसिंहके बड़े पुत्र विष्णुसिंह (जो अपने भाई रामसिंहसे आवा गांवमे मुकाबलह करके जख्मी हुए थे, और तीन साल बाद पडेर गांवमे मरगये) के बेटे पृथ्वीसिंहके पांच कुंवरों मेंसे दूसरे अजीतसिंह, जो अपने वालिदका देहान्त होनेपर अणतामे गद्दीनशीन होचुके थे, कोटाके महाराव मुकर्रर हुए इनके पिता

पृथ्वीसिंहको महाराव रामसिंहने अणता जागीरमे दिया था, पृथ्वीसिंहके पांच बेटे हुए थे- बड़ा भोपसिंह, जिसका इन्तिकाल पिताकी मौजूदगीमे ही होचुका था, दूसरा अजीतसिंह, तीसरा सूरजमल्ल, जिसने बबूलिया जागीरमे पाया, और जिसकी औलाद इस वक्त तक उक्त गांवमे जागीरदार है, चौथे वख्तसिंहको खेड़ली व इटावा जागीरमे मिला, इनकी औलाद खेड़लीमे मौजूद है, और पांचवे चैनसिंहको सोरखंड और मूंडली जागीरमे मिला, उनके वंशवाले मूंडली, आमली और कोटड़ेके जागीरदार है

महाराव अजीतसिंह कोटेमे गद्दीनशीन होने बाद थोड़े ही दिन राज्य करके विक्रमी १८१५ भाद्रपद कृष्ण ऽऽ [हि० ११७१ ता० २८ जिल्हिज = ई० १७५८ ता० २ सेप्टेम्बर] को इस दुन्यासे कूच करगये, और अपने पीछे दो पुत्र, एक शत्रुशाल और दूसरा गुमानसिंह छोड़े, जिनमेसे बड़े राज्यके मालिक बने

१०- महाराव शत्रुशाल, अव्वल

अजीतसिंहका देहान्त होने बाद शत्रुशाल गद्दीपर बैठे, और पट्टाभिषेक विक्रमी १८१५ भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० ११७२ ता० ११ मुहर्रम = ई० १७५८ ता० १५ सेप्टेम्बर] को हुआ उसके बाद जयपुरके महाराजा माधवसिंहसे एक बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसका हाल कोटेकी तवारीखमे इस तरहपर लिखा है, कि किला रणथम्भोर जब बादशाही मुलाजिमोने जयपुरके महाराजा माधवसिंहको सौंप दिया, (जिसका हाल जयपुरकी तवारीखमे लिखागया है) तो बादशाही खालिसहके समय इन्द्रगढ़, खातोली, गेंता, बलवन, करवाड़, पीपलदा, आंतरदा, निमोला वगैरहके जागीरदार हाड़ा राजपूत किले रणथम्भोरके फौज्दार को पेशकशी और नौकरी देते थे, जयपुरवालोने भी उसी तरह लेना चाहा, तो इन जागीरदारोने कोटेकी पनाह ली महाराव शत्रुशालने इन जागीरदारोसे कोटेकी मातह्तीका इक्रार लिखवा लिया यह सुनकर महाराजा माधवसिंहने एक बड़ी भारी फौज कोटेको बर्बाद करनेके लिये भेजदी, और मल्हार राव हुल्करको मददके लिये बुलाया, लेकिन् कोटावालोने हुल्करको चार लाख रुपया देकर अलहदह करदिया, और एक फौज जयपुरके मुकाबलेको भेजी, कोटेसे अठारह कोसपर भटवाड़ा गांवके पास मुकाबलह हुआ, तरफैनके सैकड़ो आदमी मारेगये, आखिरकार जयपुरकी फौज भाग निकली, और फत्ह कोटावालोको मिली मल्हारराव हुल्करने पहिले इक्रार करलिया था, कि हम किसीकी तरफ़दारी नही करेंगे, लेकिन् भागनेवालोका सामान लूटेंगे, इसलिये जयपुरवालोका कुछ सामान हुल्करने लूटा, और बाकी इस कद्र कोटाके हाथ आया - हाथी १७, घोड़े १८००, तोपें ७३, और हाथीका पचरंग

निशान वगैरह, जिनमेंसे तोप और हाथीका निशान अबतक कोटेमें मौजूद बतलाते हैं

विक्रमी १८२१ पौष कृष्ण ९ [हि० ११७८ ता० २३ जमादियुस्सानी = ई० १७६४ ता० १७ डिसेम्बर] को महाराव शत्रुशालका देहान्त होगया

११ - महाराव गुमानसिंह

महाराव गुमानसिंहके गादीनशीनीका उत्सव विक्रमी १८२१ पौष शुक्ल ६ [हि० ११७८ ता० ४ रजब = ई० १७६४ ता० २८ डिसेम्बर] को हुआ इनके समयमें झाला जालिमसिंहको मुसाहिबी मिली, क्योंकि जयपुरकी लड़ाईके समय मल्हार राव हुल्करको, जो जयपुरका मददगार होकर आया था, जुदा करना जालिमसिंहकी कारगुज़ारीसे समझा गया था अलावह इसके जालिमसिंहकी बहिनके साथ महाराव गुमानसिंहकी शादी हुई थी जालिमसिंह इस समय महारावका बड़ा मुसाहिब बनगया, लेकिन् कुछ अरसह बाद महाराव और जालिमसिंहमें नाइत्तिफ़ाकी होगई, जिससे वह झाला सर्दार उदयपुरमें महाराणा अरिसिंहके पास चलागया, और महाराणाकी नौकरीमें रहकर कारगुज़ारियां दिखलाईं यह हाल उक्त महाराणाके ज़िक्रमें लिखा जायगा, लेकिन् इस मुसाहिबके निकलजानेसे कोटाके कारोबारमें खलल आने लगा पहिले महाराव दुर्जनशालके ज़मानेसे दधिवाडिया चारण भोपतरामने रियासतका इन्तिज़ाम बहुत ही अच्छा किया था, और जयपुरकी लड़ाईके बाद जालिमसिंहने भी भोपतरामके कदम बकदम काम किया फिर जिन लोगोंने काम किया, उन्होंने अगले कारगुज़ारोंकी खिद्मतको रद्द करनेके मत्लबसे नया ढंग जमाया, जिससे बिल्कुल अब्तरी फैलने लगी आक़िल आदमीको चाहिये, कि अपने दुश्मनकी भी नेक पॉलिसी (दस्तूर हुकूमत) को नहीं छोड़े आख़िरकार महाराव गुमानसिंहने जालिमसिंहको अपने अख़ीर वक्तसे कुछ पहिले कोटेमें बुला लिया (१), जो सेंधियाकी कैदमें था, और महारावने कुल कारोबार व अपना छोटी उम्रका लड़का उम्मेदसिंह उसके सुपुर्द करके विक्रमी १८२७ माघ शुक्ल १ [हि० ११८४ ता० २९ रमज़ान = ई० १७७१ ता० १७ जैन्युअरी] को इस दुन्यासे कूच किया

(१) सर जॉन माल्कमने अपनी किताबमें जालिमसिंहका कोटेमें आना महाराव उम्मेदसिंहके वक्तमें लिखा है, लेकिन् हमने ऊपरका बयान कोटेकी तवारीख़से लिया है, जो वहांके प्रसिद्ध मुसाहिब चारण महियारिया लक्ष्मणदानने हमारे पास भेजी.

१२ - महाराव उम्मेदसिंह - १

इनका पट्टाभिषेक विक्रमी १८२७ माघ शुक्ल १३ [हि० ११८४ ता० ११ शव्वाल = ई० १७७१ ता० २८ जैन्युअरी] को हुआ, और यह अपने बापकी जगह गद्दीपर बैठे, लेकिन् कुल कारोबारका मुरूतार जालिमसिंह था महारावके नज्दीकी रिश्तहदारोंमें स्वरूपसिंह एक जबर्दस्त आदमी था, जिससे जालिमसिंहकी मुरूतारीमें खलल आने लगा, तब उसने एक धायभाईको बहकाकर विक्रमी १८२९ फाल्गुन् शुक्ल ३ [हि० ११८६ ता० २ जिल्हिज = ई० १७७३ ता० २४ फ़ेब्रुअरी] को स्वरूपसिंहको मरवाडाला उसके भाई बन्धु इस बातसे नाराज होनेके सबब शहर छोडकर चलेगये जालिमसिंहने उनकी जागीरें जब्त करके मुल्कसे निकाल दिया उनकी औलाद वाले कुछ अरसे बाद मरहटोंकी सुफ़ारिशसे कोटेमें आये, जिनको गुजारेके लिये बबूलिया, खेडली वगैरह जागीरें निकाल दीगई

विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] मे कैलवाडा और शाहाबादका किला महाराव उम्मेदसिंह और जालिमसिंहने फत्ह करके अपनी रियासतमे मिला लिया इसी तरह गगराड वगैरह कई पर्गने लेकर जालिमसिंहने रियासतको ताकतवर किया, और मरहटोंसे मेल मिलाप रखकर मुल्कमें कुछ फ़ुतूर नहीं उठने दिया पहिले लालाजी पंडितसे दोस्ती करली, जो सेंधियाका मुसाहिब था, फिर आबाजी एगलियाको अपना धर्म भाई बनाया इन दोनों आदमियोंको कुटुम्ब सहित कोटेमें रक्खा, जिनके बनाये हुए मकान वहां अबतक मौजूद हैं, और लालाजी पंडितकी सन्तान मेंसे मोतीलाल पंडित इस वक्त कोटेकी कौन्सिलका मेम्बर है जावरे वालोंके पूर्वज गफ़ूरखांको भी कोटेमें रहने दिया. इसी तरह नव्वाब अमीरखांके कुटुम्बियोंको शेरगढके किलेमें हिफ़ाजतसे रक्खा जालिमसिंह मरहटोंके अलावह अंग्रेज़ी अफ्सरोंसे भी मेल मिलाप रखता था

विक्रमी १८६० [हि० १२१८ = ई० १८०३] मे हिंगलाजगढके पास जशवन्तराव हुल्करने कर्नेल मॉन्सनसे विरोध बढाया, तब मॉन्सनकी मददको कोयला और फलायताके जागीरदार, जिन दोनोंके नाम अमरसिंह थे, कोटेसे भेजेगये; और ये दोनों सर्दार अच्छी तरह मरहटोंसे लडकर मारेगये; लेकिन् जालिमसिंह ऐसा आकिल आदमी था, कि उसने अपनी रियासतपर सदमह न पहुंचने दिया बाकी हाल हम इस वजीरकी बुद्धिमानीका रियासत झालावाडके बयानमे लिखेंगे

इस वजीरने मेवाडमेंसे जहाजपुर, सांगानेर और कोटडी वगैरह जिले दबालिये थे, लेकिन् फिर गवर्मेण्ट अंग्रेजीने वे मेवाड़को दिलादिये इनका जिक्र मेवाड़के हालमें

मौकेपर लिखा जायेगा विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] मे इसी वज़ीरकी मारिफ़त गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके साथ महाराव उम्मेदसिंहका अहदनामह हुआ महाराव उम्मेदसिंहका विक्रमी १८७६ मार्गशीर्ष शुक्ल २ [हि० १२३५ ता० १ सफ़र = ई० १८१९ ता० १९ नोवेम्बर] को इन्तिकाल होगया उनके तीन पुत्र- बडे किशोरसिंह, दूसरे विष्णुसिंह और तीसरे पृथ्वीसिंह थे

१३- महाराव किशोरसिंह

महाराव किशोरसिंहका पट्टाभिषेक विक्रमी १८७६ मार्गशीर्ष शुक्ल १४ [हि० १२३५ ता० १२ सफ़र = ई० १८१९ ता० ३० नोवेम्बर] को हुआ इसके बाद ज़ालिमसिंहने कर्नेल टॉड, पोलिटिकल एजेंएट पश्चिमी राजपूतानहको ख़रीतह लिख भेजा, कि महाराव उम्मेदसिंहका इन्तिकाल होगया, जिसका बहुत रंज है, और उनके वलीअहद किशोरसिंह को कोटेकी गद्दीपर बिठाया है, जिसकी इत्तिला गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको दीजाती है, क्योंकि वह इस रियासतके मददगार व दोस्त हैं

गद्दीनशीनीके बाद महाराव किशोरसिंह और ज़ालिमसिंहके आपसमे नाइत्तिफ़ाक़ी बढने लगी, क्योंकि पेश्तरसे किशोरसिंहको इस मुसाहिबके दबावमे रहना नापसन्द था, अब गद्दी नशीन होनेपर अपना इख़्तियार बढाना चाहा, ज़ालिमसिंहकी ख़वासके बेटे गोवर्द्धनदासने महारावको ज़ियादह भडकाया, जो ज़ालिमसिंहके अस्ली बेटे माधवसिंहके बर्ख़िलाफ़ था

महारावका दूसरा भाई विष्णुसिंह तो मुसाहिबसे मिलगया, और उससे छोटा पृथ्वीसिंह महारावका फ़र्मांबर्दार रहा महारावने एक ख़रीतह कर्नेल टॉडको लिख भेजा, कि सर्कार अंग्रेज़ीने हमको रियासतका मालिक तस्लीम किया है, तो राज्यका कुल इख़्तियार भी हमारे हाथमे होना चाहिये, परन्तु गवर्मेंएट अंग्रेज़ीने अहद-नामहके बर्ख़िलाफ़ वज़ीरका इख़्तियार तोडना नही चाहा इसपर विरोध ज़ियादह बढा, तब कर्नेल टॉड ख़ुद कोटेमे पहुंचे, और महारावको कहा, कि आपको बहकाने वाले पृथ्वीसिंह और गोवर्द्धनदास वगैरहको निकालदेना चाहिये यह बात महाराव को ना मन्ज़ूर हुई पोलिटिकल एजेंएटसे महारावके साम्हने यहांतक सख़्त कलामी हुई, कि उन दोनोंने तलवारोंपर हाथ डाल दिये आख़िरकार कर्नेल टॉडने ज़ालिम-सिंहसे कहा, कि महारावको धमकाकर फ़सादी आदमियोंको गिरिफ़्तार करलेना चाहिये उसने महारावको डरानेके लिये ख़ास किलेकी तरफ़ गोलन्दाज़ी शुरू की, इस वक्त बहुतसे आदमी महारावके शरीक होगये थे आख़िरकार विक्रमी १८७८ पौष कृष्ण ३

[हि० १२३७ ता० १५ रबीउलअव्वल = ई० १८२१ ता० ११ डिसेम्बर] को महाराव किशोरसिंह कोटेसे निकलकर बूंदी पहुंचे ये कुल बातें जालिमसिंहको अपनी मरज़ीके सिवा लाचारीसे करनी पड़ी, जिसको अपनी बदनामीका बड़ा खौफ़ था बूंदीके रावराजाने महारावकी पहिले तो बहुत खातिर तसल्ली की, लेकिन् जालिमसिंहके दबाव और गवर्मेएट अंग्रेज़ी की लिखावटसे जियादह न ठहरा सके महाराव वहांसे रवानह होकर दिल्ली पहुंचे, जहां गवर्मेएटके अफ्सरोंसे बहुत कुछ अर्ज की, परन्तु अहदनामह और पोलिटिकल एजेएटकी सलाहके बर्खिलाफ़ कुछ मदद न मिली तब पीछे लौटकर मथुरा व वृन्दावन होते हुए हाड़ौतीकी तरफ़ चले इस वक्त ३००० तीन हज़ारके करीब हाड़ा राजपूतोंका गिरोह इनसे जा मिला था महारावने पोलिटिकल एजेएटको एक कागज लिख भेजा, जिसमें चन्द शर्तें तहरीर कीगई थीं, उसकी नक्ल नीचे लिखी जाती है -

चिठ्ठी महाराव किशोरसिंह, ब नाम कप्तान टॉड साहिब, जिसमें सुल्ह और सफ़ाईके लिये शर्तें दर्ज थीं, मर्कूमह आसोज, यानी कुवार विदी ५, मु० १६ माह सितम्बर, मकाम म्यानोसे-

"बाद अल्काब मामूली- चादखाने अक्सर अपनी ख्वाहिश वास्ते दर्याफ्त करने मेरे मन्शाके जाहिर की है, और वह मैंने पहिले मारिफ़त अपने वकील मिर्ज़ा मुहम्मदअली बेग और लाला शालिग्रामके आपके पास लिख भेजी है मैं फिर आपके पास तफ्सील उन शर्तोंकी भेजता हूं, मुताबिक उनके आप कार्रवाई करें, और मेरा इन्साफ़, ब हैसियत वकील सर्कार गवर्मेएट अंग्रेज़ी, आप करें, मालिकको मालिक और नौकरको नौकरकी तरह रक्खें ऐसाही हर मकामपर होता है, और आपसे पोशीदह नहीं है"

नीचे लिखी हुई शर्तोंकी तामील महाराव किशोरसिंह चाहते थे, जो उनकी चिठ्ठी १६ माह सेप्टेम्बरके साथ आई थी -

"१- मुताबिक अहदनामहके, जो दिहली मकामपर महाराव उम्मेदसिंहके साथ हुआ था, मैं अमल रक्खूंगा"

"२- मुझे हर तरह नाना जालिमसिंहका एतिबार है, जिस तरह वह नौकरी महाराव उम्मेदसिंहकी करते थे, उसी तरह मेरी नौकरी करें, मैं उनके मुल्कके इन्तिज़ाम करनेको मन्ज़ूर करता हूं; मगर मेरे और माधवसिंहके दर्मियान शुब्हा पैदा होगया है, और हम बाहम इत्तिफ़ाक नहीं रखसक्ते, इसलिये मैं उसको जागीर दूंगा, उसमें वह रहे, उसका बेटा बापू लाल मेरे साथ रहेगा, और जिस तरह और अह्लकार रियासतका काम अपने मालिकके रूबरू सरजाम देते हैं, उसी तरह वह मेरे रूबरू

काम करेगा, मै मालिक और वह नौकर रहेगा अगर मिस्ल नौकरोके वह काम करेगा, तो यह कार्रवाई पीढियो तक जारी रहेगी "

" ३- जो कागज सर्कार अंग्रेजी या किसी और रियासतको तहरीर हो, वे मेरी सलाह और हिदायतसे लिखे जावे "

" ४- उनकी जानकी और मेरी जानकी जामिन सर्कार अंग्रेजी होजाये "

" ५- मै एक जागीर अपने भाई पृथ्वीसिंहके वास्ते अलहदह करदूगा, वह उसमे रहे, जो मुलाजिम उसके हम्राह और मेरे भाई विष्णुसिंहके हम्राह रहेगे, उनको मै मुकर्रर करूगा, सिवाय उनके और जो मेरे रिश्तेदार और हम कौम है, उनके रुत्बेके मुताबिक मै उनको भी जागीर दूगा, और वह मिस्ल कदीम दस्तूरके मेरे हम्राह रहेगे "

" ६- मेरी खास अर्दलीमे तीन हजार आदमी और नाइबका पोता बापू लाल (मदनसिंह) मेरे हम्राह रहेगे "

" ७- मुल्की आमदनी किशन भंडार (कृष्ण भंडार) याने खजानह रियासतमे रक्खी जावेगी, और वहींसे सब खर्च हुआ करेंगे "

" ८- हर किलेके किलेदार मेरे हुक्मसे मुकर्रर होगे, और फौजपर मेरा हुक्म जारी रहेगा नाइब भी अपने हुक्मकी तामील राजके अह्लकारोंमे करावे, मगर वह मेरी सलाह व मन्जूरीसे हो "

' यह सब शराइत मै चाहता हू, और ये सब राजरीतिके मुताबिक हैं- मिती आसोज याने कुवार ५, संवत् १८७८, (ई० १८२१) "

—※—
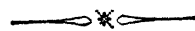
ये शर्तें पोलिटिकल एजेण्टने ना मुनासिब जानी, क्योंकि तीन हजार आदमी खास, फौजकी अफ्सरी और किलेदारोंपर इख्तियार महारावके हाथमे होना आइन्दह फसादको तरक्की देना था कर्नेल टॉडने अपनी किताबमे इस विरोधका हाल तफ्सीलके साथ लिखा है, लेकिन् वह बहुत तूल है, इसलिये उसका खुलासह यहापर दर्ज किया जाता है- गवर्मेण्ट अंग्रेजीने भी इस सख्तीको लाचारीके दरजेपर कुबूल किया, क्योंकि उसको अह्दनामहकी शर्तोंका लिहाज था आखिरकार सब हाडा राजपूत महारावके शरीक होगये, यहा तक, कि राजपूतानहके दूसरे राजा भी महारावकी हक तलफीका अफ्सोस करते थे मांगरोल गावके पास काली सिन्ध नदीपर लडाईका मौका मिला, महारावके पास सात आठ हजार फौज मुल्की राजपूतोकी बिदून तोपखानहके जमा थी, जालिमसिंहके साथ आठ पल्टने, चौदह रिसाले और

बत्तीस तोपे थीं, वज़ीरकी मददके लिये गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी तरफ़से एम० मिल्नकी मातहतीमे दो पल्टने, ६ रिसाले, और घोडोंका एक तोपखानह तय्यार होकर विक्रमी १८७८ आश्विन शुक्ल ५ [हि० १२३७ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८२१ ता० १ ऑक्टोबर] को लडाई शुरू होगई

हाडा राजपूत दिलसे अपने मालिकके हुकूक काइम करनेको मुस्तइद थे वज़ीरकी तरफ़से गोलन्दाज़ी शुरू हुई, एक चाबुक सवार अलफ़खां नामी तोपके गोलेसे उडगया, जो महारावके आगे खडा था, तब कोयलाके जागीरदार राजसिंह और गेताके दो कुंवर बलभद्रसिंह, सलामतसिंह और उनके चचा दयानाथ, हरीगढके चन्द्रावत अमरसिंह, और उनके छोटे भाई दुर्जनशाल वगैरह राजपूतोंने अंग्रेज़ी रिसालेपर धावा किया, और बारूद व गोलेकी मारको सहकर टूट पडे, लेफ़्टिनेन्ट क्लार्क और लेफ़्टिनेन्ट रीड, दो अंग्रेज़ी अफ्सरोंमेंसे एक राजसिंह और दूसरे बलभद्रसिंह के हाथसे मारेगये, उनका बडा अफ्सर लेफ़्टिनेएट कर्नेल जेरिज, सी० बी० ज़ख्मी हुआ, और दूसरी तरफ़से महारावके भाई पृथ्वीसिंह और राजगढके जागीरदार देवसिंह वगैरहने वज़ीरकी फ़ौजपर हमलह किया, देवसिंह बहुत ज़ख्मी हुआ, और महाराज पृथ्वीसिंह भी ज़ख्म खाकर घोडेसे गिरा, जिसकी पीठमें एक रिसालदारके हाथका बर्छा लगा था, वह पालकीमें डालकर वज़ीरके लश्करमें लाया गया, लेकिन् दूसरे रोज़ गुज़र गया कर्नेल टॉड खुद इस लडाईमें मौजूद थे, जो अपनी किताबमें हाडा राजपूतोंकी बहादुरीका हाल बडी तारीफ़के साथ लिखते हैं

फिर महाराव किशोरसिंह मैदानसे निकलकर गौटोंके बडोदे होते हुए नाथद्वारे चले गये, और हाडा राजपूतोंके लिये कुसूरकी मुआफ़ीका इश्तिहार जारी होगया, कि वे अपने अपने ठिकानोंमें जा बैठे उन्होंने भी इस बातको ग़नीमत जानकर सब्र किया उदयपुरके महाराणा भीमसिंहने सुफ़ारिशी होकर गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त इस विरोधको इस तरहपर मिटाया, कि महारावका खास खर्च महाराणा उदयपुरके बराबर किया जावे, और महारावके खानगी कामोंमें वज़ीर और वज़ीरके रियासती कामोंमें महाराव दख़्ल न दे ये सब शर्तें अह्दनामह नम्बर ५७ में दर्ज हैं, जो अख़ीरमें लिखाजायेगा महाराव, पोलिटिकल एजेएटकी शामिलातसे कोटेमें पहुंचे, जहां उनको मौरूसी इज़तके साथ वज़ीरने विक्रमी १८७८ पौष कृष्ण ९ [हि० १२३७ ता० २२ रबीउलअव्वल = ई० १८२१ ता० १८ डिसेम्बर] को बडी नर्मीके साथ महलोंमें दाखिल किया इसके बाद विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] में ज़ालिमसिंहका इन्तिकाल होगया, और उसका बेटा माधवसिंह

रियासतका काम करता रहा विक्रमी १८८४ आषाढ शुक्ल ८ [हि० १२४२ ता० ७ ज़िल्हिज = ई० १८२७ ता० २ जुलाई] को महाराव किशोरसिंहका देहान्त हुआ उनके कोई कुंवर न था, इसवास्ते वह अपने तीसरे भाई पृथ्वीसिंहके पुत्र रामसिंहको वलीअह्द बनागये

१४- महाराव रामसिंह- २

जब महाराव किशोरसिंहका इन्तिकाल होगया, तो गद्दीपर बैठनेका हक़ उनके दूसरे भाई अणताके जागीरदार महाराज विष्णुसिंहका था, लेकिन् महाराव किशोरसिंह जब झाला ज़ालिमसिंहकी अदावतके कारण कोटेसे निकले, तब विष्णुसिंह वज़ीरका शरीक रहा, और तीसरा भाई पृथ्वीसिंह महारावके साथ रहकर मांगरोलकी लड़ाईमें मारागया था, इससे किशोरसिंहने उसके बेटे रामसिंहको वलीअह्द बनाया इस बातपर माधवसिंह झालाने अपने दोस्त विष्णुसिंहकी तरफ़दारी छोडदी, क्योंकि पेश्तरका बड़ा बखेड़ा उसको याद था विक्रमी १८८८ [हि० १२४७ = ई० १८३१] मे महाराव रामसिंह मए अपने मुसाहिबके अजमेरमे लॉर्ड बैंटिंककी मुलाक़ातको गये, तो उन्होंने माधवसिंहको चवर इनायत किया यह वज़ीर अपने मालिकको हर तरह खुश रखना चाहता था

विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] मे माधवसिंहका इन्तिकाल होगया, और उसका बेटा मदनसिंह कोटेका मुन्तज़िम बना मदनसिंहसे महारावका विरोध बढने लगा, वह रईसके मुवाफ़िक़ निकास पैसारके वक्त अपनी सलामीकी तोपें चलवाता, इस तरह कई हरकतोंपर आपसका विरोध बहुत तरक़्क़ी पागया. आखिरकार विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] मे गवर्मेंट अंग्रेज़ीने बड़ा फ़साद होजानेके भयसे बीचमे आकर नया बन्दोबस्त किया, कि बारह लाख रुपया सालानह आमदनीके सत्तरह पर्गने मदनसिंहको देकर जुदा राजा बना दिया, और एक फ़ौज कोटा कन्टिन्जेन्ट नई भरती करके उसका खर्च महारावसे दिलाना करार पाया एक नया अह्दनामह गवर्मेंटके साथ करार पाया, जिसकी शर्तोंके पढनेसे पाठकोंको हाल मालूम होगा विक्रमी १९०७ फाल्गुन [हि० १२६७ जमादियुल्‌अव्वल = ई० १८५१ मार्च] मे महारावकी उदयपुर शादी हुई, जिसका बयान महाराणा स्वरूपसिंहके हालमे लिखा जायेगा. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के बलवेमे कोटा कन्टिन्जेण्ट पल्टनने बग़ावत की, और हाड़ौतीके एजेण्ट मेजर ब्रिटन और उनके दो बेटोंको मारडाला,

जिसका हाल मेलीमन साहिबने अपनी गद्रकी तवारीखकी दूसरी जिल्दमे इस तरह पर लिखा है -

" जब नीमचमे गद्र हुआ, तब लॉरेन्स साहिबने मेवाड, कोटा और बूंदीके लश्करकी मददसे वहांपर पीछा कब्जह करना चाहा मेजर ब्रिटन, पोलिटिकल एजेण्ट कोटा, कोटेसे लश्कर लेकर नीमच भेजे गये "

" जेनरल लॉरेन्सने उनको तीन हफ्ते तक नीमचमे ठहरनेको कहा था, जिससे उक्त मेजरको ठहरना पडा, आउवेमे गद्र होनेके बाद ब्रिटन साहिब अपना कोटे जाना मुनासिब समझकर अपने दो लडको समेत, जिनमेसे एककी उम्र २१ बर्षकी और दूसरेकी सोलह बर्षकी थी, ईसवी १८५७ ता० १२ ऑक्टोबर [वि० १९१४ कार्तिक कृष्ण ९ = हि० १२७४ ता० २३ सफर] को कोटे पहुचे, और अपनी मेम और बाकी चारो लडके लडकियोको नीमच मकामपर अंग्रेजी लश्करकी हिफाजतमे छोडगये "

" ईसवी ता० १३ व १४ ऑक्टोबर [वि० कार्तिक कृष्ण १०- ११ = हि० ता० २४-२५ सफर] को महारावसे ब्रिटन साहिबकी मुलाकात हुई मुलाकात होनेके बाद महारावने अपने लोगोसे जाहिर किया, कि ब्रिटन साहिबने कितने एक आदमियोको रियासतका बदख्वाह होनेके सबब निकाल देने या सजा देनेको कहा है इस बातके सुनतेही अफ्सर लोग अपने मातहतो समेत बदल गये, और महारावकी हुकूमत उठाकर राज्यपर अपना इख्तियार करलेना चाहा दूसरे रोज फज्रमे बागी लोगोने एकट्ठे होकर रेजिडेन्सी सर्जन मिस्टर सेडलर और शहरके हॉस्पिटलके डॉक्टर मिस्टर सेविलको, जो रेजिडेन्सीके मकानमे रहते थे, मारडाला, और रेजिडेन्सीपर हमलह किया चौकीदार और नौकर लोग भागगये, मेजर ब्रिटन, उनके दो लडके और एक नौकर रेजिडेन्सीके ऊपर वाले मकानमे रहे इन लोगोने चार घंटे तक अपना बचाव किया, लेकिन् अखीरमे बागियोने रेजिडेन्सीमे आग लगादी मेजर ब्रिटनने जब बचनेकी कोई सूरत न देखी, तब अपने लडकोकी जान बचानेकी शर्तपर बागियोकी इताअत करना कुबूल किया, लेकिन् उन लडकोने इस बातको नामजूर किया बागियोने सीढीके जरीएसे मकानपर चढकर तीनोको मारडाला, और साहिबका नौकर भागगया "

"महाराव साहिबने यह हाल जेनरल लॉरेन्सको लिख भेजा, और अपनी तरफसे दिलगीरी जाहिर की, कि मेरे लश्करने राजके कुल इख्तियारात अपने कब्जेमे लेकर मुझको बेइख्तियार करदिया है सर्कार अंग्रेजीने महारावको निर्दोष समझा, लेकिन् पूरा पूरा फर्ज अदा न होनेके सबब उनकी १७ तोप सलामी घटाकर १३ करदी "

"मेजर ब्रिटनको क़त्ल करने बाद बागियोने महारावको कैद करके जबरन् एक कागजपर, कि जिसमे नौ शर्तें थीं, दस्तखत करालिये, इन शर्तोंमे एक शर्त यह भी थी, कि मेजर ब्रिटन महारावके हुक्मसे मारेगये महारावने पोशीदह तौरपर करौलीके महाराजाके पास आदमी मए कागजके भेजकर उन्हे कहलाया, कि आप लश्करकी मदद भेजे करौलीके राजाने मदद भेजी, और बागियोको महलोसे निकलवाकर महारावको कैदसे छुडाया, जिन्होने अपनी मददगार फौज वही रहने दी "

"रॉबर्ट साहिब ईसवी १८५८ के मार्च [वि० १९१४ चैत्र = हि० १२७४ रजब] मे नसीराबादसे लश्कर लेकर ईसवी ता० १० मार्च [वि० चैत्र कृष्ण ११ = हि० ता० २४ रजब] को कोटेकी तरफ रवानह हुए, और ईसवी ता० २२ मार्च [वि० १९१५ चैत्र शुक्ल ७ = हि० ता० ६ शअ्बान] को चम्बलके उत्तरी किनारेपर छावनी डाली, उस वक्त मालूम हुआ, कि नदीका दक्षिणी किनारा बिल्कुल बागियोके कब्जेमे है, और किला, महल, आधा शहर और नदीका घाट करौलीके लश्करकी मददसे महारावने अपने तहतमे लिया है "

"ईसवी ता० २५ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १० = हि० ता० ९ शअ्बान] को खबर मिली, कि बागी लोग महलपर हमलह करते है यह खबर सुनते ही रॉबर्ट साहिबने ३०० आदमी मेजर हीद साहिबकी मातहतीमे महारावकी मददको भेजे, और बागियोको हटाया ईसवी ता० २७ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १२ = हि० ता० ११ शअ्बान] को रॉबर्ट साहिब ६०० आदमी और दो तोपे लेकर किलेके अन्दर गये, और बागियोकी तरफ तोपे जमाई गई ईसवी ता० २९ मार्च [वि० चैत्र शुक्ल १४ = हि० ता० १३ शअ्बान] को गोले चलने शुरू हुए, और बागियोको हटाकर दक्षिणी किनारेपर कब्जह किया गया, बागी कोटेसे भागनिकले, जिनकी ५० तोपे छीनीगई अंग्रेजी लश्कर तीन हफ्ते तक कोटेमे रहकर महारावका राज्यमे पूरा अमल दख़्ल कराने बाद वापस नसीराबादको चलागया "

थोडे दिनो बाद दूसरे रईसोकी तरह महारावको भी गोद लेनेकी सनद दीगई, और कोटा कन्टिन्जेन्टके एवज देवली मकामकी बे कवाइद फौज भरती कीगई विक्रमी १९२३ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १२८२ ता० १० जिल्क़ाद = ई० १८६६ ता० २७ मार्च] की शामको चौसठ सालकी उम्रमे महाराव रामसिंहका इन्तिकाल होगया उनके साथ एक राणीने सती होना चाहा था, लेकिन् पोलिटिकल एजेण्टकी हिदायतसे बडी मुश्किलके साथ उसको इस इरादेसे बाज रक्खागया महारावके बाद उनके एक बेटे शत्रुशाल बाक़ी रहे थे, जो राज्यके मालिक माने गये

१५- महाराव शत्रुशाल-२

यह महाराव विक्रमी १९२३ चैत्र शुक्ल १२ [हि० १२८२ ता० ११ जिल्काद = ई० १८६६ ता० २८ मार्च] को कोटेकी गद्दीपर बैठे, जिनको दूसरे वर्ष कर्नेल ईडन, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने जाबितहके साथ मस्नद नशीन किया, और नव्वाब गवर्नर जेनरल बहादुरने रियासतकी सलामी, जो उनके बापके वक्तमे घटा दीगई थी, बदस्तूर सत्तरह तोप बहाल करदी

महाराव शत्रुशालके गद्दी बैठनेके वक्त रियासत कर्जहसे जेरबार थी, और खर्च भी आमदनीसे जियादह था महारावने कई बार खर्चमें तख्फ़ीफ़ की, और महाराव रामसिंहकी महाराणी फूलकुवरके मरनेसे, जो मेवाडके महाराणा सर्दारसिंहकी बेटी थी, साठ हजार रुपये सालानह आमदनीकी जागीर खालिसेमे दाखिल हुई; इस तरहपर खर्च आमदनीसे कुछ कम होगया इन महारावने सती होनेकी दो वारिदातें बहुत कोशिशके साथ रोक दीं, जिसपर अंग्रेजी सर्कारसे उनकी तारीफ़ हुई इन सब बातोंपर बडा अफ्सोस यह था, कि महाराव अपने वालिदके इन्तिकाल तक हमेशह जनानहमे रहनेके सबब शराब ख्वारीके आदी होगये थे, पोलिटिकल एजेंटोंने अक्सर बार इस खराब आदतको छुडानेके लिये सलाह और नसीहतमें कमी नहीं की, लेकिन् जवान उम्र और बडे दरजहपर पहुंचनेके बाद ऐसी कोशिशें कारगर नहीं होतीं इसलिये शराब ख्वारीकी यह कस्रत हुई, कि महाराव हर वक्त बेखबर रहने लगे, और अक्ल व होश खो बैठे जनानहमे रहनेके सबब उनके पास तक किसी अह्लकारकी रसाई नहीं होसक्ती थी, दीवानका एतिबार और इख्तियार कुछ न था, रियासती काम मुल्तवी पडे रहते थे, एजेंटीकी तह्रीरोंका जवाब बडी मुद्दत बाद दियाजाता था, महाराव जैबखासके खर्चमे रुपया जमा करना चाहते थे, और अह्लकार गबन और फ़िरेबसे रियासतको लूटते थे, क्योंकि वह भी बडी रिश्वतें और नज्रानह देकर मुकर्रर होते थे, और इस तरह अपने दिये हुए रुपयोंकी कस्र निकालकर जियादह अरसह तक नौकरीपर काइम न रहनेके खौफ़से अपना घर भरलेना चाहते थे. महारावकी तबीअतपर चन्द खानगी नौकरों, गूजर और हज्जाम वगैरहका बहुत इख्तियार था, ये लोग इस सबबसे, कि किसीको रईस तक पहुंचने या पैगाम पहुंचानेका इनके सिवा कोई और जरीआ न था, राजके कारोबारमे बहुत दख्ल देने लगे

विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] मे महारावने अपने बापके अह्दके अह्लकारोंको मौकूफ़ कर दिया, लेकिन् इसपर किसीको

अफ्सोस और तअज्जुब न हुआ, क्योंकि वे लोग मुद्दतसे जुल्म और खराबीका बाइस थे विक्रमी १९२६- २७ [हि० १२८६- ८७ = ई० १८६९- ७०] की रिपोर्टमें लिखा गया है, कि कोटेकी अदालतें बराय नाम और नाकारह हैं, उनके हुक्मोंकी तामील नहीं होती, जो शरूस रईस और राणी या दीवानसे तअल्लुक रखता हो, वह खुदही अदालतके इख्तियारसे बाहर रहना नहीं चाहता, बल्कि रिआयत या लालचसे दूसरोंका भी हिमायती बन जाता है जबर्दस्त लोग अपनी हकरसी आप कर लेते हैं, और कमज़ोरोंको अदालत भी कामयाब नहीं करा सक्ती

विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] में दीवान गणेशीलाल, जो चार बरससे काम करता था, मरगया, वह छोटी आसामीसे बड़े उह्दहपर पहुंचा था, रईस और रियासतके हालातको खूब पहिचानता था, इसलिये उसने महारावको हर मौकेपर रुपया देकर राजी रक्खा, और खुदने भी रिआयाको तक्लीफ देकर बहुत रुपया कमाया मुसाफिर और सौदागरोंको कोटेके बराबर कहीं तक्लीफ न होगी, हर मकामपर हर बहानेसे कुछ न कुछ महसूल लेलिया जाता है, इनमेंसे कोई राज्यमें जमा होता है, और कोई अह्लकार अपने तौरपर वुसूल करलेते हैं मुसाफिरोंको सबसे बड़ी मुश्किल चम्बल नदी और मुकुन्दरा घाटेको तै करनेमें होती है, जिनके लिये इजाजत लेनेमें कई दिन गुजर जाते हैं

विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७०-७१] की रिपोर्टमें राज्यके नालाइक़ अह्लकारोंकी रिश्वतख्वारीकी बाबत बहुत शिकायत है मन्दिरों और राणियोंके नौहरोंमें मुज्रिमोंको पनाह दीजाती है, "कोटेके बावन हुक्म" आम मसल मश्हूर है, अह्लकार लोग गारतगरोंसे हिस्सह लेते हैं, या मुज्रिमोंको जुर्मानह लेकर छोड़ देते हैं, कैदकी सजा रुपया वुसूल होनेकी उम्मेदके सिवा कभी नहीं दीजाती शहरकी कोतवाली वगैरह अपने खर्चके सिवा राज्यमें रुपया दाखिल करती है, इलाकहके ठेकहदार अक्सर सर्कारी जमा खाजाते हैं, अह्लकारोंको रिश्वत देकर गैर इलाकोंमें भागजाते हैं, और फिर आजाते हैं, अंग्रेजी सर्कारका फौज खर्च व खिराज बहुत मुश्किल और देरसे अदा कियाजाता है, साइरका ठेका है, और कोई शरह महसूलकी मुकर्रर नहीं है, इस लिये ठेकहदार अपने नफेके वास्ते, जो चाहता है, वुसूल करता है, कर्जह बढ़ते बढते पचास लाखके करीब पहुंचा, जिसकी बाबत साहूकारोंको कई लाखका इलाकह जमा वुसूल करनेके लिये सौंपा गया, और मुद्दतकी बद इन्तिजामीसे इलाकहकी किश्तकारी भी कम होगई. एजेंटीकी बराबर ताकीद रहनेसे मिर्जा अक्बरअलीबेग, जो पहिले करौलीमें नौकर रहचुका था, अफ्सर गिराई

किया गया, लेकिन् साहिब एजेंट गवर्नर जेनरलका दौरा होजाने बाद मिर्ज़ा और उसका अमलह तन्ख्वाह न मिलनेके सबब अलहदह होगया

कोतवालीकी कार्रवाई बहुत ही बदनाम है, जिसपर मुश्किलसे लोगोंको यकीन आसके, याने शहरकी बद चलन औरतोंको बहकाकर मालदार और इज्ज़तदार लोगोंके घर भिजवा देते हैं, और पीछेसे पुलिसवाले मौकेपर जाकर दोनोंको गिरिफ्तार करलेते हैं, औरत आश्नाईका इक्रार करती है, जिसपर एतिबार होकर बहुतसे बेकुसूरोंसे जुर्मानह लेलिया जाता है, डाकन होनेका जुर्म किसीपर लगा दिया जाता है, और उसको सजा या तक्लीफ देकर रुपया पैदा करते हैं इसी तरह किसीको जादूगर करार देनेके लिये पुलिसवाले उसके घरमें चले जाते हैं, और खोपडी वगैरह बाज चीजें बरामद करके खयाली जुर्म काइम करते हैं, और तक्लीफ देकर जुर्मानह लेते हैं जेलखानहकी ऐसी अब्तरी है, कि अक्सर बडे बडे कैदी रुपयेके एवज रिहा करदिये जाते हैं फौज तन्ख्वाह न मिलनेके सबबसे एक बरस बागी रही, सिपाहियोंने चोरी और लूटमार शुरू की, उनमेंसे कई आदमी सामान समेत गिरिफ्तार कियेगये, फौजने हमलह करके उन्हें छुडा लिया, और महलके चौकमें आ जमे, परदेशी सिपाहियोंको तन्ख्वाह देकर बेबाक किया, और देशियोंको हीला करके टाल दिया गया राजकी कोई शिकायत एजेंटीमें नहीं करने पाता, क्योंकि एजेंटीमें खाली जाने हीसे हर एकको अपनी बर्बादी नजर आती है, लेकिन् तंग आकर सौ पटेल और जमीदारोंने, जब साहिब एजेंट कोटेमें गये, जुल्म और सख्तियोंकी एक-दम फर्याद की, जिसपर पोलिटिकल एजेंटने महारावको रुजूअ् किया, मगर कुछ इन्साफकी उम्मेद न थी

राज्य कोटा और कोटडियोंके सर्दारोंमें कई सालसे नाइत्तिफाकी रही, राज्य हदसे जियादह इताअत चाहता है, और सर्दार मामूलसे भी कम चाकरी देना चाहते हैं ये सर्दार शुरूमें उदयपुरके मातहत राव सुर्जणके जेर हुकूमत थे, जब राव सुर्जणने किला रणथम्भोर अक्बर बादशाहको सौंप दिया, तो ये लोग भी खालिसेके खिराज गुजार होगये अजीजुद्दीन आलमगीर सानीके वक्तमें यह किला महाराजा माधवसिंह अव्वलको मिला, तो जयपुर वालोंने कोटडी वालोंपर अपना खिराज मुकर्रर किया, लेकिन् दोनोंके आपसमें कभी मुवाफकत न हुई इसपर जालिमसिंह झाला वजीर कोटाने खिराजका ज़ामिन होकर कोटडी वालोंको अपनी तरफ लेलिया, और राज्यकी रकम कोटेकी मारिफत जयपुर वालोंको मिलना करार पाया इन सात सर्दारों, इन्द्रगढ, खातौली, गेता, पीपलदा, करवाड, बलवन अतरौदामेंसे इन्द्रगढकी आमदनी तीन लाख रुपये और खातौलीकी अस्सी हज़ार सालानहके करीब है, और बाकीकी कम

तादादमे दस पन्द्रह हजार तक हैं, लेकिन् हर एक इनमेसे महाराजा कहलाता है

हाड़ौतीके पोलिटिकल एजेण्ट अपनी रिपोर्टमे लिखते हैं कि – "ई० १८७२–७३ [वि० १९२९–३० = हि० १२८९– ९०] के अखीरमे यहाकी हालत ऐसी अब्तर हुई, कि सर्कारी मुदाखलतका होना बहुत ज़रूरी मालूम हुआ मै बराबर महारावजीसे ताकीद करता रहा, कि इस तबाहीसे बचनेके लिये कुछ तद्बीर करना लाजिम है, लेकिन् इस नेक सलाहका असर ऐसे शख्सपर कब होता, जो हर तरहकी बुराइयोमे डूब रहा था, और खुशामदियोंके हाथमे कठ पुतली बनगया था, कि वे जैसा चाहते थे, नचाते थे, लेकिन् रईस और रियासतकी खुश नसीबीसे दर्बारियोमेसे एक दो ऐसे प्रतिष्ठित आदमी भी थे, कि जो इस बातको बखूबी समझ सक्ते थे, कि कैसा अप्रबन्ध इस रियासतमे फैल रहा है? इन लोगोने मुझको बहुतसी मदद दी, और उन्होने रईसको भी अच्छी तरह समझाया, कि रियासतपर पूरी तबाही आवेगी उन्होने उनसे यह भी जाहिर करदिया, कि सर्कार अंग्रेजी आगे पीछे ज़रूर मुदाखलत करके इस जुल्म और बदइन्तिजामीको मिटावेगी, इसलिये आपको लाजिम है, कि अपनी नेकनामी और बरिय्यतके लिये रियासतकी दुरुस्तीमे मश्गूल हो "

"आखिरकार ईसवी १८७३ जुलाई [वि० १९३० आषाढ = हि० १२९० जमादियुलअव्वल] मे महारावजीपर इस नेक सलाहका असर हुआ, और उन्होंने साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलके, तथा मेरे नाम लिखा, कि वह इस अप्रबन्धको सुधार नहीं सक्ते, इसलिये उन्होने अपनी रियासतको सर्कार अंग्रेजीके सुपुर्द करना चाहा, और जो कुछ प्रबन्ध सर्कार अंग्रेजी करे, उसमे अपनी रजामन्दी जाहिर की ईसवी ऑक्टोबर [वि० आश्विन = हि० शअ्बान] मे साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरल कोटे आये महारावजीसे कई एक मुलाकाते हुई, तो उन्होने फिर सर्कारी मददके लिये दर्ख्वास्त की, और कहा, कि जो कुछ बन्दोबस्त सर्कार करे, मुझको मंजूर है इस सूरतमे सर्कार अंग्रेजीने जयपुरके साबिक़ मुसाहिब नव्वाब फैजअलीखां बहादुर, सी० एस० आइ० को पूरे इख्तियारात देकर कोटेका मुख्तार मुकर्रर करना मुनासिब समझा मै फेब्रुअरीमे किशनगढके मकामपर साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलके लश्करमे शामिल हुआ, तो वहा मुझसे और नव्वाब साहिबसे मुलाकात हुई, और मुझे आखिरी अह्काम मिले; कुछ दिनके बाद जाबितह साथ लेकर नये मुख्तारको मुकर्रर करनेके लिये मै कोटे गया इस समय यहाकी हालत बहुत अब्तर थी, महारावजी फिर बुरे सलाहकारोंके हाथमे फस गये थे, कि जिन्होने सर्कार अंग्रेजीकी कार्रवाईको इस तरहपर महारावजीके

दिलमे जमाया, कि सर्कार आपको गद्दीसे उतारना चाहती है उन्होने महारावजीको यह भी सलाह दी, कि सर्कारसे मददके लिये जो दर्ख्वास्त कीगई है, वह वापस लेनी चाहिये, और जहातक होसके, ऐसी कोशिश करना चाहिये, कि नव्वाब फैज-अलीखा मुकर्रर न होनेपावे उन्होने यहातक दर्बारको सुझाया, कि आपकी जो हतक इज्जत होनेवाली है, उससे मरना बिहृतर है, और झूठी गप्पे इन बदमआशोने उडाई, जिससे रिआयाके दिलमे घबराहट पैदा होगई इन बरसोके जुल्मसे लोगोके घबराजानेमे बिल्कुल शक नही था, और उम्मेद थी, कि सर्कार अंग्रेजी उनको इस जुल्मसे बचावेगी फौजकी तन्ख्वाह भी बहुत बाकी थी, सर्कारी मुदाखलतके होनेसे उनको भी बाकियातके मिलजानेकी उम्मेद थी मै १९ फेब्रुअरीको कोटे पहुचा महारावजीने मेरे मन्शाके मुवाफिक मामूली तौरसे मेरी पेश्वाई की मैने महारावजीसे नव्वाब साहिबको मिलाया, और दूसरे रोज मै नव्वाब साहिबको साथ लेकर महारावजीसे मिलने गया, और साहिब एजेन्ट गवर्नर जेनरलका खरीतह रईसको दिया, कि जिसमे उस बन्दोबस्तकी बाबत तहरीर थी, जो अब सर्कार कोटेमे करना चाहती थी जिन होश्यार सलाहकारोका जिक्र ऊपर होचुका, वह इन्तिजाममे शामिल हुए, और जब महारावजी मुझसे अपने इक्रारके मुवाफिक मिलनेको आए, तो जाहिर होता था, कि कुछ बिहृतरीकी सूरत हुई महारावजी, नव्वाब साहिबसे बडे अख्लाकके साथ मिले, और खुशीसे सर्कारी मुदाखलतको कुबूल किया ''

सर्कारी इन्तिज़ाम

रियासतका हिसाब बेतर्तीब, नातमाम और एतिकादके लाइक नही था इस हिसाबके देखनेसे मालूम हुआ, कि पिछले सालमे अट्ठाईस लाख २८००००० रुपये की आमदनी हुई इसमेसे जागीर, धर्म खाता और बाकियातके १२००००० बारह लाख मिन्हा देनेपर १६००००० सोलह लाख रुपये रहजाते है अन्करीब यह कुल आमदनी जमीनके हासिलसे है किसी किस्मका टैक्स नही लगाया जाता करीब ६००००० छ लाखके फौजका खर्च है, और ६००००० छ लाखके महलका खर्च अलावह इसके रु० १००००० एक लाख रुपया दर्बार खास अपने जैब खर्चके लिये लेते है जिस वक्त नव्वाब साहिबने चार्ज लिया, उस वक्त पोतेमे रु० ६३२२७ थे जो लोग दर्बारमे रुपया मागते थे, उनसे दावा पेश करनेके लिये कहा गया चूंकि ये हिसाब बहुत बरसोंके हैं, और हरएक रक़मकी जांच होना ज़रूर है, कुल कर्जेका हिसाब तय्यार करनेमे कुछ अरसह लगेगा रु० ९०००००० का दावा लोगोने

पेश किया, कुछ अरसे तक आमदनीके बढनेकी कोई उम्मेद नहीं, लेकिन् इस अरसेमें हमको हत्तलइम्कान खर्च घटानेकी कोशिश करना चाहिये हस्ब मजूरी साहिब एजेएट गवर्नर जेनरल, अजमेरके मालदार सेठोंसे ६॥) रु० सैकडा सालानह सूदपर ६००००० छ लाख रुपया कर्ज लेना तज्वीज हुआ, ताकि कार्रवाई शुरू कीजावे, और सर्कार अंग्रेजी तथा फौजका जो कुछ देना बाकी है, देदिया जावे ईसवी १८७३ ता० ३१ डिसेम्बर [वि० १९३० पौष शुक्ल १३ = हि० १२९० ता० ११ जीकाद] तक जो टाकेका रु० २४६४२७ बाकी था, मार्चमें दिया गया, फौजकी बकाया तन्ख्वाह भी चुकने लगी, कोटडीकी जागीरोंकी बाबत जो रुपया जयपुरको देना है, और राजपूतानहके खजानेके रु० २४४३१ और देवलीके खजानेके रु० १०३१७३ जो देने है, उनके भी अदा होनेका बन्दोबस्त होरहा है राजके खजानेका दफ्तर शहरसे उठाकर एजेन्सीके करीब रक्खागया है "

"अदालतें- मौजूदह अदालतें सिर्फ जुल्मके कारखाने है, कि जिनके हाकिमो के न कोई इख्तियारात और न कोई कार्रवाईका तरीका साबित है यह अदालतें बन्द कीगई, और बजाय इनके दीवानी, फौज्दारी, माल व अपीलकी कचहरियां काइम कीगई इन अदालतोंके खुलनेसे एक महीनेकी मीआदके अन्दर दो हजार अर्जियां पेश हुई "

"कामदार- जहांतक मुम्किन था, पुराने अहल्कार, जो किसी कद्र ईमानदार और मोतबर थे, साबित रहे, और जिन्होंने इन्तिजाममें मदद दी, उनको उम्दह उहदे बतौर इन्आमके दियेगये, और वे खैरख्वाहीसे नव्वाबको मदद देते है "

"नव्वाबकी सलामी- ११ मार्चको इत्तिला मिली, कि रियासत कोटाकी हुदूद के अन्दर ९ तोपकी सलामी मन्जूर हुई है, मैने कहा, कि क़िलेसे एक सलामी सर हो, तो फौरन् इसकी तामील हुई "

"जेल और डिस्पेन्सरी- मैं और नव्वाब जेल और डिस्पेन्सरीको देखने गये शिफाखानह दुरुस्तीके साथ है, और बहुतसे मरीज आते है, नेटिव डॉक्टर की लोग बहुत तारीफ करते है जेलमें किसी कद्र सफाई है, और ७० कैदियों मेंसे क़रीब आधोंके जेर तज्वीज है "

"अब कार्रवाई बखूबी चल निकली है, पैमाइशका बन्दोबस्त किया गया है, इससे जमीनका बन्दोबस्त भी होजायेगा सडक, मद्रसे, शहर सफाई और नलोंके बननेका बन्दोबस्त होता है, फौज भी घटाई जावेगी हिसाब उम्दह तरीकेपर रक्खा जावेगा, शिकायतें रफा होंगी, और खालिसेकी जो जमीन लोगोंने गैर वाजिबी

तौरसे दबाली है, उसके छुड़ानेका बन्दोबस्त होगा गैर वाजिबी खर्च घटाया जायेगा, कर्ज़ अदा करनेके लिये सालानह किस्त काइम कीजायेगी, और आम तौरसे रियासतका इन्तिज़ाम सुधारा जायेगा, लेकिन् यह सब काम एक दिनमें नहीं होसके शुरूमें तो बड़ी सख्त मिह्नत करनी पड़ेगी इस साल हम इतनीही रिपोर्ट कर सके हैं, कि बद इन्तिज़ामीका अखीर हुआ, और दुरुस्तीकी तरफ़ कार्रवाई शुरू हुई, लेकिन् तरक्कीकी बाबत हम दूसरे साल रिपोर्ट करेंगे "

नव्वाब वज़ीरने कोटेकी अगली सौ पर्गनोंकी तक्सीम मौकूफ़ करके कुल मुल्कमें आठ निज़ामतें काइम कीं, जिनके मातहत मालके लिये चौबीस तह्सीलदार और फ़ौज्दारी इन्तिज़ामके लिये सत्ताईस थानहदार मुकर्रर किये गये नव्वाबने इन्तिज़ामी नक्शह जमाकर तमाम इलाकहमें दौरा किया, जिससे रिआयाको बहुत कुछ तसल्ली और इन्साफ़ हासिल हुआ सद्रकी अदालतों फ़ौज्दारी और दीवानी वगैरहका अपील अदालत अपीलमें और उसका मुराफ़ा महकमह विज़ारतमें होता है तमाम काम पांच किस्मों याने अदालत, जमा और खर्च, फ़ौज, खैरात, और इलाकह गैरमें बटा हुआ है इसमें कोई शक नहीं, कि यह इन्तिज़ाम जारी रहे, तो दूसरी रियासतोंके लिये भी नज़ीर होजावेगा

कर्ज़ख्वाहोंने नया इन्तिज़ाम होनेपर नव्वे लाख रुपयेका दावा पेश किया, सर्कारी हुक्मसे तह्कीकात कीगई, तो मालूम हुआ, कि साहूकारोंने सूदपर सूद लगाने और वुसूली रकमका सूद मुज्रा न देनेसे बहुत लालच फैलाया है आखिर मुन्सिफ़ानह तौरपर साठ लाख रुपया कर्ज़ख्वाहोंका दर्याफ़्त होकर फ़ी रुपया ॥-)७ नौ आने सात पाईके हिसाबसे देनेकी तज्वीज़ कीगई बहुतसे राज़ी हुए, और कुछ शाकी रहे, आखिर बयालीस लाख अठ्ठाईस हज़ार तीन सौ उन्तीस रुपया चौदह आने दो पाईपर फ़ैसलह हुआ, जिसमेंसे नौ लाख सत्तानवे हज़ार नव्वे रुपये तेरह आने आठ पाई ईसवी १८७७ ता० ७ मई [वि० १९३४ ज्येष्ठ कृष्ण ९ = हि० १२९४ ता० २२ रबीउस्सानी] तक अदा होगया, और बाकीके लिये सर्कारी हुक्मसे छ लाख रुपया सालानह अदा करनेकी किस्त करार पाई नव्वाबने अपनी अखीर दो बरसकी रिपोर्टमें लिखा, कि दो सालकी मुद्दतमें सवा पैंतालीस लाखके करीब रुपया तह्सील हुआ, और साढ़े उन्तालीस लाखसे कुछ ज़ियादह खर्च हुआ, इसके सिवा सवा पन्द्रह लाख रुपयेके करीब पुराने कर्ज़े और बाकी तन्ख्वाहमें दिये गये नव्वाबने राजका मामूली खर्च सवा सत्ताईस लाख रुपया सालानहसे साढ़े अठारह लाख रुपया सालानहके अनुमान काइम करनेसे नौ लाख सालानहके क़रीब तख्फ़ीफ़ की.

बन्दोबस्त मालगुजारीके वास्ते मुन्शी नियाज अहमद, सर्कारी एक्स्ट्रा असिस्टट कमिश्नरको और तामीरातके इन्तिजामपर मिस्टर ह्यूस, सिविल इन्जिनिअरको मुकर्रर कियागया शिफाखानह, टीकालगाना, जेलखानह, शहर सफाई, मद्रसह, अक्सर रिआया के फाइदहके काम काइदहके साथ जारी किये गये; लेकिन् इस मुल्कके लोग काहिली और बेवकूफीसे आरामकी बातोंकी तरफ कम तवज्जुह करते हैं थोडे अरसहमे नव्वाब मुस्तारने बहुत उम्दह इन्तिजाम राजका किया था, लेकिन् रईसके पास रहने वाले खुशामदी लोगोने आपसमे रज करादिया, इसलिये ईसवी १८७६ ता० १ सेप्टेम्बर [वि० १९३३ भाद्रपद शुक्ल १३ = हि० १२९३ ता० १२ शअ्बान] को मुम्ताजुद्दौलह नव्वाब सर फैजअलीखा बहादुर, के० सी० एस० आइ० ने ढाई बरससे कुछ जियादह कोटेके इन्तिजामपर मुकर्रर रहकर वहाकी मुस्तारीसे अंग्रेजी सर्कारमे इस्तिअ्फा दाखिल किया

कोटा एजेन्सी
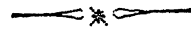
नव्वाब सर फैजअलीखाके बाद अव्वल कप्तान एबट, काइम मकाम काम करते रहे, विक्रमी १९३३ माघ कृष्ण ५ [हि० १२९३ ता० १९ जिल्हिज = ई० १८७७ ता०५ जैन्युअरी] को मेजर पाउलेट, पोलिटिकल एजेण्ट और सुपरिन्टेन्डेन्ट मुकर्रर होकर कोटेमे दाखिल हुए उन्होने कई बार इलाकहका दौरा करके रईसकी ख्वाहिशके मुवाफिक एक महकमह पचायत मुकर्रर किया, जिसमे तीन जागीरदार और एक बाहरका अह्लकार पडित रामदयाल तईनात हुआ; फौज्दारी, दीवानीमे कुछ तर्मीम होकर इलाकेकी निजामते दुगनी करदी गई, लेकिन् अदालतो और हाकिमोके काइदे और इख्तियार, जो नव्वाब मुस्तारने जारी किये थे, बदस्तूर बर्करार रहे

विक्रमी १९३७ [हि० १२९७ = ई० १८८०] मे मेजर बेले, पोलिटिकल एजेण्ट होकर कोटे पहुंचे, उन्होने कई वर्ष तक उम्दह बन्दोबस्त किया विक्रमी १९४६ [हि० १३०६ = ई० १८८९] मे मेजर बेले, चन्द महीनोकी रुख्सतपर विलायत गये, और उनके एवज कर्नेल ए० डब्ल्यू० रॉबर्टस्, काइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट होकर कोटेमे आये विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ शुक्ल १३ [हि० १३०६ ता० ११ शव्वाल = ई० १८८९ ता० ११ जून] को महाराव शत्रुशाल

दूसरेने साढे सात वर्ष बाइख्तियार, और साढे चौदह वर्ष बेइख्तियार रहकर पचास वर्षसे जियादह उम्रमे बीमारीसे (१) इन्तिकाल किया

महारावकी जिन्दगीमे उनकी पसन्दके मुवाफिक कोटरा महाराज छगनसिंहके दूसरे बेटे उदयसिंह राजके वारिस करार दियेजाकर उम्मेदसिंह नामसे मश्हूर कियेगये

१६-महाराव उम्मेदसिंह- २

इनका जन्म विक्रमी १९३० भाद्रपद शुक्ल १३ [हि० १२९० ता० १२ रजब = ई० १८७३ ता० ५ सेप्टेम्बर] को हुआ यह महाराव, जिनकी बाबत महाराव शत्रुशालने एजेंएटी कोटा और रेजिडेन्सी राजपूतानहको अपनी जिन्दगीमे खरीते लिखदिये थे, विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ [हि० १३०६ शव्वाल = ई० १८८९ जून] को कोटेके रईस माने गये, चन्द रोज बाद अंग्रेजी सर्कारकी मंजूरी आनेपर उनकी गद्दीनशीनीकी रस्म अदा कीगई विक्रमी १९४६ श्रावण [हि० १३०६ जिल्हिज = ई० १८८९ शुरू अगस्त] मे दर्बार मेवाड की तरफसे टीकेका सामान लेकर मै (कविराजा श्यामलदास) कोटे गया था, और महाराणा फत्हसिंह साहिबकी ज्येष्ठ राजकुमारी नन्दकुवर बाईकी सगाई महाराव उम्मेदसिंहके साथ पुख्तह कर आया इसका कुल हाल उक्त महाराणा साहिबके बयानमे सविस्तर लिखा जायेगा महाराव उम्मेदसिंहको मैने देखा, वे बाल तरुण वयसंधीके मध्य, हसत मुख, बुद्धिमान और अच्छे सजीले स्फटिकके मानिन्द मालूम होते है, परन्तु अब जिस रंग ढंगमे समीपी लोग लगावेगे, वैसेही होगे

इन महारावके लिये मेओ कॉलेज अजमेरमे तालीमकी गरजसे कुछ मुद्दत तक दाखिल होनेकी तज्वीज अंग्रेजी सर्कारसे हुई है

---

(१) बहुतसे लोग इनके जहरसे मरनेकी अफ्वाहे उडाते है, और घीसा धायभाई और रामचन्द्र वैद्यको इसी इल्जाममे कैद कियागया था, वैद्य कैदमे ही मरगया, धायभाई मौजूद है, लेकिन जैसी चाहिये, वैसी पुख्तह सुबूती न गुज़री

कोटेका अह्दनामह

एचिसन् साहिबकी अह्दनामोंकी किताब, तीसरी जिल्द, पहिला भाग

अह्दनामह नम्बर - ५५

अह्दनामह ऑनरेब्ल ईस्ट इन्डिया कम्पनी और महाराव उम्मेदसिंह बहादुर राजा कोटा और उनके वारिस और जानशीनोंके दर्मियान, बज़रीए राज राणा जालिमसिंह बहादुर मुन्तज़िम कोटाके, ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी तरफ़से हिज़ एक्सिलेन्सी मोस्ट नोब्ल दि मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, के० जी० गवर्नर जेनरलके दिये हुए इस्तियारातके मुवाफ़िक़ मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़, और महाराव उम्मेदसिंहकी तरफ़से महाराज शिवदानसिंह, साह जीवणराम, और लाला फूलचन्दकी मारिफ़त, जिनको उक्त महाराव और उनके मुन्तज़िम राजराणाकी तरफ़से पूरा इस्तियार मिला था, तै हुआ

पहिली शर्त - गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और महाराव उम्मेदसिंह और उनके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान दोस्ती, इत्तिफ़ाक़ और खैरख्वाही हमेशह काइम रहेगी

दूसरी शर्त - हरएक सर्कारके दोस्त व दुश्मन, दोनों सर्कारोंके दोस्त व दुश्मन समझे जायेंगे

तीसरी शर्त - गवर्मेंट अंग्रेज़ी कोटेकी रियासत और मुल्कको अपनी हिफ़ाज़तमें रखनेका वादह करती है

चौथी शर्त - महाराव और उनके वारिस और जानशीन, गवर्मेंट अंग्रेज़ीके साथ इताअत और इत्तिफ़ाक़ रक्खेंगे, और उसके बडप्पनका लिहाज़ रक्खेंगे, और किसी रईस या रियासतसे, जिनसे अब राह रस्म है, मिलावट नहीं रक्खेंगे

पांचवीं शर्त - महाराव और उनके वारिस और जानशीन गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी रज़ामन्दीके बगैर किसी रईस या रियासतके साथ इत्तिफ़ाक़ या दोस्ती न रक्खेंगे, परन्तु उनकी दोस्तानह लिखापढी दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी

छठी शर्त - महाराव और उनके वारिस और जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और कदाचित् किसीसे किसी तरह तक़ार होजायेगी, तो उसका फ़ैसलह गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त होगा.

सातवीं शर्त - कोटेकी रियासतवाले, जो खिराज मरहटा, (पेश्वा, सेंधिया, हुल्कर और पुवार) को देते थे, वही अलहदह तफ्सीलके मुवाफ़िक़ गवर्मेंट अंग्रेज़ीको दिहली मकाममें दिया करेंगे.

आठवीं शर्त- कोई दूसरी रियासत कोटेकी रियासतसे खिराज नहीं मांगेगी, अगर कोई मांगेगा, तो गवर्मेंट अंग्रेज़ी उसको समझावेगी.

नवीं शर्त- कोटेकी फ़ौज गवर्मेंट अंग्रेज़ीके मांगनेपर उसको अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ दीजायेगी

दसवीं शर्त- महाराव और उनके वारिस और जानशीन अपने मुल्कके पूरे मालिक रहेंगे, और अंग्रेज़ी दीवानी, फ़ौज्दारी वगैरहकी हुकूमत इस राजमें दाखिल न होगी

ग्यारहवीं शर्त- यह ग्यारह शर्तोंका अह्दनामह दिल्लीमें होकर उसपर मुहर व दस्तखत एक तरफ़से मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ और दूसरी तरफ़से महाराजा शिवदानसिंह, साह जीवणराम और लाला फूलचन्दके हुए, और उसकी तस्दीक़ हिज़ एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबल गवर्नर जेनरल और महाराव उम्मेदसिंह और उनके मुन्तज़िम राज राणा जालिमसिंहसे होकर आजकी तारीखसे एक महीनेके अरसेमें आपसमें नक़्ल एक दूसरेको दीजायेगी मक़ाम दिह्ली ता० २५ डिसेम्बर सन् १८१७ ई०

(दस्तखत) सी० टी० मेटकाफ़ | मुहर |

महाराव राजा उम्मेदसिंह बहादुर.

राज राणा जालिमसिंह

महाराजा शिवदानसिंह.

फूलचन्द

(दस्तखत) हेस्टिंग्ज़

यह अह्दनामह तस्दीक़ किया, हिज़ एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने मक़ाम ऊचर कैम्पमें, ता० ६ जैन्युअरी सन् १८१८ ई० को

(दस्तखत) जे० एडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल

तफ्सील खिराजकी, जो अबतक मरहटा रईसोंको दियाजाता था -

१ कोटा
२ सात कोटड़ी
३ शाहाबाद

१ कोटेका खिराज

नक्द रुपये २०००००

अस्बाब रुपये १०००००

कुल " ३०००००

नुक्सानी अस्बाब " २००००

नक्द " २८००००

दो लाख अस्सी हजार चादौडी,
उज्जैनी और इन्दौरी रुपये
बट्टा बाबत ऊपर लिखेहुए सिक्केके
आठ रुपया सैकडाके हिसाबसे " " २२४००

बाक़ी " २५७६००

दो लाख सत्तावन हजार छ सौ गुमानशाही रुपये, जिसके दिल्लीके रुपये दो लाख चवालीस हजार सात सौ बीस

तफ्सील ऊपर लिखे रुपयोकी

हिस्सह सेंधिया

नक्द रुपये ७७०००

अस्बाब " ३८५००

कुल रुपये " ११५५००

नुक्सानी अस्बाब " ७७००

नक्द " १०७८००

एक लाख सात हजार आठ सौ उज्जैनी,
चादौडी और इन्दौरी रुपये
बट्टा बाबत ऊपर लिखे सिक्केके आठ
रुपया सैकडाके हिसाबसे " ८६२४

बाकी गुमानशाही " ९९१७६

हुल्करका हिस्सह उसी क़द्र है, जिस क़द्र सेंधियाका

पुवारका हिस्सह.

नक्द . . . रुपये ४६०००

अस्बाब . . . " २३०००

	कुल रुपये	” ६९०००
नुक्सानी अस्बाब		” ४६००
नक्द		” ६४४००
बट्टा आठ रुपया सैकडाके हिसाबसे		” ५१५२
	बाकी गुमान शाही	” ५९२४८

२— सात कोटडियोका खिराज

नक्द	बूंदीके रुपये	२२१५८
बट्टा पाच रुपया सैकडा		” ११०८
बाकी		” २१०५०
इक्कीस हजार पचास गुमानशाही रुपये जिसके सिक्कह दिहली		” १९९९७॥)

तफ्सील

आतरोदा		बूंदीके रुपये	३८००
बट्टा पाच रुपया सैकडा		”	१९०
		गुमानशाही ”	३६१०
सेंधियाका हिस्सह	रुपये ” १८०५		
हुल्करका हिस्सह	” १८०५		
बल्बन		बूंदीके रुपये	१०००
बट्टा		”	५०
		गुमानशाही ”	९५०
सेंधियाका हिस्सह	रुपये ४००		
हुल्करका हिस्सह	” ४००		
पुवारका हिस्सह	” १५०		
करवाड, गेता और पीपलदा		बूंदीके रुपये ”	३५६०
बट्टा पाच रुपया सैकडा		”	१७८
		गुमानशाही रुपये ”	३३८२
सेंधियाका हिस्सह	रुपये १५२०		
हुल्करका हिस्सह	” १५२०		
पुवारका हिस्सह	” ३४२		

इन्द्रगढ़ और खातोली,- दस गाव हुल्कर और

सेंधियाके ठेकेदारोके कब्जेमे है — बूंदीके रुपये १३७९८
बट्टा पाच रुपया सैकडा — " ६९०
गुमानशाही " १३१०८

३- शाहाबादका खिराज

यह खिराज अबतक पेश्वाको दिया जाता था उसकी ठीक तादाद मालूम नहीं हुई, परन्तु अन्दाजन् २५००० रुपया मालूम हुआ, जिसमे आधा नक्द और आधा अस्बाब दिया जाता था

(दस्तखत) सी० टी० मेट्काफ मुहर

महाराव राजा उम्मेदसिह बहादुर
राज राणा जालिमसिह
महाराजा शिवदानसिह
फूलचन्द्

ततिम्मह शर्त, उस अह्दनामहकी, जो गवर्मेंट अंग्रेजी और रियासत कोटाके आपसमे ता० २६ डिसेम्बर सन् १८१७ ई० को हुआ था

दोनो फरीक यह मजूर करते है, कि महाराव उम्मेदसिह राजा कोटाके बाद यह रियासत उनके वलीअह्द बडे बेटे महाराज कुवर किशोरसिहको और उनके वारिसो को सिल्सिलहवार हमेशहके वास्ते मिलेगी, और रियासतके कामोका कुल इन्तिजाम राज राणा जालिमसिंह और उनके पीछे उनके बडे बेटे कुवर माधवसिह और उनके वारिसोके तअल्लुक सिल्सिलहवार हमेशहके लिये रहेगा

मकाम दिह्ली ता० २० फेब्रुअरी सन् १८१८ ई०

दस्तखत- सी० टी० मेट्काक

महाराव राजा उम्मेदसिह बहादुर
राज राणा जालिमसिह
महाराजा शिवदानसिह
फूलचन्द्
जीवणराम

यादाश्त- इस ततिम्मह शर्तको हिज एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने मकाम

लखनऊमे तस्दीक किया ता० ७ मार्च सन् १८१८ ई० को

(दस्तखत) जे० ऐडम,

सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल

अह्दनामह नम्बर ५६

गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलकी मुहरी और दस्तखती सनद,
कोटाके महाराव उम्मेदसिंहके नाम

हाल और आगेको होनेवाले गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके कुल अह्लकार मालूम करें,

गवर्मेंएट अंग्रेज़ी और कोटाके महाराव उम्मेदसिंहके आपसमे, जो दोस्ती काइम हुई है, और जो जो खिड्मते गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी उसने की है, वे भी जाहिर और साबित है, इस सबबसे उसके बदलेमे मोस्ट नोब्ल मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज़, गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलने कप्तान टॉड साहिबके कहनेपर नीचे लिखे मकाम उक्त महारावको दिये, और शाहाबादका खिराज, जो दिल्लीमे नै पाये हुए अह्दनामह ता० २६ डिसेम्बर सन् १८१७ ई० के मुवाफिक, महारावसे लिये जाने लाइक था, मुआफ किया गया उसको महाराव और उसके वारिस व जानशीन हमेशह अपने खर्चमे लावे

इस वास्ते महाराव अपनेको मालिक और हाकिम इन मकामोका, और रअय्यतको अपना शरीक हाल जानकर अपना तावेदार समझे इसमे कोई दख्ल नही करेगा

पर्गनह डीग, पर्गनह पच पहाड, पर्गनह आहोर, पर्गनह गगराड यह सनद मुहरी व दस्तखती गवर्नर जेनरल इन कॉन्सिलकी ता० २५ सेप्टेम्बर सन् १८१९ ई० को मिली

नम्बर- २४

महाराव किशोरसिंहके मुहरी व दस्तखती इक्रारनामहका तर्जमह,
मकाम नाथद्वारा, मिती मार्गशीर्ष कृष्ण १३
मुताबिक ता० २२ नोवेम्बर सन १८२१ ई०

मै (महाराव किशोरसिंह) बहुत अफ्सोस करता हू, कि मैने जो काम साल गुज़श्तहमे किया है, और खासकर थोडे अरसहसे, जिसका कारण मै हुआ हू, और उसी चालकी बुराइयोसे भी खूब वाकिफ हुआ, चाहे वह बाबत गवर्मेंटके नेक

खयाल या कोटा रियासतकी बिह्तरी या खास अपनी खुशी व बिह्तरीकी थी, और आजकी तारीख इन नीचे लिखी हुई शर्तोंपर अपनी मुहर व दस्तखत करता हू, जिसके मुवाफिक मै आगेको काम करूगा इस मेरे धर्म कर्मका श्री नाथजी गवाह है जो मै इन शर्तोंसे फिरू, तो आइन्दह गवर्मेंट अंग्रेजीकी मिहर्बानीका हक्दार नही हू

(१)- जो कुछ गवर्मेंट अंग्रेजी हुक्म देगी, मै खुशीसे उसकी तामील करूगा, और जो कुछ आप (कप्तान टॉड साहिब) की मारिफत मेरे लिये आगेके फाइदे और मज्बूतीकी नसीहत होगी, उसमे कुछ उज्र नही करूगा

(२)- दिह्लीके अह्दनामहके मुवाफिक मेरे नामसे और मेरे जानशीनोके नामसे नानाजी जालिमसिंह और उनके वारिस और जानशीन रियासतके कुल कामोका इन्तिजाम, जैसे कि मेरे बाप राजा उम्मेदसिंहकी जिन्दगीमे करते थे, करेगे, कुल कामो, मुल्की, माली, फौजी, किले और बहाली बर्तरफी अह्लकारोकी बाबत उनको इख्तियार रहेगा, और मै उसमे दख्ल नही दूगा

(३)- फसादी लोगोको सजा दी गई, और मेरे बद सलाहकार लोग अलग कर दियेगये, या मैने आपके हुक्मके मुवाफिक मौकूफ करदिये, वे ये थे - गोवर्द्धनदास, सैफअली, महाराजा बलवन्तसिंह, काजी मिर्जा मुहम्मदअली, शैख हबीब वगैरह ये और दूसरे, कि जिन्होने मुझे गुमराह किया था, उन सबसे मै हर्गिज आइन्दह किसी तरहका सरोकार नही रक्खूगा

(४)- मुझे जिस जिस तरहकी खास सिपाह जिस जिस कद्र रखनेकी इजाजत दीजावेगी, उससे जियादह लश्कर हर्गिज भरती करनेकी कोशिश नही करूगा, और रियासती कामोमे हर्ज करनेवाले और दख्ल देने वाले लोगोको न अपने दर्बारमे रक्खूगा, न उनसे किसी तरहका तअल्लुक रक्खूगा

तफ्सील नम्बर- १

तफ्सील रकम मदद खर्च, जो हर महीनेके बीचमे कोटाके महाराव किशोरसिंहके गुजारेके लिये और उनके खानगी मुलाजिमो और सिपाह वगैरहके लिये मुन्तजिम रियासत कोटा महारावको महा विद १ सवत् १८७८ मुताबिक ता० ८ जेन्युअरी सन् १८२२ ई० से दियाकरेगे

नम्बर		माहवार.			सालानह		
		रु०	आ०	पाई	रु०	आ०	पा०
१	मन्दिर श्री वृजराजजीका	४००-	०-	०	४८००-	०-	०
२	खास पुण्यार्थ (खैरात)	०-	०-	०	२२००-	०-	०
३	रसोई पन्द्रह रुपया रोज	४५०-	०-	०	५४००-	०-	०

नम्बर		माहवार	सालानह
	ड्योढी (महलके नौकरो) का खर्च–		
४	गहना	०	९३०६– ९ – ९
५	राणियोका जेवर	०	१२०००– ० – ०
६	महारावजीके महलमे पहरनेको पोशाक और खैरात	०	१८०००– ० – ०
७	जैब खर्च	२०००	२४०००– ० – ०
८	शागिर्द पेशह (गुलाम)	१०००	१२०००– ० – ०
९	फोसला	०	६७९६– ८ – ०
१०	फीलखानह	०	३२७६– ९ – ०
११	रथ, गाडी जनानी सवारी	०	१४०३– ५ – ६
१२	महाजान, और पालकीके कहार	०	१२३९– ० – ०
१३	महलका चौकी पहरा–		
	एक सौ सवार रु० २५ माहवार	२५००	३००००– ० – ०
	दो सौ पियादे मुताबिक तफ्सील हिन्दी दो सूबहदार फी नफर २० रुपये, दो जमादार फी नफर १२ रु०, निशानबर्दार ८, हवालदार ८, सिपाही फी नफर ७ रु०	१४६५	१७५८०– ० – ०
१४	जहाइब यानी ऊंट ५	०	३१७– २ – ०
१५	रेगिस्तानके ऊट ४	०	४८८– ७ – ९
१६	ईंधन याने लकडी वगैरह	०	७२०– ० – ०
१७	घास वगैरह	०	८५०– ० – ०
१८	रौशनाई, तेल, चराग, सियाही वगैरह	०	१८००– ० – ०
१९	रगाई कपडे वगैरहकी	०	२०००– ० – ०
२०	अबानत याने मरम्मत मकानात	२५०	३०००– ० – ०
२१	घोड़े, बैल, ऊंटकी खरीद तावे	०	६०००– ० – ०
२२	मरम्मत पर्दा, शतरजी, कानात, डेरा वगैरह	०	१०००– ० – ०
२३	दवाखानह, दवा वगैरह खरीदमे	०	४००– ० – ०
२४	लौडा खानह	०	३००– ० – ०

कुल ज़र सालियानह १६४८७७–१०–०

रु० आ० पा०

या खर्च माहवारी सिक्कह हाली कोटा १३७३९ - १२ - १०

(दस्तखत) माधवसिंह

तफ्सील मदद खर्च, जो मुन्तज़िम रियासत कोटा, पृथ्वीसिंहके बेटे बापूलाल और उनके खानदानको हर महीनेके बीचमें दियाकरेंगे - माह वदि १ संवत् १८७८, मुताबिक ता० ८ जैन्युअरी सन् १८२२ ई० से-

सालियानह कोटाका हाली रुपया	१८००० -० -०
या माहवारी	१५०० -० -०

(दस्तखत-) माधवसिंह

वे शर्तें, जो कप्तान टॉड साहिबने वास्ते रहनुमाई और पर्वरिश महाराव किशोरसिंह और उनके वारिसोंके तज्वीज़ कीं, और जिसपर कुंवर माधवसिंहने दस्तखत किये -

१ - महल व मकानात सैर व बागात वाके शहर कोटा और गिर्द नवाह कोटा, याने शहरके महल, महलात उम्मेदगंज, रंगबाड़ी, जगपुरा व मुकुन्दरा; और बागात जो ब्रजराजजी, गोपालनिवास और ब्रजबिलास नामसे मश्हूर हैं, ये सब महारावके कब्ज़हमें रहेंगे, इसमें इस्तियार महारावका रहेगा, और कुछ दख्ल मुल्कके बन्दोबस्त करने वालेका न रहेगा

उन दीवारोंकी हद्दके अन्दर, जो महलोंके लिये शहरमें जुदा खिंची हुई हैं, अक्सर मकान हैं, कि जिनमें राज राणाका खानदान और दूसरी औरतें रहती हैं, वहां पर, वह गली जो नये बुर्जसे खत्री दर्वाज़ेतक है, और जिस दर्वाजेको पानी दर्वाज़ा भी कहते हैं, बिल्कुल दोनोंका रास्तह जुदा करदेता है पस लाज़िम है, कि दोनों तरफ़ वाले अपनी अपनी हद्दोंसे बाहर न जावें- पानी दर्वाज़ा दोनोंमें शामिल है, मगर सिवाय हथियार बन्द सिपाहियोंके पानी लेनेके वास्ते और कोई न जावे, और यह मुन्तज़िम रियासत सिवाय पचास चौकीदारानके वास्ते हिफ़ाज़त उन मकामात और कूचेके मुक़र्रर न करेगा

२ - बन्दोबस्त वास्ते गुज़र औक़ात महाराव और उसके खानदान वगैरहके बमूजिब तफ्सील नम्बर १ के तादादी कोटा हाली रुपया एक लाख चौंसठ हज़ार आठ सौ सतहत्तर दस आना तीन पाई सालियानह, या मुब्लिग़ तेरह हज़ार सात सौ उन्तालीस रुपया बारह आना नौ पाई माहवारी दिया जावेगा, और यह रुपया हर आधा महीना गुज़रनेके बाद अमानतके तौरपर हर महीनेमें मारिफ़त

महाजन मुकर्रह राजराणाके दियाजावेगा, उसकी रसीद महाराव देकर एक नक्ल उसकी बखिद्मत साहिब एजेण्ट सर्कार अंग्रेजीके ब तौर सनद रसीद रुपयोंके भेजेंगे-

खास बाइस इस रुपयेके खर्चके, जिनका जिक्र तफ्सील नम्बर १ मे लिखा है, कुल जेर महाराव बतौर उनके ख़ानगी नौकरो वगैरहके और सिपाहियान चौकी पहरा महलात वगैरहके है

(३)- महारावके खानदानमे शादी या बालक पैदा होनेकी रस्म सब शान व शौकत मारिफत मुन्तजिम रियासतके होगी, जैसे कि साबिक जमानहमे होती थी, और अगर महारावके वारिस पैदा होगे, तो उनकी पर्वरिशके वास्ते जुदा बन्दोबस्त खर्चका रस्मके मूजिब मुनासिब कियाजावेगा

(४)- महाराव और उनके ख़ानदानकी इज्जत व हुर्मत साबिक दस्तूर जारी रहेगी, जैसे कि पहिले थी महाराव वही रस्म त्योहार वगैरह जैसे दशहरा, जन्माष्टमी वगैरह है, अदा करेगे, जो पहिले करते थे, और दान पुण्य भूरसी वगैरह पहिले मूजिब जारी रहेगे.

(५)- जब महाराव हवाखोरी या शिकारको सवारी करेगे, तो वही सब अलामात राज की उनके साथ रहेगी, जो पहिलेसे उनके साथ रहती थीं, और अर्दलीके सिपाही साथ रहेगे

(६)- एक सौ सवार और दो सौ पियादे हस्ब तफ्सील मुन्दरजे नम्बर १ ऊपर लिखीहुई खास चौकी और महलके जो पहरे वगैरहके वास्ते है, वे बिल्कुल जेर हुक्म महारावके रहेगे, और कोई उनमे मुदाखलत नही करेगा, और उन सबका, जिनका जिक्र बनाम निहाद बाईस खर्च रकम मदद खर्च व बसर औकातके दर्ज है, मिस्ल मुलाजिमान खानगी व महलात व दीगर मुतअल्लिकान महलातके महाराव मालिक कुलका रहेगा

(७)- बतौर मदद खर्च बापूलालजी वलद पृथ्वीसिहके और उसके खानदान और दूसरे वसीलह रखने वालोके मुब्लिग अठारह हजार रुपया सालियानह, या पन्द्रह सौ रुपया हाली माहवारी मुकर्रर हुआ है यह रुपया जिस तरह और जिस वक्त मदद खर्च महारावका अदा होगा, उसी तरह अदा होता रहेगा, और पहिली शादीके वक्त उनको मुनासिब खर्च मुन्तजिम रियासत देगा

(८)- सिपाही या मुत्सद्दी, जिनको मुन्तजिम रियासतने बर्खास्त किया होगा, या जो उसकी नौकरी छोडकर चले गये होगे, उनको महाराव अपनी चाकरीमे न रक्खेगे; और इसी तरह महारावके बर्खास्त किये हुए या भागे हुए मुलाजिमोको मुन्तज़िम रियासत अपने पास नहीं रक्खेगा.

(९)- एक मोतबर आदमी साहिब एजेण्ट गवर्मेण्टकी तरफ़से महारावके पास रहाकरेगा, और यह शख्स आम किताबत या बातोमे वकील रहेगा

(१०)- जो कर्जह महारावने इस फसादके लिये लिया होगा, या वह इसके बाद लेगा, उसकी जिम्मह्वारी रियासतकी नहीं होगी

मिती फागुन बदी १ सवत् १८७८ मुताबिक ता० ७ फेब्रुअरी सन् १८२२ ई०

यहा दस्तखत माधवसिहके इस इबारतसे है- "जो कुछ लिखागया है, उसमे फर्क न होगा"

अह्दनामह नम्बर ५८

अह्दनामह दर्मियान गवर्मेण्ट अंग्रेजी और महाराव रामसिंह

कोटाके

शर्त पहिली- कोटाके रियासती कामोके इन्तिजाम छोडनेके बाइस राज राणा मदनसिंहका हक, जो मुवाफ़िक ततिम्मह शर्त अह्दनामह, जो दिह्लीमे हुआ, राजराणा जालिमसिह और उसके वारिसो और जानशीनोका था, महाराव रामसिंह उस शर्तके रद्द होजानेमे मजूरी देते है

शर्त दूसरी- गवर्मेण्ट अंग्रेजीकी रजामन्दीसे महाराव इक़ार करते है, कि नीचे लिखी तफ्सीलके मुवाफ़िक पर्गने राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसो और जानशीनोको दे

शर्त तीसरी- महाराव और उनके वारिस और जानशीन नीचे लिखे पर्गनोके हेर फेरमे, जो जुरूरत हो, नीचे लिखी तफ्सीलके मुवाफ़िक दूर करदेगे -

शर्त चौथी- महाराव अपनी और अपने वारिसो और जानशीनोकी तरफ़से इक़ार करते है, कि मामूली खिराज, जो अब तक कोटाकी तरफ़से गवर्मेण्ट अंग्रेजीको दियाजाता है, देते रहेगे, अलावह ८०००० कल्दार रुपयोके, जिनकी बाबत गवर्मेण्ट अंग्रेजोने वादह किया है, कि वह राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसो और जानशीनोसे हर साल लेगे, और पहिली सर्कारी किस्त सवत् १८९५ के शुरूसे राजराणा अदा करेगे, और जो सर्कारी आधी क़िस्त सवत् १८९४ की फस्ल रबीअ् (उन्हाली) की बाबत १३२३६० रुपया बाकी है, वह कोटाकी रियासतसे दिया जावेगा

शर्त पाचवीं- महाराव अपने और अपने वारिसो व जानशीनोकी तरफ़से इक़ार करते है, कि अगर गवर्मेण्ट अंग्रेजी जुरूरत समझे, तो एक जगी फ़ौज अंग्रेजी अफ्सरोकी

मातह्तीमे भरती करे, और यह बात करार पाचुकी है, कि यह फौज किसी तरह महाराव व उनके वारिसो और जानशीनोके रियासती कामोके बन्दोबस्तकी रवादार या दख्ल देनेवाली न होगी

शर्त छठी- इस फौजका खर्च ३००००० रुपये सालानहसे जियादह न होगा

शर्त सातवीं- अगर यह फौज नौकर रक्खी जायेगी, तो इसके खर्चका रुपया भी मुन्तज़िम रियासत, महाराव, और उसके वारिस और जानशीन गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको छ माहीकी दो किस्तोमे खिराजके साथ जमा करेंगे, और पहिली किस्तकी मीआद गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी मुकर्रर करेगी

शर्त आठवीं- यह बात मालूम रहनी चाहिये, कि दिह्लीमे तै पायेहुए अह्द-नामहकी शर्तें, जो गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और महाराज उम्मेदसिंह बहादुरके आपसमे ता० २६ डिसेम्बर सन् १८१७ ई० को करार पाई हैं, और जिनमे इस अह्दनामहकी शर्तोंसे कुछ फर्क नहीं आया है, काइम और बहाल रहेंगी

शर्त नवीं- इस अह्दनामहकी ऊपर लिखी शर्तें गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और महाराव रामसिंह राजा कोटाके आपसमे तै होकर उसपर दस्तखत और मुहर कप्तान जॉन लडलो काइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट और लेफ्टिनेण्ट कर्नेल नथेनिल आल्विस, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके एक तरफ, और महाराव रामसिंहके दूसरी तरफ हुए इसकी तस्दीक दो महीनेके अरसहमे राइट ऑनरेबूल दि गवर्नर जेनरल बहादुर से होकर यह अह्दनामह आपसमे बदला जायेगा मकाम कोटा, ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई०

(दस्तखत-) जे० लडलो,
काइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट

मुहर महाराव रामसिंह

(दस्तखत-) एन० आल्विस,
एजेण्ट गवर्नर जेनरल

इस अह्दनामहके उन पर्गनोकी तफ्सील, जो राजराणा मदनसिंह और उसके वारिसो और जानशीनोके वास्ते अलह्दह होकर रियासत झालावाड नाम जुदा काइम हुई

चीहट

सुकेत

चौमहला, जिसमे पचपहाड, आहोर, डीग और गगराड शामिल हैं.

झालरापाटन उर्फ उमेल रताय

रीचवा	मोहर थाना
बकानी	फूल बरोड
दीलमपुर	चाचोरनी
कोटडाभट्ट	ककोरनी
सूरेरा	छीपा बरोड

शेरगढका उस तरफ का हिस्सह, याने पूर्व की तरफ परवान्, या नेवज और शाहाबाद

वाजिह हो, कि नर्पतसिंह, झालावाडका इलाकह छोडकर महारावके इलाकहमे बसेगा, और उसका इलाकह राजराणाके सुपुर्द होगा

मकाम कोटा,

ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई०

(दस्तखत)- जे० लडलो,

काइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट

(दस्तखत)- एन० आल्विस,

एजेण्ट गवर्नर जेनरल

राजराणा मदनसिंहकी मुहर

ऊपर लिखे अहदनामहकी तीसरी शर्तके मन्शाके मुवाफिक, जिस जिसका कर्जह महाराव और उसके वारिस और जानशीनोको देना वाजिब है, उसकी तफ्सील यह है -

	रु० आ०पा०		रु० आ०पा०
पंडित लालाजी रामचन्द-	९२७३६४-१५-६	छगन कालू नागर-	५००००- ०-०
गोवर्द्धननाथजी-	३०६४३- ५-६	लक्ष्मणगिर हरीगिर-	१०९०१- ०-०
विट्ठलनाथजी-	३७५१७६- ०-०	बोहरा दाऊदजी खानजी-	११५८८- ६-६
लाला सुगनचन्द-	५६१९६- १-०	साह मगलजी-	८९४८- ५-३
जगन्नाथ सीताराम-	१००८२५- ४-९	साह हमीर वैद्य-	१०९६१७-१०-६
शिवलाल साकिन पतवार-	१००३३- ४-०	दुलजीचन्द उत्तमचन्द-	१०१९५-१०-०
केशवराम वैजनाथ-	२४१७४७-१२-९	माधव मुकुन्द-	१०९५-१३-९
गोविन्ददास रामगोपाल-	२०४४१- १-३	बोहरा वली भाई-	५२५-११-३
गणेशदास किशनाजी-	२०२८१- ९-९	बख्तावरमल बहादुरमल-	१८२-१५-९
मोहनराम हरलाल-	११३४-१-९		

	रु०	आ०	पा०
नन्दराम पीरूलाल-	७४७३	१३	०
उम्मेदराम भैरूराम-	९७७१	९	०
गोपालदास बनमालीदास-	२९०८	१३	०
साह जीवणराम-	८३५	१४	०
सुजानमल शेरमल-	२४४८७	८	०
मोहनलाल वैद्य-	५५४२३	१३	०
शालिग्राम-	१४५५४	०	०
मौजीराम मूलचन्द-	३८९३	१२	६
दलजी मनीराम-	४५७७९६	०	०
कनीराम भूरानाथ-	४०८१९	१	०
भूरा कामेश्वर-	४७७०३	८	६
शोभाचन्द मोतीचन्द-	१५६७१	२	९
शिवजीराम उदयचन्द-	३४८	७	३
भागचन्द साकिन भदोरा-	५४७	२	२
बोहरा श्रीचन्द गगाराम-	६३८३	२	३

ऊपर लिखा कर्जह तह्क़ीक़ात करके महाराव हरएक शख़्सको देगे, और इसके सिवाय भी और किसीको देना होगा, तो तह्क़ीक करनेपर, जिसका देने लाइक होगा, दिया जावेगा

मकाम कोटा,

ता० १० एप्रिल, सन् १८३८ ई०

(दस्तखत)- जे० लडलो,

काइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट

(दस्तखत)- एन० आल्विस,

एजेण्ट गवर्नर जेनरल

मुहर महाराव रामसिंहकी

अह्दनामह न० ५९

अह्दनामह बाबत लेनदेन मुज्रिमोंके, दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेण्ट और श्रीमान् शत्रुशालसिंह बहादुर महाराव कोटा व उनके वारिसों और जानशीनोंके, एक तरफ़से कप्तान आर्थर नील ब्रूस, पोलिटिकल एजेण्ट हाडौतीने, बइजाज़त कर्नेल विलिअम

फ्रेड्रिक एडन, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इस्तियारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको श्रीमान् राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट, जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ०, वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से कविराजा भवानीदानजीने उक्त महाराव शत्रुशालसिंह बहादुरके दिये हुए इस्तियारोंसे किया

पहिली शर्त – कोई आदमी अंग्रेजी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेजी इलाकहमें संगीन जुर्म करके कोटाकी राज्य सीमामें आश्रय लेना चाहे, तो कोटेकी सर्कार उसको गिरिफ़्तार करेगी, और दस्तूरके मुवाफ़िक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेजी को सुपुर्द करदेगी

दूसरी शर्त – कोई आदमी कोटेके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेजी राज्यमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी वह मुज्रिम गिरिफ़्तार करके कोटाके राज्यको काइदहके मुवाफ़िक़ तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी

तीसरी शर्त – कोई आदमी, जो कोटाके राज्यकी रअय्यत न हो, और कोटाकी राज्य सीमामें कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेजी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी उसको गिरिफ़्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमहकी तह्क़ीक़ात सर्कार अंग्रेजी की बतलाई हुई अदालतमें कीजायेगी, अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमें होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्तपर कोटेकी पोलिटिकल निगरानी रहे

चौथी शर्त – किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफ़िक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाकहमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाकहके क़ानूनके मुवाफ़िक़ सहीह समझीजावे, जिसमें कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ़्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम करार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है

पांचवीं शर्त – नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेंगे –

१ – खून २ – खून करनेकी कोशिश ३ – वह्शियानह कत्ल ४ – ठगी ५ – ज़हर देना ६ – ज़िना बिल्जब्र (जबर्दस्ती व्यभिचार) ७ – ज़ियादह ज़ख्मी करना ८ – लड़का बाला चुरालेजाना ९ – औरतोंको बेचना १० – डकैती ११ – लूट १२ – सेंध (नक़ब) लगाना १३ – चौपाया चुराना १४ – मकान जलादेना १५ – जालसाजी करना. १६ – झूठा सिक्कह चलाना १७ – खयानते मुज्रिमानह

१८– माल अस्बाब चुरालेना १९– ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमे मदद देना, या वर्गलाना

छठी शर्त– ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक मुज्रिमोंको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमे, जो खर्च लगे, वह दर्ख्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पडेगा

सातवी शर्त– ऊपर लिखाहुआ अह्दनामह उस वक्ततक बर्करार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करनेवाली दोनो सर्कारोमेसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे

आठवी शर्त– इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो दोनो सर्कारोके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तों के बर्खिलाफ हो

मकाम कोटा ता० ६ फेब्रुअरी सन् १८६९ ई०

मुहर (दस्तखत)– ए० एन० ब्रुक, कप्तान,
पोलिटिकल एजेण्ट.

मुहर

मुहर (दस्तखत)– मेओ

इस अह्दनामहकी तस्दीक श्रीमान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मकाम फोर्ट विलिअमपर ता० ५ मार्च सन् १८६९ ई० को की

मुहर (दस्तखत)–डब्ल्यू० एस० सेटन्कार, सेक्रेटरी,
फॉरेन् डिपार्टमेन्ट, सर्कार हिन्द

झालरा पाटनकी तारीख

जो कि रियासत झालावाड राज कोटामे निकली है, इसलिये उसके पीछे यहांकी तारीख लिखी जाती है

जुग्राफ़ियह

झालावाडमें अलग अलग दो रकबे हैं, खास रकबेके उत्तर तरफ़ कोटा, और दक्षिण तरफ़ राजगढ, रियासत सेंधिया व हुल्करके कुछ हिस्से और इलाकह दिवेरका जुदा रकबह और जावरासे पूर्व तरफ़ सेंधियाका मुल्क और रियासत टौंकके एक न्यारे रकबेसे पश्चिम तरफ़ सेंधिया व हुल्करके जुदा जुदा जिले हैं रियासतका यह हिस्सह २४°-४८′ और ३०°-४८′ उत्तर अक्षांशके दर्मियान और ७५°-५५′ और ७७° पूर्व देशान्तरके बीचमे वाके है दूसरा छोटा अलहदह रकबह उत्तर, पूर्व और दक्षिणमें इलाकह ग्वालियरसे, और पश्चिममे रियासत कोटासे घिराहुआ है इसका विस्तार २५°- ५′ और २५°-२५′ उत्तर अक्षांशके बीच और ७७°-२५′ और ७६°- ५५′ पूर्व देशान्तरके बीच है रियासतके कुल रकबहकी तादाद २६९४ मील मुरब्बा, और १४५७ ग्राम व कस्बोमे सन् १८८१ ई० की खानह शुमारीके अनुसार ३४०४८८ आबादी है आमदनी १५२५२३० रुपयामेसे ८०००० खिराजके सर्कार अंग्रेजीको देते है

मुल्ककी सूरत और जमीनकी हालत—इस रियासतका खास रकबह एक टीलेपर वाके है, जो समुद्रके सत्हसे उत्तरमे हजार फुटसे ऊंचा, और दक्षिणमे चार सौसे पांच सौ फुट तक और भी ऊंचा होगया है उत्तरी, पूर्वी और दक्षिणी हिस्से इस रकबेके पहाडी है, जिनमे छोटे बडे बहुतसे नाले है, पहाडियोके जियादह हिस्सेमे घास और जंगल है, और कई जगह पानीके बहावपर बन्द बांध बांध कर बडे बडे झील बना-लिये गये है रियासतमे इस रकबहका बाकी हिस्सह उपजाऊ और मैदान है, जिसमे हमेशह हरे रहने वाले दरख्त भी दीख पडते है शाहाबादका जुदा हिस्सह पश्चिममे ऊंचा है, और उसमे पानी बहुत नीचे पाया जाता है पूर्वी हिस्सह पांच सौ या छ सौ फुट नीचा है, इसके ऊपर बहुतसी पहाडियां और गहरे जंगल होनेके सबब यह हिस्सह भयानक मालूम होता है

जमीन जियादह तर उपजाऊ है, जिसमे काली मिट्टी है, और उसमे अफ्यून जियादह पैदा होती है इसमे तीन प्रकारकी जमीन है, और हर एककी तीन तीन किस्मे पैदावारीके मुवाफिक है, याने काली, धामनी और लाल पीली पिछली खेतीके

हकमें कम पैदावार है, अनुमान किया गया है, कि जोतनेके लाइक जमीनके चार हिस्सोमेसे एक हिस्सह काली, दो हिस्सह धामनी और एक हिस्सह लाल पीली है

नदिया

इस रियासतमे कई नदिया है, उनमेसे जो मश्हूर है, उनके नाम नीचे लिखे जाते है -

पर्वन- यह नदी दक्षिणी पूर्वी किनारेसे रियासतमे दाखिल होकर ५० मील बहने बाद कोटा रियासतमे दाखिल होती है आधी दूरपर इसमे नीबज, जो बडी नदी है, आकर मिलजाती है वह १६ मील तक रियासत कोटाके साथ हद काइम करती है इस नदीके पार होनेको दो घाट है, एक मनोहर थानहपर और दूसरा भचूरनी मकामपर, और नीबज नदीमे भूरेलिया मकामपर एक रास्तह भी है

दक्षिण तरफ़ काली सिन्ध इस रियासतको हुल्कर और सेधियाके इलाकोसे और उत्तर तरफ बढकर कोटेकी रियासतसे जुदा करती है इस नदीमे चटाने बहुत है, और इसके किनारे ऊचे है, जिनपर कही कही दरख्त ऊगे हुए है इस रियासत मे ३० मीलतक यह नदी बहती है, और दो एक जगह छावनी अर्थात महाराजराणा के मुख्य रहनेके मकामसे एक मीलसे कम फासिलेपर है मकाम भवनरसा पर इसमे एक गुजर गाह है

आहू नदी, दक्षिण पश्चिमी कोनेसे बहकर रियासतमे ६० मील तक गुजरने बाद दक्षिणी तरफ इलाके हुल्कर और टौंकसे, उत्तरमे रियासत कोटेसे उस मकामपर, जहा यह कोटेमे दाखिल होती है, इस राज्यको अलग करती है इसके पेटेमे चटाने कम है, और ऊचे किनारोपर, जहा दरख्त ऊगे है, वह रमणीक स्थान है सुकेत और भेलवाडी मकामपर नदीपार उतरनेके घाट है.

छोटी काली सिन्ध, सिर्फ थोडी दूर तक राज्यके दक्षिण पश्चिम तरफ़ बहती है गगराडमे उससे पार उतरनेकी जगह है

झील व तालाब- इस रियासतमे अक्सर बडे कस्बो व मकामातके करीब तालाब व बन्द वगैरह है, जिनके जरीएसे उन मकामातके आस पासकी जमीन सींचीजाती है राजधानी झालरापाटनके नीचेका तालाब बड़ा है, जहासे दो मील तक ईटकी नहर बनी हुई है, जिसको जालिमसिहने बनवाया था इसके ज़रीएसे उस तालाबका पानी झालरापाटनके दूसरी तरफ वाले गावोकी जमीनको सेराब करता है

आबो हवा- यहाकी सिहत बख्श है, और उत्तरी राजपूतानहकी बनिस्बत गर्मी कम

पडती है, दिनके वक्त छायामे थर्मामिटर ८५ या ८८ दरजे तक पहुचता है, और सुबह, शाम व रातको बराबर ठड रहती है बारिश सालमे ३० या ४० इच औसतके हिसाबसे होती है

पहाड वगैरह– हिन्दुस्तानके दो पहाडी सिलसिले अच्छी तरह दिखाई देते है, झालरापाटन (राजधानी) दक्षिणी पहाडी कतारके उत्तरी किनारे विन्ध्याचलकी तहपर है यह पहाड, जिसका नाम मालभी है, और जो हिन्दुस्तानकी पहाडी कतारके ऊपरी हिस्सहसे विन्ध्याचलकी चटानो तक तअल्लुक रखता है, झालरापाटन के करीब ही है, जिसमे रेतीले और चिनिया पत्थर पाये जाते है विन्ध्याचलके इस पहाडी सिल्सिलेमे नीचाई ऊचाईकी जियादह तफ़ीक नही है, इनके एक तरफ नीचेके पहलू ढलाऊ और एक तरफके सीधे और ऊचे है इन तमामपर रेतीला पत्थर होता है, परन्तु झालरापाटनके नज्दीककी तहोमे इख्तिलाफ है जो दक्षिण पूर्वसे उत्तर पश्चिम तरफको है, उनके सतह नीचेसे मिले हुए, परन्तु ऊपरकी तरफ खिचते गये है, जो सत्तर डिगरी पूर्वोत्तर और दक्षिण पश्चिमके गहरावके साथ है उनकी चोटीपर रेतीले पत्थरकी सिल्लिया पाई जाती है यह कैफियत उत्तर पूर्वमे रफ्तह रफ्तह कम होजाती है विन्ध्याचलके सतहपर और तरहके पत्थर आगये है जहां पहिले सकडी घाटिया थीं, वहा यह पत्थर पाये जाते है, और इन्हींकी छोटी छोटी पहाडिया बन-जानेसे नीचेकी तह छिपगई है चटानोकी कई किस्मे है, कोई चौडी, कोई चौखूटी, कोई ढालू और कई गोल वगैरह तरह तरहकी पाई जाती है इनके भीतर कई किस्मकी मिट्टी और पत्थर और ताजह पानीकी सीपिया मिलती है ये सब चिन्ह दक्षिणी पहाडी सिल्सिलेके मुताबिक है, जिनसे साफ जाहिर है, कि वह चटाने उडकर यहा आगई है इस जगह दूसरी जगहोके मुवाफिक ऐसे पत्थर पाये जाते है, जिनकी अस्लियतकी निस्बत बडी बह्स है विन्ध्याचल पहाडका जमानह मालूम नही होता है कमसे कम दर अस्ल दूसरी या तीसरी तहसे मुतअल्लिक है लोहा और लाल पीली मिट्टी (गेरू), जो कपडा रगनेके काममे आती है, शाहाबादके पर्गनहमे बहुत मिलती है

पैदावार– रियासत झालावाडकी खास पैदावार, मक्का, ज्वार, बाजरा, गेहू, जव, चना, उडद, मूग, चावल, तिल, कगनी, अफ़ीम, साठा, (गन्ना) तम्बाकू और रुई वगैरह है.

आबपाशी– आबपाशी अक्सर कुओके जरीएसे होती है, और पानी भी पर्गनह शाहाबादके सिवा और जगहोमे नज्दीकही निकल आता है, लेकिन् खोदते वक्त बसबब सख्त चटाने निकल आने व ढावोकी मिट्टी गिरजानेके सोता अच्छा न निकलने और कुए कम गहरे खोदेजानेसे एक कुएसे थोडीही ज़मीन सींची जा सक्ती है

राजप्रबन्धका ढग- शुरू जमानेमे काम्दारोको दीवानी, फौज्दारी और माली इख्तियारात बहुत कम थे, उनके फैसलोका अपील दारोगह पालकीखानहकी मारिफत महाराजराणाके हुजूरमे होता था, जिसका तस्फियह या तो खुद रईस कर देता, या वापस काम्दारोके पास मुनासिब हुक्म लगाया जाकर भेजा जाता था उस जमानहमे फीस नही लीजाती थी, लेनदेनके मुकद्दमे फरीकैनकी बाहमी रजामन्दी से फैसल होजाते थे खेतीके आलात कभी नही बिकते जब विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] मे दीवानी व फौज्दारीकी अदालते राजधानीमे काइम हुई, तो दो वर्षके अरसे तक तो सिर्फ नामके वास्ते ही इनको माना गया, क्योंकि इख्तियार पालकीखानहके दारोगहको था, और मुकद्दमात जबानी फैसल किये जाते थे विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] मे ये अदालते फिर काइम की गई, लेकिन् मिस्ले मुरत्तब होकर हर अदालतसे रईसके हुजूर मे हुक्मके वास्ते भेजी जाती थी विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] के करीब अदालती कार्रवाई सुस्त पडगई, लेकिन् कुछ अरसे से इसकी बुन्याद जम गई है, क्योंकि पेश्तर अदालती खर्च जुर्मानोमेसे चलता था, और साबिकवाला अह्लकार काममे मुदाखलत करता था जमानह हालका न्याय प्रबन्ध इस तरहपर है, कि चौमहला व शाहाबादके तह्सीलदारोके सिवा, जिनको दो माह कैद व ५० रुपये जुर्मानह तकका इख्तियार है, कुल तह्सीलदार एक माह कैद और ४० रुपये तक जुर्मानहकी सजा मुज्रिमको दे सक्ते है तह्सीलदारोके फैसलोका अपील अदालत सद्र दीवानी या फौज्दारीमे एक हफ्तहकी मीआदके अन्दर होता है

अदालत सद्र फौज्दारीको फौज्दारी मुकद्दमातमे एक साल कैद और १०० रुपये जुर्मानह तक सजा देनेका इख्तियार है

अदालत दीवानीको १००० रुपये मालियतके मुकद्दमात सुननेका इख्तियार है इन दोनो अदालतोके फैसलोका अपील महकमह पचायतमे होता है, जिसमे तीन मेम्बर है, और जिनका अधिकार फौज्दारी मुकद्दमोमे तीन बर्ष कैद और ३०० रुपये तक जुर्मानहकी सजा देनेका है, और दीवानी मुकद्दमोमे वे ७००० रुपये मालियतकी समाअत कर सक्ते है इस अदालतके अपीलकी मीआद दो माह तककी है फौज्दारी मुकद्दमोमे दण्ड सग्रह (P C) और मुल्की रवाजके मुवाफिक कार्रवाई कीजाती है दीवानी मुकद्दमातमे रु० १२॥ फी सैकडाके हिसाबसे फीस ली जाती है, लेकिन् बाहर गावोमे आसामीकी हैसियत मालीके मुवाफिक फीस वुसूल कीजाती है अदालत अपीलके हद इख्तियारसे बाहर वाले मुक़द्दमो और अदालत अपीलके

अपीलकी समाअत खुद रईसके इज्लासमें होती है, और तह्सीलदारोंके इख्तियारातसे बाहर जो मुकद्दमे होते हैं, उनको भी रईस ही सुनता है

फौज- पुलिसका इन्तिजाम अजीब तौरका है, इन लोगोंकी बहाली, बर्तरफी, तन्ख्वाह और जिले पुलिसका इन्तिजाम एक कारखानहके तह्तमें है १०० सवार और २००० पैदल कुल रियासत भरमें काम देते हैं, चन्द इनमेंसे तह्सीली कामके वास्ते तह्सीलदारके मातह्त हैं, और कुछ वास्ते इन्तिजाम पुलिसके उसीके तह्तमें काम देते हैं तह्सीलदारके मातह्त पेश्कार रहता है, जिसका काम तह्सीलसे कुछ तअल्लुक नहीं रखता बाकी सिपाही तीन गिराई अफ्सरोंके तह्तमें हैं, जो रियासतकी सर्हदमें लुटेरे तथा डाकुओंकी तलाशमें गश्त करते हैं; फौज सवार व पैदल गिराई अफ्सरोंके हमराह रहती है पेश्कार तह्सीलदारकी मारिफत और गिराई अफ्सर वाला वाला अपनी अपनी रिपोर्ट और कार्रवाई हाकिम अदालत फौज्दारीके पास भेजते हैं, कुछ अरसह पेश्तर यह मातह्ती सिर्फ नामके लिये थी शहर झालरापाटन व छावनीमें कोतवालकी सुपुर्दगीमें म्युनिसिपल पुलिस है, जो अदालत फौज्दारीके मातह्त है

जेलखानह- पेश्तर कैदी लोग, मन्धरथानह, कैलवाडा और शाहाबादके गढ़ोंमें बन्द रक्खे जाते थे विक्रमी १९२२ [हि० १२८१ = ई० १८६५] के करीब एक सद्र जेलखानह काइम किया गया, जिसके इन्तिजामके लिये एक युरेशिअन सुपरिण्टेण्डेण्ट मुकर्रर हुआ उसने इन्तिजाम जेलका अच्छा किया, कैदियोंसे सडक, कागज, और कपडा बनानेका काम लियाजाता है, और जेलके मकानमें बनिस्बत पहिलेके सफाई जियादह और जेलके मुतअल्लक इन्तिजाम दुरुस्त है कैदियोंकी तादाद सवा सौके लगभग रहती है, और कभी जियादह भी होजाती है

तालीमी हालत व मद्रसह- इस रियासतमें तालीमका तरीकह शुरू हालतमें है, जिलोंमें ब्राह्मण इत्यादि पाठक लोग बणियों तथा ब्राह्मणोंके लडकोंको पहाडे व हिसाब किताब वगैरह साधारण तौरपर सिखाते हैं राजधानी झालरापाटन और छावनीमें अलबत्तह मद्रसे हैं, जिनमें हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजीकी इब्तिदाई तालीम दियाजाना बयान किया जाता है, लेकिन् उस्ताद लोग जियादह लाइक नहीं हैं, और इसमें शक नहीं, कि मद्रसोंको मदद भी कम दीगई है इसी किस्मकी अब्तरियोंसे नतीजह यह होता है, कि अधूरे तालीम याफ्तह स्कूलको छोड बैठते हैं

जात, फिर्कह और कौम- रियासत झालावाडमें नीचे लिखी हुई जातिके लोग आबाद हैं - ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, कायस्थ, जाट, गूजर, माली, खाती,

कुम्हार, लुहार, दर्जी, पटवा, तेली, तबोली, छीपा, नाई, ओड, मीना, रंग्रेज, कलईगर, मुसलमान बोहरा, बिसाती, जुलाहा, मोची, धोबी, चमार, कजर और गडरिये वगैरह

राजपूत कौममेसे झाला राजपूत यहा जियादह है, और इनसे उतरकर शुमारमे राठौड, चन्द्रावत, राजावत, सोलखी, सीसोदिया शक्तावत और खीची चहुवान है इस इलाकहमे सोदिया नामकी एक और कौम पाई जाती है, जिसका बयान माल्कम साहिबने अपनी बनाई हुई किताब "सेंट्रल इंडिया" मे लिखा है, कि ये लोग अपनेको राजपूत बतलाते है, और उनमे कई गोत्र या हिस्से याने राठौड, तवर, यादव, सीसोदिया, गुहिलोत, चहुवान, और सोलखी है कहते है, कि सात सौ या नौ सो वर्ष पेश्तर अजमेर व ग्वालियरसे चहुवान, मारवाडके इलाकह नागौर से राठौड, और मेवाडसे सीसोदिया व दूसरे राजपूत यहा आये, उनसे इस नस्लकी उत्पत्ति हुई एक बयानसे इस कौमका नाम सोदिया होना इस तरह पाया जाता है, कि ये लोग सिन्ध नामकी दो नदियोके दर्मियानी हिस्सेमे, जो सिंदवाहा कहलाता था, और पीछे बिगडकर सोदवाह कहलाया, रहनेके सबब सोदिया प्रसिद्ध हुए या ऐसा हुआ हो, कि पहिले सन्ध्या नामकी एक हिन्दू कौम थी, उसका नाम किसी कारणसे सोदिया पडगया हो इन लोगोका पेशह काश्तकारी और लुटेरापन है, ये बिल्कुल जाहिल होते है रग इनका गोरा, चिहरा गोल, डाढी मूछ सहित होता है इस रियासतमे इनके चन्द गाव जागीरी है बादशाही वक्तमे बहुतसी जागीर इनके तहतमे होना सुनागया है, लेकिन् अब उन जागीरी गावोमेसे थोडेसे बाकी रहगये है उक्त साहिब (माल्कम) का बयान है, कि ये अक्सर राजपूत कहलाते है, लेकिन् यह नस्ल कई जातियोसे बनी हुई है, गालिबन् इनकी नस्ल नीची कौमोसे पाई जाती है वे अपनेको एक जुदा कौम ठहराते है, और कहते है, कि किसी राजाके शेरके चिहरेवाला एक लडका पैदा हुआ था, वह जगलमे निकाल दियागया, और वहा उसने मुख्तलिफ जातोकी औरतोसे आश्नाई की, जिसकी औलाद वे लोग है, और वही उनका पुर्षा बना इसमे शक नही कि यह कौम कदीम है, लेकिन् इनकी कोई बडी बहादुरानह कार्रवाई राजपूत कौमकी सी नही पाई जाती जब उनकी जमीन चन्द देशी रईसोने छीनली, तो वे आपसमे लडते झगडते रहे, और बाद उसके मध्य हिन्दुस्तानमे, जब ३० सालतक हल चल रही, उस जमानेमे लूट मार करने लगे अगर्चि ये लोग गाय व भैस वगैरहका मास नही खाते, और ग्रासिया कौमसे अक्सर विरुद्ध है, लेकिन् हिन्दू मज्हबकी बहुतसी बाते नामको भी

नहीं जानते इस जातमे जैसा ऊपर लिख आये है, कई फिर्के है, लेकिन् आपसमे विवाह सब कर लेते है, अक्सर औरतोका दूसरा विवाह भी होता है, उत्तम कुलके राजपूतोमे औरत नाता नही करसक्ती, इससे जाहिर है, कि इन सोदियोने अपने बुजुर्गोकी मर्यादाको छोड दिया है ये शराब खूब पीते है, और अफीम भी गहरी खाते है यह लोग गैर कौम और शकर उत्पत्ति होनेके सबब हिन्दू रीति रस्मोसे अक्सर आजाद है, और बहुतसी बेजा हरकते कर बैठते है इनमे बाहम इत्तिफाक बिल्कुल नही होता, जमीन वगैरहकी बाबत हमेशह मार पीट और लडाई आपसमे किया करते है ये लोग लडाईके काममे मज्बूत, चालाक और बहादुर होते है, इनकी औरते भी मिस्ल मर्दोके लडाईके वक्त घोडोपर सवार होकर हथियारोसे काम लेसक्ती है इस कौमको जियादह लडाकू देखकर पिंडारोकी लडाई खत्म होने बाद सर्कार अंग्रेजीने इनके घोडोको बिकवा डाला, और गढ छीन लिये, तबसे इनका जोर कम होगया, लेकिन् अस्ली खासियत बिल्कुल नही बदली इनके यहा विवाह ब्राह्मण कराता है, और भाटोंका मान खूब रक्खा जाता है, बल्कि भाटोको जो उनके बुजुर्गोकी वीरता गाते है, बहुत कुछ बख्शिश देते है, और दिलके फय्याज होते है इस कौममे वैष्णवी मज्हब अक्सर लोग रखते है

झालरापाटनमे जैनी लोग जियादह है, जिनके कई बडे बडे मन्दिर उक्त राजधानीमे बनेहुए है, चन्द दादूपन्थी साधू, गिरी, पुरी, भारती, गुसाई और नाथो के सिवा कूडा पन्थी मतवाले भी है, जिनमे कई कौमके आदमी पोशीदह जमा होकर कूडेमे शामिल खाते है, और जातको नही मानते यह मज्हब थोडे ही अरसहसे यहा जारी हुआ है

पेशह– राजपूतोमेसे झाला खेती करते है, परन्तु इनके साथ दूसरे राजपूत शादी विवाह नहीं करते (१), ब्राह्मण लोग पूजापाठके सिवा खानगी काम करते है, बनिये व्यापारका पेशह करते है, और चन्द राजके नौकर भी है, कायस्थ जातके मनुष्य मुतसद्दी है, राज्यमे अक्सर यही लोग अह्लकारीका काम करते है

जमीनका कब्जह व मह्सूल वगैरह– खेतीकी जमीनका हाल दर्याफ्त कियेजानेसे मालूम हुआ, कि कुल रियासतकी धरतीका पाचवा हिस्सह जोता बोया जाता है, बगैर बोईजानेवालीका तिहाई हिस्सह ऐसा है, कि जिसमे जिराअत होसक्ती है; बाकी जमीन पहाडी और ऊसर है कुल रियासतकी जोती बोई जानेवाली जमीन १०८८४८८ बीघा याने ५०७४१८ एकड है, जिसमेसे ७१६५३१ बीघा, याने ३३१४४० एकड खालिसेकी है इस खालिसेकी जमीनमेसे ३९५९ बीघे (१८४६ एकड)

(१) ये झाला, राजराणाके खानदानके नही है

राजकी तरफ़से जोती बोई जाती है, १०८७२४ बीघे (५०६८३ एकड) जागीरी, ५९२७९ बीघे (२६७०२ एकड) उदक और ४५८०० बीघा (२१३५० एकड) अहलकारोको माहवारी तन्स्वाहके बदले मे दी हुई है

कदीम जमानेमे यहापर महसूलका तरीकह लाटा और बटाई था, पैदावारीमेसे $\frac{२}{६}$ हिस्सह राज्यको और बाकीमेसे गावका खर्च मुज्रा लियाजाकर काश्तकारको मिलता था इस तरीकेमे हासिल वुसूल करनेवाले काश्तकारोपर जुल्म करने और धोखा देनेका अक्सर मौका पाते थे जिस तरह पटैल लोग जमीनपर अपना पुश्तैनी हक रखते थे, उसी तरह पहिले काश्तकारोको भी मजाज था, वे अपने कब्जेकी जमीनको फरोख्त या गिरवी रख सक्के थे, और अगर कोई खुद जमीनको नहीं बोता, तो दूसरेको सौपकर वापस ले सक्का था, लेकिन् राजराणा जालिमसिंहने इस काइदेको बन्द करके लगानका तरीकह जारी किया, और हरएक किस्मकी जमीनके लिये फी बीघा नक्द रुपयेका निर्ख काइम करदिया, जिससे रियासतकी आमदनीमे तरक्की हुई हर गावमे निर्ख जुदा जुदा था, और गावका खर्च अन्दाजहसे फी बीघा पीछे मुकर्रर कियाजाकर लगानके साथ जमा होजाया करता था इसी तरह ठेके वगैरहका बन्दोबस्त होनेपर, जो जमीन कि पहिले बे जोती बोई पड़ी रहती थी, उसमे जिराअत होनेसे मुल्कमे पैदावार खूब होने लगी, लेकिन् बाद उसके राजराणा जालिम-सिंहके जानशीनो व रियासतके काइम मकाम रईसोमे लडाइये होने और कहत-साली होजानेसे हालत बिगड गई अगर्चि जमीनका हासिल जालिमसिंहके ठहरायेहुए काइदेपर लियाजाता है, लेकिन् कई बातोमे तब्दीलात होगई है काम्दारोकी चालाकियोमे जमीनमें अदला बदली भी हुई है, याने किसीकी जमीन किसीके कब्जहमे चली गई है मुआफीकी जमीनका भी यही हाल है, बल्कि कई शख्स बेकार मुआफीके नामसे जमीन खाते है

जमीनका कुल हासिल करीब १७४७१९७ रुपयाके बतलाया जाता है, जिसमेसे १३२१९४३ रुपया राज्यकी खालिसाई आमदनी है, और मुख्य जागीरो की आमदनी १५१८०२ रुपये है धर्म सम्बन्धी जागीरे ८०६२५ रुपयो की है अहलकारोको तन्ख्वाहके बदलेमे ४३९८३ रुपये, बे लगान जमीन ५३४८७ रुपये, और गाव खर्चमे ५९९५८ रुपयेके करीब आमदनीकी जमीन समझीजाती है जमीनका हासिल मनोतीदारके जरीएसे जमा होता है, जो कि जमींदारका बोहरा होनेके सिवा उसकी तरफ़से हासिलका बाकी रुपया राज्यमे जमा करानेका जामिन भी होता है मनोती-दारोके लिये राज्यकी तरफ़से किसी तरहकी तन्ख्वाह या जमीन मुकर्रर नहीं है, वे सिर्फ़

जमींदारोंकी तरफ़से जामिन रहते है, और जो जमींदार, कि गरीबीके सबब जामिनकी मारिफ़त रुपया जमा करानेसे मज्बूर रहते है उनकी जमीनकी पैदावार तह्सील-दार जिला बिकवाकर जमींदारको बीज और खानेके लाइक रुपया उस आमदनीमेसे देने बाद बाकीको राज्यके हासिलमे जमा करलेता है, जमीनका हासिल आसामीवार लिया जाता है, और खेतका कूता करके हासिल मुकर्रर करदिया जाता है

कुल जमीनका मालिक रईस है, और यह इससे साफ़ जाहिर है, कि जब खालिसेकी जमीनका हासिल बढाया गया था, तो जागीरोमेसे भी उसी शरहके मुताबिक हासिल तलब किया गया गावका मालिक या बिस्वादार सिवाय चौमहलाके और कोई नही है जमीदार लोग सिर्फ़ कब्जहके रूसे जमीनके मालिक है, वर्नह गिर्वी वगैरह रखनेका इख्तियार नहीं रखते, लेकिन् मुन्तजिमोकी खराबीसे वे जमीनके खुद मुख्तार मालिक होरहे है जागीरदार घोडे और आदमी रियासतकी नौकरीके वास्ते देते है, और त्यौहारोपर खुद राजधानीमे हाजिर होते है धर्मखाता और मुआफीदारोकी जमीनपर लगान नहीं है पटैलोसे, गावोका हासिल एकट्ठा करानेकी नौकरीके सबब हासिल नही लियाजाता, और इसी तरह सासरी व गावबलाई भी तन्ख्वाहके एवज जमीन बे लगान पाते है, जो, बशर्ते कि उनसे कोई कुसूर सख्त न हो, हीन हयात तक उनके कब्जहमे रहती है

तह्सील या जिले- झालावाडकी कुल रियासत खास तीन कुद्रती हिस्सोंमे तक्सीम कीगई है- १ बसती पर्गने, जो मुकुन्दरा पहाडके नीचे है, और मालवेकी तरफ़ पथरीले मैदानका झुकाव २ चौमहला- खास मालवा देश ३ शाहाबाद, जो पूर्वमे उस मैदानका पहाडी और वह्शी हिस्सह है पिछले दोनो हिस्से जालिमसिंहने खुद हासिल किये थे, जिनमेसे नम्बर २ को मन्दसौरके अह्दनामहमे हुल्करने दिया था इन तीनो हिस्सोमे जिनका जिक्र ऊपर होचुका है, याने कुल रियासतमे बाईस पर्गने है, उनके नाम मए तादाद गाव (१) हर एकके जैलके नक्शहमे दर्ज किये जाते है -

नक्शह

नाम पर्गनह	तादाद गाव	नाम पर्गनह	तादाद गाव
चेचट	४४	देलनपुर	१४९
सुकेत	५४	अफ़लेरा	३२
खैराबाद	२२	चरेलिया	१९

(१) पृष्ठ-१४५३ में ग्राम और कस्बोकी तादाद जो हण्टर साहिबके गजेटिअरसे लिखीगई है, उसमें और इसमें फर्क है, और यह तादाद राजपूतानह गजेटिअरसे लिखी गई है

नाम पर्गनह	तादाद गाव	नाम पर्गनह	तादाद गाव
जूल्मी	१०	मनोहरथानह	१३१
ऊर्मल (झालरापाटन)	१२८	जावर	४७
बुकरी	७३	छीपाबडोद	१६३
रीचवा	१३३	शाहाबाद	२५९
अस्नावर	२६	पचपहाड	७७
रतलाइ	४२	आवर	४०
कोटडा भट्ट	४५	दीग	८६
सरेरा	३७	गगराड	१२३

जाहिरा ये हिस्से गैर बराबर हैं, और इनकेलिये जाच दर्कार है पचपहाड, आवर, दीग, और गगराड, जो चौमहला नामसे मश्हूर हैं, रियासतके और जिलो से दाणकी निस्बत जुदा है, और यही कैफियत शाहाबाद जिलेकी है

मश्हूर शहर व कस्बे - झालरापाटन, छावनी, शाहाबाद, कैलवाडा, छीपा-बडोद, मनोहरथानह, सुकेत, चेचट, पचपहाड, दीग और गगराड, इस रियासतमे मश्हूर कस्बे है, जिनका मुफस्सल हाल नीचे दर्ज किया जाता है -

कदीम झालरापाटनका शहर नई आबादीसे किसी कद्र दक्षिण दिशाको चन्द्र-भागाके किनारे था, वह नये शहरके बीचो बीचसे चन्द गजके फासिलेपर है टॉड साहिबके बयानसे झालरापाटनके शहरकी वज्ह तस्मियह यह है, कि कदीम नग्र पाटनमे १०८ मन्दिर थे, जिनमे बहुतसोंके झालर लगी हुई थी, इसलिये उसका नाम झालरापाटन याने झालरनग्र रक्खा गया, पहिले इसका नाम चन्द्रियोती भी मश्हूर था औरंगजेबके जमानेमे यह शहर बर्बाद किया गया, और मन्दिर तुडवा दिये गये, जिनमेसे विक्रमी १८५३ [हि० १२१० = ई० १७९६] मे कदीम आबादीका सातसहेली मन्दिर बाकी रह गया, जो नई राजधानीमे मौजूद है, और जिसके गिर्द भीलोके चन्द झोपडे हैं इस शहरकी प्राचीन तारीख लानेके लिये दो प्रशस्तिया, जो डॉक्टर बूलरने इण्डिअन् ऐन्टिक्वेरीकी जिल्द ५ के पृष्ठ १८१ और १८२ मे दी है, उनकी नक्ल इस प्रकरणके शेषसंग्रहमे दीगई है इसी सालमे जालिम-सिंहने नई राजधानी झालरापाटन मए शहरपनाहके आबाद की, और ऊर्मलसे तहसील उठाकर उक्त नग्रमे बाशिन्दोको बडी तसल्लीके साथ बसाया, उनके

इत्मीनानके वास्ते शहरके बाजारमे इस मज़्मूनकी एक प्रशस्ति खुदवाकर काइम करादी, कि जो कोई शहरमे बसेगा, उससे दाण नही लिया जावेगा, और हर किस्मके मुज्रिमसे १।) सवा रुपयेसे जियादह जुर्मानह वुसूल नहोगा इस बातपर कोटा और खासकर मारवाडसे बेशुमार पेशहवर लोग दौड आये विक्रमी १९०७ [हि० १२६६ = ई० १८५०] मे पहिले महाराजराणाके समय काम्दार हिन्दूमल्लने इस पत्थर (प्रशस्ति) को उखडवाकर शहरके पास वाले तालाबमे डुबवादिया, उस वक्तसे बाशिन्दोके कुल हुकूक जाते रहे कहते है, कि इस तालाबको जैसू नामी किसी राजपूतने बनवाया था, मगर जालिमसिंहने इसकी मरम्मत कराकर एक पुख्तह नहर इसमेसे जारी की, जिससे चन्द गावोकी जमीन सेराब होती है उक्त शहरमे कई बडे बडे मालदार साहूकार महाजन है, टकशाल और राज्यके सब कारखाने तथा झालरापाटन नामकी तह्सीलका सद्र भी यही है

छावनी- यहा महाराजराणाका महल, अदालते और कारखानोके मकानात बने हुए है, छावनी ऊची पथरीली जमीनपर आबाद है अगर्चि झालरापाटन शहरसे बस्ती यहा जियादह है, लेकिन् पानीकी कमी है विक्रमी १९२९-३० [हि० १२८९-९० = ई० १८७२-७३] मे होल्डिच साहिब (Lt Holdich R E) ने झालरापाटन कन्टोन्मेण्ट बनाना शुरू किया, लेकिन् यहा राजाके महलके गिर्द चन्द झोपडे थे, पुरानी आबादी दक्षिण तरफ दो कोसके फासिलेपर रह गई, पश्चिम तरफ एक बडे तालाबके पास महल है, उत्तर तरफ जगल्दार पहाडीके गिर्द फसील बनी हुई है यहासे शहर खूब दीखता है, रईस अगर्चि छावनीमे रहते है, लेकिन् राजधानी इसीको समझना चाहिये छावनीसे २½ मील उत्तरको कोटेकी रियासतका किला गागरौन है शहर का नाम पहिले पाटन था, लेकिन् ऐसा भी प्रसिद्ध है, कि पहिला रईस झाला राजपूत होनेसे झालरापाटन नाम पडगया यह शहर पहाडीके दामनमे आबाद है, इसके पासकी पहाडियोका पानी एक झीलमे, जिसपर एक पुख्तह पाल आध मीलसे जियादह बनी है, जमा होता है, और उसपर कईएक मन्दिर व पुराने महल बने है, पालके पीछे शहर वाके है पहाडीके दामन व शहरके दर्मियान चन्द बागीचे है झीलके सिवा शहरकोट चारो तरफ बुर्जों और खाईसे मह्फूज है, शहरसे दक्षिण तरफ ४०० या ५०० गजकी दूरीपर चन्द्रभागा नदी बहती है, जो उत्तर पूर्वकी तरफ चार मील मैदानमे बहने बाद कालीसिन्धसे जा मिली है चन्द्रभागा और शहरसे छावनीको जानेवाली सड़क के बीच १५० फुट बलन्द एक पहाडीपर जिक्र कियाहुआ किला अधूरा बना हुआ पडा है शहरकी उत्तरी दीवारसे छावनीका राजमहल २॥ कोसके करीब है इस

नये महलके गिर्द ऊंची और चौकोर दीवारोंके कोनोंपर गोल बुर्ज और बीचमें दो दो आधे आधे बुर्ज बने हैं, दीवारोंकी लम्बाई ७३५ फुट है, पूर्वकी तरफ़ सद्र दर्वाजह है. छावनीसे डेढ मील पूर्व तरफ़ कालीसिन्ध नदी है.

शाहाबाद- यह पर्गनह कोटेके रईसने जालिमसिंहके बेटेको बख़्शा था, जो पीछेसे झालावाड रियासतका एक हिस्सह होगया. इस क़स्बेके बसनेका वक्त ठीक ठीक मालूम नहीं, कि यह किस ज़मानहमें आबाद हुआ, लेकिन् ज़बानी रिवायतों वगैरहसे मालूम होता है, कि नीचेका किला श्रीराम और लक्ष्मणका बनवाया हुआ है. इस क़स्बेमें १००० मकानोंके क़रीब आबादी है, और आलम-गीरके ज़मानहकी एक मस्जिद है. शहरके पास पहाडीपर ऊपरी किलेको जालिम-सिंहने बनवाया था. पान यहां कसरतसे होते हैं, लेकिन् पानी निकम्मा है.

कैलवाडा- यह शाहाबाद पर्गनेमें है, इसके पास ही उम्दह और सायादार दरख़्तोंके जंगलमें तपत कुंड है, जहां गर्मीके मौसममें मेला लगता है.

छीपाबडोद- यह एक पुराना क़स्बह है, छीपा लोग ज़ियादह रहनेके सबब छीपाबडोदके नामसे मश्हूर है, और इसी नामकी तह्सीलका सद्र मक़ाम है. यहां विक्रमी १८५८ [हि० १२१६ = ई० १८०१] में दूसरे तीन गांवके बाशिन्दोंको पनाह देकर इसका नाम छीपाबडोद प्रसिद्ध किया गया.

मनोहरथानह- यह क़स्बह एक तह्सीलका सद्र मक़ाम है, पहिले इसको खाताखेडी कहते थे. दिल्लीके शहन्शाहोंके समयमें यह पर्गनह नव्वाब मनोहरखां (मुनव्वरखां) को दिया गया था, जिसने इस गांवको अपने नामपर आबाद किया. बाद उसके यह भीलोंके हाथ लगा, जिनके पाससे कोटेके महाराव भीमसिंहने छीनकर अपने कब्ज़हमें लिया. इसके अन्दर एक पुरूतह गढी तो पुरानी है, बाहरवालीको भीमसिंहने बनवाया, और शहरपनाह जालिमसिंहने तय्यार कराई. क़स्बहकी आबादी ५०० घरोंकी है, किलेके नीचे पर्वन और कांकर दोनों नदियें शामिल होकर एक बहुत गहरा कुण्ड बनगई है. पीतलके बर्तन यहां अच्छे बनाये जाते हैं, और क़स्बहके पास ही साखूका एक जंगल है.

सुकेत - यह क़स्बह बहुत पुराना है, जो पहिले सखतावत राजपूतोंका मक़ाम था, और इसमें एक किला भी था, जिसको महाराष्ट्र (मरहटा) लोगोंने तोड-डाला. क़स्बहमें झालोंकी कुलदेवीका मन्दिर है, जहां हर साल दशहरेके उत्सवपर महाराजराणा पूजा करनेको जाते हैं. यह एक तह्सीलका सद्र मक़ाम है.

चेचट- जो हालमे इसी नामकी तह्सीलका सद्र है, अगले जमानहमे सख-तावत राजपूतोका था, लेकिन् कोटेके महाराव भीमसिंहने उनसे छीन लिया.

पचपहाड - यह एक तह्सीलका गाव है, जिसका नाम पाच पहाडियोपर आबाद होनेके सबब पचपहाड रक्खा गया, और इसी नामसे पर्गनह भी नामजद कियागया कहते है, कि पहिले पहल इसको पाडवोने आबाद किया था, फिर उज्जैनके राजा विक्रमादित्यके कब्जहमे रहा, अक्बरके अहदमे रामपुराके ठाकुरने जागीरमे पाया, जिससे उदयपुरके महाराणा दूसरे सग्रामसिंहने छीनकर अपने भानजे जयपुर वाले राजा माधवसिंहको दिया; बाद उसके कुछ अरसह तक हुल्करके तहतमे रहकर उससे लियाजाने बाद सर्कार अंग्रेजीकी तरफसे जालिमसिंहकी मारिफत कोटाके रईसको न्प्रता हुआ इस कस्बहमे १००० घरोकी बस्ती है एक तालाबके किनारेपर जैन और विष्णुके दो मन्दिर है, बाहरकी तरफ एक मन्दिर माताजीका भी है, और हर एक मन्दिरमे प्रशस्ति लगीहुई है इस पर्गनहके कुल ७७ गावोमेसे, जिनका रकबह १५७०६२ बीघा, १४ बिस्वा, और सालानह हासिल १६२३५३-३-० है, १६ गाव गैर आबाद, ५ धर्मार्पण या दानके, और ५६ खालिसहके है जमीदार यहाके अक्सर सोंदिया लोग है

आवर- पाच सौ वर्षका अरसह हुआ, कि मुहम्मदशाह खिल्जीके वक्तमे सखतावत राजपूतोने इस पर्गनहको बसाया था बाद उसके कई खानदानोके कब्जहमे रहताहुआ हुल्करके हाथ लगकर कोटावाले रईसके तहतमे आया, और अखीरमे झालावाडके शामिल होगया इस पर्गनहके मुतअल्लक ४२ गाव है, जिनमेसे चौतीस खालिसहके और बाकी पुण्यार्थ वगैरहमे तक्सीम है इन कुलका रकबह ७५३७० बीघा, ३२२ बिस्वा है कस्बहमे एक मन्दिर जैनका और मीरा साहिब नामी मुसल्मान पीरकी एक दर्गाह, दो मकाम पुराने जमानहके है.

दीग - अक्बरके जमानहमे इस पर्गनहको एक क्षत्रीने बसाया था, इससे पहिले अनोप शहर नामका एक कदीम कस्बह इसके आस पास होना बयान किया जाता है, लेकिन् उसका तह्कीक पता नही मिलता, कि वह किस जगह आबाद था कस्बह दीग अपनी आबादीके वक्तसे कई हिन्दू व मुसल्मान रईसोके कब्जहमे रहता हुआ अखीरमे जशवन्तराव हुल्करके हाथ लगा, जिससे कोटाकी मुसाहबतके वक्त जालिमसिंहने कई दूसरे गावो समेत ठेकेमे लिया, लेकिन् झालावाड रियासत काइम होनेपर मए तीन दूसरे मकामोके मदनसिंह, अव्वल रईस झालावाडको दिया-गया इसके मुतअल्लक ८८ गावोमेसे, जिनका रकबह २६०३१४ बीघा, ३ बिस्वासे

जियादह और कुल आमदनी सालानह १०२१३६- १-९ है, खालिसहके ६९, जागीरके १०, गैर आबाद ७ और पुण्यार्थ जागीरके २ हैं इस पर्गनेके पुराने मकामात यह हैं - कल्याणसागर तालाब, जिसको कल्याणसिंह चन्द्रावतने विक्रमी १६६३ [हि० १०१५ = ई० १६०६] मे बनवाया था, इसके पासही गाइबशाह व लाल हक्कानी मुसल्मान पीरोंकी दो दर्गाहें हैं एक पक्का कुआ कोटावाले मीराखांका विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] मे बनवाया हुआ मौजूद है, और मुसल्मानी अमल्दारीके वक्तमे बने हुए एक मक्बरेका खंडहर भी पड़ा है

गगराड - यह कस्बह इसी नामकी तह्सीलका सद्र मकाम, दर्याय कालीसिन्धके किनारेपर वाके है, पहिले इसका नाम 'गिरिगरन' था अगर्चि इसके आबाद होनेका जमानह और बसानेवालेका नाम ठीक तौरपर दर्यापत नहीं हुआ, लेकिन् दन्त कथासे पाया जाता है, कि कैरव राजपूतोंने इसे अपने गुरु गर्गचर्ग (गर्गाचार्य) को जागीरमे दिया था फिर किस किसके कब्जहमे रहा सो मालूम नहीं, लेकिन् शाहजहां बादशाहके अह्दसे दयालदास झाला और उसकी औलादके कब्जहमे रहा, जिनसे छीनकर कोटामे मिलाया गया अब दयालदासकी औलादकी जागीरमे कुंडला इसी रियासतमे है, इस पर्गनेका और हाल दूसरे पर्गनोंका सा ही है पर्गनहके गांवोंकी तादाद १३७ है, जिसमेसे खालिसहके ९७, जागीर मे २०, गैर आबाद १६ और धर्म सम्बन्धी जागीरमे ४ है कुल पर्गनहकी आमदनी १०७१७८ रुपया है यहांके पुराने मकामात, एक तालाब, और एक मकान है तालाबके किनारेपर उन चन्द राणियोंके चौरे मए पत्थरमे खुदी हुई प्रशस्तियोंके मौजूद है, जो अगले जमानहमे सती हुई थीं नदीके किनारे एक बहुत पुराना मकान है, जिसमे अब राज्यकी कचहरी और दफ्तर है मालूम होता है, कि पहिले इस शहरमे जौहरी लोगोंकी दूकाने थीं, क्योंकि अबतक इसके आस पास कीमती छोटे छोटे लाल नग पाये जाते हैं

राटादेई - यह झालावाड छावनीसे १४ मील पूर्व हाडौती और झालावाडके बीचके पहाडी सिल्सिलेपर एक भीलोंकी पाल या बस्ती है पास वाले एक छोटे मन्दिरसे इसका नाम रक्खा गया है, और 'मानसरोवर' नामके एक खूबसूरत तालाबके पूर्वी किनारेपर बसा है मुकुन्दरा, गगराड, और मनोहरथानह जिस तराईमे आबाद है, वही यहां तक चली आई है, जो इस मकामपर ६ या ७ सौ गज चौडी है, और जिसपर आर पार पाल बांधकर यह सरोवर बनालिया गया है पूर्वी, उत्तरी, और पश्चिमी किनारे इस झीलके पानीके करीब तक गुंजान दरख्तों और करौंदोंकी झाडीसे खूबसूरत मालूम होते हैं, यहांपर बाघ व चीतोंके हमेशह पायेजानेसे रियासतके रईस अक्सर शिकारको आते हैं बयान कियाजाता है, कि कदीम जमानहमे इस झीलके दक्षिणी नशेबपर श्रीनगर नामका एक कस्बह बडी दूर तक आबाद था,

जिसके चिन्ह सिवाय तीन मन्दिरों और कईएक खडहरोंके कुछ भी दिखलाई नहीं देते, लेकिन् दूर दूरतक घडेहुए पत्थर पडे पायेजानेसे मालूम होता है, कि यह कस्बह बडी दूरतक आबाद था. किसी किसी जगह गली कूचे भी नजर आते हैं, दक्षिण पश्चिमी किनारेपर भीलोंने एक गाव गरगज नामका बसाया है सबसे बडा मन्दिर महादेवका है, जिसको एक ग्वालने बनवाया था झीलके दक्षिण तरफके खडहरकी प्रशस्तिसे मालूम होता है, कि यह वैष्णवका मन्दिर है, जिसको शाह दमोदरशाहने विक्रमी १४१६ कार्तिक कृष्ण १ [हि० ७६० ता० १५ जिल्काद = ई० १३५९ ता० ९ ऑक्टोबर] को बनवाया था कहते हैं, कि यह कस्बह खीची राजका एक मुख्य स्थान था, जिस राज्यकी राजधानी पहिले मऊ थी झीलकी पाल बहुत लम्बी चौडी है, और उसपर बहुतसी छत्रिया पुराने जमानेकी बनीहुई करौंदोंकी झाडीके अन्दर ढकीहुई हैं हर एक चबूतरे और छत्रीपर राजाओं और सतियोंकी मूर्तिया मए उनके नाम और उनकी वफातके साल सवत्के मौजूद हैं इन छत्रियोंपरके कई एक लेख अजमेर मेरवाडा गजेटिअरकी तीसरी जिल्दमे दर्ज हैं झीलके पश्चिम दो मीलके फासिलेपर, जहासे एक नदी चटानको काटकर निकली है, उसके उत्तर मैदानाके महलका खडहर है, जो खीची राजपूतोंका एक बडा स्थान था, और जिसका बडा हिस्सह अबतक ऊची टेकरी व पुराने गढके खडहरके रास्तहके सिरेपर है महलके नीचे मैदाना नामका एक कस्बह वाके होना बयान कियाजाता है, तीन मन्दिर, एक छत्री और कई चबूतरे वगैरह वहा बनेहुए हैं इस जगहसे वह नदी एक उजाड घाटी, और दक्षिणी मगरियोंमे एक लम्बी नालके दर्मियानसे गुजरकर, जिसके उत्तर रुख एक बडा वीरान और भयानक जगल है, मऊ मकामके मैदानमे दाखिल होती है तमाम मगरियोंमे घाटीरावकी बहादुरानह कार्रवाईके मुतअल्लक कई कहानियें मश्हूर हैं खीची महाराव कदीम जमानहका एक बडा बहादुर शख्स था.

कदीला- राटादेई और मान सरोवरसे दो मील पूर्व और उसी घाटीमे एक बडी झील है, जिसकी लम्बाई २५० गज और चौडाई १०० गजके करीब है इसकी निस्बत बयान किया जाता है, कि यह मान सरोवरसे भी जियादह प्राचीन है, जिसको मऊके कदीला नामी किसी राजा या बनियेने नालमे पानीके निकासको रोककर बनवाया था. कदीलाके पश्चिम तरफ रगपट्टन नामका एक प्राचीन नग्र था, लेकिन् अब उसका कोई चिन्ह नहीं पाया जाता इसके राजाका नाम लाखा, और राणीका नाम शोडी था कहते हैं, कि एक दिन राजा और राणी दोनो भोला नामी एक डोम (ढोली) का गाना सुन रहे थे राजाने खुश

होकर डोमको कहा, कि माग, जो कुछ तू मागेगा, पावेगा इसपर राणीने उस डोमको अपने गलेका एक वेशकीमती हार मागनेके लिये अपने गलेकी तरफ इशारह किया जिस वक्त राणीने महल्के झरोखेसे यह इशारह डोमको किया, और राजाको नीचे बैठेहुए उसके सामने रक्खेहुए काचमे अक्स पडनेके सबब राणीकी यह हरकत देखनेसे शुब्हा पैदा होगया, कि राणीने इस डोमको अपने मागे जानेके लिये इशारह किया है इसपर राजाने ना खुश होकर राणीको डोमके हवाले करदिया, पर उसने सच्चे खिझतगार की तरह राणीकी खिझत की बाद एक अरसेके सिर्फ एकही मर्तबह राजा व राणीकी मुलाकात हुई, उसी वक्त दोनो पत्थरके होगये उस समयकी एक कच्ची छत्री दोनो की वहापर मौजूद है उक्त राणी वडी पतिभक्त थी, जिसकी एक छत्री कदीलाकी पालपर बनवाईगई थी, लेकिन् इस वक्त वह मौजूद नहीं है

मज्हबी मकामात व तीर्थ– झालरापाटनके मुख्य मन्दिरोकी निस्वत लोग ऐसा बयान करते है, कि जिस वक्त यह नया शहर (राजधानी) बनरहा था, उस समय गगाराम नामी एक लोहारको अपने मकानकी तामीरके दिनोमे एक ख्वाब नजर आया, जिसमे उसे यह मालूम हुआ, कि इस मकामपर जमीनमे चार मूर्तिया निकलेगी उसने ख्वाबके इशारेके मुवाफिक जमीनको खोदा, तो अन्दरसे पत्थरका एक सन्दूक निकला, जिसमे द्वारिकानाथ, रामनिक, गोपीनाथ और सन्तनाथकी चार मुर्तिया थी इस बातकी खबर कोटेमे जालिमसिहके पास पहुची, वह यह सुनकर फौरन् झालरापाटनमे आया, और चारो मुर्तियोपर एक बालकके हाथसे चार हिन्दू धर्म मार्गकी चिट्ठिया रखवाई, जिसपर यह सिद्धान्त निकला, कि द्वारिकानाथने बल्लभ कुल, रामनिकने विष्णु मार्ग, सन्तनाथने जैनमत पसन्द किया, और उसीके मुताबिक मन्दिर बनवाये जाकर पूजा प्रतिष्ठा की गई, ये मन्दिर राजधानीमे मौजूद है गोपीनाथको कोई मार्ग पसन्द नहीं आया, इसलिये उनका कोई मन्दिर नही बनाया गया

चन्द्रभागा (१) नदीकी बाबत ऐसा बयान कियाजाता है, कि एक राजा

---

(१) इसके किनारेपर कई पुराने मन्दिरोके और कदीम राजधानी झालरापाटनके खडहर पाये जाते है एक बयान यह है, कि राजा हूणने यह शहर आबाद किया था, और दूसरा यह भी बयान है, कि राजा भीम पाडवने इस शहरकी बुन्याद डाली थी, और तीसरा बयान यह है, कि राजपूत जैसूने, जिसको पत्थर खोदते वक्त पारस हाथ लगा था, इस शहरको बसाया

जिसको कोढकी बीमारी थी, एक रोज शिकार खेलनेके समय किसी चितकबरे सूअरका पीछा करता हुआ उस मकामपर पहुचा, जहासे कि यह नदी बहती है, पास ही एक तलाईमे कुछ पानी भरा था, वह सूअर अपनी जान बचानेके लिये तलाईमे कूदगया और तैरकर दूसरे किनारेपर पहुचा, तो रग उसका बिल्कुल सियाह होगया राजाने जब यह हाल देखा, तो खुद भी उस पानीमे कोढ मिटजानेके खयालसे नहाया, नहाते ही बीमारीका निशान तक बाकी न रहा, उसी समयसे वह मकाम तीर्थ माना गया, जहां हर साल कार्तिक महीनेमे एक हफ्तह तक दूर दूरके यात्रियोकी भीड जमा रहती है, मेलेमे गाय, बैल, भैस और पीतल तांबेके बर्तन वगैरह चीजे सौदागर लोग बेचनेको लाते है

वैशाख महीनेमे पाटन तालाबके किनारे एक दूसरा बडा मेला होता है, जिसमे हाडौती व करीबवाली रियासतोके जमींदार वगैरह आते है, यहा भी मवेशीकी खरीद व फरोख्त होती है मनोहरथानहमे फाल्गुन महीनेमे शिव-रात्रिका बडा मेला १५ दिनतक रहता है, जिसमे हजारहा यात्री आस पासके जमा होते है, मवेशी, बर्तन व कपडा वगैरह बिकता है कैलवाडा वाके पर्गनह शाहाबादमें १५ रोजतक एक बडा भारी मेला लगता है, यात्री लोग तपतकुड सीताबारीमें स्नान करते है, और जिराअतके मुतअल्लक औजारो तथा बैलोकी यहा सौदा-गरी होती है

आमदो रफ्तके रास्ते – रियासतके खास खास रास्ते व सडके ये हैं –

१ छावनीसे झालरापाटन तक सडक, २ छावनीसे कोटे तक सडक, ३ आगरा और बम्बईकी शाह राह दक्षिण पूर्वको, और दक्षिणमे आगरा व इन्दौरका रास्तह, दक्षिण पश्चिम उज्जैनको, पश्चिम तरफ नीमचको, और उत्तर पश्चिम कोटाको, जिस तरफ नई सडक जावेगी

तारीख

झालरापाटनवाले अपना निकास गुजरातके इलाके हलवदसे बतलाते है, जो इस समय हलवदकी राजधानी ध्रागधरामे है राजपूतानह गजेटिअरमे, जो पीढिया ध्रागधराकी लिखी है, उनमे नाम लिखनेमे फेर फार मालूम होता है, इस वास्ते हम

बम्बई गजेटिअर जिल्द ८ के पृष्ठ ४२० से चुनकर लिखते है, जो हलवदके राज्य वंशी और बडवा भाटोसे दर्याफ्त करके लिखागया है

यह झाला कौमके राजपूत, जो पहिले मकवाना कहलाते थे, अपनी पैदाइश मार्कण्डेय ऋपीसे बतलाते है, और कान्तिपुरमे जो थलमे पारकर नगरके पास है, आबाद हुए

पहिला राजा व्यासदेवका बेटा केसरदेव १ हुआ, जो सिन्धके राजा हमीर सूमरासे लडकर मारा गया उसका बेटा २ हरपालदेव मकवाना, पाटणके राजा करण सोलखीके पास जा रहा, उस सोलखी राजाने हरपालको २३०० गावोका राज्य दिया और हरपालने पाटडीमे अपनी राजधानी बनाई एक दिन मस्त हाथी छूटगया, और हरपालदेवके लडकोपर, जो खेल रहे थे, हमलह किया, तब उस राजाकी राणीने उन्हे झाल (हाथमे उठा) कर बचालिया, जिससे उन तीनो लडकोकी औलाद झाला कहलाई उस समय एक चारण भी खडा था, जिसे टप्पर (धक्का) देकर बचाया, जिसकी औलादके टापरचा चारण कहलाये, जो झाला राजपूतोकी पौलपर अबतक नेग पाते है हरपालदेवके तीन बेटे थे, बडा सोढदेव, जो पाटडीमे गद्दीपर बैठा, दूसरा मागू, जो जाबूमे रहा और जिसकी औलाद अब लीमडीमे है, तीसरा शेखराज, जिसकी सन्तान सचाणा और चोर बडोदरामे रही हरपाल-देवकी वह राणी, जिसको शक्तिका अवतार बतलाते है, झाला लोग उसकी अबतक पूजा करते है

सोढदेवका पुत्र ४ दुर्जनशाल गद्दीपर बैठा उसके बाद ५ जालकदेव (१), उसके बाद ६ अर्जुनसिंह, जिसको द्वारिकादास भी कहते है, फिर ७ देवराज, इसका पुत्र ८ दूदा, इसका सूरसिंह, उसका ९ सातल, जिसने उत्तरी गुजरातमे सातलपुर आबाद करके अपने छोटे बेटे सूरजमल्लको दिया यह सातल लडाईमे मारागया उसके १० विजयपाल, उसका ११ मेघपाल, उसका १२ पद्मसिंह, उसका १३ उदयसिंह, जिसके २ बेटे थे, बडा पृथ्वीराज, और छोटा बेगड बडे भाईने छोटे भाईको राज देदिया, और आप थलेमे जा रहा, जिसकी औलादवाले थलेचा झाला कहलाते है

१४ बेगड गद्दीपर बैठा, इसने हलवदके पास बेगडबाव गाव आबाद किया इसका बेटा १५ रामसिंह हुआ इसने ध्रागधराके इलाकहमे रामपुर

(१) गुजरात राजस्थानमे जाकलदेव लिखा है

गांव बसाया उसके बाद १६ वीरसिंह, उसका १७ रणमलसिंह, उसका १८ शत्रुशाल इसने मांडलमें अपनी राजधानी बनाई इसका दूसरा नाम सुल्तान है इसने सुल्तानपुर भी बसाया वह गुजरातके बादशाह अह्मदशाहसे तीन दफा लड़ा, परन्तु शिकस्त खाई इनके १२ बेटे थे, जिनमें बड़ा, १९ जैतसिंह, अपने बापकी गद्दीपर बैठा, २ राघवदेव मालवाके बादशाहके पास जारहा, और जागीर मिली, अब उसकी औलाद उज्जैनके पास नर्वरमें है, ३ लाखा, ४ दूदा, ५ प्रतापसिंह, ६ जयमल्ल, ७ मेपा, ८ कान्हा, ९ गजण, १० सारंग, ११ वीरसिंह, १२ देशल

१९ जैतसिंहको गुजरातके बादशाहोंने पाटडीसे निकाल दिया, और वह कुआमें जारहे इसके बाद २० बनवीर गद्दीपर बैठा, जिसका दूसरा भाई जगमल्ल, ३ मूला, ४ पचायण, ५ मेघराज, ६ श्याम था बनवीरके ६ बेटे हुए, २१ भीमसिंह गद्दीपर बैठा, दूसरा अज्जा, ३ रामसिंह, ४ प्रतापसिंह, ५ पुंजा, ६ लाखा भीमसिंहके बाद उसका बेटा २२ वाघसिंह गद्दीपर बैठा, यह गुजरातके बादशाहसे लड़कर मारागया बाघसिंहके बारह लड़के थे, जिनमेंसे पहिले छः १ नाथा, २ महपा, ३ संग्राम, ४ जोधा, ५ अज्जा, ६ रामसिंह तो अपने बापके साथ मारेगये, और एकको मुसल्मान थानहदारोंने मारडाला, जिसका नाम ७ वीरमदेव था, ८ राजधर अपने बापका क्रमानुयायी बना, ९ लाखा, १० सुल्तान, ११ विजयराज, और १२ जगमाल था बाघसिंहके बाद २३ राजधर गद्दीपर बैठा, जिसने विक्रमी १५४४ माघ कृष्ण १३ [हि० ८९३ ता० २७ मुहर्रम = ई० १४८८ ता० १३ जैन्युअरी] को हलवद शहर आबाद करके उसको अपनी राजधानी बनाया राजधरके तीन बेटे, १ अज्जा, २ सज्जा और ३ राणू हुए

राजधर विक्रमी १५५६ [हि० ९०४ = ई० १५००] में मरगया अज्जा और सज्जा अपने बापको जलानेके लिये गये, पीछेसे राणू गद्दीपर बैठगया, इसपर अज्जा और सज्जा दोनों सुल्तान गुजरातकी मदद लेनेको गये, लेकिन् राणूने नज्रानह देकर मुसल्मानोंको खुश करलिया, तब अज्जा व सज्जा वहांसे निकलकर कुछ दिन जोधपुर रहे और पीछे चित्तौड़में पहुंचे यह अज्जा, महाराणा सांगा और बाबर बादशाहकी लड़ाईके समय विक्रमी १५८४ [हि० ९३३ = ई० १५२७] में बड़ी बहादुरीके साथ मारागया, जिसकी औलाद मेवाड़के उमरावोंमें सादड़ीके राजराणा हैं दूसरा सज्जा जो बहादुरशाह गुजरातीके हमलेमें चित्तौड़पर मारागया, उसकी औलादमें गोगूंदा और देलवाड़ाके राजराणा हैं

२४ राणू हलवदका मालिक रहा. जिसके बाद २५ मानसिंह गद्दीपर बैठा

सुल्तान बहादुरशाहने मानसिंहसे हलवद छीन लिया था, लेकिन् फिर बादशाहने कुछ इलाकह और हलवद उसको देदिया मानसिहके बाद उसका बेटा २६ रायसिंह गादी बैठा इसके पीछे २७ चन्द्रसिह राज्यका मालिक हुआ, इसके छ बेटे थे १ पृथ्वीराज, २ आशकरण, ३ अमरसिह, ४ अभयसिह, ५ रामसिह, और ६ राणू पृथ्वीराज अपने बापसे बागी होगया था, और उसने बादशाही खजानह भी लूटलिया था, इस सबबसे वह अहमदाबादमे कैद होकर उसी हालतमे मरगया दूसरा आशकरण चन्द्रसेनके बाद विक्रमी १६८४ [हि० १०३७ = ई० १६२८] मे हलवदकी गद्दीपर बैठगया २८ पृथ्वीराजके दो बेटे हुए, १ सुल्तान, २ राजू, इनमेसे सुल्तानने, तो बाकानेरका इलाकह अपने कब्जहमे किया, और दूसरे राजूने बढवानका ठिकाना लिया २९ राजूके तीन बेटे थे, १ सबलसिह, २ उदयसिह, और ३ भावसिह, राजू बढवानकी गद्दीपर विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] मे मरगया

राजूका तीसरा बेटा ३० भावसिह, जो बचपनसे ही ईडरमे आरहा था, उसकी शादी सावर (१) मे हुई भावसिहका बेटा ३१ माधवसिह अपनी ननिहाल सावरमे पर्वरिश पाकर होश्यार हुआ था माधवसिहकी ताकत देखकर सावरके खानदानको खौफ हुआ, कि ऐसा न हो, जो हमारा ठिकाना छीन लेवे, इस सन्देहको दूर करनेके लिये माधवसिह पच्चीस सवार लेकर महाराव भीमसिहके पास कोटे गया; भीमसिंह उस वक्त अच्छे अच्छे राजपूतोको एकट्ठा कर रहा था, क्योंकि वह सय्यद अब्दुल्लाह और हुसैनअलीका मददगार होकर निजामुल्मुल्क फतह जगपर चढाई करनेका इरादह रखता था उसने माधवसिहको अपना फौज्दार बनाया और उसकी बेटीके साथ अपने बेटे अर्जुनसिहकी शादी करके नानता गाव जागीरमे दिया, जो कोटाके करीब है

माधवसिहके बाद उसका बेटा ३२ मदनसिह भी अपने बापकी जगह कोटेका फौज्दार और नानतेका जागीरदार रहा इनके दो बेटे १ हिम्मतसिह, और २ पृथ्वीसिह थे पृथ्वीसिहके दो बेटे हुए शिवसिह, और जालिमसिह मदनसिहके बाद ३३ हिम्मतसिंह बापकी जगह काइम हुआ, जिसने चन्द मारिकोमे अच्छी अच्छी कारगुजारी जाहिर की और जयपुरकी फौजका मुकाबलह कोटेकी तरफसे करनेके सिवा वह

---

(१) सावरकी बाबत बम्बई गजेटिअर वगैरहमें मालवाके इलाकहमे होना लिखा है, वह दुरुस्त नहीं है यह एक ठिकाना (सावर) अजमेर इलाकहमे सीसोदिया शक्तावत राजपूतोका मेवाडकी पूर्वोत्तरी सीमापर है

अह्दनामह काइम किया, जिसके बमूजिब यह रियासत मरहटोकी खिराज गुजार हुई, और कदीम खानदानको नये सिरसे मस्नद हासिल करनेका मौका मिला हिम्मत-सिहके कोई औलाद न होनेके कारण उसके बाद पृथ्वीसिहका छोटा बेटा ३४ जालिमसिह क्रमानुयायी बना

विक्रमी १८१७ [हि० ११७३ = ई० १७६०] मे जयपुरके महाराजा माधवसिह अव्वलने कोटापर फौज भेजी, तब जालिमसिहने जयपुरके मददगार मरहटोको अपनी अक्लमन्दीसे रोका, जिससे भटवाडाके करीब कोटाकी फौजने जयपुरकी फौजपर फत्ह पाई इस फत्हके होनेसे जालिमसिहकी बडी कद्र हुई, और वह कोटाकी रियासतका बिल्कुल मुसाहिब बनगया यह बात हाडा राजपूतोको नागुवार हुई, तब उन्होने महाराव गुमानसिहको वर्गलाकर काममे खलल डाला जालिमसिहने ऐसा बेइख्तियारीके साथ काम करनेसे इन्कार किया, तब महारावने उससे मुसाहिबीका काम और नानताकी जागीर छीनली जालिमसिह कोटेसे निकलकर उदयपुर आया, उन दिनोमे मेवाडके सर्दारोकी ना इत्तिफाकीसे महाराणा अरिसिहको गद्दीसे खारिज करनेके लिये रत्नसिंह नाम दूसरा बनावटी महाराणा खडा कियागया था जालिमसिहका उस वक्तमे आना बहुत मुफीद हुआ, याने महाराणाने जालिमसिहको आते ही गाव चीताखेडा जागीरमे देकर अपने सलाहकारोमे शामिल किया आखिरकार विक्रमी १८२५ [हि० ११८२ = ई० १७६८] मे महाराणा अरिसिंहने मरहटोसे मुकाबलह करनेके लिये उज्जैनकी तरफ फौज भेजी, और मेवाडके बहुतसे सर्दार इस मुकाबलहमे मारे गये जालिमसिह मरहटोकी कैदमे पडा, और वह अबाजी एगलियाके बाप त्र्यम्बकरावकी सुपुर्दगीमे रहा (इस लडाईका मुफस्सल हाल मौकेपर लिखा जायेगा) फिर जालिमसिंह कुछ अरसह बाद पडित लालाजी बल्लालके साथ कोटाको गया, महाराव गुमानसिहने अगला कुसूर मुआफ करके उसको अपने पास रखलिया, क्योंकि जालिमसिहके चले जाने बाद इस रियासतका काम अब्तर होगया था

इसी अरसहमे मलहार राव हुल्करका हमलह कोटाके मुल्कपर हुआ, जिसमें कई हाड़े राजपूत बडी बहादुरीके साथ मारेगये जालिमसिंहने अक्लमन्दीसे ६००००० रुपया देना करके मरहटोको पीछा लौटा दिया इस बातसे महाराव गुमानसिंहने दोबारह जालिमसिहका इख्तियार बढादिया, और कुछ अरसह बाद गुमानसिंह जियादह बीमार हुआ, तब अपने पुत्र उम्मेदसिंहको, जो नाबालिग था, जालिमसिहके सुपुर्द करके परलोकको सिधार गया, उम्मेदसिंह कोटाकी

गद्दीपर बैठा, इस वक्तसे लेकर पचास वर्ष बादतक जालिमसिंहने कोटाकी रियासतको बडी अक्लमन्दीके साथ मरहटा लोगोसे बचाया, और राज्यको बढाया, व आबाद किया, जिसका हाल कोटाकी तवारीखमे लिखा गया है

विक्रमी १८७४ माघ शुक्ल १४ [हि० १२३३ ता० १३ रबीउस्सानी = ई० १८१८ ता० २० फेब्रुअरी] मे गवर्मेंएट अंग्रेजीके साथ कोटाकी रियासतका अह्दनामह हुआ, जिसमे एक शर्त यह लिखीगई, कि कोटाकी गद्दीके मुख्तार महाराव और इन्तिजाम कुल रियासतका जालिमसिंहकी औलादके हाथमे रहे इस शर्तपर महाराव उम्मेदसिंहके बाद उनका क्रमानुयायी किशोरसिंह बखिलाफ चलने लगा, और वह कोटासे निकलकर जालिमसिंहको निकाल देनेके लिये एक फौज लेकर चढ आया, लेकिन् गवर्मेंएट अंग्रेजी वजीरकी मददगार थी, इस सबबसे मौजे मागरोलके पास महारावने शिकस्त पाई, और नाथद्वारेमे जाकर पनाह ली फिर महाराणा भीमसिंहकी सिफारिशमे गवर्मेंएट अंग्रेजीने महारावको कोटेपर दोबारह काइम किया विक्रमी १८८० [हि० १२३८ = ई० १८२३] मे राजराणा जालिमसिंहका इन्तिकाल होगया, और अह्दनामहकी शर्तके मुवाफिक उनका पुत्र ३५ राज राणा माधवसिंह मुसाहिब बना यह अपने बापके साम्हनेसे ही कोटाकी कुल रियासतका इन्तिजाम करता रहा था, लेकिन् पिछली जो नाराजगी महारावसे हुई, उसमे जालिमसिंहने इस (माधवसिंह) को बहुत झिडकिया दी, और कहा, कि यह सब फसाद तेरी बद आदतोंके कारण हुआ है इस शर्मिन्दगीसे माधवसिंह अपनी जिन्दगी भर महाराव कोटाके साथ बडी नर्मीसे पेश आता रहा आखिरकार विक्रमी १८९० माघ [हिज्री १२४९ शव्वाल = ई० १८३४ फेब्रुअरी] मे उसका इन्तिकाल होगया, तब उसका बेटा ३६ राज राणा मदनसिंह कोटेकी रियासतका मुसाहिब बना

३६ - महाराज राणा मदनसिंह - १

मदनसिंहके वक्तमें फिर महाराव रामसिंहसे अदावती छेड छाड होने लगी और करीब था, कि कुछ फसादकी बुन्याद काइम हो, लेकिन् गवर्मेंएट अंग्रेजी मागरोलकी लडाईको नही भूली थी, महाराव और उनके मुसाहिबकी ना इत्तिफाकीको बिल्कुल मिटानेका इरादह करलिया, और विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में यह फैसलह क़रार पाया, कि जो पर्गनात जालिमसिंहने अपनी बुद्धिमानीसे कोटा

मिला लिये, उतनी आमदनी जालिमसिंहकी औलादको देकर अलहृदह कर दिया जावे, और इसी तरह हुआ, याने बारह लाख रुपया सालानहका मुल्क हस्ब तफ्सील, मुन्दरजे अह्दनामह राजराणा मदनसिंहके तह्तमे आया, और जुदा रईस करार पाकर पन्द्रह तोपकी सलामी और 'महाराज राणा' खिताबसे इज्जत पाई, और झालरापाटन राजधानी मुकर्रर हुई उनका रुत्बह व मर्तबह वही मुकर्रर किया-गया, जो राजपूतानहके दूसरे रईसोका है, सिवा इसके यह भी करार पाया, कि अगर दूसरे रईसोको गोद लेनेका हक अता हो, तो उनको भी दियाजावे, मगर विरासतके काइदेके मुवाफिक सिर्फ जालिमसिंहके खानदानमे महदूद रहे विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] मे महाराज राणा मदनसिंहका इन्तिकाल होनेपर उनकी जगह ३७ महाराज राणा पृथ्वीसिंह झालरापाटनमे गद्दीपर बैठकर झालावाडका मालिक बना

३७-महाराज राणा पृथ्वीसिंह- २

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमे यह महाराज राणा अंग्रेज लोगोको, जो उनके मुल्कमे पनाहकी गरजसे आये, हिफाजतके साथ अपने पास रखने बाद खैर व आफियतसे अम्नकी जगहोमे पहुचाकर सर्कार अंग्रेजीके दिली खैरख्वाह बने गवर्मेण्ट अंग्रेजीने इस खैरख्वाहीके एवज उनकी बड़ी तारीफ की, जिसकी बाबत कप्तान ब्रुस साहिबने भी महाराज राणाकी बहुत कुछ तारीफ की है, कि झालावाडकी रियासत हाडौतीकी तमाम रियासतोसे बिह्तर और यहाके रईस सर्कार अंग्रेजीके खैरख्वाह व दिली फर्मांबर्दार है अल्बत्तह किसी कद्र फुजूल खर्च होनेके सबब कर्जदार है, मगर कर्जहकी शिकायत नही है, तमाम साहूकार लोग उनका पूरा एतिबार रखते है, और महाराज राणाका भी इरादह इस किस्मकी बातोके इन्तिजामकी तरफ रुजू है दो साल गुजश्तहमे जो सलाहे उनको दीगई, वह भी उन्होने मन्जूर की, अंग्रेजी छावनीको जानेवाले अनाजका महसूल मुआफ करदिया, और बसूरत तय्यारी रेलकी सडकके उसके वास्ते इलाकह मेसे जमीन देना फौरन् मन्जूर करलिया गद्रके दूसरे साल नाना राव पेश्वा बागी मेवाडमे नाथद्वारा होकर मेवाडके पूर्वी हिस्सहमे भागता दौडता झालरापाटन पहुचा, और वहापर छावनीको घेरकर महाराज राणाको भी कैद करलिया, तोप-खानह, खजानह, जेवर, हाथी, घोडा वगैरह कुल बागियोने लूटलिया, तब महाराज राणा रातके वक्त उनकी कैदसे छूटकर पियादह भागे, और बडी तक्लीफ और

मुसीबतोंसे शाहाबादके किलेमें पहुंचे, बाग़ी लोग भी अंग्रेज़ी फ़ौजके खौफ़से छावनीको छोड़कर भागगये महाराज राणा फिर अपनी राजधानीमें आये इस फ़सादमें रियासतका बहुत बड़ा नुक्सान हुआ

विक्रमी १९१८ [हि० १२७७ = ई० १८६१] में महाराज राणाकी लड़कीकी शादी अलवरके महाराव राजा शिवदानसिंहके साथ हुई बाद उसके विक्रमी १९२३ [हि० १२८२ = ई० १८६६] में उक्त महाराजराणा नव्वाब गवर्नर जेनरल साहिबके दर्बार आगरामें शरीक हुए, और वहांसे बनारस वगैरह तीर्थके मकामातकी ज़ियारत करके विक्रमी १९२४ [हि० १२८४ = ई० १८६७] में वापस आये यह पेश्तर बम्बईकी तरफ़ भी बतौर सैरके गये थे, क्योंकि उनको सिर्फ़ मुल्ककी सैर ही करनेका शौक़ नहीं था, बल्कि हर एक जगहके प्रबन्ध वगैरहके ढंगसे तजर्बह हासिल करनेका भी था विक्रमी १९२३-२४ [हि० १२८३-८४ = ई० १८६६-६७] में महाराज राणाने गवर्मेण्ट हिन्दुस्तानके मन्शाके मुवाफ़िक़ ग़ैर इलाक़हके मत्लूबह मुज्रिमोंकी गिरिफ़्तारी व सुपुर्दगीकी बाबत अह्दनामह क़ाइम कियाजाना खुशीसे मन्ज़ूर करके उसके मुताबिक़ अमल दरामद किया दूसरे सालमें उन्होंने फ़ौज्दारी व दीवानीके अंग्रेज़ी क़ानूनोंको मुनासिब तर्मीमके साथ अपनी रियासती अदालतोंमें जारी किया, अगर्चि अह्लकारोंको यह नया तरीक़ह नागुवार गुज़रा, लेकिन् उनकी नाराज़गीका कुछ खयाल न करके बदस्तूर जारी रखकर, जो अदालती कार्रवाई पेश्तर फ़ार्सी व उर्दूमें होती थी, उन काग़ज़ातकी तर्तीब हिन्दी हर्फ़ोंमें कराई

विक्रमी १९२५-२६ [हि० १२८५-८६ = ई० १८६८-६९] के क़हतमें रिआयाकी पर्वरिशके वास्ते इन्होंने पहिलेसे अनाज ख़रीद करलिया, और सड़क वगैरहकी तामीर जारी रक्खी, कि जिससे ग़रीब मज़्दूरी पेशह लोगोंको मदद मिले इसी तरह उन्होंने इस साल सिर्फ़ खैरात व खाना तक्सीम करनेमें एक लाखसे ज़ियादह रुपया ख़र्च किया, और अलावह इसके चन्द मर्तबह देवलीकी छावनीमें अनाज पहुंचाया, जिसपर पोलिटिकल एजेण्ट बड़े शुक्र गुज़ार हुए, और गवर्मेण्टने उनका हस्ब ज़ाबितह शुक्रियह अदा किया इसी साल शहर झालरापाटनमें अंग्रेज़ी डाकखानह खोला गया, और एक छापहखानह जारी होकर हिन्दी अख्बार निकलने लगा दूसरे साल मद्रसह क़ाइम किया गया, जिसमें अंग्रेज़ी, फ़ार्सी व हिन्दीकी तालीम शुरू की गई. शुरू ज़मानहमें इसकी खूब तरक्की रही, लेकिन् बाद उसके यह मद्रसह सिर्फ़ नामके लिये रहगया

यह महाराज राणा बहुत सादह मिजाज और मिलनसार थे अल्बत्तह लिबास उनका तब्दील होगया था, क्यौंकि पहिले रियासतमे पुराना लिबास पहनकर दर्बार वगैरह करनेका दस्तूर था, लेकिन् जबसे इन महाराज राणाकी बेटीकी शादी अलवरके महाराव राजा शिवदानसिंहके साथ हुई, उस वक्तसे अलवर वालोंकी तरह इन्होंने भी अपना लिबास हिन्दुस्तानी बनालिया

जब लॉर्ड मेओसे मुलाकात करनेके लिये उदयपुरसे महाराणा शंभुसिंह अजमेर गये थे, महाराज राणा पृथ्वीसिंह भी वहां आये इस वक्त तक राजपूतानहके राजा अलवर और झालावाडको अपने साथ गद्दीपर बिठानेका दरजह नहीं देते थे, जिसमें उदयपुरकी गद्दीपर बैठनेका तो उनको खयाल भी न था, लेकिन् कोटाके साथ रियासती आदमियों की कार्रवाईसे अथवा और किसी सबबसे अजमेरमें महाराणाकी ना रजामन्दी होगई यह मौका झालावाडको गनीमत मिला, उन्होंने निक्सन साहिब, पोलिटिकल एजेण्ट मेवाडकी मारिफत महाराणासे मुलाकात और बातचीत की परमेश्वरने महाराज राणाकी ख्वाहिश पूरी की जब महाराणा अजमेरसे लौटकर नसीराबाद आये, तो विक्रमी १९२७ कार्तिक शुक्ल ५ [हि० १२८७ ता० १२ शअ्‌बान = ई० १८७० ता० २९ ऑक्टोबर] शनिवारको शामके वक्त महाराज राणा महाराणाके कैम्पमें बुलायेगये, उस वक्त मैं (कविराजा श्यामलदास) भी मौजूद था महाराज राणा पृथ्वीसिंहका चवर व मोरछल वगैरह लवाजि-मह ड्योढीपर रोकदिया गया, उन्होंने महाराणाके पास पहुंचकर दोनों हाथोंसे झुककर सलाम किया, और गादीके नीचे खडे रहे, महाराणाने एक हाथसे सलाम लिया, और उनका हाथ पकडके बाईं तरफ अपनी गादीपर बिठा लिया, और चवर, मोरछल वगैरह लवाजिमह उनपर रखनेकी इजाजत दी, और कोटेकी बराबर लिखावट वगैरह सब इज्जतका बर्ताव होनेका हुक्म दिया फिर उनके साथ बुड्ढे बुड्ढे सर्दारोंने जिक्र किया, कि महाराज राणा जालिमसिंहने मेवाडकी जो खिद्मतें और खैरख्वाहियां की थीं, उनका एवज़ हुजूरने इनायत किया इसी तरह महाराज राणाने भी महाराणाका शुक्रियह अदा किया. महाराणा भी उनके डेरेपर गये. इस समयसे राजपूतानहमें झालरापाटनकी रियासतका दरजह कोटाकी बराबर माना गया, क्यौंकि पुरानी तवारीख़ोंके देखनेसे पाया जाता है, कि कुल रियासतोंको कम व जियादह उदयपुरसे इज्जत मिलना साबित है.

महाराज राणा पृथ्वीसिंह जब नाथद्वारामें दर्शन करनेको आये, उस वक्त उदयपुर भी आये थे, और विक्रमी १९२९ कार्तिक शुक्ल १३ बुधवार [हि० १२८९ ता० ११ रमजान = ई० १८७२ ता० १३ नोवेम्बर] को उदयपुर दाखिल हुए. दाखिल होनेके समय सलामी व पेश्वाई वगैरह कुल इज्जत कोटाके बराबर कीगई; और जबतक

उदयपुरमे कियाम किया, उनसे बडी मुहब्बतके साथ बर्ताव रहा विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १३ [हि० ता० २६ रमजान = ई० ता० २९ नोवेम्बर] को महाराज राणा रुख्सत होकर वापस अपनी राजधानीकी तरफ रवानह हुए

विक्रमी १९२९ [हि० १२८९ = ई० १८७२] के अखीरमे एक नामी गारतगर पिरथ्या भील गिरिफ्तार हुआ, जो कई सालसे रियासत कोटा व झालावाडमे लूट मार करता रहा था इन महाराज राणाने अपने दो कुवरो के इन्तिकाल और अपनी उम्र जियादह होजानेके सबब लडका गोद लेना चाहा था, जिसपर एक अरसह तक बहस रहनेके बाद विक्रमी १९३१ [हि० १२९१ = ई० १८७४] मे गवर्मेण्टसे मन्जूरीका हुक्म हुआ विक्रमी १९३१- ३२ [हि० १२९१ - ९२ = ई० १८७४ - ७५] मे महाराज राणाने लूनावाडेके रईसकी बेटीसे शादी की, और कुछ अरसह बाद विक्रमी १९३२ भाद्रपद कृष्ण ११ [हि० १२९२ ता० २५ रजब = ई० १८७५ ता० २७ ऑगस्ट] को चालीस वर्षकी उम्र पाकर बुखारकी बीमारीके सबब इस दुन्यासे उठगये इनके कोई औलाद न थी, इसलिये गुजरातमे बढवानके ठिकानेसे एक लडका बुलवाया गया, जिसको गवर्मेण्ट अंग्रेजीने बहुत कुछ बहसके बाद, जैसा कि ऊपर लिख आये है, मजूर किया, क्योंकि कोटाकी रियासतसे जालिमसिहकी औलादको यह हिस्सह दियागया था, अब उनकी औलादका खातिमह हुआ, परन्तु गवर्मेण्टको रियासत काइम रखना मजूर था, इसलिये मुतबन्ना रखनेकी इजाजत दी मगर उनकी राणियोमेसे राणी सोलखीने अपना हामिलह होना जाहिर किया, और जो कि अस्ली कुवर पैदा होनेपर गोद लिये हुएका हक गद्दी नशीनीका नहीं रहता, इसलिये यह बात मुनासिब समझी गई, कि हमलके नतीजेका इन्तिजार किया जावे, और रियासती इन्तिजामके लिये महकमह पचायत, जिसमे वज़ीर और अव्वल सर्दार और परलोक वासी रईसके मोतमद सलाहकारोमेसे तीन शख्स दाखिल थे, मुकर्रर हुआ, और उसकी निगरानीके वास्ते डिसेम्बर तक साहिब पोलिटिकल एजेण्ट पाटनमे मुक़ीम रहे इलाकहका दौरह करके रिआयापर जो सख्ती हाकिम पर्गनात जमाके बढाने और हासिल वुसूल करनेमे करते थे, उनकी शिकायते दूर करनेके लिये मुनासिब कार्रवाई की राणी सोलखीके हामिलह होनेमे शक पाया जाकर पूरी खबर्दारी कीगई, कि कोई फ़िरेब व चालाकी न होसके, आखिरकार विक्रमी १९३३ आषाढ शुक्ल १ [हि० १२९३ ता० २९ जमादियुलअव्वल = ई० १८७६ ता० २२ जून] को महाराज राणा

जालिमसिंह, जिनका नाम मस्नद नशीनीसे पहिले बख्तसिंह था, गद्दी नशीन किये गये विक्रमी १९३१ माघ [हि० १२९२ मुहर्रम = ई० १८७५ फेब्रुअरी] मे साहिब एजेएट गवर्नर जेनरल पाटनमे आये, और दूसरे महीनेमे कप्तान एबट साहिब पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेएट रियासतके मुकर्रर हुए, जिनके एह्तिमामसे रियासती इन्तिजाम होने लगा इन साहिबने रियासतकी बिहतरीके वास्ते दिलोजानसे कोशिश की महकमह मालका इन्तिजाम खराब देखकर उसका इन्तिजाम राय बहादुर पडित रूपनारायण पचसर्दार राज अलवरके बेटे पडित रामचरणके सुपुर्द कियागया

महाराज राणा पृथ्वीसिह छोटा कद गेहुवा रग, हसमुख और नेक मिजाज थे उनके समयमे रियासतकी आमदनी करीब बीस लाख रुपया सालानह तकके पहुचगई थी, और यह दिलसे चाहते थे, कि रियासतमे इन्तिजामकी दुरुस्ती हो सिवा इसके गवर्मेएट अंग्रेजीका इह्सान भी दिलोजानसे कुबूल करते थे, कि जिसकी बदौलत यह रियासत काइम हुई सच है ! आदमीको इह्सान भूलजाना बहुत बडा ऐब है, और कृतोपकारको माननेसे उस आदमीकी आदमियत दुन्यामे मानी जाती है

——⁕——

३८ – महाराज राणा जालिमसिंह– ३

यह महाराज राणा विक्रमी १९३२ आषाढ [हि० १२९२ रमजान = ई० १८७५ ऑक्टोबर] मे नव्वाब वाइसरॉय गवर्नर जेनरलकी मुलाकातके वास्ते साहिब पोलिटिकल एजेएटके साथ मकाम नीमचको गये, और वहासे वापस आकर बारह वर्षकी अवस्थामे गादीपर बैठनेके बाद विक्रमी १९३२ फाल्गुन [हि० १२९३ सफर = ई० १८७६ मार्च] मे अजमेर मेओ कॉलेजमे तालीम पानेको भेजेगये, अखीर एप्रिलमे राणी सोलखीके हमल और रियासतकी मस्नद नशीनीका मुआमलह तै हुआ, और रियासतका इन्तिजाम गवर्मेएट अंग्रेजीके मातह्त पोलिटिकल एजेएटने किया, दीवानी, फौज्दारी, अपील और कौन्सिल वगैरह कचहरिया काइम हुई सद्र व देहातमे सरिश्तह तालीमने रौनक पाई, हरएक जगह स्कूल बनायेगये, जमीनके मह्सूलका पक्का बन्दोबस्त हुआ, पडित रामचरण डेप्युटी मैजिस्ट्रेटने इस काममे अच्छी कारगुजारी दिखलाई, फिर हरएक कारखानह व सरिश्तहका मुनासिब प्रबन्ध कियागया, हकीम सआदत अहमद अपीलमे मुकर्रर कियागया, जो पहिले अदालत दीवानी का हाकिम था, और उसकी जगह एक दूसरा अह्लकार मुकर्रर कियागया

साबिक फ़ौज्दार कामकी अब्तरी और एक जन्म कैदीको अपनी साजिशसे भगा देनेके कुसूरपर मुअत्तल किया जाकर उसकी एवज रिसालदार हसनअलीखां, जो अगले रईसके जमानहमे भी इस कामपर था, लाला सुखरामकी शामिलातसे काइम मकाम फ़ौज्दार मुकर्रर किया गया बहरोड इलाकह अलवरके लाला रामदेव सर दफ्तर फार्सी व लाला बिहारीलाल काइम मकाम सर दफ्तर हिन्दीने बडी मिहनत व होश्यारीके साथ काम अजाम दिया साहिब सुपरिण्टेण्डेण्टके तमाम अमलेकी कार्रवाई काबिल तारीफ़ रही, खासकर मुन्शी गोपालकृष्ण मीर मुन्शी साबिक अपने काममे दियानतदारी व ईमानदारीको अच्छी तरह काममे लाकर उम्दह नेकनामी हासिल करगया विक्रमी १९३३ फाल्गुन [हि० १२९४ मुहर्रम = ई० १८७७ फेब्रुअरी] मे कर्नेल वाल्टर साहिब काइम मकाम एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने इस रियासतका दौरा किया, शहर झालरापाटनकी सैर की, और रियासतके बडे बडे लईक व होश्यार अहलकार उनके रूबरू पेश किये गये

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] मे सर्कार अंग्रेजीकी तरफसे महाराज राणा जालिमसिंहको मुल्की इख्तियारात दिये गये, लेकिन् एक गैर मामूली एजेण्टी वहा काइम होकर बाबू श्यामसुन्दरलाल, बी० ए० सेक्रेटरी बनाया गया इन बातोसे रईसको बहुत रज था, जिसके सबब एजेन्सीके वक्तके अहलकार उन्होने मौकूफ करदिये, और सर्कारी पोलिटिकल अफ्सरोंके साथ तक्रार बढती गई; आखिरकार एक वर्षके करीब खुद मुख्तार रहने बाद रईसके मुल्की इख्तियारात सर्कारी हुक्मसे पोलिटिकल एजेण्टको मिलगये उस वक्तसे लेफ्टिनेण्ट कर्नेल एबट राजके सुपरिण्टेण्डेण्ट रहे विक्रमी १९४६ [हि० १३०७ = ई० १८८९] मे उनके रुख्सत जानेके सबब मिस्टर मार्टेण्डलको झालरापाटनका काइम मकाम चार्ज मिला है

झालरापाटनका अह्दनामह, एचिसन साहिबकी किताब,
जिल्द तीसरी, हिस्सह पहिला

अह्दनामह नम्बर ६०

राज राणा मदनसिंहने, जो वादह किया, कि वह कोटेकी रियासतके कामोंका इन्तिज़ाम, जो मुवाफ़िक़ मन्शा ततिम्मह शर्त अह्दनामह दिह्लीके राज राणा ज़ालिमसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंको मिला था, छोड़ते हैं, इस वास्ते नीचे लिखाहुआ अह्दनामह आपसमें गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और राज राणा मदनसिंहके करार पाया

शर्त पहिली- ततिम्मह शर्त अह्दनामह दिह्ली, लिखा हुआ तारीख़ २० फ़ेब्रुअरी सन् १८१८ ई०, जो आपसमें महाराव उम्मेदसिंह बहादुर राजा कोटा और गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके हुआ था, यह दफ़ा उसको रद करती है

शर्त दूसरी- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी कोटाके महाराव रामसिंहकी रज़ामन्दीसे इक़ार करती है, कि वह राज राणा मदनसिंह और उसके वारिस और जानशीनोंको (जो औलाद राज राणा ज़ालिमसिंहके हैं) एक जुदा रियासत और रजवाड़ोंके गद्दीनशीनीके रवाजके मुवाफ़िक कोटाकी रियासत मेंसे निकाल देंगे, जिसमें नीचे लिखी तफ़्सीलके मुवाफ़िक पर्गने शामिल होंगे

शर्त तीसरी- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी मुनासिब ख़िताब राज राणा और उसके वारिसों और जानशीनोंको देगी

शर्त चौथी- दोस्ती और इत्तिफ़ाक़ और ख़ैरख़्वाही हमेशहके लिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी और राज राणा मदनसिंह और उसके वारिसों और जानशीनोंके दर्मियान क़ाइम और जारी रहेगी

शर्त पांचवीं- गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी वादह करती है, कि वह राज राणा मदनसिंहकी रियासतको अपनी हिफ़ाज़तमें रक्खेगी

शर्त छठी- राज राणा (मदनसिंह) और उसके वारिस और जानशीन हमेशह गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी ताबेदारी करेंगे, और उनको अपना बड़ा समझेंगे, और इक़ार करेंगे, कि वह किसी ग़ैर रियासतसे मिलावट न करेंगे, और अगर उनसे कुछ तक़ार होगी, तो जो फ़ैसलह उसका गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी करदेगी, उसको वह मंज़ूर करेंगे

शर्त सातवीं - राज राणा और उसके वारिस और जानशीन किसी रईस या रियासत से मिलावट या मुवाफ़कत बिला मंजूरी गवर्मेंएट अंग्रेज़ीके न करेंगे, परन्तु उनकी मामूली ख़त किताबत उनके दोस्तों और रिश्तहदारोंके साथ जारी रहेगी

शर्त आठवीं - जब कभी गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको ज़रूरत होगी, तो राजराणा अपनी हैसियतके मुवाफ़िक फ़ौज देंगे

शर्त नवीं - राज राणा और उसके वारिस और जानशीन अपनी रियासतके बिल्कुल हाकिम रहेंगे, और इन्तिज़ाम दीवानी फ़ौज्दारी वगैरह गवर्मेंएट अंग्रेज़ीका इस रियासतमें कुछ दख़्ल न होगा

शर्त दसवीं - राज राणा और उसके वारिस और जानशीन ज़रूरी ख़र्चका बन्दोबस्त, जो कि इन्तिज़ामके दुरुस्त करने व इलाक़हके बदलनेमें होगा, नीचे लिखी तफ़्सीलके मुवाफ़िक़ अपने इलाक़हकी आमदनीपर करदेंगे, और इस इलाक़हके अलह्दह करनेमें, जो फ़साद पैदा होंगे, उनका फ़ैसलह, जिस तरह गवर्मेंएट अंग्रेज़ी करदेगी, उसको मन्ज़ूर करेंगे

शर्त ग्यारहवीं - राज राणा और उसके वारिस और जानशीन गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको सालानह ८०००० रुपया कल्दार ख़िराज चालीस चालीस हज़ारकी दो किस्तोंमें देंगे किस्त ख़रीफ़ (सियाली) पौष शुक्ल १५ और किस्त रबीअ् (उन्हाली) ज्येष्ठ शुक्ल १५ को देंगे, और यह ख़िराज संवत् १८९५ की ख़रीफ़से शुरू होगा

शर्त बारहवीं - यह अह्दनामह बारह शर्तका मकाम कोटामें करार पाकर उसपर मुहर और दस्तख़त कप्तान जॉन लडलो काइम मकाम पोलिटिकल एजेएट और लेफ्टिनेएट कर्नेल नेथनल आल्विस साहिब, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके एक फ़रीक, और राज राणा मदनसिंह दूसरे फ़रीकके हुए, और तस्दीक़ इसकी राइट ऑनरेबल गवर्नर जेनरल हिन्दकी पेशगाहसे होकर नक्ले तस्दीक़ की हुई दो महीनेके भीतर आजकी तारीख़से आपसमें बटेगी

मकाम कोटा, ता० ८ एप्रिल सन् १८३८ ई०

मुहर और दस्तख़त -

☐ (दस्तख़त) - जे० लडलो, काइम मकाम पोलिटिकल एजेएट

मुहर और दस्तख़त -

☐ (दस्तख़त) - एन्० आल्विस, एजेएट गवर्नर जेनरल

तफ़्सील ऊपर लिखे अह्दनामहसे मिली हुई, उन पर्गनोंकी बाबत, जो राज राणा मदनसिंह बहादुर और उनके वारिसों और जानशीनोंके वास्ते कोटाकी रियासतसे अलह्दह होकर झालावाड़के नामसे काइम हुए

चीहट (१)	रतलाई
सुकेत	मनोहरथानह
चौमहला, जिसमे पचपहाड आहोर, दीग और गगराड शामिल है	फूल बडोद
	चाचोरनी
झालरापाटन उर्फ़ ऊर्मल	ककोरनी
रीचवा	छीपा बडोद
वकानी	शेरगढका उस तरफका
दीलमपुर	हिस्सह, याने पूर्वकी
कोटडाभट्ट	तरफ़ परवान्, या नेवज
सरेरा	और शाहाबादसे

वाजिह हो, कि नरपतसिह झालावाड छोडकर महारावके इलाकहमे बसेगा, और उसका इलाकह राज राणाके सुपुर्द होगा

मकाम कोटा, ता० १० एप्रिल सन् १८३८ ई०

मुहर और दस्तखत- [ ]

[ ] (दस्तखत)- जे० लडलो, काइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट

[ ] (दस्तखत)- एन० आल्विस, एजेन्ट गवर्नर जेनरल

मुहर महाराव रामसिह

तफ्सील कर्जह, जो राज राणा मदनसिह और उसके वारिस और जानशीन इस अह्दनामहकी दसवीं शर्तके मुवाफिक अदा करेगे

कर्जह

रु०	आ०	पा०	
६१४४७-	१३-	३-	मगनीराम जोरावरमल्ल
४४३८२१-	३ -	६-	रामजीदास ठाकुरदास.
२६७८३९-	७ -	०-	मोहनराम जुगलदास

राज राणा मदनसिह वादह करते है, कि वह ऊपर लिखा कर्जह अपने इलाकह पर काइम होने पर सात दिनमें ३२६१३७-७-९ तीन लाख छब्बीस हजार एक सौ

(१) यह नाम और जो पृष्ठ १४४८ और ४९ मे छपे है, वह मुख्तलिफ किताबो और नक्शोमे जुदा जुदा तौरपर लिखे है, राजपूतानह गजेटियरमें चीहटकी जगह चेचट, डीगकी जगह डग बकानीकी जगह बुकरी और किसी किताबमे मनोहरथानहकी जगह मधरथानह या मोहरथानह वगैरह बहुत फर्क पाया जाता है

सैंतीस रुपया सात आना नौ पाई देंगे, और उसके बाद चार बरसके अर्सहमें बाकी रुपया ११४५२१७ जिसमें ब्याज ८ रुपये सैकडे सालानहका भी शामिल है, हर फस्लपर नीचे लिखे मुवाफ़िक़ देंगे, और यह कुल रुपया चार बरसमें जमा करा देंगे, जो इसमें देरी हो, तो गवर्मेंएट अंग्रेज़ीको इरिव्तयार है, कि वह कुछ इलाकह झालावाडसे बाकी कर्जहके वुसूल करनेके लिये अलग करले पहिली क़िस्त मिती कार्तिक शुक्ल १५ सवत् १८९५ से शुरू होगी, और दूसरी किस्त वैशाख शुक्ल १५ सवत् १८९६ को

किस्तोंका रुपया ब्याज समेत नीचे लिखे मुवाफ़िक़ दियाजावेगा -

१ - किस्त १५००००, २ - किस्त १५००००, ३ - किस्त १५००००,

४ - किस्त १५००००, ५ - किस्त १५००००, ६ - किस्त १५००००,

७ - किस्त १५००००, ८ - ९५२१७

मकाम कोटा, तारीख ८ एप्रिल, सन् १८३८ ई०

मुहर व दस्तखत-
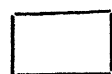
(दस्तखत)- जे० लडलो, क़ाइम मकाम पोलिटिकल एजेण्ट

मुहर व दस्तखत -
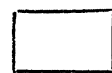
(दस्तखत)- एन्० आल्विस, एजेण्ट गवर्नर जेनरल
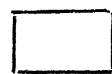
दस्तखत - राज राणा मदनसिंह

अहृदनामह नम्बर ६१

अहदनामह बाबत लेन देन मुजिमोंके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेंएट और श्रीमान पृथ्वीसिंह बहादुर महाराज राणा झालावाड व उसके वारिसो और जानशीनोके, एक तरफ़से कप्तान आर्थर नील ब्रुस पोलिटिकल एजेण्ट हाडौती बइजाजत कर्नेल विलिअम फ्रेड्रिक एडन, एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहके उन कुल इरिव्तयारोंके मुवाफ़िक़, जो कि उनको श्रीमान राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेयर लॉरेन्स, बैरोनेट् जी० सी० बी०, और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने दिये थे, और दूसरी तरफ़से साह हरषचन्दने उक्त महाराज राणा पृथ्वीसिंह बहादुरके दियेहुए पूरे इख्तियारोंसे किया

शर्त पहिली– कोई आदमी अंग्रेजी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेजी इलाकह्मे संगीन जुर्म करके झालावाडकी राज्य सीमामे आश्रय लेना चाहे, तो झालावाडकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और दस्तूरके मुवाफिक उसके मागे जानेपर सर्कार अंग्रेजीको सुपुर्द करदेगी

शर्त दूसरी– कोई आदमी झालावाडके राज्यका बाशिन्दह वहाकी राज्य सीमा मे कोई संगीन जुर्म करके अंग्रेजी राज्यमे जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी वह मुज्रिम गिरिफ्तार करके झालावाडके राज्यको काइदह्के मुवाफिक तलब होनेपर सुपुर्द करदेवेगी

शर्त तीसरी– कोई आदमी, जो झालावाडके राज्यकी रअय्यत न हो, और झालावाडकी राज्य सीमामे कोई संगीन जुर्म करके फिर अंग्रेजी सीमामे आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुकद्दमह्की तह्कीकात सर्कार अंग्रेजीकी बतलाई हुई अदालतमे कीजायेगी, अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुकद्दमोका फैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमे होगा, कि जिसके तह्तमे वारिदात होनेके वक्तपर झालावाडकी पोलिटिकल निगरानी रहे

शर्त चौथी– किसी हालतमे कोई सर्कार किसी आदमीको, जो संगीन मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफिक खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मागे, जिसके इलाकह्मे कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाकह्के कानूनके मुवाफिक सहीह समझी जावे, जिसमे कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम करार दिया जावेगा, गोया कि जुर्म वहीपर हुआ है

शर्त पाचवी– नीचे लिखेहुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेगे –
१– खून २– खून करनेकी कोशिश ३– वह्शियानह कत्ल ४– ठगी ५– जहर देना ६– जिनाबिल्जब्र (जबर्दस्ती व्यभिचार) ७– जियादह जख्मी करना ८– लडकाबाला चुरा लेजाना ९– औरतोका बेचना १०– डकैती ११– लूट १२– सेंध (नकब) लगाना १३– चौपाया चुराना १४– मकान जला देना १५– जालसाजी करना १६– झूठा सिक्कह चलाना १७– खयानते मुज्रिमानह १८– माल अस्बाब चुरा लेना १९– ऊपर लिखेहुए जुर्मोमे मदद देना या वर्गलान्ना

शर्त छठी– ऊपर लिखीहुई शर्तोंके मुताबिक मुज्रिमोको गिरिफ्तार करने

रोक रखने, या सुपुर्द करनेमे, जो खर्च लगे, वह दर्ख्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पडेगा

शर्त सातवी - ऊपर लिखाहुआ अह्दनामह उस वक्त तक बर्करार रहेगा, जबतक, कि अह्दनामह करनेवाली दोनो सर्कारोंमेसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी इच्छाकी इत्तिला न दे

शर्त आठवी - इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामोपर, जो दोनो सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अह्दनामहके जोकि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्खिलाफ हो

मकाम झालरापाटन, ता० २८ मार्च सन् १८६८ ई०

दस्तखत और मुहर - (दस्तखत) - ए० एन० ब्रूस,
पोलिटिकल एजेण्ट

इस अह्दनामहकी तस्दीक श्रीमान वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मकाम कलकत्तेमे ता० २८ एप्रिल सन् १८६८ ई० को की
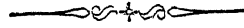
रियासत करौलीकी तवारीख

जुग्राफ़ियह

यह रियासत, जो राजपूतानहकी पूर्वी हद्दपर उत्तर अक्षांश २६° - ३′ व २६° - ४९′, और पूर्व देशान्तर ७६° - ३५′ व ७७° - २६′ के दर्मियान वाके है, अग्नि कोणकी सीमापर दर्याय चम्बल व इलाकह ग्वालियरसे, नैर्ऋत्य कोण व पश्चिमको जयपुरसे, उत्तर और ईशान कोणकी तरफ़ भरतपुर और धौलपुरसे और ईशान कोण तथा पूर्वमें रियासत धौलपुरसे घिरी हुई है इसका रक्बह १२०८ (१) मील मुरब्बा, और आबादी १४८६७० बाशिन्दोंकी है सालानह कुल आमदनी, जो जियादह तर जमीन और दाणसे होती है, विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में अन्दाजह करनेसे ४८३८१० रुपयेके करीब पाई गई, और उसी सालकी तहकीकातसे खर्चका तख्मीनह ४२९५८० रुपये मालूम किया गया है बाशिन्दोंकी तादाद, जो ऊपर दर्जकी गई है, उसमें ८०६४५ मर्द और ६८०२५ औरतें हैं रियासतके कुल गांवोंका शुमार एक शहर और आठ सौ इकसठ (२) गांव है, जिनमें २५९३० घर और औसत फ़ी मील मुरब्बाके हिसाबसे १२३ बाशिन्दे आबाद हैं अगर कौमों या फ़िकोंके हिसाबसे कुल आबादीको तक्सीम कियाजावे तो, मालूम होगा, कि इलाकह भरमें १३९२३७ हिन्दू, ८८३६ मुसल्मान, ५८० जैन, और १७ ईसाई हैं हिन्दुओंमें ब्राह्मण २२१७४, राजपूत ८१८२, बनिया ९६२०, गूजर १५११२, मीना २७८१९, चमार १८२७८, जाट ८०८ और दूसरे लोग ३७२४४ हैं

जमीनकी सूरत- यह इलाकह पहाड़ी और अक्सर ऊंचा नीचा (नाहमवार) है, और उस हिस्सेमें, जो चम्बल नदीकी तराईके ऊपरकी तरफ़ डांगके नामसे मश्हूर है, वाके है खास पहाड़ियां उत्तरी सीमापर है, जहां कई पहाड़ी सिल्सिले सहद्दके बराबर बराबर चलेगये हैं यहां कोई बहुत ऊंचा पहाड़ नहीं है, सिर्फ़ एक चोटी है, जो समुद्रके सत्हसे १४०० फ़ीटसे भी कम ऊंची है, अगर्चि इन पहाड़ोंमें किसी किस्मकी खूबसूरती नहीं पाई जाती, लेकिन् लड़ाईके वास्ते बहुत कामके हैं

---

(१) वकाये राजपूतानहमें १८०० लिखा है

(२) वकाये राजपूतानहमें गांवोंकी तादाद सिर्फ़ ४०५ ही लिखी है, लेकिन् हमने इस रियासतका जुग्राफ़ियह सम्बन्धी हाल पाउलेट् साहिबके गजेटिअरसे लिखा है

चम्बल नदीके किनारे किनारे एक ऊची दीवारकी शक्लपर चटानोका सिल्सिलह, जो नदी के किनारे वाली जमीनको रियासतके दक्षिण तरफकी जमीनसे जुदा करता है पहाडी घाटोंके उत्तरी तरफकी जमीन कई मील तक ऊची है, और चटान इतने है, कि उनके दर्मियान होकर पानीका निकास नहीं होसक्ता, इसलिये बाशिन्दोंको पानीके वास्ते तालाबोपर भरोसा रखना पडता है, जिनको वे बन्द बनाकर तय्यार करलेते है, लेकिन् उत्तरकी तरफ बहुत फासिलेपर जमीन नीची है, चौरस धरती जियादह है, पहाडिया बहुत ऊची दिखाई देती है, और शहरके नज्दीक वाली नीची जमीनमे बहुतसे दराडे है

पत्थर व धातु- इस इलाकहके चटान विन्ध्याचलके चटानोकी मुवाफिक और क्वार्ट्ज (१) पत्थरकी तरह है पिछली किस्मके चटान, एक तग टेकरीपर, जोकि बावलीके दक्षिण पश्चिमी तरफसे बनास तक चली गई है, नजर आते है (बावली, करौली शहरसे ८ मील नैर्ऋत्य कोणको है) अव्वल किस्मके चटान इस सिल्सिलेके दोनो तरफ बहुत दूरतक मिलते है, अग्नि कोणकी तरफ चम्बल नदी तक ऊची जमीन ऐसे ही चटानोकी है इस राज्यमे एक तरहका रेतीला पत्थर भाडेरके नामसे मशहूर है, फत्हपुर सीकरीका महल और आगरेके मुम्ताज महलके कुछ हिस्से उसी पत्थरके बने है, जोकि करौलीसे थोडी दूरपर निकाला गया था अलावह इसके नीला, भूरा, लाल, और सिफेद पत्थर भी होता है, कई जगह गावोमे मकानात पत्थरके बने है, यहा तक कि मकानोको कैलुओंके एवज पट्टियो (सिल्लियो) से पाट कर छते बनाली गई है करौलीसे ईशान कोणमे लोहेकी खान है, लेकिन् लोहा निकालनेमे खर्च जियादह पडता है, इसलिये दूसरी जगहोसे लाया जाता है कई जगह चूना बनानेका पत्थर भी पायाजाता है नीले रगका पत्थर खासकर कुए बनानेके काममे आता है, और करौलीके पास जो निकलता है, उसकी, बहुत सख्त होनेके सबब, चक्की वगैरह चीजे बनाई जाती है

जगल- करौलीके ऊचे पहाडोपर अक्सर दरख्त नहीं है, चम्बलकी तराईमे धावका झाड, ढाक, खैर, सेमल, शाल, और नीमके दरख्त कस्रतसे पायेजाते है, दक्षिण पश्चिमी हिस्सेमें झाडी बहुत है, इनके सिवा कही कही बबूलके दरख्त भी नजर आते है पर्गनह मादरेल, तथा एक नलेमे और करौलीसे बीस मील उत्तर पूर्वकी पहाडियोपर शीशमके पेड़ खडेहुए है, और बहुतसे मकामातपर आम, गूलर, बेर, ढाक, जामुन, खेजडा, कदम्ब, इमली, खजूर वगैरह दिखाई देते है.

---

(१) क्वार्ट्जका हिन्दी नाम नहीं है.

चम्बलके पास वाले जंगलोंमें शेर, रीछ, रोझ, सांभर और हिरण वगैरह जंगली जानवर कसूरतसे पाये जाते हैं, शेरोंका खौफ इतना रहता है, कि बिदून पूरे बन्दोबस्त व खबर्दारीके मवेशीको जंगलमें नहीं चरा सक्ते डांगकी ऊंची ज़मीनमें जहां जहां पानीके चश्मे वगैरह हैं, शिकारका उम्दह मौका है रियासतके पश्चिमी हिस्सेमें सांपोंकी बड़ी जियादती है, लेकिन् शहरके पास नहीं हैं करौलीके जंगलोंमें गोंद, लाख, शहद व मोम वगैरह कुद्रती चीजें पैदा नहीं होतीं; ये तमाम चीजें चम्बल पार ग्वालियरके जंगलोंमेंसे आती हैं

नदियां- चम्बल नदी कहीं बहुत गहरी और धीमी, कहीं चटानी और इतनी तेज़ बहती है, कि उसमें किश्तीका जाना बहुत मुश्किल होता है, बर्सातके मौसममें इसका पानी बहुत चढ़जाता है, लेकिन् करौलीकी हद्दमें कोई बड़ी नदी इसके शामिल नहीं मिलती इस रियासतमें सिर्फ़ पांचनद नामकी एक नदी है, जो पांच धाराओंके मिलनेसे शहरके उत्तर दो मीलके फ़ासिलेपर निकलती है, लेकिन् चम्बलमें नहीं गिरती ये पांचों धारा करौलीके इलाकेमें बहती हैं, और गर्मीके मौसममें एकके सिवा सबमें थोड़ा बहुत पानी बारह महीने बहता रहता है यह (पांचनद) नदी उत्तर तरफ़ बहकर बाणगंगामें जा मिलती है

कालीसुर या डांगर और जिरोता नदी शहरके दक्षिण पश्चिम बहकर दोनों नदियां जयपुरकी तरफ़ मोरेलमें जा गिरती हैं

आबो हवा- इस राज्यमें कुओंका पानी तो अक्सर अच्छा है, लेकिन् ऊंची चटानी ज़मीनके तालाबोंका पानी गर्मीके दिनोंमें बिगड़ जाता है, इसलिये अक्सर बाशिन्दे अपने चौपायोंको लेकर चम्बलके किनारे चले जाते हैं, परन्तु उसका भी पानी पीनेके वास्ते अच्छा नहीं है बारिशका अन्दाजह करनेसे मालूम हुआ, कि विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में ३१ इंच पानी बरसा बीमारी इस इलाकहमें बुखार, दस्त और गठियाकी जियादह होती है, लेकिन् हैजेकी बीमारी बहुत ही कम हुआ करती है

पैदावार- करौलीकी रियासतमें गेहूं, चना, जव, बाजरा, ज्वार, चावल, और तम्बाकू पैदा होता है अलावह इन चीजोंके कहीं कहीं खराब किस्मकी ऊख और शहरके पास भंग बहुत पैदा होती है खेत तालाबों, कुओं और चम्बलके पानीसे सींचे जाते हैं

राज्यका इन्तिज़ाम- न्यायके वास्ते इस रियासतमें फ़ौज्दारी अदालत वगैरह कचहरियां खास राजधानीमें, और पर्गनोंके इन्तिज़ामके वास्ते तह्सीलदार मुकर्रर

है, और राज्य सम्बन्धी कुल इन्तिजाम दूसरी रियासतोंकी तरह यहां भी है

फ़ौज- कुल फ़ौजकी तादाद १९६२ (१) है, जिसमें १६० सवार, १७७० पैदल और ३२ आदमी तोपखानहके हैं फ़ौजी मुलाज़िम ज़ियादहतर इसी इलाकहके बाशिन्दे यादव राजपूत और मुसल्मान पठान हैं. तोपखानहकी तोपें, जो करीब चालीसके हैं, बहुत हल्की हैं, ऐसी कोई तोप नहीं, कि ज़ियादह काममें लाई जासके

हॉस्पिटल- राजधानी शहर करौलीमें एक बड़ा हॉस्पिटल मरीज़ोंके इलाजकी गरजसे राज्यकी तरफ़से काइम कियागया है

मद्रसह- आम तालीमके लिये खास शहर करौलीमें एक बड़ा मद्रसह है, जो विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] में काइम कियागया था, लेकिन् उसमें लड़कोंकी तादाद कम होनेके अलावह इल्मी तरक्कीका कोई नतीजह दर्याप्त न हुआ, क्योंकि मुदर्रिस लोगोंकी तन्ख्वाह शुरूमें बहुत कम थी मगर बनिस्बत पहिलेके अब लड़कोंकी तादाद ज़ियादह है, तालिब इल्मोंको अंग्रेज़ी, फ़ार्सी व हिन्दी, तीनों ज़बानें पढ़ाई जाती हैं अलावह इनके ७ छोटे मद्रसे हिन्दी ज़बानकी तालीमके वास्ते और भी हैं

टकशाल- करौलीकी टकशालमें चांदीके सिक्के याने रुपये बनाये जाते हैं, जिनका वज्न ग्यारह माशा है, और कीमतमें कल्दारके बराबर चलते हैं विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] से पहिले यहांके सिक्कहमें एक तरफ़ दिहलीके बादशाहका नाम मए साल सवत्के और दूसरी तरफ़ करौलीके राजाका नाम व सवत् होता था, मगर विक्रमी १९१५ [हि० १२७४ = ई० १८५८] के बाद मुग़ल बादशाहोंकी जगह मलिकह मुअज्जमहका नाम रक्खागया है

जेलखानह- शहर करौलीमें एक अच्छी जगह मज्बूत मकान बना हुआ है, जिसमें कैदियोंकी तादाद २०० के करीब करीब रहती है सफ़ाई वगैरहका इन्तिज़ाम ठीक है राजधानीमें एक डाकखानह भी है

ज़ात, फ़िर्कह व कौम- इस रियासतमें नीचे लिखी कौमोंके लोग आबाद हैं- ब्राह्मण, राजपूत, बनिया, जाट, गूजर, मीना, काछी (माली), कुम्हार, नाई, धोबी, डोम, मुसल्मान, कोली, वगैरह, और इनके सिवा कई मुतफ़र्रिक ज़ातोंके लोग रहते हैं यहांके लोग अक्सर वैष्णव मतको मानते हैं, और इसी वजहसे कृष्णके मन्दिरोंकी तादाद रियासतमें सबसे ज़ियादह याने ३०० है, सिवाय इनके महादेव, देवी, हनुमान इत्यादि हिन्दू मज्हबके देवताओंके भी स्थान बने हुए हैं, जिनकी इस कौमके सब बाशिन्दे पूजा

(१) यह हाल पाउलेट् साहिबके बनाये हुए करौलीके गजेटिअरसे लिखा है, परन्तु वकाये-राजपूतानहके मुसन्निफ़ने सन् १८७३- ७४ ई० की रिपोर्टोंका हवालह देकर सवार ४००, पियादह ३२०० और गोलन्दाज़ ३५ लिखे हैं

करते है राजाकी कुलदेवी अजनी है, जिसका मन्दिर बीरवास नामी एक मकामपर बना है

पेशह व दस्तकारी– जियादहतर इस इलाकहके ब्राह्मण तिजारत, मीना लोग खेती, राजपूत लोग जो यादव कौमसे है, अक्सर उम्दह सिपाहियानह नौकरी, और जो गरीब है, या जिनकी हालत दुरुस्त नही है, वे काश्तकारी करते है दस्तकारी यहापर कोई मश्हूर किस्मकी नही होती, सिर्फ मोटी किस्मका कपडा बनाया जाता है, इसके अलावह चन्द लोग रगसाजी, सग तराशी, टाट बाफी और खातीका काम करते है रगीन कपडा, शक्कर, नमक, रुई, और भैस तथा बैल खासकर गैर इलाकोसे बिकनेको आते है, और यहासे बाहर जानेवाली चीजे चावल, रुई और जानवरोमेसे बकरी है

तह्सील याने पर्गने

रियासत करौली तह्सीलोके लिहाजसे पाच हिस्सो याने हुजूर तह्सील, जिरोता तह्सील, मादरेल तह्सील, माचलपुर तह्सील और ऊतगढ तह्सीलमे तक्सीम कीगई है, जिनमेसे हर एकका मुफस्सल हाल जैलमे दर्ज किया जाता है –

तह्सील हुजूर– हुजूर या खास राजधानीकी तह्सीलके मातहत शहर करौलीके आस पासका इलाकह है, जिसमे १२५ गाव है, जिनमेसे ९१ तो कूरगाव तअल्लुकेके और ३४ गुर्लाके है कुल तह्सीलके बाशिन्दोकी तादाद ६३१५५ मनुष्य है, काश्तकार लोग अक्सर मीना कौमसे है इस पर्गनहके कुल गाव छोटे और कूरगाव तअल्लुकह, जिसको आतरी भी कहते है, पहाडियोके बीचमे बसा हुआ है, परन्तु जमीन यहाकी उपजाऊ है.

तह्सील जिरोता– यह तह्सील करौलीसे पश्चिम रुखको है, और करौलीके जागीरदार ठाकुरोके गाव अक्सर इसी हिस्सेके अन्दर है यहाकी जमीन पथरीली और पहाडी है, और काश्तकार उमूमन मीना लोग है, ब्राह्मण और बनिये भी खेती करते है, और राजपूत लोग राज्यकी नौकरीसे गुजारा करते है कुओकी गहराई एकसी नहीं है, किसी गांवमे ६० हाथपर और कही २० हाथपर ही पानी निकल आता है आबादी कुल तह्सीलकी २४००० बाशिन्दोकी है जिरोता, जिसके नामसे इस तह्सीलका नाम रक्खागया है, यहाका सद्र मकाम है, जिसमे एक थानहदार, तह्सीलदार, और कानूनगो रहता है यह राजधानी करौलीसे २८ मील दक्षिण पश्चिममे है, चौकीदार यहाके मीना लोग है पानी ३० फीटकी गहराईपर पायाजाता है इस पर्गनेमें कटदाणा नामका एक अनाज पैदा होता है, जो फाल्गुन् महीनेमे बोया और आषाढमे काटाजाता है लोग कहते है, कि

जीराखा नामी एक मुसल्मानने यह कस्बह आबाद किया था, जिसकी कब्र यहांपर मौजूद है. कस्बेमें कल्याणरायका एक मन्दिर सात सौ वर्षसे ज़ियादह अरसेका बनाहुआ है, जिसकी प्रशस्तिमें विक्रमी ११९५ [हि० ५३२ = ई० ११३८] लिखा है, और कस्बेके नज़्दीक ही एक पहाडीपर शैख़ बद्रुद्दीनकी दर्गाह है.

तह्सील मादरेल- यह तह्सील, जिसकी आबादी १९००० बाशिन्दोंके करीब है, करौलीसे दक्षिण तरफ़ वाके है, इसमें दो तअल्लुके हैं. मादरेल तह्सीलका सद्र मकाम एक बडे पुराने किलेके लिये मश्हूर है, जो यादव राजपूतोंकी राजधानीसे पहिले ज़मानेका बनाहुआ है, और जिसमें एक तालाब और कई मस्जिदें हैं. यह किला और सबलगढ बहुत अरसे तक महाराजा गोपालदासके पुत्र और उसके वारिसोंके कब्ज़हमें रहा. यहांके किलेदारकी मातह्तीमें ३०० आदमी रहते हैं, कस्बेकी आबादी १००० घरों तथा १४००० बाशिन्दोंकी है, जिसमें अक्सर बौहरे व महाजन आसूदह व मालदार हैं, ज़मींदारी यहांपर सौ वर्षके अरसेसे ब्राह्मणोंकी होगई है, पहिले मीनोंकी थी. इस पर्गनहमें पानी ७० हाथ गहराईपर मिलता है, गर्मीके मौसममें पानीकी इस कद्र तक्लीफ़ रहती है, कि बाज़ वक्त तो २॥ मील फ़ासिलेपर दर्याय चम्बलसे लाया जाता है. कस्बह मादरेलके चारों तरफ़ शहरपनाह है, जिसको महाराजा हरबख़्शपालने बनवाया था, और बस्ती या किलेसे पश्चिम ज़मीनके सत्हसे ४५०० फ़ीट बलन्द एक पहाडीपर मर्दान गाइबकी दर्गाह है, कहते हैं, कि यहांपर रातके वक्त कोई आदमी नहीं रह सक्ता, अगर रहे, तो मर जाता है.

तह्सील माचलपुर- यह तह्सील करौलीसे उत्तर पूर्व २५४२० आदमियोंकी आबादी की है, जिसमें दो पर्गने हैं, इनमेंसे एक पर्गनह मुसल्मानोंके अह्दमें चौरासी गांव होनेके सबब चौरासीका पर्गनह कहलाया, जो पहिले ज़मानेमें राजा गोपालदासके बुज़ुर्गोंके हाथसे जाता रहा था, लेकिन् पांच सौ वर्षके बाद बादशाह अक्बरसे राजा गोपालदासने दक्षिणकी नौकरीके एवज़ वापस हासिल कर लिया. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में जयपुरके प्रधान नव्वाब फ़ैज़-अलीखांके बुज़ुर्गोंमेंसे डडाईखां और रणमस्तखांने माचलपुरको लूटा, विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में राज्य करौली और सर्कार अंग्रेज़ीके दर्मियान अह्दनामह काइम होनेसे २० वर्ष पहिले सेंधियाके मातह्त मरहटोंने इस कस्बहको तह्सीलके दूसरे बारह गांवों समेत नालबन्दीमें ले लिया था. पहिले यहांके ज़मींदार गौज ठाकुर थे, जिनको महाराजा गोपालदासने निकाल दिये. इस पर्गनहमें १००० फ़ीटसे लेकर १३०० फ़ीट तक बलन्दीकी पहाड़ियां

पाई जाती है कस्बह माचलपुर, जो करौलीसे १६ मील उत्तर पूर्व, १००० घरों तथा ५००० बाशिन्दोंसे जियादह आबादीका मकाम है, इस तह्सीलका सद्र है यहां एक अह्लकार रहता है, जिसको प्रधान कहते हैं, वह कानूनगोका काम करता और २५० रुपये सालानह तन्ख्वाह पाता है यहांपर महादेव और विष्णुके बहुतसे मन्दिर हैं, और बस्तीमें और उसके बाहिर अक्सर पुरानी इमारतें बनीहुई हैं, जिनमें सबसे बडा महाराजा गोपालदासके महलका खंडहर, इसीके पास एक महादेव और दूसरा मदनमोहनका मन्दिर उसी जमानेका बनाहुआ, शहरसे उत्तर रुख एक छोटी पहाडीपर १२ स्तम्भकी एक कब्र पठानोंके वक्तकी है, यहांसे एक मील उत्तर एक पुराना कुआ है, जिसको चोर बावडी कहते हैं कस्बेसे उत्तर तरफ़ कई बागीचे हैं, जिनमेंसे एकको दक्षिणियोंका बागीचा कहते हैं, जो मरहटोंके अह्दमें बना था इस तह्सीलमें कुओंका पानी २० हाथकी गहराईपर पायाजाता है

तह्सील ऊंतगढ- करौली राज्यके दक्षिण पश्चिमी कोणपर यह पर्गनह है, जिसमें छ तअल्लुके हैं कदीम जमानहमें यह पर्गनह लोधी लोगोंके कब्जहमें था, लेकिन् चार सौ वर्षका अरसह हुआ, कि उनका कब्जह छूटगया है, तो भी उन लोगोंके बनायेहुए बन्द और तालाब मौजूद हैं राजा अर्जुनदेवने लोधियोंसे यहांकी जमीनका हासिल वुसूल किया यहां एक बहुत पुराना किला है, जिसके भीतरका हिस्सह महाराजा हरबख्शपालने बनवाया है, महाराजा जगोमानने अपने बेटे अमरमानको, जिसने अमरगढ बसाया, यह किला दिया था, लेकिन् उसके बाद उसकी औलादवाले फसादी होनेके सबब महाराजा मानकपालके वक्तमें अमोलकपालने विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में यह क़िला उनसे छीनलिया

किले

करौलीके राज्यमें नीचे लिखे मुवाफिक बारह किले हैं, १- करौलीका किला या महल, २- ऊंतगढ, ३- मादरेल, ४- नारोली, ५- सपोतरा, ६- दौलतपुरा, ७- थाली, ८- जबूरा, ९- खूडा, १०- निन्डा, ११- ऊंड और १२- खुदाई इनमेंसे किला ऊंतगढ, मादरेल और नारोली तो बडे किले हैं, बाकी छोटे हैं- सपोतरा करौलीसे २० मील पश्चिममें है, खुदाई उत्तर पूर्वी सीमापर है, जिसमें ५० आदमी रहते हैं, थाली माचलपुर पर्गनहमें उत्तरी सर्हदपर है, जबूरा माचलपुरसे थोडी दूर पूर्वमें, निन्डा मादरेलसे तीन मील उत्तर, ऊंड मादरेलसे उत्तर पूर्व चम्बलके नज्दीक, खुदाई मादरेलके नज्दीक और दौलतपुरा ऊंतगढ पर्गनहमें पश्चिमी हदपर है

मश्हूर शहर व क़स्बे

राजधानी शहर करौली- यह शहर, जिसको विक्रमी १४०५ [हि० ७४९ = ई० १३४८] मे राजा अर्जुनदेवने आबाद किया था, और जिसका नाम कल्याणरायके मन्दिरसे रक्खा गया, शहर मथुरा ग्वालियर, आगरा, अलवर, जयपुर, और टौकसे सत्तर मील फ़ासिलेपर वाके है, शुरू जमानहमे मीनोकी लूट मारके सबब तरक़ीको नही पहुच सका, लेकिन् पीछे राजा गोपालपालने मीनोको जेर करने बाद शहरको लाल पत्थरकी शहरपनाहसे, जिसका घेरा २। माइलके करीब है, मह्फूज किया, और शहरको तरक़ी दी, यहातक कि रफ्तह रफ्तह बाशिन्दोकी तादाद २८००० तक पहुचगई शहर पनाहमे ६ दर्वाजे और ग्यारह खिडकिया और उसके चारो तरफ़ मिट्टीका एक चौडा धूलकोट है, जिसको तोपके गोलोका कुछ भी खतरा नही और उसके गिर्द भद्रावती नदीके दराड़े याने पानीके बहावसे कटीहुई जमीनके शिगाफ इस तरहपर है, जैसे फ़ौलादी तलवारमे जौहर, अगर कोई नावाकिफ आदमी उन दराडोमे चलाजावे, तो उसको सिवा भटकनेके रास्तह मिलना मुश्किल होजाता है, बल्कि वह ऐसी जगह है, कि जिसमे हजारो आदमियोकी फौज गाइब होसक्ती है शहरके खास बाजारकी लम्बाई करीब आध मीलके है, और बाजारके सिवा दूसरी गलिये बहुत तग है इस शहरको मै (कविराजा श्यामलदास) ने भी महाराजा मदनपालके शुरू अह्दमे देखा था, शहरके दक्षिण तरफ़ धूलकोटके करीब उन यादव राजपूतोकी देवलिया (१) है, जो लडाईमे एक साथ मारेगये थे, और जिनके देखनेसे उन राजपूतोकी बहादुरीका नमूना मालूम होता है राजाके भाई बेटे लाल छत्तेकी छायामे बदनपर लाल मिट्टी लगायेहुए थे, जिनको शेर बच्चा कहना चाहिये अगर्चि राज्यके पुराने महल राजा अर्जुनदेवके बनाये हुए इस वक्त मौजूद नही है, लेकिन् उस वक्तके महलोके बागके दरख्त अबतक है, हालके महल राजा गोपालपालने दिल्लीके मकानातके ढगपर लाल पत्थरके बनवाये है, जो काबिल देखनेके है, महलोका घेरा २२५० गजके करीब है, और उनके गिर्द एक ऊची दीवारका हाता खिचाहुआ है, जिसमे दो दर्वाजे है उस दर्वाजेपर, जिसको बीच दर्वाजह बोलते है, उम्दह कारीगरीका काम बना हुआ है कहते है, कि दर्वाजोपर गुलकारीका काम किसी आगरेके कारीगरने बनाया था, दर्वाजेके ऊपर एक उम्दह छत्री बनीहुई है, महलोके

(१) लड़ाईमे मारेजानेवाले राजपूतोके चबूतरोको देवलिया कहते है

अन्दर चित्रकारीका काम, जिसमे खासकर रग महल और दीवान आमका बहुत ही उम्दह है गवर्नर जेनरलके एजेएट कर्नैल कीटिंगने यहांके महलोंकी निस्बत तारीफमे लिखा है, कि वे हिन्दुस्तानके सबसे उम्दह मकानातकी किस्मसे है शहरके कुल मकानात लाल पत्थरके है, जिनमेसे खूबराम प्रधानका मकान और अत्ता शहरमे अजीतसिंहके मकानात बहुत बलन्द बनायेगये है

राजधानीमे मन्दिर वगैरह जो मश्हूर मज्हबी मकानात है, उनके नाम यहापर दर्ज किये जाते है - महाराजा गोपालपालका बनवाया हुआ मदनमोहनका मन्दिर, प्रतापशिरोमणिका मन्दिर, जिसको महाराजा प्रतापपालने बनवाया था, और जिसके खर्चके लिये दो हजारकी जागीर नियत है नवलबिहारीका मन्दिर, जिसको महाराजा प्रतापपालकी विधवा राणी नरूकीने बनवाया था, कल्याणरायका मन्दिर, राधाकृष्णका मन्दिर, गोविन्दका मन्दिर, गोपीनाथ, महाप्रभू, मुरारीमनोहर, और बख्तावर शिरोमणिके मन्दिर तथा चार मस्जिदे है इन मन्दिरोमेसे मदनमोहनका मन्दिर सबसे बडा है, जिसकी मूर्ति जयपुरके महाराजा जगत्सिंहसे राजा गोपालपाल लाये थे, और गोविन्द तथा गोपीनाथकी मूर्तिया मए दो और प्रतिमाके वृन्दावनसे लाई गई थी मन्दिरकी सेवाके वास्ते एक बगाली ब्राह्मण मुर्शिदाबादके पास वाले एक मन्दिरसे बुलाकर मुकर्रर कियागया था, जिसके वारिस अबतक इस गद्दीके मालिक है, इस मन्दिरके खर्चके लिये सत्ताईस हजार सालानहकी जागीर राजा गोपालपालकी नियत कीहुई है

कूरगाव - करौलीसे दस मील दूर जयपुरके रास्तेपर ३०० मकान और १००५ आदमियोकी बस्तीका गाव है, जो नमकके व्यापारके लिये इलाकहमे मश्हूर है जमीन यहाकी नालोसे कटीहुई, लेकिन् पैदावारीमे उम्दह है गावके पास मकानोके बहुतसे खडहर नजर आते है, लोगोके जबानी बयानसे मालूम होता है, कि पहिले यहापर मुसल्मान पठानोका एक बडा शहर आबाद था, लेकिन् एक मुद्दत हुई, कि मुसल्मान यहाकी जमीनके मालिक नही रहे, और ऐसा ही हाल लोधी और धाकड लोगोका है

केला- करौलीसे दक्षिण पश्चिम तरफ १२ मील फासिलेपर किले ऊतगढके रास्तेमे है यहा एक छोटे नलेपर देवीका एक मश्हूर मन्दिर है, जहा हर साल चैत्र कृष्ण ११ को मेला शुरू होता और १५ रोजतक बराबर जारी रहता है जिसमे हजारहा यात्री इलाकह और दूर दूरके जमा होते और भेट चढाते है भेटका रुपया जो ६००० के क़रीब जमा होता है, सदाव्रतमे लगाया जाता है. क़रौलीके

रईस इस मकामपर कमसे कम एक मर्तबह सालभरमे दर्शन करनेको हमेशह आते है, यहाकी प्रशस्तिसे मालूम होता है, कि यह मन्दिर विक्रमी १७८० [हि० ११३५ = ई० १७२३] मे बनवाया गया था

बरखेडा, कूरगाव तअल्लुकह- यह गाव करौलीसे दक्षिण पश्चिमको वाके है, जिसमे किसी एक राणी और एक लौंडीके बनवाये हुए दो बाग और मरहटा रूपजी सेंधियाकी छत्री, जो यहा मारागया था, है इस गावको करौलीसे पहिलेका बसा हुआ बतलाते है

सलीमपुर, कूरगाव तअल्लुकह- करौलीसे १४ मील पश्चिममे है, यहांपर पठानोके बनवायेहुए किलेका खडहर, मिया मक्खनकी मस्जिद, गावके करीब मदार साहिबका चिल्ला नामकी एक पहाडी, जहा एक मुसल्मान फकीरने चालीस रोजतक उपवास किया था, है यहाकी आधी जमींदारी पठानोकी है, कुओमे पानी ६० हाथसे नीचे पायाजाता है

मोहोली, कूरगाव तअल्लुकह- यह गाव करौलीसे दक्षिण पश्चिम आठ मीलपर खीचरी ठाकुरका है, जो करौलीके राजाकी एक खास शिकार गाहके लिये, जिसे नीला डूगर कहते है, प्रसिद्ध है यहा आम, बेर और कई किस्मके दरख्त कस्रतसे होते है, पहाडिया नज्दीक होनेकी वजहसे झाडीके अन्दर जगली जानवर बहुत पाये जाते है कुओमे पानी २० हाथकी गहराई पर निकल आता है

अगरी, गुरला तअल्लुकह्- यह जयपुरकी सर्हदपर पुराना गाव है, जो अफीमकी पैदाइश और पोलिटिकल एजेण्ट लेफ्टिनेन्ट मक मेसनके, मीना और दूसरी सर्कश कौमोको जेर करनेकी गरजसे, बनाये हुए एक किलेके लिये मश्हूर है

बीचपुरी, गुरला तअल्लुकह- करौली शहरसे दक्षिण पूर्व तीन मील बद्रावती नलेपर है, यह और इसके पासके बरेर पहाडी, चावर, बालपुरा गाव, रेतीले पत्थर, खड़ीकी खान, तालाब और पुराने मन्दिरोंके लिये, मश्हूर है

नारोली- जिरोतासे दो मील उत्तर जयपुरकी सर्हदसे मिलाहुआ ५०० घर तथा ३००० आदमियोकी बस्तीका एक कस्बह है, जो एक बडे किलेके सबब, जिसको विक्रमी १८४० [हि० ११९७ = ई० १७८३] मे मुकुन्द ठाकुरोने बनवाया था, मश्हूर है यहा हफ्तेमे एक दिन हटवाडा होता है, और बारूद बनाई जाती है जो कि यह कस्बह जयपुरकी सर्हदसे मिलाहुआ है, इस सबबसे कई बार आपसमे सर्हदी झगडे हुआ करते थे, लेकिन् लेफ्टिनेण्ट मंक मेसनने

मीनारे काइम करके हमेशहका फसाद मिटादिया.

सपोतरा- यह कस्बह जिरोतासे ७ मीलके फासिलेपर जिरोता तह्सीलके सबसे बडे और आबाद गावोमेसे ४०० घरोकी बस्तीका है, यहा एक किला दो सौ बर्षका पुराना, रत्नपालके बेटे उदयपालका बनवाया हुआ है, जिसमे ५० आदमी रहते है, और एक उम्दह तालाब बना हुआ है यहा हफ्तेमे एक दिन हटवाडा लगता है बाशिन्दोमे जियादह तर मीना लोग जमीदार है, छीपोके घरोकी तादाद भी जियादह है, जोगी लोग बारूद बनाते है, जो कोटा और बूदीको भेजी जाती है पानी पच्चीस हाथकी गहराईपर पायाजाता है

खूबनगर- मादरेलसे १४ मील उत्तर और राजधानी करौलीसे ९ मील पश्चिम मे वाके है यहा शिकारका बहुत उम्दह मौका है, और महाराजा हरबख्शपालके प्रधान भाऊ खूबरामका बनवाया हुआ उम्दह व बडा तालाब है, लेकिन् उसके नीचेकी जमीन सख्त व पथरीली होनेके सबब उसका पानी खेतीके काममे नहीं लाया जा सक्ता

मेला- करौलीमे व्यापारके लिये कोई मश्हूर मेला नहीं है, सिर्फ शहरके नज्दीक कलकत्ता नाम मकामपर शिवरात्रिका एक मेला होता है, जिसमे मवेशीकी खरीद फरोख्त होती है

व्यापारके रास्ते- करौलीके राज्यमे व्यापार सम्बन्धी रास्ते ये है - १- करौलीसे माचलपुर होकर आगरे जानेवाली सडक, उत्तर पूर्वमे २- पश्चिममे इलाकह जयपुरके अन्दर कुशलगढ और माधवपुरको जानेवाली सडक ३- दक्षिणमे शिवपुर व बरोडाकी सडक ४- ग्वालियर व इन्दौरको जानेवाली सडक, और ५- नारोलीसे शिवपुर तक ६- उत्तरी तरफ हिन्डौन व बयानाकी सडक ७- पूर्वमे मथुरा व धौलपुर जानेवाली सडक

तारीख

तवारीखी हाल इस राज्यका हमको खानगी तौरसे कुछ नहीं मिला, सिर्फ् कप्तान पी० डब्ल्यू० पाउलेटके गजेटिअरसे लिखा जाता है, जो मुझको कर्नेल युएन स्मिथकी मददसे मिला, और थोडासा हाल करौलीसे मेरे मित्र डॉक्टर भवानीसिंहने भेजा था, लेकिन् उसमे उक्त गजेटिअरका ही आशय है

यहांके जादव (यादव) राजपूत चन्द्र वशी श्री कृष्णकी औलादमे गिने जाते हैं पाउलेट साहिब लिखते हैं, कि महाराजा विजयपाल मथुरा छोडकर मनी पहाडको

आया, और वहां एक किला विक्रमी १०५२ [हि० ३८५ = ई० ९९५] मे बनवाया बडवा भाट बयान करते हैं, कि उसका राज बहुत बढगया था गजनीके मुसल्मानोंने उसपर हमलह किया, और धोखेमें राणियोंका बारूदमें उड जाना इस राजाकी जिन्दगीके खातिमेका सबब हुआ यह बर्बादी बयानाके किलेमें विक्रमी ११०३ [हि० ४३८ = ई० १०४६] मे, जो उसने अपनी जिन्दगीमें बनवाया था, विजयपाल (१) के मरने बाद हुई मुसल्मानोंने बयानेका किला छीन लिया विजयपालके १८ बेटे थे, जिनमे छत्रपाल मुसल्मानोंसे लडकर मारागया, और गजपालकी औलाद जयसलमेर (२) के भाटी हैं तीसरे मदनपालने मादरेल बसाया, और किलेको पीछा बनवाया, जिसके निशान अबतक मिलते हैं विजयपालका सबसे बडा बेटा तवनपाल बारह वर्ष तक पोशीदह रहकर अपनी धायके मकानपर आया, उसने तवनगढका किला बयानाके अग्निकोणमें पन्द्रह मीलपर बनवाया, जिसके निशान अब तक मिलते हैं तवनपालने डागके इलाकहपर कब्जह करलिया

तवनपालके मरने बाद उसका बेटा धर्मपाल गद्दीपर बैठा, और उसने धौल-डेरामें जाकर एक किला बनवाया, जहां अब धौलपुर आबाद है उसके बेटे कुवरपालने गोलारीमें एक किला बनवाया, जिसका नाम कुवरगढ रक्खा, और जिसके निशान अबतक मिलते हैं धर्मपाल मुसल्मानोंकी लडाईमें मारागया, जब कुवर-पाल यहांसे निकलकर अंधेरा कटोलाकी तरफ चलागया, जो रीवाके पास है, तो उसका भाई मदनपाल मुसल्मानोंके ताबे रहकर तवनगढके पास ही रहा, जिसकी औलाद गोज खानदानके नामसे उस जिलेमें मौजूद है अगर्चि वे मुसल्मान नहीं हुए, तो भी यादव लोग उनको जलील समझते हैं

कुवरपाल मरगया, तो उसके बाद सहनपाल, नागार्जुन, पृथ्वीपाल, तिलोक-पाल, बपलदेव, सासदेव, अरसलदेव और गोकुलदेव, एकके बाद दूसरा वारिस हुआ

(१) हमको इस राजाके समयका पाषाण लेख काव्यमालाकी प्राचीन लेख मालाके पृ० ५३-५४-५५, ई० सन् १८८९ फेब्रुअरीके अकसे मिला है, जिसमे क्षितिपालके पुत्र विजयपालके सामन्त मथनदेवका बागौर नाम ग्राम एक मन्दिरको भेट करना लिखा है, उसमे विक्रमी १०१६ माघ शुक्ल १३ [हि० ३४८ ता० १२ जिल्काद = ई० ९६० ता० १४ जैन्युअरी] दर्ज है इससे विजयपालके मरनेके समयमें कुछ फर्क हो, तो आश्चर्य नहीं इस पाषाण लेखकी नक्ल शेष संग्रहमें दी है बयानाकी एक प्रशस्ति, जो संवत् ११०० की है, उसमे विजयाधिराज लिखा है, इससे यह भी संभव है, कि राजा विजयपालने जियादह उम्र पाई हो, और पहिली प्रशस्तिके वक्तमें वह बचपनकी हालतमें हो. इस प्रशस्तिकी नक्ल शेष संग्रहमें दी गई है

(२) जयसलमेरकी तवारीखमें इससे फर्क पाया जाता है.

विक्रमी १३८४ [हि० ७२७ = ई० १३२७] मे अर्जुनदेव गद्दीनशीन हुआ, उसने मुसल्मानोसे मादरेलका किला ले लिया फिर पुवार राजपूत और दोरोसे मेल करके बिल्कुल इलाक़हपर क़ब्ज़ह करलिया वह सर मथुराके ज़िलेके चौबीस गाव आबाद करके तवनपालकी कुल जायदादपर हुकूमत करने लगा, और कल्याण-रायका मन्दिर बनवाया, जहा अब करौली आबाद है

विक्रमी १४०५ [हि० ७४९ = ई० १३४८] मे करौली शहरकी नीव डाली, और एक महल, बाग व अजनीका मन्दिर और गढकोट नामका किला बनवाया, जिसके निशान अबतक मौजूद है विक्रमी १४१८ [हि० ७६२ = ई० १३६१] मे विक्रमादित्य गद्दीपर बैठा, उसके बाद विक्रमी १४३९ [हि० ७८४ = ई० १३८२] मे अभयचन्द, और विक्रमी १४६० [हि० ८०६ = ई० १४०३] मे पृथ्वीराज बडवा भाटोका बयान है, कि इसने ग्वालियरके राजा मानसिहपर हमलह किया था, और मुसल्मानोने तवनगढका मुहासरह किया, लेकिन् यादवोने उनको हटा दिये उनके बाद उदयचन्द उसके बाद प्रतापरुद्र, और चन्दसेन हुए, इसके बारेमे लिखा है, कि वह ऊतगढमे रहता था बडवा लोग उसके बारेमे बहुतसी करामाती बाते कहते है उसका बेटा भारतचन्द रियासतके लाइक नही था, इसवास्ते उसका पोता गोपालदास अपने दादाकी गद्दीपर बैठा, और वह अक्बर बादशाहकी नौकरीमे बहुत दिनो तक रहा

अक्बरने उसको रणजीत नक़ारह दिया, जो अबतक रियासतमे मौजूद है, और ऐसा भी बयान है, कि आगरेके किलेकी बुन्याद अक्बर बादशाहने इसीके हाथ से डलवाई माचलपुरके किलेमे महल व बाग और झिरीमे महल व बहादुरगढका किला और गोपाल मन्दिर यह सब उसीने बनवाये थे मीना लोगोको निकालकर पैदावार करौलीको तरक़्क़ी दी चन्दसेनका दूसरा बेटा जीतसिह था, जिसकी औलाद कोट-मूदा यादव कहलाती है गोपालदासके बडा बेटा द्वारिकादास गद्दीका मालिक हुआ, और दूसरे मुक्तरावकी औलाद सर मथुरा, झिरी और सबलगढके मुक्तावत यादव है तरसाम बहादुरकी औलाद बहादुरके यादव कहलाते है द्वारिकादासका बेटा मगदराय था, जिसके पचपीर यादव कहलाते है, इसका बेटा मुकुन्द था, जिसके कई बेटे, जगोमन, छत्रमन, देवमन, मदनमन, और महामनके नामसे मशहूर थे, जो मुकुन्द यादव कहलाते है मुकुन्दके बाद जगोमन गद्दीपर बैठा उसके वक्तमे सर मथुराके मुक्तावत और सबलगढ़के बहादुर यादवोने फसाद मचाया; लेकिन् वह तै किया गया. जगोमनका एक बेटा अनोमन हुआ, जिसकी औलादके

मजूरा या कोटरीके यादव है

जगोमनके पीछे उसकी गद्दीपर छत्रमन बैठा वह बादशाह औरंगजेबके साथ दक्षिणकी लड़ाइयोंमे शामिल था इसके एक बेटा राव भूपपाल था, जिसकी औलादमें इनायतीके राव हैं, और दूसरा शस्तपाल, जिसकी औलादमे मनोहरपुर वाले हैं छत्रमनके बाद दूसरा धर्मपाल गद्दीपर बैठा, इसने दिल्लीके बादशाहोंको खुश रखकर मुक्तावतों और सबलगढ वालोंकी बगावतको मिटाया इसका दूसरा बेटा राव कीर्तिपाल था, जिसकी औलादमे गरेडी और हाडौतीके जागीरदार हैं, और दूसरा भोजपाल हुआ, जिसके वंशमे रावत्राके जागीरदार हैं

धर्मपालकी गद्दीपर उसका बडा बेटा रत्नपाल बैठा उसके वक्तमे मुक्तावत और बहादुर जादव बागी होगये, और खिराज देनेसे इन्कार किया, इसलिये झिरी और खेडलाको खालिसह करलिया, लेकिन् थोडे दिनोंके बाद वापस दे दिया

रत्नपालकी गद्दीपर दूसरा कुवरपाल बैठा उसने गुंबदका महल बनवाया उन्हीं दिनोंमे चम्बल किनारेके राजपूतोंने फसाद किया, जिनको दिल्ली वालोंकी हिमायत थी, तब कुवरपालने अपने इलाकहके दो बादशाही थानोंके आदमियोंको अपना नौकर बना लिया, जिनकी औलाद अबतक करौलीमे मौजूद हैं फिर उनके बाद गोपालपाल (१) गद्दीपर बैठा उसके प्रधान खडेराय और नवलसिंह दो ब्राह्मण अच्छे बुद्धिमान थे शिवपुर और नरवरका प्रबन्ध भी उन्हींकी सलाहसे होता था जब गोपालपाल गद्दीपर बैठा, तो इन दोनों प्रधानोंने मरहटोंसे मिलावट करके रियासतमे कुछ खलल न आने दिया इस राजाने बडा होनेपर राज काज अच्छी तरह चलाया, और अपना मुल्क सबलगढसे सीकरवाड तक फैलाया, जो ग्वालियरसे पांच कोसपर है उसके इलाकहमे विजयपुर भी शामिल होगया था, उसने झिरी और सर मथुराके मुक्तावतोंको भी अच्छी तरह ताबेदार बना लिया इस राजाने शहर करौलीके गिर्द लाल पत्थरकी शहर पनाह, गोपाल मन्दिर, दीवान आम, त्रिपोलिया, और नक्कारखानह, नया कल्याण मन्दिर व मदनमोहनका मन्दिर बनवाया गोपालपालने सर मथुराका खिराज देकर महाराजा सूरजमल जाटको भी मिला लिया था विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] मे यह राजा दिल्ली गया, और बादशाहसे माही मरातिब पाया.

---

(१) पाउलेट साहिबने इसका नाम गोपालसिंह रक्खा है, लेकिन् हमारे पास उसी जमानेकी तहरीर मौजूद है, जब कि वह जयपुरके महाराजाके साथ उदयपुरमे आया था, उसमें उसका नाम गोपालपाल लिखा है

बाद इसके जब विक्रमी १८१३ माघ शुक्ल ९ [हि० ११७० ता० ८ जमादियुल अव्वल = ई० १७५७ ता० २९ जैन्युअरी] को अहमदशाह अब्दाली दिल्लीमे पहुचा, और उस शहरको लूटकर सूरजमल जाटकी सजाके लिये आगे बढा, उसने अपने सेनापति जहाखाको एक फौजके साथ मथुराकी तरफ भेजा उसने मथुराको बर्बाद करके मन्दिरो और मूर्तियोको मिट्टीमे मिलाया, राजा गोपालपाल, जो पक्का वैष्णव था, इस बातके सुननेसे उसे यहातक रज हुआ, कि आठ दिनके बाद वह मरगया यह राजा करौलीके घरानेमे बहुत अच्छा और बुद्धिमान हुआ यह राजपूतानहकी बडी बडी कार्रवाइयोमे उदयपुर, जयपुर और जोधपुरका शरीक रहा, जिसका जिक्र पहिले लिखा गया है गोपालपालके कब्जहमे जितने गाव थे, उनकी तफ्सील पाउलेट् साहिबके गजेटिअरसे नीचे लिखी जाती है -

पर्गनह	गाव	
करौली	४४	
कूरगाव और जिरोता	९१	
माचलपुर	५८	
बहरगढ	१७	
ऊतगढ, बागड	६२	
कोलागी	३३	
मादरेल	४८	
खरहा	८	
कोटडीके गांव	५२	
मागरोल	३१	चम्बलके दक्षिण.
सबलगढ	१७१	चम्बलके दक्षिण.
विजयपुर	८२	चम्बलके दक्षिण.
कुल गांव-	६९७	

इस राजाने दो वर्ष तक १३००० तेरह हज़ार रुपया सालियानह मरहटोको भी दिया था गोपालपालकी गद्दीपर उसका चचेरा भाई तुरसामपाल विक्रमी १८१४ [हि० ११७१ = ई० १७५७] में बैठा. इसके समयमे नीपरीके ठाकुर

सिकरवार बागी होगये, और किला अपने क़ब्जहमे करलिया उसको सजा देनेके लिये राजकी फौज एक पठानकी मातहतीमे भेजी गई कुवारी नदीपर बडी भारी लडाई हुई, लिखा है, कि नदीका पानी खूनसे लाल होगया था सिकरवार भाग निकले, और राजकी फौजने फत्ह पाई तुरसामपालका छोटा बेटा राव जुहारपाल था, जिसने जुहारगढ बनवाया, उसका पोता महाराजा प्रतापपाल था

तुरसामपालका बडा बेटा माणकपाल विक्रमी १८२९ कार्तिक कृष्ण १३ [हि० ११८६ ता० २७ रजब = ई० १७७२ ता० २४ ऑक्टोबर] को उसकी जगह गद्दीपर बैठा उसके वक्तमे बहुत फसाद रहा, और रोडजी सेधियाने चढाई की वह करौलीसे एक कोस पश्चिम रामपुरतक चलाआया, इसमे रोडजी मारा गया, जिसकी छत्री भडारनके बागमे बनी है इसके बाद नव्वाब हमदानीकी चढाई लिखी है, जो कि शहरके करीब किशन बाग (कृष्ण बाग) तक चला आया, और शहर-पनाह व महलोपर गोलन्दाजी की, रियासतकी फौजने साम्हना करके उसको हटा दिया फिर सेधिया और उनके फ्रांसीसी जेनरल बेपटीस्टने चढाई की, अमर-गढके ठाकुरकी दगाबाजीसे सबलगढ और चम्बलके दक्षिणी किनारेका मुल्क उसने लेलिया यह लडाई विक्रमी १८५२ [हि० १२१० = ई० १७९५] मे हुई थी इस राजाके बेटे अमोलकपालने उसके बापसे जुदा ही अपना ढग जमा लिया था, एक फौज भरती की, जिसको यूरोपिअन अफ्सरकी मातहतीमे कवाइद सिखलाई नारोली, ऊतगढ, झिरी, और सरमथुरा वगैरह बागी सर्दारोसे छीन लिये, लेकिन् झिरी और सर मथुरा सर्दारोसे खिराज लेकर वापस दे दिये, और बापके साथ विरोध होनेसे सबलगढ नही लेसका एक दफा उसने अपने बापसे करौली छीन लेनी चाही, लेकिन् अपनी बहिनके मना करनेसे छोड दिया, और ऊतगढके किलेमे चला गया, जहा उसका देहान्त होगया यह खबर सुननेसे महाराजा माणकपाल भी बीमार होकर मरगया

विक्रमी १८६१ [हि० १२१९ = ई० १८०४] मे उसका दूसरा बेटा हरबख्शपाल गद्दीपर बैठा विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] मे नव्वाब मुहम्मदशाहखासे माचीमे लडाई हुई, नव्वाबने शिकस्त पाई, जिसके बाद जॉन बेपटीस्टके साथ मरहटी फौजने क़रौलीपर चढाई की, लेकिन् वे इस तरह लौटाये गये, कि पच्चीस हजार रुपया सालानह दिये जायेगे, और कुछ अरसह बाद इस खिराजके एवज मांचलपुर चन्द गावो सहित देना पडा

विक्रमी १८७४ कार्तिक शुक्ल १ [हि० १२३२ ता० २९ जिल्हिज = ई० १८१७
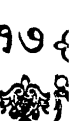
ता० ९ नोवेम्बर] को करौलीका गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साथ अहूदनामह हुआ, तब वह ज़िला भी करौलीको दिलाया गया महाराजासे गवर्मेण्टने खिराज नहीं लिया, लेकिन् अहूदनामहकी पांचवीं शर्तके मुताबिक वक्तपर फ़ौजसे मदद देनेका इक्रार है राजाने चाहा था, कि चम्बलके दक्षिणी इलाके भी हमको मिलजावें, और उनके एवज़ हम खिराज दिया करेंगे, लेकिन् यह दर्ख्वास्त ना मंजूर हुई

विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में यह महाराजा गवर्नर जेनरलकी मुलाकातके लिये धौलपुर गये भरतपुरकी दूसरी लड़ाईके वक्त महाराजाने गवर्मेण्टके बर्खिलाफ़ कार्रवाई की थी, इस सबबसे उनको ज़रूर सज़ा मिलती, लेकिन् बचगये

महाराजा प्रतापपाल, जो हाडौतीके राव अमीरपालका बेटा और जवाहिरपालका पोता था, विक्रमी १८९४ [हि० १२५३ = ई० १८३७] में हरबख़्शपालके मरने बाद गद्दीपर बिठाया गया, क्योंकि वह राजा बेऔलाद मरगया था प्रताप-पालके भी कोई औलाद नहीं थी, सिर्फ़ एक लड़की थी, जो उसके मरने बाद कोटाके महाराव शत्रुशाल दूसरेको ब्याही गई प्रतापपालके समयमें हरबख़्शपालकी राणीके साथ बखेड़ा उठा, महाराजा करौली छोडकर मांदरेलमें चला गया, और एक लड़ाई हुई, जिसमें हरबख़्शपालके एकट्ठे किये हुए धन और आदमियोंका नुक्सान हुआ बाग़ी सर्दारोंने राजाके प्रधान सेवाराम और बिरजूको मार डाला

विक्रमी १८९५ [हि० १२५४ = ई० १८३८] में कर्नेल सदलैंण्ड, क़रौली आये, लेकिन् यह फ़साद नहीं मिटा आख़िरकार विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में राणीसे सुलह होकर महाराजा करौलीमें आये विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में ट्रेवलिअन साहिबने करौलीमें पहुंचकर महाराजाको गवर्मेण्टकी तरफ़से गद्दी नशीनीका खिल्अ़त दिया विक्रमी १८९८ [हि० १२५७ = ई० १८४१] में ठाकुरोंका फ़साद मिटानेके लिये एक अंग्रेज़ अफ़्सर आया, लेकिन् कुछ फ़ाइदह नहीं हुआ विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महाराजा कर्नेल सदलैंण्डसे मुलाकात करनेको बयाना गये, और विक्रमी १९०१ [हि० १२६० = ई० १८४४] में कप्तान मौरिसन् करौलीमें आया, लेकिन् खानगी फ़साद मिटनेकी कोई सूरत नहीं निकली विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में मेजर थॉर्स-बी ने आकर कुछ दिनोंतक फ़सादको रोका विक्रमी १९०६ [हि० १२६५ = ई० १८४९] में महाराजा प्रतापपालका देहान्त होगया, तब हाडौतीसे

लाकर नृसिंहपालको गद्दीपर बिठाया यह राजा लडका था, इसलिये विक्रमी १९०६ वैशाख शुक्ल ४ [हि० १२६५ ता० २ जमादियुस्सानी = ई० १८४९ ता० २६ एप्रिल] को लेफ्टिनेण्ट मक मेसन् प्रबन्धके लिये क़रौलीमे आया तह्क़ीकात करनेके बाद थोडे सिपाही कोटा कण्टिन्जेण्टके दो तोपोंके साथ बुलाये जाने और पोलिटिकल एजेण्टकी मददपर डिप्युटी मैजिस्ट्रेट सैफुल्लाहखाके रहनेसे प्रबन्ध अच्छी तरह होगया, जिससे अबतक लोग उक्त साहिबकी तारीफ़ करते है विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] मे नृसिंहपाल मरगया उसके कोई औलाद नहीं रही तब रियासतको जब्त करनेका विचार गवर्नर जेनरलकी कौन्सिलमे हुआ, लेकिन् आखिरको यह करार पाया, कि रियासतको बर्करार रखना चाहिये, और इस बारेमे जो खत किताबत हुई, उसमे विलायतके हाकिमोंने यह काइदह निकाला, कि पुरानी देशी रियासतोंमे वारिस न होनेकी हालतमे गोद लेना मन्जूर किया जावे जो कि इस रियासतको बर्करार रखना था, इसलिये एक वारिस नियत करना जुरूर हुआ भरतपाल और मदनपाल दो गद्दीके दावेदार थे, लेकिन् मदनपाल हाडौतीका राव होनेके सबब गद्दीका मालिक बनगया, और सर हेनूरी लॉरेन्सने उसको जयपुरसे अपने साथ लाकर विक्रमी १९१० फाल्गुन् शुक्ल १५ [हि० १२७० ता० १४ जमादियुस्सानी = ई० १८५४ ता० १४ मार्च] को गद्दीपर बिठाया

विक्रमी १९१२ [हि० १२७१ = ई० १८५५] मे एजेन्सी उठाली गई विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] तक कोई एजेण्ट रियासतमे नही था, इसलिये एजेण्ट गवर्नर जेनरल राजपूतानहसे खत किताबत होती रही विक्रमी १९१६ [हि० १२७५ = ई० १८५९] मे कर्ज बहुत बढ जानेके कारण महाराजाकी मददके लिये एक अफ्सर भेजा गया था, लेकिन् वह सिर्फ महाराजाकी सलाहके लिये था, जिसको विक्रमी १९१८ [हि० १२७८ = ई० १८६१] मे पीछा बुला लिया, लेकिन् विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] के अकालमे कर्ज होगया था, और महाराजाने दो लाख रुपया सर्कार अंग्रेजीसे कर्ज लेकर अपनी प्रजाकी मदद की. विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] के गद्रमे सर्कारकी बडी खैरख्वाही की, और कोटाके बागियोकी सजाके लिये फौज भेजी इन कामोंके बदलेमे जी० सी० एस० आइ० का खिताब मिला, और दो फाइर बढाकर १७ तोपकी सलामी मुक़र्रर होगई, एक लाख सत्तर हजार कर्जका रुपया सर्कारने छोड़ दिया. और एक खिल्अ़त भी मिला.

विक्रमी १९२६ श्रावण शुक्ल ८ [हि० १२८६ ता० ७ जमादियुलअव्वल = ई० १८६९ ता० १६ ऑगस्ट] को महाराजा मदनपालका इन्तिकाल होगया

वकाये राजपूतानहके पृष्ठ ६४२ - विक्रमी १९२७-२८ [हि० १२८७-८८ = ई० १८७० - ७१] की रिपोर्टमे लिखा है, कि "इस रईसको अजब हिम्मत थी, अपनी रियासतपर बिल्कुल कादिर था, कुल मुआमलातमे अपनी तज्वीजसे फैसला देता था, निहायत उम्दगी और सफाईसे काम करता था, आम इजाजत थी, कि सुबह और शामकी हवाखोरीमे, जो कोई चाहे, अपनी अर्जी पेश करे, या जबानी अर्ज करे उसके हमनशीन व मुसाहिबोको फैसलह मुकद्दमातमे दस्तन्दाजी करनेकी मुत्लक मजाल न थी, जुर्मोंके बन्द करनेमे पूरी कोशिश थी, कुसूरवार कैसी ही बचावकी जगहपर छिपता, वहासे पकडा चला आता, और सजा पाता था. सती और लडकियोका मारना और धरनाके जुर्मको एक साथ बन्द करदिया; अल्बत्तह उदारताके कारण खर्च जियादह था, इस सबबसे रियासत कर्जदार रहती थी, और महसूल सख्त थे, अगर्चि गैर मुस्तहक़ लोगोके वास्ते हदसे जियादह फय्याज था, मगर बर्खिलाफ़ तरीके बाज रईसोके, कि नालायकोके वास्ते फय्याज और हक़दारोके वास्ते कन्जूस है, उसने कालके वक्तमे दो लाख रुपया सर्कार अंग्रेजीसे कर्ज लेकर गरीब लोगोको बाटा महाराजा मदनपालके मरनेपर उनका भतीजा लक्ष्मणपाल, राव हाडौती, वारिस रियासत समझा गया था, मगर बस्वा वाली राणीके गर्भ होनेसे उसकी मस्नद नशीनीकी नौबत न पहुची, कि विक्रमी १९२६ भाद्रपद शुक्ल ६ [हि० १२८६ ता० ४ जमादियुस्सानी = ई० १८६९ ता० १२ सेप्टेम्बर] को लक्ष्मणपाल मरगया इसपर जयसिहपाल, जो कि हाडौतीका रईस हुआ था, वारिस करौली समझा गया

विक्रमी १९२७ माघ [हि० १२८७ जिल्काद = ई० १८७१ जैन्युअरी] मे साहिब एजेण्ट गवर्नर जेनरलने करौलीमे जाकर महाराजा जयसिंहपालको, जो कि उस वक्त बत्तीस सालका बहुत होश्यार था, खिल्अत मस्नद नशीनी व इख्तियार रियासत दिया ठाकुर वृषभानसिह तवर राजपूत, महाराजा मदनपालके स्वसुरको, जो चन्द वर्षोंसे रियासतका बन्दोबस्त करता था, महाराजा मदनपालके मरने पीछे और जयसिहपालकी गद्दी नशीनी तक रियासतमे पूरा इख्तियार रहा, और उसने बहुत ईमान्दारीसे काम किया इसी सबबसे उसकी बहुत कद्र और इज्जत थी जब महकमह पचायत मुकर्रर हुआ, तो वह भी उसमे शामिल हुआ, लेकिन् बुढ़ापे और नाताक़तीके सबब मिहनत नहीं करसक्ता था. इस पचायतके महकमहमे उसके सिवा नीचे लिखेहुए और सर्दार शामिल थे -

१- मलूकपाल, सिपहसालार, रिसालेका अफ्सर और महाराजाका रिश्तहदार
२- छत्रपाल, अफ्सर रिसालह और महाराजाका रिश्तहदार
३- श्यामलाल, मौरूसी अहलकार, जो पहिले हिन्दी दफ़्तरका अफ्सर भी था
४- दीवान बलदेवसिंह, जो पहिले मालके सरिश्तेका अफ्सर था इसका एक बेटा तहसीलदार था, और दूसरा महाराजाकी खिद्मतमें हाज़िर रहता था एजेन्सी आबू और राजपूतानहकी विकालतोंपर करौलीके एक पुराने खानदानके लोग मुकर्रर हैं, कि उनमेंसे एक फज्लरसूल एजेन्सी पश्चिमी राजपूतानहमें रहता है उस ज़मानहमें पचायतके सिवा मिर्ज़ा अक्बरअलीबेग एक और अहलकार महाराजा वैकुण्ठ वासीके अह्दसे अदालतका हाकिम और सलाहकार था, मगर पीछे कामसे अलहदह होगया करौलीके लोग इसको बहुत अच्छा समझते थे राज्यके इलाकहमें चारों अहलकार करौलीके रहनेवाले थे इलाकह गैरके लोग कम नौकर थे, और तहसीलदारोंका इख्तियार बे हद था

महाराजा मदनपालके पीछे इन्तिज़ाममें नुक्सान आगया, क्योंकि महकमह पचायतके सिवा कोई अदालत न थी महाराजा जयसिंहपालने मदनपालके मुवाफ़िक यही तज्वीज़ की, कि महकमह अदालत जुदा करके उसपर एक आदमी मुकर्रर कियाजावे, और पचायतमें सिर्फ़ अपीलकी समाअत हो सरिश्तह तालीममें सिर्फ़ एक मद्रसह राजधानीमें था, जिसकी कुछ भी दुरुस्तीकी उम्मेद न थी, अल्बत्तह वलियुल्लाह डॉक्टरकी कारगुज़ारी, डॉक्टर हार्वी साहिबने तारीफ़के साथ लिखी है महाराजा मदनपालके इन्तिकालके समय रियासतपर दो लाख साठ हज़ार रुपया कर्ज़ था, जिसमें दो लाख सर्कार अंग्रेज़ीका और साठ हज़ार साहूकारोंका था, कप्तान वाल्टर साहिब, पोलिटिकल एजेण्टने राजके खर्चमें ऐसी कमी की, कि पचास हज़ारसे ज़ियादह रुपया सालानह कर्ज़में दिया जावे, और गैर मामूली खर्चके लिये कुछ बचत भी हो इस तद्बीरसे विक्रमी १९२७ - २८ [हि० १२८७- ८८ = ई० १८७० और ७१] तक गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका सत्तर हज़ार रुपया अदा होगया, और साहूकारोंका कर्ज़ह भी कुछ कम होगया, परन्तु महाराजा जयसिंहपालकी गद्दी नशीनीसे खर्च ज़ियादह होगया, ताहम रियासतकी आमद भी चार लाखसे पांच लाख होगई, सिर्फ़ मालका बन्दोबस्त पुरूतह न हुआ, पुराने रवाजके साथ बढ़ावेपर ठेका दियाजाता था

विक्रमी १९२८ [हि० १२८८ = ई० १८७१] की रिपोर्टमें मेजर वाल्टर साहिबने लिखा है, कि " महाराजा जयसिंहपाल बहुत होश्यार है, मैं विलायतसे पीछा

आया, तब महाराजाने भरतपुर आकर मुझसे मुलाकात की, फिर मैंने भी करौलीमे जाकर मुल्कका दौरा किया, और वहांके हालात देखकर बहुत खुश हुआ मुझको यकीन है, कि महाराजा अपनी रियासत और रिआयाकी तरक्कीका बहुत फिक्र रखते है, और रियासतका बहुतसा काम खुद करते है उनके हुक्म बहुत ठीक और इत्मीनानके होते है उनको शहर करौलीकी सफाई और हिफ़जानि सिहतकी बहुत फ़िक्र है, पानीका निकास और फ़र्शबन्दी शहरकी तज्वीज की है इसमे दस हज़ार रुपया खर्च होगा, थोडा शहरके बडे आदमियोंसे वुसूल होकर बाकी राजसे दियाजायेगा गद्दी बैठनेसे थोडे समय पीछे हिफ्ज़ सिहत और प्रजाके आरामकी तद्बीर करना महाराजाकी निहायत खुश तद्बीरी ज़ाहिर करता है "

"करौलीसे कुशलगढ और हिन्डौनकी सडकें, जिन दोनोंपर आमद रफ्त रहती है, तय्यार करते हैं, कूरगांवमें मुसाफ़िरोंके आरामके वास्ते सराय तय्यार कराई है, और तरक्की की तद्बीरोंपर हर तरह मुस्तइद हैं उनके मिजाजमें फ़ुज़ूल खर्ची नहीं है यकीन है, कि उनके बन्दोबस्तसे रियासतकी आमदनी और खर्चका अच्छा बन्दोबस्त होजायेगा ठाकुर वृषभानसिंह, जिसने महाराजा मदनपालके मरनेसे महाराजा जयसिंहपालकी मस्नद नशीनी तक बहुत अच्छी तरहसे काम किया था, अब भी बराय नाम दीवान है, मगर बहुत बुड्ढा होगया है, काम नहीं कर सक्ता, सब उसका अदब करते हैं, और महाराजा साहिब उसका बहुत एति-बार करते हैं जेलखानह साफ़ है, और कैदी तन्दुरुस्त रहते हैं अस्पतालमें इलाज अच्छी तरह होता है, मद्रसेमें बाजे लडके अच्छे पढते हैं, उनमेंसे एकने गवर्मेंएट कॉलिज आगरामें भरती होनेकी दर्ख्वास्त की, जो कि जुलाईमें दाखिल होगा हिन्दुस्तानके दूर दूर मकामातपर भी हर साल इल्मकी तरक्की होती जाती है, मगर जबतक इन मद्रसोंकी निगरानीके लिये कोई अफ्सर मुकर्रर न किया जावे, उनमें तरक्की नहीं होसक्ती अक्सर रईस और उनके अहलकार बे इल्म होते हैं, जब तक कि उनको विद्याका फ़ाइदह अच्छी तरह न मालूम हो, उम्मेद नहीं होसक्ती, कि वे सिर्फ़ नामकी मददद्दिहीसे कुछ जियादह करसकें "

"विक्रमी १९२९-३० [हि० १२८९-९० = ई० १८७२-७३] मे महाराजाने पचायतका महकमह तोडकर इज्लास खास मुकर्रर किया, और ठाकुर वृषभानसिंह, जो अदालतका हाकिम था, और तामील व मुकद्दमात शुरूका फ़ैसलह भी करता था, उसकी अपील महकमह इज्लास खासमें होती थी; बे क़ाइदह अदालत और अहलकारोंकी कमीसे बहुतसी मिस्लें बाकी रहती थीं, और कामके जारी करनेमें भी

सुस्ती होती थी कुशलगढकी रिआयाने रियासत जयपुरसे नाराज होकर महाराजा करौलीसे दर्ख्वास्त की, कि अपने नामका एक कस्बह आबाद कीजिये, हम वहां आ-रहेंगे, इसपर महाराजाने अपने नामसे जयनगर आबाद किया, और बडौदेकी सडकको दुरुस्त करके दुतरफ़ह दरख्त लगादिये इन महाराजाने कदीम बागात और मकानातकी अच्छी दुरुस्ती करवाई यह महाराजा विक्रमी १९३२ मार्गशीर्ष कृष्ण ५ [हि० १२९२ ता० १९ शव्वाल = ई० १८७५ ता० १७ नोवेम्बर] को दस्तोंकी बीमारीसे, जो कुछ अ़रसह तक रही, इन्तिकाल करगये इनके कोई औलाद न थी, लेकिन् एक मुलाक़ातमें उन्होंने पोलिटिकल एजेएट कर्नेल राइटको कहदिया था, कि मेरे बाद हाडौतीका राव अर्जुनपाल गद्दीपर बिठाया जावे उसी हिदायतके मुवाफ़िक़ अर्जुनपालको गद्दीपर बिठायागया

महाराजा अर्जुनपाल

यह महाराजा विक्रमी १९३२ माघ शुक्ल ५ [हि० १२९३ ता० ४ मुहर्रम = ई० १८७६ ता० ३१ जैन्युअरी] को गुज़रेहुए महाराजाकी इजाज़त और पोलिटिकल एजेएटकी सम्मतिसे गद्दीपर बिठाये गये इस वक्त एक करीबी रिश्तहदार सज्जनपालने, जो पहिले करौलीकी गद्दीका दावा रखता था, लाचार होकर हाडौतीका राव बनना चाहा, लेकिन् उस ठिकानेके हक़दार भवरपालको राव बनादिया गया था, इस लिये उसका यह मनोरथ भी पूरा न हुआ रियासतके कई लोग सज्जनपालके मददगार होगये थे, लेकिन् वह कुछ चारा न जानकर महाराजा अर्जुनपालके कदमों पर आ गिरा, तब उसके लिये महाराजाने कुछ जागीर मुकर्रर करदी हाडौतीके राव भवरपालको तालीमके लिये मेओ कॉलिज अजमेरमें भेजनेकी हिदायत हुई, लेकिन् औरतोंकी जाहिलानह मुहब्बतने इस उम्दह लियाकतसे उसको बाज रक्खा, और महाराजा अर्जुनपालने भी लाचारीका जवाब दिया, कि मेरा इसमें इख्तियार नहीं है

इन महाराजाके शुरू अ़हदसे ही बद इन्तिज़ामीने इस रियासतमें कदम रक्खा, क्योंकि उनका मुसाहिब ठाकुर वृषभानसिंह बिल्कुल ज़ईफ़ और फ़ालिजकी बीमारीसे बेकाम होगया था, अल्बत्तह उसका नाइब रामनारायण होश्यार और पुख़्तह मिजाज आदमी था, मगर महाराजा मदनपाल व जयसिंहपालके बराबर

लियाकत नहीं रखता था, और जागीरदारोंकी सर्कशीको मिटानेकी ताकत रईसमे न हो, तो अकेला नाइब किसतरह काम चलासक्ता है

विक्रमी १९३९ [हि० १२९९ = ई० १८८२] मे सर्दारोंकी सर्कशी और मुल्की बद इन्तिजामीके सबब सर्कार अंग्रेजीने मुदाखलतके साथ महाराजाको बे दख़्ल करने बाद एक पोलिटिकल अफ्सर इन्तिज़ामपर रखदिया सर्कारी अफ्सरके मातह्त कौन्सिल काम अजाम देनेको काइम रही, और मालगुजारीकी निगरानीपर मुन्शी अमानतहुसैन, जो जिला अजमेरमे तह्सीलदार रहचुका था, मुकर्रर कियागया

विक्रमी १९४३ [हि० १३०३ = ई० १८८६] मे महाराजा अर्जुनपाल गुजर गये, और उनके गोद माने हुए कुवर भवरपालने जवान उम्रमे राज्य पाया

महाराजा भवरपाल

यह विक्रमी १९४३ भाद्रपद [हि० १३०३ जिल्हिज = ई० १८८६ सेप्टेम्बर] मे करौलीकी गद्दीपर बैठे कौन्सिल बदस्तूर सर्कारी अफ्सरकी निगरानीमे राज्यके कारोबार चलाती रही विक्रमी १९४३ फाल्गुन [हि० १३०४ जमादियुस्सानी = ई० १८८७ फेब्रुअरी] मे जनाब मलिकह मुअज्जमह इंग्लिस्तान और क़ैसरह हिन्दुस्तानकी ज्युबिली, याने पचासवे साल जुलूसकी रस्मपर उम्दह कारगुजारीके सबब मुन्शी रशीदुद्दीनखा मेम्बर कौन्सिलको "खान बहादुर" ख़िताब सर्कारसे मिला.

विक्रमी १९४६ ज्येष्ठ शुक्ल ९ [हि० १३०६ ता० ७ शव्वाल = ई० १८८९ ता० ७ जून] को अंग्रेजी सर्कारकी तरफसे महाराजा भवरपालको मुल्की इख़्तियारात हासिल हुए, लेकिन् कौन्सिल उनके मातह्त बदस्तूर बहाल चली आती है

राज्य करौलीके पाच लाख सालानह खालिसहकी आमदनीके सिवा, डेढ लाख आमदके गांव जागीर, खैरात और नौकरी वगैरहमे बटे हुए है; और तमाम छोटे बडे जागीरदारोंकी तादाद चालीस बयान कीजाती है, जिनमेसे यादवोंकी कोटडियोंका नक्शह यहा दर्ज कियाजाता है.

नम्बर	जागीर	गाव	छटूंद	शाख	कैफियत
६	"	कावदा उम्मेदपुरा	१७९-०-०	"	" "
७	इनायती	इनायती	१५३-१२-०	"	महाराजा छत्रपालके वश में हैं, और अमरगढ व हाडौतीसे नीचे बैठते है
८	इनायतीके मातहृत जागीर	गुलाबपुरा	५१-४-०	"	इनायतीके जागीरदार
९	अमरगढ	अमरगढ नरोली नीसाणो कारो गुढो अरूढ बगीद किशोरपुरा सुल्तानपुर जरोद भागीरथपुरा खुशालपुरा चतरभुजपुरा डूंगरी तलाव जतनपुरा कंवरपुर बाजनो लछमनपुरा	१०००-०-०	जगमान	महाराजा जगमानके वश में हैं.
१०	अमरगढके मातहृत जागीर	मजोरा	२०३-०-०	"	दर्बारके जागीरदार.

नम्बर	जागीर	गाव	छटूंद	शाख	कैफ़ियत
११	बर्तूण	बर्तूण हरसिह पुरा बुद पुरा खेमपुरा कमालपुरा	१०५९–८–०	मुकुन्द	महाराजा द्वारिकादासके पुत्र मुकुन्दके वंशमें है, और रावत्रोंके नीचे बैठते है
१२	मातह्त जागीर (नारोली)	नारोली चरीकी पार्वतीपुरा बद्रीपुरा एदलपुरा	२५७–०–०	"	दर्बारके जागीरदार
१३	" लोळरी	लोळरी	६९–०–०	"	" "
१४	" सिमार	सिमार	१७९–०–०	"	" "
१५	" "	खो	२३१–८–०	"	" "
१६	" "	सेमर्दो	२०५–०–०	"	" "
१७	" "	फ़तहपुर	२०९–०–०	"	" "
१८	" "	केदारपुरा	७०–०–०	"	" "
१९	केळा "	केळा	४१–८–०	ठाकुर	महाराजा कुवरपालकी पासबानके पुत्रकी औलादमें है.
२०	बाजनो	बाजनो	४४–०–०	सलीदी	महाराजा द्वारिकादास के पुत्रकी औलादमें है.
२१	महोली	महोली	२९४४–०–०	खित्रो	मालूम नहीं, कि यह किस खानदानमें हैं.
२२	हरनगर	हरनगर भीकमपुरा	२८३–६–०	हरीदास	द्वारिकादासकी औलादमें

नम्बर.	जागीर	गाव	छटूंद	शाख	कैफियत
२३	फतहपुर	फतहपुर	६२९-०-६	"	" "
२४	रामपुरा	रामपुरा	४८८-७-०	"	" "
२५	मेंगरी	मेंगरी	३७२-२-९	"	" "
२६	बख्तपुरा	बख्तपुरा	७४४-५-३	"	" "
२७	चैनपुर	चैनपुर	६१८-८-०	"	" "
२८	माची	माची दीपपुरा	२३९-०-०	"	" "
२९	टटवाई	टटवाई	२२८-०-०	"	" "
३०	बिनेग	बिनेग		"	हरबख्शपालके वक्तमें खूब-नगर तालावकी जमीन लेली, जिसके एवज़में छटूंद छोड दी गई
३१	कोटो	कोटो	६०९-०-०	"	" "
३२	मचानी	मचानी	२९८-५-०	"	" "
३३	केशपुरा	केशपुरा	४०६-८-०	"	" "
३४	कानपुरा	कानपुरा	५१४-०-०	"	" "
३५	मोराखेडा	मोराखेडा खेडो काशीरामपुरा (जब्त किया गया) रेहो मदीली			
३६	बेनसाहट	बेनसाहट	१३५-०-०	"	
३७	बीडवास	बीड़वास	६९-४-०	"	

करौली राज्यमे ठाकुरोके खानदानकी सैतीस कोटडियोमे मुख्य हाडौती, अमरगढ, इनायती, रावत्रा, और बर्तूण है इन ठिकानेदारोको महाराजा खुद आकर तलवार बधाते व घोडा सिरोपाव देते है

हाडौतीके ठाकुरकी खास जागीर गरेरीके नज्दीक एक गावमे थी, यहांका पहिला राव कीर्तिपाल, राजा धर्मपालका दूसरा बेटा था, यह धर्मपाल करौलीकी गद्दीपर विक्रमी १७०१ [हि० १०५४ = ई० १६४४] मे बैठा विक्रमी १७५४ [हि० ११०९ = ई० १६९७] मे हाडौती और फत्हपुरके ठाकुरोके आपसमे सर्हदी तनाजा खडा हुआ, और उन्हींके कुटुम्ब वालोको पच काइम किया हाडौती वालोकी तरफसे गोली चली, जिससे गरेरीका कीर्तिपाल, जो पचायतमे शामिल था, मरगया इससे महाराजाने कीर्तिपालके बेटोको हाडौती पर काबिज होनेका हुक्म दिया, हाडौतीके ठाकुर दूसरे ठाकुरोके मुवाफिक खैरख्वाह मश्हूर नहीं है महाराजा हरबख्शपालने एकट नलाकी बहादुरानह लडाईके बाद इस जागीरको लेलिया, और छ वर्ष बाद कुछ जुर्मानह लेकर वापस दिया यहाके ठाकुर राव कहलाते है अमरगढ ठाकुरका दरजह बराबर है, इसलिये दर्बारमे दोनो एक साथ हाजिर नहीं होते अमरगढका पहिला ठाकुर राजा जगमानका बेटा था, यह राजा जगमान विक्रमी १६६२ [हि० १०१४ = ई० १६०५] मे करौलीकी गद्दीपर बैठा था अमरमानके बारेमे ऐसा बयान है, कि वह दिल्लीके बादशाहके पास गया, और वहासे मन्सब पाया महाराजा माणकपालके वक्तमे ठाकुरको कैद करके अमरगढकी जागीर छीनली थी, मगर कुछ दिन बाद वापस देदी महाराजा हरबख्शपालने भी विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] मे यह जागीर फिर लेली, और वापस दी महाराजा प्रतापपालके जमानहमे यहाका ठाकुर लक्ष्मणचन्द बदमआशोका मददगार बना, और सिक्कहगरोका मददगार मालूम होनेपर जयपुर एजेन्सीके वकीलोकी कोर्टने तज्वीज़ किया, कि पन्द्रह हजार रुपया जुर्मानह ठाकुरसे लिया जाकर वह रुपया फायदह आमके काममे खर्च किया जाये

करौलीका अह्दनामह

एचिसन् साहिबकी किताब, जिल्द ३, हिस्सह १, अह्दनामह नम्बर ७०

अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी और महाराजा यदुकुल

चन्द्रभाल हरबख़्शपालदेव राजा करौलीके दर्मियान, मारिफ़त मिस्टर चार्ल्स थियो-फ़िलिस मेट्कॉफ़के, जिसको ऑनरेबूल कम्पनीकी तरफ़से हिज एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबूल मार्किस ऑफ़ हेस्टिंग्ज, के० जी० गवर्नर जेनरलने इख़्तियारात अता किये थे, और मारिफ़त मीर अताकुलीके, जिसको उक्त राजाने अपनी तरफ़से पूरे इख़्ति-यारात दिये थे, तै पाया

शर्त पहिली- दोस्ती, एकता और ख़ैरख़्वाही, गवर्मेएट अंग्रेज़ीके, जो एक फ़रीक़ है, और राजा क़रौली व उनकी औलादके, जो दूसरा फ़रीक़ है, हमेशहके वास्ते जारी रहेगी

शर्त दूसरी- अंग्रेज़ी सर्कार राजा करौलीकी रियासतको अपनी हिफ़ाज़तमे लेती है

शर्त तीसरी- राजा करौली अंग्रेज़ी सर्कारकी बुज़ुर्गीका इक़ार करके हमेशहकी इताअतका वादह करते है, वह किसीपर जियादती न करेंगे, और किसी ग़ैरके साथ सुलह या मुवाफ़कत अंग्रेज़ी सर्कारकी मर्ज़ीके बगैर न करेंगे, अगर इत्तिफ़ाकसे कोई तक़ार किसी रईसके साथ होजावे, तो वह फ़ैसलहके लिये अंग्रेज़ी सर्कारकी सर पञ्चीमे सुपुर्द कीजावेगी राजा अपने मुल्कके पूरे हाकिम है, अंग्रेज़ी हुकूमत उनके मुल्कमे दाख़िल न होगी

शर्त चौथी- अंग्रेज़ी सर्कार अपनी ख़ुशीसे राजा और उसकी औलादको वह ख़िराज मुआफ़ फ़र्माती है, जो वह साबिक़मे पेश्वाको देते थे, और जो पेश्वाने अंग्रेज़ी सर्कारके नाम तब्दील करदिया था

शर्त पाचवीं- राजा क़रौली, जब अंग्रेज़ी सर्कार तलब करे, अपनी फ़ौज अपनी हैसियतके मुवाफ़िक़ देंगे

शर्त छठी- यह अह्दनामह, जिसमे छ शर्तें दर्ज है, दिह्ली मकामपर तय्यार होकर उसपर मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलिस मेट्कॉफ़ और मीर अताकुलीके मुहर और दस्तख़त हुए, और इसकी तस्दीक कीहुई नक़्ल दस्तख़ती हिज एक्सिलेन्सी दि मोस्ट नोबूल गवर्नर जेनरल और महाराजा करौलीकी आजकी तारीख़ ९ नोवेम्बर सन् १८१७ ई० से दिह्ली मकाममे एक महीनेके अन्दर दीजावेगी- फ़क़त

दस्तख़त- सी० टी० मेट्कॉफ़.　　　[मुहर]

[मुहर राजा]　　　[मुहर मीर अताकुली]　　　दस्तख़त- हेस्टिंग्ज़.

[मुहर कम्पनी]

इस अह्दनामहको हिज एक्सिलेन्सी गवर्नर जेनरलने कैम्प सलियामे तारीख १५ नोवेम्बर सन् १८१७ ई० को तस्दीक किया

दस्तखत- जे ऐडम,
सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल

अह्दनामह नम्बर ७१

अह्दनामह बाबत लेन देन मुजिमोके दर्मियान ब्रिटिश गवर्मेएट और श्री मान् मदनपाल महाराजा करौली, जी० सी० एस० आइ० व उसके वारिसो और जानशीनोके, एक तरफसे लेफ्टिनेएट कर्नेल रिचर्ड हार्ट कीटिंग, सी० एस० आइ० और वी० सी० एजेएट गवर्नर जेनरल, राजपूतानह, जिसको श्री मान् राइट ऑनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, बैरोनेट्, जी० सी० बी० और जी० सी० एस० आइ० वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दसे पूरा इख्तियार मिला था, और दूसरी तरफसे फज्लरसूलखाने, जिसको उक्त महाराजा मदनपालने पूरे इख्तियार दिये थे, तै किया

शर्त पहिली- कोई आदमी अंग्रेजी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेजी इलाकह्मे सगीन जुर्म करके करौलीकी राज्य सीमामे आश्रय लेना चाहे, तो करौलीकी सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी; और दस्तूरके मुवाफिक उसके मागेजाने पर सर्कार अंग्रेजीको सुपुर्द करदेगी

शर्त दूसरी- कोई आदमी, करौलीके राज्यका बाशिन्दह वहांकी राज्य सीमामे कोई सगीन जुर्म करके अंग्रेजी राज्यमे जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी वह मुजिम गिरिफ्तार करके करौलीके राज्यको काइदहके मुवाफिक तलब होनेपर सुपुर्द कर देवेगी.

शर्त तीसरी- कोई आदमी, जो करौलीके राज्यकी रअय्यत न हो, और करौलीकी राज्य सीमामे कोई सगीन जुर्म करके फिर अंग्रेजी सीमामे आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेजी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुकद्दमहकी तह्कीकात सर्कार अंग्रेजीकी बतलाई हुई अदालतमे कीजायेगी, अक्सर काइदह यह है, कि ऐसे मुकद्दमोंका फैसलह उस पोलिटिकल अफ्सरके इज्लासमे होगा, कि जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्तपर करौलीकी पोलिटिकल निगरानी रहे

शर्त चौथी- किसी हालतमे कोई सर्कार किसी आदमीको, जो सगीन मुजिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुवाफिक खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ्सर उस आदमीको न मागे, जिसके इलाकह्मे कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाकहके कानूनके

मुवाफिक सहीह समझी जावे, जिसमे कि मुज्रिम उस वक्त हो, उसकी गिरिफ्तारी दुरुस्त ठहरेगी, और वह मुज्रिम करार दिया जायेगा, गोया कि जुर्म वहीपर हुआ है

शर्त पाचवी- नीचे लिखे हुए जुर्म संगीन जुर्म समझे जावेगे -

१- खून २- खून करनेकी कोशिश ३- वह्शियानह कत्ल ४- ठगी ५- जहर देना ६- जिना बिल्जब्र (जबर्दस्ती व्यभिचार) ७- सख्त जख्मी करना ८- लडका बाला चुरा लेजाना ९- औरतोका बेचना १०- डकैती ११- लूट १२- सेंध (नकब) लगाना १३- चौपाया चुराना १४- मकान जलादेना १५- जालसाजी करना १६- झूठा सिक्कह चलाना १७- खयानत मुज्रिमानह १८- माल अस्बाब चुरालेना १९- ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमे मदद देना या वर्गलान्ना

शर्त छठी- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक मुज्रिमोको गिरिफ्तार करने, रोक रखने, या सुपुर्द करनेमे, जो खर्च लगे, वह दर्ख्वास्त करनेवाली सर्कारको देना पडेगा

शर्त सातवी- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्त तक बर्करार रहेगा, जबतक कि अह्दनामह करनेवाली दोनो सर्कारोमेसे कोई एक दूसरेको उसके रद्द करनेकी ख्वाहिश जाहिर न करे

शर्त आठवीं- इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो दोनो सर्कारोके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवा ऐसे अह्दनामहके जोकि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्खिलाफ हो

मकाम अजमेर, तारीख २७ नोवेम्बर सन् १८६८ ई० को तै पाया

(दस्तखत)- फज्लरसूलखा,

वकील, महाराजा करौली, जी० सी० एस० आइ०,

फार्सी हर्फोंमे

(दस्तखत)- आर० एच० कीटिंग,

एजेण्ट गवर्नर जेनरल

(दस्तखत)- जॉन लॉरेन्स,

वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्द

इस अह्दनामहकी तस्दीक श्री मान् वाइसरॉय और गवर्नर जेनरल हिन्दने मकाम फोर्ट विलिअमपर ता० २० डिसेम्बर सन् १८६८ ई० को की

(दस्तखत)- डब्ल्यू० एस० सेटन्कार,

सेक्रेटरी, गवर्मेण्ट हिन्द, फॉरिन डिपार्टमेण्ट

शेष संग्रह नम्बर १

हरवेनजीके खुरेपर शिवालयमेंकी प्रशस्ति

श्रीमहागणपतयेनमः ॥ श्रीमहादेवायनमः श्रीएकलिंगेश्वरोजयति
अथ जोशी हरिवंशकारित श्रीसदाशिवालयप्रशस्तिर्लिख्यते

तत्रादौ मंगलाचरणं नृपवंशवर्णनं च ॥ श्री कंठः कंठतटी विलुठन्नागाधिपमानात् हारावलिपरिवीतो गिरिजानुगतः स वः पायात् ॥ १ ॥ यत्राभवन् भूपतयो विशिष्ठा मनुप्रणीतोत्तमधर्मनिष्ठा ॥ पराक्रमाक्रांतविपक्षशिष्टा सोयं जयत्युष्णकरस्यवंशः ॥ २ ॥ पुरंदरपुरोपमोदयपुरस्य निर्माणकृत्तथोदयसरस्वतः समितितर्जितक्षोणिपः ॥ पुरंदरसमः क्षितावुदयसिंहवर्मा भवत्तदन्वयविभूषणं बहुलबाहुवीर्यः सुधीः ॥ ३ ॥ प्रतापसंतापितशत्रुवर्गः प्रतापसिंहस्तनुजस्तदीयः ॥ रणे रिपून्राणयतीति सिद्धपदं दधत् सार्थकमाविरासीत् ॥ ४ ॥ ततोमरसमो जज्ञे मरसिंहनरेश्वरः कर्णप्रतिभटः कर्णसिंहराणस्ततोभवत् ॥ ५ ॥ जगत्सिंहनृपस्तस्माद्राजसिंहस्ततः परः जयसिंहस्ततोजातोमरसिंहस्तु तत्सुतः ॥ ६ ॥ संग्रामसिंहनरपो भवत्संग्राम कोविदः ॥ तस्य पुत्रोमहाराणः जगत्सिंहोधरातलः ॥ ७ ॥ प्रत्यर्थिदर्पदलनोदग्रजाग्रद्भुजार्गलः ॥ प्रसन्नो निजधर्मस्थः प्रशास्ति महितः सतां ॥ ९ ॥ सद्वृत्तः स्वप्रकाशप्रचयपरिसरव्याप्तविश्वावकाशो रध्राभावेपिभूयः श्रुतिविषयवरोदिग्वधूर्भूपयश्च ॥ एकोनेकाभिलापप्रवितरणपटुः सद्गुणः कोपि भास्वत्सद्वंशोन्मुक्तमुक्तामणिरिव जयति श्रीजगत्सिंहभूपः ॥ १० ॥ अथ हरिवंशवंशवर्णनं ॥ स्वामिमयूरत्रस्ते शेषे नासापुटं विशति चीत्कुर्वन्धुतमूर्द्धा जयति गणेशः सतांडवे शंभो ॥ ११ ॥ अरुणशरीरनिचोलः सृग्भूषा कापिजगदादौ ॥ सहपुरुषेण शयाना सिंधौबालैवकेवलं जयति ॥ १२ ॥ यः पूर्वमंभोधिमयेत्र विश्वे शेषे पुराणः पुरुषोधिशेते ॥ तन्नाभिपद्मोदरसंचरिष्णुश्चतुर्मुखः केवलमाविरासीत् ॥ १३ ॥ तेनावरोक्त्या नियमास्थितेन ज्योतिः परंचिंतयताथ किंचित् ॥ नासापुटन्यस्तसुनिश्चलाशो तेपेतपो दुश्चरमात्मनैव ॥ १४ ॥ प्रसादमासाद्य सदेवताया ससर्ज विश्वं कमलासनोथ ॥ विप्रानथ क्षत्रमथोविशोथ शूद्रास्तथा न्यानपि जंतुसंघान् ॥ १५ ॥ विप्रेषु सप्तर्षिगणान् विधाय सप्तर्षिषु प्राग्र्यमथोचकार ॥ सकश्यपकश्यपतोद्यविश्वं जगद्गग-

त्सृष्टु रुदेन्मुदैव ॥ १६ ॥ शनावडास्तेन जरासुसृष्टा प्रमत्तदडव्यसनेतिचडा ॥ धर्मार्थगोपायननिष्ठचित्ता परोपकारैकविसारिवित्ता ॥ १७ ॥ रेवा वदातश्चरितै सुरेज्यो भुवसमुत्तीर्ण इव स्वय य ॥ शिवार्चनव्यग्रकर · सरेवादासद्विजन्मा जगती तले भूत् ॥ १८ ॥ ततस्तनूज समुदैत्सताराचदाभिध · क्षोणितलप्रसिद्ध ॥ तारासुचद्र किमय प्रजासु य कातिभिर्भातिभर व्यधत्त ॥ १९ ॥ तदौ रसोरावनगाधिराजादवाप्तसर्वप्रभुशक्तिरत्र ॥ गुणैकभूर्भूमिसुराग्रगण्योधिकर्धि रास्ते हरिवशशर्मा ॥ २० ॥ यदाज्ञया सिधुरपिस्वसीमा मुमोच विभ्यन्न खिलास्त्रवेत्ता ॥ सजामदग्न्यो जगतीतलेस्मिन्मन्ये विमूर्तिर्हरिवशवेष ॥ २१ ॥ विलासवाटीविलसस्ववापीलसत्पुरस्त्रीजनकौतुकानि ॥ निरीक्ष्य हृष्टेन महेश्वरेण विहाय कैलासमवासि यत्र ॥ २२ ॥ पीयूशवापीरुचिर स्वरुच्या स्फुरत्स्ववाटीनिकटेतिरम्य ॥ महेश्वरस्यातिमहान्निवेशोव्यधायि येना चलसानुतुग ॥ २३ ॥ गिरिवरतनयासुत प्रहृष्टो जगति निरीक्ष्यविलास वापिकाया ॥ उपवनतरु राजि रजितायाश्छबिमधिका सशिवोपि यत्र तस्थौ ॥ २४ ॥ शिवसौध शिवावापी वाटिका हरिमदिर ॥ अकारि हरिवशेन चतुर्भद्र चतुष्य-थे ॥ २५ ॥ व्योमाकमुनिभूसख्ये वर्षे मासि च माधवे ॥ दले सिते त्रयो दश्या तिथौच भृगुवासरे ॥ २६ ॥ जगतीशे जगत्सिहे मही शासति सद्गुणे ॥ यथोक्तविधिना चक्रे प्रतिष्ठा भूरिदक्षिणा ॥ २७ ॥ हरिवशेश्वरस्पात्र हरि-वशोमुदान्वित ॥ वापी वाटिकया युक्ता शिवायचसमर्पयत् ॥ २८ ॥ श्रीरूप भट्टजनुषा कविराड्वदिताघ्रिणा रामकृष्णेन रचिता प्रशस्ति रियमुत्तमा ॥ २९ ॥ सूत्रधारवरेण्येनापीतविद्येन शिल्पिना ॥ सभूय चारुशीलेन विश्रुतेनेद्र भानुना ॥ ३० ॥ श्रीरस्तु ॥ शुभमस्तु ॥ सवत् १७९० वर्षे वैशाख शुद १३ दिन राणा श्री जगत्सिह जी विजयराज्ये शनावड जाति जोशी हरिवश ताराचदोत श्री हरि वशेश्वरजीरी तथा हरिमदिररी प्रतिष्ठा कीधी ने बाडी वावड़ी सुधी तयार कराये ने देवरे चढाई

शेष सग्रह, नम्बर २

गोवर्द्धन विलासमे मानजी धायभाईके कुडकी प्रशस्ति

श्री महा गणपतये नम ॥ श्रीएकलिगजी प्रसादात् अथ धात्रेय भ्रातृ मानजि-त्कारापितकुड प्रशस्तिर्लिख्यते ॥ उच्चैरुद्दडशुडाभ्रमणभवभयत्रस्तसिदूरदैत्यग्रास-

व्यासगजाग्रनिजभुजभुजगभ्राजमान प्रगर्जन् हृष्यत्स्वर्वासिहस्तच्युतसुर- कुसुमामोदमाद्यद्विरेफभ्रातिभ्राजत्कपोलाद्गलितमदजल पातुव श्रीगणेश ॥ १ ॥ अथार्त्तिमद्वीक्ष्य जगत्समस्त कलौ हरि स्वेन कृतावदान ॥ रिरक्षिषु- र्लोकमगाधसत्वोदेवोभवद्गूजरवश देव ॥ २ ॥ गूरेपधातुस्तु घनाधकार- वाचीति सर्वागमसिद्धमेव ॥ जर्ज्जर्तित स्वप्रभयानितात ततोजनैर्गूजर इत्यभाणि ॥ ३ ॥ स्वधर्मनिष्ठ स्वकुलैकशिष्ट प्रेष्ठ समस्तार्यजनस्य हृष्ट ॥ मान्यो वदान्यो जगदेकधन्यो भ्रूम्भाभिधस्तत्रबभूव वित्त ॥ ३ ॥ नाथाभिधो गूजरवशनाथ सुतस्तदीयोभवदद्वितीय ॥ अनाथबधुर्गुणसघसिधुर्धरातले धन्यतम सदैव ॥ ४ ॥ तेज समूह किमु मूर्तएव व्यतर्कि लोकैर्यमुदीक्ष्य दूरात् ॥ सभूतले भूरिगुणोतिभव्यस्तेजाभिधानोजनि तत्तनूज ॥ ५ ॥ सुतस्तत केशवनिष्ठचित्त क्षितावभूत् केशवदाससज्ञ ॥ सदा सुवेष श्रितभूमिदेश स्फुरत्सुकेश किमसावपीश ॥ ६ ॥ भीलाभिधा भूमि तलप्रसिद्धा धात्री स्वय चद्रकुमारिकाया ॥ गुणैकभूमि सुकृतैकलभ्या यस्याभवद्योषिदिलेव मूर्त्ता ॥ ७ ॥ तस्यामुदार श्रुतशास्त्रसार परोपकारव्रतधार उच्चै ॥ धनाभिधानोगिरिशैकतान सन्मानदोमान- जिदास पुत्र ॥ ८ ॥ यद्दानमाप्यार्थिमधुव्रतौघाभवति पुष्टा सहसैवतुष्टा ॥ समुल्लसद्दतरुचि सनानो (?) महेभता क्षोणितले बिभर्ति ॥ ९ ॥ स्वादिष्टपानीय पिपासुभि सोनाहायि देवैरपिदत्तदृग्भि ॥ सुधासमाभ परिपूर्णमध्य कुड कृतोयेन महानखड ॥ १० ॥ स्वादूदकैर्य परिपूर्णमध्य · स्वादूदक सिधुमपि व्य जैषीत् ॥ समानकुड सुमहानखडो गण सुराणा स्पृहयत्यजस्र ॥ ११ ॥ पचाक- सप्तैकमितेथ वर्षे शुक्रावदातछदविष्णुघस्रे ॥ तत्र प्रतिष्ठा निगमोपदिष्टामचीक- रन्मानजिदत्युदार ॥ १२ ॥ सराजलोकस्तदवेक्षणेच्छुर्निमत्रितो यत्र जगज्जने- श ॥ समाययौवीरवरैरनेकै सदा मुदा वदितपादपीठ ॥ १३ ॥ सभोजनै षड्रसवद्भिरुच्चैर्विभूषणैर्नैकविधैर्दुकूलै ॥ उपायनैरश्वगजोपयुक्तै समानितो- भूदतिसप्रहृष्ट ॥ १४ ॥ दानैरनेकैरतिदक्षिणाढ्यैर्द्विजातयो यत्र निवृत्तदुखा ॥ फुल्लाननाभोजरुचोतिहृष्टा कल्पद्रुमानप्यहसन्नजस्र ॥ १५ ॥ अदभ्रदान स्रवदभ्रपुष्पप्रवाहमीक्ष्यार्थिसमुच्चयो त्र ॥ हतस्वदारिद्रमलो मलोथ लोलोप्य- लोलोजनि लब्धकाम ॥ १६ ॥ नखाभ्रमालागलदबुबिदु विभूषणलिट् तडि- दादिनांत ॥ प्रहर्षितोन्मत्तमयूरभिक्षुर्दृष्ट्वैवयत्पाणिरुपाचचार ॥ १७ ॥ असौ हयानुग्ररयान्मतगान्मदच्युत स्यदनजातमत्र धनानि धान्या

नि च याचकेभ्यो ददौ दयावानतिकीर्तिकाम ॥ १८ ॥ ऋग्वेदिन समपठन्त ऋचो यजूंषि तद्वेदिन कृतकरस्वरचारु तत्र ॥ छंदांसि सामकुशला प्रतत (?) स्वकठमाथर्वणा उपनिषन्निचय च सम्यक् ॥ १९ ॥ वादित्रध्वनिमिश्रितो जनरवै र्वेदिस्वनै र्बृंहितै र्हेषाभि पुरसुंदरीजनमुखोद्गीतैश्च गीतै शुभै ॥ दिग्व्यापी दिविषत्सभासु कथयन् कुंडप्रतिष्ठोत्सव स्वाध्यायाध्ययनध्वनि प्रविततो ब्रह्माडमापूरयत् ॥ २० ॥ आघ्राय यत्रातिहुताज्यगंध तदैव सर्वे त्रिदशा जगत्मु ॥ वीताखिलोत्पत्तिविनाशदुःखा स्वसौमनस्य प्रथयाबभूवु ॥ २१ ॥ विकचपुष्पभरावनतैस्ततै प्रचुरदध्वगसौख्यकरै परै ॥ तरुवरै र्जितनदनसपद् व्यथितचित्तहरामथ वाटिका ॥ २२ ॥ सम्मानिता मानजिता समस्ता सभाजितस्तत्र सुरा नराश्च ॥ जयस्वनैस्तुष्टहृदो मुमुच्चैरवाकिरन् पुष्पभरैरतीव ॥ २३ ॥ इति स्वदानस्रवदबुधारामरप्रसादप्लवमानकीर्ति ॥ मानो महीशागमनप्रहृष्टस्तत्र प्रतिष्ठोत्सवमध्यकार्षीन् ॥ २४ ॥ श्रीमज्जगत्सिंहनृपप्रसादादवाप्तसर्वाभिमत प्रहृष्ट ॥ मान समाप्याखिलकृत्यमित्थं शुभे मुहूर्ते विशदात्मगेह ॥ २५ ॥ श्रीरूपभट्टद्विजराजजेन श्रीरामकृष्णेन बुधेन बुध्या ॥ इलाविलासाहितचेतसेयं मानप्रशस्ति र्निरमायि रम्या ॥ २६ ॥ सुरूपरूपद्विजराजजन्मा बुधो भवत्येव न तत्र चित्र ॥ इलाविलासोद्धुरचित्तवृत्ति र्नक्षत्रभू क्षत्रकुलप्रथोपि ॥ २७ ॥ भूवियद्भूमिभूताब्धिसख्य स्तत्र धनव्यय ॥ खातमारभ्य सजज्ञे प्रतिष्ठावधिको खिल ॥ २८ ॥ सवत् १७९५ वर्षे ज्येष्ठमासे शुक्लपक्षे ११ दिने गूजर ज्ञाति वास उदयपुर झाझाजी सुत नाथाजी तत्पुत्र तेजाजी तत्पुत्र केशवदासजी तत्पुत्र चिरजीवी धायभाईजी श्री मानजी कुड वाडी तथा सारी जायगा बधाई कुडरी खुदाई मडाई कुमठाणो तथा व्याव वृद्धरा समस्त रुपीया ४५१०१ अखरे रुपीया पैतालीस हजार एक सौ एक लगाया सवत् १७९९ वर्षे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे १ दिने गुरु वासरे महाराजा धिराज महाराणाश्रीजगतसिंहजीविजय राज्ये मेदपाटज्ञाती भटरूपजी तत्पुत्र भटरामकृष्ण या प्रशस्ति बणाई छै

शेषसंग्रह नम्बर ३

(उदयपुरमे दिल्ली दर्वाजेके पास, बाईजीराजके कुडके दर्वाजेके साम्हने पश्चिम दिशामे रास्तेपर पचोलियोके मन्दिरकी प्रशस्ति)

॥ श्रीगणेशाय नम ॥ श्रीगुरुभ्यो नम ॥ श्री एकलिंगप्रसादात् ॥ योजेतु त्रिपुर

हरेण हरिणा दैत्याननेकान्पुन पार्वत्या महिषासुरप्रशमने ध्यात पुरा सिद्धये ॥ देवैरिंद्रपुरोगमैरनुयुग ससेव्यते सर्वदा विघ्नध्वातविदारणैकतरणि पायात्स नागानन ॥ १ ॥ श्रीदैकलिंगेश्वरसन्निधाने क्षेत्रे शुभे नागह्रदे प्रसिद्धे ॥ शैलोपरिस्थाभवभीतिहर्त्री क्षेमकरी क्षेमकरी सदास्तु ॥ २ ॥ दग्धो येन मनोभवस्त्रिजगता जेता ललाटेक्षणप्रोद्भूतानलतेजसा शलभवद्दु खौघविध्वसन ॥ बालेंदुद्युतिदीप्तपिगलजटाजूटोहिभूषान्वितो देव शैलसुतायुतो भवतु व सर्वार्थसिद्ध्यै शिव ॥ ३ ॥ यस्योदयेस्याज्जगत प्रबोध क्रिया समस्ता श्रुतिभि प्रयुक्ता ॥ ब्रह्मादिभिर्वंदितपादपद्मो रविस्त्रिकाल स धुनातु मोह ॥ ४ ॥ योरूपै किल मत्स्यकच्छपमुखै ब्रह्मादिभि प्रार्थित प्रादुर्भूय भरभुवोदनुसुतैर्जात जहाराखिल ॥ य ध्यायति सदैव योगिनिवहा हृत्पकजे सस्थित सो य वो वितनोतु वाछितफल त्रैलोक्यनाथो हरि ॥ ५ ॥ इति मगलाचरण

यो धर्मराजस्य पुरो महामति शुभाशुभ कर्म नृणा सदैव हि ॥ सुगुप्तमप्यालिखतीश्वराज्ञया स चित्रगुप्त किलविश्रुतोऽभवत् ॥ ६ ॥ पुरातपस्यत कायाद्ब्रह्मण समभूदसौ ॥ तस्मात्कायस्थसज्ञा वै स लेभे लोकविश्रुता ॥ ७ ॥ द्वादशासन्सुतास्तस्य कायस्था इति विश्रुता ॥ तेष्वेकोह्यभवत् ख्यातो भट्टनागरसज्ञक ॥ ८ ॥ भट्टनागरवशे ये जाता कायस्थसत्तमा ॥ ते भवन् भुवि विख्याता सर्वे वै भट्ट नागरा ॥ ९ ॥ भट्टनागरवशेपि विविधागोत्रजातय ॥ क्षेत्रेशा गोत्रदेव्यश्च सबभूवु पृथक् पृथक् ॥ १० ॥ अथ देवजिद्वशवर्णनम् ॥ गोत्रे वै कश्यपाख्ये प्रचुरतरगढीवालसज्ञे प्रसिद्धे यत्र क्षेमकरीति त्रिजगति महिता पूज्यते गोत्रदेवी ॥ तत्रासीद्वशधुर्य सकलगुणयुतो रत्नजिद्धर्मबुद्धिस्तस्या सन् सूनवस्तु त्रय इह विदिता राजकार्येषु दक्षा ॥ ११ ॥ टीलाख्यश्चैव सिहाख्यो वेणीसज्ञ स्तथापर ॥ त्रयोपि क्षितिपालाना मान्या ह्यासन् गुणैर्युता ॥ १२ ॥ टीलाभिधस्याथ गुणैकधामा सोमाभिध पुत्रवरो बभूव ॥ तस्याभवद्भूपकुलाभिमान्य स भोगिदासस्तनयो वरिष्ठ ॥ १३ ॥ भोगीदासस्य पुत्रस्तु पुजराजाह्वयो भवत् ॥ तस्यासीत्सूर्यमल्लाख्य सुतो वशधुरधर ॥ १४ ॥ श्रीसूर्यमल्लस्य कुले प्रसिद्ध सुतोऽभवद्देवजिदाख्यया च ॥ स वै जगत्सिहमहीश्वरस्य विश्वासपात्र परम बभूव ॥ १५ ॥ श्रीमत्सग्रामसिहक्षितिपतितनय श्रीजगत्सिहभूति चक्रे मात्य सचिव इव सदा देवजित्सज्ञके स्मिन् ॥ सो पि प्रीति क्षितीशादतुलमतिरवाप्यातुला धर्मनिष्ठ श्चक्रे सर्वो पकार खलु वचनमन कर्मभि प्रीतचेता ॥ १६ ॥ कृता पराध किल भूपतेर्वै भयेन यस्त शरण जगाम ॥ दत्वाभय देवजिदाह्वयस्त ररक्ष भूपालवराभि

मान्य ॥ १७ ॥ स दामोदरदासस्य पौत्री भूपालमन्त्रिण ॥ उपयेमे शुभे लग्ने रूपचंद्रसुता वरा ॥ १८ ॥ सारूपचन्द्रस्य सुता गुणाढ्या नाम्ना वसंताख्य कुमारिकासीत् ॥ भक्ता स्वपत्युर्नितरां बभूव शचीव शक्रस्य रमेव विष्णो ॥ १९ ॥ तस्या सुता सर्वगुणैरुपेता नाम्ना गुलाबाख्य कुमारिकासीत् ॥ पिता ददौ तां शिवदासनाम्ने विहारिमन्त्रीदुहितु सुताय ॥ २० ॥ भूयस्ततोन्या नृपवाजिशालाधिकारिणे श्यामलदास नाम्न ॥ सुता शुभा सूर्यकुमारिकाख्यामुदारबुद्धिर्विधिनोपयेमे ॥ २१ ॥ तस्यामायुष्मत युगलकिशोरेति नामत पुत्र ॥ लेभे देवजिदाख्य प्रद्युम्न कृष्ण इव मनोज्ञ ॥ २२ ॥ ज्ञात्वा देवजिदाह्वय शुभमति संसारमल्पायुष चित्त चचलमध्रुव ध्रुवमतिर्धृत्वा सुधर्मे धिय ॥ निर्धार्याखिलधर्मजातमसकृत्संसारपारप्रद प्रासादौ किल वापिका शुभजला कर्तुं मन सदधे ॥ २३ ॥ आहूय शिल्पिप्रवरान् शुभेन्हि सत्कृत्य वस्त्रादिभिरेकवित्त ॥ पुरोपकंठे स चतुर्भुजस्य प्रासादमुच्चैस्तुहरेश्चकार ॥ २४ ॥ शिवालय तथैवैक हरे प्रासादपृष्ठत ॥ मनोज्ञ कारयामास शिल्पिभि शास्त्रकोविदै ॥ २५ ॥ हरे प्रासादतश्चैका नैर्ऋत्या दिशि शोभना ॥ स वापी कारयामास शीतामलजलामपि ॥ २६ ॥ वाटिका देवयोश्चैव पूजार्थं सुमनोयुता ॥ मध्ये प्रासादयोश्चक्रे नानाद्रुममनोहरा ॥ २७ ॥ इत्यादि शोभनस्यात् ॥ प्रासादौ वाटिका वापी कारयित्वा शुभे हनि ॥ देवजित्कारयामास प्रतिष्ठा द्विजपुंगवै ॥ २८ ॥ विनायकस्थापनवासर हि प्रारभ्य सर्व किल जातिवर्ग ॥ चकार भोज्यैर्विविधै सदैव तत्रैव सद्भोजनमाप्रतिष्ठ ॥ २९ ॥ मंडप लक्षणैर्युक्त कुंडै पंचभिरन्वित ॥ प्रासादाद्दिशि पूर्वस्या कारयामास शिल्पिभि ॥ ३० ॥ तथान्य मडप चैव विष्णो प्रासादपृष्ठत ॥ वाप्या शिवालयस्यापि प्रतिष्ठार्थं समातनोत् ॥ ३१ ॥ शिल्पिनौ शास्त्रवेत्तारौ तत्रास्तां कर्मकारकौ ॥ इन्द्रभानु सुमतिमान् रूपजित्संज्ञकस्तथा ॥ ३२ ॥ सभृत्याखिलसंभारान् दैवज्ञै कथिते दिने ॥ ब्रह्माचार्यमुखान् वव्रे देवजिद्द्विजसत्तमान् ॥ ३३ ॥ ब्रह्मातुतत्राम्रतरायसंज्ञो गुरु कुलस्यास्य बभूव विप्र ॥ तथा महानंदइति प्रसिद्धो ह्याचार्य आसीत्सुविधानदक्ष ॥ ३४ ॥ तत्राचार्याज्ञया तेन वृताये ऋत्विजो द्विजा ॥ चक्रुस्ते मंडपे सर्वे पारायणजपादिक ॥ ३५ ॥ पारायण वेदचतुष्टयस्य केचित्तथा सूक्तजप प्रचक्रु ॥ स्तोत्राण्यनेकानि तथैव केचिद् रुद्रस्य सूक्तानि तथा परेच ॥ ३६ ॥ पठता तत्र विप्राणां वेदघोषो महानभूत् ॥ तेन शब्देन ख भूमि दिशश्चापि विनेदिरे ॥ ३७ ॥ कृत्वा पारायण विप्रास्तथा मंत्रजपादिक ॥ सर्वे जपदशांशेन जुहुवुस्ते पृथक् पृथक् ॥ ३८ ॥ सकारयित्वा

हवन द्विजैस्तै समोदितो मडपमाजगाम ॥ पूर्णाहुति कर्तुमतिप्रतीत पत्नीद्वया-
ढ्यो निजबधुयुक्त ॥ ३९ ॥ पूर्णाहुतिं चापि विधाय विप्रैर्युक्त पठद्भि किल वेद-
मन्त्रान् ॥ प्रासादमध्ये स चतुर्भुजस्य मूर्तिं हरेस्थापितवाश्च शभो ॥ ४० ॥ प्रासा-
दस्य महोत्सव किल तदा द्रष्टु समभ्यागता सर्वे नागरिका जना मुमुदिरे कृत्वा हरे-
र्दर्शन ॥ तत्रानदयुत स देवजिदपि प्रीतो न्वितो बाधवै र्विप्रैश्चापि चकार वेष्ठनमथो
सूत्रेण देवालये ॥ ४१ ॥ तस्य स्वसृसुतापति शुभमति कल्याणदासाभिध
काशीनाथकिशोरसज्ञक सुतद्वद्वेन युक्तो थ वै ॥ जामाता शिवदाससज्ञक इति ख्यातो
न्वित सद्गुणैरासन्सूत्रसुवेष्ठनस्य समये सर्वे पुरो गामिन ॥ ४२ ॥ दानान्य-
नेकानि तदा द्विजेभ्यो ददौ ततस्तत्र महोत्सवे स ॥ गोभूहिरण्याश्वगजादिकानि
स देवजिद्विष्णुमहेशतुष्ट्यै ॥ ४३ ॥ दीयता हूयता चैव भुज्यता चेति
सद्ध्वनि ॥ समुद्भूतस्तदा तत्र व्याप्त सर्वदिगतर ॥ ४४ ॥ महोत्सव त प्रविधाय
सम्यक् सतोष्य विप्रान् बहुदक्षिणाभि ॥ ज्ञातीन्समस्तान्नथ विप्रवर्यान्
सभोजयामास विचित्रभोज्यै ॥ ४५ ॥ प्रासादस्योत्सवे वै नृपतिरपि जगत्सिह
नामा सुधामा वैरिव्रातस्यजेता निजजनसहितस्तद्गृहेष्वाजगाम ॥ तत्रस्थित्वा
महार्हाभरणसुवसनै र्दैवजित्पूज्यमानो नानाभोज्यै सुधाभैर्विविधरसयुतैर्भोज-
न वै चकार ॥ ४६ ॥ तस्मिन्देवमहोत्सवे किल जगत्सिह महीनायक ह्यायात निज-
बधुभृत्यसहित शुद्धातसख्यन्वित ॥ सद्वस्त्रैस्तपनीयततुरचितैरन्यै र्विचित्रै शुभै
सपूज्यातुलमोदमानमनस चक्रे स देवाभिध ॥ ४७ ॥ सद्वस्त्रै समल कृत नरपति
भोज्यैरनेकै पुन सभोज्याखिलबाधवानुगयुत भक्त्या युतोदेवजित् ॥ धृत्वातन्नयना-
ग्रतो हयवर ह्युच्चैश्रव सन्निभ द्रव्य पचसहस्त्रसख्यकमपि प्रादात्प्रतीत नृप
॥ ४८ ॥ भोजयित्वा तु सपूज्य धनादिभिरनन्यधी ॥ जगत्सिह महीपाल चक्रेसप्री
तमानस ॥ ४९ ॥ द्वय प्रासादयोरेव कृत्वा देवजिदाह्वय ॥ तयोर्हरिहरौस्थाप्य बभूवा-
नदसयुत ॥ ५० ॥ प्रासाददक्षाग्रिमभागयोश्च चक्रेशुभामट्टपरपरा च ॥
पश्चात्तथैकामपि धर्म्मशाला स कारयामास हरेस्तु तुष्ट्यै ॥ ५१ ॥ शाला शुभा स्तत्र
सकारयित्वा रम्या तथैवाट्टपरपराच ॥ सलेखयित्वा किल ताम्रपट्टे समर्पयद्विष्णु-
महेशतुष्ट्यै ॥ ५२ ॥ तथैवदेवालयसन्निधाने भूमि गृहीत्वा च नृपाज्ञयैव ॥ द्रव्येण
तत्रापि गृहाणि दत्वा सवासयामास स जातिवर्ग ॥ ५३ ॥ खेटाभिधे भूमिपतिप्रदत्ते
ग्रामे निजे सीरयुगोन्मिता गा ॥ सलेखयित्वा किल ताम्रपट्टे ददौ कृपारामधरासुराय
॥ ५४ ॥ कृत्वा प्रासादमुच्चैस्तरमतिविशद कीर्तिपुजं यथोव्यांतस्मिन्देवाधिदेव
सुरनरनमित स्थापयित्वा रमेश ॥ अन्यस्मिन्वै मृडानीपतिमतिमुदित प्राप्तसर्वा

भिलाषोरेमे संवैरुपेत सुतयुवतिजनैर्देवजिद्धर्मबुद्धि ॥ ५५ ॥ श्रीमद्विक्रमभूपराज्यसमयादष्टादशाना शते याते वर्षगणे तथैव शुभदे मास्युत्तमे माधवे ॥ पक्षे चैव सिते तिथावपि तथाष्टम्या गुरोर्वासरे चक्रे देवजिदाह्वय सुविधिना देवप्रतिष्ठोत्सव ॥ ५६ ॥ श्रीमद्देवजिदाह्वयाऽभिरचितप्रासादयो रुत्तमा नाथूरामधरासुरेण रचिता येयं प्रशस्ति शुभा तादृष्ट्वा मुदमाप्नुवतु विबुधा येवै जना सज्जना वशो देवजित सदैव परमा वृद्धि समायालय ॥ ५७ ॥ श्रीजगत्सिंह भूपस्य प्रीतिपात्रं महामति ॥ सुपुत्रो देवजिज्जीयाच्चिर सर्वसुखान्वित ॥ ५८ ॥ कायस्थोत्तमदेवजिद्विरचितप्रासादयुग्मस्थितौ विप्रैर्वेदविधानत सुविधिना नित्य समभ्यर्चितौ ॥ देवावब्धिसुताद्रिजाप्रियतमौ सर्वार्थसिद्धिप्रदौ श्रेयो व कुरुतामुभौ हरिहरौ देवारिदर्पापहौ ॥ ५९ ॥ इतिश्री कायस्थ वशावतसदेवजित्कारितप्रासादप्रशस्ति सपूर्णा- श्वटैषागोत्रजातेन सूत्रधारेणधीमता अमरारमेनरचित प्रासाद तष्टसूनुना ॥ १ ॥ सवत् १८०० वर्षे वैशाख शुदि ८ गुरौ देवरारी प्रतिष्ठा कीधी
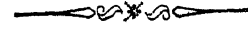
शेषसंग्रह नम्बर ४

(माडलगढकी भीतरी तलहटीके बाजारमें, महतीजीके मन्दिरमें जातेहुए दाई तरफकी सुरह)
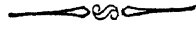
सिद्ध श्री दिवाणजी आदेसातु प्रत दुवे महता देवीचदजी कस वा माडलगड तलेटीरा समसत पचा कस अपरच थे जमाषातर राषेर गामरी आवादान करज्यो, आसाम्या बारणे गई हे ज्याने पाछी ल्यावज्यो, आदका देवालको अेक आसामीको हात पकड डड करणो नही, अपदत्त परदत्त जे पालती वसुधरा तेनरा राजराजेद्र जबलग चद्र दिवाकरा, अपदत्त परदत्त येहरति वसुधरा तेनरा नरक याति जबलग चंद्र दिवाकरा, लिखता गोड सोलाल सभूरा सवत् १८०२ रा काती सुद ४ रवे.

शेषसंग्रह नम्बर ५

(भट्याणीजीकी सरायके मन्दिरकी सुरह)

श्रीगणेशाय नम श्री एकलिंगजी प्रसादात् सिद्ध श्री तांबापत्र प्रमाणे सुरे श्री मन्महीमहेंद्र महाराजा धिराज महाराणाजी श्री जगत्सिंहजी आदेशात् ठाकुरजी श्री द्वारिकानाथजीरो देवरो राणीजी भट्याणीजी करायो जींपर सादू तथा सेवग रहेगा जीरा भाता सारू धरती हल १ एकरी आगे पेमारी सराय माहेथी देवाणी थी, तींरे बदले भट्याणीजीरी सराय माहेथी धरती वीगा ३८॥ साडा अडतीस मध्ये पीवल वीगा १८ अठारे माल मगरारी बीगा २०॥ साडा वीस देवाणी पेमारी सरायरी धरती हल १ री रो हासल भट्याणीजीरी सराय मेलेसी पेली तांबापत्र सवत् १८०२ रा काती विद ८ सोमेरो साह षुसालरे भडार सूप्यो लागत विलगत घर ठाम सुदी उदक आघाट करे श्री रामार्पण कीधो, स्वदत्त परदत्त वा ये हरति वसुधरा षष्ठि वर्ष सहस्राणि विष्ठाया जायते क्रमी प्रत दुवे पचोली हरकिसन लिषित पचोली गुलाबराय कान्होत सवत् १८०७ वर्षे असाड विद ४ शने

रियासत कोटाकी प्रशस्तिया,

इन्डिअन एण्टिक्केरी जिल्द १४ वीं पृष्ठ ४५-४६ से

शेषसंग्रह नम्बर - ६

ॐनमो रत्नत्रयाय॥ जयन्ति वादा सुगतस्य निर्म्मला समस्तसन्देहनिरासभासुरा ॥ कुतर्कसम्पातनिपातहेतवो युगान्तवाता इव विश्वसन्तते ॥ १ ॥ योरूपवानपि बिभर्ति सदैव रूपमेकोप्यनेक इव भाति च यो निकाम ॥ आरादगात्परधिय प्रतिमर्त्यवेद्यो योनिर्ज्जितारिरजितश्च जिन सवोव्यात् ॥ २ ॥ भिनित्ति योन्रृणाम्मोह तमो वेश्मनि दीपवत् ॥ सोव्याद्व सौगतो धर्म्मो भक्तमुक्तिफलप्रद ॥ ३ ॥ आर्यसघस्य विमला शरच्छशिजितश्रिय जयन्ति जयिन पादा सुरासुरशिरोर्च्चिता ॥ ४ ॥ आसीदम्भोधिधीर शशिधवलयशा बिन्दुनागाभिधानस्तत्सूनु पद्मनागो भवदसमगुणैर्भूषिताशेषवश ॥ तस्याप्यानदकारी करनिकरइवानुष्णरश्मेस्तनूजो जात सामन्तचक्रप्रकटतरगुण सर्व्वणागोजितारि ॥ ५ ॥ तस्याभूद्दयिता विशुद्धयशस श्रीरित्युर शायिनी कृष्णस्येव महोदया च शशिनो ज्योत्स्नेव विश्वम्भरा ॥ गौरीवाद्दिदशोसमा शमवत प्रज्ञेव वातायिनो गम्भीरा यदि वा महोर्म्मिवलया वेलेव वेलाभृत ॥ ६ ॥ ताभ्यामभूद्गुणाम्भोधिर्व्वशीकृतमनोमल ॥ देवदत्तइतिख्यात सामन्त, कृतिनाकृती ॥ ७ ॥ येषान्नतिर्जिनगुरौ गुरुता गुणेषु सगोर्थिभि सततदाननिबद्धगर्व्वै.॥भीति प्रकाममघतो जगदेकशत्रो स्तेषामय कृतविशेष-

गुणोन्ववाये ॥ ८ ॥ येषाभूतिरिय परेति न परैरालोक्यतेऽर्थार्थिभिर्येषाम्मुद्विभव पर परमुद स्वप्नेपि नाभूत्तनौ ॥ येषामात्महितोदयाय दयित नासीद्गुणासादन तेषामेष वशीशशाङ्कधवले जात कुलाम्भोनिधौ ॥ ९ ॥ सम्पादितजनानन्द समासादितसन्तति ॥ कल्पशाखीव जगतामेप भूतो गुणाकर ॥ १० ॥ विश्वाश्वासविधौतृणीकृतसितज्योत्स्नोदयोदेहिनामन्त शुद्धिविचारणे सुरगुरोरप्याहिताल्पोदय गाभीर्याकलनेनिकामकलित क्षीरोदसारस्त्वय ॥ यतन्नूनमहो गुणागुणितनु व्यासगिन सगता ॥ ११ ॥ तावन्मानधनायशस्ततिभृतस्तावच्चतावद्बुधास्तावत्तायिसुतानुकारकरणा स्तावत्कृपाम्भोधय ॥ तावन्नचस्तपरोपकारतनवस्तावत्कृतज्ञा परे यावन्नास्य गुणेक्षणे क्षणमपि प्राप्तावधानो जन ॥ १२ ॥ यस्योद्वीक्ष्य गुणानशेषगुणिनामद्याप्यवज्ञात्मनि निर्व्वाणाखिलमानसन्ततिपतच्चेतोविकासा समा ॥ भानौ ध्वस्तसमस्तनैशतमसि स्वैर करालीकृति प्रातर्येन कलावलोपि विगलच्छाय शशाङ्को न किम् ॥ १३ ॥ यस्यान्वयेप्यगुणजन्मनदृष्टपूर्वमासादिता न च गुणैर्गणनव्यवस्था ॥ याता मुहूर्तमपि नो कलिदोषलेशा स्सोयन्निरस्तसमतो भुवि कोप्यपूर्व ॥ १४ ॥ यस्य दानमतिरक्षत दाना भापितान्यफलवन्ति न सन्ति ॥ प्राणदानविहितावधिसस्य तस्य को गुणनिधेरिह तुल्य ॥ १५ ॥ नाना सन्ति दिनानि सन्ति विविधा श्चन्द्राशुशीता निशा स्सन्त्यन्या शतशो बलाजितजगन्नारीसमस्तश्रिय ॥ तन्नानन्दिजगत्त्रयेपि सुदिन सा वा निशा साबला यज्जन्मन्यगमन्निमित्तपदवीमस्यापरैर्दुर्गमाम् ॥ १६ ॥ कोशवर्द्धनगिरेरनुपूर्व्व सोयमुन्मिषितधी सुगतस्य ॥ व्यस्तमारनिकरैकगरिम्णो मन्दिर स्म विदधाति यथार्थम् ॥ १७ ॥ सुखान्यस्वन्तानि प्रकृतिचपल जीवितमिद श्रिया प्राणप्रस्यास्तडिदुदयकल्पाश्च विभवा ॥ प्रियोदर्काश्चाल क्षणसुखकृतो दु खबहुला विहारस्तेनाय भवविभवभीतेन रचित ॥ १८ ॥ सान्द्रध्वानशरद्बलाकनिवहत्यक्तार्कबिम्बोज्वल ससाराड्कुरसगभगचतुर यत्पुण्यमात्तम्मया ॥ जैनावासविधेरतोयमखिलो लोकत्रयानन्दनी तेनार सुगतश्रिय जितजगद्दोषाजन प्राप्नुयात् ॥ १९ ॥ प्रशस्तिमेनामकरोज्जात शाक्यकुलोदधौ ॥ जज्जक कियदर्थांशनिवेशाविहित स्थितिम् ॥ २० ॥ सवत्सराङ्क ७ (१) माघ शुदि ६ उत्कीर्णा चणकेन

---

(१) इस लेखके अक्षर पुरानी लिपिके होनेके सबब सवत्का अक पढनेमे शायद कोई गलती हुई हो, तो तअज्जुब नहीं इन्डिअन ऐटिक्केरीकी चौदहवी जिल्दके ३५१ पृष्ठमें फ्लीट साहिबने इसकी बाबत एक नोट लिखा है, और सवत् वगैरहके हिन्दसोकी अस्ल लिपि बतलाकर इस सवत्के अकको ८७९ पढा है

शेषसंग्रह नम्बर - ७

जर्नल ऑफ दि बॉम्बे ब्रैञ्च ऑफ दि रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की

जिल्द १६ वीं पृष्ठ ३८२ से ३८६ तक

ॐ नम शिवाय ॥ ॐ नम स्सकल ससार सागरोत्तारहेतवे॥ तमोगर्त्ताभिस पातहस्ता लम्बायशम्भवे ॥ १ ॥

श्वेतद्वीपानुकारा क्वचिदपरिमितैरिन्दुपादै पतद्भिर्नित्यस्थैस्सान्धकारा क्वचिदपि निभृतै फणिपैर्भोगभागै· सोष्माणो नेत्रभाभि क्वचिदति शिशिरा-जन्हुकन्याजलौघैरित्थ भावैर्विरुद्धैरपि जनितमुद पान्तु शम्भोर्जटा व ॥ २ ॥ भोगीन्द्रस्य फणामणिद्युतिमिलन्मौलीन्दुलोलाशवो नेत्राग्नेश्छुरितास्सधूम कपिशैर्ज्वालाशिखाग्रै क्वचित् ॥ मुक्ताकारमरुन्नदीजलकणैराकीर्णशोभा क्वचिच्चे-त्थ शाश्वतभूषणव्यतिकरा शम्भोर्ज्जटा पान्तु व ॥ ३ ॥ स्थाणोर्व्व पातु मूर्द्धना सरइव सततव्योमगगाम्बुलोलस्फूर्जद्भोगीन्द्रपकश्लथविकटजटाजूटकल्हारहारी ॥ मन्द यत्र स्फुरन्त्यो धवलनरशिरोवारिजन्मान्तरालस्पष्ट प्रोद्यन्मृणालाकुरनिकरइ-वाभान्ति मौलीन्दुभास ॥ ४ ॥ नेत्रक्रोडप्रसक्तोज्वलदहनशिखापिगभासा जटाना भार सयम्य कृत्वा सममममृतकरोद्भासि मौलीन्दुबिम्ब॥ हस्ताभ्यामूर्द्धन मुद्यद्विशशि-खिवदनग्रन्थिमातत्यनाग स्थाणु प्रारब्धनृत्तो जगदवतु लयोत्कम्पिपादागुलीक ॥ ५ ॥ चूडाचारुमणीन्दुमण्डितभुव सद्भोगिनामाश्रय पक्षच्छेदमयार्तिसकटवतां रक्षाक्षमोभूभृता ॥ दूराभ्यागतवाहिनीपरिकरो रत्नप्रकारोज्वल श्रीमानित्थमुदा-रसागरसमो मौर्यान्वयो दृश्यते॥ ६ ॥ दिड्नागाइव जात्यसभृतमुदो दानोज्वलैराननै र्व्विस्रम्भेण रमन्त्यभीतमनसा मानोद्धुरास्सर्व्वत ॥ सद्वशत्ववशप्रसिद्धयशसो यस्मिन्प्रसिद्धागुणै श्लाघ्याभद्रतया च सत्वबहुला पक्षैस्ससभूभृत ॥ ७ ॥ इत्थ भवत्सु भूपेषु भुजन्त्सु सकलां महीं॥ धवलात्मा नृपस्तत्र यशसा धवलोऽभवत् ॥ ८॥ कायादिप्रकटार्जितैरहरह स्वैरेव दोषै सदा निर्व्वस्त्रा सततक्षुध प्रतिदिन स्पष्टीभवद्यातना ॥ रात्री सचरणा भृश परगृहेष्वित्थ विजित्यारयो येनाद्यापि नरेन्द्रता सुविपदो नीता पिशाचा इव ॥ ९ ॥ कोपाल्लूनमहेभकुम्भविगलन्मु-क्ताफलालकृतस्फीतास्रस्त्रुतिमण्डिता अपि मुहुर्येनोर्जितेन स्वय ॥ उन्नाली रिव पकजै पुनरपि च्छिन्नै शिरोभिर्द्विषा विक्रान्तेन विभूषिता रणभुव त्यक्ता नरे कातरै ॥ १० ॥ इत्थ तस्य चिरन्तनो द्विजवरस्सन्नप्युपात्तायुधप्रीतिप्रेतनरेन्द्रसत्कृतिमुद पात्र प्रसिद्धो गुणै ॥ यस्याद्यापि रणागणे विलसित ससूचयन्ति द्विषत्सुण्यच्छोणि तमर्म्मरा रणभुव प्रेतपृथा (?) प्रायश ॥ ११ ॥ शब्दस्यार्थ इव प्रपादनपटोर्म्मार्ग्ग

त्रयीसञ्ज्ञितो धर्म्मस्सेव्य विशुद्धभावसरलो न्यायस्य मूल सत ॥ प्रामाण्यप्रगत – – – – – यस्साध्यस्य ससिद्धये तस्याभूदभिसगत पृथ्यसख श्रीसकुकाख्यो नृप ॥ १२ ॥ देगिणीनाम तस्यासीद्धर्मपत्नी द्विजोद्भवा॥ तस्या तस्याभवद्वीर सूनु कृत-गुणादर ॥ १३ ॥ यशस्वी रूपवांदाता श्रीमां शिवगणोनृप ॥ शिवस्य नून सगणो येन तद्भक्तता गत ॥ १४ ॥ खड्गाघातदलत्तनुत्रविचटद्वन्हिस्फुलिगोज्वलज्वालादग्धक-बन्धकण्ठकुहरप्रोन्मुक्तनादोल्वणे ॥ नाराचग्रथिताननाकुलखगप्रोद्दान्तरक्तासव-प्रीतप्रेतजने रणेरतधिया येनासकृच्चेष्टित ॥ १५ ॥ ज्ञात्वा जन्मजरावियोगमरणक्लेशैर-शेषैश्चित स्वार्त्थस्याप्ययमेव योग उचितो लोके प्रसिद्ध सता ॥ तेनेद परमे-श्वरस्य भवन धर्म्मात्मना कारित यद्दृष्ट्वैव समस्तलोकवपुषा नष्ट कलौ कल्मष ॥ १६ ॥ पुष्पाशोकसमीरणेन सुरभावुत्फुल्लचूताकुरे काले मत्तविलोलषट्पदकुले व्यारुद्ध-दिङ्मण्डले ॥ जातेपाङ्गनिरीक्षणैककथके नारीजनस्य स्मरे कृत सद्भवन भवस्य सुधिया तेनेह कण्वाश्रमे ॥१७॥ कालेन्दोलाकुलाना तनुवलनभरात्प्रस्फुटत्कचुकाना कान्ताना दृश्यमाने कुचकलशतटीभाजि सभोगचिन्हे ॥ यस्मिन्प्रेयोभिमुख्य-स्थितिझटितिनमच्छस्मितार्द्धेक्षणाना भ्रूभगैरेव रम्यो हृदयविनिहित स्सूच्यते प्रेमबन्ध ॥१८॥ मत्तद्विरेफझङ्कारसहकारविरञ्जिता ॥ सवीक्ष्य ककुभो बाष्प मुचन्ति पथिकांगना ॥१९॥ धूपादिगन्धदीपार्त्थ खण्डस्फुटितहेतुना ॥ ग्रामौ दत्तौ क्षयानीमि सर्व्वाट्टोचोणिपद्रकौ ॥२०॥ पालयन्तु नृपा सर्वे येषा भूमि रिय भवेत्॥ एव कृते तेधर्म्मो-र्थ नून यान्ति शिवालय ॥२१॥ ससारसागर घोर अनेन धर्म्मसेतुना ॥ तारयिष्यत्यसौ नून जन्यौ चात्मानमेव च ॥२२॥ यावत्ससागरा पृथ्वी सनगा च सकानना ॥ यावदि-न्दुस्तपेद्भानुस्तावत्कीर्तिर्भविष्यति ॥ २३ ॥ सवत्सरशतै र्याते सपचनवत्यर्ग्गलै ॥ सप्तभिर्म्मालवेशाना मन्दिर धूर्जटे कृत ॥ २४ ॥ अलुब्ध पृथवादी च शिवभक्तिरत सदा ॥ कारापकोशब्दगण धार्मिक शसितव्रत ॥ २५ ॥ दक्ष प्राज्ञो विनीतात्मा गुरुभक्त पृथवद ॥तस्तो – – – – – – – कश्चास्मिकायस्थो गोमिकागज ॥२६॥ उत्कीर्णा शिवनागेन द्वारशिवस्य सूनुना ॥ सूनुना भट्टसुरभेर्द्दबटेन श्रुतोज्वला ॥२७॥ श्लोका अमी कृता भक्त्या मौलिचन्द्रसुधाजुष ॥ कृष्णसुतो गुणाढ्यश्च सूत्रधारो-त्रणणक ॥ २८ ॥ एतत्कण्वाश्रम ज्ञात्वा सर्व्वपापहर शुभ ॥ कृत हि मन्दिर शम्भो धर्म्मकीर्तिविवर्द्धन ॥ २९ ॥ यतिहीन शब्दहीन मात्राहीन तु यद्भवेत् ॥ तत्सर्व्व साधुचित्तेन मर्षणीय बुधैस्सदा ॥ ३० ॥
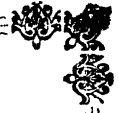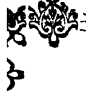
रियासत झालावाडकी प्रशस्तियां

इण्डियन ऐण्टिक्केरी जिल्द ५ वी पृष्ठ १८१ से

शेषसंग्रह नम्बर ८

॥ ॐनम शिवाय ॥ रोषक्रोधप्रवृद्धज्वलदनलशिखाक्रान्तदिक्चक्रवाल तेजोभि र्द्वादशार्कप्रति – • राविराशु ब्रह्मेन्द्रोपेन्द्ररुद्रैः प्रलयभयभृ तैरीक्षितं भ्रान्तदृग्भिर्ल्लाटव पुनातुस्मरतनुदहन लोचन विश्वमूर्ते ॥ १ ॥ सन्ध्या वासरकामिनी त्रिपथगा पत्नीतथाम्भोनिधे स्तत्सक्तो न विभेष्यघादपि कथ निर्दग्धकामव्रतिन् ॥ इत्थवाक्यपरपरा विगर्हणे नोक्तोभवान्याभवो भूयाद्वक्त्रचतुष्टयेन विहसन्नुच्चैश्चिर व श्रियै ॥ २ ॥ श्रीदुर्ग्गगणे नरेन्द्रमुख्ये सतिसपादित लोकपाल-वृत्ते अवदातगुणोपमानहेतौ सर्व्वाश्चर्यकलावि [प] श्चितीह ॥ ३ ॥ यस्मिन्प्रजा प्रमुदिता विगतोपसर्ग्गा स्वै कर्म्मभिर्व्विदधति स्थितिमुर्व्वरेशे ॥ सत्वावबोधविमली-कृतचेतसश्च विप्रा पद विविदिषन्ति पर स्मरारे ॥ ४ ॥ यसर्व्वावनिपालविस्मयकर सत्वप्रवृत्युज्वलज्वालादग्धतमाक्षतारितिमिर प्राज्यप्रचेष्टोजसा शकामन्धकविद्वि-षश्चकुरुते तुल्याकृतिलादहो दग्धोप्येषविशेषविग्रहरुचि ज्जार्त कथ मन्मथ ॥ ५ ॥ आसीत्कृतज्ञस्थिरवागनायासितबान्धव ॥ देवनामात्यपायेषु चित्तस्यादृष्टविक्रिय ॥६॥ तस्यावरज प्रवृद्धकोशक्षितिपच्यूतसभापतिर्व्वदान्य ॥ विदुषामपिवोप्पकाभिधान स्वगुणै प्रीतिमुपादधात्यजिह्म ॥ ७ ॥ तेनेदमकारिचन्द्रमौलेर्भवनं जन्ममृतिप्र-हाणहेतो ॥ प्रसमीक्ष्यजरावियोगदु खप्रतति देहभृतामनुप्रसक्ताम् ॥ ८ ॥ धर्म्म एवसखाव्यभिचारीरक्ष – – । कृतिनस्खलितेषु ॥ प्रायणेप्यनुगति विदधाति-प्रेत्ययन्तिसुहृद किमुतार्था ॥ ९ ॥ कालेप्रकाममकरन्द समीति मत्त भ्रान्तद्विरेफ कुलकेलिविरावरम्ये ॥ हृष्टान्यपुष्टमधुरातिकलप्रलापे शम्भोर्न्निविष्टमिदमल्पक पक्ष्मधाम ॥ १० ॥ सवत्शतेषु सप्तसु षट्चत्वारिंशदधिकेषु ॥ प्रणहितमायतनमि-दं समग्रलोकेश्वराधिपते ॥ ११ ॥ रम्यैर्जनप्रतीतैरर्थानुगतैरकर्कशैशृशब्दै ॥ रचितेयमनभिमानात्प्रशस्ति रपि भट्टशर्व्वगुप्तेन ॥ १२ ॥ अच्युतस्य सुतेनैव सू-त्रधारेण धीमता उत्कीर्णा वामनेनेह पूर्व्वविज्ञानशालिना ॥ १३ ॥

इण्डियन ऐण्टिक्केरी जिल्द ५ वी पृष्ठ १८२-८३.

शेषसंग्रह नम्बर ९

१ • •• • रोषकोधप्रवृद्धज्वलदनलशिखाक्रान्तदिक्चक्रवाल

तेजोभिर्द्वादशार्क प्रतिविह • ••

२ – – – ह्मेन्द्रोपेन्द्ररुद्रै प्रलय भयभृतैरीक्षितभ्रान्त ग र्ल्ला-
लाटम्व पुनातु स्मरतनुदहनेलोच ••

३ गा पत्नी तथाम्भोनिधेस्तत्सके न विभेष्यगाधपि कथ निर्द्दग्धकामव्र-
तिन् इत्थ वाक्यपरपरा विगर्हणे

४ • येनविहसन्तुच्चैश्चिरव श्रिये ॥ श्रीदुर्ग्गगेणे नरेन्द्रमुख्ये सति संपादित
लोकपालवृत्ते

५ वश्वर्यैकलाविपश्चितीह ॥ यस्मिप्रजा प्रमुषिता विगतोपसर्ग्गा स्वै कर्म्मभि विदध-
ति स्थिति

६ बिप्रा पद् विविदिशतिपर स्मरारे सर्व्वापारि
विस्तुथलर सत्वप्रवृत्युज्वल ज्वालादग

७ म कवि द्विषश्च कुरुते तुल्यक्र त्वादह यद्वे पविशेषविग्रहरुचिर्जात
कथमम

८ ••• •

९ शरणागतार्त दीनार्ति •

१० समर्थो पि ॥ तस्य वरज कृते पितृदेवार्चन विप्रपूजा •• •

११ भिपूजिता सुतार्थी प्रयात स्वगृहात्कदमी

१२ ग्रहगत

(काव्यमालान्तर्गत प्राचीन लेख माला पृष्ठ ५३–५४–५५)

रियासत करौलीकी प्रशस्तियां

शेषसंग्रह नम्बर १०

मथनदेवमहीपतेर्दानपत्रम्

ॐ स्वस्ति ॥ परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीक्षितिपालदेवपा-दानुध्यातपरमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीविजयपालदेवानामभिप्रवर्धमान-कल्याणविजयराज्ये सवत्सरशतेषु दशसु षोडशोत्तरकेषु माघमाससित-पक्षत्रयोदश्या शनियुक्तायामेव १०१६ माघसुदि १३ शनावद्य श्रीराज्यपुराव-स्थितो महाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमथनदेवो महाराजाधिराजश्रीसावटसूनुर्गुर्जर प्रतीहारान्वय कुशली स्वभोगावाप्तवशपोतकभोगसबद्धव्याघ्रवाटकग्रामे समुपग-तान्सर्व्वानेव राजपुरुषान्नियोगस्थान्क्रमागमिकान्नियुक्तकानियुक्तकास्तन्निवासिमह-

त्तरमहत्तमवणिक्प्रवणिप्रमुखजनपदांश्च यथार्हं मानयति बोधयति समादिशति च॥ अस्तु व सविदितम् – तृणाग्रलग्नजलबिन्दुसंस्थानास्थिराणि शरीरसपज्जीवितानीतीमां ससारासारता कीर्तिमूर्तेश्च कल्पस्थायितां ज्ञात्वा मया पित्रोरात्मनश्च पुण्ययशोभिवृद्धये ऐहिकामुश्मिकफलनिमित्त ससारार्णवतरणार्थं स्वर्गमार्गार्गलोद्घाटनहेतो स्वमातृश्रीलच्छुकानाम्ना श्रीलच्छुकेश्वरमहादेवाय प्रत्यह ३ स्नपनसमालभनपुष्पधूपनैवेद्यदीपतैलसुधासिन्दूरलागनखण्डस्फुटितसमारचनप्रेक्षणकपवित्रकारोहणकर्मकरवाटिकापालादिव्ययार्थमुपरि सूचितव्याघ्रवाटकग्राम स्वसीमातृणयुतिगोचरपर्यन्त सोद्रङ्ग सवृक्षमालाकुल सकलभोगसयुतादायाभ्यामपि समस्तसस्याना भागखलभिक्षाप्रस्थकस्कन्वकमार्गणकदण्डदशापराधदाननिधिनिधानापुत्रिकाधननष्टिभरटोचितानुचितनिबद्धानिबद्धसमस्तप्रत्यादेय - सहितस्तथैतत्प्रत्यासन्नश्रीगुर्जरवाहितसमस्तक्षेत्रसमेतश्चाकिंचित्प्रग्राह्यो ऽद्य पुण्ये ऽहनि स्नात्वा देवस्य प्रतिष्ठाकाले उदकपूर्वं परिकल्प्य शासनेन दत्त ॥ मत्वैवमद्य दिनादारभ्य श्रीमदामर्दकविनिर्गतश्रीसोपुरीयसतत्यां श्रीछात्रशिवे श्रीगोपालीदेवीतडागपालीमठसबद्धश्रीराज्यपुरे श्रीनित्यप्रमुदितदेवमठे श्रीश्रीकण्ठाचार्यशिष्यश्रीरूपशिवाचार्यस्तच्छिष्यश्रीमदोंकारशिवाचार्यस्यास्खलितब्रह्मचर्या वाप्तमहामहिम्न परमयशोराशे शिष्यप्रतिशिष्यक्रमेण देवोपयोगार्थं तत्रिमव्यवच्छेदेनाचन्द्रार्कं यावत्कुर्वत ' कारयतो वास्मद्वशजैरन्यतरैर्वा भाविभिर्भूपालै कालकालेष्वपि परिपन्थना न कार्या ॥ प्रत्युतास्मत्कृतप्रार्थनया सदा तत्रिसानाथ्य वोढव्यम्॥ यत समानैवेय पुण्यफलावाप्तिरनुमन्तव्या॥ उक्त च भगवता परमर्षिणा वेदव्यासेन व्यासेन – बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभि सगरादिभि ॥ यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्यतस्य तदा फलम् ॥ आदित्यो वरुणो वायुर्ब्रह्मा विष्णुर्हुताशन ॥ भगवान् शूलपाणिश्च अभिनन्दति भूमिदम् ॥ षष्टिर्वर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिद ॥ आच्छेत्ता चानुमन्ता च तान्येव नरक वसेत् ॥ यैर्वांछित शशिरदीधतिशुभ्रकीर्तेर्यैश्चामरप्रणयिनीपरिरम्भणस्य ॥ ते साधवो नहि हरन्ति परेण दत्ता दानाद्वदन्ति परिपालनमेव साधु ॥ शासन कृतवान्देवो लिखित तस्य सूनुना ॥ व्यक्त सूरप्रसादेन उत्कीर्णं हरिणा तत । इति । तथामुष्मै देवाय पार्श्वदेवकुलिकाचतुष्टया ४ राजधान्या प्रतिष्ठितविनायकसहिताय हट्टदाने गोनींप्रतिहट्टव्यावहरिकवि २ घटककूपक प्रतिघृतस्य तैलस्यच पलिके द्वे २ वीथीं प्रतिमासि २ वि २ तथा वहिप्रविष्ठचोल्लिका प्रतिपर्णाना ५० एतद्देवस्य कृतमिति ॥ श्रीमथन ॥ ९

इण्डिअन ऐण्टिक्वेरी, जिल्द १४ वीं पृष्ठ १०

शेषसंग्रह नम्बर ११

ॐ ॐ नम सिद्धेभ्य ॥ आसीन्निर्वृतकान्वयैकतिलक श्रीविष्णुसूर्य्यासने श्रीमत्काम्यकगच्छतारकपथ श्वेतांशुमान्विश्रुत ॥ श्रीमान्सूरिमहेश्वर प्रशमभू श्वेताम्बरग्रामणी राज्ये श्री विजयाधिराज नृपते श्रीश्रीपथायापुरि ॥ ततश्च ॥ नाश यातु शत सहस्रसहित सवत्सराणान्द्रुत ॥ म्लानोभाद्रपद सभद्र पदवीम्मास समारोहतु ॥ सास्यैवक्षयमेतु सोमसहिता कृष्णाद्वितीयातिथि पञ्चश्री-परमेष्ठिनिष्ठहृदय प्राप्तो दिव यत्र स ॥ अपिच ॥ कीर्तिर्दिक्करिकान्तदन्तमुशल प्रोद्भूतलास्यक्रमम् कापि कापि हिमाद्रिमु ~ ~ महीसोत्प्रासहासस्थितिम् ॥ काप्यै-रावतनागराजजनितस्पर्द्धानुबन्धोद्धुरम् भ्राम्यन्ती भुवनत्रय त्रिपथगेवाद्यापि न श्राम्यति ॥ स० ११०० भाद्र वदि २ चन्द्रे कल्याणकदिने प्रशस्तिरिय साधुसर्व-देवेनोत्कीर्णेति

छप्पय

मिहर वंश मनि मौलि रान संग्राम गौनदिव ।
तासु पुत्त जगतेस ईश मेवार वश इव ॥
सूर चन्द कुल सकल एक मत होन उमग्गिय ।
नद खारी तट निखिल करन मत्तिय डेराकिय ॥
दल सधिमुहर राजन दियउ हितदल मरहट्टन हतै ।
पै फूट मूठ ऐसी परी फिर दक्खिन लीनी फतै ॥ १ ॥
कुम्भ गेह को कलह हान मेवार आन हुव ।
बन माधव आबेर भीरु ननिहाल खोयभुव ॥
एक एक ते अनख लाग मरहट्टन लाये ।
रजपुत्तनके रुहिर बिहर तन भुम्मि बहाये ॥
बनवाय महल तालाब बिच जगनिवास लखि मोद जिय ।
पातलकुमार दे कैदपन कठिन गौन कैलास किय ॥ २ ॥
इम जयपुर आमेर वश इतिहास खास बनि ।
कुल नारव की कथा बीच राजन अलवर बनि ॥
बडे हड्ड बरवीर मध्य कोटा पति मन्निय ।
जिम जालिम बरजोर आप पट्टन घर अन्निय ॥

दुहुवन उदन्त तिमभुम्मि दबि कहि जद्दवकुलकी कथा।
करोली राज थप्पन कियउ जिम अवनतिउन्नति जथा ॥ ३ ॥
पाहन लेख प्रमान कछुक सग्रह फिर किन्नो ।
बानक बीर बिनोद डक्क आनक जिम दिन्नो ॥
सज्जन आशय समुझ पित्र इच्छा प्रति पालक ।
ले शासन फतमाल कित्ति मरहट्टन कालक ॥
कविराज दास श्यामल कियउ बानिक बीर बिनोदको ।
पूरन प्रवाह पाथोदपथ मद प्रवाह बुध मोदको ॥ ४ ॥